हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे, हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरेहरे। जयित शिवा-शिव जानिक-राम। जय रघुनन्दन राघेत्रयाम॥ रघुपति राघव राजा राम। पतितपावन सीताराम॥ जय जय दुर्गा जय मा तारा। जय गणेश जय श्रुव-आगारा॥

िसंत्करण--१५३३० र

The Health and the Partie of Septem and Septem I de Septem and the Septem and Septem and

पर्व | जय पायक रवि चन्द्र जयति जय । सन् चित् आनन्द भूगा जय जय ।) विरेशने १)

क्य जय विरवस्प हरि जय । जय अखिलारमन् अगमय जय ।।

क्य जय विरवस्प हरि जय । जय अखिलारमन् अगमय जय ।।

सावारण परि

निरेशने ॥)

Printed and Published by Ghanshyamdas at the Gita Press, Gorakhpur.



हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे, हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे। जयित शिया-शिव जानिक-राम । जय रघुनन्दन राघेश्याम ॥ र्घुपति राघव राजा राम । पतितपावनं सीताराम ॥ जय जय दुर्गा जय मा तारा। जय गणेश जय श्रुप-आगारा॥

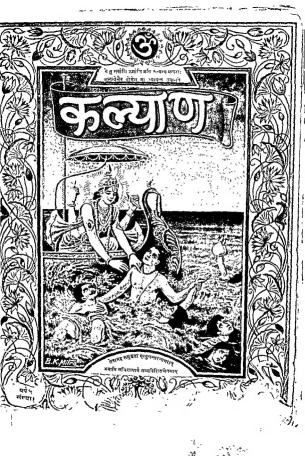
[संतक्षरण—१५२१०]

Belly States and State

अय पारकरिव घन्द्र जयति अय। गन् चित् आनन्द भृगा जये जय

जय जय विद्यस्य हरि जय । जय अधिलात्मन् जगमय जय ॥ जय विराट जय जगत्यते । गारीपति जय रमापते ॥

बरेशमें १०) Printed and Published by Ghanshyamd s at the Gita Press, Gorakhpur.



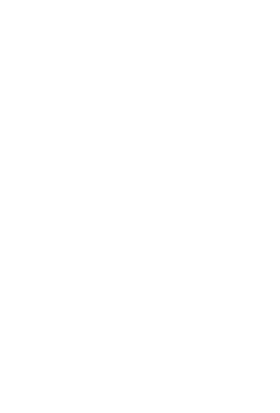


_{गोवरिः} विषय-सूची

	पुष्ठ संस्था
श्रु संस्या	,
१-श्रीरामायया-माहात्वां	२०-श्रोराभवेभी दशस्य महाराज ।
र-तेरी हैंसी ! ('तेश ही') . " ' ," ३	् (दशस्यक्रमार-पद-रज) ''' ः ः ः " सद
३-क्रीसमावया-तरक-रङ्खः । (गोवर्धनपीठाधीरकर	, २1-विदेह-भक्त राजा जनक ।
जगर्युर औशंकराचार्य स्वामीजी थी ११०=	. (श्रीह्मानारायकर्ता चीपरी) ६१
की बारती कृष्वतीर्थेजी महाराज)	२२-श्रीवसिष्ठशीकी महत्ता।
ध-रामोपविष्ट-मकि। (स्वामीजी श्रीभाजेवावाजी) १२	(पविडलक् धीनत्यूरामती समी, गुनरात) *** १३
१-श्रीहरमायख-रहस्य ।	' २३-ऑइस्मान्जीके चरित्रसं शिए। ।
(श्रीकाळी-पतिवादिभयक्कर मठाधीश्वर जगद्गुरु	(पं॰शीजयशमदाराजी 'दीन' शमावणी) " ६४
श्रीभगवदामानुजनसंग्रदायाचार्व श्री ३१० म	२४-विभीपण । (श्रीरष्ट्रनावयसादसिंहजी) . " १०३
ं, श्रीसनन्ताचार्यं स्थामोजी महाशज) · ं ्रे॰ ,	२५-रावण्डे जीवनसे शिशा ।
६-शमामयका नित्य पाठकरो ।	(पं व वरेन्द्रवायजी पाडक) " १०४
ं (महामना पं व श्रोमदनमोहनजी माखबीय) *** २८ .	- २६-मीधराज जदायुकी चलीकिक भक्ति।
७—रामापक्षका सन्देश ।	ं (ध्यौद्वार श्रीशकेन्द्रसिद्धक्री) १०६
- (साधुक्षी दी० एस० नास्त्रानीजी) ''' २६ -	२७-भगवान् श्रीराम ।
द्य-स्रोतामचरितमान्छ। (मःश्रीरूपकतानी) *** . २६	: (श्रीज्याकामसाद कानीविया) : " १० ८
६ - नामधीकीय शामाययाकी विशेषता ।	२८-औरामका प्रवातरका-प्रवा (प्रवात-जन-सरस्य) १२०
(विद्वार पं० श्रीवातकृष्णजी मिश्र), 💘 २३,	२६-श्रीरामावतारके विविधमाय श्रीर रहस्य।
।०-श्रीमहामाययः।	(विद्वहर पं॰ श्रीभवानीराष्ट्रस्त्री) " १२२
(श्री १०= स्वामी पं० रामवस्रभागरवाजी	३०-रामायणका रहस्य। (स्वामीजी श्रीशिवामन्द्रजी) १२#
बहाराज, श्रीजानकाचाट, श्रीकवाच्याजो) *** ३२	११-श्रीरामचम्द्रजीका भधनेष यश और उसका
। २ - सर्वादा-पुरुषोत्तमः श्रीरामः ।	. महस्तः (वाञ्चारः शामशासीती एम ०५०,-
(राक्तहादुर जीचिन्तामस्य विवायक वैध	पी-एव० डी॰, मैसीर) ''' १२६
्युमर् एक, बुल-पुल की ० 📜 💢 🚉 -	३२-शमागरामें भादर्श गृहस्थ । (महामहोपाध्याय
१२-मर्वादा-पुरुवोत्तमको मर्पादा ।	
(राधवहादुर राजा श्रीहुर्जनसिंहकी,जाबजी) ** ३१	्र पं श्रीप्रमधनाथको तकेभूपस्, काशी)
१२ कीसीसार्क चरित्रसे भावशे विषया।	
(श्रीक्यवृद्धासमी गोमन्त्रका) ४५ १९-रामायकमें सर्वे ।	. 4 400 0 0
१४-रामाथ्यम मरव ((सादिःयाचार्वं पं॰क्षांमाक्षश्रमकी शाक्षी) *** २०	३४-कान बना ६८ (स्वामा कृष्णानस्त्रता श्रवता) १२८ ३४-कोरामाययामें मांसाहार ।
१६ - बादमया भीर मरतकी मक्ति । (श्री'कलबङ्क्य') १७	
ार्-बहाराया श्रीसरेया । (बीशिलाङ्गारवारक) '०४	38 , , , , , , , , , , , , , , , , , , ,
विश्वासीया कासरया । (काराजाकुमारसस्य)	
्रवं भीजीवनशहरूकी वाक्रिक एमः	वि० बिद
Art aggarafi ball) 181
A Charles and and the	

। पूरण १६-मर्गी; : ' । ग्री त्राचा गुरा कस्सा } १६ (धीराम क्यान)
२६-सर्वाः २ । जिल्लास् सूत्र कार्यः । ५ (थीनमः नामनः । १११ २ १ २७-थोनममस्त्रास्तरः स्वारानिक सिद्यानः ।
४ (धीरमम् - १ राजन) । सा ३ १ २७-श्रीरमचित्रमात् स्था पर्णनिक सिद्रास्त ।
१ २७-श्रीयमचित्रमाद स्व चर्णित्र सिद्धान ।
६ ४८-रामायगर्मे शाउने शनिवनत्तर्मे । (शीयुत
व संबद्द कारिमचर्ना, विकार, राजियानद्वार) ३
₹र-तुलसीसमायग्रमे भन्नाताः।
े (पंश्रक्षीपीयनगद्भगीयाजिक एक) (**) २
६०-अंश्वरदेवती चीर समायश । (श्रा पी० एन०
अदरनारायमा श्रद्धक्ष्मा ० ए०, वी ० एन । १९८४ स्थापना श्रद्धक्ष्मा १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १
१९-थंशिसर्वाकः स्वंगणाके साथ व्यवहार ।
(पंच शीक्याश्यानी भारतात सार्थाः सामार्थः
र्थ वीश पुरु) ••• •• ३३
६२ - समाययमें मन्याधह। (श्रीमन्त याद्यराद्वरजी
जामदार, स्टिश्यर्ड सवजन, नारापुर) *** २३
<-आभदानायराका सहस्य । (स० श्रात्रालकराम
2
६४-रामायसमे राजनीतिक उपानमें महायना।
् (रावत्रदातुर सरदार माधवराव विनायक किये
गुम् ० ए०, पुम् ० प्रार्व ए० एप०, विश्वाहम
र् मिनिस्टर होण्कर स्टेट) ' १३
६४-मानवर्मे शान और भृष्टि ।
द (पं• श्रीलक्सीयरजी पाठक)… ् ः १३
६६—संस्त्रसान राज्यकः।
(धीयमुनाप्रसादजी धीवान्तर) ३३६
_७ ६७-रामावतारका महत्त्व ।
(स्वासाजा स्नाविवसानन्द्जा)
६ = रामचरितमानसके निर्दोप श्रहारकी विशेषता।
(सेंड श्रीकर्ण्डयाजालजी पोदार) २४०
६६-श्रीरामचरितमानसकी कतिवय दिशेपताएँ।
(पं॰ श्रीजगन्नायत्रसादजी चनुर्देदी 'श्रान्त'
श्रीर श्रीमुरबीधरकी दीवित 'श्रान्त') · २१४
७०-श्रीरामावकोपरेश।
(श्रीयुक्त चौधुरी रच्चनन्दनमसादर्सिहजी) *** २६१
७३-सबसे बहारामनाम। (श्रीधुत के व्योर सखा) २६५
७२-राजनीतिञ्च बारमीकि । (श्रीयुन 'महाराष्ट्रीय') १६६
७१-ज्ञानदीयका स्पष्टीकरच ।
: (साहित्यरजन पं• श्रीविजयानन्दर्जी त्रिपाटी) २७१

renter to a project (in)-
कुमें हुए	- १९ स्टब्स
७४-विवाहके समय सीताजीकी चवस्या।	१०-तुलसीकृत रामायण्की समी छा ।
(पं॰ भीराजेन्द्रनाथ विद्याभूषण) *** र=२	(रैवरेस्टक्ष्मीण्डविन मीटम,मेलवर्न,हंगलीयड) ३४०
०१-धीरामचरितमानस-पात्रपरिचय ।	६१-रासायल संसारका सर्वोत्हर महाकाव्य है।
(श्रीण्यालामसाद कानोडिया) २५०	(डा० थी पुष० डब्ल्यू० थी० मोरेनी,
७६ सूर्यवंश (श्री वी॰ एप॰ वहेर, एस॰ ए॰	ं एमक एक, भी-पूचक डीक, ग्रेसिडेस्ट 'ऐंग्लो
् मृत-पृत्त ० वी०, गुमठ शार = प्० प्स +) २मम	इस्डियन जीग') "" १४३
७७ - भगवान् श्रीरामकी रावधापर द्या ।	१२-शमाबक्के कुछ शजनीतिक सिदान्त और
(मेहता पं श्रीजजारामजी समी) * २६६	शासनसंस्थाएँ। (श्रीयुक्त थी० चार० रामचन्द्र
७=-गोरवामीजी श्रीर महिला-समाञ i	दीविनार एमे॰ ए०) " " ३४७
(पं अरीजगन्नाधमसादत्ती चतुर्वेती) ३०० -	११-यूरोपके सामान्य पाटकों के जि ये शमायखंका
७६ - मगवान् श्रीरामधन्द्रतीके बन गराकी दिनवर्या ।	स्वरूप । (धीयुन एव० क्षी० क्षी० दर्नपुत्त,
(श्रीयुत् बी॰ प्रच॰ वडेर, एस॰ प्॰,	. एस॰ ए० वेजित, इंगर्लेग्ड) " " ३२०
एज-पूज वी०, एम० चार० ए० प्स०) ३०२	१४-महाकार्योमें राएस। (श्रीयुत एस० एन०
=०~श्रन्दरामायल्डे श्र <u>त</u> सार रामायल्डा विभिन्ता।	ताइपत्रीकर एम० ए०, मान्यविद्यालंकार,
ं, (क्षीयुन की० एव० वटेर, एस० ए०,	· भावजारकर रिसर्च इन्सिट्यूट, प्ता) · · ३२३
' प्रत-प्ता॰ बीठ, एम० आर॰ ए० एस॰) ' ३०४ '	३३~बादर्श पुरुष शीराम ।
= यनगमन और रावखवधकी तिथियाँ।	(भी पाई० जी॰ पुस॰ सारापुरवाला बी॰ प्०,
(पं॰ भीराधाङ्गत्त्वजी मिश्र) ३०६	पी-पूच , दी , बार-पैट-ला, विस्तवल
६२-राम्नाम । (पंरशीयलदेवमसादनी मिश्र	- M. E. Cams Athornam Institute) 141
प्रत्पृत्वत्युत्वव्योव,प्रस्वकारव्युव्यसः) ३१२	६६ रामायण्के शक्स ।
. सर्-रामलीकामें सुधार । (श्रीयुत राजवहादुरजी समगोवर, एस० एके, एल-एल० बी०) १९७	. (पं० भीगोधिन्दरास्त्रीती दुगवेकर) " ३५४ ६७-दामावसके सामर-ऋषः (शी'रामायस-प्रेमी') ६५=
मध-रावसकी सन्ना कहाँ भी रि	हर-नामायक वार-रक्षा (आ राजायक्या) ११८ इस-नामायक कीर महाभारत। (दा०श्रीमहत्त्वदेवती
(श्री वी प्रयुक्त वर्षेत्रे, एस ए ए एस मूल वी .	शासी, युम्न ए॰, डी॰फिल॰) " १६६
्पम० आर० ए० एस०) *** १३७	 १५०० वर्षां वर्य
¤१-शारामनामकी सदिसा ।	•०-यावमीकीय शमायणसे धवनारगावकी मिक्सि ।
(शाधार्य , श्रीसंदनमोहसन्नी , शीरवासी बै॰	(साहित्याचार्य श्रीरपुत्रर मिट्टलालजी
दर्शनतीर्थ, भागवतस्त्र) *** * ३२३ * **	्रहास्त्री काव्य-त्रेशन्त्र-तीर्थं एस० ए०,
मध-र चीर म की श्रमकीयना ह	एस० ची० युता०) ३६६
 (पं॰ भीतुम्बरामशी चौदे 'तुम्बाकर') *** ३२४ • 	। • १ उदासी माचु भगवान् श्रीराम। (स्वामी
मञ-रामापण और असकी शालाई।	श्रीहरिनामदायजी उदासीन,महम्ल,श्रीसाधुवेखा)३ ==
	•२-कारसीमें रामायय ।
धी • एल •, काम्यतीर्थ) *** ३२६	. (श्रीमदेशप्रमादनी मौलधी, चालिम-पात्रिक) ३११
म्ब-नाम-नाहाक्य ।	। ०३ - मराठीमें शयायदा । (पं॰ असमदा शमसन्द
(स्वामाजी श्री-वीतिमँगानन्द्वी पुरी,श्रवहै) ३२३ १६-पाविवयका ग्रीपिय । (श्रीजनक्षुताशस्य	वाद्रारका बार वर, सन्मादक (समित्र') ३१३
1	०४-बंगक्रामें समाधय
पत्र-मूल० बी०, सम्पादक 'मानवर्षायूप') ३३३	१०१-इन्द्रन्थानावरः । (व- क्षेत्रकेत्रकाराक्ष्योः स्टब्स्
and and annually the	(पं• बीकोचनप्रमादनी पावटेय) १६६



r पृष्ठ संस्का

१४५-बाह्मन । (वंव बत्तदेवासार शिष्ठ, व्याव्यंव, १६८-सम्बन्धकी महीचा। (श्रीमाहादीनजी शुरु,
प्रश्निक बीं व्यक्त शास्त्र पृथं प्रावः । १३१ साहित्यशासी, सान्यभूपत् । " १३१
dening all the sile of the training the man (the training the sile of the sil
1 Standing in Aluks
- (शान्त्वाकशान्त्रा की कियार कान्यान्त्र) उन्हें कियानिकार्य मान तीको "" " १३३
१४७-वेरेही-विलाप!(पं०रमार्गक्रामी मिश्र भीपति')२०३
१४६-माराप्य राम । (श्रीवाजकृष्यामी बजदुवा) " २१२ १०२-बासाये देत । (पं॰ जगनायमसादनी हिवेदी) ४६६
१४१-राम नाम (श्रीमोतीलाचजी योमरे) , " २१७, १७३-सुने अपंत्र करे । (श्रीताराचन्द्रजी पण्डण
ारव-श्रीरामचरितमानस-महिमा। १५२ विव वृत 'चन्द्र') १५२
(श्रीकोचनप्रसोदजी पावडेय): १४४ १३४-मार्थना (श्रव्हिंदत) १०४
भग-वजतीशाससे।
(श्रीमोहम्बाल्यो महता 'वियागा') १३१
१७१ - रामायल । (आरामरलदासह मार्थर
मन प्र, प्रमा भारत प्र प्राप्त । १२
१११-रधुवर भंगा ।
(भीनारावणाचार्यजी शास्त्री वेदान्तमृष्य) २०६ (विससाट भीस्वीन्द्रनाथ डाक्र) " १६८
१२४-राज्य। (श्रीमिधिजीरार्याजी गुर)
१४२-मादिकवि वातमीकि। "१६६
र (पं बीरामचरितजी डपाप्याप), - १६६ १७६-रामायकर्मे ऐतिहासिक सध्य ।
११२- हैसे बार्ड हार । (श्री'तरही')
[14व-तुससी।(श्रीव्यवन्तविहारीजी मापुर 'सवन्त') ३०२ ्१८०-रामायेख सर्वोच महोनाव्य है।(गोरीसियो) २१०
१६५-मक्तमावना । (श्री रसिवेन्द्र' जी) "े - १९३ १००-शमायणमे उद्य मार्थोका मानुर्भाव ।
११६-मुजसीवन्द्रना । (श्री योगेन्द्र शमी) : १२६ (ग्रीफिय-शमायणके केनुवादक) " २६५
१६०-रामायखंडे स्विदेता । १६०-रामायखंडे स्त । (वेवर) १६६
(कुं भीवतापनारावपांत्रो दुरीहित कविस्त) ३२३ अध्य-रामायकाने वस्त्यर सहाजुशतिकी पृक्षि ।(प्रीम्स)२००
141. Gaussin Langithan and Eddi. 444
Additional Management
and manages Rades
(पै॰ मीमेमनाराययानी जिपाती 'सेम') ३३६ (शबसन न्यरकडाव स्थावता) १३३४ १९६०-राम (पै॰ गंगावित्तुनी वाष्ट्रेय, १०००-रामायया सेसर्गिक काव्य है।
्रियाम्रच 'विष्तु') १६६ (श्रीमन-इविडयन वृपितसके रचविता) " १६६
१६० रामग्रिकाला करि कर्ना ।
(किटि
SEE-Dimphet menn s
fearing affect of any statute state of the
(१९वाया व्यावस्थासाद्वा भाष पायक्का) २६१ । १०-राम गटना रहे। (महात्मा गोंपीजी) १०१० १६७-राम। (पं भगवतीवसादनीत्रियात्री विकास्य १३३-रामवस्तिनागसः। (१०००) १०२२
वसं प ्यत्याता । १९४ १६२ थीता शासा । १००० ४१०
마취 되었는 항식 화면이 되었습니다면 그 있는 때

(+)	
,	pribation of
पुत्र विस्ता १७० विस्ता के ती समझे ही पीरी ।	. 22%
, गो० तुलमीदामजीके उपदेश-ग्व _{२००-गःस्थ} ा	
• स्था क्षेत्रका करा । १ १९६ - स्थापन महत्त्रका प्रश्तिक क्षेत्रका । १९६ - स्थापन महत्त्रका प्रश्तिक क्षेत्र ।	311
११३-सीयनवा फर । (यह पीरायस्त्यामा वेश्वर थी। १६४-सामे हर्यो कीन असने हैं हैं ०६ १९३ कर हे प्राथम ।	> 51
१६५-सानी पण्टित सादि सीस है । १३० २०३-स्पेन पराटक पांता गार्ड भीता।	*** 343
३३६-मानी परिवत चादि कीम है ? १३८ ।	151
१६६-रासके चार निवासकान ।	956
१६७-दुमाको सामसे कीम मही अलाव (१९४०) १६८-सक्त कोम है ? १९०० २२० १६४ स्वरूपसका सीसमनास्मातम ।	441 1993
• इस्त-सबन कीन है ? • १६६-श्युवीरके सब सेवक बीन हैं ? ०२० . ९६-करण्यान शंशस-गर्मणा	,
१६६- श्युवीरक सच्च स्वक पराच र	
िन्य गर् ची	
र चित्र-मृची	524
० प्रहुरी ०४ - प्रशासनमा । प्रहुरी ०४ श्रीसमनमा (प्राणीन नि	-
	368
4-व्यापिता सम्मार्	*** 340
५-धीरामवद्यापतमः ६३७६८ । ३० शोमाइं गुल्स्यदासम्।	*** 355
३-परश्रसमन्दर्म । ५४ शसावराड्म ।	*** 990
३-परस्तामनाम । ५२ तसावपादम । ४-पुष्पवाटिकाम श्रीराम-सीताकी गुम मन्त्रपा । ३०- चडेप रच ।	250
(सरहरा)	984
१-श्रीरामके चरणोंमें भरत ८१ ३० राम-विसाय।	feg :
६-क्रेसेवीकी चमा-बाचना। १६३ ३०-शहल्योवार।	
७६२ १०-श्रीसाम-प्रविधाः । १६२ ११-लंबर जानके बाद स्त्यान्ता सीर =-श्रीसालानामः । १२२ ११-लंबर जानके बाद स्त्यान्ता सर्वे	* *** AE6
=-श्रीसीतानाम ।	*** 320
६-शिव-परिकृत। १९६ ३४-इन्मान्त्रीका द्वीलगिरि लाना।	*** 824
१०-हाम-शबरी । १९३ ३५-शर इ.सर्व हरण ।	*** 824
१९-श्रीसीना-पतस्ता ।	i y=1
	··· 9#1
१३-सदाप्रमण श्रीराम । १८० १८० १८० १८० १८० १८० १८० १८० १८० १८०	853
१४-भगवान् श्रीराम भीर काकमुण्यितः । २०४ ३६-हम्मान्तर हृण्टका कम्पात् । १४-मुक्त पहाक्पर श्रीरामधी मार्की । १४-भुक्त पहाक्पर श्रीरामधी मार्की । १४७ ४०-सीताका पाताल-प्रदेश ।	··· \$00
१४-सुनेन पहारपर श्रीरामकी सार्की। २९७ २०-सीताका पाताल-प्रनेश। २९७ १०-सीताका पाताल-प्रनेश।	
	।वायणायः
————————————————————————————————————	15
न्द्र-साराज्य कार्याच्या विद्यात	
१६-मानस-सरावर । भर-कपट-मुनि चौरशाजा प्रतापभातु	
भ प्रमुखाराज्य वार्यक्ष स्थाप राज्य ।	" ર ા
ac-श्रासित्।।।।	۶۰۰ ، ۶۶
२१-सोर राम-नियानी जोरी। ५० ४६-जनकपुर्मे दशरथजी	٠٠٠ ٦١
२२-मीना चनवास ! १२४ ४७-जनकपुरसे विदा २१-भगपा शमार्जा येगसम नाच रहे हैं ! १२४	
*44-HUM Charles	

in the state of the state of	(/ 0 ")/
	. १४संस्था
४८-शिव-धनुष-मंग	The state of the s
े , ४६- महाराज्ञा दशरधजीका करकार	१६ - घर-जरमपाधीके सन्तिरकी साँकी (शीतरमे) २३)
२० ∼गुरु वशिष्ठजीका आसमन	
५१ -शाराम शीर केयर	्रिक्ता १९०० । (प्रिला १९००)
. १२-वरास्थ-मस्य :	म्प्-स्राज-स्व ट
<>- भरहात शाधममें श्रीरास	७१ ८७- ।, जनासाधार
१४-सर्वमस्त्रका कोध	देश स्पे-वशिष्टकुराई
< सित्रहटमें भारत . · · ·	६४ हर-दत्यन क्वड
१९-थियस्टमें महाराजा जनक	१५६
्रिष्ण-विराध-वर्षः	*** ६१ -९१-गोरवामो सुबसीवामजीको कर्न
पम-जयम्बकी दुष्टता	१०२ १२-मधि-पर्वत
१६-कपट-सूत	१०२ ६६-मचनाजेल
र • सीता-दरण · · ·	१०३ १४-साँकी सद्गुर-सद्म १५७
६१-मान्यमुक्तपरश्रीराम-सच्मार्य	३०३ हर-स्वराहारहाड
• ६२-किरिकस्थामें सबमयः …	^{१३२} ९६-सन्दिर शमहार
दव-धरोकगटिकाम समय	385 . 20-2141 Manus 497-0- 2 561
६४-सेतुवस्य रामेश्वर	१६२ १७-वरुवा राजमहत्त पीरो मन्दिर धोदरानेभरनाथ २६६ १९६६ वरा-मन्दिर दरास्य-गङ्ग-भवन
दश्-संकापर चडाई	*** १३३ ६६-धर्महरि •** १३३ १६-धर्महरि
	१४० १००-त्रेसाके ठांकर
६६-राष्यको सन्दोदरीको सीख ६७-जदमया-मूख्यं	१४० १०१ संबर्धार्थीर्वा
- दम-इन्भक्षप-युद्ध	353
semmed all	··· 121 जनकपुरधायके
१९-भारत-हन्मान् मिलाय	१६२ ^{१०२} -स्रोताशकीका स्रोताल ———
७०-श्रीराम पुनः सबोच्यामे	१९८ १०३ - श्रीजानकीजीके मन्दिरमें वानकीजीका
अयोध्यापुरीके	। सहासन् ।
७१-प्रयोश्या-साव-स्थार	१०४-श्रीजानकी-सन्दिरके भीतर जगमोहमश्रीके
V(-)	in dead well that
७३ -मस्टिश कनक-भवन (००००	रमर १०५-धनुषचेत्रसे शीरामानि महिल्ला
11 's to (Mark som)	441 544
७१-सन्दिर श्रीनागेरवरसाध ***	१८६ - १०६-शीरामजीके सन्तिरका प्रकार
७६-मन्दिर शीरामहत्तं	100-SHIRISHS PROVED 5
७७~इनुमानगदी (१)	104-Martin day
az- " (5)	
७६-जन्मस्यान, कसोटीका स्वयंत्र	" १८७ श्रृंगचेरपुरके
- ६० - सन्दिर जनमभूमि	२३६ १०१ -पान्नादेवीका मन्दिर।
. ≒१−जन्मस्थाम ं	र्रेट गान-सामारका समाचि ।
≡२-खदमणजीका मन्दिर खदमल् घाट (बा	
state (4)	३ ३ र-व्यागस्थिक पाठशाका ।
	*** **** **** **** **** **** **** **** ****
	S. C. S. S. S. S. J.
	\mathcal{C}'

	(=)	•		वृत्तं सेवली
	वेद्यंत्य	नाशिक	पञ्जबटीके	pop
चित्रकृ टके	<u>z</u> ę= 5	न्तासं स्वीपावं । स	(3) i	P49
क्रिक्सिक (शासकारवारा)	२u८ ⁸	३७- १३८-साइका जाचा । १३१-पग्रव्हीम श्रीरामा	मिन्द्रा	god
१९१ - सन्दर्भ (संगय)	⊶ ২্ধ≅	१३१-पार्क्टाम श्रीसमा १३१-पार्क्टाम श्रीसमा १४१-भीट्यास्ट्रेश्वरम् १४१-भीट्यास्ट्रेश्वरम्	शंकरका कल्विर । व्हिरकाबाहरी दस्य ।	gan
(3) 194-448611 (2)		१४३-मोदार्शना गुल	ी स्वामिन्दर ।	400
१९६ - वरिक्रमामं द्वापीवास्त्रीका मन्दिर ।	क्षाम । १ देवह देवह	१४३-समाय मेर्	वन्ध रामेश्यरक	•
१९१ - जानका सामित्र शामित्र शामित	344	मिर्	(का स्तेम ।	E1 81
१९१ - काटकाक्ष्यका (कार) । १९१ - काटकाक्ष्यका (शब्दाक्षिताका दर्ग । १९१ - काटकाक्ष्यका (ا) پروء چون کور	१४६-रामरवर गा	द्रकी प्रदक्षिणा	11 an 1
JAN MINE (MILE) !	38			 विकास सिक्स
व्यान्याका के उसर बना हुआ।	िन्दर ।		(3) at at .	वस्था का
8 60-March	***,		ट काशी। सम जोशीका घर (विका जिसमेका स्थान	
9 86 - Merrier Little	***	3 02 6 5 5 ml 4 11 1.		
\$ \$ 4 - 42 min . 1 (5)		. इं.७० १२४-धारत स्थान	देशीका चित्र ।	τi
(?) a.a. "Februsse		988-21	जिल्लाका बाहरी दर	4 1
प्रयास १६४- म्हास्टास-साध्यमः ।	e confirm	१३३ १४०-मे र् : मार्गान्त्र, और दो रि	लिपिनन है।	
१६१- मध्याः इसके अमिरिका व	d Economic	WE.		
			4	









पूर्णभदः पूर्णभिदं पूर्णात्वृत्तमुद्दस्यते ।
 पूर्णस्य पूर्णभादाय पूर्णभेकावशिष्यते ॥



मायातीतं,माधवमार्यं जगदादि, मानातीतं मोहविनाशं सुनिवन्धम् । योगिष्येयं योगविधानं परिपूर्णं, वन्दे रामं रिज्ञतलोकं स्मणीयम् ॥

यपंप सण्ड१ श्रावण १९८७ जुलाई १९३०

संख्या १ पूर्ण संख्या ४९

जीवनका फल

सिन-राम-सरूप अयाध अनुष निकोचन-मीननको बहर है। धुनि रामकथा, मुस्त रामको नाम, हिये पुनि रामहिको अस है। मिन रामिह सों, गांति रामिह सों, रानि रामसों, रामिहको चस है। सवकी न कहैं, तुलसीके मते इतनो चय-बीचनको एस है।

--गोधार्रवी महाराव





मेरे प्राणासम्बद्धाः है त बदा ही खीलामय है, जुन क्षेत्र खेलता है। सन साला जाच भी जवाता है और श्वसरा चैदा टक-टक देखता हथा हैंसा भी करता है। यह सृष्टि तेरे द्वास्पका ही ती विचास है, परम्तु तैश हँसवा

हॅंसीमें सहिया उदय होता है, दूसरीमें उसकी स्थित होती है और सीमरीमें बह तेरे चान्दर चनः विजीन हो जाती है। पर त लीनों ही चयस्थामें ईसता है, इतनी उधेइ-जुन हो जाती है. धरम्त सेरी हँसीमें कही विचमता नहीं चाली। क्रीस हैरी हैंसीके ताका प्रथं करते हैं, जनका चैना करना बातुचित भी नहीं है, क्योंकि कोगोंको श्रिक शिव रूप भासते भी हैं। यही तो तेरी हैंसीकी विलक्ष्याता है, इसीमें तो तेरी मीजका भजब नजारा है। किसीका जन्म होता है, तू हँसता है, बह खाता लेजना चीर रंग रागमें मस्त रहता है, व हेंसता है। किर प्राथ फैलाका वह सदाके लिये सो जाता है -इएक्सकी करण-प्यतिये विशाएँ में उदली हैं, स यहाँ भी हुँसता ही है। तेरी हास्यकीका समादि और अनन्त है !

स्रोग सेरे इस द्वास्त्रकी बाह लेगा चाहते हैं, खपने परिमित चीर विज्ञास-विश्वय-प्रश्त विश्वयताले तेशे हँसीका रहत्व जानमा चाहते हैं, यह बुद्धिका शुप्तमसे सुप्तमतर होते-होते सर्वधा विलय हो जाना नहीं तो वया है ? जलका जरा सा नगयब कण सब श्रीरसे परिवर्ण पारावारहीन खळ-निधिका चन्त जानना चाहता है, यह श्रसम्भव भावना नहीं सो क्या है ? अवतक बड चलग खडा देखेगा तबतक तो बता सरोगा कैसे ? भीर कहीं पता लगानेकी लगनमें चन्दर चला राया सव सी जसकी बालग सत्ता हो नए हो जावसी पित पता सगायेगा ही कौन ? जो ईंडने यथा था. वही खो गया ! भतः हे महामहिम मृति-सन मोहन माबिक-सृक्ट-मणि शस ! मेरी समझले तो तेरे इस द्वास्यके बर्म जाननेकी सामर्थ्य जगत के किसी भी प्राणीमें नहीं हैं । हाँ, कोई तेश स्वास भेमी सेरी कपासे रहस्य सम्बन्ध वाता है, परन्त उसका

समयना व समयना हमारे लिये एक सा है, क्योंकि वह फिर तकसे अक्षम रहता ही नहीं--

सो अने बेहि देह र्जनंहैं। बानत तमहिं तमहि होइ गई ।।

को तेरी संघर संसदानवर सोदित होकर नेरी चीर बीहता है. और तेरे समीप पहुँच जाता है. उसे सी त् चपनी गोदले कभी नीचे उलारता नहीं, चौर' जो विषय-विमोहित हैं उनको तेरे रहस्त्रका पता नहीं !

आवर्ष है कि इसपर भी हम तेरी लीकाचोंके.रहस्यो-दवादनका दम भरते हैं भीर की बात हमारी स्थूल हुद्धिमें नहीं केंचती. उसे तेरे किये भी कारफाव ही भार केंद्रते हैं ! हमारी इस श्रविवर—हमारे इस बाल-साव्यववर्ग मेरे सेवा सो भानी ही होगी स्थासय !

सहर्षि बारसीकि, सहर्षि वेदस्यास और तीसाई हुससीदासनी प्रभृति धम्य हैं, जिनकी बाखीसे तने हवाका चपनी कुछ सीआएँ बगत्की सनायों । तेरी इन सीक्षाओं के विश्वासीक्रमे क्रसंबद प्राक्तियोंका समीवय कार्र प्रकाशित हो दक्ष, बिसके सहारे वे खनावास ही खपने गन्तव्य स्थान-वर पहेंचकर सदाके किये सस्त्री हो गये! परश्त तेरी ये कीलाएँ हैं बड़ी ही विचित्र, चलत और मोहिनी, बड़े-घड़े तार्विक विद्वानींकी बृद्धि इनकी मोहमतामें पहकर श्रवता जाती हैं। चनरव ही जो सोग श्रदा-भक्तिपर्वक विदेश व्ययांभिमान छोडकर तेरी शरया हो साते हैं. उनके विवेक-चच्चोंके सामनेसे तेरी दुस्तर भायाका शावरण इट भारतर है !

अभो ! याज 'कल्थाण'के पाँचवे वर्षके प्रारम्भवरतने को चपनी उन सीजाओंका कल गुरागान करवाया है, तेरी सम्राह सदारहनेवाली खपार क्रभाडे एक क्रमुका चनुमव ही इसमें कारण है। नाथ ! ऐसा कर है, जिससे प्रायेक श्रवस्था, प्रत्येक समय, प्रत्येक वस्त श्रीर प्रत्येक चेष्टामें तेरी नित्य चारस्त क्रपाकी पूर्व श्रवचंद्र साधरी सरतिके दर्शन होते नहें और किर वह पूर्व कुपाविग्रह कभी धाँखोंसे धोमज न हो। सुना है, तेरी हँसीका रहस्य सभी जावा जा सकता है !

श्रीरामायण-तत्त्व-रहस्य

(गोरपंतपीठाधीश्वर पूज्यपाद सगद्युरु श्रीशंकरायार्थ स्वामाजी श्री १९०८ सीमारताङ्गणतीर्धना महारात्र)

રાં કાર્ડું આપિવનીયુખામ્યાં સંકારક્રત્સપ્રધ્યુગનામ્યામ્ । સંકોનિયાપીતેરિપ્રધામાં નમોનમાં શીગુરુપદુકામ્યામ્ ॥ પવનગરીનેલુતપદ્મમનગમુસ્લેનગૃતોપ્રિમ્ । ત્રિમુનગગતતિપાસં દ્વામળિસ્ટ્યળિયોડે ॥

जिस संसारके देवता समान मतुर्जों के ही
तहीं, सभी जीवों के मनमें स्वामानिक पदी
पदी एक इत्या सर्वदा हुआ करती है
किहमें किसी भी समय, किसी भी खानमें,
किसी भी कारवामें, किसी भी कारवामें,
किसी मामानिक सभी क्षानों में
किसी मामानिक सभी सामानिक सामानिक सम्

मुख ही हो। इसी स्वामायिक इन्द्रासे प्रेरित होक्ट समक्ष जीव धपनी घरनी ग्रासीरिक, मानसिक, शैदिक, सार्थिक, हैशिक, सामयिक फाहि योग्यता तथा मजुक्सताके सञ्चसर स्रोक प्रकारक अयवाँमें प्रकृत रहते हैं।

सुचकी इच्छा के साथ ही दुःख हर करनेकी इच्छा वस्यांत्र करत राव सुचकी चाह हो ना स्वामाविक ही है। कारण, महत्यारि सभी सीमोंके मनका तो यहा स्वाम के मोहेरे भी दुःखके मात होनेका वह यक्षणे खहुमवर्में खाये हुए सीर खाते रहनेवाले सनेकालेक सीर बड़े-बड़े मुखोंका खेरामात्र भी खहुमत न का, उसी एक होटे दुःखका खतुमव करता है जीर हुनी होकर एकमात्र बसी दुःख-विवृधिकी विम्तामें पर बाता है।

परभागमा अगवान् श्रीष्ट्रयाचन्त्रके श्रीमुख्यते निकले हुए 'महान्तरय दुवः सलग् इस वाषयानुसार नहीं क्रारान्ति है, वहाँ सुरा कभी नहीं हो सकता ।

इस विषयपर विचार करना चाहिये कि हमलीग मनुष्य-योनिमें बाकर धपनी मनुष्य जातिको परा, पश्ची बादि सबसे श्रेष्ठ वर्षो मानते हैं ? जयसभी जीव मन्त्य, परा, पन्नी, कृमि थौर कीट-समानरूपसे ही द:ख वर करना भीर सख मास करना चाहते रहते हैं, अर्थात जब सबका ध्येष तथा खबर एक ही प्रतीत होता है, तब उन सब जातियोंकी धरेण मनुष्य जाति किस चाँशमें क्षेत्र है, जिसके चाधारपर मनुष्य अपनेको सर्वथेष्ट माना करता है। यह बेदश बजानी मनुष्योंका ही चभिमानजनित कथन नहीं है कि मनुष्ययोगि सर्वश्रेष्ठ है, जगदगुरु श्रीग्राद्दि शंकराचार्य भगवानुने भी घपने 'विवेकचडामखि' ग्रन्थमें मङ्गा भोक्छे पश्चार अधम श्रोकमें ही 'बन्तुनां नरबन्म हर्लबं' हरवादिसे सर्वेदयम यही विपय बतलाया है भीर श्रीमद्भागवतके प्रधम स्कन्धमें तो अनुश्ययोतिको देवयोतिकी ध्येषा भी भेड वतवाया गया है। पर हमलोगोंको इतनेसे ही सम्बद्ध न होकर कि हमारी मनुष्यजाति सर्वश्रेष्ठ है, यह विचार भी करना चाहिये कि यह क्यों क्षेष्ट हैं और हमें उस ब्रेप्टताकी किसप्रकारसे सफल धाना होता ?

in it is a



स्वामानिक इच्छा है। मनुष्य जब एक छोटेसे चूहेको पकड़वा पाइता है तब बह भी उसके हायसे बच्छह भागने खगना है, यह मुदुषका हो तो उदाहरण है जो केवल पामाणोंका नहीं, केरल मनुष्पींका भी नहीं, मखुत जीवमायका स्वामानिक जममिरद सम्बन्ध है।

धतः इस विषयपर गहरा विचार करनेपर नहीं निष्यर्थ निक्तिमा कि अनुसामी हो वार्त विरोध हैं। तिनमें एक है बरावी सुस्तु-तुःस सम्बन्धी रहि, जिससे वह रहा-पूर्व धारिकी धदेशा ध्यिकतर दूराहिले सब विचार करता है, बेक्क सारवासिक रिक्ते ही कही हैं करोवनियह से सामानती पुतिने को 'क्षेव-मेव' का विमान किया है और गीतामें भागवार श्रीकृत्वाने—

'यत्तदग्रे दिवमित्र वरिणामेऽमृतोपमम्' 'यत्तदग्रेऽमृतोपमम्' 'परिणामे विवमिव'

-तुलका रिभाग किया है, इसीये मतुष्यकाति थेए हैं।
सतपुर वह भी बहुना होगा कि को मतुष्य जितने बीतमें
सहस्ति होना करनेवात है, उनके ही बीवमें उसका
मतुष्यक सकत हो रहा है भीर को मतुष्य जितने बीतमें
सुरादिने वेचार करनेवात है, उनके ही बीवमें उसका
मतुष्यक सकत हो रहा है भीर को मतुष्य जितने बीवमें
हर तह तन हो चीतमें पोष्यक्षित मिले केविक्य काम करता
है, वह तन है ही चीतमें मोष्यक्षित मिले होक, काम करता
है, वह तन है ही चीतमें मीप्यक्षित मिले होक, काम करता
होता की भीरित हो होनेवी सैवारी कर हा है। वास्त,
कर्मांग मही नियम है कि मतुष्य हक कलामें सपनी विक् मृति, पुण, कर्म माहित्र मिल मीरिके बावणों में मिले होता
है, तसका काम काम सकरय जसी चोति हो होगा है।
मतपुर साम जाना नियम हारादिन हो, केवल वास्त्रविक्य
होता पुण, वह सुल्य-पोतिन हिरोपताक्षत बुदावा वास्त्रविक्य

मनुष्य-मोनिमें दूसरा विशेषताका क्षेत्र यह है कि बसकी एक ऐसा प्रपूर्व सापन प्राप्त है जो प्रत्य कियी भी पीनिमें नहीं मिलता। घीर सब घोनिवाँमें (जिनमें देश-यो-तियाँकी भी गणना है) जो शरीररूप सापन मिलता है, वह—

'६दं शरीरं कीन्तेय धेत्रीयलाभिषीयते'

-इन सगदर्-यथनोंके श्रमुपार चेत्र तो स्वत्त्व है, परमु है देवत्र भोगचेत्र, त्रिसर्गे पिचले सम्मोर्गे किये हुए प्रयन्पारके फलरूपी सुन्य-दुःख मोगे जा सकते हैं। इसके सिया सन्य कोई बास न हो होता है और न हो ही सकता है। चरन्तु सनुष्पेंकि श्रीर भोगचेत्र होनेके साथ ही कार्मेंच्य भी हैं, जिससे सनुष्प भएने भागी करणायांके जिस चातरबर करें, मिक चीर शान-मागाँके हारा लाग उदाकर रख्यें ही चयने मनिष्यत्वे विधाना बन सकते हैं। हसीविक्षे औमजासबन्नके प्रवास रकण्यों मनुष्प-जातिको देव-बोविक्स भी बरुकर मेष्ट तथा धन्य बनजाया है। हस विवेचनते यह रख हो गया कि मनुष्प-गरीर कार्यें के भी है।

बढ़ तो सबपर विदिन ही है कि मृत्य कब बानेवाली है इस बातका कोई निश्चय नहीं, वयोंकि वह Notice (वर्वसचना) देनेके लिये किसी नियमसे शावस नहीं है। फिर वह भी वहा नहीं चलता कि हमें चाले जन्ममें कार्यकेन्द्रसची अनन्य शरीर मिजनेवांता है या देवल भोगचेत्रस्थी पराश्रीर। साथ डी यह भी भविदित है कि पश-शारिके बाद फिर कर्मचेत्ररूपी सन्तप्य शारीर कथ मिलेगा। इस दशामें यह स्वयमेव ही स्पष्ट हो बाता है कि सन्दर-योगिम पाये हुए इसकोगोंको श्चवता मनुष्य-सन्म सफन करते हुए, चपने परम लक्यमें पहुँचने के लिये. सभीसे प्रवादता के साथ ल प्यकी श्रीर समस्य आहरी दृष्टि जगावर, साधनों में संख्या हो, जहाँतक हो सके. इसी जन्ममें अपने यथाये उद्देश्यकी पूरा कर खेना कारिये. नहीं तो कोई नहीं कर सकता जिंहम सामके विवे हमें फिर कर चनसर मिखेश । चनपन हम सोगोंको कारकात जागरूरता तथा चप्रमचता है साथ विचारपूर्वक, यह पता खगांबर कि 'हमारा खच्य क्या है और उसकी प्राप्तिके लिये कीन-कीन-से साथन हैं', उन साधनोंने प्रवृत्त हो. चपने सर्यतक पहुँच जाना चाहिये।

स्वय श्रीर साधन, वे दोनों ही भगदती स्वयंशियर्-रुवियी श्रुतिके इस मन्त्रमे स्वष्ट हैं —

> प्रैयावी चतुःशारे शारमा अहा तहारयमुच्यते । अञ्चमतेन बेहन्यं शरवत्तनमणे मवेत् ॥

अवर्गन, चाल (वीकाम) रूपी वायको प्रणानस्थी अनुसर वहास्त, मद्ध (वस्ताल) रूपी लायमें पृष्टीमा नि है। वाप्रमान होस्त वेयन करात पारिते, तिस्तरे कि सैते वाल जरवते तिक सी ह्मर-उपर न जास्त, सरप्रके भीतर प्रीक हो उसके ताम एक हो जाता है, वैसे हो जीपाम-स्थी वाल पारामस्थी जरवने तिक भी ह्मर-उपर न रहस, उसीमें पुसर, उसके ताम एक हो जार। इसी परमायरण कार्गमें हम को गाँकी सहायता गैनेके नियो, गर्थाम महर्गियंनी कार्मी शिवाल तायताके समसे प्रमुपत निये हुए वहे वहे तार्थों कार्मा सामने, स्थिता-मेर्थे के सुनात, क्रानेक तथा निवानिक मकारके साम्र-मन्यों के रूपमें राज्या, कार्माम कार्माक किया है। इन सन्योंमें भीमजनगद्गीता, कोमजागवन, भीमजागायण चारि क्रानेक सन्यास नार्योक्ष्यात है जो सायुक्तम मानीसे सेक्स कति पातर कीर अपनारमा मनुष्य तक सब मकारके परिकासियों के पानी-कार्गी योगना कीर करियारके क्युतार, क्रां, भक्ति कीर कान इन सीमों मानीस कुद्ध-कुद्ध मकास कालकर, इहलोक तथा परकोकों में साम सम्याख को मानिमें कालना सहायता वैने-कार्के हैं।

डपर्वंक उद्देश्यकी पूर्तिके लिये ही श्रीमञ्जगवद्गीतामें भगवामूने उपरेश दिया है। शीलाके प्रथमाध्यायमें धर्मनरूपी भरके विपाद्यक्त ददनसे सथा उस ऋषायके 'बर्जन-विपाद-योग' नामसे यह स्वष्ट है कि सहयों प्रकारके संसटोंमें पहे हुए, आगे पीछेकी परस्पर विरुद्ध बातोंका समन्वय न कर सकतेके कारण दुली होकर रोते रहना ही नश्का कच्छ है। भगवान् श्रीकृष्णरूपी नारायखंके समस्त उपदेशसे तथा 'भगवतीता' शब्दसे भी यह स्पष्ट है कि सख-दःख, साभावाभ तथा जय-पराजयकी चिन्ता छोड़कर निष्काम-भावसे श्रापने कर्तापको केवल कर्ताप्य-वृद्धिसे ही करते हुए, नाचते-खेळते-गाते रहना, चर्यात् सभी शवस्था चौर कियाचींस सबी शान्ति और बानन्दमें निमन्त रहना ही नारायखका जच्या है, अतप्त यदि किसी मनुष्यको सब दःसों तथा बन्धनोंसे मुक्त होकर, चपने अचयरूपी नित्य, शह. बढ. मक्त, सिबदानन्द्यनस्वरूपी परमारमरूप परमार्थस्वरूपमें पहें बना हो, प्रयांत यदि किसी नरको नारायण बनना हो, हो उसे भी, पार्व नरूपी गरकी तरह श्रीकृष्ण रूपी भारायश्वकी d auch रघका सार्थि बनाकर, तससे यह कहना साहिये कि-

'यन्त्रेयः स्यानिधितं ब्रीह तन्मे शियस्नेऽहं शाधि मां लां श्रपतम्॥'

भी आपका शिरद हूँ, झावडे शस्या हूँ, मेरे किये को मुझु निश्चित प्रेय हो यहा बताबाहवे , वतनन्तर नारायकारे म केवल भपने क्रिये वनिक समावन्तरवासक अस्तामके व्यिये यह सहितीय समय दान मास करना धोल्य है, कि — 'सर्ववर्यात्मारम् मासे ८ द्रारंते । जतः । अदेन्या सर्वयातम्या साध्ययप्रतिमाति साद्युषः ।।। 'कैल्लिय । प्रतिवासीद् साम सक्तः प्रणद्यस्ति ।। 'अस्त्याधित्त्यस्यो सा य जताः पर्वृत्यस्य । तेषां निकाधिमृत्यस्य साधाधि बद्धारद्वस् ।।।

'समलकारिक वाधवको त्यात के उन्न एक स्विश्तनस्त्रत वासुदेशको शरब हो जा। 'में तुम्मै मन्तृत्वी वासोंने मुक्त का तृत्ता, जा त्योक क का।' 'के कीनोव ! यह निववकर कि मेरे प्रकाश गरा नहीं होता।' 'मेरे प्रभाग मक्त मुम्मे दिल्ला करते हुद मेरी जवानमा काने हैं जन नित्य मुक्तमें सरो हुद पुरसंका योगचेम में स्वयं यहन करता हूँ।'

इसमबार उसीडे उपदेशागृतका धवण करके बालामें उसके-

कविदेतच्छुतं वार्य स्वीकांग्रण चेतसा। कविद्रशानसंगोहः प्रनष्टतं यनंत्रय।। - इत सभको सुरुक्तर वह निश्चयकं साथ इनको यह जवाय देते हुए कि—

> नद्ये मोहः स्मृतिर्देशमा स्तत्त्रसादान्समाण्युत । स्थितोऽस्मि गतसन्देहः करिष्ये वचनं तव ।।

'हे बच्युत ! आपकी कुरासे से। ओह नह हो गया,
मुझे स्वृति सात हो गयां, में लन्देरारित होकर रिल हैं,
सब आपकी हो आदाका पातन करूँगा।' बना-मित्रि-मेंके
बजते निर्माण तथा निकित्त होकर, उसीके प्राप्ति अपने
स्वश्ची जामा होरकर, उसीकी पात्र स्वर्ण क्यांने
स्वर्ण कर्माणकर्मको प्रा कारके, इस नियमके
स्वराहा दिल्ला

श्रीयासकेमनाः पार्यं योगं युक्तनसदाप्रयः। असंशयं समग्र मां यथा सास्यसि तष्टरूण्।।

अकितमेत कर्मेवोगसे खन्तःवश्याकी शुद्धिके हारा संशय, विकल्प, विपरितभावनारूपी दोपप्रपरदित धौर धलावड विज्ञयको पावर मोपको मासि वरनेमें दिशव प्राप्त की जा सकती है, वर्षोकि—

> वत्र संभिधरः ऋष्णां सत्र पार्धो धनुर्धरः। तत्र श्रीर्वित्रयो सूतिर्मुच नीतिर्मतिर्मम ॥

—जहाँ योगेशर बीकृष्यरूपी नारावणको अपने सारिय-रूपसे चागे वरके धनुपरिश पार्थरूपी नर पीछे रहकर युद करता हो, बर्दी लक्सी, धय, विभूति और मीति अवस्य ही रहेंगी। यहीं गीतीक उपदेशका सारांग्र हैं।

द्वी प्रवास्त्रे नर दोकर नातायण बननेन्द्रे किये, प्रायंत्र रोना होएकर मार्ग रहनेन्द्रे जिने, नारायणको ही प्राने ग्रीसाह रूपी राच्या साराय चनावड, ब्रद्धा, अधिक प्रीर सेन्द्रेयकर रिभंद समा निकित्त दोकर, वसीके दापर्ये प्राने राच्यों जामा सींच्या, ब्रालीको प्रान्त्रहारा व्यक्ति कर्णाक्रमांच्या परिवासिक क्यानेकोंक्के निराष्ट्रका व्यक्ति केशक बर्ताय दुदिन प्रारं करके, अस्तित्रण कर्मवीमाने करणकरायको द्वारिक द्वारा जान क्योर मोच्या मार्ग क्यानेमाने विषयों द्वारा होगा।

भीमतागवतमं भीमतवान्ते श्रीकृत्यच्यम्हि रूपसे इसी सारको घरने इतिहास सथा श्रीवनचरित्रसे दिखाया है कि नारायणका यही छच्छा है ओ अपर बताया गया है।

श्रीमम्बासायपूर्व श्रीभगवान्त्रे श्रीमम्बन्दस्यये प्रवाद स्त मायेक व्यवहारमें प्रवानी क्षावृत्येवृत व्योवन-त्यात्रीये मञ्जूपमातिको यह दिख्लाया है कि मञ्जूपमात्रको किन् प्रवाद स्तित्तर्व प्रमेक प्रवाद हुन्कोंक सामण करते हुन् पर्मका पावन करना है। समें, शक्ति कीर कान इन तीनों सायकार्थी एकि भी स्त्रावन्त्र सोदासक्यक इतिहास सम्बोतार्थे विदे कामन्त्र सावश्यक श्रीद वस्तुका दिखा देता है।

यतेक मकार सम्मान्यों के साथ व्यवहार में प्रोधिक सर्वायको रहिते देखें तो भागता कीमान्यको व्यवहे पुरुतन, मासा, दिमाता, दिना, भागूनाक, सहावक, सेवक, सर्वताचाराच प्रमा चाहि सभी सन्विक्योंके साथ महावक के स्वयुग्धें का प्रभी ऐसा सुन्दर साहत् व्यवहार किया है को सार-मत्रां इस कोगों के तिक व्यवहास मिनसे रिकाम्ब के सार-मत्रां इस कोगों के तिक व्यवहास मिनसे रिकाम है सीर मिनके हैं, व्योधिक सीरामकन्द्र सन्वन्धी कोई सावस्य कमा मही है, व्योधिक सीरामकन्द्र सन्वन्धी से सभी सार्वे साराधिक हैं।

परना इस प्रसंपमें इस बावके बिल्वे कियेक इससे प्रात देशा होगा कि स्थानसभी द्वाय तथा मेमले बाव बनते बिल्वे में तथा परिक्ते स्थानित करिए क्या किसी भी प्रयोजक जरुवाई सासरकता बही है। इस विश्वमें भी प्रयोजक जरुवाई सासरकता बही है। इस विश्वमें भीमामबन्द्र में स्थान, चित्ता, पुरश्चादि सासरसभीयों भौमामबन्द्र में सामा, चित्ता, पुरश्चादि सासरसभीयों स्वितंत्र, मानावित सरस्वसभी गुड, प्रश्चवनमें साहे इसमावीनादि सरस्वसभी स्वीत स्थानसभीय स्वान्त्रमांत्र

ब्रादिका स्वरण कराना पर्याप्त है। विस्तृत वर्णनकी कोहे ब्रावरयकता नहीं।

कर्महाबदके चन्तांत पत्रिय-धर्मको लास प्रदिष्टे देला आय तो वबमें चयने सुल-दु-खादिकी परता न करते हुए, केवल धर्म-बुद्धिले तथा दिना हो देए शशुनिवहंख करना और अवाधनक बन्ना हो सुन्य है। अगवान् धरेतामध्यम्रजी हुन होनों खंडोंमें भी खनुषम ही थे।

श्रुविवर्द्धमें भगवांत्र भीरामचण्डती अपनी बाहवाबस्थाने क्षिये हुए ताडकार्रहासं केहर चण्यते रादवादिकं संदारक देवरदित हो बेवल भनेश्चिद श्रीर सत्प्रविज्ञाने साथ परिहतीय ग्रोता और पराक्रमले पुद्ध बरवेशने हो ये। इस बातका पता हसीसे जगता है कि बाब ओकरमञ्ज्ञी हुन्दुविव्हों किसी भन्नार किसी भी स्था राजादित पराण न व स्तके तथ उन्होंने पेण्डाबा हार्यों वेश्वर बहा बि—

> वर्गातमः सलसम्बद्धः रामो दाशस्त्रियेदि । सबो बावतिदन्दः शरैनं जडि रामणिसः।)

'विद्वारपनन्यद श्रीराम धर्मामा, सलासन्य श्रीर रखाँ में मिन्यूयों व रखतेवार्ध से तो यह बाध्य इंट्रमितरास धर्म से ' इस्त्यस्य श्रीमानव्यत्रीवीय धर्मामा, स्वाध्यमित्रता और विद्वार्थ सुद्वीश्तापर सन्त्रस्थी राप्य करने होने हुए पुक्र से साथाने वर्ता अपयोग स्वाध ने कर्माने पूर्णामान्य मार सावा था। स्वयान प्रवाधनार श्रीकृत्याच्यात्रीने भी स्रोधमान्यात्रात्रके स्रमारपायमे सपनी विम्रुतियोगे वर्तामने प्रसंसामें पानः सावन्यतास्य एत्याने स्वर्धामाने पानः सारीसं स्वर्धान सुद्वारीयोगे श्रीधानक्ष्रती सर्वास्ताम स्वर्धानी

प्रजाशावनके विषयमं तो ये आगावसिन्न चात वै कि श्रीशावध्यप्रश्चीने प्रजाहे मनमें गंकाको सम्मावनाले भी वले दुश्य म होने देदेके एशावले, उस्त माणवी श्रीसीताहोतीके नियोगको परम सलस्य दुश्यदेदनाको स्वा, को करूने प्रश्लोंने भी फरिक्ट दिख्य भी फी. दिख्ये दिख्ये स्वात्य ज्या बद्धार्मे अपनान्दे भर्चकर कह कराने थे।

बीहामचन्द्रजीका शासन इतना धर्मर्वं या कि - दनके राज्यमें प्रवाको दुक्तिय, बकावसृष्टु चादि चात्र-कवकी दक्षिते तो चतिसाधारण दुःश्व भी कभी नहीं हो सबने थे।

जब इस निवमके पृथ्यात्र शपवादस्वरूप एक माक्षण बादककी मृत्यु हुई चाँर उसका पिता मगवानुके राजभवनके

इारपर पहेंचकर रारी-खोटी सुनाने लगा कि राजाके ऋधारी ही हमारे बालककी चकालसूखु हुई है इत्यादि, तब थीरामचन्द्रजीने उसको राजनिन्दा करनेवाला राजद्रोही समसकर न तो द्यड दिया और न उसका कोई सबडन या प्रतिवाद ही किया यविक ऋत्यन्त नश्चताके साथ यह स्वीकार किया कि 'यद्यदि इसने स्वयं ऐसा कोई पाप नहीं किया है. तो भी यदि हमने चपने राज्यमें ऐसा कुछ कुकर्म होने दिया हो जिससे इस माहाणके याजवकी यह शकालमृत्यु हुई है, सो यह चन्धें भी हमारे ही दोषसे हचा है. बयोंकि राजाकी हैमियतमे हमारा ही यह कर्तस्य है कि हम इवर्ष मदाबारी रहते हुए राज्यमें भी पापाचरण नहीते हैं। धन्य हम प्रयोक दिशामें यूमकर पता लगायेंगे कि शास्त्रमें क्टरी क्या पाप हथा है जिसके कारण हमारे राज्यमें एक शार भी चपवाद रूपमें भी एक चकाल-सृत्युका प्रसंग धाया ।" तहनग्तर भगवानने उस पापका पता बागाकर बसे वर भी कर दिया. इस विषयपर विशेष विकारकी आवश्यकता बरी. क्योंकि श्रीरामचन्द्रजीके समयके बाद शेता श्रीर हायर इह होतें यगोंकी नमाप्ति होका सीमरे यगमें पाँच हजार एक्ट्रीम चर्रके बीत जानेपर भी, यस भी, अध-अस मचा बही-बही सादर्श राज्यसम्मन तथा प्रजाके मसका क्रिक करनेकी बायरयकता होती है, तब-सब बार तहाँ-लहाँ शारे भारतवर्षमें यही प्रधा है कि सम्पे-सम्बे वर्णन म बहरे. बादमें थादि थाटे शब्दोंने भी काम न खेकर.

बाजात्मवार, युद्धंगान, पार्मिक शामन बाहिके व्यक्त व्यक्त स्वादा स्वादा स्वादा स्वादा स्वादा है। ब्रिट्स क्षेत्र स्वादा स

देवल 'शमशाय' शस्त्रये ही बना चयने पूरे तायवंदी श्रम् दर देने हैं चीर भीना भी बनवा चर्च समस्त खेने हैं :

अवासनाधारणको रुप्ति को शांसक्तकप्रजीक।
... पराचीर नवा व्ययुक्त व्यक्तियोर पर्योगक
ते , र भीरोका की व्यवस्था समानास
.रोजीय वरने वि

समिति कर्नेति की कृति समीकि । इसमाब अमाब कासमाब बार्ल्यु । -भीर मुक्तियुरी थीकागीरेज्ञमं भीविशनायरूपे यथिष्ठाता होकर, नहाँ मरनेवालाँके दिएता कर्यमं कारे अमुख्यक्षे ही सामतारूक-परागेपदेश देकर उनको मुक्ति देने हैं इत्यादि । ये सभी बार्ल हरनी भरपात हैं कि हुन्या केवज उन्जेख ही पर्योग्न हैं, सर्योगकी साम्बरयकना नहीं।

अय कर्मे, जवासना और जानकायहकी समितित रिक्षे वर्षों क्यासना और जानकायहकी समितित रिक्षे वर्षों क्यासना उपयोगी आपापितक रिवे मी विचार करना चाहिये कि श्रीरामाययका सताया हुआ आप्यापितक स्वाव कीन्मा है ? पाम स्वय करा है ? चीर करावे साध्य करा बया है ? हुस विचयप माशाद कारहुए सीधादियंकरायार्थं महाराजनीने स्वय 'अपन्यनोप' नामक द्रारेट परन्तु शति सुन्दर चेद्रास-प्रथमें हुस एक ही स्रोक्षेत्र दिग्रहर्यनमात्र करा दिवा है। सथा—

वीत्वां मेहार्णवं, इत्वा कामकोवादिराध्रमान् । शान्तिसीता समायुक आरमारामो विराजते ॥ श्रीमञ्जावद्गीताके

यस्तरमरिदेव स्मादारमञ्जाब मानवः । आरमम्बेव का सन्तुष्टः।। इन साचवाँके सनुसार जो चारमाराम बना हो, वरी

रण जनवाक स्नुसार जा मात्राशाम बना हो, वर्ष मान्मारामरूपी श्रीशम धानानरूपी सगुद्रसे पार हो हर काम को चादिरूपी राचसोंका क्य बर, शान्तिरूपी सीतागी साथ विराजता है। इसके सार्व्यका निश्नक्षितिगत विश्वय है—

सीतोपनिवाही सत्यावा गया है कि श्रीतामण्याती थे धर्मवीका मी सीवामी साथितालकुक्त प्रमानावस्त्री धर्मवीका मी सिक्तिक है। यह महाविक स्वावन्त्र किक्तिकों महाविक है। यह महाविक साववन्त्र किक्तिकों महाविक स्वावन्त्र किंदि है। सह महाविक साववन्त्र किंदी के स्वावन्त्र किंदी के स्वावन्त्र किंदी के स्वावन्त्र किंदी कि स्वावन्त्र किंदी कि साववन्त्र किंदी हो स्वावन्त्र किंदी कि साववन्त्र किंदी कि साववन्त्र किंदी किंदी

पर दुःख देता हुआ, उसे रुवाते ही रखनेवाबा यांचारस्पी राषसेवर है जिसके साथ शान्ति कदापि ठहर वहीं सकती।

सतप्य श्रीमज्ञातवत दागसका-पढे रासपञ्चानायों में ऐसा एक प्रसंस पाता है कि व्ययनेके मुख्यक प्रमाना, व्यवन्यक्ष्मित्रवाक्यों के साथ नारती, खेळती घोर माती हुई श्रानन्दमें नितमन हुई श्रीहरणाढे दिव्य दूरीन करनेयाजी गोविशों के समसे जब धाईच्यर का मध्य, सब मन्यवन् पुष्डमा सन्तर्यान हो गये । वर्गोंक प्रसंस और रासाम-वर्गेण एक साथ कार्म नहीं हो सकते, पत्त्व अव भगवान्ये पुत्र हो जानेदर गोविका चहे दुःवाम पडकर उनकी सोजमें सातती हैं धौर-जम्मतकाल्यानिका उन्होंके सत्तव प्यानसे दुनः धारनेकी सर्वया भूवकर तत्रुथ वन जाती हैं, सव---

तासामाबिरम् न्हौदिः स्मयमानमुखान्युगः ।

-भगवान् इँसते-ईंसते फिर प्रत्यच हो जाते हैं, क्योंकि सर्दशरके छूट भानेपर परमात्माका दर्शव निर्विक्रतासे हो सकता है!

इंतीबिये सीमजागतक द्यासक्य में गई बात भी हुंदें बियससम्बर्ग समाय करती वे होने बाद वाईकार क्यों क्यों मिलते ही तथीं और वह सिकते हैं तब बसे नार बाजनेके सिपे द्वी मिलते हैं। व्यापक शान्ति-क्यियी सीजारी बाईकारकरी शब्वासे सिख ही नहीं बकती!

धव यह देखना है कि शानिकदियों सीताओं धामारामकरी श्रीरामके साथ किसमकारते मिलती हैं ? पहले तो श्रीहन्मान्तीके हात तीलाभीका बता सगाया जाता है। साम्पारिक हरिले यह हनमान कीलनी तथ हैं?

द्रवागरि विद्यास या विचाइको बाज्यारिक त्वर हैं, विचारके द्वार सान्यतामध्ये यह वता बार सकता है कि सान्ति कहाँ रहती हैं ? दुन्यारुगे (विचार) से हो पता खाता है कि सोतावी (शानिक) को खंखारें (कर्णत संत्ये मिलकर्गेण प्रचा भाती तथा ले, सा-बालन्द, बा-रिंप, बार्यार्थ पतान्यको सुचिमें) राज्यवे (पाईकारिक) रुप पोगा है। वहीं (जंजांगे) रुपके खानेश्य सी सीतावा (शानिक) कियो विचारित खानार्थ बार रुपको जाती, बार बेरल 'धारोक' वनमें (सार्यात दुन्क्वेसाहिक सीह धारवा-पातामाहरूगी सकरायुक्त सानन्यते हो) रिचय रहती है, इसका सारा यह है कि कला स्वात्यो विकारहर्मी ("तन्वं

तराज्ञलम्', इस न्यायसे) नवर धानन्यमें यमार्थं शान्ति कमी नहीं रह सकती, क्योंकि उसका तो वास्तिक स्थान अशोक (जानन्द) का बन ही है।

इसके सिवा श्रीमहासायक्रमें यह भी वतवाया जाता है कि जिस सीवाजीको रावण की गया था वह तो छाथा-सीता ही यी। श्रमती सीताजी सी श्रीरामवीकी श्रामिमें क्षिप गयी थी। इसका भ्राप्याध्मिक ताथर्य यह है कि जिस शान्तिको शहंकाररूपी शवश को जाकर मधर धानन्दरूपी लंकामें रखकर देखता है, वह ती शान्तिकी छाया या का वासमान है : चसकी शानित सो धारमारामरूपी श्रीरामकी ज्ञानरूपी व्यन्तिमें ही छिपी रहती है। बहंकाररूपी रावणको यह बरासी भी नहीं मिल सकती। उठाकर के गयी हुई उस खाया-सीताको भी त्रव खंका (प्रवांत नश्चर कानस्दर्शक्त) में विचारकपी इनुमान्त्री देखते हैं तो वह द्वापा-सीता (पर्धात शांतिकी शाया वा पामास) भी बाहरकी बसाओंमें व होकर संकामें भी (बर्धांत मधर बाजन्यमें भी) वाशोकवनमें वार्धात भीतरके मकरकरप-कपी समिवानन्तके वन या अवदार्ति ही विकामी पहली है भगवती शति भी कहती है---

तस्येव मात्रामुणभीवन्ति ।

इसम्बार विचारकरी इन्मान्त्रीने ग्रान्याभासकरी इाचा-सीताके रहतेके स्थानका पता खगाकर प्राप्ता-रामरूपी शीरामको बत्रकाचा । प्रतपुत इन्मान्त्रीका यह प्रसिद्ध कोण प्राप्यासिक इष्टिसे भी डीक है कि-

> अक्षनानस्दर्भ वीरं भानकोशोकनारामम् । कपीशमध्हन्तारं वन्दे कंकाममङ्करम् ॥

श्रञ्जना = बुद्धि (भगीत, सनते नेति कर्तरि कर्मति च लुद्)। अधिका पुत्र तथा उदिको प्राप्त क्षेत्रेयला को विचार ही होता है। जो काम प्रतिचारते किये जाते हैं, करते बुद्धिको वस सामय किमाना भी धानन्य हो, भाष्यु पीखें तो मधदूर प्रमाणपका दुःस ही भोगना प्रस्ता है।

घीरे धर्षात् (बि-१-१०) मेरका विचारसे ही यथाये हितके खिये प्रेरखा होती है। विचार ही वास्त्रवर्मे धीर होता है। व्यविचारते पथि तास्क्रामिक विकारस्पी घीरता होती है पर धन्ततक रहनेवाली यथायें वीरता नहीं होती।

जानकी सर्वाद (नायते रहि जनः, बनश्रासी कथ नवाद नामन्द्रश्र जनकः) जन्म भानन्द्रश्रे दृष्ट्र होनेत्राची हृद्धिः चेमके भारको अपने कन्योंपर वैसे ही वका लेंगे जैसे उन्होंने पहाद, मौपदी, मोरावाई आदि अपने भक्तोंके भारको पारन्वार बठाया था।

हम सभी दुःखींसे गुफ होकर शान्ति और शानन्दर्भे रहना चाहते हैं परन्तु शान्तिरूपियो सीवाजी शामाराग-रूपी रामको द्वोदकर दूसरे किसीके साथ कभी नहीं रह सकती श्रीर—

'अशान्तस्य कुतः सुखम् ।'

— दिना ग्रान्तिके धानम्य भी महीं रह सकता, हत्तविये इस संस्कृत और हिन्दीके एक धतिस्तत्त ग्रन्थ-पे पते साथ उद्याते दुए, इस खेलेका उपसंदात करते हैं कि 'है करपाय-पाठको और कहाराय-कांची सकत्त्रो, यदि सुग्र-चाराय चाहते हो, सो अनते, वाचीले और घपने कामसे स्व जोरसे कही 'बा राम!' श्रमी तो'बा राम' जा राम' करं रहते हो, वर्षात् अवने हृद्यके भीतर रामके तिये स्थान ना देते हो तो राम कैसे चा सकता है ? धर्मात् 'बाराम' कैर्ट हो सकता है ?

चतपुर क्यार चाहते हो भाराम, तो मनसे चाहे 'भाराम', वाचीसे कहो 'भाराम' कामसे भी कही 'भाराम और फिर पाते रहो 'भाराम'—

जय भगवान भीरामचन्द्रजी की।

तीरको भोहमहार्णवं स्वियनिज्ञानन्देशसमा रावणं हत्वा कामगुक्षासुरम्मजुतार्दकारतेकापियम् । यूवः ज्ञान्य विचारक्यस्तुमरपूर्वेश्वेतां प्रेमसी भोतां वाप्तिनोक्षकर्ति विजयते कारमाभिगामी हरिः।।

रामोपदिष्ट-भक्ति

(त्यक-स्वामीयी मीभोडेवाराची)

श्रयोध्यानगरे रुग्यं रहमण्डपमध्यमे । रामश्रन्द्रमहं बन्दे श्रविदानन्द्रवित्रहम् ॥

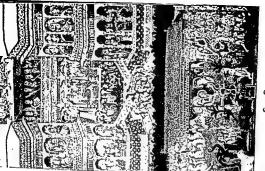
सावकारतः वन्द्र शावस्तरम्य अग्रद्ध । प्रदे विष्य श्री क्षावोध्यावाती प्रमुख्ये पाण्ट्र विष्य मुक्त क्षीत स्वास्त्र हैं, तो भी भट्टि भावस्त्र स्वस्ते क्याविष्ट्र विषयों का विक्रिय वापु कम गणा हो, तो बसको गीरतों के विष्ये व्याच्या क्षायान बाहियाँ व्याच्ये संसाद विश्वांका स्वास्त्र हैं क्षायान संसाद विश्वांका

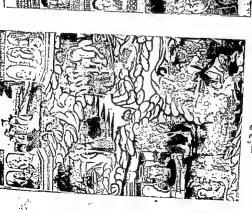
> :बामियो र काव सब सेरी बाद शुनिये, यह ं बादी हैं, इसकिये सुवक्षणको बार बीजिये,

क्योंक में करने किसी स्तापंके किये नहीं कहूँगा, सन्के कामायंके देतु परसापंके क्यत हो कहूँगा, हल क्यामें किसी मानविक में नहीं होगी, सन को कामायंत्र सिंदी को क्यामें के मानविक में नहीं होगी, सन को कामायंत्र सहित वेदस्तायंत्र सम्प्रोंके स्तानुस्तार कहूँगा, वह बात में देखें दिखाने के सिंदे को नहीं कर कामायंत्र कर के मार्थ कर कामायंत्र होगी के मार्थ कर कामायंत्र होगी कर सामायंत्र होगी कर कामायंत्र कामायंत्य कामायंत्र कामायंत

वणव तीन प्रकारके होते हैं, युव प्रमुस्तिमन, व्यानम्बार्वास प्रमाण करते हैं, पृत्तरे सुद्ध दे स्तिमान, वेथे—तियाचे विक्र प्रता प्रकाशन करता है, सीर्या कालागसिमन, वेथे—ची मध्यामाहित परिगे वार्यावाण करती है। यहाँपर प्रतावान्ते प्रयास प्रिष्ठे स्थान व्याव साम्रा कर तिथ वचन कहे। भाष प्रमु-साम्बन व्याव हैं—

'हे पुरवासियो ! मेरा सेवक वही है चौर मेरा नियतम भी वहीं है, चो मेरा धनुशासन भागता है चर्चार वेह, वेहान्त चाहि साथ, संहिता, पुराष, रामाव्य चाहिमें नियनी बीमुलसारिय चालाई है, उनको मानकर, बनके





शिव-विवाह गहि गिरोस हुछ कन्या-पानी।

जनम कोटि हिंग स्मार हमारी। बर्जं रंभु मुद्र रहीं हुमारी।





अपर मान क

प्रमुतात भावरण करता है, यही मेरा विश्वतम सेकड़ है, मैं इसीडी सर्वम्बार्स रूप करता हूँ और जो मेरी स्वामारे मेनिइन करते हैं, वे क्षणी करतुरका बैसा ही एक भी भोगते हैं, इसीडीन सेत हुन मेरी स्वामां के ब्युकार बजीते, तब तो मैं सब म्बास्ट मुमारी रण करूँगा, बीर यदि न मानोगे, तो धरने क्लिके खनुसार सुक्दुरका भोगीते, उससे मेरा इस्त होन स्वी!

सद्भग्वर भरावान् कारणासभिमत वचन कहते हैं— 'माहयों! यदि में कोई क्षणाय बचन कहूँ, मेरे जिस वचनमें भाषपत्रेमीति है के स्थामत्य साधानत हत्यादि सक्षकी सम्मति मात्रे होते वचनको सुन मत्र कोक्षक सुन्ने रोक देना, कर्णाव सामा-भाषका हर सत्त मानका, क्योंकि सत्युरुपोकी समाम सत्युरुरके तिर्वे कारत करना जिलन नहीं है यही भीतिशाक्षका सत्त है।

'आहपो ! विचार करो ! यह अनुष्य-गरीर घड़े आस्त्रहें मात हुत्या है। यह ऑस्ड्रे क्षेत्रेन जामांच्य पुत्रच वद्य होता है, अय वस उत्युक्त-गरीर पाता है। यह शरीर हमुद्रक्रिय हैं घर्मांच देवताओं को भी महुप्य-गरीक्ष माति दुस्ट हैं। यह बात दियों नहीं है। वेद, ग्राच, संदिता, ग्रास्य, रामाच्य, रहस्य, गाटकाहि हों। प्राम्त महित्य है कि मनुष्य-गरीर ह्यांकिका हार है

'देलो ! यह ममुख्य-ग्रहीर सथ साधनोंका धाम है। इस शरीरमें सभी साधन हो सकते हैं-प्रथम कर्मके साधन-यश, होम, पुता, लप, तप, तीर्यं, वत, दानादि; दूसरे शानके साधन-विवेक, वैशाय, शम, दम, क्याम, तितिचा, भदा, समाधान, मुमुद्रता, भवया, मनन, निविध्यासन श्रीर तत्त्रं-पदार्थं शोधनः तीसरे योगके साधन-यमः नियमः शासनः मत्याद्वार, प्राचायाम, व्यान, धारका और समाधियुवं थौपे मक्तिके साधन-अवया, कीतंन, सारण, सेवन, अर्चन, बन्दन, दास्य, सक्य तथा धारमनिवेदन हैं। इसप्रकार जितने साधन है वे सब मनुष्यदेहते स्वामाधिक ही हो सकते हैं. इसक्षिये यह देह सब साधनोंका घर है, सब साधन इसी देहमें रहते हैं-बन्य देहोंमें नहीं रहते । पछ, पची, कीट, पतंत्रोंमें तो साधन करनेका ज्ञान 🛍 नहीं है, देववीनिमें शान तो है परन्तु वे पेरवर्ष-सुख-भोगर्से भूबे होनेके कारवा साधन कर नहीं सकते, न्योंकि बमरखोकमें होनेसे वे बन्य-मरण भौर गर्भवासका भय नहीं मानते । मनुष्य कृतुलोकमें दोनेसे जम्म, मरब, गर्भवास, नरक, चौरासी बादिका सव

मानते हैं। सनुष्योंमें ऐरवर्ष भी भवत नहीं है, इसलिये वै विषय-घाराा, जौकिक-सुखत्यागकर मुक्ति-मार्गपर बास्द हो जाते हैं। इसप्रकार मनुष्य-शरीर मोकका द्वार है, क्योंकि इस शरीरमें मुक्ति प्राप्त होना सुगम है। ऐसे शरीरको पाकर भी वो परखोक नहीं सुधारते, मुक्तिमार्गमें बारूद नहीं होते और विषय-भोगके वश हुए, इन्द्रिय-मुखोंके साधनमें छारे रहकर धनेक कुकर्म करते हैं, से धनेक बुःस सोगते हैं। काम-बरा-पर-की-इरण, क्रोध-बरा दूसरोंकी हिंसा, खोभ-वश चोरी, क्यी, पर-धन-इरख, ईपॉ-वश बराया अपवाद करमा, इत्यादि कुकर्म करनेमें तो नहीं दरते हैं परन्तु जब उन्हीं कर्मीके फतरूप धनेक प्रकारके दुःस भोगते हैं, सब शिर पीट-पीटकर पहताते हैं। भाग क्षराना, चोरी होना, राजाहारा खुटा आमा, चम, रवास, चीवल, बाई, बदासीर, कुछ बादि किसी करां हो राका होगा. बन्दु, स्त्री, पुत्र धादिका वियोग होना, वेंपुवा होना, दरिह होना इत्यादि धनेक प्रकारके कष्ट जब पाते हैं, तब पत्ताते हैं और कास कर्म पूर्व ईरवरको स्था ही दोप हेते हैं।'

'यह र रांका होसी है कि सब जीवोंकी व्यवस्था कास, कर्म जीर ईरवरके कथीन है, तो बुधा दोप कैसे हुचा ? इसका समाधान सुनिये —जीवोंकी श्यवस्था काल, कर्म चौर ईरवर-के भाषीन है-वह ठीक है। अवस्य ही हैरवर सवपर प्रधान है. परम्त बीव भी सो हरवरका ही बंश है, वह सब प्रकारसे चैतन्य है क्योंकि वह चपना गुच, स्त्रभाव सब सामता है भीर वेदपुरावाँद्वारा काल-कर्मको भी जानता है क्योंकि बेद उसी ईंधरकी चाला है। वेदका सिदान्त स्मृतिहारा धाचार्य सुवाते हैं। जैसे कि सरोजसुम्बर वर्म-शास्त्रमें कहा है-'बाहार, मैधून, निज्ञा, श्रव्ययन, दान देना और खेना वे सब सन्ध्यादालमें वर्जित है। 'काँसेका पात्र, मसूर, चने, कोहाँ, ग्राक, शहद, पराथा बाब, दो जारका मोजन और सैधन बादि प्राइसी, विदरणा विधि और वस्मीको वर्जित हैं।' इस महार कासका यमान बताया है । स्वामाविक वर्जित कर्म इसमकार बनाये हैं कि 'ओ बाएनी सम्बन्धिनी मारीको कट देता है. वह दिन-प्रति-दिन अझ-क्यादि पापाँको प्राप्त होता है।" भीर भी कहा है 🖥 'तेल मजनेडे बाद, स्टब्डेंस साथ क्षानेडे बाद, चीर बनवानेके बाद चीर मीयुनके बाद मनुष्य बदतक स्नानसे ग्रद नहीं हो बाता, तबतक वह चारहाजके समान

है।' इत्यादि कर्म सुनिन्युनिहास प्रतिक हैं । चोरी, दिया, पर्यागमन, भनदृश्य, शहित्ता बारवादादि महारागेंकी शी सभी बानने हैं। इसरकार आन-कृतकर भी बीच न पुरुषकान मानने हैं, म शीर्थांदि प्रदेश मानने हैं और न हैयरके इत्तरका भय बरने हैं। शब बाजरे, सर्वत हर्गमहिन महा-याप तो बाते है पाना शब जनका कव भोगना पहला है. तब कायको मिरया दोष क्रमाने हैं कि इसारे जिये जानकप वर्षे यह दिन हैं था इसारे दिनोंचा प्रम है इगीतिये हमें वे हु:लड्रायी भोग बात हुए हैं। कभीको भी मिण्या दीप लगाने हैं और बहते हैं कि इसको कर्म बुध्य देते हैं। हमीप्रकार इंबाको मिष्या दांप देने हैं कि ईवा दमको दाव देना है। हमारे पद्दोसीको सो एव यन वे रक्ता है, वह दिन-राग मूच-मजाई साता है और इसको मनी-रोरी भी समयपर शहीं निसती। सारोश यह कि काज, कमें भीर ईंचरका हर तो मामने नहीं, दुष्ट-स्वमाव-यश देव-मुखबे लिये. स्वार्थ-हेन बानेक कुळाँ काते हैं, वरन्तु कथमोगडे समय श्चपना दोच काल-कर्म श्रवधा ईबरके शिर मेंदते हैं । इसकिये हे परवासियो ! देलो, धैसा तम्हारा श्वीर है, बैसा ही हमारा भी है। जैसे हमने विषय-भोग त्याग १४से हैं. बैसे समको भी त्याग देने चाहिये। विषयोंमें बासक नहीं होता चाहिये।"

'हे माहपो ! यह मनुष्य-शरीर विषय-भोगके क्रिये महीं प्राप्त हुआ है, इसिखये इन्द्रियोंके स्वाद आदि देह-सक्छ साधनों में मनकी चासक करना उचित नहीं है. क्योंकि मृत्यलोकर्मे सुख सो थोड़े हैं पर शोक, वियोग, रोग, कबह, भय विशेष हैं । जन्ममर यहाँ वने रहनेका निवय भी नहीं है। चयामहर सरीर है, दस धावेगा वा गहीं, इसकी भी खबर महीं है. फिर यहाँ सुख कैसा ! को बोग यश, तपत्या. पूजा, पाठ, जप, सीध, अत, दानादि सकाम कमें करते है वे उनका फल सुख भोगनेके ब्रिये स्वर्गब्रोकको धाते हैं। पान्तु स्वर्गमें भी सुल योहा ही है, बदवक सुकृतरूप पूँजी रहती है, तबतक तो सुख मोगते हैं, पर पुरुष भीवा होते मृत्युकोकर्मे गिरा दिये जाते हैं, इसकिये स्वर्ग भी दुःखदायी है। यहाँ बाकर फिर इन्द्रिय-सुस-साधनमें खगे, तो चौरासीको चले काते हैं। जैसा कि गीतामें कहा है ्'क्ष'णे पुण्ये मत्यंशोकं विश्वन्ति" स्वीर सम्बोपास्थानमें कहा है-'स्वर्गवासस्त् तैः पुण्यैः पुष्यान्ते च पदस्यः ।

'है माहती । मन्त्र शरीर वानेका क्रम बद है

भव भगरात् चनिश्योक्ति क्यबार्वकारते देश वरमानते वर्गनेषका बोच कराने हैं —

धाचोगतिको शास ही कारत है a'

'दे भाइयो ! पारममध्य तो सब चर्नोकी मुख है पार गुप्ता वानी घोँपवी किमी कामको नहीं 1 बी सीम स धर्नोकी मूख पारसमधिकी श्लोकर बर्द्रमेने निकर्म धोंघचीको वठा धेते हैं, वे मूत्र हैं । पारसमिविके छ बार्नेर कुषात बोहा भी शुक्यं हो बाता है। इससे क्यें-बराकी श्रवि-शुक्ता, घरवी-पाम, मूचव-बसन और भीडन वाइनादि सभी कुछ हो सकते हैं। ऐसी पारसमन्त्रि किसी मूर्लंको मिछ गयी, उसको चाहिये था कि वह उसके गुय विधारता परन्तु उसने उसके गुणोंका विचार व का उसे बद्धात देलका क्रिक दिया । क्रि बसे थोंचथी मिली, मुहाबनी सूरत देलकर मूर्खने उसकी बन खिया। धोंववी देलनेमात्रको ही सुहावनी होती है, यह किसी कामकी नहीं होती। उसमें जो देखनेको अजामी होती है, वह भी बाधी होती है, बाधा बंग तो स्वाम होता है, भीतरसे वह सर्वेश कहवी हो होती है। यहाँ पारसके स्थानपर हरिभक्ति है, को कुघातुरूप पतिस नीवोंको भी त्रसम इरि-सम्बन्धी बना देती है। यदि कोई दुराधारी भी सुन्दे चनन्यभावते भजता है तो बसे साप्र 🗗

मानना चाहिये. क्योंकि वह सन्मार्गपर चल रहा है. इससे

वह शीघ ही वर्मात्मा हो जाता है, मेरे भक्तका कभी नार नहीं होता (गीता) । हे पुरवासियो ! भक्ति समता, सन्तोप, विषेक, विराग, ज्ञान, निजानादि तक गुणींको जलक करनेवादी है। बाधुरेवकी अमवादी अर्फ स्व्यूजर्मिं जान, दोगा, भीर उत्तक कारी है, इस्से जुक थी संदर्भ नहीं है। ऐसी परम दच्योगी भक्तिको लगामक सूट स्वृत्य गुलाइन विरुपोंको स्वर्ण कर देते हैं, जो देशनेमालको सुस देनेवादे और सुरायने कारी हैं। यह सुख भी निरा पुक हैं। महीं होना। वितना सुक होना है, उत्तना हो। वहमें हु:ज भी होना है और दिनारनेसे तो विरुप सक्या हु:जकर हो हैं। इसमकार अक्तिक्य पारसको स्वागक विपयकम प्रशा देवेसात्रोंको जीन माला क्यों है कारी में नहीं।

'हे भाइयो ! सनुत्य-शरीर पाकर जो अक्तिका स्थान कर विषयों में श्रासक्त होते हैं, जनकी तुर्देशाका वर्धन सुनिये!

कानि-'माकर यानी खानि चार हैं, प्रथम धरायुन को मिक्किंस वेंद्र करण होते हैं, नूपने शायदक को अवरचेंत्र हरण होते हैं, दीलते कीत्रक को मुस्किके केशक दारे केंद्र होते हैं और चीचे स्वेदन को श्वीमेके करण होते हैं। मदम्मादि कार्युक्त हैं, वन्ध्रे माहि ध्वयक हैं, पूचका भादि वित्तन हैं बार सम्बन्ध्र, बाँसाहि स्वेदक हैं, इतकी चौराती बाख योगियों हैं। वनमें मीमादि कक्ष्म योगि भी बाख हैं, पूचादि स्वास्त योगि कीत काल हैं, इति सेंद्र सीने स्वार हाल हैं, एची-योगि दश बाख हैं, सुद्र योगि सीस बाल है बीर महुष्य-योगि पार बाल हैं।

'माइयो ! यह शीध देरवरका चाँच दोनेके कारव मावतारी है रास्तु दिसाँक लगाकर विवासे कर होनेते मार जानि और चीशांची काम बोनिनोंगें अमान रहना है चार्यात मीरकर पड़ी द्वाराग्राम अमंत्र पड़ीने बकते भनेक चोनिनोंमें बहा-बहा दिल्ला है। सार्ट्यक्यमें हुन सोलॉर्से मो सत्तोग्राणी रोवे हैं, भी सुनि होते हैं, वेशवाधी होते हैं, वेशवा होते हैं, भी सोन मागुज्यो होते हैं, वे हैंगे देशवा होते हैं, भी स्त्रोम मागुज्या होते हैं, वे देशव होते हैं। यह सत्यापुगवा मानव है। चाला व्याना रहता है। बीह ज्यों क्यों सत्य कम करते हैं, शों-बी-क्यों नोच चोनिनोंमें समाने कारी हैं।

प्रमणका आधार-'पूर्वेस वन बोव विचयको प्रह्म करता है, तब उसे साधाकी बेरकाले काल, कर्मे, स्त्रसाव और युव पेर खेते हैं। बनके बन्धनमें पहकर बीव सब क्षेतिवॉर्के समझ फिरना है क्षर्याण् शुक्के क्षतुसार बीवका स्वसाव

्र्ड्यरकाप्रमाद-'हैरवर शीवका परमशुद्धद-विना हेतु स्नेही है बाती बद कीवोंधर स्वापीरहित स्मेह करता है, यह हैरवरका क्यारुप गुण है, कहा है—

रक्षणे सर्वमृतानामहमेद परो विमुः।

इति इद्यानुसन्धानं कपा सा परमेश्वरी।। (सगवर्ग्यान-दर्पन)

धर्यात् पृतमात्रके पालन करनेको में हो समर्थ हूँ, इस प्रकारका वह अनुसन्धान रक्षता हूँ, इसमकारका अनुसन्धान रक्षनेसे हेरबर दिवा हेत्व स्तेही है। भागवतमें बूसरा गुळ करवा कहा है—

> परदुःसानुसन्धानादिहरी सदनं विशेषः कारुण्यासम्बुष्णस्त्रेष आर्तानां मीतिदारकः।।

वर्णात बीजोंका तुःख देवकर खर्च भी हुली होकर, उनके कुःस मियानेके विशे दशाय करनेका शास करव्या है। विना हेत कोडी देखर इस करवाचे वस किसी भी शीवका हुःख देवकर, तसे हुःसले हुनानेके विशे करवा कराते कभी भगुष्य देह दे देशा है भागीद चीगासीका भोग प्रा होनेसे पूर्व शीवमें ही सामनका पास, शुष्किम हर वानका महुष्य शीर दे देशा है। क्वोंकि इस स्थापिस स्व वस्तुस्पीका श्राय हो सकता है।

मनुष्य ग्रारीका बाह्यव्य-व्यव्य स्थारिक वीपरोंको सब्दागर-से पार के कार्नेक दिवने बेला दें। व्यव्य संस्तुत, स्वादिक कहाँको प्रश्नीव्य संस्तानस्य के वाला देशा है, तो महाव प्रवासनीय कहाँको मिना बनपर गाँच मेंने कबनो रक स्ववको स्टारीसे प्रकृषी हैं। वर्षिष देंते हैं कीर सतके करा बाह्य हा च्या देंते हैं। इसको पेता करते हैं, यह बेसा किसी भी विश्रास कभी नहीं बूच्या, इसी मब्या स्टारीस्य सीर्थ, बन, क्या, धरण, कीर्यन, पता, पाड, का कीर वानादि

14

सान्ती बहुँ हैं से बुदि, रिकार, पैने, बूता कीर वस्तिहित्तां,
रो मैंचे हुए हैं। इनने करर गुल-दुःसवा आनक्षा बाद वैधा हुसा है, इसवादा स-तारीर अंसारण्य सामान्ति बेदा है, इसवर पैट्टर मतीयम्ब्य सबसे बेगमें वहा हुमा बील स्वा माना है। यदि भीव दिनायेश बासा आदता है चीर अद्दारण यत्वान पार खेना है तो बदने हुए वेदेशों केर देगेके किये थेरा चानुवद वाणी भीशोंवर सद्दा व्यास्त्र को सामुत्त प्रकर पहती है कह बाते कियारे काल होगों है। धर्मान् स-तानुत यदि सोर की प्रकार केरो हैं।

'शाहयो । यह मनश्य-शरीरकृप बेदा इवने योग्य नटी है. यह भारत नाव है, इसमें जब बनुष्य श्रद्धारूप परद्यान स्ताता है. शब इसको मेरा अनुबद्धस्य बाय बक्रेजता है चीर सदग्रह्म कर्चापार-रोनेवासा बसको चारवर सता देता है। इन सब सामित्रवाँका पास होना जीवाँके खिये ह केंद्र है-ये वहे परिश्रमसे प्राप्त होती हैं। इन सब सामदिवों हे प्राप्त होनेपर तर जाना क्षय कठिन नहीं है। पर पेसी सामधियों-को पाकर भी जो नियंदि मनुष्य भवसागरसे नहीं तरते चौर विवयों में भासक होकर फिर भवसागरमें ही चले जाते हैं वे कतिगदक हैं सर्पांत यदि कोई उनके साथ अलाई करता है. उसका चाभार मानना तो चलन रहा. उलटी इसीकी जिल्हा काले हैं। जिस निहेंत स्नेही ईरवरने कठका बरके नर-शरीर दिया है और सदा दया रखता है. उसका हतेहारहिल नाम तो भुवकर भी नहीं खेते चीर वद चवने किये हुए पापोंका फल दुःख भोगते हैं वो उसको गाबियाँ हेते हैं । ये ऐसे फता हैं । जैसे महावनमें एक विशारी करत हैनेसे दावाप्रिकी सीमा नहीं रहती कि कहाँ तक बढ बायगी, वैसे ही कृतभताके योहे ही कर्मसे धसंक्य पाप बढ साते हैं। एक दशन्त सनिवे-

कत्रमीकी कथा

एक इतिहास है कि कोई जुड़ाओं दरियों विम चुया-निवारणायं महावनकी गया, यहाँ एक पद्मीने उसकी ध्यवस्था पूर्ड़ी तद बसने घनकी मूख बतायो। पद्मी बसे वास देकर और कराकर योखा कि उत्तर बनमें एक देख मेरा मिन है,

े पास प्रतिदिन जाता हैं, तू वहाँ जा । मेरा नाम े.. वह सुम्मे बहुत-सा धन देगा। ब्राह्मणने जाकर दैन्यसे सब दाज बदा, वैजने धन रेवर माजलको तिल बर रिया। जब बाधना की कर महा पनमें बाता तो मार्ग के भी तरहे कि देशी पंचीकी सारकर कींग्र के पता । मैपने यह आहरा जने प्रवृत्ता मैगाया और बनरे के बाँचे बदा कि इसकी था बासी, मैथाने बड़ा कि इस समाबंद इस मही सार्ये। नवरीयने अमे मरबाद्य दक्षणादिया और गीपाँमें दशा वि इनके ना जायो। शीयोंने भी बश दि इन इसाया माँग इस कर्मा नहीं वार्यों । सहतानर ब्रामारि वेकारमाने वार् चाहर वचीको वरोवकारी जानकर उसे जिल्ला दिया। 🕅 पर्चा बोला कि 'महाराज ! इस माझलुढे लगढे-वाने मुने माते होंगे. इनको भी तिला दीत्रिये ।' इनप्रकार सामर कार्ड पर्याने मामानको भी जिल्ला शिवा और यन विशास बिता किया : प्रभात शह चर्चाते हारीर स्वाता तो बह हरि-बोक्को शया और कनशो दिन मानेके बार बमपरमें बाहर रीरव मरकमें पड़ा । यह तो सीकिक क्रुगाताकी गति है। जो ईश्वासे कुनमना करने हैं, दनकी तो न मालूम स्वाहण होगी रै जियमें सुन्य-दःस, बन्ध-शीच चादि सब वस्त्रपाँच ज्ञान होता है देने सनुष्य-शरीरको पाकर मुक्तिमार्गको त्याग को विषयों के बस को अवसागर के मार्गपर चर्तिंगे, वे प्रवरप 'बाप्महा' गतिको मास होंगे । जो जहर साकर, पानीमें द्वबंदर चथवा गला कारंदर मरते हैं. और को बपने हार

वे क्रवामी मास होंगे । कहा है—

'नृदेहमायं सुनर्भ सुतुर्कैर्म

प्रने सुकर्भ गुरुष्भेगास्।

स्वानुकृते नमस्तेत रितं

ही अपने आग्माका वात करते हैं, उनको आत्महा करते

हैं। यूसे बात्यहा जिस गतिको श्राप्त होते हैं, दसी गतिको

पुनान् भवान्वि न वोरस आत्महा ॥। ईरवरकी विशुलना तो खोक-परजोक दोनोंमें दुःसट्य है, यह बात कपर दिसाकर चय भगवान् सुधका मार्ग

दिलाते हैं—

'दे पुरवासियों! यदि प्रम परलोक्से द्वान गति की
'दे पुरवासियों! यदि प्रम परलोक्से द्वान गति की
हो, जो मेरे वचन युवकर वनका रिव्हान्त दुवसे बात्य
करों! दे साहयों! जिसका प्रमान वेद-पुराय गाँव हैं.
मेरी बढ़ पांक गुजद मार्ग दे प्रयोव परिकन्य परिमर्ग
विना हो सब प्रकारक सुंच देनेवाता है। कर्म, योग,
ज्ञानादिके सावगंकी सदह हम्में हायादे प्रवेत प्रकार
क्रानिके सावगंकी सदह हम्में हायादे प्रवेत प्रकार

होरा, परिश्रम आदि करने महीं पहते। मक्तिके अववा, कीर्तनादि सभी साधन सस्त्रद है।

ज्ञानकी किटनाई—स्वापि ज्ञान भी श्रीवका कानाक शरता है परन्तु ज्ञानमाने कमाम है। विचयी, विद्युद्ध, कंपर-आपदालादि पतित श्रीकोंकी तो वसमें गति हो नहीं है, केवल क्षुक्रतो अनुपूर्वोंकी हो गति है। उनके विचे भी सनेक मानूद वानी विम है, साधन तो क्षित हैं हो वर साम हो सभावते सहस प्रमाज मनको लिए एकनेका कोई ऐसा श्राधार में नहीं है, विस्तों मन टिका हहै। साधममें करिता और विम इन्यकार है—

प्रथम साधन है वैराग्य, चर्चात् प्रहासीकतकके मीय-सर्वोको तथन जानकर स्थाग देना यही कठिन है इसमें खोस अनेक विश करता है । इसरा साधन है विवेध अर्थात देह-साबन्ध-कोळसावता चामार कारावा स्थात करे. चारममार बातकर प्रदय करे. यह सदाकठिन है, इसमें मोह-असवा धनेक बिश कारते हैं। शीसरा साधन यदसम्पत्ति है, इसमें प्रथम श्रम अर्थात् वासनान्याग, हितीय इस अर्थात् इन्द्रियोंको विषयसे रोकना तीसरी उपरामता सर्यात विषयों-से अल मोद लेगा. चौथी तितिचा चर्यात दःसन्यस समान बानना, पाँचवाँ खदा चर्चात ग्रह, वेदान्त-वास्पर्मे विश्वास होता और छड़ो समाधान, बनही स्थिरता है। ये सब बायन्त करित हैं, इनमें काम-कोध बादि बनेक विश करते हैं । चौथा साचन है मुमुच्ता चर्चात् मुक्तिकी उत्कट इच्छा होता. यह सबसे बहिन है क्यों कि सब साचनों की करिनना चीर विश्व बसी-धन्तर्गत है। इसप्रकार ज्ञानका परव सगम है। यशवि आया हसीसे बीती जानेवाली नहीं है, बरना बीव भी तो हैबर-। द्वी च या है, इसलिये श्रीवर्मे भी महान शक्ति है। पनी उस शक्तिको सँमाजकर गाँद कोई सनको सरवस राधीन कर थे. बोक-अनोंके संमको निर्धाका कारता जानकर ससे भद्रग हो. पहाब, गुका भादिमें ससंग रहका बहत IE करके वैराग्य शरमादि साधन शास्त्र कर से श्रीर श्राहम-स्मानको प्राप्त हो जाय. तो थड भी मस्तिसे हीन रूका गनी मुम्हे त्रिय नहीं है चयौत् में उसकी रचा नहीं करता. [सबिये उसका स्वतन्त्रता निवाहना दुर्घट है क्योंकि सीवर्से **१६**रस भाग नहीं रह सकता, इसिंबये बीव स्वतन्त्र नहीं है।

मक्तिशे मुरुमता-हि पुरबासियो ! समता, शान्ति, सन्तोष, वैराख, विके, ज्ञान-विज्ञानादि सकत गुर्खोकी

सानि मेरी मिक स्वतन्त्र है यथांच भक्ति होनेपर श्रामांद्र गुक चाप ही चा आहे हैं। मकत्मलांद्र संग करोले हे सहवर्षे ही माठ हो आहे हैं, ससंग दिना कुछ भी माठ मही होता, चलेक कमांका पुष्प करत हुए विश्व सन्तिका संग बही निस्तता कीर सन्तीका संग हारन ही मनसे पार करनेवाडा है, ससंपक्षे मिक होती हैं चीर मिक मनमे

'हे पुरवासियो ! मन, कर्म की र वणमसे माझयों के करवानियों पूज करता सरसे वह पुराव है। करती साझयकों कहा माने, कर्मये साहये मायान महें, केंचे बासन्यर सैठाई, वोडकोषकार्य दूरन करें, मोकम्भान ने कीर कर्मसे सुरित करें। बोकम्भान ने कीर कर्मसे सुरित करें। बेक्ट करने हैं कि गाँचमें (प्रतिहित), मोगों में (परवा गांगापुत), वामों, क्यासराययों, ब्राह्म की र सुरुकारी की क्षा करा माया माया है। "

इसम्बार अगवान्ने विम-पद-प्ताको उत्तम पुरुष बताया, फिर बागे कहने सते---

'हे दुरबासियों! वो पुरुष काट स्थागकर मीतर-बाहरको स्थाय भीतिसे माहर्षोंची सेवा मरता है, चरुरर सब मूचि और देशका मसब होते हैं। विशोधी रुपामें का मुनि, जिट हण्यादि समोको पुताका भाग मिसला है। इस-विके माहर्खोंकी एका सहायुवय है, इस पुत्रपके ममारसे सहसंग मात होका है औ। सन्तंगके ममावसे मिक मात होती है।'

है बाइयों! एक ग्रुव मत और भी है बाधीय विश्व-पर-प्रश्नक पुरुष में बीन दी बचाँका व्यिकार है, माहवाँका विकेश व्यिकार वर्ध है, वर्गोंक स्वाराणिय होनेके कारण के बतावरी, बोटाई-वराई-के भागवामानका बताव राज्यों, हर-विके सभी मेंद्र राज्यों, माहवजाशको कोई पा। करके बता मानेगा, हर कारण यह उपयत्तत माहवाँको भाकि-एतक वर्ध है, केरत बीन बचाँके निवेद हैं है पर-एक बीनों वर्ध तथा यह उपयत्तत माहवाँको माकि-वर्ध बीनों वर्ध तथा यह उपयत्त सभी से कहता हूँ। पर-एक बीनों वर्ध तथा यह उपर मत सभी से कहता हूँ। पर-एक बीनों वर्ध तथा यह उपर मत सभी से कहता हूँ। पर-एक बीनों वर्ध तथा यह पर पर विशेषक में माहवाँकों के सावुकी में प्रश्निय हुँ और ऐरवर्ध भी माहवपदेश कहाता हूँ, हुत्से के हुत्य हुँ के स्वत्य माहवाँ में का प्रश्नात कहता हुँ कि उच्छा भाकि किटे देशा कोई मेरी भीक नहीं पाता। प्रधांत वस उपर, पर, पर, हुन्द, और, भाक्त स्थादिक मही पाता। स्थाद वस उपर, पर, पर, भक्तजनींकी-सहाध्याजनींकी शेवा करनेपर जनकी कृपाने ही निवसी है। कहा है--

> 'रहूर्गणेतस् तपसा म यान्ति स चेत्रयथा निर्वेषणाद् शृ€ाद्वा ।

न सन्दर्भा नैद अरुप्रितृषै-रिना महत्पानस्कोभिषेकम् ॥

(भीमञ्चागवत ५/१२/१२)

शंकर भक्तोंमें सर्वोत्तम महात्मा हैं इसक्षिये प्रथम कनकी भक्ति करनी चाहिये. फिर वे मेरी मक्ति वेरो हैं।

'हे पुरत्यो ! शान-परका परिक्षम में है व से कहा से वाद प्रवास । मिलमें कुछ भी परिल्या नहीं है। व से वह हो चार पदी सार्वोक पार्टी है। व से वह हो चार पदी सार्वोक पार्टी में है। वेद हो चार परिक्षम हैं। विश्व में से कि सी में में कुछ भी परिक्षम नहीं है, वे तो केच्या माजुर मोजनमें प्रवास हो जाते हैं और पिषकी सिक्षम में कुछ भी परिक्षम नहीं है, वह वो वेवपण भीर पर्वाल में में महाम है। हा पार्टी में माज प्रवास हो। हा पार्टी हमा हमा है। हमा पार्टी हमा हमा है। हमा पार्टी माजुर परवासि माजु

'हे पुरवासियों ! केवल हतनाही काना है कि सरक्ष स्थाय रहे, किसीसे म मीति करें,म वें: । शहत ही सबसे प्रिय वयन बोले, कोय, हैयां, परच्यवम्य मान, गर, इत्त करद आदि कुटितता समें में वस्त्ते कहत सम्बन्धि समुख बरहे, जीविकार्य जो स्थायार करें,उसमें जो कुछ खान हो, उसीमें सम्योच रक्ते, जीभ क करावे ।'

'है भाइयो ! मेरा भक्त कहवाकर मनुष्यको भारता करना बही भारते भूव है। जो र्षणका, भाइवण्ड करा, काठ-ममयहतु जेकर, पाणी साशुक्त वेष बना सेर साहुकरादि पतिचाँके हर-दारपर दन्यायों पाणका सेर सहकारते पतिचाँके हर-दारपर दन्यायों पाणका सेर है वह मेरा सक्त कहाँ हैं? वह तो मायाका ही दास है! भायवा मनुष्य भीत दास कहाकर पड़ा, एक-पाठ, हवनादि सकाम कर्म करके देखताओं से एक मारी, तो जो के मेरा विभास कर्म करके देखताओं से एक मारी, तो जो के मेरा विभास कर्म हरके देखताओं से एक मारी, तो जो कर मेरा दास हो कर देसरेसे वरों पाणना करें ? कहा है—

न्यात्रनाच्छादन रचनता वृथा खुवानत वणावाः । न्यादमी विद्यवस्तरो देवी स मळान किमपेश्यति ॥ भीर भी बदा है---

नावदस्याप्रयस्यावत् प्रशासनिव तं जनम् १ विकेष्ठवेसं कृषया सन्नस्यजनसम्मरा ॥ विवयविकासमें कृष्यः है—

मने स्वादन्यदेवानी सेवनं पत्रतारक्षमा । तस्वादनन्यसेवी सन् सर्वेद्यामयगद्गुमा ॥ विवेदियमन-कार्यो सर्वे स्वापेदनन्यकीः ।

'दे भाइपो ! स्थित क्या कहूँ, उप्पूर्त सारायमे मैं
मन्त होशा हूँ। को ऐमा करता है, उस सम्बर्ध में स्थाने है। बात हैं। वह सो करता है, यह सम्बर्ध में स्थाने किमीके दिवसी हानि स्थाना है परस्म मूख मिन्नर है जोर परस्थी, पन, पाम, याहन, भूरण, यसन, मोजन, पान, मन्य प्राप्त स्थान हों। यह स्थान सम्बर्ध माना मन स्थाना साथ है तया शमु, चोर, सर्व व्याचारिका माने रणना साथ है। जो मक्त या सम्बर्ध होता, साथ, जास साथि एक भी नहीं रणना सीर सबसे समसाय एका है, उस समनके किये दुर्शी दिवारी सुकारय है, यह आंज जाय वर्षी सावनर है।'

'हे भाइयो ! वो खोग बतां वनकर किसी द्यमायम कार्यका बारम्भ नहीं करते यात्री को ऐसा नहीं मानते कि 'आज हम यह कर्म करेंगे' किन्त ऐसा मानते हैं 'जैसी हरि इच्छा होगी, वही कार्य उस काक्रमें होगा।' ऐसा समस्क चाप कर्ता नहीं बनते और घर भी नहीं बनाते सर्वांद अरबी चपना नहीं सानते. सिर्फ निवांहसे प्रयोजन रखते हैं। बार्जि, विचा, धन, रूप, बढ़ाई,इन सबमें भन के चा (चिममान) नहीं करते, शीचे श्री बने रहते हैं। जीव-हिंसावि यावत पारकर्तीमें दर रहते हैं। कोई कैसा भी क्रोध करें बाप की गहीं काते । वेद, वेदान्त, शास, संहिता, स्वृति, उपनिष्र् काव्य, प्रशासिका सिद्धान्त ज्ञाननेमें प्रवीस होते हैं और विज्ञानी होते हैं थानी अपना स्वरूप, मायाका स्वरूप की इंखरका स्वरूप भनीमांति जानते हैं, ऐसे सन्तोंका सह संग करे क्योंकि इनकी संगतिसे ये गुरा चाप ही जा आहे हैं। सजनोंके साथ शीति करनेसे खागी-स्वभाव उत्पन्न होता है,त्याची स्वभाव हो नेसे मनुष्य इन्द्रिय-विषय-सुख,स्वर्ग-सुस, चपवर्गं सोच—तिनकेके समान त्याग देता है, फिर साधर करनेका प्रयोजन ही वहीं है।'

'हे आहुयो ! भक्ति-पद्यका आग्रह श्वरो, जैसे चन्द्रप चकोर, बकार मीन, स्वाती-विन्दुपर चातक हठ श्वते हैं, ह्मी प्रकार हृष्ट-उपारनाकी दहताके क्षिये धन-वतायत धारण बरे (अंसे उत्तम प्रतिक्वा अपने ही पतिका, पुरस् मानती है, दूसरे दुल्यको जानती ही घड़ी, इसी प्रकार धरने हृष्टे विद्या न दूसरे हृष्ट्य दृष्टि करे चीर न दूसरेका गाम से। जपासनाकी दहताके क्षिये अधिरपक्का हठ रक्ते धरन्तु करता भी नकरे खर्चान् क्षिती भी रुपक्के निन्दा स्पूर्वण भी न करे धीरे दुष्ट तर्जीको के धि 'अंवक्को स्पूर्वण भी न करे धीरे दुष्ट तर्जीको क्षार्थे प्रसादि प्रके सुष्टीकी हैं, हनको तुर बहा दे, कभी भनमें क्षाने न है।'

कपर्युक्त गुरा तो सामन करनेपर भी दुर्घंट हैं, फिर स्वामाविक कैसे का जायेंगे हैं इसपर अगवान कहते हैं---

'हे पुरवासियो ! ग्राफि, बीयें, तेज, बज, कुरा, व्या, वास्तवया, करवा, सीहार्व, सीक्रन्य, गोक, जहारता प्राप्ति मेरे गुर्पोकासन व्यापकः अववा-कीर्तन करें, तो सामने स्त हो बानी प्रेसने मेरा पास स्वत्य करें। हसके प्रमावस्ते समया, पर, गोह भादि आग आहे हैं, कीर मेरे क्यने ग्रताया होता है। मेरे रूपमें बनुसाग होना ही पराभक्ति है। इस पराभक्तिके खपूर्व सुखको वही जानता है, जिसको वह प्राप्त है। उसके बानन्दमें देह-व्यवहार्सि मन नहीं खपता, इसस्तिये जीव निर्विध रहता है।'

मगवानुके श्रमुत-सम वचन सुनकर सब पुरवासियाँने प्रधास किया श्रीर भगवानुके बचन शिर-मापेपर घारण कर जिले !

त्रिय पाटक ! इस धापके वातके धनुचरकी इतनी आर्यमा है कि आप भी अनवान्के बचन झंगीकार करके सर्वदाके किये सुखी हो जाहये—

कु०-जैसे फैसे भी बने, कॉर्ज मगपदािक । तनसे मनसे बचनसे, जैसा होने शांकि ।। बैसी होने शक्ति, भक्ति कर भनसे तरिये । जन्म-पुनसे सूर, राज्य निर्णटक करिये ।। मंगला हरिसे प्यार, करे राज्य जन पेसे । प्यासा जनसे करे, अनसे मुझा जैसे ।।

श्रीराम-भाँकी

(केलक-भीसत्याषरणश्री 'सत्य' वी० व०, बिरागस्य) (१)

(3)

कान्यस मयद्ग रम सम्प्रुत सु-रहमय

बाजी कर करवनाका जीड़ कद बावेंगे। पुन पुन बाद हार हीरक बनाने हेतु

अगमग क्यांतिमुत तारे कोड़ ठायेंगे ॥ इसवाहिनोके सम् मानस तरहणीपै

वीणाके सहस्य रसचार ही बहावेंगे। पढ बार श्रितिजये रास भी भवा दें हम

मनहर शामजूकी हाँकी यदि वायेंगे।।

(2)

मूपार्क अप्रपा गन्यवाहक समान

चल्दरु-नृत्य नित्य नृतन दिशायेगे। पषद चपरु छवि चचला मनोहरकी

अम्बाके छोरणा केतु कहरावेंगे ॥ एक 🛙 हुमुद्रमें समस्त विश्व-मण्डलमें

प्रतयकी कान्ति-विनागरी सी समायेते । दिन वे दिनन्त को कैंपारें साथ श्रम श्रम

मनदर रामकृषी शाँकी वाँदे पायेथे।।

तुलसी-स्तवन

(केवक-पं भौरायसेंपकत्री त्रिपाठी, सम्पादक 'मापुरी')

(१) आन आहे वक्षे बचाई तुक्तीने सुन , हात हो रहा था हिन्दू-चाने सुमन्ता। ही रहे थे अवत प्रहास बप्तोंके रीह , नाम मिटना ही चाहता या वर्ण-वर्मका। कोटी और चन्द्रत बना या जुन हिन्दुऑहा।

> 'नेटी और रोटी या बनाम बोटी-बर्मका।' 'मानस'की दाल दे स्व-बन्युकोंकी तूने तब-अगर बनावा, बडलावा ज्ञान कर्मका।

> > (٤)

पेसा अंत प्रा शामनामक विमुख होक, तासो मुनकोंने किरेस ये जान आगई। वेरी मार्क-मानगासे, मध्य-मारतीकी मूर्नि-ऑक्ट हुई थो, नह दिलमें समागई।

सटक रहे वे अमसे को सब-सागरमें, .'बानसाकी बीका पार दनको रुगा माँ। सुमस-फाका स्वर्गने भी पहरागी साम, अबल शुकीर्ति विश्वते हैं देरी एग' माँ।

श्रीरामायण-रहस्य

(भीवाभी-पनिश्विधयद्वरमधापीथर सनद्गुद स्थामनद्रामानुग-गण्यशायायां श्री १९०८ सीमनाणानां स्वामोत्री सहारात

१९८८-५११ त्यस चाहि शीक्ष्य प्रमाणींसे खवेश शरीके हैं में श्रे जाननेका एकमाश ज्यास वेद है, हर्गक्रिये हुंद्र-५५४६ उसका भाग वेद एका है।

> त्रराधेणानुभिरया वा यश्तूषायो न नुष्यते । यसं विदन्ति वेदेन तस्यादेवस्य वेदता॥

चर्यात् प्रत्यच वा चनुमिनित्रे को उपाय नहीं जाना जाता, ऐते बपायको वेदसे जाननेके कारण उसका वेदत्य है।

कर्म-नहां-कायहात्मक वेदके क्रयोंकी समक्रमेके क्षिये स्मृतीतिहासपुरायोंकी सहायका खेना कायस्यक होता है। कनकी सहायताके पिना वेदार्थ-निर्णय वदना क्षसम्मय है। कनकी सहायताके पिना वेदार्थ-निर्णय वदना क्षसम्मय है।

> प्रायेण पूर्वभागार्थो धर्मशास्त्रेण करवेत । इतिहासपुराणान्यां वेदान्तार्थः प्रकाश्यते ॥

सर्पांत् वेदके पूर्वभागके कर्य गायः धर्मराखाँसे वर्षिक हैं, पेरानका सर्थ इतिहास-इराखाँसे कक्षिण्य होता हैं। स्परवादांक वेदिक धर्मोंक एराकीकार क्यंत्रीतिहासदुराखाँसें किये वात्रेके कारख उनकी सहायता खेकर ही वेदाधीनश्चंय करना योगस माना गाया है। येदोक्तमानरूप वेदान्यके वर्धे निर्धंय करनेमें से इतिहासदुराखाँकी सहायता लेका सायावरयक सानागाया है, सम्बन्ध घोच्या स्वानेकी सहस्तावरयक सानागाया है, सम्बन्ध घोच्या स्वानेकी सम्बन्धवा सहस्ती है। इसी सारायकी खेकर बाईस्थय स्वतिमें कहा गया है।

इतिहासपुराणाभ्यां वेदं समुषवृह्येत्। विभेत्यरुपभुतादेदो मामयं प्रतरिप्यति॥

सार्गाद इतिहास-पुराखोंसे बेदोंका उपटु ह्या करना साहिये, क्योंकि वेद प्रवस्थल पुरुष्टे करना है कि कहीं पट्ट इसारी बक्कान न कर दे, क्षितिकृत्व नागत-पाल-विभक्त वेदका एकक्टप्रस्थे क्यों निर्वाध करना बहुकुत गाना शास्त्रीय पुरुष्टक हो काम है, करनपुर उरूप बहु काम करने को ते मस्मब है कि मुख्ये क्यांक करने कर है। ऐसे पुरुष इतिहास-प्रायोंकी सहायवासे प्रमुक्ति सर्गे निर्वाध होने सी स्थाप्यवाधी करी हो हो सामेशे न हरीन सम्ब सही हसा हिनहान कीर पुरास वे दोनों स्मृतियोंने केड हैं, हरों थिये प्रास्त्रीय वयिनद्वें प्रीतानगुग्त रुक्त्य हुम्यका यक्षा वेदने सामये वहाँ ना पाया नाता है। यह कहर दें। सारवृत महाकाष्टके वयु हुन होने के कारत है। हुनिया कीर पुरास इन योनोंमेंने हुनिहास प्रकृत है, क्योंने पुरासोंके सामन देक्तायक्षणत हुतिहासोंने नहीं है। सारिक, राज्य, नासा-भोदने नित्र युक्तवद्वित्तक पुरस्क्ति विश्ववेदता-सहक-प्रतिवादक हाने जाने हैं। यथा-

> नेप्रीशावस्य बाह्यस्यं वाह्यस्य वहांस्यु प्रकीती । राजस्यु तु करपेषु माहातस्यं मदाना रितुः।। स्मित्यक्षेत्र् च करपेषु माहातस्यमिष्टं हरेः।। विस्तिकस्यं तु स्तर्यकं पुराणं मदाना पुरा। तस्य तस्य तु साहात्यं तस्यक्षेत्रम्य वस्योः।। (स्वयुद्धार्णं)

पुराय मुक्यतवा पाँच विश्वयों के प्रतिपादक होते हैं। सर्व, प्रतिसर्व, वंश, सम्बन्दर और वंशानुचरित से पुरायों के मुक्य विषय हैं—

> सर्गेख प्रतिसर्गेख बंदों। मन्तन्तराणि च । वंदाानुचरितं चैव चुराणं पत्र रुक्षणम् ।।

यह सारवाँके कच्या है। इतिहासाँ इसका प्रतियाय विषय सीमायद नहीं है। नानार्थमिंटवार्थ इतिहास होते हैं। दुरायारिक्या इतिहासक प्रतान इतिहास्त होते हैं। उत्तरायरिक्या इतिहासक प्रतान इतिहास्त प्रतान के वाला है। इतिहासदायाय यह समस्य पद हैं, इतिहास-शब्दकी क्षेत्रण दुराय व्यद्गे कम 'कप्' कवर हैं। वतपुर अव्याप्तर्याद व्याप्त व्यद्गे कम 'कप्' कवर हैं। वतपुर अव्याप्त वृद्धा होताय व्यद्गे व्यवस्य कार्यक विदासका केष्ठल है, क्षांति अव्यर्धि पूर्वग्' इस दूसरी व्यवस्य विषये हुतास प्रविद्धा व्यवस्य केष्य क्षायाप्त विषये क्षायाप्त 'प्रतिशाययान्त' इसमकार निर्देश हुआ है, इससे सिद्ध है कि पुरावाकी सपेचा इतिहास क्षेत्र है।

षार्यों इतिहास-प्रत्य गुरुववया दो माने गये हैं, एक धीरामायब चौर हुस्ता महाभारत । इन दोनोंगेंसे धीरामायबच स्थाव उँचा है। महींगें वाल्यीकिक वच-नमाय दोक्यतिक है। वे धारिकवि ब्हजाते हैं, महाजी तक उनको बहुमानकी रिटिस देखते थे।

बालमीकये सहर्यये सन्दिदेशासनं ततः ।।

भीरामायवाका यह रखीक इतका प्रमान्य है। जहाजी जब बावसीविके प्रावयमें पहुँचे थे, तो उन्होंने बारसीविजीको जासन-दानसे सम्मानित किया था। उनको प्रकाशीका यह बददानिक्षण या कि धीरामायवामें वे जो क्लियेंने, उसमेंसे एक यात भी निष्या न होती।

न ते बागनृता काव्ये काश्विदत्र सनिष्पति ।।

इससे यह सिद्ध है कि भीरामायक सत्पार्थ प्रतिपादक है।

श्रीरामायणका जितना सधिक खोकपरिषद् है उतना दूसरे किसीका महीं, यह बात ज्ञान भी कलुभवसे सिद्ध होती है। नाना-फल-सिबिके जिये जोग श्रीरामायश्रका पाठ किया करते हैं। विद्वानोंको इसके समेक प्रकारके प्रयोग मालूम है। वस्तु-वैज्ञचयप, प्रश्चिक लोक-प्ररिमह, चवतार-वैक्षचयय इस सबसे भीरामाययका सदश्व प्रधिक है। भोरामाययांका सवतरयाकम भी विचित्रहै। यह श्रीरामाययाके माराभमें दर्शित है। माच्याद्विक-स्नामके किये जाते हुए श्रीवारमोक्तिमोके सामने न्याधका वाससे क्रीय-पर्चाकी मारना, क्रौद्यी (स्ती-पची) का विजाय, इस धरपके देखनेसे करुणाई हदय भीवारमीकितीके मुखसे खोकका निकलना, भोदी ही देरके पत्रात महाजीका बारमीकिके प्राथममें आकर यह कहना 🌬 'मच्छन्दादेव ते प्रक्षन् प्रकृतियं सरस्वती ।' मह्मा-जीका श्रीरामायण रचनेकी शाहा वाल्मीकित्रीको देना, भूत, भवित्यत् समस्त रामचरित्त-शान-सामका वरदानः रामायणमें बर्चित कियों भी विषयके मिथ्या न होनेका वर, यह सब रामायणावतरणके पूर्व कालकी घटनाएँ है। इनके विचारसे भीरामाययका मदश्य हृदयञ्चत हो बाता है।

श्रीरामाययाका महत्त्व इस बातसे एउट होता है कि इसको बेदका रूपान्तर कहकर प्राचीनोंने प्रयंता की है। जैसे महाभारतको प्रवस बेद कहकर महत्त्व दिया जाता है, बैसे ही इसको बेदका रूपान्तर कहकर दिया जाता है। वयर— बैदनेशे परे पुंसि जाते दशरधातमते । बेदः प्राचेतसादासीत्साधादामामणातमा ।।

चर्यांत् बेदमितपाच परम पुरुष जब दशरमके पुत्र हुए, इब बेद भी माचेतस-वाक्सीकिके द्वारा रामायणके रूपमें प्रकट हुन्या ।

श्रीरामायस केवल इतिहास ही नहीं है, किन्तु काव भी है, व्यादिकाव्य होनेका गीरव हसीको प्राप्त है—

आदिकाव्यमिदं त्वापं पुरा बात्भीकिना इतम् ।

वह व्यादिकान्य इससिये हैं कि इसके पूर्व वेदको छोड़ कर संस्कृतकी व्यावहारिक भागामें दुग्दोवज्ञ कोई प्रमय ही नहीं था। महर्षि वाश्मीकिके मुखसे ही बत्तु मुँख महातीकी इच्छासे संस्कृतका क्ष्मतीक्य छोक सर्वमयम निक्वा था।

ह्लमकार जीरामायक हरिदास हुएलामित होनेके साथ की कारवासिमत भी होकर पाठकोंका महान् उपकार करता है। औरामायक हरिदास होनेके बारक हुदक्के साम वाठकोंके 'च्यानिटकॉक्क'न रामागिटक'-कपदेश ऐका जो उपकार करता है, सब्बीमार्थमितियाक कारवहार-माड़ा सुन्द कारवकर होनेके कारक कारता है समाग रक्षन करता हुआ कविमानी अनुष्यांकों भी सम्मार्गम जाकर सहार बाभ पर्युक्ता है।

श्रीरामाचयुर्वे वाना वृत्युके क्षोक शामा प्रकारके राज्याव्यक्षर भीर श्रयांबद्धार स्थान-स्थानपर सचितिष्ट हैं। वर्धनरीजी प्रत्यन्त सुन्युर है। सुन्युरकायडमें इस बातका घनुभव इस बोगोंको निवता है।

वेदान्त धर्यात् वेदका महाकायः परतश्वका मितादक है, यह सबको मालुम है। वस्त्रयद्भास्तर परमहाका निरूपय वेदान्य-मागमें है। श्रीरामाययमें यह परमहा कीन-से देवता है है हसका निर्योग किया गया है।

शासनात्वर्य-निर्धायके सिथे सात विक्र माने गये हैं, जिस धर्धमें वे सातों विक्र धनुष्ट्य हों वही शघ-रात्वर्य विषयमृत माना जावना ! उपक्रमीयतंद्वासारमातोऽपूर्वना पञ्जा । सर्वेदारोपपती च निर्म तहचवंनिर्वव ।

याच नाएयं निर्मृथ है क्षित्रे वसका माराभ भीर भाग देशा भागा है। यहाँ जिस घर्षका बर्चन हो यह सापपार्च साना बाता है। जिस साचमें सांबार जिस चर्चका पर्चन चाया हो, वही दासका सापपार्च है। को घर्म पर्च हैं। जिसका भागा सामा हो। जिसकी घरांसा की गयी हो, जिसकें सर्च प्रवारकों है उसकी मार्चा है।

श्रीरामायणके चाविमें वाजकावरके चन्द्रहर्वे सर्गरें श्रीविष्णु भगवानुके दस्तका वर्णन श्राया है—

स्वावन्यु भाषान्यु स्वावस्य चयान स्वाचा ह्याः यस्तिमस्तरः विन्तुरुपणानां महापुनिः। यस्तु स्वन्यराचािनः वीतवासः जनस्यतिः।। हस्य सोक्सँ महापुतिः वीतवासः वीतः वात्यविः। वेत्रीस्व साम्युपलके सुन्यस्य पृतु हुँ हैं। अस्तिमारक्यं प्रमेषे ।

तमप्रवन्त्रपासकें समीमप्य सनताः। इस स्रोक्षे समल देववन्यत्व समळ देवस्तुत्वत्व वे परमात्मभूमें कडे गये हैं।

अवश्यं दैवतैरसवैंस्समेरे अहि शवणम् ॥

इस श्लोकर्मे सर्व देवाश्वष्य राजयावध-सामध्ये विध्या अगवान्त्का मतापा गया है।

वचार्यं वयमायातास्तरमः के मुनिभिः सह । सिद्धगन्ववैयक्षात्रः ततस्यां शरणं गताः ।। सर्वेदैवशरययत्यस्य परमारमधर्मं वतायाः गयाः है । इस-

प्रकार उपक्रममें विच्या -परत्यका वर्यांन ब्रामा है।

उपसंदारमें उत्तर-रामायखंके कर्ममें-भय तस्पिनमुद्देतें तु ब्रह्मा कोकपितामहः ।

भय तास्पनमुद्दतं तु त्रहाः क्रांकपितामहः। सर्वैः परिवृतोः देवैः ऋषिभिक्षः महास्पाधिः।। आययो यत्र कारुत्तयः सर्गाय समुग्रीस्थानम्

मा क्षोकॉर्म सव देवाधिकायन्य घटाया गया है। आगन्छ विणा मद्रे ते दिख्या प्रावीसि राष्ट्र । मातृतिः सद्द देवामैः प्रविश्वता स्वकान्तुम् ।। मापिन्छति महावाहो तान्तुनं प्रविश् स्वकाम् । वैण्यत्रे तां महावाहो तान्तुनं प्रविश स्वकाम् ।। मकाकी हुए क्षतिमें श्रीरामरूप विष्णुका साकार-सम्मुकाच्य परमकार्थे प्रवेश बनावा गया है।

> स्व हि लोकपनिवार म स्वं केणित्यमाने । को बार्या निशास्त्रामी तत्र पूर्वपीयहास्।। स्वामित्रमां महद्युप्तमूर्य कार्या तथा।।

वितामहर्का इस उक्तिमें सर्वक्रीकातिया, प्राचेषण, अविनयण्य, महामूलय वे वामात्मासाघारण धर्म शामरुरी विष्युक्तेवयाये गये हैं। अन्तर्व विष्युकायरण सिद्ध होगा है।

युवकायहरू धन्नमें भी--वते। वैश्रक्षो सम्राधमम्बद्धानः।

सहसायोः महेन्द्रस्य बरागद्य परंतपः।।
वर्षान्तराः शैलान् सहोदेशं वृत्तपनः।
वर्षान्तराः शैलान् सहोदेशं वृत्तपनः।
वर्षान्तराः शैलान्यः स्वद्वाः सद्वितदेशं वरः।।
यो संवं सार्वाः स्वत्वान्तर्यस्यातिनः।
वर्णान्यः नवार्षाः स्वत्वानित्रम्यात्राः स्वत्वान्यः।।
वर्णान्यः नवार्षाः स्वत्वानित्रम्याः सार्वाः।।
वर्णान्यः नवार्षाः स्वत्वान्तर्यः स्वत्वान्तर्यः वर्णान्यः वर्णान्यः

कर्ती सर्वस्य लोकस्य श्रेष्ठी ज्ञानवर्ता वरः।

राचा है 1

वेपतासाँकी इस ठीकमें सर्वकोच-कर्ने चरूप काण्कास्वा ब्रह्मासाबास्य धर्म सावकस्ती क्लियुमें बताया गया है। वयाणां त्वं दि शोकानावादिकते स्वराया गया है। इस स्वेक्से भी सर्व लोककर्नुन्व बताया गया है। अले बाढी च शोकां दृशसे तुं पतंत्र।

इस रक्षेक्सें भी रामका परवक्ष-क्षच्य जगत्कारयाव बताया गया है।

अक्षर्र ब्रह्म खर्श था मध्ये थानते व्यापन । इस चतुर्मुखको तकिमें स्पष्ट ही रामको सदर^{महा} यतकाया है।

'मयब्धान्यवध स्वय्' 'शरणं रारतं च लामहर्दिना सहर्षवाः 'लं वधाणं हि लेकानामदिकतं 'स्वरमहरं' 'पूर्वतः' न विदुः को स्वानितिः' 'हरुतते सर्वरूत्' 'लं पारवित पूर्वाति' 'संस्कारास्तेत्रवनेताः' 'न नहित त्वा' निना' 'वमस्तवं करोतं ते' हन वाचर्गीनं परमक्रासामापाय चर्म-सर्व-कारकार्याणः, सर्वरणस्याः, प्रपानक्षान्, सर्चरणं, सर्वेशनान्तर्यामित्व, सर्वेधारकत्व, बेरसंस्कारकाव, कान्तत्व. सर्वशरीरकृत चादि चीरासरूपी विष्युमें बताये अये हैं।

इस बातका भी रामायकामें वारंबार बमवास वानी कथत है। बालकायहरी 'अधिक मीनिरे विकां देवास्तरिंगकास्तवा" इसमें सर्वाधिकाव कहा गया है। अयोध्याकावडके-"अर्थिती मानुषे सोने जो विष्युस्तनावनः इस श्लोकर्मे सनावनन्त बताया गया है। धारथयकायडके 'अधनेव हि तरेजो बस्य सा बन्दास्त्रा' इस शोदमें प्रथमेथ सेओरूपल बताया गया है। विकित्या कायदके-

लगत्रमेगध तरासदम त्रिवेन्द्रियमो सम्पर्णिकम । अध्ययकीर्तिश्च विकारणञ्च शित धमावान्धतत्रोपमाधः ।।

-इस श्रोडमें सप्रमेशन चनजोपमाचन वे हो बसाधारक शहाबचक बताने गये हैं । सुन्दरकारहरू-

ब्रह्मा स्वयस्मश्चनशानने। वा

ध्वसिनेश्रीसपराप्तको स । इन्द्री महेन्द्रस्तरनामको 🔣

बार्त न राका अभि रामवध्यम् ॥ -इस श्रोद्धमें सर्वसंदर्शंख मुखेन पानक्रम बताया

man & s

विरुद्धका प्रश्व प्रमाणान्तरावेध होनेसे कपूर्वता भी है। श्रीराम-मत्त्रीको भगवासाखोक्य मिलता है. यह बात रामाध्याके भ्रम्तमें कही गयी है, भ्रतपद या भी है।

बास-कायर में-'श्रे दे पतुर्वा केंडे' हरवादिसे कार्यवाद **बहा गया है । 'कृत्यतं सदमुईयुट्या शैवं विश्वावशक्तीः। अधिकं** मेनिरे विक्तुं देवारहर्विगणास्त्रमा । इत्यादि अध्यमें विचारपूर्वक बिग्युके मेप्टनका निर्धाय देवताओंने किया है, अतपन क्यपति भी वर्तमान है ।

इसप्रकार पहवित्र साल्पर्य जिक्रोंसे श्रीरामायवामें विन्त-षश्च प्रतिपादन द्वीनेसे बेदान्त-वेध वरमञ्जूष स्टब्स्य निश्चय होता है।

इसप्रकारका परतन्त्र किस क्यायसे प्राप्त कोता है, यह बाद भी श्रीरामायकर्मे वर्षित है। यह स्वाय है अस्ताति। परमञ्ज परमात्माकी प्राप्तिका बचाय बेटान्तीमें शस्ताताति षी बढाया गया है। यया---

मा मद्राणं विश्वारि पूर्व या नै वेशंख श्रहिणोति सस्मै । वं 🛚 देवमधमनुद्धित्रसादं भूमुधुर्वे दारणमक् अवदे 🖽 (बेनाक्तर ३० १।१८)

दश उद्येनाउदसरोपनियतके सन्त्रसँ समञ्जूषार्थोको शरकागति कर्तन्य बताया गया है। इसी शरणागतिका वर्णन बीतमावकों है। शरकागति सर्वप्रतसाधन है। इसके श्राधिकारी भी अनेक अकारके होते हैं। झारम्भसे खेकर कनतक श्रीरामायवर्षे शरवागति ज्यायक वर्षेन कर्र स्व्वाम श्रामा है। वातकायवर्षे

वतस्त्रं शर्वि देशस्थर्वयभाक्ष

इस स्रोक्में रावच-वधरूप फलायी देव-जातियोंकी गरवागतिका वर्षन है।

विराहके बृतान्त और ग्रुनःशेषके बृत्तान्तसे शरखागत-रचय परमधर्म दलाया गया है और गयीके विषयम करवागति करनेसे क्रम घवरय मिलता है, यह बात भी बतायी सदी है।

चकोच्या-शावशॉ---

स सातश्चरणी गाउँ निषीवप रधनन्दनः। सीतामवाकातियशा राघवं च महावतम ।।

इस ओबर्ने बच्नवदी गरवागति करी तथी है। त्रिवये परस्तान्छ।ताय। यादन्मे न प्रसीदित ॥

इस श्रोकर्मे भरतकी सरकागतिका वर्धन है। धारवय-झायहर्ते---

ते वर्ष भवता प्रथम भवटिषयगमितः १ करारको बनस्की सार्ख को राजा वर्ष प्रजा: n इस खोक्में महर्षियोंकी शरयागतिका वर्षांत है। स वं निपतिवं भूमी शरणवरशरणाग्राम । वधार्देशपि बाहरत्यः इपया पर्यप्रहायत ।।

ह पिता व पीतवस्तुरेश वामर्गितः। हिन्दोहान सम्परिकम्य तमेव शरणं गतः ॥ इन ओकॉर्से बाबकी शरकागतिका वर्णत है। किव्याधारम् ---

क्रुतिरियस्य टि वे नान्यः प्रयास्य हं दिवस । अन्तरेणाश्चर्कि बदय्या रूप्ययस्य प्रसादनात ११ इस श्रोक्में सुवीवकी शरबागतिका वर्धन है।

पुन्दर-काषदर्वे---

विवसीयविद्धं कर्तुं रायमयानं परिस्ता । वर्ष चानिच्छता देशे त्वकारी चटक्तिः ॥

विदितस्य हि धर्मज्ञञ्चाणायतस्यः। तेन मेश्री भवन ते यदि जीवितुमिण्डसि ॥ क्स ओकोंसे बारकी बीका अपरेश रायकको सरकागति

करने के विषयमें हुशा है।

यजकारहर्मे —

प्रकृषित रते न दासवचावमानितः । स्वरंश पुत्रांश दारांश राधने शरणं गतः ।।

इस श्रोकर्मे विभीपवाकी शरयागतिका वर्णन है। हामनिसर्वार्थ वस्तवः १ ततस्मागावेताया<u>ं</u>

अञ्जर्ति प्रारुभुकः इत्वा प्रतिशिदये महोदये ।। इस श्लोकर्मे श्रीरामचन्द्रको शरखागतिका वर्णम है।

इसप्रकार नाताविश्व फलायेची पुरुषोंकी शरकागरिका वर्णन करते हुए उन खोगोंकी फबसिदिका वर्णन करनेसे सीच करी कलके किये भी शरकागति ही अस्य उपाय है-यह बात सचित हुई ।

उपाय हो प्रकारके होते हैं-सिद्धोपाय और साध्योपाय। मोचके जिये सिद्योपाय ईश्वर है और साध्योपाय अक्ति द्यादि हैं । ईश्वर सिद्ध उपाय होनेपर भी उनका उपायखेन इद धन्यवसायके साथ वस्या करना बावस्यक है-यही हारवाराति है । शरयागितिमें प्रधान शरयथ बला है. मारकारातिकी सफलताके जिये प्रस्तकारकी बावरमकता है.

धतएव वह धक्रमूत है। क्रोचक्रप परम प्रणाप-सिविके विये की शरकागति की बाती है, वह बदि बावरयक समल गुणपूर्व व्यक्तिके विश्वयमें की बाब, सभी सफब दोती है, चन्यया बीरामधन्त्रजीकी सम्बद्धेव-शरयागतिके समान निष्यस होती है। स्रीशम-कत समझ-शरणागतिके निष्यक्ष होनेका कोई कारण है तो बही है, और कोई नहीं ! श्रीरामचन्द्र मगवान्ने को समद्भी शरणागति की थी, उसमें किसी प्रकारकी बढि बहीं दिलायी था सकती - उसमें करनेवाबेकी छोरसे कोई ध्यमाव मही बतळाया का सकता । शरवयमें जिन गुवाहिका द्वीना धायाशस्यक है, समुद्रमें उन गुर्थोंके धमानके कारण ही, यह शरकार्गात निष्टल हुई । चतपुत्र भोकार्थ-करकार्गाति त्रिन परमाप्ताके विषयमें करनी चाहिये, उनका समल गुद्दपूर्यंत्व श्रीरामायद्यमें विखारके साथ वर्षित हुवा है। ्री रसमामा श्रीमद्वारायखळे गर्वोदा

सर्वत्र ही विश्लेगा।

जिन सक्य संयोकी बावस्यकता शरवयमें होशी है उनका श्रीरामचन्द्र गगवानमें होना श्रीरामायणमें चनेक खर्जीने इप्रच विशास है। वात्सल्यग्या-दोषधोग्यन्त या दोचादर्जिल्लको कहते हैं. दसरों के दोवों को गवा के रूपसे ग्रहण करना श्रयवा दीयों-

थासस्य, सीशीस्य, सीक्षम्य, ज्ञान, शक्ति पारि

को न देखना यही बारसन्य है । यहकायहरे १८ वें सर्नि श्रीरामचन्द्र भगवान ६इते हैं--विज्ञानित सम्पानं स शक्ति सक्तात । कोवी यद्यपि तस्य स्यात्सतामेतदगर्डितम ।।

घर्यात को मित्रमावसे भावे, उसकी में किसी हाबर्टमें नहीं छोद सकता, उसका चाहे कोई दीय ही स्वी न हो, सत्पुरुवोंके बिये वह निम्त्नीय नहीं है। यह र्राष्ट ओरामचन्द्र भगवान्छे वात्सरूप-गुणुक्ता प्रमाद्य है। महान प्रश्वका चपनेसे छोटे प्रदर्गेके साथ बसिष भावसे मिळनसार स्वभावका नाम सौशीरप है। यह गुब

चयोच्याकावडमें श्रीरामके गर्थों का वर्धन करते हुए चयो म्या-धासी जन स्थारयके सामने कहते हैं-संप्रमात्पुनरागस्य कुछरेण स्थेन . वा। **गौरान् स्वजनवित्रसं** कुशकं परिपृष्छति ।। व्यसनेषु मनुष्याणां महो भवति हुःशितः।

श्रीरामचन्द्रजीमें वर्तमान था। इसके कई प्रमाय है।

ब्रह्मवेषु च सर्वेषु पितेव परितृष्यति ॥ क्रमांत् भीराम जब दश्डपात्राते जौटकर दाते हैं सर नगरवासियाँसे स्वजनके समान क्रमान-प्रशन करते हैं। नगरवासियोंके दुःस देखकर स्वयं दुःसित हो जाते हैं। उनके उत्सवमें जैसे पिता प्रत्रके अत्सवमें सन्तर होता है वैसे

सन्तष्ट होते हैं। निवाद गुइके साथ औराम किसमकार मिलते वे पा बाल-'मुजान्यां साभुपीनाम्यां पीडयन्यान्यममधीत्' इस स्रोक्से स्पष्ट हो जाती है। अपनी शुजाझोंसे गुहको धार्तिगर करते थे । श्रीविभीपणको श्रामीकार करनेके पश्चात उनके साथ भगवान् रामचन्त्र इसी प्रकार मिखे चे-'श्रव हुवा^{वे} रामस्त धरिभाज्य विभीवसम् । विभीवसका भी चालिहर रामचन्त्रने किया था । यह सुशीलताका ही कार्य है ।

श्रीशमचन्त्रका सीक्षम्यगुर्च सर्व'विदित है । 'श्र[‡]रा-विकासम्बद्धिकारिका विश्वश्रकः ११ वट श्रोक श्रीवश्याप्य

प्रमाय है। इसमें बहा गया है कि सलुख्य सर्वदा उनके पास पहुँचते रहते थे।

सतवान् शीरासचन्द्रका क्षान 'वृद्धिसःश्रीवयन्त्रम्यां 'पद्मसी पानसम्पद्धः' 'वेरवेराह्मतस्त्रकः' 'वर्वशास्त्रमेनस्वदः पद्धितमन्त्रीवमानवान् कृत्यादि स्वक्रीमें दक्षितित कृत्या है।

भगवान् भौरामचन्द्रको शिल-श्रपटिवपटनासामध्ये त्रनके परिवर्षे प्रस्तत्र हेनले योग्य है। अध्यक्षको प्राय-दान करना, सुरावरको रखा करना, धरदवाका बदार, ह्यासुको गोच हेना धयोच्यायामी वन्द्रमात्रको सान्यानिक ब्रोक पहुँचाना, सञ्जरको मुक्तिक करना हुलादि कार्य उनको गालिक विजयोज हैं।

शासवगुववर्षनके साथ पुरुषकार-राज्यका भी सर्वेन शासवग्रवक्षी हुवा है। युव्युक्षीकी भागकपहरवालिक सीमहाकक्षीजी ही युव्य पुरुषकर रोजी हैं। शीरामाध्यमें भीजानक्षीजीके पुरुषकारलोपपुक गुण्योक सर्पण सिरोक्टन-रेडुवा है। युव्यकारमें राज्य भीर रचक रोजोंके साथ रोच सावनपक्षी शासरफता होती है। जानकोशके कपसे सर्वाधि भीजारकपात्रिकी मावनाइके साथ पक्षीक-सम्पन्ध हीर बेटनोंके साथ मायुक-सावक्ष बर्दानात है। जानक्ष महाक्षमी साम्यां पुरुषकार मानी गयी हैं। जकके प्रशासक्षीन साम्यां पुरुषकार मानी गयी हैं। जकके प्रशासक्षीन साम्यां पुरुषकार मानी गयी हैं। जकके प्रशासक्षीन साम्यां पुरुषकार मानी गयी हैं। जकके

जैसे श्रीरामापण श्रीरामचीज-वर्णनवर दें वैसे दी श्रीसीता-वरित्र-वर्णनपर भी हैं) कातपुर इस कामका नाम शीताचरित भी हैं । वाल-काचारके चीवें सर्गर्वे—

कारमं रामायणं इत्स्ने सीताबादकरितस्महत् ।

समप्र सामायवाको सीताका चरित बताया है। पुरुष्कार होनेसे कृषा, परतन्त्रता, सनन्यार्टक इस तीत गुर्णोको पावरपकरा होती है। श्रीभानकोतीमें ये तीनों गुर्खा निर्णेषकपरे बर्तमान थे। इस बातका वर्धन सीरामाययाने है।

धोणानकीर्याच बहातें क्योनकनिवासे बहिन्तीके-रूपने दस मानि रासा ही जनकी हुमाबा शुष्क है। वैसे भागनहार रामानकार देवनामोंके कह-विधासकार हुमा कीर उनका करणान दुष्की मार्गियोंके दुर्ग-दिसारमार्ग हुमा, देवी कर्मा करणानी क्या करणा की पेतरमंदार कि हि हुमा था, और क्योनकर्माण्यासम्बद्धाः वर्गीहरू देवादि विचानि क्या के स्थि में हुमा हुमा या दूपा हुमा देवादि विचानि क्या हुमा हुमा

हैं। देविक्षणिक दुःबसे सुविजी हो स्वयं तस्समान भागसे यन्दिनी वन उनके दुःशांके निवारणके तिये बरोगवरिनकार्में यास बनाना भागकी कुणका हो कार्य है। योजानकांजी अस्त्रवर्षदा के कार्य वर्षिन्दाके स्वयं प्रदोक्तनिकार्में वास करतो थॉ—हेवा कह्वा उनके सामर्यंक्षे मत्त्रिकार्में वार्ष है। बीसानकीसी चाहतीं हो सक्यको भाग कर सन्दर्श या श्री श्रीआवकीसीची चाहतीं हो सह सातको स्वष्ट प्राप्त्रोंं

> वसन्देशाचु रामस्य तपसदचानुपातमान् । न स्वा कृर्वि दशगीद मस्म भरमाईतेजसा ॥

खणाँ , 'बीरातको पाजा न पाने पीर तपस्पाके रणांची इच्छासे ही में दुसको कपने ठेमसे मस्समहीं करती हैं।' इससे व्यक्ति हैं कि 'सही तो कर देते।। 'अहिन्तानके 'देवमें क्याते हुए चनिको शीतक करनेके किये जो जानकीजी धानिको 'शीले पर हहतता' कहकर जाजा देवेदा सामय्या 'स्वाबी धी,ब्या इनमें 'मत्सी हुक रहायोवर्' करतेका सामय्या 'स्वाबी धी,ब्या इनमें 'मत्सी हुक रहायोवर्' करनेका सामय्या 'स्वाबी धी,ब्या इनमें 'मत्सी इस रहायोवर्' करतेका सामय्या स्वाबी स्वाबी हुन स्वावी स्वावी

संसारी चेतनोंके दःखोंको देख धसहिच्या हो, अमके बु:सोंडे निवारण करनेडे लिये स्वयं प्रकार वन ईश्वरसे प्राचना का समस्य प्रचाधाँकी पता काताका उसके वदारका प्रपान करनेके क्षिये क्रपाकी सावश्यकता होती है। स्वतन्त्र परमारमाको घपने वसमें कर उनसे चेतनींका कार्य करा सेनेके बिचे ईंधरानुवर्गन करनेकी धावरयकता होती है। चत्रव भगवश्यसम्ब्रहारू ग्राम्को भी चावरवहता पुरुषकारमें है। भगवान इनके बचनसे चेतनींका बद्यार कर हैं, इसके जिये क्योंन इनके वचनातुसार कार्य करनेके विषे चनन्याईवाको भी चायरवकता होशी है। सगवान जिनको धपने परतन्त्र समसे और धनन्याई समर्के उनके बचनोंके धनुसार कार्य करना अनके क्रिये चावरयक हो जाता है। चतुर परमाधाको वशमें करनेके बिये पारतन्त्रय और धनन्याईख इन हो गुर्शोद्धा प्रस्पकारमें होना ब्यावस्थक है। ध्यांजानबीजी के ये शांनी युव कीशमायक्रमें दो बटनायों के हारा प्रकटिश हुए हैं।

द्वितीय वार अब जानधीतीको भीरामियोग दुधा, सर्वात् भोरामचन्त्रभीने बानकीतीका परिचाम किया, तब सदमदात्रीके हारा बनमें दोदी सानेके बाद सप्यत्त शोकापुन सीमानकीती गरीर त्याप बरनेकी इंद्या होनेदर anche, is distributed than a time in the distribution of the part of the part

they be a south the thomas they has been themen their tree towards the contents to be in the cold allowed

teef with ways the telest to the was all the telest to the

and from the delical sight of a control to the grade and a control to the g

to go good for the day of a fail of the good for the fail of the f

विक्रा का कुल कुल के स्वतंत्र के साथ के साथ कुल की कुल का निक्रा कुल के क्षेत्र के साथ के कि कुल की कुल कि की निक्र के निक्र की कुल की कुल के कि कि कि कि की कि की।

कुल्लेचे के कोटिए इसके बहुधने है। केला है उच्च के को के कराई है। संस् इन्हें रा इस्ट्रा डेंटचरेंडे कालुसका क्य हेना है। इस बाजर जेनेत होत है सीर annerten ber B. ber ber berte an क्या रोगर है, करे होते होते हैं र कारवपरेश्मी क क्रिके के बक्कि केरे केर केर हैते हैं। की ४६ ६ मा प्रकृति हातः विवेशकाराहर्गा िरक्षे तर्पण्याकेले केलेवच्ये यहे स् रक्करों के के बन्द्र क्याने के से साम an year market and seems after after met का एक बरोहरे के बनेनरे समान करें। करकार विदेशों के केरोड़े का पाट धी क्रमेश्रीहरू क्षेत्रेक क्रकेर हैं. इन्में हुद देरी नक्षक वेश्ववेद्या है ज्यान्त्रीयंत्र हो सुक्क क्या के के उच्च उच्च कर है। कारण है ्रक्तक क्षा क्षेत्र होते हत्तक दर्ज में र عرجوبكوني جست عنه حصل في ويذكر البا المنسور فكاللذار أومية المدمولين وليو الإيمامية بمنظر المنطقين للتبله هري يوس

स्ति क्षेत्रीयके स्तानस्ति है। स्ति क्षेत्रीयके स्तानस्ति है। स्ति स्तितिस्ति क्षेत्रीय

3) jani of Johns, s. to Gebruge Marchild State Late Lates 14 94 402 - Tark State The Tark Lates 1449 1440 - March State The Tark Lates Lates 1445 6 60 84 2440 Earl Care Lates Lates 1466 6 60 84 2440 Earl Care

a made has high to be a contraction of an analysis of a grant of the and a contraction of a

- PRINCE BELLEVINE

ं वापस आनेके जिये जाकर भी दनकी आहाठे कठवाँ

होकर पाइजाको हो वापस स्थापणा हुँकै और उनकी

गाजानुसार सारकार्य पजाने रहे। अन्तर्म सीरमण्यद्वीके

(स्वरासनसीरकुके याद और कक्षी आहाको सीरमण्यद्वीके

(स्वरासनसीरकुके याद और कक्षी आहाको तिरोधार्थ

करते हुए सुवाराज करे। भोजस्मायनी सो उनकी परिचर्षाको

हो गायान मानकर वीक्सायनी स्वराधिक सिरोधी सम्म का सीरामण्यद्वीके हजार सम्मानेत भी पीनाराज्य स्वीकार

करवेमें सदसन नहीं हुए। चरन्तु भारताधी केवल मानकर पारन्त्रनाको सामायनही सीरको होने केवाल स्वीकार

सामायनाको सीरामण्यद्वीकी आहमारो वहासक स्वीवार

सर्वारमना वर्षनुनीयमानी

यदा न सीमित्रिवर्धाति बोगम्। निपुज्यमाना भुवि बीवराज्य तत्रोऽस्यविश्वदर्शतः शहरूमा।।

षार्गेष् भाषान् श्रीरामणत्रके सर्व प्रकारते समानेवर में भाषापित होनेवर भी कामत का वीवाग्य सीवाग्य सीवाग्य सार्वेश राज्ञी महिष्ठ एवं स्वरास्त्रे धीवात्रस्य प्रतिश्वित्र प्रविश्वित्र प्रतिश्वित्र प्रतिश्वत्र प्रस्ति प्रतिश्वत्र प्रतिश्वत्र प्रस्ति प्रतिश्वत्र प्रस्ति प्रतिष्ठत्र प्रतिश्वत्र प्रस्ति प्रस्ति प्रतिश्वत्र प्रस्ति प्रस्ति प्रस्ति प्रतिश्वत्र प्रस्ति प्रस्ति प्रस्ति प्रस्ति प्रस्ति प्रतिष्ठ प्रस्ति प्

वेशान-वासमें सनेव सामैका निरुप्त होनेवर भी स्थान तीन वार्ष माने काले हैं। पहास मतान, बुत्तरा तावन की तीना कहा ने बोगान-वार्ष-वास्त्रपति नार स्वाप्त हैं, करमें दो बच्चाय तो स्थानकर निरुप्तपत्त हैं। दे एक सापन निरुप्तपत्त हैं, और एक ध्यानिकरायार !। वक्तामाय स्थानपतात बहातात है। वस्त्रों विध्य स्वाप्त साम बेहुन साम पढ़ स्वाप्त क्षा स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त साम बेहुन साम पढ़ स्वाप्त क्षा स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त यविरोधान्याय कह्वाता है, उसमें प्रधानप्यारमें कहीं हुई बारोंपर को विरोध बजावित हुए, उनका निमक्षण करते हुए उसको एक किया पथा है। जीवनका निरूपण तो प्रकार किया गया है। तीवनका निरूपण तो प्रकारप्याप्याप्य निरूपण हुए हो। चौचे सज्ञान्यायमें शुकायामां के प्राप्य कव्यका निरूपण हुए। है।

वेदान्यवाखाडे वरशृं इच धोरामायदामें भी उन्हों क्यों-को चरित्ररूपमें निवद किया है, मुक्य पात्रांके चतुप्तानीके इत्तर वनका सुद्रीकश्य हुवा है। यरतक्षकों निरूपय दिलाके साय कोर सायककों निरूपय भी बिकारके साथ हुवा। रूकको निरूपय संवेदमें हुवा। जोरतकहर साहिका वर्षमा। भी यद्योगित हुका।

हसने श्रीरामाययके जुरुय ग्रीतेपाच चर्योमेंसे इन्हां ही बहाँपर रुग्टोकाय किया है। श्रीरामाययके ग्रीतेपाधार्य कहारह साने कार्ते हैं। उन सबके वर्णन करनेसे निरम्ब बहुत बहा हो जाना, हसनिये कोड दिया है।

चौनीत इजार मन्योंचावा चौराताच्य चौनीत सवरों-वाली साविजी गायकीचे चायसपर रविल हुमा है। गायकी क क्याचारते धौराताच्यका आरम्ब चीर किसा क्याचेत स्थाचित हुई है। यावजीका म्यम चवर 'श' है, मीरामायको आरम्ब देखें कोच 'वस्ताच्याचीन्तर' में तकर चायक है। गायचीचा किसा चवर'या, बीरातमच्याचा धौरात्म खोक-का चीलात चवर धी'य'है। कचराताच्यको च्या समात हो साती है च्याचीन वहीं कि जीरासायचाची च्या समात हो साती है वह सोल है—

ववस्त्रमाग्रान् सर्वन् स्थाप्य रोक्गुदर्दिवे ।

द्धिः श्रमृदिवेदेवैर्मणम श्रिदेवामहस् ॥ इसमें धन्तिम भ्रमर 'त' है। इसके मागे को एक

हार्ग कालक सन्द वृद्ध है । समेद हमा सार्थ ह हार्ग है, यह केश्व कहात्रुविक्ष है । समेद हमा समाहित करात्रे सावपादि कारा ध्यारे पहुँ पूर्व हैं । सम्य कर्ताम कारायां-सित्तासायं कीर सावपाद्यात्रियासायं पहुँ हो होना वादिये । सावपाद्यात्रम्य कारायाय्यात्रस्य स्ट हो होना वादिये । सावपाद्यात्रम्य कारायाय्यात्रस्य स्ट हो । होना कादियां वाद्यात्रम्य कारायाय्या स्ट है , को समान्य काद्यात्र्यो क्षितासायाय्या समान्य है । कारायाय्या

रामायण

गीता चौर तुसरीदासकी रामायगढ़े संगीतसे जो स्कृति चौर उचेत्रना सुन्ने मिलती है वैदी चौर किसीने गाँ मिलती । हिन्दूभर्मेंगे तो यही हो बन्ध ऐसे हैं जिमके विषयमें कहा जा सकता है कि मैंने रेले हैं ।

पुलसीदारजीकी सदा सजीकिक थी। वनकी सदाने हिन्दु-संसारको समाययके समान प्रत्यक्ष मेंट किया है.
रामायय विद्वासे पूर्ण प्रत्ये हैं, किन्तु उसकी भक्तिके प्रमायके मुक्कियों उसकी विद्वाला कोई महश्व नहीं रहा।
स्रद्धा श्री शुद्धिके चेत्र भिक्त-भिक्ष हैं। सदासे सन्दार्शन, सामायानकी सुद्धि होती हैं, इसकिये प्रत्य-शुद्धि होती हैं।
हैं। शुद्धिते वास्त्रप्रामकी, स्थिके ज्ञानको सुद्धि होती हैं। परन्तु उसका स्थानशुद्धिके साथ कार्य-कार्य-शिक्ष स्थान स्थानश्य नहीं रहता। स्थानन पुद्धिकार पुर्वे का स्थानश्य की स्थान स्थान स्थान स्थान पुद्धिकार साथ परिव्यन्त्रका होता स्थानम् हैं। इससे पाठक समय सब्दे हैं कि एक वातक स्थानकी रहता है स्थान स्थान हैं। स्थान स्थ

में तससीटासबीके रामायणको भक्तिमार्गका सर्वोत्तम अन्य भावता हैं । (नवबीवनसे) —महात्मा गाँधीजी

रामायणका नित्य पाठ करो

(महासना एं॰ महनमोहनजी मालवीय)

सामायप और महाभारत हिन्दुक्योंकी स्मृत्य सम्बन्धि है। मुक्ते हेन के काववनसे यहुत सुख मित्रता है। रामायवर्षे हिन्दुन्सम्बता के जिस से के बादर्गेका इतिहास है, वह सत्त्व पतने और मनन करने योग्य है। रामायवर्षे के कहना कराज प्रसान करना है। उसमें तो भक्तिसका प्रवाह बहुता है जो जीवनको पवित्र कर देता है। रामाया हिन्दु-गुरह्स-शीवनका भारते बन्तामा गाम है। में चाहरता हैं सब जोग मतिवृद्धि निवसमूर्येक रामायवर्षा पात्र स्तीर वतमें यात्रावर्षेक सामायवर्षा पात्र स्तीर वतमें सम्बन्धि हुए मार्गय प्रवाह हैं स्ताव जोग स्ताविवृद्धि सुप्तावर्षेक सामायवर्षेक स्तावर्षेक स्तावर्ष्ठ स्तावर्षेक स्तावर्येक स्तावर्षेक स्तावर्षेक स्तावर्षेक स्तावर्येक स्तावर्षेक स्तावर्येक स्तावर्ये

रामायणका सन्देश (साध डी॰ पड॰ धलानीजी)

थयपि महाभारतके समान रामागया विश्वकोष नहीं है, तथापि वह महामारतकी भाँति ही, एक महान् सोस्कृतिक पर्म-मन्य है। महामारतके समान रामायख सेर्प्यतिक पर्म-मन्य है। महामारतके समान रामायख सेर्प्यतिक पर्म-मन्यतिक स्थानिक स्था

सुर्र सरीवको एक निष्माय कथाकी साँति नहीं, वर्र एक मृत्रम सम्यता, नदीन भारतके पुनर्निसीयके क्षिये, एक सन्देश कौर एक सचा रखते हुए, बीवन-ययके रूपमें इसका अये सिरोमे सम्यवन करना चाहिये।

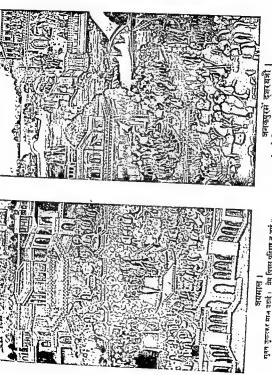
> ्री सब वर्गी नयोवनी ध्वतीय करते हैं। उन्होंने व सब वर्गी नयोवनी ध्वतीय करते हैं। उन्होंने - • इस । चयः इस प्रतानन धर्मवासका

ा हुए। घनः इस पुरानन धर्मसाधका ---हरसः विकास (चननामे विकास साम बता।) बदी बड़ी कर्जोंने, मशीन गर्नोंने, काञ्चनकामनामें ह विख्यासितामयी सम्यताके उपकरणोंने नहीं, केवळ वर्षस्य विद्यास्मक शक्तिमें ही संसारके मबयुगको खाराएँ निहित्र

भारत पतिताबस्थामें है किन्तु तब भी मेरा हत विश्वास है। उसका प्रधारतन उसी दिन हुया अद्र प्रस् अपनी तपस्ताकी पान्तरिक गावना, अपने धार्सी हा अपने प्रापको विस्थत कर दिया।

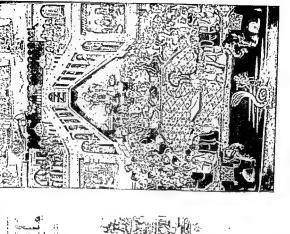
किमी पात्रात्व राष्ट्रके चतुकायाते नहीं, किन्तु हैं चैतनाले-सगवान् रामकी इस चेतनाले ही इम सुक्त होंगे

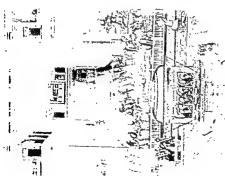
सीरामधी चेतना नष्ट नहीं हुई है। चाप भी हर्ग इत्त्वमें उसकी चावाज़ शुनापी देती है—हिसा नहीं परापकार नहीं, वेबस तपस्या भी हमें माफ करेगी!



मुम्म जुमल्यर मान दश्को । जेम पियस पहिमा न आहे ॥

नुष समीय सोहिहं मुत्र चारी।





श्रीरामचरितमानसपर श्रीरूपकलाजीके वचनामृत

१-विरक्ति और अनुरक्ति प्राप्त किया चाहै तो श्रीरामधरितमानस पढ़े। २-श्रीमद्भगवद्गीताके गृह तत्त्वोंका व्यास समास सममना चाह तो श्रीरामचरितमानस पहे। ३-श्रीविष्णवराणका रहस्य समभना चाहै तो शीरामचरितमानस पढ़े। ध-महर्षि मन् प्रभृतिकी स्पृतियोंका पण्डित हुआ चाहे तो श्रीरामचरितमानस पढ़े। ५-श्रीरामानन्द्र मताव्य भास्करका तत्त्व सममना हो वो श्रीरामचरितमानस पढे।

वाल्मीकीय रामायणकी विशेषता

(रेखक-विद्वर ५० श्रीकालकणानी मिन्न)

कजन्ते रामरामिति मधुरं मधुराक्षरम्। आरहा कविताशाखां वन्दे बाटभीकिकोकिलम् ॥ बाह्मीकर्मनिसिंहस्य कविता बनवारिणः । श्रृष्यन् रामकयानादं को न बाति पराहति म् ।।

१-वास्मीकीय रामायय धादिकान्य है। इसकी रचमा किसी ग्रन्य कारवढी छावा खेकर नहीं की गयी है। इससे पूर्व जीकिक युन्दका ही व्यस्तित्व नहीं था, फिर काव्यकी तो बात ही क्या है है

नृतनच्छन्दसोमवतारः' ^६आश्चायादस्यत्र —**उद्य**शिव

१-काम्बडे निर्माण करने तथा समझनेके लिये थीन बातें भाषरयक्ष हैं,-(१) शक्ति।(कविश्वतीजसंस्कारविशेष मर्पात् जन्मसे ही हृदयमें कविता करनेका एक विशेष संस्कार होता है। यह संस्कार कायवा शक्ति कार्जित मही मपित है बरम रच हो सी है) (२) स्थावर-महामारमक संसारके समस विपयोंका बोध सथा काम्यशास इतिहासादि अन्धोंके कावधनसे उत्पन्न हुई 'व्युत्पचि' (इसी व्युत्पचि अववा भाक्षीचनारमंद राक्तिसे काय्यके दोध-गुराका ज्ञान प्राप्त होता है) भीर (३) काम्यशासके समेजांसे शिका शहस कर सदनुसार काध्य-रचनाका श्रम्यास । इन्हीं तीन विश्वोंके सावन्थमें भलकारराधके उद्घट पविदत संया काम्य-प्रकारा हे रचयिता शीमम्मराचार्य बहते हैं---

> शकिर्निष्याता जीकबान्यशासावनेष्टणातु ह काल्यशिक्षयाऽभ्यास इति देतुसादुद्मवे ॥ —- হাস্বমকাগ্র

इस रखोकमें यह बात ज्यान देने बोल्य है कि इसमें वीनों शक्तियों के लिये 'देवनः' शब्दका प्रयोग न करके 'देव:" शम्दका ही प्रयोग किया गया है। इस एकवचनान्त 'हेद्रः" शब्दका प्रयोग ठीक है क्योंकि इसका तालवें शीनों शक्तियोंके सामअस्यते है। कान्य-निर्मायके विये इन तीनों सक्तियोंकी एक साथ ही चावरपकता है ! इसीक्रिये सम्मदाचार्यने विद्या ई-

इति त्रवः समृदिता न तु व्यस्तास्तस्य काव्यस्योत्मवे

निर्माणे समुद्धासे च हेतः न त् हेतवः । --ৰাধ্যমকাৰা

किन्तु वात्मीकीय रामाययकी रचना सी विना डी किसी प्रसिद्ध सामग्रीसे हुई है। इसकी क्या इसप्रकार है, एक समय मन्याद्ध कृत्यका सम्पादन करनेके जिये तपस्ती वालमीकि समसा बढ़ोके सदपर शबे थे. वहाँ हजार, उनकी इष्टि, व्यावहारा निहत एक काममोहित क्रीज पठीके उपर वड़ी, उसे देख महर्षिको शोक हुआ भीर वही शोक धनध्यक्षम्बद्धे रक्षीकस्पर्मे परियस होकर उनके मुखकमलसे प्रकट हो गया । ध्वन्यासोकर्ते लिया है-

सहवाशिहरूतर क्रीक्न्याकन्दजनितः शोक पर क्रीकतमा परिणतः ।

चर्यात अपने सहचाके वियोगसे कातर क्रीश पणीके रदनसे उत्पन्न हुन्ना ग्रोक ही रक्षोकके रूपमें परियत हो गया । इस्रोक इसमकार है-

मा निवाद । प्रतिष्ठां स्वमनमः शास्त्रीः समाः । यत् कीश्वनियुनादेकमवषीः काममोहितम् ॥ --- वात्मीकीय

भगवती सरस्वतीने यह यरदान दिया कि जी इस श्लोकका सर्वेत्रयम पाठ करेगा. उसे 'सारस्वत-कविन्य' प्राप्त होगा । यमा---

> यः प्रयम्भेनसध्येष्यते स सारस्यतक्षिः सम्पर्यते । — काम्यमीयांसा

उसी समय संगवान चनुराननने धाष्ट्र धाना दी कि 'हे ऋषे! धादिकते! बाप संन्दासना प्रकासमानु प्रहातस्वके पूर्व ज्ञाता है। यतः बीरामचन्द्रशीके चरितकी रचना कीजिये। बापकी दृष्टि धमतिहत महाशसम्पद्म हो लावगी---



यद्किमुद्रासुह्रदर्भेशियी,

क्यारतो यहनुरुकेरणुरुम्यः । तथाऽमृतस्यन्ति च गदचीति

शशायणं तरकवितृत्युनावि ।

बागमीक्षेत्र रामारयमें सर्ववचाय जानि बीरस्य है। प्रत्यात्व रहींका भी च्यक्तरसे व्यवस्थान प्रयोग किया राया है। इसकी भारत हमनी भारतक है कि उसके अस्ति पुनिके सार परी-साथ जन स्त्रांकी प्रतीति होने बगानी है। इस महाबाचके प्रयान नायक, चीरोहण्य, चनुक्रव, स्वारंग्यस्थात्वर, परिवर्षणावतंत्र, चाहते तथा भीरतिबन् पुरुष भारवाद रामार्थ्यक्षी हैं।

राम पद वर्र अंद्र राम वन परन्तपः । राम पद परं तर्षन श्रीरामी अद्यासकम् ॥

—राधहश्योपनिषर् सो ह वै श्रीरामभन्द्रः समनवानीद्वतपरमानन्दश्रमा।

--- रामो चरताविनी वयसिषद् अहो प्रासादिकं करमनुभावश्च पाननः । स्थाने रामामणकविदेवी वाचमवीवज्ञतः ॥

---बत्तर भीरत

धीरोशसके सचय---

महासक्तोऽतिगम्मीरः धमानानविक्रस्मनः । रिवरो निगुदाहङ्कारो वीतोदात्तो हदनतः ॥

महान् नीर, अत्मन्त सम्मीर, चमावान, व्यत्मसावासे दीन, चीर, भारमाभिमाणी चीर दश्वती होना—वै भीरोदात केंद्रचया है।

किसी भी स्थलपर श्रीसामचन्त्रमें बाह्म मर्शसाका क्षेत्र भी नहीं दिखळाची पदता । श्रीरामकी वक्तिको देखिये—

> 'करापराधस्य हिते नाम्बरध्यमामहं छ्रमम् । अन्तरेशास्त्रितं चया हासमाम्ब प्रसादमादा ॥। नो भेद्रसमगानुसमारीयामणस्यदोच्छरूच्छेणिक-स्कृतप्रसादमानुसम्बर्धस्य पुत्रैर्नृत्य सारमाति ॥ — अस्मकारक

दिन्वैरिन्द्रविदवत्ववषणस्पिरोंकान्तरं प्रापितः केनान्वत्र मृगाधि ! शक्षसपेतः कर्तं च कण्ठारते ।।

हाँ, श्रीरामने वहाँ तहाँ निन्दाके मसझोंमें तो भाषता नाम श्रवरण विधा है ! यथा—

रामस्य बादु रासिनिर्मस्यमीक्षेत्र सीताविवासनपटोः करुणा मुतस्त । ---असरमस्त्र

बब तया चमाकेतो प्रचुर दशहरण मिलते हैं। इनके सम्बन्धमें जिसना ही वर्ष हैं। सन रहं गयी गम्भीरता, उसका भी दिग्दर्गन कराता हूँ।

आहृतस्यामिषेकाय विष्टुष्टस्य बनाय च । य मया रुधितस्तरस्य स्वर्गेऽप्याकार विश्रमः ।। ——वास्मीकीय रामायण

प्रतिनायकके वर्षनित प्रधान नायकके शक्तवेकी हृदि होती है । इसका भी सुन्दर तथा युद्धकायकमें बड़ी खुडीके साथ वर्षन किया गया है । बथा----

यदापर्यों न बक्षान् स्वादयं राष्ट्रसेदकरः । स्वादयं सुरकोकस्य स शकस्यापि रक्षिता ।।

महाच्यान्यके खचयाके धनुतार हतमें प्रतिसाँके धन्तर्मे इन्दर्रोका परिवर्तन तथा निम्निविधित विपर्योका वदी इन्द्रसताके साथ विषय किया स्वा है—

प्रभाव, मध्याह, सन्त्या, राष्ट्रि, ऋतु, बन्द्र, सूर्यं, शैक्ष, बन, नदी, समुद्र, ऋषि, आध्रम, यह, भीति, युद्ध सादि । रुपुर्वं ने नेवाद्वित विषयेषे सम्बन्धमें मीचे विक्षी स्किर्य सन्त्रेले पार्ट्डोंको छन्ततः वर्धन-रौक्षीका पता तो सदस्य ब्रम्य सावमा ।

चन्नचन्द्रकरस्पर्शेट्शॅन्गीतितारका । अनुरागनती सम्बद्धा वहाति स्वयमस्वरम् ॥ शहस्यमन्दरमारखा मैपसोपानपीतिमिः । स्टम्पर्यनमस्तापरख्यते विवाहरः ॥

बहन्ति वर्षन्ति नदन्ति मान्ति ध्यायन्ति नृत्यन्ति समादवसन्ति ।

नक्षे धनामचगजावनान्ताः त्रियविद्दीनाः शिक्षिनः प्रवह्नमाः ॥

दर्शबन्ति शश्यघः पुलिनानि शनैः रातैः । नवसद्वमस्त्रीया वयनानीव योपितः ॥

सारांग्र कि शीवास्मीकीय रामायया महाकाव्यके समस् अक्ष्योंमें बादर्य है ।

श्रीमद्रामायण

(क्षेत्र १९ वो दं ब्रायदतमासरगती महारात्र, श्रीतानकीपाट, श्रीत्रपीच्यात्री)

अधर्वत्रिरीय ताविनीयोपनियन्के 'धर्ममार्ग चरित्रेण' इस चाक्यसे श्रीमद्रामायगर्म सर्व-वर्न सप्तरक पूर्वतथा अपगत है । मानव-जीवनकी सार्थक बनानेके उपार्थीकी सुगमनाके साथ जाने शिषे रामायण ही सर्वोत्तम साधन है। इसी यक कारणमें केवल भारतीय विवृत्मण्डली ही नर्व किन्तु इक्षुनैत्य, अर्मनी, शमेरिका प्रभृति देशोंके समाजतस्विधद्व पण्डिती तथा दार्शनिकीन में मुक्तकत्त्र होकर इसकी महिमा गायी है। ईश्वरके सभी बात्रिमांच सर्वत्रत्याणगुणपूर्ण तथा सर्व किरोबनाार्य ही इए हैं, परन्तु रामायण काध्यके नायक परमहा श्रीरामजीर्म सर्वगुणीयलियको इर विरोधक्रपेत रायते सीकार किया है। एक कविकी यही ही हदयहुमा मृकि है-

अकर्णागपरोच्छेपं विधिर्मद्वाण्डमञ्जूषीः । गुणानाकर्ण्य रामस्य शिरः सञ्जालयेदिति ॥

भागीत सुधिरचयिता विधिने शेवजीको इसलिये यिना कानके बनाया कि यदि कान रहेंगे तो भीतम-गुण सुनकर ये शिरःचालन करेंगे, अतः प्रहारिड मङ्ग ही जायगा।

राम-विरहके श्राँस

भारवार सूमत कहा अरे मीत ! कुलळात। ज्ञा-जीवन जीये विना, जीवन बीतो जात॥

राम-विरत-रस इम वहैं, देनर शिसुधा हैं न। निरिश्व नेह करि नेह भरि, नेह त्रियेनी नैन॥

रहे अपाधन क्यों मिलें, जग-पावन सुल-ऐन।

राम-दरस भावत इन्हें, नित न्हायत यों नैन॥

सुरुत सुमन विकसित करन, राम-दरस फल छैन। सींचत लता सनेहकी, निस-दिन माली नेन॥ मुकता मनि अँद्धुआ अम्ल, कत दरकत दिन रैन ।

हरि उर पहरावन अही! हार बनावत नैन॥

हरि-इरसन-हित सब तजे, अञ्चन, रजन, चैन। थॅसुआ कन मुकतानको, दान करस नित मैन ॥

विरद्द अगन धूनी तपे, राम नाम सुख देन। भैंसुआ-कन माला लिये, अपैं जीगिया नेत ॥--भीभदृतकाल माहर

.रामचन्द्र मंगल करे (केलक-स्र•पं• माधवपसादजी मिल सुदर्शन-सम्पादक)

कौशायाके सुत दशरयके प्राणाधिकवर . बन्धु भरतके वीर सुमित्रा-सुतके प्रियवर । *े वशिष्ठके शिप्य जनकजाके मनमावन* ,

. देव विभीपणके प्रमु-पात्रन।

..े काल हैं, सञ्चारक शुमकर्मके, • • मैगल करे नाय सनातन धर्मके ॥

शंकर और राम

(लेखक-जीअजुंनदासजी केडिया) छबीले रामहीसे रमनीय-रूप, संकरसे राम कमनीय छवि-धाम है

राम अनुहार एक औढ्र-उदार ईस, ईससे उदार राम प्रे सब काम है

राम-नाम हेतु-उपराम सिव-नाम ही सी, राम-नाम ही सो अभिराम सिव-नाम है

पोषक प्रजाके पान सोपक सुरारिनके, रामके समान संभु संभु सम राम है।

मर्यादा-प्ररुपोत्तम श्रीराम

(हेराक-राव बहादर श्रीचिन्तामांग विनायक वैच एम० ए०, एट-एट० वीक)



📆 🖫 श्रीरामचन्त्रको सर्वोदा पुरुषोत्तम श्रीर र्थ श्रीकृत्याको कीवा-पुरुषोत्तम कहते हैं। यह संजा उत्तर हिन्द्रस्तानमें ही मसिद ्रिट्रे है, महाराष्ट्र या दक्षियामें कम है।

परमात्माके धनेक धवतारोंमें प्रशु श्रीराम क्यूजीका चरित्र प्राथम्स सर्ड, मीति-प्रोधक कीर मध्येक वातमें मर्थावा-को किये हुन है। ओहरण्यारित यहत कठिर चीर मुहार्य-वक है। उससे बीच प्राप्त करना सामान्यवदि मनुष्यके किये कठित है। जस श्रीक्रमाको समस्यक्ष शहसाँसे सहना पदा था, परन्तु मञ्ज श्रीरामधन्त्रजी मत्यश राशसींसे क्ष्ये थे । इसीसे ओक्राय-परित्र जीकारूप है और शीरामका चरित्र मर्पादास्य है। भीराम-चरित्रकी सर्पादानीयकताकी मैं इस छोडेसे लेखने यथामति निवेदन करूँगा । व्यक्ति चगाव है, परन्त अपनी शक्ति-प्रनुसार चगाव विषयमें भी प्रत्येक प्राची थोदा-बहत तेला चाहता ही है।

संसारमें प्रत्येक मनुष्यको पुत्र, बन्धु, मित्र, शत्रु, पति चादि साध्योका व्यवहार करना पहला है और उस धन्य-पुरुपोंको राज्य भी करना पहला है। उत्तम पुत्र, उत्तम बन्धु-उत्तम मित्र, उत्तम रात्र, उत्तम पति श्रीर उत्तम राजा सादि सभी बातोंमें प्रभु श्रीरामबन्द्रका चरित्र सर्वादास्त्ररूप है भौर भाज हजारों वर्षोंसे वट आवै-जातिका भावरों होकर इमलोगोंके चा बरखींपर योज-वहत प्रमान दा बरहा है। यही दिन्द समाजकी धन्यता है कि उसमें धन श्रीतासचन्द्रका चादर्शमृत चरित्र परिग्रामकारक हुन्या है । इसीटिने हिन्द समाज इस विषयमें चन्य समाजीकी चरेशा बेह है। इस विषयपर मैं मयामदि कुछ धर्मन करना चाहता हूँ।

प्रभु श्रीरामचन्त्र उत्तम प्रत्न थे। यह सी सभी जानते हैं कि पिताकी धाला पाठन करना प्रतका परम धर्म' है, परन्त घम की परीक्षा विपश्चिकात्रमें हवा काती है, स्वर्णकी

वरीचा चांच्यें होती है तो हीरेकी हथीडेकी चोटमें। कर श्रीरामकी थवराजके पदपर प्रतिष्ठा होगी । इस घोषणासे सभी उत्सवमें चानन्तमध थे, परना प्रातःकाठ ही यह भाजा हुई कि श्रीरामको १४ वर्षतक वनवासी होकर रहमा वहेगा । प्रभू श्रीरामचन्द्रने इस श्राक्ताको भी पहलीकी भाँति डी धानन्दमे स्वीकार किया । 'पिताकी करोर घालाका भी उक्क धन नहीं करना चाहिये' यह हमारे समाजकी मर्याता है। यह शरीर विवासे प्राप्त हवा है, बतः उस विवाकी बाजानुसार वर्तना प्रश्नका कर्तन्य है: परन्त साधारण लोग तो पिताका धन क्षेत्र चाहते हैं, पिताले धन-प्यासकी भाजा नहीं क्षेता चाहते । वे धन वाँटनेके किये ग्रहा इसमें बाका साथर करनेको रेवार हो जाते हैं । शासववारें संचार को प्रोधी यससाय है। छच्छाण श्रीरामचन्द्रते कहते हैं, 'यूरे बाप कामान्ध होकर सीतेजी आके अन्देने फेंस गये हैं, आप उनको कैव करके राजग्रहीपर वैठिये । भरतसे में निपट लॉगा ।' उत्तम चीर अध्यम पत्रका वार्त भेव विकास तथा है। प्रभ श्रीराज्ञ-चन्द्रने आईकी यह सलाइ नहीं मानी वरिक जाकर माता कैंदेवीसे बोसे,'में बाएकी धारासे ही बनवासके टिये घटा वाता, वापने मेरे पिताबीको बीचमें क्यों बाढा ?' तालाई बह कि सौते ही बाताके साथ भी प्रश्न श्रीरामचन्द्रने घपना उत्तर प्रभाव विभाषा ।

अस्य और भीरामचन्द्रके साभाग्यक्षे उत्तम-प्रश्नुका कावरण सिद्ध ही है। भरतको राजा बनावे हुए या बनसे **ाँटाते समय प्रभू भीशमयन्त्रने उत्तम प्रश्न और उत्तम** बन्ध इन दोनों विषयोंमें भारते बर्ताव किया है।

सुधीव और विसीपणके सम्बन्धमें उत्तम मित्रका भी आदर्शे भावरन दिवलाया है । स्वार्थे छोडकर सित्रका कार्थ करना पहला है और मिलाश हवंक उसको निवाहना पहला है। रावण अन्ततक प्रमु श्रीरामबन्द्रसे राष्ट्र अनकर छड़ता रहा परन्तु कर वह जुद्धें भारा गया तह मभ भीरामने विश्रीयकसे बहा-'भागान्तानि वैदाणि' 'वस. वैर सत्यतक ही था । अवश्वता समास हो गयी। अब तो यह जितना समको प्रिय है उतना ही सम्बन्नो है। चतप्त यथावैभव उसकी कर्मकिया करो ।' श्रव्हशीज हे द्वारा घसिटाये जानेकी भारत हैक्ट्रको धारकी तरह श्रीरामयन्द्रजीने रावस्त्री साराको श्रीरामयन्त्र' शरणं प्रपत्ते क्र

38

रथके साथ रस्तीने बाँचकर समाम संकाभरमें नहीं यसिटयाया । ऐसी वयार्वता और मीनिजता बड़ी क्षित्र सकती है है

चयमम् श्रीरामचन्त्रके उत्तम पतिके वर्तांगको देशिये । संसारमें धार्ती मनुष्य पति होते हैं और सभी प्रधाशकि भीतिके चलुतार वर्तनेका प्रवस्न करते हैं, वरम्यु प्रशु बीराय-चन्द्रका चरित्र सो परमोत्तम और अहिसीय है। उन्होंने राजा द्रोकर भी बाजीयन एकप्रतीयतका चाउन किया । साधारण कोग इस उत्तमता सक नहीं पहुँच सकते । यनवासकी बाजा होनेपर उन्होंने सीताजीको दुःल और कर्शकी भीतिने सकत रलना चाहा. परन्तु श्रीसीता-चरित्रश्री मुझ श्रीरामचन्द्रके समान ही उत्तमोत्तम यश्कि उससे बद्दश्य है। हिन्यू-संसारमें

श्चियोंका भाषरण सम्य समाजोंकी भरेका सधिक मर्शसनीय है भीर वह सीताजीके उदार चरिश्रके बादराँको क्षेकर ही है. इसमें तनिक भी सम्देह नहीं । सीताजीने कहा-यस्त्वया सष्ट स रवगीं, निरयो यस्त्वया विना ।

(वा० रा० १।३०।१८) 'धापके साथ जिस स्थानपर रहना हो वही स्वर्ग है चीर चापके विना जहाँ रहमा हो वह नरफ है। अब पतिके साथ राज्य-भोग भोगे हैं तथ पतिके साथ वनवास क्यों अही भोगना चाहिये ? सती क्षीको पतिके साथ सुख धीर दृःख होनों ही भोगने उचित है।' यह मर्यादा सीताजीने ही स्यापित की । श्रीरामचन्त्रजीने सीताजीको साथ लिया श्रीर परियामस्वरूप सीताहरण हुआ। श्रीरामने परिका कर्तस्य

पालनकर रावणको मार सीताजीको छुडाया परन्तु किसी सन्देहसे उन्होंने प्रहण करना चस्वीकार किया । सीताजीने परीक्षा देकर अपनी श्रदता सिद्ध की। सदनन्तर औराज-चन्द्र उनको साथ लेकर धानन्त्से श्रयोध्या औट शीर सीताके साथ राज्याभिषिक हुए । ब्याधुनिक सुशिक्षित विद्वान प्रायः ऐसा प्रश्न किया करते हैं कि 'इसके बाद शीरासक्त-जीने सीताजीके साथ जो बर्ताव किया वह क्या उत्तम पतिके योग्य है ।" भारोकबादश्रवणदहासीः श्रुतस्य किं तत्सदनं कुरुस्य ।?

ऐसा प्रश्न कालिदासने भी सीताके मुखसे करवाया है। चतप्य इस विषयमें तुष श्रधिक लिखना परेगा। यह बात प्यानमें रखनी चाहिये कि यह बर्ताव प्रशु श्रीरामचन्त्रने राजधर्मके चनुसार किया चा,पतिके सम्बन्धसे नहीं । सीता-भी एक वर्षतक राशसके घरमें रही थीं। इसी बुनियादपर . . चला था और अयोध्याको प्रजाके चन्तःकायामें शजाके

'शेंहें देशों च प्रार्ण च अहि वा जानुहीमहि। आराधनाय रोडानां मुचना नारित मे स्थया ॥१ 'समें गीना मार्वामें भी श्रीवह तिव है परमु हो। रायन उसमें भी धाविक जिय और क्रविक क्षेत्र क्रीज इसकिये आया और आयार्थ भी जिया जानकीका भी मैं वा करूँगा।' इस चरित्रमे यह राजाका सर्वाताक्य कर्नम की होता है सर्थात् यहाँ प्रभु भीरामचन्त्र किय प्रकार 'वर्ड राजा' थे, यह बतलाया गया है। 'बलम' राजाका कर्नान्य जैसे सोकाराधन है हैने हैं 'सत्यप्रतिज्ञ' होना भी है। यह सम्य चरित्रमागरे 📂 कोता है । श्रीरामचन्त्रजी चित्रकृटपर मुनिरृत्तिमे रहने हो। भरतने वहाँ पहुँचकर बनवामकी प्रतिज्ञात्याय कररेने हैं वि

मानापर्मे कुन वर्माति फैलने सगी वी। इस

श्रीरामचन्त्रने विचार करके यह निजित दिया कि स

कर्मस्य पनिके कर्मस्यये भी क्षेत्र है। राजादा दुस निव

कोना चाहिये। Ceasar's wife must be ab

suspicion, भागुनिने इस विषयमें बहुत ही व

विचारशक्य किये हैं। मजाराचन राजका परम कर्नन है

उनसे सत्यन्त चावह किया और कहा, 'पिताबीने भा मेरे किये ही यह भारत दी थी परन्तु में राज्य नहीं चार भाप ही राज्य कीजिये।' मानु श्रीरामचन्द्रने इसकी शुन्दार। दिया। उस समय बसिष्ठ चादि चनेक कोगाँने कहा 🖫 भरत राजी है को प्रविज्ञा पालनेकी भावस्थकता नहीं।' भगवान् श्रीरामने भरवसे कहा, 'तुम मुझे राज्य करनेहें 🌃 ले जाते हो परन्तु जो सल्यमतिक नहीं है वह राज्य हा योग्य भी नहीं है, क्योंकि राज्यकी मतिहा ही सवगर 'सत्ये राज्यं प्रतिष्ठितम्' श्रासत्य योजनेवाञ्चा भण्या राजाम् हो सकता ।' महारानी विक्टोरियाका घोपणापत्र बनहोती सनद है। यों कहनेवाला कर्तन हमारे रामराज्यके बार् (Ideal) से कितना गिरा हुआ है। इस बातको पार

सोच सकते हैं । प्रजाराधन और सत्यप्रतिज्ञल इन दो गु^{वा} पर ही रामराज्य प्रतिष्ठित था फिर यह सुखी स्यों नहीं हो^{हा} वदि कमी प्रजाको दुःख हो तो उसका भी भार राजा व्याता है, यह प्रमु स्रीरामचन्द्रजीकी उच्च भारता मी तालयं, इस उदास राज-कराध्यकी कल्पना ग्रन्य किसी र राजा या राज्यमें दिस्तायी नहीं देती। इसीकारण प्र थीरामचन्त्रको हम 'उत्तम राजा' कहते हें चौर 'सुराभद उचतम चादरौ (Highest ideal) रामराम्य बताते 🚺

ह्या योहेंसे निक्तरणी यह मालुस दोण कि हम अनु संस्थान प्रकृति मालीस हुदर्गमाम वर्गो मानते हैं । इधिहासों हससे सर्वेचा निक्कृत हिराजा उदाहरण स्थीनरोज है । अध्यत इज, अध्यत करतु, अध्यत मित्र और स्थवम राज्य सादि सभी निरोधी गुण उससे गर्वेचात में । विलाकों कैद्वस, जोड कर्म्य हाराकों सा स्थी, सुरावका पट्टी मित्र करते थेविते उसका पात कर, उसने राज्य किया। अपेक शतुसोंकों उससे पोसेसे सारा। सादाज विचानोंकों सणु बनाया सींत उससे मालेक बाद उसके राज्य कामाण किया। सल्याविक्ताका निरोध को बहाँतक किया कि विवासी के साथ वहते यह प्रविज्ञा की कि तुत्तारे वात्रकों के साथ भी कभी धीका नहीं होगा। किर दरवारों हाताकर उन्हें कैंद कर विवा। । जारास्त्रकाका विरोध हतना चार कि हिन्दू प्राप्त हो पोरित हो गये। । हिन्दु खोंके पामपूर्य रुपान तोड़े यो । छात्रचे वह है कि बौरानेक्का राज्य सामाज्यक्षे क्षवन्त विकद था। इस विरोधी प्रशानने पाक्कोंको श्रीसमन्त्रक भाषीत प्रकोषधाय की कुछ कारणा होगी।

मर्यादा-पुरुपोत्तमकी मर्यादा

(लेखक-राववहादर राजा बीदवंगसिंहणी)

THE STATE OF THE S

संवरेरः तुमार, कीराज्या-मायाधार, सानकी नीमन, देख-विपीदन, मण-जन-रक्षन,दुष्ट निकन्दन,ता दिनकारी, शरणागत-मण-हारी, मणवान् श्री-रामण-म महाराजके परम मञ्जलमण, बीजनकपुलारी-सदय-कन्न-मृह, स्री

सीमिनिक-सरोक-सावित, पनिक-प्राचीभी प्राप्तनी-मानी-भाग वर-बर्गामी को इस देव-सुकें प्रमुण्याको पान हो होचा होमान आहु इस, करन होने ज्योजन मर्यारा स्थापनद्वारा कर्मणाक्री-धनिवृद्ध संस्थारके पनिक्राण कराना या सी इसी बारस और्ष्यानवर्ग-भागीन प्रस्थापन कराना या सी इसी बारस और्ष्यानवर्ग-भागीन

हिस महाराह्यें चीर सावर्ण जनगरका का गिरिका गिरित है चीर इसने प्रस्त मुख्य करणावाबाद परिवार्धि भी, को मर्जाण मिरिवार्थ व साइराधीम समये जाते हैं, क्यूब क्यते युव नहीं हैं। जीने-नापुक्तिंके चित्राध्या जीर दुर्गोके निजायद्वारा चार्यकी संज्यापना, गुरू भीक, मातृ विकृत्यकि, नार्व्या, एक स्वीचात, नवांधानप्रमेणावन, हान्त्रतीति जीर भाग स्वा, हमादि। स्वत्तु सर्वेक चरित्रका क्या दहस्व है, और सरके मार्गिकी सीमा कर्मानक दे जो प्रस्तुक्ति मर्गाम प्रतिक्षा मार्गिकी सीमा कर्मानक दे जो प्रस्तुक्ति मर्गाम प्रतिक्षार्थ ग्रह्म प्रकृत्य प्रदेशिय क्यूक्रमने विवेदी म्हमार स्वत्नेक्ष प्रस्तु किया ग्रह्मा

(1) ऐसे उदाहरकीय पावन चरित्रोंका बीमकोश उस बोकहितगीला छीजासे होता है जिसमें उस प्रतिज्ञाकी पूर्तिका आरम्भ हुचा है को बावके प्रत्येक धवतारके सिबे समादि कावसे रखी द्या रही है। प्रर्थाद-

काळस चला या रहा हा प्रयाद-'परित्राणाय साधुना विनाशाय च बुच्छताम् ।

वर्गसंस्थापनार्थाय संभवापि दुगे दुगे ॥। इसोडे साथ इससे प्रकारशका कादर्श भी प्रवट होगाः

क्षत्र श्रीविधामित्रजी धपने धलकी हशाके लिये घोमीं अवर-पूर्वि आताओंको साथ क्रिये चाधमकी घोर बाजा कर रहे थे. तथ आर्थमें ताविका नामकी विकास शक्रमी चपने थोर रीट-नावसे समस वनको संचादित भारती हर्दे इनकी चोर अपटी। उस समय श्रीभगवानके सरमाव धरी-संबद उत्पन्न हो गया । यक धोर धपने उपास्य साध ज्ञारजायोंका भक्षण भीर प्रताका चर्वेय करनेवाली स्नात-तायिकी विशाधिकी-जिसके हारा देशके चौपर होनेकी कथा श्रीविश्वासित्रजीसे चभी सन नके हैं-के वधका प्रसंग और दसरी और की-वातिपर हाथ उठानेके लिये होप प्राप्ति-का प्रतिबन्ध, जिसका चाज भी पूर्ण प्रधार देखनेमें द्या रहा है। किन्त स्तव महाल्याचाँके परिवाण और प्रताको रक्षा-के धावका उस समय भगवानके हदयमें इतना प्रावेश हथा कि उन्होंने उसी क्षय उस दुशके संहारका कराव्य प्रशास रूपसे निजित कर जिया । श्रीविश्वासित्रजी सहाराजके निज-जिसित उपदेशसे भगवानके निश्चयकी ५िए भी हो गयी--

निह ते क्षीवणकते घृणा कार्या नरोत्तम ! चार्तुर्वेण्येरितार्य हि कर्तत्य राजमूनुना ॥ (या • रा • १;२५,१७)

है नरोचम ! गुमको स्तीयध करनेमें स्तानि करना

सा है।

वचित नहीं । राज्युत्रको चारों वर्णोंके कल्यासके विये समय-पर (धाततायिनी) स्त्रीका वय भी करना चाहिये।'

नृशंसमनृशंस वा प्रवास्थानस्यात्। पत्रकं वा सदोषं वा कर्त्तव्यं रक्षता सदा ॥

पतक वा सदाप वा कराज्य रक्षता सदा॥ (वा० रा० शत्याशेट)

'प्रजा-रचयके लिये क्रूर, सीम्य, पातक्युक्त भीर दोप-युक्त कर्म भी प्रजा-रचकको सदा करने चाहिये।'

जय साथु महातमा सताये जाउँ चौर प्रजा पीदित की जाय सब उस सतानेवाली चौर पीड़ा देनेवाली क्षीका वध भी जावस्पर्काय हैं। पुरुष चाततायी हो तो उसके सिये

किसी विचारकी भी भाक्तपकता नहीं।

इस परिप्रमें एक कोर गहरा रहस्य मत हुआ है-की-मगवान्ते जो प्रथम ही खोका वय किया, हससे उन्होंने संसारको पही रिचा दी कि को कोई भी प्राणी मजुष्य अन्य पारच करके जाग्हों वार्मिक चीवन निवाह करनेका संकरर करें, उसके विवे प्रथम चीर प्रथम कर्मन्य पही है कि इस स्वर्जुदिक सहम्योगहारा व्यासम्य मावाका दमन करें, करोंकि प्रयाज अमानां के सम्बेच वार प्रमेंकी वेरीपर

धापने श्रीवनकी चाहति दे सकता मनुष्यके लिये चसम्भव-

(१) बाक्र-धर्मेया क्या वहन्य है, हसका बाहरों हस विरोध विविध्य कर होगा। वाम माजिल विवाहोत्सकी बात्य कर ऑविट्रेशावने विदा केटर धीखीराज नरेत बात्य कर ऑविट्रेशावने विदा केटर धीखीराज नरेत बात्र वेद्यार रहे हैं तो राजमें बचा देगने हैं कि अवस्थित क्षेत्र की कहन्ये हुए होगांगों अपदर विविध्यारी अवस्थात विव्यान कींगरहाराजमी उम्रक्य कारण विशे शासाने शैन-बहुतकी करवेष, करना मीज क्षेत्र मण्ड बते हुए बीरामाने करवेषु हैं कि 'वहि हुम इस वैष्यक बनुवासी कर

विक्यान कीरराप्तासी वस्तर कारण करने वीरान के व्याप्त करने कीर सबस करने हुए मुद्द के स्वाप्त करने की स्वाप्त करने हुए स्वप्त के स्वप्त स्वप्त के

नष्ट होता है और यदि पूरणावके विचास दुवा वन्तसें वनके परणांचा सत्तक हस्ता जाता है हो प तेककी होता होती है। चतः यदौं ऐसी विध्य होनी चादिवे तिससे ग्रेंगे भागोंक। साव्य हस्स पर्चोंका सहस्व स्थिर हरे और एक भावका हतना मां हो जाव कि जो दुसरेकी दुवा है। चतः सर्वण

वीर्यहीनमिवाशकं

होकर करा—

उनपर प्रहार कर उनके प्राण जिये जाते हैं सी प्र

अवजानासि में तेजः पर्य मेड्डा पाएनम् ।।
(बादग्र शाहरा है।
'है भूगुर्वरा ! आपने एक वीर्यहीन चौर वाम-आसमर्थ अनुष्यत्र तरह जो मेरे तेजकी व्यवसार्थ में हैं क्विये शाज मेरा पराक्रम देखिये ।' हतना करक सी वनसे चुन्य के उस्ती एक यहा दिया । तरनना कर

बाह्यणोऽसीति पुच्या मे विश्वामित्रक्रतेन 🔻 ।

भीभगवानने इस कटिल समस्याके समाधानस्पर्ने 🗣

क्षत्रधमण भागव ।

तस्माच्छको न ते राम मोक्तुं प्राणहर्र शरह ॥ इसा वा त्यहति राम तेपावतसम्पर्वतर । तोकानप्रतिसात्माति हतित्यातिसम्पर्वतर । (बाठ ११७९१६,०) 'ब्याप झाहाण होनेके कारण मेरे पुरुष हैं, विवासिक

विदेश सायवनीये पीत्र हैं, इसवित्ये में आपके आर्थ करनेवाजा वाण नहीं चोच राकता। किन्तु, में आपकी में व्यवसा नापेवलसे सास दोनेवाले अनुसम कोकॉबार्व कर्केमा। इस व्यक्ति सामावानियत चरित्रका सुन्य वरेष वर्ष कि जब सुन्यमें दो भावोंका एक हो साम संबर्ध में चेनोंको इसक्तमांने समावानियत में सामावानियत हैं

प्रकार वृत्तरे हे हारा परामन म हो जाए, दोनोंदी हर्ग भाव ही पर्यंचा भी नारा न होने वाते ? वात्तर्गार्थ भाव कार्ने किये थीर किरोक्तरचा विदारों के विदेश मान्य की रचावा वरदेश है। यह वह दे कि दिनमें किये उस्तराव उत्तरब हों, कियो ही सोपानि परवे किये किये जिसमें वृत्तर का चारत्र्य दे वह मह नहीं होनी वां नार्य ही करता वात्रत्रेन भी क्या रामा चारिय । महोद्या चुन्तरक कियो कार्य सामान्य वृद्धी भी। मा । वर्षी संख्य वरण होनी है कि रामण भी तरेश



निर्वीयों जामक्त्नीऽसी रामो राममुरेक्षत । परगुराम-राम । अडो हने तदाबोके रामे वत्यनुधरे।



श्री था, फिर श्रीभगवार्न उसको कुलसहित क्यों मार हाला ? उसने सो केसल पर्मप्लीका हो हुन्न किया था, श्रीपरप्रामनोगे हो हुन्हीं कार सम्मानिकीका विचार करनेका श्रीर हुस समय भी वह स्वयं भगवार्का संहार करनेका सुदित ही वर्ग चापे थे। हुन्द्रस्टका कहो वो मयोकन था।

इस र्शकाका समार्थान करनेके लिये श्रीपरग्रसामाधिक वरिष्ठवा कुछ परिचय धावरण है। एक वारं श्रीपरग्रसामाधी है रिजा धररवरतेथी मधारण सम्बन्धी स्वीध्यस्य स्वाध्यक्ष सर्ववस्थ्या इरिवर्जनी गीको सहस्ववाहु स्वष्ठी क क्षवरह्डी प्रीगकर से गया। परद्वासमाधिन सुद्धी ध्वस्था ध्वस्था धरवी गी बुद्धा थी। बहनगरत सहक्षात्रीकने सुद्धीने प्रध्यक्ष धरवी गी बुद्धा थी। बहनगरत सहक्षात्रीकने स्वाध्यक्ष धरवा होनेश परग्राह्मामाधिक क्षेत्रपाधि अक्षक उठी और इन्होंने इस्तिस बार प्रध्योको-निज्ञांत्रिय करनेका सीकारण कर विकार

परद्वारामधी भी अभिभागवालके ही वावतार ये, वातपुर हुस कार्यको करके वन्होंने हुम्मुतियांको हो क्षप्र हिया था, प्रवा हुम्मुति वायपके साथ इनकी तुकना नहीं हो सकनो । इन होनोंके मानदाय परसर सर्वथा विश्वति थे। ही, वह कारप्य है कि शीरराह्यरामजीका संख्यन क्रोधानेकों सीमाले बाहुर च्या गया था परना इस अकारके शानेकके किरोधकी जीकि केशक भी मार्थीय-प्रयोग्धनों ही थी, जिन्होंने किसी भी भाव या आयेशको मर्याहाने बाहुर नहीं चाने हिया।

् (६) धर्मपुष्य द्वाद राजनीति क्या है, इसका किए भी श्रीभगवानुकी इस भर्मग्रीका कीटाके द्वारा व्यांट्यसे प्रकट बोवा है।

जब महराती ग्रीवेडियोचि कोपकावर्ते प्रदेशकर की-इररच महरातको हो बरहातको क्यांते छोड़कर पूर्विक कर दिया, तब भगारहरे वहाँ उपक्रित होकर हरका करवा पूना, तो कैक्योने यह स्वन्देड करके कि, स्रीताम हतना स्वाध्वामा सहवर्तीमें कैंदी करों, उन्हें कोई राष्ट्र उक्त न देकर पहले उतने मतिशा करवानेका प्रधान किया किया। उक्त में श्रीभगावरूपे ये सतत स्वस्तिक स्वाधी कथा क्यांत्र

तद्मृहि वचने देवि । राज्ञेः मद्भिकाञ्चितम् । करिभे प्रतिजान च रामा द्विनाभिमान्ते ॥

(वा॰ रा॰ रा१टा१०)

'माता ! महाराजसे हमने को उद्ध माँवा है सो मुखे बतला हो । में उसे सम्पादन करनेकी त्रतिज्ञा करता हैं । समका यह सिद्धान्त स्मरण रक्तो, सम दो बात नहीं कहता व्यर्थात् उसने को कुछ कह दिया सो कह दिया दिर यह उसके जिस्ट करी काता !

कैसी सहस्वपूर्वा वचन-पाउनकी प्रतिज्ञा है। विचारिये, पक्ष चीर चनेक मोग-विज्ञासोंसे पूर्ण विस्तृत विशाल राज्य-के सिहासनकी अभिकृति और दसरी थोर शीत, आतप, चनघर मार्गे. राषस. हिंसक परा चारि चनेक निप्र-वाधायों-से यक करपनानीत रखेश सहन करते हुए एकाकी चारपर-सेवन । इस जटित समस्यामें जिस श्रजनीतिके वरुपर सनेक रचनाएँ रची गयीं चौर चाजका भी कहीं उसको पारिसी (Policy) चौर क्वीं विभानेसी (Diplomacy भारते हैं वो केवल चहन्रधान होती है और जिसमें प्रकट कुछ और ही फिया बाता है तथा शीतर कुछ और ही रहता है। यहाँ उसके जारा साम, दान, हयह और भेहरूप चतुर्विध मीतिका प्रयोगकर यक्ति और चतराईसे काम जेनेका प्रयोजन कोई ऐसी अपाय सोच निकासना ही होता कि जिससे सिंहासम्बद्ध स्वार्थ हायसे मही जाता। किन्तु श्रीरामके परम पवित्र तत्वामें राजनीति श्रीर धर्म हो रूपमें नहीं ये ? वहाँ तो राजगीतिका चर्च ही 'धर्मेले चविरदा' निश्चित या, धर्मकी रष्टिये हो एक सबीच्याका हो क्या, चौदह **अवनका साम्राज्य भी स्था-मरीचिका ही है। इससे** सिद्ध होना है कि स्वधांको नष्ट करके स्वार्धसाधन करना मनुष्यमात्रके शिथे निपिद्ध है, जिसमें राजापर तो नराधि-पवि होनेके नाते उसकी सर्वप्रकारकी रचा करनेका दायित्व है। धर्मातम राजा बजी स्वाधेर्मे जिल्ल वर्ग हो सकता। ययार्थं राजनीति वही है जिससे धार्मिक सिद्धानाँका खबद्द व होकर व्यवहारकी सुकरता हो जाय । अर्थाद साम, दान, दवड और भेटरूप नीतिके द्वारा प्रेसी यक्ति और निप्रवातामें काम विधा आध-जिसपे व्यवहार भी न विधारने पाने और धर्मकी विरुद्धता भी न हो सके । छन प्रसारकारि प्रचान दष्ट-बदिसे किसी व्यवहारको सिद्ध भी कर जिया तो वह बख्तवः वृटनीतिका कार्य, पापमें परियत होकर मनुष्यको नरकमें से बाता है। इसके लिये औद्यधिष्टिर महाराजका उदाहरण मसिद् है । जिनकी झाजन्म दद सत्य-निहा रही, उन्हें युद्धे चवसरपर दूसरों हे चतुरोधने हेरात कुक बार, बौर बह भी दवे हुए शब्दोंमें, धन्यथा बोलनेके कारण दःस्वयद भरकका द्वार देखना पता !

(श) आर् प्रेमको पराकाटा देखना चाई सो इस कथा-शतका पान कीजिये ।

मव निप्रदूरमें यह श्वमा वहुँची कि श्रीमहमती चनु-रंगिणी रोमा निये प्रमयासये चन्ने जारहे हैं तब अवस्मानी-में क्रोपावेरामें भरतजीको शुद्धमें पराजित करनेकी अनिजा कर बाफी। भगरान् भीराम तो बनको सुनने ही समारे-में भागवे । बड़ी रिका परिन्मिति है । एक और वह स्थान सरज भाई है जो सर्वत्व स्थाग करके धनस्थानारणे सेवामें सापर है और इसस्या भी साक्षित्रमें ही उपस्थित है और बसरी चोर यह प्रिय धाना है को संबोध नहीं हैं और जिसकी माताकी करताके कारण ही चात वनवासका हारण दान सहमा पत्र रहा है परना जिल्ले परस्पर परम गुड श्रीर धनिवैचनीय प्रेम है। शामान्यरूपसे सगन् स्ववहारानु हुस सप्-शेवपर ही विशेष ध्यान दिया जाता है फिन्तु श्रीमगशनुका हदय पेसी मुँददेली वातोंको कव रचर्च कर सकता था है यहाँ तो परोक्ष और अपरोक्ष दोनों ही समान हैं। ऐसी दशा में चपने प्रेमीके विरद्ध भीरामको एक शब्द भी कैये सहन हो सकता था । विरद्ध शब्दोंके कानमें वहते ही प्रेमावेशने तत्काल उत्तेजित होकर श्रीरामने प्यारे आई श्रीसद्मयाके लिल होनेकी कुछ भी परवान कर वे बचन कह ही दाले---

'भाई लफाया । भर्म, मयं, काम और द्वियंत्री को इस् भी में चाहरा हूँ वह तथ एको लोगों के तिये। यह ग्रुमसे में प्रतिज्ञा-यूर्वक करता हूँ, भरता है जुरुशत कर क्या चारित किया है को तुम बात देने भयाइक होइक स्तरूप लग्देर कर रहे हो ! ग्रुमको भरतक मेति कोई क्षांत्रिय या मूर बचन नहीं करना चारिये। यदि तुम भरतका अपकार करोगे तो यह मेरा हो प्रपक्ता होगा। यदि तुम सरका अपकार करोगे तो यह मेरा हो प्रपक्ता होगा। यदि तुम सरका के जिये ऐता कह रहे हो यो प्ररुक्ता होगा थे यो, मैं उपसे कह हूँगा कि तुम कावकायको राज्य दे हो। अरत मेरी शतको अयरय हो आन क्षेत्र।'

यहाँ यह रांका महीं करनी काहिये कि श्रीभावामुका श्रीलक्ष्मवार्गी उत्तमा देम नहीं या, उनका को मार्चामानतीं प्रेम है, तिर परने पतन्य रोवक प्यारे कवित आता लक्ष्मव- के लिये तो कदना ही क्या है। यहाँ को लोभ हुमा है। वालावीं लक्ष्मवार्थिय नहीं है, उनके हरकों विकृति उत्पक्ष हो गार्थी थी, उसीको विकासनके लिये थीमामावाल्य वाह हो। यहाँ है। भागवार्क वयन मुतते ही श्रीलक्ष्मवार्थिक स्त्रोत कहे । भागवार्क वयन मुतते ही श्रीलक्ष्मवार्थिक स्त्रोत कहे । भागवार्क वयन मुतते ही श्रीलक्ष्मवार्थिक स्त्रोत वहां है। भागवार्क वयन मार्थिक स्त्रात है। श्रीमावार्थिक स्त्री स्त्रात है। हो सबके प्राप्त होने क्या के तो सक्के श्राप्त करने क्या स्त्रात है। सबके प्राप्त होने क्या के तो सक्के श्राप्त करी है। सबके प्राप्त होने क्या के तो सक्के श्राप्त करने हमार महत्र होती विद्यार्थिक हों। सबके स्त्राप्त होने करने स्त्रात है। सबके स्त्राप्त होने स्त्रात होता करते हैं।

(१) यन नानिकारको विनी प्रकार मी न नावनेक एक सम्मान दशाना नृति — कीनानती । निजवार पहुँचक कीनाना नृत्ते सम्पूर्ण नीतान गाँ निजेक करनेके समेक सब किंग, समेक प्रार्थनी की बांचिरकी चादि जानियोंने सो भारती प्रार्था प्रविक्त स्कुत्रात प्रसासी दिया । तत्त्व वन कारियोंने जातीन की सब सनाजनवारी निजाला रिज्य प्रका हुमा। नमुन्ते वि

तरमान्यातीचा। चीत शाम शकेत वी। वरः ३ वन्यस १व म हेगोः नास्यि क्षित्रिः क्ष्मीचत् ॥

निन्दाम्यहं कर्म इतं पितुस्तदः स्त्वामगृहणाद्वित्रस्यबुद्धिम् । बुद्धधानीयविषयाच्यान्तं

> सुनास्तिकं वर्मपद्याद्यतम्॥ (वा॰ रा॰ २ । १०९ । ६१)

(वा॰ ता २ १ १० १६४) द्वास्त्रकारको होयि जारत्य करनेवाने तथा वर्षे नात्रकारको होयि जारत्य करनेवाने तथा वर्षे नात्रक क्षास्त्रकारको हो मेरे रितार्टर वालक क्षास्त्रक हैं उनके हस कार्यको हो मेरे रितार्टर क्षास्त्रक क्षास्त्रक होद हात्र हैं। अपार्क क्षास्त्रक होत्रक होती रित्रक होदि हो है। अपार्क क्षास्त्रक हे कि क्षास्त्रक होत्रक हो कि नात्रक मही हैं, इनक क्षार्क को क्षीदानके तिर ऐसा कर रहा पा भीर विराह्मीके हारा हैं कर समर्थक कि कर्य वास्त्रक एस हमा है। इस की स्त्रक समर्थक कि कर्य वास्त्रक प्रकार हमा प्रकार हमा है। अपार्क के समर्थक कि क्षार कार्यक हमा सम्त्रक कि क्षार कार्यक हमा स्त्रक करने वास्त्रक प्रकार हमा स्त्रक करने करने कार्यक हमा स्त्रक करने करने हमा वाह्मिक एक हमा वाह्मिक हम

पुर्य विताके सायकी रहाये आज अनेक संकट सहव कर रहे हैं, उन्होंने विताके कार्यमें भी अध्यक्ष मक्ट की । बुत्तरे ओ सर्याब्य स्थित की गरी, उसका अवक उद्देश नहीं है कि अनुस्पकी अन्य सब विवास खागकर गास्तिक सार्योक्ष उस विरोध करना चाहिए।

(६) श्रव गुरुमसिक्के गंग-तरंगवत् पावन प्रसंगपर विचार कीजिये।

थों हो कुल-उपास्य श्रीवरीय महाराजका महत्व हो स्वात स्थापरर प्रवट है। उपलेख प्राप्तिक श्रीवर व्यावसारिक सार्थमें उनकी प्रधानता रही है, जो पर गुरुव्यक्तिक पूर्व प्रसाद है। रान्तु कुला हो पर है कि विकट स्थापना वर्धास्थक होनेरा साथ उद्यादायिक विशिष्टों तरह गुरुप्तिक प्रवक्त प्राप्तीक से इस्पर्स साम्राज होटर उसकी क्षाप्ताका किल निरोप वरिकड़े हारा सिंद हो सकती है!—

केद्देते कहना पहला है कि कीवाल्मीकिनामाच्या, मर्थान्-व्याके कुष एक मुख्य घंगकी पूर्विमें क्लामर्थ रही। इसमें कहीं भी ऐसा मसक्र नहीं है, मिसके हाता हरकों निव्द किया जा सके, मर्युत विश्वहर्मों को वर्ष्युक मान्त्रमें अब मीगुरु महाराजने बदे मण्ड हेतुसाईके हारा कीमस्त्रमीके पर समर्थनकी बेहा की तो दूसरोंकी मांत्रित उनका कथव भी मानार्युत रोक्शिया हो

श्रीमानस-रामायवाने भवनी सर्वोहपूर्नदा सिद्ध करते हुए विश्वहृदकी जीकामें ही इस मर्वादाकी भी वयेट रहा की है—

भोवशिष्टजी सहाराज भरतजीका पश्च खेकर भगवान्ये फाते हैं-

वते हैं-संबंधे दर अस्तर बसहूं, जानहु भाव बुमाव ।

पुरजन जननी मरत दित, होत्र सी करिय उपाव १। इसपर भगपानूने की उत्तर विया वह गुरुमकिकी

इसपर भगवान्ने को उत्तर दिया वह गुरमक्ति पराकाश है- '

सुनि मुनि बचन कहत रामुराक। नाय तुम्हारे हिं हाय वचाक ॥ सन कर हित रहत राजर राखे। आगसु किये मुदित पुर माखे ॥ प्रयम जो आगसु मो कहें होई। माथे मानि करी सिस्स सेहं ॥

विवारिये, कहाँ तो शिरुप्तांचिके पालनार्थं वनतासके विषे चाप हतने पर हो रहे थे कि यदि कोई उसके विक्य करना या दो उसे पुरस्त उचित उच्च से दिया व्याता या परम्यु चाल पुरस्तिकी चालाके सम्मुल कोममनातने व्यापना

वह संकल्प सर्वया बीच कर दिया। गुरुभक्तिकी इससे अधिक क्या सर्वादा हो सकती है ?

ं (०) सात्मक्तिकी परम सीमाका यह उच्च उदाहरण सुनवेदोग्य ही है--

एक्रवरीमें थीजानकीजीसहित दोनों घाता पुरवप्रैक वैठे परस्पर वार्चाताए कर रहे हैं। वद धीजक्षमण्जीने श्रीकारतजीकी काया करते हुए कहा---

> मर्ता दशरकी गरकाः साधुध भरतः शुतः । कमं नु साम्बा कैकेवी बादशी करदर्शिनी ॥

- पु सान्या कच्या साहसा करूपारामा ॥ (सावसाव शादहा६५)

(बाब्सक एति बीदरारथजी महाराज और प्रश्न साध स्वमाद भरतजी हैं, वह भारत कैंक्स्यो देसी कृर स्वभाववाली

हैसे हुई हैं। वहाँ भी एक घोर वही प्रावण्याते सेवार्ने सत्तर 'बालीक-घवन बोलनेवाये' कनिए भाता हैं घोर दूसरी घोर वही दिसाता जिसके कारण वह सारा उत्तरण और दिस होता.

'धर्तीक-पन बोजनेवाले' कंनिए भाता हैं भीर दूसरी भोर क्वी निनाश नितके कारण यह सारा उत्पाद सौर विद्यु हुण। परन्तु डेक् भी हो, आनुमणिके आहेंगे हरवमें हृतना उक्टर रूप पारव्य किया कि माताके विद्यु एक भी बचन वन्हें सहन नहीं हुण। शीभाषान्त्रे कहा-

न तेऽम्बा मध्यमा तात शर्दितच्या कदाचर । वामेनेश्वाहुनाबस्य भरतस्य कथां कुछ ।। (बा॰रा॰ १११६१३७)

हि आई! तुमको सँभानी माताकी निन्दा कहाथि नहीं करनी वाहिये। इत्याङ्कुल-भेड भरतनीकी ही कोर्ते कहमी वाहिये। इत्यते कथिक मातुमिककी मर्याहा और क्या हो सकती है ?

(६) मित्र-धर्मे थीर स्वामिधर्म दोशों छी पराकाशके विचित्र विश्वका दर्शन इस पुक ही मनैरदर्शी छीखाने हो आता है?

मगनान्हे निर्मेख, विशिष्ट और मगीना-पूर्व परित्रोंमें तीन ऐसे हैं किनमें उनके यदार्व स्वरूपको धनभिन्नताके कारण धनोच मतुष्य प्रायः धाचेच किया करते हैं। इन तीनोंमें एक बाल्जिनवाकी सीला है।

करन पुरसोंकी को बात हो क्या, स्वयं वाजिने भी शीभगवान्को वाधिसिस किया है। उसके काहेगोंके उत्तरों कनेक प्रकारते समाधान हुआ है किन्तु इसमें सबसे सुक्य हेतु वह है- जिस समय सुमीवसे भिन्नता कर श्रीभगगान्ने प्रतिज्ञा की थी उसी समयके वचन हैं-

> प्रतिज्ञा च मया दत्ता तदा बानरसिनवी। प्रतिज्ञा च कथं शवया मद्विधनानवेक्षितुम्।।

(वा॰रा॰कि ४।१८।२८) 'मैंने सुमीयको जो यचन दिया था, उस प्रतिज्ञाको सब दैसे टाल सकता हैं ?'

विचारिये, बालिने साचात् श्रीभगवान्का कोई चपराध

महीं किया था, किन्तु वालि चपने मित्र सुप्रीवका राज् था। यतः उसको यपना मी राष्ट्र समझकर उसके संहार-की तत्काल प्रतिज्ञाकी गयी। यही तो मित्र-धर्मकी पराकाश है। मित्रका कार्य उपस्थित होनेपर अपने निजके डानि-सामका सब विचार छोड़ उसका कार्य जिस प्रकार भी सन्भव हो. साधना चाहिये। इसीलिये मिश्रके सुल-सम्पादनार्थ उसके राजुरूप आवाका वध किया गया। इस बावके समग्रनेमें तो ग्रधिक कठिनता नहीं है किना जिस बातपर मुक्य माचेन होता है वह यह है कि 'वालिको सदाहान हारा सम्मूख होकर धर्मपूर्वक क्यों नहीं मारा ?' इस शंकाका समाधान श्रीवारमीकीय या भागस दोनों रामायणीं-के भूजसे नहीं होता। टीकाबोंके निर्यय-बनुसार यथार्थ बास यह थी कि याबिको एक तुनिका वरदान था कि सम्मुल युद्ध करनेवालेका यस उसमें या जायगा. जिससे इसके बढ़की पृद्धि हो आयगी। इस दशामें भगवानुके दिने एक प्रदित समस्या था राडी हुई । वालिको प्रतिज्ञा-पासनार्यं चवरय मारना है। यदि चन्नी वेरवर्व शक्तिसे श्चाम श्रेते हैं तो उस यरदानकी महिमा घटती है जो बताबी ही मक्तिके बखपर मुनिने दिया था। श्रीर यदि बरदानकी रहा की जाती है तो धर्मपूर्वक थर न होनेसे

बाबिको बाबसे मास्कर निता ही तो दिया। इसने बड़ी मध्येषा निश्चित हुई कि स्वतानीको कोई ऐसी चेदा मही बसनी चारित्र क्रिस्तो करनी स्वार्थने निर्देश्वे इसा अपने दास या सेन्डक्य महत्त्व चटें। इस विस्तरण सन्पद्दस्य और न्यिकड्डियो विचार करना चाहित्र कि

क्षारकी माशि भीर जगरमें निन्दा होती है। इस समस्याके

डरस्पित होते 🗗 स्थामियमैंके मार्थोंने हृदयमें इतनी

प्रवस्ता की कि भगवान् धपने धर्माधर्म और निन्दाल्ति-के विचारको इत्यसे सन्दात्र निकाल, धपने जनका मुख

केंचा करता ही मुख्य समझ उस मुधीवने बहते हुए

करते हुए सम्मुख धर्मभुद करता होता या भव हुम जिसमें व्यप्ने निजड़ा विचार हुएयते निकावकर केर भयने जनके बरकी प्रतिष्ठा रक्त्यो गयी ? (६) अथ शरकागत-धरसजताके महत्त्व निकस्यकारणं देशिये—

बिस समय विभीषणुर्जी चपने झाता शवखमे तिस्र

श्रीभगवानुका धर्मयुक्त कार्य वरदानकी महिमाको श्री

होकर बीरामद्वजें कार्य इस समय धीमगवान्हें कर्ष सभी समोप्रशास सम्मति हो। उसमें दिमीया विभीपवाके अनुस्य नहीं हुमा। बात भी ऐसी मी मैं चक्कास् आये हुए सामात् राष्ट्रके भाईका सता क्षेत्रिक विकास हो? किन्तु इन सय विचारीको हृदयमें क्रिवेद में स्थान न वे ग्रस्थासन-स्थलताके भाक्ये धीमाने सर्व कपना निवध इस वचनके हाता प्रकट का दिया, वो मा वाक्य समस्य आता है—

प्रसान आवाद हु— सङ्देव प्रपत्नाय तनसमीति च याच्ते। अप्रयं सर्वमृतेन्या ददाम्मेतद्रहतंम्म ॥ (सा. रा. ६।१८११ (१०) खोकमतका क्या शुल्य है और समानो ह

हितकी फितनी भावरयकता है, इस मुझ विकास व इयसरीता जीका पूर्व मकार बाक्योन-इसी भी पातिमत वर्ष और एक्सबीमतक आहरों मी तिन्द में बाक्याओर क्या गया पा कि मानवर्षी ! बीक्याओर फार्यच होता है। वनमें दूसरी पा है। ति मह कार्यच पूर्व कितार है। तिमें दूसरी पा है। ति मह कार्यच पूर्व कितार हों है किसी हम के कार्यच कारया पूर्व कितार हों है किसी हम के कार्यच आत्मीर मार्थ कार्यच कार्यच कार्य कार्य की मार्थ आत्मीर मार्थ आत्मीर कार्य कार्य कार्य कार्य या फरवार्यों को प्रधानक स्व कार्य कार्य कार्य कार्य या फरवार्यों को प्रधानक स्व कार्य कार्य कार्य भी तो नहीं हैं जो सुरोक्य पार्ट्य कार्यां करें। भारत में

प्रकल संगठनहार। सामको साध्य करें। बस, देनी हों गीतियाँका अनुमय कर शोग हुन वहार चरित्रों हाँ जुड़कें करनेको सबद हो बाते हैं, और यर नहीं सोगी वस सामाज्यमें शोकमतके साहाकी सीगी वैंची भी कि यह कामकार्क संबंधि विवास करना सक्से भी नहीं का सकती। प्रमुख ने हो है

ब नुसार तो न्यायका पात्र वही समस्त वाता है बो 🐔

उदरे दूष्य सगाते हैं। उस समय प्रगाने सबे दिवने विषे हैसा भी करिन सायन बचान्त्र नहीं रचना जाता था। इसीच्य एक सर्वोन्द्रस्य उदाहरत्य वाद है। एक विनस उन्हें इसस्याद पुरुष हात्यादिद्वारा प्रीमान्यान्त्रको रिक्षा हो थे। उसी प्रसन्नमें भीभगवान्त्रने उनसे पुता कि 'नमस्में ह्यारे सम्यपन्नी बचा लातें हुणा करती हैं। उनसमें निवेदन किया गया कि 'सित्रक्यन, राषवाच्यादि सन्नुत कर्यान्त्री प्रमोत्ता है किन्यु इस्टब्यान्त्रियों चलित के से हो हो हैं कि राववाने जिन प्रीसीतात्रीको प्रवृत्ते केवल उनका बच्च प्रतिक्या चीत विवर्तने उनके पार्मे निवास किया उनको स्व महाराजने क्योकर रहा निवास प्रवाह या वाह हम भी प्रवनी विवर्णने ऐसे व्यापीको सदस करने।

भीमानावाद्यों यह मुनक्द परा केंद्र हुआ। उन्हें धरानी आहर्स पतिकता सर्पाम्योको पूर्व परिकासक धरात दिस्य सा, मक्टि रास्यके विजय करनेक कान्यत उसके धराने समीप हुवाने पर कटिन कारियरीका भी कता तो गांधी भी। यहमें यह सकके समय बोकके केंद्र करोगों हुई थी। यह तम डुझ सूर्यव्य निक्क्यक संदेद होते हुए मी बेक्ट दोस्मान्यका महत्व बहानेके विवेध परानी जल माजीस्याके—जिसका बनवासमें किश्रिय-कार्जीन वियोग ही स्वेधा प्रस्तका वनवासमें किश्रिय-कार्जीन वियोग ही स्वेधा प्रस्तक हो गया था—व्यक्तियानक ही निक्रम करके पार्ट नीमों भाताओं के सम्मुल बीहासने पह चपन की—

'इत्वन और देणवासियोंके द्वारा (मेरे विचयमें) यह बहुत वहां प्रयादा है। संसारों उत्तय होनेवाके सिख सिसोंकी निन्दा की वातरी है वह निम्मर वातराक के सकतियोंके इत्याद करें आते हैं वसतक भीचे सोकांनि निराश है। निन्दाकी इताह देवता भी करते हैं और कीर्तिका संसारमें व्यादर होता है। तब बने महामामामंत्री संसार मणबहारमें कीर्तिक तेले दो अब्दित है है दुस्फरेटों ! मैं कचने माया कीर हात सबको भी (अजामें कीर्तिन्दानों कियो) जागा सकता है।'

करिये, टोक्मनका इससे पविक प्राइत क्या हो सकता है ' और स्तो करण ऐका प्यान क्रिश तमा कि सिक्से पविक सम्मय हो नहीं । परमा इसमें गुरूव तथा विचारवीय वात पह है कि यहीं कोरे पोसे ठोक्मनका की प्राइत नहिंचिया गया है, इसमें परस कोक्टित भी भ्रामितक था, क्योंकि संसादकी रहि भारती है तुसमें के उस का कर्युंक के कर परियानगर वारों है। मता वीक्स क्षेत्रावनकीशिक शहर क्योंकि

या. उसकी सर्वया उपेशा करके स्थटराष्ट्रिके द्वारा यही प्रसिद्ध हो यथा कि. अब राजाने राचलोंके वशरों प्राप्त हुई प्रतीको बहुब कर क्षिया तो प्रजा भी शताका ही धनुकरण करेगी। विचारिये, यदि श्रीभगवान चयने हृदयको पापाण दमाकर श्रीजानकीजीका स्थानरूप उम्र कार्य न करते हो सहाचारको विजना मयानक थका पहुँ चता 🛚 सभी कियाँ श्रीजानकीजीके क्षस्य पेसे कटिन पातियतधर्ममें रह महों रह सकती बिरोक्टर कविवय-सरीके समयमें । सच पदा जाय तो यह बादरों धालडेसे समयके जिये नहीं या क्योंकि बाज तो सदान्यात्वा सर्वया छोप होकर संसारमें धर्मविका विदारों-की बर्जातक प्रवस्ता है कि छोग विशाह संस्कारकप मच्य संस्कारके चन्धनोंको भी शिन्न भिन्न करवानेके लिपे राजासे कानन यनवा रहे हैं। इस कराछ काटमें योनि पविश्रता तो कोई वसा ही वहीं रही। इसके बारण देश थोये ही समयमें वर्णसंबर सहिसे प्यास हो बाचता । श्रीभगवानके इस ४१-वरिरंतापूर्व चरित्रसे पाविमतभर्म और एक्पसीमतकी भी पूर्व पराकाहा प्रमाखित हुई, श्रीजानकीशीकी क्षयतक वे श्री-भगवान्डे साथ रहीं, पूर्व चलुरकता प्रकट ही है चीर धन्तमें भी उन्होंने स्वासीकी धाका बादन करते हुए ही घोर वातना सहकर शरीर स्वाय किया । साथ ही श्रीभगवानमे भी कभी जन्य सीका संकल्प भी दृहयमें नहीं किया शीर वियोगके प्रधात बद्धानवर्गमें ही अपनी कीवा समास की ।

(३१) अन्तर्ने एक ऐसे पवित्र परिश्रका निरुप्य होगा जिससे वर्षांकम-पर्म-रका चीर व्यापनरायधानकी परा-कारा सिंख डोती है ।

बस्तुतः यह विषय गहन है और इसकी गहनतानी न समक्रक ही छोगोंकी दक्षि यह कविक भारेपयोग्य समक्र गया है। यह आपेपनक तीसरी कोश है।

क्क समय एक आवाषका इच्छीता वात्रक वर गया। व्यक्त उन्तको नकर राज्यास्य कार दिया और विज्ञान करते हुए आकोर क्या कि 'त्रक कारुको आकारुक्युवा कारवा राज्यका महान दुष्टुन है।' व्यविद्याने चारिकी परिवर्ष-के हारा विचार किया गया तो योगमध्ये या दिख्यपिके पर विचींक पुत्रकों कि केई दुष्ट मानेपार वर पर रहा है। उसीके कारचाहण वाजकों युष्टु हुई। वहीं पेना प्रताचार होता है वहीं वस्त्रीयंत्र समाग हो वादा है और वहाँक राज्या मरकारवी होता है।

् यह सुनते ही बीसगवान् किसी अभिकारी या क्रमैटारी-

को सञ्चापपानधी कामा देवर व्यवना कोई गृत्रका (गी॰ साईकी) स्वाप्तद शांगियने मुक्त नहीं हुए, मानाज ग्रुपक विमानमें रिरामित होने को देखा कि कह ग्रुपक कोश नामें प्रचिच दिशामें गुड़ेने भी देखा कि कह ग्रुप्त कोश नामें मनुत्त है। बारने प्रभ करनेया कामे शांक कोश मान जनते रेगे हुए करा कि 'मैं मिण्या कभी नहीं कोग्हुँगा। मैं शांक्य मामक ग्राम देखतेच्छी माहिके सिये नाम कर रहा हैं।' हुएतरा सुतने ही श्रीभगावादने नहामें बसका मानक खेदन कराने हो । हुपत हस्सा वच हुमा बीर जवर वह सामक सामेव हो बहा।

संचित्ररूपने कथा इतनी ही है, किन्तु इनमें रहन्य भरा हुआ है। जो केवल रहि-मृहिवाद्यर ही शुक्रे हुए हैं बार्थांगु जिनकी संदुष्टित चुद्धि प्रत्यचके बाहर आगी ही नहीं उनको कैसी भी पुक्ति और ममायोंने समयापा जाय, वे इस तत्त्व पर पहुँच हो नहीं शकते। इसी एक बातको क्षीतिये कि बात जो स्थान स्थानपर इदय विद्धार्थ करने-काले इत्य देखनेमें था रहे हैं-पिता पितामह थापने बेटे धीते सबको स्मराजम्मिके अर्थणका पूर्वजन्मके धीर श्रमिष्ट संस्कारीको भोगते हुए अपना शेप दःशर जीवन किता हो हैं। इसके विपरीत जब यह बात सूती जाती है जि उस कालमें 'चकालमृत्य ही नहीं होती थी चर्चात प्राची चपनी पूर्व चालु समाप्त करके ही कालको शाप्त होते थे और ऐसा चवसर ही नहीं भाता था कि पिताके सामने प्रम सरे । सो यह बात परम भाश्रयंजनक प्रतीत होती है । पाना वालवमें बात पेसी ही है। वर्तमान नवी सम्बताकी चकाबाँधने विकृत हुई धृष्टिवाले भने ही इसपर दिवसी उदावें किन्तु जिनको चारों युगोंके भिन्न भिन्न धर्मोका जान है जनको इसपर भापति नहीं हो सकती। इस सम्बन्धमें सामान्य चासिक प्रदिवाले मनुष्योंके हृदयमें भी जो भदस शकार उत्पन्न हो सकती है. वे वे हैं---

(क) माइणाने वातकके स्ततक शारिको राजद्वास्यर ज़ाकर बाता थीर वहाँ उसका निर्णय होकर यह राजाके न्यापने जीवित हो शया। जाज पेता क्यों नहीं होता? विदे ऐसी बात भी राजाके माणिकारमें हो तो ब्याज तो राजद्वारों र सृतक शरीरोंके देर खग जायँ और राजद्वारका जाम परिवर्तन होत्तर वह सुलक्षमतन ही हो खाय।

(स) तप करना तो पनित्र काम है, उसको सदीप क्यों समका गया रै और पैसा हो भी वो उस श्रमुके वए करनेपे सामा-पायकवी मृत्युका क्या सम्मान है कोई स्ट्र सर्व करें कहीं चीर कोई सरें कहीं। यह बार हुए सन्य नहीं चारि।

(ग) विश् वृत्याः शंकाका कृत्य समापात हो भी म तो पेगा उम दशक वर्गे दिया गया की क्षति प्रीयाः निर्देणकार्यः कार्यं समामा जा सकता है।

बातुनिक शुर्तमे---जन कि वर्मार क्याचे एँ विभिन्नमा को सी है--- ने शंकार्ट्र सनुमित सी सर्वे को सकती । कम बाती तुन्तिके सनुमार क्रामे र^{स्क} समाचान किया जाता है।

(क) वर्मशाको (स्मृतियो) से यह बात सिंह है¹ धर्म क्लुनः ब्हाःक्लावं साधक है-सर्धात् वसके वे किन हैं। यक चरह अर्थमायक और दूमरा इह अर्थमाप्त यवनि दोनों है। यमौनुसामनके सम्मान है और देनेंच दी शुरूप बदेश्च चान्नोद्यति है पूर्व होनोंकी ^{(प्राप} दाविण्य भी राजार की है किना जी मान सरशर्वनावर्ष बनमें मधानना बोगवप्रविशिष्ट भीर रिव्यक्तिमा महर्षि, महार्षि, राजर्षि चारि परमोच चारनाचाँची है, ह कुगरे रष्ट-सर्थ-साथक भागका—जिसका प्रथक नाम स्वरूप हो गया दै—समादन सनुष्य जातिके प्रथिकारी कर्मेंदर्ग गणोंके हारा भी हो सकता है चौर वही राजनन्त्र कार^{ाज} है। बरशर्य भागमे देने विषयोंका सम्बन्ध है जिन्ह परिणाम मन्यचर्ने कुच नहीं दीलता | इसी भागके सावगर्न प्रकृति नियमानुमार वय° चीर भाभमों के नियमोंकी व्यास की गयी थी। उस समय वैसी उच्च चारमाचीके विवर रहनेसे दोनों भागोंका परिपूर्णताले साधन होता वा ह शजदारपर केवल जनताके परस्परके विवाद ही मही ब वे किन्तु दैवी चनिष्ट घटनाचाँहारा होनेवाले कर्होंकी ह पुकार सुनी आती थी चौर उनका ययोचित न्या^{द हिं} जाता था । यही रामराज्यका सहस्व था । द्वा^{त्र ह} पवित्र और दिष्य सामग्री नहीं है। स वैसी उच्च काणी ही हैं और न वैसे राजा ही हैं जो चट्ट विमानका ए नियन्त्रण कर सकें । इसी कारण वर्ष और बाश्रम वर्ष वेगले लोग होता चलाचा रहा है। अपन तो केवल प्र भाग (ध्यवहार) शेप रह गया है। किन्तु उसकी हैं। भी स्वार्थियोंके हायमें आ जानेसे परम शोचनीय हैं। इ व्यवहारसम्बन्धी न्यायोंकी ही दुर्दशा है तो प्राप्टविमा^ई

द्वारा न्याय कहाँ सम्भव है ? इसी कारण कव राजद्वारपर स्टुटक से जानेसे कोई कर्य सिद्ध नहीं होता !

(स) सप करना पतिश्र ही नहीं वह तो परमोध कपा-का साधन है. जिसका सहिन्ने चाहिने बीमगवानने बहाजीको उपरेश किया था । किना, इसके साधनके लिये चाहिये प्रशिकारी। यह शह प्रशिकारी हार्री था. क्योंकि श्रीमगवानके 'चात्रंग्यं यया सहं गुणकर्मावभागशः' वचनानुसार अत्येक वर्णकी उत्पत्ति कर्म चौर गणके चल्यारपर हुई है। सदनकुल इस वर्णमें उचगुणविशिष्टता नहीं होती, जिससे उसमें उच कर्मकी योग्यमा हो सके चौर वृति चरहारथंक कोई उच क्रमेंका संकार कर से मी सह चमधिकार चेत्रा है। उदाहरण-के लिये समग्र क्षीजिये कि राजनम्यमें यदि कोई कनिष्ठ क्रिकारी एक क्रिकारीका बतारत अवस्ता स्वां वास्त हो आप तो कितनी चलव्यसता होका रहार्थसाथन धर्म-विभागमें क्रवाँत शततन्त्रमें इलचल मच नाव । बस, इसी-प्रकार यदि कतिय प्रशिकारी केंचे प्रशिकारका कर्म करने सरी तो बारहार्थसाधक धर्मविभागमें भी पर्य इसकत मचकर उसके परिणासभात उत्पात और विश्व या उपस्थित हों । राजापर दोनोंका दायित्व है । इसलिये राजाका कर्तन्य है कि दोनों ही धनविकार देशकों दे शकाविकों है जिये पयी-चित वयदविधान करे । ब्राज यद्यपि दशर्थसाधक धर्मविभाग-का तो बचरा जैसे तैसे चल रहा है परन्त जरप्राये धर्म-विभागके नियन्त्रणका सर्वधा सभाव है और देश वर्णसंकर-सृष्टिके कारण सनिधकार क्रियाओं से ब्यास हो रहा है। मुख्य-तया इसी कारण चतित्रष्टि, चनाइष्टि, हिम, चातप, शलभा, महामारी बादि उपद्ववींका देग पूर्वारूपसे बद रहा है । पर्हों यह साचेप सहस्य प्राप्त होता है कि ऐसी क्लामें

 प्रेस किया । वसीके प्रमाश्ये उनका बरागान सात स्रतेक परिताकि उद्यासक एसा सावन बना हुआ है। अगावार्त्त केवल इन्होंसे प्रेस किया हो सो नहीं, पशु वानार्ति केवल इन्होंसे प्रेस किया हो सो नहीं, पशु वानार्ति इन्हों के स्वाध्यसात कर विशे, निर्मो कहे तो मात-स्माणेव हैं और एकड़ी महिमा सो यहींतक बनी हुई है कि शीमणवादके पवित्र नामके साथ उनका भी माम संवुक्त हो गया है। वहिं 'वक्तमुत ह्वमान्तिकी वय' न बीकी वाय तो 'तियावद साय-प्रकृति व्या' माने सी वाय तो 'तियावद साय-प्रकृति व्या' का भीकी-सी वाय तो 'तियावद साय-प्रकृति व्या भीकी-सी वाय वेपनी है। धान इटातृक्तक मसंग उठावर को लोग वय' न्यवस्थाको यह सह स्वत्येत्र हुई हैं, वे पदि सपती वय' न्यवस्थाको यह सह स्वत्येत्र हुई हैं, वे पदि सपती व्या कुदिको साममें साकत शीमणवादके इस सिद्यान्तको सपायं-स्वतं समस्य कें तो विश्री उत्यावको स्वत्य सह हुं मुर्ते सिव्यं

चाव यह श्रीका रही कि शहके तप करनेसे झासवा-वासकेटी क्षाच्या क्या सम्बन्ध है ? इसके समाधानमें उपर्यं क कानानुसार अनिधकाररूपसे तथ करनेपर कोई-न-कोई उत्पात होना ही था। सो यह इस माहाया यालककी अन्य सपमें परियात हुआ। अब एक तो यह रहा कि तप करने-वाला कहीं और बाजक कहीं और वसरे यह कि अखादिके प्रदारसे ही किसीका वध हचा करता है परमा बालकशी क्रायका हेत तथ क्योंकर समका वा सकता है ? वस्तत: तथ करना और उसका इष्टानिष्ट परिलाम होगा. इन सकता बादणार्थं धर्मविभागसे सम्बन्ध होनेके कारण यह क्षोकोत्तर शहम जगरका स्पनहार है । जो धनयवरहित सरूप था बार्ड है। यह जो विस्तार या विशासता देखतेमें था रही है सो तो केवल स्थूल जगतका दरव है। इसके सहमरूपका इक्रान्त बलादके बीजसे समस्रता चाहिये । प्रार्थात इतना विस्तत क्था एक राई-से बीजमें समाया हथा रहता है। चतः सच्य जगतमें वैसा घन्तर नहीं रहता जैसा स्थलमें दीसता है और वध होनेमें भी जैसे स्पृत्त जगन्में प्रसादिका प्रकार नेत्रका विषय होता है बड़ाँ वैसा नहीं होता । वहाँ हस प्रकारकी घटनाएँ कारवयरहित गुलाँके व्यक्तिकासे होती हैं सो धर्मध्यका विषय नहीं है। ब्रातकल विज्ञानको इस परसोश्रविके कालमें तो गेसी शंकाधीका धारसर श्री नहीं साना खाहिये. क्योंकि जब इस मीतिक जगतमें भी विना तारके सहस्रों कोसकी चरीपर श्रखमाश्रमें समाचार पहेंचानेका सश्ममृतींका चमत्कार देखते हैं.-जो चक्त-इन्जियका विषय नहीं है हो अध्यास हरतके प्रशासनीय इमें क्यों सन्देड होना चाहिये। श्रव श्रह कि. उस हालकती डी अन्य क्यों हुई, अन्य उपहच क्यों नहीं हुए ? इसके

को श्रमुसन्धानकी शाजा देकर श्रमचा कोई गुरुषर (सी० शाई०डी०) ज्ञागकर दायिलसे मुक्त नहीं हुए, तककाल पुण्क विमानमें विराजित हो स्वयं उसकी खोजमं निकले। वय रिख्य दिशामें गुड़ेंचे तो देखा कि एक पुष्ण करें स्वयं प्रमुख है। उससे प्रभ करनेषर उसने स्पष्ट और सम्य उत्तर देते हुए कहा कि में सिच्या कभी नहीं बोल्ड्रण। में शम्बूक नामक श्रम देखतोककी माहिके लिये तय कर रहा हूँ।' हतना सुनते ही शीमगदावरने लहगते उसका सक्षक होदन कर दिया। इथर इसका बच हुवा और उचर वह बालक सजीव हो उठा।

संचित्ररूपसे कथा इतनी ही है, किन्तु इसमें रहस्य भरा हुआ है। जो केवल दृष्टि-सृष्टिवादपर ही तुले हुए हैं चर्चात जिनकी संकृषित सुद्धि प्रत्यचके बाहर जाती ही नहीं उनको कैसी भी पुक्ति और ममायोंसे समन्ताया जाय. वे इस तस्त्र पर पहुँच ही नहीं सकते । इसी एक वालको भीजिये कि बाज को स्थान स्थानपर हृदय विदीर्थ करने-बाले दृश्य देखनेमें चा रहे हैं- पिता पितामह अपने बेटे योते सबको स्मशानभूमिके वर्षणकर पूर्वजन्मके घोर ग्रमिष्ट संस्कारोको भोगते हुए अपना श्रेप दुःखद स्तीवन विता रहे हैं। इसके विपरीत जब यह बात सुनी जाती है कि उस कालमें 'सकालमृत्यु ही नहीं होती थी सर्थात प्राची धपनी पूर्व चायु समाप्त करके ही कालको माप्त होते ये और ऐसा चवसर ही नहीं चाता था कि पिताके सामने पुत्र मरे । तो यह बात परम बाधवैजनक मतीत होती है । परन्तु वालवमें बात पेसी ही है। वर्तमान नवी सम्पताकी चकाचीथपे विष्टत हुई दृष्टिवाले अबे दी इसपर दिल्लगी उदावें किन्तु जिनको चारों धुनोंके मिश्र भिन्न धर्मोका ज्ञान है जनको इसपर चापति नहीं हो सकती। इस सम्बन्धने सामान्य धालिक बुद्धिवासे मनुष्यों के हरवमें भी जो मदल शंकार्षे उत्तम हो सकती हैं, वे वे हैं-

(क) प्राप्तनने बाजके शूनक शांतको राजहारवा बाकर बाका और वहाँ उनका निर्ण य होकर वह राजके स्वापने अधिन हो गया। आप देगा क्यों नहीं होती विदे देनी बान भी राजके अनिकारों हो जो बाज को सावहारों पर शुनक स्वतिदें हो जा करें और राजहारका नाम सीर्वान के प्राप्त करने हो जे काय।

(ल) तप बदरा शे वरित्र बाम है, उसकी सदीच की समस्रा गया है और देगा हो और े . . हूं बाह्यण-भाजककी र्मृत्युका क्या सम्यन्ध ! कोई मतुष तप करे कहीं और कोई सरे कहीं। यह बात कुछ समम्में नहीं खाती।

(ग) यदि दूसरी शंकाका कुछ समाधान हो भी वार तो ऐसा कम द्रवह क्यों दिया गया जो श्रति पृथित ग निदेयतापुर्या कार्य समम्बा जा सकता है ?

बाधुनिक युगर्मे—जब कि धर्मपर धदाकी एर्व शिथिजता हो रही है— ये शंकाएँ बातुचित नहीं समजी जा सकतीं। जब बापनी खुदिके बातुसार कमसे इन्छ समावान किया जाता है।

(क) धर्मशास्त्रों (स्मृतियों) से यह बात सिय है कि घर्म बलातः दृष्टाञ्दृष्टार्थं साधक है-ब्रार्थात् उसके हो विमाग हैं। एक घटट वर्धसाधक और इसरा इट वर्षसाधक। यचिष दोनों ही धर्मानुशासनके धन्तर्गत हैं और दोनोंका ही मुख्य उद्देश्य आत्मोद्यति है एवं दोनोंकी साम दायित्व भी राजापर ही है किन्तु जो भाग बर्ष्टार्यसायक है उसमें प्रधानता थोगवलविशिष्ट और दिम्बर्धासम्ब महर्षि, ब्रह्मर्षि, राजर्षि चादि परमोच चालाचींकी है, पर वृसरे दृष्ट-वर्ष-साधक भागका---जिसका पृथक् नाम व्यवहार हो गया है-सम्पदन मनुष्य-जातिके अधिकारी कर्मचरी गणोंके हारा भी हो सकता है चौर वही राजतत्त्र **क**रवात है। बादप्टार्थ भागसे ऐसे विषयोंका सम्बन्ध है जिन्ह परिणास प्रत्यचर्ने कुछ नहीं दीखता । इसी भागके साधनार्य प्रकृति नियमानुसार वर्षा और चाश्रमों के नियमोंकी व्यवस्थ की गयी थी। उस समय वैसी उच चाल्माचोंके विद्यमार रहनेसे दोनों भागोंका परिपूर्यतासे साधन होता वा सीर राअद्वारपर केवल जनताके परस्परके विवाद ही नहीं बा^{हे} थे किन्तु दैवी श्रामिष्ट घटनाओं हाता होनेवाचे कडाँकी मी पुनार गुनी जाती भी भीर उनका यथोचित न्याय किंग जाता था । यदी रामराज्यका महत्त्व या । बाज रा पविश्व भीर दिश्य सामग्री मधी है। म वैसी उच्च भागा की हैं और न मैंने सता की हैं जो बाहद विभागका पूर्व नियम्बर कर शहें । इसी कारण वर्ण और बाधम-धर्मक वेगमें कींग दीना चसाका रहा है। अब तो देवता !! आग (ज्यवहार) होय हर गया है । किस्तु उसकी दर्ग भी क्याजियोंके बाधों का जानेसे परम शोचनीय है। वर न्यायाँकी क्षी पुर्वशा है शो धरटविभागने

। स्थाय कहाँ सरभव है ? इसी फारण अब राजदारपर कक्षे जानेसे कोई धर्थ सिद्धं नहीं दोता। (स) सप करना पविश्र ही नहीं वह सो परसोख कचा-साधन है, जिसका सृष्टिके चादिमें श्रीभगवानने बद्धाजीको ता किया था। किन्त, इसके साधनके लिये चाहिये वेकारी। यह शह अधिकारी नहीं था, क्योंकि श्रीमगवान्के तुर्वेण्ये मया सप्टं गुणकमेविभागतः" षचनानुसार अत्येक की उत्पक्ति कर्म और गुरुके बाधारपर हुई है। तदनुकुल वर्णमें उधगुराविशिष्टता नहीं होती, जिससे उसमें उद्य की योग्यता हो सके चौर यदि चहज्ञारपूर्वक कोई उच का संकल्प कर से हो वह चनधिकार चेटा है। उदाहरण-लिये समग्र क्षीजिये कि राजतन्त्रमें यदि कोई कनिष्ठ धेकारी उच्च चधिकारीका चासन मन्द्रकर स्पर्व जारूद जाय तो कितनी चलध्यानमा होकर रहार्थसाथक धर्म-भागमें सर्घात राजतन्त्रमें इसचल सच जाय। बस, इसी-हार पदि कनिष्ठ अधिकारी ऊँचे अधिकारका कर्म करने ते तो धरहार्थसाधक धर्मविभागमें भी पर्यो हलपल इकट उसके परिणासभात उत्पात श्रीर विश्व श्रा उपस्थित । राजापर दोशोंका दायित्व है। इसलिये शजाका कर्तव्य 🌬 दोनों 🗗 चनधिकार चेष्टाझोंके चपराधियों हे लिये ययो-त दरहविधान करे । बाज यद्यपि रष्टार्यंसाधक धर्मविभाग-ा हो उचरा जैसे हैसे अस रहा <u>है</u> परन्तु बारशर्य धर्म-मागके नियम्प्रणका सर्वधा श्रभाव है और देश वर्णसंकर-ष्टिके कारण धनधिकार क्रियाओंसे ज्यास हो रहा है। अन्य-या इसी कारण चतिवृष्टि, चनावृष्टि, हिम, चातव, राजभा, हामारी भादि उपवर्षोका बेग पूर्वरूपमे बद रहा है । यहाँ यह काचेप श्रवरय मास होता है कि ऐसी दशामें हिके किये चारमीपति या चारमोदार करनेका अवसर ही हों है। यद्यपि देखनेमें यह धारोप प्रवस दीसता है किन्त ास्तवमें बात यह है कि ऊपर जो वर्णव्यवस्था प्रदर्शित की ायी है वह केवल प्रकृतिके नियमामुकूल है और इसके मार्थ पालन करनेपर अवस्य क्रमशः उन्नति होती है। सीके द्वारा उसका उदार पूर्णतया हो जाता है। परन्तु सबके अपर सद्यःफलप्रदाता भक्ति और प्रेमका दसरा मार्ग है,जहाँ सारे नियम और बन्धन | अस्त हो जाते हैं। की यह हीक्या, उससे भी नीचे चन्यज भी उस गतिको मास होते हैं जिसको अधिमुनिगण तस्सा करते हैं। वहीं

देखिये, जिन श्रीरामके हायसे इस शुद्रका वध हजा.

उन्होंने ही शवरी और निपाद-जैसे धनवजोंसे धसीन

मेम किया। उसीके प्रभावते उनका वशागान सात सनेक पतितांकि उद्याश्य परम सावन बना हुमा है। भगवाद्गेते केवल हुन्हींने मेस किया हो सो नहीं, पतु वानारांके इन्तें हे वह व्यावसात कर बिन्दे, निर्मां कई तो मता-स्माधीय हैं और एकडी महिमा सो यहाँतक बड़ी दुई है कि शीमानानुके पवित्र नामके साथ उनका भी नाम संबुक्त हो थया है। यदि 'पनसुत हुमान्त्रीकी नव' न बोजी जान सो 'सियानद रामयन्त्रकी नव' 'फीकी सी जगने सगती है। चान स्वतासुतका मर्साग उठाका को सोग वर्ष-व्यवसाको कर अर्थ करोबर हो मेरी स्वयानी कुन्दीको काममें व्यावस धीमानान्त्रके स्वया सिवान्यको स्वया कुन्दीको काममें व्यावस धीमानान्त्रके स्वयस हो नहीं मिले।

ध्यय यह शंका रही कि शहके सप करनेसे माह्यया बाक्षकेकी मृत्युका क्या सम्प्रन्य है र इसके समाधानमें उपय क कथनानुसार समधिकाररूपसे सप करनेपर कोई-न-कोई उत्पात होना ही था । सो यह इस ब्राह्मय बालककी कुलारूपमें परिवात हथा। श्रव वक तो यह रहा कि तप करने-वाला करों और बालक कहाँ और उसरे यह कि सदादिके महारसे ही किसीका वध हुचा करता है परन्तु बालककी सम्बद्धा हेत तप क्योंकर समका वा सकता है है बस्ततः तप करना और उसका इद्यानिष्ट परियाम होना, इन सबका अस्टार्च धर्मविभागचे सम्बन्ध होनेटे कारण यह कोकोत्तर सदय जगतका स्ववहार है । जो ध्रवयवरहित श्ररूप या चटर है। यह जो विस्तार या विशासता देखनेमें था रही है सो तो केवल स्थूल अगतका दरय है। इसके सुदमरूपका दशन्त बरगदके बीजसे सममना चाहिये। प्रयांत इतना विस्तृत बक्ष एक राई-से बीजमें समाया हुचा रहता है। चतः सद्य जगनमें वैसा चन्तर नहीं रहता जैया स्थलमें वीखता है और वध होनेमें भी जैसे स्थल जगत्में श्रसादिका प्रहार नेत्रका विषय होता है वहाँ वैसा नहीं होता। वहाँ इस प्रकारकी घटनाएँ श्रवयवरहित गुर्खोंके स्थातकासे होती हैं, जो चमैचलका विषय नहीं है। धानकल विज्ञानकी इस परमोद्यतिके कालमें सो ऐसी शंकाधोंका धवसर ही नहीं चाना चाहिये, क्योंकि अब इस भौतिक जगतमें भी विना तारके सहसीं कोसकी दुरीपर अध्यमात्रमें समाचार पहुँचानेका सुरमभूतोंका चमत्कार देखते हैं.-जो चक्त-इन्द्रियका विषय नहीं है तो अध्यास समृतके स्थासकारीय हमें क्यों सन्देह होना चाहिये ! चन यह कि, उस बालककी ही मृत्य क्यों हुई, अन्य उपह्रव क्यों नहीं हुए ? इसके

٠,

लिये मिरिक तूर म लाइरे । यह नाम मिरिक है कि सनेक रोगों के कीराम, सर्देश स्वाकार-मणवानी किया करते हैं, किया म स्वय रोगों की ही जरानि पुक स्ताव होती हैं और म स्वय ममुख्य ही किसी रोगों युक साव मस्य होते हैं। विरोप देश, पाल भीर पाल ही जनके साहानके देहा होते हैं। जिस, वाही प्रता सुका सामाची है। पाला पेसी ही निरोपताओं ते जस श्रम्म सामाची है। पाला पेसी ही पाल हुसा।

ह्त उपयुक्त परिध्यितियर रिष्ट वाजनेते यह भक्ट होगा कि उस समय भी शीनगाना के सम्मुख कैसी व्यदिश्व समस्या उपरियत थी। एक कोर निस माज्य-माजका स्वतक सारीर उसके मा चारने हारण काल राजा है उसके तिये न्याय करनेवी उत्तक किया और दूसरी कीर एक पवित्र कांग्रेम महुच मनुष्यका वज, जिसका हदयमें संकाश माते ही इसमकराकी स्वेकार्ष उसका हो जाती है, तितका निक्चण कार किया गया है किन्तु वर्णामसम्बद्धी राज्या और स्वायस्थानकात स्वायके सम्मुख कीसामने सन्य किसी भी विवासके स्वायक स्वायस्थान

(त) प्राय रही देले डम्म व्यवकाणी जीवती राहा, वो सह प्रक बात तो प्रायण ही है, आजको स्थान-सहित्ये भी देवा जात है कि कितीका वन स्थानेश क्यानाधीको स्ववका ही द्वार दिया जाता है। इसके अतिरिक्ष जिल राजाके प्रत्येक प्रायनमें परम ग्रातिका वेका चल रहा हो जीर समल मला पूर्व हुए सीर सामन्यका भोग कर रही हो, यहाँ यदि कितीका उस ग्रातिमें वाधक होना जिल हो जाय जो स्थाप यही चारता है कि उसे ऐसा उत्तरत्यीय दयक दिया जात कि जिससे प्रमा कितीको ऐसा अस्पाय करनेका साहस से तहो और उस ग्रातिके बातामुद्धां अस्पत व को ।

(११) उपर्युक्त न्यारह पत्रित्र चरित्रोंसे जो अवादा स्थिर को गयी है उसका पथामति विस्तर्शन कराया गया ।

को गर्बा है उसका मयामात । वृत्यसम् कराचा गया । धन्तमें इतनी बात और मदर्शित करनी आवश्यक है

भगवान् बौरामचे सर्वारा-खाके लिये वान्युकका वय किया परानु व्यक्ति सरकामनाका करु मौ उसे द दिया। यह दर्जा के लिये का दर्रा मा अवदय मनवान् ने उसका वय करते वते प्रत्योग्धन रस्तर्म में कर दिया। ध्रण्यानास्त्रामा नामे कहा गया है कि प्राराख रही स्वर्गन में करिया। ध्रण्यानास्त्रामा नामे कहा गया है कि प्राराख रही स्वर्गन नामे प्रताब किया। सर्ति सर्वाराख्या नामे व्यक्ति सर्वाराख्या में प्रताब किया। सर्वा सर्वा स्वर्ण में प्रताब किया। सर्वा सर्वा प्रताब किया। सर्वा सर्वा प्रताब किया। सर्वा सर्वा हु । —सम्बाखन क्रां प्रताब क्षित्र सर्वा प्रताब क्षा क्षा प्रताब क्षा प्रताब क्षा प्रताब क्षा प्रताब क्षा प्रताब क्षा क्षा प्रताब क्षा प्रताव क्षा प्रताब क्षा प्रताब क्षा प्रताब क्रा क्षा प्रताब क्

कि गागुरिकमण्ये इस केरलें प्रतितादित समल वरितें वा सम्मांने भी, जिल्हा उन्होत यहाँ नहीं हुना है, हा प्रसामनुक्ति हो। जिल्हा उन्होत यहाँ नहीं हुना है, हा प्रसामनुक्ति हो। जिल्हा होगी है कि आरम्भ प्रमान्त कि नित्त होगी है कि आरम्भ प्रमान्त होगी हो जिल्हा क्रप्यस्त नहीं होता चारिते। विचारित की सम्मान करते हा सामान करते हुन हिन्दु यहाँतक वीचे गी कि साम्य स्तारी वर्मन्तीका भी विचार हो। वर्मा कि सामान्यकरणे नहीं, एक निष्ट भीत मनन तामाने हा सामान्यकरणे नहीं, एक निष्ट प्रमान्यकरणे नहीं, कि नित्त मी प्रमान्य सामान्यकरणे हो नित्त भीति हो। सामान्यकरणे हो सामान्यकरणे हो। सामान्यकरणे हो सामान्यकरणे हो। सामान्यकरणे हो सामान्यकरणे हो। हो। सामान्यकरणे हो। हो। सामान्यकरणे हो। हो। सामान्यकरणे हो। सामान्यकरणे हो। हो। सामान्यकरणे हो। हो। सामा

इष्टदेव रामसे विनय!

मन मन्दिरके इष्टदेव ! इस जीवनके भाषीरे ! है मधुकर ! बर सुमन कटीके स्नेत-ट्या रखवारे !!

बहुत दिनोतक सोज-सोजकर हाय । तुम्हें हम हारे।

हाय । तुम्हें हम हारे। किन्तु नहीं कुछ लगा पना हा ! बही नयन-जल-घरे।।

नाज हुआ सीमाग्य प्राप्त इस पहुँचे पास तुग्हारे। इय अहा ! इतहत्य देखकर

हुए अहा ! इतहत्य देसकर दोनों नमन हमारे।।

आवे हैं हम यहाँ तुम्होरें - दर्शन हेतु दुकारे ! हृदय आज यह अर्पण करने

प्रेम चंद्रके मारे॥

हम चातक हैं, स्वातिबुन्द शुम, चलो हमारे द्वारे।

करो पुण्यमय हे प्रियवर 1 चल गृहको आज हमारे।।

औरामवचन द्विवेदी "बादिन्द"

श्रीसीताके चरित्रसे आदर्श शिचा

(लेलक-भीजपदयालयी गोयन्दका)

ह चडना राजुक्ति नहीं होगा कि प्रतिस्त विषके भी -परिशोर्स भीरामस्त्रिय स्वयंत्र स्वयंत्र स्वयंत्र यु स्ति बीचन परित्र सबसे उन्ह्रस्ट है। रामायणके समन क्रीजितियों से सीतात्रीका परित्र स्त्रोंच्या, ससेवा धारतां श्रीर पत्र पत्र पर स्त्रुक्त्य पत्रस्ते वोच्य है। भारत-स्वन्ताप्रीके विसे सीतार्गीका भीरत स्वयंत्रपार वन्त्रके

ये पूर्व' मार्गरर्गंच है । सीतामीके बसाधारण यातियम,
गार, ग्रीक, क्रमप, शासिन, क्षमा, सहनर्गक्तम, वर्मराप्त्रमा, मजता, तेवा, संचय, संद्रमण्डा, साम,
राप्त्रमा, मजता, तेवा, संचय, संद्रमण्डा, साम,
नेवी
रिवा प्रदास मार्ग्य तिरामी ही महिलामें सिठ
करें हैं। मीसीमाके परित्र मीत्रम चौर स्थानिक स्वित्र
से स्टार वहाइस्य सामार्ग्यमं में वचा साम्युक्ते किसी
री इतिहासमें सिवनो बदिन हैं। चारमाने सेक्ट प्रयानक
रिवा होत्र सिवनो सित्र हैं। चारमाने सेक्ट प्रयानक
रिवा होत्र सिवनो सित्र हैं। चारमाने सेक्ट प्रयानक
रिवा होत्र सिवनों हैं। ऐसी कोई मार्ग्य सिक्तमों
सारी साथितों हो पूर्वी हैं, वीसीमोक मार्गित स्वानक
रागी विवार्ग हो पूर्वी हैं। वीसीमोक पानियम-प्रयानिक
रागी सिवार्ग हो प्रयान सित्र सिवार्ग
स्वार सिवार्ग हो सिवार्ग के स्वीत्र सेक्ट
स्वार सिवार्ग हो स्वार सिवार्ग
सिवार्ग हो सिवार्ग
स्वार सिवार्ग हो सिवार्ग सिवार्ग
सिवार्ग हम्म भागोचना बरनेसे देशी प्रकान हम
रेश ही सकर्म है को स्वयुक्त स्वीत्र मार्ग हो, एएनु सीतान
से स्वार स्वार ही स्वार्ग स्वार्ग हो, एएनु सीतान
से स्वार स्वार्ग हैं। स्वार्ग सिवार्ग मार्ग हो, एएनु सीतान
से स्वार हमार्ग हम स्वार्ग सिवार्ग मार्ग हो, एएनु सीतान
से स्वार हम सिवार्ग स्वार्ग स्वार्ग सिवार्ग
से स्वार हम सिवार्ग स्वार्ग सिवार्ग
से स्वार स्वार्ग हम स्वार्ग हम सिवार्ग
से स्वार्ग हम सिवार्ग सिवार्ग सिवार्ग
से स्वार्ग हम सिवार्ग सिवार्ग सिवार्ग सिवार्ग
से स्वार्ग हम्स सिवार्ग सिवार्ग सिवार्ग सिवार्ग
से स्वार्ग हमें स्वार्ग सिवार्ग सिवार्ग सिवार्ग
स्वार्ग हमें सिवार्ग सिवार्ग सिवार्ग सिवार्ग
स्वार्ग सिवार्ग सिवा

वाता है, वह है मायावायों जारनेंद्र विते औरामदे चले वारे और सारोचके मारे सवार 'द्रा सीटी 'द्रा रूपाया !' की द्राव्य कर तेय सीमामीया चायावाय रूपायुक्त कार्यक मारे वाह बहुता कि 'ती सामामी हैं कि यू मुख्ये वाले के दिये बारोच पूरे माईकी स्वयु देवना चाहता है। मेरे दे दोस्से दी यू सामे माईकी राच करतेको नहीं बाता !' इस वालीको देवे सीमाने क्या करतको नहीं बाता !' इस वालीको देवे सीमाने क्या करता हुए वस्ताव्य किसा । सामाच्या सी-परिवर्स सीमामीका यह स्वांत कोर्स् वितोच सेप्युक्त मार्थ । दाइक्यासे सीमामी चाहर क्यांत्र कार्य मार्थ । दाइक्यासे सीमामी चाहर क्यांत्र कार्य पार्थ थीं। भोराम-सीवाज चावनार स्वार्थात्र स्वार्थ कर्यों पार्ट सीसे सीमामीको पार्ट प्रकार सीसाची गयी कीर्र स्वारीको सीमामी क्यांत्र स्वार्थ स्वार्थ वार्य शाहर वार्य करावी

जिस यक प्रसंगको सीनाके क्षीवनमें दोपयुक्त समस्य

नहरमें अनकपुरमें पिवाके घर सीताजीका सबके साथ जैम-क्ववहार जैम-क्ववहार प्रश्न-क्ववहार प्रश्न-क्ववहार प्रश्न-क्ववहार प्रश्न-क्ववहार प्रश्न-क्ववहार प्रश्न-क्ववहार

धारम्बसे ही सल्जा थी। छजा ही क्रियोंका भूषण है। यह प्रतिदिन माता-पिताके चरवामिं प्रणाम किया करती यी, पाने नौकर चाकर तक उसके व्यवहारसे पाम प्रश्न थे। सीतानीके प्रेमके बतानम्ब कुत्त दिन्दर्शन उस समयके क्यांकी मिल्ता है जिस समय सीतानी ससुसारके विषे विद्या हो रही है—

पुनि चीरन बीरे कुर्जेरि हाँकारी । बार-बार मेंटहि महतारी ।। पहुँ चार्नोहें फिरि मिकाई बहारी । बढ़ी परसपर प्रीति न घोरी ।। पुनि पुनि मिकाते साक्षेत्रह हिल्लाई । बात बच्छ जिमि चेतु स्नाई।।

प्रेम-विवस नर-नारि सब, सक्षिन्ह सहित रनिवास । मानहुँ फीन्ह विदेहपुर, करुना-विरह-निवास ॥

कुक क्षारिका बारकी वाया । करक रिमारिक्ट राखि पढ़ार ।। स्वापुल्त कहिंदे कहीं बेरहें। सुनि चीरतु परिदर्श न सेदी ।। स्वेप सिक्त सामृत चाहे मीती। सतुस्यस्य केंद्र कहीं साती।। चंचु स्पेप नेताल करक हव आदा । प्रेम कींगि होचन मत्र छाए।। सीप नेताल चेराता आयी। रहे कहारत परम निराण ।। टीर्मिट हाम बर सा आयी। रहे कहारत परम निराण ।।

बारी जानियों के बालार्य जनकर्क झानकी समीता मिट जानी है और रिजारें करोकत्वाय पशु-पंथी भी शीता सीता? इस्राक्टर प्याप्त हो उठते हैं, जहां मिलाता होने हैं, हस बातका जानुकार साठक कर लें ! सीताके हस चरित्रके बिजारेंको यह रिका सहय करनी चारिये कि क्षांको वैदारों होटे वह समीके साथ होता बर्गाय करना एकिन है बो समीको पिट हो।

माता विदाश स्तिक स्वयने स्त्रान पिताको साहा पासक स्वान व्यान स्वान स्वा

उसे को चुन शिका मिवनी, कोसीना उसपर रहा बमक करनी थी। मिथिवासे दिना होते समय बौर चित्रपूटमें सीनामिको माना-पिनासे को पुष्क शिका मिकी है, वह सीमात्रके किये पाकनीब है— होयेदु रोगन पियति शिवारी। बिनः अहिनाने अगीरा हमारी।। सामु-सामुर-मुक-सेरा। करेहु। यति-नन्त्र त्रमेन आयमु अनुगरेहु।। स्तिसेराके निष्

पतिसर्वात किय धीरामको राज्याभिनेकके बर्गले यकायक बन-प्रमाप्रत सुनने ही सुरून क्षप्रता कर्माण्य निवस कर स्विता । मेहर-समुरार, गहम-कप्रतु , राज्य-शिवार, अहस-बाग, दार-दानी चीर ओस-बाग आदिये कुम साहक करीं। प्राथाको सरह पतिके साथ रहना ही प्रवीका प्रकान

मसु पिता मिलने विष माई । विष परिवाद सुद्दर-समुदाई ।। सास-समुद-गुर-सन्त सहाई । सुन सुंदर सुतील सुकाई ॥ जहूँजिय नाय नेह कद नाते । पित बिनु विषक्ति तरनिहुँ ते ताने ।। तम-बन-बाम-बार्टन सुरहानू । पतिनिहीन सन सोक-समाजू ॥ मोग रोग सम, मूचन माक । जन-जातना सरित संसाक ॥

धनके नार्ना क्षेत्रों कीर सुदृत्यके साथ रहनेके नाना प्रतोभनोंको सुनकर भी सीता कपने निश्रयपर क्षटियरहती है। वह पति-सेवाके सामने सन इन्तु तुष्त्र समस्त्री है। नायसकरुपुत साथतुम्हारे। सरद निमर्जनियु बदन निहारे।

यहाँपर यह सिद्ध होता है कि सीताधीने प्रकार गास हुई पति आद्याको बदबाकर दूसरी बार धपने मनोऽत्युक्त खाला गास करनेके तिये मेगामर किया। यहाँतक कि, जब ममावाद श्रीराम किमी प्रकार भी नहीं माने तो हुदय विद्योण हो खानेतकका सहेत कर दिया—

पेसेड बचन कठेर मुनि, जो न हृदय किरुगान । ती प्रमु विचय विदेशन हुन, सहिहाई चाँवर प्रान ।। सम्याग्यसामायपाके अनुसार वी बोसीताने वहाँतक स्पष्ट कद दिया कि— रामाधानी बहुता हुएति बहुतिहैते। भौती तिना वर्ने असी हता विश्वपत्रितः। व्यवस्था असिप्यानि सर्पेता तम्माहीनी। बहित्तराहित सोस्माना व्यवस्थानि नेद्रप्रतः।। (प्रकृतः)

भिने भी माहर्गे हे हागर तामाय हो धनेड कार्य मुने हैं। करी भी थेमा बहा गया हो मो बननाइ कि किसे सी समाजनार्स धीराम मीनाहो क्योचाम हो पुरुष के यह हैं। इस बहा हो धर नवी बान को होनी हैं। मैं कर की सीवेडा बनकर साथ कहाँगी। यहि दिमी तरह मीका सुखे नदी के क्योंने तो हैं सारके सामने ही माब बन हैंगी। ' पनियोची बामनाये सीनाने हमनकर स्वाहरें परातारिक्क करनी बहाई है गए भी कह हों।

वारमीकि-रामायणके चनुमार मीनाजीके भनेक रेरे, गिष्मिदाने,विविध मार्थना करने और माणलागपूर्वेक परशेष में पुनः मिलन होनेका निश्चय बनुवानेपर भी जब मीरान दने साथ से जानेको रहती नहीं हुए तब, सीताको बहा दु:स हुन भीर वह प्रेमकोपमें चाँलॉमे गर्मनामें चाँसुचाँकी घारा बहाडी हुई मीतिके माते इसम्बद्धार कुछ क्ठोर बचन भी कर गरी, कि-'हे देव ! भाप सरीते आयंप्रत्य सुत्र वैसी ब्राइन मक, दीन और सुल-दुःखको समान समसनेवासी सहपर्दिती को सबैली सोहकर जानेका विधार करें, यह सारको होना नहीं देता । मेरे पिताने काएको धराकमी और मेरी हरी करनेमें समर्थे समप्तकर ही घपना दामाद बनाया था। इस कमनमे यह भी सिद्ध होता है कि भौराम सहक्रानने जलम्त श्रेष्ठ पराकसी समन्ते जाते थे। इस प्रसामी श्री वाक्सीकिती धौर गो॰ नुससीहासत्रीने सीता-रामकेसँगाउनै वो कुछ कहा है सो प्रत्येक की-प्रश्यके म्यानपूर्वक पहने कीर मनन करने योग्य है।

सीताजीके प्रेमकी विजय हुई, जीतामने उसे साथ है चलना व्हीचर किया । इस क्यानक्मे यह सिंद होता है कि वहाँको पतित्यांके विध्ये—कार्य सुलके विशे वर्गा— तिकी आहांको दुहरानेका प्रतिकार है। यह प्रेमये पि-मुलके जिये ऐसा कर सकती है। सीताने तो यहाँक का दिया या 'यदि भाग काला नहीं देते तब भी में ती हार्य चलुँगी।' सीताजीक हम प्रेमामकी काजतक कोई मी निन्या नहीं करता, क्लोंकि सीता केजब पतियम की पति सीतादीके जिसे समस्य मुखाँको तिलाशांवि देश जानेको तैयार हुई भी, किसी इन्द्रिय-मुखक्य स्वार्थ प्रतके दिने नहीं इससे यह नहीं समझना भारिय कि जाका व्यवाहर प्रजुचित ना परिवतन-भारेत विकट्स या । को धर्मके जिये ही ऐसा व्यवहार करनेका स्विकटत है। से एसपेंको भी यह रिचा प्रत्या करनी चाहिये कि प्रतिच्या पर्वाचित है। इसीमकार खोको भी पति-प्रति परित्युषके जिये उसके साथ ही रहण चाहिये। है विरोध करनेसर भी कह और सापिके समय परि-के विरोध करनेसर भी कह भीर सापिके समय परि-के विरोध करनेसर मार्थ रहण उनिकटी । ध्वस्त परित्यों के विरोध करने प्रतक्त कार्य करना उनिकटी । धवस धवसमा देककर कार्य करना चाहिये। सभी विरावयों के के विरोध करनी ध्वस्ता नहीं हो सकती। सीताने भी भी साउवाके कारण सभी समय इस खिकारका सोत नहीं विध्या था।

तिसेवामें वनमें जादम सीता पतिसेवामें सब कुछ भूख-कर सब तरह सुली रहती है। उसे राजपाट, सुख महल-बगीचे, घन-दौत्रत और दास-दासियोंकी । भी स्पृति नहीं होती । रामको बनमें चोड़कर खौटा हुआ । सीताके विषे विवाप करती हुई माठा कौराल्यासे कहता - 'सीता निर्जन वनमें घरकी भाँति निर्भय होकर रहती षद् श्रीराममें मन जगावर उनका प्रेम तास कर रही है। वाससे सीताको इन्ह भी दुःख नहीं हुचा, मुन्ने हो ऐसा ति होता है 🌬 (श्रीरामके साथ)सीता वनवासके सर्वधा य है। चन्द्रामना सती सीता जैसे पहले यहाँ बगीचोंमें भ्र सेवती थी, वैसे ही वहाँ निर्जन वनमें भी वह रामके साथ बाबिकाके समान खेवती है। सीताका भन रमें हैं, उसका जीवन शीरामके क्यीन है, क्रवपुत श्रीराम-साथ सीताके किये वन ही अयोज्या है और श्रीरामके ।। भयोष्या ही बन है।' धन्य पातिकत ! धन्य !

सासनेता पतिसेवाडे किये बन वायी, वरन्तु बसको इस बातका बड़ा चोध्य रहा कि मुर्भोकी सेवासे उसे घड़ग होना पट्टा रहा है। सीवा पड़े पेर एकर सच्चे मनसे रोती हुई कहती है—

X X । मुनिय मान में परम अमानी ।। हान्समय देव बन दीन्हा । मार मनीरय सुफ्तन कीन्हा ।। बन ग्राम मीन ग्राहिन ग्राह । बरम कीन कहु दोसन मोहू ।। साम-प्रतोहका यह व्यवहार काहरी है । भारतीय

साम-पतोहूका यह व्यवहार फार्र्स है । आरतीय इनाएँ परि घात्र कींग्रस्मा और सीताका-सा व्यवहार सिल्या सांताक साहण्याता पुरु उदाहरण देखिए।
सिल्या ज्वानाव है स्वाच ज कैडेगीजी सीताकों
वनवासके योज्य क्या पहननेके सिये कहती है तक वरिष्ठसरीक्षे अहर्षिक मन भी पुरुष हो उठता है, परन्तु सीता
हुस्त क्यानको केवल जुणवाण शुन हो नहीं लेती, साधाजुसार वह पक्यारण भी कर लेती है। इस तस्तीसों से स्वाच
हिला प्रस्त करणी चाहिये कि सास या उसके समान नातेमं घनकों बड़ी कोई भी की वो डुफ करें या वर्णा करें,
उचनों सुणीके त्याप यहन करना चाहिये और कभी पतिके
साथ विदेश जाना परे हो सच्चे हुस्पते साहुमांको प्रधानकर, उन्हें सल्योच करावाकर, तेताने विद्या हार्लिक प्रधानाच करते हुए जाना चाहिये। हारने वहुमांको
साहुमांका साराशिक्ष साल ही साह होरंग।

सीवा अपने समयमं कोकमसिव परिवता निर्दामनाता थी, उसे कोई पारिवतका क्या उपरेश करता? परन्तु सीवाको अपने पारिवतका कोई भिमान महाँ था। जन्त्यामीक द्वारा किया कुमा पारिवतवर्यकोत उपरेश सीवा बहे भारतके साम श्रानती है और उनके सफ्तोंम प्रधान करती है। उसके मनमें यह मान महीं भारत के संस्क कुद जानती हैं। बरिक भारत्याचारी दी उससे कहती हैं-

🖭 सीता तब नाम, सुमिरि नारि बतिवन करहि । तोहिं प्रानिष्टम राम, कहेउँ कथा संसारहित ॥

इससे यह रिज्या प्रहण करनी वाहिये हैं। ब्रापनेसे बहे-न्हें जो इन्हें उपहेज हैं उसे ब्रिस्सिन होंग्डर बाहर और सम्मानने साथ मुनना वाहिये पूर्व वयासाव्य उसके झनुसार चवना चाहिये।

लीशनीकी ब्रोतिय-तेताचा मात्र हैरियर । मानिय-तेता वह बपने हारपर वाये हुए वातियि-वासारान-की सेवा बपनेसे कारी मार्ग चूकती थी । बप्तरेस में हारपर बहे हुए राज्यों की सीठात बहे चारपर मित्रा देना बाता बार हुस्से क्वियोकी यह सीकास चारिये कि हारपर वाये हुए वातियका सेमके साथ यसाठाविक सन्धार करना वरिश्व है। गुरुजन-रेजा बड़ोंकी सेवा और मर्वादामें सीवाका मन और कितना समानके

भाता-पिता बढ़े भेमसे इड्डमें खगान्य घनेक मध्यस्की सीख चौर वासीस देवे हैं - बात काने-करते रात वाधिक हो जाती हैं। सीता मनमें सोचती है कि सामुजांकी सेवा प्रोडक्ट इट खबस्थामें रातको यहाँ रहना प्रतृचित है, किन्तु स्मावसे ही सजागीवा सीता सहोप्यत्य मनकी बात मा-बायने कह नहीं पन्नती-

इहति न सीय सरुचि मन माहीं। इहाँ बसब रजनी मठ नाहीं।।

चतुर माता सीताके मनका भाष कान वेती है चौर सीताके शीक-स्वमायकी मनशी-मन सराहना करते हुए माता-पिता सीताको कीराव्याके बेरेमें भेज देवे हैं । इस सदाक्षे भी क्षियोंको सेवा चौर मर्यादाकी विष्या बेनी चाहिये।

सीताका तेज और इसकी निर्धयता देखिये। निर्भयता जिस दर्शन्त राववादा नाम सनदर देवता भी भौपते थे, उसीको सीवा निर्भयताके साथ कैसे हैसे बचन बदवी थी। रावणके हायों में पड़ी हुई सीवा अवि कोधमे बसदा तिरस्वार करती हुई बहती है 'बारे हुए flurer, देरी थाय परी हो गयी है, घरे मुर्ख ! त श्रीतम-करानी सहप्रतिवीची हरवाहर मानजित चांग्रेके साथ क्षारत बाँधकर चलना चाहता है। तम्बर्ने धीर रामचन्त्रमें बतना ही भन्तर है जितना सिंह चौर सिपारमें. समज और मारोमें, बारत और कॉजीमें, सीने और बोडेमें, चन्त्रत चीर की बरमें, दापी और विसावमें, शरन और कीएमें तथा इस और गोधमें होता है। मेरे चमित प्रमाक्वाओ स्वामीके राते मू मुखे इरच बरेगा तो बैसे मत्त्वी थीं के बीने शी क्यारे दश हो वाती है, बैसे ही नू भी काबड़े गायमें चवा शावता ।' इससे यह सीखना चाहिये कि वस्मात्राके बक्कर किसी भी प्रथरपाने मनस्पद्धे हरश उचित्र नहीं। सन्ताय-

का प्रतिवाद निर्मयताके साथ करना चाहिये। परायारे बनका सचा मरोसा होगा तो रावद्यका वय करके सीताओं उसके चंतुकसे खुबानेकी माँति भगवान् हमें भी विगर्यने खुबा लेंगे।

विषधिमं पड़कर भी कभी धर्मका त्याग नीं करना चाहिये । इस विषयमें सीताश जैवामी विषयस्य सर्वोचम है । जड़ाकी बगोक

बाटिकामें सीताका धर्मनाश करनेके विषेत्र राववाकी चोरसे कम चेटाएँ नहीं हुई, राजसियोंने सीताको भर और प्रसोधन दिखबाका बहुत ही तंत किया, परन सीवा वो सीला ही थी । धर्मध्यागका प्रश्न तो वहाँ दर ४ गरी सकता, सीताने को छलसे भी प्रपने बाहरी बर्तवमें भी विपत्तिसे बचनेके हेत कभी तीय नहीं भाने दिया। उसके मिर्मन और धर्मसे परिष्या मनमें कभी हुरी स्कृत्या है नहीं था सकी । चयने वर्मपर चटल रहती हुई सीता हुई रावयका सवा श्रीव श्रीर नीतियक्त शब्दोंमें तिरस्कर है करवी रही । एक बार रावयके धान्वायोंकी न सह सक्ते समय और रावखके इत्ता मायासे धीराम-प्राच्मायको मरे 🔃 दिलका देनेके कारण यह मरनेको तैयार हो गयी परना धर्मने हिगनेकी भावना स्वप्नमें भी कभी उसके मनमें नहीं उठी। वर्ष विनसत भगवान श्रीसमके चरवाँके व्यानमें क्षणी सर्व थी। सीताजीने श्रीरामको इतमानके हारा जो संदेश कदलाया, उससे पता लग सकता है कि उनकी कैरी पवित्र स्थिति थी---

> नाम पाइरू दिवस निसि, ध्यान तुरहार कपर । डोजन निज पद-जीन्त्रको, प्रान आहि केहि बार ॥

इससे खियोंको यह शिका महत्य करनी वास्ति मिं पतिके विकास अरिया कार्यास्त्री कार्यस्त भारिते वर्षायोंका व्यान रहे। अनमें मागान्ते वजसर पूरी बीडा भीरता जीर देव रहे। एत्याके शादनमें मायोंकी भार्मि देनेको सन्ता तैयार रहे। भर्म जाकर माया रहनेमें कोर्र कार्य नहीं, परन्तु माख आकर धर्म रहनेमें ही करनाय है 'सर्स

सीतातीकी सावधानी देखिये। वब बदुवारें बी बदाविकारिकामें सीतावे बात करें हैं तब सीता करने बुदिकोरिकासे सतावाद उनकी गरी हैं करती है। अवकार करो पर विधान नहीं हो नाता कि बदुवारें बारावार्स बीहासकानुके बुद हैं, शक्तिसम्ब हैं भीर तेरें जमें ही यहाँ भाये हैं सबतक शुलका बात नहीं ती है। जब पूरा विभास हो जाता है तक पहले

ाण्यत-भेन स्वाती सारी दे दरवा हुन प्रवाती है वर्ष पहले प्राचित हो दे करवाणूर्य उप्पत्ति कहती है—'इनुमार्'। नायतील पित हो जहां है के केसन है) हुणा करवा को कर संस्तांत हुँ हैं (कह सुकते हुन हुन्ती लिहुता नहीं हुन्ता नहीं र रहे हैं । यह तो स्नात्त्र से से से क्षेत्र केस केस र रहे हैं । यह तो स्नात्त्र से से से क्षेत्र केस र रहे केस केस केस केस केस ना हुन्ते करते कि से हैं है सो हैं। क्षेत्र केस ना हुन्ते करते हैं है सो हैं। वस कि सहस्त नी है को । तामरी सुकते हैं एक सो है व्यक्ति सी है को । तामरी सुकते हैं एक सी है की सिंपा हिल्ला कुल सीता होने कार्यों उसकी साम्री कर विशेष ।

बजन न आव नयन भीर नारी। शहह नायां गोहिं नियर विस्तरी।। इसके बाद इन्नानातीने जब सीतामका प्रेम-सन्देश नारी हुए यह कहा कि माता। श्रीरामका प्रेम सुमन्ने सुना है। उन्होंने कहतवाया है—

तन्त्र प्रेमकर मन अब तीरा । चानत प्रिया चक मन मोरा ॥ सो मन सदा रहत तीर्हि पाहीं। चानु प्रीतिरस चानहिं माहीं ॥ यह शुनकर सीता गहरू हो जाती है। श्रीसीता-समक रस्तर कैसा चाहरों मेम हैं। जातके की-पुरुष पदि हुस

रस्पर कैसा धादरों मेम है। जगत्के की-पुरुष वदि इस मको जादरों बनाकर परस्पर ऐसा ही मेम करने लगें तो |इस्थ पुजनस्प बन जाप!

सीतातीने जयन्सकी घटना वाद दिखाते हुए पर-पुरुवसे कहा कि, 'है कपिवर ! तुही बता, मैं इस अवस्थामें कैसे की सकती हूँ । शतुकी पानेवाको श्रीरामञ्द्रमण समर्थ दोनेपर भी मेरी सुधि वहीं खेते, इससे मालूम होता है अभी मेरा दु.समीय होय हीं हुआ है।' यों बहते बहते जब सीताके नेत्रोंसे आँस गोंकी थारा बहने हमी सब हतुमानूने उन्हें आश्वासन देते हुणुकहा कि माता ! कुछ दिन घोरज रक्तो । राजुनोंके संदार कानेवाले हतासार भीराम और छत्तमया थोदे ही समयमें वहाँ काका ।। इयका प्रवेश गुग्हें अवधपुरीमें से जायेंगे। गुम चिन्ता न करो । यदि तुम्हारी विशेष इच्छा हो चौर मुक्ते बाजा दो तो में भगवान् बीरामकी और तुम्हारी द्वामे शक्कका वपकर और एंकाको सष्टकर गुमको प्रमु स्रोतासकन्त्रके समीप से जा सकता हूँ। अयवा दे देवि ! हुम सेरी पीठपर बैठ जाओ, में आकारामागीले होकर महासागरको साँध

बार्ठमा । बहर्नि राशस सुभै यही पक्त सकेंगे। में शीम हाँ हार्न्द्र सुन् श्रीसम्बन्द्रके समीर से जार्ठमा । ह्वामान्द्रे बचन हार्क्ट उनके करनाहमान्द्री सीशा होनेने वाह सीता बदने क्यों—हे बानस्क्रेड । प्रतिमध्कित समझ एउन करनेवा श्री में अपने सम्बन्धी श्रीसम्बन्द्रके प्रोत्तक स्वेच्छा ने किसी भी अपने पुरुष्ठे कर्माका सर्वे बदना नहीं बाहरी—

> महुँभैकि पुरस्कृत्य रामादन्यस्य बानरः । नाहं स्त्रप्टुं स्वतो मात्रमिच्छेयं बानरोत्तमः ।। (बा॰ रा॰ ५। १७ । ११)

बुट राववाचे बळाच्यारसे हरवा बरनेके समय ग्रामको स्पर्वे किया था, उस समय तो में पराधीन थी, मेरा इन्यु भी करा नहीं चटका था। अब तो धोराम स्पर्य गर्दे कार्वे और राजसीं सहित राववाचा थाय करते ग्रामे अपने साथ खे वार्वे तसी उनकी वनन्य कीर्तिकी सीधार है।

मत्र विचारिये ! इनुमान् वरीका संगक, वो सीवातीको वर्षे इदरते मावाये वन्नव समज्जा है और सीवा-।मकी मिक करना हो करने वीवनका परम पंच मानवा है, सीवा सीवकवर्षकी शत्राहे किने, इतने बोर विपरिका में भरते रचामीके वास वातेके किमे इतने बोर विपरिका में भरते चाहती है केवा भट्टा वर्षका धामह है ! इतसे यह सीवना चाहिये कि मारी धारतिके समय मी बीकी ययासम्य चाहको करोड़ रागी मी इतना चाहिये!

म्मापन् धीराममें सीताका किता मेम मा मिर्टे उससे विकासे किये उसके इसकी इस क्या इसके सम्मापने स्थानिकार में, इस बातका इस क्या इसके समयसे सेका व्या-विजयतको सीताने विविध बक्योंसे क्याचा है, इस असीवाने परित्य परिते ऐसा बीते हैं सितान करण करणाने में परित्य परित्य परित्य में स्थानित हैं सितान करणा करणाने में परित्य परित्य परित्य मानितान से सहाराज उसके किये विस्त्याहक बीच मजुलको भीति क्या

स्वीदित्या। मेा रोक्क्यताकरात रोक्क्य सरमानुतकर्मसाहित्य। यम पिया सा कावाह्यता या संस्थ्य में शोक्करात्य सर्वयू॥ रोकेचु सर्वेषु न नासित किरियाचेन नित्यं निरितं मेरेकट्य। रोक्सस्वायो । चुरुकारिनीयों मुजाहता या पाये करेते था। कोकोंके कृष्णकृष्यको जाननेवाले हे सूर्यदेव ! म्हस्य

कुमारों, सुर्व, परान, परा-पश्ची और जह पृश्वरुवाओं से सीताहा

बता पृत्रुते फिरते हैं-

और धसरव कर्मोका साधी है। मेरी मियाको कोई हर से गया है या यह कहीं कही गयी है इस दातको न अनीमांति जानता है। असपन सुम्म कोक्पोंत्रितको सारा हाऊ दतता। है बायुदेश। सीमों खेकोंमें सुम्बत कुछ भी किया गर्दा है, तेया गरित है। हमारे कुछको हृद्धि करनेवाड़ी सीका मर गयी, हरी गयी या कहीं मानेंसे मटक रही है। जो सुद्ध हो सोरियार्थ कह।

हा गुमसानि जानकी सीता। रूप-सीतः मतः पुनीता ॥ रुक्तिमन समुप्ताचे बहु जाँती। पूँछतः चले स्वाः अरु पाती ॥ हे खानमुग्न। हे मधुकर सेनी। तुम्ह देखी सीताः मुगनैनी ॥

पहि बिधि बिलपत सोजत स्वामी । मनहुँ महाविरही अतिकामी।।

हससे यह नहीं रूमफाना चाहिये कि भागवान् शीराय 'महा दिस्ही और अरिकामी' थे। शीनाजीका भीरासके मित हरना मेस था और यह शीरासके टिये हमनी व्याकुल थी कि शीरासकी भी वैसा ही बचीन करना पढ़ा। आगवान्का यह मण्ड है—

ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तयेव मजान्यहम् ।

श्रीरामने 'महाविदही और अतिकामी' के सदग कीटर कर इस सिदान्तको चरितार्थं कर दिया । इससे वह शिक्षा सेनी चाहिये कि चाहे इस मगरान्तको पानेके लिये व्याङ्क होंगे वो भागान, भी हमारें लिये वैसे ही च्याङ्क होंगे। अत्यव इस हकको परमाम्बाके किये हसी प्रकार व्याङ्क होना चाहिये ।

शति-पीक्षा वाचावा वाच हो गया, मनु श्रीरामकी आक्षाते सीताको जान करवावार और वाचानुराय परनावर जिल्ला का निर्माय भीताको पास काते हैं । बहुत दिनोंद वाच दिनोंद की श्रीरह्मीर देविका के काल्क्ट्र मुख्य देवकर सीताका सारा हुःस नावर हो गया और उसका मुख्य निर्मण चानुसाधी मौति वाचा ठठा । परनु किरानन परन पर पर वह दिया। भीने वाची काल्क्ट्र परनु किरानन परन किरा। वाचावा स्परत सुम्बन हुक वेजुल्ये सुनाय परनु दूरा वाची भाग स्वापन सुमानो हुक वेजुल्ये सुनाय परनु तुरावच स्पर्ण कर सुम्बन हुक वेजुल्ये सुनाय परनु तुरावच से धार्म रह मुझी है, रावचने सुम्बन मुझी परना परनु वाची कर परनु वाची काल्य नहीं पर परनु नार वाहे वाही वाही आ आ भी तुर्क करवा नहीं पर परनु नार

नाम्ति मे स्वस्वनिष्यक्षेत्रं यथेई शस्यतामितः ।

(बा॰य॰६।११५।२१)

श्रीतामहे इन चधुनपूर्व बहोत श्रीत मादर वर सुनक विष्यमनी भीताही जो बुद दगा हुई उनके गर्डी हो सकता ! स्वामीहे चवनपाणीने मंत्रिक क श्रामें भीत्रक वाद हो गये। यह पूट पूटक रोने ज पह करणाहों भी करणानाताह हुने देने वे क उनने घोरे धीरे गर्गद् वांधीने बहा—

'हे स्वामी ! धाप सावारण मनुत्योंकी मौति पुने युरी कठोर चीर चनुचित शब्द कहते हैं ? में चाने गी राज्य करके कहती हैं कि द्याप मुकार विश्वास रहतें प्राणनाय ! रावणने हरण करनेके समय जब मेरे हाँ राशं किया था, तय में परवश थी। इसमें तो दैस्य दोष है । यदि व्यापको यही करना था,तो हनुमान्को वह पास भेजा था तभी मेरा त्याग कर दिया होता हो बर में अपने आण ही छोष देती !' सीताने बहतसी बार्वे परन्तु श्रीरामने कोई जराय नहीं विद्या तब श्रीनीत दीनता और चिन्तासे भरे हुए खच्मण्से बोबी-सौमिति । थेसे मिथ्यापवादले कतक्कित होकर में जीवा चाहती। मेरे दुःलकी निवृत्तिके क्रिये द्वम यहीं महिन्दि तैयार कर दो । मेरे प्रिय पतिने मेरे गुजॉसे बप्रसंहरी जनसमुदायके सच्य मेरा त्याग किया है, ग्रव में बक्ति करके इस बीवनका चन्त करना चाहती हूँ ।' बैरेही सीन वचन सुनकर जनमणने कोपमरी खाउ-खात हाँ^द एक बार श्रीरामचन्द्रकी धोर देखा, परन्तु रामकी ही श्रधीन रहनेवाले लच्मणने चाकार और संकेतसे श्रीत इल समसका उनकी इच्छानुसार चिता तैयार ^{कर है} सीताने प्रश्वतित धारिके पास जाकर देवता और मार्गी प्रणाम कर दोनों हाथ जोडकर कहा-

> यभा के इदयं नित्यं राष्ट्रस्पति राष्ट्रहाती तथा रोकरम साधी मां सर्वतः पातु पावकः ॥ यथा मां शुद्धचारियां दुष्टाजाताति राषतः । तथा रोकरम साथी मां मर्वतः पातु पावकः ॥ (साकराकशारश्वारस्वार

्ट्रे सर्वजीक-साची क्रमिट्न ! यदि मेरा मन क्रमै श्रीरामक्ट्रसे च्यायमान न हुचा हो तो तम मेरी करो । मेरा चरित्र श्रुद्ध होनेस भी श्रीरावण श्रुद्ध मानते हैं। यदि में यानवाम श्रुद्ध हूँ तो हे रेंग ! तुवं श्रुत्त करों

इनना कटकर शक्षिको मद्दिण कर सीला रिर

से श्रप्तिमें प्रवेश कर गयी। सब और हाइकार मच । प्रज्ञा, रिग्व, कुवेर, इन्द्र, बमराज श्रीर वरण आदि र शाकर श्रीरामको समझने खगे। बद्धावाने बद्धा रहस्यको वार्ते बद्धी।

इतमें सर्वेलोकोंके साची भगवान् चामिट्रेव सोवाकी में लेकर श्रकसान् प्रकट हो गये चीर वैदेहीको श्रीतामके श्रापण करते हुए बोले---

प्या ते राम । वेर्रेश प्रधमस्यां न विष्णे ॥
भेत वाया म मनता तेन बुद्धा न मुद्धा ।
पुत्रा पुत्रविद्धीने न त्यानव्यक्तपुत्रमा ॥
रवरोनारसंत्रीयं वीर्यात्तिकेन रक्ष्मा ।
रवरोनारसंत्रीयं वीर्यात्तिकेन रक्ष्मा ।
रवरो विर्द्धात निर्माद्रमा निर्माद्रमा ।
कृद्धा क्षमान्त्रा हुंचा स्वित्ता राज्या निर्माद्रमा ।
कृद्धा क्षमान्त्रा हुंचा स्वित्ता राज्यात्मा ।
रहा क्षमान्त्रा स्विते के त्याविता वा क्षमित्ते ।
क्रांताम्मान्त्रा विर्देश के विकाल वा क्षमित्ते ।
क्रांताम्मान्त्रा विर्द्धात के त्यावित्ता वा क्षमान्त्रा विर्द्धात ।
विद्धात्मान्त्रा विष्णापं प्रतिकृत्यात्म क्षमित्त्रीन् ।
विद्धात्मान्त्रामा क्षमान्त्राण्यात्म क्षमित्त्रीन् ।
विद्धात्मान्त्रामा क्षमान्त्राण्यात्म ते ॥

पाता । इस करनी देवेदी सीलाको महक करो । इसमें हैं भी पात सर्दि । है परिवासिमारी साम ! इस मुख्यक्वक । वाले में पाता । इस मुख्यक्वक । वाले में पाता । इस मुख्यक्वक । वाले में पाता । अपने कर कर के पाता । विश्व कर कर के पाता । वाले कर के पाता । वाले के पाता । वाले के पाता । वाले के पाता । वाले के पाता पाता । वाले के पाता पाता । वाले के पाता पाता में पाता । वाले के पाता पाता । वाले के पाता पाता में पाता । वाले के पाता पाता । वाले पाता पाता । वाले के पाता पाता । वाले पाता । वाले के पाता पाता । वाले पाता । वाले पाता पाता । वाले पाता । व

ष्मित्रेरके बचन सुनकर सर्वादागुक्शोकस अम्बान् गिराम बहुत प्रसन्त हुए, उनके मेत्र हुपैसे अर चापे धाँर ग्रहोंने बहा---

'हे प्रमिनेत्र ! इसमकार सीताकी ग्रांदि बावस्वक थी, में ही प्रदम कर खेता हो खोत कहते कि दगरवपुत्र

राम मूर्च और बसमी हैं। (अब बोग सीताके शीजपर भी सन्देह करते जिससे उक्का गीरव घटना, बान हस स्विद्यसीयारे सेताका और अंगर दोनोंका मुख उज्ज्व से। गया है) में वानना हूँ कि वास्तानियों सीता घनन्यद्वरमा और एवंदा मेरी इच्छानुसार चलनेवाती है। जैसे समुद्र शर्मनी सर्वोद्याक खाग नहीं कर सकता, उद्योगकार यह भी बचने ठेवसे मर्चादामें रहनेवाती है। दुष्टामा गवण गरीश श्रमिकी कालाके समान चमार हस सीताका सर्थ गर्दी कर सकता था। शूर्वकानित-सर्य-सीता मुस्से यमिन है। जैसे चालनात् पुरुष क्षेत्रिक स्वाप गर्दी कर सकता, उद्योगकार में श्री सीनों स्थानित स्वाप्त इस्त सीताका

इतना कर्इर भगवान् श्रीराम प्रिया सती सीताको अहल्कर कानव्हों निमम्न हो गये। इस प्रसंगते यह सीलवा चाहिये कि की किसी भी हालतों पतिपर नाराज न हो और उसे सन्तोप करानेके लिये न्यायतुक्त उचित चेष्टा करें।

साना स्ववार श्रीवीतावी भारत, खब्बाय और समुम्र इव देवरॉके साय पुत्रवन् वर्ताब करती थी, श्रीद शावपात शादिमें किसी प्रवारक भी भेड़ नहीं, रसती थीं। स्वायी श्रीरामके विशे केसा मोजन बनता या द्रांक कंमा ही सीतावी अपने देवरोके क्रियं बनाती थी। देवन्त्रें स्व स्व बाद होर्टिसी मालूस क्षेत्रें हैं क्ष्यू बनाती थी। देवन्त्रें स्व स्व बाद होर्टिसी मालूस क्ष्में हैं क्ष्यू इसी कर्मिंग्रें हों श्राजनेके कारय केवळ सानेकी बल्युकोंने भेड़ रचनेसे बाद भारतमें हुवारों सीमाजन सुक्रमोंने पर हुवारें हो है। शीताविकें इस स्वतिक विश्वारोंकी सामनामेंत समन ध्यवहार रसनेकी विद्या सहस्य करनी वादिये।

क् समय भगवान् राम गुरुवरों के हारा सीता के सम्बन्धमें को कारवान् मुनक्र बहुव ही सोब कार्ग हुए सक्तारणे करने को कि 'लाई हैं से सारणा है कि गीरण परित्र और कारिक्सी है, सहामें उसने मेरे सामने सकती हुई सिमिं कोण करने करनो परिता हो भी मा नर्वकाकराड़ी कामने की राज्य करने परिता हो भी मा नर्वकाकराड़ी नामने की नावकाकराड़ कारत मिने गीराके लागका निक्रक का विका है। हराबिके यू कम मानन्त्रम ही गुमान मारणेके कार्म के शहर भीराको गांके का पार नामण-नर्वके नीरास मारामा कार्माकिक साममंत्र का पार नामण-नर्वके नीरास मारामा कार्माकिक साममंत्र का पार नामण-नर्वके नीरास मारामा कार्माकिक साममंत्र का पार नर्वकाकराड़ कार्य स्वा का शुम्लके साममंत्र कार्य है। हम सामन्यमा न्याकाकराड़ कार्य कार्य स्वा भी म करना। न्यान्य मेराको सामन्य कार्य कार्य कार्यान के बुगानों हर्यको भीरा कोक्स कार्य कार्याव की सीर माराकाल ही गुमाना करका कार्य कार्य किया।

रतितात्रीने एक बार शुनियोंके आध्यांने आनेके क्षित्रे भीराममे प्रार्थना की भी जतपुर क्षत्रमञ्जूके हारा वन वानेकी बात सुनवर सीवाजीने वहीं समक्ष कि स्वामीने व्यवियों के बासमोंमें जानेकी बाला दी है सीर वह स्टवि-प्रतियोंको बाँटनेके सिथे बहुमूल्य ग्रहमे काहे और दिविध मकारकी बरहरूँ क्षेत्रर वनके क्षिये विशा शोगयी । मार्गीमें घराक्रम होते देलकर सीतामे शत्रमण्से पृद्या-'माई ! धर्मे मगर और घरमें सब मसब तो हैं न ?' सबमयो क्या-'सब कराज है। यहाँतक तो सत्तमवाने सहन किया, परना र्गगाके सीरपर पहुँचते ही मर्मवेदनासे लक्ष्मकका द्वाप भर भाषा भीर वह दीनकी भाँति कूट कूटकर रीने क्षता। संयमग्रील धर्मेश समायको रोते देखकर सीता बहने सगी-'भाई ! तम रोते वयों हो ? हमलोग गंगातीर ऋषियों के बाधमोंके समीप या गये हैं. यहाँ तो हर्य होना चाहिये तम बच्टा खेद कर रहे हो । तुम तो शत-दिश श्रीराम-चन्द्रजीके पास ही रहते हो, क्या दो राजिके वियोगमें ही शोक करने असे ? हे पुरुषक्षेत्र ! सुकको भी सम प्रायाधिक प्रिय हैं, पर मैं सो शोक नहीं करती, इस सहक-पनको छोड़ो और गंगाके उसपार चलकर सुन्ने तपस्वियोंके दर्शन करामी । महात्मामाँको भिन्न भिन्न बस्तुएँ बाँटकर चौर थथायोग्य उनकी प्जाकर एक ही रात रह हम खोग वापस और भावेंगे। मेरा मन भी कमलनेत्र, सिंहसदरा वर्षास्थलवाने, धानन्ददातात्रोंमें श्रेष्ठ श्रीरामको देखनेके । हो रहा है।*

संभागने इन क्यानेंदा कोई बना नहीं हैंगा है भीतारे गांव भीतार नातर हो गंगादे दम पा दृष्ट कर दिन क्ष्म कारने भीता हुए का हिए। गंगा बारमार पूपरे भीत थाता देनेतर सम्प्रादे मार्च करने गाह वाणींगे कोताराहदा गंगा वर्षत व हुए क्या-'मीर्ने दिया निर्मेंग हो, हिन्सु बीगार्च द्रा न्यार दिया है। अब तुम बीगार्यो हुएसे बावव व भीतार्थेक यावन कार्यो हुई बार्मीक्स्त्री कार में बड़े। "

काष्मायाचे इस शहल बावरोंको शुक्ते 🗗 मीता गूर्वि नी ही कर रित वड़ी ह बोड़ी देर बाद होंगा जानेंस ही विचार करने क्षारी और बोबी -'हे सचालू ! विरासरे हैं गरीरको पुरस भीरानेके जिमे रचा है। महरूम नाँ, मै किननी जोदियोंको दिपुताया वा जिसमे बाज मैं ही माकरमानी शरी होनेपर भी बर्मामा नियति । हारा स्वामी आसी हैं । हे अच्छान ! पूर्ववायमें बर मैं र^{ूर्व} थी तक ली क्लामीकी मेचका सीमान्य मित्रमेंके कार्य वनके दु:गोंगें भी सुन मानती थी, वरन्त हे सीन्द ! बा नियतमधे वियोगमें में बाधममें बैसे रह सर्देशी । इन दुःस्थितः में अपना बुख्या किमको सुनाउँगी है हे हो। महाप्ता, ऋषि, मुनि जय मुखे यह पूर्वेंगे 🏗 तुक्की मीर्ड नापत्रीने क्यों त्याग दिया, क्या सुमने कोई दुरा कर्ने कि था है तो मैं क्या जवाब वेंगी । हे सीमिन्ने ! मैं बान ही ही भागीरवीमें इवकर धरना प्राय दे देती, वरन्तु मेरे बन्त शीरामका वंश-बीज है, यदि में इब मरूँ तो मेरे सानी का बंग नास हो जापमा । इसीविये में मर भी नहीं सकी है जनमण ! तुमको राजाजा है तो हम <u>स</u>म्ब समाविदे को यहीं दोहकर चले जाओ परन्त मेरी इस बार्वे हुने वाचो ।

भीरी धोरसे मेरी सारी सामुधोंका दाय बोरकर वर्ष बन्दन करना चौर किर महाराजको मेरा मधान कड़का कुट पूछना । दे खत्माचा ! तकके सामने शिर नताकर मेरा मधान कहना चौर धार्मी सहार सावधान रहनेवाते महाराज्ये मेरी घोरसे यह निवेदन करना—

> जानासि च यया शुद्धा सीता तरनेन राघव ! मकथा च परमा शुक्का हिता च तव नित्यशः ॥ व्यक्तं त्यका च ते बीर अमशो मीरुणा जने । यच ते बचनीयं स्वाद्यवादः समुस्थितः॥

मया च परिहर्तयं स्वं हि में परमा नहिः। वरूपमें नहिः। वरूपमें में पुरातिर्वर्तमः मुख्याहितः। या अतृषु वर्तवर्तमः परिह निरुद्धाः। परिह हित्या। पर्ता हेत् परिह तर्त्वाः परिह हित्या।। वर्तु परिहने राज्य भर्मेलं तरमार्व्हानित्वाः।। वर्तु परिहने राज्य भर्मेलं स्वयतिर्देश्याः।। वर्त्वाः परिहने राज्य भर्मेलं स्वयतिरं नर्त्वाः।। वर्ताः परिहने राज्यः। परिहने राज्यः परिहने राज्यः। परिहने राज्यः। परिहने राज्यः। परिहने राज्यः। परिहने स्वर्धः। प्रतिहें वर्ताः। वर्तिः। वर्तिः। परिहने स्वर्धः।

(शक कारटाइर-ट८) है राधर फ़िस प्रकार मुक्कि तबसे हुए सम्पर्ध हैं उसी मकार नित्य खरमें में सिस्तरात्री और खटुस्तविष्क-वात्री भी सम्भिनेगा। है चीर! में जानती हूँ कि कारचे बोकारवाड़के दूर करने किर चरने दुकाकी क्षेत्रीत कारव बोकारवाड़के दूर करने कार्याह्म दूस हैं पर्दा मेरे तो कार

होबारपाइको दूर काने और सपने कुलको की सिं कायम स्वर्गें विषये हैं। इसको स्थाग दिया है सर्पन्न मेरे तो साथ है। रसमागि हैं। हे संदाराव, साथ जिल प्रकार अपको साइयों के साथ क्यों के प्रताक वरम धर्म है। स्वार्य की विया । हे रायन, यही सायका वरम धर्म है, और हसीको कमने बीति मिलती है। है स्वामिन् । मजारप पर्योग्ध सायक महत्ये ही इस्पन्न माह होता है। स्वार्य होता कोई क्योंक म की तियोग जिलते मजार्म स्वारा हो, है स्वार्य हुना मजार्म करीराके किये सिंग्ध मेरी माह है, क्योंकि की के दिये पित हो स्वार्य होता है। स्वार्य स्वार्य हो, है सपने करीराके किये सिंग्ध मेरी माह महा है, क्योंकि की के दिये पित हो स्वार्य हुने । किया माह स्वार्य हो। हो स्वार्य महा है और पित ही एसम गुढ़ है। किया माह स्वार्य हुना, सीका यह स्वामानिक धर्म हो है। क्या ही सार्यिक कर है । धरण सार्य की तीता, धर्म पार्य मार्योग मी प्रमानावता ! प्यार्थ मारावका सतीधमें, धर्म भारतीय है वियोग्ध सर्प्य बाता।

सीताओं कहने ध्यो — है जयमण, मेरा यह सम्देश महारास्त्रों कह देना । आहे ! एक यात और है, में हस सम्बर गर्मवर्गी हैं, ग्रम मेरी शोर ! देशकर हस बातका निक्रम करते आयो, कहीं सीतार्से जोग यह स्थावद न कहें कि सीता कायो, कहीं सारान प्रसम् करती है।"

सीताके इन वचनोंको सुनकर दीनचित्र रूपमध्य व्याक्त हो वडे भीर सिर सुकाकर सीताके देशोंने निर फुकाबर मार-कर कोर कोरसे दोने सते। फिर उकरने के पह चोसे म्हण्यिया की भीर दो चहीतक व्यान करने की नह चोसे — 'माना, है पाररहिंग सीते, तुम क्या कह रही हो ! है जैंडे साजनक

शुन्दारे चरखोंका ही दर्गन किया है, कमी शास्त्र नहीं देशा। खाज सम्बाद, हासके परीचर्स सुम्हारी और कैने साक सम्ला हैं। गढ़नेन्नर प्रधास करके यह रोते हुए नाक्यर समार हैं। गढ़नेन्नर प्रधास करके यह रोते हुए नाक्यर समार हैं। गढ़नेन्द्र प्रधास करने यह स्वाद स्वाद स्वाद खादर्स पतिकता सती सीता—चरप्यस्म गढ़ा काइकर रोते लगी। सीताबीक स्दलको सुनकर वादमीकिती जसे प्रपते खादममें ले गये।

ह्स प्रसंगसे थो हुन् सीका वा सकता है वही भार-तीय देवियांका परस धर्म है । सीताशीके उपपृक्त सर्वांकी तिन्य पाढ करमा चाहिये चीर उनके रहारको घरने नीनमीं कतारता चाहिये । रूपमाके वाचीवसे भी हमलोगोंको यह दिव्हा वस्त्र करनी चाहिये कि वर्ते माताके समाग्त हिनेपर भी हुपर किसी भी खीके घड़ न देवे । हसी मकार विचां भी वसने कहा वित्तीको व दिलाई । वास्त्रीकितोक सामग्र-में सीता चारिको चाहाले चन्ताहरमें चारिवलीके पाझ-में सीता चारिको चाहाले चन्ताहरमें चारिवलीके पाझ-में सीता चारिको चाहाले चन्ताहरमें चारिवलीके पास रही, इससे यह सीतवा चाहिये कि वारी क्यों हु स्तरीके पर रहते वा सवसर चाने तो बिचोंको चन्ताहरमें रहना चाहिये और हसी मक्यर किसी हुस्सी चीको चनने चाहीं रहना हो तो बिचोंके साथ चनताहर्स हो रचना चाहिये।

यो श्री अपने धर्मका मायपनसे पासन पातास-प्रदेश करती है, चन्तमें उसका परियास सक्छा ही होता है। जब अगवान श्रीरामचन्द्र चरवमेथ यश करते हैं और सब-कराके हारा रामायणका गान समझर सम्ब हो जाते हैं तब रूव क्यकी पहचान होती है और श्रीरामकी बाजासे सीता वहाँ हरायी जाती है। सीता श्रीरामका ध्यान करती हुई सिर नीचा किये हाथ जोडकर धारमीकि वालिके पीछे पीछे रोती हुई का रही है। बारमीकि मुनि सभामें चारूर को उठ कहते हैं उससे सारा छोकापनाय मिट जाता है और सारा देश सीतारामके जयजनकारसे ध्वनित हो उठवा है। वाल्मीकिने सीताई निष्पाप होनेकी बात बहते हुए बहाँतक कह दाला कि 'सैंने हजारों वर्षोतक तप किया है, मैं उस तपकी शपथ शाकर कहता हूँ 🗎 पदि सीता दृष्ट बाचरखवाली हो सी मेरे सपढ़े सारे फल नष्ट हो आये । ही चपनी दिव्यदृष्टि और ज्ञानदृष्टिहारा विश्वास दिखाला है कि सीता परमश्चदा है। वालमीकिटी प्रतिज्ञाको सनकर और सीताको समार्ने जायी हुई देखकर मगवान श्रीराम शहर हो गये और बहने हमें कि है महामाग, मैं बानता है कि बानकी ग्रवा है, ध्वन्द्रय मेरे ही प्रत्र हैं. में शत्रधर्म-पाटनके लिये

ही प्रिया सीताका स्याग करनेको बाध्य हुआ था। श्रतपुर श्राप सक्ते एमा करें!

उस समाम महा, भ्रादित्य, वसु, हज, विश्वदेव, वायु, साञ्च, महर्पि, नात, सुपयां और सिन्द भ्रादि बैठे हुए हैं, उन सबके सामने राम फिर यह कहते हैं कि 'द्वरा कारायों बैदेही शुद्ध है और हुतपर मेरा पूर्या 'प्रेम है— 'शुद्धायां मत्रों सभ्ये नेरेकां ग्रातिरानु में।' इतनेमें कायायबन्ध धारख किये हुए सती सीता भीषी गर्यन्तन श्रीदासन व्यान करती हुई श्रमिनी श्रीर बेलने सती और बीकी-

> यथाऽद्दं राजवादन्यं मनसापि न जिन्तव । तथा में माणवी देवी वित्तरं दानुमहीत ।। मनसा कर्मणा बाजा यजा रामं समर्चेव । तथा में माणवी देवी निवर्षं दानुमहीते ।। यथैतसारमानुष्कं में विधि रामान्तरं मं ज । तथा में माणवी देवी निवर्षं दानुमहीत ।। (वा ० ग ० ७ । ९ ० १ ९ ० १ १ ८ १ ८ ४ ८ ७

'यदि मेंने रामको छोजकर किसी दूसरेका कभी मनसे भी विरात न किया हो तो है मार्थायों देशे, युक्ते यदनेंमें से ले, हे एव्यी माता ! गुक्ते मार्ग दे। विद मेंने मान समें बीर वापीसे केवल रामका ही पूजन किया हो तो है मार्थायों देशे, गुक्ते यपनेंमें ले ले, हे एव्यी भारता! गुक्ते मार्ग दे। यदि में रामके सिवा और किसीको भी न जानती होकें पानी केवल रामको ही अननेवाली हैं यह सब्ल हो तो है मार्थायों देशो, गुक्ते सपनेंमें स्थान दे बीर हे एव्यी माता! गुक्ते मार्ग दे।

द्वान सान रापमीं के करते ही अकस्तान धरती कट गयी, असमें से एक उपना चौर दिग्य निवासन निकजा, दिव्य सिहासनको दिव्य देंद्र धीर दिग्य बकायुक्यमारी मार्गाते करने मान्यरण उटा रस्ता था चौर उपनय प्रचाने होने में की हुई भी रप्रभारितीने सीतावर दोनों हाणांसे चालियन बिच्य सीर 'दे प्रत्री तेरा करनाण हो' बदकर उसे मोदमें वैटा विजा । इतनेमें सबके देवने देखने सिहासन स्सातवर्म सेरा कर गया । सती सीताके व्यवज्वसारे त्रिश्वन भर गया !

राता-परित्यालं यहाँ यह मध्य होता है कि 'सगवान् सीराम के देवाह और श्यापकारी थे, उन्होंने रियुंच जानकर भी शीलाका त्याग क्यों किया !' हमाँग स्थानकः निमाजितन चीच कारण हैं. हम कारणोंपर ध्यान देनेसे सिन्द हो जायमा कि रामना यह धर्म सर्वेया उचित था---

१-रामके समीप हम्प्रकारकी बात आयी यी-अस्माकमि दारेषु सहनीयं भविष्यति । बचा हि कुरते राजा प्रजा तमनुक्ते ॥

~कि 'रामने रावणके घरमें रहकर ब्रायी हुई सीतासे बरमें रख खिया इसलिये अब यदि हमारी खियाँ भी दूमराँके यहाँ रह आर्तेगी तो हम भी इस यातको तह लेंगे, स्पाकि राजा जो कुछ करता है अजा उसीका श्रमुसरण करती है। प्रजाकी इस भावनासे भगवानमे यह सोचा कि सीताम निर्दोष होना मेरी बुद्धिमें हैं। साधारण क्षीम इस बाउके महीं जानते । वे तो इससे यही शिचा कींगे कि परपुरगढ़े वर विना बाधा की रह सकती है, ऐसा होनेसे की वर्म विख्उ विगड़ जायगा, अजामें वर्ण सङ्करताकी वृद्धि होगी, जतप्र प्रजाके धर्मकी रशाके लिये प्राणाधिका सीताका त्याग हर देना चाहिये।सीताके स्वागमें रामको बदा हु:स यां, दनदा हृदय विदीण हो रहा था। उनके हृदयकी दशाका पूरा अनुभव तो कोई कर ही नहीं सकता, किन्तु वाल्मीकि रामायण और उत्तररामचरितको पानेसे किञ्चित दिव्यंत्र हो सकता है। श्रीरामने यहाँ प्रजाधर्मकी रक्षाके लिये व्यक्ति धर्मका बलिदान कर दिया । प्रजार्रजनके यशायलमें बान-स्वरूपा सीवाकी बाहुति दे हाशी ! इससे उनके प्रवायेमक पता लगता है। सीवा राम है और राम सीवा है, शक्ति और शक्तिमान् मिलकर ही जगतका नियन्त्रण करते हैं, बतप्र सीताके त्यागमें कोई सापति नहीं । इस सोकसँगहके हैं से भी सीताका स्थाग उचित है।

२-बाहे योदी ही संख्यामें हो सीताका मूता क्यां करनेवाले सीम भी यह खपवाह सामके दिना मित याँ सन्त्रा था और चदि सीता वाहमीकिक धाममने स्टब्स सक्ता था और चदि सीता वाहमीकिक धाममने स्टब्स सामने किल्हा मिताक साम श्रुव म क्यां कार्त औ प्रथमिन समानी सी शायद यह ध्ययाद निर्द्धा भी बरी, सममबंदे धीर बढ़ बाता, और सीताका माम धान निस भावें दिमा जाता है यादव बेसे न तिया जाता हम हेर्स मी

4-सीना भीरामधी रातभागा थी, उनकी काथिता थी, उनकी पाय प्यांदी कहाँकिनी थी, ऐसी रातपुर्वता सर्वाधी निष्दुताके साथ क्यातनेक होच भागवाद श्रीमानने वर्तने करण हमीकिचे के तिथा कि हसते सीनाके गीराकी वर्ति हुँहैं, सीनावा कुछ कक्क भी तिर गया की। सीना





पुष्पवाटिकामिं श्रीराम-सीता । पणरा ब्रीडविजित्सर्वमीय समन्त्रित । पण्याते दिव्य-मक्षेत्र सुव्यसीनं रपुणाम् ॥ ब्रीटमाणिबय-संबासं दिव्यामरण भूषितम् । अस्य-यदमं शान्ते विद्युलुनुं न निर्मायरम् ॥ सीता बमस्यकासी सर्वामारमधूषिता ॥

अर्यसम्पादा सर्वाः भोजात्र पान्ते भटीता सीला दात्रौ में दिने शापने अपर दोता के जिया करने दें और करि कहि-पर भी हुआ।

 अवतास्या सी गाराणं तात. अञ्चय हो सुद्धः है; देवनाता सीताको इय बातका राष्ट्रेत कर गये थे। कार्यस्त रासायणमें लिखा है कि 'दसहजार वर्षत्रह माना-संटुप्टस्प-भारी भगरान विभिन्नवैक राज्य बरते रहे और सब लोग उन्हें मार कार रोको पूजी रहे। भएषान् भोजन राजर्पि परनेप देश पश्यक्रितो थे और लोक्संग्रहके नियं मृहत्यके सह समीक वधाविति वाचन बहते थे । वित्राप्त संस्थाति है , श्चारुक बावान, नधना, इत्यायोकः दमन, लग्न मेर प्रतिकार प्राप्तालासे भार चार्तने सर्वाटे द्वारा बारकानवर मार समापार उनके समग्री प्रमुख करनी थी। युद्ध सामग्र और?क पुरन-वारिकामें बैटे हुए थे और की बाजी उनके केंद्रव भागोंको तथा रही थीं । भीताने एक्स व हैशहर भागाना करा कि है हैरने द ! भार बरा रहे व्हार्गः, यरमण्या, व्यापण, साधितानस्तरम क्षेत्र । हिन्नास्तरम् । वान समेटे क्रांच हैं। है देव, जम दिन इन्द्रादि देशमध्ये के करे धाय स्थाहर मानि काने हम शर हता है है अन्य नार, नार नामा करें चिन शानि हो, सम परचे बैहरफ एक्टरनेकी हमा करी सी भगवान स्ता भी बैनक चन्ना कर हम मोगोंकी सन्दर करें ने ।' देशनाओं ने शे इस कशा का की मैंने सिवेश कर रिया है। मैं कोई भारत पर्दी कानी शाय जैला उन्ति है रमार्थे देशा बहें।' संग्रहत रते प्रदार प्रत्यानने बक्त नि--

> देशिकार्जान सर . त्रोक्ष वे बदानि है । बत्यविक रियं देशि लेक्चके स्थाप्रयम स म्बर्गात ता की होएकस्मी। स्थापः । मनिष्यतः रमते ही बार्यावेशस्त्रानिके । इरामी इरथने गर्न प्रमानय मैद्रमेनस्य १ र्रोधानो प्राया में स्था प्रमाणकार गाउँ श समेर्देशमांका देशके बाधान हुण्यू। प्रधादते गनिगार्थः वय वह हुनिश्चयः ॥ (कानामामान्य)

'दे देति, में राम पुछ शानता हूँ और तुमको एक उपाय बारामा हैं। हे सीने, में नुस्तारे लोकारत क्**वा** बढ़ावा हवकर गाधारण मनुष्यदी तरह कोकापसन्दर्भ अवसे भूकते असे गराग हुँगा । यहाँ बार्स्साकिने अरक्षत्रमें सु**का**रे की पुत्र क्योंकि हार समय मुन्हारे गर्भ है।

बोगोंको दिवान दिवाके जिये वहे आदरसे-रापथ सा चूट्टी है विवरमें बनेगहर मुग्न बैहरफो चनी जाओगी और वीधे से भी जा बाउँगा। यही निश्रम है।' युद्द भी ोताहे त्यागक एक बारक है।

४-वृर्वेद्धलमें एक सन्दर युज्में देवनाओंसे हारकर भागे हर देश सुगुर्जाको खंडी लाधवमें बले गये और ऋषि-वर्जिये समय ब्राह्मस्त क्षित्रीय हो वहाँ रहते रुगे थे। रैन्बोंको भृतपत्रीने भाषय दिया।' इप बातसे दुपित होकर भगरान् दिर्भने उसना चक्रमे भिर नार दारा था । प्रशिक्षो इ प्रवार बार्र करे देखना भूगद्धपिने क्रोधमें इन्हान शोबर समक्ति हो दार दिया का कि 'हे जनाईन ! आधने वरित होसर मेरी ज्वाच पश्ची मार दाना इपश्चि आपको समुख्य रेक्स स्टम सेना हो 11 और हीर्घक्र एउक पत्री वियोग र इना परेगा ।' भगवानने स्रोक्षहितके निये इस शापको क्षीकार जिया और जसी क्षत्रको काय सम्बेद लिये अपनी अभिय राष्ट्रिकी गरी सीमार्स टी बनमें भेत्र दिया ।

इन्बादि अनेक काश्योंसे सीताका निर्वापन शमके निर्व इचित हो था। भग में बाद सो यह है कि भगवान सम और भीना संस्थान मानयन और शक्ति हैं। एक ही सहान ननके हो मूर हैं । सरकी सीम वे दी जानें, हम लोगोंकी अन्देजन्द्र बाधेश योहे शिवतर नहीं । हमें सी चाहिये कि उनकी दिया की आंगोरी लाग उदावें और अपने मनुष्य-र्वात्सको परित्र करें।

कारण विश्वो सीमीवाजी इस बावको प्रमाणित कर गयी कि दिवा दोप भी पति स्वामी खीको रणाग ने सी क्षीता कर्णना है कि इस विश्वतिमें तुःसमय शीवन विनाकर भी अपने वार्विमनवर्मकी हथा करे. परिवास उसका करवाण ही होया ।

सन्य और न्याब अम्तमें अवस्य ही शुभ पन टबर्महार देंगे. शीताने अपने जीवनमें बटोर परीचार्ये देकर सीमात्रके निये गई मर्यादा स्थापित कर दी कि जी की मापतिकारमें सीता है। माँति घर्मका पाउन करेगी उसकी बीर्ति संमारमें बहाडे लिये प्रशासित हो जापती । धीलारें परिमक्ति, सीनाका . . ्रैं: रायुमके साथ निर्देशि बरुष्टस्य-प्रेस. . ५. सेउडॉके शाय

रवढे काथ आतर्श . ऋषियोंकी सेगा.

व्यक्ते शिवा देनेकी



पुन्नवादिकाभि श्रीहाम-सांता । १९२१ चार्चा विभावतीय सर्वात्रके । जबाने हिस्स्यत्वर्ते सुन्नायीनं स्पृत्ताम् ॥ १९२१ वर्षे वर्षेत्रस्याच्या सृष्टिम् । समय बहते साले विहतुत्रुप्ते निर्मादम् ॥ साला चन्नत्वरूपि सर्वामस्याप्तितः ॥

तरतपुरुषा वन गयी। भगवान् अपने अर्फोका गौरन बहाने के लिये अपने अपर दोप ले लिया करते हैं और यही वहाँ-पर भी हथा।

४-चवतारका सीलाकार्य प्रायः समाप्त हो जुका था, देवतागण सीताको इस बातका सङ्केत कर वये ये। प्रज्यास रामायणमें लिखा है कि 'दराहदार वर्षतक माया-मनुष्यरूप-धारी भगवान विधिपूर्वक राज्य करते रहे चौर सब लोग उनके चरणकमञ्जेको युजते रहे । भगवान् श्रीराम रार्जाप परमपवित्र एकपक्षीवती थे श्रीर लोकसँग्रहके लिये गृहस्थके सब धर्मोका बधाविधि पासन बरते थे। प्रतिप्राणा सीताजी प्रेम, द्मनुकृत द्वाचरण, नश्नता, इन्द्रियोंका दमन, सभा और प्रतिकृत पाचरणमें भय चादि गुणोंके द्वारा भगवान्का भाव समझकर उनके भनको प्रसन्न करती थी । एक समय श्रीराम पुरव-बारिकामें बैठे हुए थे और सीताओं उनके कोमल थरणोंको दवा रही थीं । सीताने पृथ्यन्त देखकर भगवानुसे कड़ा कि है देवदेव ! आप जगत्के स्वामी, परमात्मा, समातन, सिंदानन्द्यन और शादिमध्यान्तरहित तथा सबके कारण हैं। है देव, उस दिन इन्द्रादि देवताझूरेंने मेरे पाल आकर स्तुति करते हुए यह कहा कि 'है जगन्माता, तुम भगवान्की चिन्-शक्ति हो, तुम पहले बैकुएट प्रधारनेकी कृपा करे। तो भगवान राम भी बैरुयह प्रधारकर क्षम कीमोंकी सनाय करेंगे ।' देवताओंने को अल कहा था को मैंने निवेदन कर दिया है। मैं कोई आजा नहीं करती आप जैसा उचित समर्भे पैरत करें।' चणभर सोचवर भगवानने कहा कि---

देवि वाजामि सक्तं तथोचार्य करानि है।
पद्मानिया नितं देवि श्रीकार्य त्यरामान्य ।।
पद्मानिया नितं देवि श्रीकार्य त्यरामान्य ।।
पद्मानिया ने किस्ताराह्रीय देवायरः।
प्रतिपाल कुमारी ही वालगिकेराकमानिके।।
द्वार्त्य इसते गर्कः कुमाराव्य केशिकान्य ।
प्रतिपाल प्रत्यार्थ सं कुमाराव्य केशिकान्य ।
प्रतिपाल प्रत्यार्थ सं कुमाराव्याप्ताराव्या ।
प्रतिपाल प्रत्यार्थ सं कुमाराव्याप्ताराव्या ।।
प्रतिपाल प्रत्यार्थ विषय स्तर कुमाराव्यावार्य ।।
(प्रणालस्यावार्य)

'हे हैं।वे, में रूप कुत जानता हूँ और सुमको एक उपाय परकाता हूँ । हे सीते, में सुम्हार लोकापणदका बहाना रक्कर साधारण महुरक्की ताह लोकापणदके मध्ये सुमको बनमें प्यान हुँगा। यहाँ पात्मीकिक साध्यमें हुम्बरों हो गुड होंगे, क्यों हैं हुए सम्मन नुस्हार गर्म हैं। वहन्वत्वह सुम में सुम्म आ कोगोंको विश्वास दिवानेके खिये बदे आइरसे-ग्रप्थ खा पृथ्वीके विवरसे प्रवेशकर तुरन्त वैकुरफको चली जाओगी और पीचेसे में भी बा बाउँमा। यही निश्रय है। यह भी सीताके व्यागक एकिकारण है।

2-पूर्वश्वसां एक समय शुद्धमें देवताओं से सारव्य मार्ग हुद हैन च्याबीकी सीके आध्यम चन्ने गये और स्वरि-ध्वीसे अभय आहमर निर्मय हो यहाँ रहने होगे थे। इंग्लांको अञ्चलकोने माध्यम दिवा !' इर बातसे हुप्तित होन्द आगवान् विन्युने वसका चक्रसे सिर काट डांटा था। एतीको हुटप्रबद्ध सारे बाते देवकर स्मुख्यिन कोभमें हवजान होक्ट सानवान्को डांग दिवा था कि 'हे जनाईन ! आपने होक्ट सानवान्को डांग दिवा था कि 'हे जनाईन ! आपने होक्ट होक्स मेरी अव्यव पत्रीको मार काटा इलिटि आपको सनुष्यहोकों जन्म केवा होमा और दीर्पकाल्यक पत्री जियोग सदला बढ़ेगा।' अवावान्दे कोकहितके विने हम आपको स्वीक्षा हीका कीत दसी धायको सन्त कानेके हित्ये अपनी असिस हात्रीक धीराव्यो कीट्यारे दी बत्यसे मेरी दिवा ।

ह्लादि मनेक करालोंसे शीताका विद्यांतन शामके किये इंद्रियां सम्मार्थ गांवत तो पह है कि मागान शाम और शीता बाजाद नाशायण और रुक्ति हैं। पुक्र हो महान् तत्त्वके हो रूप हैं। उनकी लीला वे ही जामें, हम कोर्मोको आलोचना करनेया औहें अधिकार नहीं। हमें तो चाहिये कि उनकी दिग्प भीलासीसे साम उठावें और भपने महान्य-जीवनकी परिज करें।

साववनीयमें श्रीसीतावी इस बातको प्रमाणित कर गयी कि बिचा दोष भी परि स्वामी क्षीको स्वाग है तो क्षीका कर्यन्य है कि इस विपत्तिमें दुःस्तरप शीवन विताकर भी अपने पाठिवतवर्मकी रचा बरे, परिणाम उसका करपाण ही होता।

क्यां और न्याय अन्तर्से अवस्य ही शुभ चल वृंत्रे, सीताबं व्यत्ते वीवनमें करोर स्थीवार्षे वृंद्र क्षोमान्त्रे रिशे यह मर्यादा स्थापित कर दो कि वो क्षोमान्त्रिक स्थापित क्यां के कि वो क्षोमान्त्रिक स्थापित क्यां के स्थित क्षेत्रि संस्तारमें स्थापे श्रित क्यां प्रशास क्यां राहता व्यत्त्रक्ष स्थापित क्यां के स्थापित हो जायणी। श्रीतामें वान्त्रक्ष स्थापित क्यां के स्थापित हो जायणी। श्रीतामें वान्त्रक्ष स्थापित क्यां क्य पद्भग, साहम, पैर्ण, सप, वीहम और. भाइर्ण वर्धप्रश्नापका भादि सभी गुण पूर्ण रिक्सिस और सर्वेद्ध अनुस्तर्भाव हैं । हमार्ग जो मालार्द और वहनें प्रभाद, भोड़ और मार्गक्रिय देशियां परिवाग अनुक्त्य क्षित्रीय उनके अपने मत्याप्यों सी बहा है वि अपने पति और प्रश्नांक्षे भी सार सकती हैं। अधिक क्या, जिन्दर उनकी, क्या हो जायगी जराका भी कायण होना सम्भन हैं, पैसी स्ती-रिसिस्ति पतिकता की वर्धन भीर प्रमाद योग्य है। अनुष्यों-के हारा हो नदी बहिक देशना मेंके हारा-भी बह पूनांक्षी और अपने व्यक्ति देशनेक्षीय प्रविज कानोवार्ध हैं।

यचपि श्रीसीतानी खावाव सगउती और परमान्माकी शक्ति भी तथापि उसने भपने मनुष्य जीवनमें लोकशिका-

. នៅ។ នៃគ្រប់នៅ

के ियो जो. चरित्र किये हैं तो सबत्ये हैं हि दिन्स अनुकरण मधी चित्री चर मंकती है। संनारकी मंतरिते श्रिये हो शीमा-समझ मदमार था। अन्तृत उनके चरित्र और उपदेश अमीकित के होत्य होने स्वास्तारित में हैं तिकको काममें खान्य कमनेगा स्वास करा मकते हैं हैं हो भी था। पुरुष यह कहा कर्मामाने सुरात माहते हैं कि 'बीमीना-सम साधान शक्ति और हैंचर से इस उनके चरित्रोंका मनुकर्ण मंदीं बर सकते।' से बाजर और अनक्त हैं। वे धीसामी हैंचरका अवनार केवल बनामरके तिये ही सानते हैं। ववे सम्माकी तो शीहासमीनाके चरित्रका वर्षामं मनुकर्ण गी

रामचरित-मानस

्रा (१)

पुर और असुरोको समर्ग रीम देगि,
कोन्निज कजानिथि को परियो सुरेशाची;

प्राहा रसाट अधु, मिट स्वाहु सर्विमादि,

— सुर-मर-नारियों की बाँसुरी बनेशकी।

भारती सुकतिमोकी नतुस्रर दागरदिक्षी,

समयी द्वार सेना नियुक्त नरेशकी;

करके परस्य मिगाई उक्त माव्यकी,

सुट शी पियुक्ती सुसम्पदा बनेशकी।

(2)

बारि-निधि-मन्यनके बार यहि मींति महो , अन्तरोकि दयमीय हुदैशा रहेशको ; मरि आदी गींसे करणाठी मन्तु मोतियोरे , दयासिन्यु निवामीये हुन्सी द्विन्नको । गुपाको एकत्र करनेकी मन्य-मानतार्थ-मेरित हो पकत मुग्नाधीस मोदशको ;

प्रारत हा पक्ष्म शु-आरास भहराका; 'भागस-सरीवर' में रस बरसाने रूपे; केकर करोंमें वर वर्णिका गणेशकी। (३) कोयरुकी काकली सुरीले स्वर परियोंके,

केशके पपुर नृत्य चिन्नका निरोक्ती। मंत्रकि मोहन मुख सुधा नारि अवरकी, शास्त्रके सदनकी सामनी चन्नेत्रकी। जननीके क्षिपचन्केट स्ताकी उत्पतारि, सक्क सकेटि अमी-मृत्य विशेषकी; मन-निर्मेश्वर तोई रचना है मानसकी, मुख्योकी इतिषे है स्तीकृति जोनकी।

रामायणमें भरत

(हेस्तरू-साहित्याचार्य पं॰ श्रीशाख्यामनी शासी)

मायण्में भरतका पुरु विशेष स्थान है। यदि यह कहा आय कि रामायणके पार्त्रोमें भरतका चरित्र सबसे ऋधिक उज्जवल है तो कोई चलुक्ति २इरे। भरतने जितनी प्रतिकृत परिस्थितियोंका सामना किया—चौर जिस **पैर्य सथा साइसके साथ किया—उत्तरा कोई** दूसरा कर सकता, इसमें सन्देह ही है। जितनी परीक्षाएँ भरतने ही उतनी यदि केसी दूसरेके सामने आपी दोतों को दोश मारे जाते। भरतके चरित्रका सवन करनेसे प्रतीत होता है 🗐 वह वेपतियोंके भहासागरमें अविकस्पितरूपसे स्थिर रहनेवासे मद्दारीस हैं । भरतके मनको डिगानेके जिये संसारको बडीसे बड़ी शक्ति बेकार सिद्ध होती है और अस्तको लुमानेके क्षिये मायाके ऊँचेसे ऊँचे सन्मोहन श्रम्भ निकम्मे रहरते हैं। इनियाँ एक घोर है और भरत एक स्पोर हैं। एक घोर मस्रोभनोंके विशास शैसकी चकाचींथ है और दूसरी ओर विपत्तियोंका भपार सागर है। यरके सब सगेसानाथी उन्हें उनका दित सुका रहे हैं। उनके अन्मसे ही पहले, उनकी माता चैकेपीके विवाहसे भी पूर्व, उनके नानाने महाराज दशरथसे प्रतिका कराजी थी कि कैकेयीका पत्र ही राज्यका अधिकारी होगा । इसी शर्तपर कैकेयीका विवाह हुआ था। दशरधने चपने कामीपनके कारण यह शर्त संबद कर भी भी। बाज बनका वह मनोरम सकल हुआ। था। मन्पराके उपरेशसे कैकेयीने इस किर्पोपित मनोरचके विवे मरमें 'महाभारत' भचा दिया या। एक प्रकारले अरवके मार्गके काँटे-राम-को जबसे उत्ताव केंका था। नाना मामा भारि सबके सब राज-कार्यं हे सजर्वेकार क्यीर प्रश्नको हरतरहरे मददगार में । १४वर्षका समय भी कम नहीं होता। इतने समयमें भरत प्रजाको रूक्ती तरह कार्बर्ने कर सकते थे। यदि कोई अवचन होती हो उनके सहायक भी कम गहीं थे। यदि कोई दीव देता तो दशरवकी देता जिन्होंने अनुचित रातंपर शादी की थी। आसिर शरतका इसमें क्या दोष या है वह धपने 'क्रम-सिद्ध अधिकार' को देसे घोदरें ! फिर कैकेवीको मिखे बरदान भी तो कम न थे!

माना कि राम, सहमयको महर्षि विद्यासित्रने को

दिखा अब दिवें ये वे मरतके पास नहीं थे। हम पोर्डा 'दांके बिवें यह भी मान लेवें हैं कि यदि राम-त्रमण्यके साथ मरतका संसाम दिवंद जाता वो आपन मरत हार नाते, परन्तु इस संचामका प्रवत्तर ही कैने का सकता या है राम खड़तें भी कैसे हैं भतको राम्य देका दिना दरारपने प्राप्ती प्रतिक्ता----चार्ट व्यक्ति शुक्त हैं सही----पूरी थी भी इसीके कारल, सकड़े सामाजवंद भी रामने रामन हो इक्त कारका राज्य विणा चा १४ मांना रामने दिनाको कार्य चीर प्रसारकों कारोजें सिवें प्राप्त कोई मा । किर राम किय

राण्य कोई कहे कि 19 वर्ष वनवासके फननार राम प्राथ्य किये यह सकते थे, यस्तु यह शिक माँहें है। 19 वर्षके समयक किये प्रमु सकते थे, यस्तु यह शिक माँहें है। 19 वर्षके समयक धर्म 'सम्बन्धा' के साथ सामामे गर्मी यो, उनमें यह काई यर कि भरत 19 वर्ष रास्य करें शीर वाइमें आकर राम राम्य के सें। उसने साफ कहा था कि 'मारका राम्य हो—विका फिती फार्कि—चीर राम 19 वर्ष वनमें रहें' यदि 19 वर्षके बार राम चाहते सो मार्समें या सकते थे, बेकिन रास्य वह कभी महीं के सकते थे। केकेशोक रास्त्र दिवारीकि युक्त मारस हमानी भोदी गई। थे। केकेशोक रास्त्रीकिय युक्त मारस हमानी भोदी गई। थे। केकेशोक रास्त्रीकिय प्रमु सम्पर्ध हमानी मीदी भी वो देसी कक्षो वात सिकारी, चीर न कैकेशोके रिकार हों थेती कमानेर रहते की भी शास्त्रीकिन मन्यराकी विकार समझकार विकारी है—

> ती च याच्यव- मतीरं भरतस्याभिनेचनम्। प्रजाननं च रामस्य वर्षाणि च चतुर्वेशः॥ चतुर्वेशः ति वर्षाणि रामे प्रजानिते वनम्। प्रजाननम्बन्देशः स्थिरः पुत्रो मनिष्पति॥ (या॰ रा॰ ११९१२०-११)

'भारतका राज्य और राजका 1 थ वर्षका वनवान स्टाइटर्स आँठो १ १५ वर्षका कर राज्य वनकारों, रहेंगे तेत्र हुतने दिवांसे 'पुत्र'—मराज-मनाका स्तेर-मात्रन हो वाचना और प्रमादे द्वारपर्ने स्थाप या बेनेपर घर—भारत— स्थित हो वाचना शिर उसका साथ किसीके हिलाये न हिला हो वाचने कर है कि अब में बनसासकी रहते रिस्टे इसविषये थी गयी थी कि हुतने समयने स्नारका साथ रिगर हो जाप, यह प्रमाका हुन्य भवने बागें कर सके और उनके विरोपी राम हुनने समयतक प्रमाधी धाँगों के चागे-गुन्कहुन हरा दिये आर्थ—मिन्मों कोगोंका करेडू उनके स्वस्त पुक्त हर आर्थ । १० वर्षके बाद रामके ता की तीरा हेनेकी म धोर्ड बात थी, म हो ही सक्यों थी। हुन हुनामें भरतको रामने या उनके दिग्याच्छोंने कोई वह महीं था। रामको यदि कोच करना या खड़मा था को चयन दिलासे निवदने, जिन्होंने उनका चायकर नष्ट किया। भरतका हुसमें क्या दोच था है उनसे हाम किस दुनियाइवर

फलतः यह सिद्ध है कि अरतका शस्य निष्कष्यक या। जनके मानाने ही इतका बीज को शरणा था। अन्यसाने कर्म बहुत्ति कीर पढ़िया किया था, केडेबीने उसे पुष्प-मुक्त सम्प्रकाराचा था घोर अरत—केवल अरत—जसके वपनीग-के घरिकारी थे। माला उन्हें राज्य दे रही थी, विवाने उन्हें राज्य देनेकी बात कहकर ही माथ चोड़े थे, वरित्र कार्यि समस्त व्यक्तिया चौर सम्प्रियक्य उनके राज्यभिनेककी तैयारी किये ये थे पे, तमाम स्तुर, मागाय, बन्दी तैयार थे। सरदाणे सामन्त्रकोरा गुप्ताप यह दरव देखनेको सराजु थे और सारिकी सारी आयालहुद मजा हुनीकी आरामें थी ह

यह डीस है कि मना राजको राजा देवना चाहती थी, परन्तु यह भी हीस है कि मना भरतका बरिस्मार मायद है। कर रवसति लव बसे द्वारों इतिहासका पता चकता — निसके कराय स्थति-को राज्य सिक्ष था—चन्न वह स्थारको उतना दोणी करादि म स्यामती। हाँ, दशरपको भने ही दोष देती। फिर यही हो भरतका कर्ताय था। अजावा राजन ही तो राजाबा धर्म है। उन्हें यहाँपर फपनी मजाराजनामक समस्या समित्र परिचय देता था। यहि वह इतना भी न करते जो राज्य चरा चरा सकते थे ? इसके शतिरिक्ष खहुत हुन मार्ग यो उनकी मायान ही रामको चनवास देवर साक कर दिया था और वासके दिये उनके जान-मामा कमर करते विचार थे।

इससे स्पष्ट है कि मरावने किसी राजनीतिक कारणारे रामण्या परिलाग नहीं किया । राजनीतिक कारणा यो उनके रामण्य नेते हों नावहरू थे । क्यानीतिक कारणायो उनके के बारण भी उन्होंने रामण्याग नहीं किया था । किसीके करते, लोकाचनारके कारणा, साधियोंके विशोधयो या और हरते, लोकाचनारके कारणायो नावहणायों यो व्यक्ति

भरतके चरित्रमें राजनीतिक कार्तीकी छोज करना एकफा-रो उनका भागमान करना है। भारत निराद महि भौरहेन 🕏 भारतार हैं । पवित्रताकी सीमा भीर निःस्ट्रताकी भागी क्योति हैं। जनस इत्य शयका केन्द्र और धैर्यस सम है, बरकी बुद्धि दश्या और संपम्नद्री मान है। भरत स्टर-की मांति चगाच चीर हिमालवकी भांति घटन है। मारे परित्र और निःश्वर धन्तः करवामे को निवय मार प्रश कर गुके हैं, उसे उल्ट देना ईश्वरके भी सामर्थिने नहर है। रवर्ष रामने भी बीमों प्रकारने भारतको शास बेनेडे हैं बाप्य किया । पिताकी बाजाकी बान बताबर, धर्मेडी का सुमाकर, मजाके दिलकी दुहाई देवर, कैकेपीके निवाहके हता की हुई पिताकी प्रतिका और देतासर-संप्रामके बरहागैंबे याद दिशकर, मतल्य यह कि हर तरह हिलाहलाझ शां राम भी उद्योग करके यक गये, पर भरत को एक शर 🗂 घोषनेका संकरप कर शुक्रे तो किर बारनी सा मिन किसीके भी हटाये न हरे, न हरे ।

भरतके रोम-रोमसे प्रेम-पीवृतकी धारा वहती है। र चचर चचरसे मक्ति-रसका प्रवाह उसदने हगता है। के अत्येक निश्वासमें 'राम-राम'की रट है। 'मेरे हो एक! नाम दूसरा न कोई ? दस, यही भरतका मन्त्र हो रहा है। हा थोबी, मात्रपण थोबा, प्रजा थोबी, राज्य थोबा, र वीलत दोदी, सुख सन्पत्ति होदी, पुत्र रामनामके पीदे मर सब संसार छोदा, जपना पराया छोदा, बदि व होता पुक रामनाम । इसीसे इस कहते हैं कि भरतके चरित्र राजनीतिक थातोंको हुँदना उनके चरित्रका सपमान करनी पवित्र गंगाकी घारामें शेरकी माँद हेंडना है और गनोडे ^{और} गोलरू तटारा करना है। दशरधने वैकेशको समग्रहे र बहुत ठीक कहा या 🌆 'रामादपि हितं मन्ये वर्मतो बहदक्ष भर्यात् 'धर्मेमें मरतको में शामसे भी दरकर सममता हैं। रामके विना भरत कमी राज्य स्वीकार न करेंगे इवा रामके चरित्रमें राजनीति और धर्मनीतिकी ग्रहा-मधुना हैं कर बहती है, परन्तु सरतका चरित्र तो पवित्र हेर्म गङ्गोत्तरी है। अस्तके चरित्रको रूच्य करके यदि वह की जाय शो कोई अप्युक्ति नहीं कि---

सुपातः स्वादीयश्चरितमिदमानुश्चिपिकतो जनानामानन्दः धरिहसति निर्वाणपदमैपः इस बद्ध चुके हैं कि जितनी प्रतिहृख रे सामना—जिस धर्यके साथ—भरतने किया उस टर्सः ____

'वित्रोपितम् भरतो गावदेव पुरादितः । तावदेवानिषेकस्ते प्राप्तकाटो मतो मम ॥' (गा०रा० २ । ४ । २५)

सर्वार 'कारक सत्त हुए नगरसे पहर है कनोकक गहार((तमक))रामाभिक है। माना में उचिव सत्तम्ब्याहें।' स्ति स्टर है कि क्र्यायमें मत्तके नाय पान की भी और करी प्रकार मन्यार और कैंग्रेज़ वह फायराय मा की ओक्सन ने ग्रामक भागिककी मारा पुनस्त 'एसके गरिभीनाः' कर्कर सत्त्मको सत्तकी हो। या तो कैंग्रेप मारि ही। या स्तु हुए रावके मत्तकी स्रोप्त का क्रियो मारि ही। या स्तु हुए रावके मत्तकी स्त्रोप का दुरकार मिना, यह बागे देविये और किंद्र साथिय का स्तुक्त मिना, यह बागे देविये और किंद्र साथिय का स्तुक्त किंद्र मार्थिक है। दे मत्तक स्त्र मानावे साहित हुवया ने गये जो कि कैंकिक पात स्तु सुक्त मानावे साहित हुवया ने गये जो कि कैंकिक पात स्तु सुक्त हुव प्रकार हो गये है। साहित क्रायो स्तु देवकर सह सुच प्रकार हो गये है। साहित क्रायो हो कहाँने इस्तर, स्त्र बाहित सत्तकी सुवतक स्तु

अभिनेश्यति एमं तु राजा सहं तु श्वासीत । स्तहं हत्तास्वरते होगे साजायातिस्य ।। तरिदं ह्यान्यात्म्यं एमदरीनं भन्ने स्था । विदारं तो न स्वापति नित्तं दिनार्षे हत्या ।। सो मे म्राजा विता नजुर्यस्य दातोऽनित्तं स्थातः । तरम सं तीमानस्यादि सानस्योद्धर्मन्यः । तरम सं तीमानस्यादि सानस्योद्धरम्यः ।।

(श-११,२१-७१। १७-१८,११-११)

षामीव में तो यह सोषफर बजा या कि या तो राजा (दराव) श्रीरामक्ष प्रक्रियेच करेंगे या कोई पत्र करेंगे। रप्तन्त्र यहाँ तो मैंने इन्ह चौर ही देखा, जिससे मेरा हरेंगे। रप्तन्त्र यहाँ तो मैंने इन्ह चौर ही देखा, जिससे मेरा हरेंगे विद्यानीके नहीं देख रहा हूँ। जो मेरे भाई, पिता, बज्य प्रारि स्व इन्ह हूँ, जिनकार्य में हाह हूँ, उन श्रीरामका पता मुझे गीम क्यांची। बच्चा पिताने स्वार्थ होता है, में रामफे चैरों पहुँचा, क्यांच बहाने मेरे जिये सब इन्ह हूँ।

क्य कैकेरोने कहा कि रामको बनवास दे दिगा गया, तो सतत वर वर्षे। उन्हें सन्देह हुआ कि राससे कोई सनुतित कार्ये को नहीं हो गया जिसका यह वषण मिला। वो किन कैकेरोने बचाया कि 'यह स्व कुछ कीने गुग्हारे जिये किया है। हुम मान रामगाहीगर बैधे' हत्यारे । हसके उत्तरसें सतने की कुछ कहा है, उससे साम अराज है इरणका समाधित वंच सकेंगे कीर सरके पतित्र महितका सामिकत स्व

हुजी होकर भरत बोजे कि ' गोक-सन्तर सेरे बीसा कामागा राज्य केवा क्या करेगा, जो बात दिताते मा होन है थीर दिन्दुक्व वहे भाईते भी होन है। कैकेपी, तुने मुखे दु:कार दु:ल दिवा, यूने मेरे करेपर नमक दिहका, बी राजाबी सारा बीर समको बच्चात दिया।

में समझता हैं कि तमें वह मालम नहीं है कि मेरा शमके प्रति कैसा भाव है, इसी कारण दूने राज्यके जोमसे बढ धनर्थ किया । में राम लच्मएके विना किसके बलपर राज्य करूँमा ? अच्छा. यदि बदि धीर मीतिके बसपर मि राजकाअ चेला सकता हूँ तो भी में तेरा मनोरय पूरा न होने देंगा । त अपने प्रश्नको राजा देखना चाहती है. सेकिन में तमे वह न देखने हैंया। यदि सम तमे सदा आताके तत्व न समझते होते सो धान तम्ब बैसी पारिनीका त्याग करनेमें भी असे कोई संकोच न होता । कैदेवी, त राज्यसे अह हो, बरी दहा, करे हैं नू धर्मेंसे पविव है, ईंचर करे, मैं मर बाउँ और तु मेरे बिवे रोवा करें । तु माताके रूपमें भेरी शत्र है। तुने राज्यके खोमसे पतिकी हत्या की है। तु अवसे बात न कर । तू याद स्त, पिता और माईके प्रति को तने वाप किया है. मैं उसका पूरा मापश्चित करेंगा चौर चयना वह भी बहाउँमा । समको सत्य देवन में चयना वाव बोर्डेंगा सीर तब धपनेसे इन्तरूत्व समर्जे गा।

्इस बर्चेनमें भाप देखेंगे 🌃 बैडेग्रीके शृपमे भरतको

मर्मानिक धेपना को उसी है। यह चापने राजनीतिक क्रिनीन को सीचे राष्ट्र महकर गुकार रहे हैं। उनका क्षत्र धार्मिक भावनाने परिचया है। उनको शाय दिवानेके लिये बनकी माताने जो कार्य रिया है उसे वह धोर शाप समझ रहे हैं वर्ष इसके प्रायक्षित्तके लिये करनी मृत्यु तथा करनी मानाके करुयारम्बन सककी भाषात्रचा कर रहे हैं । धर्ममूर्ति भारतके निष्यतमार श्वरूपका यह गया थिए है। हममें चर्म. प्रेम और मुक्ति सेसे पवित्र भावोंके सिवा और किसी क्षभाषको स्थान ही भई है। भरतका निष्कपट ग्रेम, निःस्यार्थ भक्ति और दरभद्दीन धर्म उनके अन्येश बारपणे अच्छ होता है। वह शमके ऊपर भएनेको न्योतावर कर शके हैं। रासकी विरोधी अपनी साँ भी बाज चनकी दक्षिमें शत्र है । उन्हें रामकी शहीपर बैठनेमें चोर बाल और शमके चरखाँपर स्रोटनेसे परम चानन्द मास हो रहा है। बाज वह मतिज्ञा कर रहे हैं कि में माताके पारोंका प्रायक्षित्त करके यशस्त्री बर्नेगा । कहना नहीं होगा कि भरतने इस प्रतिकाको भ्रपनी जानपर खेलकर पूरा किया और ख़ब पूरा किया।

भरतने इस व्यवसरपर सबका सब दोप माताके ऊपर ही रक्ता है। पिता दशरथके विरुद्ध उन्होंने यक शब्द भी नहीं कहा। यह भी भरतके चरित्रकी एक विरोपता है। लक्ष्मया और शतुमने तो वह स्पष्ट शब्दोंमें-चाडे परोचमें ही सही--दशरयको खरी-खोंटी सनायी हैं, परन्त भरतके मुँहसे उनके लिये एक भी कट्ट राव्य नहीं निकला। यों तो रामकी भी पितृभक्ति बादरों है। उचित बनचित-का विचार छोडकर, पिताकी बाजाका पालन जैसा रामने किया वैसा कोई क्या करेगा ! परना रामके चीते क्यान्यते भी तो ग्रपने प्रायतक गँवा दिये थे। ग्रपनी प्रायाधिक वियतमा कैकेपीको भी उन्होंने रामके पीछे ही तिस्तात्राज दी थी। यह बात करी जा सकती है कि दशरक शास्त्रों प्राणोंसे भी अधिक प्यार करते थे, परन्तु भरतके सम्बन्धमें यही बात नहीं कही जा सकती। भरतके विरुद्ध दशस्यने यह-यन्त्र रचा था। भरतको राज्यसे श्रष्ट करनेके लिये उन्हें करटसे षाहर भेजा था और उनकी अनुपरियतिमें - उनके नाना, सामा-को सचना सक म देते हुए-धरमें खुपके खुपके रामके राज्याभिषेक की कार-पूरा चायोजना की थी। इससे भरतका मन मसीन हो सकता था। रामकी चौर उनकी दशामें बहुत भेद था। विताका व्यवहार दोनोंके प्रति समान महीं या । राम और भरतके प्रति दशरपके व्यवहार्शे आकारा-शातालका अन्तर था । इस दशाने भरतका भाग भी वदि बदल जाता तो

कृष् चालर्यं न दोना । चालर्यं नो चरी है कि इन ल चार्यों के दोने हुन् भी भाग शमके समान ही स्मिन्द में रहे । इसे नेपने हुन् यदि यह बड़ा लाग कि भाग सन्ते भी बड़कर रिश्मक से तो बीई चालुटिन नहीं।

भरत राम है प्रेममें रातातीर थे । उनके सांग रात है ने । रामके पनीजेकी जगह भरतका सूत्र गिरजेको तैया है जाता या । रामका प्रेमी ही उनका प्रेमगात या भीर रामक विराधी जनका चीर राजु या । यही बारण है कि राजी मेममें माचा देनेवाले निवाका कोई दीव मत्त्रमें हीने काया ही नहीं । उन्होंने दन सब दीगोंकी दरेश में हैं-परम्यु रामका विरोध करनेवाची भी बैदेवी उनदी भारते शुलकी तरह लटकने कारी । अरलको शासकी माभएग कभी थी ही नहीं । यह तो रामडे प्रेमडे मूले ये। मार्गा वहाँने चाने हुए उन्होंने बड़ी समसा वा कि शायर राजध राज्यामियेक होगा, उमीके लिये <u>स</u>क्ते <u>श</u>त्रापा है। वह कारे को राज्यका कविकारी समग्रते ही नहीं में । कैनेगी विवाहके समय की हुई दशरयकी प्रतिज्ञाका उनकी ग्रीरें कोई मुल्य ही नहीं था। यह उने काम-जाका प्रवार मात्र समकते ये चीर बरदानके नामपर कैनेवीका राज भौगना उनकी शत्रामें काट-पूत्र अवर्म था। गर ओडी राज्य-प्राप्तिको ही धर्म समस्ते थे। यही उन्होंने बने जगह कहा है। उन्हें कभी यह ज्यान ही नहीं मां कोग-बीर लासकर उनके पिता ही-उन्हें रामका वितेरी समसेंगे चौर वह भी चचमंपूर्वक राज्य केनेके बिये।वि ज़िः ! धर्मरासकी दक्षिमें इसमकार कामावेराकी प्रतिशासी का कोई मूल्य नहीं सौर धर्मांग्मा भरवकी दृष्टिमें सीश अतिका दो कौड़ी—यरिक उससे भी कम—की थी। वि इसके लिये पेता 'सकायद तायदव' करेंगे इसकी वर्षे औ सम्भावना ही वहीं यी । इन्हीं क्षाणोंसे धर्मात्रा भरत दृष्टिमें दरारयका कोई दोप नहीं आया और वह राही समान ही पितृशक्त बने रहे । हाँ, रामकी विरोधिनी ^{मार्ग} को वह राजु सममने लगे। मन्यराको अमीनमें धरीहर हुए शत्रुप्तका कोध सान्त काते समय उन्होंने वहाँतड म दाला था कि —यदि मुक्ते यह दर न होता दि धर्मा राम मानुधातक समस्तकर भेरा त्याग कर देंगे हो ^{ही क्रा} इस वह कैकेपीका वध कर दालता।

> हन्यामहिमयां पापां कैकेयां दुष्टचारिणीम् । यदि मां धार्मिको रामा नासूयेन्नातृपातकम् ॥ (वा॰ रा॰ २।७८।२२)

इन बातोंसे रेप्पट है कि मरतका पवित्र हृद्य रामको किमें तद्वीन और रामके प्रेममें मतवाना था। उनका तैं मन्त्र पा कि 'मेरे तो एक रामनाम दूसरा न कोई'।

कप्ता, अथ प्रहत बातपर प्यान दीजिये। कैनेबीसे ततापर अब भारको सब बातें मादस हुई चीर असको तिकी तबद बीसल्यावे बानतक पहुँची तो वह यो मिन्नों स्वाद तीसल्यावे बानका पहुँची तो वह यो मिन्नों साप रीतो, कंजपती और बीपती हुई बारी बहुँची। ब पहुँसे भारको कटोर परोचार्य बारम्म होती हैं। मरत मुँ किस वैसे और कितनी छातासे चार करते हैं, यह बार मारे वेसेंगे—

मार्त प्राप्ताचेर कीवाना प्राप्तानिका ।।

११ ते रामकारात्य रामं प्राप्तान्यव्यम् ।

सम्प्राप्तं तत्र केवना रामं प्राप्तान्यव्यम् ।

स्वाप्तं त्रात्त्र केवना रामं क्षेत्र नामार्थः ।

स्वाप्तं मानार्थः केवना प्राप्तानिकारित ।।

भागता स्वाप्तं त्रात्त्रम्याः त्रात्र मां नेतृकारित ।

स्राप्तं स्वाप्तं त्रात्रम्यः त्रात्र मां नेतृकारित ।

इरामस्याप्तान्यं रामं निर्मादित त्रात्रा ।

इप्याप्तिवान्यान्यं न्तृतं नेतृत्रितं त्रा ।

इप्यापित्वान्यं नेतृत्वं नेतृत्वं नेतृत्वं निर्मान्यवेतनः ।

स्राप्तं प्राप्तान्यं निर्मान्यवेतनः ।

स्वाप्तं प्राप्तान्यं नामान्यवेतनः ।

(बा० रा० शक्त) राम-बनवासपे स्थाकल कौसक्याकी दवनीय दशा देख कर भरतका कोमल-इदय दुःखसे कातर हो उठा । उनका कॉपना, कलपना और बिललना देखकर भरत धवरा शबे भौर जब उन्होंने देला जि कौतल्या राम-बनवासका कारण वन्हीं (भरत) को समय रही है तब तो उनके द्वालका पाराचार न रहा। कौसल्याके कठीर भाचेपोंसे अस्तका निष्कल्याप चित्र विचक्रित हो गया और वह मृद्धित होकर कौसल्याके चरणोंपर गिर पड़े । जब हो समें आये तो आंसुमरे नेत्र भीर गहरू भयवपे 'हा राम' 'हा राम' कहकर इधर उधर पागलोंकी भाँति ताकरे लगे । उन्होंने कीसस्याको विवास दिखानेके खिये सैकड़ों रापर्थे-ऐसी ऐसी कड़ी शपर्ये की जिनपे पायाका भी कलेजा दहल जाय--सावीं। जिसकी भनुमति या जानकारीमें रामको बनवास हुआ हो, वह रणमें भागता हुचा भारा जाय, बोरने चोर वारका कल उसे भौगना पदे इत्यादि ।

भरतको इस दराको देखकर कौसस्याके हरूपपर गहरी चौट क्रती। उन्होंने राष्ट्र देखा कि भारतको रागके वियोगका दुःख करने (बौसरमासे) कम नहीं है बीर करके मातुषित प्राणेपीने भरतके निराशाय हरको प्यादुल कर दिया है। इससे क्षेत्रस्या भी करता गयाँ कीर भरतको गोद्गे विज्ञाकर स्वयं रोने क्याँ। उन्होंने कहा—

मम दुःसमिदं चुन मूनः समुफ्तानते। सप्तिः सप्तानति हि शालापुरस्तिति में।। दिश्वा न परिदेश पर्वादास्त्रति से स्टर्फ्याः। स्ताः स्ट्रम्पिते हो हि तत्ते स्टेशनयान्यति। स्पुत्रता न्याद्वानीत भातं आनुस्तरत्त्।। परिचाम महासद्वं स्टोतः मृग्युःस्ति।

यह भरतको सबसे प्रथम और सबसे हरिन परीचा यो। यदि जनके डरफर रामके प्रति भनना प्रेम न होता, बदि उनके व्यवहार्स विद्वात वार्मिकवाको प्रोक्त कर्मे उत्त भी राजनीविक ज्यावीकी भन्य होती हो रामकी माठा-के हर्दको हुतनी जन्ही द्वाद कर सेना उनके बिये स्तम्ब हो नहीं या। भरतके चरितको यह सर्वोत्तम दिनय हुई।

कुम तो राज्यको प्रतिकाके कारण और कुम राम-सनवासके कारण अस्तको रूपा अस्तन शोक्योग हो गयी थी। बचा बचा उन्हें सन्देशको शहिसे देसने राम था। यह-पहरा सोग उन्हें राज्या विषयी ज्ञासने को थे। रामके एक असम्य सकको इससे बड़कर दु:स क्या हो सकता वा कि एक नियासने सेक्ट बोरेंसे को महर्गियक, सन्देश सेक्ट बोरेंस सभी अधिनुश्य उसे राष्ट्राको दिशे— रामकिरोयोको एटिसे— देसने वर्षो।

काले पहले कीतरपाये उनकी गरिका की, उन्हें नार प्राथम अधिका मनद आया, दिस सामय सामांकी कीर सन्तर संकित घरित सामिती सारी धायों। सभी महाश्रमों कीर प्रधाने भी भरतको परचा। पुर शोगीले कर निर्दे और सामने भी भरतको परचा। पुर शोगीले कर निर्दे और सामने कीरोने कीतमायले ग्रामिकानी पहिले ही निवादना सुरेने कपा स्मावता। उन्होंने पात्रा देखते ही सामग्र विचा कि यह अदको सेना है और प्रशाने उस भार कपने सक मञ्जूषांकी भीगी हुएस सुन। दिया। देखिले ।

मुद कहते हैं, 'देलो, यह समुद्रके समान उमदती हुई

सेना गङ्गाके दस पार वीख रही है। स्थानें कोविदारकी ध्वजा है। इससे स्पष्ट है कि दुईदि भरत स्वयं भाषा है। अपना राज्य निष्कवटक करनेके छिये आज यह तुष्ट रामके बधकी इच्छासे सेनासहित इघर आ रहा है । रामके बाद यह 💷 हमलोगोंको या हो रस्सियोंसे बाँधेया या मरवा ही दालेगा। राम तो मेरे स्वामी भी हैं और सला भी हैं। काज उनका काम चरा पड़ा है। इस पुरव-यक्षमें अपने प्राणोंको आहति देनेके लिये इस सबलोगोंको तैयार हो जाना चाहिये। रामके काममें प्राण देनेसे बढकर थीर कीनसा पुरुष होता ? सब कैवर्त (निपाद) छोम गहाके मुहानोंको रोककर दट जाओ । पाँच सी मार्चोसे रूप आर्थ रोक छो । एक-एक नावपर सौ-सौ अवान सब शखोंसे सुसञ्जित होकर तैयार रहो । में जाकर भरतका मन दरोखता हैं । यदि उसके मनमें कोई पाप न हुआ तब हो। उसकी सेना पार दतार दी बायगी, अन्यथा पहले हम सब लोग वहीं सर मिटेंगे तब फिर रामपर आँच आयेगी । हमारे जीतेजी कोई रामका वास वाँका न कर शकेता ।

देला भारते हैं यह माना कि नियादराज हासके भनन्य मेनी भीर भक्त थे, परन्तु देवना को यह है कि भरतके मानको बन्दोंने किना उच्छा समझा है है कि पर होक है कि नियादराज रामके करा भवने मान देनेको तैया हैं, यह नेक रियादराज रामके करा भवने मान देनेको तैया हैं, यह नेक रेताना तो यह है कि क्या मात भी उनके मान सेनेको तैयार हैं है हमें देखना बही है कि भाज परिस्थिति स्थातके किना मिन्दूल हो जही है। भाज उनके प्रामुख्य हरवी पढ़ बंगडी भी विचाय समझने हमा है। महत्वे दूरवी मिन्दूल परिस्थितिको सर्वेषा अनुकृत बनावेका भीड़ा काम है।

नियासान गुरू भी बड़े अच्छे सामगीतिक थे। धाताकी मित्रमी खोद-शोदका पर्याचा इन्होंने की बतानी किसीने नहीं की। इनकी हर एक खायके सामगीतिकता हरकारी है। बार्मा कार देन जुड़े हैं कि बढ़ चारने बतुकारीने क्या कह दरें थे। बढ़ कार्ये देशिय कि मातके शायने केंद्र थेरा करने इह हमार कैंगे भीगों विक्रीं कर ने हैं हैं—

> नरस्य मार्च बहुँ हुते वश्वसम्बद्धि ॥ निषुरक्षेत्र देरोड्डवं व्यवसम्बद्धि व्यवस्य ॥ निरेत्त्यस्य वे स्त्री व्यवस्य स्वयस्थितः स्वयस्थितः ॥ व्यवस्य मृत्युक्तं विद्यस्ति निर्मेश्यस्य स्वयस्थितः ॥

× × × आशंसे स्वाशिता सेना बत्सत्यत्येनां विभावरीन

(बा॰ स॰ श८४)

'मरतके पास चाकर वर्षी नम्रतासे 'गुह ने कहा कि ह चाहरको बाप चयने घर-स्वीगनका गाीचा समिन्ने। धरों हमवोगोंको सेवा करनेले निधत कर दिया । मन्न मार्गे पहाँ करनेको क्या कावरयकका थी है 'दासगृह'—निगां स्वान-सच चापहीका तो है। वहीं कहा चारिये वा धापके दासोंका काया हुच्या कर्य, मृत, पत्र सब मौदां धीर भी वाहरको छोटा यही चीर उपस्थित हैं। मैं सम्बा हैं, उससे आपकी सेनाक खाना-गीना घाडकी गर्मे चारामले चल सकता है'। इसावि।

देला आपने ? यह एक शानगितिक्की बाठ-मांत है क्या इससे पता खलता है कि समी गुद्र करने पाने हुए करने पाने के इस्तानाम करके था रहे हैं ! इसी बाठ-मीठामें तब मठ करा क्या कि प्रकार करने कर मठ करा कि प्रकार के स्वा प्रकार के स्व क्या कि 'इस प्रकार कि प्रकार कि प्रकार कि प्रकार कि प्रकार कर कि प्रकार कर कि प्रकार कि प्रकार कि प्रकार कर कि प्रकार के स्व कि प्रकार कर कि प्रकार कि प्रकार कर के स्व क्या के स्व कि प्रकार कर कि प्रकार के स्व कि प्रकार कर कि प्रकार कर कि प्रकार कर कि प्रकार के स्व कर कि प्रकार के स्व कर कि प्रकार कर कर कि प्रकार कर कर कि प्रकार कर कर कि प्रकार कर कर कर कर कर कर कि प्रकार कर कि प्रकार कर कि प्रकार कर कि प्रकार कर कर कि प्रकार कर कि प्रकार कर कि प्रकार कर कर कि प्रकार कर कर कि प्रकार कर कि प्रकार कर कि प्रकार कर कर कि प्रकार कर कर कि प्रकार कर कि प्रकार

कवित्र दुद्दो अर्जास रामास्याक्षिटकर्मणः। इयं ते शहती सेना दाद्वां अनयतीय में ॥ (वा०रा ०१।८५।७)

क्षण्य —
वेवस्मिम्माप्तमाएकासः हु निर्मतः ।
मतः स्वय्या बाचा गुढं बचनमनरित् ॥
मा स्वर्त स्वय्या बाचा गुढं बचनमनरित् ॥
मा स्वर्त स्वय्ये बचने मा राष्ट्रित्वर्दिते ।
सप्तः सदिने साता व्येष्ठः रिनृत्योगतः ॥
वे निर्वारितुं आति कासुन्तरं बनातिनम् ।
द्वित्त्याना ने से बाची सुन्तरं से निर्मारित् ।
(सार पर १ राष्ट्री से ॥

स्वय् धाकाराकी तरह निर्मेख—रायदेणके वाहजींसे स्वत्यं सतते सदी मालित्युक्तं मालु माल्यानं जब दिवा कि 'नियादाक, बह समय न वाहरी- में उद्ध समय-के बिये जीता न रहूँ-जित सनिककी हाम कार्यका कर गर्दे हैं। राम मेरे ज्येष्ठ माता है, मैं वर्ष्य नियाके हुक्य समस्का हूँ। उन्हें बनवाससे पापिस लानेके जिल्हा माता हुई। में स्वयं करता हैं, तुम मेरी नाताको संन्या न समयो है'

रामके विधोगसे चति दुली, दीन, मलीन मस्तकी बातचीतसे कौर उसके इंडियन-बेटिवरे वब गुड़को निकव हो गया कि भरतके मनमें कोई पाप नहीं है सब वह बोबे—

> यन्यस्यं न त्वया तृत्यं परवानि जमातिते । अमलादाणां राज्यं यस्तं रयस्तुनिष्टेण्यति ॥ शासती सद्धं ते फीतिंगीकान्यु चीरचति । यस्यं कृष्युगतं रापं प्रत्यानियुनिष्णति ।।

'मारा, ग्रुम धन्य हो, ग्रुम्हारे समान धर्मांका वृष्पीपर रा पहीं है जो बिना पहले ही मिले हुए सारवाड त्यान-: रहे हो। तुम्हारी यह फीटि संसारमें कमर स्ट्रेमी की जिन्न बनवासीसमक्ती कटले युद्दानेके लिये जा रहे हो।'

भारको सुमन्दर्ने बता दिवा या कि निवादरात शाम-हा मित्र है। उन्होंने वसे (मुक्के) 'म्य गुटे: क्टो'— कि गुर-नाम-के मित्र बहुक सम्योजन किया था। वित बहु उसका भारत क्यों ने हमते हैं हसके प्रातिमान भारत घरनी वर्तिभाति सम्मन्दर्वे थे। बहु जानते थे कि एक ग्रह्म हैं। सहिंद्र प्रमानक स्वाननक्या उन्हें सन्दर्भि एटिंग हैं सहंद्र माना क्याना स्वानन्द्र उन्हें सन्दर्भि एटिंग हैं कहा है। इसी महिंग्छ प्रमानन्त्र बदलनेडे लिये सो उनका यह प्रयास था। क्या वह काम किसीको 'डैमफूल नामाफूल' कहनेसे बन सकता था ?

निवादचे हृतवी परीचासे ही मरतका पीवा नहीं गोहा।
उसने उनकी और भी कही जाँच की। कामपारे साथ
स्त्री करत को बुक्त वावचीत हुई भी चौर रामको पार
उतादते समय बी-वो घटनाएँ घटी मी, उनका गुहने ऐसे
मार्मिक अन्तर्भित क्वाँ निकास करसे सुनकर मार्ग सूचिंत
हा यहे। यदि मरतका प्रेम दिसादी होता चौर उनके
हृदयाँ रामके अति जुना की दुर्माय होता हो वह
निवादकी हम परीपार्म वाक्य फेस हो जाते और
कहुर सावनीविक गुह इनकी सस्तिययको हुरस्त ताइ
आता !

इसके साथ ही शुहने हसी धनसरपर नहीं कुरावतारे भरतको प्रपत्ती ग्राविका स्त्री परिचय करा दिया या, उसने साक सुविक कर दिया था कि इस धोर सहकको जप्पान्यमा सर जमीन मेरी मेंन्सई हुई हैं। में पाहुँ तो वहींने वहीं सेनाको इसमें मरका-मरकाले सार सकता हैं। इत्यादि

बाह सब बताने और सब तरह भारतथी परीक्षा कर बेनके बाद भी मुझी उनका पीछा भी होना । को हत बातने सत्मीय पर्यो हुआ कि भारतको । तमा बतानेके निम्ने इन्ह चादमी वनके साथ कर दे ना घोड़ेनी भाइमी लेकर स्वयं हो चना व्याप । वह धपकी समक्ष फोल वैकर भारतके साथ बाजिस स्वाप कर वाथ।

माना कि उस समय मंतरका भाग श्रीक या, परना थे तो बह कैनेपीके ही प्रधा । समसे बातापीत होते होते ही वहीं मम्बुलय से गया चौर किसी बातपीत होते होते ही बहीं मम्बुलय से गया चौर किसी बातपात वहीं बातफ को करेंगे ही बेशासिंद भरतते नियने हेगा ! यह कैसे हैं। सकता है! यह संगठका याँच चरनेंगे संगठका माधिक और कावार्ष समस्या है। उसके परमें उसके नियकी और आहा कोई कांक उदाकर नेता सकता है! यह के एक करती कोटोनीटी कटरायेगा, हमी-बेची नोत्त है कु बुक्तिया, यह करीं वायपर चौंच कावोगी। हर्गीविट शे इक्तिया, यह करीं वायपर चौंच कावोगी। हर्गीविट शे इक्तिया, वह करीं वायपर चौंच कावोगी। हर्गीविट शे इक्तिया माध्या विटास कावोगी। परन्तु भरतका विदेश जितना-जितना कारि-वरीकार्ने तरना धषा, बतना 🐧 बतना कुन्द्रनके समान व्यक्ता गया।

श्रीर तो श्रीर, नूर ही बिटे सबके बनुवर्का परान्ते की श्रीत रानेवाले, श्रादि-सिदि-सारक, जिल्लास्त्री सर्वात भरहाज भी केवारे भरतार चोट करनेने अ गुरू । वह भरताने प्रता है—

विभिन्नाममें कार्य हार समय प्रसासकः । यतदाश्वर गर्ने में आदि में दुष्यमें मनः ॥ युद्धे यमित्रमां केशस्यानस्वर्धनम् । भागा सह सामार्थेत्यं चित्रं मत्रमित्रं कम् ॥ निवुक्तः होनिमित्रेन विद्या मोदली महाचरतः । बनवाती मनेतीह समा दिन्न प्युदेशः ॥ क्रम्बात सास्यानस्य पापं कर्नुमित्रस्थानि । अक्रस्टकं मोतुनमा सामे सामानुस्थाय च ॥

(शा रा शादनाद नाइक्)

'तुम तो राज्यका ग्रासन कर रहे थे, शका ग्रामारं यहाँ कालेका क्या सतकाब है ग्राक्ते साफ साफ करो। मेरा मन विकास नहीं करता। जिन वेचारे रामके मेरा सन विकास रिताने माई भीर चीके साथ १७ वर्ष-का बनवास दे दिया है जन्हीं पायरिक सामके मिति तुम प्रत्ये सनसे कुछ पाय को कहीं स्वत्ये है। वर्षी विकायक राज्य भोगनेकी हुण्यासे जनका बच करनेके किये ही भी मुम्र इतनी बड़ी तेना केंबर कहाई कहीं कर रहे हो है?

बज़से भी करोर और बायकी नोफसे भी पैने इन सामहोंको बुनकर आएकसक अरतके कोमक अनकी क्या रुपा हुई होगी, इसका घटुनान पाठक व्यर्थ कर हों । देकी स्थानक अस्था है "एक सर्चेत्र महर्पिका परिवास्ता अरत-पर ऐसा अदुषित सन्देह !! ग्रन्थी कर जाय, धाकाश गिर पहे, पर्वत पूर हो जाईसमका दिवारों बळा वर्टे और भरत वरमें समा जार्थ । इससमय यो प्रधा परतके हुरक्षी भ्रत वरमें समा जार्थ । इससमय यो प्रधा परतके हुरक्षी प्रमा अस्ति का अस्ति को क्या एकता है ' यरत्य प्रमा, महाध्या भरत !! यह इस क्यंति विशोधकारी विपक्ति के समय भी उदीमकार हर रहे जैसे बड़ी-से-बड़ी क्यंत्रिक्ते कमाधियान हिमाकप धीरसे सह लेते हैं। उन्होंने सिर्फ इका हो करा कि—

> पनमुको सरद्वाजं भरतः त्ररमुनाच ह। पर्पमुनगनो द्वःसाद्वाचा संसचमानमा।। हतोऽस्मि यदि मामेवं मगनानपि मन्यते। (गा०रा० २१९०१४-२५)

भारतात्र गुनिकी कार्ते सुनका घरत तु.समे बात करे । बनकी धाँगाँसे चाँगू सा गये धाँग गया क्रेंब र वह सिक्ट हुनाव कर महे कि 'वहि मुनामार'—क्रि वहां सार—भी गुन्ने पेगा ही समन्त्रे हैं, तर सो क्स्ट्री किशान नहीं। में हमताप्त बेमीन सारा गया।'

साना कि साहाजने उक्त बार्ग सक्ते हरूपने नहें भी । उन्होंने समझे प्रेमण साहर बहु पूर्व मा नार्की में इसका राज निरंग दिना है, परन्तु सरको इसके जब्द भी है जिन कामानीने आणि मानके नहें के राज्ये से उसी सामानीने आणि है तिये मानित संस्था केमा सामानी है कि सा सह अगि करिन पीला से। उन से समझे है कि सा सह अगि करिन पीला से। उन से समझे है जो। महाँच सहस्ताने समझ है कह कहा है —

> व्याच ते मरकामः असारात् मरते बचः। स्वयोग्रहारामात्रः बुकं सारक्षेत्रः। मुद्दृतिर्देशकीय मानुन्ने चानुन्नेतिः।। सात्रः चैरानम्बर्धाः के द्वीकाणानित्तिः। अपूच्यं स्वांतर्वात्रात्रीं कीर्तिसनिविवेदः।। (चताः २) २०१२-१२

हे भरत ! तुम राष्ट्रंगी हो। तुममें ऐने सता रें ही चाहिए । बहाँकी मकि, हीन्द्रमांका दमन भी हमाँ का अनुगमन यह सब नुममें होने ही चाहिए। में हमाँ मनकी से सब बाउँ राहते ही जानना था, सर्द्र हां। भावों को दर करने परि तुमारी कीर्ति बानने कि है। तुमसे यह अभ किया था।

वात रहि है, हमारे क्याविमें यह परिश्न महर्गे बोज्य थी और भरत है इस परिवाद योज्य थे एरे कार्ड बोज्य थी और भरत है इस परिवाद योज्य थे एरे कार्ड बोजे अहर्प हो इस कदिन परिवाद परिवाद होने होन इस को अरतने इस परिज्ञ चरित्र चरित्र चरित्र कर्में अपना प्रणासाथ समस्त्री हैं।

भरदानके पूँचानेपर जब भरतने अपनी सब मारा का परिश्वय उनको दिया और उस समय दुस्तारेग्र स कैनेपीको उद्य सस्तन्युक्त कहा तब महर्षिन नासर्य के देवी कारवाँकी और भी क्रारा कर दिवा था। जो के एक कहा या-

न दोषेणानमन्त्रस्था कैकेबी भरत त्या। रामप्रज्ञाननं होतत्सुखोदकं मदिब्बति॥ (बा०ए०२।९२।११) हे भरत, सुम रामदनदासमें कैकेबीका दोष न समझो। समके बन जानेसे संसारका कल्याया होगा।

सरवडी परीआसींज पारी अन्त हो वणा हो सो बात स्वरूप मध्यमके साम्यस्ते जब वह सेमारावित चित्रहर-हो दो स्वरूप में हानी बही तेनाजी बज्र कड़ यौर साकार-में दटी पुजको देखकर रामने वदमपासे बड़ा कि जुस देखे हो यह किसको सेना है। इस्त्रायने पुक केंग्ने से साजाहरूक स्वरूप सरवासी सेना है। स्वरूपयने पुक केंग्ने से साजाहरूक

> शारंस सेनो सामाय वचने चेदमनवीत् ।। करिने संसम्बन्धमें: सीता च ममलो गुहाम् : सन्यं दुवय चार्ष च सरोध कनचं तथा । (ग० स० २ । १६ । १३-२४)

'धार (राम) नत्यीते काग बुका देशियो । सीता-को किसी गुकामें भेन दीनिये, कृषण चन व्हिनिये स्रीर अनुष्याचा केस स्वार हो काह्ये ।' वंगकर्ते वृंधा उठता देनकर वहाँ रहनेदाके स्तुव्योका बता शीम काग जाता है, हसीते कास्त्रयोत भाग सुमानको कहा है ।

जब रामने कहा कि जूत यह वो देखों कि यह सेना है किसकी, एव धरकती हुई सारिकों रार प्रेपारें मारें करूप योचे — मारात होता है कि राज्यानिनेक हो आलेके यह घरने राज्यको निष्करण्य बनातेने निनित्त केनेतीका देख मारा हम योगोंको आरोने कियो आर वह है। राज्यें सोदिराकों पत्त है। पाज यह बनारे कान्ने मानेता। नित्त भारके कार्या इतना दुःख निष्का है, जसे में सात सामई मा। नित्तके कार्या घरप कांने निक्तरस्थ्ये पत्त है। अराके वयमें कोई योग नहीं है। अपने दुशमें करकारीको आरोने याप नहीं कार्या राज्यकी सोनिक केनेती सात हैनोंकी कि उतकार पुत्र में होगा करी अकार स्वार्थ के राज्ये हैं साज प्राणी यहे भारी पापको हुक होगो। सात नेतासिंद सराका वय करके में बादुशकायसे जवाय होर्कमा है। उतकार

्ष्टरमणको क्षोधान्य देवकर रामने उनका मिजान उत्तका किया और भरतको एक मौर क्षप्ति-वर्शका होते होते रह तथी। राम बोजे कि 'देशो उच्चाया, जब मरत स्वयं कार्य दे तो फिर पतुष-पाय और डाज-सजवारकी स्वा आवरस- कता है। जब मैं पिताके सामने राज्य दोवनेकी मितिया कर पुका तब फिर भारतके नवये कताक्रित राज्य लेकर मैं बया कर्टमा है में बाहू तो यह समझ पूर्वी हामें हुक्तें। तक्तों है, परना मैं व्ययके द्वारा स्वासन भी नहीं पाइता। जो हुल शुक्ते तुम्बारे, (अन्मावके भारतके और शासुमके विना मिलता हो यह माम हो बाय । मुक्ते उसकी स्वेशा नहीं।

'अच्माय, मरल किसी दुर्मायसे नहीं चा रहे हैं। उन्होंने अब मेरे मुखरी जीर सीतांके बनवासकी बात सुनी होगी तब रहेद बीर ग्रोकरो स्पाइंक हो उठे होंगे। वह हमलोगों-से मिकने चा रहे हैं, किसी झुरी गीपतसे नहीं। माता कैकेगोरे समसक होकर पिताकी प्रसक्त करके भरत सुन्ने राज्य देनेके विचारसे चा रहे हैं। असरके मनमें कभी हम-कोर्रावंडी इसरे कहाँ चा सकती र बच्च उन्होंने कमी हम-कोर्रावंडी इसरे हमें चा सरकती र बच्च उन्होंने कमी हम-कोर्य पाय करों वह रहे हैं। 'वसरहार, मरतके जिये कोई कुन्यारण य कहना। वनके प्रति कहा हुआ द्वारा राज्य ग्राव्य प्रमा कहना। वनके प्रति कहा हुआ द्वारा राज्य ग्राव्य प्रमा कहना। वनके प्रति कहा हुआ द्वारा राज्य ग्राव्य प्रमा कहना। वनके प्रति कहा हुआ द्वारा राज्य ग्राव्य प्रमा कहना। वह राज्य कि स्व से वार्ष कह रहे हो तो मसरको सामे हो, मैं उनसे कहकर राज्य हुम्हें दिशा ग्राह्म । वहि मैं सरतने कहुँ कि सम्बद्धको राजगरी दे दो तो यह निकब है कि वह 'बहुत चच्छा' के सिवा चीर इस

शमकी इस बार्वोने कफायको पानी-पानी कर दिया । वह सम्बक्त मारे अमीनमें गढ़ गये । फिर उन्होंने भरतके विश्व कमी श्रीक्ष न उठायी।

बधर बदमव्यका तो ऐसा भाव या भीर इधर भरतको देखिये कि बनकी स्था दशा थी---

> मानव रामं द्रथपामि कदमणं वा महावरःम्। वैदेहीं वा महासामां न मे शान्तिर्मविप्यति।।

> > (शा० रा० २। ९८। र)

अरखको बरावर बही रट बी कि जनतक में राम, बरकाय बीर सीताले हरीन न कर हुँगा तबतक मेरे ध्याहुत हरूव-को जानिव नहीं मिल सकती। नित भरतके स्वरूपन्यमं बस्माब समकते थे कि वह हमें मारनेकों था रहे हैं, पृत्र, प्याहर बाएक करके राजां भारत हमारा वय करनेके जिये मेरा खेकर यहाँ पहुँचे हैं, यहां सरत जब रामके सामने गहुँचे तो जनकी क्या थी— परन्त भरतका चरित्र जितना-जितना श्राधि-धरीधार्मे तपता गया, उतना ही उतना कुन्दनके समान दमकता गया।

और तो और, दूर ही बैठे बैठे सबके हृत्यको प्रसानेकी शक्ति रखनेवाले. ऋदि-सिद्ध-सम्पन्न, त्रिकालदुशी महर्षि भरद्वाज भी येचारे भरतपर चोट करनेसे न चुके। वह भरतसे प्रस्ते हैं-

> किमिहालमने कार्यं तब राज्यं प्रशासतः । पतदाचक्त सर्व में नहि में शुध्यते मनः ॥ यमित्रप्रं कीसत्यानन्दवर्धनम् । भाता सह समायोंऽयं चिरं प्रवासिता बनम् ॥ नियकः स्रीनिमित्तेन पित्रा बोडसी महायशाः । बनवासी भवेतीह समाः किल चतुर्देश ॥ कविश तस्य द्वापस्य पापं कर्तु मिहेच्छिति । अकण्टकं भोकुमना राज्यं तस्यानुजस्य च ॥

(वाक राज शहलाह लाहक)

'तुम सो राज्यका शासन कर रहेथे, मला तुम्हारे यहाँ भानेका क्या सतलब हिमुक्तले लाफ लाफ कही। मेरा मन विश्वास नहीं करता । जिन वेचारे रामको स्रीके कहनेसे हुम्हारे पिताने आई और स्रीके साथ १४ वर्ष-का बनवास दे दिया है उन्हीं पापरहित रामके प्रति तुम चपने मनमें कुछ पाप तो नहीं रखते हो ? कहीं निष्करटक राज्य भीगनेकी इच्छाले उनका क्य करनेके खिये ही ती द्भम इतनी बड़ी सेना जेकर चढ़ाई नहीं कर रहे हो ?"

वज्रसे भी कठोर चीर वायकी नोकसे भी पैने इन ग्रन्दोंको सुनकर आनृवस्तव भरतके कोमज मनकी क्या दया हुई होगी, इसका अनुमान पाठक स्वर्थ कर लें। कैसी भयानक भवस्था है ? एक सर्वेज महर्षिका पवित्राला भरत-पर ऐसा अनुचित सन्देह !! पृथ्वी फट जाव. आकारा गिर पड़े, पर्वत चूर चूर हो जायँ,समस्त दिशायें अल उटें चौर भरत उसमें समा जायें। इससमय जो दशा भरतके हृदयकी हुई होगी उसका अन्दाजा कौन खगा सकता है । परन्तु धन्य, महात्मा मरत !! वह इस चति विश्लोमकारी विषक्ति-के समय भी उसीप्रकार हर रहे जैसे बड़ी से-बड़ी खाँधीको मगाथिरात्र हिमाखय धीरेसे सह लेते हैं। उन्होंने सिर्फ इतना ही बहा कि-

परमुका मरद्वात्रं भरतः प्रत्युनाच ह। पर्वयुनयनो दुःसाद्वाचा संस्वमानया ।। इतोऽस्मि बदि मामेवं मनवानपि मन्यते । (बा॰ स॰ श९०i१४-१५)

सरहात गुनिकी बार्ने सुनका मत उद्धे । उनकी धाँगोंमें चाँम मा गये भी वह सिर्फ इतना कर सके कि 'बरि 'माता' दर्शी बार-भी मुन्ने ऐसा ही समन्ते हैं,त कहीं ठिकाना नहीं । में हतमान्य बेमीत गा। या

माना 🕏 भरद्वाजने उक्त बार्ने सन्ते 🦟 थीं । उन्होंने रामके प्रेममें बाबर वह शाब ने हमका साफ निर्देश किया है, पान्ड न्त्रदर थी है जिस भासानीमे महर्षि मताहे सकते थे उसी वासानीये भरवडे विने मान परस्र क्षेत्रा सम्भव महीं था । 🕠 यह अति कडिन परीक्षा थी। बद वे इसमें ए महर्षि भरहाजने प्रसन्न होकर करा कि-

ख्याच तं मरद्वानः प्रसादाद् भरतं हरः। त्वय्येतलुदनन्मात्र मुकं राहरतंहरे। गुदनृतिर्दमश्रेव साधूनां चानुराति॥ जाने चेतनमनास्यं ते हडीकाणमाति अपुच्छं त्वां तवात्मर्थं कीर्तिं समीवर्शनः। (410 E 6 | 40 | 50 g)

हे भरत हुन रहुर्दशी हो। ही चाहिये। वहाँकी मक्ति, हश्यियोंका का अनुसमन यह सब तुममें होने ही वारि अनकी ये सब बार्ते पहलेसे ही जानता 🦖 आवोंको दद करने और तुन्हारी बीर्ति शारी तुमसे यह प्रश्न किया या।

बात ठीक है, हमारी सम्मतिमें वर बोम्य थी और भरत ही ... जैसे महर्षि ही इस इस तो सरतके इस पवित्र चरित्रका कार्य श्रपना धन्यभाग्य सममते हैं।

सरदाजके पूँ छनेपर जब भारतने का परिचय उनको दिया भीर कैकेपीको कुछ सत्त-सुद्ध कहा हव . के देवी कारणोंकी शोर भी इशारा हर ति।

ं न दोवेणावगन्तस्या इंडेबी भाउ तर साफ कहा था--रामप्रकाननं कतत्त्वस्य (41.00.41 etil

ा है भरत, तुम रामवनवासमें कैकेबीका दोष न समग्री। त्मके वन जानेते संसारका कल्याया होगा।

ा भरतको मोशासोंका परी चन्न हो यथा हो सो बात मामान स्वाप्त प्राप्त के सामान स्वाप्त है अहर हिन्द १९ पात पहुँचे को इतनी बही होना कि सन्द्र को सामान १ पात पहुँचे में इतना बही होना के सम्बद्ध के सामान १ प्राप्त के देशकर राजने करमयाने कर है के सामान १ पह किसाने से ता है। जरसयों पड़ के सामान स्वाप्त सामान स्वाप्त की सामान है लोके सामान स्वाप्त के सामान स्वाप्त की सामान सामान स्वाप्त की सामान सामान

है शहांस सेनां रामाय वचने व्यदमनवीत् ॥ है अपने संशममतायः सीता व्यमनवां मुद्दाश् । सन्यं कुरुव वार्ष व शरीक्ष कवने तथा ।

(बा० रा० २। ९६। १६-१४)

'बार (राम) काशीसे काम इस्त प्रीविधे । सीठा-किसी पुरुष्तें भेत्र प्रीतिधे, काम पहन सीतिये पतुष-बाय डोकर तैयार हो बाइये । 'बंधवर्स पा र देखकर वहर्ष 'इतेवाखे अञ्चलकां पता गीत्र क्या र देखकर वहर्ष 'इतेवाखे अञ्चलकां पता गीत्र क्या र दे, इसीसे क्रसम्बने काम इक्षानेको कहा है।

जब रामने कहा कि ज्रा यह तो देखी कि यह सेना इसकी, तब धवकती हुई चारिकी तरह कोचमें अरे रय बीचे--'मादम होता है कि राज्याभियेक हो जानेके घपने राज्यको निष्करटक बनानेडे निशित्त केटेयीका पृत्र र इस दोनोंको मारनेके किये भारहा है। स्पर्ने वेदारकी ध्वजा है। भाज यह इसारे काव्में भावेगा। । भरतके कारण इतना तुःख मिखा है, उसे में चाज मूँ गा । जिसके कारण जाप जपने पैतृकराज्यसे ध्युत हैं वह राष्ट्र (भरत) हो अवदय ही वधके योज्य है। उसे घभमें कोई वीप नहीं है। अपने प्रशने अपकारीको नेमें पार नहीं सगता । राज्यकी सोधिन कैटेवी साथ गी 🎬 उसका पुत्र मेरे द्वारा उसी प्रकार मरोदा बा है जैसे कोई मख शामी किसी पुछको जोड़-मरोड़कर है। याज प्रची बड़े भारी पापसे मुक्त होगी। आज सिहत भारतका वध करके में घनुववाणसे उन्हरा रंगा ।'

रूप्तायको कोयान्य देशकर रामने उनका मिश्राय हवार ।। भीर भरतकी एक भीर क्रमि-मरीचा होते होते रह ।। राम भोजे कि 'देशो रुक्ताय, अब भरत स्वयं कार्य ते फिर पतुष-पाच भीर डाल-सक्षवास्की स्वा जादरब- कता है। वस मैं विवाके सामने शाख्य बोवनेकी प्रतिशा कर पुका तब विश्व मातके वधने कत्निहत राज्य लेकर मैं वया कहना मैं माहि हो यह समल एव्यी मुझे दुक्ते म तवाई दे एरन्तु में वधनेके हाला ह्वासन भी नहीं वाहता को सुख सुके हुप्सारें, (कष्मावके) भरतके श्रीर शहाने विना मिलता हो यह सक्त हो आय । मुखे उसकी श्रेश म नहीं।

'जस्मज, मरत किसी दुर्मायसे नहीं सा रहे हैं। उन्होंने जब मेरे मुखारे चौर सीताले वनकासकी सात सुनी होगी तब स्देह बीर ग्रोक्शे म्याइन हो वटे होंगे। वह हमजोत्तें से निकले का रहे हैं, किसी झीर नीपताले नहीं। माता कैनेताले इत्तर का होकर पिठाको असक करके मरत सुन्में राज्य देनेले क्वियासे या संक्रियों। क्या उन्होंने कभी हमते कार्यों के क्वार की हैं। सरत कर मनते कभी हमते खाद कोर्ट काल की हैं। किर चान सुन्दार सन्दर्भ ऐसी राज्य चौर अस क्वा उन रहे हैं। जकरहार, मरतके जिये कोर्ट क बुन्दासल न के ब्याना। उनके मति का इक्ता हमतारा चन-शहर शुक्ते हागेगा। चिर राज्य के किये हान ये वार्तें कह रहे हो तो मत्त्रको चाने से, में उनसे कहकर राज्य हैएरें दिशा होता। वहि से सरतके कहकर राज्य हैं है का स कहते।'

हामकी इन वार्तोने खन्मवाको पानी-पानी कर दिया। वह खन्नाके मारे जमीनमें गढ़ गये। फिर उन्होंने भरतके विरुद्ध कभी व्यास म बठायी।

उधर सदमधका तो पेता मान या भीर इधर भरतको हैसिये कि उनकी क्या दशा थी---

> यान्त रामं द्रवयामि रुक्मणं वा महावरम्। वैदेहीं वा महामाणं न मे शान्तिनीविष्यति।।

> > (२० ४० २। १८।६)

अरलको बरावर यहाँ रट थी कि जवतक में राम, क्षणाय और सीताके रार्जन न कर लूँगा तबतक मेरे स्वाहुल हरूप-को जानिव वहीं निव्य सकती। तिन सराठ सामक्र बच्चाब स्वाब्ज वे कि यह हमें आरनेडों चार रहे हैं, पूत्र, चामर वाला करके राजा जात हमारा वच करनेडे लिये सेता क्षेत्रर करों गुड़ेवे हैं, वही सरत जब रामके सामने गुड़ेवे हो उनकी क्या रहा थी-- 28

जटिलं चीरवसनं प्राञ्जलिं पतितं मुनि । ददर्श रामो दुर्दशं मुगान्ते गास्करं गया ।।

(बा॰ स॰ २।१००।१)

दुःखामितष्ठो मरतो राजपुत्रो महानकः। उनत्वार्पेति सकडीनं पननोवाच किंचन ॥

(या० रा० २। ९९। १८)

जदावनकाशारी, पर्यश्नमयन, बाह्यक्वर, चीवपरेड, दीन, हीन, मलीन, हुःत्वलं व्याकुल मत्त पृक्ष कपराधीकी मीति हार जोड़े पबरात तथा काँगते हुए रामके पास पहुँचे चौर पहुँचत गर्डुंचने हो महिंदन होकर उनके चरावाँपर निर परें। इस समय अस्तके आहो. हा आपें के कांग्रीसिक

धीर कोई शब्द नहीं निकल सका । रामने शपटके भरतको उठाया, मेमपूर्यक गोदमें विद्याया धीर हसके बाद जो जो वातचीत हुई वह सभी जानते हैं। व्यार इसके बाद जो जो वातचीत हुई वह सभी जानते हैं। वब भरता किसी प्रकार राज्य सेनेको राजी ज हंग तो

रामने इतना मंजूर किया कि-

अनेन धर्मशीलेन बनाठात्यामतः पुनः । आत्रा सह मविष्यानि प्रीयस्माः पतिकत्तमः ॥

भ्रात्रा सह मनिन्यामि पृथिय्माः पतिरुत्तमः ॥ (श • रा • २ । १११।११)

'बनले खीटकर में धर्माला आई मारक साथ राज्य स्वीकार करूँगा।' इचर खारियोंने देखा कि रासके करर पीरे पीरे भारका रंग चा रहा है। जहें मण हुआ हिं करीं हमारा वर्डेन्य दी नह न हो जाय। इस काल हुसी समय चरिखोंग भीकों मुद्द पड़े धीर डक्टोंगे भारको बद्दा कि 'बस हो नुका, धाय और ज्यादा जिल्ला करते। बदि हुम चरने रिशाको सम्बादी बनाये रहता चाहते हो हो। बानसे हम धीर पर निक्रक राज्य कर क्षेत्रा।'

> हरमनुभागः थितं दस्तत्रीस्वेतीयः । मार्ते सम्मार्गुटनित्युन्तः संग्वा दकः ॥ मर्को समस्य नास्यं वे स्मिरं नदस्यो ॥

> > (या॰ रा॰ १। १११। ५)

वहि भारत के कहते में आकर ताम उसी समय शास्त्र क्लीका का लेने तत तो किन तामके द्वारा शास्त्रका वय कारकी को क्लीम कावियों और देवनाओंने निकास सैवार कारकी को क्लीम कावियों और देवनाओंने निकास सैवार की की, वह सब क्ली मिड काती। जिला किये ने द्वारक्से राम-सक्ताक्त माँगकर सुवाह, मारीच, वार काविका शिकार करावा था, दिव्य सक्त और वजा की बजा कादि विचाएँ सिलायी थीं, त्रसके जिये अनकारी

ही सीताको वनवासकी थिया ही गयी थी, मागे हैं बिरे कतास्य कादि व्यक्तियों और हन्द्र कादि देवतामीने प् बढ़ी पेशवन्त्रियों कर दक्की भी वे सच संस्वे नट-मर है जाते, इसीबिये राम-भरतके इस संवादमें क्यिने

श्रधानक षट पढ़े और भरतको उन्होंने रोक दिवा। यह सब कुछ होनेपर भी भरत भपनी हरते गर्री हरे उन्होंने कहा कि मैं श्रकेता हवने यहे राज्यकी रोक्या

नहीं कर सकता । सब प्रजा धापहीको राज कराय चाहती है। बाग हुस राज्यको लोका करके हरको सार्य कर दीविये । मैं चाएके सेवककी हैसियतसे आपडे करार-के बोटिनेतक काम चलाता रहूँगा। हुस्सी मार प्रतार इसी घारायये सुवर्ष-गहुकार्थ सेवार कराड़े करने कर

खेते यथे थे, वहीं बन्होंने पेरा की और कहा-अविरोहार्यपादान्यां पहुंके हेममूर्णिते ! यते हि सर्वतीकस्य योगाहेनं विवास्पतः !!

सोऽधिरुद्धः मरन्यागः पादुके स्पयमुच्यः व । प्रायच्छरसुमहातेजाः मरतायः महासने ॥ (वा०रा० १ । १११ । ११४ ।

हे जार्य ! जाप इन लहाउद्योंको पहनिये। यशिका की मतिनिधि होकर जापका राज्य सम्बार्जेनी । रार्वे

शक्त पहनीं चौर किर उतारकर भरतको है हैं। स गढुके संज्ञास हामे नचनमक्षेत्। चतुर्देश हि नचींन ज्ञाचीरघरो हृद्दस्था परस्कृतासानो चौर मनेचे शुनन्त।

तवागमनाकाङ्ग्रन् वसन् वै नगराहि।। स्व पाडवोन्नेस्य राज्यतन्त्रे परनाप। चतुर्देशे हि सम्यूणे वर्षेत्रहोने रसूचन।। न प्रवसामि यदि स्वंतु प्रवेशसामि हुतानम्।

(माक राक १। १११। ११^{०१}

अरतने पातुकार्मोको प्रवास किया और राप्ते । कि 'बीरह वर्गेनक में एक बनवासी ताएमके समाव चीर-वारी दोकर कारते बाहर रहूँगा और आपके प्रतीकार्मे कव-मुखसे ही बीवन निर्वाद करूँगा । पारुकार्याको राजसिंहराजन्य स्थापित करते समस्य राज-ग्रासनका वार्य, एन्ट्रॉडे दियो, १४ वर्गतक करूँगा। चीवूट वर्ष वर्ष मेरीनहें बार एवडे से दिन वर्षि सुके आपने वर्गने न मिडे तो यह निजय जानिये कि उसी दिन में अध्यक्ति प्रिमें मेरीर करूँगा। वित्र चापको मेरे हुल पापी गरीस्के इर्गात मेरी स्थी।

धन्य भरत, और धन्य उनकी शतिजा । सरतकां धरित संसारमें शहितीय है। इतिहासमें ऐसा दूसरा उद्दाहरण ही नहीं। धन्य हैं राम जिन्हें भरत-जैसे माई-मिजे । सरतका परिच चरित्र भारतके सिये, नहीं नहीं, नसारकें जिये—क्योतिःक्यमका काम दे सकता है।

'स पहुके ते मातः स्वतंकते

महोक्जनते संपरिगृद्ध वर्गदित्। प्रदक्षिणं चैव चकार राध्यं

चकार चेवात्तमनागमूर्याने ।।

(बाक राक २।१२२।३९) ततः शिरासि करवा तु पादुके नरतस्तदा । छत्रं वारयत क्षिप्रमार्थपादाविमी नती ।।

(बा•रा• १।११५)

राजनाय च संन्यासं दरनेने बरपादुके । राज्ये चेदमयोध्यायां धृतपाका मनाम्यहम् ॥ (ना० रा० २ | ११५ । २०)

भरतने चातुकार्ये की, उन्हें करने किरार रस्ता, राम-की महर्षिका की मीर उन पारुकार्योको हार्योगर रखनार । कीर्योको काला ही कि इन पारुकार्योगर तुन पारक करायो । इन्हें भरवान् रामका मितिकि समस्ते । वह रामकी करोहर है । तिस दिन ने पारुकार कीर सम्योग्याका राज्य-को भेरे पास चारिहरू समान ग्रापित रहेंगे----र्मि सम्बद्धन् कीरामको बाचिस हुँगा उसी दिन क्यनेको पारते हुक समहुँ या ।

सरतकी इन वार्तोपर टीका दिण्यों करता इस सनावरणक समझते हैं । देश तो पहले ही कह चुके हैं कि अततक महित चरित केत के चौर निर्माल मिलका प्रमानन महानामर है। दिशुद्ध चार्मिकराक्ष साकर है। यहाँ किसी मीतिको स्थान नहीं। वहाँ तो सरतका, पवित्रता स्त्रीर निर्मेकराके साथ पवित्र मेम चौर विशुद्ध अधिकी धारा बहती है। इस इस केवलो यहाँ समझ करते हैं।

लक्ष्मण श्रीर भरतकी भक्ति

(टेसक-भी 'मध्यहम')



बरव ही अति हाम मुहुचेंने क्षीगोस्तामीः प्रकलिदासकीने समयित-मानसकी रचना बारमम की थी। आन वहता है इंसवादिनी, बीदापादिस माँ सरस्वतीको वस समय पूर्व सावकाश था। मी निश्चित

थी, प्रकृतित थी, जाननोत्मत थी। विदेशा-कारकी ताई करते इंदर-करियमें वह बी ह्या रही थीं। जावसकी वाइ इंदरने उस्ता करते थी। तान-दावह नेवा कंडतित हो हो रही थी। माँ बाप दी मा रही थी, क्या रही थी, ज्यार रही थी। अपने रास अकला काव-प्रचाली और पुष्पाद देल डीटा-मिट, पर्च-कारक प्रवासकृत कारता इंदे। गोलागीगीक 'उर-गतिर' में कावन माँ स्वतान रस्त्रमुद सावने लगी। या यो कहिये कि बीटामा 'उनके उप-मिटा' सावनित नेवा थी कहिये कि बीटामा 'उनके

बानी जू के बरन मुग, सुबरन-कन परिमान । श्रीहति-मुस कुकक्षेत्र परि, होत सुमेक समान ॥ अव चा सिजसिजा। सच्छान सुमेरकी साथि हो गयी। असंच्य रक्षणानि उनकी रचनाके भीतर भर गयी। जिन्हें 'स्रामी सजन सुमति कुदारी लिये' आजतक खोज रहे हैं, और परिवसने खोद खोदका निकार रहे हैं।

इनकी रचनाकी देखकर साहित्य-सिक, अर्मण, कि, कि, जिल्ल खिना हो गये और हो रहें हैं। भूरत्यकर साहित्य-कार्यक प्रकार कर साहित्य-कार्यक स्वाद्धिय कर साहित्य कर साहित्य कर साहित्य कर साहित्य कर साहित्य कर है कि संसारों जितने अपयोंकी रचना हुई है उनमें अर्मन-कार्यकर 'गिरो' का 'चीरू' और गोस्सामीजीकी रासायक, ये यो हो अपयोंके हैं कि हमपूक्त एक्ट पाइने ने नुत्य इतना जान रूगम कर सफता है जितना तीकार प्रकार के साहित्य कर सफता है जितना तीकार प्रकार कर सफता है तिवना तीकार प्रकार के स्वाप्त है रामचित्र कर्म-अम्बन्धमाने चार्ये ही रामचित्र कर्म-अम्बन्धमाने चार्ये ही रामचित्र कर्म-अम्बन्धमाने चार्ये रामचित्र कर्म-अम्बन्धमाने चार्य रामचित्र कर्म-अम्बन्धमाने चार्ये रामचित्र कर्म-अम्बन्धमाने चार्ये रामचित्र कर्म-अम्बन्धमाने चार्य-अम्बन्धमाने चार्य-अम्बन्य-अम्बन्धमाने चार्य-अम्बन्धमाने चार्य-अम्बन्धमाने चार्य-अम्बन्धमाने चार्य-अम्बन्

कवि, ज्ञानी, विज्ञानी, जक, रतिक, क्रिशासु सभी इसके समीप जावर जपना अमीष्ट पाते हैं और कृतार्य हो जाते हैं। धीमोग्यामीतीने में। इस अधून्य मावाडी श्वना 'काना-सुसाय' वी थी। दिन्तु हुगमें अस देसे सफर हुए कि भात यह मत्याय, कोही सन्ताम हुएगोंकी मुग-मान्ति दे रहा है। किसने भूने-भरहोंकी सम्मार्गर का बहा है। स्तार्थकों कि दिरेगा है। प्रवाशिक क्षेत्रिके-सक्स्यूर' सुक पहुँचामा, क्यांतिक हुएको मीन्त्र करना है। विमुगोंकी क्मान करना है। यह मने वह है—

जं यर बचा स्पेन्हः सम्प्राः। बरिवार्षि गुप्तिवृक्षि समुद्रि सम्बद्धाः। वृक्षि सम-चरमः अनुसदीः। बरित्सर-महिन मुसेररः सर्गः।।।

स्तेर हे साथ पाना-गुनना और र जेन हो बर स्थायना-रित क्या मिन, वेदा चार है। दोनों मोक दम कारेंगे। दिन्दी माय-कारियोंमें मादे वे सायु हों चा पुरुष, काल को धर्म-कर्म, सल्दास्त्र जाना, सण्टिया क्यार, पूल-वार तेया जाना है उन परका जरेंक इस शासवस्त्र हो है। यदि शामायन नई होनी तो पनानन-वर्मने बचा परिचिति होनी, यद बदना कटिन है।

कन्यायकारियी, मोहहारियी, अमनारिती, शान्ति-प्रदायिमी, भानन्द-बर्खिनी, भक्ति-भुक्ति-हाविनी हामाबद्धके परन-पारनपे जो तुम हो खाय, 'रन दियेण जाना मा नाहा ।'

हम अन्यकी एक ग्यूपी और है। मालसमे सेकर पविषत तक हुए के पत्रमेंसे समान कानन्य पाने हैं। वह ऐसा सुधा-न्या सामन्य हुन पत्रीवन्य कोई एक पूँट भी पी क्षेत्रपट बदाना ही प्यानियर होता है जिनका ज्याप्य परिवद कुरके 'इस्स परस सक्षम कर पान' से होता है। हैरा-विदेशमें किनने विद्यान्य परिवत ज्ञानी ऐसे हुए हैं चीर हैं, जो खातन्य हुन्तर परिक्रम और खदापूर्वक कथ्ययम बद बरहुछ हो रह गये हैं।

यदि शामाययहै विषयमें विकास के माथ दिस्ता जाय तो एक प्रान्म पोधी तैयार हो रूकनी है। गोशासीजीने हमे समाप-रुपमें दिस्ता है। एक एक घोषाहुँको लेकर विकास करते थीं। उसका माध्य दिस्तनेश्य सैकों पक्षे रेंगे जा सकते हैं, किन्तु हमकी व्याव्याका काल नहीं हो सकता।

'क्र याण' के पारकों के चित्तविनोदार्थ मानसके ब्राधारपर नार्या श्रीमरानतीके अधिकातके सम्बन्धमें मकारा कार्यनेका यस किया जाना है। अंगोरवासीतीन

में एक एक भावका उत्कृष्ट उज्ज्वन उदाहरण दिया एकम् उनका रूपिनार परम शुन्दर चित्रण किया है। य जाय प्रमामाके साहार तथा तिराहा करहे हुन कर जीहामाधिरोहाह तहके साह तीन द्रमाख सारत है। एक है ऐरिक्कृदिके धनुसार धाने हररोहे हुन जीह हुनाही तिहा, त्या, निव्द कार्य के कर को कर कर बचके धनुहुद धाने दिखार तथा धारायों हारों प्रमास्त्रास्त्रा परिमार्थित तथा संस्कृत कर प्रमासे प्रमास्त्रास्त्रा परिमार्थित तथा संस्कृत कर प्रमासे प्रमास्त्रास्त्रा हुनाई बहाइस्त सामान्यति हुन्तर्से प्रमास्त्रास्त्रास्त्रास्त्र कराइस्त सामान्यति हुन्तर्से प्रमासित्र कर्मक्ष बहुत्रास्त्र धारास्त्र हुन्ति क्ष्मित्र वीत्रिकेत धारोधी बहुत्र क्ष्मित्र क्षात्र हुन्ति क्ष्मित्र क्ष्

ेर्डरपर अंग जीव अधिवासी । चेतन अस्य सदय सुन्धरी हो

नीमता है कान-पुरिका सम्बन्ध । जिनमें सैंत सारेटें स्वयान्य दे पूर्ण स्वी सात्वा की सावता है कि सै रंगे 'जनावर रुपाति स्वयान्य हैं। और पूर्व स्वकादम्बन्ध स्वयुक्त स्वयादि है। सावाडे क्यामें प्रता दरनेटें सान वा स्वयान्य कोई जगाई रमना नहीं चारता। वर्ष में नावा नहीं जोहना, वर्ष उनके सान्त्रियांकी पूर्व हैं द्वारा है। यदि उनका होना सात्वा भी है से स्वरोध उनमें सबस, तूर, स्वतन्त्र आवता है। गोस्वानीमी सरें

'सी मायावन मयट गुमाई । बँध्यी कीर मरकटकी नई।। जड़ चेतन दि प्रत्यि परि नई।। यदपि मुत्रा सूट्य कटिनई॥'

किन्तु परम पर्वे आह करने है दिये, कार्य आर्थ बीयनको रुपर्येक बनानके नियं यह निजान कार्यय है कि बीय प्रमुक्ते नाथ कोई एक सरस्य बीयहर उर्डमें और बनावेंसे प्रमुक्त हो बाय 1 स्त्रत, पिनत, प्रमुक्त बीयनहारा दशको युष्टि करें। क्रानेक मार्थोंने स्वयं है। बारस्यमाय भी हैं। आरोमें ये दोनों प्रधान मार्थ बाउँ हैं।

श्रीललनखाटका मुचुके साथ रूल्यमाव भीर श्रीमार-जोका द्वासमाव था। "स्वल्य' में "मंत्रपती" ने मेरे हैं से इस्में 'श्लीकाइं' में उनका हूँ, यही भावनाएँ वहवान रही हैं। दूसरे माबाँके खतुसार सल्यमान्में मो सेना-मां वा रहता है। वर्षोंकि मित्रका प्रधान श्रष्ट सेवा ही है। वा दूसमें श्री था 'श्लीक स्वला क्रांमना-मात्री' किन्दु हैं ने माखुर्य तथा प्रोमकी प्रधादना श्रपिक होती है। इस मार्ने देखांकी सोर सण्डम च्यान नहीं लाता। क्रत्युर पृक्तीं मात्रा बहुत बड़ी रहती है। यह सक्वमान अधिक शुद्ध एवं निकास है। माधुर्य तथा मेसकी मात्रा जितनी बहती है स्थापड़ी मात्रा भी उसीके चतुरुण अधिकाधिक बढ़ती जाती है। त्याग एवं कट हुस मारके मात्रिकको विचित्रत नहीं करते वर्ष उसके आनन्दको उस्लोच्स बाग्या करते हैं। प्रमुने उद्यासरेहके मादेगानुसार नेवामें सीन रहना, जो मित्रा वाय उसीमें सन्तीय करा— इस मानका उपासक हसीको अपनन एकसाय कराय— चस्स मानका उपासक

परमाणा पूर्व जीवासाके द्वार स्वरूपके विवाहसे वह स्वरूपके स्वरूपके से स्वरूपके स्वरूपके कहा है 'ख इन्यां स्वृता खावा हमाने वह परिश्वाकों (१८११६०) इस देहरूरी बुध्यर सुन्दर परावाले हो विवहस वृक्त काम सलाकी मंदित बार करते हैं 'यहाँ हो विवहसमंद्र परावाले स्या जीवासाका हात्य है। इस्ति रिवह होता है किओत तथा महासाम हात्य है। इस्ति एक्स प्राच्या के स्वरूपके हमा प्रीविक इसका सुन्तर मुद्दी होता, यह इस और इसका प्यान ही आता सीत यह महाचि हो होती है ।

जीन दो प्रकारके दोते हैं, एक निल्युक्त और दूसरा स्मार्थ (निल्युक्ति) सपने नित्र करकरणां जान स्वा-स्मार्थ बना दहा है। यह मनी पहले कथाने विकटित होता।साधारचाने दर, मध्यान तथा शादुरीशनहारा सहकडा जान होता है। तस्त्राच्यत सपने स्वस्थ्ये किया हो जाता है, जिससे करान देविक जान काला दहा है।

भीजवनय तथा भरतजी प्रथम श्रेयोके जीवोंमें हैं। भतरव---

भवपृव---

'जो आनन्दितन्यु सुस्ररासी । सीकरसे वयटोक सुपासी ।। सो सुम्रथान राम अस नामा । असिङ होकदायक विद्यामा ॥।

---जो भगवान् हैं, उनके साथ मीलसमझास घपना सच्य मावका भट्ट राज्यन्य बनाये उसते हैं। इनका यह सन्वन्य भगदियालका है। इसीसे इसके विकास होवेलें इन् विकास नहीं सना। और----

'बारहिं ते नित्र हित पति जानी। राउमन शम बारन रति मानी ॥॰

—- वृतस्य यह सम्बन्ध भागतक बता रहा। युक्त श्रवहे विदे भी काल भागे कृष्टेरसी प्रकार कही हून । उनकी संसाने विपक्षित नहीं हुन । जिसका परिचार वह हुम्य कि दस भावतालें गरीर भाग्य करने के कारण आक्र कोई विन्ता न हुई । किसी मध्यक्य मानसिक कुन्स नहीं हुआ । सरकारके समीप रहकर उनकी रुपिका पालन करना ही इनके जीवनका प्**कमात्र खच्य रहा है । इस सन्ध्यसे यह** कमी अष्ट नहीं हुए ।

सरीर धारण करनेके कारण ही अप्येक मनुष्यमें कोई- नकीई हुर्बेलवा प्रयद्ध ही रहती है। क्यांकि काल, क्यो,
रहतीय, पुण तथा संसमें-बर जीन विदर्श ही काम, कोण,
रहतीय, मोह धाणिके स्कोरोंमें वहा रहती है। जिससे निस्की
सात्रा प्रधिक-रहती है, वह उसीके प्रमुख्ता सोभी, कोभी,
प्रावि विद्यायवाँसे विद्युपित किया जाता है। मन्तमें भी
ये दुर्बेलवाएँ एह जाती हैं। क्योंकि यह श्रीवणा सहत क्यान है। किया सक प्रयद्ध हैत दुर्बेलवाणे भी महाके
ही कासमें स्वामात है। ध्यक्त भी यह सहत स्वमात है।

श्रीलक्यां सरोप शेषके और होनेके कारण सीससे घर रहते थे। कोषकी साता हुनमें मज्ज थी। किन्दु सारी रामाच्या देवनेसे जात होता है कि हुन्होंने यन देव क्यों किसीयर कोष नहीं किया। बारूर्च भाक होनेके कारण हुन्हें प्रमुखी होक्कर विकक्ष कोई रिक, शासका, वासना यो हो नहीं और जब जाप कारा-निरास्तकी परिपिके बारद हो थे जब हुन्हें कोष हो क्यों होता, किसीयर घरने बिद्धे सीम्बर्स है क्यों है आए दो मुझे केवब बादानाम् बे, कक्के प्रतिविध्यनस्थय थे। यही मक्का स्वस्य है।

अपने जिये हो नहीं, पर जब कहीं या कभी हारें जान होता पा प्रप्यता अस हो जाता था कि कोई महुके मित्र जानमानपुष्ककुष कर रहा है जपना कर रहा है तब जान उच्छ पहने थे। याजानप्रका विचार इनके असने जाता रहता था। किर किसको सामन्ये थी कि इनके सामने जाता रहता था। किर किसको सामन्ये थी कि इनके सामने जाता रहता था। किर किसको सामन्ये थी कि इनके सामने जाता रहता था। किर किस तो । बहने ही आप कैसा अवचार कर चारता करते हैं। या करने जिसे नहीं। इन्हें जात हुवा कि इनमें सर्पारा-देश्योत्तमका अपमान इस्मा है। करने जाते—

'शुद्धिनित्याहँ कहैं कोड दोरों ।तीह समात्र कस कहै न केहें ।। कही उनक कारि जनुषित बानी । विदानान राष्ट्रपत्निन कारी ।। सुद्धु आनु-पुरू-पेदम-आनु । बार है सुनात न बाहु करिनानु ।। को तुन्हार जनुमानन वाले कनुक हर न नहां है रहता ।। को तुन्हार केही बारों भोगी । सारी नेह मूटक इस होटी ।। तुन बता किसी मानकार । वा सुपुत्ती निताक दुराना।।

, ٠,

दासभाव स्वाभाविक होनेपर भी इसका पाजन श्रत्यन्त कठिन है। श्रीभरतजीने स्वयं ही कहा है---

đ٤

'सबते सेवक धर्म कठोरा ।

भरतनीको भाव-गम्भीरता, नम्रता, सरखता, निरबुखता, धोरता, दुद्धि-विषयणता, समाचातुरी, वाक्य-पदुता, व्याग, सेवा, धर्मेपुरीयता देखका हुद्धि चकित हो जाती है। इनका वर्षान क्योंकर हो सकता है ?

मरत-पाल-गुन-विनय-बड़ाई । मावप-मगति-मरोस-मरुवई ॥ कहत सारवर्षुकी मति हो बी सागर सांपकी आहिं उठीचे ॥

साधारण मनुष्यकी क्या बात है जब राजधि जनकजीने इनके विचयमें कहा है—

धर्म राजनय महाविचाक । इहाँ यथामति मोर प्रचाक ॥ सो मति मोर मरत महिमाही । कहीं काह छक छुअति न छाही ॥ मरत अमित महिमा सुनु रानी । आनहिं राम न सकहिं चलानी ॥

इनका चरित्र घरार है। गोस्वामीजीने सत्यही कहा है— मात रहनि समुसनि करत्ती। मगति विरति गुन विमल विम्ती।। बरनउ सफ्ट सुकवि सहुचाहीं। सेस गेनल गिरा गम गाही।।

इनके भावकी करामताके विषयमें भी श्रीजनकराजने चाप ही कहा है कि—

देवि परन्तु मरत रपुषरको। श्रीते प्रतीक्षेत्रवाद नाहें तरको ॥ मरत अवधि सनंद समताको। जववि सम सीम समताको ॥ परमारम म्यारम मुख सारे। मरतन सप्तेतुँ मनहूँ निहारे ॥ सावन मिद्धि समन्यमनेह ।

दीक है सदा अन्त भी तो वही है जिसे भगवान् स्वयं भर्में । इनका ज्यान श्रीरामचन्त्रके इत्यमे कभी नहीं हटा-

बन बंदु राम राम अंदु जेही।

परियाम द्वान-

बह चेतन बन बीर धेरी । वे चित्रये प्रमु बिन प्रमु हरे ।। वे सब मेंच पाम पर बीतू । मान दरम मेपन महत्तीयू ।। चर चीन बत मानदी बारी। हुनितन बिनुटें राज मन मार्ची ।।

कौर अन्त्रीमें क्यों है सुबक्त मी वो सरकारने बी-

रणन मन भारत सरीम्य । विश्वि प्रयान महें सुना न दीन्या। दुम्हार रुपय विद्वासना सुनिव सुकायु नदि महत समाना।।

A ...

जिन्होंने-

निज जस जग्ज कीन्ह टिनेवारी। सुमिरन ही क्यों धाप इनकी सेवा भी तो क देखिये राज्याभिषेकके पर्व—

पुनि करनानिधि मस्त हँकारे। नित्र कर बटा राम निर नहवाये प्रमु तीनिहुँ माई। भक्तवस्त हण्ड रहु

निसे देख गोस्वामीजी कहते हैं— मस्त मान्य श्रमु कोमस्ताई । सेस कोटिन्स सर्वीह वर्ग

इघर भरतमीको भी किसी बाठकी किना मर् उन्हें दीन-दुनियाका स्वयात भी नहीं था। घरनेन दुवि रसते हुए भी सापने बापने बीवतका एकाउ मुख्यी भरसरता ही रक्ता था। घरवप्में वह हुनें गए। बात चल्ली तक आपने कहा था—

बर न सोहि जग कहिंह कि पोचू। परलेक्जकर नारिन रें। पकर उर नस दुसह दवारी 1 मोहि लगि मेसियान डुक आपनि दास्त दीनता, कहुँ ससहि सिरमः। देखें नितु रसुनाय-पद, तिपक्षो जरनि न जन॥

भरतजीके गुर्योका वयांन किसीसे क्रापियाँ सकता 'कविकुत काम मरत गुनगाथा।' जब अपुर्वे हार्यं के मधान कारया ही यही साने जाते हैं तब और कां कहा जा सकता है हैं

क्या जा सकता है । होत न मृत्त माद भरतको । अचर सचर चर अचर का वी त्रेम अमिय मन्दर बिरह, मरत पर्यापि गैंगैर ।

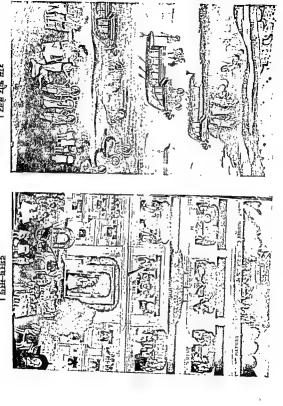
निष प्रमदे सुर-सापु-हित, इपासिन्यु रपुर्वत ॥ इनके स्वायका क्या पृत्रमा है ? देखिने, प्रचानने [

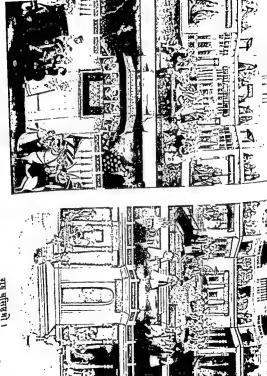
की शहुनहुँके क्षिये शुनिकी आशा या कार्द्र-सिदि^{की} 'विक्रि-विक्रयदायक' विभव प्रस्तुत किया तब हवाँ वे ^{पर्} ओर भूगान भी नहीं किया। मोगकी सामग्री बान ग्री हुए भी उसे मोग न करना ही तो सका त्यान है।

सम्पति चढई मस्त चढ, मुनि आयमु सेरता । तेहि निमि आग्रम पीजा, तला मा निनृतर ।।

सेवा-बर्मेडी धोर इनका पूर्ण ध्यान बना रहा। करन या जि---

सेवक दित महिब सेवकाई। की सकत मुख होन बिट्री ह





प्रमुकी चरण-पाडुका पानेपर ज्ञाप पूर्ण रूपसे सन्तुष्ट ते जाते हैं और कहते हैं---

नाय मयड सुब साथ मोरको । डहेंडड्सम्बन कन्म मोमको ।।
'राम, दम, नियमके माकरण' से माप 'प्रश्न्यनित बेकारों' से गहित हो गाये थे ं माताको इंडिटन करनीको वृत्त मापने प्रपनेको कितना सम्हातकर अध्यक्ष व्यानिसे इसा दिया । हार मानकर माराचे कहा कि—

जोहिंस सोहिंस मुँह मित काई। आँख ओट उठि नैठिस जाई। राम-विरोधी हृदय ते, प्रगट कीन्ह निधि मेहि।

राम-विरोधी हृदय ते, प्रगट कोन्ह विश्व महि । मी समान को पानकी, बादि कहतुँ कछु तोहि ।।

इतना मनमें झाते ही चाप तरस्य हो सये । घतप्य मन्यराजो जब शामुहनती 'को वसंदन भीर परि सेंदी' तब व्याविधि भरतने सुद्दा दिया । जब यो इनके बाँटे यदा ही नहीं था । सरकारने आप हो कहा है—

मरतिह होय न राजमंद, विधि-हरि-हर वद वाव। भरततीके वैदालका पदा तो व्यवोध्याकायको कम्सर्से बद्धता है, जहाँ गोत्वामीजीने हनके व्यावस्थाके विवयमें

क्या है—
अनुकरात सुररात्र सिहाहीं । दसरथ धन रुखि धनद रुजाहीं ॥
तेह पर बसत मरत बिन रागा । चन्नाके जिनि चनपढ नगा ॥

क्या है कि—

भग्पाने गुन तीन हैं, रूप रेग अद शास । पर इतनोही खोट है, अमर न आनत पास ।।

स्तर-राम-पिप कानन नर्सहा। भरत प्रवन वसि तथ ततु करहीं।। परम पुनेत भरत आचरनू । मधुर भंतु मुद्ध संगठकरनू ॥ भरतमेका भाव धपार कामर कष्मुव है । उसका प्रमुख होना करिन ही नहीं कारमध्य है । गोस्वामीजीवे

ह **द्वी कहा है**—

सिय-राम-प्रेश-पिशूध-पूरन होत जनम न भरतको ।

मुनि मन अगम जम नियम सम दम नियम ज्ञद आचरत को ॥

इस बाह दरिद दंम दूवन

पुजस भिस अपहरत को।

グンドロッサンドストサン

करिकार तुरुसी से सर्राहे _____ हरि राम सनमुख करत को ॥

धीर गोरवामीजी ऐसा कहें क्यों नहीं ? क्योंकि धार-का तो सिदान्त था 'शेवक शिव्यमन क्यि, भन न तरे उरगारि' और इस मानके श्रीमरेतजी थादरों भक्त थे।

अब देखिये. दोनों माहयोंका प्रभक्ते साथ एक सम्बन्ध शीर आपसर्में मायपदा इद बन्धन रहनेपर भी वपने अपने भिष शिष बार्वोके कारण होनों महानभावोंका दर्ताव श्रीरामचन्द्र जीके साथ थिय रहा और उसकी वृद्धि एवं प्रष्टि अपने जपने स्वधावके अनुकृत शिक्ष शिक्ष शितिकी हुई । मुन्की रुचि-पालममें होनों समान थे । किस धीरणनवाल सरकारके निजकी सेवासे सन्तष्ट रह अपनया-अर्डबर्कि एक-हम गैंवा बैठे थे। भावने लिये प्रमाने उन्होंने सभी कछ नहीं कहा-कभी कुछ नहीं जाँचा, प्रमुको छोड संसारमें किसीको नहीं बाना। प्रभक्ते कवि-पालन तथा सेवाके चतिरिक्त अपना निजका कोई धर्म नहीं माना । निजका सल-दःख, मान-भएमान इन्हें कभी विश्वसित नहीं कर सका । और भरवजी सरकारके जाते प्रजा, परिजन, साता, गर, प्रशेष्टिल, कद्रम्य, परिवार, राज्य, धीर कोपकी सेवास सदावसे प्रवृत्त रहे । किन्त प्रेम-सरोवरमें शवा निव्नप्त रहते 🔃 भी ये अल-पु:ख, हर्प-विचाद, संयोग-वियोगकी आचिले सन्तम पूर्व गीतल होते रहे । पर दोशों ही तपस्याका फल हुवा एक ही परमपदकी मासि, प्रभुके पादपग्रमें पृथा विश्व श्रेम, हरवमें चनपायिनी अक्तिका सर्वोपरि विकास, और अलव्हानन्त्रका सत्तत उल्लास ! इन श्रीनोंके इत्य-सरीनरमें राम सदा कमजबत् विकसित रहे, उसीके चारों ओर इनका मन-अगर सदा मॅंबराता रहा !

> सोअत जागत स्वज्ञमों, रस रिसर्चन कुर्चम । सुरत स्मामधनकी सुरति जिससोय दिगी न ॥

संसारमें पेसा प्रेम, पेशी आफ अवाज्य है। ये दोगों महादुरावा स्वाप-तावा तथा वाधा-त्यावाडे काइप विश्व हैं। मेमकी वेशीय हुन दोरांजे अपना जन, मन, पन, तर्यत्व वर्षण किया किया बस्त्रेमें हुछ नहीं चाहा। हसीया नाम निकास वर्म है । हसीकी निजास सेम कहते हैं। ऐसे ही सक्त धनन्त दिव्य धानन्दसारामें आनन्दस्य होक्ट सन्न विभाग स्टे हैं।

महारानी कौसत्त्वा

अन्यस्ये अपनानी सीनावन्तीया स्वीतं स्वृत्त्र की प्रमुख्ये हैं । सह अपन राज प्राण्डवी स्वारों की जोते को स्वार्य अग्रियानपूर्वी क्रांची सी आपीण स्वार्यों अनुशास्त्राचे तह स्वार्थ औरतापाद्यों पृत्र कर्य प्राप्त स्वार्थिस स्वार्य क्रांच का स्वीतं सञ्जानप्रता वहाँ प्रशास सीमाना हैं भीत

प्रकारित हुन है । श्रीकीम्प्यानिक व्यक्ति प्रवास प्रमाण भवीष्यान्त्रवाद होता है । स्मान्त्र बीताव्या सम्माणिक होतेनाता है । स्माप्तामी स्थानको निपारित्री हो नहीं है । स्मान्त्रवाद्यानों स्मोन प्रसाद नाम, बाल, देव्हान कोर प्रवासनामी स्मेन प्रसाद नाम, बाल, देव्हान कोर प्रवासनामी संन्या है, बीगीमानामको साम्पीर्धालनान देव्होंकी निक्षिण भागामे साम्य होतानीय जिल वहा है परामु बीहास नृपारि ही बीहा करण चालों है । जीन्यां प्रसाद कीहास नृपार कैकील जान स्वास्त्र हुंग्वर बीहासको स्वास्त्र वहास कैकील जान स्वास्त्रवाह होग्वर बीहासको स्वास्त्र वहास कैकील काम स्वास्त्रवाह होग्वर

पर्में है रित्रे स्पार महाराजने मिळका बनामनका स्पार महाराजने मिळका बनामनका निमय कर खेते हैं भीर माना कीराज्याने

शाहा होनेहे दिये उत्तरे महस्तमें पंचाति हैं। सीताया उत्तर स्तम माह्यपोहे द्वारा प्रतिमें एक करण रही है चीर मन्दी-सन सोच रही है कि 'मेरे राम इस स्तर्य करों होंगे, ग्राम क्या किस स्तर्य है 'हु क्लोड़ीमें नित्य स्तराय करों चौर उस्ताद-पूर्ण हर्एवाली सीतायच्छा स्वास्त्रक उरस्य पार उस्ताद-पूर्ण हर्एवाली सीतायच्छा स्वास्त्रक उरस्य हैसे ही सामने वाती है जैसे पोड़ी चाहु के साल साली है। राम माताको पास मार्ची ऐस्त उनके साले क्या काते हैं। सीर माताको पास मार्ची ऐस्त उनके साले क्या काते हैं। सीर माता भी गुलामोंसे पुणको भावितन कर उनका दिस पूर्ण में जाती है।

> सा निरस्पातमं रण्या भावुनन्दनमामतम् । अमिनकाम संदद्या कितीरं बढना यया ॥ ॥ मातरमुणकानापुषसंगृद्धा रापनः । परिचक्कं महुन्यामनामत्य मूर्पनि ॥ (वाच राच २ । ३० । २०-२३)

बार बार गुन्द चूनति साता । सन्दर्भन् स्ट गुन्दिर सात् ।

मैंने र्रक क्रेन्से नक्षो बाम कर कुवा ली समाहरू करी क्षा सीनामाओं है। इसकेंग्रे बारण जाना कि है। क्रूड कर नाम है, मेरे क्यारे सामी जाने कुव साम में कर्ड कर नाम है, मेरे क्यारे सामी जाने कुव साम में करी दोगा। क्यार्य को कारे क्यो---

तार आई वरि वेशि व्यत्सार्व तो तार सावसपुर बंदु सार्थ

सामा स्रोत रही है कि बातमें बुता रेर होगी, मार्ट इनकी देर स्था देने दर सकेगा, दुव निर्माह है जा है है जार कब ही से से तो ही है है । यो सब कमा नी कि बात मो नुषा है बातमें बही बादे हैं। को समये कहा-'सामा दिवाने मुलको बनका राम दिवा वहाँ नामी महारमें सेश बना कमाना होगा, हम म बिमाने मुलको बन साने है कि बाजा है हो, बीपा क बनने निमाणकर दिवानी है ककोंको सम्बन्ध कर हमें बरसोंके दुर्शन कईमा। सामा सुन दिवान तर हमन कर

हामडे ये बचन कीमालाडे हर्पमें सूचडी मीर्डी गये। हर ! कहाँ तो बकरणी सामामडे कैंबे तिस्ता बैटनेकी बात चीर कहाँ चार प्राचाराम राजधे का क्षे पहेंचा। कीमस्पानीडे हर्पका दिनाई कहा ही बी बार ! किया करों की साही देर बाद बात्कर मीर्ड बी से विवाद करों करी।

श्रीसत्याके समर्से भाषा कि रिशाओं करेशा धार्मी त्यान केंचा है, वहिंद साहाजने रासको बनवाद रिशा है। बना हुमा, में नहीं आते हुँगी। शल्ता हिट सोवा किं बहित कैंदेवीने भाजा है वो होगा हो तेरा रोक्टेश हैं अधिकार है, क्योंकि सालाते भी सौतेजी सालाव हैं केंचा साला शया है। इस रिशारों कीतव्या सीतर्म रोक्टेक साल श्रोकक साहित सान्द्रोंसि करती है— जो केवज पितु आयमु ताता । तो जनि बाहु व्यक्ति बहिः पाता ।। जो पितु-मातु कहेउ वन जाना । तो कानन सत अवस पानाना ।।

मातासे कहा गया शि 'पिताकी हो नहीं, गावा कैकेपी-की भी यही सम्मति है।' यहाँचर कीसत्याते वहीं शुक्ति-सामीके साथ यह भी सीचा कि विद में 'ओहसाको हरपूर्वक इसता भाईंगी तो धर्म तो आव्या हो, खाव ही होनों भाइंगोर्में परस्य विरोध भीड़ो सकता है।

नाहुपान परपर विरोध भा है। सकता है । राखउँ सुतिहि करठँ अनुरोधू । धर्म बाह अरु बन्धु विरोधू ॥ श्रतपुत्र सब तरहसे सोचकर धर्मपुरायका साम्बी कीसस्या-

ने हर्पको कटिन करके राससे कह दिया कि 'बेटा ! कर पिता-साता दोनोंकी बाहा है चौर तुम भी हसको धर्म-सम्मत समसते हो तो हैं जुले रोककर धर्मने बाधा नहीं देना चाहते, तानो चौर धर्मका शावन करते रहो। एक धर्मोध समर्थ है—

मानि मातुके नात बाकि, सुरति विसारि जनि जाय । कह सो दिया, परन्तु किर हदयमें क्लाय

पातिशतधर्म

कह तो दिया, परन्तु फिर इहयमें स्कान धाया । अब कीसस्वा साथ से चटनेके विषये प्रापद करने खती और बोटी—

कपं हि चेतुः स्वं वत्सं गण्डन्तमनुगण्डति । अहं त्वातुगमिष्पामि कत्र बत्सः गणिष्पति ॥ विक सक् कार्यपासि

'बेटा ! जैसे गाप घरने बचने के पीचे वह नहीं जाता है वार्ग जाती है बिंडे दी में भी तुम्बारे साथ तुम जहाँ वाफीन वहीं जार्केगी।' हमार कारावा हमाने माताको वाफीन वहां जार्केगा।' हमार कारावा हमाने साथकों वाफीन वहां जार्केगा। वाफीन करते वोष्य है। अग्रवाद बोडे——

> मही पुरत्त न परिकाणी मुश्तिः कोवतः विकातः । स सरदान न परिकाणी मनतावि विश्वितः ॥ साम्पर्याचे प्रमुद्धः निर्मातः । सुर्युण निम्पतां तस्तवः हि पानैः कावतः ॥ वीवन्याः हि क्रियां मार्गे देवतं प्रमुद्धेः पर्वः । मानदान मन्न पैदायाः तरात्रा मन्तवि त्रद्धः ॥ महत्तामाः वदं राजाः रोजनाविन पीवताः ॥ महत्तामां पर्वः राजाः रोजनाविन पीवताः ॥ महत्तामां पर्वः राजाः रोजनाविन पीवताः ॥ महत्तामां पर्वः राजाः रोजनाविन पीवताः ॥ महत्तामां प्रमुद्धः । महत्तामां प्रमुद्धः । महत्तामां प्रमुद्धः ।

समं न्यानुमाहिकियदासन्ता समा हुन । दारामाध्यम्य होत्री मेथिनं व निराशस्त ।। राहो नृद्धस्य स्टार्ग दिवं चर रामादिता । अदोप्पासिनिया चा नागी पर्यान्तमा। मर्गीरं चानुस्थितं सा च पापानिमिन्द । मर्गुः शुक्षमा नागी रुम्ये राम्पुरामम्।। स्वते पानिमान्यामा निर्मा पेन्युम्पान्य । शुक्ष्मान्य सुर्वीतं मर्गुः विपारितं राहा।। एव पर्यन्त सुर्वीतं मर्गुः विपारितं राहा।। एव पर्यन्त सुर्वीतं मर्गुः विपारितं राहा।।

(বাe বাe হ। ২४)

'है माता ! पतिको परित्याग कर देना क्रीके शिये बहुत बड़ी कृरता है, हुमको मगसे भी ऐसा सोचना गर्ही चाडिये. करना तो वर रहा । जवतक काइएस्पर्वशी मेरे पिताओं बीते हैं सबतक ग्रमको उनकी सेवा ही करनी चाहिये, यही सनातन धर्म है । जीवित कियोंके लिये पति ही देवता है और पति ही त्रम है। महाराज वो हम्हारे बार मेरे स्वामी राजा हैं बार माखिक हैं। भाई भरत भी धर्माता धीर प्राचीभावके साथ प्रिय चाचरवा करनेवाले हैं, वह भी गुम्हारी सेवा ही करेंगे, क्वोंकि उनका धर्मने नित्य प्रेम है। हे साता ! मेरे जानेके बाद तमको बडी सावधानीके साथ वेसा प्रयक्त करना चाहिये कि जिससे महाराज दसी होकर वाठवा शोबसे प्रपने प्राथा म स्वारा हैं। सावधान होकर सर्वश बुद्ध महाराजके हितकी स्रोर ध्यान हो । बत, उपवासादि नियमोंमें तलर रहनेवाली धर्मात्मा स्त्री भी बादे घएने पतिके चनकर नहीं रहती है ती वह अधम गतिको मास होती है, परम्तु को देवताओंका पूजन नमस्थार आदि विल्हल न करके भी पविकी सेवा करती है उसको उसीके फलस्यरूप उत्तम स्वर्गको प्राप्ति होती है। श्रतपुत्र पविका हित चाहनेवाली प्रत्येक स्त्रीको केवल यतिकी सेवामें हो सगे रहना चाहिये। स्त्रियोंके लिये वृति स्मृतिमें वृद्धमात्र यही धर्म बतलाया राया है।"

साणी बीसला सो पतिकता-िगोमणि यो ही, पुत्र-त्वेसरे तामके साथ व्याचेको वैवार हो गयी था, घर पुत्रके हाता पतिकत-धर्मका स्माय सुत्रते ही पुत्रः कर्तमपार कर वयी बीर बीसाको वन तामक करते कि के दस्त साथ हो हो कीसराको पतिवादके सम्मामं निमारिता है हो। कीसराको पातिवादके सम्मामं निमारिता उदाहरण चीर भी प्यान पेने पोन्त है—जिल समय धी-सीतानी रमामी धीरामके साथ बन बानेको तैयार होती है उस समयकीमण्यानी बचम चाचरव्याची सीनाको हृपये स्थानक चीर उसका निश्च मूँचकर निननिनिम्स कारोस करती है—

'पुनी! जो रिन्नणी विनिष्ठे हात सब मकारमे सम्मान पानेवर भी नरीमीकी शासतमें बनकी सेना वहीं करती, वह पसरती सानी स्वानी हैं। को क्रियाँ सती हैं वे ही सीतवरती कीर सन्वयादिनी होती हैं, वहाँचे जनदेशके क्रमुनार बनका बनीव होता है, वे कान्ये कुनकी मणदेशका कसी बक्त पन नहीं करतों कीर कान्ये प्रकाश पतिकों ही परमाह्य पेवता मानती है। बेदी! जान मेरे पुत्र रामको पिताने पनवारती बना दिया है, वह पनो हो या निर्यंज हैरे किये सी गद्दी पेवता है आतः कभी बसका तिरस्कार न करता!

चारिय पास सती सीतामीको पातिपत्तका उपहेश करणा सूचेको होपक दिखाला है, सामाणि पोताने सामके वच्छोंने कुछ भी द्वार महीं माना पापना जपमान स्ताम के उद्यक्ती कार्ते अर्मार्थक समक हाप कोषकर क्या-पाता कि माएके उपहेराजुलार ही कर्लेगी, पतिके साथ किस मकारका चर्तांक कारणा चाहिये, ह्वा विपयका उपहेरा माना-पिताके हारा क्षासको मालव है। उसके है। आप जस्ताणी व्यिपोंके साथ मेरी हालामं मे कर्ते-

धर्माद्विषकितुं नाहमकं चन्द्रादिव प्रमा ।। मातन्त्री वाधते वीणा नाषको विधते रयः । नापतिः सुब्दमेधेत वा स्वादपि शतासका ।। मितं ददाति हि पिता मितं आता मितं सुतः । अमितस्य तु दक्षारं अतारं का न प्रवेषत ।।

(या क एक शहर १८८-१०)

मैं करापि पर्मासे विचलित न हो राष्ट्रिंगी। निराधकार
चण्यमासे चौदनी भठना नहीं होता। निराधकार विचा तारके सीण नहीं पजती, निराधकार विचा प्रतिष्ठे , त्य नहीं चल सफता उसी प्रचार की चाहे सी प्रतिक्री भी भी च्यां न हो जात, परन्तु पति विचायह कमी सहसी नहीं हो चक्कती। रिता, सारा, माई सीर प्रण चरित को इन सुख देने हैं वह परिसित होता है चीर बेजक इसी कोकक भिन्ने होता है परन्तु पति सो सोशस्य क्यांसिनत प्रवक्तका त्यान है, च्यापक पूर्णी बीत दुसा होते हैं को क्याने पतिका सेवा न करें ?"

जब राम बनकी भने जाने हैं और महाराज रुगरबर्ड होकर कीयप्रयासे मननमें बाते हैं तब बारेगमें नावर व बर्व्हें हुए करीर सबन कह बैडर्रा है, इसके उत्तरमें बहर्ष महाराज प्रार्थभावने हाच जोडका कीयरपाने समा गाँउ है, तब तो कीमामा अपर्मात हो हर धाने कृतार बड़ा गर्न पशासाय करती है, बचकी कविते निर्मर तरह की बहने लगते हैं, और बह सहाराजके हाथ पचन उन्हें मने मन्त्रकार रूप धवराहरके नाथ बदनी है-'हे नाव! मुन्ने वकी जुल हुई, में चालीपर गिर टेककर प्रार्थना करती हैं। भाग समया प्रयक्त हो हुये । में गुल-वियोगमें वीतिना है, मा शमा की तिये । देव, सामको जब शब दायाने समा माँजी पड़ी तो मैं बाज पानियन-बर्मने ब्रष्ट हो गयी हैं। बाउ से शीसपर कर्षक लग गया है। अब मैं शमाबे योग्य नहीं रही हों भपनी वाणी भागकर उचित दयह दीतिये। अनेक प्रकार्य सेवाओं के द्वारा प्रगन्न करने थील बुद्धिमान् सामी वि चीको प्रयक्ष कामेडे निये बाज्य होता है, उस मीने वे परलोक दोनों मह हो जाने हैं। हे स्वामिन्! में धर्मको जार हैं, चाप रत्यवादी हैं, यह भी में जानती हैं। मेंने बी ह कहा सी पुत्र-शोकका भतिराय पीड़ासे बदरावर वहा है कीयस्याके इन वचनोंसे राजाको कुछ सान्त्रना हुई ह वनकी चाँस खरा राधी।

वर्ष्युक धवतरवाँसि यह पता क्षाता है कि कैन्स पतिमत-धर्मके पाटकमें बहुत ही कागे की हुई थी। किंग इस मसामसे शिका महत्व करनी चाहिये।

कत्तंन्यनिहा परस्पक्षी रामके वियोगमें व्याद्ध है, वर्ग पान सुद गया है, मृत्युके विद्वामक्ष श्रीक पां क्षणे हैं, नगर और महर्जीने द्वादाकार क्षण हैं, व्यार और महर्जीने द्वादाकार क्षण हुए है, ऐं कल्यामें वीरत पारच कर परने पुत्रको हुन क्षणेने नाता कौरतन्य जिसका मायाभार पुत्र वंद्यनित क्षणे हो पुस्त है, अपने उत्तरस्थित और कर्मन्यको सनस्त्री।

भाष समुक्तिः मन करिय विष्तारः । रामनियोग पयोषि व्याहः । करनधार तुम अवध जहात् । चढेठ सकट प्रिय पषिक समार् । धीरज चरिय तो पाइन पासः । नाहित चूडिहः सब परिगरः । को जिय घरिय निजय प्रिय मोरी । रामहणवासिय मिटार्ड वरोरी।

चन्य ! रामजननी देवी कौरत्वया ऐसी झवत्यांमें हर्मे ऐसे ब्यादर्य वचन कह सकती हो, घन्य नुम्हारे धैर्य, सार्^{त,} पातिवस, विरवास बौर गुरहारी ब्यादर्य कर्तन्यनिहा^{ड़ी} बपुनंत्रम धीसत्याको धारणी प्रवन्ध्य सीलाई मति विकास सामस्यत्येत या, हरका शिवसीन रिचेह कुत सम्मिती होता है, जब सीलानी समझे साम पत्र जाना चाहती है तब रीली हुई औसत्या खदती है— में पुनि पुत्रवन् त्रिय पार्ट । स्पासी सुण सील सुलाई । नमन पुत्रार दशांति वद्यार । रास्तु मण्य आनिकी तथां ।। परितारिकी नामस्य रहेता । सिन्द सीण पुण्यनिक केसा ।। तित्रपारिकीन जायदि रहेता । सिन्द मति नार्टि साम कोली सि

नक प्रमन्त भीगीता राम-परम्मको नवसं होएकः प्रमण्या पारा है, भो सेन्या प्रमण्य कार विभाग करती हुई प्रकृष्ण कुम्मन्तार पुराते है। फिन कव जिन्हर्स्य सीताकोदेकती है तब बढ़ा हो हुं क करती हुई करती है कि प्रमण्या पुराते हैं करती है कि प्रमण्या पुराते हुए कुम्मन्त सामा, पुराते हुए कमरूके सामा, प्रमण्डे हुए कमरूके सामा, प्रमण्डे हुए कमरूके सामा, प्रमण्डे हुए कमरूके सामा, प्रमण्डे हुए कमरूके सामा क्षेत्र वाहनों से हिम्मों हुए कमरूक सामा, प्रमण्डे हुए सामेजे सामा को बाहनों से हिम्मों हुए कमरूक सामा के सामा की सामा हुम्मों कमरूक सामा की सामा हुम्मों कमरूक सामा की सामा हुम्मों कमा सामा हुम्मों कमरूक सामा की सामा हुम्मों कमरूक सामा हुम्मों कमा सामा हुम्मों कमरूक सामा हुम्मों हुम्मों

यदि भाग सभी सासोंका वर्ताव पुत्रवपुक्षोंके साथ ऐसा हो भाग, तो घर-घरमें सुलका स्रोत बहने स्मे ।

राम-भारतने की साथा राम कीर- भारतमें कोई कारतर सामानमार नहीं मानती थी। उत्तक इस्प दिशाल बाद सामानमार नहीं मानती थी। उत्तक इस्प दिशाल बाद और कोल के भी मानते के मानते हुए त्यारे कारती विज्ञान करते हुए त्यारे कारती कि सामान हुए, त्यारे कारती कि सामान हुए, त्यारे कारती कारा कारती हुए मानते हुए जब मानता बहुत कारती कारती हुए त्यारे कारती हुए त्यारे कारती है और देखा मानती है मानते रास ही। जीट मानते । उत्तक स्वस्तव शोक कीर लोक त्यारे के हुए तो मानता, त्यारी व वहां केरे भारत की योगी हुए को मानवायतील करती है—

धनहुँ बच्छ बेरि चीरन घरहू । बुसमय शमुद्धि सोक चरिहरकू । जेनि मानहु दिय हानि गतानी । कात करमणदि जानी । ×
×
×

 कैने चाइनें वास्य हैं रामकी माठा ऐसी न हो तो चीर कीन हो ? महाराजकी बाहकियाके उपरान्त अब बसिएनी चीर

महाराजकी बाहिकियाके उपरान्त अब बाहिएसी धार नगरके लोग मरतको राजगदीपर बैठाना चाहते हैं और सब घरत किसी प्रकार भी नहीं मानते तब माता कौसल्या प्रजाके सुखके खिये धीरज घरकर कहती है-

× × × 1 पूत पाय गुरु लांग्सु अहर्द ।। स्व अहरिय करिय दिव मानी। तिनय विश्वद कारू-गंत जानी।। वन रचुपाडी सुरपुर लिलाहुं। तुम्द मीह गीति ताक कराइ।।। प्रतिक्र विश्व यात्र कार्या। तुम्हर्ते भुत स्वकृष्ट अवतम्वा।। दल्लि विश्व यात्र कालु करियाई। चार्युत चारु मातु चरित जाई-।। हिन्द पहिन सुक्ष सुन्तु सुन्तु प्रतु मातु चरित जाई-।।

स्त्राहितक इतना व्यान औरात-भाताको होना ही बाहिये। जाताने समन्ने यन जाते समय भी कहा मा 'मुके हुव बातका तिकि भी हुएत नहीं है कि समन्ने राज्यके बद्दे ज्ञान बच्चे निक रहा है, कुने तो हुसी बातकी विन्ता है कि संस्के विना महाराज बराय, पुत्र भरत, और मामको महान् क्रेस होगा —

राज देन कहि दौन्ह बन, मोहिन सो दुस लेसु। तुम्ह बिनु मरतहि मुचतिहि, प्रजर्दि प्रचण्ड करेसु।

पुत्र-त्रेम वंत्रवासने कौसल्याको प्राव्यात होर है। रामके वंत्रवासने कौसल्याको प्रायान्य होरा है परन्यु प्यारे युत्र भीरामकी वर्मरकाके क्षिपे कौसल्या उन्हें रोकतो नहीं, वर्र करती है-

न शक्यते बारनीतुं मण्डेदानि रघूतम ।

शीधं च विनिवर्शस्य वर्तस्य च सतां हमे ।। यं वारुवसि चर्मं त्वं प्रीरवा च नियमेन च ।

स वै रायवसार्व्क वर्षस्त्वामामिरध्तु ॥ (वा॰ रा॰ २ : २५ : १-३)

देश ! मैं मुद्धे इस ध्याप बण जाने से रोड माँ सकती। मू जा क्याँ मीम दी जोड़का क्या । सापुरांगेंड मार्ग्डम महत्तारक करता रह ! मू तम कीर मिलाने साथ दिस पार्य-चा पावन कर पहार्ट कह धर्म दी तेरी रचा करे । इस-महार धर्मण पड़ रहने कीर महत्त्वाचाँडें सम्मानंका मानुसारक करनेकी रिजा होती हुई माता प्रक्री मंगळाचा करती है और कहती हैं माता प्रक्री मंगळाचा पित बनदेव मात्र बनदेवी ६ शत-मृत व्यवनार्याण्ड रेली ६ सन्तदु रुवित गुपदि बनवात् ६ वह विरोहि दिव होत हारात् ६६

कर्मण्यसायमा पर्माणीला ल्यागमूर्ति झाला कीलग्य इसाम्बार पुत्रको सहस् बनमें भेत्र हैनो है। क्यागम्य इसामनार्गे हर्प न्यान हो दहा है पाल्यु पुत्रको आसी देख चीर उसकी हर्प-गोकरित गुरा-गुरा-गुरा-गुरा-च सामनार्थि हे। यह है सक्त मेगा वर्षी मोहको तानिक भी पुत्राहर गर्मी। भारतानिक सामने कीलग्या गीरवर्ष नाम प्यारे पुत्र भीसामकी मसंसा करती हुई कहती है, 'जेरा, महाराजने तेरे वदे भाई समको सम्बन्ध चन्नो कताना ने दिया पर्यान हरते सामके गुरापर प्राप्त भी न्यानना नहीं चारी-

पितु आपगु भूजन-बसन तात ! तंत्र रघुबीर । विसमय हरव न हृदय कर्यु पहिरे बरुकत चीर ।।

मुख प्रसक्त मन राग न रोष् । सनकर सम निपि कदि परिताष्ट्र ॥ चौत (बेपिन धुनि सिय सँग स्त्रोग । रहद न राम-चरन अनुरामी॥ धुनतिहिं कसन चते उठि साथा। रहदिं न जतन किये रघुनाथा॥ सब रघुपति सबदी सिर नाईं । चौते संग सिय अक लघु आई॥

यह सब होनेपर भी माताका द्वय पुत्रका मधुर सुलका देखनेके विचे पिरन्तर व्याष्ट्रक है। चीदर साल वदी ही कडिनतार आरामके सुन सख्य चचनोंका ग्राटिन हैं। लक्षा विजयक औराम लक्ष भयोग्या ग्रीटिन हैं ग्रीर तब माताको यह समाचार मिनावा है तो वह सुनते हैं। हारस्कार दीवृडी है, बैसे गाय बचनेके विचे चीदा करती है—

कीसरयादि मातु सन धार्ष । निरक्षि बत्स बनु बेनु सनार्व π जनु बेनु 'नारुक बत्स तानि

गृह, चरन बन परबस गई।

दिम अन्त पुर रख सक्त थन

हुंकार करि धानति मई।।

बहुत दिनों के बाद पुत्रका ग्रुल देनकर कीसस्पाके प्रेम-संग्रहकी मर्पादा हुट जाती है, वह पुत्रको हरवाने जगाकर बार-बार दिल सूँपती है बीर कोमल मगाक घीर शुव्यमबहुत पर हाप फेरती पूर्व रुक्तको क्षानकर देवतो हुई मनस्व कुत विश्व होता पूर्व रुक्तको क्षानकर देवतो हुई मनस्व क्यानीय होता बाद करती है कि मेरे हुण करके कोमल क्यानीय क्याने बचने रागन-बीर प्रवक्त पराहमीको बैसे माता होगा । मेरे राम सहमाग शो बड़े ही शुहुमार है, ये महार्थ राजपीये कैये जीने जीते हैं

कीम्पना पुनि पुनि र गुक्ष गरि । किरापि क्यानियु स्तर्केरी। बदम विचारित स्पर्धि क्या । काल मीर्ति रेसार्ति स्मात्र कति सुदुमार जुनुकसम सरे । निर्माण गुन्छ सहास्त्र स्रोत

माना ! क्या तुम इस बान हो मून स्वी हि वे दुव 'शुरुमार बारे बानक' सीवार्यक्रम हैं। जिनुक्तां क' क्याक्तेत्रावे दें। इसीकी सावार्य का बुक हो सां वे तो सुरावार सेमके कारव सुरावे बाई पुत्रक्तां कहाँ है कारका कलान करने हुए हमें सुन वहुँवारी माना सम करने हैं।

कीयात्माको कान्ते धर्मगाजनका कन मिनता है,हम योग जीवन सुरमाय कीमगा है कीर काममें वह कीमा इस्स सरवजान मासकर —

> रानं सदा ६दि बमारस जिल्हा संमारकपनम् । अतिकस्य गतिस्निसीऽप्यस्य परमा गतिन्।।

डरवर्में सर्वेदा श्रीरामका व्यान करनेते संतास्त्रक को ज़िब कर सान्त्रिक, राजन, तामन तीर्नो गीर्वों सौयकर परमपदको मास्र हो जाती है!

रामके हृदयमें कीन वसते हैं।

ताचि मदमोह कपट छल नाना ।

करी सद्य तोह सायु-समाना॥

अननी अनक बंघु सुत दारा।

तनु धन मवन सुद्धद परिवारा ॥ समकै ममता-ताम बटोरी ।

मम पद मनहि घाँच वटि होरी ॥

समदरसी इच्छा कल्लु नाहीं।

हरप सोक मय नहिं मन माहीं॥ अस सज्जन मम उर बस कैसे।

लोगी-हृदय घरी घन जैसे॥

रानी सुमित्रा

(छेस्त-पं शीनोवनशङ्कर्यी वाष्टिक वम o ए०)



स्वामी प्रज्योदासजीने वपनी रामायण-में कहूं चादर्श चित्रचं कर चपनी चट्टल कान्य शक्किश परिचय दिया है। महापुरुगेंके जिये चित्रच्य स्वाप्त कांच्या चाहिये, हसीखिये सहाकारकुं निया जनका शुणगान नहीं

ो सकता । परन्तु कृत् पास रामात्यामें पूरे भी है जिनका रार्त्त बही सुस्तरीतिति किया गया है। मार्गामी कर्तारीर्ते एकबाराजी पदार्त्त सार्विमाने होती है। क्ला-मार्गाय कीराज श्वानेने तिये क्यान काम वाल-व्यक्त करिय बना होता है, ती किय करने मार्गामी सम्बन्धा मार्ग्यक्त क्रान्यकों होता है। तिया करने मार्ग्यक्त सार्वामाने क्यान क्षान्यकों होता है। तिया वस्त्री कोई बात पूर्वने मार्ग्य पार्मा । विकाद क्षान्यकों होता है। तिया वस्त्री कोई बात पूर्वने मार्ग्यमाने विकाद क्षान्यकों होता है। त्राम्यक्त क्षान्य सामानेका आप्ताप्त्र केम्स्य कीराज विकास कीराज कीराज विकास कीराज विकास कीराज कीराज विकास कीराज कीराज कीराज विकास कीराज कीरा

सुमित्रा बीसल्याकी नाई प्रतानी नहीं है और म कैनेवी-भी बाद राज्ञ स्ट्रारमकी टिमान है। तिस्तर मी मह साननेव्ह भीई मारच महि कि राजा उसले मीत उदासीन है। इसार में म्हारमें महिला है। हमीर सांदारिक मंदन बीर में म्हारमें साव रहना रसार मारती है। कार नगरमें राज-बनवासमें बात बीत गरी, हाराकार रूप गया चरन्तु उसकी कैनेवीन भीड़का हाल ही नहीं मारती है। कार साव सम्मायनीन मादार होती है। कार स्वत्ती है। का साव स्वत्ता अपना मानेवी मादार होती है। कार स्वतानी का सुम्बर-

भागका भागा भागा भाग भाग है। सम्मायाजास हास सुनकर---गर्द सहिम सुनि बचन कठारा । मृगी देखि जनु दब चहुँखोरा ॥

के उमहते समुद्रको एक ही दोहेंमें कह दिया है। गागरमें सावर घर दिया है--

समुद्रि सुमित्रा राम-सिय, रूप सुरीत सुमान । नृष स्तेद रुखि धुनेद दिर, पापिन कीन्द सुदान ॥ सम्पन्नानकोकी युगव मूर्ति वन जाने पीरय नहीं। उनकी सुकुमारता, साधुर्व व्यीर स्वराधि साधारण नहीं है। उनका सीन्दर्व पेया है—

सन्दरता कहें सन्दर करहीं ।

हुनको वन भेजना मानो कमतको भाइमें भूजना है, वह भी नहीं कि केवल सरीरकी सुकुमारता हो हो, मनको भी कोमलाता अञ्चलपीय है। दलको कोई करराभ पुरुषनीके प्रति वच हो नहीं सकता। नगोंकि भाइपोंमें—

चारिउ सीठ रूप गुनधामा । तदिप अधिक सुख-सागर रामा ॥ चौर धीरामजीको सभी खानते हैं कि वे हैं—

विद्या विनय निपुन गुन सीला ।

तो सुशियार्ड लिये यह धारा करता तो व्यर्थ ही है कि श्रीराम स्वयं वन वानेकी मना करतें। धौर फिर उनका स्वधाव भी केताडें—

जासु सुमाद आरोहि अनुकूख। सो किमि कराहि मातु प्रतिकृता।।

कहनामय मृद् राम सुनाक।

कैकेपीका ज्यासा इसारा पार्वेगे तो फीरन बन को प्रसध होकर बज देंगे। इस प्रकार सुमित्राने विचारकर देख खिपा कि मीराम-बानकोका सौजन्य ही कैकेपीको सहायक हो गया है। शीरामकी कैकेपीले कह एके हैं-

कुन जनती होत हुत बड़ माणी। जी चितु-मातु बचन अनुराती।) चित्र कौन वचाव काम दे शकता है है इसका वरिवास बह होगा कि राजा दक्तरब जी विचा रास-दर्गनके जी नहीं सकते, माख होड़- वेंगे। शांतियोंकी वैचया दुःख मास होगा। बहु समस्कार सुनिका कीर भी स्वाइस हो उठी।

एक तहबीर सुन्व वर्गी, बिंद सुनिया और औतस्या दोनों दिसकड पीतायके पाता हैं कि यत्रके नहीं जान तो क्या होगा ? शीतायके होंनो दिसकड रोक सहयोत कैकोविसाता है जैसे हो सुन्यित दिसाता है ? होनों समात है। यदि एतरप वन जानेको कहते हैं और औतस्या रोक्टी है सो नीतिके चनुसार श्रीरामको माताकी श्राका विशेषस्पते पातनीय होगी । बचन है—

> पितुर्दशगुणामाता गौरवेणातिरिच्यते । मातुर्दशगुणामान्या विमाता धर्ममीरुणा 🛭

यही विचारकर कौसल्याने भी श्रीसामछे कहा था— जो केवल पितु आयमु ताता। तौ जाने जातु जानि बड़ि माता ॥ जो पितु-मातु कहेठ बन जाना। तौ कानन सत अवध समाना ॥

यदि दरारयकी आजा वन जानेकी है सो कौसल्या इसका विरोध कर सकती है और दशरध तथा कैकेबी दोनों-की शय है तो श्रीसमका वन-गमन सर्वया उचित है।

इसी प्रकारका भाव सुमिता है मनमें आया कि कीरनवा भीर वह स्वयं अंतिराको आनेते रोक वे और यह तहकों सफड मी हो सकती थी। सुमिताको सुखी तो सहा परन्तु इसमें भी अव्यक्त आ पड़ी। राजपरिवार केंग्रेपीको रूपाये फजा कुड़ा है। जब कैंग्रेपीने अपनी उँगालीले रचकाकों सँमाजा था भीर राजा रचएक प्राय कहाईमें बचारे वे हो तब शांतियोंके सीमामकों भी उसीने रचा को थी। कैंग्रेपीके कारण ही उनको प्रवक्ती होनेका समय आया था। तो दिर कैंग्रेपीको पूर्व अधिकार है कि उसकी रूपा-केंग्रेपीक कारण ही उनको प्रवक्ता उत्तर प्रथिकार इस कें। सुमिता यह सीचकर विकार हो जाती है चीर समस्य बोरी है कि सीसाको जननामको रोकनेका कोई उत्तर चर्सी, वैयव्य-दुःस फडरवाशासी है, राजा रुपरव स्वास होई है कि सीर उचकी सपनी रचन विकार

मृगी देशि दव अनु वर्ते औरा---

—की सी है। क्योंकि कैंक्सी पारितने बक्तेका कोई कबसा हो नहीं पोडरक्का गरेम बार किया है कि उसका स्वास हो नहीं, उसीका बार प्रशाब है कियों बालकों हो और कियक बजार न बस सके 18 कैंक्सी बानने मुस्तानक क्यों बहुत केंद्री यह सात कियों करवारों मही का कार्यों में बहुत केंद्री यह सात कियों करवारों मही का कार्यों में

मुस्तिमध्ये सबसे में तम बार्ने निम्मीकी ताद होड़ स्वी । करनी बेर्मास्थे यह नहीमाँहि शमक शर्मा । इस्त्राम्पेकी कीर उरकार भाग भी काम कामें । याचा वा । वरणु कथावती करने में । उरको सो निया सीमार कीमान्ये नाम श्री करनेयों हम कामें हुई थी। । सारको काम्ये वस्त्राम कीम सम्बंध सार्मोध्ये ने काम व सके। अन्याय-पूर्व अर्थ क्षमाकर उसकी विन्ताम्छ स का कारण सक्समयजी समम्बे—

रुषन रुखेउ मा अनरच आजू । महि सनेह बस करव जांजू मॉफ्त निदा समय सकुचाहीं। जाइ संग विवि कहहि किन्हीं

चन्य है सचमयानी, तुम मी धरनी माताहे प् स्वभावको नहीं पहचान सके और उसपर नृता मन-दी-मन खगाने सो ! 'सनेहबस' तो वह महर परन्त इस समय राम-जानकोका च्यान है, शुनारा गी

सुमित्रा घीर गम्भीर चन्नायी है। वर कोई रा नहीं सुका दो— धीरज घरेड कुअवसर जानी।सहज् सुद्धद बोली गृह नहीं।

यही धैर्य धार्यमहिलाझोंकी शोभा है। बच्ची भाँपर स्वर्थ सन्देह किया। जब श्रीरामदे साथ हे वहते खजुमति दे दी थी तो कहा था—

माँगहु विदा मातुसन जाई। आवहु बेगि चटबु बन की

मर्थात् अप्तराजीके क्षिये वर बाता विश्व हो। गया या । मातासे चाता होना एक ज़ान्डेमें कारार्थ हैं गयी थी। माता रोक्सी भी तो है कर मार्गवर्थ हैं। परन्तु सुमिता बक्त्याजीते भी चाने बार्ग्य चीर्थ हैं। परन्तु सुमिता बक्त्याजीते भी चाने बार्ग्य चीर्थ हैं। गयी। बक्त्याजी तो संकोच द्वी करते हरें और वस्त्रीर्थ आपता वर्षा वर वार्गेकी मात्रा है हो और बक्त्यार्थ उपदेश भी विद्या

सुमियाका उपर्येश प्राविकिक है। मीति, वर्ग, री बीर वात्तस्यभाव उससे सभी स्वकुत रहे हैं। एक पर्यः है जब भावता, सहदयता टरक रही है। देवेडी तें एक भी घररावर वह नहीं कहती। 'वारिन मोत हैं।' देवक मनका आद है। कमस्यामीके सामने वाहि केंग किये कह वाराव चीलती तो उसको उपरोग करिया वर्ग है के वह वाराव चीलती तो उसको उपरोग करिया काल

सुनिया नीतिमें सुद नियुख है। समयर उदित हैं बोकता थीर उदित कार्य करना उसका हरमात है। ब बावमी है कि यदि कार्यका अयोध्यामें हर गर्व में बीतायहे साथ बच्चा न गर्य हो भारताहै बाते गर्य दितों कहाने पूर्व सम्मादना है। खच्मावारी हीते हैं, ग्रं कहाँ। कोड का बाता है और तिया औरात्में गर्य बोई बदक्षे दुवा कहीं सकता। देगी करकारी बच्चा ा वन जाना नीतिको दृष्टिसे व्यवस्थक है। यह भी एक प्रस्य है कि सुप्रिया स्वयं उनको चाला दे रही है।

सुमिताने उपदेश बद्दे संघेपमें विध्या है। उसमें सम-ग्रीहमा बरिता है और सेवक धर्म भी बनावा है। पान्तु उसमें दुमिताके बरिता की दिखाने होता है बड़ी विशेष रीतिती सुमान है पान है। यह एक उपदर्भ सुमिताके हरूकों धीतिती-सार किने क्या किये हैं। को सीताम यब का रहे हैं तो स्वोध्यान से में बहुकर रहने योग्य खान वन हो है।

को पै राम सीय बन बाही । अवद तुम्हार काव करु बाहीं ॥

सौर वन द्वाना है सो केवल शाम-जानकीके खिये ही नहीं, बरिक—

—रे**ड** तात जग जीवन हाडू

षद्द धशसर तो सन्धनयत्रीको बढ़े भाग्यसे प्रास हुआ है यो सहजर्में सेवा-कार्प धन सबेगा 1 सुमित्रात्री तो यहाँतक कहती हैं—

शुन्देपि मान राम बन जाती। इसर हेतु तात बंधु नाही।। यान, रोप, ईपी, मद, मोहडे खानमंडी शिक्त माठा देवी है। अपने बस्पायांडे विये नहीं, वस्कि इसकिये कि इनके रहते सेवा-यमें शिक नहीं निम्म सकता।

सकत प्रकार विकार विद्वार्थ । मन मन बचन कोडु सेनकर्थ ।। रूपमणके हितके टिये इनसे बड़कर और कोई उपदेश माताकी समसमें नहीं बाता ।

मेहि न राम बन शहर्षि करेसू । सुत क्षेत्र करेहु वृहै उपदेसू ॥

बडी जारिने बान्तरक आहेरा दिया । वह नहीं समझना चाहिये कि साम-मनिके कारण करमायांगैके प्रति पुणिताफ बाकल-भाव बाता रहा है। मुलिताफो बदमचानी की विन्या वर्षों होने रणी बन साम-बातकी उनके साथ हैं। वे पर्मपुरीय हैं पुलिताको सब महारके बाति है। बनके करोंकी वर क्योतक सही करती, क्योंकि—

तुम वह बन सब माँति सुपान्। संग विनु-मानु राम-तिब बान् ॥ बैदेयो भौर सुमित्राके स्प्रमाव भीर भादर्शकी द्वारण

वैदेशो और सुमित्राके समान और बार्डाकी हरना गोस्वामीतीने वही स्वस्ततीसे अस्ति की है, दोनोहींमें बारान्य-माव बदा प्रदक्ष है। वृक्ष झीतामका निर्वाणन कर

और पतिषातिनी यन कर भी भएने प्रत्रको राज्य दिलानेकी चैद्य करती है. इसरी अपने प्रचकी श्रीवन सफल करनेका अवसर पाकर स्वयं निर्वासित करती है और श्रीरामकी सेवाडे लिये उसे न्यीझावर कर बाबती है, होनों रानियाँ नीतिमें वही निप्रक हैं। कैकेयीने धपना कार्य साधनेमें यदी इटिङ नीति चौर बुदिमानीसे काम लिया चौर समित्रा गम्भीरमावने सोच-समस्करको नीतिपूर्ण बात है उसके करनेमें सनिक मी नहीं शिशकती। एक भागन्त निरुष्ट है पहला भरत-शैसे सायकी जननी है। दसरी स्वयं शान्त स्वधात है पर बन्म देवी है सीसे स्वभाववाजे एश्मणजीको । दोनों बानी भएनी पुनकी पक्षो हैं। वैकेपीको कोई समझा-इसकर भएनी बावसे टका नहीं सकता और समित्राको भी श्रापने कर्पन्य-पाटनमें किसीकी श्रपेशा नहीं । दसका विचास दह है और कर्तव्य-पथ निर्दिष्ट है। कैडेवी चपने स्थार्थ और वात्सवय-धायके वेगको रोक मही सकती। वरियाम इन्ह भी हो, उसकी वात होकर रहे, यही असका इस्य है। सुमित्रा घमें, बीति धीर मक्तिडे सामने बालास-भावको केंचा दर्जा नहीं देती। प्रयन्त्रेमकी मर्पाता वर्ज और नीति है। जिस स्नेहके कारच धर्म हुवे, वह स्नेह नहीं। इसीटिये खद्मकश्रीको धन भेजकर समित्राने मानो कैनेपीके पापका भागश्रित कर दिया।

सुनिजाड़े उपरोक्षमें पुरु बात की-समाजने किये बहा कोर देवर कदी गयी है। और बही बात सारभूत भी है। सुनिजाक इदय करता है—

पुत्रब्दी बुक्दी का सोई। रपुरर मगद जागु मुत होई॥

कैती मावाएँ सोंगी बैदी सन्तान और वसीडे अप्रधार बाति । यदि मावार्ष्ट सांगी सन्तानको सारकामने ही यहै-की किता देती गई तो वह सांगे अप्रधा ताउनी सर्वार्यस्थ्यो प्रवृश्व हो सांग दिन सांग्य सांग्य सर्वार्यस्थ्यो प्रवृश्व हो सांग्य देते । सांगीने प्रवृश्व मात्रिक स कमावा करित व सावृश्व हो। सांगीने प्रवृश्व मात्रिक स्व सांग्य मावार्य यदि स्थाना यह अर्थन चार रुख्ये सीर तर हो। अस्यस्थ करें हो सांगार्थ मुख्य मात्रिको दिन्हे सहित हो।

सद्गुणवती कैकेयी



सायवर्षे महारानी कैडेपीका चरित्र सबसे चिष्क बदनास है। जिसने सारे विषके परमिष प्रावाराम रामको विना चापराच बनमें चित्रवानेचा चर-राप किया, जसका पापिन, कर्नाहोत, राससी, क्रवविनाहिन्सी कहराना कोई साम्रावेडी बात नहीं। समस्य सद्युवांके

आवार, जगदावार राम जिसकी खाँखोंके काँटे हो गये. उसरर गाहियोंकी बौदार म हो तो किसपर हो । इसीसे जालों वर्ष बीत जानेपर भी बाज जगतके नरनारी कैंकेपीका नाम सुनते ही नाक-भी सिकोइ खेते हैं और भीका पाने-पर उसे हो चार कॅंचे-बीचे शब्द सुनानेसे बाज नहीं खाते । परात इससे यह नहीं सममना चाहिये कि कैदेवी सर्वधा हर्गकांकी ही सानि थी, उसमें कोई सद्गुण या ही नहीं । सधी बात तो यह है कि यदि श्रीराम-वनवासमें कैकेबीके मारण होनेका प्रसंग निकाल लिया जाय तो कैडेबीका चरित्र रामाययाके मायः सभी बी-चरित्रोंमें शायद बडकर राममा साय । कैकेपीके राम-यनवासके कारण होनेमें भी एक बड़ा भारी रहस्य दिया हुआ है, जिसका उत्पादन होनेपर यह शिक्ष हो बाता है कि भीरामके धनन्य भीर अनुकूछ क्लोंसे क्रिकेंग्रीका स्थान सर्वोच है। इस विषयपर वाले भागवार चयामनि विचार मण्ड किये जाएँगे । यहचे कैडेवीडे धारय गुर्नोकी चोर दृष्टि बारिये।

हैदेवी महाराम कैक्यकी दुनी भीर द्रश्यमंत्रीकी पृथ्वी राती थी। यह वेगक व्यक्तिम मुन्दति ही महीं भी, नयस केलोची वित्तमत कीर वीराहण भी थी। वृद्धिमाल, मरस्त्रा केलोचता, द्रश्यदुना कादि मह्युकोंका कैदेविके शीवतमें दूव' किदान था। इसने व्यक्ते प्रेम भीर सेवालाको महारामके हरूपर इसने किवाल कर किदा था कि महा-राम तीनों परानियों के देवीको ही नयसे व्यक्ति साम्या है कैदेवी किनेत्रापट विके मानी कुत कर नाक्यों थी। दूव तमन कराराम इंग्राय इंग्रयोंकी महावनाके जिले इस्तरान्त्र मालक प्राप्त केला वित्ते परान्त्री क्षात्रम था दिनों की वित्ते वाल स्वापन में सार्ची थी, खाराम था दिनों की वित्ते मही, तस्त्रा और द्रश्यान वित्ते दिनों की से मक्ट है कि वसने एक समय महाराज द्वारपके साणि मह जारेस स्वयं कही ही उत्यालतासे सारिक्ष कार्य सरे महाराजको संकरते सम्प्राच था। वसी दूर्व दूर्व रहें तुं स्वयं एक घटना यह हुई कि महाराज मेरा शुद्ध कर रहे ये हर्ने वनके रचके पिहेपेकी द्वारी निकलकर गिर एही। राजाने बातका बचा नहीं जागा। कैकेपीने हस घटनाको देश हि बीर पिछके विवायकशमनासे महाराजसे विना इस की हुएन्य दुरिकी जगह कपना हाथ महा दिना भी पी पी बीरी रही। उस समय बेदमाई मारे कैकेपीके बालाने के बाते वह गये, परन्तु उसले कपना हाथ मही हराया।। विकट समयमें यदि कैकेपीने दुनि सम्बा भीर सहस्तांक्य काम न विवाय होता जो सहाराजके माया कपने कीर्म

यानुष्णिका संदार करलेके बाद जब महाताको।
पटनाका पता साता तो उनके कावर्षका पार नहीं कि
जनका इदय कराजात तथा कानन्दले पर गया। ऐ
धीरता चीर स्थानदृष्णे दिवा करनेवर भी करके कर्नने कै
स्मितान चीर, वह पतिएर कोई प्रसान-वाति कर्ने
सहातान वादी, वह पतिएर कोई प्रसान-वाति कर्ने
सहातान वादी, वह पतिएर कोई प्रसान-वाति कर्ने
सहातान वादान देना चाहते हैं तो यह कर देनी है कि
सा आपके प्रेमके दिला करके कुछ भी नहीं चाति है।
सहारान किसी तरह नहीं मानते चीर दो वर देनेने विधे
करने कानते हैं तब वृष्णे-प्रेमकाका 'कावरणक होनेवर कर्ने
स्मृति करकर स्थाना विषय पुत्रा सेती है। बसका या व्याप्य सर्वेषा सहात्वाच क्षेत्र

भरत-राष्ट्रम मिनेशा चले गये हैं। पीमेरी मार्गा वैद्यासमें शीरामके राज्याभिषेककी सेवारों की, किर्त के कारवारे हैं। उस समय महाराज इकरावरे हमार्ग कारवारे हमार्ग वर्षीर सामग्र की सामग्र की

त्तुं केंग्रेथी इस बातकी कुछ भी पत्ता न कर साम-ग्वामियेककी बात सुनते ही प्रसान होग्योगी । हेन्ज्येरित क्दी मन्याने सावत जब बसे यह समाचार सुनाया वब इ धानन्त्में बूद गयी। वह सन्यातको सुरस्करमें एक दिव्य पत्ता महना देवत 'रिम्मायसणं तथे सुन्यते प्रस्ती सुन्य' एसी महना देवत 'रिम्मायसणं तथे सुन्यते प्रस्ती सुन्य'

> रं तु मन्यरे मद्यमास्त्रातं परमं धिवम्। पतन्मे प्रियमास्त्रातं किं ना मृतः करोगि ते।। रामे ना भरते वाहं विशेषं नोपकक्षं । तस्त्रापुद्रास्मि यदात्रा रामं राज्येऽभिष्कवति।।

न में परं विधिदितों वहं युनः प्रियं प्रियाहें युनचं बचोऽमृतम् । तथा इतोचसनमतः प्रियोत्तहं

> वरं परंते प्रदराणि तं बूलु ।। (बा॰श॰२।७। १४ से २६)

'ममर्थ' ! गुरे हुम्कों या का हो मिल कंबार कुमचा है, ह सुमें बहुनेमें में तो घोर क्या उपका कर हैं ! (क्यारे भरवके राज्य देनेकी बात हुई थो) चरना दाना कीर मार्केट मैं कोई में कुमारे देवती, में हुस वायते बहुत मारक हूँ कि मारात्म कट राज्या राज्याभिष्क करें? : वे मिण्यातिकी ! राज्यों किया हों हैं ! ये स्वाप्त कुमने ने पाव्य मुळे क्यार कुम की मिल मार्ग हैं ! ऐसा प्यप्तके समान मुकार क्यार मार्क मार्ग हों दुस करने । येचे पर कमा मुकार के स्वाप्त हों हुन्हें हेते किये मुजी पादे यो हुस्कार मांग है, मुक्ते होते हुँ !

हमार मन्या पानेको केंकहर कैनेनीको ज्युत उज्ज वंदरा सीचा समझारी है, पानु किर भी कैनेनी हो कीसाको पुर्वाकी मर्टमा करती हुई पाने कराने कि 'कीसाकन को प्राचेक मर्टमा करती हुई पाने कराने कि 'कीसाकन कें प्राचेक मर्टमा करें हुँ है, स्वत्यूत (इसारी उन्नव्यक्त केंक्ट्रा केंद्र प्राचेक हैं, बद रासके क्रेट्र इस है, स्वत्यूत (इसारी उन्नव्यक्त केंद्र प्राचे बद्दा सामान केंद्र प्राचेक्ट्र प्राचेक्ट्र प्राचे क्षा केंद्र प्राचेक्ट्र प्रचेक्ट्र प्रच

> यथा वे मरतो मान्यस्तया भूबोऽपि राधवः । कौसत्यातोऽतिरिकं स तु शुक्रुको हि माम् ॥

राज्यं बदि हि समस्य मस्तरंगिष तत्तरः । प्रन्यते हि बचारमानं यथा आर्तृस्तु रागवः ॥ सुम्मे भरत जिलना प्यारा है, राग उससे कहीं चथिक

प्यारे हैं, क्योंकि राम मेरी सेवा कीसत्यासे भी अधिक करते हैं। रामको यदि राज्य मिळता है तो यह भरतको ही मिळता है, मेर्सा समकता कादिये। क्योंकि राम ध्व आहर्यों-को अपने ही समान समस्त्री हैं (य॰ एग ८०१८) १०५० हस्स्यत वस जमरास महासाज हरूरपाठी निन्दाकर कैनेया को किर जमाराने क्यों, तब तो कैनेयोंने उसको यही हरी

वरह फटकार दिया---रक्षती कटि सके व

इदशी यदि राभे च वृद्धिस्तव समामता। विद्याबाहरेदनं बैव कर्तरयं तब पापिनि ।। पुनि अस करह कहारी घरफोरी । ही धरि औम कढावउँ तोरी।। इस प्रसंगसे पता रुगता है कि कैकेयी श्रीरासको किनना कविक चार करती थी और उसे रामके राज्यामियेकमें कितना बड़ा मुख या । इसके बाद मन्धराके पुनः कहासुनी करनेपर कैकेपीके द्वारा जो ऊल कार्य हुआ, उसे यहाँ क्षित्तनेकी आवरमकता नहीं । उसी कुकार्यके छिये शी कैकेयी आजवक पापिनी और चनर्थकी मूलकारयरूपा कहलाती है। परन्तु विचार करनेकी बात है कि रामको इतना चाहने-वाठी. इरुप्रया और क्रमची रचाका हमेशा फिक रखनेवाठी. परम सर्गाटा कैबेबीने राज्य कोभसे ऐसा चनर्च क्यों किया है को धोडी डेर पड़के रासको भरतसे ऋषिक मिय मतलाकर उनके राज्याभियेकके सुसंवादयर विश्याभरण प्ररस्कार वेती थी और शम तथा दुशरमकी निन्दा करनेपर, भरतको राज्य देनेकी प्रतिका आननेपर भी, सन्धराको 'धरफोरी' कड्कर उसकी बीभ निकलवाना चाहती थी, वही जरासी देरमें इतनी कैसे घदल जाती है कि वह रामको चौदह सालके किये बनके दाल सहन करनेके जिये भेज देती है और भरत-के शीख-स्वभावको जानको हुई भी उसके लिये राज्यका मरवान चाहवी है 🛚

हुतमें दहल है, वह रत्स्य यह है कि कैवेगोबा जन्म सारवार ब्रोतास्की लोकार्त प्राप्त कार्य स्ट्रोटे विचे हो हुआ या, कैवेगो भागवार, मीतास्को प्राप्त परवाग्या साम्यती यो चौर मीताबंद ब्रोडाकार्यने सहास्का वनकेंद्र ब्रिजे उत्तरी ब्रोतास्को रिकेट प्रदुतार यह व्यवस्ते पूर्व चीता थी। यह कैवेंद्री बोतास्को प्राप्त प्राप्त स्वाद स्वोदा व होती तो ब्रोतास्क्र लील-बार्य हो समझ कहाती न

न सीताका हरण होता और न शशसराज शक्य अपनी सेनासदित मस्ता। रामने भवतार धारण किया था 'दुष्टुगीं-का विनारा करके साधुक्रोंका परिवास करनेके खिये।" बुटोंके विनासके लिये हेग्नकी आवस्यकता थी। विना आपराध मर्यादापुरुपोत्तम श्रीराम किसीपर बाक्रमण करने वर्षी जाते ? बाजकलके राज्यकोशी घोगाँकी भाँति वे बाजवसी परस्वापहरण करना तो चाहते ही नहीं थे। सर्वांदाकी दक्षा करके ही सारा काम करना था। राज्यको आरनेका कार्य भी दपाको लिये हुए था, मारकर ही उसका उदार करना था । तुष्टकार्यं करनेवालोंका वच करके ही साधु और दुर्धोका दोनोंका परित्राय करना था । सावधोंका दुष्टोंसे बचाकर सदपरेशसे और दर्शेका कालमृति होकर सूलक्षसे-एक ही बारसे दो शिकार करने थे। पर इस कार्यके किये भी कारण चाहिये. वह कारण था सीताहरण। इसके सिवा अनेक शाप-वरदानोंको भी सचा करना था. पहखे के हेतु चोंकी अर्थादा रखनी थी. परना वन गये बिना सीताहरण होता कैसे ? राज्याभिषेक हो जाता तो वन जानेका कोई कारण नहीं रह जाता । महाराज दशरथकी कृत्युका समय समीप का पहेँचा था, उसके विये भी किसी निमित्तकी स्थना करनी थी। अतप्य इस निमित्तके लिये देवी कैकेवीका सुनाव किया गया और महाराज दरारथकी सृत्यु, एवं रावग्रका बध, इन दोनों कायों के क्षिये कैकेवीके द्वारा राम-वनवासकी व्यवस्था करायी गयी !

> ईश्वर सर्वमूतानां इदेशेऽर्जुन तिहति। भ्रामयन्सर्वमूतानि, यन्त्रारुढानि मायया।।

'भगवान्, सबने हृद्यमें स्थित हुए समता शृंतोंको माया-से पन्नास्त्यको तरह पुमाते हैं' हुती गीतावात्त्यके खद्रासार सबके नियमा भगवान्, श्रीरामकी हो गेरणासे देवतायाँके-हारा मिरित होक तक सरस्वती देवी केंद्रेयोकी श्रीदे फ्रेंट गर्मी 8 चौर तब बसका पूरा चसर हो गया, (भागोरख मतीत वर भारं) तथ भगवदिच्यानुसार बरतनेवाली केंद्रेयी

 देशामीने सास्त्रीको यह कहकर मेवा था कि—
 भग्नपं प्रतिप्रस्ताती कैन्सी च ततः सन् ।
 तते कि सहस्त्रे चुनिर्देश हिने हुने ॥
 पहले मन्दर्शा मरेपहर्श्वः हिन्द कैन्सीकी प्रवित्रं मनेश कर्ता मौर रामके मार्गिकने शिक्तकर्वः वात्तव मेटा माना ।
 स्वान्ति प्रतिप्रदेश सिक्तकर्वः वात्तव मेटा माना ।
 स्वान्ति प्रतिप्रदेश सिक्तकर्वः वात्तव मेटा माना । भगवान्की भाषास्य पेना कार्यं कर बेटी,† सो सप्त स् होनेपर भी भगवान्की सीजाकी सम्पूर्णताके विपे स्पन् भाषरमक्ष्या ।

बाव प्रश्न यह है कि 'जब बैकेपी भगवान्त्री परम " थी, ममुकी इस बाम्यन्तरिक गुवर्जालाडे परि मकारवर्ने भी श्रीरामसे बायन्त प्यार करती थी. राजर्ने परिवारमें बसकी बन्नी शुख्यानि थी, सारा 🛭 कैकेपीसे शुरु था, किर मगतान्ते उसीके हात भीषण कार्य कराकर असे कुटुन्दियों और शहपत्रानि हारा विरस्टल, प्रश्नहारा अपमानित और इतिहासमें हा खिये लोक-निन्दित क्यों मनाया ? क्षव भगवाद ही म मेरक हैं, तो साध्वी सरका बैदेवी के मनमें सरस्वती देहात है मेरणा ही क्यों करवायी, जिससे बसका जीवन ना विषे दुस्ती और नाम सदाके विषे बदनाम हो हवा इसीमें सो रहस्य है। भगवान श्रीराम साम्राद समिएन परमात्मा थे, कैंदेवी उनकी परम धनुरातिकी सेदिय में जो सबसे गुहा और कठिन कार्य होता है उसको ^{सा} सामने न को प्रकारित ही किया वा सकता है, चौर बार कोई उसे करनेमें ही समर्थ होता है। वह कार्य तो कि अत्यन्त कठोरकर्सी, धनिष्ठ और परम प्रेमीके हात करवाया जाता है। खास करके जिस कार्यमें क्वांडी व नामी हो, ऐसे कार्यके लिये तो उसीको चुना बाटा है, है अत्यन्त ही अन्तरंग हो। रामका जीकापवाद मिटानेके हिर्द भीसीवाजी बनवास स्वीकार करती हुई सन्देश कार्डा हैं कि, में जानती हैं, कि मेरी हाइतामें आपको सरी नहीं है, केवल आप लोकापबादके मयसे मुक्ते लाग ते । तथापि मेरे तो भाप ही परमगति हैं। भापका क्रोधारी दूर हो, मुक्ते अपने शरीरके लिये कह भी शोक नहीं है। यहाँ सीवाजी 'रामकाश' के लिये कष्ट सहती हैं गर्द

ं कैनेवाने ऐसा कानेवा एक कारण यह भी शारण जाता है कि 'कैनेवाने वह कहकानमें करने विशाव सर्थ है। वहाँ एक दिन एक कुरूप मायायको माना रेसके कैनेवों वर्ष-देखाने जावारों की और निक्या की भी। इससे कुन्न सेवर रा सम्बन्धी मायायने कैनेवानेको यह साथ दिना या कि 'तू नार्थ की स्थावित का जाता के किस के कि स्वत्य स्थावित कर है। स्थावित को जाता की की स्थावित कर होता कर है। निस्सी जावारों की की साथा नीवानिकार होता है।



न सीताका दरवा दोता और 🔳 राक्षसराज राववा वापनी · सेनासहित मरता। रामने चवतार धारण किया था 'दुष्कृतों-का विनास करके साध्यांका परित्राण करनेके खिये।" दृष्टींके विनाशके लिये हेत्रकी आवश्यकता थी। विना अपराध मर्यादापुरुपोत्तम श्रीराम किसीपर भाकमण करने वर्यो जाते ? बाजकलके राज्यलोभी जोगोंकी भाँति वे बन्धरवस्ती परस्वापहरक फरना सो चाहते ही नहीं थे । सर्थांदाकी रक्षा करके ही सारा काम करना था। रावणको आरनेका कार्य भी दपाको लिये हुए था, मारकर हो उसका उदार करना था । दुष्टकार्यं करमेवालोंका वय करके ही साधु और दुर्शेका श्रीनोंका परित्राण करना था । साधुश्रोंका दुर्होंसे वचाकर सद्यदेशसे और दुर्शेका कालमूर्ति होक्त सूलुरूपसे-एक ही बारसे दो शिकार करने थे। पर इस कार्यके लिये भी कारण चाहिये, वह कारण था सीताहरण। इसके सिवा अनेक बाप-बरदानोंको भी सबा करना था, पहलेके हेतुओंकी मर्यादा रसनी भी, परन्तु वन गये बिना सीताहरख होता कैसे है राज्याभिषेक हो जाता तो वन जानेका कोई कारख वहीं रह काता । महाराज दरारयकी मृत्युका समय समीप चा पहुँचा था, उसके दिये भी किसी निमित्तकी रचना करनी थी। अतरव इस निमिक्तके विये देवी कैकेशीका खुनाव किया शया और महाराज दरारपकी श्रृत्यु, एवं रावश्यका वध, इन होत्रों कार्यों के लिये कैकेपी के हाता राम-वनवासकी व्यवस्था करायी गयी।

> ईश्वर सर्वमूतानां इदेशेऽर्जुन तिहति। म्रामयन्सर्वमृतानि यन्त्राख्डानि मायसा।

'श्राचान् सक्के हर्यमें स्थित हूच समता शृहोंको शावा-से बन्त्राहरको ताह सुमार्ग हैं' इसी गीवावाच्यके खद्भारा सक्के नियत्ता प्रमादा श्रीरामकों ही भीतात्रोंके-ह्यात मेरित होकर कर सास्त्रानि हेची कैबेगीकी हुनि कर स्था के बीर कर कर सास्त्रा निया हो गया, (जारीन्य इसी क बीर कर करका नृशा स्थार हो गया, (जारीन्य इसी व बीर कर साम्यिन्यानुमार बरननेवाली कैबेगी भगवात्की मायावरा ऐसा कार्य कर बैठी, हं को स्वतः होनेपर भी भगवात्की खीलाकी सम्पूर्ण ताके बिपे स्व भावरणक था।

व्यय प्रका यह है कि 'जब कैकेशी भगवानकी परम र थी, ममुकी इस बान्यन्तरिक ग्रहालीलाके बर्दित मकारयमें भी धीरामसे शत्यन्त प्यार करती थी. राजनें है परिवारमें उसकी बढ़ी सुप्याति थी, सारा डाउ कैकेयीसे खुश था, फिर भगवानूने उसीने हत य भीषण कार्यं कराकर उसे हुद्धन्वयों और प्रवश्वतियों हारा विरस्कृत, पुत्रहारा भपमानित भीर इतिहासमें हरी किये क्षीय-निन्दित क्यों धनाया ? जब भगवान ही सा भेरक हैं, सो साध्वी सरका है हेगी है मनमें सरस्वती है।ता रे^स मेरणा ही क्यों करवायी, जिससे उसका जीवन शर् जिये दुखी और नाम सदाके किये बदनान हो गरा! इसीमें तो रहस्य है। भगवानु श्रीराम साचाद सबिशन्त परमाल्या थे, कैकेवी उनकी परम अनुरागिकी सेविस वी जो सबसे ग्रहा चौर कठिन कार्य होता है उसको स^{न्हे} सामने न सी प्रकाशित ही किया जा सकता है, औ इर कोई वसे करनेमें ही समयं होता है। वह कार्य ते कि धारपन्त कडोरकमीं, धनिष्ठ और परम प्रेमीके शारा करवाया ज्याता है। खास करके जिस कार्यमें कर्तांकी ह नामी हो, देसे कार्यके लिये तो उसीको चुना बाता है, व्यत्यन्त 🗂 वन्तरंग हो। रामका लोकापवाद मिटारेने वि श्रीसीताजी वनवास स्वीकार करती हुई सन्देशा काशी हैं कि, में जानती हूँ, कि मेरी छदतामें भाष्की हते वहीं है, केवल आप लोकापवादके भयसे मुक्ते लाग रहे। तयापि मेरे तो चाप ही परमगति हैं। चापका बोधागी बूर ही. सुन्ने चपने शरीरके लिये कुछ भी शोक नहीं यहाँ सीताबी 'रामकात' के लिये कष्ट सहती हैं गर्न

नी कैनेबोर्ड ऐसा करनेना यक नारण बह से शर्द ना कि कैनेबोर्ज कर करकारों अपने दिवादे का है। हैं बार्ड एक दिन कर कुरूप माझकों आपा देशक दैनेदों करों दिवारों देशकों भी और निराध की भी । साने हुन होड़ ' रामनी आध्याने कैनेबोर्ज वह चाव दिया चा कि नू माने की बांच्यानने कानी होटह रेंदे हुक्य बरानदी दिवारा करों है बांचेय हुन आहु करना मोर्ड आहर देश करने हारों हैं बांचेय हुन में इस्ता मोर्ड आगोंने बाहर देश कर हरी हैं। विश्वोत आपरों होंगे कही आही जो कर निरास होंगें।

[·] देवतामीने मुस्सतीके यह कहकर भेगा था कि-

श्चावरां प्रविश्वनारी देवेदी च तथा परम् ।

हती स्थित सहायके पुनेर्संद दिवं शहते हार सामे अन्यर्सन अनेरफाले किर वेडेवर्णनी प्रस्ति अनेस

इरना और रायके आजिनस्ये निव्यवस्थे वन्त्रम बीट आजा । (जन्मानात्रमञ्जू





केकेयीकी समा-याचना | हमस्य मम दौरात्म्यं शमासाराहि साघवः। परमात्मा सनातनः॥

नकी बदनामी नहीं होती, प्रशंसा होती है। उनके वियतको बाजतक पना होती है परन्तु कैकेपीका कार्य ससे अत्यन्त महान है। उसे सो 'समकात' के लिवे सम-रोश्री महाहर होना पदेशा । 'वावचन्द्रदिवाकती' गावियाँ हरी परेंगी। पापिनी, कलक्रिनी, कलपातिनीकी उपाधियाँ, हण करती पहेंगी, वैधन्यका दुःश्व स्वीकारका पुत्र स्ती गरनिवासियोंद्वारा तिरस्कृत द्वोना पदेगा । सथापि धास-त्र 'जस्त काना पडेता ! यही राग्नकी इच्छा है और इस 'राम-तत्र' के लिये शामने कैंबेगीको ही प्रधान पात चना है। भीसे यह कलड़का चिर शेका उसीके सिर पोता गया है। ह इसीक्षिये 🌃 वह परमदा भीरामकी परम सन्तरंग मपात्री है, वह श्रीरामधी लीटामें सहाविका है, उसे दनामी-खरामामीले कोई काम नहीं, उसे सो सब उद्ध तहकर भी 'रामकाज' करना है। रामरूपी सुत्रधार को कछ भी पार्ट हैं, उनके नाटककी सांगताके किये उनकी बाजा-उसार इसे हो बड़ी क्षेत्र केलना है. चाडे वह किनना ही हर क्यों न हो । कैंबेबी सपना पार्ट वहा सब्दा सेखती । शम प्रपत्ने 'बाज' के लिये सीता और छवमणको सेका सारी-सारी समसे थिये विता होते हैं। हैदेवी हस तमय पार्ट खेळ रही थी. इसक्षिये उसकी उस सम्रथारसे-मादकके स्वामीसे---विसके इंशितसे वशकादकका प्रत्येक परदा पढ़ रहा है और उसमें प्रत्येक किया सचार रूपसे हो रही है-प्कान्तमें मिलनेका चवसर नहीं मिलता। इसीडिये वह भरतके साथ बन जाती है बीर वहाँ श्रीराम-से-नारकके स्वामीसे-एकान्तमें मितका अपने कार्यके किये प्रवती है और साधारण क्रीकी आँति जीआसे ही बीजामयसे उनकी दुःल पहुँचानेके क्रिये कमा चाहती है परना सीकामय भेर खोलकर साम कर देते हैं कि 'यह तो मेरा ही कार्य था, मेरी ही इण्डासे, मेरी मायाने हका था. इम ठो निमित्तमात्र थी, सुखसे भजन करो और मुक्त हो षाधो ।' वहाँका प्रसंग इस प्रकार है-अब अरत श्रीतासकी खीरा से जानेका बद्धत सामह करते हैं, किसी प्रकार नहीं मानते, तद भगवान् धीरामका रहस्य जाननेवाले मुनिवशिष्ठ भीरामके सञ्चेतसे भरतको घटग से जाकर स्कान्तमें समकाते हैं--'प्रत्र! बाज मैं तुसे एक गुरु रहस्य सुना रहा हैं। श्रीराम साचात् मारायण हैं, पूर्वदालमें ब्रह्मातीने इनसे रावण-वधके लिये प्रार्थना की बी, इसीसे इन्होंने दशरथके यहाँ पुत्ररूपसे सवतार क्षिया है। श्रीसीतात्री सादात् योगमाया है। श्रीक्षकाण शेवके सवतार है, जो

सदा श्रीतमके साथ उनकी सेवामें खरे रहते हैं। धीरामको रावणका वय करना है, इससे ये वस्त वनमें रहेंगे। तेरी माराका कोई दोच नहीं है—

कैकेश्यासरदानादि वदानिष्ठुर माषणम् ।। सर्वे देवहतं नीचेदेवं सा माषयेत्कमम् तस्मात्मवामहं वात रामस्य विनिवर्तते ।। (अध्यास एक)

'कैक्योंने जो घरदात मांगे शीर निष्ठुर वचन करें थे, सो सब देवका कार्य था (रामकाव था) नहीं तो. भटा, कैकेंगी कमी ऐसा का सकती ? घतपुत हुम संग्र'ो धयोष्या छौटा से कम्लोका सामक छोड तो !'

रास्तेमें भरदाजमुनिने भी संकेतसे कहा था-

न होचेणावणन्तरमा कैंकवी भरत त्वमा । राम प्रवासने केंजरसुखोदके मिश्यति ।। देवानां रानवानां च कर्यणां माविवासनाम् । हित्तमेव सवित्यद्वि रामप्रजानारिह ।। (या व राव व रा व र १ १ १ ९ ५ ७ ७ ।

'हे सरत, व. मारत केवेगी पर होपारोप्य साठ कर ! इत्तरज्ञ वनशस्त सम्मान देव दावन और क्यपियांके परत हित क्योर परत सुख्यक कारण होता! 'यन क्रमीनरिकांके पर परिचय प्राप्त कर परत समस्त जाते हैं और औरतमको याज-पाठुक सादर सेकर 'प्यरोप्या कीत्रमेकी तैयारी करते हैं। इपा केवेपीओ एकान्तर्में सीतमके सावन्य पाकर मौजोंने व्यानुक्रोकी प्राप्त व्यान्तर्में हुएं स्यानुक हुएसे—

-श्राम मोहकर बोर्फा 'हे श्रीराम शिल्हारे शत्रपाशिकमें मिने विशा किया था। उस समय मेरी शुद्धि देवनाकाँने विगाह चीथी और मेरा चित्त तथारी माणासे मोबिण हो गया वा । मतपुर मेरी इस दुष्टगाकी तम शमा करें। वर्षांकि साथ शमासील हुआ करते हैं । फिर सुम को साचान विन्तु हो । इत्हियोरी बम्यक सनातन परमाभा हो, मापाने अनुत्रक्ष धारी होकर समल विश्वको मोहित कर रहे हो । शुर्व्हांसे मेरित होकर कोग साधु-परताच कमें करते हैं । यह सारा निश्वशुस्टारें भवीन है, घरतम्ब है, घरनी हरवासे कुछ भी नहीं कर सकता । जैसे करातिक्यों न चानेवाकेकी हरपानुसार ही माचर्ता हैं, पैने 🜓 यह यहरूनपारियी गर्नेकी सावा तुम्हारे ही कावीन है। तम्हें देवतार्क्षाका कार्य करना था चतपुत्र तमने ही ऐसा करनेके लिये गर्फे मेरणा की। है विश्वेश्वर ! है सनस्त ! है जगन्नाम ! मेरी रक्षा करो । में लुग्हें नमस्कार करती हैं । लुम भपनी सरवज्ञानरूपी निर्मेल सीवश्रधार सहवारसे मेरी प्रथ-वित्तादि विपर्योमें स्त्रेहरूपी फौसीको कार हो । में हमारे शरण हैं।

कैकेपीके स्पष्ट भीर सरङ वधन सुनका भगवानूने इँसते हुए कहा—

यदाह मां महामागे - नानुतं सरयमेव तत् । मदैव मेरिता वागी तव ववताद् विनिर्मता ॥ देवकार्योभे सिद्धपर्यमण दोणः चुततातः । गण्ड संबद्धि मां नित्यं मावयानी देवानिदास्ता। मद्धि त्रोतात्वा मद्भारता मोश्योद्धपर्यः । श्रद्ध सर्वत्र समारम् इत्यो गा विष एव वा ॥ मास्ति मे करपक्षेत्र मनतोद्धनुमनाम्यहम् । मन्मायां मोदितियेवा मानग्य मनुनाहतित् ॥ प्रयु: सायदानमं जानन्त न तु तस्त्रतः । स्रमान्त्र संत्र समान्यु स्वतंत्र वे मनावद्धाः । स्वतः स्वतंत्र समान्युत्वसं ते मनावद्धाः ।

(अध्यात्म रा०)

है महाभागे ! तुम जो कुछ बहती हो सो सत्य है इसमें किञ्चित भी मिथ्या नहीं । देवताओंका कार्य सिद्ध करनेके टिये मेरि डी मेरागो वस समा तुरस्ते मुन्ते देवे बात मेर इसमें तुरस्ता चुन भी चेता नहीं। (दूसने ते में काम किया है।) कर तुम मामे मेरिड्यू में तुमें ते में करती दरी न तुम्सार के इतात तर मोहिंद्य कारों मेरी इस महिंद्य करता तुम तील दी गुरू हो जारों गर्देय समाधि हैं। मेरे ने तो बोर्डू में विद्यासित निवाद मनता है, में भी उसको मनता है। स्वाद्य है स्तारी सुन्ते मेरी मालायों मेरिज है से गुक्को तुमार्य न कर सुन्त-तुम्लीका मोला सम्बाद्य मुक्का मान है। स्व गीमानका दिश्य है कि तुमारे इस्त्री मालद कर स्वाराज में समा है। कारों सुन्ते मेरी सुन्ते मेरी स्वार

सगमान् के इन बचनोंसे कैक्सोके स्थितिका क्या कि है। सगमान् के क्यनका सार बही है कि द्वान मान्यन्य है। सगमान् के स्थान स्थान स्थान के कि द्वान मान्यन्य है। होने निर्देश समस्य हिम्मी होने के स्थानित हो। होने बहु स्थानित हो। होने बहु स्थानित है। स्थानमीहित है। स्थानमीहित है। स्थानमीहित है। स्थानमीहित है। हो स्थान समस्य है। हम स्थान हो। हम समस्य है। हम स्थान हो।

भगगान् श्रीरासके इन धचनोंको सुनकर केवेगो मन चौर चालपेपूर्ण इत्यारे शिक्तोंबार साराज मणान है मदक्षिणा करके सानन्य भरतके साथ चम्रोच्या छीरगरी।

व्यर्थुक स्वष्ट वर्षमसे यह अठीमाँवि सिंद हो बार्ड कि कैंडवीने बान-ब्यूम्ब्य स्वार्यद्विति डोई बर्ग वर्ष मिं या । उतने वो उत्त किया सो बीरामको मेलासंपार्क्य केंद्रिये ! इत विषेचनसे यह ममायिव हो जाता है है कैंदे बहुत हो उचकोदिको महिला मो । वह सरक, राम्प्रीय असम्बर, खे ह-वास्तव-बुक, धर्मप्रात्वया, इदिसती, गाँ परिताता, निर्मय पीरांगना होनेके साथ हो मायाव बीता जनन्य अक यो । उत्तको जो कुछ वह रामी हुई और हो गिँ है, सो सब भीरामको चन्तरंग भीतिक निद्रपंतर रो है। किस देवीने काल्क व्यार्थ, मोने स्वार्ड करून सरक सरकको जन्म दिवा, यह देवी कदापि विरस्कारके मोन बं हो सकती, ऐसी आतासरवीया देवीके चरवाँन वार्ण चनन्य प्रधान है।

---केने.यी-सन्दर्भ-पद-बन्दर्भ

श्रीराञ्चमजी



हामना शीरातुमनी घमवात्र बीरामचन्त्र, भरत, सच्मव तीर्नोसे छोटे थे। कीतुमित्रा-बोटे पुरववात्, पुत्र थे। इनके सम्बच्धी रामाव्यमें को दुस् वर्ष में बारा है, उससे बही पता स्वतात्र है कि धोग्रामुख्यी बहुत पोड़ा चोजनेताले, व्यापन देवस्ती, चीर,

त्रेवासायय, सामहासादुरास, पुरायाय काम करनेवाने,
तरने सासूत्य है। भीरत्याव्य कीर श्रीतगृह्य होतों ही
माहरोंने बाराना कीरन रात्र परित्य सेवार्ग विशाया रात्र माहरोंने बाराना कीरन रात्र परित्य सेवार्ग विशाया रात्र्य क्रमायांकी सेवारों भी ग्रमुक्ती लेशका मात्र्य एक मकारते क्रमायां की श्रीवारती का प्रतासिक कार्य सामग्री है। हामार्थ ही भीरित करने कारात्रीके बारा-सेवक कार्य सामग्री है। हामार्थ ही भीरित करने कारा रहते और पुराया कार्यापुतार सेवा किसा करते हैं। ये वह संकोधी हैं, करानी कोरते कार्य करते, बारारी कोरते कार्य होता हुए भी गाहीं करते। करते, बारारी कोरते कार्य होता हुए भी गाहीं करते।

भी राजुरामीके सपनी मीरते भोजनेके विशेष कास्तर हो मितते हैं। प्रथम, अब भी-मारतानी गनिवालते सामक साता कैयेरोसि मित्रते हैं चौर कैयेरो सातान-प्रचाण करकर माह-राज दरापची मृत्यु भीर भीराम-कप्यानके वन मानेका विषरण सुमारी है भीर कहती है कि 'बेटा ! यह सब मैंने सेरे ही जिले किया है—

तात । बात में सकत सैंवारी। मह मन्यरा सहाय विकारी ११

त्रव भरत धोकाकुत होकर विज्ञान करते और प्रावेशः में बाबर माताको मलादुरा कहने बगते हैं। छन्द्रव भी माताकी कृतिबतापर सत्यन्त कुष्य हैं, शरीरमें बाग बग रही है,परन्तु जनका तो मोसनेका कुछ समिकार है ही नहीं।

सुनि शहुक्र मातु कुटिटाई । जरहिं गात विसि कछु न बसाई ॥

इसी समय क्वरी मायरा सजयज्ञार यहाँ चाली है पर मरतको प्रपत्ती ही अब्दिने जनुसार स्वार्ध और राज्य-भोगी सममती है। यह सममती है कि मरतके लिये राज्य-का सारा सामान मेंने ही बनावा है, यह मुखे हनाय देवा, इसीलिये बनदन कर खाती है।

र्रेसती-उद्युक्ती संबीधवी कुन्तीको देशका श्युवनी कोचको गर्दी सन्दात सक्ते- रुसि रिसि मोठ रुपण रुपु माई। बस्त बन्त पुत आहरि पाई।। हुपुष्टि रात ति कूना मारा। परि मुँद मोरे माहे करत पुठारा।। कूना टूटेट पूट कपाल। देरित समन मुख रुपिर प्रचाल।। पुनि रिपुहन रुसि नस्रीसर खेळी। रोग प्रसीटन परि परि प्रोसेटी।।

उपयुक्त इनाम मिल गया । श्यामय भरतजीने मन्परा-को सुद्दा दिया ।

ब्रारो, जीतम क्लोध्याके सिंहासनवर बासीन है, बीलों माई सेवा और धर्मेष्ट्रक शासनमें सहारका करते हैं। वह स्तता वर्धनिकांचें आपन सेतासनवर्स सहारका करते हैं। कर्मा सालेके क्लिये मार्चन सामा हुन्दर्स सुनाम और क्लो सालके क्लिये मार्चना की। युहर्गतारी रीमारफ्क सम्मादा कीतान नवकी मार्चना संक्रिय की भी दरकारमें पूरा कि 'सक्कासुरको वस करनेका अंध तुम कोगोंने कीन केना कारते हैं। वर्षाच्ये समुद्रिक्त क्रिकारी कीन सेना कारते हैं। वर्षाच्ये समुद्रिक्त क्रिकारी कीन सेना कारते हैं। वर्षाच्ये समुद्रिक्त क्रिकारी कीन

शीमरतने कहा कि 'मैं बचनाशुरका क्य कर सकता हूँ, हयार अनुसमीर प्रार्थना की कि 'प्रामो ! शीमरतजी बहुत काम कर चुके हैं। धापके बनवासक समय हर्गोंत स्वाच्याचा वाकन किया, व्यक्त प्रकार हु:ख सहे, मन्दी-श्राममं कुछकी राज्यावर सीये, करा-युवाना धाहार किया, बादा राज्यों, वान्या चार्ये, तब इस किया। बन्द मेरी प्रार्थना है कि मेरे रहते हर्गों युवके क्षिये न भेजकर श्रामे ही आहा वीजिये।'

श्रमुताबीके दृष वक्तीको सुनका लीमामने कनका प्रत्यात लोकर बरते हुए कहा 'आहे, सुनी लाकर वैल-बन कहो, में सुनी पश्चित सुनद तमाका रामा बनावा हूँ।' बीताम जानने ये कि श्रमुम दुष्ट रापसका तक करना कहते हैं, कहें रागका जोन नहीं है। इस्तिये स्टूबेते हो कह दिया कि 'बीतिश्र कारि सामी बीर शिवपूर्वक तुम्मारा करिलेक करेंगे। में जो सुन्न कहूँ सी हाई लीकार करना पारिये व कार्यों माकर्नोको ग्राम्

हसपर वीर्य-सम्बद्ध कीरानुस्त्री बदे ही संकोच में परकर वीरेसे कहते स्त्री । 'महाराज! वेड्र साहपांके रहते राज्य-गहीपर बैठना में क्ष्यमें समस्ता हूँ, जब भरतांत्री महाराज कववासुरको सारवेके किये कर दे थे तब सुखे बीचमें नहीं बोसजा चाहिये था। मेरा बीचमें कोबना ही मेरे क्रिये इस दुर्गतिका कारण हुका। क्षत्र भागकी बाह्यका उल्लंधन करना भी भेरे जिये कठिन हैं। क्योंकि बाह्य में यह धर्म कई बार सुन चुका हूँ।"

इसके बाद शतुमत्री सववामुखर पहाई करने हैं, रास्तेमें श्रीपारमीकिमीके बाअममें टहरने हैं, उसी राजको सीताके दोनों सुमारोंका जन्म होता है, जिनने शतुमको वदा हुएँ होता है। किर जाकर सववामुहका सुद्र करके वहीं बारद वर्ष दरकर श्रीराम-वर्गनार्थ कीरते हैं। को ब उनः श्रीराममीकिने बाधमारे इराते हैं और बाधने हैं श्रीनेनविध्य दामावरण मान गुतकर धानस्में में कें हो बाते हैं, क्योध्या धाकर सचने मिनते हैं, उन्हें की की बामार्ग गुद्धारी बीजार पर्यमूर्वक शानकों हुनके बीजनये भी मर्योदाकी बची रिवा निर्मा

---रिश्वन-रामकुर्व

श्रीरामभेमी दशरथ महाराज



नके यहाँ भिष्मिमेनया साचात् सांबदानन्द-धन अधुप्रस्त्यासे व्यवसीयं हुए। उन परम-भाग्यान्त्र महाराज औद्दरायकी अदिमादा वर्षोन कीन कर सकता है! महाराजे द्रारपाजी अञ्चे व्यवसार थे, जो अगवान्द्रको पुत्रस्यारे महाकट व्यवसिता व्यानन्द्रका युक्त

माहकर व्यवस्थित व्यागन्दवः चनुमव करमेके किये द्वी चराणाममें पथारे थे चौर जिन्होंने चपने वीवनकापरित्याग और मोचतकका संन्यास करके श्रीराम-प्रेम-का व्यावर्ग स्थापित कर विचा ।

भीद्रगरसनी परम तेनासी सनुमहाराजकी अंति ही प्रमाची रहा करनेवाले थे । वे पेट्रके ज्ञाता, विशास सेनाके हंदामी, बुरवर्गी, कायन्त प्रतापी, नगर भीर देशाशिवरांके विश्व, महारू यक करनेवाले, धर्ममेंग, ह्वाचील, महर्षियांके सरग सत्रुणोंवाले, राजर्षि, जैलोक्य-प्रदिक्ष, प्रताकरी, राजुनाराक, वचन मिर्गोदाले, जिलेट्विक, खितरसीने, पक-धान्यके सम्बद्ध केरर और हम्मके समान, सलमतिक वृद्ध धान्यके सम्बद्ध होरा और हम्मके समान, सलमतिक वृद्ध धान्यके सम्बद्ध होरा और हम्मके समान, सलमतिक वृद्ध धान, धर्म तथा कामका शास्त्राद्धारा पालन करनेवाले थे। (गा० पा॰ 11 र 1 वे ५ तक)

इनके मन्त्रिमयदलमें महामुनि वशिष्ठ, वामदेव, सुयज्ञ, आवाजि, कारयप, गौतम, मार्कवडेय, कालायन, एटि, स्वयन्तः, विजय, शुराष्ट्रः, राष्ट्रवर्षनं, स्वकांव सैर वर्षताः सादि विद्यायिनयसम्बद्धः समीतिमें स्वयनेशाले, स्वांप्टरः वितोनित्रयः, शीमन्त्रवः, पश्चित्र सुद्यः, रास्त्रवः, राष्ट्रः, रास्त्रवः, राज्याः, राज्याः स्वयः परास्त्रयी, राजनीतिषितारः, साववान, राजाः स्वयः स्रत्याले, तेजस्ति, समावान, स्वीतिमान, स्वयः, स्व स्रोप सीद स्वोत्तस्त स्वे स्वयः प्रसंस्थवादी प्रस्तरा रिका स्वे । (श्वः १००१ ०)

भारणे राजा और मिन्नसपडबड़े प्रभारने का वं प्रकारसे पर्मरत, सुखी धीर सम्बद्ध थी। महाराद इरार्ट सहस्यवा देखनात्रीय भी चाहते थे। महाराद हरार्ट प्रनेक यक किये थे। चार्ट्स रिप्टु-मार्ट्-मार्ट मक्टु-ने बपका प्राथमित करनेड़े जिये सक्षमेश दर्गनत हरार्ट्स भार्यसेम, स्वितान, समित्रिन, विचित्र और स्वामित्री पत्र किये। इन प्रश्नीम स्वत्यमंत्री सम्बद्ध की की स्व जिये। इन प्रश्नीम स्वत्यमंत्री सम्बद्ध सीनेडी हार्रि में चार्जीकर करेंद्र चौट्डिंक हर्ये द्वार देशे थे।

इत्तके बाद पुत्रमासिके क्षिये स्वय्यमहको स्वतिव वर्ण राज्यमे पुत्रविधान किया, जिलमें समस्त देवतागण स्वार्ण भाग क्षेत्रके क्षिये स्वयं पचारे थे। देवता स्वीर मुनिस्तिर्ण ग्रायंनापर भयवान् स्वीवच्यूने दशरमके यहाँ पुत्रस्ति स्व

चयपि रामदननासको धटनाके कारण कहीं कहीं दशरानीकों कामुक नतलाना नवा है। परनु देशी गाउ तार् देशे ने कामरपपण होतर कीन्योंके नपने होते तो मणुष्यकों शीरका आधामान कीस्त्याकों और केनल अहमांग्र ही केन्द्रीट ते देते। नविश्व ज्योंने नदुविचार किने वे, जो जनस्य हो ज्यादर्श नहीं है परनु वह चया समस्यी एक प्रचानी मी। दर्ग भौरायने सर प्रपानी तीकर सम्बन्ध नायग दिखा।

[†] जो दतास्तार पर्पारियोंके साथ जकेश वह सकता है, असे महार्पी कहते हैं और जो ऐसे दसहतार महर्द्रार साथ मकेश कोहा केस है, यह कारियों कहकाता है।

ना स्त्रीकार किया और वन्त्रपुरुशने स्वर्ण तकर दोकर पायवापायों ता हुमा मुवर्णयान देते हुए रहरूपसे कहानि के दि सम्बन्ध यह ति स्वपन्त केंद्र सारोधवर्षक की दि सम्बन्ध त्रवाचि त्रवाचि तित्र हों। ' राजाने मतव होकर व्यवेदाने खतुवार तिव्याची वर्ष सम्बन्ध र ते से सिंग का प्राचार की त्रिमाको - चीमाई भाग और वैकेटोको खादती माग देवा। सुनिक्रमाने की भी, इससे उनको सम्मानाचे चारिक देवा। सुनिक्रमाने की भी, इससे उनको सम्मानाचे चारिक देवा। सुनिक्रमाने की भी, इससे उनको सम्मानाचे चारिक दुनिक्रमानेको दे दिया। जितसे की स्वन्ध त्रवाची स्वा (के भागोंने) सदस्य और त्रवाम के केटोको का स्वन्ध हुनिक्स

राजाको चारों हो दुन परमिय थे, परन्तु इन सकर्में सीरानरर राजाका विरोध मेन था। होना ही जादिये, स्पिक्ट स्पृतिक विरोध से सम्प्र पार्ट्य करायों जो मनोहास की गयों थी। वे सामका समनी खाँतरोंसे चणभरके किये भी मेताक होना गरी कह सकते. थे। जब विश्वासिकती वज्यव्यार्थ भीरात अपनायको माँगर्न आपे, उस समय औरानकी जात राष्ट्र व यरेसे खरिक थी, परन्तु हरत्यार्थ जनके खरने पासने हरावार विवासिक काम भेजनेस वरी जाताकाली की। खाजिर विश्वक बहुत सममान्यर वे तैयार हुए। शीरानव्य स्वारत में स्वीमचा परिचय तो हसीते मिलात है कि जवजक भीरात सामने रहे, तब तक सायोंको रचना और खायके बचन साथ कारिक किये, गानके निद्वकृत्ये ही राम-मेताबकर्से स्वरत साथ कारिक किये, गानके निद्वकृत्ये ही राम-मेताबकर्से

भीरामके मेमके कारण हो दरारण महाराजने रावा भेकाके साथ वर्ष हो जुकतेप भी भराके बदले भीरामको पुरायत्मपुरप स्वितिक करना चाहा या । अव्यव हो कोट-प्रके भीरिकेकी रहु प्रको कुलपरम्या पूर्व भराके लाग, मामाबाहकता, पर्योपायच्या, सील भीर सामान खादि सत्युच भी राजाके हुए मनोरामों कारण और सामान हुए ये । यत्यु परामामाने कैट्योकी सति केवल युक्त हो सामा कई साम कार दिने । सामार्ग मार्ग मार्ग मार्ग पर्यो आप कार दिने । सामार्ग भारते मार्ग विकास की विचे भीरामायान्ये भवतार स्वया या। इनवें विकासित 1 २ भारते सुकर करना

- (1) दरारथकी सत्यरचा और खीरामधेय ।
- (२) भीरामके चनगमनद्वारा सदस-वजादिस्य कार्वे.के द्वारा दुष्ट-दुवन ।

- (३) श्रीभरतका त्याय और धादर्श आरु.भेम । (४) श्रीजस्मव्यीका म्हाचर्व, सेवाभाव, रामपराययता
- धीर खाव । (१) जीसीवाजीका चादर्श पवित्र पारिवत-वर्म ।
 - (१) वासावामाना चाद्र्य पावत्र पाववतन्त्रम ।
- (६) श्रोकौसल्याजीका पुत्रप्रेम, पुत्रवस्येम, पातिवत, धर्म-प्रेम श्रीर राजनीति-कुशस्ता ।
- (3) श्रोसुमित्राजीका श्रीरामप्रेम, स्वाग भीर राजनीति-कुशलता ।
- (=) कैक्नेबीका बदनाम धौर तिरस्क्रस होकर भी प्रिय 'राम-कात्र' करना ।
- (६) श्रोहन्यान्त्रीकी निष्काम-प्रेमाशक्ति ।
- (१०) स्रोविमीपवात्रीकी शरखागति और भ्रभप प्राप्ति ।
- (११) सुवीनके साथ श्रीरामको चार्त्र मित्रता।
- (१२) रावखादि अल्याचारियोंका चन्तमें विनाश । यदि भगवान श्रीरामको वनवास न होता. सो इन

सर्योदाओंकी स्थारवाका स्थलर हो शायद न स्राता। ये सभी अर्यादाएँ सादर्य और सनुकरणीय हैं। जो कुछ भी हो. सहाराज दशरपने तो श्रीतासका

णा कुनु था हा, सहाराज द्यारान ता आरामका विद्यार होते ही घरमी बीयन-बीबा समाप्त कर प्रेमकी टेक रख सी।

विश्रन-मरन-फर दसरय पारा। थंड अनेक अमरू अस छारा ।। विवर राम-बियु-बदन निहास। राम-विरह मरि मान सँगारी ॥

धीरकरवर्जीकी बालु सुधर गयी, राजके विरह रें भाव देकर जन्होंने चार्ड क्यांतिक कर दिया। दरारक समान भागवान कीन होगा, जिसने भीरात-रागेन-राजलामें कनन्य भावसे राम-रायवा हो, रामके विषे, राम-राम पुकारते हुए प्राचीका क्यांत्र किया

श्रीतामाववर्षे चाहा विश्वव वाद पुतः इरात्यके दर्शन होते हैं। श्रीमहादेवनी भगवान् श्रीतात्मको विमानगर केंद्र हुए दराव्यक्रीके स्थान क्षात्मको हो। किर तो दराय सामने भाकर श्रीतासको गोदर्गे कीत होते हैं चौर ब्राज्ञियन करते हुए उनसे भेगाः पर करते हैं। यहाँ व्यवकानो उपरिक्त करते हुए माहाराज हरतय स्थान करते हैं हि है सुमिया-सुववर्षा-दरमाय ! श्रीतासकी वेवार्षे करें हुए, तीय इससे कहा करवाया होगा। हुद्- सहित सीनों कोक, सिन्नपुरंत कीर सभी महान् व्यक्तिश्चिति पुरुषोत्तम भीतासका व्यक्तियन्त्रन कर बनकी पूना करते हैं— पेतृमिं जिन कारणक क्षत्रम महको देवतामांका हृदय श्रीर सुस सार्य करता है ये परस संपत्ती साम बही हैं।' (बा॰ रा॰ ६। ११९। २७०६०)

यहौरर राष्ट्रा होती है कि जब मुन्द सक्षिश्वानन्यपत श्रीराममें मन सगाकर 'समनाम' कीराँन करते हुए दसरम-ने मार्योक्त प्यान किया पत्र, तब फिर उनकी मुक्ति वहीं नहीं हुई। यदि श्रीरामनामके प्रवापसे मुक्ति वहीं होती सो किर पढ़ केसे कहा जाता है कि चन्यकावसे मीतामनाम केनेसे समझ मध्यन बद जाते हैं और नाम सेनेशाबा परमासमको माद होता है। और वहि सममें मन खराकर परमासमको माद होता है। और वहि सममें मन खराकर सन्तेयर भी मुक्ति वहीं होता हो किर भीताक उस मायदर-बचनकी व्यर्थत होती है जिसमें मगवान्त्रे यह कहा है कि-

अन्तकारेः च मामेव स्मरम्भुवत्वा करें,वरम् । मः प्रयाति स मद्रावं वाति नास्यव संशयः ॥

(८। ५) 'जो पुरुष बन्तकालमें शुरुको कारण करता हुया गरीर घोषकर जाता है, वह निःसन्देह ही मेरे स्वरूपको प्राप्त होता है।'

इन मरनोंका उत्तर तो गीताके इससे सगते सीवमें दी मिल जाता है। जिस मकारकी भावना करता हुआ मतुष्य माण पोवता है, उसीमकारकी गतिको ग्राप्त होता है। प्रानमाणी साचक चाहैत चत्त रात्मक्षा विकासी प्रविद्धा को वितीन कर देह लाग करता है तो उतकी ध्वत्यर ही 'सायुक्य' मुक्ति होती है परना ऐसा हुए विना केवल औ-रामनामके कपसे 'सायुक्य' मुक्ति नहीं होती। इसमें कोई सन्देद नहीं कि भीराममें मन खगाकर 'रामन्यान' कीर्तन करते हुए पाय-स्थान करवेशावा गुक्त हो जाता है, सच सो यह है कि विना मन जगावे भी भीरामनामक यन्त-मानमें उचारण हो जानेसे ही बीच मुक्तिका प्रविकारी हो जाता है, हसीसे सन्ताने कन्तमें भीरामनामको दुर्जन प्राया है, हसीसे सन्ताने कन्तमें भीरामनामको दुर्जन

वनम जनम मुनि जतन कराही । अन्त राम कहि आवत नाहीं ॥

 परन्तु शुक्ति होती वैसी ही है, जैसी वह 'चाहता-है ।
 'तो क्या शुक्ति भी कई 'मकारकी है है विद कई मकारकी शुक्ति हैं तो फिर शुक्तिका महश्व ही क्या वह गया !!! 'हस

मरनका उत्तर यह है कि 'तरप्रशेषस्प' मुकि तो ए है। परन्तु केवल तरप्रदोध होकर 'सायुत्र्य' मुक्तिमी सकती है, जिसमें जीवड़ी भिन्न सत्ता प्रवार्य सन्तर परमाया-सत्तामें अभित्ररूपमे विज्ञीन हो बार्ग है।ई सररका पूरा बोच होनेडे साथ ही साथ संतुत्र सार सील्युर्व और मानुर्वकी पराकात धनुप-स्य मह स्वरूपमें परम भ्रेम होनेडे कार्य वह मुख्यूरा (लु सुकिस्पी धनका स्थामी होनेपर भी) भगवान्दी सर्वे साबोश्य, साष्टिं और सारूप्य-मुक्तिका समय पुत्र में है। चेत्रज तत्त्वकोधहारा प्राचीका उल्लम्य र रि परमाप्मार्ने मिड जाना, यह समेद मुक्ति, और मनेर कर पूर्वक साकार ईंचरकी सेवार्य व्याहारमें भेद रहत, व चतुर्विध भेदमुक्ति, से दोनों बालवमें एक ही मुन्ति रवरूप ई । परन्तु शहर प्रेमीमक इन दोवों प्रकृष सुक्तियोंसे भी अक्षत रहकर केवल भगवसेवार्ने स्वास्ट है और जैसे अयवान् नित्य, मुक्त, अब, अदिनागी हे^{ते}। भी जीलासे सवतार-शरीर भारण करके विविध कर्न की हैं, ऐसे ही वह -अक भी उन्होंका अनुसाय करता 🗗 उन्होंकी माँति मगवान्की पवित्र बीवामें बीवाने हैं क्षमा रहता है। वह मुक्ति नहीं चाहता। बतपुर बन हो भगवदिष्यासे, भगवद्यं, भगवदाज्ञातुसार निर्वेपमावने ह शरीरसे दूसरे शरीरमें जाना पहता है तब वह माक्सी भौर भगवदाम-गुख-कीर्तन करता हुआ ही बाता है।हुई काम तो उसको कोई रहता ही नहीं, न्योंकि उसकी है द्द चनन्य विशुद्ध भेमभावसे भेममय परमानामें ही वा है। इतना होनेपर भी वपर्युक्त कारवासे पेसे मूलवी को जुक्ति नहीं होती । इसीलिये भगवान् शिवडी क्षाप्रती उमासे दरारथके सम्बन्धमें कहते हैं-

ता ते बमा मोच्छ नहिं पावा । दसर्थ भद-मगति मन राग्नी समुन वृपासक मोच्छ न लेहीं। तिनहकरें रामु मगति नित्र रेही

भतपत्र यह नहीं समकता चाहिये कि सन्तर्ने के रामनामका व्यक्तितेन करनेते कीर श्रीराममें मन क्यूनी श्रीक नहीं होती और इसी कारण दरस्यांकी में 3 गर्वी हुई ! समकता यह चाहिये कि दरस्यांकी ग्रीकिशी कोई पराग नहीं थी। वे सो समसके रिवर्ड शे दस्तिकिये वह रासके सामने उन्होंने मोशक भी कर ही संन्यास कर दिया। पुरेस मोशन-संन्यासीमेंनी । चरवा-सेवाके बिये मुक्ति तो पीछे वीछे छूमा करती है । गवान्ते तो चपने श्रीमुखसे यहाँतक कह बाला है---

न पारमेच्यां च महेन्द्रिधिष्यं च शार्वभीन च रसाधिपत्यम् । च मोगसिक्षीरपुनर्भवं वा

मस्यर्पितहरोच्छति महिनान्यत् ॥ म तथा मे प्रियतम आत्मगोनिने शहरः ।

न च सङ्कोणाः न धौर्नेवातमा च यया भवान् ।। निरंपेक्षं मुनिं शान्तं निर्वेतं समदर्शनम् । अनुक्रमान्यद्वं निर्देयं पुरेबेदसद्धिरेणुमिः ।।

ज्यान्यहं नित्यं पूर्यवत्यव्धिरेणुमिः ॥ (मोभद्वागवत ११।१४।१४–१६)

तिस मेरे भक्तने व्यक्ता भागता श्रुकको वार्षण कर देगा है, यह श्रुकको द्वोचकर महात्वा यद, प्रमुख्य पर, क्यारी भागाचा पद, पाताकका साम्य, योगकी किनियाँ पाता । है दढ़का श्रुकके काम्यक्तवर प्रेम्बस, सहर्यक, दिव्या कामीकी दौर एवला करकन को प्रमुख, सहर्यक, दिव्या कामीकी दौर एवला करकन को पाता तिम महाँ हैं, तितने द्वामां तीने वान्य भाव विषय हैं। दो निरमेश, सनस्परील, प्राप्त, निर्देश कीर समस्परी मोदी वार्यक, समस्परील, पात्य, निर्देश कीर समस्परी मोदी वार्यक्र सम्प्रको पांचम करनेक विषये में उनके

प्यापि भाव करने भगवान्त्रों यो वे पीवे कितावेडे वेचे शिक्का तिरक्या कर बसे कों भावे, उनक्य तो भगवान्त्रे मित्र पीया करियक प्रेम को जाता है कि वे भगवान्त्रे किया दूसरी और ताइना ही नहीं कानो । बस, तर करित्र में सी पास इस्तरों है, यह जानकर वे शिक्त का निराद कर बस्ति करते हैं।

अस विश्वारि इरिमगतस्याने । मुक्ति निरादिरि मगति जुमाने ॥

क्योंकि मगवान्के गुण ही ऐसे हैं — जिनको देखकर भारतारास मुनियोंको भी उनको चहितुकी मक्ति करनी पहती है।

> आरमारामाध्य मुनयो निर्द्रन्या अप्युरुद्धमे । कुर्वनत्वऽहेतुकी मार्के इत्यंमूत मुणो हरिः ॥

दशरयकुमार-पद-रज

विदेह-भक्त राजा जनक (३४४--भाक्रपातासम्बद्धाः चीघर)

आरमारामाश्र मुनयो निर्फ्रन्या अप्युटकमे । कुर्वन्सऽहैतुकी मर्कि इत्यमूत मुणा हरिः ॥ (थोमद्रागवत)

कि प्राप्त माना मिनवर्ग हट गयी है, ऐसे धाया-भी होन, मासकान, बीवन्सुक मुनिगय भी भी क्षानाल, बीहरिकी धरेतुको भक्ति करते हैं,

विदेहराज तिरहुति-मरेश जनकर्माको कीन महीं जानता है जार वर्गमुणसम्म और वर्थ सजावास, रस्त जनस्म, सर्मत, फ्लाचारमा जानी, यमे-पुरस्य और मीति-दुस्तक महान् प्रियत थे। जाएकी विनात जीनि विदेश स्त्रीति मानो गरी है, रस्ता चानके महत कारणका पता बहुत मोहे ही बोगोंकी वास राज है। श्रीपुताईसी महाराज धारको स्वान करते हुए करते हैं—

प्रनचीं परिजन सहित निदेहूं। जाति राम-पद गूठ सनेहूं।। जीग मीग महें राक्षेठ गोई। राम-निरार्वतं प्रगटेठ सोई।।

्यूनंतक सकिशनन्यन, शीरपुनायसानी महाराकके साथ शीजनकरायतीय जो स्वयन्त 'गुड सन्हे' भीर नियः पीता' (देवस्थ अदेश स्वयन्त्र) है, ते सर्वेष प्रतिवेश्वनीय है। कह्या तो दूर रहा, कोई उसे सम्बद्ध मजारसे जान भी वहीं सकता। उस मेनतस्वको तो बस सार हो ऐमों जानते हैं। हुसरे देवारे आई भी कैरी ? शानने तो उस प्यवन्ता अञ्चम सान्त अस्पनको पूरे जोभीको भीति हृत्रिय-प्रवस्तावस्य अप्रजाति हिन्ता रस्ता है और एक प्रन-प्रश विश्यो मञ्ज्यके सहस्त उसी प्रस्तको के विन्ताने नित्तत्र दिस्ता रहते हैं। होरा आपको पढ़ महत्त् देपपंतास्य हाजा, नीविङ्गक प्रमाशक सरावि समस्त्री हैं, उस्त होरा ग्रानिवांक बायार्थ भीतात्र हैं, सन्त स्वराव स्

प्पारी-दुवारी बीसीताओं के स्वयन्य की तैपारी हुई है, देश विदेशके शाना महाराजाओं को निमन्त्रण दिया गया है। पराष्ट्रमानी परीचा बीस सीताको प्राप्त करनेकी खालसारे कर्न-वह कप-गुच और कर्यांग्रे-सम्बद्धशान-महाराजा मिधिबा-में प्यार रहे हैं।

हुनी बनतासँ गापिनगण गुनि विस्तामित्रमी काने गया धन्यान्य अविवोद्धे यज्ञही रसाई जिने वनपान महाराज न्यस्मानिक माचाचिक प्रिय गुण्डम भीराम सम्माच-को गोंगकर बाममाने सावे थे। यह कमा शरित है, यह विरोप क्रिक्टेडी बावरवक्ता गर्वे । बीविस्सामित्र मुनि भी महाराजा बनकता निमन्त्रव पाते हैं और दीनों सक इमारोंको साथ बेक्ट मिथिसाडी कोर मरणान करते हैं। रातिमें शारवस्ता मुक्तिनवी बाहस्याका जनार करते हुए परमञ्चाल श्रीकातमकियोरनी कनिष्ठ-प्रातासहित गीगा-प्रकार हत बनोपनन्हें माहतिक सीन्यको देखी हुए क्षकः द्वतिमं वहुँ बते हें चीर सुनिसहित नास्से बाहर सनीरस बारीचेमें उत्तरते हैं।

मिधिनेरा महाराज यह छम संवाद शहर केंद्र भागवार गढाउन गढ छन भागव गण गण गण समाज सिंदेत विस्यामित्रजीहे दर्शन और स्याग्वार्थ वात है और अनिको सार्थम प्रवास कर बाजा सकर बैठ जाते हैं, इतनेमें ही जुनवारी देखकर— स्याम-गौर मुद्ध वयस किसोरा । टोम्बन-पुसद विश्व चित-मोरा ॥

-रपामशीर बदल, किशोर बचवाली, लेबोंकी सुख देने-वाली प्रांतिल विश्वले विश्वले पुरानेवाली आस जोशी बोबा भारत वायम विभाग उधामवाचा उपास वादा बहुँ ब्रा पहुँची, ये ये तो बालक, परण इनके बाते ही ऐसा वहां आ रहता है । जा को रहता है हुए, जो सकत वह स्वर्णि प्रमान परा १७ तन जारा २० तम ३५, २० एक ०० प्रमान १५ तथा। भारे।' दिखामित्र सरको बैडाते हैं। दोगों प्रमु रोल संकोचके साय गुरुत बरवाम के बाते हैं। वहाँ जनकरावनीकी साथ गुरुव पर्याण पर जात है। यह जानकरायमाक दही ही विदिन्न हरा होती है। उनकी मेमहणी सर्वे कान्तमणि, रामक्षी प्रत्यस प्रवृत्त सूर्यकी रसिमार्गको प्रास्कर कारामाध्य अस्ति है। यह मेरानाम श्रीवामकी मुक्ति सत्राना यकायक सुख वहा । मुस्ति मधुर मनोहर देखी । मबेड निरेह निरेह निरोती 11

व्रममगन मन जानि मृद, करि विवेड शरि थरि। बोरेज मुनिषद नाम सिर, गदगद मिरा गैंगीर ॥ बहदु नाय गुन्दर दांड बाटक। मुनि-युक्त निटक कि नुष्युक्त पाठक। कड़ का निवस नेति कोई बाबा। उसके केर बीट की सीद काता। त्रहरू निरामरूप मन मेररा । यहित होत जिमि चेन् कहोरा । वित्रमु पूरी स्तिमातः। बहुतु नाव अनि बरहु दुसतः॥ जनकरी करते हैं 'शुनिनाथ ! बिचाइये नहीं, सक

बननाइचे, से दोनों कीन हैं। में कि क्या वह वेहनियुक्त महा बी वी हर मेरा रवामाधिक ही बैरामी सन बाव वहारकी मौति यहा जाता है। जनक विवार क्षीतिवे ।'

ननकका मन बसारकारने रामरूपहे गर समुद्रमें निमान ही गवा। बन्हर्दि विशेषका भनि भनुरागा। बरबस अद्यमुसर्हि

को सन-पुद्धि बएनेमे बगोचर मझका सुनः हुए थे, उन्होंने साम्र दस सगीचाकी मत्वन देवकर तुरन्त त्याम दिया। भीर का बोहकर बम्मीद कीन करें है देसा कीन समस्दार होगा बी गोचरके मिलनाने पर 'बगोचर' है पीए बगा रहे । बी नहाराजा बनकने निषे यही विश्व या। बनेर मी

निर्देहराजकी परामिक संगपरहित है। इतीयकार वे बारातकी विदाईके समय वर का वामावासे मिलते हैं, तब भी उनका मेमसास करें वीड बैटता है, उस समयके उनके वचनामें बसीन हैले मनोहर अलक है - जरा उस समयको कवि मी हेती। बारात बिदा हो गयी । जनकर्जी एहुँचानेहे हिये सावन्त का रहे हैं। दसरथ कौंदाना चाहते हैं, परम्तु प्रेमसरास सौदते महा । दरस्थानीम किर बागह बिया हो बार से वतर वहे और नेजॉले प्रेमासुमांकी थारा बहाते हुए स विवय करने खरी । इसके बाद अनिवास लाउ अ की, तहनन्तर रामके अपने चारे आमाता सर्म-समीप भागे और करने सरो-

राम करों केहि मंदिन प्रसंसा । मुनि-महेस-मन-मानस-हंस। करहि जोग जामी जिहि सामी । कोह-मोह-ममता-मह त्यांचे ॥ व्यापक महा अतस्य अविनासी । चिदानन्द निरगुन गुनसली ॥ मन समेत नहि जान न बानी। तर्कि न सक्ष्मि सक्त मनुवारी। महिमा निगम नेति कहि कहरूँ। में तिहुँ काल एकरस रही। नयनविषय मा कहें भयेड, सो समस्त-मुख-मूठ। सनइ टाम नग जीउ कहें, यद ईस अनुरूत ॥ सबहि गाँवि बाँदि दीन्ह बहुए । निज जन जानि होन्ह अपनर्ग । होति सहस दस सारद सेसा । बर्सि करावडोरिक मरि रेसा

4 44 th AP ATA PA हेमाहित हो। विकास Day best all में हो को भी 28 pt 214 18

.

175

粉

PH T

CHEST O

TAR

मोर मान्य राज्य नुननामा। कोई न स्थितिं हुनितु श्युनामा।। मैं कुछ कहीं पक मत्र मोरे। नुष्य शेततु सनेद कुठि मोरे।।' बार बार मोगीं कर जेरे। मत्र चरित्तै 'चरन जीने भोरे।। चन्य अनकती! चन्य चारकी गुरू संमामकि! बारी क्या चित्रकरों होती है।

इससे जनकरीकी धवस्थाका पता लगता है। अनक-

बी परम जानी थे, परन्तु परमजानकी सविध तो यही है कि जानमें स्थित रहते हुए ही परम जानस्वरूप भगवान्-की गुर्तिमान् आधुरीकी देवकर दक्षपर शीम जाप : जानमा प्रेमके पति ब्रह्मपूर्वे परिवाद होकर घपनी घलता सुधा-साराते व्यादको प्याधित कर देना ही उसकी महानता है! कारकतीने यही अव्यक्ष दिखला दिया!

श्रीवशिष्ठजीकी महत्ता

(लेखक-पण्डितवर गौनत्वृद्यमञ् शर्मा, गुवदात)



धना और सरवा बालनेवासे दिवासित्रवर म तो सारव गुण-प्राहण्या सनमें शविक-सा क्रोध उपजा और न सर्वया

समर्थ देरेगर भी वाराविद्वारा भारने जनका हुन थी करिष्ट किया। 'दुर्गोकी पुरंदु उनके मारन-कर्मोकी लाताति वा कर्म-कट-पराश रावेजरकी पृष्पाते हुई है, इसमें विकासिक बीर पास्त्र तो निरिचला है।' यो स्वत्रक्क करहेंने मरको धान्त रखा। इतमी भाराक दुर्गाईको हुन्य शी-मरिकार किये विका-भारने मारकार्युक्त वह जिला। इससे उनको भारते विद्याला और समाधानकी सहुध्या

बाद विधानिनने दन लगालोहारा दिव्याखाँको मार बाद उनसे सामम बीर रिक्पोसिति बरिएको दिनाको तैन शीम स्वाद दिना, तब बाग प्राप्त मा सन्य कियी सी दिव्यादित्य वरायनी वनसा मिदिवार बनोको थेदा बन्द रामानिकाने मारुरद पारा दिने सभी सामस्य सामने को रो तथे थीर रिक्पोसिन्दमीति सामक दिव्याधिक कर्षेणो सपने मारुरदमें कीन वह सामा। विशामिक इक सब बरिटका उस पानिए म कर महत्यपने मधेश कर गये। इस महान् कार्रमें उन्होंने चारिए भीर राम्मिके वचारे माध्यवार महान्दिके सक्की सार्टि मेहना सिद्ध कर विचानिमको ग्रेच स्वता हिन्दी कि उनका साम्मान्य मध्यान्य सिद्ध नित्र भेचीका है। देशे विकट महान्दी भी भीगीराहतीने अपने हदमको पैर्ग, सर्वका और बनासे सुन नहीं होने दिया। इससे उनके हदमकी भागान्य उचत चरसाका पता सामार है।

च्यसार्क्त विधानिक श्रीवरिप्रतिके श्राप्त हैं, तो भी श्रीवरिप्रतीने करवी मिना सारणी पत्ती भरण्योके सारले शर्तो-दी-सार्तार्क्त विधानिक करकी वही प्रशंसा की। इससे नक्के इत्यकी निसंबता, निर्मात, श्रम शुव्यमादका रिस्त होती है। ऐसी श्रम गुव्यमादका सारायाय महायाँनी ब्रह्मां कराव नहीं। वह तो देवत करायारण महायाँनी पुरुष्म ही सराव है। करवे साम्यवाँकी ग्रह्म कराया वाही वृत्सांके श्रम गुर्वोंको प्रकार कराया वशी ही देशी और है। वृत्सांके श्रम प्रकार करिये और करा है—

> जो गुण गोर्वह अण्यना, परमंड बरह परस्मु । तामु करिनुमि हुहहह हु, बीते किमाउ मुबणस्मु ।।

'तो अपने सद्गुर्वोको दिपाकर दूसरेके सद्गुर्वोको अकट काता है, किल्युगर्ने ऐसे दुर्बम पुरुरस्स में पश्चितारी जाता है।'

वृक्ष वृक्षरे कविने भी शुभ-गुवानुसमकी सूच महिमा सामी है---

> हिं बहुणा मणियेणे, हिंतव ययेणे हिं वा शाणेणे । इन्हें मुण्यपुरावे, सीसमङ्ग मुख्यम बुटामवर्ग ।।

'बहुत पड़ने, तप करने और दान देनेसे कीन-सा महान् फल मिलता है ॥ सुलसमृहके स्थानरूप केवल द्वाम गुर्थोंके प्रति अनुसाम करना सीसो, इसीसे महान् फल होगा।'

श्रीरामचान्न के वनवासकी भावी जानते हुए भी काए ध्यवहात्तुसार श्रीरामचान्न के पुबराजयहर्क क्षिये कानुसति देने हैं। मिदिया मृहुक्ति पहची राजको श्रीराम-सीतासे कानेक प्रकार पुजा-साजादि कोष्य विधि करवाते हैं, चीर कारो ब्यवहर कैटेपीको भूक-भारा रामवनवासका वारत्या बारा केनेके जिसे समस्याने हैं। इन प्रमानीम आएको ध्यवहार-पुजाका प्रत पना सागा है। इसके श्रातिश्व कीराम-विधोगमें शोकांसम्बन्ध महाना व्यापको साल्यना देने चीर श्रीसनानीको जातिक जनुमार समस्यानेमें भी बार वही इर्थकारों काम केने हैं।

ब्राहरून वीपिष्टर्शके राज्ञानके सरक्शमें से बहना श्रेष्टरान वहना है हैं गुज्ञानके अफकावि भ्रामाजीने 'असेगीजा'में क्रमकी महिमा हमनकार गाणी है—

रिवि बरिष्टे बरी क्या, रष्ट्रनन्दनने जेह । अर्गेर अफरियातमा, देशाक्यों के तेह ।।

विश्वासिवर्शनों प्रेरवाने कीस्तिहरीने सामान् कीसमन्दर्शने कींत महाजानका बना की सुन्तर उन्हेंग कि जिसका वर्षन कीसामीकिसी बोल्लाकिक महामान्यकरी किया है। उनसे 'वीसाम' वास्ते वहसे प्रकारने वह दिवाहरा है कि कीसमान्यन्त्रीने कामाज्यक किया दिवाह वीसामी उन्होंने कीसा ही दिवाह कैतम हजुबसे प्राप्त कामा वाहिते । महत्त्वमा 'सुनुक्' वा उन्हेंने कामाज्यक हमा महत्त्वने सुनुक्त कर्मका 'सर्व है। 'कामी' समान्य होतारे सक्तवने सुनुक्त कर्मका 'सर्व हैं। 'कामी' समान्य होतारे सक्तवने सुनुक् बगल्की वस्तिका रहस्य कीर 'स्थित' नामक पोर्स्स में अक्षमें बगल्की स्थितिका तस्त्र समकारा गयाई।स्त्र नामक पॉचर्च अक्टर्समें अतीतमान बगल्को करें हैं करनेके वस्तामेंका कीर 'निर्वाय' नामक कुर अक्टर्स के वस्त्र कार्यके व्यान्त हो आनेके कान्यत बीसस्त्र की स्व की स्थितिका निरूप्स किया गया हैं।

चवानीके चवानको बुरकर बसे कालसहस्त्री क्षेत्रका हो सामजानीका कर्तव्य है। इसके सिता का करदेवा हो सामजानीका कर्तव्य है। इसके सिता का करवा कोई भी कर्तव्य नहीं। यही विद्यानीक कर देवारी चतुरार क्षित्रकारी करिकारीकों कर देवारी चर्चयव्य करवानी करिकारीकों कर करते का का चर्चयव्य करवानी करिकारीकों कर करते का स्व है। उन्होंने क्षीरासच्यानीके प्रति दरप कार्यो कर करते चीर यह प्यवस्थानकों सासिकारीकों वोच कर्ते सम्बन्धों की सहुपदेश दिया है, वह सनद करते तैरी।

'जैसे गीय मांसके हुक्देगर हुट पहता है, हो। हा
अनुष्पका मन निष्या धासकिके वद्य ध्यांकी हर्ने।
सानकर भोगोंगर हुट पहता है। (बाहकर ने दिक्त में
सानकर भोगोंगर हुट पहता है। (बाहकर ने दिक्त में
हों) गढ़ाइदिसे मतीन होनेगाता पर वचामेंन गाँ।
इस शानके हारा जिस सनुष्पके मतते दिव्यंतार्थन
मता हर हो गया है उसको मोकरूप उसका पार्टी मारित होगी है। इतकही हुरक्कामोंके मतीनीति धार्टी
बानेगर खालमारित धारवर हो हो जाती है। याद्री हैन सन सांसाहित सिन्योंकी मारित सांसक है बहती हैं
धारवाकी मारित केरी है इत्सीक्षि-

> नामिनोडानमसन्त्राप्तं सन्त्राप्तं न श्वमान्यस्त्रः। स्वस्य आस्मिनि तिष्ठामि यन्त्रमास्ति तवस्त्रे मे ॥ इति संचिन्तस्य अनद्यो यथात्राप्तः विश्वमानी। असकः कर्तुमृत्तस्यो दिनं दिनपरिवेषा॥

शार्मार बनक विचार करते हूँ—कि में विधित्तर में वसर्वकों संबंधित हम्द्रा नहीं करना और विधित्त में वसर्वकों संबंधित कराम नहीं करना। में बन्दे करने विकार आमार्थी विश्व रहता हैं। जो मेरा माना नार्वी की क्षेत्र ही मेन दोकर रहे। और विश्व करने हैं कि, वै विचारक सैसे मूर्व, दिन कमानेकी मान किमार्थ करने विदेश होकर सहस्त्र होना है सैसे ही राहर्य करने विदार होकर सहस्त्र होना है सेस हार्यक्ष स्वार्थ मान् मिनेप नामुसन्यतं नातीनं चिन्तवस्यति । वर्तमानं निम्मन्तु इसमेवानुस्तिते ।। राजपि जनक मृत्त घीर भविष्यकी परनायोका वारम्बार समरण न कर केवल वर्तमान सम्मयम हिससे हुण खदुसरण करते थे। इ रामचन्द्र शुग्न भी हसी रिवानित्यण स्वानस्य-धन्ता-कर्माक स्वानस्यकेहसस्य चीर विगतिस्थण स्वानस्य-क्ष्म मार्क्स विश्वत का, बाहरसे नारक वाग्नको भीवि मार्कस्य व्यवहारको शुचारकपाते कानेवाले श्रीवरिष्टगीके घग्या-करवाकी वालविक महाचा तो उनके बेसे बास्ट महावेचा ही अवीक्षाति समाम सकते हैं। दूसर लोगोंको तो उनकी महत्त्वाच्या वाधारस्था जान होता है। दुर्तीहतका कार्ये करनेवाबे माहायाँको श्रीयशिक्षतीके विचारों थीर बतांगें-क्ष्य चलुसस्य कर चलने बीचनको कृतार्य करनेके लिये सदा प्रथमणित रहणा चाहिये।

श्रीहनूमान्जीके चरित्रसे शिचा

(रेखक-पं श्वीजयराम्दासनी ^६दीन⁹ रामायणी)

इसमारितमानसमें श्रीहपुमन्-चरितवा श्रीहरम किकिन्गावावरके शाहिने भारतम किकिन्गावावरके शाहिने भारति-मित्रत' प्रसानो हुचा है, वहाँ धार ष्रप्यमुक्-चर्नतपर सुभीवके सीचनक्समें दुर्गन देते हैं। स्वापका सी श्रीहासावतामको श्रीह साधका सी

आरामावतीरको आर्था खावका जा नगर-पुप्र भागान शिवका उदावतार या। गोस्तामोत्रीने दोहावजीके निम्नविधित दोहॉर्म इस बातको स्पष्ट कर विदा है—

> वेहिं सरोर रति रामसी, सी आदरहि सुवान । रुद्र-देह शिन नेहबस, बानर में हनुगान ।। विति राम-सेवा सरस, संगुरित करन अनुमान । पुरसा ते सेवक मसे, हरते में हनुगान ।। (पोंच १४४ । १४४)

सामायमें इस गृह तककी महावाधावके कीकों में सिक्षाव के साम मक्कारा है। बाक्कारा में सरक-कारदाक सामाय मुक्त के नाम गावे करके पीते सुनाम-में बारदाक सामाय महत्व कर कि मिल्या का किन्दिन्या-में बारदा रंग गहरती इत्तानकको मीतामकी सेवामें बारदा रंग कर के स्वत्त कर कि स्वत्त कर कि स्वत्त करवाधा कर के सिक्सा कर का मिल्या है की द्वारा है पार्व माने की की सम्माय का मिल्या है। कहा चीर कर है। मायदाया रिज-मन्दा पदा की गती है। कहा चीर कर है। मायदाया रिज-मन्दा पदा की गती है। कहा चीर कर है। मायदाया रीज-मन्दा पदा की गती है। कहा चीर कर हो मायदाया रीज-मन्दा पदा की गती है। कहा चीर कर है। मायदाया रीज-मन्दा पदा की गती है। किन्दा गुल्यावाद्ये है । इस बन्दना-क्रमके द्वारा धौर किप्निन्धाकाण्डमें जीराम-नामकी बन्दनान्तर्यंत---

पुनि तुम शम-राम दिन राती, शादर जपहु अनंग अराती।

के प्रमाणने मीहर्गुमार्श्योका राह्रायकार होना प्रमाण सिंद्र होता है। इसके सिंखा स्माणका यह, प्रमाणक सीं सावर्ग्यमंग्नी प्रमाणकी एवं पीत्र ही स्माण्डों एक आहुत अविसे सर्वेचा भित्र बचा रहा है। यहः शामायणी सापका सिंद्र भी तर्वाक्रीय जेश, किल्लीय वचा स्वप्रकारीय है कर्युक का कर्य के स्माणक क्षित्रमान्त्रकीका परिश्र-पार्ट ए सर्वेच का कर्य कराइसा क्षीत्रमान्त्रकीका परिश्र-पार्ट ए सर्वेच स्तर्वेद क्षांचेया-सुप्रीय-स्थिकायने स्माणक होता है। होता है।

स्तिक कैसा होना चाहिये जीर वसे स्विक धर्मका पाणन स्विक क्ष्म वाहित, स्वस्त वक्षम वहाहप्य भीत्रमान्न जीवे दिखार्थ है। सहायद्यों आविक हेएयर चानावह्म स्वस्त सुर्वीकको जैवोरपर वहाँ विकास नहीं रहा। ऐसे दीन, मिहाक्य-प्रकास साथ देकर सहायद्यों जीविस है सोन केसा मानुवी बात गई ची शहे दी, हुस्तरात्रों भी चार वनके मित्रक-प्रदार हर रहकर सहा सहायता करनेरें जो रहे। पद पत्त साहित्कता चौर स्वसी मीतिकी पहली दिला है। इतता ही नहीं, कर्नाम साहित्कता चौर साथ किस प्रकास क्षादिकता चौर स्वस्त मीतिकी पहली दिला है। इतता ही नहीं, कर्नाम साहित्कता प्रकास निक्त प्रकास क्षाद्यां कर्मों स्वस्त करने मिहान क्षादे हिला है। इत्याद्ये सात क्षार्मीस यदि पहल प्रस्ताना क्षार स्वा कर सकता व्यवस्त वहीं बारियर मीतावको प्रभाव कर सकता व्यवस्त वहीं है। हामावपी सुर्वीक प्रभाव करना व्यवस्त वहीं है। हामावपी सुर्वीक क्षार

'ताई रह सामित शहिल श्रामीता ।"---'सानित सेम ले मानाम गणक । इसारो धारतमें योनोंके मनोरच सकत ही हुए ।

भीइन्मान्त्री जब सुधीवके सहैतने बद्रस्य चारसका भीरामचन्द्रजीरो मिलते हैं और अमसे बातचीत करते हैं. तम चापकी धान गरिमा समा चनम्य अक्तिका बढ़ा सुन्दर शिशयीय परिचय मास होता है। भाग सप्तिक्य भगवान श्रीराम-सत्त्रमण्ये पृथ्ये है---

को तुम्ह स्यामक गीर सरीस । छत्रीकप किरह 'बन' बीत ॥ कठिन मुनि कोमलपदगामी। कवन हेनु विचरहु 'वन'स्नामी।। मृदुल मनोहर सुन्दर गाना । सहत दुसह 'बन' आनपबाता ।।

इन तीनों भीपाइथोंने 'बन' शब्द पुकर्ने भी नहीं छूटने पाया है। बारवार 'बन' शब्दका मुँ इसे निकन्नना इस बावका प्रमाण है कि भाषके हरवमें उन कोमल-काखाँसे स्वाभाविक प्रेम है चौर उन कोमल चरणोंका वा कोसल-चरवाबोका 'वन' में फिरना आपके हदवमें ग्रास-सा खदक रहा है। कहाँ वह 'सुदुख मनोहर सुम्दर शात' और कहाँ वनके 'दुसर चातप वात' को सहनेका कर! देसा चसामअस्य है है कुछ इसीमकार धीभरतलाखजीके मनमें भी उन कोमल-चरणोंका 'बिल पनहीं' बनमें भटकता खटका या। उन्होंने भी कहा था-

राम-रुखन-सिय बिनु पग पनहीं। करि मुनिवेष फिरहिं-बन बन हीं।। यह द्वःखदाहवहै नित छाती। मूख न नासर नीदन राती॥

यहाँ भी 'वन-वन' शब्द असहा दुःशका सूचक है। चरण-सेवक श्रीहनुमान्जीने इस मिलनके श्र्वात भगवानको कभी 'बन-वन' नहीं फिरने दिया। उन्होंने सेवक-आवका उच आदर्श दिलाया । लिये दोउ जन गाठ चताई । दोनीं भाइयोंको भ्रमने कन्धेपर ठठाकर सुमीवके पास से शबे। यही तो उनके प्रगाद गृद प्रेमका व्यवस्त प्रसाया है । प्रशुकी खडाकी यात्रा भी श्रीसारतिके कन्धोंपर विराजित होकर ही हुई यी।

हुनुमान सम नहिं बड़मानी । नहिं कोउ रामचरन अनुरानी ।।

उधर इसी कार्यं के हारा संकेतसे सुधीवको भी अगवानु-के अपने मित्र होनेका प्रमाख दे दिया, क्योंकि, शत्र होते तो कन्धेपर कैसे चडाते । दोनों प्रमुखींको पीठपर चडाकर श्रीराम-चरण-निष्ठाका निर्वाह सो किया ही गया, सब बापका मक्तिपृष्ण दूसरा धमरकार देखिये ! खब बाप श्री-राम-खब्मणकी 'शुगब-जोदी' से पहले मिलते हैं सो

उनका परिचय प्राप्त करने है जिने हैंने समानार्यं हरिए का प्रचीन करने हैं, 'बाप दोनों स्त्रिय ही रहें। किन्यु शतियरूपने बाप या तो तिरेवोंनेने केंद्रिय नरनारायव्य है, या क्रान्तज्ञ-मुक्त पनि (साहार करने) हैं।' यदि विचार किया आप तो इन्मार्कीर्ड भनमान भवनार-शानारी-भेरपे ईरारडे सम्हार्ने हैं। सामार्थ, श्रीरचनाथात्री जिल परमञ्जरे बन्तर है। पर-स्वरूपके चननार मरनाराय्य भी है। उन्हीं सामुन के भीश गुवाबनार बिदेव हैं। इस प्रकार श्री में सा परमक्काने ही हैं और तीनों ही पूर्व और नमस्त्राते 🎟 हैं। इसीक्षिये-गार नाय पूछा ग्रम भवत का व्यवहार कि गया था । क्योंकि केर बक्ले हुए बैभव-बार, पुराकी हार् वाले तो उसके बैमक्के चनुसार क्षी उसका सम्बद कि करते हैं । कारक्षकशीकी यमार्थ पहुँचसे हमें उनने पतार्थ कोनेके परिचय मिसला है और साथ ही वह पन करी कि योगियोंके चन्तः करण सन्वकी किम तहतक पूर्व हो हैं ! रामापणमें इस विषयके भीर भी उदाराय निर्देश सचे जीहरी शीजनकशीने भी इसी प्रकार हुए रावनार परवा धा---

मदा जो निगम नेति कहि गावा । उमय बेच परि की शेर आह । — सक्तराज विभीषवाजीने भी भीमार्विजीते हेवाँ

क्श या---की तुम्ह हरिदासन महँ कोई। मारे हदय प्रीति अति होई। की तुरह राम दीन अनुरागी । आवेद्व मोहिं करन बहुमारी

विभीषस्त्रजीने विम-वेश-धारी इन्मान्के सम्बर्ध ही अनुमान किये, कि या तो भाप राम है या राम^{के हि} घसा ।

श्रीहन्सान्तीने भगवान् श्रीशमको उन्हीं है हिं श्रुविबलसे ही पहचाना या । सतत प्रेमपूर्वक सदा प्र वाबेको मगवान् बुद्धियोग देते हैं (गीता १०1१०) के इस सिद्धान्तको थोइन्मान्त्रीने प्रत्यप्त प्रकट कर हिल

सच्चे अधिकारी भक्तके प्रश्नोंका उत्तर देते हुए हैं। भायजी महाराज श्रपने नाम, रूप और धामका निर्देश हुए कहते हैं---

कोसलेस दसरयके जाए । इस पितु बचन मानि वन सर्ग नाम राम-रुखिमन दोउ माई। संग नारि सुकुमार मुहाई। इहाँ हरी निसिचर बेदेही । बित्र फिरहिंहम सोजा है। इसमें 'नाम राम छड्मण दोउ भाई' से नाम।

हरके बार' इसमें धाम तथा रूप पूर्व 'इम पित वचन वानि न बार' भीर 'दर्से हरी नितिवर देरेडी' से खीलाका वर्धों न क्या है । सदनन्तर भगवान भक्तवर श्रीहन्स्सन्वीसे वृत्ते हैं—

आपन चरित कहा हम गाई। कहहु नित्र निजकमा बुझाई ॥

'हमले को प्यत्न हांच सुना दिया, या दे विकाद ! ता की व हैं मो तो बताद है। 'हस मानैक्वन के उन्होंने मीत्त्रान्दीने को कुछ दिया और क्षा, उससे उनकी प्यो दोनता, वसार्थ हरणाति, व्याधिक व्यास्ति, समाराय निर्मेदता और सम्मीर हान्यत्र कृता बताया है। सामी भीत्राकों प्रस्तावन्द सम्मिति व प्यास्ति मिल्स सामी भीत्राकों स्वाचनकर सम्मिति व प्यास्ति मिल्स सामा मार्ग मार्ग हो साते हैं। रिकामी व्यास्ति हैं-को हव मा नार मार्थ सर्गा। हारके वाई उनके स्ववहार और

पुटांकत ततु मुस्त भाव न बचना। देखत क्षत्रिव वेचकै वचना।। पुनि मीरब घरि वस्तुति कोस्तु। इत्तव हत्य निज नावहिंचीन्दी।। मोर न्यान में पूँछा साहै। तुम कस पूँछह नवकी नाहै।। तद माबाबस विरदे मुखाना। तति मैं नहिं प्रतु चहिचाना।।

पर मन्द में मोहबस, चुटित ह्रदय जगयान । चुनि मह नीहि दिसारित, दीनकण्यु मामान ।। कदिरि नात कहु अस्तुन मेरी: १ सेक्क अणुक्ति परि तमे मेरे १। माप नीत तत मापा मोहा। शेत निवर्षि दुम्हरिक्ट स्टेंहर ।। तस्तर में 'सुनीर बेहर्स'। वाली नहिं क्यु मान वर्षार्थ ।। सेक्क हुत परिनादा मोर्सिक । रहे असीक क्षी मा जुन सोह ।। अस कहि परेत चरत असुनाई। निज्ञ ततु मारि शीटी वर छाई।।

इस स्तुतिमें श्रीहनूमान्त्रीने वाँकों स्वरूपोंका शहस्य वदी विश्वस्थातसे जोज दिया है। जीवस्वरूप, वरस्वरूप, विशोधस्वरूप, उपायस्वरूप श्रीह फासस्वरूप-इन वाँचोंका हो नियोद इसमें सागया, वो सर्वे शाखोंका स्थान्य है भीर विसको सामगा सायस्य सावस्यक है। कहा है—

'त्राणस्य महाणी रूपं प्रानुद्ध प्रत्यात्यनः । प्राप्तुपापं परक्षप्रितयात्राष्टि विरोष च ॥ वर्दन्त सम्बद्ध वेदा हितिहास पुराणको । मुनयस महासमने वेदवेदमन्त वेदितः ॥।

.समल वेद, इतिहास, पुरायादि और वेद-वेदान्तके .१३ श्रावा श्रुपि महाच्याघोंक सिन्धुन्त है कि वनतक हन परिष्ठांच बोध नहीं होता स्वतक कीथ संसारते पार नहीं हो सकता । भीता नाज में कुल सार्थ मं जीवस्वकर "मा दोध होता है, जिसका घाएण गोस्तामाता।" बरुतामा है। जुन कुल करा नाजी नाजी जिसमाता।" बरुतामा है। पुत्र कुल करा नाजी नाजी अध्यासका किरी कुलाती । मं प्रित्त हुन होता किलो नाजी अध्यासका किरी कुलाती । मं निक्ती हुन्होधी जोडा "पुनि मुद्र मोहि निक्ती है। होता बरुतान" हुन्हादिये यहाँ "देश स्वस्त्र" मध्य होता है, होता बहुत है—स्वता क्याए एक सीतादर।" पत्र मोध्यप्र सर्वरा माना मेरक चीव।"

'नाव बांच तर नाम मोदा !' से 'विरोध सहस्य' पानी, स्थापको विश्वास्था को सार्टम संगयक हुए हैं । 'तेक्स-कार परें । दे नार्टीय नार्टीय को मुद्र विदे । एते स्व विद्यास परेंद्र हो स्वीत वर्ष मुद्र विदे । एते से 'द्यास-स्व स्व हो क्या स्व बीट बोट बांच को भौति तय साधनों-से विद्यास हो क्या म्याचित हैं। क्यार होना सनताथा।' स्व 'क्या स्व हो स्व प्रकार हो नाट प्रायो भीति उस से एत्स क्या है, यह विश्वास्था है। हिस्स क्या है, यह विश्वास्था रोताही । बानी नार्ट क्या प्रवा कर्या । क्यार स्व सी की दीनताक्य हुक्य भारवाक्य मंद्र भी समझ दिया। राखे प्रायोध हुक्य भारवाक्य मंद्र भी समझ दिया। का प्रवाद हुक्य कारवाक्य मंद्र भी समझ दिया। का प्रवाद हुक्य कारवाक्य मंद्र भी समझ हिया। का प्रवाद हुक्य कारवाक्य मंद्र भी समझ हुक्य भारवाक्य स्व

× × × मैं सठ सदा सदीत । जापन जानि न स्नागिई गोहिं रघुनीर भरोस ।।

वेमीवर सुतीस्थवी मदाशवने कहा है-'मगति न विरति स्वान मन मार्डी ।।

नहिं सतसंग ओप वप आगा। महिं हु बरन-इनरा अनुराग।। एक वानि बरुवानिधानकी। सो प्रिय जाके गति न आनकी।। गोस्वामीजी तो सपथ ही स्वा रहे हैं कि-

कवित विवेक एक नहिं मोरे। सत्य कहीं रतेति कागद कोरे।।

सारांश यह, कि भगवान्त्रे सचे शरयागतवन 'शहं-मम' बादि समस सम्बन्धोंको निभित्रस्पते मसुकी वस्तु समझ खेते हैं। वह अपनेको भी धपना महीं समारते। मस्त्रम खीवामनावार्यजीने कहा है-

ध्मम नाथ बदस्ति बोऽसम्बहं

सकतं तदि तवैव माधव 1

नियत स्वमित मनुद्धभीत्यका किन्तु सामर्पयामि ते ॥। (बालवन्यस्)

'दे सारव ! दे मेरे घाय ! मेरा जो इत्त दे बह, चीर जो इत्त में हूँ सो, सब रोश दी दें। मेरी मति चीर मदुद इदि चगवा चन्य चो दुघ दे सो सब तुमको समर्गय करता हूँ।'

जय स्रामीके प्रति सन-चचन-कर्म शीनोंसे गुद्ध प्रशासा हो जाती है, तभी प्रशु उसे स्वीकार करते हैं—

अस कहि परेउ चरन अकुरुष्ट्रिं। निजतनु प्रमिट प्रीति उर छाई।।

इस चीपाईमें श्रीहर्ग्सद्गीने सुद्ध प्रपत्ति सिद्ध कर हो।
'खस किर्ट' से यचनकी प्रपत्ता, 'मीति वर पाई' से मनकी
प्रपत्ता, तथा 'परेड पान खड़वाई' से सनकी प्रपत्ता सिद्ध हुई । इतना ही वाई बदु-येगरूपी क्रान्टको दृश्कर
'निज तद्ध' भी भकट कर दिया। क्रय सो भगवान्से नई इस गगा, अठाकर इस्परे बगा क्रिया और मेमासु-याराकों-से बगे क्रमिपेक करने !

'तब रधुपति ठठाइ ठर लावा । निज-लोचन-जल सीचि जुडावा ॥।

भीहरू मारजी हतार्यं हम इसे ! स्वयं ही हतार्यं नहीं हुए, इसके बाद सुभीव-विभीचण खादि जिन जिन कोर्योर्वे स्वास्थ स्वयं सुभीव-विभीचण खादि जिन जिन कोर्योर्वे सारसे सम्बन्ध स्वयं प्रित्या, उन सबको भी महुकी माठिहारा हतार्यं करा दिया। यही तो सन्तोंकी महिसा है!

श्रीदन्तान्त्रीके संगते उपक्रक श्रीतामक्रपाते सुमीवनी राज्यात्त्रपर विराजते हैं, परन्तु जब राजमवृके कारवा 'समाविकारा'सें राज गति हैं तब श्रीदन्तान्त्री वही ही दुरवृर्धिताते सादमी विजयपूर्वक सुमीवको सब प्रकारते स्रचेत कर देते हैं।

दहाँ पवनसुत इदय विचारा। रामकाज सुत्रीव विसारा।। निकट जाइ चरनन्हि सिर नावा। चारिह विधि तेहि कहि समुझावा

इस बाममें शावकी प्रदिमण, सुमीकके प्रति हिलिश्ता यौर 'गावका' की पिता तथा सन्त्रिकके जाते करीवन स्थायवात भीर तम्रता सामी एक साम मक्ट हो जाते हैं। प्राप हत्ता ही करते शान्त नहीं है आते। सुभीवको प्रचाति खेकर क्यां द्वांको सम्मानगूर्क हुसाते हैं और प्रचाति खेकर क्यां द्वांको सम्मानगूर्क हुसाते हैं और प्रचाति सेकर क्यां द्वांको सम्मानगूर्क हुसाते हैं और प्रचाति सेकर क्यां द्वांको सम्मानगूर्क हुसाते हैं और प्रचात भीति दिसाकर समर्गाको कुसानेक किया होता तो प्रामीकर किया। इस कोषकमक होता! व्यव वानरमूच इच्हे हो गये और संनेतारी कोजमें भेजे वाने सारे तच भारत वृज्ज भी रोज हैए की कोर चजा । जस समय सक्ये थीड़े भारते संज्ञुलके के चरणोंमें शिरमा भणाम किया । बीतकते एवे निकट खुवाबर भारते कममपारी कोजक स्वन्यारी ममाकपर स्वा विचे स्वापना हो जन जानक सीहरें निमित्त सुन्निका से बी । किर भीरानुनायों कोले-

बदु प्रकार सीतार्दि समुसामेतु । कहि बत विरह बेगितुम् मार्

मान भीहतुमान्त्रीका सीवन सफत हो लगा। वर्षे सोचा कि मेरे समान बढ़मागी कीन होगा निगड़े मन्त्र पर मेरे नायने भाज पाप शाप और माना ठाउँको ए साथ मिटा देनेवाले कर-कमल हल दिने। का है-

कन हुँ सी कर-सरीज रचुनायक, धरिही नाथ। देन से। वेदि कर अभय किये जन कारत बारक निवस नाम देते स्रीतक सुम्पर रुपेंद्व केदि करकी मेरते प्रपास नाम । निसिन्यस्सर तेदि कर-सरीजकी बाहत तुरुतीहास वाय

चलुतः सहायात्रामें सीहनुमान्त्रीको तीनों ही स आस भी हो शये । तीनोंका प्रयक् प्रथक् विवेचन पुनि ओइनुसान्त्री सद्धा दहन करते हैं। वहाँ वारों वा हाहाकार मच बाता है। धगयित बीव बबक्र महा व्याचे हैं। इनकी राजनाको सनकर धनेक शहरानारि गर्भपात हो आते हैं। यह सब हुआ परन्तु शारी किसीने स्वममें भी ऐसी शक्का नहीं की कि इन्तर्राही पुसा करनेमें कोई पाप खगा। करते भी कैसे ! कि सस्तकपर परम कारुगिकका असप इस फिर गया, ^{हर्ग} पाप कहाँ 🏿 यह तो हुई भावकी बात, अब तापत्री ह शुनिये । याँ सो भाग स्वामाविक ही विविध तासी है हैं, परन्तु यहाँ क्स सापके सम्बन्धमें कहना है नि भापने सारी सङ्काको सष्ठ कर दिया था। आपकी री बगावी हुई यभि जिस समय करोड़ों लाज-सात बार्ट लक्काको दुग्च कर रही थी उस समय प्रवयाप्ति वा वाहारी भी उसके सामने तुच्छ थे । श्रक्तिशिलायें मारो का रसनाके सदय सबको चाट रही थीं । मृसलघार कृष्टि है वस समय चुताहुतियोंके सदरा स्नप्तिको स्न^{[कार्} अचरड कर रही थी। समुद्रका जल उपल रहा था, विकट स्थितिमें काप सहज ही .

विकट स्थातमे काप सहज ही उमुज रहे हैं, सारा शरीर रोमसे बावुत है, परत हैं साँचसे सापका वास भी बाँका नहीं होता। कैसा हार है ! भात यह है 'गोपर सिन्धु अनल वितलाई'-की प्रमतावासे प्रमुका सभय इस जिनके सिरपर श्वसा गया, उनके लिये शापकी सरसावना ही नहीं रहती !

- या गरी सायाकी बात: श्रीहतमानजीको दीनों प्रकार-की गुणामयी मायाका सामना करना पढ़ा, परन्तु चाप सबका पराभव करते हुए थागे बढ़े हैं।सतोगुखी, स्त्रोगुखी धीर शमोगती सीनों ही आवाबे साधना करना पडा । देव-कोकने यायी हुई सुरसा सनोगुबी, अघोनिवासिनी सिंहिका क्षो सहते हुए परियोंको सामाको प्रकारत उन्हें खोंच खेती यो. तमोगणी, धौर मध्यलोख संबा-निवासिनी सक्रिनी रजीगणी थी । उच्च, बाज चौर नीचस्थानोंमें रहनेवाली होमेंबे कारण उपनिपद्मयी गीतांबे सिदान्तावसार इनका क्रमराः साविकी, राजसी और तामसी होना सिख है-

> कर्पने शक्यानित सरवस्याः अध्ये जित्रानित राजनाः १ कधन्यगुणब सिस्थाः अधा गच्छन्ति शामसाः ॥ इन्द्रें सरसा तो देवजोडते शीहनसानतीके विश्वसन्ती

तीचाके जिये बाधी थी।

बात परनस्त देवन्ह देखा । जाना चह बरु-मुद्धि-विशेखा ॥ सरसा नाम अहिन्हकी माता । पठडन्डि आढ कही तेहि बाता ।। भात्र मुरन्ह मोहिं दीन्ह अहारा । सुनि हँसि बोटा पवनकृतारा ।। रामकाज करि फिरि मैं आवाँ । सीताके सचि प्रमृद्धि सनावाँ ।। तब तब बदन पैठिहों आई । सत्य कहीं मोहिं जान दे माई ॥ **ब**बनेह जतन देहि गाँहें जाना। प्रसासे न मोहि कटेठ हनमाना ॥ भरसाने कहा-बाज हो देशोंने खब भोजन भेजा।इसपर

भीइनुमानुजी हुँसे । इस हुँसमुख मुद्रासे यह सचित होता है कि मापको सत्तह स्वीकार है। इसके वाद मारतिबीने 'राम' राज्य का उचारच किया । क्योंकि श्रीतमनाम सर्व दिम-विनाशक और राज को भी अनुकुत कानेमें समर्थ है। वया---

बार बारि किरिक गोहारि हितकारी होति आई मीच मिटति स्टत समनामेक १

पर इस राम-नामसे भी सुरसाने मार्ग नहीं छोदा । यहाँ यह शक्ता होगी कि इन्छान सरीके कामनिक्का यह प्रयोग निष्क्रम क्यों हुमा है इसका उच्छ यह है कि शहसा सो महिक्स थी हैं। नहीं को अनुकृत होती। वह तो प्रारम्भये 🖞 चनुष्ट्रज थी. को योग्यताकी बाँचडे जिये भारी थी। इसीक्षिये यह नहीं हटी।इसके बाद आएने

कार सनकर सामसी सोग भग खा आते हैं (राम रजाइ सीस सबहीके) । इसका भी कोई फल नहीं हुचा, क्योंकि सभी परीवाके बहुतसे विषय बाकी थे । सब हनमानजीने क्षोजा कि खोजातिकी छोजातिके प्रति स्वाभाविक सहानु-सृति होगी, इससे, 'सीवाडै सुवि' प्रमुको सनानेकी पात कडी। इसपर भी सरसा नहीं हटी। एवं प्रतिका करके समय सेता अधित समझा श्रीर 'तर तर रहन पैठिही लाई' कहा. इसपर भी जब वह नहीं मानी, तब उसे 'माता' (माई) कहकर सम्बोधन किया । सियोंमें प्रपत्य-स्नेड स्वाभाविक होता है। क्यों मानभावसे बालक समामका ही कोट वे। इनमानजी किपी प्रकार भी 'रामकाज' करनेकी चिन्तामें मात्र थे, उन्हें इसरी कोई बात सुशती ही नहीं थी। इसवर भी बन वह न भागी तथ धारते कहा कि फिर ला क्यों नहीं बालती (ब्रससि न मोदि) इतना सनते ही सरसाने एक योजनका मेंड फैलाया, श्रीहनुमानजी 'रा' 'म' रूपी हो अक्रोंके बखसे उससे दुने बढ़ गये । सब सुरसाने नारी प्रकृतिके चनसार उनसे चठगुना सोलड योजनमें असका विस्तार किया। भारतिजीको तो ('मोर्त प्रतीत है बालर 'द' की 'तुलती इससे इस बाखर इंकी) हो अवशेषा 🏗 मरोसा था इसीविये वे फिर हते बसीस थीजन बरे । तब तो सरसाने किसी नियमको म भारकार सौ बोजनमें मेंह फैलाया । श्रीहनमानजीने मोचा कि भी ही योजन समुद्र पार करनेकी बात थी. धवधि था पहेंची ब्रतपुर बार इसे भी शार करना ही चाहिये । तथ-भति ट्युक्त वरनप्रत धीन्हा-द्योदासा रूप बनाकर असके मुँहमें श्रुस शये और चटपट बाहर निकलकर साक्षा साँगी-

यह सचित किया कि मैं 'राम-काज' से जा रहा हैं। बदेफा

बदन पैठि पनि नाहेर आहा । साँगी निदा ताहि सिर भारा ।।

शीहनुमानुजीके बुदिवखका मर्स समहकर सन्द्रष्ट शी सरसाने चारीबॉद दिपा-

'रामकाज' सब करिहदु तुम धरुनुद्धि निधान । बहरिष देह वह सो दरनि चेठे हनमान ॥

औहन्मान्जीने चपने पुरिकीग्रज्ञमे बावक्को साध्य बनावर कारीबाँद भार कर विचा । क्रांप्यपयमें दिए करते-बाबेडे साथ किय प्रचार व्यवहार करना चाहिये. इस वाल-की हमें इसमें खब शिवा मिकती है। इसके बाद अमरा। सिंडिका और बड्रिनीको स्वभाषानुमार प्ररापन कर धाप सधा वर्षेचे ।

याण्यामिक दृष्टिये इस लडा-थात्राका यभियाय यह है कि वात्र शीय भणिकी खोजमें परमार्थ-यपर चलता है तो उसे सीन असरकी गुजमरी माया वायक होती हैं। इन तीनोंसे भीड्न्सन्त्रीके सारा व्यवहार करना चाहिये। सतीगुयीते विरोग विरोध न करें क्योंकि ग्रमकर्मीकी प्रश्लित विरोध करना उचित नहीं क्योर निवृत्ति होनेके विरो अनत्र हे हुन्ते उसका सक्त निवाहना भी स्थान्यक है। खडा उसके अनुकृत होते हुए भी क्यनेको होटा बनाकर उससे शुरुकारा परोका प्रयक्त करें, प्रवृत्त न हो, क्योंकि ग्रमाग्रम दोनों हो प्रकारको प्रशृक्तिका लगा करना ही समाग्रम दोनों हो प्रकारको प्रशृक्तिका लगा करना ही समाग्रम दोनों हो प्रकारको प्रशृक्तिका लगा करना ही

सागहि कर्ने सुमासुमदायक। मजहि मोहि सुर नर मुनि नायक।।

शुति कहती है — 'न कमणा न प्रजया न धनेन

'न कमणा न प्रजया न धनन

त्योगनेकन अमृतस्यमानशुः ।

इन प्रकार सत्रोगुखी मायासे बचे।

तमीपुर्यी मानाको सिंहिकाकी मौति जानसे मार बाले । मानार्य यह कि वसे निन्छेप लाग हे क्योंकि पाएकमाँका सेता भी परमार्य के क्यि दिन कीर हानकी नरह क्योंकी है। क्या 'पून न दोंड हमारन फंडे ' मसीपुर्धी माना कही हो पानक और नीम होनी है, हमसे उसको प्रापा भी नहीं छूने देंगी बारिये, नहीं मों वह पापामात्रको प्रकारक हत हमारा सीवन कर कर रोगी । हमसे समा सर्चन रहा बारिये और कहा कि समये हरी, वहीं—'गा करर बारिये और कहा कि समये हरी, वहीं—'गा करर बारिय क्या कि साम हर हो, वहीं—'गा करर बारिय समझ काम कर ही हालना पाहिये। 'रंस दिन स नारक साम हर ही हालना पाहिये।

रवेगुषी सामाधी घामती बादे होते हैं, क्लींके इस्ता सर्वेश विशासक कारेने हरीतावार्थ धरण्यत-रित हो जाना कींगा । हर्गामाध्य साम किये वाद क्षा करब बाता करें हैं, वरणु उपना है जिसना सारवानुसार कार हो 'बाया नाम करूर' । बाता कोगुणी सामाधी कर्नुदेखी कर्मां न सम्बद्ध करने बार कर हो करे, देखि कर्मां व स्थान, करने बार्ग कर बाग्ये बात विशाहें, 'अम्बद्ध कर्मां का स्थान करने करने कर हो करें, 'अम्बद्ध करने कर हो करने हर्म हर्म करने करने क्रिक कर्मा व स्थान करने हर्म स्थान हर्म हर्म हर्म क्रिक करने व स्थान करने करने सामाधी कोन्यों कर्म करने सामाधी कोन्यों इसके बाद श्रीहन्मान्त्री घर बहाने घार विराह बीसे मिलते हैं चीर उनको चन्तर-बाइसे यह सर उनके बतलाये हुए मार्गसे घरोकवाटिकाने पूर्व सर सीवाका साधातकार करते हैं।

साधानक साधात्कार करत ह ।

साध-माताको कोजमें निरत साधाकको सहु ६१
वहाँ हत्साम्याची जीवको विभीपवाच्य साहुत्योम सहनन्तर माकिरुपी सीताके दूर्गन हुए । इस म्या विशेष प्यान देने चोमय वात है कि मातामें हुक्का। भी सन्त-समागमके हिना क्यापें मारिको गाहि नार्वे इसके सिवा साधाकको पोटा-नारा मतीमित वास्त-किसीको गुरु बनाना चाहिये । इसकी विशे मी पी पी हो है । परके बाहर और मान्य-समाजनो है सहस्क कीर हाँ इस देकार ही बत्तामान्त्रीन हास विशास मीकि जब विभीपया जामकर नाम सामित केया हो कि किया, स्वीकि रामायवानात्रीत प्रतास प्रदेश क्यापें हैं।

तुलसी देखि सुवन, मूराई मूढ, न चुरा नर। सुन्दर केडी पेखि, बचन सुधा-सम मसन महि॥

चता जिस मचार धीहन्तान्त्रीने विभीष्ठहें। श्रीर धीतरी सब सचयोंको देतकर ही वर्षे सन हा तथा जनपर दिशसा किया, सन्तरसामाने क्षीरा मजोंको बैसे ही परीचा काले दिशसा करता नारिते। सम्मत सम्बर्धे कच्च चयातम करता नारित। कार्यहानिको स्टा मजीं हर जारी।

तव हनुमन्त कही सब राम-क्या नित्र ^{मान}। शुनत जुगरन्तनु पुरुक मन मगन सुमिरि रुन-प्राम ॥

दो सन्तर्वेश स्तरसङ्ग हुमा। दोशे रामातुर्णे तम, सम्, जयन प्रथाश्वर हो सामानुके पुरानुतारि ह हो गया। यस्तु हुम ध्वन्तामें मी सामानुको पूर्वे पूर्वे ज्यानि वसी। तमी सो वे बोले—देश पार्टे म माना । किर निर्धारचोपारिक सामेंस सरोकमीत्रार्थे मन्तराव निर्धारचोपारिक सामेंस सरोकमीत्रार्थे मन्तराव निर्धारचारिक स्वाप्ति सामित

सुविधा मरानमें भी एक रहस्त है। मन्द्रि हिर्म इन मायक भेंट कामा दे नह बस्तु होगी का है। में अनुकी ही हुई ही ! कामपा: वेचारा भीत कनिरस्त किसी बस्तुको कहीं से माना है होंगे हो। 'संदीवं वस्त गोविन्द शुभ्यमेव समर्पवेद' का विधान है। इस प्रकार जब भक्तिके निमित्त प्रम-प्रवत्त वस्त समर्पित की बावी है भीर राम-प्रशब्धी परपाश्रांक चडने बयती है-रामचन्द्र यश क्षीन लागा ।' सब तरन्त ही स्वयमेव बाह्यन होता है। श्रवनामत जेडि कथा सनाई । कडि सो प्रयट होत किन माई ॥

यहाँ बढ़ा रहस्यपर्यं प्रसंक्र है । श्रीहनमानजीके निकट जानेपर माताजी परी परीचा सेनेका -विचार कर सेंड केर सेंद्र मार्गे । फिर हैरी ग्रन विस्तान संगत

सदस्तर संब इनमानजीने समक्त होनेके परिचयमें सहिदानी महिकाका सक्य कराते और 'करुखानिवान' क नामकी साथ शरंप करते इप उनका शास डोनेकी शपथ बहाकर पूर्व कपसे विश्वास विलावा--

रामदत मैं मात जानकी । सत्य सच्य करुवानिधानकी ।। यह मुद्रिका मानु मैं भानी । दीन्ह राम तुन्ह कहें सहिदानी ।।

तत्र उन्हें मन, कमें, वचनसे 'क्रपासिन्यु, का दास जान परम प्रसम्र हुई भौर पुजकित डीकर समाष्ट सनसे बासीवाँव मदान किया।

आना मन कम भवन यह क्यातिश कर दात । हरिजन जानि प्रीति अति बादी । समत नयन पुरुकाविरे ठाडी ।। भासिष दीन्द्र रामप्रिय जाना। होत सात वरु सील नियाना ॥ अजर अमर गुनिनिष् सुत होड । सदा बराई रचनायड छोड ॥

मक्तने विमन्न पर्यान परमा । इनुमान् मेममें सन-मनकी थि शह रावे। करहु इया प्रमु अस सुनि काना । निर्मर प्रेम मनन इनुमाना ॥

--पडी निष्काम अल्डॉब्ट कार कर है।

पहाँ भीडनमानुत्रीने यह प्रसाशित कर विया कि मगबत् में सिमोंको अनुकी क्रणांके क्षतिरिक्त और कत सी हर्ति चाहिये ।

अब इतपुरय मयउँ में माता । आसिप तब अमील विश्वाता ।। इसके बाद सदाये विश होते समय इनुमानुत्री कोई अदिशानी श्रीमते हैं और माता च्यामति उत्पादन क्षेत्र के र

क मीमाना मी सरकारको सहा "करणानिवान" राज्यने सम्बोधन रती था, इनुमान्धी इस मर्मेख दाता जानकर ही विस्थास दिया ।

मंत्रिकाके बदले पदामिश प्रदान करतेमें भी गृह रहस्य है। शरवानने को चपने हाथका भूषय 'मदिका' दी, इसका अभिनाय यह है कि 'हे सीते ! तम कहीं भी हो. मेरे कर-कालकी लाया महा तस्तारे सिर पर मीजद है. तम रामय इसके चायवमें समय हो ।' धौर उसके बदलेमें सिरका यहना चुड़ामिश देनेका चामिप्राय यह है कि है नाय । यह शीज छापडे कर-कमलकी छाया छोबकर दसरा व्यवस्थान महीं रखता ।' इस मभीष्ट सिडान्तकी शिका बात कर श्रीशमकी जल्दी खीटनेकी बाजानसार श्रीहरूमार-भी प्राच्याको पैर्व रिजास्टर स्वीर सब्दे ।

सारा काम श्रीहनुमान्जीके कौशलसे ही हुवा था तथावि साप सञ्चेषवरा स्वामी श्रीरामती और सपीवके यान प्रजन्मसे सामने शीना करके नहीं गये. वर्र सिर स्वामे शी रावे और खाकर भी चीले ही छिपे हहे । सरभवतः यह भी खबाल रहा होगा कि स्वामीकी श्राज्ञा विना ही मसस्वस सञ्चान्तरम श्रीर राषसन्यथ करना पदा . इसके लिये नहीं बस चवसब को नहीं होंगे ? सदनन्तर ग्रापकी सारी कहानी सगजानको जाम्बदन्तने सनादी । इतना सहान कार्य करके भी श्नुमान्त्रीके इत्यमें अभिमानका श्रष्टर न जमा । अभिमान का शरवन्त श्रमाव होनेके कारण ही ग्राप श्रपना वस मुखे श्वते थे । इससे शिचा मिलती है कि बहेसे पहा धार्य करके भी करी अभिमान नहीं काना चाहिये। शीहनमानुत्रीने बद्ध शस्य सिदास्य बतना विदा—

से सब तब प्रताप रचर्छ । नाथ न कछ मोरी प्रमताई ।।

'सारी सिवियाँ केवल मसुन्ह्यामे ही मात होती हैं।' सारक के किये यह सायमा शिकायन विचय है। श्रीहमसानकी की सबताबा चर्चन प्रसंतवार शोध्याचीत्रीने बावय-चारण-संवाहके प्रकाशमें दिया है। जब शवय श्रीरप्रनामश्रीकी सेवामें सबके बसकी निन्दा तथा औहनुमानुत्रीकी मर्शसा करता है, तथ अनुदुर्जी बन्तुस्पितिको मध्य करने इप क्ष्यते हैं कि—

अब जानेउ पुर दहेउ कवि, बिनु प्रमु-आयम् पद् । पुनि न गरेउ नित्र नाव पहें, तेहि मद रहे उ तहार 🛭

शस्त्र नगर बद्ध कवि दहईं। गुनि बस बचन सत्य के कहई ।।

तथा--

'हे रावदा ! अब मुझे यह रहस्य मादम हुमा, दिना श्रमकी बाह्य क्षिपे वस बाबरने स्ट्रान्डन किया तभी तो गद भागान्दे मामने नहीं गया, सबसे मारे दिवत्वा अवना प्रामारी बात को सभी नहीं है। अबा, बद मन्द्रा-मा नीवा सादा अवन क्या दुगते जिसाक नाएको अवा अवना है।" सहस्त्रीके दूग करनने यह तिव होता है कि शीरनुमान् सीकी स्वयंत्र गमता, निर्मासाना के साद्य स्त्रहर्ग के समस्त्री दूगमा काम करनेवाला नहीं समस्त्रा पा के बोई समस्त्रा प्राप्त स्त्री स्त्राप्त माने स्त्री स्त्राप्त करने समस्त्रा भी कैमें हैं भीदनुमान्त्रों सो काने मुँदमे करनी बहाईसो कोई बात काम करने ही नहीं थे, वे तो जुरवार सेवाम नार्त को थे। ये करिनमानके सर्वन सात्री संस्त्री

गोरनामीजीने इनकी चन्द्रमा 'सतारीर निन्दी इनुवाना' 'धनी परनकुमार' इन्छादि वहें दी बन्धे आप्ही आप्हींसे की हैं, धीर इनका ऐसा दक्षाण देनका इनके निनवानुगन्धानको स्पादन कि हमें की हैं, धीर इनका ऐसा दक्षाण देन इनके मानने 'मान' अप्रदेश हो दो तो परना समझा है। जिसमें बीनन मर 'मान' बंध दहा हो देना परना समझा है। जिसमें बीनन मर 'मान' बंध दहा हो देना की जिसमें बीनन मर 'सान' बीन पहां परना मीनामीजीको कैसे नहीं सदका है।

उनय माँति तेहि आनहु हैंसि कह क्यानिकेत । जय कपातु कहि कपि चले अंगद 'हन्॰ समेत ॥

कैसा धण्या मता है। विभाष्यको शायको विमास हो भगवान्की गरवाँने चा रहे हैं, उन्हें विषा जानेके जिये करियमान जाता है। उन्हें मत्य प्रधान प्रवार है। ऐसे भवसपर सीमारिवर्ज 'मान्' जेकर क्या करते हैं यही कारव है कि सीव्यतीशास्त्रीने 'हनु' भागका मयोग कर सामाविक वर्षनकी पराकाड दिख्या थी।

इसी नजताके कारण इन्सान्धी अक्ति और शक्ति समान प्रिकारी हुद, जिसके कारण अन्तर्मे जीमगवान्के भीमुखसे भी ये उद्वार निकल पर्वे—

सुनु कपि तोहि समान उपकारी। नहिं कोठ सुर नर मुनि बनु चारी।। प्रति उपकार करों का तोरा। सनमुख होद न सकत मन मोरा।। सुनु सुन तोहि ठरिन में नाहाँ। देखटें करि विचार मन माँहीं।।

इतना ही महीं, औहनूमान्तीने, शक्ति प्रकरवासे शी-खरमवाजिो, विजय-सन्देशसे शीजानकीवीको, बीर बवध धाराण्य सम्देशमें श्रीधारप्रीको गया समय शर्मन व्याप्ति क्या क्या । सदी व्याप्ति है कि श्रीमाहरण भारको भी स्थाप प्राप्त है।

मान बीम्ड निज बाल बन्दि । बीड ब्रमु किर्दि स्वर्गी मारत-शुत तब मारत कार्दि । बुरूम बर्गुर सेक्समार्गः विक्रिया जातु बीडि नेन्स्यार्थे । बार बार ब्रमु विम्रुक सीड

स्पानाम् कार्य केने सम्बन्धाः मुखानुसार कार्य केने स्वाने विका स्वानका स्वीतन सेना सीर पुनर्माय करी भीर क्षम्यो कृति यह स्वम्यस्य हिल्ला स्वान केने कि स्वपानकी सेनाके साथ साथ पुरुतार्य स्वानी कार्यो कृतार्यिक केनी कि सीर सीरण सकत हो साथ है।

बन्दी वानपुषार, सन्ध्या वावड मणस्य। बातु इदय-मागार बगरि राम सर-वारा॥ चन्य दन्साय तुमको सीर तुमारे बोडगार दीर्ग

वात्रवंशीय दामायगर्ने मगदान् बांग्यने सं
 वहा है—

वरिव्यक्तिकार बाहरेश होते व बाहिया । तावचे व्यक्ति होति हारिध्यक्तरूटी । वोद्या हि बारस्तास्त्रीत वारस्मास्त्रीत केवा । योद्यस्त्रीयकारस्य प्राप्तानात्र ते को । चेत्रस्त्रीयकारस्य वारम्य करिनो वस्त्र वरित्र वीत्री बाह्य कस्त्रीहरूँ की। नरः अञ्चलकारामान्यस्त्रशाहि वारक्रम्

राणामापतस्यायदि याद्यान्। (वा∙रा•७।४१।२१^{हेरा}

'वे बन्नान् ! इस लोकने बनात मेरी क्या रिमें वेरी कोर्त कोर तर जीवन रहेगा । कीर बारक बन्द यहाक मेरी क्या रिमों ! हे बागत, 'रिने प्रकार मेरी यहाक मेरी क्या रिमों ! हे बागत, 'रिने प्रकार मेरी वेले हैं, पनमेरी कर-पत परवार है रहेनी है बारे हैं वो बोर कम बेरी पुत्र सकता हूँ ! टी पहकर से हैं ! कोर्य हो जावें, ऐसा बनसर हो नो संपर्ध कर प्रकार कार्य पाने बोरम पान बनता हो ! क्योंक वर प्रकार कार्य पाने बोरम पान बनता हो ! क्योंक वर प्रकार हो कार्य हो वाने क्या करता हो हो हो है है कार्य कार्य हो वाने क्या करता हो हो हो है है होई हैं कार्य हो वाने क्या है ! क्या करते हैं सार्य कार्य हो है कार्य हैं कार्य हो क्या क्या है है है होई हैं

विभीपण

(हेस्ट्र-भीरपुनायमसादसिंहवी)



सारिक, राजनीतिक, परिवारिक घरि-से विमीयवाचा चरित्र विन्दनीय कहा जानेरर सी चारवाशितक विचार-को पश्चिते विमीयवा एक उच्च कोटिके चीय हैं, क्योंकि सारामिं कमा पारच करनेवा चल चलें पुरा मिल गया। प्रयोग चीतनको उन्होंने पूर्ण-

त सार्थक किया । श्रीमुलके बचन हैं कि सायन-चान, |चका द्वार नरतेड बढ़े भाग्यसे मात्र होता है । इसे पावर | एरखोक नहीं सँवार सकता, यह—

सो परत्र इल पावह, सिर चुनि चुनि पडिलाय । कालर्डि कर्मीर्ड ईमरार्डि, मिथ्या दोल कमाय ।।

विमीचया रे विपर्णोमें मन न बगाबर भवतापासे पार निका पत्र किया । 'सकद सुख सानि' स्वतन्त्र मगवतिः । प्रवत्यन कर इसडोक एवं पाखोकमें यथेष्ट सुझ माछ क्या ।

विभीपयांनीका सुकाय को भगवान्त्री कोर वाहकेसे ही ग, बार भगवान्त्रामिके किये वस्तुक करने वे किन्तु विना गन्त-स्वाके सबी भक्ति मात्र ही नहीं सकती, अध्यके प्रकार मेद मिल करी सकता। वर सन्त-समागन भी ही बिना पुरुष्कुण नहीं सकता।

'पुम्य-पुंज बितु मिलहिं न सन्ता । सत-संगति संसृति कर बन्दा ।।

विभीषयका प्रथम पूरा था। सक्षमक्टकी में स्वनेषद भी वह प्रथमा वर्म निवाहते थे। तानी की निशिष्यनाथ राज्य के राज्यानीमें भी हरी मिन्द्रामें रामनामका प्रमित्न करते दूर यह सम्मन्दर निवास करते थे। इन्होंके साम्यते की-'रन्तान्त्री संकामें गये।

प्रभुक्ते किये इनकी वक्त्यका व्यक्तुकतालो इसीले बाहिर दोती है कि वह पितस्थानें इत्यान्त्रीका प्रकल पुनते ही देरे कीर पुनने कार्ने के पाप हरि है कि इरिदास ! क्वॉकि विपक्ते हैं को ही शुक्ते अतीति होती है कि मैं विसकी विपक्ते हैं को इंड सार ही हैं।

्री मक्त-मुखम शहता, दीनता और सन्तोंमें स्वेह शादि ही इनमें मे ही। जिस बातकी कमी थी उसकी पूर्ति थी

बीहन्सान्तिके दर्शन चीर उपदेशसे हो सथी। मास्तनन्दन एक चादर्शे सक थे। इनकी दीचाके बाद बाध्यविकास होनेमें बादर्शे ही क्या है !

पहुंचे हो वह राववाके अंत्री, क्लाके इत्वारी, क्लाके अना चीर उसके काल होने चीर सांसारिक चारतामाँके इत्यार्थ रहनेके काल्य दवारे थे, संकोष कराये थे, पर पक इत्यार्थ रहनेके काल्य दवारे थे, संकोष कराये थे, पर पक प्रतानका प्रतानका प्रतान काल्य किए वर्ष में घोड़का अपनर्थकी मोर व्यार्थ आएके विद्यार्थ के प्रतान किए राय्या के प्रयोग उसके व्याप्त होते थे। संचीर करते थे, प्रवास पाव्य वर्षाको सदुपर्यंग देनेके काल्य काएने दसका पार-मारा सहत्व किया। जब क्या था, इस विद्युष्ट संसार्थि इन्हें कार्य उस्तरिक कोई दी सार्थ दीया प्रार्थ

यह तो निवम ही है कि वद सलुप्पका सब वक हर बाता है, सारे सहारे छूट बाते हैं, हुनियासे प्रताहित और पीड़ित होने क्रमता है तब उसे बराबान् स्तते हैं। श्रीस्रवास-बीने इसीबिये 'निरवज्ञके पक्ष राम' गाया है।

संकारिक विभावण वार्यो होकर चने । इत्तर-राजने जो र विद्या मन निमाय होगारा । अरवाद श्रीत्रामण्डा है तिहारे से वृद्धि । अपना त्या क्षार्य क्षार क्षार्य क्षार क्षार्य क्षार्य क्षार क्षार्य क्षार्य क्षार्य क्षार्य क्षार्य क्षार्य क्षार्य क्षार क्षार्य क्षार क्षा क्षार क्षा क्षार क्षा

देखिहों जाइ पाण-जल-जाता। मध्य-मृतुत हेवह मुख-दाता।। वे पद पासि तरी शिक्ष-गति।। देवह-कान्त-पातन कारी।। वे पद वनक-तुता वर राये। कपट-कुर्राव-तिग धरि-बारे।। इस-वर-सर शरीव पद औं। वही माध्य में देखिहर्ट केई जिन्ह पायन्ह के पादुकन्हि भरत रहे मेन लाइ। ते पद आज निलोकिहर्जे इन्ह नथनन्हि अब जाइ॥

प्रश्नो जान किया कि विभीषय शत्य भागा है। ग्रायागतकी रदाका म्या सरकार कमी भूजते नहीं। विभीषय ग्रायागतकी रदाका म्या सरकार कमी भूजते नहीं। विभीषय इताया जाता है भीर भुद्धके रूर्गना माझते यह पवित्र हो जाता है। यह किसी भी भारको नहीं विभावता। विभ्वत्य भागते कहता है कि, 'में तो भागके समीच भागे भोग्य पात्र नहीं हैं नरीं कि भार सुर-प्राका हैं भीर मेरा जन्म 'निश्चिष्य शंता' में है, तिस पर भागके मनक सात्र रावचाका में भाई हैं। किन्द्र बात यह है कि—

ध्रवन सुज्तु सुनि आवेकॅ, प्रमु अकन मव-मीर , माहि । माहि । भारति-वरन,सरन-सुखद रचुवीर ।।, मही प्रसुका मन्तन्य है कि—

सरनागत कहँ जेतर्जाई निजअनहित अनुमानि । ते जर पाँवर पापमय, तिन्हाँह विद्योद्धत हानि ॥

कोटि निम-चप रातिहि जाहू । आप सरन तज्जैं नहिं ताहू ।। सनमुख होइ जीव मोदि जनहीं । जनम कोटि अप नातिह तनहीं ।। पापवन्त कर सहज सुमाऊ । मजन गेर तेहि मान न काऊ ।। जो पै हुइ हृदय सोइ होईं । मोरे सनमुख आन कि सोई ।। निरमहामन जन सो मोहि पाना । मोहि कपट छठ छिद्र न माना

ममुकी प्रतिज्ञा है---

सङ्कदेव प्रपत्नाय तबास्मीति च बाचते । असमे सर्वसूनेन्यो ददान्येतद्वतं सम ॥

भीमगत्रान् इस रहत्यको विभीषण श्रीहन्सान्त्रीसे सुन तुका था और बसीके वसपर वह माया था। प्रशुने अपने प्रयक्तो रणता, उसकी शरबागति स्वीहत हुई।

यहाँ बंधावा राम मिका, वहाँ परस्तरको मासि हुई। विभीपकुष रोगों कोड बन गये। हसीसे कहा बाता है कि सरस्ते धानानेसे हा सुप्त परस्ते धानानेसे एवं सुप्त परस्ते धानानेसे एवं सुप्त परस्ते धानानेसे हम करवार धानानेहें। धानानेसे परस्ते धानानेसे परस्ते परस्ते धानानेस परस्ते धानानेस परस्ते धानाने हम्मापक होतानेस को स्थापने धानाने धानानेस परस्ते धानाने धानानेस परस्ते धानानेस परस

रावणके जीवनसे शिचा

(छेखक-पं॰ उपेन्द्रनाथनी पाठक) जड़ चेतन गुण-दोषमय, विश्व कीन्द्र करता॥

स विक्रिके अनुसार महाकी सृष्टि हा भाँति गुर्थ और दोष, पूर्व हर्स हैं प्रमात हैं। बात: किसी बदाके हर्सवार्थ अध्यक्ष निर्दोष कहना बहुत कीर्वार्थ क्षयका निर्दोष कहना बहुत कीर्वार्थ के हर्द्यमें, इस विक्रवतालय केर्यु

चवगुर्योसे बचकर अमर सुद्र मह विभिन्न, विवेकरूपी मधिको प्रदीत कर महाद ^{करा} किया है । इसी विवेकके द्वारा मानव समाव हैति। पारबौकिक सुर्खोका भोग कर परमशाम ^{प्रात}ा योग्य यन जाता है। जिस मनुष्यकी विवेक्ती विषय-वासना भोंके मोहमय धन्यकारी प्रमाहीन हो है है, वह नाना प्रकारके कप्टोंका क्षम्य धन जाता है। व हर्यस्ते अले-बुरेकी पहिचान करनेकी शकि नह हो है है और वह सतुष्य होते <u>ह</u>ए भी मतुष्य-मही वर्ष है। यह बात उत्तनी ही सत्य है जितना कि दो और गेर अथवा दिनके बाद रातका होना है। हिन्दू हंहि ! सम्बदाके इक्षिहासमें इस विषयके समर्थभमें गुरा उपलब्ध होते हैं। महाभारत समा रामायवादि शि अन्योंमें विवेक-अष्ट राजामांकी दुवैशा तथा गतरही विशद वर्णन मिलता है कि जिसे पाकर बाबरेंडी नहीं रहती । उन्हों चविनेकी राजाओं में पुलस्य-पुन^{की} राञ्चल-राज रावच भी था, जिसने ठा तपस्याहे हारा हर्ण शंकरको प्रसन्न कर देव पूर्व दानव दोगों ही से ग्रा दैने तककी सेवा करवायी थी, जिसने अपने प्रवंत मुन् भवल मतापसे कालामि, इन्द्र भीर वरवानी मी कीत-दास बना रक्ता था, जिसने अपने जीवनमें गर कमी दर्यन तक नहीं किया था, जिसकी स्वर्णमंत्री हैं वैलक्त धमरेन्य भी समित हो नाता था, जिल्हे हैं पुरमें चर्तक्य चन्द्रमुखियाँ अपनी मुसचित्रका रे क्वोत्सना सदा सर्वदा दिदकाया करती थी, द्विवर्वा भशन, मेधनाद धीर कुम्मकरणके समान भहिनीत हार बोदाचोंसे पूर्व थी, तथा को स्वर्व भी प्रशास है। मबस पराक्रमी, बहितीय राजनीतिश तपा मार्

गाली था, ऐसे राशस-राज रावखका भी हृद्यकी विवेकमधि। पर शहंकार और शविवेकका पर्या पद जानेसे पतन होते कुछ भी देर न बगी। विषयोपमीय धौर मध-मांसादि धभव्य पदार्थीके निरन्तर सेवनसे दसकी बद्धि भ्रष्ट हो गयी। चतपन उसने प्रभुको निस्सृत का कामिनी श्रीर कांचनको ही संसारका सर्वोक्ट पदार्थ समझा, मन्त्ररी जारियोंके धपहरकदा प्रवित कार्य उसके राज्यमें एक साधारण-सी बात समग्री वाने सबी। अनेक इल-कामिनियोंको उसकी समितहस काम-बासनाकी तृति-के शिये विवश ही घएना सतीत्व बट कर देना पदा । इस क्षधन्य ध्यापारका ध्यय प्रजापर बडे घडे कर खगाकर निकाका जाने क्या। करका बोक इतना वह गया कि जिनके पास खाने सकके लिये भी पैसे न थे, उन्हें अपना रक्त करके रूपमें देनेके शिये विषश होना पड़ा है ऐसा चीर धनाधार व्यथिक रिनॉटक सक्त-बसस्य अगवानसे सदा नहीं जाता । जब रावणके पापका घडा सवातव भर गया. तय बस कररूप श्रापिरक्तसे अनक-नन्दिनी सहाराणी सीता-ने जन्म प्रदेश किया । समय पाकर जगञ्जननीकी सौन्दर्य-की क्यांति चारों घोर फैल गयी। शबका को कामित्री कांचनका दास या ही, उसने भी धनकमन्दिनीको ास करनेकी चेष्टा की, पर सफल न हो सका । क्योंकि स समयतक उसके पापका घड़ा पुकद्भ भरा न या, जब सका समय सहिक्द धागया तब उसने जानदीको चश प्र,परिद्यामस्त्ररूप स्वया मंगी संबादे साथ अधनेको श्री जह प्र बाला । चत्रपव रावयके चरित्रसेडमें को शिका मिसती े. यह बढ़ी गम्भीर तथा मननीय है। शबया सर्वेगवा उत्पन्न विद्वान् मूपवि था किन्दु कुसँग और अधिमानसे इसका सदाचार तथा विवेक नष्ट हो गया या। विवेक्तप्रष्ट मनुष्योंका शतथा पतन होता है, शतपुर उसका भी सर्व-मारा हो गया।

इससे यह शीखना चारिये कि सदाबार, विजय, वार्त-परायबता, इंपरमे अदा सादि गुजोसे हो सदुश्यक प्रायुद्ध मीर परम कराया होता है, हसके विपत्ति केंद्रेसे देवें पूर, ऐपर्य मीर बरको आध करवेपर भी सदाबारविद्दीन मनुष्यम सन्तर्म सर्वनाग्र हो आता है। इस्तियेष्ट समस्य

भीर हुअरिशताको छोड़कर सबैव ही धर्मपालनमें ही सपर रहना चाहिये १७ • समाजी राजनकी अना वैकारिक गर्भ और फलान-पश

 सुमाली राह्मसकी बन्ना कैकसीके गर्भ और पुरुत्त्य-पुत्र सुनिवर विभवाके औरसंसे रावणका बन्म हुआ था। पिताकी भाशानुसार कैतसी विवाहार्थ सुनि विश्रवाके पास गयी थी। मुनिने उसके मनकी बात जानकर उससे कहा कि 'तू पुत्रेच्छासे मेरे पास आवी है. तेरे पत्र होंगे परन्त त प्रदोषके समय आयी इससे बेरे दाक्न समान, दारून स्वरूप और दारून संगदाले कर-कमाँ राक्षस पत्र होंचे । कैकसीने दरकर कहा कि 'भगवन । सै आपके सहस्र महाबादीके औरससे ऐसे निष्ट्रर प्रत्र नहीं जाहती, कृता कांजिये । वसपर मनिने प्रसन्न क्षेकर कहा कि 'हे शीमने ! वेरे सबसे छोटा पत्र मेरे बंधानुरूप धर्मात्मा होगा।' इसी कैकसी-के रावण, कुम्बकरण और विभीषण सामक तीन पत्र, और विमीषण से बड़ी धुर्पणका नामक एक कत्या हुई । रावण और कुम्भकरणने महातत करके बद्धार्यासे सनुष्यादि शाणियों के सिवा पक्षी, माग, पक्ष, वैल, बानव, राष्ट्रस और देव आदि किसीके हाथसे न मरने. सभा इक्शनसार धनवाना स्वक्त भारण हर मक्रनेका बरदान प्राप्त किया। तदनन्तर बस्रगरित रावणने देव-दानव सबको जीत किया । इसके उपदर्श और अलानारोंसे पीढ़िता होकर अनेक सती देवियों-में इसको भीषण साप दिये थे । रावणने अपने सीतेले माई करेरको रुक्तासे निवासका उसपर अधिकार कर किया था ।

कहा जाता है कि रावण परम दिहान, हुदिमान, बर्ग और महार था। बैदिक अनुझान करता था और वेदीम उन्होंने प्रधा थी रहे थे। अन्यान्हें अंदि भी मन-दी-मान बहा माँच करता था। सतीदिये आंद्यांनी येगे, आर्त्यूणके मान्येप रिशाहरणका निश्या करिये हुन्दे राज्येक मान्ये केते दिखार अहे ये और यसने कित ब्रोह्मकों सीता-दाल्यका निथ्यम किया था, एव बारको निमानियंत नीयासीन कहा सुधीत च्या किया था.

बुर नर अंतुर नाग सग मादी। मोरे अनु चर सन कोड नारी।। कार बुच्च मोहि सम बनलंता। दिनहिंद को मोरे बिनु प्रमस्ता।। सुर-दंक मंत्रन मोदि सारा। जी जगरीस टॉन्ड अस्तारा।। तो मैं बाह बैट होडे बगरें। ग्रमु-सर प्रमा देशे मर तरहें।। होस्टि मजन न वासस देहा। मन कम बन्यन सन्त्र स्ट पहा।।

—सम्पादक

गीघराज जटायुकी अलौकिक भक्ति

(रेखक-श्योहार श्रीराजेन्द्रसिंहजी)

हिट्टा होते थारे गुसाई मीने श्रीमता, हन्तान शादि में प्रतिक सक्तोंके प्रेसका वर्षान किया है किया श्रीक स्थापन किया है किया श्रीक स्थापन किया है भीच राज्यती करना है किया है क

किरत न बारहि बार पचारची।

चपरि चोच चंगुरु इस इति स्थ,

संद-संद करि बारवी।।

निरम निष्ठ कियो, छीनि स्पेन्हि सिन, यन धावनि अषुराज्यी ।

तन असि कादि काटि पर पाँचर

रै प्रभु-प्रिया परान्यी ॥

राम-कात सगरात बाबु हरयो

विषय न जानकि स्यागी। गुरुनियान गुर निज्ञ सराहत

कन्य विदेश बहुमारो ॥ बहु शीलाको न शुहा लकनेडे कारच परकाचार कर रहा है, इन्तेमें ही शीलाम-बक्माय वहीं पहुँच कार्ने हैं—

मेरे यथे बाद व नागी। स्पीतप्रदेश बहि बानन उसी

करण-स्ता प्रश्न दानी **।।**

बराय की मं देन प्रतिस्थानी

हुने के सदय कर साली ह

uren err formerele ab

€ित सन्दर्भ सन्दर्भ ।

err e it eger fiele

सम्बद्ध नेत्र अस्त महत्त्व महत्त्व मुख्य देशा दिन

निवर्श्व कर्नुद सुरूप ॥

K Y' AS IN ON THE

SAR BE BEE WE SHE

me or co or a

श्रीरामजी भी भीधरामकी यह दशा देवस्र रहेरी में खेकर विजाप करने लगते हैं:---

> रायी गींथ गोद करि ठीन्छो । नैन-सरोज सनेह-सठिठ सुचि

सनह-साठक सुन्ध मनह अरद-त्रक दीनो ।

श्रीराम कहते हैं कि में गीवरावडे मिजने हिन्दे खुखुके दुःखको भूल-सा गया था किन्तु विधानहे हैं,

यह सुख भी महीं सुहाया ! सुनहु तथन ! सग-पतिहिं मिते बन

में पितु-मरन न जानी।

साहि न सक्या सो कठिन विपाता बड़े। पछु आजुँ आन्यी।

श्रीरास गीधके प्रेसको देखकर 'सीता स्त्रोको हैं भूज जाते हैं और कुछ दिन जीवन बार्य करते हैं कससे बका सामह करते हैं—

मेरे जान तहा कटू दिन शीते।

देखिय आपु सुबन सेवा-सुस मीहिं पिनुकी सुन हीते।

दिम्य-देह, इच्छा-जीवन जग विधि सनाह मेंगि होने।।

यहाँ श्रीसामात्री गीपसामात्री सारते लिला हो में दिया जो बुगरे किमोद्रो नहीं दिया जा सकता हो हैं। वेद, इपया-सर्या जादि सारी हुए हेनेसा बन लिए, हैं नक कर दिया कि 'यानते निये नहीं तो संस्तारी के करने दे विश्व जीवन सारता की हिया है उसते होंगे करने दे विश्व जीवन सारता की होंगे किया तीनते हैं वाहरी सारता करने के सारता तान की समारता हैं स्तारी करने के सारता तान की समारता हैं करीय करा हो सकता है है इस सार्यु के सार्यु करने हैं कर्मीचे हरून सारता है

> भीन्यो विर्वेश विर्वेशिय प्रमुखा करि करी सुना करि।

वित्रे प्रतिकेत्रमान चाहित्तर इंग्युं की क्यों न व्यंत्री उसमे कहा 'राम'

हर नाम मरत मुख आवा । अथमहँ मुकृति होद श्रृति गावा ॥' मम तोचन गोचर आगे । राखों देह नाम केहि त्यांगे॥

सुन्दुन्तमय जिसका नाम भी हुर्जंच हो बांठा हैं स्वर्थ डी उपस्थितिमें, उसीके बचन भुनते हुए, उसीका नाम हुए, तथा उसीका रूप सत्तव धौंकंकि देखते हुए, उसीकी गोदमें सिर रासकर गरीर मोदनेके समानं धनन सीधार को सकका है हैं

नीकै के जानत राम हियो हो।

प्रनतपाल, सेवर-कपाल-चित

विदु परतरहिं दिवी ही।

त्रिजग जोनि-गत गोध जनममदि साइ कुअंतु जियो हों।।

महाराज सुक्ती-समाज सब-

कपर कात्र कियो होँ। सरत वचत्र,मुखनामं,कप-चंश्चं

राम उद्धेगं तियो हो।

हुल्सी मी समान बड़मानी की कहि सकै वियो हो ॥

गीधराजने कहा 'इस नकर गरीरके दीर्घशीवन या ए-मरपाकी पारामी पहकर में इस युर्जम अवसरको | दीव सकता । मीत तो बहुत मिलेगी पर उस समय कहाँ मिलोपे ?

तुलसी प्रमु सुठे जीवन रुगि

समय न घोलो सही।

बाको नाम मरत मुनि-दुर्रुम हुम्हाई कहाँ पुनि वैही १॥

(40 48)

कितनी ऊँची भावना है ! गुसँह्यंजीने भावनी प्रतिसासे । प्रसंतको बहुत ही ऊँचा बना दिया है ।

दोहावतीमें भी गुस्तईतीने बढ़े अब्दे अब्दोंमें बीयके गिय मेम भीर दुर्जम सुखुकी मसंसा की है---

निरव, करमगत, मगत, मुनि, सिद्ध, हैं . तुरुसी सफल सिद्दात सुनि, अन्होंने यहाँतक कह दिया है कि गीधराजके समान सूख संसारमें किसीको भी नहीं मास हो सकी।

> मुण, मता, गरिहैं सकर, परी-पहरके भीच । कही म कहू आज तौ गीपराजकी मीच ॥ मुष्य मुकुत, जीवन मुकत, मुकुत मुकुत हू मीच । उठली सबढी है जीवक गीपराजकी मीच ॥

> > (दोद्याक १२४-२१५)

सम्बुत्य चीड ज्यानपूर्वक विचारा जाय तो मातूम होगा कि ज्ञानतक किसी भी भक्तको ऐसी मीत नसीव नहीं हुई। माजीवन परम अधिमय जीवन विचारत मानेवारों हुए हैं, हाजधानमें ही शरीरच्या पविचारत देनेवारों हुए हैं, जनमार पाए करके क्ष्मानी 'राम-नाम' से हुक होनेवारों हुए हैं, क्रिया हस्तकार रामके कानमें, रामका इर्एन करते हुए, रामके बच्चा हुत्य हुए और रामकी हो गोदमें सेटे हुए, माय बच्चा हुत्यते हुए और रामकी हो गोदमें सेटे हुए, माय बच्चा हुत्यते हुए और रामकी हो गोदमें सेटे हुए माय बच्चा हुन्यां हुए।

किर उसकी धन्येष्टिकिया भी तो 'निगवर नीन्हाँ राम'। युक्त खौमान्य तो व्यायको भी नहीं यदा था।

श्रसाईकीने जिस समुखी कामना की थी, यह है!— समर मरन, पुनि सुरसार नीता। रामकान उनमंतु सरीता।। काहित कानि तनै ने देखी। संतत संत प्रसंसत तेही॥'

इनमेंने एक 'शुरसारि-तीर' को छोदकर गीथको शेष सभी वार्ते सिर्व्हों । परन्तु सुरसारिक बद्दोर्मे वे पावन चरण मिस वये, जिनसे सुरसरीजी प्रकट हुई-थी ।

ग्रसाईजीने विनय-पश्चिम, मानस भादि प्रत्यों में स्थाप स्थानवर शामदीकी इस बातके लिये बड़ी प्रशंसा की है कि उन्होंने गीथ, शबरी चादि नीच पितन और अपमींकी तार दिया।

मीच अधम सम अधिव मोगी। गति दीन्हीं बेहि जाँचत जेगी।।

वर विचारनेकी यात यह है जि क्या सच्छाभ गीध अध्यम या है करूप ही अकोंके लिये तो यही उत्तित है कि के ेही कारण मार्ने और सरनी - इन्यादकीको यो यही कड़ता

न बहुक मोरि प्रमुताई।।

किन्तु भगवान् उनकी करनीको अध्यी सरह सममने हैं भीर महाराक कहते हैं कि---

'प्रतिउपकार करों का तेसा। सनमुख होह न सकत मन मोसा॥' यहाँ भी मीसामजी स्वयं गीचसाजसे कहते हैं कि 'शुरहारी शुक्तिका कारण मेरी कुण महीं है, हसमें कारण है निःस्वार्ण

परोपकारमें गुग्दारा शुक्तसे माखत्याम कर देना । जरु मरि नयन कहत रपुराई । वात करम निजर्वे गति पाई ॥ परहित बस निनके मन माई। तिनकई जग दुरसम कहु नाई।॥ महाराज रघुराजींगहजीने सो शमहाग और भार करनी दोनों ही को मिखा दिया है:—

कपुरु बूर जागे चिन समुत्ती तिकत तिरंत निराद। कपानिमान ज्यामु अंगन्तत्र तिज ज्यातमे हार्यवे प्रमुच्यद परित गीच ततु त्याम्यो, तित्र हायति वर्षे वर्षः। गीचराज कहें दह राम गति वेर-पुरानी वर्षः। सार्कोको करती करतीको भी तो प्रसन्तवास है

मानना चाहिये !

भगवाच् श्रीराम

(केलक-भीग्यालायसादमी कानोहिया)

प्रजावत्सल श्रीराम

कीसक-पुर-बासी नर नारि मुख जह बात । प्रामहुँ तें प्रिय लागही सब कहें राम क्रपाल ।। उमा अवधवासी नर नारि कतास्य करा । प्रका सचिवानन्य धन रहानायक जहें सूच ।।

गतमें सनेक राजा हो कुई है और होंगे पर समुक्तभूषण यायधेग श्रीताकों समान न कोई हुआ, न होगा। साज भी संसारक्षण के कोई किसी राजकी भर्मा सर्वा है ति सर्वा प्रगतामें वह यही कहता है कि यहाँ जो वह यही कहता है कि दहाँ जो देशां सामान' है। इससे सिद्ध है औ

काननेके उद्देश्यसे श्रवधवासी प्रजा तथा श्रन्यान्य राष्ट्रि से प्रश्न करते हैं —

'आप खोग भेरे कहनेते हैं। श्रीरामके क्यों राजारण चाहते हैं। जब मैं चार्याचुसार राज्यधासन कर राग हैंग आपखोग कीरामको क्यों राजा हैकाना चाहते हैं। इने क्यों हो रहा है, इसे आप दूर कीजिये। 'वकार्य केतारी व्य केतारी व्य हो रहा है, इसे आप दूर कीजिये। 'वकार्य केतारी व्य क्यां आप के चारण की सम्मान काम उन्ह नुष्य है ते इसीवियों इस श्रीरामको स्वयना राजा हेतना चारे हैं-

'बीराम सत्य व्यवहारके कारण सन्-पुरव कांगते शोभा-धर्म श्रीरामसे ही है, श्रीरामके विना समी क्रों^{गर} जिस प्रकार चन्द्रमा सब प्राधियोंको चानन्य देखा उसी प्रकार श्रीराम सब प्रजाको जानन्द हेरे^{ताई} चमामें सीराम पृश्वीके समान हैं। बुदिमें मीरान वृहती समान हैं । बीर्यमें भीराम साहाद इन्दर्व समान श्रीतम धर्मञ, सत्यप्रतिज्ञ और शीववात् है। किसीकी निन्दा नहीं करते । श्रीराम सब प्रावियान है धीर प्रिय बोजनेवाले हैं। श्रीराम समम्मनेवाने, ही कृतज्ञ और जितेन्द्रिय हैं। श्रीराम बहुशुठ, वृद-महर् सेवा करनेवाले हैं। श्रीराम, देवता मनुष्य श्रीर कर् सब बर्कोर्मे नियुच हैं। श्रीरामने समस्त विदार नियमित ब्रह्मचर्यके साथ अध्ययन करके वत-स्वान हिंदी श्रीराम वेदोंको यंग और उपांगों सहित सन्दी बाननेवाले हैं। श्रीराम गन्धर्व-राखोंके जाननेता श्रीराम कल्यायके बाजय हैं। श्रीराम परम दिसी

श्रीताम संप्राममें जाकर बिना विजय पाने नहीं खौटते । शीराम संप्रामसे जीटकर सब प्रत्वासियोंसे ग्रपने परिवार-के लोगोंके समान, पुत्र, स्त्री, शिष्य, मृत्य चौर ऋग्निहोत्री भादिका कुराज समाचार पृष्टुते हैं। श्रीराम बाह्यबॉसे पछते हते हैं कि आएके साज-शिव्य धाएकी सेवा सो करते हैं ? श्रीराम अब किसीपर चापनि देखते हैं तो दुखी होते हैं और दसको दूर करते हैं। श्रीराम बुद्धोंकी सेवा कानेवाओं हैं। श्रीराम सत्यवादी धीरोंकी उच्चति देखकर पिताके समान प्रसन्न होते हैं। श्रीराम धर्मका पासन करनेवाचे हैं । श्रीराम मुसक्ताकर बोखनेवाजे हैं बाँर सदा प्रसम्भ रहते हैं। श्रीरामकी किसी के साथ खड़ाई-मगहा करने-की रुचि नहीं होती । श्रीराम किसी भी विषयमें बासन्त नहीं हैं। श्रीराम ध्यर्प क्रोध या हुए नहीं दिलाते । श्रीराम बोदे मी उपद्यारले प्रसम्र हो जाते हैं चौर चनेक चपकार करनेपर भी किसीसे बेप नहीं करते और भीशम मसाव-विडीन भाजस्यग्रम्य हैं।

ऐसे सत्यपराक्रमी कोक्ष्माळके सहरा महान् गुणी श्रीरामको समग्र रूप्ती घरना स्वामी वनाना चाहती है।

धालवर्षे रामराज्यमें प्रमाणे जितना शुल था, उतना शुल किलीजें रामर्थ्यं नहीं हुया। किल्क्टरेंद पर वर्षत सीभावची वात हो यहि श्रीयुल्तावजी-चीत रामची माहि हो। श्रीरामर्जे वास्त्रावस्थाने ही स्वामानिक गुर्वोसे प्रमा खाल्या शुल थी, राज्यानिष्यके पूर्वेसे ही बाजक कीसाने प्रकरवासियोंके मनको शुरा तिवा था। वोस्त्रामी-ची महाराज दिवाले हैं—

अनुत्र स्त्वासँग मोजन करहीं। मानु पिता आस्वा अनुसरहीं ॥ जेहि बिधि गुरोी होहिं पुर-रोगः। करहिं इपानिधि सोह संत्रेगा।।

महाराज दरारथके मुख्यते रामशास्यामियेककी बात मुक्कर मजाके हर्पका पार मही रहा ।

> शमनाज अभिरेक मुलि, दिव इरने जर-नारि । रुगे गुमंगठ राजन सब, विधि अनुबूठ विचारि ॥

इपर भीतानके तान्याधियेककी तैवारियों हो हती हैं करा मुझ्की कुछा हुए और ही थी और हुक्ता भी प्रमुख्ये हरा-दासनके स्वानमें बनका ज्यासन भीत तान्य भीतानकी निवा । शीतानकी बनवामके समय ममादी व्यापन वेतिनवे— सनि बन-साज-समाज सब; वनिता बन्धु समेत । बन्दि निय-गुरु-चरन प्रमु, चंत्रे करि सवीह अचेत ।।

न्यदे अस-पु:-नवार अपु, स्वक का स्वाह कथा। । बहिर सार्वाल देवित दोक माई । करें हारी अवशहिं तित गई। बढ़ता राम रहिंवे अथय अनाया। विकट रोग हार रागे साथा।। कथारिन्यु बहुकिथि कुगुहासार्वे (शिवार्ट प्रेमस्य पुने मिरि आर्रहें।। सहिंद म कहें पुन्य विरहाशी। पने टोग स्वाह माण्याक्ष माण्याक्ष स्वाह स्वाह साथा।। सहिंदी निवास कैंक्ट मनमादीं। यार राम सिंव पितु पुले माई।। अहाँ राम वहें कब सुस्तसादू। विनु रामुनीर भाग नाहिं कानू।।

बालक कृद निहाइ गृह, रुमे रोग सब साम ॥ समसा-तीर निवास किय, प्रथम दिवस रधुनाम ॥

ह्यम्बद्धाः सब प्रजा श्रीस्पृद्धानृत्यच्छे साथ बन गामके किच तैवार हो गयी। यर घरणी प्रजाको सुख देनवाले प्रजायसक साम सोचने हैं कि दनमें प्रजाको सनेक हु-व भोगने बहेरी, वहाँ व्यवश्वे सामान साराम गहीं है, खता। बाद प्रजाबने वानेक प्रकारते सममानो हैं—

रघुपति प्रजा त्रेमस्त देशी । सदय इदय दुश मंगेठ निरोसी ।। कहि स्रवेग मृदु सचन सुराग ।बहुनिधि शाम होग समुसाप ।। किने बरम-उपरेस वेगेरे । होग त्रेमनस निराहिं न फेरे ।।

वद इसम्बार बहुत सममानेरर भी प्रवचवासी प्रशा श्रीरामका संय नहीं घोड़ती, यर श्रीरामको बाध्य होकर तात्रिके समय श्रमको सोई हुई घोड़कर वन-ग्रमन करना वहना है।

त्रवननार बन शीमस्तनी शीरामसे मिलमेको आनेकी इच्छा प्रकट करने हैं। उस समय पुरवासियोंके प्रानन्त्र और उत्साहको देलिये—

मात बचन सबढ्हें प्रिय त्रांगे । राम-सनेह-सुधा जनु पाने ।। अवसि चरित्र बन रामपढें भारत मंत्र मठ धीन्ड ।

सेक्न किन्यु बृह्त समिहि तुम अमतन्त्रम दौनह ।। कहिंद सरक्रद मा बहु माहु । सफ्ट न के न कामहिंदा हु ।। मीहि रामहिंदा पह समारी। से माने जुनु गरहिने सारी।। कीड कह एएन करिय नहिंदा। सेन न कि माने प्रोत्त निहा ।। नगर रोग कर सारे सारे काम। विजाह कर किन्यु प्राता।। हताबाहार साथ माना सीरामणे रिस्नोको प्याह्म क्षांकर

चित्रकृट जानी है और वहाँ अनु के दुर्शन करनी है।

बब रपुनावतीडे वरवासकी धरिप समाप्त हो गयी है और वे कवय बौटकर जाने हैं, इस बावमें प्रवादी वस्तुकता देखिये— रहा एक दिन अवधि कर अति आरत पुरतेग । बहुँ तहुँ सोचाहूँ मारिनार इसन्तनु रामवियोग ॥ समाचार पुरवासिन्ह पोम । मर अरु नारि हरिषे ठेठे घोष ॥ जो जैसीहँ तैसेहिं ठठि पासीहँ । वाह युद्ध कोठ सेम न ठानति ॥ एक पकसन युक्तीई गार्र । तुम देखे दमानु रासर्थह ॥

श्रीराम इसमकार लोगों है हर्यके साकर्यवारे हेतु सवसनगरीमें प्यारते हैं। श्रीरामका बनते लौडकर स्वयोध्यामें साम राजकडे वियेनहीं था, यह या—च्यारे माहै सनतके विये सीर सवस्वसास प्रमाके मेमके विये । और किर उनकी श्रीस श्रीरिके सारवा है। साथ राजािसहासनगर के ये ।

द्यालु श्रीरामका स्वभाव या कि वे दूसरेके हुःखको सहन नहीं कर सकते में भीर इसी स्वभाव-वर्ग आहे भरत भीर प्रजाके हुःखको सिदानेके लिये चापने राज्यसासन स्वीकार किया या।

श्चन सीरामके प्रजापाशन-कालकी कावस्थाका कुछ वर्षांन करते हैं । महामुनि वात्मीकिजी कहते हैं—

राम राज की क्यांचा। दारीन जार गर सब सोचा॥ देश कर कपू का वीड़ी। रामकान कियाना कीड़ी। कामाम किस किस बात नितान केरनाव रोग। कामी का परिश्व करी कर केया नेता ॥ देशिय किस करण कामाम नहीं कार्युट सामा ॥

स्म स कार्र पाला होते । चार्री सरस्वेत्रित की होती॥

T's

જાહિક જારન ઘરમ અવમારોં ! ધૂરિ રહ્ય સપ્ટેફે ક્યા નહેં! રામ-મળિત-દત નદ ક્ષેર મારી ! સંક્રત પરમ વર્લિક કરિક્રોડ ક્ષ્મ-મૃત્યુ નહિં ક્વનિર્ડે વીદા! સવ ક્ષુન્દર સ્ત્ર નિરુત રહેં! નહિં વરિદ્ર ક્લેડ હસી ન ટીના! નહિં કોડ ક્યુપન રખ્યત્વે! સન્ન નિર્વે માર્મરત યુની! નર ક્ષદ નારિ પર્યુ સુન્દે કેં! સન્ન યુળવ્ય પૈઢિત સન વ્યાની! સન્ન ક્ષ્મ-માર્થ કેંપ્સ સ્ત્ર્ય મહિં ક્પ્સ સ્ત્ર્ય

अज्ञावस्त्रस्य श्रीरामको श्रवच और शवधवासिर्पेस स्टिं इत्या थी, इत्यका अगवानुको शवमी बन्ति ही राज ह जावगा । श्रीराम श्रवोच्या चहुँचनेसर पुणकविसारों है है अपने भित्र विभीषण और सुमीवादिसे कहते हैं—

सुनु कपीस अंगद संकेसा। पानन पुरी हपीर वह रेता। नवापि सन वैपुंठ बाताना। वेद-पुरान-विदित का बना। अवन्य सरिक्षिय मोर्ड्न स्ट्रोडा। वह प्रशंत औन केड हो अ ननमा मूमि मह पुरी सुहायोन। उत्तर दिश्लि वह सर्ट्न प्रति । अति त्रिय मोर्ड्ड इहकि बातो। मम बानदा पुरी सुवार !

दीनवत्सल श्रीराम

दीनको दयसुर दानि दूसरो न कोउ। जाहि दीनता कहाँ, हों देखाँ दीन होउ॥,

कारवसं वीन-जूली और कारामांके स्त्री विशे ।

मित्र क्षिण्ड नहीं मित्रवे । साथरत्याः जोग बनात् तर्गः
सवक वर्शे सुन्ती कोगांकी और ही दौरा है । देशे
दुरुश कोई कोई ही मित्रवे हैं को हैया और कार्य हैं
दुर्शा होते हों । हमारे चरित्र-नावक बीतामका तर्ग्य हैं
केवल दोम-दुर्शा कारामोंके किये ही था। देशो
व्याद राम चार्र्य हीनकारक माने कारो है जो क्या होते हैं
वार्गा होते होते हमारे-महर्गक सम्माना
वार्णावस्थाने ही कीरामका हर्ग्य स्थाना

कुनिसर्हें चाहि कठोर अति बोमत बुमुमहि वरि। चित्र समेस रहुनाव कर समुप्ति परे कहु वरि॥

बो धन-जन बखके अपूरी तरिन हैं, उनने हिर्दे वर्ग इन्हर 'कामदि बडोर' हैं, पर बीन कमाय बाजते हिर्दे वर बबतीमरे भी अधिक कोमख हैं। बाज्यकर्णी हैं श्रीसमक्त बढ़ी स्थलाद था, वे दिशी भी बाजकर्णी हैं के श्रीसमक्त बढ़ी स्थलाद था, वे दिशी भी बाजकर्णी हैं हैं धारमक्त देश सकते थे बीर न क्लिको होते हैं हैं। केती प्रकारते सब्दो प्रसम् रखते कीर हँताया करते। धेवार्ये इत्तर्य संस्थाते हारकर दूसरे यानकांको जिला होते कीर इत्तर संस्थाते हारकर दूसरे यानकांको जिला होते कीर इत्तर सत्तरी अपरुद्धे भाग्यान बालकांको भी सेती ही देखा ती, करका दिल भी जन-सन-मोहन बीतामके विना चया जिर गहीं बगता। यूनपाद गोस्तामीजी पाते हैं—

सुनि सीतापति सील सुमाउ ।

ने तर न मन तन पुरुष नपन बरु हो। वर वेहर खाउ ।।

तिशुपनते पितु मातु बन्धु शुष्ठ तेवक साबिव सखाउ ।

कहत राम-तिशु-बरन रिसोर्स खुपनेहुँ टक्यो न काउ ।।

केरत राम-तिशु-बरन रिसोर्स खुपनेहुँ टक्यो न काउ ।।

केरत राम तिशु-बरन रिसोर्स खुपनेहुँ टक्यो न काउ ।।

केरत राम तिशु-बरमेर हुएसत देह रियमत दार ।।

जानकीयराभ औरातका शीक-स्वभाव प्राच्छ किय तर्म होता, जरित प्रक्षिक क्रिये होता, जरित नेवाँमें सेमाधु नहीं साते, उत्पक्ष क्रिये-रित का हो स्वपा है। स्वप्तन्ते हो शिता, साता, साई, तु है, वाह, मन्त्रों और स्वाच कमी दिलांने औरातक युव-क्रमको समस् में बहुत्व नहीं देखा। वे सदा ही प्रका-कृत्यको समस् में बहुत्व नहीं देखा। वे सदा ही प्रका-कृत्यको हो सात्र में बहुत्व नहीं देखा। क्रिये हार और सम्माप सीताम सहा देखते रहते थे। त्रियो हार और सम्माप सीताम सहा देखते है। त्रियो हो प्रकार मी (क्रमको सम्बद्ध करेते हैं। त्रियो हो प्रकार मी (क्रमको सम्बद्ध करेते हैं। ते सीत वृत्यों स्वप्ताप सीताम सह करेते हैं की हों।

हरारमन्दर मीरामकी दीनकलवाना सार्वनीम है। हु न हो देर भीर मात्रके सरिष्कृत है थीर न व्यवहार नीर व्यक्तित्र हो। उनका सब काव, सब देश, और सार्वक प्राथकान वास्त्रल-नाव है। उनके प्रमुक्तित्र करनीय या प्रिन्तिद्धार मात्रके प्रमुक्ति के स्वत्रक्षित्र करनीय या प्राप्तिकार मात्रके प्रमुक्ति के स्वत्रक्षित्र करनीय या प्राप्तिकार मात्रके प्रमुक्ति के स्वत्रक्षित्र मार्वे भावकी।

कोसबकुमार रहुनायजीकी दीनवस्त्रकाके कुछ उदाहरख राक्तों के सम्मुल संवेषमें उपस्थित किये जाते हैं। देखिये—

दीनायान राज सनको सीरामने कैसा समावान ।
दीनायान राज सनको सीरामने कैसा समावान ।
देन परनी धरोनिता क्या कोशीतानीका स्वयस्त्र हुन भारती धरोनिता क्या कोशीतानीका स्वयस्त्र हुन भारतीय परित्रम किसा कि सीताको बढ़ी महत्व कर सकेश हुन भारतीय परित्रम संस्था होगा, कस्तर किसेंड हुनी समावान सर्थिकर नहीं होगा। हुस महत्वीयों और च्हानेसे । महाराज जनकडे इस मकारके प्रयक्ती घोषणा सुनकर जनकपुरमें बानेक राजा चापे, परन्त कोई भी इस परीवामें उत्तीय नहीं हो सके, यहाँतक कि---

न शेर्ड्यहमें देख ध्युषतीकीयि वा। उस ध्युषको कोई न सो उठा सका, और न हिला ही सका।

तमानि तमनि तनि सिव-पनु परहीं। उठे न कोटि माँति वत करहीं।। किन्हेंके कलु निवार मनमाहीं। वाप समीप महीप न जाहीं।।

तमिक परिंदे भनु भूढ़ नृष ठठै न ब्बर्टाई रुनाइ । सन्दें पार मट-बाहु-बड़ अधिक अधिक गरआर ॥ दिने न संसु-सरासन कैसे । कामी-बचन सती मन कैसे ॥

सब जुव मर बोग उपहासी। जैसे बिजु विराग सन्यासी।।
इस सबस्यामें मिपिजापतिको केसी दीन चीर झान्य दर्ग हो सबी थी, सरिक वसका विश्व सप्ताकोकन कीसिये— जुक्द हो तेनी करक अकुटनी। मेरिन चक्त मेरिन मर्ग सोने।। जब भनि कोठ माले बर मानी। भीर विदेश मही में जानी।। उक्त आस निक्र मिन बुद अहु। जिला निर्मिष्ट मेरिनाहु।। सुक्त आह निक्र मिन पुर कहु। किला निर्मिष्ट मेरिनाहु।। सुक्त आह ने किन बुद कहु। किला निर्मिष्ट मेरिनाहु।।

जनक महाराजकी पेसी दीनवाको भक्ता दीनृदल्सक कव सहन करनेवाले थे ?

'शोष-मान कड्यो सही साहित मिपिठाकी।' वी सित-वर्ष मुगासकी गाँह । तीराई राम गाँगा गोसाई।। इसमब्दर कीरामने दीन हुए जनक महाराजके शोकको इस्का कार्य-वाप तोड़ सीताको वरण कर जिया।

हुसरी काँकी देखिये ! निपाद दरित हैं, तीच जाति है, परन्तु अधवाद उसे चीभगानरहित और दीनभावपुक्त देखकर चरना सला बना खेते हैं एवं उसका बदा ही मान तथा चादर करते हैं !

हिंसारत निवाद तामस क्षु पतु-समान कम-वारी । मेटे हदय रुगाद प्रेमनस नहिं कुरु जाति विचारी ।। श्रीसुचीरकी यह बानि

नीचहुकों बरत नेह सुप्रीति मन अनुमानि।। परम अपम निषद पाँचर कीन ताकी कानि। हिसो सो टर ठाइ सुत ज्यों प्रेमको पहिचानि।। निपादको भपना सस्ता बनाकर श्रीरामने इतना श्राधिक भादर दिया कि परम ज्ञानी श्रीवशिष्ट-सदश शुनि भी उसको ग्रेसे लगाकर मिलने खरो—

प्रेम पुरुषिक केवट कहि नामू । कीन्ह दूरिते दंढ प्रनामू ॥ राम-सक्षा रिषि वरवस मेंटे । जनु महि सुटत सनेह समेटे ॥

मनुष्योंको भागानेकी तो बात ही कीन सी हैं? श्रीराममें पासर एग्न-पंचियोंको भी भागा दिया और ऐसा अपना
दिया कि जिसकी क्यों तुलना नहीं है। रामके दिये प्राचोंके बित खानेवाले भाजराज गींधके व्यंग कीजिये ! काल् कानी सीताको राजय इरफर से ता रहा है। गीमदाज जारातु जब पह खुनते हैं सो चटपट वीहकर सीताको रावयके हामसे खुनते के दिये मार्गोंमें ही उसके रखको रावयके हामसे खुनते के दिये मार्गोंमें ही उसके रखको रावयके हामसे खुनते के जिये मार्गोंमें ही उसके रखको रावयके हामसे खुनते के जिये मार्गोंमें ही उसके रखको हम से हा रावयके साथ कटायुका युद्ध होता है। 'राम कान' सहसे हुए कटायुके रोगों पंत रावया कटा बाता है भीर हमसे पायक होकर काचार कटायु कारीवापर गिर पहले हैं। अटायुकी सासमंद्राके अवसरमें रावया सीताओंको केवर बचा बाता है। हमर रावुकतपुर्व जीतास सरमय-साहित सीताकी सोत करते करते कटायुके पास गईवाके हैं। वहीं कटायुके साम शीताके व्यवहारको हेरिये---

दीन महीन दमानु निहंग पर्यो गदि सोचत सिल दुसारी । रागद दीन-दमानु कपानुकी देल दुसी कटना गह गारी ।। गीपको रोहमें रहिस कपानिति

नैन-सर्गवनमें भीर वारी। बारहिं बार सुधारिं चंत्र

नाराई बार सुकार्य केंब न्यापुरी वृदि न्यानसी सारी।।

दवात राम गीयकी चीन-दगा देख बु:खिन हो गये कौर रमको करने गीर्मे खेकर कुन दिन बीचन थारख करनेडे बिचे मार्चना करने खरे।

नरम्य देसने बीना शीवार नहीं दिया चीर करता भी हैंगें दे बद बदने बचा ---

मन्द्र नाम बान हुम लाए। मन्द्रत मुन्द्र होई धुनि गाया ॥ से मन हो पर्याचा करी १ शत है हेह नाम १ वेटिह करी ॥

सरवेदा इक्ते करिय कावा सकार दिर क्ष्य विवर्षेदो का है क्षमते कावु जीरानदी सुनिवृद्धीय सुकोमल गोदमें ही सदाके लिये शाना हो जाने है। श्रीराम कहते हैं---

परहित बस त्रिनके मनशाही । तिन्ह कहेँ बगदुर्तन कुर्र तनु तनि तात जाहु मम भागा। देउँ कहा तुम पूरवरः।

इसके बाद जटायुकी किया भगवान् स्वयं धारे हिं करते है---

अविरक भगति माँगि बर गीव गोव इतिहर। वेहि के क्रिया जयोशित नित्र कर कोन्ही ला॥ थितु जयों गोच-क्रिया करि रघुपति

अपने शाम पुरायो। पेसो प्रमु निसारि तुरुसी सठ

तू चाहत सुख गये।। इससे भी कागे बहिये, हमारे हीनक्षत है^{न्दे} इरबारमें चेतन मनुष्य और पद्य-पद्यो ही गरी, वा ^{दर्ग} को भी बही क्यान मिलता है। देखिये-

गीतम-पदी घहरूवा पतिके शापने पापत हैं गीतम-पाधममें स्थित है। दसमें न सेताई हैं है और न शीरामको हुजानेका सामप्री है। हैंग चैपता चीर जहता। द्वाड रामने हत बच्चे गें गर्दी की। तिरिकाड़ती जाते सत्य बगाने हते गीतम-प्राक्षममें इस पापाचों देखका गई कर्त विश्वादिक शुमिसे पूचने बगे—

बेद पढ़े न कहूँ दिजवृत्य बनी यह कैसी बढ़ाता में हो।

सूखे रसार तमारमंके तह, जान पर कछ बाति अनैनी ॥ कूजे नहीं खग गूँजे न शीर

ससी स्टिशे नहिं बातु सी देगी। कींत्रै कृपा कहिये मुनिनायनू

मारग गाँस शिला वह केले।

विरयासित्र शुनि वक्ता देने हैं— शीमनारी आपवा, उपरुदेह दी दें। भारतकारुद्य चाहती, इस कर्म गुर्देश

सनाय-माथ ब्लामय दीनवण्ड दवाडे वर हो हैं हैं भारतके हुने दें सीर उनके चारतका राग गर्ने हैं तंत्रसी चण धपने स्वरूपको प्राप्त हो आती है-परस्त पर पावन सोक-नसावन

प्रयट मई तप-पुंज सही ।

11

ď

#1

देसत रधुनायक जन-सुख-दायक

सनमुख होइ कर जेरि रही ।।

श्रीरामकी दयालुताका फड्रीतक वर्ण'न किया जाय र ≱ादपदक धनमें निचाते हुए श्रीराम एक जनह दक्षियोंका वेर ,≽ देखकर मुनियोंसे पुदाते हैं कि 'यह बया' है रे⊶

अहिय-समूह देखि रघुराया।। पूछा मुनिन्ह रागि अति दावा।। सुनियोंने उत्तर दिया---

नितिचर-निकर सकल मुनि खाए। सुनि रथुनाय वय जलन छाए।।

शुनियोंके दुःखको देखकर स्वामी रघुनायजीके मेजोंकें सक्त था गया, भगवान्ने उनके दुःख दूर करनेकी उसी चया प्रतिज्ञा की---

निसिचर-हीन करों मही, मुज ठठाय पन कीन्ह । सकत मुनिन्हके आग्रमन्डि, जाइ आइ सुख दीन्ड ।।

इसमकार श्रीरामके प्रतिका करनेके बाद एक समय श्रीमती सीता प्रमुको राशसींके क्थरूप हिंसाप्मक कर्मसे विरत करनेके उद्देश्यसे प्रमसे कहने खगी-'स्थामिन ! इस संसारमें कामजन्य व्यसन तीन प्रकारके होते हैं--एक मिच्याभाषय, बुसरा पर-बी-सेवन और तीसरा शत्रताके विना हिंसा करना । है रायव ! ध्यावने न तो कभी जाअतक मिच्या गुन्द उचारया किया है और न कभी भविष्यमें चाप । कर ही सकते हैं । चपमैदायक परकी-गमन-कन स्थलन भी चापमें नहीं है। चापको स्वप्नमें भी वर-कीकी वाशिजापा महीं होती । आप पिलाकी आञ्चाका पालन करनेवाले, पार्मिक और सत्यपरायण हैं। शापमें धर्म और सत्य पूर्व-स्पर्से विराजमान हैं। भार इन्द्रिय-विजयी हैं, यह बात तभी भारते हैं- परन्तु भार रायुता न होनेपर भी राजसों-है बपरूप हिंसा-कर्मको क्यों करना चाइते हैं ?' इसवकार भगवान्के प्रति श्रीसीतात्रीने प्रेम श्रीर मस्रवासे सनेक मातें कहीं। तब रशुकुलमस्य भीरामने उत्तर दिया। 'हे धर्मचे जनकारमते ! समने सभी वितकर कीर जिथ कार्ते मही हैं। सुमने स्वयं यह बात भी स्वीकार की है कि पत्रिपको घनुप इसीविये धारक करना चाहिये जिससे किसी भी चार्त्तका शब्द कभी सुनायी न दे। हे सीते ! इस एयकारस्थवासी शीव्य कार्वें भारत गर्वयंत्रे मुनियय प्रावे प्रस्ता रचक सालक सी.शरण हो गये हैं। ये कुर करें करनेवान हे राजमें वे जरापिति हो । ये हैं, स्थापन दुवी हैं। यह सब बार्जे मुनियंत्रे मुस्से कही हैं। मैंने वनते पड़ा 'क्या करना चादियें—नय मुनियंत्रें कहा कि 'से राज्य सता हो हम क्षोगोंके यक, मत, तपादि मुझामते सिक करते हैं भीर दिना ही कारण हमलोगोंकी सताते हैं। यथि हमलोग वपके बनसे हन राजसोंकी गए कर सकते हैं किन्तु ऐसा करनेवें हम क्याने वस श्रीर सामसी गिरते हैं खवाब है सार ! बाप हमारी रजा कीरिये! है सीते! हैं हस्तकार कनके दीन वकारोंकी मुनक्त मैंने मतिवा कर जी है और यस संस्ता । में विस्कातन स्वकार प्रयान हुए सहाय सकता । मैं विस्कातन स्वकारों प्रयान हम

> अस प्रमु दीनबन्धु हरि कारन-रहित क्रपाल ॥ सुरुसिदास सठ ताहि मृजु छाँबु कपट-जंजात ॥

मधुकी व्यावताका वृतरा उदाहरण हेकिये ! सुनीव कारने स्वेद्ध ज्ञाना शाबिके हारा निपृशीत हो, पारते निकल्क पहता है और नाबिके भयते कर्दों भी ज्ञाक्य न पादा ब्यव्यमुक्त पर्वतपर धामक खेता है । दूस पदावपर बाबि धाएके भयते नहीं वा सकता या। यातिने सुभीवकी सम्पत्ति तथा कराकी आंको हर किया या। यातिने सुभीवकी सम्पत्ति तथा कराकी आंको हर किया या। योता में प्रमुख महत्य करता है, सब वे उतके दु।खाँको सुनका मतिका करते हैं—

सुनु सुधाव में मारिहों बारिहीं पकहि बान । ब्रह्म-स्द्र-सरवामत गए व उबरिहिं प्रान ।।

सुभीवके दुःसते श्रीराम यहाँतक व्ययित होते हैं सिं वस दुर्दुगामस शीवको भ्रमना मित्र मानकर उसके सारे दुःसोंको चयने अपर से सेते हैं। पित्रधर्मका निक्रमय करते इस साथ कहते हैं—

यम मिनशुस होसिं हुकारी। तिन्हिंदि भिदेशस्त पताक भारी।। निकदुस शिरिन्मा एव वर्ष पता। मिनड हुस्क निक्त में समाना।। देत तेत मन संक न वर्ष पता। मिनड हुस्क रहित कर होत निक्षतिकार कर स्वतुन नेशा। कुटी कह संत मिन तुन परा।। स्वता सोच सामञ्ज सत मोरे। सब मिणि करन कार में तेरे।।

कितनी द्यालता है ? क्षीराम, बदागित दालिका क्षत्र करते हैं, उसके अरशक्का यंग्रेचित दवड देते हैं परन्तु जय बालि के बल बीर गर्वका नाश हो जाता है, तब सुरन्त ही उसी दीन कातर बालिके प्रति ऐसी दयालुटा दिलाते हैं जिसकी कोई सीमा नहीं—

सुनत राम अति कोमरु बानी। बारिन्सीस परसेउ निज पानी।।

अच्छ करो तनु राखहु प्राना ।

मित्रके प्रति जैसी इयालता है, वैसी ही शतुके प्रति भी है। श्रीतास्की रिटमें कोई भी शतु नहीं, वे सभीके तिल जन हैं। हाँ, प्रमिमानी, गर्ची, दुराचारीके क्रिये वे साचात् काल-सारहा हैं, पत्नु दोगके क्रिये तो वे पाम मधुर, रमणीय, मनमोहन चौर चति पनिष्ठ चालीच हैं।

वाग्रमें सथा दीनवस्तल एक पतित्यावन श्रीतामके रिवा और कौन हो सकता है। माहत मतुष्य कैसा भी क्यों न हो-दाजा हो या प्रति वजवान, सातु हो पा विहान, पनागीज हो या द्यावान्, कोई किनना भी कैंचा क्यों न हो, फिर भी उसकी ग्रीक और सामध्ये परिमित्त ही है। कार है-

पर्व दानि मिरोमनि साँचो

केर कॉंग्यो ऐस कॉंच्फा-बम निर्दे बहु नाच व नाच्यो स इसके सिवा यह बान भी है कि प्राह्म श्रीवडी दया भी सभी प्राह्म होती है, बच कमपर बनग्दनिकी दया होती

है। करा है∻ गुनि गुर सर सार्गश्रमुद स्पटेव ती वीसेट।

र्फ रिपी कीपी शारेर म नेपु नवन पेरे ।। इसके कमिरिक समाप्ति माहन बनकी बद्दारना किसी-

#-कियों क्यार्वको भेकर ही होती हैं । गोलामीजी कहते हैं-

रेगे के बता बतवाती ।

हिंदु केट के इंडि दौराम राज शतिस बीह शहर श रेत राज दौन हिल्हारी।

भी। केण 5 बारमनियान, जिन्नु बारन बारम्यया १६ युव बाण भीर है, बहि पुरारे क्रिमेरी भीरत जिल्ला भी भीरो हो बापने आपके जिल्ले निवासंस्थाप नहीं निरास । बच्चे पुर बाहर वा पुर बाएके जिल्ले पुरास होता है हुनका बामनियान साथ नहीं होता। इस भीरास्था सी बुक्त दिस्ताल साथ नहीं होता। इस भीरास्था सी बुक्त दिस्ताल सी है।

der wit begreife Wen ferire Limeters ह्न सबके खितिरेक्त एक पात धौर भी है, सत्तेरें खोक्कर अन्य किसीके भी सामने हाप कैनान पर कारें बात है। परन्तु अपने खामीसे मॉगनेनें स्वाफिद पें यहाँ तो खपना बैसा हाँ स्विकार है जैसा स्विक्तिकरोंन प्रथम और स्वाफीको सम्यक्तिर खीका परिकार होता है। गोस्मानिजी महाराजने कहा है—

'तोहि माँगि माँगनो न माँगनो बहानो।'

यह यात प्रयस्य है, कि मुझ्डी इसात मुझीरी की मासकर मुझ्डे दास चारे सेंसे दगातु वन बारे हैं। वर वर्गे वनका प्रयम्न कोई प्रमाय और वल नहीं रहना को हो हैं सब्द मुझ्डा है। मुझु जो चाहें, यही बारे दर्गे हैं सब्द हैं और वनका चारे तितना गीरंस भी था। वो हैं, यह सब मुझुळी हुग्या है। प्रतप्त इक्टकर कार्य प्रदित्तीय दोनवस्तव्स आनकीसहम भीराम वर्गों हैं दोकर वर्गियत होनेसे सन्नाके विसे दोनवास करी सकता है-

कोमलक्षित अति दीनद्याला। कारन वितु रषुनाय हुरायः।

मक्तवरसल श्रीराम

नाम्नासपुरा रघुको हृदये महीने, सत्यं बहाति च महानक्षिणनासम्

सस्य बदाम च मरानासकार्याः गाँक प्रयप्त रमुपुंगय निर्मरां मे, कामादिदोत्तरहितं कुढ मानसं च ॥

स्रवित्व शुवनपति भाषान् वार वपने भागे हैं हर्न मितनेची उत्तव्य उत्तवश्य देखते हैं, व्यवता वर हर्न भागोंको विश्वतिन्त्राल समागते हैं, सुव बागोंकी विश्व सुन्यके विषये वे स्वयं इस वस्ताधारमें प्रधारते हैं-

हिल्ला वान बेहुंड तिन, अन-अनके कार। जेड जेह जन कन आहर, बारन शेह तन हार। वार्यि आववानने श्रीतीनार्मे बारने बारनावा के व वार्या है कि—

> वदा बदा दि वर्तस्य स्मारिकेदी भागः। वरमुक्तनवर्धास्य तदस्यानं नृप्ताम्यदः। वर्षिकायस्य स्पृत्तं विनातम्य च दुक्ताम्। वर्षिकायस्य

'हे भारत ! जब खब धर्मकी हानि भ्रममंकी वृद्धि होती है, तब तब ही में अपने रूपको प्रकट करता हैं। साधुपुरुयोंका उदार करनेके खिये और दणित कर्म करनेवालीका नाश करनेके लिये तथा धर्मकीस्थापनाके लिये में युग-युगमें प्रकट होता हैं।' तथापि अधिक विचारनेसे भगवानके अवतरगका अस्य कारण वही मतीत होता है कि वे भवने शिय भक्तोंसे साचात् मिलनेके लिवे धौर धपनी रमयीय लीलामें उन्हें सम्मिखित करके उनकी भनोकामना पूरा करनेके लिये ही प्रकट होते हैं । बदि करें वि फिर ग्रन्यान्य कारण क्यों बसलाये गये हैं ?-सो इसके दत्तरमें यह निवेदन हैं कि श्रन्यान्य कारख भी डोने हैं पर वे सब गीय होते हैं। मुख्य कारख उसे समकता चाहिये बिसके किये क्यां चवतार भारण करनेके वातिरिक्त दसरे हपायोंसे काम ही नहीं चल सकता चीर गीख बारण वह है जिसमें इच्छा हो तो रखं भन्ने ही प्यारें चन्यया चन्यान्य उपायों से भी काम चल सकता है। यदि हम धर्मको दर करके धर्मकी स्थापना' को ही सुक्य कारण माने सो यह असहत है, क्यों कि धर्म-स्थापनके सन्य उपाय भी हैं। मगवान सपने मक और साध्यों के हारा भी यह कार्य करवा सकते हैं। प्रशें हे विनाशको सवय कारण माने तो यह भी ठीक महीं क्योंकि धपने भक्तोंको शक्ति देकर सहज ही भगवानु पह कार्य भी करा सकते हैं । इस स्वसमें इस शंकाको स्थान नहीं है कि भगवर्भक्त भगवानकी शक्ति पाकर उपर्यक्त कार्य नहीं कर सकेंगे, भगवत्-शक्तिसे तुरुद्रसे तुरुद्ध बीव भी महान्से महान् वनकर सब दुख कर सकता है धीर जायन्त समर्थं भी रुपन्न वन जा सकता है--

को चेतनकहूँ जड़ की जड़िह की चेतन्य । अस समस्य रचुनापिंड भगड़ि जीव ते कन्य ।। ताकहूँ जम बहु काम नांडें, आपर हरि अनुकूत । निंडे प्रताप बहुवानठहिं, जारि सके सक तुका। मसकहिं करिंदिसोचे सम, जनहिंगसक ने होन ।

भगवत्-कृतासे सब कुछ सम्भव है, इसमें कुछ भी धार्थपंडी बात नहीं। यह सब होते हुए बब मक्के इट्ट्यमें धपने ममुसे निस्नेत्री चाह आगृत होती हैं बीर अब उस चाहका श्वरूप ऐसा उत्तर बब बाता है—

> देह गेहकी मुखि नहीं दूर गयी बन-पीत । 'नारायण' गावत किरे प्रेय-और रसनीत ॥

भ्रेमसहित गद्दम्द् निरा, कदत न मुखसे गत । 'मारागण महत्त्व निन और न कर्ट्स सुहात ।। मनमें राजी चटच्टी कन निरम्हें श्रीराम । 'नारागण मृत्यो सभी सान पान विज्ञान ।।

इस्तप्रकारकी ध्वरणार्गे वा यह मिलनाकांशी भाग पत्त ब्लाइक होकर हृदयेगको पुकारता है, तब उसके पात किसी गतिनिधिको मेनदेसे काम नहीं पत्त सकता । इस ध्वरणार्गे भागवान्दी तमें काम नहीं पत्त सकता । इस ध्वरणार्गे भागवान्दी तमें काम कामके पह भी एक बिधियता है कि वे भागवान्दी काम कमके दर्गित कर्म हैं एति हैं, उसके विद्या उसी भागवान्दी काम कमके दर्गित कर्म हैं एति महीं होती, पार्यि वे उनमें कोई भेद नहीं मानते । इस धीताम ब्रद्धकारकाम पार्यात् हैं धीर दुर्गीयय पुनियों पता बाता है हिंक सीताम यहाँ मार्थ हैं, तब बह उनके दर्गीतार्थ ब्लाइक हों उठते हैं । सुतोष्यानी धापरेग-कुमारके वर्गासक ये धीर बनके स्थितके देशे धीरामकी वनके पार्यमार्गे बाता को धा परवान्त्र धीरायके धामनकती सदर पांचे ही

प्रमु आगमन भवण धुनि चारा। करत गरोराय आदुर चारा ॥ हे विधि श्रीनवरणु रणुराया। मोन्से सञ्चर करिहाई द्वाया।। श्रीहत अनुन मेर्गीह राम गेसाई। मिटिवाई निज सेवकडी गई।। एक बानि करनानिचानकी। सो ग्रिय जोडे गति न आनकी।।

शुतीरण युनि भगवानुके प्रेममें इतने विद्वल हो गये कि उनको धापने तब भनकी और मार्गकी भी मुख्युप वहीं रही---

निर्बंद त्रेम मान शुनि स्वानी । कहि न नाइ सो दसः मदानी ।। दिति अह विदिसि पंच नहिं सुक्षा । हो में चतेज कहाँ नहिं बृक्ता। कबहुँक निरीर बाजे पुनि आई। कबहुँक नृत्य करें गुन गाई।।

सुनीच्या सुनिको यह दशाधी । इतनेमें ही स्पुक्तमूच्या श्रीराजनी यहाँ पहुँच गये बौर चपने प्यारे मक्तकी ग्रेस-दशा पेड़की घोटसे देखने खये !

कारित प्रेम मन्ति मुनि पाई । प्रमु देशहिं तद ओट हुकाई।। सक्तव्यक्त कोशम सब सपने सकते हुए नहीं रह

कतितव प्रीति देशि रपुनी किन्दे देश्य हरन सबसीत ।। अमुको क्षपने सनके हर्श्य प्रकट होकर भी सन्तोप महीं हुचा, भतः भगवान् भवने अक्तको ध्यानमे समानेके जिपे भागे वहे---

मुनि मय माँहा अचल हो ह बेसा। पुरुक शरीर पनसन्दर्क जैसा।। तब रपुनाय निवाद करि आए। देखि दसा निज जन मन माय।।

कमलतोचन श्रीराम भुतीष्यके पास श्राकर मुनिको ध्यानसे समाने सरो ।

मुनिर्दि राम बहु माँति जगावा। जागन, व्यानजनित गुरु पावा।। सूप रूप तब राम हरावा। हदय चतुर्भुन रूप दिशावा।।

मुतिके द्दयसे अयथेशकुमार श्रीराम-स्पको इटाकर स्राप चतुर्शेश श्रीविश्युरूपमें प्रकट हो गये, सव—

मुनि अकुकाइ उठा तम केसे । विकल दौन काने मनि बिनु अँसे ॥ यहाँ श्रीसामोपासक मुसीक्याजी विज्युक्यसे सन्ताष्ट महाँ

हैं,यद्यपि श्रीराम और विष्णुमें भेद वहाँ है सथापि शतको तो द्यपने इप्सित रूपकी ही चाह रहती है—

श्रुतीच्य ग्रुनिका ध्यान ट्रूट जाता है और यह सामने भरवच श्रीसीसारामको देखकर प्रयाम करने सगते हैं—

भागे देखि राम तमु स्मामा । शीवा-अनुज शहित सुख्यामा ।। परेड कुटुट इव चरनान्दि कांगे। प्रेम मगन मुनिबर बड़मागी।।

यहाँ सुतीपण्के किये ममकान्को औरामरूपक्षे स्वयं साना ही पहला है, प्रतिनिधिकी बात तो दूर रही,सपने ही सन्यरूपते भी काम नहीं खता।

चिंद यह कहा जाय कि अगवान अक्तोंको ज्ञान प्रदान-कर ऐसी बाहसे शुक्त क्यों नहीं कर देते अथवा शुक्ति प्रदान करके उन्हें सन्तोप क्यों नहीं करा देते?

इसका बक्त बह है कि ऐसे रूप धाम धीर लीखाके उपासक भक्त धारमंत्री मोशकी चाह न सकत ही साधन करते हैं। उन्हें मुक्तिकी परवा हाँ नहीं ती यह तो केवल सपने उपासको ही चाहते हैं। ऐसे मक्तिक भावकी स्वर्थ मारात इस मकार बकताते हैं—

न पारमेष्ठपं न महेन्द्रीयच्यां न सार्वमीयां न रसायिपत्यम् । न योगिस्टोरेयुनमेनंदा मन्यार्थवासीन्छति गद्धिनाऽन्यत् ॥ गुरुमे बारमसमर्थेय बननेवासा भक्त पक मेरे सिवा

गुक्तमं बात्मसमार्थेय करतेवाचा अक्ष पुरू वह स्था इंद्राडे पदको, इरहे पदको, सार्वभीम राज्यको, गाताबके बोगासिदको, धूर्मको ओवादी वाहरा ह है को शुक्तिमं की दरहारहित हैं— 'ने प्रनाबी निरहरा और जिनको समारिके निता व्यक्ति सी समितारा नहीं 'अन्योगनांत प्रती' करती कोई भी समितारा नहीं 'अन्योगनांत प्रती' करती बारते हैं -केन्न पड़ काले त्यारे प्रदुक्ते, सो स्वत्यवात भीर साव बुख देने तालाई। पर वे साव ज्यापे केंद्रीन बातको व बाहकर त्यार्थ दालांको ही बारते हैं। इन प्राप्तीकी सो साल ही क्या है---

> 'त्रिमुननदिनांहत्तेऽप्यहुच्छस्मृति-रस्तितस्ममुराशिनर्वनृत्यत् ।

म चरति भगतस्यशासिन्दारः, स्विनिभिगाद्वमपि यः स बैणावाउमः॥ । श्रीमाणवर १२।२१५६

व्यापे निमेनके जिले भगवन्-चिन्तन होर्नेते ही त्रिक्षोकीका समझ पेडवर्ष भी प्राप्त होता हो तो सी सर्वर वरण-कमलोंका मेमी भगवन्-चिन्तनका लाग नहीं कडी

यामस्याय समस्य मध्यक्रमणि कुर्गन्त चं स्तरहै। इसी अक्तिका भाजय सेकर अक्त सारे ब्रह्मणी रिशोमिक समयानुको चएने दशमें बद केते हैं।

बतलाहुषे, इस मावधे मक्तीको मगवार हाडि वा हाँ देकर उनसे कैसे छुट सकते हैं ? ऐसे भाउकांको रचा-रिंग रिकेट हो जो उन्हें छार्च हुस्तरानेताक्रमें बाता नहीं सितिकिश्विद्धारा काम नहीं चलता। यदि कोई करें किर्म मार्काको स्ते कुछ भीक्ष्यार नहीं राजनी बारिये ? हुतती हुएँ जी उनमें क्यों होती हैं ? हीं, ठीक है, जर्में बोर इन है इच्छा नहीं होती रप्ता से क्यानी अनुसेवाओ वाद वी हो। स्तानकी बहरी वे

'मुकति निरादरि सगति कुमाने'

स्रतप्य भागानुके सपना तित्व राष्ट्र स्ट्राहरी साइक महर्ष स्वतीर्थ होनेका मुख्य कारण भागेंक सान् कर्बन,अनसे अप्यक्त सिवन तथा उनकी सेमामद हो होती। यह स्वत्यह देश स्वतान महण्य क्रमेरत समावत हो होती। यह स्वत्यह देश स्वतान महण्य क्रमेरत समावत हो होती। यह स्वत्यह देश स्वतान महण्य क्रमेरत समावत हो होती हैं। यहेक स्वत्य बतते हैं। बहुतारे शीवोंका उद्धार कर देहें हैं ते सेमेर सिवन स्वतान होता होते हैं।

वित कोई यह क्टें कि सगतान् प्रवता न सेहर ही अब मर्कोकी इप्ता हो तब तब वन्हें नृशान देकर मन्त्री हो आनेसे भी वो काम बल सकता है। इसका उठा ही है कि कहीं कहीं ऐसा भी होता है, सक मुख्योंके क्षिये वहीं हुम्म मा। परन्तु चात यह है कि सल्लाक्के सक्तम्य चनोचे ची। विधिय सम्पत्तके होते हैं पतु-उपत्रकाने उपको प्रत्रकारे हो माह कहन चाहा है स्वासन्हें साथ मुख्योहा वाहोंबाप सुनिये ! सुदुबी कहते हैं—

दानि-सिरोमनि बपानिषे, नाम कहीं स्वागठ । वर्षा तुम्हर्षि स्पान सुत, प्रमुक्तम करन हराउ ।। वेर्षि प्रीत सुने बचन अमेरे । यवमानु करनाविषि नेदे ।। आपु सरिस कोरों कहें जहें। गुर तब तबस् हिंद में जाहें।। जब अगनाद कीरास्पानिक वहाँ चतुर्धुंकरमसे सक्ट हुए, वस मी माता कीरास्पा भगवान्ती मार्थना करनी हैं कि-माता पुनि नोडी सो मार्व होडी तम्ह तम बहुच्या।।

सुनि बचन सुजाना रोदन ठाला है नातक सुरमुख 11

मक बाह्यसुरियमीको चाह देखिये—
अब जब प्रांस मानुन्तुत वाही, कन्दातु डीवल जह बयही ।।
कव जब प्रांस मानुन्तुत वाही, कन्दातु डीवल जह बयही ।।
कवनमन्त्रीतम देखी आहे, बाद चींच तहीं देखी हुआहे ।।
इंदेर मान जातक एमा, होना जुड़ केटि-एल-चाना ।।
किन-मुन्नदन निहार्य, हिम्मा कालकी व्यक्तिया ।
क्रियम वाह्य वाह्य वाह्य वीदिला, देखी कालकी वाह्य वाह्य

रुपिताई जहें जहें निर्माहें, तहें तहें संग उदाई ॥ जून-परें अजिर महें, सेव उदाद पुनि बार्ड ॥ मिकमयी रावरीजीकी भारतका भागन्द एडिये—

जब भगवान् श्रीरावरीचे जाश्रममें आये हैं, तब सबरी कहती है मेरे गुरु मत'ग ऋषि कह गये ये कि---

रामो दाशरयिर्गातः परमातमा समातनः । भागमित्यति चैकात्रभ्याननिष्ठारियरा भव ॥

सनातन परमात्मा दशरयके पुत्र शम यहाँ शार्वेने, स् पद्मप्र विज्ञारे ध्यानपरायम् होन्द्र यहाँ स्थित रह ।

यवरीजीको अनेक कालसे श्रीसामदर्गनकी लाजसा समी थी, यह प्रमु श्रीसामको खिलानेके जिले निष्य स्वादिष्ट फर्लोका संग्रह किया बरली थी—बाज यही स्वाद्यमें ससस संग्रहीन कर श्रीसामके मेंट करती है—

> बन्द मूत फर सरस कति दिए रामवहँ जानि । प्रेमसहित प्रमु साथ नागहि बार बस्तानि ॥

भगवान्त्रे श्रीशवांकि दिवे हुए फर्जीको निःसंकोष प्रेम-से खावा धीर फर्जीकी बदाई करते करते नहीं गके, प्रत्यों श्रवांनि वीतमके समुख चराने प्राय व्यान दिये, तब बीतामने वापने हामसे माताकी भाँति शवांकी क्रम्योहि संस्कर थीर उसकी कथं-निका की । शीतमकी मात-वस्यवताका कहाँतक वर्षान किया वाप ?

ह्रस्तप्रकार उनके मात्र सरोक मकारकी थाणा लगाने रहते हैं, कोई सक्य-रावके शासारत्यकों हुन्या करते हैं, तो कोई शास्त-रावकी। कोई साध्य-रावकी, तो कोई स्वार्थ-रावकी कोई शास्त-रावकी। चेट्री साधी मकाहें ममीराय पूर्य "कार्यके जिये मक्तकारत भाषान् श्रीसुन्गयजीका भारतार है। मायुक्त शास सम्माय केरल मित्रहारा ही होता है, चाडे बहा कियी भी भाषवासी हो। भाषान् श्रीयसरीके प्रति करते हैं—

कह रमुपति सुनु मानिन बाता । भानउँ परु मगतिकर नाता ।। माति पाँति कुरु पर्म बहुई । घन बरु परिजन गुन चतुरई ।। मगतिहीन नर सोहर्षि कैसे । बिनु करु मारिव देखिय जैसे ।।

अधिहारा अनुष्य अयवान् औरामका आसीय वन जाता है। देखिये, बनवासी एग्रुजाति वानरोंने घराने अधिवलसे श्रीरामके हृद्दश्यर कैसा अधिकार घर जिया। सुरू विशेषके श्रीरामके हृद्दश्यर कैसा अधिकार घर जिया। सुरू वशिषके

में सन सन्ना पुनिय मुनि मेरे । भए समर-सागर **वह मेरे ।।** भग हित टानि मनाम इब हारे । माराहुँ हे मोहि अधिक पियारे ।।

पुन्तपाद योखामीजी महाराजने कहा है-

श्रमु तस्तर कपि बारपर, ते किय श्रपु समान । तुरुसी कहूँ न रामसो साहेब सील-निवान ।। वे म्यान-शन-विमत्ततब मद-हरनि मगति न शादरी ।

वे वाह सुर-हर्कम-पराविष परत हम देखत हरी ॥ विस्तासकरि सब गास प्रीरिशी दास तव ने होइ रहे ।

बादि काम तब वितु अस तर्राई मद, नाय शोह हमराम है 11

श्ररणागत-बन्सरु श्रीराम

श्रीरामचन्द्रचरणे शनसा स्मरामि, श्रीरामचन्द्रचरणी वचसा गृणामि। श्रीरामचन्द्रचरणे शिरसा नगापि, श्रीरामचन्द्रचरणे आर्ग प्रयोगः गरपागित समल गाउनोंडी शायात है, सरका कल है मीर हम गरपागितन कल है पाम धोमडी ग्राप्ति । बाल्लघें गरपागित्वा कल महर्गा नीय है। कल करनेमें हो जगा-गरिभावती प्रमुग होंगे हैं। क्योग्डमार भारान् की-समयम्बादी शरपागा कम्मवना भुवनदिनका है, किय समय राज्याने मिस्टिंग होक्य विभीवना सीमाके काम साम राज्याने सिस्टिंग होक्य विभीवना सीमाके काम सामा है, बस समयका सीसामक सात हैन्वि-

विभीषय करने कार कतुकरों गहिल क्षीतामड़े रिजियमें काकरा-मार्गये काला है कीर सुधीताहि बातरोंकी करना परिकय देवर सर्वलोक-सरवय कीरामड़े काक्यमें से कलनेड़े निये कतुरोध करता है। यह करना है—

निवेदमत माँ प्रियं शास्त्राम महत्त्रमें । सर्वेटाक्सरक्माय विभीत्रणमुक्तियतम् ॥

'सर्व सोकोंको रास्य देनेवाले महात्मा श्रीरामचन्द्रजीको मेरे चानेकी स्वना चार दे हैं।'

विभीपयहे वयनोंको मुन भीर वसको बही प्रोइकर सुमीवादि वानर श्रीरपुनायनीको वसके मानमनकी श्वना वेते हैं। श्रीराम सब वानरोंकी सम्मति बाहते हैं इसचर सुमीव कहता है 'कानय,' श्रमुक्तेना सकतान, यह शब् विभीयय भगनी सेनामें भाषा है, मीका पाकर भगनी सेनाका माग्र वैसे ही कर देगा कैसे वस्तु कीवोंका नाग्र कर देता है। यह शहस खुरुषीर और कपटी है, अन्तर्योग हो सकता है भीर इस्तानुकर पत्रक थारण भी कर सकता है। इसका विश्वास नहीं करना चाहिये। यह शवयके गुरुषस्थमते हमारा भेदे बेने साथा है।

जानि न जाइ निसाधिर माया । कामरूप केहि कारन आया ॥ मेद रेन इमार सठ आवा । राखिय बाँधि मोहि अस माना ॥

इसको रावणका मेगा हुमा समिक्षेत । इसका विकास कमी नहीं परना चाहिये। यह पहले विश्वमा मान विका कर पीड़ेसे मौका पाकर घोला हेगा। कता इसे मन्तियों समेत मार ही बाबना चाहिये।

प्रात् करता है—'विमीचन शतुके नहींने पाता है, उत्तरा सम्देद स्वतरा करता चाहिने। व्यवस्य गाकर सह प्रशास कर सकता है। दिन-सीटका विकेशन करते बख्य स्वतर्ग कर पात्रिने। प्रियमें व्यविक दोष हो, उसको स्वतर्गना चाहिने और निसमें व्यविक शुच हो उसीका संग्रह स्वतर्गना चाहिने और निसमें व्यविक शुच हो उसीका संग्रह मनता पाहिते । बहि बारको विभागमें परि है मनित की तो त्यान में और बहिक गुन प्रति हैं। मनल करें ।

आरावात करना है---'अब वह मुद्दे मना वर्ग तब संबरण ही शहरावा मेज हुया है।'

सेन्द्र बातर करूता है—बहु ताच्चा होत गर्री अनुर बचरोंने हमारे सर समाचार पृत्ते बार्डिशीवर नार्जिद है वा कार्य-नृति, इपका सी वर्षील कि करता चारिते।

पषनकृतार श्रीहरूमार्की करते हैं-है बने ! ह मब शासींके जारा है, शनिशाती, मॉपमर्प है। धर्त में करा मन्त्रपार कूँ है बारके रिचारके मामने साना शा^{र्य} की भी मन्त्रका तुरव है। मैं लेखाने, कार्नाने गत इय भी नहीं करना । क्षेत्रत चारानुरोधने बार्गार्ट थापके करवामि निवेदन करता है। विमीववर्षे में अनाकर बसमे सबं बुतान्त बानना चाहिये। हाहा व प्रधाना भी धानुष्टित है, पर बूत मेजकर सा बाउँ इन्ह भी ठीक नहीं केंचता । विभीषय वदि कारके हता चित्रक पराध्मी और गुयवान समस्वर बाप है हो। वकी वृदिमानीका काम किया है। वदि दूर मेरक मेर की बायगी तो वह रांका करेगा और दुती भी हैं। उसकी बोखवासमें कोई दुए भार नहीं दीसता। हार् मुख मसब है इसकिये विभीषणपर सन्देह नहीं हैता है वह पूर्व होता, तो शंबागूम्य स्वस्य-विचते बार्व ह नहीं का सकता । रावयाको बलगाँवत, पाप-पापव ^{वि} बसका नारा करानेके लिये सथा राज्यकी कामनासे हा माया है। बतः बाएको विमीपयवा संग्रह स्वना वरि

हन्यान्के इन जीति, घर्म, मिछ और रहत्युक हो मनकरेते बचन सुनकर आनकीवश्चम ब्रीरामने कर्रा क्रिये बाप सबने मेरे हितके क्रिये ही परामर्थ दिया। इर प्र इण्डा सुनिये—

> मित्रमावेन संप्राप्त न स्वेतं क्यंबन । बोधा यद्यपि तस्य स्पात् सतामेतदगर्हितम् ॥ (बा॰ रा॰ ६ ११८ ३३)

नित्र-सावते काथे हुए विभीपंगुको में सकता। यदि कुछ दोष भी हो तो भी ऐसे भाग नहीं त्यागना चाहिये।यही सत्युरुगेंकी स्तुत्य सम्बर्धि

सदनस्तर सुप्रीवने फिर कहा- श्रीराम ! विशीपण दृष्ट **गा शिष्ट, पर वह राज्**स सो **है** ही । श्रापत्तिकेसमय जब ने अपने माईको त्याग दिया है तो फिर यह किसका ग नहीं कर सकेगा ? जातिवाले चौर समीपवर्चीलोग ी कभी शत्रघोंकी सहायता किया करते हैं, परन्तु अब पत्ति चाती है सब उनपर ही प्रहार काने जगते हैं, यह इन्दों सम कारखोंसे बाया दोगा । इसके सिवा शाखों-भी शब्द बनका बहुय करना दोवयुक्त बनलावा है. कि इसमें घोला ही होता है। इसप्रकार सुप्रीवने ाषान् श्रीरामके सामने घणेक युक्तियुक्त सर्व स्थित किये, श्रीरामने इन विचारपुक्त तकाँको सुन, म्ब हो सुगीवकी बढ़ी प्रशंसा की, और कहा 'मित्र ! यह इस तुष्ट ही या शिष्ट, मेरा कुछ भी घपकार नहीं कर हता, क्योंकि मैं चाहँ तो प्रश्नीपर जितने राचस, विराच, नव और यह हैं, सबका बहलीके बप्रभागसे ही विनास र पुँ। जब करोत-सरीक्षे पद्यीने भी शस्य काये शत्रका पना मास देकर सत्कार किया था, तब भवा, मैं इसका वे स्थाग कर सकता हैं ?

बदावातिपुरं दीनं याचन्तं सराणकाम्।

म हन्यादानुशंस्यायेगावि सार्चु धरताच ।।

धर्मा यादी वा एकः ऐसी हारणं नकः।

धरी यादी वा एकः ऐसी हारणं नकः।

धरी प्राण्या परित्याय दिन्तयाः इताराया।।

बेद्य स्वाद्य मोहाना कामाद्राधि न रखिः।

स्वाद स्वाद्य मोहाना कामाद्राधि न रखिः।

स्वाद स्वाद मोहाना कामाद्राधि न रखिः।

स्वाद प्रस्ता प्राण्या नाये तत् पार्च दोक्याधितम्।।

प्रस्ता प्रस्ता हारणं मार्चेक्याधिताः।

धर्मा प्रस्ता हारणं मार्चेक्याधिताः।

धर्मा प्रस्ता हारणं मार्चेक्याधिताः।

धरमा प्रस्ता स्वाद स्वादी स्वादी स्वादी स्वादी स्वादा स्वादा मार्चेक्या

(स• रा• ६।१८।२७-३१)

'हे पानत ! जब चतु दीतवासे हाय जोड्ड उत्तवकी पंचना करता हुचा प्रयाम करने जगे वो वह नूर्यंक सुदिवाका गियर भी बतकों न मारि एज हुन्यंमें पढ़ा हो, जबेंचे असा हो प्रमाद हरांके पत्तवे अरपों माना हो, तब भी कुठावात पुरव मार्य हरांके पत्तवे अरपों माना हो, तब भी कुठावात पुरव गर्यों में जुद भी पत्तव न कर जबकी रचा करें। जो पुरश मार्य, मीर या मार्य तराद मार्य हुए राजुकी कपती शक्ति के महातार एवा नहीं करता, वह पारका आगी होता है गैर मंत्रात रचकी निन्यु होती है। स्वा प्याहरेका पुरुष बदि रद्यान पाकर रचकडी धाँसिके सामने मारा जाता है तो रचकडे सब पुरुष सामनेवालेको सिवते हैं और बद हर्माको चवा बाता है। इसमकार शामनाकरी रचा न करनेमें बद्या मारी होच है बीर उनकी रहा न करता हर्मा से श्रष्ट करनेवाला, पापपण देनेवाला और यलवीर्यको नष्ट करनेवाला है।

सरनागत कहूँ वे तबहिं, निव अनहित अनुमानि । ते नर पाँवर पापमम, तिन्हहिं निठोकत हानि ॥

सन्-पुरुषेकि व्यवहारको दिखाकर शरणागतवासका मगवान् ग्रीराम अपने मतकी धर्यात् त्रियमको घोषया करते हैं—

> सङ्देव प्रपत्ताय तवास्मीति 🔏 याचते । असयं सर्वमूलेम्यो ददास्येतदृक्तं अस् ।।

'बह भेरा वत है कि जो एक बार भी भेरी शरणों भाकर 'मैं तुम्हारा हूँ' ऐसा कह मुक्ते रारणकी पाचना करता है, में उसको सर्व प्राणियोंसे निर्मय कर देता हूँ।'

मम पन सरनामत-भय-हारी ।।

कोटि विश्र-वद रूपविद्याह्न । आए सरन तजी नहिं ताहू ।। सनमुख होद जीव मोहि जबहीं । जनम कोटि अथ नासहिं तनहीं ।।

वदनन्तर भगवान् भाजा देते हैं कि-'हे सुमीव ! आनवेनं हरिश्रेष्ठ दत्तमस्थामयं मया।

आनवेनं इरिश्रेष्ठ दत्तमस्मामयं स्या। विभीषको वा मुग्रीव यदि वा रावकः स्वमम्।।

(बाब स्व ६।३८।३४)

यह ध्यक्ति विभीषवं हो चाहे स्वयं शवय हो, तुम उसको जिवा काचो, सैने उसे धभय शम है विया।

वो समीत आवा सरनाई। रसिहों ताहि प्रानकी नाई।।

श्रमुकी ह्रध्यकारकी पौरवाको जो पुरए बातता है थीर को उसपर विचार करता है वह क्यन्स स्तान सावदावी वाधकर एकतात शरदासत-स्वन्दारी समावादे हैं हो गाय चला जाता है, वह क्यों हुंचर उच्च गर्दी सरकारों । समावादेशे ग्राच्यानिसे यह सदाके जिले निर्मंग हो जाता है। सक्त सर्व हैंदियी सहाराज वापने विचानों उपदेश होते हुए करते हैं—

नार्य वे समनी रहस्यमधुना निद्वाति नापो मदि, स्थितना द्रस्यवि कृप्यति प्रमुरिति द्वारेषु येगां वचः । चारतानपद्दात माहि मधनं देशस्य विवेशितु-निरीवारिक निर्देशीसम्बद्धस्य विशेषा समित्रहस्य ॥

रे जिल ! मेंग, यदि वृ किमी सम्भाव राजा या वानी के दायाओं जाता है तो करके दावानेश्य पहुँची ही हारामन द्वारा करता है — प्रभी मिननेक्स समय नहीं है, क्वामी प्रकासने हैं ! किर दूसरे समय जाता है तो करता है कि 'क्वामी प्रकासने हैं ! किर दूसरे समय जाता है तो करता है कि 'क्वामी पोते हैं ! गुम्मकान न होगी। ! वहि विवृक्त चेरी हारपर वैड रहता है तो वह करता है कि मिन के दो, क्वामी देरेंगे तो नाराज होंगे 'स्वत्य है रिकट घट की सावचान होंगे जी नाराज होंगे 'स्वत्य है रिकट घट की सावचान हों चीर सांसादिक को मोर्ड का प्रकास के कार्य न तो हारपर पर पोक्री का सावच्या होंगे सावच्या होंगे सावच्या होंगे के सावच्या की सावच्या नाराज होंगे सावच्या का सावच्या होंगे सावच्या की सावच्या नाराज होंगे सावच्या होंगे सावच्या की सावच्या नाराज होंगे सावच्या की सावच्या का सावच्या हो सावच्या की सावच्या कर सावच्या होंगे सावच्या की सावच्या कर सावच्या हो सावच्या की सावच्या कर सावच्या हो सावच्या की सावच्या कर सावच्या की सावच

भगवान् भीरामकी भाका पाकर सुमीव और बनुमदादि भनुषर विभीषणको शमुक्ते तस्मुख से भाते हैं भीर विभीषण जब भगनान्के सम्मुख भाता है तो समग्रादकी कार-मार्थी देशकर यह जिलात् हो बाता है— बहुरि राम क्षरि-मान विशेती। रहेड कुरि रहत सर्वे भीर यह कहता हाग अनुहे वासर्वे विशे

व्यवकी माँति गिर पड्ना है— भरत शुक्रम शुक्रि मार्थे, ब्रद्ध मंदर मस्त्री । कदि कदि जारतिहरून,मात-मुक्त रहरेरा।

भगपान् भीरामधी शस्त्रागन-रूपाइना धरुले हैं मधुपाद भीगोरनामीजी धरने हैं— नाहिन और बोड सरन शबद दुवे

श्रीरापुरी सन विस्ति विस्ता।
काको सहव दरनाव सेवहबन
कादि प्रननपर श्रीते अपात।
जन-पुन कदन सन्त हुमेव परि
अवपुन कोटि निर्देशिक निर्दास।
परम प्रमान कार्या प्रमान करि
विस्तु प्रमान परित्र-करनात।

श्रीरामका प्रणत-रचा प्रण

पायार श्रीरामकी रारखागवरसकाता सुमिरेस है। जब राषकराज विभीषण भगवान् हे शरण भावा है और जब सम्मति पुत्रे बानेपर सेना-पत्रि क्षित्र कि स्थित स्थानकी राय हैता है तम भगवान् श्रीराम, नीठिक हिसाबसे सुमीयकी सम्मतिका सम्मत करते हुए अपना

मण सुनाते हैं— सक्ता ! नीति तुम नीकि विचारी । सम पन सरणागत-भग-हारी ।।

हुपके बाद निर्माण्य सादर शीतामके सामने आवा जाता है और शीताम उसकी सच्ची गरणागतियम ग्राण हो-चम इपड़ा न रहनेपर भी-उसे जहाँ जिपति बना देते हैं । केवत ग्रुंसरे ही 'अहेंग' गहीं कहते परना मा रतसन मागेप बगानाही। कहकर सपने हामते उसके राजतियकक भी कर देते हैं । ग्रुगीयको यहाँ चमा बाहत्य होता है। वह सेनापतिको हैंसियतसे सोचना है कि चमी जहांचर दिश्य तो मिली ही नहीं, पहले ही विभीपयको 'अहेंग' भीतान वहीं भारी निर्माण सपने अपर के जी है। इससे सुमीन राजनीविङ्गाववाले को ही मिलार से भीरामसे एकान्यों पूत्रवा है 'नाव | क्सिन्ये हें गरवागादिका पत्त मिला गरा, पत्तु हे साली। वीर्ण इसीमकार राचय गराय था जाय से मिला गरी। क्या बहाका राज्य वले नहीं दिया जाया। दिया करें से स्वामीक वचन केले रहेंसे और वही नहीं पिए करें तो स्वामीक समान केले होगा।' भवार हैंने सामीकक सामन सम्मकर हैंस्त हुए कहते हैं हैंने! रामका मात यही है कि वह वो कुत एकार को हैं। समेच मात यही है कि वह वो कुत एकार को हैं। सर्वे पावस्था नहीं। सहा तो विभीरयकी ही होगी, री

बावना कही जो कही सो कही, जो कही सो कही सित की क्षेत्र जातन । जो कही सो कही सित क्षेत्र जातन । जो बसकन्यस् आन मिले, जा दर्जक विसीएम, अवस् दहानन ।। मरवहि कन्यु सरोत कल्य कहें, निज बास में हैं। सिटिकान ।- पै नहिं पार्वाहें रुंक-अनास, कहाँ सरिवाद नरेस दसावन ॥

रावच रात्य नहीं झावा, उसने हो बीतासके हायसे नैसें ही सपना सीमाण समया धीर यही उसके किये चेत था। विभीपक्कों तो पढ़ बार समावसने धपना वार हो फिर कभी उसको नहीं शुलाया, ध्याप उसकी हा सुधि सेते रहे धीर उसे विरोज्योंसे बचाने थी।

भीराम-रास्वाक भीषया पुद हो रहा है, राज्य बहुत द होजर इतने जाया चोड़वा है कि जीरासका रख पह मुंके दिये तो दो रक जाता है जैसे इहाने स्टार्ग हरते वर राज्य एक केल जिमीरपारर चोड़वा है, इस सेवके गाउँ भी निभीषया मारा निक्षित है, स्टार्गिक वह प्रमोध । भाषाना, भीराम इस रहस्तको सानवे ये। क्रांकि छूटते है भीरामने सप्तार विरह साहाबा-

भावत देखि सकि अति मारी। प्रनतारत हरि विरद संभावी १। तुरत विमीरण पाछे भेता। सनभुख राम सहेठ सो सेला।।

धरणाणको आर्थिक साथ करनेवाले क्षेत्रास परावाणतः राज्य विनिद्य हैंदे देश सकते थे हैं को सब कोरते समया इंटॉक्ट सीताने करायों को ही मनताका पुक्काल रूप पता केता है चीर अपने चायको प्रकंतिमानेक रूप पता केता है चीर अपने कारायो प्रकंतिमानेक रूप पता केता है चीर से उपने स्वाप्त क्षेत्रीय कार्य सार, गोणकेमकी सारी विमासारी माणांग्र प्रकंत अपने के स्वीर्त हैं। इससिंदि माणांग्रे हारणा विभायवको शोहे कर विचा चीर मीत्रण वीरका महार महन्ते किये हाती साराये करके रायं को ही गये। प्रण्य साथा देखे उपन्या तासस्य करितानों प्रकंत को धाराय-गायों को मोगोर्थे स्वी हैं, करितान वरणोज कीर बीत होता। हैं

एक पटना कौर मुनिये। एक समय धीरामको मुनियाँ-के ह्या पर संमाप्यार निकार है के ब्राम्मियति विमीचय हिसा देगाँ के हैं है मानावर सीराम कर नहीं दूर रूके, वे विमीचयका यहा ब्रामाने और उसे बुक्तेके विमेच निकस परें। होमले कोजले विमायक सामने पुर्वे, विभीचय करिन ये। यहिं के बोमोंने सीरामको पित्रवामा कि विभीचय करिन करूर एक कोटातें, वैमीरीते क्या हुमा पहा है। शीरामके सुप्तेच्य सामग्रों-वैमीरीते क्या हुमा पहा है। शीरामके सुप्तेच्य सामग्रों-वार्यिक पुरुष मान्य प्रियोग्य मानावर्ग से सुप्त कार्या-वार्यिक पुरुष मान्य प्रियोग्य मानावर्ग से प्रकार कर्या है। विमीनवाने बही बाहर तमे पद्दिवत काक भार बाता ।
माझवानी मण्डु होते ही विभीपवाक दें यहाँ एक मान्
स एक कहम भी,बावे नहीं नद तका, माहस्याचे पारते
उत्तरी जात बन्द हो गयी। हम सोगोंने हस दुष्ट शासतको बहुत माहा-पीटा घटना हम जानिक माण किया मान्य पर्दा निकते । यह दे बोराम ! वार्ष पत्रार गये हैं, बार पत्रकार्ती राज्यावेचर हैं। हस पाणारमाका घट कर प्रमंति रक्षा कीलिके! यह सुजरूत शीराम ससमझसमें पढ़ गये।
एक मोर विभीपवाक मारी प्रमाण है भीर दूसरी कोर विभीपवा चीरामका हो एक गुलाम है। पर्दाण सीरामने माझवारों को कुल कहा को बहुत हो ज्यान है भीर वहीं रहसां की किया की समझात हरित करने की सीरामने मानवार अराम कार्य वारायांकी कर हरित करने की सीरा प्रसंत हैं, हस बावका पता भगवान् करकारी कर जमाया।

> वरं ममैव वरण महको हम्पते कथन्। हाम्बमानुर्पया रहं तथैन स मनिष्पति।। मृत्यापयाचे क्षत्र स्वामेनी रण्ड हष्पते। रामबास्यं द्विकः शुल्य विस्मवादिरमृत्रकर्।। (वयद्याण पारास्त्रकरः)

दे हिकरों ! विभोजको तो मैं सजरह राज्य और सायु दे युद्धा, जह हो मर नहीं सकता ! किर वसके मानेकी हो क्या करल हैं? वह तो मेरा मह है, अफके विधे में हरवे मर सकता हूँ ! सेवकडे प्रारापकी विभोगारी तो साजको मानिकार ही होती है। जीकर दे ऐपसे स्थानी से दरकड मात्र होता है, अन्युक्त विभीचको करके साथ होता मुख्य द्वार देवियो ! औराताके मुख्ये ऐसे वस्त्र हुता क्या माक्यमवाकी साध्यमें हुव गयो ! तिसको भीरामारे स्ट्या दिक्यान चाहते थे बहु तो सीरामार्का सेवक है थीर सेवकके विधे दक्क देवानो औरामा ही दूपर महुच्च करण चाहते हैं। चहारा ! स्वारा हो सीरामार्क स्टूची ! ऐसे स्थानोकी विशाहक स्थान किरा साध्यमने मुखी होना चाहते हैं। चलु !

माहाध उसे दरह देना भूत गये । श्रोतामके मुसमे ऐसे दश्य मुनकर माहग्योंको यह विन्ता हो गयी कि विभाग्य अन्ती सुट.जाव और सरने पर सा सके हो सम्बी बात है। वे विभाग्यको हो हु हो सक्टे

ŧŧ.

थे परणु पोडनेने क्या होता, मजहत्याहे वारने उनहीं जो गति रही हुई भी : भागपन मामानिक हरा - 'हाम ! हुग-महार बण्याने पढ़े रराता जिला नहीं है : सार बरिव महार बण्याने पढ़े रराता जिला नहीं है : सार बरिव महारे स्थानेस्थाने हायने हुये सुदानेका प्रयक्त कीजिए ।' सनतार श्रीरामने मणन प्रधान ग्रीरपति पुष्टर शिशीरवाडे विवे सीम सी गाठ गोदानका मासभित बनावाहर असे पुड़ा किया ! मासभित्रहार विद्यह होक्स जब निभीरवा मायान श्रीरामके मामने साकर मादर मायान करने सामा तब श्रीरामने बसे समामें के साकर हैंगते हुए यह दिखा

वी--'ऐमा बार्ग बसी नहीं बहंत नाहि। हिन्ते हैं दिन हैं। नहीं बार्ग बहना चाहिए। है सहमार्थीं नेवक है। अनदर दुखें माहुरीख होना चौड़ी हैं वचातु रहना चाहिये।'माहुरीख होना चौड़ी संबंधित बस्ता चाहिये जिससे जसके कासी आगाहर की साबे!

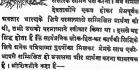
संगतान् सीराम एक बार विभीतवाडी सन्पर्धः उसे विश्वत रिका देनेडे जिये किस्से सहा मी लेहें।

श्रीरामावतारके विविध भाव श्रीर रहस्य

(तेगक-विद्या पं श्रीमनामीशंकरमा)

उद्देश्य

रागके व्यवसामें प्रधाननः हो उद्देश्य थे । प्रथम, संसार-दुःलके यथार्थ मुख कारण क्षपर्यका नारा करना और दूसरा, धर्मकी वृद्धि और स्वाके जिये एक परम शावन चरित्र-मान, व्यावसें महायुरण्का नम्ना संसारके सामने पेश करना। जब समझ



हरि ब्यापक सर्वत्र समाना । त्रेमते त्रगट होहिं मैं बाना ॥ अग-जग-मग सबरहित त्रिरामी । त्रेमते त्रमु त्रगटह त्रिमिं वागी ॥

सर-दुःखसे काता हो पर-हिलायं श्रीभगवान्की समस्ते, निरसायं होकर सखे इत्यसे खे स्वास्त्य कर्मे दिया जाता है, वही पत्यायं भगवत्केम है। हसी प्रेमके कारव भगवान्ते प्रवतार प्रदश्च किया। वृद्ध रेत्रस्थारे ' पी कि मतुत्यके परिवर्तात्कके क्रिये, दिव्य गुण, कर्में और प्रेसकंड स्थित-विकास करनेके क्रिये,—स्में मतुत्य-संवत्वका ग्रुक्य विकास करनेके क्रिये,—स्में मतुत्य-संवत्वका ग्रुक्य बच्च है—एक ऐसे बाहरों तस तरित्र जीतरा हंगे साधार, फक्ट होना था, जियको हट बीर कार्य गाँ समान मनुष्पसमान बरना चरित्र संगतन को चौर गाँ हैंचरित्र हिच्च गुर्चोंका निकास करें। हमीवित्र वित्र गाँ बचतारकी बीकार्य, मनुष्पोंके हारा हो सम्बन्ध के सम्बन्ध ही हुई, जिससे कि मनुष्य उनको चार्य गाँ महण कर सके।

जन्म

सहाराज दशरको जो झोरास-बन्नाने विशे ऐंडों तपरपा चीर इस अन्तर्स पुत्रेष्टि-च्या विशा वा, इन्हें से शारपाची समयना चादिये कि पदि बोर्ट पुरु किनी हैं? शारपाची चरने यहाँ जान-शारध करते विशे कार्या वाह तो करसको उस कार्यक्ष विशे वयुक्त वर्गा हो हैं करना चादिते।

बाल-भाव

वाल्यकालमें आयः वालक स्वतासी हो पान हैं शान्त, शुद्ध, सरल, निकपर, सत्यारी, सन्तर्श हैं भीवी होने हैं। इसीसे सालकका पवित्र स्वर्ट सर्वे विचाकर्षक हुमा करता है। पवित्र भी मुक्ते वालकोंमें मामान्यका विशेष मकरा विचान हर्ग एक्ट ईवरसावसे वनका ध्यान करतेया किली हैं साथकको उपासनाक समान ही कहा साम हुना कार्य बबर सरावारण वालकोंमें ऐसा होता तमें बतलाची है जिममें भगदान् चपने पिताकी गोदमें हैं। भरतान कारमुगुपितजी भी बालरूपके ही उपासक। । श्रीभगवानुके बादन्येपमें ही उनको विषयरपके दर्गेन हों थे। हम रुपके उपासककी विजेजकर पास सान्त, द, सरल, निरुक्टर, सपवादी, समदशी, निर्विकास चीत

द, सरल, निकार, सम्बन्धी, समदर्शी, निर्विकार और भी होना श्राहिये। इस भावका धाम श्रीश्रवोच्याजी हैं गैर इसमें बारस्वयरसकी प्रधानता है।

रघुनायजीके एक मनोहर वालस्वरूपकी उपासना श्रीरामस्वय

षु,मार्-भाष इसभावमें भगवान् श्रीरामके बहाचारी-वेपकी उपासना

ो जाती है। इसके दो भाग हैं। एक गुरु ओवसिंग्रकें तार श्रीमधोषामें दिवा झाल कार्य की शिकान्योधा तें तें इसता, गुरु श्रीविष्यमित्रकें द्वारा अवाव घरीर अस्त्यमें वेचा, झाल बरें, रामादिकी दिलान्योखा। सावानिता चीर गुरुकी कवित्रके कवित्र आसाका वेनोपका प्यांत्याकें दिले, सत्यं वावत कला प्रकारीका सावानिता चीर गुरुकी कवित्रकें सावानित विधानित्रकें ताय बाका स्वस किर विधानित्र गुरुकी धालुमें उनके सम्बन्धित

ताय जा का दवा फिर दिशामित गुरकी प्राज्ञाने उनके प्रकृष्ठी पत्र प्रोर सीता-स्वर्वसमें पुत्र भंगकर इस प्रमुक्त भक्की-मीति पातन किया। यतुरभंग करनेत्रे प्रवाह भी की-मगवादे फरने रिलाकी ब्राज्ञा रिना धीतानकीत्रीका पाविस् मस्य करना स्तीकार नहीं किया (बार २। ३५२। २५) मुख्य करना स्तीकार नहीं किया (बार २। ३५२। २५)

गश्चर ।न।

बह पास मधुर और मनोहर भाव औषिनेहर-मागर्स पहार्यय करने हे समय में झाराम होता है। हुम भावमें महावर्य-की परावादा है, तिवड़े कारण औरमायान्त्रका सीमयरूव माना है। तिवड़े कारण औरमायान्त्रका सीमयरूव माना है। इस्पारी की देशकर सारिकों क्रयम्मी करते हैं— महा मोनाम नेति कहि माना। उससे बंद बंदी होता हि बाता।

सहय विराज्य भव केंगा। बरिज हेल किले कार करेगा। कारुपाची भाग्यपाविती वारिकों करणी है— कर किसोर गुम्पानकर, स्वामकीर गुम्पाय । केंग केंगर कोंस्से, हेर्डिकेटिका स्वाम भागके बाककोंसे हेरा हैरिकेटि—

सब मिमु रहि मिस बेमबस, पासि मनेहर बाउ । वनु पुण्यदि अति हरव दिय,देखि देखि देखि आल श स्थान पर श्रीयमञान् श्रीर श्रीजानधीतीका परस्पर साक्षान् कार है, वहाँ श्रीजानश्रीतीके सर्वानिक हगीन्दर्यका वर्षो न है-जनु निपीस समित निपुनाई। निर्माप्त श्रीय कर्षे प्रपट देखाई।। गुंदरता कर्षे गुंदर कर्षे। एलिनगृह दौर निर्माण तम् जन्म गई।। श्रीवतीको देखकर श्रीयमणान्त, वरसपनीसे करोहें-

इस मात्रमें मुख्य घटना प्रप्यवादिकामें थीगिरिजाजीके

आनु विदेशींट जर्नेतिक सेमा १ तात पुनित मेरा मन रोमा । मध्येक जीवामा चपने इएका यां रा होनेके कारव इनकी शक्ति हैं । निर्मम चीर निरहंकार होना में मपूर्वक सेसा मिंक करनेले ही जस इरका दर्गन चीर तकके साथ सक्तक हो सकता हैं । वह सम्बन्ध सोतारिक सम्बन्ध रिक्षेत एक स्वकार विवाहके समान है, परम्म यह तो बीवास्मा

स्तेर परमामान्य साम्याध्यक्ष सम्यन्ध्य है, गारोरिक क्तारि मही। सार्याका विवाद भी यसार्य में यो शीवासमामेका समझ्या है। तिसमें वरको विष्णु समम कर कम्याका सर्येक उपासक्यों स्वयने इष्ट्रेयकी माणिके विषे गायग्री गणिके स्वयन्ध्यके स्वयने इष्ट्रेयकी माणिके विष् गायग्री गणिके स्वयन्ध्यके स्वयने स्वयं स्वयम्बास्य स्त्रुपकी साध्यक्षमार्थी है। इस सम्बद्धियन साध्याधिका सामिक्य स्त्रीर स्वीतानक्षीत्रीको परस कृतपायग्री साधिका सामिक्य स्त्रीर

विदेह अनकहो हम चाष्पातिक विनाहमें समस्य बोहने-बाढ़े सर्पुत ! पश्च प्रथम वस्त्री माहिले क्षित्रे विकार्याकियों मात्र करावेची भारतरण्या है। हमी मर्चार-के चनुवार कीवारकीयोंने कीमगायन्त्री माहिके क्षित्रे कीमिरिजालीक्य प्राथम कर उनचे बस्त्री माहिकी, सभी वनक्य कीरामके ताथ विशाह हुआ।

ह्म सङ्घः निर्मवा भारते वीमानात्त्रका हुत्यारुपी विशेष वर्षात्र वर्य वर्षात्र वर्षात्र वर्षात्र वर्षात्र वर्षा

परम उत्तर हुद्धा था।(बा०१। ६३ । २१ - ३०)

कगण्डे व्यवहारमें भी विवाहोत्त्वये बहुबर बानस्त्रह वटना वृत्तरी नहीं है व्योंकि विदाहमें हो बान्याचींका एकी-करण विवा बाता है। इस माध्ये बीमगवाब बारने निव

बागु भीर सररामीने परिवेतित है वर्ष सीजानसीची समानी मिय राराय आमीच शनिवर्षेने मेवित हैं । सहस्रके सम्दूर और महर दोनोंकी सेवा हो नहीं हैं 6 विचित्र गील बाग, जाना मकार राति-पार्यंना साहितेहारा व्यक्तिका समका निव्य महाह बहता है। इस प्रवार इस भावते पवित्र प्रपुर रसकी वर्गेड् सामित्याँ वर्तमान हैं । जैसे बुग्तावनका सम्योग्यव निन्ध है, शुर्गारमधै भगवान् भीहण्यापन्त सर्वदा विशवसामहै इतावनं परित्याव परमेकं म नकर्ता । सैनेकी यह मनुर मिनिया विवाहोग्यत भी विषय है, अहाँ यह बार्व, बुगल कोबी, सन्त वर्गमान रहती है। हम भावका पान बीजनक नगरी है, जनक मारी चय भी पर्तिष्ठ हिन्दू ताथ नेपाधमें है, वहाँ बाँगान थार्थित सम्बताकी बुराइमी वृष्य मनेस नहीं कर पाणी है। धीमतीतीक क्याने उस धामके चीर वन बांतके निवासी धन भी प्राया शुन्ती और स्वस्य हैं। श्रीतामीशायक्की जनमञ्जर चौर बसमें भीतिरिजातीके स्थानका वर्रात शक्ति-भावते शंदरम करना चाहिये।

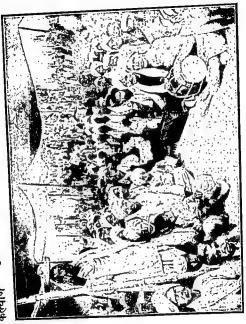
हस मधुर भावते एक परम आगुक महान्माकी किनीने शीमेगायतकी बनायातका संवाद शुना हिया, किये गुनकर यह परम स्वाइक होकर क्विन्नट गये। वहाँ कर शीमणी शीर शीमगवादने दर्गन कीर प्राचारक दिया, तभी वह बहाँ सीमगवादने दर्गन कीर प्राचारक दिया, तभी वह बहाँसे बीटे। द्वपरा जिलाके सिवानके पांत रहनेवाले क्यान्य-प्राचार कीरामाणी हुती। आवके उपायक के विकास साहर प्रीमाणी हुती। आवके उपायक के विकास साहर सीर संवां करने कारों। विवाहीसका सक्दी सामगव्की कथा कहते बीर मधुर विवाहीसका आवां किया करते। उनका भागामूर्ग सर्पित जीवन सहुत्वही विगुद्ध बीर नाह श्रीसते व्यादित सा। वह प्याचार ही मध्यानगढ़ के क्यां क्यां के व

.. तापस-माव

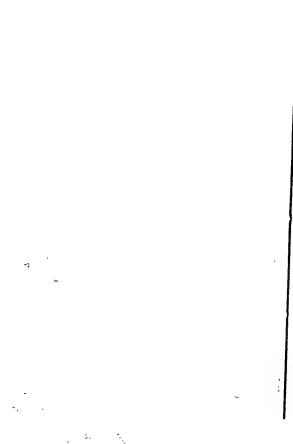
इस भावका मारम्भ वनवाजाते होता है। इसमें व्या धीर बैरापकी म्यानवा है। बीमगावादको न वो राजा-नित्रक समाचारत हुएँ हुमा धीर न वन-वासके संवादते ग्रोक। यह दोनोंमें ही सम रहे। समवा वैराव्यसे होती है। (वा॰-१,।१६। २२-२६)

धीमगवानुके वमगमनमें कैनेवीही कारवा थी, परन्तु भगवान् कर्मा कैनेवीसे नाराजनहीं हुए, बल्कि उन्होंने यही जि 'माता! में केवल कावकी काशासे ही वन का मंत्रा या । मुगर मार्गिने बस्ते श्लीकामा के को बीताका मार्गिन सुनाय कि मार्गिन है कि सार मार्गिन है कि सार मार्गिन है कि सार मार्गिन है कि से सिर्मिन के स्वाप्त के सिर्मिन स

भीमग्रान्त बाल्यकान्म राज्यवनके मुर्वे के हैं। विचासित्रतीकी साचीननामें सहाचर्यत्रमका गावन करें। कीरताचे साथ अनके बंशकी रहा करनां चीर इ^{च बन्ह}ी शुनिमनचारमा-पूर्वेड अधारा परमीरचमे बमुर को करे से मुक्तकर करियोंकी कुर धर्मकी रक्षा करना, इन हैं। भावतारकी स्थागदाना गान्यश्च होनेवांसी भाम सबनी ही है। भगवान् श्रीहम्पाचन्त्रने भी हमी नीति ^{द्रा} भारते माता-वितामे प्रमङ् ही सापार**व** गौरांस्^{त हो} गाय पराते हुए बचरून द्यार्थ किनाने बहु^{र्थ है} विनासं कर धर्मकी रचा की थी। इस दक्ष्मि सम्बन्धि दकायद कांसकर माता विवेतीने सगर्का वर्ग 🗗 करी किया । इस रकावामें वह तो बेवज निर्मित थी, बर्ग तो यह कार्य देवताओंका किया हुआ या । (बा॰ ॥।व ३०-३१) श्रीमगवान् यदि धनवासको स्वीकार व धीर श्रीसीताजी बनके विविध कटाँका पूर्व सब्दर्व ।" इरण होनेका भीषण संबद स्वीकार न करती हो कर, हर्ष रावय, कुम्भकरण कादि महावली राष्ट्रतीका वर्ष में होतां ।



कल्याण



इ राज्यासादमें कदाणि सम्मव नहीं था। (बा॰ २१३१) २ १११) इसीसे भगवान्ते श्रीकेडेबेसे कहा द्वा या— मुन्तिय तित्तु विसीय नत स्वर्ति मीडी द्वा मोद। तैदि महें चितु जाममु नहीं संग्रव जनती बोर।। माता कील्यासे भी यही कहा—

बनासन्देश समय कैन्द्रेमी करा कि "व् कानी घड़ देखेगी कि ब्रीतानण्यून वेच ताले सामय चार्ड, पात्री, हागू, सर्वे चौर कारव वृद्ध चार्डियो वनके साम बाना चार्ड्से। (वा॰ २१२०१६) मानवायूने बन्तमन क्रानेशर इस गोस्का मानवार केटच हुए, नहीं, चार्ड, वश्री चार्डिय हो चीर्-वाड, मानव, डुप, हुद्दर्शनी, गार्डिय, च्यूप चीर सार्वे चार्डिय साम क्रांड्स्स हुए, हुद्दर्शनी, गार्डिय सार्वे चार्डिय साम व्हार्ड साम क्रांड्स हुए साम क्रांड्स सार्वे चार्डिय साम व्हार्ड हिस्से सामक्री किस्ते गार्डिय से १

सी माराजीवा विजाहर बाहर शीमणवानुको हायामीय करा से उनके वहसे स्वयं वनाशां कानेवी आयंत्रा करा बेरास्या करायेच काहरा है। शीमणवानुका हम होगों मानाजोंको ही सम्बोद्धार कर देगा उससे भी उस देगाय है। समावानुके सम्बोद्धार कर देगा उससे भी उस देगाय है। समावानुके सम्बोद्धार कर देगा उससे भी उस देगाय है। समावानुके सम्बोद्धार करनेवा माराजीवा वावत करवा समावानुके कर्मावानुको माराजीवा वावत कर्मावानुको स्वाच्या सामा कर देगाय कामाराजीवा क्षावानुको माराजीवा माराजीवा माराजीवा माराजीवा माराजीवा समावानुको माराजीवा माराजीवा माराजीवा समावानुको सम्बोद्धार कर्मावीमा स्वाच्या सामा कर्मावानुको समावानुको स्वाच्या कर्मावीमा सम्बोद्धार कर्मावीमा सम्बोद्धार कर्मावीमा सम्बोद्धार कर्मावीमा सम्बोद्धार कर्मावीमा सम्बाद्धार कर्मावानुक क दास सम्बद्ध, ध्येक सांसारिक ध्यवहारिक कर्म, उनके निर्माण उनकी, कृत्युत्युत्यर ही करना जरित है. 1 क्षीमताको धोमसावको स्थान्य शाहुक्याको हिंगुत्तवर सारहर करना कर शक्यास्त्रक साम कृत्यान्य उनको निवेदन का उनको प्रशान्त्रक स्थानीको उनित है कि कर धन्तरामा क्षीमणान् को श्रद्ध स्थान उनको निवेदन करके उनको धाशानुसार समझ कर्म करें। योग्य प्रायुक्त धानुसारि सिवेदर्श । पीता कहती है कि सीमायान्य होत्र सायुक्त धानुसारि सिवेदर्श । 'ओ कर्म था सायुक्त क्षीमान्य करना करने करने क्षायुक्त धानुसारि 'ओ कर्म था सायुक्त स्थान स्थान करने क्षायुक्त धानुसारि 'ओ कर्म था सायुक्त स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान 'ओ कर्म था सायुक्त करने क्षाया स्थान स्थान स्थान 'ओ कर्म था सायुक्त हो स्था परिधानमें क्ष्तरम्य स्थान स्थान साय हु, सुची कर्म स्थानशास्त्रकार स्थान होता है।' देश समकना चाहिष्टे। यही निकास कर्मकी करीरी है।

खिरोंका राम आभूत्य शीर विशेष गुण क्रमा है, को इस गुक्का परिलग कर देवी है वह (सारी) की मार्ट है। प्रदेवकारिक कांग्रेस करीय लगान्त सीमावानुके सामने सपुर्वित प्रशाद किया और सीताको भव्या कर बावना चाहा था, हसीकिये भीमगवानुने उसको विकार करके विश्व एक्ट हिया।

ग्रेगकी परिका और उसका विशेष विकास प्रियतसके वियोगवांकों होता है, यह संयोगों कहारि संस्त कार्री । श्रीमत्तारीके देसका विकास क्षार्थक स्थानके विशेषांसे ही विकास क्षार्थित हुव्या था । श्रीसीतासीका वियोग भी होती बारण हुव्या । इसीकारक गोरियोंका भी प्रशासन क्षीरुव्य-प्यनुसे वियोग हुव्या । श्रीसास-वियोगये श्रीआपकांसीकी को सक्या हुई थी, बडी अध्यक्षेत्र सरस्वा है—

> नाम बाहरू दिवस निति, ध्यान तुम्हार क्याट । होचन नित्र पद अंत्रित, प्रान जाहि केहि बाट ॥

हर्व-प्रतिद्रके सन्दर बीधगाशाके चरण करवारे दिवा प्रान्तिक चपुर्वोको समाकर उनका प्यान करना थी। सतत माम करते करते देवना हो उपासनाकी एरमेख प्रावस्था है।

क्षीअगवान्का घपम वर्षी करावृद्धा मेरावार्य चरने हार्यो काना उदारता और चनुकाराचा रामोचन दन्दाहरण है। हमने सिद्ध है कि बीमगवान्की दृष्टिमें स्वर्भाव सह समान वे। धीरावरीजीताया-भारधी स्थान भीर आहर्ग जगांग्या भी। मिन प्रवार तथ्योजीने समान वास स्थानिकातान, याम नारित्तरी वस, प्रदोशात्र के पत्र एक श्रीमानावर्गे ही प्रवान मेम-प्याणि-ध्याप प्रयोज्या दिया था श्री तह उन्हें प्रदेश करवें किये मेमोशहार गांदद करने में हा प्रवान हती थी। इंगीनवार आह्वका विच भी गहा गर्वश केवल श्रीभागाव्यों ही गंगम रहना चाहिये शीर उनके समान क्योंचा कच्छ श्रीमागाव्यों शेश होना ब्याहिये कथा श्रीमागाव्यों एक हिन्हें जिये ही उन सबका चर्मन होना चाहिये।

वानरराज वालिने भवने छोटे माई मुमीवकी खीका. को उसके कन्या सहश थी, वसाम्बारसे सनीव नाम कर दिया, इसीसे थह भानतायी था । साततायीका कथ धर्म है। भी भगवानमें साष्ट ही कहा था कि, जनामन धर्मकी सर्वादा-का उझंपन करनेवाले दृष्ट माणियोंके संदारक शीमान भरत धर्मपूर्वक शासन करते चीर तुम्बवीने कामासक बचिमेंचीं को दयह देते हैं, मैंने भी उन्होंकी बाह्यासे तुम मर्थाता-रहिसको दण्ड दिया है। (बाक ४१९८। १४-१५) श्रीभगवान्-ने वालिये पह भी ठीक ही कहा था कि धर्मकी गति कारयन्स सूक्तम है। जो एकके लिये कर्तम्य है वही वसरोंके किये शक्तंन्य है। इदयस्य अन्तरात्मा ही धर्मकी .. सब्मताको जानते हैं (गठ ४। १८। १५)। यह भातताची-दमनका चादरों है। इतना होनेपर भी उसके प्रार्थना करने-पर दया दिलाते हुए श्रीभगवान - अपनी स्वासाविक उदारतावरा-उसे प्राय रखनेको कहते हैं । इससे बदकर क्या क्या होती ?

शतुके सहोदर आई विभीपवाको सबके मना करनेपर भी भगवान चालव देते हैं, हरना ही नहीं, उसे भिन्न बनावर वहाका राज्य भी दे राजवे हैं, वह शीभावत्तक्ती उच्यतम उदारता है। इसका परिवास भी परगोष्मा होता है। यहाँपर शीमावान्ते जरबागावको खम्म करनेकी जो पोपवाकी है यह मित-आवके महावान्य हैं। (गा-६११-६१३)

भीभगवान्ने समुद्रपर सेतु निर्माय करवा वहाँ धी-रिवनीकी स्थापना की, इसका रहस्व वह है कि जीसामो-पासक या चन्य देवोचासकको चपने हुटकी प्राप्ति ची-रिवनीकी रूपा निवा नहीं हो सकती, क्वोंकि छीरिवनी वगर्गुक है। भीमुखके बचन हैं—

÷,, .

वेरिया कारणकार्ति पुरस्ता। सेव वाद पुनि स्त्रियाः वैद्या सकार के स्वत वृति सेवरिया स्त्रीत सेवरिवेर्ड संस्थित

भवत्त्रवाह शुरूतः हमा सम्बद्धि बहर्षु बर हेरि। मैंबर संजन किया सर मार्गतः न वास हिर्देश

इस सारम-भारमें श्रीमगराज्ये कार्य स दिया कि 'जी पुरुष चर्में ही रचा और संगास सिम्म चादना है उसे स्थान और हर्रोड़ी महा सीधा में चाडिये । क्योंकि इसडे किना सहन् कार्य कर्मा सार्य हो सकते ।' इनमें चालानरिक खान ही मुन्द है नहीं । श्रीमगणन्त्रे मुनियनमें रहनेया भी श्रमुर्गेका विनास किया। इसी मीतिके प्रतुपार के जानका भी यही परियास हुमा कि मीमर्टनी र मकुत्त क्रोकर क्रावर्ममें रून कीरव पड़का रिगान क्री वड़ा । निष्डामभाउपे कर्नम्यका पातन प्रारत हो चाडिये । श्रीजानकीत्रीके मना करनेरर मी बीवारी अपुरोंका ध्यंत करनेके संकारको नहीं कोहा कीर वाहरी से बेक्ट रावयनक चमुरोंका स्त्रंम किया। .. ३६ भगरानुने राचलों हे साथ चामरचाहे शिवे ही हुई था, उनको सुटने समोटनेके जिये नहीं ! धरार्थात . शक्त-प्रदार किया गया था। इसीसे राज्यको म भेजा गया था कि सीताकी सौटा देनेपर दोर हमा दिया बायगा, परन्तु जब उसने नहीं माना, हमी वार की गयी ।

इस तापस-भावमें साथ और महत्त्रपंत्रा वार है भाषान है। श्रीभगावात्का साथ-पावन नो बर्निरंगी। दी, उनका एक्एवी-अत और महत्त्रपर्दे में दिने (ग॰-११-११२)। शास कहता है कि 'से पूर्व सत्तानायें व्यवकार्यमें सम्बोधीत , श्री-समाध्य काता है वह महाचारी हो है। किसीके साथ बासकि नहीं थी, यह भी

शीलकावातीके महाक्ष्यंके तो बना कहते हैं। हर्ग करनेके लिले प्रतिदिन श्रीसीतातीके सामने वारेत उन्होंने उनके कारवाहें सामा श्रीसी भी घरियात नहीं किया (जारावाह) । तनमें सामा भी सीताके श्राह होता श्रीसीका के कथ्मवातीके इस कार्यक्षी प्रहार प्रस्ता के पुरसको माता कादि वर्गे वही क्विवेंके कार्योको प्रोहकर कम्य किमी भी वर-क्वीका कोई भी बाह करारि हर्षि देवना चाहिये।

भीरतुमानती मेहिह महापारी थे। खंदामें सरवाहे सहस्रों सप्ताही विशंही विश्वस सोगी हुई देशने पर भी कहार सामीन सन राती सर भी विष्येत मार्ने हुना (क. १११) ११२-११३)। छोड़े रुपंत्रने सबसे विचार हो बाना भी मेपुन है। बातपुर सहस्रवेदी सिद्धिके किये सम्बद्ध ऐसा निवाद होना चाहित कि सारवाल सन्तीहे रुपंत, सामा तुरस्त का आपना चाहित हो कोन्य सी वस्ती कर्तारि विवाद सरवाह में सोहसुनानदी हुसके चाहते से ।

श्रीसीतात्री तो परम चादर्ग पविषया याँ। बन्होंने श्रीसमके पाप जानेके जिपे सेवक-भेड श्रीदन्मान्का भी श्र'स सर्वे करना नहीं जादा ।

करते वस्तिमा होरोर भी ओग्तीयारी चुनिन नहीं हुं, ज्युत स्वातीओ यह संदेशा कहावाच कि माण करने मात्वों के सरफाँ इस्तिमित्रों की राण करें (बा० ०) १० । १०-११) ऑसीयातीने सोगा कि मेरी तिक्या निवाद करने कारण ओग्ताम करीं प्रता चर रण न है मार्गे इस करनते औरची भीत्राम करीं प्रता चर रण न है मार्गे करके नियादनारी चीर दुल देशनों कोगोंक प्रति कुर्युत्वीय मार्ग नियादनी की स्वत्य स्वत्य की स्वत्य स्वत्य मार्ग करा मार्ग

इस भाषका सुरुप थाम चित्रकृट है कौर कसका ज्यान यह है—

च्यामेदाजातु बाहुं धुनदार वनुषं बद्धपद्यासनस्यः, पेत्रं वासोनसानं नवदमनद्यदंश्यपिनेत्रं प्रसक्षत् । बामाद्वाकद सीना मुसदमनदिनन्द्रांचनं नीसदायः,

नलातद्वारदीशं वयनमरम्यामण्डलं रामचन्द्रम् ॥

राज-माव

यह श्रीराम-चतुष्टय प्रयंता वजायतनका भाव है। इसमें राज्याभिषेक्के बाद राज्यसिंहासन पर खीधगवान, श्रीहनुमान्त्रीका च्यान है । व्यवश राजसिंहासनगर श्रीभगवान और बासाइमें श्रीजानकीती हैं, श्रीहनुमान्त्री चरच शेवा कर रहे हैं। श्रीलदमकर्ता दाहिनी धीर समा भी-भरतजी बाई घोरई, यही प्रधायतनका ध्यान है। श्रीभरतजीके साम बाबी धोर कन्छती है रहनेसे वह प्रश्नासन हो जाता है। इस मावदा स्थान श्रीधवीच्या है। इसमें सभी भावींका समावेश है। राज्यास्त्र होनेपर भी श्रीसगरानका स्वभाव बासकोंसे भी धारान्य कोशव और सरस्र था। उन्होंने सदा ही चादर्ग गृहस्य महाचारी-वतका पालन किया । इस भावमें श्रीभगवानुका मृत्यर वस धीर चलकारोंसे चाच्यादिन सनोहर रूप है . चारश " धर्मपत्री श्रीजानकीत्री चर्चाहिनी हैं । श्रीराम ऋषियोंसे बेहित, परम बच एवं सीनों पर चरपन्त चनुषम्या करनेवाक्षे हैं, परम साजा-बारी तीनों भाई सेवामें रत हैं। परम सुरक्षित और पूर्य रूपने सन्तुष्ट प्रजाबा एकाथिएन्पर्टे। शास्त्रमें भागत-विपतका क्टान्त समाव है। संयोध्यात्री परम रमणीय हैं, जहाँ परम प्रतीत और सील्य सरवजी वड रही हैं। श्रीव्रमुमान बादि निष्काम दास सेवामें संख्य हैं । वे सभी पवित्र बाह

बाममें श्रीसीताबी, दहने भागमें श्रीखदमय भीर सामने

ं कोचदिनके लिये श्रीभगवान दुराचारीको इच्छ देनेमें भवरप दी कटोर ये , जिससे दुराचारीका भी हिठ होता था। राजाके लिये यह राख उसकी परम होभा है।

चादर्श सामग्रियाँ यहाँ वर्षमान हैं।

क्षियों के सारोत्यको रक्षामें कभी कोई बाचा न धारे, इसके विश्वे मित्याययाद्य भी भारते तती आंतोतानीका लागा कीर सत्यकी रक्षाके दिये नेवा-स्वायन् भीतक्षमार्थाके लागवा वरसोत्रजन उदाहाय है। महत्यत्रे, स्वाग और सत्यका पाजन महत्त्वत्वे हैं। प्रत्यत्वे भीभगगार्था ओव्हित्यार्थं यह करणा और तर्यस्थ मत्यका ध्यवस्थत् करणा द्वा भी वैशास्त्रवे भीर्यंच हैं।

भगवान् शीरामके चार्क्य वीवनसे इम सबको खाम उहाना चाहवे।

रांगांयणका रहस्य

(नेयक-स्वामीनी मीशिवानन्दनी)



मायणका श्रद्धण है—मनको कराने करके जीवस्मुक्ति बाह करना । श्रद्धाके दरागनन राज्यणके बचका तालाने है— इस बुजुक्तियोंका नाश करना । थे बुजुक्तियों निस्मुलिखन है—

१ काम, २ क्रोच, १ खोम, ४ मोड, १ मर, ६ माप्तर्थ, ७ वृत्म,

पार्योमें श्रीसीताजीको 'सन', श्रीरामको 'सझ', श्री-चनुमान्त्रीको 'सल्सझ' श्रीर श्रीभरतजीको 'स्वाग' समस्रना चाहिये।

सीताजीके प्रपने पति श्रीशामजीसे मिजनेका धारणाशिक धर्म 'भनका महामें खय कर देना' है। यह उसी समय सम्भव है जब कि हम शामों प्रकाम थिए होकर उनका धनवरत प्यान करें। यही शामायाको गृह शिका है।

े वित्तकी पूर्वं प्कामता एवं छद साविक भावनासे हो भ्रप्तरवाले राम (रा 🕂 म) मन्त्रका सर्वदा जाप करनेसे मत वरामें होता है। शवनन्तर समाधिनिष्टा सर्थात् सर्व-भ्यापक रामके साथ तन्मयता हो जाती है । फिर विचारक समा विश्वार्य, प्याता तथा ध्येय, पूजक तथा पूज्य, उपासक संबा उपास्य सभी मिलकर एक हो जाते हैं। मन श्रीरामसे पूर्व हो जाता है। वह 'अमर-कीट-न्याय' के अनुसार संदाकार, तह्रप, तम्मव, तदीय पूर्व तस्त्वीन ही जाता है। · ' यह प्रसिद्ध हैं कि तुम बैसा विचार करोगे वैसे ही बन बाभोगे । मन जिस बस्तुपर चिषक प्याम रखता है वह वैसा ही चन आता है। रामके प्यानसे मन रामके साथ पृकीमावको प्राप्त हो बाता है। उसकी हुण्डा कगदुत्पत्ति कर्ता समकी विरचेन्छामें विजीन हो जाती है। वस समय जीवसका जोप हो जाता है। बैसे कीट अमरके साथ रहने एवं उसका सतत ध्यान करने-से धमरके रूपमें परिवाद हो जाता है, ठीक वैसे हो, मन भी सर्वेदा भीरामका ध्यान करनेसे रामरूप बन जाता है।

यह दो घसरोंका राम-मन्त्र सब मन्त्रोंमें सर्वोक्तर ै! इसके दो कारण हैं। राममन्त्रकी रचना पण्यापर महाबर-मन्त्रोंके संपटनसे हुई है। 'राग ग्रस्ट 'के नमो 'नाराववाय' से नमा 'म' रुन 'के म विगाय' में निया गया है। सार यह मार दिन्म है। मान निना पूर्व है। सार यह मार दिन्म है। मान निना पूर्व होता है सम्मेन बहुत होते हैं हमारे सरसामायुक्त चिक्की माराव गुकाना है। कर्ने हमारे सरसामायुक्त चिक्की माराव गुकाना है। कर्ने हमारे क्या क्या सीराम-मान है नाराव मन बारा के साराव कर राज मो हो मारा है। कर्ने क्या हसाम में सम्म सह वानुसांकों होतका है। कर्ने क्या एक सीरामाने ही पारियुक्त' हो बात है। कर्ने क्या एक सीरामाने ही परियुक्त' हो बात है। कर्ने क्या परकास। बदलक मानका सिन्म है, वचनव दनों से परकास। बदलक मानका सिन्म है, वचनव दनों से परकास। बदलक सनका सिन्म है, वचनव वनों से

मन्त्रः आपके समय समक्यसे ग्रजींकी के कारण ज्यानमें अपके क्यिशान देवताका क्रामन होती संस्कारके बदासे मन्त्रींकी शतियाँ उत्पन्न होती हैं।

सन्यमें पासकारपूर्ण तेज प्रयवा छोड होते हैं।
पक्ष विरोह विचार-वाराको सवाहित कर सार्यक्र कर्ण
परिवर्तव कर देता है। सन्य-आपने ताकव दण्ड कर्म
क्ष्मानका (Rhythmical Vibrations) में
होता है और इस्तिके हारा पाककोगीर जन्म है
एक्स्य निवसित केता है। यदी प्रयाद्ध व्यक्ति है
पाइन्ह होनेवाके सनकी गरिका भी करोच हार्गि सित समय साधनास्त्रिक प्रयू प्रवा कर्मकर्म पावक हार्यक्रियों कर समय प्रयाद्ध कर्मकर्म पावक प्रयाद करती है। जिस समय मन्य-वेजन हिं
विज्ञ समुव करती है। जिस समय मन्य-वेजन हिं
विज्ञ व्यक प्रयाद करती है। जिस समय मन्य-वेजन हिं
विज्ञ व्यक प्रयाद करती है। जिस समय मन्य-वेजन हिं
विज्ञ व्यक्त प्रयाद करती है। जिस समय मन्य-वेजन हिं
विज्ञ व्यक्त प्रयाद करती है। जिस समय मन्य-वेजन हिं
विज्ञ व्यक्त प्रयाद करती है।

राम-मन्त्रका जय सीन प्रकारका है, (1) हार है (२) उपाद्य और (३) ओरसे उचारखपूर्वक। खरेशा उपाद्य जय हजाराज्या तथा मानसिक जप क्रीति, खरेशा उपाद्य जय हजाराज्या तथा मानसिक जप क्रीति, खरेशा उपाद्य जय हजाराज्या तथा मानसिक जप क्रीति, द्दस किंतुगर्भे हट एवं राज्योगका मानास मानास मानास मानास कावन्त गरित है। वेसल एक प्रिकार मार्ग है। इसके दिन सर्वेणा एयुक है और यहां सरल भी है। इसके हुं इसके सर्वेण एयुक है। माना स्वाप्त प्राप्त स्वाप्त मानास हुं इसके हैं। एयुक है। मानास पूर्व उत्तम गुरुपा अलेक मानास हुं इसके है। एयुक्ता है। यह बहुत सुस्थित मानां भी है। स्वाप्त समय तिक पूर्वत्या परिकारसभाको माना से वार्ती है। उत्त समय तिक पूर्वत्या परिकारसभाको माना से वार्ती है, उस सम्बन्ध हात सपने भाग हो भा ताता है। मानास हुं उपाय स्वाप्त भा त्या स्वाप्त मानास प्राप्त भा त्या स्वाप्त मानास प्राप्त मानास स्वाप्त मानास स्वाप्त है। मानास्वाप्त स्वाप्त राम-नाम संकीर्तनङ

राम राम राम राम राम राम राम रामने। राम राम राम राम राम राम रामने।। भाषव गोर्वन्द हरि कैशव हरि नारने।

नाद-गीत वेद-मन्त्र राम राम रामने ॥

बहाँपर राम-सकोंके संग्रके विश्वमं कुछ कहना प्रमासीस्त्र महोगा । सलसे मतुराके कार्यक्रमको उत्तर देता है। इतीके हारा विश्व संस्कार सारिक संस्कारोंके स्थानें परिपर्वेत हो बात हैं तथा सतुराक्ष्टे कुष्मों सारिक कारानामां को पृथ्विके काराव उसमें रह मिलका सामान्य हो जाता है। इतमें सालुक्या के सासारिक म्हणिको बदल देनेको कारुपुत कर्कि है। गोरनामी सुक्तीहासजीने भी कहा है— चित्त सर्वेत निकेद न देहें। रामका मृत्यु हुकतन सोई।।

कोर्वनको यह धुन मदास-प्रान्तेकी है। केसक महोदय
 मदास है। इसीसे यह किसो गया है। सम्पादक

श्रीरामचन्द्रजीका श्रश्वमेघ-यज्ञ श्रीर उसका महत्त्व ।

(लेसऊ—डा • भार • शाम शास्त्रीजो पम • ए०, पी एच० डी ०, मैसोर)

AT .

क्षण, क्षत्रिय पूर्व वैरागेंके सिवे जिल जिल क्ष्मेंचाँके पासल करणेका कार्येश दिया गया है जल सप्तमें विद्याके प्रसाद वैदिक पश्चका सहस्व स्टब्से प्रपाद वैदिक पश्चका सहस्व स्टब्से प्रपाद है। चत्रियों किये तस्त्रिय, प्रथमेश स्त्या विश्वतित्-त्व तीलों सञ्जीका

श्री श्री श्री विश्व ित् - इत तीर्गे वहाँ का प्रता सबसे परिक सहस्र स्वता है। श्री वहा देखा सुवा बाता है कि वेदांकी रिफार्म विश्वास तथा आर्थान राजामीं के कार्यका स्वतुत्तर करते के बारण कीतामक्व उत्तीते भी उपर्युष्ट सीन महासिंस , सबसेय यह किया था।

यदी यह प्रमाणकार है कि 'श्रीरामकार सोने प्रकार पण्डा भनुवार क्यों किया है उनका उद्देश सर्वको प्राप्त कर बहु कि विचान मुख्येंका प्राप्त करना या वा भारती प्रमाला हिंद-पित्यन प्रयास स्वाचारक गतुर्वाके किये पृक्ष माहासे उपस्थितकर उन्हें क्योरपार 'साइस करान पार्टी

इनमें स्वयं-प्राप्तिका उद्देश्य हो सम्भव नहीं, क्योंकि दस समय श्रवितवा कर्मकी अपेचा उपनिपत्रीक सामकायह-को सधिक महरत देते थे । महर्षि भरहात,गौतम तथा सन्य विशिष्ट साल कोगोंके बीवनसे यह ज्ञात होता है 🛍 वे बैटिक बजोंके चत्रशानकी धरेचा तपस्थामें अधिक स्त रहते थे। श्रीरामचन्द्रजीने किप्किमा श्रीर संका जाते समय आर्गमें ऐसे चनेक साध्योंका संग किया था और स्वयं भी वे उपनिषदोंकी शिचासे पूर्व परिचित थे। उपनिवदोंकी शिका बहुबा करनेमें घसमये स्रोगोंके सामने एक भाद्यें उपस्थित कर उन्हें कर्ममें प्रवृत्त करना भी व्यव्य उद्येश्य नहीं हो सकता । देला होता तो बहत्रम्य-साध्य श्रमधेव न करके उन्होंने चन्यान्य साधारण कर्मीका अनुष्टान किया होता। अतः यही सिद्ध होता है कि भीरामने सधमेश-यज्ञका चतुरात भाषनी स्थितिके उपयुक्त धूर्व विशेषतः अञ्चले हित-सायनार्थे किया। इस बनुद्यनके द्वारा कार्थिक धान्युदयस्य प्रवाहित करना ही प्रवीत होता है। प्रजाहां उद्यति एवं शत स्पष्टतः हो षातांगर निर्मार हैं-(1) खनुहुज बानु तथा (२) उपार्नन करनेके किये धायरथक सामन । यन करनेका विचार हुन होनों विपयोंको मान करना है। तथा समय पह दिरशाम किया जाता था कि सामारण करनीय बेहनाओंको सनाप्र करनेसे धानुरक बातुकी मानि हो जाती हैं। हुनके धानिशिक सकते होता सन्तर्गत, प्रास्कार पूर्व नानके क्यों समझ्यों, सीनिकों, ब्यांतियों समा विच्छोंको सनुर पन मिल्ल जाता था, निरार्गते थे पनकी हिंदि हर राक्ने थे।

उपमु^{*}क विषयकी प्र्यंतया पुष्टि उन निवमोंसे हो आगी है जो कि कारय वर्शोंके सस्पादनके क्रिये बनाये गये हैं। चेदमें तीन प्रकारके कमोंका उहाेरर है। (१) निन्यकर्म-इसमें अर्थ-प्ययकी कोई बात नहीं है। (२) नैमितिक कर्म-इसमें थो हेरे धनकी चायस्यकता पदनी है। (३) काम्य-कमै-इसमें सोने एवं चाँदीका न्यय बहुत होता है। मनुके धनुसार तीनों उच वर्षोंको धपने पूर्व धपने कुटुम्बके भरय-पोपयके निमित्त सत्यक्प धन रखकर सपनी स्थितिके धनुसार शेप वृज्यसे बहुन्ययसान्य यज्ञोंका धनुद्यम करना बावरयक है। वृद्धि वे लोग अपने भरण-पोपण्यसे बचे हुए स्थिक हम्यको बजानुष्टान सथवा सन्य पुरुष-कार्योमें नहीं व्यव करते तो राजाका यह क्रमंत्व समका जाता था कि वह उनके धनशिष्ट द्रम्यको वृज्त कर उन खोगोंको दे दे तो पत्त सथवा सन्य प्रस्यकार्यं करनेडे योध्य हैं। निम्नवर्याके लोगोंका सञ्चित धन भी, जिसका किसी पुरुष-कार्यके निमित्त उपयोग नहीं होता था, अन्त कर लिया जाता था और वह परोपकारके प्रययकार्यमें खगा दिया जाता था। यह नियम प्रजाके जिये ही नहीं था, वल्कि राजा भी इस नियमके बन्धनसे मुक्त नहीं समक्षा बाता था । राजाका यह धर्म होता था कि वह किसी धर्जनशील कर्म अथवा शतुओंपर विजयपासिद्वारा धन संग्रह नरके बज्ञानुष्टान या जन्य पुरव-कार्योमं उसे क्षमा दे। कालिदासने रह्यवंशके नृतीय सर्गमें इस विषयका बढ़ा ही विशद वर्ग न करते हुए कहा 🕏 🖺 दिलीप-पुत्र महाराजा रधुने विश्वजित्-यज्ञमें राजमवन-में चपने उपयोगके लिये कुछ मिटीके बर्तनोंको छोड़कर शेष सोमा चाँदी धादि सर्वस्य दान दे दिया वा। इस े . रष्टु सर्वया धनहीन हो गये तब उनके पास एक . महत्त्वारी चपने गुरको दविका देनेके ेथे। कहा आता है कि ऐसी अवस्थामें

े समाष्ट करनेके बिये धनपति

क्षेत्रमे यन प्राप्त किया या । मार्गांत्र र्व विद्यार्थियोमें यह बात दिशी नहीं है कि कात रचिता महर्गि पत्रशक्तिके समर्गेत राग वर्षे स्वामेत्र-व्याप्त दिला क्षा किम्में उन्होंने न्व र स्वामेत्रोके निवसानुस्तार समझ ब्राप्टेन सहत वर्ष्य निवस्य कर दिला या ।

विश्वस्य कर दिया था।

वै किन्तु वाक्ष्ममें सो यह एक पार्मिक ि मार्निक स्थापिक स्थापिक

माचीन भारतमें इमें सदाचारपूर्ण (विभिन्न बादर्श मिलते हैं। मीमांसकाय करते हैं सदाचारते दपार्जन किये हुए घनहारा वह आवरयकताके सम्बन्धमें वैदिक बाजाका पावन सना है का धर्म है। उनके मतानुसार बाजा ही धर्म बहुखाता है। कार्योमें बैदिक चाजा और सामाजिक कार्योमें सार माला या नियम ही उपयुक्त हैं। वैदिक प्रत्यों जीविक उपदेशों प्रवं खेलोंमें जिस वार्यके जिये बारा गयी हो, उसीको धर्म समझना चाहिये। इसके ब्लुन्त मनुष्य वेदोक्त रुपदेश सथवा अपनी वातिकी रीहिन अनुसार कार्य करता है वह वैतिक मर्यात्राके भीता है। इस नियमके चनुसार एक बुद्धिमान् पुरुष मनमाना व कमाकर अपनी इच्छातुसार घामिक एवं पुरवहे करी व्यव कर सकता है। इसीलिये स्मृतिकारीने वर बनानेकी बावरयकता समस्री कि प्रत्येक मनुष्यत्री पास बतना हो घन रखना चाहिये को तीन वर्ष है अपने एवं कुदुस्वके भरण-योषणके लिये पर्यात हो। व्यधिक रखना न्याय-विरुद्ध था । कुछ रमृतियाम हो वरेंकी जगह तीन सहीनेकी ही सर्वाध बतलायी है। नियमको सम्पवहारिक समारकर भीमद्रगाद्रीता '

त्य प्रश्वोंमें निकास मावसे पासिक तथा खेरिक कार्य प्रतेके विये बाजा थी गयी है। मनुष्यको कर्म कारवा प्रता चाहिए किन्तु करना पाहिए फवाके कामनाको पास कर। सराचारपूर्व मिनव्यियेताको एक प्याक्या मीमदागवतके ७ में शक्त्यके चौराई कायायमें की गयी १। वहीं माराज मुनिष्ठिर पूर्व धीमाहरकोवा संवाद है।

धीनारदजीने कहा है कि मैं जिस सिद्धान्त (सद्धा-बार-पूर्व मितव्यविता) के सम्बन्धमें तुमसे कहता हूँ यह प्रजात ऋषिणे प्राचीन काजमें भक्त म्ह्वाद्को बतलावा था। सेवाह इसरकार है—

गुभिडिर-हे वेबर्षि ! मुन्ने उस पथका निर्देश कीजिये जिसको काभि कजागरने मेरी सदश गृहस्थके कठाँग्योंसे कनभिक्त मतुष्यको उक्षपदकी मानिके निकित्त बतलावा है।

> गृहस्य पतां पदसी विधिनाः मन माजसाः। माति देवन्त्रमे । मूहि भारते। गृहमूहसीः॥ (मानवन कारपार)

नारद-हे राजन् ! मार्चक गृहस्थको अभु भाराखणकी प्रमासको निर्दे स्थाप किसी भी फाउकी हुएवा न सा-कर मार्गियों की सेवा करनी चारित । धानोधार्जनके निरिश्त कार्य करते हुए मार्चक सञ्जयको सम्बन्ध स्थाप चारित के करते उत्तरा ही पत्र चाने प्रमास स्थाप करित है जितना उसको उदा-चृत्तिको किसे पर्याप हो। बो हुससे कारिक चन प्रेतिको हुएवा स्थाप करा किस कार्यक

'अभिके योऽभिमन्येत स स्त्रेनो रण्डमहीत।'

इससे यह सिद्ध होता है 🎏 आचील हिन्दू समस खौरिक कर्म परने स्वार्थ हे तिये न करडे देवल समाज-हिनडे देखसे ही दिया करते थे :

सदाचारपूर्व" मितम्पविवाके बागनेत्राक्षे बहैतवादियों-ो दिश्वे संसार तथा सांसारिक कार्योका संन्यास ही सवये न्दृष्ट धर्मे हैं। सैनों सथा बौदोंने भी संन्यासको ही अनुष्यका संप्रधान करिय बतहाया है।

पवि किसी मनुष्यको इसपकारकी शिकान मिळी हो जेसके कारच वह कुमार्गकी शोह बाकपित हुए विना ही अपने

यन प्यंद्रिम्योंको कामें रखकर संसारका स्थान कर सके, हो बद्द प्यादेशका हो था रह्न, उसे खरने कर्मोक एक समान के दिवार्ण उक्तर्य कर देन पासिन । प्राचीन भारतक सन्त हावा ससूद पुरुष घषना संक्षित एन, कर्मके इसी सिद्धान्तके अनुसार, च्छानुष्ठान एवं क्रन्यान्य पुष्य-कार्योमें झामाय करते थे।

समवान् रास्तपन्दानि बद्धाने बौटकर देवा कि सापु काता सन्तक सितन्यवितायुक्त राज्यक्त्यसे रामकीय कोष यससे पूर्व है, वय उन्होंने उस सितित धनको घरने सुसके निभिक्त वर्ष करने यावता प्रत्यापुरूष हुटा देनेकी प्रपेष एक वैद्विक वज्रका स्वनुद्धान कर कांग्री उसमां कर देना उचित समस्त्रा । उनके याजुद्धानका उर रण केवल बोगांके सामने खाल-त्यागका एक जीजा-जागता साहती रखना तथा निकास करंके सिद्धान्यमं अपना पूर्व विधास मक्ट

कोर्लोकी विभिन्न क्रियाओंको निर्माणकरमें बजाने त्राव्येक व्यक्तिनी नीतिकराधी साम्बर्गने विश्वे भारता वै-के प्राचीन क्रमितिनी नीति निर्माणी रचना की यी पी वैदिक स्वयवा सामानिक प्राञ्चके स्रमुख्य कर्मे (२) निकास भागके किये वार्वेवासे कर्म, चीर (३) कर्म पूर्व संसार केरोक स्वारा न

इस महारहे सहाचारहे निषम होगाँहे धारिक एवं राजनैतिक जीवनको ऐसे साँचेमें बाल देते ये जिसमें मञ्जू-आतिका करनावा दोता था । मनहज्ञास्ता ही इन निषमाँका तथा था और किसी भी मनुष्पको धराने आमितक पूर्व गारितिक मुन्तोंके जिये ग्राय-व्यय करनेकी ११९७ नाती थी।

वातः शीरामचन्त्रीने जिस अवनेष पन्नवा व्यनुशा किया, वर प्रकड्गण्य-सामण वास्तिक कार्य या, जिसका व्यनुशान किसी स्वापंके विश्वे नहीं वान्ति सर्व-सामायार्थे कल्यायार्थे विधा गया था। इसियकार्थे दुन्ती निकास कल्यायार्थे विधा गया था। इसियकार्थे दुन्ति। विशास कर्मों अभावने जन्मेंने शार्वाच्या पर्यक्षात्र क्यार्थ्य वर्णसाम ये । जनका बीतन देशामों तथा मनुजांडी मकाहि विश्वे या, पराने विश्व सही।

रामायणमें श्रादर्श गृहस्थ

(लेखक-महामहोपाध्याय पं॰ शीप्रमवनावजी सर्वभूपण)



सा-राव्यकी साम्यक् वणावित्र किये विना इस संसारमें कोई भी सामाजिक मीत क्षीत कारणायिक कीयनमें स्थित कीर उनसे नई कर सकता। यह सिद्धान्त क्षेत्रे ध्वानके क्षिये कारवक्तीच सत्य है, जातिके जिये भी धीते ही कार्युष्ठ-वीय जात्ववस्थान साम्य है। स्वानिक वीय जात्ववस्थान साम्य है। स्वानिक

भौर जातिके इत भागा-स्वरूपको धनुसृति सामकल मारतमें कमराः चीयादपि चीयतर होती चली जा रही है और इसीठे परियामस्यरूप चाज इस चपनेको अलाकर, 'इमारे चालाका स्वरूप क्या है हिमारी जीवनी-शक्ति कहाँ है श्रीर हमारे जीवन-संप्राममें विजय एवं भी प्राप्त करनेका असाधारण साधन क्या है है इन बातोंकी खोजके जिमे हम पात्राख सम्पताका भनुकरण करनेके मिमित्त व्याकुल होकर भटक रहे हैं, पत्-पदपर व्यर्थसंकल्प होकर देश विदेशमें अपमानित कौर जान्वित हो रहे हैं। जीवन भारकप हो रहा है, चीर मोहमयी चाराका चीख प्रदारा भी क्रमशः चन्धकारके रूपी परियात होता जा रहा है। इस सर्वतोमुकी विपत्तिके करात कवलसे छूटनेका जो सर्वप्रधान साधन है उसीका षाम है 'रामायण'। सनातनधर्मी हिन्द्के धारमस्वरूपको पहचाननेके लिये प्रत्येक हिन्दुको रामायणका पाठ करना ही होगा। वेद, श्रीत, गृहा श्रीर धर्मसूत्र, महाभारत. प्रराण, तन्त्र, प्योतिय, काय्य धीर नाटक धादिमें जिसका विस्तार है, न्याय, वैशेषिक, सांख्य, सीमांसा श्रीर वेदान्तमें जिसकी चत्यन्त कठिनतासे समक्त्रों भानेवाले पारिमापिक शन्दोंके द्वारा सलोचना की गयी है,हिन्द्-धर्मके उसी भूमात्म क्षत्रको सरज भाषामें विविध रसोंकी सहायतासे सबके मनःपायको प्रावितकर, जीवनके अनुभवोंके साथ मिश्रित-कर थीर मानन्दमय चास्वादनके योग्य बनाकर शमायख हिन्दुचोंके वातीय कीवनके संगठनका सर्वेत्रधान साधन बन गयी है। यह रामायण ही हमारे विश्वञ्चल और उद्देश्यहीन धातीयजीवनको फिरसे संगठित करेगी। धही धीर यही चारा चात्र भी देशके सनातनघर्मी े उनके गन्तप्य-पयमें पूर्व सहायता दे रही है।

मेरा इड विधान है कि भरित्यन्में वह विधान है समन्त्र संगठन-शक्तियोंका केन्द्र-स्थान कोगा।

गृहरूप-जीवन ही जातिके इदलीकि भीर गर चन्युद्रपद्मा चनिदार्थं साधन है। हम गुरू^{मार्थ} धर्मके अपर स्थापना करना और विशाचित्रीके कराल गालसे मुक्तार इसकी देवा कि निसमे घर घरमें विवेक,चाया-त्याग,प्रसार, म कर्तम्यपरायवानाके सचय सुधामानरकी जाय । सडर्पि बारमीकि-प्रयोत रामापणका मूर्व यही है। इस उद्देशकी सिद्धिके बिये निकर्ता चार्शकी बढ़ी भारी द्यायरयकता थी। मर्पहा मा भगवान् श्रीरामचन्त्र भारतीय बादराँमें सर्विशोनी अतपुर आदिकवि महर्पि बाल्मीकिने उन्होंको कर कवि-करपनाके सर्वोच भौर जिस महाकान्य रामायवाकी श्वना की है, उसकी जगत्में चन्यत्र कहीं नहीं मिल सक्ती। सारे ि ६ अनेक मुगाँसे विद्वान, सामुझाँका यही स्थिर निहान चौर यह अस्वीकार भी नहीं किया वा सकता नि सिद्धान्तकी प्रतिष्टा अखवड सत्यके द्वाचारार हुई है।

दिन्तुका युद्वाका सामान्य, सरवता, लाग, ग्रां परता और विकामक सीजा-निकेत है। हुए बानां स्वकतायर ही सम्बचर, बानामक और संवातकी एं स्वकतियत है इसके निम्पतित हुए बामान्यी कार्यों ही येण तीनों साध्यांकी सारकताको बाग्य है। वि निमते दिन्तुवातिने हुए सावको खुवाना बाग्य है। स्वां दिनये उसका स्वांपतन होने बाग। इस मुल्लि के सर्वासपुर्वर सरस चिक्रको स्वोच हिन्दुके पाने ब्रांगी कारों तथाया की यो। उसी तपस्याके पहुष्ठ क्वार्या है 'बाग्यक्य ।' तिन सर्वासुप्रकार बाग्य की इस युद्वस्थायों समझ की स्वाचाया पूर्व कार्य होन स्वांचा हो उसते हैं, इसी सर्वासपुर्वे प्रकास की सामान्य कार्या की स्वां स्वाचाया पूर्व कार्य ति हुप पूर्णभानवताके एकतिष्ठ सेवक महर्षि नारदकी तरा होकर उनसे पुष्तने क्षमे—

> कोजिस्नास्ताप्ततं रोके गुणवान्कश्च वैर्षेतातः । चारित्रण च को पुकः सर्वस्तृत्यं को वितः ।। अस्तरान्वारित्रकोचो सुवित्रान्वेप्तत्रसृष्कः ।। अस्तरान्वेशित्रकोचो सुवित्रान्वेप्तत्रसृष्कः । स्तर् रिन्माति देशाध जात्योक्तवः संतुषे ।। पत्तरिप्तास्यार्थः सेतुं परं कीतृत्वतं दि से । सहरं सं समर्थोऽसि क्षाप्रोनेसीर्व नारम् ।।

(स॰ स॰ १।१)

'हे महर्षे । इस समय इस मृष्यव्यवप् ऐसा कीन इस्प है जो उदगीधन समस्य मुणांक स्थापन हो, वस मीर परित्ये सरप्य हो, मार्थीमात्रका हिल्कारी हो, इग्निय-दिवरी, तिककोधी और ठेनलो हो एवं को किलो के मांत सम्या न करता हो उथा पुरस्केत्रने जिसके रोपको ऐपकर देशना भी वरते हों। यदि ऐसे कोई माराइस्स हों मोर्ग पुरस्ता करता हों। में साध्यन्त कीतुहससे उनकी चार्त पुरस्ता करता है।

मर्यात् दृर्योक्तके बहुत्यम्थानमें व्याकृत करःवितर महर्षि वाश्मीकिते द्वारा इस मकारके प्रतीन विश्व-दितकर मध्यो पुन देवपि नारदने वो कृत कहा था, सो इसम्बार है—

बहुत हुर्तमाधिव थे ह्वाम बीर्तित गुम्मः ।

पूने वस्यानसं दुन्दमा वैतुक सूम्यां तरः ।।

रानाद्र्यमानसं राना मान करे छुकः ।

दिन्दमानसं राना मान करे छुकः ।

दिन्दमानसं राना मान करे छुकः ।

दिन्दमानसंद्रमानसं ग्रीमान्यद्रनिवर्दमः ।

स्मान्यद्वादः । द्विताः सुरक्तमः ।
स्मान्यद्वादः । द्विताः सुरक्तमः ।
स्मान्यद्वादः । द्विताः सुरक्तमः ।
स्मान्यद्वादः । द्विताः सुरक्तमः ।
स्मान्यद्वादः । द्विताः सुरक्तमः ।
स्मान्यद्वादः ।
समान्यद्वादः ।
समान्यदः ।
स

सर्वेकासार्वेजवरः स्मृतिमानसिमानसर्। सर्वेकियेवः सामृत्दीसकाः विवाजः।। सर्वेदामिकाः गार्वेः समुद्रः इत किन्युमिः। व्यावेः सर्वेदमार्वेक सर्वेद विवादिकः।। स च सर्वेयावेकः कीरत्यानस्वर्धाः। समुद्रः इत गामगीर्वे वेवेच दिमसानितः। विज्ञाना सरक्षाः वेवें सोमस्तिवर्द्यकः। कार्वाविसरकः कोचे स्वस्ता पृथितीसमः।। वान्येन समस्तामे सर्वे वर्षः इतारः।

'हे अने ! आपने जिन सति दुर्शभ गुर्थोका भाम बिया है उन सब गुवाँसे युक्त एक पुरुप हैं, मैं विशेष-करसे समझ्कर दनके सम्बन्धमें चापको बतलाता हैं। च्यान देकर सुनिये। अनकी इत्वाहवंशमें उत्वति हुई है धौर वे रामनामसे सबमें प्रसिद्ध हैं । वे महावीर होनेपर भी जितेन्द्रिय हैं, शुतिमान् हैं, भीर हैं स्रीर मनको वसमें क्रिये हुए हैं। वे बुद्धिमान, नीतिपरायय, वक्ता, यह 🜓 सुन्दर और अपने शत्रुधोंको परास करनेनान्ने हैं। उनकी मुजाएँ बानुतक सन्दी हैं, सुन्दर सिर है, प्रशस सम्राट है चीर उनका बदविन्दास चत्यन्त अनोहर है। उनके सभी र्चत ससंगठित और सविभक्त हैं । शरीरकी कान्ति नेत्रोंको रिनम्य बरनेवासी है। वे मतापी है। उनका वसःस्पत्त विशास है, चाँखें बड़ी बड़ी हैं, वे कायन्त सीम्हर्यशासी और द्वान स्वया-सम्पन्न हैं, वे धर्मके रहत्यको जाननेवाले श्रीर सरवपराययाँ । प्रजाका हित करना ही उनके श्रीवनका प्रधान कार्य है। वे बशस्त्री, पूर्व शानी, ग्रद सीर सायुक्तोंके बकीमृत हैं, वे समाधि-सम्पन्न, प्रजापतिकी भौति सदैव श्रभ कार्योके विभाता और शत्रुधींका इसन करने बादे हैं। वे प्राविवों के और समल प्रमों के रचक हैं, धरने धर्मकी धीर स्वधन बान्धवोंकी रहा करनेवाले हैं। बे समक्ष बेहवेदाजों के स्वस्थको आननेवाले हैं और पनुर्वेदमें भी पूर्व प्रवीख हैं । वे सब शास्त्रोंके गृह तरहते पूर्व हराने बानते हैं। उन्हें किसी विषयकी विस्तृति नहीं होती। वे चसाचारच प्रतिमाताचे हैं। सबके प्रिय और साथ प्रकृति हैं। दीन वहीं हैं, साबु स्रोग उनसे प्यार करते हैं । वे बुदिमान हैं और सभी के सम्मान्य हैं। जिम तरह समुद्र कदियों में प्रयान है उसी प्रधार वे भी सबमें प्रधान है। वे सबसे साप समान भारते व्यवहार काते हैं। त्यवंग्र विवादगीन हैं। सामुक्त समान सम्मीर और हिमालयके समान पीर हैं। सामान (विष्यु के समान पाळमी और व्यव्हमाके समान देखतेमें सुन्यर हैं। कोचमें ने प्रलयकालको समिक्र समान और पनामें पुण्योके समान है समा समामी उदेशके समान भीर सस्यमें सामान पाने हैं। हैं।

वण्यु क शोकोंमें जो युष कहा गया है वही समल समायवण्या बीज है। सानों कावडोंमें इन्हों मब बुर्नम गुयोंने समय मर्थादगुरुरगेसन मीसायव्यु के दिनोक्शास-वरियों की विरिय घरना मांत्रा वर्षन है। इस नर्यनके वैरिय्य और माधुर्येते चादिकति महिर्दे वास्त्रीकिने सामयव-मंदि का है, वस्तिक लर्रा-विरिश्च च्यादे कमनीय पर्यात आर्था भी भारतके वसंस्थान स-नारियोंके समाय-वाय-दाय हवय शीतल होते हैं, नेजोंसे ममाबुर्गेकी चाह चा वार्ती है, होफ, सार और दादिव्यने विषुच्य चालामें नर्यान ही।

वारमीकिने वाद भी भारतमें बहे बहे महाकवि हो गये हैं, और श्रीरामने चरित्रका व्यवत्यम कर व्यपनी करताभारव कियान के विश्व के

सामायकर नन्द्रन-कारतमें को सनव मुस्तिश्चान निक्षेत्र हुए हैं, नशीमेंचे पुन युनका कुत इस्त्रीय करके सामीगर, काजिहाम, महत्तृत्री, क्रांदे की स्मादि सामीयन माजाकाकर महत्त्रियों हैं, गुण्दर नवीन कार गूँच दिया है, इस शामें नजार नाना सकारके गुणियत्त्राचे प्रश्लेक सामीकर्ष हैं करूट नारतम्य होने के सारच बनके सामीक्षित्र सारतम्य दीनान है। युनकु बद्द बहु बहु का सम्बादि स्मा चरित्रके स्मादित करनेने हुनकी कोई विनेष इनियं

शृहरपड़े सामाजिक मुखाँके बिये जो इव लाई साधन है, सहर्षि बाइसीकिने डन समीको एक शनकी मधानरूपसे भागसम्बन्ध करके, धानी शमास्वनेषुता है निष्करङ भावने रिकमित कर दिया है। कार्र्ज चादर्थं माता, चादर्गं भाता, चादर्यं गृहिवी, मार्गं है। भादर्गं सहचर,भादर्गं अनुचर,भादर्गं मन्त्री,भार्तं रिने भादरों सेवक और भादरों पशोमी भादि दिव^{्ध} जीवनके सभी सार-साधनोंसे महाकृति वातमीकिया हुई सृष्ट बादर्श-गृहस्य बपरिमित्तरूपसे नित्य परिपृष[े] है। चादर्श हिन्दू-गृहस्य-जीवनका चानन्द व हेश हो। हिन्दू पात्रात्य गृहस्य-बीवनके बनुकरवर्ने प्राप्त है। उपय भारतमें उसके बिये गृहस्याधनके गाउनके व विदम्बनाके सिवा और क्या हो सकती हैं?हिन्दू वार्तर ^{हैंस} सार-सर्वस्व रामाययाचा प्रयापं रस त्रिवाप-वर्ष हिन्दूसमाजपर विशेषरूपसे बरसानेके किंवे कराह सद्भावकोंने 'समायखाइ' निकालनेका को दह विर्य इसके जिये से प्रत्येक हिन्दू-इदयसे इतरतापूर्य करत मास करनेके पात्र हैं, इसमें तनिक भी सन्देश्याँ

गोविन्दराम अप्रवास

खड़ राम नाम है

राज्य निराह्मपर थीर सुप्रीर शिर्मि कीरव-कठीरन ये पार्थ कठनाम है ॥ र ॥ कार्य महिला हेतु औम जराहम्पपर थीर कठराही नाम कठिएप दमाम है ॥ २ ॥ सुम्मन जरेहापर कह शिशुपक शीरा बनन निराह्मको अञ्चनी कठराम है ॥ ३ ॥ पार तम्मुक को सा राम्सम्म है ॥ ४ ॥ नास यमहरूको सह राम्सम्म है ॥ ४ ॥

हिन्दूसमाजपर रामपूजाका प्रभाव

(रेसक-स्वामीजी श्रीदयानन्दजी)



रीर, मन, धौर माखसे पूज्यपुरुपमें सङ्घीन होकर कमराः तद्गुण-प्राप्ति, तदाकारभाव थौर तद्रपताकी सिद्धि ही पूजाका क्रमोचत जच्य है। चतः मानवको पूर्व भानव तथा गुहरुको चार्त्रा गृहस्य बनानेके लिये इस धुगर्ने धीराम पूजा ही सर्वश्रेष्ठ पूजा है, सिमें किञ्चित् भी सन्देह नहीं हैं। **दे**सा पूर्व[°] सनुष्य कौन . जिसके बादरांको चेसकर प्रत्येक ग्रहस्य बपने जीवनकी पूर्व जीवन बना सकता है तथा अत्येष चत्रिय नरपति प्रपति राजधर्मके पूर्वांचुशनद्वारा स्रोक परस्रोकमें कृतहत्व हो सकता है। महासुनि वाल्मीकिके इसप्रकार प्रथ करनेपर देवविं नारदने श्रीभगवाम् हामचन्त्रको हो ऐसे पूर्णमानवके बाहरांक्यसे वर्षां न किया था ।

श्रीरामचन्द्र संपतात्मा, महावीवंबान्, कान्तिमान्, धतिमान्, जितेन्द्रियः, समुद्रतुल्य गम्मीरः, दिमाक्षयतुल्य थीर, किप्युतुस्य 'कीर्यंयुक्त, चन्द्रतुस्य प्रिवदर्शन, काकाधि-तुस्य रण्येजयुक्त, पृथिबीतुस्य चमानुक, कुवेरतुस्य धनदाता, धर्मराजनुल्य सत्यव्रत, कर्तव्यपावनमें बञ्जनुल्य कठोर, (स्वभावतः कुसुमसे भी कोमल-इत्यादि सभी बादर्श-गुरा एक ही साम भोमगवार रामचन्द्रमें प्रकट होनेके कारण ही ,थे पूर्य भावरा पुरुष माने वाते हैं और उनकी , हार्दिक पुत्राहारा उपासक अमशः उनमें तन्मव होकर वनकी मजीकिक गुणावधीका साभ कर सकते हैं। यही हिन्दु-समाजपर भीरामपुजाका परम जमाव है।

भव इन मजीकिक गुर्थोपर कुछ विशेषन किया जाता है। श्रीरामचन्द्र एकाकी ही पूर्वांततार नहीं थे । चारों भाई मिजबर पूर्ण थे। यही बाठगीकि शक्तायवार्गे यसाय है।

> कीसत्माजनमद्राभं दिन्यरुक्षणसंयतम् १ विष्णोर्ध महामानं पुत्रमेदराहकद्वम् ॥ मरती नाम कैंद्रग्यां जेहे सरवपशकमः । साक्षाद्विष्णेश्चतुर्भागः सर्वेः समुदितो गुणैः १। अय रहमणशतुमी सुनित्राजनगरमती । कीरी सर्वासक्ताओं विष्णोर्शसमन्त्रिती ।। (या० १११८).

चवतार-विवेचनमें श्रीरामचन्द्र भगवान विच्छ के शर्थाश. मस्त चतुर्यांश तथा लचमण और शशुश्र प्रत्येक भ्रष्टमांश थे। चारों मिलकर पृथ थे। गृहस्याध्रममें सम्मिलित रहना, एकप्राच एक-इदय रहना ही पूर्व ता तथा गार्हरूय-सुख-गान्विका खखब है, यही सत्य धादर्थ इस भवतार-रहस्यके हारा मक्ट हुआ है। स्था उपासक इस रहस्यको रामपुत्रा हारा हदवहम करके गृहश्याध्यममें आतुधेमका वच चादशै ख्यापन न करेंगे ? 'निदारयन्ति इक्तमिति दाराः' स्त्री माई भाईमें कतह कराकर कुलको कोबकार देती है, इसी विये संस्कृत-भाषामें श्लीको 'दारा' कहा जाता है। किन्तु चारोंके मिलकर पूर्वा होनेके कारख 'दारा' छन्दकी यह चरितार्थता रामगृहमें कदापि नहीं हुई थी। यह सभी क्षोग जानते हैं कि श्रीरामचन्त्र सीठाकी चपेचा भाई जनमयुपर जविक प्रेम करते थे। इसी कारच शक्ति-शैक्ष-मूर्ण्डित सब्मण् के क्षिये सकरण विकाय करते हुए श्रीरामचन्त्रने कहा था-

> शक्या सीतासमा नारी मर्त्यहोके विश्वित्वता । न स्टमणसमे। आता सन्दिनः साम्परायिकः ॥ परित्यक्यान्यहं प्राणान् वानराणां तु पद्यताम् । यदि पश्चलमापनः सुमित्रानन्दवर्द्धनः।

'संसारमें सीता-सरश की मिल सकती है। किन्त क्षप्रमय बैसा भादे वहीं मिल सकता। यदि सच्मयके प्राय न रहे तो में भी भाग त्याय द या ।' इस बातको थीरामचन्द्रजी-ने सार्थक करके भी दिखा दिया। प्रजावत्सक्ष श्रीरास-चन्द्र मजारअनके लिये निर्दोपा सहधर्मियी सीताको बनवास देकर भी बीबित थे, किन्तु देवकारयाले जब माई जनमनको उन्हें परित्याग करना पदा तो फिर श्रीरामधन्त्र वीवन धारण न कर सके और सचमण-वर्जनके उस ही दिनों बाद काएने अपनी जीला संबरण कर ली। उनके जीवनमें पदी। ग्रेम, आनुग्रेस शादि सब ग्रेमोंसे धर्मप्रेम विशेष रूपने था. इसका भी अवलन्त प्रमाख उन्हों के इन राज्यों से प्राप्त होता है-

विश्रवेष त्यां सामित्रे मामूर्धमीवेपर्ययः।

'तम मेरे चित प्रिय होनेपर भी चम है जिये में तम्हें धरित्याय करता हूँ ३° क्या रामोपासक रामपृत्राके द्वारा इस धारोकिक शिकाका साम नहीं कर सकेंगे हैं

मानार् श्रीतामचन्त्र किगाई तित्र नहीं ये हैं वे तरहे तित्र थे, बातरहे तित्र थे, रेकनाहे तित्र थे, रावगई तित्र थे, मेताई तित्र थे, सीवरहे तित्र थे, चावनाकई तित्र थे, निवारहे तित्र थे, मानार्क तित्र होने वर भी वे कपनीपूर्ण गानीरारर पूर्ण मितिहा थे। वर्षाध्यम मर्गाराक कहान बता भी नहीं वरते थे। भागवानिता हे तित्र होने वर भी वे प्रातिन वर्ता भी नहीं वरते थे। भागवानिता हे तित्र सामान्यार प्रातिन वर्ता भी नहीं वरते थे। भागवानिता है तित्र सामान्यार प्रातिन वर्ता भी नहीं वरते थे। भागवानिता होने विकार सामान्य विवारते 'तारहां।' ये वित्र 'तानवानी' नहीं थे। कत्रीर परद्वाताके मति दलकी वर्ति हारा चह रणह मतावित्र है।

> माद्राणोऽसीति पूज्यों मे निश्वामित्रहरीन च । तस्माच्छकों म ते शम मोकुं प्राणहरं शस्म् ॥

> > (स॰ स॰ १।७६।६)

'बाप माझय दें चौर में चत्रिय हैं, इस कारय में बापके करर शवामहार नहीं कर सकता।' सवोध पचपाती मनुष्य मीरामपर शवरीके जुड़े बेर

धवीय पचपाती मनुष्य श्रीतामण्य सब्दीके जुटे बेर ब्लावेज ह्या ही योच जगाते हैं। वाश्मीकि, ग्राव्यवीदास सादि किसीके भी प्रामाण्यिक मन्यते हसका प्रमाय मही दिखता है। प्रतः यह बात सर्वधा निर्मृत है। हो सक्ता है कि ग्रव्यति एक वेर चलकर देश जिला है। कि हस पेड़के देर मीठे हैं चा नहीं, किन्द्रा सभी वेर चलकर उसने श्रीभगवान्को विजाये थे, यह सन्धूष मिल्या करवनामान है।

भगपान भीकृष्यं भननभोदन'शीर श्रीभगवान रामध्यः 'मदम-दृहन' थे। मदन-भोदन होनेके कारण ही श्रीभगवान कृष्यने गोपियोंकी रमये च्याकी दृष्य नहीं किया था, किन्तु दसी भावते वन्हें अपनेमें तन्त्रय काले वनकी कामादि प्रविवांका नारा कर दिना था। वन्होंने स्वयं द्वी कहा दिसा

न मरमावेरितिधियो कामः कामाय करपते । वर्जितः कपितो मानः प्रायो नीजाय नेष्यते ॥

"बाममावर्स भी भगनान्के प्रति बञ्चाया करनेवर-वह बाम बाम नहीं रहता है, जिस प्रकार भूंचा हुमा थान कब रूपस नहीं कर सकता, उसी प्रकार भगनान्से मार्टिक काम भी निर्यों के बेला है। किन्तु भगनान्से मारिक काम भी निर्यों के बेला के स्वार्थ के स्वत्य करीया करते करता मार्वान्स्य भीरासन्त्र मर्चावा प्रकोशन होने के कारता महारेवधी सरह 'महनहृष्टन' होना ही मर्पाहरूर व 'मानहृष्टन' होनेके सारम ही धीरातने कार्यन्ते' पूर्वनात्माके साम न देवर दमकेनारू-बान क्यापिंगें स्वीयारकी क्यामेंके यह निश्च साम की से स्ट्रे समयेष्ट्रान्त्रीत्प्रकामिकारियो विचांकी देगीरीप्रत्यो साहिये। 'मानहृष्टन' होने कारण ही सीमानगुरूप्ति सिये माण स्वीन करोर एक्यापी-साहित्या हुए सार्व सहे ये और दारचाके हात्मे तीनता हुए सर्व कन्याम के स्वान स्वीतिक सार्व्य स्वेव हुएसोर्जे करवाण या। यह स्वतिक सार्व्य स्वेव हुएसोर्जे करवाण या। यह स्वतिक सार्व्य स्वेव हुएसोर्जे करवाण या। यह स्वतिक सार्व्य स्वेव हुएसोर्जे

युक-प्रवीमत तथा पुक-प्रतिमतको प्रवार ना वि युदस्य मर-मारीके जिथे सर्वोत्तम भारते हैं औ है भावर्रीका करस्रन्त कवाहरू भीराम-सीताके बीवनर्ने ^{हिट्}र है । वासि-वचके जिये सत्र सुमीवमे शीरामक्यमे व मारहम हुमा कि एक बायसे सहवात में हती थीर ही बाजिको मार सकते हैं, तब मीमगवारने वार्ष बाय चड़ा कर उसी समय यह प्रतिज्ञा की यी वि पी सीताके सिवा धन्य किसी सीमें मेरी हमी सीर्डि सी वो भेरा बाय सप्तवाल बेयकर लीट वावेगा! ह मकार मण्यर चहा हुमा एक-पत्ती-वत पूरा ही दता है। पेसेही लंबापुरीमें तब महावीरको दग्ध कानेबे बिरे गर्द पूँचपर वस्त्र सपेडकर रावणने चाग सगवारी वी हर जलनेका संवाद सुन सीतारेवीने भी एक-पतिवतको हरी चढ़ाया था चौर उसीकी महिमासे उसके लिये ब्राप्ति बन्तरी शीतज हो गयी थी। जिस समाजके नर-नारियामें कार राम-सीताकी पृत्रा अचलित होगी, वहाँ इस बनुरम बार धनस्य धनुकरण होगा, जिससे गृहस्थाधम सार् नन्दनकाननके रूपमें परिवात हो लायगा, वहाँ प्रेमकी में मन्दाकिनी सदाके लिये प्रवाहित होती रहेगी, इस^{में हरी} भी सन्देह नहीं है। इसके ब्रातिरिक्त मानव बीवनहीं मुन बनानेवाजी-बास्तिकता, तितिशा, इन्द्र-सहिष्ण्,ता, विल पितृमकि, आतृमकि, आतृ-मकतासवता, शाबार परायवाता, ज्ञानस्पृहा, सम्बरित्रता चादि सभी पुनान श्रीराम-श्रीवनमें पृथा परिस्पुट हुई थी,जिनका साय द्वार मक श्रीवनको भी शवस्य ही अध्यय बना सकेगा, व उष भी सन्देह गडी है।

'बद्दानां लोकपालानां मात्रामिनिनिता नृषः ।'

इन्त, इतेर, रुख्य, चन्द्र, सुर्यं, यम, प्रांध, यमन, एन प्रष्ट कोष्ट्रपालां के धंताने राजाका निर्माण होता है, यहां प्रारंगायका दिवाला है। इन्द्रमा चंद्रा रहनेके कारण राजामं मञ्जूष करनेकी शक्ति कारो है। कुनेका चंद्र रहनेते पर प्रविदेत करनेकी शक्ति और वरणाक वंद्र वर्तनेत काररपकतादुनार श्राक्ताको चन्द्राचकी वर्धाक वर्तने हैं। चन्द्रके चंद्रपोत ज्ञाको सुक्ती रखनेकी शक्ति वर्षने वंद्रपोत स्वायानुक्का विकार-वर्धक, स्राह्मी है। चनके चंद्रपोत स्वायानुक्का विकार-वर्धक, स्राह्मि वंद्रपोत परिकला और पत्रक वंश्राने सुव्यवस्थान प्रवाद के प्रवाद के प्रवाद के प्रवाद के व्यवस्थान प्रवाद के प्रवाद के प्रवाद के प्रवाद के व्यवस्थान

> यो हि धर्मपरी राजा देशेशोऽन्यख रछसान् । शंशामुती धर्मतोपी त्रजापीकाकरी सबेत् ॥

पर्यसायया राजाने हैं। उपयुंक बाद देवताजीके । होते हैं, प्रथानिक राजाने प्राप्त क्या राष्ट्रमिक होते हैं, प्रेस राजा जातराजक क होकर मजाविक होता रीर मजावा धर्मनार करते हैं। प्रयान क्षार्यक्षाप्त करता हुस्तम्बर मजाविक करता हुस्तम्बर मुक्तम्बर मुक्त

प्रमापीदनसन्तापात् समुद्मुतो हुवासनः । राज्यं कर्तः व्रियं प्राणातादकवा विनिवर्तते ॥

स्वारी बृत्तकर्यों धन्यार से बराज शामान्य (मिडोशांगि) स्वारी ब्रिता स्वारी के राष्ट्र से स्वारी विदा हुए मही होती। भाग तमन प्राप्त सामान के सामान

चो परिलाग कर है । किन्तु बीरासकदर्क जीवनमें पैसा हुआ था । वन्होंने सब बोस्टे कर्दाब्यको तिवाज़ाति देवर. महाडिक कि करते हृदयके ग्रह यानका भी गका गॉटकर, पूर्व परित्र काननेवर भी धेवज प्रजासक किये ही परम सती, परम प्रेमको निर्देश सोताके परमार है दिया था । वे सज जबके बसूर्व जीवनमें मजीकिक मर्गाहानक स्टान्स एटान्स हैं, उन्होंने पुरु समय करन राजामोंसे भी चडा था—

मूबी मूबी माबिनी मूमिपालाः ,

नत्वा नत्वा वाचते रामचन्द्रः । मदबदोऽवं धर्मसेत्र्नराणाम्

काले काले पाटनीयो मनदिः।।

स्वीरामकानी सामान विकाद तात राजामीते आर्थना की कि वे उनके द्वारा निर्मित पानेशिकी पुराचा बाहा करते रहें। इस वर्गनित्वनी शुराचा एकाइच-सहस्वर्यन्यायी समाज्यमें सार्यम्बाको आरा हुआ या, जिसकी मधुर स्मृतिको भारतक को सार्यमाना नहीं यह सकी है। सामाज्यके प्रस्तुकार की सार्यमाना नहीं यह सकी है। सामाज्यके प्रस्तुकार की सार्यमाना मही

बीरामचन्त्र सहाराजके राजकालमें वियोंको वैशाय-इ.स नहीं देखना पहला था और किसीको भी सर्पभय सथा होगका भय नहीं था। चौर, दस्य भाविका सत्याचार महीं था. किसी प्रकारका उपज्ञव नहीं था । इस माता-पिताको कभी चपने धीवनमें सुतपुत्रका भाउकमें नहीं करना पहता था । सभी खोग बातन्दरक्षे तथा धर्मररायस से। श्रीरामचन्द्रके पार्मिक मावका बारवर्र पाकर कोई भी परस्पर हिंसामें बिप्त नहीं होवा था। सहस्रों प्रत्रोंके साथ सहस्रों वर्षी तक रोग और शोकगुरूप शोकर मनुष्य जीवित रहते वे। इच सवा ही फल-कृत्वोंसे सुरोमित रहा करते थे. इच्छामायसे ही मेघ जल बरसाते और शीतक, सन्ध. सगन्ध, संसंस्थानी बाब बड़ा काठी थी । धपने कामी शह होकर प्रजा चयने कर्मेंसे ही सत्तर रहती थी। सभी स्रोग धर्मपरायक थे. कहीं भी सिच्या व्यवहारका मचार नहीं या शीर समी सुवचवसम्पन्न ये। यदि राजा-प्रजामें सभी रागपता अवित्य होगी तो धनः भारतमें ब्राइर्य चित्रय नरपति चौर चादर्य राजसन्द प्रश्ना उत्पन्न हो सायगी जिससे सकते रामराज्यका विमञ्ज शुक्त पुनः प्राप्त हो सकेगा, इसमें बरा शी सन्देह नहीं है। यही हिन्द-समाजपर रामप्रशाके प्रधानक क्वसित हिन्दर्शन है।

कौन बड़ा है ?

(टेखक—स्वामी श्रीकृष्णानन्दजी चक्रवर्ती)



ध हम भगवान् श्रीकृष्णवन्त्र श्रीर भगवान् पुरुषोषम श्रीरामवन्द्रजीकी बीवन-घटनाश्रीपद दृष्टि बाबते हैं तो धानन्दकन्द श्रीकृष्णवी हमारे सम्मुख एक महान् पोनिताल, अनुत राजनीतिञ्

तथा पोदश कलासे पृषा अनेय योदाके रूपमें आते हैं। और प्ररुपोत्तम रामचन्त्रजी विकटसे विकट परिविधितिसे कत्तंत्र-मार्गसे अविचलित, महान् तपस्तीके रूपमें दर्शन देते हैं। भगवान रामके जीवन स्थको बढी बडी हुर्जेय और प्रतिकृत स्थितियों मेंसे पार होना पहता है। उनके जीवनसे मन्त्यमात्रको कठिनाइयोंका सामना करनेकी श्रमोख शिचा मिलती है। दबाइरणस्वरूप-प्रतिकृत परिस्थितियोस शान्तमावसे सामना करनेकी उस शक्तिकी कलकहम इस समय भी राम-नाम-प्रेमी, जगहून्य महात्मा गान्धीके कीवनमें पद-पद्धर देख सकते हैं। बाव छोग कभी कभी यह मध मतते हैं कि इन दोनोंने बढ़ा कीन है ! वैसे तो त्रियका चित्त जिममें रम जाय वही उसके खिये सब उड़ होता है। हम चाहे जिस रूपमें वसे मर्जे, रूपभेद होनेसे चडापव वदा-दोटा नहीं हुआ करता। ऐसे भी भगवान् भीरूम्यको ३६ कताका कारतार सामते हैं सीर शीरामको १२ का । इनको हम चाहे यह कई कि स्तवा १६ बानेडे परापर होता है अवता राजा १२ सारोका होता है, बार एक ही है। ज्यानसे देखनेने आलग्न होता कि ब्रीहम्ब चन्द्रचंगी थे भीर श्रीराम स्पेवंगी । चन्द्र १६ कक्षाओं पूर्व होता है और गूर्व १६ शशियोंसे । बातः इव दीनों बारतारोंने दिनी भी प्रदार कोई छोटा ं बरा नहीं हैं।

शानी-पंडित आदि कीन हैं १

रोड रुप्टिन मोज परसी, मोडी मंत मुजान । मोडी मूर मर्चन मो, मोडी मुबट प्रमान ॥ चे क्यों मोड मूर्यांचन, मोडी स्टार प्याप्ति । नुमी बोडी स्टिंग मंडी, ममदेवसी क्यांचे ॥

श्रीरामायणमें मांसाहार

(केसक-विधानाचरपति पं० श्रीशङ्कदरी सर्)

य तो सर्वसम्मत है कि मगत् भंतर मर्यादा पुरशोत्तम है और उनका सी है विद्युद्ध एवं काइयों है। विद्यु क्या का स्थान पासर और सप्पान तथा मोत-सन्दर्शी

पासर वीष सप्तपात समा सोस्तरणार प्रिक्त कमीर स्व रूप हुए है, वह कमा रेर्ने क्यान कमीर स्व क्यान क्यान

भाष्या, श्रम सर्वेत्रयम यह देशना वारि । भगवान्की से प्रतिज्ञाएँ कौन-सी हैं, तिन हैं क्रिये विरत होनेके विषयमें कुए कहा गया है । होते, व गमनके समय सहाराज दूपरथ और महारामी कैरिये स्थान्य क्या कहते हैं—

> चतुर्वश दि वर्षणि बतस्यामि नित्रने बने। कन्दमूलकरी-जीवन् दिला गुनिवशिकार॥ (बा॰ ग॰ १।१॥॥

भयात् विजन बनमें में बतुरंश बर्गतक कर्या है बीवन व्यवीस करता हुआ मुनिजनोंकी ता हैन व्यासकर विवास करूँना । भीर भी करा है-

वरानि मुजानि च मग्रवन् वन

परतान भूतात च मग्रयन् वन विराध पत्रयन् शरितः मार्गित व।

वर्त प्रतिश्येत विचित्रपद्धपं मुखी महिष्यामि वदार] रि कि

्वार १११^९ चित्र सुनिराम अरहाजबीके प्रति भी आसार्दे हैं

गम्बर्ध क्या है—

वर्गनेवाचरिकानमञ्ज मृहक्रमासनाः ।

ये भगवानकी प्रतिकार्षे हैं। इसके साथ यह भी यान हैने योग्य है कि मर्योदा-पुरुषोत्तमकी सामान्य रिका ग्रापने कथनके विषयमें क्या है-समें। दिनांशियाकी-ामचन्द्र दो बार नहीं कहते कर्यात् पुक बार जो ऊल कह देपा सो का दिया, उसके विपरीत वे कवापि उन मनसा, गया. कर्मणा नहीं करते ।

घरशा. यह इन प्रतिलाधोंके विरुद्ध वास्मीकीय तमापयके कुछ श्लोकोंकी, जिनमें क्षर्यांभास असीत होता , यथार्थ स्वाक्ष्यापर श्यान श्रीकिये । चित्रकृतकी रव⁸शाखाके बास्तुकर्म-सन्गादनके लिये भगवान् औरामचन्द्र-ने खर्चमयाजीको इसमकार काळा ही है---

पेंगेयं मांसमाहत्य शालां बदयामहे वयम् १

(स० २ | ५६ | २१)

इसमें रपष्टतया मांसकी प्रवृत्ति-सी प्रतीत अवरय होती है। फिन्तु बाद ऐसी नहीं है। इसकी यथायें ज्यारया इस-मकार करना उचित है कि 'देखे' सगलाकापर नैटकर. 'र्घ' (यो मायी इति मेदिनी) लाखायाम करके, 'साँ' (लेकमाता मा स्त्यमरः) खन्मीरूप सीताको, 'समाहत्य' सम्यक् बैडाकर, 'वयं' इस, 'शालां पजामदे' यालाका पत्रन करेंगे। प्रयदा (दूसरा अर्थ) 'ऐ' हे खच्मण, 'खें' (नः पानीयकलश शति मेदिनी) जल-कछराके समीप, 'वं' मरत्यान् भर्यात् वास्तुनेवको, 'सां' तुर्गाको, 'सं' सर्वधारी गयेराजीको, 'बाहस्य' उनके अन्त्रोंसे बावाइन करके, 'वर्य' इस शाकाका पत्रन करेंगे। फिर कीरधनावजीका वाक्य है-

मृगं इत्यानय दिन्नं रुदमणेह शुमेखण ।

(वा०२। ५६। २३)

'सूरा' चाम घडौँ राजकन्दका है। सद्नपाध-निघषट्में कहा है-(चुगः पशी कुरंगे गर्ज च' इति शब्दस्तीमः ।) इस स्थानपर 'कन्द'का स्त्रीप क्षी आता है (विनाधि प्रत्यर्थ पूर्नी सर्वाः परपोडोंगे बाब्य:-महामान्य) सालयें यह है कि हे सकास्त्र, गजकन्त्को बराइकर शीध से बाद्यो । यहाँ 'विष' प्रतुत्र प्यान शीजिये । क्या वहाँ सूग वच होनेके क्षिये खडे थे को मारकर शीध सा दिये बाते। 'ग्रुनेपख' सम्बोधन भी निरर्पंक नहीं है । इसका प्रयोग श्रीजक्यवाजीके राजकार पदचाननेके चातुर्वको खबपमें रसकर किया गण है। असवात बार बार बहते हैं कि 'कर्तन्यः बालाही कि विविधांमनाया " इस समय भगवान् भीराम धानमस्य-धर्मका पासन का औ

हैं। शासोंमें बानप्रस्थाधमीके लिये केवल करद-मज-फलोंके ही सानेकी धाक्षा दी गयी है। इसीखिये भगवती सीताका रावबको फल-भिचा ही देनेका वर्णान भाता है । भागे विद्या है-

स करमण: कृष्णमुगं हत्वा मेध्यं प्रतापनान् ।

(बा० २ । ५६ । २६)

यहाँ भी कासी लाचानासे गजकन्दके विये ही 'कृष्यमूग' पदका प्रयोग है । फिर इसके आगे कहा गया है-अब चिधेष सीमित्रिः समिद्रेः जातवदसि ।। वत्त पर्क समाज्ञाय निष्टमं छिक्कशोणितम् ।

(बा० २ | ५६ | २६-१७) कचाकतीने गतकन्दको चिप्तमें बाक्ष निया। यहाँ 'निष्टत' प्रवपर प्यान दीजिये। 'निस् तक्ष' पर्मे एक बार पक्रमेसे ही 'स' के स्थानपर 'व' होकर 'निष्टम' पद बन बतता है। धारम्वार अग्नि देनेसे 'थ' नहीं हो सफता। धगवान पाणिनिका सम्र है- 'बिसलपतावनासेवने ' कन्द भी शोध वक वास्की चामिले एक जाता है। धग-मांस शोध महीं पक सकता। 'शिक्योचित'का वर्ष है-नष्ट होता है श्राचित-विकार जिससे। गजकन्तके विषयमें वैद्यकशासमें जिला है—'स्वन्दोवादिः कुष्टबुस्तर' शति सदमयाङः । इसके सारो बद स्रोक चाता है-

'अमं सर्वः समस्ताहः त्रितः कृष्णमृगो मया । देवता देवसंकारां यजस्य कुशतो हासि।।। 'सम्बग् मवन्ति बस्तानि बंगानि वेन स समस्ताकः'

बर्बाट सम्मन्त्री करते हैं कि सब सम्बक्त शब्दे हो वाते हैं बाह जिससे, ऐसा यह कृष्यसूग-काकी त्वचावासा गजरून्द प्रसार है, चाप यजन श्रीतिये। यहाँ 'स्वा' पश्चके शर्थमें यह भी विरोध है कि 'समलाह मृग' को चरिमें महीं बाखा बाता है। प्रनः सरावान विष्यको सोस-बद्धि देनेका कहीं विधान नहीं है और यहाँ विष्यको भी विध देनेका वर्णन है । अच्छा, यह सो चित्रकृतस्य पर्यग्राताके विषयका उन्नेश है, किन्तु चाने चलकर प्रस्तवटीके प्रसंतामें फुर्लोकी बिंख चड़ानेका साथ विधान मास होता है। धाराः वति चित्रकटमें भांस-वशिका विधान होता तो इसमें जिल्ह पञ्चवटीमें प्रत्य-दक्षिका वर्णन क्यों किया जाता ! किर देखिये, मगवान्ने दशस्यत्रीको बदरिययाकका विरुद्ध ही कवंब किया है। पिवडदानके समय मगदानूने निम्नरूपने का रै---

इदं भुषत महाराज श्रीतो वदराना बवान् । यदकः पुरुषे तदकारतस्य देवताः ॥ इससे भी स्पष्ट हे कि मगवाम् श्रीराम फलमूलका ही भण्या करते थे ।

> रोहिमोसानि चोद्पुरम पेशीहत्ना महायशाः । शहुनाय ददी शामी राग्ये हरितशाहरेः ॥ (वा॰ रा० ११ ६८ ३ ११)

पूर्वाराकोपमान्द्रप्रकारतान् विज्ञान् माविष्णया।
सीरिताककृष्याव नकर्मानांव रामदः।
प्रमायानिपुनिर्मेत्यंतात्र राम वरान्दरान्।।
निरत्यक् च्छान्यकावान्वव्यानेक्यकान्।
त्व मस्त्या समानुको स्वमकः श्रेप्रदास्थितः।
पूर्वा सान्यको स्वमकः श्रेप्रदास्थितः।
पूर्वा सान्यको स्वमकः स्वयानाम्यस्य ।।
पूर्वा सान्यको स्वस्यान्यस्य ।।
स्वस्यान्यस्य सान्यस्य स्वस्यान्यस्य ।।
स्वस्यान्यस्य स्वस्यान्यस्य स्वस्यान्यस्य स्वस्यान्यस्य ।।
स्वस्यान्यस्य स्वस्यान्यस्य ।।

(ale 41 a 51 a 515 6-6 a)

यह एकि भौरासणमुक्षीके प्रति करणको है। बार दोगों भारता एवरियह हे समान कोमख स्यूख कटहख चाहि पत्नों हे गुरेकों 'शाम दिवान'-कन कमा सरोवरके वासपास बाग करमेराको हिएसोंको भण्या करायो है है राग, पत्मामें —(हेपोनिकर्मका हिन विस्कार) वासनी चालाते, 50% रागा नामान सर्वात हुए हिन्दी करायों से स्थाने हो

गया है, उनी महामाध्यके वार्तिकने 'निवादि प्रवद्दित परवीकोंची बकम्य: १' इकट्टे हुए, स्वचारश्राहत, 'कार (अय इव तस) कर्षात् साजरंगकी महिवर्ष शीर हैं। चक्रुपड, बखर्मानोंको मी भाउकी मक्तिसे बक्सदरी सं गृते बाबेंगे। 'मृशं' बायन्त क्षत्र बातनेया प्रमान्हा 'सादनं साद्यस्तव' सर्थात् सद्धियोंको भोदन सहते। श्रीखबमयात्री भापको कमळपत्रों हे दोनोंमें बत्रशर मारे यहाँ 'स्यूख' पत्के बार्यपर ध्यान न देनेके कारब ही टीबर' में इस रहस्यको नहीं समन्ता है। यदि यह दश शा⁴ महर्षि वाश्मीकितीने ऐसा संदिग्ध वर्षां न वर्षे किय खुति समाख है-'परोश्चतिया देवाः प्रशस्त्रदियः।'रेक्प्रवर्षे परोच हो निय है, इसीके धनुसार बार्ष-प्रम्योंको बीहरूस चाहिये । सबसे बड़कर हमारे इस हेसड़े प्रसार 'रामो दिनामिभाषते यह भगवद् वास्य है। इत हार सदयमें रतकर ही विचार करना चाहिये कि दव बीतर्क मविज्ञाः फल-मूखः भक्तम् करनेकी है सब उनके हिनी मांसका व्यवदार करना किस प्रकार सम्भव हो सध्य इसने अपर जिस बातकी स्पष्ट विवेचना की है वह रह चातिरिक किसी विद्वानुको और भी वाल्मीकीय राहरवाँ किसी प्रकरवामें इस विषयमें हुद पूछना हो तो हे 'हरा' प्यहारा ही धापनी राष्ट्रा मकट करें। इसका रहार समाधान किया वापगा ।

रामके चार निवास-खान

बस तुम्हार मानस विमल हंसिन बीहा ^{बार्} मुकुताहल गुनगन चुनै राम बसह दिय ^{हाहु।}

सब कर माँगाष्टि एक फल राम-परितनी हो^{त्र।} तिन्हके मन-मंदिर बसह सिय रघुनंदन दो^{त्र॥}

(१) स्वामि-सला-पितु-मातु-गुरु जिन्हके सब तुम ^{ताती} मनमन्दिर तिन्हके बसह सीय-साहित दोउं प्र^{ती} (४)

बाहि न बाहिय कपहुँ कछु तुम्हसन सहत्र हो। बसहु निरंतर तासु मन सो राउर नित्र गेर

श्रीसीताजीका वनवास

(केसक-महामश्चानव्याय दा अभिनंतानावर्यी हा, एव ० ए० दिवस्टिट, बाइल चैन्सस्टर, प्रवाग विव्यविद्यास्य)



रामण्युद्धीके चरित्रपरीषकींने खीसीता-वनवासके मसंसको सेकर दोचरोराका किया है। पर ये परीषक इस चातको मूख साते हैं कि रामाचयमें सितने चरित्र-चित्रका हैं ग्रावर सभी सादर्शन्येच हैं। स्वरोच्या कावर्र करती, दशरक सावर्श पति, खादर्श

पिता, श्रीराम श्रादि चारोंन्साई-साइर्एड्ज, श्रीसीता साइर्ए एकी—स्ट्रॉटिक कि तावच भी भाइर्ए छन्न है । श्री-तानजीको बास्तीकिन साइर्ए ताला भी चनवाला है । इसी साइर्ए ताबादे विचयमें उनको साधारण अनुस्यक्ष करवालीय श्रीसीतानीका परिवारतक भी करवाला पहा । इसका बारव्य यह या कि तानाको कनशुनिहास सीताजीके प्रति कर कर्या-वा पता समा वस उनको यह सम्बेद कुला कि हुस राष्ट्राके हस सावका वर दें कि साधारण सन्ताम हुता सहस पढ़े । यस, प्रजाम इस महास्थी उन्दू सुवाकाको संका होते दी भाइर्प राजाका को कर्यन्य हो स्थाप कहाला है वही शीतानने किया। प्रयोग सावकी कर्यों करवाला है वही शीतानने

> स्मेई दमां तथा सीस्यं बदिश जानकीमपि । भाराधनाम क्षेत्रसम् मुखतो नास्ति ने स्वया ॥

यहाँ 'कारायनाय' यहमे 'मसझ करके क्रिये' विश्ववित महीं है--विश्वयित है 'रकदाय' रकाके क्रिये--'मसि-पासनाय'--मरिपासनके क्रिये ।

सहाइरगोंके वरित्र-गरिष्यमें वह सरख शकता धाररक है कि वे 'सहाइरण' दे। शायारख इलगोंने को तियम छानू होते हैं, वे उनमें नहीं हो सकते, न साबरख इरगोंने देने उक्कोटिके वरित्रको समम्मनेकी शक्ति हो हो सकती है।

दुःसकी यागमें कोन नहीं जलता ? रास रता एक गाममों उमर लांक मुल स्थाय । गुमली स्थारे हुने रहे नह दुसकी आगि ॥

दास और परम-पद

(केलक-पं भीरमारोकरवी मिश्र 'शीपति')



च-म्यापिनी, मुचन-मोहिनी, मनोहर-मायाके रूप कीर खावयपरा मुख ही जानेकी मुद्रर कालसा क्लिक्टे इट्पमें नहीं होती ! सांसारिक ऐकार्यके ह्या माना देती ! तिव क्लिक्टे क्या कहीं बना देती ! तिव प्रस्तु क्या कहीं बना देती ! तिव प्रस्तु क्या कहीं काल कीर

जीवनको सर्वेष धायनपूर्व परावेश करनेको भाक्षण किसे धाइक वर्षी किया करती है महुष्यमात बन स्वार्थ-चाके विषये कर्युक सर्दे हैं, सभी सन्त्र, प्रश्चु, सरा और रिगके अपने चक्ता चाहते हैं तब द्वार हो प्रकेश क्यों धारने चिकारको निर्दाचन चायनस्वारका धाइत आस्थान युना करें दे दासका ही कालकारक वर्षी क्यों के सालिक भारताओंका समार्थ-स्थाब करता रहे हैं इस साहातुमार सी वर्षी कर कर बाजने के विषये हैं कि इस साहातुमार सी वर्षी कर कर बाजने के विषये हैं कि इस साहातुमार सी वर्षी कर कर बाजने के विषये हैं कि इस साहातुमार सी वर्षी कर कर बाजने के विषये हैं कि इस साहातुमार सी वर्षी, स्वामियानपर इस्ता प्रकार, स्वामक्षमन पूर्व सार्थाननके स्वार्थेस हर्षी स्वर्थ स्वार्ध है और देशको क्ष्यायननके सार्थेस हर्षीण दिवार है।

सारण ही दासजा हुते हैं, इंसजिये जि बसमें धीर विश्वण्यासनामें बारस्पांक विरोध है। दासको धरणा ग्रीण वेदर पार्य ग्रीणकी तथा बस्ती पहती है। सम् अपन भीत कर्मले सार्य क्यानीड खनुकू ही धर्म आवश्य क्याने वहते हैं। वश-व्यवपत, आनं-सप्तामक मेहसावडी शुवा-का शाया, विशासने दिश्क होकर, क्यान्सी शावतामें ही कर्मी व्याचन-वोपनाको मह बर होगा बहुता है। हैंसते-हैंसते आवासी खाहित च्यानी होती है।

दासकी निधियाँ

पूर्व सम्मोष, व्याप, प्रमा और बहासीनमा हासकी मिथियों है। सामांद्रणे बारतर बसके हादये बहारी निर्धि मो होनी है। विमासी हर बारेचे हिये कनुरायका चार-विमासीय सामने पास दी तीना है। सह, साम, कामांद्री मान्युसियें कसे क्यार कामान्द्रा कमहूम कहबारत दिन्हामी पहणा है। जिलाबारी कमाद्राम कीमुत्ता को कमाद्री तिमी समाने हैं की कामान्द्राम कामान्द्राम को क्रमेंद्री कोमणे बसी चार-बारा कमाना हुमा मुक्ता है।

दास और प्रभ

• यस, इदि, विधा और विवेक घडंकारकी याटियों हैं।, जिनमें एकर वाइ-तीम, वाइ-पवाणों में ही वाहाविक पुरस्का प्रमुख्य करने समारा है। एक ही जनम वर्षों, वरन, प्रमोक जन्मीतक यदि चयने रास्टपको मुझा हुया वह माया-मरीविकामें भटकता रहे सो कोई विचित्र बात नहीं। हुसीवियों एन विश्वयवाले निष्काम संयोको ही सर्वकेष्ठ समस्क कर स्थानीको रोवामें ही मन स्थानोमें प्रचला परस करवाय समस्ते हैं।

उमासे शंकरजी कहते हैं---

पुरुष प्रसिद्ध प्रकास निधि प्रगट परावर नाय । रघुकुल-मनि मम स्वामि सोइ कहि सिव नायड माय।।

भूतभावन भगवान् शंकर भी किसी कौरको धपना स्वामी मानकर द्वास होनेमें गौरव सममते हैं। स्वर हैं, गौरवका प्रस्त बहुँ कोई मुख्य गाड़ी रखता, क्वांकि द्वास जाड़ीपर मुद्दकी सेवामें हो, खुल मानता है वहाँ प्रमु स्वर्य दासकी पूजा करनेके लिए उछत हो बाते हैं। क्या— हिंग वापि विधिवत वारे पूजा। सिन समान मिय मोहि च दूजा। सिन होती मम दांस कहाना। सो नर सपनेहुँ मोहि न पाना।।

सचे वास, भय चौर शोकसे शुक्त होकर सचे मशुकी सेवा करनेके जिये चपक्ष सर्वस्य होड़ बैठते हैं। पवनसुतसे खंकेरवरका भाई प्रस्न करता है—

दात कबहुँ मोहि जानि अनाया। करिहार्दे क्या मानु-कुल-नाया।। तामस तनु कछु सायन नार्दी। श्रीति न यद सरोज मनमाही।। मस्य ऐसे दासका स्वागत किस श्रवार करते हैं—

म्ह्य देसे दासका स्वागत किस प्रकार करते हैं— दीन बचन शुनि प्रमु मन भागा। भुन निसास गहि द्वदय हगाया।। जो सम्पद्वी तित शवनहिं दीन्द्र दिये दस माथ। सोइ सम्पदा निमीपनहिं सहुचि दीन्द्र रघुनाथ।।

दास और शक्ति

दासको उन्हर्य हो उन्हर्य होणा कीन देता है है उनसे क्वारितित शक्तिक आदुर्भोत कहींने होता है है उनसे, आमित्रक कीर परिषक्त-सावकाल कहींने का जाती है हैं . के किन्यका विशेषन चीर बीरवासे स्वामीने कार्रे कहुद साहब कहींते करका हो जाता है है क्या सह दाम-सावकी सहन्याकोत्तास सीटा कह नहीं है है खदानु तो बरह, खप्रस, शामिरपोनी रही वा, प्रिनं इस्त इसमें ब्या सुद्धी में 1 राज्यती सुमर्द्धी तिय बरहारें अपित दसमें ब्या सुद्धी मो 1 राज्यती सु को मोतारें सामध्यन करनेका पर्योत बत्त दसकी बीचने ही में दें या 1 सनेक पीक्षांसीते पीवित होनेर दासक मार्ग सपीर को उठना है, सरीर प्रपासीते पावित हो कर्म और कर-सिहस्पुता प्यान कर जाती है तब होनीर्फ़ वासको बहु सपूर्व स्थानि होते हैं जिसके प्रमास सक्त स्वासको बहु सपूर्व स्थानि होते हैं निसके प्रमास सक्त

करसरोत्र सिर परसेउ इत्पासिन्तु रहुकीर । निरक्षि राम-छीव-धाम-मुख विग्ठ मई सब पैत ॥

दास और तप

द्वराय साची हैं, प्रतेक तरली भारते तरते रिप्ता हुए, भारेक ज्ञानी मोहमें पड़कर कार्यामीको गह हैं। परियास-स्टक्त उन्हें कडिनसे कडिन वह सीर करेति कें त्वक ओगते पड़े, वरना दासके तरमें वरते हैं। भगवान् हुजा करते हैं। कैसे ही प्रवोमन क्यें वर्ग दासको विचक्रित होनेसे प्रमु ही बचापा करते हैं।

पद व सही, शादुकायोंकी भी सेवा हात उही हैं। बतते हैं, उन्होंने सन कागये हुए अपनी उपला हूं हैं हैं और सबको भीग-विवासी कहीं हुए सह हैं। पदको भास होते हैं। तसक तिये हुए, नाग, जिंग हैं गण्यवे सभी वाजायित रहते हैं।

अनवराजु सुरराजु सिहाई । दस्तय घन सुनि बनद हर्या वेदि दुर बरत घरत बिनु ताना । चबरोड निर्म पगड वर्गा रमाविकास राम अनुतानी । तन्नद बगन विति वर वान्नी । यात रहिन समुसरिब बन्तुनी। मगति विरित दुन वितर विद् बरानत सकक सुकवि सनुष्यादी। सेस-गनेस मिरा गुंबी

यह है दासकी, सपस्या जिसका वर्षा महिन है। बरन् व्यासमब वै। फिर उस सपस्याका वर्षा महिन सम्बोर्स करते—

तात मस्त तुम परम-पुरीचा । स्तेक बेरविर हेन हरें हैं करम बचन मानस निमक तुम्ह समान तुम्ह टाँ । गुरु समाम क्षु कच्चु गुन बुसमय हिमि दरि गई।। बच्च मर्गसाकी पूर्वि बिरेहमी कर होते हैं- मरत-राम-गुन-प्राम-सने हू । पुरुष्ठि प्रसंस्व हाउ विदेहू ।। संबद्ध स्वामि सुभाउ सुदावन । नेमु प्रेमु अदि पावन पावन ।।

दास और दीनवन्धु

दीनवन्त्र सदा दासकी रिच रखते हैं। प्राचींसे प्यारा बानकर इदयसे समाते हैं और सखा पूर्व बन्धुके समान मानते हैं। भीरामधीने नीच निचादको अपना सखा बनाया या, जिसे गुरू किस गर्वमरी वायोसे कह रहा है—

कपदी कायर कुमति सुजाती । लोक बेद बाहेर सब भाँती ।। राम कीन्ह आपन अवहीते । भवर्जे मुक्त मूचन सबहीते ।।

पेसे करटी और इजाठिवाजे दासको कैसा बादर मिछता है, वह इन पंक्तिगांसे प्रमाखित होता है—

राम सका पुनि स्पन्दन् त्यामा ! चके उत्तरि जमभत अनुराया !! कोड बेद सब माँतिहिं नीचा ! जायु छोड खुड देवब साँचा !! देदि मिरे अंच राम-कणु-मारा ! मिकत युक्तक चीर पृतिक गाठा !! कड्डार्ड कहेठ पृडि बीवन काड़ ! मेटेट राजमद्र मिरे नाड़ !!

दासका ऋण

विकृत्यम्, गुरू-बया श्रीर देव-बयाये जन्नवा होना । सर्ख है किन्तु सासके ब्याप्टे कब्या होना कारण्य किन है। हास म्युप्तवस्य ता कर नहीं साहता नो कर हो अपुर्वस्य से से स्वित्य बया बाहरेके किये वात्म-क्यम पर्-सरोज-रोवाका है। परान नाँगा बरता है। वसे रोवामें ही। पराम-त्यक्री रावाचित्य पर्व तेसा कार्योत है। क्षेत्र हुम्मा प्रामा मिळता है। ऐसी दयाये अपुर्वेग वहां साझेच्य होता है। वहां साम्य प्रास्त्रोत प्रप्ताचेत्र और अप्तरा सर्वश्य वसे सींच देवेके स्वित्य प्रमुखे भीर कोई क्याय नहीं सुम्ता। परनकुमारते

सुनु कीप वीर्षि समान उपकारो। नार्दि कोठ दुर नर सुनि वनुषारी।। प्रतिउपकार कार्ठे का होरा। सनमुख होस् न सकत बन मोरा।। सुनु सुन तीर्षि जरिन में नार्द्या। देखेठें करि निषार मनमार्द्या।।

पेसी दरामें सामीको ऋषाने उन्हाय कारोजे जिये शास किर वन्हीं परयोकी रास्य बाता है। स्थान समेत मुळपनो गुरू कर देनेके जिये महाको वन परवाँकी बाद दिशाना है यो सहज हो पापायकी शी प्रतिसाको तार विशास है हो।

् चार बार प्रभु धहाँहैं ठठावा । प्रेममगन तेहिं टठनु न माता ॥ प्रभु कर-पंकत कपिके शिसा । सुनिधि सो दसा मगन गौरीसा ॥

दास और कर्त्तन्य

सेश-पर्म ही शासका परम कर्जन्य यन आता है। पद्म, राम, मत, विधानवि सभी सेशके शरूपमें परिपत हो जाते हैं। श्वामींकी जब कभी जो हपाम हुई रहे पहों पूर्व करता पहता है। हपाम न भी हो तो भी सेशसे मुख मोहनेकी यहाँ गुंजाहण नहीं रहती। जनमध्यत्री भीतमकी सेश किस महार करते हैं—

. सेवर्डि टबन सीय रघुनीरहिं । जिमि अन्विकी पुरुष संरीरहिं ।। सेवर्डि टबन करम मन बानी । जाय न सील सनेह बखानी ।।

कभी कभी मुद्दुकी चाहा कपुर्दू हो जाती है, उसमें बहुकी-बी कहोरता, विपकी-सी कहन कीर वापकी-सी मार्मिक क्या भरी होती है। तारका मन तिकित्तका रुठता है, सरक्ष पुस जाता है और कर्तव्यरास्प्यता कीर बाता करती है। तिन वनक-निद्मीके किये ससंस्य बानरोंको आया दिसतित करने पड़े थे, सम्मयको हृद्दुपर बानरोंको आया दिसतित करने पड़े थे, सम्मयको हृदुपरा बंक सहनो पड़ी भी कीर तांड्यके बेरका निमार किया गाम मा, जर्मीका करमान स्वरं सर्वादा-पुरुगोक्तम करते हैं और सार्ट्स संस्थान-सर्वित सुकुमा-दुरुगोक्तम करते हैं और सार्ट्स सरम्यक-सर्वित सुकुमा-दुरुगोक्तम करते हैं हो स्था बच्चायके हृदुपर्स अत्य-वननीत्त्रनकों होते काफी सह-मीत न सी देशी करवर ! किन्द्र प्रसुक्त साहाके सम्मुल, इच्छाके दिस्त, शसको विवा इच्छापूर्व करनेक और कोई पारा

हुनि ठाउँ मन स्रोतांक बानी । बिरङ्-बिनेक-बरम-नर-सानी ।। रोजन सकत स्रोति कर दोक। ब्रमु सन क्यु कहि सकत न स्रोक। देखि सामस्य राउँ सनु याए । पानक प्रगति काठ बहु काए ।। यह है सासकी सेवा क्षीर हतना है कठिन कर्तन्य !

दास और आत्मसमर्पण

धारहारायां व्यक्तियको छोतकर जिस सामय श्रीवासा प्रमुक्ते पहार्थीम कामसम्पर्धक वर देता है और धारमान्दरिक इदक्क उपास्त्रदेवों कर उसके मन पूर्वेण्या स्थित होतर करा वाचा-बता है, उसी सामन विष्युप-सहमायी-भोड़ाराक महरिक्क धावतक भीचचे हट वाया करता है और शास उस समझक धीनाशी शिक्ते भीचरचींने चीन हो भाता है । बोगी, मती हसी सुचोगके विषे यह किया करते हैं, क्रिन्द्र जनका उपस्तात्मिक सुसारे करी धारस है है। कारण, शामका श्रमाशावित्व सविकांगर्मे प्रमुख ही हुमा करता है भीर वे भाग्ने शेषकार ग्रीति भी करते हैं---

मुनद्व निमेशन त्रमु कह रीति । कार्दिससमितकार वीति ।।
कहाँ चामारमार्थय हुचा, प्रामु अनुको भी कारताने हैं
धीर चपने पामका कथिकारी बनाने हैं । बाबि तुक,
दुसचारी भीर परिता था, किना---

• राम बाठि नित्र पान पहारा ।

पिराप चारुर था। श्रीशामने नुद्ध शनकर सम्मुल काका था। बसे भी बन्दोंने चपनाया—

तुरति दे विद सपते दिवाना । देशि हुनीः नित्र वाम वक्तरा ॥

कडींगक कहा वाच। याना नामयने भी जो प्रमुक्ते समीप भाकर अपनेको सींग देने हैं, वे वाग परमप्तके अभिकारी यन जाते हैं। रांत महिस की दीन दिएवडी। कीन्द्रे मुक्त मिना हो। कर-सरमान कामान राज्य । स्ति वर्ष में मुनेश स्म कम्माने इतना ही कहम होना कि जिन सम्बेर्

वे चान निश्नकन्युव्य स्वतुन वानि नुन्त्यीती। नव्यतिनीता सुनि बर्रिशा वैशेतव बान गुन्ती। चान कुरित-चेतुन-बान-तुन वन विश्व बण्ड निर्माश

परन्तक ईंड मुद्दार राम रोस निम सारी। -गाया मानेवर गणिरीनिक दुर्जामी सुन्द होकर गरम ी प्रीर्थ

चाचिरीनिक दुःखींने मुख दोकर वस्त वर्षे परको मात होने हैं, बन्दीकी सेवाने, मनुष्य सका कर्मम्परसच्या चीर सकत सिर्फ है। बासनाका दाग बनकर नहीं, बाद मनुष्य ही बासनाका दाग बनकर नहीं, बाद मनुष्य

निपादका प्रेम

(क्सक-आचार्य जीजनन्त्रकाष्ट्रमी गीरराजी)

ततो निरादापिपति रण्ट्या दूरादुपरियतम् । सह सीमित्रिणा रामः समागच्छद्गुदेन सह ॥

मा ज

(बा॰ रा० २ । ५० । १५)
युर्वमय सक्य-मेममें शान्त और द्वास्य—धोनों
मकारकी—जगासनाओंकी अपेका प्रशिक्ष
धास्तादन हैं । ईसके रससे अधिक निज्ञास
गुढ़ पा सबसे होता है । सक्य-रससे शान्त-रसका आस्तादन पुनिश्च और दास्यका सेवा-खुल, यह दोनों को होते हो हैं, किन्तु इसमें नि-साहोब भीमां विशेष होता हैं।

इसमें निम्सङ्कोष 'मेम' विशेष होता है। निपादराज निना एज-कपटके सीचे-सावे शब्दोंझे निम्सङ्कोष-मानसे कहते हैं—

नाहि रामात्रियतमा समास्ते मुनि कश्चन । (वा॰ रा॰ २। ५१।४)

षद्द समुर 'मियतम' शब्द प्रेमी निवादके ग्रुँडसे ही नहीं, इदयते, करक्से ग्रीर प्रत्येक क्षीम-कृपते, शीखाके क्षारोंकी सरह समकार रहा है।

भनवासी शिकारी निपादके मानीमें कोमखता, व्यवदार-भीर भीराममें समताका कारण ग्रेस ही है। सम्बद्धमृतिहास्त्रात्तीः भनतादिशासदिः। मादः स यद सान्द्रारमा दुवैः प्रेमा निरुप्ते ॥ (भक्तिसम्बद्धन्ति)

निस भावने इत्य क्षेत्रक होता है, जिसमें वर्ग समता उत्तक होता है उसीको तुष्त्रन 'मेंम' करें हैं। निपादराज और ओराम, धर्जन और औहमा, रा

सीर श्रीवेतन्त्र, मक और मगबादको जो ही प्रदर्शनी इससे वक्ट प्रेमावस्था और कीन्सी हो सर्वा है प्रेमी विषाद राजीवकोषन औरामके शुवसे वर वर इर्ट है। जिसको सारण उसे स्वसमें भी न मी-कि,

भागस्यान्युदितं सत्यं नासत्यं रामगस्तित्। (भ • ए • १ १ १ ११

सीराम, प्यारं विचारसे निवानेकी सामाव देंगे कर उसे ह्यूपसे खगा बारवार समम्बते हैं। विपर्ण उप हैं, बोक्टें भी तो क्या है करत गहर हो ता । स्रीकार्स करनर प्रमास डकक रहे हैं, इरवर्ष सामा है

> 'हाहा कदानु मनिवासि पर्द दशोमें।' (इन्याकर्णमृत

प्रेमीके हरपका भार कौर जाने । हरपवज्ञभको असने इ प्रकारते हरपमें रहजा, पर प्यासन मिटी। श्रुति हसीको इर-सम्बन्ध कहती है, वही परम रस है। 'रसो ने सः।' निपादके निष्कपर, निस्तार्थ प्रेमपर जिवना भी किस्ता जा सके, वोदा है। जो इस क्षेत्रीसे पहुँच जाते हैं उनके बाह्य धर्म-कर्म इस्तु नहीं रहते। वदि मनुष्य इस उज्ज्वल प्रेममें मध्य हो जाब तो संसारते दुष्ट विकारोंका समृज नारा हो जाव। पवित्र प्रेमाप्ति सबके हृदवर्म जल उटे। &

दशरथके समयकी अयोध्या

यह महानगरी बारद योजन सम्बी थी। इसमें सुन्दर म्बी-चौदी सदकें बनी हुई थीं। सगरीकी प्रधान सदकें तो द्भत ही सम्बी चीही थीं, जिनवर रोज जलका बिट्काव . ता था, सुगन्धित फूल विलेरे काते थे, दोनों खोर सुन्दर च रागे हुए थे। मगरीके चन्दर चनेक चाजार थे, सब कारके थन्त्र (मशीनें) धीर युद्धके सामान सेवार मिलते । यहे पहे कारीगर वहाँ रहते थे। खडारियोंपर व्यक्ताएँ इराया करतीं थीं 1 मगरकी चारवीवारीपर सैकड़ों राखशी तोपें) क्षारी हुई थीं, वह मजबूत किवाह खने हुए थे। गरके चारों होर शासव चन्ही इसरी चारदीवारी थी। जाके किलेके चारों चोर गहरी खाई थी। चनेक सामन्त, जा और शुरवीर वहाँ रहा करते ये । व्यापारी भी चनेक इते थे। नगर इन्त्रको पुरीके समान वहे सुन्दर डंगसे स्ती हुई थी। उसके चाठ कोने ये। वहाँ सब प्रकारके रख रे और सात-मंत्रिले यहे वड़े मकान थे। राजाके महलों में ल जदे हुए थे। यदी सघन बन्दी थी। नगरी समतख-भूमिपर यसी हुई भी। खूप घान होताया चौर चनेक मकारके चौर पशार्थ होते थे । हकारों बहारथी नगरीमें शहरे ये । वेश्वेदाप्तके ज्ञाता, ऋप्तिहोत्री और गुव्ही प्रस्वीसे नगरी भरी हुई थी। महर्षियोंके समान अनेक सहात्मा श्री वडाँ रहते थे।

डस समय इस स्पर भगरी धर्मीध्यामें गिरन्तर बानस्ट् में रहनेवाते, खनेक शाखोंको क्रवस क्रमेनाट्रे धर्माता, सम्पदादी, जोभरदित धीर धरने दी घरमें समुख रहनेकाले

स्रो हुँदे सी नहीं मिलते थे। वहाँके सभी ख्री-पुरुप धर्मारमा इन्द्रिय-निमही, हर्षयुक्त, सुशील और महर्षियोंके समान पवित्र थे। सभी स्नान करते, अरहस्र-महर-माला धारण करते. संगन्धित चस्तर्शोंका क्षेत्रन करते. उत्तम भोजन करते और दान देतेये। परन्तु वह सभी धात्मवान् थे, सभी चन्नि-े होत्र और सोमधान करनेवाले थे। चन्न विचारका चरित्रहीन. चोर चौर वर्ख सङ्गर कोई नहीं था। वहाँ के जितेन्द्रिय ब्राक्षण निरन्तर चपने नित्यक्सोंमें क्षगे रहते थे। दान देते थे. विचान्यचन करते थे, परन्त निपिद्ध दान कोई नहीं क्षेता वा । श्रवीप्यामें कोई भी नास्तिक, कुठा, ईंग्या करनेवाला, अशक और मृद नहीं था। सभी बहुशुत थे। ऐसा कोई न था जो बेद हे छ: धहाँको व जानता हो, मत-उपवासादि म करता हो, दीन हो, पागज हो या दुखी हो। अभीश्याने सभी श्री-पुरुष सन्दर श्रीर धर्मात्मा राजाके भक्त थे । चारों वर्णोंके श्री-पुरुष देवता और अतिथिकी पुता करनेवाले. दुलियोंको बावरपकतानुसार देनेवाले, कृतक्ष और शूरवीर में। वे घर्म चौर सत्यका पाजन करते थे। दीर्घजीवी ये भीर की-पुत्र-पीतादिते कुक्त थे। वहाँके कती माझखोंके चनुयाबी, दैश्य चत्रियोंके चनुशयी और ग्रह सीवों वर्षीके सेवारूप सकर्ममें लगे रहते थे। नगरी राजाके द्वारा पव रूपसे सरवित थी। विधा-वृद्धि-निप्ण ध्रमिके समान तेजस्वी धीर शत्रुके धपरानको न सहनेवासे थोदाधाँसे श्रयोच्या उसी प्रकार भरी हुई भी ैे रहती हैं।

श्रीरामायणका महत्त्व

(लेखक-पं• श्रीस्थामसुन्दरजी यानिक)

सद्दे प्रमुणावतं गुकिना श्रीक्षम्मा द्वर्गमम् । श्रीमद्रामपदान्द्रमाकिमानतं प्रास्ते वु रामावणम् ॥ मरत तद्रपुनाधनागिनतत्त्वन्त्रसामः (शन्तवे । माणवदामिदे पकार तुल्तीदासस्त्रवा मानसम् ॥१॥ पुण्यं पापदरं सता शितको विकानमिक्रवदम् । माणवान्त्रसाम् कृतिसर्वः श्रीमानमिक्रवदम् । मीमद्रामपदासम् कृतिसर्वः श्रीमान्त्रसाहिति वे । वे संसारस्त्रप्रधासिकरणेर्वदान्ति वे ।

श्रीरामायध्यीके महत्त्वल में कृष्ठ विकाने-योग्य नहीं, परन्तु ममचरनाथ गरुवके समान ही एक गुण्युतर मण्युर भी घरनी श्रीकेमर काकारामें बदता है। उसकी कोई निन्दा नहीं करता, हसीके क्षत्रसार यह गुण्यु व्यक्त भी श्रीरामायध्यीके महत्त्वपर कृष्ठ निवेदन कानेका साहस करता है।

श्रीगोस्वामीजीके वचनोंसे⊛, श्रीरामायवाजी.

'धीरामतन्तु' हैं—

त्रतायः त्रमु पाँवँ, अयोष्या कटि मन मोहै। उदर बुन्मो आरथ्य, हृदय किन्दिन्या सोहै।। मुन्दर औत मुखारबिन्द केना कहि गाये।

बेहि महें रावन आदि निशापर सर्व समाव ।। बत्तर मस्तक मान हरि-पहि विभि तुलसीरास मनु । आदि अन्त स्त्रें देशिय-(श्री) 'रामायपा-'शीरामवतु'।। जिस मकार परमारमा श्रीरामजीबदा श्रवकार जहान्युंह

होता ई---

4.

तिनंद गृह अम्मीर्देश गाँ । शुकुल-तित्रक मुचारिह माई।।

द्दीक बमी तरह चतुन्दूंहर श्रीमक्ति-महारायीका बजर भी बाम, घाम, श्रीमा तपा रूपके रहरूपमें होना है। श्रीरामायवा-बी—नाम धामादिनयी होनेसे श्रीमक्तिका भी स्वरूप हैं। 'भक्ति सक समस्ता गुरु बहुत तान ता ता-उनको औराम-तनु सूचित हिया, घर प्रक्रिनस्ट ड दोनोंका वपु एकहें। औरामनतु कहिरे क्या ^{प्रत}े स्वरूपा बोलिये, बोलीमें भेद है, बात-एको प्र^ते औरामायखाओं अस्तिस्पका क्याँद तान, वा, रं

रूपमय रूपका भी दर्शन कर सीजिये-

'नाम'—पश्चिमई स्पुर्गत नाम वराय।' करेर हैं रामायकातीमें श्रीनाम-महाराज, सूत्रमें हरिशे हैं भोतमोत हैं।

'पान'—श्रीरामजीका खवन (वान) हो है है। 'कीका'—श्रीरामाय्यजी, श्रीसरकारिशीर (हैं' से को परिपृय' हो हैं खतः वे बीजानयी स्वस्टी 'रूप--'रामाय्य' श्रीरामतत्व' से रूप में हर में हर

'रचुबरमगति प्रेम परिमित-सी'

भकि-मायल्य कमय कारय-कार्य भी हैं को रांभी। यही दोनों जरूप हैं। गुरु और भक्त हनते आ हैं
कानेवाले हैं। वास्त्रहमें परियासतः चारों रह है हो
कारा अधिरामाययानी गुरुक्य भी हैं-छरड़ा मार्ने गोरोक।' अकर-क्या भी हैं-छर होते हैं। होतेक।' अकर-क्या भी हैं-यन हिर निवर्ष होते हम्मादि। ताल्य यह कि सीरामाययानी मार्नीव भी तालु हैं। पात्र करंत ग्रामां प्रतान कर हरते मार्ग यह सीनों कालार्स कोई हैसे आह बर सरीना।

कर्म दो प्रकारके हैं। सकाम कोर निकार। कर वीविक्क सुरवदायक, निकारम-चारवीकि कि दावा हैं। 'रवि-रजनी' सम्मेखनकी भाँति नाम निवायका संयोग कारास्मय ही कहा बादता।

मीएमएकप्टें मेमोमनेको वन दिवसनाथे दानाने अधिकण द्वारा चाहिन कि कुम्साद मोगासामीमें क्ष्मत हो। जनसे बन्नो मार्थणक नहीं, दिन्त वह मार्थीकि, दिव्य वाणी है (Toerr ishuman) ने पृष्ठ हो मार्थी है : चनसे मार्थिक वाला के दिन हरने होने वाल नगर मार्थक पहिचार कर देना होगा।

वन करिन्दरानों क्यारे शिकान परितासकारों जातर वरिता वर्षावर कराया करणा करणा करणा करोगाता करणा नवाया ने निवासकार्यकार है ही, दिना वर्षेत्र कृति वर्षों के स्वति है। करोगाता करणा नवाया ने निवासकार्यकार है ही, दिना वर्षेत्र कृति वर्षों के स्वति स्वति स्वति स्वति है।

रातायणजीका श्रवणमात्र इस 'श्रासम्बर्ध' पर भी त्रवाल पोत देवा है। व सकान नर सुनहि ने गानहिं, सुख सम्पत्नि नाना निषि पानहिं॥

व संकान नर सुनार य गानाह , सुख सन्यात काना हाम पायक सुर दुरल म सुखकरि जनमातां , जनतकल रघुपतिपुर कारों ॥ जन-मेनल गुनग्राम रामके । रानि मुक्ति घन धर्म घामके ॥ समन पाप सन्ताप सोकके । प्रिय चारक परिशेक लेकके ॥

मंतमहामणि विषय न्यारके । मेटत कठिन कुलेक माउके ॥ हमारे कमेंद्र भाई, कटाचित इन राज्योंको कविकी

हमारे कमेंऽ भाई, कदाचित् इन राज्योंको कविकी विरायोक्ति माने और नयी सम्बताको तेज रोशनीमें मिरामाययाजीके महत्त्वका दर्शन राज्यद निषट हो बसम्मव

1 इसें उनसे कहने-मुननेक प्रवकार नहीं । हमारा के प्र-निवेदन खेवल श्रीरामजीके सनीते ही है । श्रीरामायणनी एक कविकी केवल कविवा ही नहीं हैं.

काराभाषयामा पुरु कानका फरख फानवा हा नहा हु, इ. प्रज्ञीकिक दिष्य शक्तिसे परिपृरित हैं। श्रीगोस्वामीओ वर्ष कह रहे हैं---

'मणित मोरि सिव-कपा विभाती ।' 'सुनिवि सिवासिव षाइ पसाक ।' 'तस कहि हैं। हिथ हरिके मेरे ।'

वनकी मस्यव पता दिकानेवाळी बात भी सुन खीजिये-

सपनेर्ड साँचेउ मोहिपर जो हर-गीरि पक्षाउ । ती पुर होउ जो बहुँदु सब माशमनित प्रमाउ ।।

चतः भीरामापदाजीको कविता न समकिये। यहबह भागस है जो मन्त्रमय सुन्दर वारिसे अवासव भरा है। इसपर एक फाज्यायिका समिधे-

एक बार भीएएससी वारणाई दरवारेज विराज रे में 1 उनसे पुरा गया कि 'करिला' सर्वेत्रक्ता किरको है ितरिकासके बतायों 1 उससे मीस्पूर्णकारी करा-'करिला मीरो सर्वोत्त में हैं। इससे बारणाईक स्वाच्या हम्मा, नरोंसे बार्चाव्य करिला करिला कि स्वच्य मती। सारवे करने हैं हिते करानी करिला है। स्वच्या हैंडे कहा है ना इसने कीई रहत्य हैं। गोस्तानीजीक करिला कि स्वच्या कि स्वच्या करिला है। बीसुरहासकोचे प्रशुक्तपकर कहा-'शीरोश्यामीतीकी कविताओ साथ करियामात्र जानते हैं ! मेरी भावनारी की वह कविता चर्हें, महामन्त्र है ! मैंने वो शपने काव्यकी रखाया की, को तो हसीसिये कि, उसमें 'मगबद्यरा' शंकित है !

सन् गुनरहित कुक्दि क्व बानी। राम नाम-वश् वंक्ति वानी।। सादर क्हिंसुनहिं भुष वाही। 🗴 💢 💢

इतचा कडका सुरदासजीने वादशाहको श्रीगोरवासि-पारका वास्त्रिक सरूप बतला दिया ।

खेलका कलेकर यह रहा है, इस भयसे यह मतिहीन भीत है। वस केवल शीवेबोसायकारी क्षणित भीतामायणी-के परलगर दिन्दुर्जन करा देना शेप है, सो भी संखेपसे ही। चमा कीलिए ! 'श्रीतम्बारितमामान' कैसे, क्षत्र, और कहाँ बना और

जाराज्यारकारका कर, बर, आर कहा बना आर वह किस महत्त्वका है? इसका उत्तर हम भीवेद्यीभाष्यकी के मूल कायसे ही भीरामकिस्तरसंख्योद्वारा अनुवादित सम्बद्धों में मक्ट किये देते हैं—

'शुमाबसमं श्रीमारविषग्दनने एक दिवस प्रसध होकर ग्रीगोस्वामीशीसे बहा-''श्रव तुम यहाँसे श्रीघरघकी बासी बीर वहीं कुछ दिन विवास करो ।''

इटको बाजा पाकर वे खते थीं। तीपैराल-प्रपार्थों सहै। बस समय सकर-बानके विषये वीगी-स्पार्थों, तंन्यासी-स्पार्थां एवं खतुः चीर मुखें सभी सेवीचे बोंग की हुए वे । वर्षे बीत व्यत्पर दः दिनके बाद करोंने देखा कि सुन्दर कपवयरको सुकद-बामाने हो हीन बैठ हुए हैं। होगों समये कपन्यको सुन्दर सामने हो हीन बैठ हुए हैं। होगों समये कपन्यको सुन्दे भी दिन वाती है। हुए हैं। देखाने सामने कपन्यको सुन्दे भी दिन वाती है। हुए हैं। देखाने स्वान करके बहाँ हाथ बोदकर सदे हो गये। वननेते एक सिन्दा अस्त कर सामको हुए हार सुन्दार्थों। एपीएर ही के स्वा । उस कह सामको हुए हार सुन्दार्थों। एपीएर ही के यथे। उस्कृति बसना बरिचय दिया और उसका स्विचय प्रार्था

के महाला भीतेरामां की एक्सफीन के। बीवाववासी सन्त-निर्मणि सीमान् वे एक्सफारामां की स्वाप्त महाला महाला की साम क

कमाकी यथों हो रही भी तिने इनके गुरु (बीतरहवांतन्त्र-जी) में बातपनमें गुरूर-पेनमें बयांन किया था। कावर्त-यकिन होहर श्रीमोरनामीतीने उसका गुरु रहरण उन्हों पूछा। मार्ग प्रयानस्नतीने उसका गुरु रहेण कहाने जीने इसकी रचना की, पीछे समय पाकर हुने मचानी के गुनाथा। फिर श्रीगुग्रीविक्तीको हुनका उपरेश किया। में ने जाकर श्रीग्रुग्रीविक्तीको हुनका उपरेश किया। भाहानतीको गुनाथा।

इसम्बर्धः अनिरातने गुरु समयरितमानस-साराई। परायरा सुनवर वे चरवाँमें पह गते, पुगल अनीरवर बहुत मसत हुए। तम सावधानतापूर्वक सुगल-सुनिवरोंका विसल संवाद उन्होंने अवया किया।

ट्सरे दिग जय थे उस स्थानपर गये, तय उसे स्ता पाया। म शुगत शुनि थे, न वद यद धाँद धाँर न पर्यांक्टी शीपी। वे विसयकी यहमें यह चले। छहा।

प्रगत मनिवरोंके गील स्वभावको सारण करते हुए वे वहाँसे चले । परम्तु भगवदिच्छासे काशीकी स्रोर निकत एवं । कुछ दूर चले जानेपर उन्हें विवित हुआ कि मार्ग भूल गये। तब बह विचारने लगे कि सब क्या करें ? कीट चर्ते या इसी मार्गका चनकुम्बन करें ? चन्तमें उन्होंने यही निश्रंय फिया कि जो हुचा सो हुचा, चय इसी मार्गसे घर्ते, काशीमें भगवान् बांकरका दर्शन करके श्रीयवध चले जायँगे। यह सोचकर वे व्यागे वर्दे और चलते-चलते गंगा-त्तदपर पहुँचे । फिर किनारे-किनारे चलते रहे । जहाँ सन्द्रवा हो जाती यहाँ दिक जाते। तदनन्तर ने वारिपुर और दिशपुरके बीच चनस्पत श्रीसीतामदी पहुँचे । यहाँ चासन जगाते ही उनकी चित्र-वृत्ति केन्द्र-च्युत हो गयी। म भूख, म ज्यास चौर न निम्ना। विचिस-की-सी दशा होगवी। साथ ही उनके पूर्वजन्मके संस्कार जागृत हो उद्वे। वहाँ श्रीसीतावटके नीचे तीन दिन रह गये और हुछ सुन्दर कवित्त (जो श्रीकवितावलीमें वर्षित हैं) बनाकर, मानसिक-उद्गार किसाल धारो दरे।

सार्गर्मे विरुप्यावत (जुनास्ता) के राजाको वन्दीगृहसे पुत्राते हुए अनिराज (श्रीमोस्तामीजी) काणी पहुँचे। वहीं महाद्र-पारश एक माह्यको पर टिके। वनस्तर उनके हर्पमें उपान्नी तर्गर्गे कार्यों को वे श्रीसम्बन्धितका वर्षान करते को, परमृष्टिनमें स्वीहुई कविता साराधानता पूर्ण मुगरित रक्तपर भी राजको कोण को जागी थी। मिनिन यह खोन किया होती रही। हुए बाव बंध पिन्नामें पड़े। बचा करना आदिने, इन मस्ते सं स्वारा था। कारने दिन शीमस्तिनने स्वत्ते वार्त कि - "तुम कारनी मार्-मागमें काण्य स्वता को। दि संग हुई बीर से उठात दिन गरे। मनने सीस्तारे में गूँव रही थी। सन्यय भारान् मूरनार मार्गर्नरे मक्ट होगये। गोसाईनीने साराप्त प्राप्त क्या दिन करा-दीन कारने मार्-माग्तिमें काण्यो राग दिन करा-दीन कारने मार्-माग्तिमें काण्यो राग हैं देवायी मंहरूत थीं को सो है कि देवायी संहर्ण करने सार्व कार्य है हुए मूँ जा कि कलाया हो, बढ़ी करना आदि है हुए मूँ जा कि सहित सार्व करने हैं निम्म हम मीर्गर्की वाहर बास करने थीं है । यह हम मीर्गर्की वाहर बास करने थीर वहीं सपने काप्यी राग की संक्राय सार्व करने सह स्वत्व कारने सार्व है ।

इस प्रकार उपवेश वेका श्रीतमान्तरेवा कर्नामे गये । अपने भाग्यको सराहना करते हुए हुन्ये श्रीयाध्यादुरीको जले । जिस दिश बारणारित्यां वर्षारेकको सम्मान मास हुया, उसी दिश झेतीलां श्रीययाध रहेंचे ।

अपरान्हमें विमल श्रीसरयू-बारामें स्नान हर^{हे ह}ीं पुलिन, बन-बाटिका और बीधियाँमें विचाने हरे। सन्त्रसे भेंट हुई। वे कहने लगे- 'चलिपे बीहरुमार्टी निकट में चापको एक सराय स्थान दिलडाई। सन्त श्रीयोस्वामीजीको वहाँ ले गये और उन्होंदे हैं रमधीय-स्थल दिललाया । इस स्थानपर हुप्त धुचाँकी विटपायली थी । उन युचाँमें एक सुविशाद कुछ था । उसकी जनमें एक सुन्दर वेदिका बनी हुई वी। ह वैदीपर चमिके समान रोजस्त्री एक सुप्रसिद निर्दर्श सिद्धासनसे बैठे हुए थे। उस मनोहर स्वडही शुसाई जीका सन लुभा गया । उनके सनमें वहीं हुटीर बसनेकी इच्छा जागृत् हुई। जब वे सिद्ध-सन्तके निकट पहुँचे तब उसने धासन हो। हा जयकार किया और वहा—'मेरे गुरुने मुन्ने धाना दो होते उसीके बनुसार मैंने यहाँ निवास किया था । श्रीपुर्दि इसका मर्म भी मुखे वतलाया वा चौर उसे में बार वेख रहा हूँ। श्रीगुरु सगतान्ते कहा था कि इन चीवनेपर गोस्त्रामी तुलसीदासजी यहाँ ब्राकर भीरामधी

वयां न करें ते । वे चादिकवि श्रीवास्त्रीकिगोठे कहतार होंगे और श्रीवारदुमारजीकी सरावतार्थ में बढ़ स्मादन कार्य करों । यही वाजकर राजात कुनेत है स स्थानमा व्यक्त क्याकर हमकी सर्वोत्तम मर्वोदा बाँच हो है । यब न मेरी प्राहा मानकर है स स्थानको परिष्ठत करने नहीं भन्न करा। जब हुत स्थानवर पोलामीओ उस मदार कार्यके जिये चार्ने, तप कुटी और सासन उन्हें सीपकर तन लाग करके मेरे पास पड़े सामा ! गुक्तीका उ वहेरा शुक्ते करवा हमा और से पंतक करायांनित पुक्रपत वज्य को प्रावा पढ़ी निवाय करके, पढ़ी के मुक्तका प्रमुख्य करते हुए उपाया-पूर्व में सामने सामानविक्ती यार देख रहा था। मनक्य है हमारी श्री साम वहीं मुन्युंक निवास करें । खब से प्रयोग पुरुषे पास जाता हैं।"

्षेश करका वे तिव्ह सन्त वेहिराओं वका पहे और स्वत हेतु पुत्र पूर्व सार्व पके तथे । वे वहाँ धासक बताबा प्रात्मातीयत हो गरे और पोतामिक हुता चार्चे गरीरको प्रस्त काले प्रस्त धानको चले गरे हुत्त वीचाको देवकर गुसाईमीने बहा—'हे घटुवेर ! तेती बिखारी है।' गुराईमी महत्स्पाल पावर वहाँ वहा गरे । एव

संपम्पूर्वक समय बिताने सरो। एक समय योदा-का तून में किया करते में। उन्हें केनल श्रीत्मुनायमीका मरोसा या धीर किसीका भी बर गहीं था। इस नरह दो वर्ष योदा गरे, परन्तु उनकी हुचि नहीं हिनी धीर संवर्ष ११११ का साराम हो गया।

त्रैता-पुगर्मे श्रीराम-जन्मकी तिथिपर जो श्रद्ध, शक्ति, स्राम, पोग सादि पत्रे थे, ठीक सही संबन् १९११ की शाम-जसमीको भी पद्मे। उस दिन प्रातःस्वास औमनारको बोहन्समन्ती अकट हुए चौर संसारके कत्मायके निर्मेश संपत्ते पद्वे उन्होंने गोस्तार्ग,बीको क्षांभिक्ष किया । चन्त्रतर उसा-सदेख, मध्येवजी, सारवर्जी, नारदर्गा, उपजो, गूर्णमनवान, ग्रुकाचार्य चीर प्रहस्पतिजीने संगत-स्व व्याजीवाँद दिये। इस विभिन्ने विस्तार तामनिरामानस-या व्यासम्बद्धाः। विस्तव्हे अवस्य करनेसे मद्दारम, कामादि समग्र किसर चौर सब प्रकारके संग्र मिर कारो हैं।

दो वर्ग सात महीने चीर छुटनीस दिनोंने क्यांत् सं १ १६३ के मार्गतीने मासमें भीगा-तिवाहके दिन क्षत्रामसंसे पार जतानेके जिये सात कहाज बनकर तैयार हो गये। पाजक-जनमाजो दूर वहाने, पिन्न सार्गिक प्रमें के क्यांत्रे, किकाजके पाप-कलानका मारा काने, हिर्माकिकी क्या दिक्काने, मतनातान्तरके वादिवाहको मित्राने, मेम-पान प्रमुंते, सन्तर्गते विक्तों अनानको सामा जलाव घरने, सक्तानिक हुद्यमें प्रमोद वहाने, 'हरि-पक्ति प्रिवतीते हायमें हैं'—हुद्य रह्यस्थित स्वतानों कीर विद्वत स्वतानां क्षांत्रमिति हैं के स्वतान से सीर विद्वत स्वतानां हुंसानिति 'हर्या पाना भीमवास्कों अध्याहके स्वता 'हुंसानिति' 'हर्या हैं तस्ताव' विचा गाम प्रमान स्वता स्वातानां हुंसानिति 'हर्या हैं विका सम्बन्धि हैंसा

वास्तवमें यह बन्य तो उसी दिन वनकर सैयार हो वया था जिस दिन इसका धारम्भ हुया था, परन्तु सनुष्यकी निवंक खेलनीने उसे लिखनेमें इतने दिन खगा दिये।

कीशय शतीने उसी समय हुए प्रन्यकी पाँच प्रतियाँ दिया क्षेत्रनीते विस्तवर सैयार की घीर वे तत्काक सत्यको क, कैवारा, नामको क, मुलो क एवं दिग्याजलो करें पहुँवक

क समन्तर्भ सर्च दशील छाइन्ने मुख्ये श्रीवायमें यह वहा था कि—'वार्यों सीवोसायों मंदि राम हरायाद सवा मंदिनायावर्गां के सा लगा मामानिक मामान

क्यांकी चर्चा हो रही थी जिसे इनके गुरु (बीनरहवाँनन्द-जी) ने मालपार्स गुरूर-वेतमें मध्ये मिक्या था। बावार्य-प्रकित होकर श्रीभोरवामीजीने उसका गुरु रहस्व उनसे पूछा। महर्षि पालांक्स्पनीजे उत्तासे कहा— 'वेन्द्रेन बाहादेर-जीने हसकी रचना की, पीछे समय पाकर हसे मजानीको गुनाथा। फिर श्रीमुद्धारिकांको हसका उपदेश किया। मैंने जाकर श्रीमुद्धारिकांको हसका उपदेश किया। भाहाजांको मुनाथा।'

इसमकार मुनिराजसे गुझ रामचरितमानस-शचकी परग्या मुनकर वे चरणोंमें पर गये, युगल मुनीरवर यहुत मसत हुए। तब सावधानतापूर्वक युगळ मुनिवरोंका विमन संवाद उन्होंने अवस्य किया।

दूसरे दिन अब ने उस स्थानपर गये, छव उसे स्वा पाया। न युगत मुनि ये, म बह यट खाँह चौर न पर्यांडुटी ही।पी। में विस्तवकी यादमें यह पत्ने। चला।

पुगल मुनिवरोंके शील-स्वभावको सारण करते ष्ट्रप वे वहाँसे चर्ते । परन्तु भगवदिण्हासे काशोकी कोर निकल परे । कुल दूर चले जानेपर उन्हें विदित हुआ कि सार्ग भक्त गये। सब यह विचारने लगे कि सब क्या करें है कौट चलें या इसी मार्गका श्रवजन्यन करें है धन्तमें उन्होंने यही निश्चय किया कि जो हचा सो हचा, चव इसी आगंसे चलें, काशीमें भगवान शंकरका दर्शन करके श्रीयवध चले जायेंगे । यह सोधकर वे द्यांगे वरे और चलते-चलते गंगा-सदपर पहुँचे । फिर किनारे किनारे चलते रहे । जहाँ सन्ध्या हो जाती यहीं दिक जाते। सदमन्तर ये बारिपुर धीर दियपुरके बीच चर्वास्थत श्रीसीतामही पहुँचे । यहाँ चासन क्षणाते ही उनकी चित्त-पृत्ति बेग्द्र-युत हो गयी। न भूल, न ध्यास श्रीर म विहा । विचित्त-की-सी दशा श्रीगयी । साथ श्री उनके पूर्वप्रमाने संस्कार जागृत हो उठे। वहाँ श्रीसीतावटके भीचे तीन दिन रह गये चौर बुख सुन्दर कविस (ओ श्रीद्धवितावसीमें वर्षित हैं) बनाकर, मानसिक-उदगार किसास सामे दरे।

सार्तिन विज्याचल (पुनारमः) के राजाको बन्दीगृर्दि दुनारे हुए सुनिराज (स्रीतोरवार्तामी) कारति पहुँचे। वर्षी महार-पारण एक माह्यक यह दिके। यसनार जनके दूरवर्गे उत्तरको तर्रित जनहीं स्तीर वे स्त्रीतमन्यतिज्ञा वर्षान कालेको, पान्तु दिन्ति स्त्रीकृष्टिकीना साराधानजा पूर्वक सुनिर्देश राजानी को स्त्रीय हो सार्वामा आहेता

इस प्रकार उपदेश देका श्रीतमा-महेषा धन्नांत्र हो-गये । अपने भागवकी सराहमा करते हुए गुजर्दमी शीवयोष्पाद्वरीको चले । जिस दिन वादगारी-दार्गार उद्यसिदको सम्मान प्राप्त हुत्या, उसी दिन बीगीसान्तिन्तर श्रीयवाच रहेंचे ।

व्यवरान्हमें विमल श्रीसरवृ-बारामें स्नान करने सर् पुलिन, बन-बाटिका और बीयियोंने विचरने हते। एव सन्तसे भेंट हुई। वे कहने सरी-"चलिये बीहरुमान्गरी निकट में चापको एक सुराय स्थान दिलडाई। वे सन्त श्रीगोस्थामीजीको वहाँ से गर्म और उन्होंने स रमणीय-स्थल दिशलाया । उस स्थानगर मुन्दर गः वृत्रोंकी विटपावली थी। उन पृत्रोंमें एक मुतिशाब दः कुछ था । उसकी जहमें एक सुन्दर वेदिका बनी हुई थी। उन वेदीपर श्रमिके समान तेजस्त्री एक सुप्रसिद गिद-गण सिदासनसे बैठे हुए थे। उस मनोहर स्पत्रको हेतना गुमाईजीका सन लुभा गया । उनके सनमें वहीं बुटीर बनाय असनेकी इंच्छा जागृत् हुई । जब वे टइसते टर्झने वर्ग सिद-सन्तके निकट पहुँचे तब उसने बासन मोरङा म जनकार किया श्रीर कहा-'मेरे गुरुने मुन्दे ग्राहा दी गी है। उसीडे शतुमार मैंने यदौ निवाम किया था। श्रीगुरहेरानै इसका समें की सुन्दे वनसाया या और उसे में बाद हरा देल रहा हैं। बीगुद जगवान्ते बहा या वि-दृष्ति चीननेपर गोस्तामी तुखमीदामधी यहाँ बाबर औरावदी

वयं न करेंगे । वे शादिकवि श्रीवास्त्रीविजीके बस्तार होंगे गीर प्रीवनदुसात्त्रीक्षी सहावतासे वे वह सहान् बाई करेंगे । वही सानहर रातात जुलेने हुए सानार राव-इफ सानाक हरकी सर्वोत्तम मर्गता बीग ही है । व्यव यु मेरी श्राद्धा मानकर हुत स्थानको विरुद्धा करने वहीं प्रवन सरा अब हुत स्थानवर गोरतामीओ उठ महान् कार्यके विवे ग्राप्तें, तप कुटी शीर सात्तर कर्ये शीवकर तन स्थान करने मेरे पास चले भागा ! गुरुशीका वन्यरेण हो क्या स्था सरा और मेरे सेने का स्थानित युक्तका करवे हो स्था । वाही निवास करते, वहाँ से मुक्तका ध्युन्यक करते हुए याच्या-पूर्वक में आपके आगानकी बार देश रहा था । धानपण है स्थाती। साद मही सुक्तकृत्वक निवास करें । यह मैं अपने

ऐसा बहबा वे सिक् सन्त वेदिकारे वतर वहे और ममम काते हुए छुत पूर कारो करे गर्व । हे वहीं काराम सत्तावर प्यानतक्षित हो गर्व भी बोमांकि हारा धनवे प्रारंको भाम करके एस पामको चले गर्व । इस जीजाओ वेसकर सुमाहोंकोंने कहा—'हे चतुर्वर ! तेरी बर्धिकारों है।'

मुतार्शकी प्रकारमात्र पाष्ट्र वहीं वस नवे) पर संपमपूर्वक समय विवाधि करें । एक समय पोता-सा पूर्व में विचा करते थे । उन्हें केवल कीस्पुनाननीका मरोसा या और किसीका भी वर नहीं था । इस तवह दो "वर्ष बींत गई, पान्तु उनकी पूष्टि नहीं जिसी और संवद 1% वाल महान हो पार्च

श्रेता-युगर्मे श्रीताम-कम्मकी तिविवर को बहु, शकि, क्षप्त, योग भादि एहे थे, ठीक वही संबद् १६११ की शस-प्रवर्माको भी पडे। उस दिन प्राप्तकाल औरशासको शोहनुसादनी प्रकट हुए और संसारके करवायके निर्माध सबसे यहने उन्होंने गोहनगाँजीको समितिक विधा । प्रकार दमा-भदेषा, गयेखानी, सारवांनी, नाम-भदे श्रेपको, सूर्यभक्ताद, ग्रकाचार और दुहस्तिजीने मंगव-यव सार्थावाँद दिने । हस विधिने पिमता साम-परिमामस-का सारम्य हुया। विस्तं क्षयण करतेने मद्द-दग्भ, कामादि समय विश्वाद और सह ज्याहन्हें संस्य मिट सार्वेद हैं।

दो बर्ग साल महीने भीर छुरवीस दिनोंमें पर्धात सं० 1432 के मार्गशीर्थ मार्समें मीगा-निवाहके दिन व्यक्तमारांसे पार उत्तरोके जिये साल कहान बनकर सैयार हो गये। पारण क्रम्यको हुर पहाने, पिश्र सार्विक प्रमेश्ने बचाने, कविकालके पार-कजारका मार्स करने, हिरियक्ति वृद्धा दिक्कालने, मतनतान्तरके बारविवाहको सिन्दाने, मैस-वास पहाने, सम्मोति विचले अकरती स्वार कराय दरने, सक्तर्वोके इत्यमें ममोत् बाते, 'इरि-मिक्त शिवनी हाएमें हैं'—इस रहस्पक्षं सनमाने भीर वैदिक सर्विक मार्गको सुम्मानेक जिये सह सोराय-कुल दिस्स इद्यस्य बरकर तैयार हो प्याना भीमवरहको सम्माहक इस्य 'सुप्रसिति'-'दिर कें कस्तर्य' विका गया प्रयोग, प्रम्य समाह हुखा। देवतासीने परनवकारको धारी की की इस्य समाह हुखा। देवतासीने परनवकारको धारी की की की इक्रम स्वारचे।

क्षास्त्रवर्षे यह प्रश्य को उसी दिन धनकर तैयार हो गवा था जिस दिन इसका चारम्भ हुणा था, परना मनुष्यकी निवंदा क्रेलनीने उसे जिल्लेमें इतने दिन जगा दिये।

श्रीवस्त्रे राजीने वसी समय इस प्रत्यकी पाँच प्रतिवाँ दिव्य क्षेत्रनीसे जिलकर तैयार की धौर ने रुखाड सत्यज्ञीक, कैंबाड, नागलोक, सुलोक एवं दिग्यावलोकमें पहेँचक्ष

क सा धननाने स्वयं वादील साहरीन हालेंगे मोलावारी वह कहा था कि—"वादी स्वोधोरामांगीने राम ह्वापाल साज मोनीमामवर्गाल के सा सांगा प्राथमिक मानवीर है, किन्तु किर मी क्षर विवास के वाद में दे इतये पर हालावार के मानवार है। किना वाद कर है कि सोमान मीनवार में दे पर के के हो पूर्व का कि साम की मानवार के मानवार है। किना वाद कर है कि सोमान मीनवार में रे रह वर्ष है में पूर्व मानवार में साम मीनवार मोनवार में साम के साम का साम के साम के साम का साम के साम के साम का साम का साम का साम का का साम का साम

रामायणमें हिन्दू-संस्कृति

(लेखक-साहिलरत्न पं॰ अवोध्यासिंहर्जा उपाध्याय 'हरिऔष')

स्वास-मान्तके लक्ष्यपतिष्ट विद्वान श्रीत क्ष्या श्रीयुत शिवस्थामी पेयरले एक बार क्ष्यने एक प्रसिद्ध व्याल्यानमें क्द्रा या, 'इसारा राज्य दिन काये, पेयर्थ पूलमें मिले, विभव पददिलत हो, समल लायित हर ली जावे, हम सर्थ प्रकार मिससक्क हो जावें, सर्वेल गेंवा

र्दें, तो भी इम निःस्व न होंगे, यदि रामावण चौर महाभारत-जैसे हमारे चलीकिक रथ सुरक्षित रह सकें ।' इस कथनका रहस्य क्या है ? वान्तवमें बात यह है कि जातिकी संस्कृति हीं उसका जीवनसर्वस्त्र होती है। कोई जाति अपनी संस्कृति खोकर जीवित नहीं रह सकती, संस्कृति ही वह प्रापारशिका है, जिसके सहारे वाति-जीवनका विशाल मासाद निर्मित होता है। जिस दिन यह बाधारशिका स्थानस्युत होगी, बसी दिन पुष्टमे पुष्ट प्रासाद भी भहरा परेगा । संगारमें कुछ निर्माय सातियाँ सब भी जीवित हैं, किना धपनी संस्ट्रतिको स्रोक्त वे क्षवटगत-प्राय हैं, उनको मरी ही समस्तिते. चाहे चात्र मर्रे. चाहे कता। कारण यह है 🌬 लेक्ट्रित ही किया वातिके चिन्त्रका पना देती है. वहीं बह बिग्द है, जो उनके वृष्तीरव, महान् जातरा, भीर बांधीनर कार्यकवापहारा संगारकी सन्य सातियाँसे इसके प्रथम करना है। जिस समय बारों छोर सम्बद्धार होते हे बारण बहु शवनति नार्चेश्री और श्राम्पर होती रहती है. उस समय बसीडे चार्जाचने बाजोडिन होचर वह के किए वस अइस करनी है, और उस समृद्धित सीपानपर चर्च बगरी है, को उपको उत्पानके समृत्र शिमायर कारत कर देता है। भारतमें बतन, शक, हता वादि वही वरी वहकार कानियाँ कारी। याम बराधान्य वह मुनकमान किया करों , जिसने कहाँ शासन किया, वहीं अपने पर्में क्री था रिजय-मन्दर्भा बळाची, दिनके ब्राता रेटका देश टमके करेंबे रंपित हो गया । बिन्द्र रामायय और महाभारत-वी परिष संस्थिते वालने हिन्दुवर्त बाल की बोहिन हैं.

ही नहीं, जनने चर्रा वह वर्जीविक सहन्त है कि जिसके बहुने वेनाव विवर्ण करवान की द्वकरें हुक हे हो गयी। जिस समय मात्राव्यानी मुक्ता साम्राज्य उपरोक्तर वृद्धि पा रहा था, और उसकी गुरू मंग्रे मात्रक सहुप्तर कि स्वा हो रही थी। अब वह सकता है। रहा थी। कि वह पा मात्र के एक भारतीयताकी समावि हो कप्ते, हिन्दू-धर्म विद्युत हो आयाा, हिन्दू-आर्ट नाम-थेन रा व्यापनी, जीर भारतमूमिका कपार विभव मुक्ता करिय नार व्यापनी, जीर भारतमूमिका कपार विभव मुक्ता करिय नार अपनामां में छुच पेदी संस्कृति वायुत हुई, विवाने भारतवर्षकी हाथा ही नहीं पत्र द री, निन्दु-जीव प्रमाणा में में पत्र व्याप ही नहीं पत्र द री, निन्दु-जीव प्रमाणा में मात्रक स्वापनी स्वपनी स्वापनी स्वापनी स्वपनी स्वापनी स्वापनी स्वपनी स्वपनी

भारतमें समय समयपर विभिन्न विचारके वो वो प्रवाद चाये, कुछ कासतक उनके प्रवत बेगके सामने वर्ष चारमविसर्धन करता दिललायी पत्ता, परम्य अमुडे देशी पाँव स्थानप्युत कमी नहीं हुचा । वह सदा समझा, चौ चपनी भारतीयता-घारामें उसने सबको विश्वीन कर विश्वी उसकी महान् संस्कृति ही उसकी इस सकदताका कार्य है। कविद्वात चुंगच वावमीकिकी महिमामपी क्षेत्रजी जिन भकार इन चार्य संस्कृतियोंका उल्लेशकर धन्य <u>ह</u>ई है, बगी शकार गोरशामी सुसामी तामको कशामयी करिनामें भी दनकें ध्यबीडिक चमन्कार रहियत होता है। गोस्तामी मी वर्षेण स्तामविकार जिये हैं, इसकिये उन्होंडे रामावयाने हुन हैती संस्कृतियाँका वर्षीय यहाँ हिया जाता है जो हमारे सामानि व्यापनकी सालीपनी शासियाँ कही जा सकती है। गोम्बामीजी की रामायण चार्यनात्वता चीर मंस्कृतिका प्रावीकित कोर है, जहाँ देलिये, वहाँ उनको सेलनी, हम बिगयम बती है मामिक्याने अवनी दिल्लापी परती है। उनकी शामक का गेरे मेडे, करे करे प्रचार क्यों है । ह्यांतिये, विदिन् दान निय बादर्गोंको देलकर पुत्रस्ति होता है, दिन बार्पहरण बङ्गित और स्मृतिक बनता है, इसमें क्ली बार्गी की जारींका बना ही हर्दनारी विषय है। गीमार्थ है

0

थीसीता-राम



भाग प्रतिका दौर्ग का समा सुखद्भवेदी । मेनुसर्कत बाबु क " समाजनुसद्गीर्ग म



सेवारीका चमकार चर्डा है, कि वह व्यक्तिमन वार्यचेत्रकृति है, घद मुनिमना कर्डी कर्डी हतनी समोहर क्यी हुन्दर है, हमानी माइन्दर हो सहित कर सेवार करनी कभी हतनी हमानवा हो आती है, कि सहानन-मुख्यक बद्धान हो अहती है करना है। बही हमानवा हो आती हमानवा हो सहती हमानवा हमान

पिताची चात्रा रितोपार्य का मनवान श्रीशासकान्न वन-धात्राके क्षिये मस्तुत हैं, श्रीमश्री कीमण्यादेवीकी सेवामें काशिया होध्य उनसे स्वतुत्त-वितय का रहे हैं, इसी समय व्यक्तिप्रद्वा विदेद-मन्त्रित वहाँ चार्यों। गोश्वामोधी विकासे हैं—

> समाचार तेरि समय शुनि सीय कडी अनुस्तह । जाइ सासु-पद-कमछ-युग बंदि बैठि सिक नाह ॥

दोहेके हितीय भागमें इक्कानमधी कितनी मर्यादा-शीवशा सकित हुई है, यह सविदित नहीं । भगवती जानकी सीचे बाकर मगवान रामचन्द्रके सामने नहीं खड़ी हो गयी, दन्होंसे क्योपकान नहीं प्रारम्भ किया, क्यों ? इसकिये कि इससे बीमती कौशस्यादेशीका तिरस्कार होता। सार्व-सातिकी पा संकृति है. 🍱 बर्बोकी उपस्थितिमें बडर्षे समा स्थानकर पविसे सम्मापण नहीं करतीं, उनसे बोलती तक नहीं। साज भी कुलीनोंमें यह परम्परा प्रचलित है। फिर बादशें शहिसी · सीतारेवी ऐशा क्यों करती रैं वे बायों और सासकी चरछ-बन्दना करके. सिर मीचा करके बैठ गयों, कितना सळळ माव है। 'बैठि सिद नाइ' किलकर गोस्वामी श्रीने जो शामिकता दिसवापी है, यही उनकी विशेषता है। यह 'बैठि सिरु नाह' जानकीजीके हदयका प्रतिविद्य है। इस कार्यहारा अन्होंने भपनी मर्यावाशीखता, अपनी बाहजता, और अपनी भशकताका ही प्रवृशंत नहीं किया, बैन्य दिलताकर सहायता-की मिया भी माँगी। सरभव है कि आजक्त्यकी किचिता

स्वजार्य, इसको पराधीनताको इतिसत ने ही सतमें, किन्यु पर सर्वाहातीलताको यह मीतिक माला है, जिल्हो परायकर स्रवेद इन्द्र न्याहाकी स्वयं शोमा हो सकती है। सार्पसंहतितयी स्रवन्य नदात हैं, उनमें स्वापंपराताका दतना स्थान नर्दा, जितना सद्यागयताका । यह सपने प्राय-तिकारण दोती है, स्रावन्य सार्याव्यक माला स्वयं उपकार कार्यकरी गई सिकार स्व सुरतन, शाम्त्रीयवन, प्रायक्ष सम्य उपकार-सार्यक नर्ते-की वेसका साम्य-कार्य कर पाती हैं। वे उपस्कृतना एवं विजंत्यताले मार्यादागीस्ताको, स्वीर संकीर्य इत्यक्त एवं विजंत्यताले सहप्रवाको जम्म समकती । सुरीविये शाक्षीमें कृते सार्यु हैं, कि जितने हुरसकार्दक संकार्यों

> व्यमिनादनशीरतम् निरवं युद्धोपसेविनः । चत्वारि तस्य बर्द्धन्ते व्यपुर्विशामशोगरुम् ॥ भगवाम् अनु **बर्ड्ड हैं**—

ं को ऋभिवादनगीखं और नित्य वृद्धसेश-सपर हैं, वनकी बायु करती है, और वन्हें विधा, यस और यस प्राप्त होता है।

विवाहकाशके समय समयदीमें की यह प्रतिशा करती है-

कुटुम्बं रक्षविष्यानि सदा ते मम्बुमादिणी । दुःखे भीरा सुखे हृष्टाः द्वितीयेसा मबीद्वाचः ।।

क्टुम्बकी रका करूँगी, सदा मधुरमापिकी रहूँगी, दुःखर्में भीर कौर सुकर्में भावन्दित रहूँगी। (१) दुव्य सविषु मुख्ये बन्धुवर्गे च मतुँगीय गतमद-

माया वर्तमेत् इर सथाईम्-(२) मार्मकचारिण। गुढविम्नमादेवदायतिमानुकृत्येन

- (२) मॉर्नेकचारिण। गृद्धविभ्रत्भादेववरपतिमानुकृत्येन वर्तेत, वन्यतेन बुदुम्बिक्तामारमिन स्विवेशयेत् ।
- (२) अध्यक्षपुरसरिषको तत् पारतन्त्रममनुत्तरबारिता-चरिमिता प्रचक्काकामकरणमनुषेरहासः तत् प्रियाप्रियेषु स्वप्रियान वियोगित मृतिः । (बातसायन १)
- (१) श्विसं,गुरुसं ,सस्तियोंसे और बन्धुवर्गं पूर्व सेवडोंसे निर्दासमान रहकर ययाधोल्य नर्तोत करे ।
- (२) मार्याको चाहिये, पठिको देवतासमान साने, उसकी इप्ताके धनुकूत बीवन व्यतीत करे और उसकी सम्मतिके धनुसार कुटुम्बोजनकी चिन्तामें छीन रहे।
- (१) इखवध् सास-समुरकी सेवा करे, उनकी भाजा-में हहे, उनकी परतन्त्र बने, उनकी भाजींचा कराब न दे,

मिष्ट भाषय करे, जोरसे न ईसे। उनके प्रिय श्रवियको अपने प्रिय-श्रवियके समान समसे।

जिस समय शीमती जनकनन्दिनी सिर नीचा करके चरयोंके समीप बैठ गयीं-उस समय--

दीन्हि असास सासु मृदुवानी । अति सुकुमारि देखि अकुरानी ॥

इस पर्यमें यथावसर 'सुदुवानी' शब्दका कितना मुन्दर स्वोग है। यदि दोहेका 'पद-कास बंदि बैठि सिर-माइ' श्रीमती जानकोंके नियम-नात्र हरपका सुपक हैं, के पह 'मुदुवानी' सन्द कीशव्यादेवीके कोमल बासस्वयपूष' इदयका परिचायक। इसके वरसान्य श्रीमती कोशक्यादेवी-के हदयकी नया श्रास्त्र हुई, इसकी स्पूचना यह अदांखी देनी हैं 'बठि सुदुक्तारि देखि शहुकानी' कितनी श्रस्ताधिका है! वे कितना श्रीम श्रमती पुत्रवपूके हदयमी मध्य कर गयाँ। श्रीमताकांमी सासके समीप सिर भीचा करके बैठ तो गयाँ, परन्त हुई न खुना, वे हत्य कह न सकी, कैसे कहरों, सोजोन केश्व नम्म परन्ता था। यही मही, हदयमी दुःसकी पक्ष विषय प्रमणीर स्था हर हरी थी, के सोच वही थी—

बैठि निमन मुस्स सोबनि सीना । क्यससि बसि-प्रेम-पुनीता ॥ बरन बरन वस जीवननायू । केटि सुबतीसन होपिट सायू ॥ की तनु प्रान कि करन प्राना । विधि करतव कहा जाह न जाना ॥ बाद बरन-वस नेजारि सारी ।

देगा बादने, सामयिक धक्याकी कितनी सुन्दर बचाँना है !- 'दिश्वित शुन्त' से 'बाठ बात नार केता वर्षा' एक कैंगे भारत्यय एफर-विन्मात है, वनसे धीनात्र नाम, ननी बावधीदेशीयों संदोध्याव एता, अनके बिस्ता-नाम, ननी कर विश्वा, परिव मेन बाहिस्स किता सुन्दर महास्य परात है। इत्तरमें का स्वाप्य कुछ नहीं थी, वेजोंके सारों वर बराव भी बही-सोम्सामीजेंने बिजा-

संपु विरोधन स्थाति न्यी-

कीरण्यादेशी परचे ही सब समझ गर्या थीं, मेजोंके कहने क्यारे कीर कार्य कर दिया, हमजिए हमती कहाँकी की क्रिके स्टॉन-

केटी देखि राजस्यक्ती II

'रामधाराती' का किरना जार्गक स्थीत है-दुस्तर अविकार को मुख्य हुआ है, साथ ही करके हो माप्त कीर सम्बर्गकरा मी क्यने विदेश हुई। मुप्ता कीर सम्बर्गकरा मी क्यने विदेश हुई। **वात सुनहु सिम अति**सुकुमारी। सासु-समुर-परित्रनई रिनावै

ियता जनक मुपाठ-माने, साहा भानु-कुरुमानु ।
पति रिमे-कुरु-केरन निर्मित सिमु-गुर-कम निरम् ॥
में पुनि पुत्रकम् विस्त पार्षः। कप-राति पुत्र सीन् हार्षः।
नयनपुत्रित करि श्रीति बज़ार्षः। रासेर्ड त्रान जानिवि रहे।
करणपेति निर्मित बहु निर्मित राति। साहित सहस्रति सीन्तन।
पूरत्य पक्त मयेर विषि वालाः। जानि न जार काइ परिननः॥
पर्वेतपरित तिनि मोत् दिसेसाः। सिमा न प्रेम्ट पुज्यस्ति करितः।
सिमा-मूरि निर्मित्रीम जीनत्तर रहेकः। श्रीसम् करि हार्षः परिननः॥
सेस्मान्यित निर्मित्रीम जीनत्तर रहेकः। श्रीसम् कर्षः हार्षः परिननः।
सेस्मान्यित सरस्योति क्षान्य सामा । श्रीसम् कर्षः हार्षः परिननः।
स्तिन्दित्य सरस्योतिक प्रकृति। श्रीस्तु जीनस्त सिम्न सिमे सैनि

करि, केहरि, निसिष्य परिं दुष्ट जुं वन सूरे । विषयरिका कि सोह सुत सुमाग समीवन सूरे ॥ बनादिक कोल किरात किरोती । त्यो विरोध विषयनुम्न सेति। यादन करि शिर्ति कीरन सुमानक । तेन्हरिक केद्री कार कर्म कर्म के सापस्तिय कारनामे मुं। निम्हर तथ होतु उत्तर सर्व मेंग्री सिय बन बरिहि ताद केहि माँती। विषयरिक्ष केरी मेंग्रे केरी । दुर्गन्य स्मुक्त वन बन्य नम्मारी। सापस्त्रीण के स्वर्णकीय कस विषयरि अस आयमु होई। मैं तिस दें मानिधी केरी।

ओं सिय भवन रहे कह अंदा। मोडि कई होर बहुन अर्थ था।

भीमानी भीयत्वादेवी भाइसे माता ही नहीं, वार्ष स्वार भी हैं। सारका राहोड़ मित वह स्था ही दर्ग रहेद भी सुरकों स्थाना है, गाईस्थ बनेसे दर्ग द इंड्रक्कों सुरकों स्थाना है, गाईस्थ बनेसे दर्ग द इंड्रक्कों सुरक्का स्थान है ने क्रांकों नहीं में भावमान श्राप्ति वक्के इंड्रक्का मेन जिल क्या स्थीन हिमा है, वह बड़ा दी सम्मीर, क्यान पूर्व मात्र हैं। भावनपुरि की जीति बड़ाई। स्थिन स्थान प्रतिनि हिमा करनेदिति विस्ता हुई दिन स्थान। स्थिन स्थानकित्यादिक स्थानी विजनपुरि जिन क्याना स्टूडें। स्थानति नहिसा स्थान दर्दें।

बूच चंदियोंसे दिनानी समागा भरी है, इपसे निर्ण बाइरसाय भीर व्यार है, किन्दा सेस भीर बानान है. किन्दों करका भीर सुरक्तगीता है, क्या वह बानान सेगा है बीन सहदूप है, को इन भारीयों इपसे दुक्त क पालेया 8 कर बीटनवारीय करते हैं, पुनेतर इन्न मेंद्र सिरोग : किन स्टोल क्या नार्यन सेमा ह नर्दा है किरात किसोरं। रूपी निरंपि निषय-सस-मेररे ॥ कै वापस-तिय कातनत्रोग । जिन्ह तपहेल तजा सब सोग ॥ शिव बन रमिटि तात केटि भारती । निर्पालक्षित कपि देखि देखती ।" तब सामकी देवीकी सरसता, कोमजाता, वनके स्वमावका मोजापन, और उनकी भीर प्रकृति चाँखोंके सामने फिर बाती है. साथ ही हरवमें पढ़ ऐसी वेरना होने सवती है. जो चित्तको विद्वत कर देती है। यदि कीशल्यादेवी सीताबोका मुँह न बोहती रहतीं, चनके सुखसे रहनेका ध्यान ॥ रसती होतीं, सो उनके मुखसे इस सरहकी बार्वे न निक्रमतीं । इन पंक्तियोंमें उनकी व्यया ही मुर्तिसन्त होकर विराज्ञमान नहीं है. उनकी यह याण्या भी म्यलक रही है, हो पुत्रवर्ष साधात्य होराँको देसकर भी विचलित होती है । 'चंद-किरन-रस-रासिक च्येतरी । शंबरस्य नवन मकै दिसि जोरी ॥ सर-मर-संसर बनय-बन-बारी । शहर-जोप कि इसकमारी । विवदादिका कि सोड सन लगन सजीवन-मरिश किसी पत्र-वपूर्व एक्से चपने पत्रसे कोई सास इससे व्यथिक और इससे बच्चमवासे क्या कड सकती है है इन पंकियोंमें एक इ.ज-बाखाका इत्तव स्रोबका उसके विवतमको दिसजाया गया है, और साथ ही वह भी सचित किया गया है, कि एक पति-प्राचाके वियोग-विवृत्त बननेपर उसका जीवन कैसा संकटापन हो सकता है। इनमें कीशस्यादेशी-की गम्भीरता जितनी सन्दातासे रफदित इहं है उतनी ही बनदी भायुकता, सहदयदा, भीर वार्मिकता भी । वक भोर वे पुत्र-वर्ष्की गम्मीर मनीवेदना, उसकी वन-रामनकी असमर्थता आदिका आवरण इटाठी हैं, और दसरी और पुत्रकी चाँसें लोखती हैं, चौर उसे उचित कर्तटक सिये सात्रधान काती हैं । ऐसे धवसरपर वे धवने उत्तरहायित्वकी भी नहीं मुखती, वे पुत्रके महानु कर्नच्यों, दनके चसीम संबर्धे और दैवर्शियाक्को समस्त्री है।

धतपुर यह भाजा नहीं देती, कि धवनी खीकी सरश्य साथ क्षेत्री बाधी, केरल इतना ही बहनी हैं—

सोद् सिय चरन चहरि वन सामा । अपमु काह होद स्पुनाया ।। अस विचारि जस आवनु होई । मैं शिक्ष देउँ जनकिहि सोई ॥

किर स्थित और विरक्ताता होवह वह वह वहती हैं— जी तिन मनन रहे वह भंगा। मोदी वह होत् बहुत जनस्या ॥ वह क्षितम वस उनके जनमामक कामारिक सावका

नह मान्तम एवं उनके न्ययामक कान्तरिक मानवा गुनक है, पुत्र वाप तो बाप, किन्तु विनवशीका पुत्रकक्ते वह नहीं त्यागना चाहती। किर भी कतेनेपर सम्मर स्थ-कर करही चावममुखको तिवाजित दी, भीर बाल्फी-देशीको मर्म-क्यामांको ही महस-पटी करनेको पूरी चेटा की; यही है जनकी महस्य चीर महानुमाचता, पर्दी 'राम-महताही' पड़की पूरी सार्यकता हुई। घायंसंस्कृतिकी ही यह बहाच करना है, बीर घायंसंस्कृतिक ही है यह पपूर्व चाहरों।

चात्रकत सासकी बड़ी हुल्सा हो रही है, उसे मानवी नहीं शानवी थड़ा जाता है। युत्र-व्युत्धोंका चले सो वे उनका यसा घोंट हैं, पर क्या करें, कई बारणोंसे वित्ररा हैं। फिर भी उनके विरुद्ध क्षेत्रनी धूमले चल रही है, मधिकारा वत्र-विकासोंमें वे वह अपने शब्दों में सारण की जाती हैं। थह बर्चमानदासिक कुछ चाग्दोसनोंका फल है, गुरुवनों-से सब प्रकासी स्वतन्त्रता साम काता है। बतिपय नहर-चारियोंका मत है. उन्होंके हायों वहाँ माता-पिताकी छीछा-खेदर हो रही है. वहाँ स्वधदेवीकी भी । मेरा निवेदन है कि जितनी नवन्योतिर्मयी पुत्रवपुर्ण हैं, न्या में विल्डुख वृधकी धुजी, और साफ सुपरी हैं, और जितनी संसारकी कालिमाएँ हैं, वे सालोंके मुँहपर ही पुत्री हुई हैं। कहापि मही, सभी भी सार्यसंस्कृति बीवित है. भारतवर्षकी स्वधिकांश क्स-सम्बद्धारे चात्र भी उसीके शासनमें हैं। नगरोंमें विशेषकर शर्मोर्से सभी सनेक सास-वहोहर्षे वेसी हैं. क्षितको इस मर्तिसती कीशस्या कीर जानकी न कर सर्वे तो मानदी तो धवरप चह सकते हैं। उन्होंके प्रवयमतापूरी चात भी भारतमाताका सक वस्त्रज्ञ है, सेरा विभाग है, सदाही अञ्चल रहेगा, क्योंकि 'सन्यमेर नयी नामृतम् '। में वह नहीं बहता कि वह सामें नहीं हैं, हैं, प्रवरव हैं, विमन बडाँ दो चार दए हैं. बडाँ दम पाँच मानी भी है। पनरा बाने समय घर्ती सामोंको क्यों मुझा दिया भागा है ! बाद्य रक्ता जाय को बाद बपुर्वे हैं. बज़ वे भी माम होंगी। मेश विचार है कि सास यसी होनेके लिये पदक्यका भी मती होना भाषरयक है। विना भारत बोई दिनीको नहीं सनाना, सनानेके कारश होने चारिये। कस बीजका परिवास दोता है। विशा पुत्रील कार्य कुछल नहीं कल सकता । शाबी दोनों हार्वीये बहती है। प्रतोह साम-का चारर करेगी, तो बोई कारय नहीं है कि साम दररा बेबर सीवीही। पृहच्यह करी नहीं होता, किन्तु सेमास-वेमे ही सब मैंयल बाना है, बनारेमें दिवसी बान भी वन वार्गा है । सहिष्युता और चमा बड़ी चीज है.

144

रोवा भीर बाग्गोनसांसे वन्यर भी विवस बाना है। मगमान् श्रीरामकृष्ट्र' शरणं प्रपद्ये ॥ हरे, पर घर शीमतो कौराल्या वैसी सास कीर भीमारी बातको धीनी पुत्रवसूर्व दिख्वाभी पर्ने, जिन्ही बमार्र पवित्र प्रहोंसे पामाल कराविक मधावाँका व्हार्पण म हो राहे । वसम्मानान् दराजार्थं भाजार्थामां सर्वे ह माताकी यातं मुनक्त भगवान् भौरामचन्त्र विनितत हुप्, सहसं व पितृनमाता गीरवेगानिरिच्छे पहले तो विवेदनार वचन बदका उन्होंने उनकी समझारा, रत विवास वानकीमीते हुए कहना बाहा, वास्तु माता, विता और मानार्थ देवता है। मात मर्गता बागह हुई, माताका संकोच हुवा, किन्नु समय रेवता है। बनभी भीर बन्ममूमि स्नांसे भी है देशका तार वनसे कृत बहुवा ही एका, गोस्वासीओ कीको संवतीपस्कर, दण, इष्ट और व्यव-व्यवनात बीमा बाहिचे। वितर्मे स्व रहकर तहा सास-मुख्ये विस्ते हैं-करमा उसका वर्स है। उराध्यावते रुरणुक वार्धात मातु समोद करत सकुषाही । बोदे समढ समृद्धि अन बाही । बाकारीते शताबा विताबा, बीर वितावे सहस्त्व र्थात भाषात् भीरामधात्र मर्वातपुरुगेतम हैं, पाना प्रवस बालसे उनकी भी व चली। भीमती जानकीरेवीसे उन्होंने माताका है। नो कहा, उसे धुनिये— इस प्रयान बर्मको शिका हैनेके बाद मगगर् बोगानको वनकी मण्डरताओं और वहाँकी बसुविशामांक स् राबहुमारि सिसावन सुनहू । आन शाँति जिव अनि कछु गुनह ।। ही बिरान वर्षान किया है, पाडक समाप्यम उसकी है। आपन मोर मीक जी बहु । बचन हमार मानि गृह रहू ।। सकते हैं। व्यक्तिकारा वर्षान बड़ा ही सावनय और मुन् भावसु मारि सास-संबन्धार् । सब बिबि गामिनि भवन मलकी। है, कविता को उसमें इस्टक्टब नगा है-इन एडि तॅ अधिक घरम गाँड युजा। साबर सामु-समुर-पद-पुजा। बेलिये_ वन जन मात कराहिं सुचि मोरी। होताहे हेम-निकटर मतिमोरी।। बरचिहं चीर गहन सुचि आए। मुनकोचनि तुम्ह मीरहुमार तम तब गुरु कदि कमा पुरानी। हुंदरि समुसामेह मुद्रकानी।। हंसाम्बनि तुम्ह नहिं बनजोग् । सुनि अपनसु मोहिंदाहिसेग्। हरीं सुनाय सपय सत मोदी। सुमुखि महादित रास्ती तीयी।। मानस-सहित-सुचा शतिपाती। जिमद् विजनपरोपिमाहरी। हैती विवत चौर मार्निक बातें हैं, मगवान् रामकन्त्र नव-रसाल-बन विहरनसील्य। सोह कि कोहिल विगिन हरिता। विनय-मन और मर्यातासील पुत्रके मुलसे दूसरी कीन हन पंक्तियों में कितनी स्वामाविकता और भाउकता है, निकतती । उन्होंने पर भी बहा, को हुए में बह रहा लंडस्वजन स्वयं उत्तका अनुसवकरें। इक् वामाण विहार ह पुरु एवं श्रुति-समात है, प्रतपुर इस वर्ग कारों मत है कि झीमती सनकमन्दिगीका चरित्र जिस रुपमें जात कटका बातुमन किये लाम काना चाहिये.... कविवानि शक्ति किया है, वह कवियत है, उसमें बालविकार खेरा महीं । 'डनपर विपतिका पहाब हर पाता है, रालाम गुरु मुति संगत घरमचल पाइज बिनोहिं क्लैस । कावस्थार्ते भी उनको उम् कहते नहीं देशा भागा, जान होत वे बहती है—'मार्ट्सीमन, विर्ट्स्नीमन, बानाओं-है जनके सुकामें जीध्य ही गरी, था किसीने उनके मुकरा शहर लगा दी है। यह बढ़ेसे बहा दुःल तह बेती हैं, तथ बहुता है--'मलक्षरेबतामाण' 'बननी बन्म-वक्र भी नहीं करती। बज हर पहता है, किन्तु विका वक नहीं। ऐसी मस्तर-मतिमा हो सकती है, कोई और चारियी नहीं ।' देसी ही देसी वर्डनाएँ बार, वे दिन -3 ths कारोस कोहते हैं, और इसमहारकी और जिल्ली है स्टराः देशाः दहा व्यवपराष्ट्रस्वी। वटपटीम बात बहुते रहते हैं। बातन बात वह है नि बगुरकोः वादनन्दर्गं मर्गुक्तसा ॥ जिस वातावरवार्में जनके हुवयका विद्यास हुवा है, हो रत वनहें नेवाहे लामने वपश्चित होते वहते हैं, बिन्हों जिम पास्परिक स्ववहार्शीका - उनकी सनुवन है, कैती है (aisasa) वनको विचारपान्त्राः और सनगरीको है। बोरकी

ब्रियों में घातापरायक्ता भविक होती है. ये उतनी पवि-प्रेमिका, और स्नेडमधी नहीं होतीं, जितनी पृशिया विशेषतः भारतकी कुल-प्रसनाएँ होती हैं । वे परिपशयका समीतक रहती हैं. सपतक उनके स्वार्योंकी पाँउ होती रहती है. स्वाधंमें स्थापात उपस्थित होनेपर वे सन्दाल दनदो स्थान हेती हैं. बाजकल यह प्रवृत्ति बहत ही प्रवृत्त हो सबी है । पतिकी सालामें रहना. उनकी सेवाडे लिये आण्योत्सर्थ करना. उनकी दृष्टिमें धारमशिक्षय है । विशह-बन्धन उनकी इडिमें उत्तना पवित्र नहीं, वे बातकी वातमें उसे तोड़ सकती हैं । दनका स्वभाव राम, क्लंबल, और माधः उरम् 'लख होता है, इसमकारकी मनुस्तिको ने सेमस्तिता कहती हैं । उनकी स्थतन्त्रताकी कामना इतनी सील होती है, कि पति के सामने चदि योदा भी अकता पडे, तो वे बसे परतन्त्रता मान बैठती है। जिस देश, जिस समाजने येथे बाहरों हों. उस देश चौर समाध्यें पता. वहि सीला-देवीको चथिक धीर, गम्भीर, संयत, काल्यन्यागकी मूर्ति, भौर पवि-भाषा देलकर उनके विषयमें तथाकवित विचार प्रकट करें तो क्या चाश्चर्य ! मेरे कवनका यह अतस्रव नहीं.. कि वीरपर्ने पविषायया कियाँ होती ही नहीं, ऐसा करना. चौर सोचना, धन्याय होगा । मिश्टनने एक स्वानपर 'ईव'के मुलसे इन शब्दोंको कहलाया है- वे शब्द कल्डोंने सादमसे कड़े हैं-

"What thou bidd'st Unargued I beg, so God ordains, God in thy law, thou mine."

'वो भारकी भागा होती है, उसे मैं विणा हुए कहे सुने स्त्रीकार करती हैं। ईवरीय इच्छा यही है। शाक्ते विवन्ता ईवर हैं भीर मेरे शाय 1'

संवास्त विवासी वादी लाणी क्वियाँ हाँगी, वाचः सकके हरणा आप देशा दो है तहता 'यदि वोस्तरिक विवासि देशा आप देशा का स्वार अस्ति हरणा अस्ति वोस्तरिक विवासि देशा आप ता वादा का स्वार का स्वा

उत्तरिवर्षोस्र मिनी बा सकती हैं। येत्र प्रापः वैती ही क्रिकों के हापसे है, जिलका नित्रक क्रार हुआ है। प्रतप्त वर्त्वीके प्रमानोंसे क्षोप प्रमानित हैं. चीर वैते हैं। प्रतप्त वर्त्वीके प्रमानोंसे क्षोप प्रमानित हैं. चीर वैते हैं। प्रतप्त क्रारोके जिये वापस हैं। किन्तु इध्यक्तारके निर्मृत वार्ताका मृत्य 🗗 वर्षा हैं।

सीतादेवी भारतकी सती साध्यी क्रियोंकी शिरोमिंग है, उनको चार्यसंस्त्रतिकी दिव्य मृति कह सकते हैं। उनके मुख्में विद्वा है, किन्तु बही ही संपत । जनके मेंडपर महर कभी नहीं क्यी, वे समयपर बोसती हैं. किन्तु उनके राज्य तुले हुए और गम्भीर होते हैं,उन राज्यों में मधानमावता सरी होती है पर साथ ही हरपकी विशावता भी। कट देवन कहना, उद्धत वन जाना, अनके स्वभावके विरुद्ध है। श्रेसी सर्यादासीलता धौर सदारायता उनमें इटिगत होती है, चन्पत्र नहीं। चौर बाठोंकी तरह सम्यता-के भी खर होते हैं, पहले वह उतनी उदात. संयत और गम्भीर नहीं होती. जितनी अवतावस्थामें । सांसारिक सन्य थदायाँको तरह उसका भी अमरा: विकास होता है। जो खातियाँ पहले पराधाँके समान बीधन स्पतीत करती थीं आज वे देंचे देंचे अहलोंसे रहती हैं और वैज्ञानिक व्यविकारीं-द्वारा वगतको चक्ति करती हैं, यह जनकी सम्पताके कमराः विकासका ही फल है। धार्य-सम्यवा संसारकी सब सम्यवार्की-से आचीन है, और संगमय पर्याताको पहुँच गयी है, इसिबये बह अधिकांश उदास गुवाँका भाषार है। भगवती सामकी सतीलके विश्वमें इसका प्रमाय है। की-शांतिके हत्वका चरमोत्कर्ष उनमें देता बाता है, इनकी महानुभावता, संसारकी सती साची खियोंका चावरों है । विभिन्न हार्योंमें वहकर विचार-वैक्तियके कारब कहीं कहीं अनका चरित्र विकृत हो गया है, किन्तु उनकी महता कहीं सर्व महीं हुई । दिएनाम बौद विद्वान या, उसने कुन्द्रसाला-पासक एक नाटक जिला है। प्रकास उसका 'बैडेडी-सनवास' है। विधिनमें पर्टेचाकर खीटने समय खदमवानी अनकनन्तिनीसे सन्देशको प्रार्थना करते हैं-उस समय मारक्कार अनके ग्रससे ये बास्य बदलाते हैं---

'वया निष्ठुरो नाम सन्दिदस्यत इति प्रतिहत वचनतीया दक्षमणस्य, न सीदाया घनयत्वम् ११

'अहो बविबसनीयता प्रकृत निष्ठुरमानाना पुरन-हृदयाणाम् ।'

'देते निष्दुरहे बिये में को सम्पेश देना चाहनी हैं, इसमें लक्तावर्ड वकवनी हाता है, सीताका सीमान्य करी। 'रामावरीत निष्ठामावर्ष' पुरुष हावडी शविष्ठमानीवना विधित्र है। ऐसे ही एक शवसायर मवसूति कीनसा पर महाय काते हैं, उसे भी देखिये-उचरामकरिनमें एक रपसपर वे भीमती सीता देवीकी तत्ती वासन्तीके अलसे भगवात् धौरामचन्त्रके विश्वमें यह बाव्य बहवाते हैं— 'अपि देव । हि परं दारणः सिन्तिरी। 'देव ! धाप सचमुच बहें मिजुर हैं ।' यह जुन सीतादेवी भएनी पतिप्रायताका परिचय देते हुए क्या कहती हैं, उसे भी सुनिये— 'साहि बासान्ति । हिं स्वयेत्रेबादिनी मवासी, युजाई: सर्वस्यार्यपुत्री, विशेष्ती मम विवसस्याः 'तजी वातन्ती ! ग्रम ऐता क्यों कहती ही, धार्यपुत्र सब्बे पूजनीय हैं, विरोपता मेरी विव सब्बों है। दिक नागको अनकनिद्दनी, देवी नहीं मानवी हैं, उनमें वेर्यस्त्रति है, वे पेर्यस्त्रत होत्त प्रतिवेषको निस्तर करती

है, ताव ही पुरुरताति मातको त्वमाबहोते निवाहरूव कह बालती है। इस कमनमें स्वामाविकता है। किन्तु विताको यह विशासना गर्ही, सो मनुष्यको देवना पना देवी है। विवित्त ही मतुष्यकी कसौदी है, हवपर विक्नामकी सीवारेची कसनेपर डील नहीं उत्तरीं। मन्त्रतिकी सीवा देवी वारतवर्ते देवी हैं, वे बात्मवित्तासून्य हैं, सबी परिसावा विष्यित धेरों का सादर्श हैं। उन्होंने स्वामाविकता र विजय मास कर की है, जनमें प्रतिहित्ता-कृति है ही रीं, वे स्वयं तो आवान् भीरामचन्त्रको देखकर कुन बद्धती नहीं, दिन्तु सलीहे कर क्यानको भी गई। सह सकतीं, घ यह याच्य बना ही सामिक है, 'आर्यपुत सबके विषेत्रतः मेरी मिय ससीके।' यह सीनादेवीका वेब रूप है, यह रूप तपनन ही गर्हों, विज्ञान दनीय है। उनका यही रूप चार्यसंस्कृतिका सर्वस्य वामीजी उनके इसी रूपके वपासक हैं। समजान नको याताको सुनकर सीताहेवीने क्या कहा, सब रपादेवीडे सामने बनडनन्दिनीडी सीचे पतिसे

मनेत मर्पात वाषकथी, धनपुत बन्होंने वन्होंका

, दिन्तु इसमें उनकी सकताता न हुई ।

मगवान् हामचन्त्रने पैमी बार्ने कर्री, कि नीवन धायो । इमलिये पहले उन्होंने-रागि सामुचन कह कर जोरी। हमनि देनि बड़ि सर्व इम प्रथम किननी मर्थादा-शीवता है, 'क्नां व्यवनय मेरी। में तनके सरख और विनम्र हर्वक गुन्दर प्रतिच्याचा है। सामसे प्रतिनवडी बना उन्होंने पतिचेवमे को इस बदा, उसमें पतिनेमध वसका पकता है- वसका एक एक शक्त का शी म

" M - 1

है- उसकी इस पंक्तियों देखिये-में पुनि समुप्ति दील मन माहीं। पिय-विषेत-सन दुसु मा गाँ। र्तम्ह नितु रपु-कुल-कुनुस-निषु सुरपुर नरकस्तान ॥ मानु जिता भविनी त्रिय माई। त्रिय पीरेनार मुदद-सनुर्तात सामु समुर गुरु सकन सहयं। सुत हुंदर मुताँठ मुनाई॥ नहें स्त्रीम नाम नेह अर नहते। पिय बिनु हीमहिं तरनिहुँ वेडां तनु चनु चामु घरनि सुरराज् । पतिनिहीन सन सांवसनार् भीम रोधसम मुक्त भाकः जम-जातना सरिस संस्रकः। माननाथ तुन्ह बिनु जग माही। मोकह मुलद करहुँ बहु गाँ॥ निज बितु देह नदी दिनु बारी। तीसम नाम पुरुष दिनु नती॥ नाथ सब्द मुस साम तुम्हारे। सरद-विमक विषु बदन विवाहकासमें समपदीके समय पत्नी प्रतिशाका आतीं आतीं मविष्यामि मुख्दःसविमानिनी। तवाज्ञां पारुविष्यामि पत्रमे सारदे बदेत्॥ 'बार्त होनेपर बार्त हैंगी, सुल-दुःल भागिनी हैंग

इस मितिकाके अनुसार उनको वही काना वारि था, जो पतिने बाह्य दी थी, किन्तु वन्होंने दुःस निर्मा करना मारमम किया, क्या यह धमयोदा वहीं | पहली का यह कि 'आयत्काले निवधी नारित' दूसरी बाव पर कि वर्षी व्यवज्ञा क्या की है कोई ब्राज्ञा होनेपर बसके पात्रन कार्य वी बाबाएँ उपस्थित होंगी, क्या उनका निरंदन कारा बाजा व मानवा है। बाजा माननेकी बरेश पतिनी दुन शुक्तांतिनी होता, तमके विशे बीवन बलार्ग करता ला विधिक संगत नहीं है सीताहेबीकी चेटा यही तो है। भीवा सर्वस्य पति ही तो है, जित वहीं तो ग्रावरी बाधा उपस्पित है— , रासित्र अवस्था अवधि अति अस्त अधिकरि करा

थीर गुण्हारी बाह्यका पासन करूँगी ।' कहा वा सक्या है

ऐसी चयस्यामें उन्होंने जो जुक निवेदन किया, वसमें विप्रतिपत्ति क्या है को की-पर्म है, जो शास्त्रवंगत बात है, करी तो वे कह नहीं हैं---

> नारित श्रीयां पुमस्यक्षेत्र न कर्त आयुण्णेणियन् । पति शुभूषते येन तेन स्वर्धे महीचते ॥ पानिप्राहृत्य साध्यो श्री अभिन्तो वा मृतस्यना । पतिहरोडमभीष्यन्ती नाषरहिरुविदहिबस् ॥ (म्यु) सा मार्यो वा एक्षे दश्चा सा मार्यो वा स्वरत्ते।

सा भागों मा पतित्राणा सा भागों वा पतित्रता ।। (व्यास) मितं बदावि जनको मितं आता मितं सुतः ।

अमितस्य हि दातारं मत्तीरं पूत्रवासदा ॥ (शिवपुराण)

'पतिरको गुरुक्षीणाम् । (चाणनव)

'कीको न दो कोई यज करनेकी सावरककता है, म मत-बपसास्ती, पतिकों सेवा करनेते ही बह क्लार्मि आहत होती है। पतिकोंकको, कामना करनेवाजी साप्ती की बाहे कीतिक पति हो बारे इस किन्तु उसका अधिव कभी व को। मार्या बही है जो गृह-कार्यमें इस हो, सन्तानवाजी हो, पतिमाया और पतिकता हो। किन्ता, भारता, युव भोता देनेवाज पति हो, हसकिय हस सरा सलकार-मोर्ग्य है। क्लियोंका गुरु एक पति ही है।

 कीन नहीं बजाता। चाहे यह उसकी मानसिक बाधिका ही फज हो, किन्तु उसकी मानस्य ऐसा है होता है, धी उकको सुराधक-हिच्चों की कीमिना हात होती है, धी स्ववस्तानीर ग्रेप-चात, बीर बाधिक क्या कहें, उन्होंने वह बात किनानी दूरकी कहें, जिन दिन देंद 'तर्ग दिन सर्ग। होत्स नाव दुक्त रित्त नात हात है, पुरुष, की-देहका मात्र है, बीर कानिनी कल्लोजिनीका साहित्य, किन्तु हस्य चातको सीताईकी-समस्य परिज्ञाचा देवी ही समस्य चीर का सक्ती हैं।

इसके वपरान्य जन्होंने यह कहर— क्षम प्रम चरित्रम मगर वन बनकर मिमतः उद्गृत। वाचः क्षम हुर-सदन-सम परानातः सुरुत्म। बनदेवे बनदेव करावाः करिताहें सासु-सहस्य सारा।। कुर-विकास-सामरी सुद्देशें। प्रमुक्तिंग मंतु मनेतनुराहें।।

कंद मुळ फल अमिश्र शहारू । अवध-सीध-शत-सीरस पहारू ॥

धानकक 'वासो, पीसो, भाराम करो' वा बत-तियाँच ही युनायों पर दश है, पेदी धरवार्त्त सीताद्वेशीकी बारोको स्त्रीत साम व्यक्तियाद करेगा है जान-प्रमादों परिकान का मार, वरकारको विसस्त दुरूज, पर्य'शाक्षाको सुरसदन-ध्यात सुकान कोर मारोगाई क्या पेता माना जा सकता है वह तो पिकटो-पुराची कार्य हैं प वनस्त्र, करवेत्, सास-साझु साई वन कको, इम-किसका सामग्रे, मनोस्त्राद्वार्त्त हते करेश सामकरो, व को कंपनुकत्त, प्रमुक्तन करा हो सको है सीर न धरवाई सेकों लीपीके समान पहार, पंत्र कोई सुदिसनी की प्रेमाकद ही सकती है। ही, पर कार्यकारण को सकती है। सा स्वाधकारण कार्य

हर्ष सबके जात है, जीम सबके हुएँसे है, जो निसके अनमें वार्ष यह सकता है, वो चाहे तोष सकता है, वो चाहे तोष सहस्ता स्वाप है कि वो हर्ष अध्यक्ता है, वरण, यह आहरता स्वाप है कि वो हर्ष अध्यक्ता है। हैने कहा वह आपरेखनाने हर्पका तरण उपाप है। विदे हम विवेचकी व्याप सेवा में तो आतीव एवट को स्वाप वेद मा वेद आप पहुंच ही एवट नमें अधिविस्ता हिकायों वरेगा। जीमनी सीवाहेंसे रहरे हुंच के विवेचका क्या है। व्याप है विवेदित हकायों वरेगा। जीमनी सीवाहेंसे रहरे हुंच के अध्यक्त की स्वाप है। व्याप है विव्यविष्ठ कर हो प्राप्त है। व्याप के विवेद साथ हमी प्राप्त स्वाप की स्वाप करा हमी सीवाहेंसे प्राप्त की सीवाहेंसे प्राप्त की सीवाहेंसे स्वाप की सीवाहेंसे स्वाप हमी प्राप्त स्वाप की सीवाहेंसे स्वाप की सीवाहेंसे स्वाप की सीवाहेंसे सीवाहेंसे स्वाप की सीवाहेंसे सीवाहेंसे

भाव सकत हुन्य मान तुरकार व साराहिन पृतितु बहतु निकरे ॥ धीरामकर्त्र केरण प्राप्त ॥ वित्रवित्रवानिविधिक्षित्रवास्त्रविद्या

मार्ड मन बन्दान होत्री हती। जिन्तीन बन्द महेन निहारी।। इस उत्तरते किया बाजीबार बाराविक गुणका सावाच कावडे मानीते हैं, किसी निर्माता है, किएनी बीनिसारकार बी वतार्थ क्या बसुविधेमने नहीं, हम वर्णांको काकर हुए बेंगका क्ष्मुभव क्ष्मेंब्र सहत्व कर सकता है बातको सम्बन्धनका पविष्ठ मधीमाँनि यसक सक्ता है। मेम मेमहे जिने होता है, गुक्त-क्यांगहे जिने नहीं। जी कीरामचन्त्रजीते वह भी का। वा, 'रंग में मुक्त-बावनावर कार्गाहन है, बह मेंस कही, मेंसच वन नेपूर इपका जगर कार वी हरामारी, व है। क्यों मी जानकीरेति स्वेगने बाम सी

माहरहताम है। ताने मेमने बहुडी बडापीन होगी ही बहुत बीर माक्ने स'बन बहर ही हैरी बनी मही । सीवारेबी करनी है— बिन्तु इन वीनका कत्तर का ही व्यवस्थान है, बन-इस माय बहे बहुनेरे । सब निगर वीताव बनेरे ॥ क्यमें इनकी स्वामाविकार है, कि वाका दिन कोर प्रमु-विद्यान्यन्त्रेम-सम्मा। सब विद्रि होट् व इक्टीवन्ता।। नाग है। उत्तर वर है-^{रहे} गुहुमारि, नाम बनमोत् । तुन्हरि भीतत्वद्वी हरिहे

साल्यमेमने बाई-माव नहीं दोता, क्यामें सेवा-माव दी मरत होता है। सावयेम गुर्च है, उसके सामने वह नाव इस बहन-रहताकी बजिहारी ! इसीको करते हैं, कर क्रमबार ठहर भी गहीं सकता, बसको क्रमकोकनकर सेवा-वर रख दिशा है कतेजा निकासका किनी मंत्री हुई माछतातित वयस्य विविधित होता सता है। बावती है, साव ही किननी बेममरी। वानकीम यह भाव कितना बाएत है, देखिये-

सबढि मॉर्ज पिय-सेना करिड्डै। मारणमनिज सक्स सम हरिड्डै।। पाय पसारि नैठ तदणाही । करिही नाठ मुन्ति मन माही ॥ सम-कन सहित स्थाम सनु देखे। कहें दुस समर प्रानकी वेशे ॥ सम ग्रहि तून-तर-परुव बासी। पाव क्लोटिहि सब निसि दासी।।

इन चंकियोंमें कितना सामनिवेदन है, कितनी षमाविक्या चीर सरसवा है, कितनी हितकातना चीर सहातुमृति है, यह निरंख हुएएकी धवतारणा गरी, सबक विच्छा बेराच भारतारी सुन्दर प्रचावना है। प्रवस्तासक मानसको प्रताचना नहीं, मनहर्रक, कबरोंक, कियासीहर्ण की तायवामधी विभावना है। स्वार्थनाधनकी कपटमरी गयोजना नहीं, कर्तम्यशानकी भक्तिमी साधना है। भगवाद् बीरामबञ्जने विजिनकी अर्थकाताका वदा विराद

व किया था, और यह भी कहा था-र जहार रजनीचर करहीं । कपरनेच निधि कोटिक करहीं ॥ मीवारेवी इसका किवना सुन्दर और गम्मीर उत्तर

तर मुदुमुरित जेहिं। सानिहि वार्ति बचारि न मेहिं॥ .नहारा।सिंह-नपुदि जिमि ससक सिमाया।।

श्रेत इत्याने क्रिक बन्म हो एता। हैने हेन हों श्रेत जिसने है जिये तुने थे, जिन्तु एवही होंगे की वित्तृत्व हो गया, इसक्रिये वृत्त मसग और विव इस बेसको समाच करूँगा । शाबाम बाँबो सा कता गया है, सहचामियोंका कर्य है समान क्यांग सरकी गृहिकी नहीं है, जो पतिके मार्गेको सम है और विना करें बसकी पूर्ति करती है। प्रतिने वर्ग स्तीमकर कुछ बहा, और वह साने कोई कार्र कि वो बह सहयमियों कहाँ रही। जिल्ल बारे पतिवेशाले गड़ी पहचाना, वसके कर्तथको नहीं समध्य, बो हर्म धीवनवाजाके धानुकृत धारनेको मही बना सकी, किमी ह वियोवका पतिका क्या यसं 👢 वो इतकी स्थाप बह सहधानिया होनेका वाना नहीं कर सकती। तिर्धा

मम मते ते हृद्यं द्यामि, मम वित्तमनुचितं ते वर् मम बाबमेकमना जुनस्य, प्रजापतिष्ट्ता नियुनस्य भक्त मेरे मतको भोर गुण्यास कदम विके, मेरे कि वानुकृत तावारा विश्व ही, एकमना दोका मेरी ही माना, मजापति प्रमको सुन्तसे सम्बन्धित करें। विशाहके बान्तमें कन्याको मुक्का इर्पन कार्य

समय वर कन्यासे कहता है---

वाता है, वह मुनको देसकर कहतो है,-'मुश्मि मंत' परवामि श्वापि म् व मुन सचन सटन हो, मैतुम् हेन्ती [इतका भाव वह है कि विवासकार्य करने का मार्थ है। प्रतिज्ञाएँ करायी गई हैं अपना ग्रेंने स्वयं जो प्रतिज्ञाएँ की हैं, उत्तरार में प्राय-समान धायल खटल रहूँगी । सहपदी के समय वह यह भो कहती हैं—

यते द्वीमे च दातादी मनिष्मामि त्वमा सह । द्यारिदामकामेषु वृष्टः वष्टे पदे बदेतु ॥

वज्ञ, होम और इत्तादिमं—धर्म, वर्ष, और कार्म मैं तदा तुरदारे साथ रहूँगी। इसीविके 'वर्ष भाषां मनुष्यव' है। इसीविके को क्यांक्रिती है, और इसीविके सहप्रमिशी। रामाध्यमें इस संस्कृतिका एक नहा ही क्वम निवर्तन है। रोमासामीजी किया है—

ब्तरि ठाढ़ मेप सुरसरि-रेता। सीय राम गुइ रसन संस्ता॥ चेवर ठगीर देववत कीन्द्रा। प्रमुद्धि संकुष पछि नहिं कह दीन्द्रा॥ पिय-हिमकी सिय गाननहारी। मनि-मुंबरी मन-मुद्दित ब्लारी॥

गोस्प्रामीजी की इस उक्तिमें कि 'प्रमुद्धि सक्च यहि नहिं कष्ट दीन्हा' बदा स्वास्त्र है । 'मन् शब्दका प्रयोग कितना सार्यंक है, साधारय जन होते तो इस विचयमें वे इज जापरवाही कर भी सकते, किन्तु 'प्रश्न'का देन्या करना बडा fl अनुवित था। बढ़ी ही सर्यात्रावितद बाल थी। फिर इसके लाप, जो बीम भी नहीं हिला सकता । बड़े खोगोंके विषे पीनों चकिञ्चनोंकी सहायवा करनेके विषे, इसमकार-के भवतर यहें ही सुरदर होते हैं । सेवा करनेवासर बडोंसे मंद्री चारा। रतता भी है। कमसे कम भगवानको निपाटकी मूठी चवश्य भर देनी चाहिये थी, किन्तु वडाँ, वे तो उस न दे सके। तापस वेपमें उनके पास था ही क्या रै फिर उनके जीको चोड नयों न जगती, और वे नयों न संदुतित होते। सीठारेवी सतीशिरोमिया है, सबी सहधर्मियी भीर भर्पाक्रिनी हैं. उन्होंने प्रतिदेवके श्रद्धवादी बात बान थी, भीर तत्थाल मुद्ति मनसे मिश्रितटित मुँदरी उतार ही । गोरगमीबीके शब्दोंनी सामिकता देखिये-'पिव-विवर्धा-सिय जाननहारी । मनि-मुँटरी मन मुद्दित उत्तरंग ।° कैसी र्भेररी बनारी 🖁 मधिजटित । हैसे उतारी 🖁 सुदित-सबसे । चिपोंको गहना बढ़ा प्यारा होता है, उनकी उसे बासग करते वही कठिनता होती है, चीदा भी होती है, वे धायानीते उसे किमीको देना महीं चाहती, बन बनके कोई मले ही से ले। यह साधारण गहर्योंकी बात है. भीर मविजटित गइना ! यह को क्लेजेमें दिपाकर स्वनेकी चीत्र है, उसका तो नाम ही न सीतिये ! किन्तु सीता-देवीने वैसी ही चेंगुटी उनाती, चौर वह भी मुद्दित सनसे,

ब्रास्ता होनर भी नहीं बर्खा, पेशानीपर शिक्त तक नहीं आया । क्योंकि उनका सर्वाय वो उनका जीवनपत है, उनका सीन्त्र वो उनके हृदयका सीन्त्र है। वो पति-प्रेमके क्यान्यवादी आग्रुपित है, उसकी मृग्यांकी स्था सावस्त्रकृता है विसे पतिकी स्पनुकृतवा बान्त्रनीय है, वो पतिकारित्रकी सूती है, गहर्यापर उसकी लार नहीं उनकाति य यह चिस्सिक्ट सार्यसंकृति है, आग्रुशी जनकातिन्त्री हुसकी उक्तम सार्यर हैं।

काधनिक कालमें भी इसप्रकारके चादर्शों दा सभाव बरों. ७% प्रसंग धापलोगींको सुनाता हैं । देशपूरण, वयासागर. डेशरचन्द्र विद्यासागरका पवित्र नाम धाप-जोतोंने सना होगा । उनकी स्त्री यही साध्वी थीं। विचामानर महोदयकी उदारता लोकविश्रत है। एक वार प्रक जाश्रण उनकी शेवामें उपस्थित हथा. भीर उसने विजय की कि 'मैं कम्यादायसे चाइक हैं, यदि चापने हुए। करों की को मेरा निवाद होना कदिन है। उसने वो सौ उन्हें की बावश्यकता यतखायी । उस समय उनके पास क्छ नहीं था, वे चिन्तित हुए । श्राह्मणको बाहर वैद्यापा, भीर चाप चन्दर गये । सामने वनकी सहधर्मियी या वर्षी, उन्होंने उनके मुलको चीर देखा, और पृद्धा धाप विस्तित क्यों हैं ! उन्होंने कहा 'एक माझय कन्यादायमन है. और दो सौ रुरवेकी दसको चावरमकता है, परम्त इस समय तो में विरुद्ध रिकड्स हैं।' साम्बीके नैवोंमें जस शाया. तन्होंने कहा, 'मेरे हाथके सोनेके करे किस काम बाहिंगे ।' यह कहकर दन्होंने धरने कहे बतारे. भीर पतिरेक्डे हायपर उनको रल दिया । भएनी पद्मीकी बह उत्पाता देखदर उनके समयात होने सता, ये सथ-विसर्जन करते दी बाहर काथे, और उत्पुत्त हरवसे बन्होंने करे बाह्यकारेवको साहर देवर करा, इन्हें मेरी क्षीने शायको शर्यया विया है।

कारको क्या वेश्वा है!

तावाववाओं संस्कृतियों वार्य गुनावे मुनावे एक धाव्य
धार्मा भी मैंने बारकोगों के सामने उपरिक्षा कर दिया।
केवल इस विकारने कि कियों चारकोग सार्वमंत्रिकी
बारकागां सनुष्य कर वर्षे धारमंत्रिकी पहुन दर्गा है,
बार बात भी के बहु बहुत चाहक है। दिस्कृतिकृति में
उसका मध्य है ही, बहुनिया है, प्रधाप हम्मा पर है
कि उनमें सार्वमंत्रिकी मुस्तानार-आणि, भी हंसाहुयों
पर भी उसका स्थाप रेपा खाता है, धारण हम्मा पर है
के उनमें सार्वमंत्रिकी हिनुस्ताना हो है। विवासीयक
संस्थान्य सार्व है हीने होता है, स्थाप स्थाप चार्य है







सुनत मरत भेटेड शति

रीनयंतु रजुपति हत विकार।



रामचरितमानस—

सर्वे उर अभिकाषु अस कहाँई मनाद महेस । आषु अग्रत जुनराज-पद समहि देहिं नरेस ।।

बशिष्ड रामायर्थ---

ये घारयन्ति गुरुपादरकः स्वरीकें ते की निमानिसम्बन्धः स्वराण्डिक

ते कौ विमृतिमस्तिः वशयन्ति नूनम् ॥

जे गुरु बरन रेतु सिर बरही । ते जनु सक्छ नि नव बस करही ॥ अच्छ सम्बन्धि —

कीविकानां हि साधूनामधै वापनुवर्तते । ऋषेणां पुनराद्यानां वाचमयोऽनुवानति ।।

रामचरितमानस—

राजन राजर नामु जसु सब व्यक्तिमत-दातार । फल अनुगानी महिषमनि मन-विन्तम् तुम्हार ॥ स्वेतकेत रासायया—

रामाभिषेकवृत्तानं श्रुत्वायाण्यापुरे शुमे । बाद्यानां बनवीरत्तु शब्दो जडाः सुसवदः ॥ रामक्षीरसम्बद्धः—

सुनत रामअभिषेक सुद्दावा । बाज गहागद्द अवय वधावा ॥ भंगल रामायया—

प्रामदेष्याः पुरानां च केन्यानस्य पूजनम् । चनारानस्युचा सा कीसस्य प्राष्ट् भिनेसन् ॥ पुनर्वेति प्रदास्यानि वस्थायं प्रदीमताम् ॥ ग्रीसामानस्यस्यानं स्वत्येतं निवेदनम् ॥ रामकाराज्ञानसः—

पूर्वी प्रामदेनि सुर शाम । इन्हेंड बहेरि देन बहिन्माय ।। जेहि तिथि होई राम-कल्यानु । देहु दया की सो बस्दान् ।। इंडस्पति संविता—

> दासस्य भवने विद्वन् मुरोरानमनं मुने । मंगकानां भदनम्के कटमक्यसकं क्ष्या॥

रामचरितमानस---सेवकसदन स्वामि आगमन् । मंगळमूळ स्वमंगठ दश्चन् ॥

रधुक्रा—

- तं कर्णमूरुमागत्व रामे और्न्यस्ततामिति । कैनेवीशोकवेवाहः परितन्सका नस्सा

रामचरितमानस—

स्वनसमीष मण्डित केसा। मन्हुँ वरठपनु अस उपदेसा।।
नृष जुवरातु रामकहुँ देहू। श्रीवन-बनम काहु किन केहू ।।
पाञ्चवनक्य रामायसः—

कोमळं वचनं युत्वा कुमतिज्वीरुता सती ॥

अनवीत् केकयो तेऽत्र माया नैव श्रहिप्यति। दीवतामयवा ऋता नकारमयतो मूप ॥ रामको श्रीधमेनाऽत्र प्रपत्रा नैव मे प्रियाः।

रहका काम्भवाज्य प्रयान वर्ष । प्रयान । स्वमावसरको रामो राममाता भवानि ।। मया परिचिताः सर्वे स्वमावसरका जनाः ।

सवा पाराधवाः सर्वे स्वसावसरका जनाः । विचारितं राममात्रा यद्या सम हितं तथा ।। प्रदास्थानि फकं तस्मै स्वयमेतद् असीनि ते ।

शनकरियानस्य—

पुनि मुद्द बचन बुनाडि आहे अपर्दे । मार्ग्हु अन्तः अपुनि दृद वरदे ।।

कहतु कहै किन केटि अवाया। वृद्दी न शामिहि राजी-जाया।।
देंद्व कि देख्व अन्तम् करिनाहीं। मोरिन न मुन्त प्रचेष स्वीपारी ।।

ग्रमु शायु अस्य साथु समाने । राममानु मारिनाह पहिष्माने।।

सम्ब कीरिवा मोर मार्ग्न वराना । रासमानु मारिनाह पहिष्माने।।

सम्ब कीरिवा मोर मार्ग्न वराना । रासमानु मारिनाह पहिष्माने।।

सम्बन्ध वरामान्या—

विविधितः कोलक्षित्रस्यकृताः

निनिर्मिताः कोलक्रियतकन्याः

पितामहेनेच रसैर्निहीनाः । कठोरशीस्य गा समर्करा

रासचरितसाजस--

बनहित कोड किराद किसोरी। रची बिरंधि विषय-मुख-मोरी।। पाहन कृति जिमि कठिन सुमाऊ। विन्हर्हि करेसु न कानन काऊ।।

व्यदःशिताः काननवासहेतोः ।।

थरहात्र रामायश्—

वर्षोसनार्थे द्वायश बनशेष्या मदिन हि । बाक्सिनकारवरः कर्नुं सर्वे बोनाः सुवासकाः ॥



सोतनेसे रामचितिमानसके सब दोहों, सोरकों, कुन्हों ग्रीर चौराह्योंके मूल संस्कृत-प्रन्योंमें मिल बार्वेगे। यह रेक्टर महान् याथ्ये होता है कि तुन्वसीदास्त्रजीने संस्कृत प्रन्योंका केसा सूचक धाप्ययन किया या। वहीं कहों तो एक दोहेंमें दो-दो प्रत्योंके सोर्वोंका चतुन्वाह मिलता है। ग्रव यह प्रक्ष स्थानकः सातने चाता है कि क्या संस्कृतके सन्पूर्व प्रन्य पुजर्सादासकी कथ्यस्य थे। इस नितने ही बहरे बाते हैं, उतना ही इस श्रद्धितीय रामाययकी धर्मुत प्रतिका देखकर परिका हो बाते हैं। संस्कृत-नन्दन-कावनक विकरणकर उत्तराहासकरी संस्कृत नमत फुरोंका रस बेक्ट को यह वैवार करके हिन्दू-जातिकी दान किया है, उसकी प्रकृत संस्कृत किया हमसे मंडी की वा सकती।

रामायणमें कोघ-शान्तिका उपाय

(रिसक-पं • ओरामद्याङ्की मजुमदार एम •ए •, सम्पादक 'उत्सव')

हस्मात् यतः सदा कार्यो विद्याल्यासे मृतुश्रानिः। कामने पादमस्तत्र शतकः शतुसूदनः॥ कपापि कोष पदानं मोधविद्याय सर्वदा।

(अध्यातम राज)

सारमें को लोग करोप दुःखोंको नहीं देखते और तो देखतर भी उनसे मुक्त होना नहीं पाहते, उनकी क्या मनुष्य कहना पाहिये नहीं। यदि मुक्त होना चाहते हैं सो सहा सर्वेदा विद्यान्यासका यब करणा पाहिये। स्माप्य हरे, इष्ट उपस्थे जो

कुछ भी पर क्षेत्रका नाम विद्या नहीं है— नाहं देहश्चिदात्मेति मुद्धिर्विधेति मण्यते ।

'में देह नहीं हूँ, चैतन्य-शब्द जावना हूँ' इस झिदका मान विद्या है। इस विधान्यासके लिये निरन्तर चल करना चारिये। कान-कोभ चीर खोभारि इस विधाने मण्ड यनु हैं। इसनें भी कोभ यो नोच-सार्वोर्स सर्वदा ही विश्वकार हैं।

श्रीशचमधानी रामवतकासकी बात सुनकर कोधके सारे सर्व-भवकी सुधि मूख रहे हैं । भगवान् व्यास खिसते हैं— उन्मतं भानामतंत्र कैकेडीवलक्षेत्रम १

बदा निहम्मि मार्च तद्वन्यून् मानुरानापे॥

(भव्यास्म रा ०)

क्रमायाने कहा, 'कैनेपीके बरामें हुए उत्माल, आत्मा-चित्र राजा द्रारधको कैदकर मैं मरतको उसके मित्रों और क्राप्तायों-समेद सार दाखँगर ।'

भवशन् वास्त्रीकिशीने किछा है कि लच्मयाका क्रोध दूर करनेके लिये अगवान् श्रीरामने सप्तयाका हाथ पकड़ विज्ञा। पर गर्डी अंगवान स्वास करते हैं—

इति कुवन्तं सीमित्रीमार्तिस्य र्धुनन्दनः।

• शीपस्चित्रजनसर्व किस-किश मच्छी यात्र लिये गये हैं, स्टब्स बहुत कच्छा शंवह बाद बीरलब्दाइएसिंहरीने, गताबर प्रेम, एसरेजले एक्सर स्वार्टिज किस है। बाद सामन्यक्रेताल्योद्धार बादू जंगावर्त्वालयां के बार २० सामने देवाएँ परिवान सिंतिय प्रामोदे के स्वर्त मार्टिज के प्रेम क्षार के प्रेम कर अपने वा प्रमाण प्रमाणे के स्वर्ण के प्रमाण प्रमाण के स्वर्ण के प्रमाण प्रमाण के स्वर्ण के प्रमाण प्रमाण के दे तथा कि प्रमाण प्रमाण के स्वर्ण के प्रमाण प्रमाण के स्वर्ण क्षार का प्रमाण के स्वर्ण क्षार का प्रमाण क्षार करण के स्वर्ण क्षार का प्रमाण का प्रमाण क्षार का प्रमाण का प्रम

विवाको - बदलनेडी शांज किसीमें मही है। मारवान् स्वाम हम बारको दिसमाने हैं कि - क्षेत्र कहाँमें उनक होता है सीरिक्स उपायने उसको समूच निर्मृत किस जा सकता है। बेनत सोप हो नहीं, सारी कामानित सीरमार्थ दुर्भावा को बारार्थ है, उसका विनास कैने किस का सरका है। इस भूमवहजी समझ नेतांडे नामी सर-नारियोंडे स्वामं कास्त्रपट निर्मृत करते हैं।

भीभगतान् कहने खते, 'माई सच्यत ! यह सगर, यह राज्य, यह देह में। तुम देश रहे हो, बदि गण होता तो इस देहको सिदासनपर बैडानेके क्षिपे तम माँ मेरे शाव भोगोंमें विम करनेवाले कोगोंका गारा करना चाहरी हो, सो तुम्हारा परिधम सफल होता। किन्तु सचमधा ! क्या पह सब राज्य है। देशी गाई। इन्त्रिय-सुख हो या राज्य-सुत, सभी सुल-भोग बादलॉर्ने विज्ञलीकी बमकके समान चश्चल हैं। अभी हैं भीर बुसरे चलमें नहीं। जीवकी बह चालु भी, जैसे चागमें तपे हुए छोडेपर पड़ी हुई जलडी ब्रॅंद उसी चया स्वा जाती है मेले ही, चया-स्वामी है। जिस भोगके क्रिये मनुष्य इतना घटपटाता है, उसको यह कव भोगेगा ? सर्पने मेंडकको सुँहमें निगल लिया है. मेंदक सर्प फरटके कोमल मांसको मच्छर मानकर उसे भोगनेकी इच्दा करता है, ऐसे ही कालरूप करास सर्पके गालमें पदा हुआ यह मनुष्य भी धनित्य भोगोंको छोड्ना नहीं चाहता । यह मनुष्य भौगोंकी प्राप्तिके लिये दिन-रात करवन्त क्लेश सहता हुआ धन उपार्जन शादि श्लीकिक श्लीर वैदिक धनेक प्रकारके कर्मोंमें प्रवृत्त रहता है। परन्तु शोची ! यहाँ भोग फीन करता है ? मनुष्य क्या एक बार भी इस बातपर विचार करता है कि इन भोगोंको शरीर भोगता है बा थात्मा । देह, देहीसे भिन्न पदार्थ है, देह नड़ है और देही पूर्ण भान-दररूप है। जो देहसे देहीको शलग देखते हैं वे सो चैतन्यमें —पुरुपमें कोई भी भोग देख नहीं पाते।

ित इस संसार सम्योजनपर भी वो विचार करों। रिता, माता, छो, धुन, माई, वे सब मिलकर संसार्स स्तरे हैं। यह सम्योजन भी बहुत-ने बोगॉर्क स्तरेकी मंगावार्स टिके रहनेकी भांति प्रचारवार्थी है। वकावट तीर प्यास मिटकर कीन कहीं चला नाथगा, इस नातक पता है। इसवा इस पारिवारिक सम्योजनको पता है। इसवा इस पारिवारिक सम्योजनको नहीं के प्रवाद में बहुबर कार्य हुन कार्य का नाम क्रं का बात माम्मी। जावड़े प्रवाद में कार्य कार्य कार्य प्रवाद काड़ पुरुष मित्र जाते हैं और किर देगोर्थ महार्थि कोर्ड गा-गाइस कार्य कार्य हो जाते हैं होना है और कार्यक्र सोट्यून, माना जिलामी होना है और कार्यक्र मोट्यून होने ही की कार्य करना है क्षा बाज्यों कोई नहीं देग सहना।

समी—चन प्रायाची मिन चार है। बीत तरहकी नाई चच महुर है। डी-मुल स्तन्तुवर्ग राज्य है भीर महुरचडी बाजु भी सपला करते हैं, व मजुब्य सिमानले नहीं बचना। बहता है कि वै समझ, इन मोगोंकी सहा की तुँगा।

सम्बद्ध ! इस संसारमें किनने दिनोंकी रिपनि है। को रशमके समान है। किर इस स्वावद करवावी वंगत भी सनुप्य निरन्तर होग, शोष्ठ और घनेड प्रकार क्राबाधोंसे सर्वरित रहता है। यह संसार धार्मा गम्पर्व-नगरकी अंति देशते-ही-देसते विजीत हो हा है। दाय ! यह मूह अनुष्य इस ब्रायन्त ब्रासारी संतार रयाची बनानेके लिये दीवाबपर दीवाड चुनाता है की वालॉपर वाबे सम्बाता है, न मातूम स्थानमा इता है स्पेदेवके उदय और भारतके साथ-साथ प्रविदिन महागर्भ बालु चय हो रही है। कितने खीग निरन्तर इहानमार्व थीड़ित हो रहे हैं चौर कितने मर रहे हैं तयारि मतुन पुक बार भी वह नहीं सोचता कि इस देहका भी वार होगा । बताओ, मनुष्य क्यों नहीं समध्ता । रिश्ते दिन की धर्मेचा धराले दिनोंमें नये-नये भोग सुसको निउठ रहेंगे, मूल मनुष्य केवल यही सोचता रहता है। पूर्व व्यवस्थाको हर सेनेवाले कालके वेगको वह एव बार में नहीं देखता। कमे घड़ेके जलकी मांति जीवका जीवन प्रति चण चीण हो रहा है। बीमारियाँ बैरियोंकी मांति रेड्ण सतत प्रहार कर रही हैं। बुद्धावस्था बाधिनके समान मुँ र वी सामने गरज रही है चौर मृत्यु तो समयकी बाट देखी 🖁 साथ साथ धूमकर मानों यही कह रही है कि का सन थावे और कव में इसका संदार करूँ।

को शरीर मरनेके बाद दो दिन भी परा स्रेनी इस्टि—कोटमय हो जाता है। सिंह-स्वाप्ताविके सानेसे बो विद्याके रूपमें परिचात हो जाता है और जजा देनेरा बो लाक बत बाता है, ऐसे कृति-विद्या-सत्त्राची संज्ञायां है स सरीतमें 'में' पन का श्रामिमान करके लोग करते हैं कि 'इस बागद्भित्त सात्रा हैं !' स्वक्, आदिव, मांत, विद्या, मृत्व, ग्रुक श्रीर रक्त स्प्यादि सरीतमें निश्चत विकासके मात्र हो रहे हैं, सत्त्र परिवासके मात्र हो नहें हैं। बताओ, ऐसा विकारो श्रीर परिचामी सरीर आव्या नैसे हो सकता है !

भारे असमय ! जिन कोथादि दोवाँसे वक शरीरपर शास्त्रा करके तम त्रिलोकको दल्य करनेके लिये तैयार इए डो. वे सब बोप देशभिमानसे ही वो अब्द होते हैं । 'शरीर ही में हैं। इसी शक्तिका नाम ग्रविधा है: 'में शरीर नहीं, में चित्र म्बरुप, जामस्वरूप शास्मा हैं। इस वृद्धिका नाम विधा है। रविद्या ही मामा है । धारमाको सनात्मा सानना ही सावा । इसमें विदेश-माथा जगत्की कल्पना करती है और प्रावस्या-भाषा ज्ञानको इक रखती है। श्रविद्या जन्म-सरख-हर संसारमें हेत है और विद्या संसार द:सका हरता करने-शाली है। धतपुर लो इस बु:लसागरसे वरना चाडते हैं दन ममच ग्रोंको सर्वता विचाका जन्यास करना चाहिये। हे शत्रसवन ! 'में शरीर नहीं चैतन्य हैं, में भारता हैं ।' जो धातस्य छोडका सर्वता ऐसा चन्यास करते हैं, उनका प्रधान कर्तच्य काम, क्रोध, खोमादि राज्योंका नाश करना होता है। इनमें कोच तो भीषविद्याका यहा ही विपम वैधी है. यह सता-सर्वता झोचके मार्गमें विश्व दाला करता है। कोषके वशमें होकर ही मतुत्य पिता, भाई, सुद्धद और सखाका वर्ष काता है। कीय ही मनस्तापका मस कारक है। जिस समय अनुष्यके बान्तः करण्ये क्रोधका चैग वह साका है उस समय उसको 'श्या करना चाहिये और श्या नहीं करना चाढिये' इस बावका कीई विचार नहीं रहता । इसीबिये वह वर्शके प्रति दर्वास्य बीसने सराता है और इसपर भी यदि कोच शान्त नहीं होता तो उन्हें बारने खगता है, एवं पीवे महान् दुःखको पात होता है। इसपकार-से कोच मनव्यको संसारमें बाँध उसता है और धर्मका चय करता है, चतः भाई सदमय ! तम कोचहा व्याग कर दो ! कोच मनुष्यका महाराष्ट्र है । कारण, यह कोच की मनुष्यको सुन्यको धुना जाता है। जोग कोय-वश विष साकर बाग्यहत्या भी कर केते हैं।

पर इत्यादि परायों की ओ इत्या है, यह उत्तरोत्तर बहुती रहती है हुसी लिये इस कृष्याको वैतरची नदीको उपमा

में अभी है। जैसे बसराजके सार्गम वेतरकी एक सनि सर्वकर दस्तर नदी है शौरवादियोंको उसे पार करना पहला है इसी प्रकार संसारमें यह क्ष्यारूपी नदी भी दव दि संसारी अन्योंके बिये दुस्तर है। भाई ! सन्तोष ही--वाद्य विषयोंकी इच्छाका स्वाम ही---नन्दनवनकी नाई धानन्द-दावड है चौर बनकी निवृत्ति-रूप शास्ति ही कामधेन है। कामधेनसे हम को बला चाउते हैं. वही वला वह वेती है। इसीप्रकार शान्ति भी थी चार प्रकायडोंकी प्राप्तिकी धपैला भी श्राधिक सुख प्रदान करती है । संदम्या ! धन स्टब कारचोंसे तम इस समय वटि शान्तिकी सेवाम लग जायो तो तुम्हारा कोई भी यत्र नहीं रहेगा । कारण, शान्तिकी सेवा तत्वारी राष्ट्र आत्माकी चीर कर देशी सब हम देखीते कि बाल्मामें कोहै विकार नहीं । फिर रामु उत्पन्न ही कहाँसे होगा र आत्मा न इस्टिय है, न सन है, न बुद्धि है चीर स आख है। बढ़ इन सबसे प्रथक वला है। बादमा शद है. स्वयं-प्रकाश है. निविकार है और निराकार है। देत. इतिहय. बाख इत्यादि तो चाप्माके विश्रीत हैं, ब्रयांत ये चलक हें. क्रमकाश हैं, विकासी हैं और आकारवाले हैं। मनव्य वदतक सरीर, इन्द्रिय, प्रायादिस प्रयक्त इस भागाको गरी वान सेता तपतक इसे सन्म-सरक्षकी प्राप्ति होशी है सीर वह संसारमें नाना प्रकारके द्वाल भोगता है। शतपव तम या माको सर्वेदा शरीर, सम, बुद्धि, प्राण और इन्द्रियोंसे प्रयक् मार्थो । इस तरह मानवे हुए बुद्धि प्रमृतिका ग्रवलस्वन करके बाहरसे सोकम्पवहार करो । सेव न करो । सस-दास को प्रारूध है, जो भाषे उसीको भोगते कामी। फिर नम कर्म काके भी कर्ममें जिस नहीं होश्रोगे । हे राघव ! बाहरसे सर्वेत्र कल् व्यपन विसानेपर भी तुम भीतरसे शुद्ध-स्वमाद हो शतपर तम समेरलसे निर्देश रहोगे।

ह्यफाण ! यह वी हायारे प्रति मैंने कानका उपनेश किया, इन सन बार्वोको सहर-सनेहा हृदयमें सोधते रही तो फिर सारे संसारके दुःल भी गुप्तारा कृद नहीं कर सकेंगे।"

'संसादुःसैरसिंगैर्याध्यसे न कदावनः

कीक्यवानमें यही प्रार्थना है कि इमडोग इस ज्ञानको कमी न मुर्वे ।

रामायणकी विशेषता

(मेलक---कविममार श्रीरत'न्द्रतात अपूर)



मापन्ते एक वर्श निरोक्त वर है कि इसमें पानी बारोंदीको बहुन बहा करके दिनाया है। तिना-पुचने, भाई-भाईमें, पनि-प्रवाम को चर्महा मन्धन भीर ग्रीति वृत्रे सक्तिका सम्बन्ध है. समायक्षत्रे उसे इनना

महत्त्व दिया है कि वह बहुत राहक्रदीमें महाकालके क्पपुक्त हो गया है । मानः देश-जय, शतु-विकाश और दो मयज विरोधी पर्चोंके प्रथयह खायान-प्रतिवान शावाहस्थाः महाकाप्यके भीचमें कान्द्रोसन चीर उद्योपनाका समार करते हैं । किन्तु रामापणकी महिमाने राम-रायवाडे यक्का भाधव गईं। क्षिया है, इसमें वर्थित युद्धटना श्रीराम-चात्र भीर सीताके वाग्यच-प्रेमको हो बञ्जास करके दिखाने-का उपलक्षमात्र है। प्रत्रहे क्षिमे विवादा बाजापासन. भाईके लिये भाईका चारमत्याग, पत्नीका पतिमत, पतिका प्रतीमत और प्रजाके प्रति राजाका कर्तत्व कर्दातक हो सकता है. रामाययने यही दिखाया है। इसप्रकार व्यक्तिविशेपके घरकी वालोंका इतना विशव वर्धान करना किसी देशके महाकाम्यमें उचित वहीं समन्ता गया । इससे केवल कविका ही नहीं किना सारे भारतवर्षका परिचय मिल जाता है। गुड चौर गृहधर्म भारतवर्षमें कितने और कैसे उच्च थे से इससे जाने जायँगे । इमारे वेशमें गृहस्वाधमको भी ग्रायन्त उच स्थान था, यह काध्य इस बातको प्रमाखित करता है। पृहस्थाभम हमारे निजके सुख और भारामके जिये नहीं या किन्तु गृहस्थाश्रम सारे समाजको धारण करता या धीर मनुष्यको यथार्यस्वसे मनुष्य बनाता था । गृहस्थान्नमको भारतवर्षीय आर्यजातिकी गींव सममना चाहिये और रामायण उसी गृहस्याधमका कान्य है। इसी गृहस्थालम-धर्मको रामायणने सङ्घटके समयमें—धनवासके दुःसमें शालकर उसे विशेष गौरव प्रदान किया है। कैकेवी और मन्यराके कु बावों के कटिन बाधातों से बायोध्या के राजगृहके नष्ट हो जानेपर भी इस गृहस्य-पर्मकी दुर्भेश दहताको रामायस घोषित कर रही है। समायणने बाहबल, विजयकी श्रमितापा और राष्ट्र-गौरव इन सबका परित्याग कर केवल जास्तरसारपद गृहधर्मको ही करुयाके समुजलीसे समिसिक कर उसे सर्वोध सिंहामनपर विराजित किया है।

सवादीन वाटक करेंगे वि इस प्रशास वर्णन अनिश्वभेत्रिमें परिवाप हो जाता है। हप इस बानकी शीर्यामा नहीं ही सकती कि दिन म नीमाका और किय जगर कलनावी सीमांच वेर कामकना कतिरापीकिन्त हो जानी है। विन समायोगकोने कहा है कि रामायसमें चरित्रनर माहण हो गया है, उनमे हम गरी बहेंगे कि मही

एक के लिये भी सनि-माहन है, इसरें के विवेद्यीय

जिल जगह को चाहरों प्रचलित है उसे पी माजामें चडित किया बाप तो बसे वडाँडे क्रोप म नहीं करेंगे । इस चएने कानोंमें कितने राष्ट्रेंको ही सुन सकते हैं इसकी सीमा है, वह नहीं कि ^{बाहर} करता चन्ना जाय और हम मुनने ही जायें। हमारे की सीमाके बाहर कोई विज्ञाबर हमारे कान ही ^{हर} काइ बाझे किन्तु निर्दिष्ट सीमाने बाहर हमारे बार यण्डोंको कथी शहय ही न करेंगे। बायमें वरि भावके उद्भावनके सम्बन्धमें भी बही बात बाती है।

यदि यह बात सत्य है तो यह बात सहता र मानी या रही है कि रामायणकी क्या भारत^{वर्ड है} किसी भंशमें शविशयोक्तिपया नहीं हुई है। इस श^{मार} भारतवर्षके बाबाज बुद-बनिता और उँच शीव कोगोंने केवल शिका ही नहीं पायी है किन्तु हानन मास किया है, इसे केवल उन्होंने शिरोधार ही दिन सो नहीं, इसे उन्होंने इदयमें भी स्थान दिया है। वनका पर्मशास्त्र ही नहीं, काप्य भी है।

श्रीरामधन्त्रजी जो एक 🗗 कालमें हमारे निकटरें। भौर मनुष्य हैं, रामायण जो एक ही कावमें हमारी के भौर श्रीतिमाजन हुई है, यह क्रमी सम्भव वहीं हों वदि इस सहाधन्यकी कविता भारतवर्षकी रहिने हेर्र कवियोंकी करोज करपना ही होती और वह इसारे होंड व्यवहारके कार्यमें न भर सकती ।

इसमकारके मन्यको यदि विदेशी समातीचक हार्ग कान्योंके विचारके बादसंके बनुसार बनाइन करें। उनके देशके सहित तुलना करनेम मारतवरंकी एवं की भी विशेषता प्रकट होती है। रामायणमें भारतवारी

(रामायणी-दर) चाहा वही पाया है।

रामचरितमानसंके लोकप्रिय होनेका कारण

(लेखक-शबब्दादर व्यवधारी ठाटा थीसीतारामत्री शै०ए०)

अंदिक्ष्य सारके जितने बाग है सब किसी-व-किसी कि प्रयोजनसे किये जाते हैं । गोस्वामी सुबसी-श्री श्री सामग्रीतमानसकी स्थानक कारब क्रिक्टिंट यह जिला है-

स्त्रास्त्रःसुखाय तुकसी रधुनायगाया-

भागानिबस्थमतिभय्यसमानेशीवै . ११

काय-रचना पराके जिये की जाती है, यन कमानेके किये की जाती है, इस्तंगक माराके जिये की जाती है और उपदेशके दिये की जाती है, दर यहाँ को प्रयोजन केश्व अपने इस्तं-कायका हुए है, जिसे संस्कृतमें पर-विश्वीक करते हैं, रहना गोस्वामीओं जाने चलकर एक बात और करते हैं-

वरनी एपुनर विसद जस पुनि करिक्रकुव नसाव । कहनेवाले कह सकते हैं कि गोरवासीओने खपने घोषाभोंको पह खालच दिया है। यह ऐसा वहीं है, उनका अध्य प्रयोजन तो यह है-

सोरे मन प्रयोध जेहि होई।

वर्षोहि राम-क्या 'नित लगेद वोर-मक-राणे' जीर 'मर्चारीत राणी' है सावस् यह है कि ग्रोदानामिताके कार्यने सीमाइस रामार्ग केरे कि वह हो राषा है हमारी समझें यह बाता है, कि कन्होंने अपने समयके सारे मणित पाने व्यापा है, कि कन्होंने अपने समयके सारे मणीत पाने व्यापा है कि यो शामार है कि एवड़े बनका मा भी बार्गों के या, परानु बन्दोंने कराने सन्तेगके तिये मो राह निकाती, यही संतारके किये पान-मार्ग वन गया। ' 'मान्युपानिमामामा' मारकर को राह निकात वह मारवस्त्रेके किये समायन कन गया। हो भी कनुत्री द्या गरीं, जिम जिम स्वीताने मार बाद मुख्याद पहल कार्य पुरु मार्ग हो ग्रीव भी विश्वव वो एक दुसरेवा तिर 'हो रहे ये, सच्छी यह सर बच्छा बाता। विचारनेकी बात है कि हासने देशी कीन्स्त्री बात थी।

किसी कविष्की रचनाको समयनेके क्षिये कविके समय-की देश-एगा बाननेकी बढ़ी कानस्थानता है। वह किजनी पार्टी समयनपुष्ट्रम कर कावता है जो शब्दाबीय हुविहास काने विना समयमें नहीं बा सकती। गोलामोजीने क्षितावसीमें द्विता है- एक तो करात कतिकात सूर-मूत शामें केढमेंकी साज-सी समीचरी है मीनकी।

ह्लको सजम्मेके विवे हृतिहाल और उगोतिप्राध दोनोंकी करण सेनी पहली हैं। इस पंतिकी स्वाच्या बड़ी रोजक हैं। इसके विवे हम मागाने सुप्रसिद्ध विद्वान् और प्रात्मकों सद्युपारी सर सार्ग पियमंत्रके मोर्स (Motes) से एक श्रेंगका समुवाद वजुल करते हैं। तुस्तरीयासांकों स्वीवनकावमें गरीन्द्रपाने मीन्तापिमें यो साप मंत्री किया, पहले चैत सुद्धी न संबच १६० में, तो और संचया १६० राक रहा और बुस्ती बार चैत सुद्धी र संच १६६६ में। हम चार 'मीनकी स्वीचरी' वोड संच १६० वक रही, और हसी सनीचरीमें सुस्तामार्गोका सत्याचार बनारसमें यहुत पर स्वाचा या।

भारतवर्षमें जितने नये नये मा निकाते हैं, सब धननेके सबा कहते जीर दूसरे को पायवब बताते हैं। स्वामी रामाञ्जवह करण सं: १०७४ दिन (१०१४ हैं) में हुच्या हैं-स्वामी रामाञ्ज करने गुरुते चनते दो शीवों की हुच्या हैं-की खहाई सीर जैनोंकी हारका पुरू नदाहरण पह है---

इतना क्षिप्तवर कथ इस उन शिक्ष मिन्न महींवा उद्येख करेंगे को योस्तामीके समयुर्जे स्वक्षित थे कीर मिनको गोस्तामीकीने कपने मानसमें सबस्य किया क्षेत्र

(१) होकरस्यामीका पेदान्त-स्वामी शंकावार्यका मातुमांव धावकरकी गवेरवाके खतुसार विक्रम संकर्षी वर्षी शातावारीमें द्वारा या। इन्होंने वेदान्त (बादावार्या) दुव्यक्षे एक टीका तिली है को 'शंकर-मान्य' के नामसे प्रसिद्ध है। इसके दुसरे धान्यानमें इन्होंने खान समस्यके प्रधानन धाना है। इसके दुसरे धान्यानमें इन्होंने खाने समस्यके प्रधानन धाना की लाती है जी ये ही बीव सामा प्रमानुक विदोधी थे। स्वामी सामानुक स्थिति थे। स्वामी सामानुक स्थान सामानुसार ध्यपन मातानुसार एक टीका की है को 'शीमाय्य' के नामसे मस्तिद्ध है।

रवामी संकरावार्यने बोद्याँको परान करके मारतवर्यके बाइट निकाल दिवा और गया जादि गयान बौद-तीयाँको हिन्दु-तीर्य बना दिया था। उनकी रिकाक प्रभाव पात्रका मी दिन्दु-पर्यपर बहुत है। गोरशमीबीके समस्य इस मतके श्रद्धतापी बहुत थे। इसलिये पहला पर्य, जिसकी कुछ देखनेका प्रपक्त करना उपित समस्य गया, ग्रंकरका बेदान्य प्रा, और रामचरित-पर्यमंगे बेदान्य लागेके लिये ग्रंकर-गर्दा, वार्य रामचरित-पर्यमंगे व्याप्त लागेके लिये ग्रंकर-गिराजाक स्वाद करमें मिला दिया गया, या यां कहना चारित्य कि रामचरितके बतागरेवाले मीरामके परमामक एक ग्रंकर दी हैं। इतामी ग्रंकराचार्य सी ग्रंकरके ध्यवतार माने वाते हैं। इती बारव ग्रंकर हें हुँ हर्स ग्रंकरका बेदान्य मानसमें बात विश्वा गया। नामके परनेवाले को बेदान्यले परिवर्त हैं, गिरिता-ग्रंकर के संवाद में पद-पद्मा बेदान्य के सिद्यान्य देखीं।

(२) रामानुन (छस्मण)का श्रीविण्यव-स्टब्स्याय— दूसरा मत वो गोरगमित्रीके समयमें पूनवामसे श्वित्वत था, त्यांगी रामानुका था। श्वामी सामानुकक सम्बद्धावको सीसम्प्रदाय करते हैं वीर वनके वनुगारी हस देखें साधारख दिले आपारी कर्वाले हैं। रामचित्रमान्तरमें इस सम्प्रदायके समर्थक श्रीवक्तमार्थमी हैं। इस करनी हस करवाणी प्रतिमें मुंगी सुखर्वनावजीको रीकालेक एक संध

"बन्दौ रुक्तिमन ९६-जठ-जाता। सीतल सुखद भक-सुख-दाता।। एपपि दीरवि निमल पराका । दंह समान मयो जस जाका।। "ता पांडे श्रीवर्मिजा गति समायाति परमना कति सीनस भीर सुन्दाः भक्तनों के पारन्दात तिसे मैं मयाम करता हैं।

> "क पूरवीरतपुर्व शारित्तुवस्यं-धीतान्वरं शरिसतपुमनत्वमादिन्। बक्षोमित्राद्धतितमुख्यमानिर्वाणं-शामतुर्वे मत्र मनोमपदं निजनात्।।

''श्रीमामचन्द्रको कीर्तिक्यो बज्जब पताको तिस् यह द्वार-क्य है सर्यान् बच्चवानीय समूर्य सामध्ये समये मनाएके बदय देते हैं, देतो यहन्दर्ग मेर (गर्दे और परहाराम-सामत्र । ऐसे हो सब बार्यों कार्य के साम युग्नों स्था हो है। हेलो, सत्युग्ने बन्ताहर बोकर अपने सहस्मुक्तोंसे बेबब समस्युग्नाहर्ग है सायो और बार्यानाहर्ग सुविवादि देशींस वर्ष में समुना और बरिजायुरका क्येय ह्यारिवेडब समस्यीते है निमित्त हैं। क्येर किर्मुप्त क्षेत्र कार्य स्था कीरित्रक हैं। क्येर किर्मुप्त क्षेत्र कार्य स्था और इस्टियों कार्य समायकीरिक्यो बनाब तिराका है स्था व सीबक्यवाची यदी होकर अपने स्विक्रम के सक्ष वक्यवाची स्था होन्द्र स्थाने स्थान

ग है। "वाखण्डे बहुके रहेके कुष्टरोजनतंकुठे। करवे वैच्यवसिद्धान्तं पुनरुद्धार्यते यती॥

"अर्थात्-जन जैन, बौद, पार्वाक, पासरह कडियुर फैल जायता और कुद्दिन करके संसार अर बापता ह बैच्यत-सिदान्तको फेरि यती उदार करेंगे।

"अवननं प्रयोग युवे हिताये ठकाणं ह्या।
 वृतीये यरुरामणं कती हानावृत्वे स्ति।
 वृत्वीये यरुरामणं कती हानावृत्वे स्ति।
 "क्यायंत्-बो सत्तुमानं कतन्त परे कीर्युरामं ह्यान्य स्त्रीर हापरमें यद्यदेव सोई हृदियुगमं होडक्यां

इस अपनी धोरसे इतना धीर बाना बारने हैं कि स्वामी शामानुबके अनुवाधियोंने कम से-कम इष्टिश्तेन स्वामी शामानुबके अनुवाधियोंने कम से-कम इष्टिश्तेन सीराम-सानकीकी जणसाना कैकापी धीर कात दि से भारतकरोंने अलेक पात-सानकीके मन्दिर इसी सम्मान सानोंके किपिकारमें हैं।

 पर राज्य स्थितंत्र ४९७० में लिया गयी थी और माचीन श्रीकामीने आवत प्रामाणिक है, समें सूत्र मरी ती ने राज्य है। माजक किल्सिन् ५०३० है।

(३) स्वामी रामानन्दका सम्प्रदाय—धोसग ात स्वामी रामानन्दश्चा है।स्वामी रामानन्दश्च बन्म ।यागराजर्ने संबद् १४०० विकमीमें हुवा या। घाचायी रीर रामानन्त्रपाँचा सगदा तठनेसे पडले हमलोग गतते थे कि स्वामी रामानन्द भी पहले बाजार्य ही । परन्त यन स्थामी रामानुजने रामानन्दीय सम्प्रदाय-हा कोई सम्दन्ध नहीं माना वाला । स्वासी ामानुषकी शिचाको देशकी दशासे कोई सम्बन्ध व ा, न उनके समयमें परदेशियों के बातेसे इस दशामें बड़े है ऐसे परिवर्तन ही हो गये थे सैने 🌆 उनके पोझे सीन सौ र्भम हुए । असनीवीके बाजारमें इजारों मनुष्योंका काँसी ाटकाया बाना, दिलीमें तैमरकी बाजासे नर-मुख्डोंका प्रमहताना, ऐसी घटनाएँ उस समय व थीं, जिनका बासर हरूप देश-सुधार करनेवाक्षेपर न प्रका । शमानन्दने यह ो देखा कि हमारे देशके पददक्षित चमार को बड़ी रचिके ाप गायका मोस खाते हैं, सुसलमान होकर दोख बन गये ीर जिन दिन्तुचाँने उनसे पूर्णा की चीर उनका तिरस्कार इपा था, विनेत्री जातिका वस पाकर, उन्होंको विदानेके 🕅 वे गो-वय करने क्षमे । स्वामी रामानन्दने सोचा कि ाना विक्रियोद्धार किये काम नहीं चलता। इस मारतवर्षका कर मोत्रन मांस नहीं है, यहाँ कार्योंने इतने प्रकारके चर्जों, स्वादिष्ट कर्जों का वाविष्कार किया है कि मांस स्वयं दिवा भी अंतुष्य करवें-से-प्रकां भोजन करता भीर हर-प्रष्ट रह सकता है। रसामें सामान्यले पमारत कहा कि 'तुम मांस सावा चुन्द रो चीर कर्जी और को तो हम 'तुम प्रदानों पंतरत्में भोजन कराते हैं।' उनका एक मणन रिष्प रेहाल चमार या । इतना ही वहाँ जन्होंने कशोर हाताहेकों भी सपना टिष्प क्याया। अविच्युरायमें तिला है कि स्वाती रामान्यला एक टिष्प कर्माया पहुँचा भीर वहाँ उतने सबेक पुत्रकामोंको वैष्याव बना तिला। मही मान कड़को तृत्वीह चीर इतिलोहार है। उन्होंने पद रिलाया कि राम-बानकोंके परवाँमें मिक होने हो सावारका काम कां। इत अधिका सबको विध्वार है, सीर-

किन्दे शिव न राम मैनेही ।

क्रीमेंच हिन्दें केटि नैति साम मामित प्राप्त मामित हिन्दें केटि नैति साम मामित प्राप्त मामित सामामित सामाम

कतिकार तुरुसीसे स्वाने १डि राम सन्मुस करत हो। जिलका कार्य यह है कि स्वानी रामानग्दकी छिकाने अन्ते ओरचुनायतीका मक्त करा दिया। छ

श्राहान

यासना विकल सूर्यणसा-सी सनाती है। इस इन्द्रियोका मोह दससुल राष्ट्रण है जिससे विकस युद्धि-सीता दुन्त पाती है। अमुर-समूहोंसे ध्यथित हो इदय-मूथि जिस जोत जनुसाती, प्रयस्ताती, विलसाती है। सोप किस जोत करणार्क पाम समयन्द्र।

याद इस ओरबी तुम्हें क्यों न खाती है ! क्लोक्सलार विक. वनक वक, एक-वक बोक, पनक कारक वक एनक

काम क्रोघ लोभ सरदूपण त्रिशिर तुल्य

इसने इस विशवत दिशानों और श्वासनके मेनिकीश काल अवशिष्ठ करनेके किये में से मोरी नाते किस दी है। मददास्त्र है पर पूर्ण व्यास्त्रा को मानकों ।



रेलकर मसकते उसे प्रचाम किया तथा बोबे—'काप मेरी पर्ममाता है, में सारको प्रचास करता हैं। व्यक्त सुख्य सीर महान् तपके प्रभावते हो मतुष्यको वापके शिमीयका सार प्रमावते हो मतुष्यको वापके शिमीयका सार प्रमावते हो निर्मायका सार प्रमावते हो करतीके) चराय रही नव्य सीरामण मिळवा है। चात मुस्ते धारके रही तरे विके चात हो। वे वो बोकीरावता है, ते से हो मेरे विके चात हो। वापको के किसीय मान्यकर कारों कि सिंद की सार प्रवास बीरामको के विके वाप सीरामको के विके वाप सीरामको के विके वाप सीरामको के विके वाप सीरामको के विका सीरामता है। उनके बाद 'सरमाये मान्यको स्वारी कारों के स्वारी कार प्रमावती कार प्रमावती कार प्रमावती कारों के स्वारी कार प्रवास मान्यकी स्वारी कार प्रमावती कार के स्वारी कार प्रमावती कार कार प्रमावती कार प्या कार प्रमावती कार प्रमावती कार प्रमावती कार प्रमावती कार प्रमाव

धपराय कमी न करना। खड़ामें कमी मनुष्य कार्ये तो उनका कोई राचस यस न करने पाये।' विभीपयने धाधानसम्बद्धान स्वीकार किया।

वदननतर वापस खोटनेके विशेषाय और अरहमारित औराम विमानपर चहे । तथ विभीषवाने कहा 'ममी ! यदि ब्रह्मका जुल क्यों करा रहेगा हो। इत्योंके सभी कोष यही चाकर इस कोरांकि तंत करेंगे, इत्यक्ति क्या करान चाहिये ?' भागवान्त्री विभीणकाचे बात सुनक पुकको बीचमेंते तोन इक्या और इस जीवनके कीचके हुकाने किर तीन हुका कर दिये । वहनन्तर उस एक एक हुकाने किर बीचे होटे इक्टे कर वाले, जिलसे उस हुट गावा और माँ बहुइके साथ आरहका मार्ग पुना विविध हो गया ! यह अम्म चण्डानको की गारी है।

गोस्वामीजीकी निष्काम-भक्ति

(हेसक-पं भोजगन्नायमसारजी मिल बी = ४०, बी = एस =)

चतुर्विश प्रजले मां जनाः सुप्रतिनोऽर्जुन । मतो जिज्ञासुरर्यायीं ज्ञानी च मरतर्वम ॥ (गी॰ ७३१६)

क्षेत्र संस्थेन मरावाद शीहरवाने प्रश्नेत्री वार पंचित्र वारतार है। जाते, विश्वाद्य और हैं वार्यारी, वे सीन मेंद स्थान स्वादें हैं श्रीची प्रेयी शानी प्रयोद निकासी क्षादें हैं। श्रीची प्रमी स्थान सीन सेपीने क्षाद दिश्योदीके में मात्र प्रसाद किया मिल्हिस क्षादित की भीद इस माह्नि ते आह का बेनेदर स्वादें हि बिने भीद क्ष्म वाह्मिक में राह का बेनेदर स्वादें हि बिने भीद क्ष्म वाह्मिक में राह काता। इसक्सारकी स्वीत क्ष्में क्ष्में क्षादें प्र प्रयोद हराव भीद हैं जुनी होता। इसमें क्ष्में क्ष्में क्ष्में प्रसाद भीद हैं जुनी होता। इसमें क्ष्में कियो प्रसाद है भीद हमा मिल्हिस क्ष्में निकास क्ष्में हैं कियो प्रसाद है और हम मिल्हिस क्ष्मानी हम

िन्तु, संतारमें देने विरक्षे 🚮 भक्त हुए हैं जिनके एवमें निष्याम मक्ति बन्मले ही क्लब हुई हो । बन्ध प्रकारके अन्त प्राराधर्में निम्नवेद्योंके ही प्रक्त थे, किन्त भक्तिका निरम्तर निरद्यक्ष करवसे कम्यास करते करते कालमें अपरोंने भी निष्याम मसिको साम कर विपा. जैसे कि श्रृष बाहि। शाचीन बासमें इस इसमदारकी गरैनकी रक्तर अकि बाजक महादमें पाने हैं । किसी स्वार्य बायका हेनको सेवन चहार दे हरूवर्ते सगवजन्ति शावस नहीं इर्ड थी । बासक प्रतान निजनात वकतिहसावये अगवदास-का साम्य धर्व की चेन किया काते थे । उन्हें स्वयं इस वात-का इन भी जान नहीं था कि वे वर्गे और किम क्रिये बाम-कारण किया करते हैं। उनके अनवसामसमें प्रतिका निर्मेख फोत सनवरतरूपमें प्रशक्ति हो रहा था और इस अकि-आगीरपीमें अपने सम्पूर्ण यन, प्राय, प्रतिप्रको निमंत्रित कानेमें उन्हें एक प्रचारका कानिरंपनीथ कानन्त्र बास होता था । बस, इपके पिका उनकी अस्टिका, बनके चारविंश अगवदाय-कारण्या और कोई क्या कारण का हेन ही नहीं या । महादकी भक्तिये प्रमुख होका कर भगवान वर्षे वर देश चाहते ये तो धदानने क्या ही सन्दर अचर दिया है---

यस्त आदिए आशास्त्रे न हा अलः हा वै विश्वह भारतासाना न वै मताः स्वामिन्यादितः भारमनः ॥ न स्वामी मन्यतः स्वतःमनिष्यद्रन्थी शदी चरित्रकः ॥ (भागवत ७।१०।४-५)

चर्मात हे भगवन ! को धारमे काहान पानेकी भारास्ते भर्यात् किसी उद्देश्य या मनोरयको सेक्ट भारकी मिक करता है यह सचा मक्त, सचा सेवक गईों, वह शो प्रेमका पनिया है. यह तो भतिका सौदा करता है. चौर उसके पदलेमें प्रमुसे कुछ चाहता है। ऐसे ही सो रशसी धपनी मान-प्रतिष्ठाके क्षिये वरहान देवा चाहता है वह भी सचा स्वामी नहीं ! फिर भी यदि मेरे माखिक मेरी सेवापर प्रसन्न डोकर वर देना डी चाडते हैं. तो वडी वर हैं कि "कामानां इपसरोह भवतत्तु कृतं वरम्" सेरे हटचर्मे कामनार्धी-की कभी उत्पत्ति ही नहीं हो। बहा ! निष्कास अनिका कितना सन्दर परिपाक है। धन्य है इस अक्तपदर बाजक-की यह निष्काम भक्ति और धम्य है यह देश जिसमें ऐसे मकरिरोमियिको पैरा किया । अपने ऐसे भक्तोंको अच्य काके ही तो भगवानने उद्यवसे कहा है-

स किश्रित्माच्या चंता मका हाकान्तमा सस । बाम्छन्त्वपि सवा दत्त केवत्यमपूनमंबम् ॥

(मागवत ११३२०।३४) भर्यात भेरे को समस्यभक्त अक्ति स्टानेपर भी केनास या मोचकी इच्छानक नहीं रखते, वे पवित्र और धीर मक दी समे प्यारे हैं।

बन्दा, यह तो हुई प्राचीनकालके निकास अन्तींकी बात । प्रव हमारे हिन्दी-कवि-इल-कमल-दिवाकर मक्तिमास्कर गुसाई तुबसीदासबीकी निष्ठाम मक्तिका मगना सीजिये भीर दमकी अकि-संघा-तसकी चारानी चलिये । भार ! तुकसीकी सनम्य निकास मक्तिका क्या कहना है ! वह तो पुरुष-सजिला आगीरयीकी विमल-भवज-भारासे भी निर्मल, स्पटिकमे भी यहकर स्वरत एवं ज्ञाचासिता और इच्छुसे भी वड़कर मपुर है। उसकी मधुरतामें की मादकनः है यह संसारमें बम्यत्र दुसँग्र है। उस मादकनामें जो युद्ध बार मश हो गया. तुस्त्रसीकी चनन्य-अक्तिका रसामृत जिसने पानकर जिया, उस निरुद्ध प्रेमका एवकता हुया प्याचा जिसने यपने मुँहमें खाँख म् ६वर वेंदेल लिया, उसमे बहुकर मान्यवान् इस संसारमें चौर धौन है । तुजसीदासबीकी निष्यम अकि कितनी दश्

गम्मीर पर्व सरम है, इयका बन्ताता उनी केंगोंके सक्या है विन्होंने सचयी-माहित्व मंगेशमें गारे खगाये हैं। 'विजयातिका' में स्थाने हश्रीत मगदान एउटर मति भाग्य-निवेदन काते हुए हुए महामास साम निष्टाम-भक्ति-परिपृतित को इत्योदगार प्रस्ट सिर्देश को बास्तवमें धानुसम, धानुसमीय तथा धटितीय है। ह विरव-साहित्यको हैं। ब्राइये, धार्मिक प्रत्योंच प्रत्य कालिये, फिर भी भारको 'जिनव' के पर निर्देश भवीत होंगे भीर भारडे मुत्तसे बरबस विडव गरेव 'श हैं तुलसीशस धीर घन्य है उनकी निकार मी 'विनयपत्रिका'के सँगळाचरकों ही तबसीशमंत्री हारे ह

तुखसीदास कर ओड़ कर माँगदे हो हैं, बेबिन स माँगते हैं है इस संसारी बीवॉंके समाद घर दौड़ा, की सर्वादा, स्वर्ग, यहाँतक कि मीच भी नहीं माँगते। र साँग इतनी ही है कि 'नसहि राम-सिन मानम मेरे।' ए ही वरदान चाहिये, इदयमें एक ही बार्बांचा है, दिवरें ! ही चाह है भीर वह यही है कि-

ं मॉॅंग्स नुरुसिदास कर जोरे । बसईं राम सिंप मलस मेरे।

मक्तिभाउदा यों परिचय तिया है-

अर्थ न वर्म न कामरुचि, रहिन वहीं निर्दन।। जनम जनम रिंदे रामपद, यह बरदान न बार ॥ उन्हें इसके सिवा और 📭 वहीं वाहिये । 🖟 चाइनेको और रह ही स्या बाता है। एक इसी म तवसीवासत्री करवे हैं-

तुम तो बहे दीनदवाल हो। तुम्हारे समाव हरे भी बूसरा कोई वहीं है। तुम्हारा बाम हो गुरोहरिया फिर एक बार क्यों नहीं कर देते कि 'तुवसीरास हैते'। बस, में इतवेसे ही कृतायें हो बाउँगा। तुबसी है इस्ते हा ही खाबसा है. एक ही समित्राण है। वा वा है 'क्वों त्यों तुबसो कृपाञ्च चरन-सरन पाने।' चाहे जिन हाँ हो तुलसीदासको क्रपासागर प्रमुखी चरक्रपाय नि भीर मुनिये, महात्मा तुलसीहास भवन मर्वा हर चपने साविकसे इसमझार व्यक्त करते हैं:-चहाँ न सुगति सुगति संपति कलु तिथि लिथि नितृत वार्त

हेतु-रहित अनुराग राम-पर बड़ो अनुदिव असिन् । सुमति नहीं चाहिये, सुमति गहीं चाहिरे, सम्ब

ऋदि, सिदि, बदाई इन् भी गरी वाहिये। बस, बरे क

तो केवल पदी कि रामपर्ने दिन दिन प्रमुक्ता बहुता नाव। रि बह मनुक्ता भी कैता? हेतुतिक प्रयोद क्रियो हेत या तवकतो बेकर नहीं, दिक्कल प्रदेशक, निन्तार्थ । ह देतुतिक प्रमुक्ता ही क्यों प्रादिव हैं और कोई निज्ञाण या स्वावना क्यों नहीं है होतीविये कि-

श्वत नापदि अनुरातु जानु जह स्थानु हुससा जी वे । अभे न बात-अतिनि तरुसी वह विषय-मोन बह यी वे ।।

—कारनासाँका हो कोई कन्त हो नहीं। हरकर गै यदि विषय-मोगकी याचना की जाय ठव दो वह मामित वीर मी पतक वरेगी। कारन्य कारमें "बद्धाना गो? देता बराव पत्र करना चारिये, क्योंकि नायमें जब तत्रप्ता का जायमा की निस्त कारमा नाम हो नहीं देशा।"

जहाँ राम तहें काम नहिं , जहाँ काम नहिं राम । गुसाईमी धरने मधुने कहते हैं कि चरि दान ही देना है छो-तर्राप्तरासपर किरण करिन मगति दान देह आन।

—मिकिया दान पीतिये, और किसी बस्तुका नहीं। महामा मुखसीदासजीके इस निष्कास मिकियाक्का परिवद् स बनके सनुस्य प्रन्य रामायस्यमें सनेक स्वकॉपर पाते हैं—

> परमानन्द क्यापतम् सम्बद्धितः काम । वेत-माति अनवासमी देतु हमहि श्रीराम ॥ माय पक बर माँगी, तस्य क्या करि देतु । काम जनम क्रम-पद-कमर, कबह पर्देशनि नेह ॥

रामरास गुवारी सरने नाको, मानिको एक का मौगरे हैं, स्वार वर विष्ठ प्रसीके मानिक देनेकी हुआ करें की हुम करों हैं कि करने कार्य-समार्थ करनाव्या होते हुसे बने हैं सर्वार हुए संसार्थ करने हुंग बन्धाना कार्य-स्वार गरे, बेकिन हुए मानिक कार्य-समार्थी हुन्यांका वेद पर बरी, का्ना ही दें। विकासी है एन सेम सेक्ट सम्बद्धी गुवार दिन सीचा है । बिकासी है एन सेम सेक्ट सम्बद्धी गुवार दिन सीचा है । बहिस्सी है एन सेम सेक्ट सम्बद्धी सक्त कर्मी सोचेंग है एक दूसरे मर्गकार गुजारी के क्लाबी है कि इस सरीस करने हुनने मराना मन करों है है केन्द्र स्वीरिक दिन-

। सरकर कर रचुपरिया केमा। तेथी किन कोक म को केमा। हरी तम सामस्ताति में वर्षः तार्थे मेटी मानता अविवर्धः। वेषी ते वसु निवस्तात्व कोई। तेथीकर मानता कर सब केमी। इस शरीससे ही वो राम-मक्ति करती है? वो कि इस अरित्य मनवा क्यों न हो ! लोग स्वापंके विये ही वो ममदा करते हैं बीर प्रवतीका भी एकमात्र स्वापं प्रपंते प्रमुखी मति करता है। करवा, वस पुरुसीरासजी के इस्पर्धा एकमात्र वावसा क्या है सो भी उन्होंने ग्रम्यों मुन बीजिये—

सूरी विकिधि ईंबना गाड़ी । एक शास्ता रूर कवि नाड़ी ॥ रामचरन बारिन नव देखी। वब निज ननम सुफ्त कारि हेखीं।।

मुससे प्रक्रिया जास उच्छर्च ही निष्याम प्रक्ति है। इस प्रकारका शृक भी निष्याम मता जिस हेरामें हो, यह हेरा प्रच्य हो आपमा, उस हेराके निवासी स्थाने हुआरों हो आरंते। । सा सुष्या भी पेसे ही अन्यक्ते पाका व्यवस्था सनाया सम्पन्नी है, जैसा कि शाहरूपियहूमों लिखा है 'ओरान्त वित्रेगे नृत्यानिय देगना। सनाया पेसं मूर्भवति।' 'पिनू-याच प्राम्तिना हो उठले हैं। देसताया माचने स्वाने हैं घोर पूच्ची सनाया हो जाती है।' देसे हो मन्तिक वर्गने माचान्

> ध्वहं मकपापीनो इस्टतन्य १४ १दिन । शापनिर्मस्तहरुयोः मठैनैकननप्रियः ॥

'डी स्वयं स्वनन्त्र वहीं हूँ, मैं भक्तोंके भ्रापीन हैं। अल्डीने होरे इडवको सम विचा है ।' सहाप्ता तकसी इसी कोरिके विष्ठाम भक्त ये । भगवान् शमचन्त्रमें उनकी कनन्य भक्ति, निष्काम ग्रेम पर्व प्रकृतिश सन्तरास था : श्रापने इष्टरेप धानकी-जीवनपर पश्चि जानेके बिचे उनका दृष्य माहक हो रहा था। 'गानधे-पांत्रतथे व के वेहों है सबसे रामदाय दहरे मह इत्तबक्त कोई आप लियाया वहीं । हदयका कार विश्वास सम्मोचन कर विशा. कतेता कारका रल विचा, दिस सोसका दिला दिया और तिका हो अपने हरूपमें निरन्तर बसनेवासी वह अनुराग-काराकी श्वासासयी सप्टें, विवर्षे पहकर सारे विचय-मोत मधीमन हो रहे वे । गुमाईप्रीकी रामायदाढे पानेशाबे इस देशमें बालों नहीं बरोड़ों होंगे है किन्तु हममेंसे किननेही उनकी-जैमी निष्यम परिचा शर्माय भी माम हो मदा है ? इसर्वेथे किनने सांग विचयमांगये विगत होकर इसके समान शामताम बनवेमें समर्थ हुए हैं । सभी मी हम बामताम ही क्षे हर है। बाब इसमेंने कितने देने हैं को हक्ष्मीशास्त्र वक्ति-वार्धारपाँकी सुशीनक-कारामे कारने जीरम इन्हर-मरोबरको सरमित्र कान्द्रे इसमें शतरुक्षपय प्रस्तुति कानेनी

घेटा करते हैं। महात्मा सम्मीताम भारती रचित वचनामाँके रूपों हमारे क्षिये सा शामनय निधि सांह गये हैं बनका उपयोग करना भी तो इस महीं सामते । काज को इसारे बत्रवर्धे धरान्ति पर्व हाहाकारकी ध्वनि प्रतिध्वनित हो नहीं है, अकि-गंगाकी पात्रन प्रचयमधी भारती बश्चित होका हमारा हर्द जो निराशा पूर्व निरानन्दके कारचा शीरम हो रहा है उसे एक बार फिर भक्ति-संघासनसे सरसित करने भीर मरमाये हए प्राणींकी भकि-संशीयनीसे संशीयित करनेका काम यदि कोई कर सकता है तो वह ई तबसीयान भीर उनका भारर साहित्य । हमखिये हे भारतवासियो । चाइये चात्र हम सब मिलकर मिकपूर्वक गुमाई बीके स्वरमें स्वर मिखाकर भगवानसे यह बरवाधना करें कि-

कामिटि नारि वियारि जिमि. होमिटि प्रिय जिमि दाम । तिमि रपुनाय निरन्तर प्रिय कागृह मोहि राम ।।

राम-चरित-शिचा-सार

श्रीरामने. लेकर मानव-रूप। परुपोत्तम कहकर नाहि, करके हमें, शिक्षा दी बहरूप ॥ हमको रखना चाहिये, सदा उसीका ध्यान । यदि तत्सेवक-भावका, है हमको अभिमान ॥ पिता-वचनसे राज्य तज करके विपिन-पयान । दिखलाया पित्-भक्तिका,श्म आदर्श महान ॥ शबरीके आतिथ्यको, कर स्वीकार सहर्ष । क्या न पतित-उदारका, दिखलाया आदर्श ? धनचर-सेना साथ ले. सयल शत्र निज जान । दिया सङ्गठन शक्तिका,परिचय हमें महान ॥ रिप्-सोदर सहृदय निरख, दिया उसे सम्मान । राज-नीति-सौजन्यका, यह आदर्श महान॥ माक्षण-मुल-सम्मृत भी, रावणका कर घात। 'जन-पीडक सर्व बध्य हैं,' बतलायी वह बात ॥ बतलाया संसारको, कर सीताका त्याम। 'राजाका सर्वस्य है, एक प्रजा-अनुराग'॥ गरु-आज्ञासे भी नहीं, करके पुनः विवाह। एक-पत्नी-व्रतकी हमें, दिखलायी है राह ॥ हाय ! मूलता जा रहा, यह आदर्श समान । हम पद-पदपर पा रहे, अतः परामव आज ॥ नन्दरिसोर हा 'किसेर' कान्यनीर्व ।

ग्रसाईंजी श्रीर सीता-चनवार

(रेमड-बं,मोशर गरेन्डमियी) सामगीनी मतीलकी कीतीन



मर्तिको बेदन सोदासगढ । यनवास दिया बाता और विहे श्रीराम-सहज्ञ सर्वांत-वरत्रोतस्रे।त करोर कार्य होता—हरुको सा है। कुछ ओर्गोका सरे अन है कि यह प्रसंग ही की

रामजी कभी वेमा क्रम्याय-कार्य कर ही नहीं सकते। ह इसे भीरामके पश-चन्द्रमें कर्तकरूप मानते हैं। यहाँ इस कार्यके स्थायान्यायपर शहस करे

क्षेत्रके बहुत बढ़ जाने और विचयान्तर हो जानेका इसिखये इस यहाँ केवज इसी बावपर विचार करी गुसाईजीने इस परनको किस दृष्टिसे देला है, हवा है कैसा वर्तन किया है।

सबसे पहले यह बात भग्नी तरह समन धावस्यक है और तुससीदासत्रीके प्रन्योंका बाववा ह वाजे इसे बच्छी तरह जानते भी हैं. कि गुसाईशी दिनी करिके पीछे शाँल बन्द करके नहीं चले हैं। हरिता, है। भौर चरित्र-चित्रय आदि सभी विषयोंमें उन्होंने पूर्वी भाषार लेते हुए भी अपनेपनको कापम रहता क्यानकको भी उन्होंने वाल्सीकि या किसी प्रदेशी हरि अनुसार ज्यों-झ-त्यों नहीं रलकर प्रपनी विशेष स्विश समाजकी चावरयकतानुसार परिवर्तित, परिवर्षित ह परिसीमितरूपमें सबके सामने रक्सा है। राम हो बी को बाल्मीकि, कालिदास या भाषामामायपढे हैं, हि तुबसीके राम वही होते हुए भी उन सबते कि केवज गुजसीहीके राम हैं। उनके वरित्रमें वर्गी समाजकी भादराँभूत भावरपकताभाँका समादेश किया । बिसे अनुपयोगी समका उसे छोड़ दिया, बिसे इरा समम्ब उसपर विशेष जोर दिया, भीर जिसे भागत समका उसे बोद भी दिया है। उदाहरण देनेसे होता बढ़ खायगा । चतः इस विषयको यही योहने हैं। क्यानकोंके विषयमें भी उन्होंने हसी परिपारीका बन्सार किया है।

सीता-चनवासकी कथा भी इसीमेंसे पृत्र हैं। गुलाईबीकी सीका, बाल्मीकि या काविशामकी सीता स्कुल मित्र है—उसी प्रकार उनका 'सीला-यनकास' : रोनों कवियोंसे मिश्र है। आगेके वर्षनेसे यह बात हि हो जायगी।

निरस्तियिनी चारी सीताको इस्तकार कुछ सहसे सा प्रकार में प्रकार में प्रकार में प्रकार में प्रकार में प्रकार में ति स्वृत्य स्वार किसी किसीको क्रीय प्रााम भी स्थामारिक), किया प्रवाद सर्वेच किसा है, यससे वे साव स्वृत्य कमारक-का तिया नकार सर्वेच किसा है, यससे वे साव स्वृत्य कमा हो साते हैं। सीताक्य स्वृत्य काल साथ करने हे क्या हू हुकते हैं हों की कारवाद मुख्ते हैं और एक कोर राज्यको तथा हुस्ती और व्योगवर्गों, हुन दोनोंके सावालसंत्र वचका विचार करते हैं। हांसाईनीचार क्यों न एकाकार है—

पालिने असिपार अत त्रियंत्रम काल सुमाउ। होत हिउ किहि माँवि निठ सनिपारहि चिठ चाठ।।

प्रेमके विषे बीरातके सर्वो कितना स्थान था और वह किस प्रकार शस्त्रोत्य था, इसे मुसाईजीने चागे चलकर मबीमाँति दिखताया है---

> रीम जुनवत सीम मनु प्रिव मनहिं त्रान त्रियाउ १ परम पानन प्रेम परिमति, सनुदिः तुकसी गाउ ॥

विना धनन्यता धौर धन्योन्यताके प्रेम कोई बस्तु नहीं। यदि घोषा पर्यं पतिकत है तो पतिका धर्में शी पत्रीवत है। यह सम्बन्ध प्रेमका है, धन्विद्याका नहीं।

श्रीरासको सीवाके पातिवत तथा मुख-शीवकी घोर देखकर उन्हें स्वागतेमें बहुत ही धसमक्षस होता है---

मेरे ही सुख सुखी सुख अपनो सपनहू नाहि। मोदिनी मुन गोहिनी मुन सुमिरि सोच समाहि॥

सच्छुच 'शम-सीव-रहस्य'को तुबसीदासहीने अच्छी कह् समाध्य था । रामबीने हरपहीनकी तरह विना कुछ बहे सुने ही बहसा अपने मनसे ही उनका स्थाग नहीं कर विधा, सीवाको संबाह बोबर औं उन्होंने ऐसा किया---

द्व मुख सुनि कोकचुनि वर चरनि पूछी आप।

हस अपने यह बात त्यह हो जाती है। इस प्रमाप प्रेम क्या वर्मका समान्य इस प्रकार नहीं तोहा वा सकता वैदार कि क्या विद्यानी नवांन किया है। श्रीराध्य स्पेट्र सीडाजीने समाह नहीं बेते तो सबतुष वे बहे मारी शेव-के पांच समास वार्षे ।

किर श्रीरामने सन्मायको बेनक सीता-खागकी ही प्राञ्ज गरी पी, किन्तु कन्हें पारमीकित्रीको सींप प्राप्तेका काम भी सींचा—

क्रतमीकि सुनीस आसम भारपह पहुँचार।

स्वत्मयात्री भी उन्हें केवस गंगा-सरपर दीह नहीं साथे, वह उन्हें बावसीकिमीके हार्योमें सींपकर सारे हैं---

आये तजन तै सोंपी सिय मुनीसहिं आनि।

- वद्यि वाश्मीकिके पास द्वीकृत रूप स्वाग क्वता विच्छुर वहीं वचापि स्वाग दो है हैं। । सीवाभीको अवस्य दी बद्दा मारी आधान क्वाग और वन्होंने अक्सपाने चीन दोक्स क्की---

हरनतात इपात । निपरहिं दारनी न निसारि । वातनी सन तापसनि ज्यों राजवरम निसारि ॥

कृतनी सब तापसीन ज्यो राजवरम निवारि ॥ कितनी यहरी आर्थिक चोट है ! प्रवीक्पसे व सर्थ), राजवर्जीक चलुतार एक तापसीके रूपमें तो सीता ध्रवस्थ

हो पास्त्रीय हैं, वह भी तो एक प्रजा है ! कास्त्रात्मने भी सीताके मुख्ये यही कहसाया है---

> नृषस्य वर्णात्रमपातनं वन् स यव धर्मो मनुना प्रणीतः ।

निर्वासिताःचेतप्यस्तवग्रहं — वर्णस्य सामस्यमेनतानीयः ॥

एक मिरद खेलकने दुवदेनको बीवनीको सौर बावद-स्टक बताया है। किसीको महामारतकार्य मिरनातक बोतिक कोर कुल में मार्ग विश्वान कुर में भाइकीले रातायण भी नहीं नथी है। कोई कार्य कि इसमें रूपके द्वारा उपन-वकी रुपिक प्रयोग सार्व-रूपते अपराधी बात कोरी तमें है। कोर्य के कि में पूर रुप्योमें हिच्छा क्यां ने किया गया है। भीर भी कार्य हैं-'भारिकायक पीरो कोष्टा गया है। भीर भी कार्य हैं-'भारिकायक पीरो कोष्टा गया है। भीर भी सहा बात्स क्यां स्टार्स्ट करिया गया है। भीर भी सिंह दी गयी है, वत्तरकायक मिरा है इसमें सो कोई है ही गयी है, वत्तरकायक मिरा है इसमें सो कोई है ही गयी है।

इर सम शरों है दिना यह मी नुजा जाता है कि
मायपार्टी मून कपा सारतीरिकामायपार्टी मांहें, है। वोर्टो"भी सामायपार्टी है। और वह सरकार है जुलमें उसीओ
सा छुत्र मुक्तिकिक काले सारतीरिकामायपार्टी कर कमा
हिप्ती पार्टी हैं सिकांत्रों भी सामायपार्टी हमाने कर किसा
हिप्ती पार्टी हैं सिकांत्रों भी सामायपार्टी हमाने करिताल
मायपार्टी हमाने हमाने ही हैं हैं कामायपार्टी हमाने
पार्टी हमाने कितनी सामायपार्टी हैं। मारावार्टी हिप्ती
पार्टी हमाने हमाने हमाने हमाने हिप्ती
सामायपार्टी हमाने हम

वर्तमान धाजीचना-प्रकाशीमें इसत्रकार कितनी ही गर्ते पैदा हुई हैं सन्भवतः धभी जीर भी होंगी।

परन्तु पह तव पोदे से परिवर्ती की वार्ते हैं। विषरतें-श्री बातिया पररर (पिरत्ती किये ही है। बातरकें गामस करावामात्रका हरने बहुत हो बावर सक्तय हो है। हम पातोपनार्थों की कोई लोकन्यत्र गहीं हस्त । उनकी निर्मे सामायपका स्वावर हुन हुन्ता ही है। उनके उनके जीवनक, समायपका स्वावर करने एक स्वावर है। हास्त्र हुन्तु और सम्बद्ध स्वावस्त्र और प्रमंत्र कालते हैं। हास्त्र हुन्तु और सम्बद्ध स्वावस्त्र की प्रमंत्र कालते हैं। हास्त्र हुन्तु और सम्बद्ध हिन्दी सामायप उनकी उक्तय महा सामस्त्रा है। है। सामायप उनके हुन्दर्भ स्वित्य स्वावर हुन्दी सामस्त्रा है। है। सामायप उनके हुन्दर्भ स्वित्य स्वावर करते हैं। सामस्त्रा होते हैं। सामायप उनके हुन्दर्भ स्वित्य स्वावर करते हुन्दि स्वावर करते हुन्दी हुन्दी हुन्दी हुन्दी हुन्दी हुन्दी स्वावर करते हुन्दी ह बूदारी चोर महासारत है, हसीसे आरतके कनसाभारय मनुष्य हैं, यही तो वे पग्न बन शुके होते। वेद-वेदान्त-दर्शनों-ने आरतकां हृदता उपकार पानी किया है, जितना रामायय कार सहामारतने किया है। शामायय-महामारत है, हसी-विचे भारत सारत है।

मान बिला कि रामायधार्म मादिकायह पीछित कोशा एवा है, चण्का रामायधार्च या रामायधार्मकीत दुराय, राम-बण्चा, भारत-सीला पारिकी कोई पीठारिकाम कोई हैं वह को सेक्किय कार्र कि रामायधार्मिकी-को रचना नहीं है। कुल भी हो या न हो, हवना सो साव ही हैं कि रामायधाका चारिकायह नामक किसी पुक्कका एक अंग्र है। रामायधान पामक पुरुष है, और वह किसी पुक्क भारतिकार ही जिलित है, तथा उससे राम-क्षमय चारिका एक चिन्न है, एक मार्च है। या, हुननेसे ही बह भारतके जनवासरासकी चल्का हो नाती है और वे बससे को चान्नी हैं जो सा बाते हैं।

सांव चौर कर दो रखाउँ हैं। साथ प्राया है, कर दे हैं। तील चित्र से लिए कुछ उठजल रोगाँ, सिली हैं, पर आवक्ष दिवार वार्ध हुए है, वह चित्र वित्र हैं सही हैं। है तह चित्र वित्र हैं सही हैं। है तह चित्र वित्र हैं सही हैं। तील कालमें करिएए सुख्यासुनर एक्स्पेय है, रीक प्रायादी स्थापन मही है, यह च्यापन हैं के सांव हैं है, यह च्यापन से प्रायादी हैं काल्याय है, रीक प्रायादी ने इंप्यंच मार्थ की प्रायाद है। काल्याय पाठक चाहता है मार्थ काल है। यह सांव की हम्म काल प्रायाद है। काल्याय पाठक चाहता है मार्थ काल है। सांव मार्थ काल सांव है हमिलने वाल है मार्थ काल है मार्थ काल है सी हमार्थ काल हमार्थ काल हमार्थ काल हमार्थ काल हमार्थ हमार्थ काल हमार्थ हमार्य हमार्थ हमार्थ हमा

यहे यह समालोच्या और लेखन कहते हैं जि औष्ट मामक पुरत्य कभी और मंदी हुए। उनकी ऐतिहासिकताना कोई मामाय बाते हैं। अपन विचा, देशा कि है। शोष्टियों और रूप-मूर्ति कभी भी ही महीं, परन्तु उनकी हुए साम-मूर्तिन क्षेत्री भी की महीं, परन्तु उनकी हुए साम-मूर्तिन क्षेत्री किजने हुएलींको पविष्य की रजन्यका प्रताकत कर्म सामित्राय क्या दिया है। इस तो मामकृति ही चाहते हैं, बहै हमें मुक्तिकी और से बाती है।

राम, खच्मल, भरत, सीता इत्यादि हमारे क्षिये एक-पुरु आव हैं। राम, सीता इत्यादि नाम सनते ही हमारे



सकते हैं।

बर्तमान रहेगी तवतक उसके साहित्य-भवनपर तुखसीदासकी यशःपताका फडराती रहेगी ।

रामायण हमारे प्यारे वार्यावर्षका प्राचीन इतिहास है। उससे हमें सुबनीतिकी खिचा व्यास होती है। वससे उपरेश मेरे पूर्ण हैं। वह एक उचन काव हैं। वह या-प्राच्या हमको सीधे कौर सक्षे समाका विवस्तीन काली है।

विंद सुरमादिने रामायचके कावान्य विध्योंपर विचारकर प्रापेकके विचयमें विद्यासर्वक किला जाए जो वृक्ष ककार हो प्रत्य नैतार हो सकता है। किन्तु कविक न विद्याकर प्रापेक विचयके सावन्यमें इस दो-हो चार-चार वार्षे ही पार्वस्य राजकोंको सनाने हैं।

इतिहास

हुस प्रत्यसे सारक भारतवर्षका पाण्यिक सिकता है। इससे पता करता है कि उस सारक हमारे देखोंने व्यक्तियाँ का आप्तार कियान, कैया था, पूर्व और काहुंस्त्यन केंग्री की-पुरुष किस मकार पद्यानने वे हितथा शाजा और प्रवास स्थासनम्य या हिससी एक हुसरेंके किस प्रवास प्रत्योत प्रयासनम्य साहस्ति क्षेत्र प्रवास

भगवाष् श्रीराश्चण्यकी कहते हैं---बाहु राज प्रिय प्रजा हकारी। सो अच अवसि वरक अधिकारी।।

पारको ! ऐसे राजा आवकत काएको कियाने दिखानी रैठे हैं को निकारत-भारते ऐसा कह सकते हों ! औरामकानुकी इस राम्होंको क्याने संकटके समर्थी कह निवाह है । उनको समने सुकतु तका हतना प्यान नहीं है निवाह कि क्यानी प्यारी मामाब है। वे फिर भरतकोशे कहते हैं—

सो निवारि साह संकट मारी। करहु प्रजा परिवार सुसारी।।

मन्नाकी भक्ति भी राम-यनवासके समय देखने वोज्य है— रामु चटत अति भयेउ विवाद् । सुनि न जाद पुर आरहनादू ॥

भग कह रही है---

वर्षो रापु वर्षे संबुद्ध समान् । विद्यु स्पुत्योर काल्य बाहि काल्य । वर्षेत साम करा मंत्र दहाई । हुरदुर्हम सुक्ष सदस्य विद्याई ।। बहुत समकायेपर भी मेमके कारवा ये बाही क्षीटिके— दिए परम-क्यदेस रामेटे। लोग प्रेमवार किराई न केटे ।। दूसरी काल्य वे कहते हैं—

अद्भत राम राजा अवध मरिय गाँपु सब कोव । रामराज्यमें मनुष्योंकी स्थिति भी कैसी बी- बरनाहरम निज निज परम निस्त बेद्रपथ होता। चल्हिं सदा पावहिं सुख नहिं मय संक्त न रोग।।

विद्व देनिक मोतिक ताथा । रामराज नहिं काहुर्दि स्थापा ।। सन नर कर्राहें परसपर प्रीती । चरुरि स्वर्म निरत श्रुतिरोती ।। चारिक चरन परम कम माहीं। पीर रहा सपनेहैं अप नाहीं।।

× × ×

नहिंदिहि कोड दुधी न दीना। नहिं केट अनुष न राष्ट्रमहीना।। सब निर्देश धर्मरत पुनी। नर अरु नारि चतुर सब गुनी।। सब मुक्तेम्बरुव पंडितस्थानी। सब इसस्य नहिं कपरस्यानी।।

× × × × ×
पक्र नारि-कृत-तः भर कारी। देसन बच्च क्रम पति-दित-कारी।।

शामावयाने इसको उस समय को मधाएँ बार्धों में मब्बिक की वे भी सासुम होती हैं। कैसे कम्मोस्तक, मासकार मुख्यक, पश्चीपवीत, स्वर्पवर, विवाद की कर्मक पाएँ, प्रमाधिकोक, परदान, दाहरिकात, प्रतिभित्तकात, दुदकी धनेक प्रपार्ट, नाती होना चाहि। 'सामावयमें माधाँकी माधाई होती होर्पकों बहुत कुछ विकाला सारकार है। किम्मु प्रसाद करते नातावयमें स्वर्पकों का स्वराधीकी सासारीही साम

इस प्रकार रखप्तिकी परनाशोंका भी वर्षन है— तोह सहीपर-सिला कोटिन सिनिश सिन्न गति गोता करे। पहराद जिनि परिपात गर्कत कुनु प्रतगर्क बारते।। मर्केट विकट गट जुटन क्टन क्टन तन करों, मए। मर्केट विकट गट जुटन क्टन क्टन तन करों, मए।

शंकाकाष्ट्रमें अधिकांश मार-काटका ही वर्षण है। रामायवाले औरामध्यन्त्रवीके पूर्वके भी कहें राजा-सहाराजाकों भीर अधियों सुनियोंका हाळ मालून होता है। जैसे चित्रकेत, शिवि, दरिसन्द्र, करवथ, दयोषि, समहन्नि साहि।

दस समय व्यपि चीर सुनि मपने वरोगवसने क्या वहीं कर सकते वे हैं भीरासचन्द्रवी वास्तीकिसीसे कहते हैं— तन्ह रिकाटनासी मुनिनाया। विस्व बदर निमिताकरे हाला।। भरतजी वशिष्टतीहे जिल्लामें बहते हैं---

गुरु विवेदसागर जन जाना । जिनाहि विस्व कर बहर समाना ।।

उस समय शरून चादितर भी सोगोंका वर्ष विचान था। इसका उत्तेस रामाययधे जगह-जगह किया गया 🖁 । यथा-'शम सीय तनु सहुन जनाये । फरकर्दि मंगठ अंव गुहाने ॥? 'सर्पनसर्हि आंग करि लीनी । अग्रम रूप श्रुति नासा हीनी ॥' 'अब अति मया निरह दर दाहु।फरकेट बाम नवन अस बाहु ॥" 'असरून होन रूपे विधि नाना । रोबार्ड बह् मुमारु सर-स्वाना ।।"

चभी धोजनेते रामायखर्मे और भी कई ऐतिहासिक यातें भिन्न सकती हैं।

राजनीति

पचि तुलसीदासनीको राजकाजकी बातोंसे कोई सम्बन्ध महीं था. वह धर्मीपदेशकमात्र थे। तिसपर भी शमायणमें उनके राजनीति सम्बन्धी उच्च कोटिके विचार हमको कई स्थानोंमें मिलते हैं। इसीसे मालुम होता है कि वनको इहि राज-व्यवस्थापर भी थी। भीचे इस विषयमें उनके छछ विचार दिखाये जाते हैं । वे मन्धरासे कडखवाते हैं---काउ नुप होउ हमर्दि का हानी। चेरि छाड़ि अब होन कि रानी।।

किसी किसीका कडना है कि तलसीवासजीकी इस उक्तिका प्रभाव इसलोगोंपर ब<u>ह</u>त बुरा पड़ा है और उनको पैसा महीं कहलवाना चाहिये था. किना वेसा कहनेवाले पह मूल जाते हैं 🕼 ये शब्द एक हाटिक. इप्ट श्रीर नीच दासीले तकसीवासजीने कहलवाये हैं न कि किसी मुद्धिमान् चौर चादर्श प्ररुपसे ।

चार्च भीरामचन्द्रजी क्षचमणजीले कहते हैं---'रहहु करहु सबकर परितोषू ६ मतक तात होहिंद बड़ दोषू ।। जासुराज त्रिय-प्रजा दुखारी। सी नुषु अवसि नरक-अविकारी।। रहरू तात अस नीति विचारी। सुनत लवन मे ब्याकुल मारी ॥

बारमीकिजीसे रामचन्त्रजी रहमेके जिसे स्थान पूछसे हुए कहते हैं---

मुनि तापस त्रिनतें दुस रुहहीं। ते नरेस निनु पानक दहहीं।। रामचन्द्रजी सुमन्तको विदा करते हुए कहते हैं- इ.स. मेंदेश मरतंके आए। नीति नतजन राज-पद पाए।। पाइन प्रवर्धि कमें मन बानी । सेवह बातु सकल सम जानी ।। धागे वशिष्टती कहते हैं---

सोविय नुपति जो मौति न जाना । जेहि न प्रजा जिन प्रान समाना॥

या निरादको देलिये ! वर् महाबीस का हान संका करता हुआ कहना है-

मस्त न राजनीति उद् अभी । तम बहेद बद जीत हते। हाजमीवासातीने हाज-सदका उरवेस भी को स्वर् किया है। वेजानने से कि इस रोगमें कई राज मन रे शजनीतिको भूल आते हैं, जिपका परियाम हनके नार कारच होता है। यथा-'कड़ी ठात तुम मीति मुहाई । सब्ते कठिन रास्मद माँ॥' 'मरति हैं। न शत-मद, बिविहरि हर पर पर।

कबर्दे कि काँबी सीकरन्दि, छीर-सिन्यु विनसान ॥ 'सहसवातु मुरनाय त्रिसंकृ। केहि न राज-भद दैन्द करंडू॥' राजनीतिके अनुमार सुराज्यकी महिमास गार है तुस्तिशासकी क्षणा बताइ करते हैं। यथा-

'जाइ सुराज सुदेस सुकारी। मई मरत गति तेढि बनुसारी।' ⁶अगम बास बन संपति ऋजा । सुसी प्रजा बनु गर सुराजा। कोस किरावॉवक हे सु ॥ से गुसाई ही क्रहराते हैं-रामकृपाकु निवार निवास । परिजन प्रमा चित्रय यस छा। चाहे कोई भी कार्यं हो राजाको उसे प्रत्येक वा^{ति ही}

'गुरु-पद-कमल प्रनाम करि बैंडे आयतु पा। वित्र महाजन समिव सन गुरे समासद बार्॥' भगत निनय सादर सुनिय करिय विचार बहारि। करब साबुमत लोकमत नूप नय नियम निवैद्यारि॥ ये अवाहरण सिक्तं अयोध्याकाण्डले क्रिये गर्वे हैं। वर्ष इसीसे अथवा अन्य कायडोंसे सैकड़ों बदाहरण विवे ह सकते हैं।

सम्प्रदायके अगुधाँके मनके बनुसार काना चाहिये।

उपढेश

रामायक्रमें परा-परापर हमको उपहेरा मिन्नते हैं। ग पर उनका योद्दा-सा दिग्दर्गनमात्र किया बाता है। वर्ग-(१) विद्वानीं और गुरुओंका बार्र-

'मुनि आगमन सुना जब राजा। मिलन गमेउ है निप्रस्ताता।' 'गुरु आवमन सुनत रघुनाया। द्वार आह नायउ पर मार्या॥'

(२) प्रतिद्या-'रमु-कुरु-रीति सदा चलि माई। प्रान मानु गर बच्तु न मां॥' (३) पिताका पुत्रपर प्यार— सब दुस दुसह सहाबहु मोही । रोजन-अटराव वनि होति ।। (४) माता-पितामें मकि—

सुन जनते सोद सुद बड मारी । जो पित-मातु-सचन-अनुरागी ॥ (५) स्वीकी पतिपद प्रीति---

जाँ क्षि माय मेह अरु नते । पिय नितु तिमहि तरनिर्द्धे वे तेते ।। ततु बतु प्रामु बरिन दुरराष्ट्र । पति-निर्हान तय सोक-समाङ्ग् ।। प्रामनाम करनायतम सुंबर सुस्वर सुमान ।

तुम्ह बितु रयु-कुल-कुमुद-विश्व कुरपुर नरक समान ॥ (६) सासकी पतोह्नथर प्रीति—

दे प्रतासका पदाप्तुषर नाराः— विभक्तमृदि विभि वोरावत रहेकें। दीपनाति महि टारन कहेकें। करपनेति विभिन्न बुद्धि हालें। सींचि सनेह सरिल्ड प्रतिपाले।।

(७) सीतेजी माका थेम— हुन्हरेहि ससुरासु वन बाही। दूसर हेतु ताज बजु नाहीं।।

× × × ×
नेहिन रामु बन तहार्दे कठेसु । सुत सोह करेडु १है उपरेसु ।।

(८) संगतिका परिणाम—

रामतिलक जो साँचहुँ काली । साँगु देहुँ भनभावन माली ।। × × ×

को विक्रिजनमध्य करि छोडू । होदि राज-सिव पूठ-प्तोङ्क ॥

पैसा करनेवाक्षी कैकेपी इटिस सम्बदासे बर्कायी गानेपर करती है---

> हांत प्रात मुनिवेष घरि जो न रामु वन आहि । मोर महनु राज्य-अजनु मुखसमुक्तिज सन माहि ।।

गुसार्थने काते हैं — को म इसारित पाय नसाई । रहि व नीय मते गुरुगाई ॥ अतिहि सुसीत केवई राजी । हुए सेजु के मति नीराजी ॥

धौर --सञ् सुवरहिं सत्संगति वाय । पारस बाउ कुवात सुजार ॥

संड सुधरहि सत्संगति चाप । चारस चात्र कुचात सुज्जाप । (६) चन्ने मार्शपर प्रेम—

मुद्द पितु मानु न जानी काहू । कही सुवाद नाथ परिवाह ॥ मोरे सदर एक तुम्ह स्थानी । दीननेषु वर अंदरजानी ॥ काल करहु कलमार बासू । इदि ते अधिक न मोर सुवाहु ॥

(१०) मित्रता—

वेन मित्र दुश्च होतिं दुश्चारी । विन्हिंदि निकोश्वत पातक मारी ॥ (११) अधर्म---

ने क्या मातु पिता मुख मारे । माद मोठ महि सुर-पुर कारे ।। ने क्या तिय बातक वध कीन्हे । भीत महीपति माहुर दीन्हे ।।

x x x

वेबहि नेद बरम दुहि ठेहीं । पिसुन पराय-पाप करि देहीं १) बच्दी-कुटिड करहरिय कोषीं । नेद-विद्युषक विस्तविदेशी ।। टोमी टमप्ट डोड डबारा ! ने ताकहिं पर-बन पर-दारा ।।

× × × ×

के नहिं साबुसंग अनुरागे । बरमारय-पथ-बिमुस अभागे ।। दवि श्रुति-पंथ बामपय टहर्डी । बंचक बिराचि वेद जन एटहर्डी ।।

(१२) नारी-वार्ये— कोंद्र सार कंकर-वर पूका। मारि-वर्ग परिदेश न पूका। कोंद्र सार कंकर-वर पूका। मारि-वर्ग सेन न तेरि।। पूक्क देमनस कड़ परहोना। अंच वीचर कोची अर्तिहोना। वेतेद्र सर्वेकर निक अपनाना। मारि वन कन्युर द्वस नाता। वेतेद्र सर्वेकर निक अपनाना। मारि वन कन्युर द्वस नाता। परिवेक्षक पर-विरोध कोंद्र । दिन स्वकर नक्ष प्रदेश होना।। परिवेक्षक पर-विरोध कोची होते स्वकर नक्ष मारिकर होना।

(१३) सेयकका धर्म-

(१२) रायकता यम — श्रीरासण्ड्यतीको चयनी सेवासे सन्तुर करके हशुमानुत्री सांगते हैं---

नाम सन्दि तब नदि अनपापनि । बेहु दपान्ति सिव-मन-मामीना। (१४) खोटे सार्हपर प्रीति —

अस विचारि विय जगहु ताता । मिरुद्दि न बगत सहोदर-प्राता।। (१५) पतिका स्त्रीको उपदेश—

मामसु मेरि सामु-सरकार् । सर विशि मामित मकर महर्षा।
पहि ते मधिक कामु नरि दूमा । सादर सामु-समुद-पद-पूजा।
(१६) घरकी फुटका परिणाम विमीषण सन्दरीतरह दिस्ताता है।

वेसे उपनेशोंके श्राविशिक श्रीर पुटकर उपनेश भी बहुतायक्से मिळते हैं। उन्ताहरण---

हुवाधवार अध्यव व । वदावाध--'धर्म न दूसर स्टब्स समाना । वारमनियम-पुरान नहाता ।' 'दानिनि दमांडे रही धन माही । बरुसे प्रीति प्याचित गही।' 'चहार्क्ड क्ट्रट फूर्नि निमार्स । बस्त मन्तर्स तुष निमा पर्ये ।' 'चेह क्यांट सहिंदि सिर्ट केंद्र। बहुरें बच्चन स्टल सह तेने ।'

ंपुड मरी मरि चरि कार्या । अस मेरे चन शर बीराई हर महानृष्टि करि वृधि दिवारी। ही में स्वदेश दीव निवादि नारी। 'चनवाड मन दुम निवि वेती। निनि दुर्जन परनामनी देशी। 'बारर मन बढ़े एक जनगा । देन देन जलती पुक्ता । 'राज्यान दिनम दुधिनसन् ग्रीती । गहन क्रम्नामन मारण नीती । 'बोरिटि सम बानिडि दरिकमा । कगर बीन बने कर जना । 'पूरे करे न केर जहारि शुवा करहरे करते । मुरम इस्म न भी जो गुरु निशह निश्चि सन ।" 'कीर कामबस इपय विमुद्धा । अधि दविद्र अत्रमी अधि बुद्धा ।" 'तादा रोगवस सन्तत कोगी : राम वितुम गुरि संत्र विरोधी ।" 'व ुरेतक निन्दक अधवानी। भीवा शव वाम भीदह शनी।। उत्तम काव्य कविता-समेत्र प्रत्योंके क्षित्रे शमायता एक वदा व्यानग्रहायक प्राप्त है। जिस काम्याँ व्यवकार, व्याकी मधानता, रस बीर मासुर्व होता है, वह काम उत्तम करा माता है। रामायणमें बादिसे बन्त तक वे सब भरे पहें हैं। वसहार तीन मकारके होते हैं। शब्दाबहार, वर्गासहार शन्दासङ्कारमें किसी शन्दके बदले इसी वर्णका दूसरा

धीर वमयाबद्वार । बान्द्र रत्न देनेसे काम्यके निवसके भनुसार छद होनेपर भी वह चमत्कार महीं रहता । यथा---'तैहि कारम आवत हियहारे । कामी काक बलाक विचारे । सतका सतकत पाँगन कैसे । पहन कोस ओसकन जैसे 1º इनमें पदि काक वा बसाह सपदा कोस वा जोसके ने यदि कोई दूसरा शस्त्र रख दिया क्षावे तो वह व्यवकार रहता। शब्दालहार धाठ प्रकारका माना व्याता है। व्ययांबङ्कारमें शब्द पखटनेसे वामत्कारमें कोई बुटि त अनु ञुग बल्ज सनाला । ससिद्धिं समीत देव अथमाला ।* समें धदि 'बवज' हे बदसे 'कमल' और 'सिसिहि' हे रस्त दें तो चमकार नहीं जाता। सर्याख्यार-

इससे भी वाधिक प्रकारका मानते हैं। मत है कि इन सबमें मुक्य उपमासद्वार शबहार वसीके मित्र शिव कप सात्र हैं।

बाजिक्सम जनमा देनेम सेड द्ववरीहामतीडी कामाएँ भी बड़ी ही । "महत्व चरन-वहुत्र नस-बेती। इसन-दर्म ^बबनहत्त्व संजु सरामन वैते।कामी क्वन

'मन मरीन हन मुंदर देश । निपन्स मरा 'त्मह तदेव गुम तीच निहर्त । रीत वहे क वसपासहार-एक्से कवित्र सहहारीते बनगाबद्वार करते हैं। यथा-कर्ने बचन मानस निनन्, तुम्ह सनलनुनः

गुरु समाज क्या बन्या गुन कुममय किनी बर्दि क इसमें धनन्त्रप (चर्चांबहार) और बतुस् समिबित हैं। कवित्रीम डमवाबद्वारके भी है। वपभेद मानते हैं।

व्यक्षकी प्रधानता---

^{ब्}बरन-पीठ करनामनेशानके। जनु अस जानिक प्रयानके। 'शुच विवेषसागर सम साना। जिनहिं निस्व बर-बदरसमय।' रामायवाले सीकर्ने उदाहरच दिवे वा सकते हैं। रस-विद्योग इसके व मेर मानते हैं। बोर्नी भक्ति और बारसस्यको भी सम्मिबित करहे ।। मानते हैं। यथा---

(१) यीर--⁴शुनि सेनक हुस दीनद्याला । कराके टर्डी है मुना निसास। ⁴देखि न जाब कपिनके ठडा । मति विसालतनुं मारु हुन्छा।" 'बाबहिं गनहिं म औषट बाटा । बरबत कोरि करहिं गहि बद्य।' (5) **SEQU**-

र्थंतु विकोणन माणति वारी। बोली देखि रामगढाः 'बा रयुनन्दन प्रान पिरीते। तुम निनु निगत नहुत दिन बैहे -31 ASS 'पक बार चुनि कुसम सुहाय। निजकर मुगण राम कारे।' (8) **हास्य**—

'देखि सिवहिं सुर तिय मुसुकाहीं ।वर टायक दुत्तहिने सगरहें।' (५) भयानक—

ेंठागत जबच मयालक मारी | मानहुँ काठ रात सेविवारी |

(E) aga -

'रदे छाइ नम सिर अध बाहू। मानहुँ अपित केतु अब गर्।'

(७) यीमटस---जोतिन मीर मीर सप्पर साँबहि । मृत पिसाब निनेप विवि नाबहि।।

(८) रोद्र— 'पुनि सकोर नेते जुनरामा । फड बनावत तोदि न कामा ॥' 'जो स्त्र संक्र कारि सहार्थ । क्टीप हती रायुनीर दुहाँ ॥'

(१) शान्त-

दीप-सिसा-सम् अुद्धि जन मन जनि होसि पतकः । मजहिं राम तजि हामनद हरहि सदा स्वतस्तः ॥

(१०) मक्ति—

कामिहिं नारि पियारि त्रिमि कोमिहिं शिनि प्रिय दान । पेसे हैं कव डागिडी हुक्सीके मन राम ॥

(११) चात्सक्य--

मीरे भरत राम दोड ऑसी। सत्य वहाँ करि संकर साबी।।

रहा माधुर्गं, सो इसके जिये उदाहरकारी भावरपकता गर्डो । इसका सो रामायकारमें सोत वह रहा है ।

क्ष्मण्याद हम देवते हैं कि सामायामें देविहासिक कीर राजनीविक वार्ते हैं। उसमें कप्ये कप्ये सामार्थित उपदेश हैं और यह एक उक्तम क्षम्य हो हसके फीतिरक उसमें और भी समाज, शास, धर्म-नीति, पतितोवार, एक्ट-नीवि चारि सभी वित्योंकी क्षतेक याते हैं। तो उत्तरस्य इस केलों हैं ये वे हैं उनमें क्षमें क्षा हम्बा की स्वतक दिवादी पदेशी। सारांश्य यह कि इस अध्यमें एक ही जाद तुकसीप्राजनीने हमारे वित्ये कर्ष व्यक्त कर्मा सामार्थित पुत्रत करके रहा ही हैं। सामाय्य विकास उम्होंने सो संसादक उपकार किया है वह

वन्दों सवहिं रामके नाते

सबी दिविष विश्वतामों एक परम रहरवडी पर्पुत बीका चरितार्थ हो रही है। बीरगडे चड़ार वरि. उतार्स एक है। बीरगडे चड़ार वरि. उतार्स एक है। बीरगडे चड़ार वरि. उतार्स एक रहा है। मुख बीर हुन्के गृहमें कारी-कार्ता है। मुख बीर हुन्के गृहमें कारी-कार्ता भारतां तरे सह विश्वतार पर्यावत सकत्री। बीरग बीर हुन्के ग्रेरित करनेवाली एकी करनमंत्रीको कार्यका निविश्व करनेवाली पर्या करनार्था हुन्से सिंधन्यस निवश्व करनेवाली

नहीं कर सकती । बीरन चीर वायुको मेरित कानेवाकी सायद हरकी सन्तर्गतिको वायुका निर्मित्त कानकान मारित का स्थान हिन्दी साथ हरकी साथ सकता । इस तिर्मित्त कानकान मारित को साथ की बीरन की प्रकार की विभाग की साथ की

ज्ञान्त हो गयी; इस बतुल सुनिकी एक फॉकीसे कात्यकी कृषित बाँखें सुद्रा गर्थी !

विश्वके इस विशाद श्रमिनयका एक ही नागक है। बनवर्ड इन नाना नाम और रूपोंमें पुरु ही नाम और पुरु ही स्व है ! तुनिवाँके इन असीम स्वमाँकी सहमें एक ही सत्य है, एक ही विरम्तन प्रवाह है ! विश्वके पावत प्रवार्थ 'वसी' के लगंके सिये ग्याकुत्र हैं, सालायित हैं, धौर सभी वल 'असी' एक परम बलाके साथ सम्बन्ध चरिताओं कर रही है। विषको असत्व, प्रवधना, प्रविवेकारिपूर्ण मानकर इसके प्रति विश्कि वत्यन करना संशयवाद (Scepticism) ही के नामसे पुकारा वायया । परमात्माको विश्वकी विविध बीहाश्रोंसे परे मानकर तथा इस यगदको परमात्मासे रहित मानकर सान धौर विवेकको सुष्क स्रोत्रमें जीवन भन्ने ही सपा दिया जाय परना उस ग्राष्ट्रवामें सातव-इदयको रुचिर शान्ति और बतुल भानन्त तथा उत्क्रव्रवाका भागास भी महीं मिळ सकता ! पूचा, विरक्ति तथा उदाधीनता विससे करें ? इस 'सिन्या' जनत्से 🏿 चपना'धर' छोद देनेपर परमात्माका वर कहाँ मिल सकता है हैं क्या घरने ही घरको 'उस' का वर बनाकर उसीके दिम्य चालोक्से चपने चन्द्रवारपर्य बन्तसबको साबोकित न कर सें**।** विश्वनारहके



श्रीवाल्मीकीय सुन्दरकारहम्

(टेसाइ-शोहरिलरूपनी जीहरी एम० ए०.)

सम्दरे सन्दरी रामः सन्दरे सन्दरी कथा । सन्दरे सन्दरी सीता सन्दरे किस सन्दरम ॥



न्दरका सन्दरत बशीना है।

मन्दरकारदकी भन्दरता नामसे ही प्रकट है, जैसा भास वैसा हो गुष । कथाकी सुन्दरता कविकी कवित्वराक्तिकी पराकादा प्रकट करती है। बैसे सो वास्मीकिजीका बर्धन मधा खपराचें सभी बगड धायना रोधक हैं, पर मुनदरकावड-को जादू भरा है, वह सक्यनीय है । इस लेखका समियाय

महुष अनम करनेके पश्चात् सुन्दर-काश्यका अन्तीकिक न्दरत्व विशेषतः इन कारवासि प्रकट होता है-

- (१) सुन्दरकायस्की कवा युक्त शक्त-गाया है। इसमें रगवान श्रीरामचन्द्रजीके परमसेवक श्रीहनुमान्त्रीके पराक्रम-हा बाबोपान्त वर्षान है,जिससे सर्वत्र बीररसका समह बमड R: 2:1
- (२) भगवान् रासकी प्रियतसा जगळननी सहारानी तीताकी प्रति शोचनीय दशाका वर्धन कविने ऐसा सर्व-एगी किया है कि पापाय-हदय भी दिना शाँस बडावे नहीं रह सकता । करुवारसका समुद्र उमद् चला है !
- (१) भीसीता महारातीके पातियत सथा सौन्दर्वाति प्रयोका भारपम विश्व बडी ही विचित्रताके साथ विजित किया गया है।
- (४) महारानीजीका रावण्के प्रलोमन-प्रथम का खबदन करना सया उसको पवित्र हितकर उपदेश देना,शवक-सारिते इष्ट-प्यक्तिके विये महान् शिकाधद है।
- श्रीवारमीकि महाराजकी कविन्व-शक्तिका अनुप्रम परिचय सद्भा, चन्द्रोह्य, पुष्पकविमान, काशोक-वाटिका, सीता, प्रशोक-बाटिका-विश्वंस तथा सङ्खा-बहन बादिके वर्षं व-प्रसंगोंमें विशेषरूपले मिलवा है।

वाश्मीकीय-सुन्दरकायप्रकी कया क्षीतुलसी-सुन्दरसे निराधी है, चतपुत्र वाल्यीकिनामावरासे धनमिल वाटकोंके सिये संदे**पर्ने सन्दरकायहकी कथाका रसास्वादन क**रा **दे**ना चावस्यक है।

महारानी सीताकी खोज दुवं लङ्का-दहनमें सफलता प्राप्त करनेके प्रवास स्वयं श्रीहनुसान्तीते शहदादि वातरोंको (बा॰ ४११६) को आया-कथा सनायी है। वही कथा यहाँपर संवित्तरूपसे उदस्त की शाती है-

धाम्बवानके पत्तनेपर श्रीहनमानजी महाराध कहने संगे-

'आप सोगोंके सामने मैं इस महेन्द्राचलके शिखरसे उदा । बाते ही मार्गरें एक वहा विग्न उपस्थित हथा । मैंने चपने रास्तेको रोकका खड़े हुए शत्यन्त सुन्दर और काजनमय शिलरयुक्त एक पर्वतको देखा। यह देखका मैंने धपनी पूँ इसे उसके अपर इतने जोरसे बाघात किया. जिससे उसके शिलाके हजारों इकड़े हो गये । इसपर वह महागिरि मुब्दे बोला,'हे दुन्न । मैं तुन्हारा चचा मैनाक, श्रीरामचन्द्र+ जीकी सहायता करनेके किये उद्यत हैं। में उससे धपना श्रभियाय प्रस्ट सर जानेसी धनुमति से धागे बदा ।

तदनन्तर मैंबे भागमाता सरसाको देखा. वह तो सभ खानेको ही उचन थी । मैंने बहा, मैं सीताजीका पढा सगाकर तुम्हारे मुखर्ने बका बाउँगा,' पर वह न मानी । इसने मुख बढ़ाना ग्रार किया, मैंने भी अपना शरीर बढ़ाना झारम्भ क्या, जन्तमें में अपने विशास सरीरकी चाँगुडेके बराबर द्योदा बना उसके असमें प्रवेशकर उसी चया बाहर निकल धाया । येव बह शुक्रपर बहुत प्रसम्र हुई ।

मैं आये बढ़ा, इतनेमें ही मेरी छावाकी किसीने पकड़ बिया । सिंहिका-नाझी रायसी मुँह फैलाकर मुन्ने सानेको दौदी ! पहले तो मैंने धवना शरीर खब बराया, फिर मट होटा वन अध्यक्त दसका कलेजा निकाल काकाशर्म चला चावा । राचसीका हृदय फट गया चौर वह मर गयी ।

तव बहत दर चल कर सरप्या-समय में छहाप्रति पहुँचा । नहाँ सञ्चा-नाहते एक राजसी मुन्दे मार दालनेके विये भेरे सामने चावी। उस राचसीको में बार्वे हाथके र्थें सेसे परासकर धारो बढ़ा ।

में सारी शत वानकीशीकी स्रोडमें मटकता प्रता शबक्ष दनवासमें कुछ भी यता व सगा । तह में शोक



अदेवित्वा पुरी राष्ट्राशमिवादा च मैभिरीम् । समृद्वयर्थे गमिष्यामि निषतं सर्वरक्षसाम् ॥ (वा० ५ । ४२ । ३३ - ३६)

'ब्रह्म वाननेवाने मीतानकर्रणीकी जब हो ! महावची स्वत्यावधी तथ हो ! भीतामधीहरूर-पानित राजा सुर्वीक्ष्मी ब्रह्म हो में प्रिष्टिक्समी (योर क्यं न करनेवानी) मीतानात्र ब्रह्म हुँ मेता नात्र स्ट्राल्स है ! से मानुकेतान्त्र वास्त्र करनेवाद्या पश्चरेत्वचा पुत्र हूँ ! हमारे कितामों बीर बुर्गों महारे क्षात्रने एक राज्य क्या सहस्त्र राज्य भी सहारे हर सकते ! से समल राज्यों के सामने बहुआ को स्वत्र कर सकते ! से समल राज्यों के सामने बहुआ को भाग सामने का स्वत्र सामने का साम सुत्र कर कार्यमा ""!" यह पत्र सुद्ध स्त्रू स्त्र स्वत्र को सामन्द्री कर कार्यमा सामन्द्रात क्या इतिस्ताला एक बार चोर सामन्द्रोकन

रावद्य श्रीहमुमानुजीसे यह पूचता है, कि 'त् कहाँसे द्याथा है ? क्यों चाया है ? सशोक वन उजादने चौर राचसोंको भवभीत करनेमें तुमको बया खान हचा है मेरी इस वर्गम परीमें व दैसे चाया है' चाप उत्तर देते हैं---'मैं बानर हैं. मेरे हरवमें शत्रयासे मेंट करनेकी अभिकापा थी किना इसका सफल होना साधारणतः वटिन था. इसीतिये मैंने बसो बनारिकाको उमार दिया । राजसोंको मैंने भारती शरीर-श्लाके लिये जारा । में बायको धायने श्रामीका सन्देश भूगानेके जिये स्वेच्छासे प्रशासमें बँध शवा । सुन्ने श्रतिपराक्रमी श्रीरासचन्द्रजीका दत जानिये। भ्रद में भ्रापसे हितके वचन कहता हैं, ज्यानपूर्वक सुनिये 1 भाप भुवनविष्यात बाजिके पराक्रमको भनीआँति खानते ही हैं. उसको श्रीरामने केंद्रज एक ही वाखले जार हाला चौर उसके स्थानपर सम्मीवको राजा बनाया । करोडीं बानर सीताकी स्रोत्रमें धूम रहे हैं। मैं सौ बोडन समुद्र साँचकर पापको देखनेके क्षिये यहाँ भाषा है। आप तो पर्म और ग्रंपको भवीभौति आनते हैं। बापने शपके प्रभावते पेरवर्ष सम्पादन किया है। बलएव बापको तो यह ज्ञात 🖟 होगा कि परायी-सीको धरमें बन्द कर स्थाना पनुषित है। धार वैसे बुद्धिमान् पुरुषको ऐसे धर्मनिस्ट पूर्व धनर्थकारी तथा समस्य भए करनेवाले कार्यों वे आसक होना सनुचित है। देखिये, खरमण्डे क्रोच और रामडे वायों के बागे सुर या चसुर कोई भी नहीं टिक सकता। भवपूर्व मेरा बहुना मान श्रीजानकीजीको स्रीटा बीजिये। सीताको संसारमें देख धवा देवता कोई भी नहीं पया सकता। आप धवने वण्य-धवका प्रथमें के हुगा गाग न करें। धाव धव मसाधिये कि देवतामों धीर देखांते खव्य होने के बारवा धाव धावय ही रहेंगे। शोधिय, सुमीय न वो देवता है थीर न प्रतु है, वससे माधाँकी रचा कैसे कीवियमा है चाहुँ धी में बर्चना सारी सहस्के प्रथम कैसे कीवियमा है चाहुँ धी में बर्चना सारी सहस्के प्रथम केसे विविचना है पहुंची सामनीनी स्वयं ही हरके नाव करनेद्वी प्रविचा है श्रीतामनी प्राप्त काल-गाति समिमिये। सीतामांकी से सेवसे धावकी बहुत हमर हो चुकी, स्वयं श्रीतामांकी केश्येय हम का हमरा हो चुकी, स्वयं श्रीतामांकी सेवसे सारकी बहुत हमरा हो प्रस्ता, व्यक्त हम्म कोई सी बीरामांकी सुदनें सामना नहीं करें सकते, स्वयं की सुद्ध गिता में सीं।"

इस उक्त का रामिराजाय विचार की निये—पहचा भू मारा प्रापकी वास्त-कृतिका शीरक है। बागे पडकर बातिका साल कराता, 'सुमीय न सुर है न कासुर' राग 'क्यमें तपने करा गारा करता है'—मारि वार्त विकरे मार्केश हैं? फिर प्रीरामके पात्रम, भीतीताके तेन भीत अपने वचका नित्तन घोत्रपूर्व वर्षण किया गाया है, यह स्वानाके पनदेशि सकद हो सकता है। सच तो यह है कि सुन्दरवाय धादिने बेटर सन्ततक भीत्रमान्त्रीके परावम कपा प्राप्त-वर्णने की स्वामित है। सुन्दरवायका नास वर्ष हर्माल्या होता से ब्युचित न होता। बोकिन एकस्तृत इक्ताव्योक्त शीकी, वर्षाचित न होता।

बाब महारानी बीसीमानीके सित पवित्र स्तुप्तम वित्रवह विश्वित एरियात सीमिये—संसारके हृतिहासमें कृत सहितीय परित्र मास होता सस्मानह है। यदि-दिवारों मास्त्री बया करा भी द कर्मी परित्र कोम्प्री कर्मी हुई गीसके सारम कोम्प्रीयनिक कारण सामग्री हुए किसी चीय-प्रवानि हो गयी थी। इर्विश्वीयर निर्मे हुए किसी चीय-पुत्रव हाटे सारम साम नी बेटों ले गुरू, गोयमे सम्मान क्ष्मा सामित्रवे विद्यान हो गयी थी। केरस परियोग्हरी मास सामित्रवे विद्यान हो गयी थी। केरस परियोग्हरी मास सामान्य साम निर्मेश कर रहा था। सामग्री होती साम सामान्य साम मास्त्रीय मेरिया साहग प्रवासी मास कर्मास्त्रवृत्र क्षमारामी मारियोग्न माहग प्रवासी मास कर्मास्त्रवृत्र क्षमारामी मारियोग्न माहग प्रवासी मास कर्मास्त्रवृत्र क्षमारामी मारियोग्न माहग प्रवृत्ती मास कर्मास्त्रवृत्र क्षमारामी मारियोग्न माहग प्रवृत्ती मास सामान्य होता थी। वस्त्रवार्ति मासान्य



सौंप है। यदि यू ब्रह्मकी रचा करना तथा खलुसे वचना चाहता है तो श्रीरामचन्द्रजीसे मैत्री कर छै। देख, भीरामचन्द्रजी धर्मातम भीर शरकारतकस्त्रबंधे गाससे प्रसिद्ध हैं. उनसे चमापाचना कर, मुखे दे देनेसे तैस कल्याय हो सकता है, अन्यम तु निश्चय मारा जायमा, क्योंकि सक-जैसे पापीको श्रीरामचन्त्रजी सीवित नहीं छोड सकते।'

इस उत्तरका एक-एक शब्द पातिवतके बज, साहस. सौन्वर्यं प्रथा भावा सीताचे चमा-गुजका व्यवन्त उदाहरण है। उपय के परिवर्ध पटनसे पैसा जात होता है कि सावी महारात्री-स्रोता श्रवने चताच चरा-सावस्में राज्यके पाय-पर्वतको बबो वेश चाइती हैं। अपने समल प्रवासमें विकास होते हैं बारवा राजवा निरुत्तर होका बावान पाला गया ।

à

ą١

ď

į

nf

od"

di

at if

الخاا

भर में इस काएडडे एक रहस्यमय तथ्यको उपस्थित बरसा हैं. जिसका बीजानकीत्रीसे विशेष सम्बन्ध है। भीसीतात्री जगमननी अपमीजीका चवतार सात्री गयी है। माताकी कथा चपने दष्ट बालकश्च भी होती है। रावचने माताको कट देनेमें फुछ भी बढा नहीं रक्ला था। सीताबी के रोजसे बरकर और शायवश ससमें बखारकार करनेका सामर्थं नहीं या । इसीबियेयह सममा-मुनाकर सीताको भपने प्रकोशनोंमें फेंसाना चाइता था। इतने महान इंडको भी वयामधी-माला श्रीसीताजी बसी शरवामतηď मन्त्रका वपरेश करती हैं को श्रीवानमीकीय रामायकका H रहस्य है। वेश्यवाचायाँका कथन है कि शरवागत-सन्त्रकी EI P ध्याच्या ही श्रीमद्दारमीकीय-रामायण है। श्रीजानकीतीका EN P यही उपरेश माने चढकर सहाकारहर्ने श्रीरामधन्द्रजीके No. बपदेशसे सर्वेषा मिखता है। माता कहती हैं--P. C

विदिवा सर्वेथमेशः शरणागतनतातः ॥ तेन मैत्री मनत ते यदि वीनित्रमिष्यसि । प्रसादमस्य त्वं चैनं शरणानतवतस्यम् ॥ (मा० ५। २१। १९-२०)

देल, श्रीरामचन्द्रश्री चर्मात्मा ग्रीर शरकारात-करात र्दे । यदि गुम्दे चपने प्रायमिका मोह है तो अनसे मिलका उन्हें मना से । इसी बारकागतियर समावहीतामें स्रीकरण-मगवानुने जोर दिया है---

सर्वेथर्मान्परिह्मान्य मानेके शहणे ब्रेंब १ भद्दं त्वा सर्वेषापेश्यो मोश्रविष्यामि मा शक्तः ॥

🗣 वार्थ । प्रजी-बाधरीको कोट धेरी शरणार्थे प्राच्यो । में सब करोंसे खटा देंगा। इस विषयमें शोफ यत करो।' यही बात मधवान शीरासचन्द्रजीने भी विभीपताके भरतमें चानेके समय करी थी--

> सक्देव प्रवसाय तवासमीति च याचते। अमयं सर्वमतेन्यो ददान्येतदवर्तं मम ।।

एक बार भी प्रथम होका को यह कहता है-'मैं द्यापका हैं', उसे मैं सब प्रावियोंसे सभय कर देता हैं---यह भेरा वत है।

बाला जानकीने इसी सम्बद्धा उपदेश रावयाको विधा था. किन उसने इससे काभ मही बहाया । विभीपवाजीने इस उपनेशका मात्रक काना शीर परम-साम प्राप्त किया । राषको भ्रद्राने साताब्य यह उपरेश सबसे क्रिये हैं।

शबसाबी बार्तों, जानकीके उपनेश पर्व ब्रमापर ध्यार दीतिये। महारानी सीता कहती हैं कि, 'रामसे मित्रता कर हो। बह सरकायत-शत्सवाहै, तेरे धापराधीको क्षमा कर हेरे. इसमें तेरा करवाया होता ।' धन्य है खराजनती माता सीते ! यह वचन चापहीके योग्य हैं। मही श्रीसुन्दरकायहका बीजमन्य है। दूसी संसारी-श्रीबोंके खिये यह धमीच उपरेश है । अतप्य अत्येख कल्यायकामीको इसका समै समब्बर प्रतन्त्रभावसे भगवातकी शरवार्ने प्रायम्य शीध प्राप्त क्षोजा चाहिने । 'शायस्य जीवम ।'

रामायणमें ऐतिहासिक तथ्य

शजायक चौर महासारतके स्रोकॉर्मे इस विजयी प्रत्यों के जारा भारत महात्रेश के प्राचीन क्वतिवेशों से सामन्य रखनेवाजे बहतसे पैतिहासिक सध्य भारत करते हैं। 🗙 🗴 🗙 इनमें रचनारीसीकी यवार्यता, मारमकाशन-की सबोहरता तथा वर्षानके प्रसारसे प्रत्येक सनुष्य वर्षि कल्पनाके पर्देमें विधे 💵 संस्तृतके शोकोंको परनेका कर उठावेगा तो सन्द्राचीन मारतीय इतिहासके वाश्विक स्वरूपका चीर सदत राजनीतिक अस्तिकी यया-सरमव राज्य चीर सम्प्रीत चनस्थाच्य ज्ञान प्राप्त चन सचना है ।

दाः रच० इसमू । देही, सी० दस० सर्दः ।

श्रीसीताहरण-रहस्य

(लेसर-मोजनसमुत्रसर्व सीत्रसमहायती सार्वत, यीवस्व, यण-यनव बीव, समादक 'मानमनीद्र')

गराम्डे परिप्रोंडे रहरण कीन जान सकता अपने हैं। बरी पुष मान सकता है जिसे ने कृपा भारते जना में न्यान समान करा है। भारते जना में न्यान जने जीवे वेडु जनारी महीं सो किगीका भी सामर्थ्य नहीं सो उमे आन से । आन से तो फिर वह रहस्य ही नया हमा ! भीतीतात्री बादिशक्ति हैं, बीरामत्री-से बनका रियोग कभी किसी कालमें नहीं है. होतों सभित्र हैं, एक ही होते हुए अक्तोंके जिये युगजरूपसे विशासमान हैं -- शिता अरब अरु गाँचि सम देशियत (कडियत) भित्र म शित्र ।' सापुरर्वमें पति-पत्नीभावले स्रीरामश्रीको स्रे स्तिराय क्रिय हैं । ऐसी परम-सती-शिरोमधिके इरखमें क्या सहस्य है, यह तो वयार्य उस भरनाट्यके करनेवाले ही रहरू आमें। देखिये, ब्रिनके एक सींकके वास्त्रसे पीछा किया जानेपर कार प्रमाण है सोक्यमें मझा, बिच्यु, महेरा, इंग्स् चाटि इ'43" किसीकी भी शहया न पा सका, क्या वे रावणको घर वैठे महीं सार सकते थे ? सवस्य सार सकते थे। पर ऐसा होता नहा पान तो बाज हमकी अनके चरित्र गान करके अवपार होनेका क्षवसर कहाँसे मिलता है जनके दिव्य गुयों-करवा. भारतास्त्रता इत्यादिको इस कैसे विश्वासपूर्वक स्मरण करके इपनेको कृतार्यं समस सकते ?

स्तरय रहे कि यहाँ जो जुज किया जा रहा है सो प्रवादिया पार्तिक वा भक्तिमाससे ही विक्या जा रहा है। वह व्यक्ति जानयुक्कर किया गया है। गोरवामीजीने तो हुदे रएड यहाँने कह दिया है और वासगीकि रामायवारे तो स्टूड दें कि श्रीराम-क्षमया दोनोंने जान विवा था कि वह काट-एग मारीच ही है—

हुन रधुपेति जानत सब कारन । केंद्र हरनि सुर-काव सँवारन ।।

यदि जान-पूर्णकर ऐसा म हुआ होता तो क्या शवय परमन्तरी थिरोमयियोंकी भी सिरवाज श्रीवैदेहीओंके कभी हाय जाग सकता था ! जनुस्याजीसे त्रिदेवकी न चली, तब हुनके मागे रावयुकी क्या चलती ! वा-रा० १ । २२ में

े राववासे यह स्पष्ट कहा है कि तुन्धे भस्म कर है तो भी में तुन्धे मस्स नहीं करती, क्योंकि श्रीरामचन्त्रजीकी बाजा नहीं है बौर ऐस करें मेरी सरम्या अब होती । श्रधा—

> कारेदेशातु रामस्य तपस्यानुगरमञ् । म त्यां कुर्मि दशमीन मस्मास्त्रीयसः॥ र नापढतुमिद्दं शक्या तस्य रामस्य पीमतः। निभित्तव बद्याचीय तिहितो मात्र श्रेतवः॥ र

यह सीताहरया-चरित्र हैं। हमारी समर्त्र की रामायखर्ग त्रिये हुए परवाम-वाताचरिका में में हैं। दि खबर १ १ हमार करें शायकर के मत्यों में की ति । याजकर के प्रत्यों में की ति । याजकर के प्रत्यों के विषय के प्रत्यों के । याजकर के प्रत्यों के विषय के प्रत्यों के प्रत्यों के । याजकर के प्रत्यों के प्रत्यों के प्रत्यों के । याजकर के प्रत्यों की प्रत्यों के प्रत्यों की प्रत्यों के प्रत्यों कि प्रत्यों के प्रत्यो

हमारे परमपूज्य महाराज श्री १०८ पं॰ सम्ब[ा] गरगाजी (जानकीयाट, श्रीझपोच्याजी) ने इस दिस्स रहस्य बताये थे जो पहाँ जिले जाते हैं--

1-रावणने देव,यक,गण्यांदिकी कम्यासंकी वार सा-साक्त उनले विवाद किया | किउनी ही देरिनी हैं यहाँ कैंद्र थॉ—स्वरत-अदने मरॉकी यह हो वर्तर हैं देवलकाँने काकर प्रमुखे बार बार कही । हुन देरिने वारक दिवसि मुनकर कत्याचर महारानीमीन उनके हुने पर्व साम्यवनाके जिसे स्वयं शत्यक वहाँ कैंद्र होना करें

१-नुतिच्याजीके सास्त्रासे चलते सात्र कारापिते । प्रशुसे कहा था कि कापने व्यवकारवर्क बरिसते गर्ने । पणके किये मिरियन्सभ्यकी प्रतिया की है और कर पत्ति । पणके किये मिरियन्सभ्यकी प्रतिया की है और कर पत्ति । पणके चलके चल रहे हैं, गुस्ते वहाँका जात कथा नहीं इत्तर कर हैं। प्रशिक्त कार्याणके व्यवकारव्याजित गरवाँगा कर योग्य नहीं, यह पाप है । किया क्याणके सारितार्थ होई ।

पि॰ विटक्ष सा॰ पुँ ११ (१-१) में देखिये।

प्रतिगतस्त्वया बीर दण्डकारण्यवासिनाम । त्रयोणां रक्षणार्याय वक्षः संयति रक्षसाम् १। बुद्धिर्वेरं विना हरतुं राष्ट्रसान्दण्डकावितान्द् । अपराधे विना इन्ते - लोको बीर न कामने ।।

(470 314120, 24)

थचपि प्रभने उस समय वही उत्तर दिया कि सके सत्व सदा त्रिय है. पर मैं क्षो प्रतिज्ञा कर खुका उसे चन मैं नहीं छोंड सकता । में चवरव राजसोंका वध करके मुनियोंकी सभय करूँगा। तथापि सीताहरक्षमें यह रहस्य कहा जा सकता है कि रावकको सापराध रहरानेके लिये यह अस्ति हमा ।

इस तरह सोच-वेर दोनोंसे उनका यह कार्य (रावध-वर्ष) क्रीनन्य वा निर्दीप हो गया और इससे प्रियाका भी ये माव तो ऐश्वर्य और भक्तिभावसे इए। अव एक

सान्य रहा ।

थीर भाव को एक पतिप्रताशिशोमिश (पं॰श्रीशजासमधी धर्मपत्री) ने सीलाइरणके बारेमें बद्धा है बसे उन्होंके राप्टोंमें सनिवे-पतिपर भागसु अनि करह अस परिणाम विचार ।

पतिदासी मुगछारुवित सिय इस सही वापार ११

धर्मात यह बात पतिवताके धर्मके प्रतिकान है कि बार पविको भाजा दे । श्रीपतिहासीकी पविषवार्थोंको सीवा-इरणका बदाहरण देकर बपरेश देती ई कि पतिकी कभी मृतका भाजा न देना (स्तामीको बाजा देना बढा पाप है) देखी, पीवाजीने अपने पतिकी आज्ञा दी, इठ किया कि सगरो वैसे बने खाची, उसीका वह फल उनकी भीगना पदा कि को जनका इत्य हुआ और जनको कितना कष्ट दहाना पड़ा । हुग चरित्रसे खिदोंको थह उपटेश हुआ ।

पदी भाव स्वयं श्रीसीठाजीके इन शक्टोंसे व्यक्ति हो

tt: f-

कामनुस्तिदं शैद्रं कीणापसदशं मतम् । वपुरा स्वस्य सावस्य विस्तया अनिको सन ।।

(4.0 £18£155)

मर्पात् भपनी इच्छाकी पूर्तिके क्षिये को में आएये यह कर रही हैं, यह कठोर है और खियोंके खिये अनुवित है, यह मैं बाबती 🕻 तथापि इस सूतको देखकर मुख्ये बहा विकाय उपाप हो गया है, कातः आव हमे से आवें-

मान्यनं महाबादी क्रीडायं जो यविष्यति ।।

क्रीर भी सनेक साव खोगोंने कड़े हैं जिनमेंसे शो एक मानसवीयपर्में सद्दूष्टत किये गये हैं । यहाँ इस क्षेत्रमें उनके जिसनेकी धावस्थकता नहीं समस्री जाती।

महाविद्यती, शिवती चादिने मायाका हरण-माया-श्रीताका हरण-होना स्पष्टकहा है। यही बात गोस्वामीजी-में भी स्पष्ट शब्दोंनें कही है--

> मामासीता इर दरसर १११ श्रीतेबिंब रावि तहें सीता ११

क्रीवेजनाधनी जिलते हैं कि अधिकरण बेरवरीने प्रसद्धी प्राधिके किये कालगढ सप किया। उसकी देल राबकते अवरदस्ती कसे पकरवर कहा से बाना चाहा । क्रम सम्म उसने साच दिया कि तेरा नाश मेरे झारा होगा। थह बहुकर बसने घपना वह शरीर छोड़ दिया। वही बर्क्स बीजाजीका प्रतिविश्य है । उसीमें सीताजीका चावेश हता । वेदवरीकी कथा वास्मीकीय उत्तरकारसमें है।

कालवर्से इसारे सित्र श्रोफेसर भीरासवासती सौडने जैसा बहा है बैसा ही है कि 'मानामामुग्रहिंगी' शोनों भाई. आवादी सीता, मावासून, मावाका संन्यासी, मावाका रप, जाताका विकाप चीर विरद्ध-कथा सभी क्रम मोमों भ्रोरसे

सायाच्य शेख था।

इसर्ने महामाया और ईचरी-मायाके साथ राषसी-माया-की खीवा हो रही है, ईचरी घरना देवीमाया वामसी क्रिंग शक्ती-माथासे खेळ रही है । मर्ल शक्त राश है कि केरी काला चल गयी धीर इन मनुष्योंको मेंने मोहित धरके की-शास कर विया: परन्तु यह नहीं सानता कि में स्वयं इंबरी-ग्राम जाजमें बेतरह फैंस गया है और मेरी बुदिका हरण करका हो जुका है। सब सब्मयात्रीको ही परतम्बी आधाका बता नहीं है तब देव-इनुजादिकी तो बात 🗊 क्या है-क्षाव विशेषि कहें मेलाई को है यपरा आता।

श्राद्धिक विकानेका समय नहीं है, इसरे को विका गया बह प्राय: सभी बानमधीयुवमें निक्क्षेणा ही, इससे दर्साकी क्षा भी श्रेत्रना हथित न बानकर नहीं शिला श्वा । हाँ. शीय-कार दोडे बांपतिशासीओंडे (देरेपीओ, शर्यक्या शानिके वरित्रोंसे को उपरेश उन्होंने निवासे हैं अमधी) टर्पत काता है-

केद्रेशीची--

दारी की है हर दिये देनाई दमनार। विनयान मुक्तिनुस्या कंत्रमा अगर अगर अगर ॥ - לונונים

मानि मानी पनिवचन वाम परिवा सीन्त । दानी तो बनाएतम, तानु वादि तीते दीन्ह ॥ वागी वति-सारत विना बहुँ म विवर्धा मान । मेटाई मित्री में दश्राता का कात ॥

दागी सब निरस्ति सरा की राम द वरमेड बार हे निहत दर्गवामा-

युक्तमा हर रामग्री तमि व बावी को मानिहा करे

रामायण-कालीन रापयत्रिधि (लेवड-४० बानरदेवनी शासी, वेरनावे)

रावर्गंबी बाज्य रीति-मीतिकी साँति इसकी राज्यविधि भी विस्त्रवित होगरी है। धानकत्र जिम प्रकार राउथ की बागी है धवना धाकोग किया बाता है वह सर्वण हेप है। वैदिक काळीन रापपविधिकी बात

बाने बीजिये, बस समय शवय धेनेका मकार बहुत ही गुन्दर का किन्तु रामायश संयक्षा महाभारतके कावतक वह तुत्या शपपनिधि सविकालपेस चली जाती रही। जिल-ग्रिस प्रकार भारतवर्षके साथ परवाका संसर्ग होता गया, उस इस महार बीवृष्टशापपविधिमं, बार्य-शप्यविभिमें परिवर्षन होता गया श्रीर भामसम्बर्ध गपस सेनेकी पदाति को सबया हमार क्षणःपतमकी बोतक है। वह समाजके कार मर्पादामवर्गक और निमहानुमहणवर्गक दरवनीतिका पंचाविधि सञ्चालक राजा नहीं रहता, तब समाजके बन्धन बीजे बीकर उसकी बीति-मीति, व्याचार-विचार, रहन-सहन, बोल-पालकी पद्मित्र अवस्य ही परिवर्तन दोजाता है, यह अपिरहार्य है। राज्य क्यों सी वाती है। इसिविये कि इसारे जपर राँका करनेवाले, हमको सन्देहकी दृष्टिसे देशनेवाले व्यक्ति ध्यया समुरायको यह विश्वास ही बाय कि हमने धनुचित

व्यवस्य, पापमय, सदाचारविरद, तुलमर्यादाके ग्रतिकृत वह रोप कार्य, बरावा कोई कार्य नहीं किया है जिससे स्वकुत्र, मात और शपने पृजमयहताकी दृष्टिमें पृतिस होना पहे, रापय भी पवित्र-से-पवित्र, त्रिय-से-प्रिय बस्तु,सम्बन्धी, वयवा धर्म-कर्म या परित्र माननीय बन्यका

की वानेकी प्रया है। यह प्रया सब वातिकों में, , तब सम्पदायोंमें, तब राष्ट्रीमें और तब

भरश कर की ग़रवा के वाम गया और र ही बाहता था-चानी मशाम करके कानी रामचा बनगम बसकी सम्मतिमें नहीं हुक कींगरुवा माता स्वयं वीत वहीं की करन देसका भरतको क्या--

हर्द के राज्यकानस्य राज्यं प्रात्मकारकम् । मन्त्राति बत केकेच्या हीत्रे कृरेण कर्मण॥ प्रस्थाप्य चीरवसनं पुत्रं में बनवासिनम्। केंक्रेमी कं मुख्य तत्र परवारी क्रवर्शिनी॥ शित्रं मामपि केवेगी प्रस्यापिनुमहीत। हिरच्यनामा बत्रास्ते सुतो मे सुमहावशाः॥ अयदा स्त्यमेदाहं ।

(शान शामशाहन्दि) 'को भरत, हुम राम बाद चाइते थे, सो हुमारे हिर् केंद्रेवीने निष्क्रवटक राज्य के बिया, और मेरे राज्ये हैं विल्कासचारी बनाकर खंगल मेत्र दिया। न बारे इसरे हुर्ग वया मता देखा है वसे कही कि घव मुखे भी शीम वी मित्रवा दे, बहाँ भेरा बरास्त्री राम चना गया है वा मार् ठहरा हुया है । रहने हो, में स्वर्थ ही सुमित्रको सार हें बबी बाउँ गी-को माई, संमाको राजनाट, उदाधो मौत, संग्री

हायी-घोड़-स्थ, धन-धायके कोठे, धन हो हाँ इसमकारके मर्ममेदी वाक्योंको सुनकर निर्देश मार्ग हेंद्रव क्याकुल हो वठा और शपय सेकर विवास दिवास

श्राविशिक्त वसके पास और कोई वपाय नहीं रह गया। वसने माता कौमल्याके चरच एकरका, गिर्हणा^क बहा, माता अस कियोगाने

खबर भी नहीं कि यह सब कायद कैसे हुआ । तुम जानती ही हो कि में रामसे कितना प्यार करता हैं। जिसकी समाविसे राम बनको गये. उसका शास्त्राप्ययन निकास हो बाय. वह पावियोंका नौका बनधाय. उसको वड पाप समे जो कि किसीको सूर्यकी श्रोर मुलकर मुत्रोलार्जन या मजोरसर्जन घरनेने खगता है. सपवा गौको खात मास्कर स्थानेम जाता है। श्रीकारो वहा मार्डेका काम कराने जो बसको बचारीति पारितोधिक नहीं देता. उसको दान-मानसे सम्बद्ध नहीं बाता, इसके स्वामीको जो पाप खनता है. तिप्रकी राय वे राज वसको राजे. जसको वह वाप समे । महार्मे तरस्वी-प्राह्मणोंको द्विष्णा देवर को अध्य बाता है, नहीं देता, उसकी जो पाप समता है वह पाप जिसकी सफाउसे राम बमको गये, उसको खर्ग । स्पर्देशमें वतरकर---देन शद-मसङ्गर, जो अपना कराँन्य पालन म करें डसकी ली पाप खगता है, वह पाप जिसकी शायमें शाम बहको शये जमको जारे । जिस दशासाने देशी सद्याह दी हो, उसका परा-पहाचा नेत्र-शासका शान नष्ट हो जाय । आधिताँको छाडका, सकेले ही स्वार-पश्चर्य सानेगसे निष्यं प्रकरको सो बाप सगता है, गुरुवनोंके तिरस्कारते को पाप होता है, वह पाप जिस चापहाळने यह कार्य करवाया हो उसकी सने । भीको सात मारने या पैरसे छनेमें, गुरु-निग्हामें, सिव-होडमें, विश्वास-मापमें, इतज्ञवामें को पाप होता है, वह सब वस दुराव्याकी बागे जियकी रायसे यह काम इसा। इस दुराज्याकी अनुकृत सहधर्मियी न मित्रे, उसके धराय भर बार्ये, इसकी धर्म-क्रिया नष्ट हो जाय. वह अनवन्य ही रह बाय, स्वत्रामु होकर मर बाय, जिस दुष्टने पेमा करबाया हो। बह पापी पागवा होकर, विचहे पहनकर, दर-दर माँगता फिरे, जिसने वह करवाया हो। शराबके धीनेमें जएके खेळनेमें को पाप है, वह सब इसको शते, जिसने वह करवाया हो । इस दुश्चा भन चर्मने न खरी, इसका दान अपानमें बाप, बसबा इकता किया-कराया घन तरेरोंके हाथ सग जाय जिस दुरात्माने यह सब दुषु करवाया हो। होगों सन्त्याओं हे समयमें को सीता रहता है। वसका को पाप है वर उसको सरो जियने यह करवाया । सन्त्रक्षोंको स्रो बोक कोबान्तर विखते हैं, को सपूर्ति होती है. बनको को कीर्ति मिलती है-कह सब प्रम उसको व मिले जिसके करनेते, इछारेसे, मराविरेसे वह सब कुछ हुवा है। वह मातु-शुक्रवासे विक्रित होकर कृषा चन्पोंकी सेवामें सत्पर हो. वह स्वत्य-पत्र चौर बहत भत्योंबाता, स्वरादि-रोगयक. सदा होशसन्तम होने जिस दरात्माने यह सब ऋष किया है। जिस वापीने यह करवाया है, यह कपटी-हजी, सगलकोर, दर्भाववक प्रस्य राजदरहरू भवते इघर-उधर मारा-मारा फिरें । ऋतस्नाता आर्थाके पास म बानेसे की पाप होता है बद कार जब कारीके करने वह जिसने यह किया-दरामा । श्री-द्वेषसे सन्तानहीन हुए उस पुरुपकी सन्तान-परम्परा नष्ट डोकर कल सह हो काय अववा उसके सिरपर वह पाप चहे जो कि अनुकूता भाषांको होहनेसे खगता है। जाहराकी चडारें काचा दासनेसे को पाप होता है पर जसको करे जिसकी रायसे शाम बद भेते गये हीं। बाख-शस (बज़रें) के हिस्सेका क्य निकालकर स्वयं पीनेमें को पाप कराना है वह उसको भर्ते जिस पापीने यह सब करा क्षिया कराया । अपनी सहधर्मिणीको छोशकर औ पर-वारापर रच्छि रखता है, उससे संसर्ग रखता है, जिस स्वक्तिके कारच राम बन शर्वे हैं, उसकी बह पाप बने। पीमेके पानीको गदशा करनेदाक्षेको, विच देनेवाक्षेको, प्यासेको पानी व वेक्ट इसको दिक करनेशालेको को पाप छगता है वह उसको सरो जिसने यह विचा-करवाया। एक ही परात्पर-देवताको प्रथह-प्रवह सामकर उनपर पूपा बाद-विवाद करनेवाखोंकी बातोंको को खरचाप समता है. बसको को पाप खतता है, वह सब, बदि शम मेरी बरनीसे बन गये हों हो समझे धगे।

ह्स मजार करव बेता हुमा, मात्रीक जाता हुमा, क्रांक-विद्वस बाता मुमिलर तिर पर्दा । तब कौतावा-साताने 'पाति-दुक-विद्वाता कीम्यवाने दुम्बनाएक क्या-'कित बाता ! युक्त को बद्द दुन्त पा दी, युक्त होते हुन कप्पतिके कींग की का गया । यह तक हातक मेरे मात्रा हुन्द देहें ! हात बदामारी हो कि हातने करों मेरे मात्रा हुन्द कर्यानिक होत्य कर्यानी की क्यांत्री, कप्पदी पातिको आह सेताने ऐसा बद्द मात्राची तो दिन विद्या, कराती दुन्तवा हुन्द साता कीतावा पुरन्द्रदूर रोते कशी ।

शमायवन्त्राचीन समाज शिर्मात, कोबस्टिति किन्नो वक यो ! इसारी शिरूपांत, मानूमांत, मानूमांत, पतिमांत, पतिमान-वर्षमें बाम्या चाहि संगतित सम्बताची तुवनामं मजाचेहैं रेत, वोहैं गहु पहुँच सकता है ! मानात्राची हो रही है—"वहीं ! कहीं शुः



कल्याण 🚤



राम-श्रवरी । फन्द-मूल फल सरस र्जात दिये राम कई शानि । धेमसहित ग्रमु सायदु सारहिवार यसानि ॥



सनमें उनके प्रति ष्याका सम्रार हुना। विभीष्याने (काम श्रीसम्पन्दनीको चाहा लिये विना हा किया , भवप्य श्रीसमचन्द्रनीको यह पर्संद न खाया चौर तिथिते उन्होंने क्षेपमें भरका, उबहना येते हुए भीषयको बर्जो और कहा—

विमार्य मामनादाय क्रियमोऽप्यं स्वया करः । निवर्तार्वेयमुक्तीर क्रमेऽप्रं स्वयम्ते मा ॥ प्रवासनेषु म कर्ष्ट्रेश मा अध्या स्वयम्ये ॥ प्रवासनेषु म कर्ष्ट्रेश मा अध्या स्वयम्ये ॥ विमा श्रुवासा विषय कर्ष्ट्रेश च्या विद्या ॥ विमा श्रुवासा विषय कर्ष्ट्रेश चामित्रे विद्यास्तः ॥ वर्षात्रेयमा स्वयम् स्वयम्ये विद्यास्तः ॥ वरान्य स्वयोगं में सीमानमा विन्तीस्तः ॥ (पारसोपानस्तर्याशं स्विनवर्षं विनीतस्त्रः ॥

चर्चात् तुम मेरा भनावरकर सेरे जलोंकी क्यों .सता हो ? चपने जोगोंको सनाका दो, कि वे सेरे अनोंको ततावें, क्योंकि ये सब सरे एवजन हैं क्यांत् घरके ों जैसे हैं। इष्टजनोंका वियोग होनेपर, शत्रविपत्तवके र, समर-भूमिमें, स्वयंबरमें, धज्ञशासामें, विवाहमवडदः-चेपोंका जनसमाजके सामने विना परदा या विका धूँ घट भाना दोपावह नहीं है। अर्थात् इम सास जबसरोंको चन्य दशाचीमें द्वियोंका जनसमाजके सामने भागा विद है। इस समय सीता बड़ी विपत्तिमें पड़ी हैं और दुबकाल है। बतः ऐसे समय चौर विशेषकर मेरे सामये मा विना परदे माना-दोपाबद नहीं है। मतपूज हे ीपण ! हुन शीघ सीताको (सुने मुँद) मेरे पास क्षे में। श्रीरामचन्द्रजीके इन वचनोंको सुव विशीपवा नि मया सङ्घ होते देख, सोच-विचारमें पड़ गये, । भीरामजोकी बाह्य टाल भी नहीं सकते थे। प्रतः चरह सीताको भीरामजीके पास क्षे गये ।

इस मसहमें पृक्त बात कीर है, यह यह कि ओसामज्यन्ती बानते ये कि देयब परदेसे ही ब्रियॉक्डा चरित्र रहेगा, ऐसी बात नहीं है, बतः उनकी कीर किर भी रखा बाता था। इसीसे भीसमचन्द्रओंने कहा था—

न गृहाणि न बस्राणि न प्राकारास्तिरस्क्रियाः । नेदशा राजसत्कारा वृत्तमावरणं स्त्रियः ॥

(स॰ स॰ ६। ११४।२४)

षर्यात् कियोंके विवे न पर, न नादरका गूँघर, न कनात श्रादिकी चहारदीनारी, न चिक श्रादिका परदा श्रीर म इस मकारका राजसरकार ही श्राह करनेनाला है (जेता कि ग्रम कर रहे हो)।

यद्यवि श्रीरामचम्द्रजीने उस समय, राखीय कारण विषका सीताको सबके सामने सुक्रमसुक्रा चानेकी चाला दी तथापि श्रीरासचन्द्रजीका यह सावरण तप्माय, सुमीब, इन्सान्को अस्पन्त दुःखदायी हुचा। चादिकविने शिक्षा है-

ततो क्रमणसुभीनी हनुमांख स्वम्भः। निशम्य बावयं रामस्य अमूर्व्यविता जुशार्॥ (श्रव राव १ (११४) १३०)

किन्तु वे कर ही क्या सकते थे ! इस रक्षोकसे एक वातका पता सारी भी पक्षता है—वह पह कि स्नोहकियें 'व्यवक्रमः' दिरोप्य क्षतास्त्र यह जवताया है कि सीताती-कर परता प्यागकर माना सान-जातको भी सप्या नहीं क्या कीत सुमीव तथा बर्गानको भी हुःज हुक्या । किन्तु पता व्यागकर सबके सामने निकटने—वैठनमें क्षतम्यका जानकीकी उस स्वाय क्या स्या थी, यह भी सुमत भोग्य है। साहिकवि कहते हैं—

राज्या त्यकीयसी सेषु भावेषु भैदिती। विभीक्ष्णेनापुगता मर्चारं साम्यवर्षतः॥ सा वक्कसंबद्धमुकी राज्या जनसंसदि। सोदासाय मर्वोदयार्षपुत्रेति माविगी॥ (या सा वा वा वा वा वा व्यक्तस्य

वार्यात वानकी बोगोंक सामने वानमें मारे बनाके वारने जातमें वर्धा वाली थी। विभीत्वा वानके गीवे या हो वे इसकार सीला वानके गीवेक किक्ट गुर्देची। वस वनसमावमें बनावार उसने केंग कर किन्य गा की इस वस्तामत ध्यवा वह है वाचपुत! करकार ते पति। सालाने वहां को है वाचपुत! कहा उसका भी एक गुरु रहस्य है ध्यांच वह कांसासन्यत्रीको हणारेसे बहांची है कि धार्यपुत्र होकर मसोशाविक्त कार्य म्यो कर रहे हैं।

सारांच यह कि जिन धारतरांचर परदेशी गिविवान की बात शीरामण्डजीने कही थी वह भी वस समय अन-समाजको आग्न व गी, किन्तु वहे कोगाँगे धारतरांके रूपमें उसकी पर्यामण की धारी थी, वस्तींक यह पर सदसर समाजन आग्न की धारी थी, वस्तींक यहि पह सदसर समाजन्यान्य होते तो प्रथम जो विमोचया ही क्यों हथी

हाई पालकीमें शीताको बिहा और इस्ते-अची करते बाते ह हितीयतः थदि भूलवश विभीपवने येथा कर भी दिवाहीता तो ये रागपन्त्रजीकी भागा सन भागा-वीता म काते। इसपर भी यदि कोई कह बैठे कि बापने कामकी शीव बालोधना होनेवर मभिमानवरा विभीपवाने सागा-वीवर किया. तो धारमण, समीव और इनमानाविको तो जता म मराना चाहिये था. किना यह बात उनको भी नरी क्षती । चतः यह मानना पहेगा कि चार्वजाति रामायवा-कालमें क्रियों के क्रिये परशा-प्रधाको उपयोगी माननी थी। थह तो हुई धार्यजातिमें परदा-प्रवादे प्रचित होनेडी बात । ग्रव स्तीतिये इम ग्रापको रामायवाकालमें अनार्य कारियोंमें भी उसके प्रचक्षित होनेका प्रमाण रामावणहीसे निकासकर देते हैं। देशिये, जिस समय क्रोधमें भरे लकाता किरिकश्चामें गये थीर समीवके चन्तःपरमें धये. श्रीर खास जनानी द्योदीमें चले गये, तब इन्हें क्यों ही बन्तःप्रशासिनी बलनाग्रॉके मुपुरों और करधनीकी मकार सम पड़ी स्पोड़ी वे समित हो नहाँ के सहाँ सबे रह गये। आदिकवि कहते हैं-

> कृतितं नूपराणां अ काबीनां निनदे तथा। सनिवास्य तदः शीमान्सीमित्रिर्वमितोऽनवत् ॥

> > (बा॰ स॰ ४।३३।३५)

धर्यार नुद्रार्गेकी इसाइम और करपनीकी विदर्शोंकी संकार पुन पुनिवा-भन्दन लच्चाय बांत्रित हो गये। धातककर्ते कुछ सनचले लोगोंके जैसे तो जक्काय थे ही नहीं कि चाहे जिसके परमें केवहक शुरुक्त बीबीसे 'रीकर्देड' करने जाते। वे तो वहें उक्कृष्ट व्यक्तियान् थे। इसीसे सारिक्षिने जिला है—

> श्वारित्रेण महानाहुरषक्टः स् रूकमणः । सस्यावेकान्त्रमाधिर्व्य रामशोकसमनिनतः ॥ (वा॰ रा॰ थार्शस्थः)

धार्यात् चरित्रमं ब्रीड्सम्ब चहुत परे वहे थे। चत: वे धर्माम वहे धर्मे धर्मामण्याचीके त्रोको विषय एकान्त स्थव देश जहे हो गये। हुवनैमं मध्येम पूर प्रता सम्माध्योके सातने चाली है। जारे नरोके वहे चतने ग्रांसके वस चरि चानुष्योंकी भी गुचनुष नहीं है। उसके ऐर इहिंक्टी परे हैं। सा अस्मरन्ती महनिद्वनाती प्रस्तकाती रुग्हेनस्य।

स्टेन्ट्रणा स्ट्रमणम्बियानं स्टाम सारा सीमावर्गिः॥

(बा॰ रा॰ ४। रहे। है

तासको इस दशामें देश सम्मद्यी 'अस्ट इसम्मनुबेन्द्रदर' सर्योत् साबदुमारने गरदन संबी हार्

इस असझमें यह रुट है कि विदे कोई से बार कर कस कमानेडे किमी पुरुष्के सामने बड़ी कही हैं उस बमानेडे पुरुष, भाजकबड़े इस होगों के रहा हैं और ताकने कह नहीं से और न सामों कहते हैं हैं मारे क्षणाड़े गईन मीची कर बिया कारों में

कब आह्मे, जहामें भी हम कारको रिश्वती है वहाँ डब बारेडो किसों में देसी परदान्या प्रदेश है और यदि कोई की परदेडो सबहेडना करते थी हो में प्रति कसके पति किस प्रवार विगान थे। हिंद राववाके मारेजानेका हम्माद राववाके रवानों के उस समय दाववाडी कन्नापुतातिनी बडनाएँ सारं सारामें निकास हो, पॉक्यादे रवाप्रस्में मुँदी। पं गवसे विवार करती हुई समोरो को को उपन

दृह्वान सत्त्वति कुदो मानिहानवृत्तितात्। निर्मेतां नगरद्वारास्यदृष्यनिवानातां प्रभो ॥ पश्येष्टदार दागेत्वे अध्यानावाण्यात्रात्। बाहिनिप्पतितान्सर्वान् क्षंष्टप्तान कुप्पति॥

(बा॰ रा॰ ६। १११। हानी

हे स्वासी! में बूँपट करें दिना बतारे हुनें विकासकर परिश्वादी पहीं पानी हैं, इन हों हैं मुक्ति कुद्ध क्यों नहीं होते ! देतो, में ही बार्ड में मुक्ता-पुरारी प्यारी समस्य पियां क्या कार्यों क्यों कर-पुरार वाहर निकल कार्यों हैं—इन्हें हैं पोल कर-पुरार वाहर निकल कार्यों हैं—इन्हें हैं

शादिकविने इतना स्पष्ट चूँ यह और परोप्त किंग दिया है। इसवर भी केवल रामायय-महामादका बन्ने शुननेवाचे-कृषों दोनोंका नाम खेका बेन्यतीय कर्ने किया करते हैं। किन्तु इन भोजे भाषांकों को ब स्थला कि साथोज्यामें तो यहाँ तक परदेश सामा स रनवासकी स्तास क्योडीयर क्षियों, बालकों और ब्होंकी ही पहरेपर रक्ता वाटा था। देसियें—

> प्रणम्य रामस्तान् वृद्धाःसृतीयायां ददशैसः । सिनो बालाय वृद्धाय द्वारवधण्यतस्याः ॥ (वाक्सक २/२०/११२)

इन बुदोंको प्रकामकर श्रीरामधीने शीमरी क्योड़ी पर श्रियों, बासकों श्रीर बुडोंको पहरा देते हुए देखा ।

द्यादिकविके खेलसे यह भी पता चलता है कि स्रयोग्डापुरीमें स्रविशाहिता क्रम्यामीको स्रोत, विकाहिता रिम्पौ नाटिका स्राहिमें भी नहीं जाती भीं। देलिये— नारावके अनुषदे उद्यानानि समागताः । सामग्रे वौदितुं यान्ति कुमायां हेममूचितः ॥

श्वर्यान् शराजाञ्चमें सोनेके ग्रहनोंसे भूपित इमाधियाँ सार्यकालके समय वागोंमें क्रीश करने नहीं वाती थीं।

इन सथ मनावाँके रहते कोई भी विवेकी एवं विचारात्त्र पुरुष रामाव्यके कामारश्य यह नहीं कह सकता कि इस बावलें परदा या ही नहीं। जो ऐसा कहता है, कवि काकारके कथनानुसार उस मर्बेडी 'शहरर परदा' पर सला है।

वैदेही-विलाप

विते प्राणीते भी, कविक प्रिय माना सुबद था। तुम्बे दोता स्वामी, चितन धणको भी सुबद था।। विते प्रातारोंने, स्वामेद करते वित्र वट थे। विते द्वा । दैस्योके, सचमुच वित्रीने विकट थे।।

तुम्हारी बामाजी, भारति कम जो धी व करती। सदा भानोदींगे, नित बंद रही मोद महती।। सरोक्षापी भागी, रचुकी। बदी कह सहती। दिकादी तेमसी, भारता सुबुका कह हिन्छी।।

निते कोचा स्वारी, निति कर गुणा कोका रहे। स्वारोति पूँचा, बहु तिविनेक तेकर सहे। स्वारा वीहा था, बहु तहन ही नीरन दिया। स्वारा मूर्वोदी, सम हदय का दुर्बिंग विकास

बाभी शर्व है। इनक-मून मेरा वह कहाँ। विशोनको कोई, प्रिक्स नहीं असन वहाँ। स्माद पूनी-सी, असक-अनका कोटीन बनी। इसी है बहुमी, महुँ दिर वही निरम्स अनी। रनीते थारा-सी, व्यतिक महा उच्च बहुती। विज्ञाने विन्ताकी, नितुत्र सहस्य मात्र बहुती। हुन्हाची वी मात्र, निरद-न्यमिता भीन जपती। हुन्हाची वैदेही, महह निवि। यो है कर पती।

क्षुनिवाके प्यारे, रूपन तुमकी या कटुकहा। वसीले ती देखे, रूटन इतना सद्गट सहा।। कहाँ दो माभो ते, एपपि ! जुरुतया किमि कहो।। कहिला-टी नारी, सहय तुम तारी प्रमुख्यों।

शास्त्राक्षास्थानी, तथन तमने और मनने । बहुता ही काम, बहुत अन देते विकरने ।। निमुख काम्प्रनदी, कर कहे रही हाथ । अब ते। इसो होने कोई, निमुख अपने मान सब ते।।।

परिकाला सीठा, बंगु-बनुष्यी क्षेत्र कार्तः। प्रिस्तो बनानी मी, नित्र कुण्डर-मेही पिरक्रते। विस्तोते के भी, जबद 1 मुक्तके काल कवता। बक्तकेची कार्ती, समुक्तकषु बचा न सक्या।

दुशनी शतेश औ, नित्स तुम्ब दोश स्पृत या। दुश तेवाने हैं। नित्स कित काल निदुष्ट या। सदो स्पत्रकृती ! क्षत्र इत्तर है बाह यानी श जिलाने व्यापारी, स्वय कारित बताहाल ! टर्मणी।।

فتشقه إدعا بجاءرته

सतीके मरणान्त पायश्रित्तका ग्रप्त कारण

(चेसक-शीरामचन्द्र कृष्ण कामत)



रपन्तिक चेत्र वाजी 'परम करवाया' के चिपकारी 'करवाया' के रसिक वाठक इस सेलका ग्रीवैक वेलकर साम्मवतः चानवै करेंगे चीर इस रामाववांकके विद्वान् चेलक भी करेंगे कि इस विरोध सम्बद ध'कके लिये सम्मावको

जिन रातापिक विषयोंकी सूची तैयार की थी, उसमें उपयुक्त नाम गर्दी है। तथापि विस्तावितिक विषय उममेपर झुसे झाशा है कि वे हसको पृथ्वित विषयोंक सन्तर्गत हो मानकर हते शीरामचरिमके पूर्णवाका निर्शेक हो समस्त्री ! १००६४४०० - १००० कुल कुल्ले

कुछ समय पूर्व पृष्ठ प्रसिद्ध कानून-पवसापी सजावे करवे प्रपादमानमें यह प्रतिवादन किया था कि 'कीराम हूं था-के कवतार नहीं थे, वे एक महान सन्दायसम्पन नरपति के! 'तो कोग स्वाक्य दिखा-दीवासे कुछ दूर चले गये हैं, तिनहोंने 'आप नागिनेपद-विधासे कुछ दूर चले गये हैं, तिनहोंने 'आप नागिनेपद-विधासे कुछ दूर चले गये हैं, तिनहोंने 'आप नागिनेपद-विधासे कुछ दूर चले गये हैं, तिनहोंने 'आप नागिनेपत्त' हता शुक्ति-जनवातुसार प्रारम्में का विधास सीतिस सम्मार मार्थि निया है और साम मार्गि है, दुख्ल को हताहों है कि इन क्यापियारी बाधुनिक मिद्रानोंके सर्वसामाय सर्वज और नेवा आगते हैं धीर हमके क्यारेस सनसरज करना चाहते हैं ।

में से सानुनका बहेते बड़ा किमीमाछ विहान होनीका निहान कही कर सकता, तैसे दिया और कात्मकरायन्त्रमा मानी कारदर मानीनके दुनों नारी सुनार सकता चीर तीत सानी कारदर मानीनके दुनों नारी सुनार सकता चीर कीत मानी कारदे के सान के से देनिका मानीन कीत होने के हाछ सारकार करी स्वाता, केने की छाछ सारकार करी स्वाता, केने की छाछ सारकार कात्मक प्रात्मक प्रतिकार करी स्वाता, केने की छाछ सारकार कात्मक प्रतिकार कार्यों स्वाता के से कीत कर सकता कि कार्यों के प्रत्या कर सिनारी कार्यों के प्रत्या कर कर सिनारी कार्यों के प्रत्या कर सिनारी कार्यों कार्यों के प्रत्या कर सिनारी कार्यों कार्यों कार्यों कार्यों के प्रत्या कर सिनारी कार्यों कार्यों कार्यों के प्रत्या कार्यों के कार्यों कार

भारपुर जिसने जिस विश्वषक शामि है हात स्मार्ट है, उसीको वक विश्वक प्रतिगादन करेडे हो हैं बहना चाहिये और सुविज सक्तोंको भी उनी हैंने वस्ता मत नानना चाहिये, धन्यण हर्नहें हैं सम्मावना है।

'अरिराम मनुष्य हैं या है वा' इस सामार्थ हो हैं यह में बेहमार्थ के एक माजी पर्य हर् बहुत हुए बिज बुका है हमें में 'क्रीरामचरियाहच' नामक माजी प्रकास वी एर्ड बहुत हुए स्पष्टीकरण किया गया है। वह इक्का हैं रूपान्यर्थ करनाय के हारोग वर्ष है। वे हमें करें हो जुका है, अवस्य वर्षों इहरामें की सारस्वार सी'। का बहुत्य बहुँ-बाई साविष्यं के साममी भी भी सां। ह कामार्थी में गुम्म के साविष्यं के साममी भी भी सां। ह कामार्थी में गुम्म के साविष्यं के साममी भी भी सां। ह कामार्थी में गुम्म के साविष्यं के साममी भी भी सां। ह कामार्थी हैं गुम्म है तब अन्यान्य शानियों से सां की आते हैं हैं

अवाजानियों के अवाजा अवाजा के स्वाज्य के स्व

सन्तोंने जिस प्रकार वर्णन किया है, उसीका सारांश वहाँ दिया जाता है।

भीरामका सीजा-रिराह, शंकरकी सीजा-वियोगले व्याकुळ हो वाये । अन्तर्रुत निका और स्थानका सीज्ञ सुवांक्क कर्ने श्रीय-स्थानक सीज्ञ स्थानक स्थानक स्थानक स्थानक स्थानक स्थानक स्थानक क्रमीर जर्में

बजरावका सञ्जाव कराने लगे। सम्मावने पुण्यवस्था रचकर करों तकरर सुकारा, एर वह पुश्तेकी क्षेत्रस्व एंकरियों क्षेत्रस्व कर्नमें सूर्वकी तरह चुनने वर्गी। वे न वो पूर्वोंकी सेवार को देश सके बीट न उत्तरासे उठकर कहीं एक क्षान-में शामित्रसे बैट राके। एक साभारत्य मजुलको मंदिर (दा सीरे। 'दा सीटे' की प्रकार मचारे दूप शोकपुरू हो 'नर्में करर-व्यव अस्तके वार्ते। साराईनी विचारी हैं-

पूरनकाम राम सुकराती । मुनुजनतित कर काज कविनाती।। पर-दुब-हरन हो कह दुब हाई। भा निवाद क्षिमहूँ मनगाही।। हा ! गुनुबानि जानकी होता। कप-शोक-प्रतन्तेम-पुनीता।। कठिमन समुक्षार बहु मंत्री। पूछत चेत स्त्रा तक वादी।। है बग भूग है अपुचरतेनी। सुन्ह देखी होता कुम्मेनी।।

सीताके वियोगसे उनकी विविध द्वा हो गयी, वियोगके कारण उनका संयोग-विश्वन जाग ठढा और धन्त:करच सीतामय वन गया, यहाँतक कि वे 'सीता सीता' कहकर कुछ चौर पापायों को श्राक्षिणन करने छगे।

भी। सामान पर हठा देवकर कायवाने वारी विन्ता हुई। वार्तीने मानुकी सामानके सिन्ने बहुत मानत दिने, परता सामी वार्त हुँद। मानावा-रिश्त देवता मानुकी मानेक क्षीतान के क्षीतान के निर्माण हुँद। मानावा-रिश्त देवता मानुकी मानेक क्षीतान के निर्माण हुँद। मानावा-रिश्त देवता मानुकी मानावा-रिश्त हुँद। देवता मानावा-रिश्त हुँद। स्थान कारावा-प्रतासान क्षीतान कि नामानावा-रिश्त हुँद। स्थान कारावा-प्रतासान क्षीतान क्षित की मानावा-रिश्त हुँद। वे मेलावा रिश्त हुँद। वे मेलावा रिश्त हुँद। वे मेलावा रिश्त हुँद। के स्थान कारावा स्थान कारावा कारावा

पुकार सथाते हुए च्याङ्कताले पेंद्-त्यारीको भी दातीले क्यार है हैं? 'विश्वतिने कहा' 'ध्यापि यह प्यांक्स हैं ।' स्तीते पुत्र-'वया ध्यार हुटोंका प्यान करते हैं ।' रिकनो बोद्दे—की प्यान, क्याद, कियात सभी कुतु यह पूर्य ग्या साम हो हैं ।' मजानीने क्हा-'यह तो साप दोनों हो-स्थानम् वीर अक प्रकृते ही नियाने और कमोरी हीन पहने हैं। 'हतम कहतर महं स्व पड़ी। हमर रिकनो कहा, 'नेता साम हस समय विषयों और कामीकी करह रोता है, नित पहना है, तहरूवा है, स्टल्ज सु तिसब समम कि यही पत्रका है।'

धन्य शंदरकी निहा ! किसी भी धावस्थामें जिसके सनमें प्रमुक्ते प्रति किञ्चित् भी विकल्प नहीं पैदा होता, यही सो सन्धा निहासन है !

सतीको मोह हो गया था, उसने शंकरके सर्वोका कपट निश्चित बचन सुनकर उनसे कहा-'वदि में शमको छ्या देँ तो ?' शिवजी बोसे, 'तब इस समस लेंगे कि यह तक नहीं हैं।" अवानी बोकी-'बाप कहें तो में इसी क्ष रामको चक्करमें बाल दूँ।' शंकरने कहा, 'वे पूर्व साक्यान हैं, वेरी इच्छा हो वो परीका कर वेल !' इसना सकते ही सतीने सीताका रूप धारण कर जिया और वह डसी चोर गयी, जहाँ श्रीरामडी विचर रहे थे। सतीजी सीता के वेपमें (इसती हुई) भीरामकी चौसों के सामने व्यक्त सदी हो सपी। श्रीरायने उसकी घोर दिना ही साके ग्रैंड फेर किया और 'हा सीते' 'हा सीते' प्रकारने खगे । "इधर देखिये. में था गयी" कहकर सती फिर सामने गयी. भगवान उसे वहीं छोड़ इसरी और फिरकर पहलेकी भौति पेद-पत्परोंको धालिकन करने जारे । वह बार बार भीरासके सामने गयी परन्तु राम उससे विमस होकर वैसे ही 'सीते सीते' प्रकारने खगे। यह देखकर सच्मावने कहा- 'रयुसान, श्रीसीतारेवोके सामने था जानेपर भी चाप शोक क्यों कर रहे हैं !' यह सनकर भगवान् संचमणपर बिगडे । यद संचमणने फिर बिनटी की सो राम उन्हें डाँटते हुए बोचे-'सौमित्र, ए माई होकर भी समसे बेर क्यों कर रहा है है यहाँ कहाँ सीता आयी है है जैस तो बन्तःकरण उसके किये रूप हैं। दह है। यह शुरुष्टर सच्मक्षने . ` हो गवा है. । सनते ही भारने दौहते

. 🖹 । सावा सीवा

सतीके मरणान्त प्रायश्चितका ग्रप्त कारण

(Pers-Millerry ger eine)



ग्यन्तिक क्षेत्र यात्री 'वरस करवाक्य' के क्षिकारी 'कागाव्य' के रिगक पात्रक इस क्षेत्रका रीर्यंक देशकर सरस्यातः क्षामर्थं करेंगे क्षीर इस सामाध्यांकके विद्यान् क्षेत्रक भी करेंगे कि इस विशिष्ठगुण्यात्रकों करें निवे सरसाइको

जिन शामधिक विषयोंकी शूकी गियार की थी, जगाँ उपयुंक माम मही है। नायाँय निम्माजियिन दिश्व पानेयर ग्रामे शामा है कि वे हरको गुर्विण विषयोंक अपनांत ही मानकर हुने औहामचरित्रके पूर्विणका निर्दर्शक ही समजी ।

द्वास समय पूर्व एक प्रसिद्ध काणून-व्यवसायी स्तकनंक स्वयंत स्यापस्तानी सह प्रतिवादन विष्णा सा कि 'धीसाम हेबर- के स्ववाद नहीं ये, वे एक महान् सहनुव्यवस्त्रण्य नश्यति थे।' जो कोंग पाधाष्य रिकानीकाके कास्य प्रणानी समावन-पर्य-संस्कृति तथा श्रीयनिषद-विद्यासे कुछ दूर बखे गये हैं, जिन्होंने 'आप शामिकंगक' हस श्रुवि-व्यवसानुत्यार स्याप्तें का उपित होतिसे सम्यास नहीं विश्वा है श्रीय को मनमाने सीरपर सर्व समावह स्वयन्ते को परिवहसम्प्रक्ष सावते हैं, उनके विचारीका पूर्वा पता वाना कोई साधायकी बात नहीं है, बुख सो हतनाही है कि इस उपिध्यासी साहनिष्ठ निवहसंकि सर्वसाधायस सर्वेष्ठ की निवह मानके हैं स्वर्धक सर्वा स्वर्धक सर्वेष्ठ भी निवह मानके हैं स्वर्धक सर्वो स्वर्धक सर्वेष्ठ स्वर्धक स्वर्यक्ष स्वर्यक स्वर्यक स्वर्यक स्वर्धक स्वर्यक स्

मैंसे मानुनम नमेंसे नहा विमोगास विदान रोगोका
निदान नहीं कर सकता, सेसे रिया और क्षात्रकरमण्या
मानी बारदा मारीन के दुने नहीं नुगार सकता जीर सेसे
निवस च्यानेमांका फर्ड कुम मेमेनिकक इंतिनियर सेतृ.
निर्माणमें सलाद देनेका कारिकार नहीं रकता. तेसे हो
प्राव्य कान-नृत्य प्रतुप्त साध्ये प्राप्त कियोंपर भीकृत नहीं
कर पाकी कियोंगी में पुत्र विधानियोंगों कोई मार्थ विवस्त हो निदु व वर्षों म हो वह सोमी विषयोंपर मार्ग देनेका
प्रिकारी नहीं हो जो कोग किरीको सम्व विवसी कार्यकरी
सामार्थ ते से भूव करते हैं और वापने व्यापक ऐसार सामार्थ दोने में सुत्र विधानियांपर सामार्थ करते हैं। भारत्य जियने जिस निरामा गार्की हाम कमर्थ है, जरीको जक निरामा प्रतिपाद बरोदे ति भारता चाहिये की सुरिक्त समर्गीको मी रकी जसका मार्ग सामना चाहिये, क्रम्या दर्गके सरमाहमा है।

'बीराम मनुष्य है वा ह्वार' हम सामार्थ हरें वृद्ध से बेबार्गांक वृद्ध मारी एवं रा बदुत इस दिल कुछा है, इस्ते हैं। 'बीरामकीताहरू' नामक सामी उन्हमें से हार्गे बहुत इस क्षिण्य किया तथा है। वह उन्हमंदी क्यात्वार' कामक पार्च हुए मोर्च करिया है। हो जुका है, मावपुर पार्च हुए मोर्च कारक्ता हों। से शाहरूप से हुए मार्च स्वाद है से मार्ग्य बारहरूप बहे-बड़े जातियों के सम्बन्ध भी गों क्यां कारहरूप बहे-बड़े जातियों के सम्बन्ध भी गों क्यां कारहरूप बहे-बड़े जातियों के सम्बन्ध भी गों क्यां सामार्गाये हुए ने क्यां स्वाद है साम स्वाद्ध मार्गाय होते से ही हो आते हैं। क्यां है सब बह्माया शानियों हो हो

ब्रह्मसानियों है तिये भी अवतार रहस्य बानना कतिन है।

शीएकनाय महरामये प्राप्त हों रक्तपकी शिकार्मे व्यापकृति देने गीत कहा-हे माने श्रिप्तार्गि में होकर भी बीजारे (स्वेमारे) भारत्य करता है। बनवार बारवा हो

चित्र काता है ? चीर किर वन मक्ता-मार्टिक स्थान काता है ? इन प्रसंका दरल प्रदा कार्र हैं? भी नहीं जानते ! प्रस्तानकी मार्टि स्वत्वन हों? है परन्तु हो? कोवा-दे पारवका तल वर्र मक्ता-रिक्टों की प्रदुक्तिय वानकी नहीं हैं यात्वर्य यह कि इन्त्र, महादि देशा जो कार्यका वे ही जब मनावन्त्रके मताना-स्वक्त प्रकारी हो गये, जनको भी जब स्वता-स्वक्त प्रवादी तक सम्बन महाविज्ञों की गांवि हो क्या हैं होंड़ के समस्य हम्मिजीं की गांवि हो क्या हैं होड़ के समस्य हम्मिजीं की गांवि हो क्या हैं होड़ के समस्य हम्मिजीं की गांवि हो क्या हैं होड़ स्वादी कात्वर्ष हैं। इसी प्रकार धीरास्मावार्थि से स्वीका भी कही दूरिंग हुई पी, हर्स कार्य सन्तोंने जिस प्रकार वर्षन किया है, उसीका सारांश यहाँ दिया जाता है।

श्रीरामक सेता-विरह, शंकरकी स्वीता-वियोगसे च्याकुळ हो यथे। भक्त निहा और स्वी-मोह । स्वा-निहा को स्वाप्त स्वाप्त का स्वाप्त स्

बत्तरादक घडुनर करावेजते। वस्मवने दुष्पाण्या रचकर वर्गें बत्तर मुजाग, पर वह फूडांकी कोमब पंतिर्था कीमाने बरानें सूर्यंची वार दुष्पाने बागी। वेब तो फूजोब देवार सोडी कबेदी ग उदयार देवल बडी एक बावा-में ग्रामित वेड खडे। एक सामारण स्वुप्यकी मीति पा सीते' (दा सीते' की दुकार मचाने क्षुए गोक्सफुक हो कमें इसर-कर सबस्की की। गुकारोंची विकारों हैं-

पुरतकार राम सुकराती । मनुजकारित कर व्या व्यक्तियाँ । पर-दुक-देश से क्य दुव तारी । मा निवाद तिम्बहूँ मनमादी । हो । गुनकारि जानसे शीता । क्य-शीत-मन्द्रभीता ।। क्षित्रमा स्पुतार नहु मोती । पूक्त केत स्था वय कारी ।। दे समा मृग है मामुकराती । तुम्क देवी शीता मन्द्रभी ।।

सीताके वियोगासे उनकी विविध्य कुछा हो छयी, वियोगाके कारण जनका संयोग-विमान जाग उठा और अपनान्त्रय सीतामय बन गया, यहाँतक कि वे 'सीता सीता' अवन्य कुष्य और यात्रायोंकी प्राक्तिम करने खगे।

सीरामधी यह रण देवकर शंकावधों वही किया हुई। क्यांने महुके सम्माने सि सि बहुत महाने महुके सम्माने सि सि बहुत महाने महुके सम्माने सि सि बहुत महाने महुके सम्माने सि सि बहुत के स्वाद के स

प्रकार सवाते हु व्यक्तिकारी वेड्-प्रप्तांकों भी झालोरी क्या रहे हैं ?" 'तिकाजीने कहा' 'त्यापि पह पूर्णतक्ष हैं ! सतीने पूछा- 'वरा भाव इन्होंका प्यान करते हैं ? 'रियानी बोड़े— और प्यान, आज, विशान सभी छुतु पह पूर्ण मक्ष राम हो हैं !' मवानीने कहा-'तब हो आप दोनों हो-मयवाद और सफ प्रकार विवयत और सामी दील पहने हैं 'हतना कहता हह सत पहे। इतपर शिकाजीन कहा, 'तेरा राम हल समय विषयी और कामीकी तरह रोता है, पिर पड़वा है, वहणता है, परना तृ निव्य समस कि पड़ी

धन्य शंकरकी निद्धा ! किसी भी ध्यवस्थामें शिसके सनमें प्रमुक्ते प्रति किश्चित् भी विकल्प नहीं पैदा होना, वहीं सो सका निष्टातानु हैं !

सतीको मोह हो गया था. उसने शंकाके सतीका कपट विश्रित वचन सुनकर उनसे कहा-'यदि में रामको चुका दूँ तो ?' शिवजी बोक्षे, 'सब इम समम लेंगे कि यह बढ़ा नहीं हैं। अवानी चौकी-'बाप कहें तो मैं इसी क्षय रामको चक्ररमें दाख दैं।' शंकरने कहा, 'वे पूर्य सात्रधान हैं, तेरी इच्छा हो सी परीचा कर देख !' इतना सुनते ही सतीने सीताका रूप धारण वर किया धीर वह उसी छोर गयी, जहाँ श्रीरामत्री विचर रहे थे। सतीत्री सीता है वेपमें (हैंसती हुई) श्रीरामकी चाँदों है सामने खाकर खडी हो गयी। शीरामने उसकी घोर विना ही साके शह केर किया और 'दा सीते' 'दा सीते' पुनारने करें । 'इयर हेलिये. में था रायी' कडकर सती फिर सामने गयी, भगवान वसे वहीं छोड़ दूसरी और फिरकर पहलेकी भाँति पेर-पापरिको चालिहन करने छने । यह बार बार बीरामके सामवे गयी पान्तु राम उससे विमुख होकर वैसे ही 'सीते सीते' प्रकारने करी। बह देखकर खच्मकाने कहा- 'रपुराब, श्रीसीताहेबीके सामने का जानेपर भी काप कोक क्यों कर रहे हैं ।' यह सनका भगवान संचारवपर बिगडे । जब संचाराने फिर बिनती की हो राम उन्हें हाँदते हुए बोचे- 'सौमित्र, सू भाई होदर भी अकते वेर वर्गे कर रहा है ? यहाँ कहाँ सीता भाषी है ? मेरा को अन्तःकरण उसके लिये दाध ही रहा है।' यह श्वकर संपन्निये सोचा कि 'सीताडे विरहमें रामको उन्माद हो गया है, हसीविये सीताका नाम सुनते ही मारने दौरते हैं. चतपुत्र मेरा भीन रहना ही अवित है। माठा सीवा भाप ही समस्य देंगी।

इयर रश्गीर देशाय-भी वही दुविवाम पह गरे और पारत करने बरो कि 'राश्मादे गरीने सुरवर सीता कैने यहाँ था गरी रे अनिवासी भी बाला हुमा । यहाँ तथ कि महात्री भी विस्थित होका यह करने समे कि 'वपा रावयुक्त माम करके सीनाकी यहाँ का गारी हैं हैं नार्राश. सहादि देवना भी इस शहरपकी नहीं कान सके। परन्त पूर्णमझ रात्रीमार्योगी, शर्वज कीरामने यह शेव आन मिया। क्षप्रयाके सीन दोनेगर 'सीने' ! गीने ! ' पुकारने हुए श्रीतमधा दाय कृत्रिम सीलाने पकद किया श्रीर करा-'सावधान होहये, मैं तो चारके सामने सही हैं फिर न्यर्थ ही चाप इयर बचर 'शीता, शीता' विक्राी हुए वर्षी दीह रहे हैं ! क्या पेता करते ब्यारको खजा नहीं बार्ता ! बार सी राहा कहा करते थे कि मै निष्य सावधान रहता है। नया चापका यह ज्ञान ची-विधोगमें सर्वया जाता रहा। संगे आई भक्त संदमयाके विनय करनेपर चाप उसे बाँटने हैं। घोडी-सी देखें किये मेरे चाँसोंसे चोमस होते ही आप हतने जब कैसे हो गये ? में तो बनमें विपहर आपकी यह प्रशा देख रही थी, जब मैंने देशा कि काप तो पानक ही हो रहे हैं तब में बौही भाषी ।'

स परिवरी नरभेडः प्राडः कर्मनिर्दा बरः। सप्राड हर्ष है राम ! मार्ग हेतार्दिमुखते ।।

'शब आप इस भोड़को दोवकर पश्चवरीमें बबिये—' बनवासकी सबस्थमें योदे हो दिन दोप दह गये हैं, वर्षे दिनाकर इसकोग व्ययोध्या कीट चलेंगे।' सतीके इस बचासे भगवान, श्रीतामने हस्ते हुए कहा—''भाता, में सायके बराय हुता हैं, बाग गुम्ने मत सताह है, विग्ने भगवान, राहरका एक दीन बावक, वनका एक अवन्य किंका हैं, किर साथ मेरे साथ प्रेसा व्यवहार वर्षों कर रही हैं। भगवान, राहरको एक दोने सावकर, ग्रामें हम रही हैं। हैं। भगवान, राहरको एक दो स्वोकर गुम्मे संग करनेके हैं। भगवान, राहरको एकड़े सोबकर ग्रामें संग करनेके विये सीताका कप पारयकर साथ यहाँ वर्षों साथी हैं।'

धीरामडे इन वचनोंको घुनवे हो सती सीताडे स्वरूप-को लाएकर तुरस्य बीरामडे चार्चोर्स निर वर्षा और बोधी कि 'मानवार बीक्टरे ग्रुक्तके कर दिवा था कि कीराम निष्य सावधान चीर सर्वेज हैं, उनके समीध तुम्रास करण चारें बढ़ेता। 'स्य गुले उन वन्त्रोंका निषय दो गया। की कि तीति गरिक हैं, मैंने चारनी धानवं मानवार सीताका इन्हरूप बना दिवा था। ग्रुक्त महादि देवता भी नहीं बहुनार सके। धायका जान कामच है, बाद खनाव गति

इसके उत्तरमें बीरामने का, भी! मेरी सीमा सीधिवती जानते हैं है होता हैता को हमका रहस्य बनुवादि। इतिहुर्त होता चाहिये । भारती बहाई नहीं करती चाहिये। वहीं कुर करती है तो पहले भोताके अधिकारकी परिचा कर सेनी सर्दिही। पात्र विना रहत्यकी बात नहीं बतलायी मा स्की।है ओता शुजी, विवादी, पूर्व, बडक, नास्त्रिक, बार्क्स कृतकी, बाबसी और दम्मी नहीं होने वाहिने। दुर्द गुची, कामिनी-कामनका लागी, पूर्व परमार्थी की कि राग्रव मनुष्य ही इस जानाहस्यका प्रविकारिहे हर्न अनमें ज्ञानका अभिमान है, इसीसे बार रिवर्ड है वर्तर तिरस्कारकर सुन्ते पढने चार्यों, फिर महा, में बार्व हरे कोई बाव देशे कहूँ है जिसको पविवचन, गुरुवस्तिहर नहीं, उसे गोपन रहस्य नहीं बतजाना चाहिरे। अगरान्के इन वचनोंको सुरस्र हो

शानामिनान अत्याव हुन क्यानां हुन क्यानां हुन क्यानां हुन क्यानां क्यानां क्यानां हुन क्यानां हुन क्यानां हुन क्यानां क्यानं क्

क्षानाभिमान बल चुका है। दुल-कदर नष्ट हो गवा है। है राम, में भ्रापकी शपथ करके ऐसा कह रही हूँ।

सतीके इन अनुतापयुक्त यचनोंसे सीरासका इदय विश्वल गया चौर यह चपना गुद्ध रहस्य कहने लगे--

हे देवि भवानी ! भ्रापको दीसनेवाछे दश्र–पाश्राजः-यह बुब-रापाण पूर्वजनामें ऋषि ये। শারিমনভা इन्होंने मेरी प्राप्तिके किये निष्यास रहस्य १ धनुष्टान किया था। मेरी चरख-प्राप्तिमें इनका पूरा सन्नाच था. इससे वे सारा जिम्मान त्याग-कर पूच-पहाड़ बन गये हैं, कोई कुछ चनकर, कोई पहाड़ वनकर और कोई तुम बनकर मेरे चरवाँके नीचे पर हैं। निकी इच्छा पूर्ण करनेके छिये ही मैं परम प्रेमसे निका बाबिक्षत्र कर रहा हूँ। वे सब मेरे निरमिमान मक्त हैं और मैं भक्तोंके भावका बार्यी हैं । सीताके बहाने [न सबको हैंदता हुआ वर-पर भटक रहा हैं। अन्तर्रेका ब्दार करने और उन्हें भागन्द प्रदान करनेके खिये ही में तेवा 🛃 करों गिर पहता हूँ, करों सदसदाता हूँ, पहादों-रर दीहता हैं और क्टोंको हृदय समाता हैं । हे सती ! माप यह निश्रम समस्तिये कि मैं एक करम भी स्थर्थ वहीं

स्त्रातंका सह धारण व्यक्तिया है, 'यह मुर्लेस स्वर । धारमा देखना !' यही एक स्वर्धका भी बीं न को कपुर होते हैं और न करने कीर सह देखें हैं, त्यों क्या कराहिकी दिया हुआ को क्याचलक कही होता प्रितिक के हैं देखें क्याचा का नामा हाता है, इसी महार सामुप्ति कांनी विराह का को कामका का नामा है। होता महार सामुप्ति कांनी विराह का कोर का नामा है। होता महार सामुप्ति कांनी विराह का कोर कोर के मध्यकत दोता है का को महारिक कारत कांनी करने का निर्के राहते हैं। धारम स्वराह हो सब है, 'यह सुर्वित के बार को सामा का नामा है। का हो है। को बरने के साम का को को सहक हो हो का कोर है।

रतता । भगवान सदाशिव इस सहबंदी सामते हैं।'

इन साधुकोंको शूप-वर्षत न समध्यर छाप पूर्णमक्ष समक्रिये : इतना कड्कर श्रीरामने कृपा-दृष्टिसे सतीकी कोर देखा !

मीरामके द्वारा यह उपदेश सुनते ही सती सरीकी बडा-अखित होकर गिर पड़ी । मैं ही एक शक्ति समाधि १ हैं, और बढ़ी एक शिव हैं, इस बातको बह भूख गयी । 'शहं' 'कोहं' 'सोहं'की भावना मिट गयी। उसका चित्र चैतन्यके साथ एकरस हो गया, जिससे सारे भाव लग्न हो गर्ने । सामस्पन्ना चरता चट गया । दरप-ब्रहाका भेद नष्ट हो गया, सर्वत्र ब्रह्म ही स्यास हो गया, निजानन्दकी सहरें उठीं और निजानन्दमें ही स्थिर हो गर्वो । इसप्रकार शिव-प्रिया सतीकी समाधि क्रग गर्यी ! चुक्रनेके क्रिये चायी हुई सठीकी ऐसी बलुपम बंबस्था ही गवी। वही सत्संगकी महिमा है, संत भएकार करनेवालेका भी उपकार करते हैं। इसप्रकार पूर्णरूपसे समाधानको शास करनेपर कुछ समयके बाद भवानीको बाद्य द्वान हुमा, उसे मसिख विथ संविदायन्द्रधनस्य दीखने क्या !

वह देखकर भीराम बहुत सन्तुष्ट हुए भीर बन्होंने पवा कि 'देवि ! मेरी एक बात सुनोगी ?' उमाने दौरकर श्रीरामके चरखाँपर मलब रख दिया और नद्गद वाखीसे कहा । 'देव ! आपके कारव मेरा मोह भट हवा, में सुख-रूप हो गयी। मखा, में भापकी बाहाका उहांयन कैसे कर सकती हूँ ?" झौराम बोखे, 'माता ! में धापसे एक ही भील माँगता हूँ हुना करके सुन्ने दो, वह यह कि भीशंकर-के बचनोंको कभी कर न सममना, और भाइन्दे किसीके सी साथ देख न करना ।' इसपर भवानी बोखी- 'हे राम. बापडे काक-दर्यनसे ही मेरी सारी दुष्ट इसियाँ दाय हो गयी, अबसे में कमी जीगंकर-माजाकी अवदेवना नहीं करूँगी। बाएके क्यनोंसे मेरी चविचा ससा हो गयी है। मैं बाएकी शपय स्तावन बहती हैं कि मेरा सारा झज-कपर महाही गया है। बापके सन्दोंसे सुन्दे सायुग्य-सुसकी आसि हो नवी !" इतना करकर मवानी श्रीतमके चरवा-मन्दन कर भानन्यवर्षेक कैवासकी श्रोर चर्ची गयी !

वी शांतंकी नित्य करते हैं, वस्ते कल करते हैं वे वस्ते वाफो हिस्तेगर रोते हैं और वो दशान-मारते वनके एति द्या और लेगा करते हैं वनको कार्याक उच्च निक्ता है, भीतने हक्ष्मवार क्षानीके वाचनानी वर्षाकर हमारे हैं— (दंशात-हव नावकृष्टि !)

धानीमें बारावर्षे पाप-पुष्प होते ही नहीं, जो बनमें वारका करेगर करता है वह पापका और जो पुष्पका करतेह स्टर्स है, वह पुष्पका भागी होता है। -सन्यादक

धीमचान हुन घरमाची रेन रहे थे, माडि वर्ने सामेडे याद उन्होंने धारमान्डे पास पडन्डर वहा डि 'नाप ! मिने सो इन्हें माना नीना शासका बात्तरानु वह सो शियहानता अवानी विक्ती । ब्यादने हुन्हें गृह पहचाना । सन्पान की साथ गर्नेज और शर्मोनायोगी हैं । जहा जाता देवता भी इनीमचार उद्धार मध्य कार्ये हुए बीसानेडे परायों में सिर नवाकर खबने बाने ओडोंडो बड़े गये । सबका संसप नुह हो सथा, श्रीसम्बद्धी हानित मिन्नी।

श्रीपुरुपाप महाराज खरने भावार्थरामायय (श्रारयण्डापट घ॰ १०)में क्षिपते हैं-कि यह उमानाम-संवाद तिपरामाययमें है जीर जानी थोना इसको जानते हैं।

तिवसमायण होर-रामायण । आगम-वंशाह-रामायण ।

गृहः गुरुक-रामायण । करिनन्त-रामायण मद्रक ।।

गृहः गुरुक-रामायण । करिनेकार्वाहोने विक्यण ।

महाकारी-सामायण । करिनेकार्वाहोने विक्यण ।

महाकारी-सामायण । वर्षेने आयम अद्युवना ।।

सिर्माणी मद्रक आयण । वर्षे हें सद्ध-रामायण ।

महामादीचे रामायण । वर्षे हें सद्ध-रामायण ।

महामादीचे रामायण । वर्षे वापा आगमायण ।

भौविती आगायी माणा । नोष् यापा आगमायण ।

भौवित सामायण । वर्षे यापा अप्रामायण ।

भौवित सामायण । वर्षे यापा अप्रामायण ।

भौवित सामायण । वर्षे यापा अप्रामायण ।

भौवित सामायण । वित कथा विक्यण ।

विश्वीसि विकास । देखे हान्यां कमा विविध्व विश्वास्त्र प्रस्त होते होते शहर वजा स्ववे कारतः। क्षेता महते हरतः हे तिरवासनी प्रमास्त्र । कमा विरत्न विश्वा हे तिरवासमनी कमा । कार्यो क्षेत्र विश्वास्त्र क्षेत्र । कार्यो क्षेत्र क्षेत्र हे कमा अस्त्र स्वत्ये दुर्ण । कार्यो क्षेत्र क्ष्यां है तिका अस्त्र स्वत्यास्त्र । क्ष्यू क्षेत्र क्ष्यां हैतिकीत्र समायात्र । क्ष्यू क्षेत्र क्षेत्र क्ष्मीतिक विकास । क्ष्यू क्षेत्र क्ष्यां

जनानिक वाज्यवा सही हे होने है कहा पूर्व प्राथमिक प्राथमिक प्रोमेश प्रमानिक स्थानिक प्रमानिक प्राप्तिक स्थानिक प्रमानिक स्थानिक प्रमानिक स्थानिक स्थान

सती बीन्ह सीता बर मेसा। सिन्यर मोठ निक्य हिंदा को अन बरों स्तीसन प्रोठी। निर्दे मंगित को बर्दी पहि तन सतिहि मेर मोहि नाही। सिर संस्टर केंद्र संस्टी। सरम्पन्न संबर जासन दीना।

सतीको इससे खुनुसारत तुःल हुमा। वत्र हार्यः को निर्मिण बनावद व्यक्ता वर्गाः सम्म का स्थि हो किर दिमाधकवे वार्षां सम्म स्थापका पार्शने हुने किर दिमाधकवे वार्षां सम्म स्थापका पार्शने हुने को परिकर्षमें मारा किया।

इति विद्या तथा बोनिर्विचारीदितः। बाग्यक्रेनार्वितो देवः प्रीयतां मे जनार्दनः॥

[•]गुलार्रशने भी मानसमें रस मर्सन्य वका की सन्दर वर्षरा- मर और रोजक वर्णन विलार्ष्य किया है। हारे हैं हो पांचाके विवाहतका मर्सन्य मानसके वास्त्रसम्पर्य सन्दर पहना वाहिए।—सम्मादक

श्रीरामचरित-मानसका दार्शनिक सिद्धान्त

(देखक-बोम्बाटापसादनी सिंहत एम॰ ए०)

निरा अर्थ कर बीचि सम, वहियर भिज न मित्र । बन्दी सेहाराम-यद, क्रिनीई परम दिय सिक्र ॥



ारता काते समय कहा है-

वद्ववरिविश्तिक्ताकारिको हेराहविक्याम् । सर्वेद्रेयसकारि सीठां वरोडकं वामबहुनाम् ॥ बन्नापादरादर्शि रिकामक्तिके सद्ववरिदेशान्ताः

बन्तापादरादर्शः विरस्मिकेते लक्ष्यदिदेशानुसः, बन्तापादरमुचैद मात्रिसक्तते राणी वयस्पदेशीन । बन्तापादरवनेप्रवेषः वि: सरामनोपेत्रितार्गाकां .

बरीडहं तमरेशकारणश्रं रामास्वमीशं हरिय ११

'सर्वान् क्रमणि, रचा चीर संदार करनेवाडी, वजेश इरनेवाडी, सर्व अंच (सन्दर्व करवाड) करनेवाडी भीरामकी विचा सीनाकी मैं नमन्वार करना हूँ।

'निवारी स्थापे बरामें वानिक दिवन, कहाहि देवना वचा कहा है, जियती सत्तामें तानीमें तारिक अमदी मीति वच इच तम्बना करोग होना है, जियस बयाव बयागामी तारेकी हथ्या वरतेशाबी है किये द्रव्याप्त वैश्व है करा करोगे बरावन ना तारास्त्री करित्र बोहरिकी मैं वर्षण बरान हैं।'

हमों विशिष मार्नेया वैना मुनार और गए साम्बर किया गया है। बावे हो मार्निक सोनातीओ संसाधे कहर, विशो क्या सेहा करनेवाली यह दिया लागू किर मार्नाव (हस) क्षा संहासनेको 'कोच नाहकार'— साम्बर कार्योग की साहब नाकार। हमने साथ हो कोमार्को कि वह सो बहु दिया हि हमीरी कराई कोमार्को कि वह सो बहु दिया हि हमीरी कराई बाधारसे यह बसद संसार भी रस्तीमें सर्पने भ्रमकी भौति अन्य प्रतीत होता है।

द्वस विवेचनार्जे निर्मुच चौर शर्मुचया बैगा सुन्दर हे ही गुनाईनीड जिले धौरामती वेचक महम्पदक पुरुषेच्या राम शिमाई है, विनिशुंत्यकर दान भी हैं। बनायंत्रे चारके विचारातुमार ही शर्मुचक पथायं स्वकच्छी च्याचनना निर्मुचन दी करिन है। बनार-स्वकच्छी च्याचनना निर्मुचने दी करिन है। बनार-स्वकच्छी च्याचन करिने हैं—

> निर्देन इप शुक्तम बढ़ि समुन म माने चोर । सुराम करन नामा-चीरत सुनि मुनि-मन सम होए ।।

यह समस्या जैसे बड़ी ही बटिय है बैसे ही शहब भी है। अगरान्के बाम और कपके निष्पमें चार बदते हैं— नामक दोड़ हैंग उपयोश अक्य अनदि से एन्ट्रिस हाड़ी ॥

सामाध्य कैया बाहुन प्रस्य है। इस्तेन, बोता वर्ष श्रीतिके प्रातुत्ता रहत्य इसमें वर्ष हैं। चान्तु वर्ष सामुख्ये रहस्तरर भुव वरी कामा है फतपुर वह विशव वर्षी द्वीत्रक केवल सामेनिक निवास्त्रपत हैं वस काम साम है—

वर्षेक क्षोप्तिं क्षीत्मावरीको पुष्य नदा क्षेतिंगाती-को स्मृतिका लद्द आपन्त, व्यूतिको संत्राच वर्षाय बहा है और पुत्र पुष्यको भी नत्त साम्य वर्षाती हुए, संत्राह्म कुद्म---व्यूवना प्रतित होनेशय वर्षाता है। वर यह पुरोची है, निगको गुरूबम्या क्षार्यक है।

सहित भीत पुण्यों क्या भेद हैं है दोनों वेयस स्तरीने दिशा निक साम मार्ग है, क्यूप्ता हम्में होई ऐत मही है। बार्या एवं सामें क्या निया कर भीत समर्था स्तर्ता, हमार्थ के हो काराया है। बार्या भीत कर्या कोत हो ऐती हो। कर सम्बद्ध करों हैं को दियों क्या कोत हो स्त्री हों। कर सम्बद्ध कराते हैं को दियों क्या कात कात है। हो, कर सा में बेटक करात है करों का स्वत्य सम्बद्ध करात हो है। बा सी बरिये कि स्तरीन कर समस्य सम्बद्ध करात है। क्या सहुत्व कर स्त्री क्याने करात करात है में बा स्त्रिय करों का स्त्रीत होते हो, वे सुत्र के ने हैं के स्त्रीत करात करात है। वे स्तरीन क्याने होते हिये होते हैं, वे सुत्र के ने हैं के शीलचाल इस घटनाको देख रहे थे, लगीके बाते बातेके बाद बरहोंने सारात्रके चादा चक्काद कहा कि 'नाय! मेंने सो इस्ट्रें माना लीना सम्बन्ध बादस्या प्रकार माने रित्यकारता घटानी विकतीं। कायने इस्ट्रेंग्ड चक्चादा। स्त्यान है बाद सर्वेद और सर्वोत्त्यांनी हैं। महा बादि देखता भी इसीमकार बहुत महुट काते हुए औरासके करवाँने सिर मनावर चयने चयने ओक्डोंको चन्ने सर्वे । सरका संत्य पूर हो गया, बीकक्सायको हान्ति निवां।

श्रीपृक्तमाय महाराज करने भारतर्थरामायय (श्रास्त्रकायक घ० १०)में जिससे हैं-कि यह उमानाम-संवाद रिप्यामाययमें हैं और ज्ञानी श्रोना इसको जानते हैं।

वास्त्रीकिन रातकोटि रामापयोंकी रचना की, जिनके तीन विभागकर संकरने रचने, उन्युक्तोक और पातास हुन सीनों कोंकों में यदि दिया। तीन विभाग कर देनेने या देव दो घोर को स्वार्थ के प्रदेश की सिक्सीने अपने क्षित्र के प्रदेश की देव के प्रदेश की या स्वार्थ कर विजा। औएकनाय महाराजने आवार सामाययों सामाययों के प्रदेश के प्रदेश के उन्यारके प्रवार्थ कर विजा। के प्रदेश के प्रदेश के उन्यारके प्रवार्थ कर विजा। के प्रदेश के प्रदेश के प्रदेश कर विजा के प्रदेश कर विजा के प्रदेश कर विजा कर विज

शिव सामायण शैव-सामायण । वागा-वंषशाव-सामायण ।

गुद्दा गुद्धक-सामायण । वागा-वंषशाव-सामायण ।

मत्य-कृष-वाग्व-रामायण । वाग्व-रामायण नारक ॥

मत्य-कृष-वाग्व-रामायण । व्हि-रामायण नारक ॥

मत्य-कृष-वाग्व-रामायण । व्हि-रामायण नारक ॥

सि-कारि-वरण सामायण । व्हि-रामायण ।

मत्र-रामायण । व्हि-रामायण ।

मत्र-रामायण । व्हि-रामायण शौ-यामा ॥

मत्र-रामायण । व्हि-रामायण शौ-यामा ॥

मत्र-रामायण । व्हि-रामायण शौ-यामा ॥

मत्र-रामायण । व्हि-रामायण वा्य-रामायण ।

स्वि-रामायण । व्हि-रामायण वा्य-रामायण ।

स्वि-रामायण । व्हि-रामायण । व्हि-रामायण विकारण ।

स्वि-रामायण । व्हि-रामायण । व्हि-रामायण वा्य-रामायण ।

स्वि-रामायण । व्हि-रामायण । व्हि-रामायण वा्य-रामायण ।

वेग्रीनीचे निक्या । देशेनु इत्सा वया निविद्य स्टिम्स । क्री यस्त होते होते याक्य वटा स्टबे कराग । क्री मान होते हरते वे नित्तमानी प्रमाचन । क्या सित हिंगा स्टिम्स स्टबे व्या । स्टबे देशे हरी स्टबे कीराम स्टानेटे पूर्ण व्याप्ता ही की करा वे क्या कारतन्त्रमानमा । क्रेन्ट्र करा होते वे क्या कारतन्त्रमानमा । क्राई वांचे हिंगा वेन्ट्रीनिक समानमा । क्राई वांचे हिंगा क्रिक्टिक समानमा । क्राई वांचे हिंगा

मनानिश्च व्याण्याच्यो सती है होने हैं अन पूर्व आयमिय अनुनासमित बोगंडर आगरों को अव्यान किया। मागान देव तर्थ ते में केवल धर्मेंडी ही मूर्ति हैं। उन्होंने वह तर्थ वर्ध कुत भी नहीं कहा। परामु नमने यह होने वह परम पूर्व वरायपूर्व अधारके लाव वृद्ध है। जावन्य अध्यान करके धोर पार दिया। वा वि श्रीसीताका—सेरे महा श्रीमाकी शर्वा वर्ष हो। श्रीसीताका—सेरे महा श्रीमाकी शर्वा वर्ष हो। दिया वर्थ यह मेरे किरे सीताजीके हमान यूर्तमा है। दिया वर्थ यह मेरे किरे सीताजीके हमान यूर्तमा है। स्ताके स्था से प्रवीका स्वत्य केरे रहा कर्जा है।

सती चीन्ह सीता कर नेवा। सिन-उर प्रोड निक होता को जब करी सतीसन प्रीडी। निदे जगाते पा हो करी। परि तम सतिहि मेर मोहि नाही। सिन संकर केंद्र सम्मा। सम्मुल संकर बासन दोना।

सतीको इससे खुलुसरत दुःल हुना । वस्ते वर्षे को निमित्त बनावर घराना शरीर सम् कर मित्र है किर दिमायकचे यहाँ जम्म महत्त्वक पार्टी है तो सिरत हुई । नचीर जममें पुरा सहाव तर बाढ़ शरी को पतिक्यमें माछ किया ।8

इति विद्या तया बोनिर्दिणारीहितः। बारमजेनार्थितो देवः प्रीयतां मे जनारंकः।।

अपनार्वाणिय भी मानसमें वस मसंस्था वका की हान्दर कारेश- मर और शेषक वर्णन विकारपूर्वक किया है। हुई है? हेबर दिमायक-प्रवा वार्णांके विवादतकका मसंग मामभी वालकाव्यये वक्षत वहना वर्णां है। ---सम्मायक

श्रीरामचरित-मानसका दार्शनिक सिद्धान्त

/ केसक-ओज्वालाप्रसादबी सिंडल प्रम• प• \

गिरा अर्थ जल बीन्दि सम, कहिबत मिल न भिज । बन्दी सीताराध-पद, जिनहि परम विव सिख ॥



वन्दना करते समय कहा है-

. उद्भविधितिसंहारकारिणी हेशहारिणीम् । सर्वत्रेयरकारी सीतो नतेष्ठवं रामग्रहमाम् ।। परगापानशक्ती विरुवसिकं प्रकारिदेवावराः

मत्सरवादमृषेव माति सङ्कं रजी वयाऽहेर्भम । यरपादश्वमेङमेद हि सवसमोधीनतीर्थनती .

बन्देऽई तमशेषकारणवरं शमास्थमीशं हरित्र ।।

'सर्थान् बराजि, रचा धौर संहार धरनेताची, बजेरा हरनेदाती, सर्व सेप (सम्पूर्ण धरनाण) अन्तेवाची धीरामकी त्रिया सीताको में जमस्कार करता हूँ 2

ेजिसकी मायाके बरामें अस्तिक विकार, माजादि वेदणा बया मातुर हैं, मिसकी सत्ताते स्त्तीमें सर्गक असकी माजि सब बुध सत्य-सा माजाज होता है, निस्तका करवा महत्ताराते सरतेकी न्याय-मात्राजांके क्रिये प्रभागत मीता है जस कारेच-साय-मा, रामनामात्रे मतिन्द श्रीहरिकी मैं बन्दान कराता हूँ।

इसमें विदेश बारोंका कैया मुन्दर और लग्ट समनवर किया गया है। पत्त्वे हो महतिकर सीतामोको संसादके जब्द, निर्मित क्या संदार करनेनाओं कर दिया गयन किर मग्याद (पुरुर) कर बीतामतीको 'स्मिक्स व्यवस्था'— सम्पूर्ण कार्याचा मो बाद्य बरुजस्था । इसके साथ दी ब्रीतामतीके विदेश हो। कर्र दिया कि इन्होंची सम्बद्धे

साधारसे यह चसन् संसार भी रस्तीमें सर्पके भ्रमको मौवि सत्य प्रतीत होता है।

हुस विवेचनामें निर्मुख और रागुवका देता सुन्दर मेन हैं ! सुनाईनीकें लिने सीरामनी बेस्त मनुष्पक्त पुरानेक्त राम से नहीं हैं, वें मीगुष्पन्तरूप राम पी हैं। वस्तर्यमें सारके विधासनुसार से रागुवके समाप स्वरूपके सार्वाजना निर्मुखने सी स्टीम हैं। उत्तर-सारकों सार परण करते हैं—

निर्मुन रूप सुरुष अति समुन न जानै होर् । सुन्त अगम नाना-बरित सुनि मुनि-मन ध्रम होर् ।।

बह समस्या जैसे बही ही जडिज है वैसे 🕅 सहम भी है। धमकानुके नाम जीर कपके विषयमें धार कहते हैं— जामका दोठ हैंस ठवायी। जनका जनादि सो सामुप्ति साथी।।

रासाध्य कैसा बहुत सन्य है। इर्तन, योग एवं सक्तिके कतुरम रहस्य इसमें भरे हैं। परमा यहाँ समुबके रहस्यपर कुछ नदीं कहना है जतप्र यह विषय यहीं प्रोड़कर केसल क्षानिक सिमान्त्रपर ही कुछ कहा बाता है—

उपर्युक्त क्षोक्ति श्रीरामश्रीको पुरर तथा श्रीसीतामी-को म्हृतिका स्वरूप भावका, महृतिको संसारका कारण कहा है और पुरा-पुरस्को भी परम कारण बठवाते हुए, संसारको मून्ना-सण्यता प्रतीत होनेपाका बठवाया है। पह एक पूर्वेची है, विमायो मुख्यायां श्रावस्क है।

कहि कोर जुम्मे क्या में है दि वे होनों बेनक कहनें दिख जिब जान पहते हैं, बायुना हनतें कोई केड़ कहनें दिख जिब जान पहते हैं, बायुना हनतें कोई केड़ कहा, हमते के दे उत्तरस्व हैं। बायों और करने कोई देशी हो उपन् बयाई बारों हैं को किसी प्रधार कोड़ हो तथी हो जब काम काले जाएको किसीय प्रधार का चारात है, हुआ बहाते केड़े करना है तसे हैं पर पाएका मानिय ही है। या वार्षे किसी है की किसी प्रधार का स्वारत है। हाल बहुना केड़े कि संकेज इस सारदा वास्तराह है। हाल बहुना केड़ किसी काम के स्वर्ध है, के इस सोहों है ले व संकेज विन करीं कि विने होते हैं, के इस सोहों में लो ती जाते। सहगां यगीरे इप निर्मुट मार्गांड थिये इप निरंद संकेत घरेक यार प्रयुक्त होते होते शब्दक कप निरंद संकेत घरेक यार प्रयुक्त होते होते शब्दक कप दे वसी प्रकार प्रशृति या 'ख्याय' पुल्ले कप्यद होता है, उससे प्रयुक्त महीं होता। पुरावे कामार्थ ही प्रशृति करते हैं। शीरे बख चीर दसकी गीतकलामें कपनमात्रक भेद है, चालांदिक नहीं है। गुख चीर गुखी प्रयुक्त प्रवुक्त महीं रह सको। श्रीते विना गुखरे गुख्य कोई चीरित्तक महीं, थीरे ही गुखीके बागार्थ तिना गुख्य रहना भी ससरमाय है-होनोंडी रिलीत पढ़ ही साथ होगी। विचारके समारम्य है-होनोंडी रिलीत पढ़ ही साथ होगी। विचारके समारमंत्र हैनोंडी रिलीत पढ़ ही साथ लिया जाय,

किर इस संसाका स्वरूप क्या है ? गुसाइंशे वस स्वीर उसकी सरका बदाहरण नेते हैं। सहर ही संसार है। गुरुष्ठे हस्भावात्रसार उससे स्पावन हुमा स्वीर उससे जो सरक्ष्मेवड़ी परिवारि हुँ, वही संसारका प्रवट स्वरूप है। सरक्ष्मेवड़ी परिवारि हुँ, वही संसारका प्रवट स्वरूप है। यह राज्यन केसा हुमा स्वीर स्वरूप-मेद क्षेत्र स्वीर वर्षा सात हुँ हैं न प्रभांका उत्तर साम्बेद्ध गासदीय स्वार (सवस्व ३० सूस १२३) में बहुत ही राष्ट्र क्षीर सुन्दरात-के साथ दिया गया है। वहाँ उस विश्वकी क्यां करने स्वीर है कि प्रकृति कर स्वारायों जरत हुई क्या-क्ष्मा परीच है कि प्रकृति कर स्वारायों जरत हुई क्या-स्व परिवास ही यह संसार है। परिवासवादका भी तो परी सिखाल है।

वह स्वभाव समयत्स्वभाव होनेके कारण वीपी नहीं ह्रा वा सकता इसीक्षिय महतिको 'होग्रहारियोः' (ह्राग्रें को इत्य करनेवाकी) तथा 'सक्रेंबरककी' (तर्व क्रमाण स्तनेवाकी) कहा गया है। श्रायक्षप्रस्में भी शीरामण्डाकीने श्रीवस्त्यमीको उपरेश रहे समय आवाको विधा स्ता स्तिया-भेदने दो मस्तास कहा है। ग्रुप्तको महति-त्या स्तिया-भेदने दो मस्तास कहा है। ग्रुप्तको महति-त्या स्त्रिया-भेदने दो मस्तास कहा है। ग्रुप्तको महति-द्वारा प्रपन्ध स्थापने होता है। यही कालने ग्रुप्तक हात प्रपन्ध स्थापने होता है। यही कालने ग्रुप्तक है। स्त्रिय स्थापने विस्त 'स्रायान'व्यः नियाने होता स्त्री स्वयान विस्त 'स्रायान'व्यः नियाने

था कविकारम् ह्रष्ट आया है, यह कविचा उस पामकके

'श्वमाव' रूप विधा (ग्रहति) से मित्र है यह तो सर-जनिन भेदने मास बीवकी ब्रज्जनता है।

वचि विचास्य महतिकी कियामे बाबास्य इव (परम कराण मझ) में ही रूपालर होता है, सन् ही जब इस रूपान्तरको भी यथावन् मही जानता, हा ए रूपान्तरके धन्तर्गत को पुरुष बंघार्य निय गान इस्क स्वरूपसे विध्यमान है उसे इसे बान सकता है। है कारण वह इस रूपान्तरको इत्रहा 🛐 समन्ता वही बसका 'रस्सीमें सर्पका भ्रम' है। स्मीस्न बात तो है ही, परम्तु उसके वर्षाय शहराको व दल अज्ञानताके चान्यकारमें उसे सर्व समस्ता है। वहि ली सीची रवली हुई है को उसे सीचा सर्च, और वहिश में रक्ली है को उसे देश सर्व प्रशीत होता है। और ब्यूरि रस्सीके पास दी रस्सीका युक होटा-सा पिरड रहा है है बसे सर्पेंडे पास एक देशा सेंडब दीखने खगेगा, मानो सं ह कभी निगलना ही चाहता है। वचित्र होगाँक कर स्वरूप रस्ती एक ही है पत्नु उसके हो सस्य हिंहे प्रयक् दिसलापी देंगे और बनका प्रमाप भेद बाँ हैने वरं अञ्चाल जिस जिस प्रकारके मेर्गुका वनमें करें। करेगा वे ही दिखबायी वेंगे। यदि इस स्तीडे रिरा है रस्तोको सँदक सौर सर्प म समर्थ, उनके हार क्षेत्को यथायदाः समझ धर्मात् विद्याल्प प्रश्तिको डा तो इस सहजम ही ससीके प्रधार्थ स्वस्थन है कार्येते । यही देवतंवाद-ग्रन्यासमाद शादि तिहालाई सार है।

िल, 'जयन तिमाना है, तिकालमें हुना है वाँ पेटो साल्योंकर बना कर्य है है इसका बता यह है है करें को दम जिस करमें देश वह है वह तिमार है बेता होगें में जी नहीं हुना । इसका कर्य यह गई। सत्यना हों में जी नहीं हुना । इसका कर्य यह गई। स्वत्यन हो हुना कि कोई क्यान्तर है गई। हुना स्वत्य हो हुना जिसा आहिंग स्वयम्ग में सरह करते हैं-कि 'इन क्यां तिया आहिंग स्वयम्ग, सन्यमें स्वाक हमा क्यां के हैं स्वरूपवासी है। सामावादी भी हमा हो सामाई है कि सर्वा स्वयम्ग कीय हो संसारकों करने कालाने देशा। सामायान सीय कीर हाद सामायाने है हो हो सह सामायान सीय कीर हाद सामायाने है हो हो सर्वा स्वयम सीय कीर हाद सामायाने हैं हो हो

वत चौर इसकी सहरंको सीजिये । इससीय सबकी लहराते देलते हैं, उन दोनोंको हम भिन्न वस्त नहीं समस्ते, वरं जानते हैं कि खहर जबका ही स्वरूप है। यदि उसमें क्यांके टक्के कों तो उनको भी इस बलका ही स्वरूप मानते हैं, किन्तु जो जलमें वहता हवा कीटाबु लहर और बर्फके टुकड़ेको दूसरी सरह समस्ता है, उसे वे सब व्यापार बारचर्यजनक मतीत होते हैं, चीर विविध स्वरूपकी छहरें तथा बर्फके दुक्के उसे मिन भिम्न वस्तके रूपमें दिखायी देते हैं। उसको उनका श्यस्य सपनी जानेन्द्रियोंकी सदस्या है सनुसार ही न्यक होगा और वह उसी दरपको यथार्थ सममेगा । वही धवस्या भतुष्यकी है। इमें दरय जिस प्रकार दील पहते हैं इस उन्हें पैसा ही बधार्य समक्त होते हैं-यह तो हमारी भूख है। पान्त इमें को भिन्नता दिखामी पढ़ती है उसका चाघार-रूपान्तर-व्यक्तके स्वरूपमें, जवमें शहरके समान हुआ है, इसमें कोई सन्देह नहीं। यही बात वाखी और अर्थके विषयमें भी घटती है। बाखीमें धनेक शब्दोंके सनेक सर्थ परना कहनेवालेके चर्चों और समम्मनेवालेके वार्धों में भेद रह सकता है और इच-न-इच भेद तो वर्धस्वरूपीमें । रहेता ही है । परम्त यह नहीं कह सकते कि सननेवासा को प्रयक्षपक् शब्दोंके प्रयक् प्रयक् कर्य समस्ता है, यह भिन्नता निराधार है, यह सिन्नता कहनेवासेके मयोंकी भिवताके चावारपर है। इसी प्रकार अगत्की भिवता मक्षके कपान्तरके आधारपर है।

 विकारस्पर्स रहेगी। उसे प्रशादि एवं धानिर्वजनीय कह देनेसे तो पीक्षा वहाँ घूट सकता। यक्तमें धीव-स्वस्पका प्राप्त होना हैं। विकार है। यदि स्थान्तर होनेको ही विकार क्षेत्रा जाय तो इसमें गुसाईंबीको कोई संकोच नहीं। नहीं तो भक्ता चढुँठ-सन्तरूप प्रथमें कात्व्य श्राप्तित्व ही देने हो सकता है!

वयापि इसका वह धर्यं नहीं है 🗟 इस रूपान्तरसे बड़के शब स्वरूपमें कोई धम्तर पर वाता हो । वल चारे दर्शके स्वरूपमें हो, चाहे छहरके, चौर चाहे माफके-वह चरना 'HzO' ही है। उसके परमाणक्रोंका स्वरूप चरी है, वास्तवमें वह रहता अस ही है, इससिये इस दम तीनों ही रूपोंको धवस्य एकस्स कहेंगे । इस धरिसे बसे निर्विकार कह सकते हैं, क्योंकि बसके मृत स्वरूपमें कभी कोई मेद नहीं होता। समुख्य जब समय-समयपर भिश्र-भिन्न प्रकारके यस और कलकार भारण करता है तो उससे उसके स्वभाव व्यवा व्यक्तियमें उद्य अन्तर नहीं भावा । स्वर्थके अनेक अलक्षार बनते हैं पर उनके स्वरूप-भेदसे स्वयंमें कोई भेद नहीं होता। मिट्टीके धनेक पात्र होते हैं जो स्वरूपानसार भिश्र-मिश्र गुणवाखे होते हैं पराना उस भेरसे मिटीमें कोई भेर गड़ी होता । स्वर्ण और मिटी जैसे है तैसे रहते हैं। इसी भावसे बद्धा भी निर्विकार, अपरिवर्तनशील, प्रकास भावि है।

उपयुंक्त विषेष्यसे यह भी मालूम हो गया कि इस स्थाननका कारण एराव्यक्ति स्वामाधिक क्रियातांक है। बात्यव हम वह सकते हैं कि एरावाके काराकी क्रियातांक महति या उसकी मात्रा हो संसारका कारण है, और यह भी वह सकते हैं कि परावह, को उस शांकिदा धारण बानेवाबा माषप्रीय है, समूर्य कारपांका कारण है। ऐसो दो कार्य के कि है।

इस रूपानवार्षे इस शिवक प्राप्त स्वरूप स्वाद श्रेष वस्त्रम विश्वस किए अस्त्र हैना दें! संवाद हैने क्वाद है। ब्रोध रक्षमें वस्त्रभुष्ट केंग्ने एक स्वरूप प्रकृत होता है। यह सम्बादम्बन क्षत्र हैं चीत व्यवेद के विश्वसे हिस वस्त्र मी हिसा है। इस विश्वसे यही विश्वसानवारे प्रविक्त वार्ति कहा वा स्वरूप। इस्त्रा होता सेवह है हिस्स स्वात्रमां के क्षित्रमालावार्त्वा सीवस्त्रमां में मारा वा च्यात प्रवाद्य के स्वात्री कर्षों है चीद इसी क्षाद्य इस्त्र मारा हम्स की ही बाता है। क्षात्रमालावार्त्वा सीवस्त्रमें हो। मारा हम्स की ही बाता है। क्षात्रमालावार्त्वा सीवस्त्रमें हो। मारा हम्स की है यह दरा रुपानारकी विशेषिनी विशाहारा वार्यन मूल-वागमारक्षकी मात कर लेता है, तभी दमकी शुक्ति हो जातों है। व्यरम ही विधारण माया कामीह कीर वान्यन है। प्राप्तक रात्य ही बनाका कामान, और जह उत्तमांकी विशा साहारे हैं और राहा होगी।

सब फिर घट प्रश्न होता है कि यदि यह सिदान्त दीक है तो महापुरुगोंने पुरुषको सकता क्यों कहा है! समवा संसारको स्वावहारिक सत्ताढे रूपमें सन्य, यरना पारवार्षिक सत्ताके रूपमें मिष्या वयों माना है । श्रुतिके चनुसार भगवानुका स्वरूप ऐसा है कि जिसमें परस्पर विरोधी-गुर्जी-का समापेरा दें जो दूर और पास, सुचम और रमृता, कर्या श्रीर शकतां, निर्मुख श्रीर समुख, साकार श्रीर निराकार, सथा निर्विकार भीर सविकार है। वह विरोधी गुवा केवल भाव-भेदसे ही यह जाते हैं। हमने जपा देख लिया है कि शब के स्वरूपको परिवर्तनशील चौर चपरिवर्तनशील होनी ही कहा जा सकता है। इसी मकार यहाँ भी भाव-भेद दपस्थित है। प्रदेशको चकता. तथा संसारको धारमार्थिक रूपसे मिप्या कहनेका प्रयोजन, मुक्तिके लिये साधनका संकेत है। मुक्ति सभी मास होगी, जब रूपान्तरसे स्वरूप भेदको प्राप्त हत्त्वा लीव विशेषी कियादाहा उस स्वरूप-भैदको नष्ट करके महारूपमें सब हो जावगा । वह विशेशी किया रूपान्तरकी धोर न धाकर पकरसता तथा सरसका-की क्रोर ध्रवसर होगी-वह चित्तको चञ्चक करनेवाले पयमें न जाकर विश्ववृत्तियोंका निरोध करनेवाली होगी। पाना हमें कौन-से स्वरूपका प्यान करना होगा ! परिवर्तक-शीक्षका प्रथम प्रपरिवर्तनशीक्षकाः । उस निर्विचार धपरिवर्तनशील एकरसस्यरूपके ध्यानमें भिन्नतायुक्त जगतका श्रीलय ही कहीं रह जाता है ? यक बार श्रीसें बन्दकर भगवलमारण काके देखिये, यह जात किसप्रकार

तास होता जाना है भीर क्यों क्यों भार पामर्र रावने बाने हैं, त्यों-ही-यों यह अग्द दिन्मून होतावता हर परन्तु परमार्थसे उताका बार क्यों ही व्यस्ति हो क्यों ही बगन् अ्यों-हा-यों उपस्थित हो हाता है। दे कारण है कि पुरुषको बादलां क्या है, स्पाँदि कार्ल जीवको यदि शान्तिकी और छे हाता है हो रहता ह भी शान्ति ही होना चाहिये। श्रीर ययार्यतः हान श्रीकी परमञ्जू कर महति भवता स्वामादिङ क्रितानी किया दोती है तो इसमे यह नहीं समयना वारि के परमद्भ परिमित भीवडी मौति इन्द्रा और विदा है किया करता है, उस पारावारदीन तत्त्रमें हो वह स्वामाविक ही होती है और वह ऐसा होनेश मी कपसे चारख रियत रहता है। इस ब्राविषय राजि पुकरसताकी और खरप करानेडे बिये पुरामें क्रीर शकर्ती कहा है। इसीका प्यान करनेले मनुष्य हरें रहता धीर कार्य बस्ता हुआ भी शान्तिश्वाम संबंध है । इसीबिये गुसाईबी बहते हैं कि संगान पार होनेके खिये जिनके चाय ही नीवारण हैं, हो को मैं प्रकाम करता हूँ ।" प्रदा । वैसी सुन्ता गानि ।" कानेवाकी रचना है- 'वलाबावग्रहाँ विस्तिविते' से प्रथम मगवान्का स्मरण कर तुरन्त पश्चन हरते। क्रमा दी, किर उनके निज स्वरूपकी भी पहनी संकेत कर दिया। संसार-सागासे पार होते हैं हैं शान्ति-भाषार-स्वरूपका ब्यान भावत्यक है। है। है प्रकारास्य हरिको प्रवास बरता हूँ । हेरत स्वीत 'क ग्रहारियो' 'सर्वभेषस्करी' उनकी सायाओं की हिं करता है। इस विद्यास्य मायाकी हवाते ही मगराहरी समस्त क्षेत्र दूर होकर परम कश्याण होता है! सीयराम-भय सब जन जानी । करी प्रणाम स्पेन हुन्हें।

रामायण सर्वोच महाकाव्य है

दूसरे देशोंके महाकाव्योंकी अधेक्षा मारतका रामायण महाकाव्य सर्वों है । "वार्ने द्वार प्रसां जिन अधुमुत सहागुणींका वर्णन किया है, उनको ओर दृष्टि डालनेते यह मतीत हैता है अपने कालमें सी बया, परन्तु उसके बादकी अनेक शताब्दियों शीतनेत्र मी शीराम जैसे सार्य नरपति विश्वी भी राजवंदामें उत्पन्न नहीं हुए। शीराम सर्वें मुक्साव्यक शीर प्रजांका हेन हंग करनेने महमूत राजा थे। "यामगीकिय काव्य आदिकाव्यका स्थाय याने योग्य है शीर सर्प परिपूर्ण है। —योगीकियो।





STATE STATES

धारुम्याने पर गदि मीता, मिली बहोन्दि मुशील चिनीना।

रामायणमें आदर्श पातिव्रत-धर्म ।

(लेख**र-श्रो**यत सैयद कासिम वली, विशाद साहितालपुर)

मारे महान धानानीने आधीनकावमें जो महानहाई मन्य रचे वे उनमें हामाध्य प्रत्य धानानों मन्य है । हसको रचना हुए सहजों नमें हो गये हमाधिकाव औ भारतन्त्रमें महाने से बेच्च कोवहियों कह हसकों एका, जह और मार्टी में मीरी है पह रचने हमा कारता है है हस प्रत्यमें मारि सीविवे उनशेट-पर्योका बाहुका है। इसके मण्डेक हाल स्तोहहराके साथ गुरावेक सीविवे हाले मंदी होंग इच्चा कार्यों कार्यों कार्यों कार्यों हमा मार्टी

की-समाजकी पविजता, शांकि और महात्तराके विश्वपर्से वेला मक्षण वृत्त मन्यसे बाला गया है वेला पूरत पर्द-मन्यसें है वृत्यके भी नहीं निक्का। और्श्वोशानी चौर भीपत्तरपार्वाके संवादमें जो पतिकत-पर्वाक वर्ष कि सिकता है यह बातरहे दिये प्राप्तितक के कच्छा, जेड़, कर्णव्य और कटन परात्तरपार्व में ही पातित्तरके के कच्छा, जेड़, कर्णव्य और कटन परात्तरपार्व में ही पातित्तरके के कच्छा, जेड़, कर्णव्य और कटन परात्तरपार्व में हो पातिकति वेलार प्रच्य कियो हैं भी मार्शिक दिये वर्षपार, योग तथा शिदका वाध्यप्ट केवळ पातिकत्यसे ही व वर्षाव्या गया है १ जो को पति-वेलाय पितुक पत्तरी है वहें 'क्यूक्स नाहि' कह्च्छ सम्बोधन क्या

पति प्रतिकृत जनम जर्दै आई । निषया होद पाद सरुनाई ।।

'बो को क्यने रतिड कर्नुक नहीं कवती वह वहाँ जाकर बाग खेती है वहाँ जानाभी ही निक्वा हो जाती है, और इसाम्बार उसे खानानान म्हण्यत् गरिस्पतिका सामना करना पड़ादी।'खोडे जिमे कान, जबन बीह मनसे पटिन्यनों मेम ही फ्लाम भी कालाया गया है।

पकै पर्न एक ब्रत नेमा। काय बचन मन पति पद प्रेमा ॥

हुननी दश्व मादर्गने पुत्त किया नाहनित्व, वीरेत, इराम महति किसी भी मन्त्री नहीं चादी बाती और न दन मन्योंमें धो-जातिक किस हतना सुन्दर सुरूप सम्भागों ही रिपर किया गया है। मानकत सभी पर्योजकस्वी विद्यान्त्री सरने पर्मेषी महत्त्वाकी सिद्यक्त सप्तरी-यापने व्यक्तिकस्वी

इन्हामी, हैरवरीय घोषित कर सार्वभीन धर्मकों 'मेटेक्ट सील' बता रहे हैं। यदन्तु सामायण-वैशी गांतिवत-धर्मकों दिगा विक्रीमें नहीं है। सामायणने तो केवल विणा पी गहीं से, बिक्त बपले पार्वकेंद्र हरा हर वर बारिवत-धर्मकों सार्वर्थ भी उपस्थित कर दिवापा है। तिससे सोनेमें सुगग्य जा गर्म है। सामायणके प्रारा करी सीला, सली सुलीचमा, सती बरुव्युच्च चाहिने कपन उपप्रक विदेश सीलार्स किस्तमार्थ कर दिया है। वह धर्म और वह प्रस्था धर्म्य है जिसने मानु नाविक करपायार्थ नहान, पश्चिताल कुण हम जानिक

में शमाववासे इसी नाते प्रेम काता हैं. मैंने कई ररजानीय विवाहोंसें क्रम्यासोंको रासायया रहेजमें हेका राजके पनि उस बहानताचा सहेत किया है जिसमें वे पारिवत-धर्मकी चनगामिनी वनकर सी-आतिकी महानतामें गर्व करें। इससे मुक्ते अपने समाजने कराहित करनेका बीका भी उठाया था. यह मैंबे स्कट बढ़ दिया कि शामायण हिन्द-समाजका श्री द्रास्य नहीं है, वह तो सारे मानव-समाजकी सम्पत्ति है। जब शामायण हमें इसम्बार पतिवत-सरीखी शौरवान्त्रित जिला देती है तब हम उसकी क्यों ह पता करें ! जरा विकास्तर देखिये कि समाययका पातिवत-धर्म बीजातिका क्रवास कर सकता है या नहीं ? भलीभौति विचार करनेसे श्चाप श्रवस्य ही इससे सान्ति और मसहता माप्त करेतें। वर्गार्ववाहसे व्यसनस्य बीवनको उच्चेत्रमा सिससी है, परकर वातिबतसे की-वातिमें सचे गहरे प्रेम चौर पवित्रताका सीन्दर्य बदत होता है जी बन्हें इस खोकमें सुख चौर परलीक्सें शोचकी प्राप्ति करवाता है। उनके प्रतिव्रतस्य संयोजनसे बहान पर्वत भस्म हो सकते हैं, सूतक भी बोवित हो सकते हैं। शमायक्षके मार्वोकी स्थापकतामें सन्नीत होना श्रीर

सार्वा प्रकार करने हैं, कुठ के भा बाता है है सकत है। रामावणके मार्वाची व्यापकारों ने तहीर होना चीर उनको बार्वामित करना दी उसकी संघी पूर्वा है। वर्तमान सम्बंधी प्रक्रियोग सम्मावाने मार्वाची सार्वाची भारता हो। सितावों में जुल कर्मा करीं रहतीं, होता सार्वाची भारता है। प्रकार, पुर्वाची का बार्वाची किये चीरा होती वा रही है। स्वाच, पुर्वाची हमा को भारता रहता है। हमार्वे इस् प्रवाहता वर्षाची का प्रवाहत इस्तावान हमार्वे हमार्वे इस्तावान करने हमार्वे इस्तावान हमार्वे इस्तावान करने हमार्वे इस्तावान करने हमार्वे इस्तावान करने हमार्वे इस्तावान हमार्वे इस् दिखलायी है जिससे की-समाजकी क्रान्तिमें पात्रात्य सम्पता धापना पुरा प्रभाव जाल हरी है।

धन्तमें मुक्ते पूर्ण भारत है कि दिन्दू, मुसलमान, ज्योति पुनः एक बार लगदकी प्रपत्ती हिने पनश की ईसाई चादि सभी धर्मावलम्बी इस 'पातिहसःधर्म' को

सननकर इसके प्रवारमें सहायक बननेके विवेधानी सि हुई शकियोंको सम्रित करेंगे, जिससे मार्-गणित्री कर धीर मानव-जीवन कतकृत्य हो जायगा !

श्राराध्य राम

जीवन-सागारसे चुनकर में थोड़े-से ये मोती। क्षवा वेरे चरणोर्ने. हैंसकर क्या स्वाप्टति हाती।।

×

प्रार्थना

विश्वके अगनित रागोंमें मिले जा मेरा भी वह राग । क्षीण,कशकाय किन्तु परिपूर्ण तुम्हारे पद-वर्षोका राग ॥

× × आग्रह

पे रे मारिक ! पागरुपनकी घडियाँ तनिक बढा दे । जीवनकी घड़ियाँ चाहे तो अपनी सभी घटा है ॥

×

हरसि

अनसे प्रिय ! माँबोंमें मेरी बसा तुम्हारा नह श्रंगार । इदम बन गया करण कुसुम-से कोमल मार्वोका भंडार ।।

×

जीवन-सरण

पक-पक मुस्कान तुम्हारी सी-सी जीवन देती। पक-पक मंकिम मू टनका तरक्षण ही हर देती ॥

× स्मृति

तेरी स्मृतिमें मरी हुई जी मादकता, मधु, प्यार । केसे उन्हें मुगाऊँ है को बने हुए हिय-हार ॥

× अतस्य

उसी रूपदी उसी कारमामें मुझको तुम नहने दी। 'क्यों'क्रिस्टिये'कहाँसे क्वांसे के सवात मन दरने दी ।। ×

×

×i

चेच-व्याला

वसी एक व्यक्तिमें देरे जातीकी महकता। मरी हुई है, छिपी हुई है जीवनकी सार्वका।

× × ×

प्रेम-राज्य तेरे प्रेम-सज्यमें मालिक ! यह कैसा विचित्र वार्यः

प्रयम तस-अंगार-वृद्धि, फिर मचुर अमिय रसहा दह्र ¥ × ×

es es sh भी हूँ तेरा, तू है मेरा जिस दिन अनुमद होग नाच उठूँ गा, इठलाऊँगा, स्वर्ण-सबेरा होन्छ।

प्रस्तोसन

कुमा रहे सुन्दर चित्रोमें मेरे मतहरू मनकी। पेसा कठिन प्रत्येमन महिल्छ । मुझ-से निर्वत बनको।

× रूप-राशिकी हरित मूमिपर मेरा मन न हिहाती। मालिक । मदिर-वासना-स्याती रह-रह नहीं दिहाणे॥

× उल्हेना

हम हैं चतित,किन्तु तुमका निर्दय, अकहण बन मना ठीक कहातक राम ! तुन्हीं कहदी, तुमको यह बाना !!

× × × कायमा

जीवनमें साथना, मरणमें तेरे पदकी अहर! और चतुर्दिक आतेशिकत करती तेरी मुम्बाइर॥ - alexad sale;

तुलसी:रामायणमें भक्त-श्रेणी

· (लेखक-यं० औजीननशङ्करनी याविक एम० ए०)



क-शिरोमिय योस्नामी गुलसीदासनी समार्त वैराज्य ये चीर उनकी खानीविक इति राम-चरित-मानस मी एक मकि-प्रधान कन्य है। जिस समय हिन्द्-जाति विकास विमान होकर मस्यासक हो सुकी

भी तह गोस्तामीकीने ध्यस्ते प्रसूत्तमधी वासीले मिक-मण्डारा ही उसको क्या बोस्त महाच क्रिया था ? इन्ह, विश्वास, दीराण, योग, मोड घादि सभी नहाँकी चार्चे गोस्तामीतीले रामाच्याँ की है रान्तु त्यसंबंधित साध्य बन्धे महासुतार मिक ही है रान्तु त्यसंबंधित साध्य बन्धे महासुतार मिक ही है पहुँ है वह साथ साध्याँ-क्या सम्बंध वहनू साध्य ही पहुँ है वह साथ साध्याँ-क्या पास फल भी पहाँ है—

तत्र पद-पंतत्र प्रीति निरंतर । सब सावनकर वह करू सुन्दर ।। इस बावको गोस्वामीजीने समेक बार करा है सीर

वही उनका बटल विश्वास या और वही उनकी बायून्य |छिबा है। यहीं तक कि भगरान् रामचन्त्रगीके श्रीसुलसे |वही उपरेश दिवापा गया है---

षर्म ते बिराति जोग ते स्थानः । स्थान मोझ-प्रद बेद बखाना ।। स्रोते बेगि द्ववाँ में भाँदे । सो मम मगति मगत-सुसदार्द् ।।

यह स्पष्ट है कि किसी मार्गपर बाचेप किये विना गोरवामीयी मक्तिको ही प्रधान पद देते हैं।

गोरवामीजीव चनेक देशी-वेनताघोंकी स्तृति-बन्ता की है, सर्ग्तु उनके हुट्टेब सहुक्ष्मकमाव-दिवाकर आधान, रामक्यद्व सी में, तिनको से परंप्रद्राक्ष साणाव च्यातार मानते थे। इस विधानकी पानत होती सालते समाधित है कि बाद कमी भी जनको सार्थ हुट्टेबके गुंक्शानका स्वतार मिसता है, इस बातको कई बिना गोरवामीजीते रहा ही गरी साता-

न्यापक मळ निरंजन निर्शुन विगत जिनोद । सो अज प्रेम-मगति-बस कौस-यांके गोट ।।

निर्नुष प्रकारी समुख होकर भगवान् रामकन्त्रका भवतार हुआ है। दोनों एक हो हैं--- न्यापके न्याच असंड अनन्ता। असिठ अमेश्य राक्ति भगवन्ता।। सोइ सचिदानन्द्यन रामा। अञ्ज निग्यान रूप नरुपामा।।

गोल्यसीओक यही सिवान्स पा । उन्होंने क्यार इं सांक्य, वेदान्स क्यादि सिवान्सेन्द्री वार्से भी कड़ी रोक्स सिविस कड़ों हैं। नौर बानेक स्तुक्तिर्म ऐसी मित्रती हैं जिनका साध्य केवर शिक्ष मताववाको स्पाने-पराने मतें-की दुव्हि कर सकते हैं। पर मोश्यामीजी निक्यदी सहाय-उपालमाई पहणाती ये और प्रक्रिक सामने मोश्यरको भी उपालमाई पहणाती ये और प्रक्रिक सामने मोश्यरको भी उपालमाई वे ।

गोरवामीजीने जन्मारमम्में ही बुध बातवर इतारा कर दिया है कि उनकी रामाय्य "मानाद्वाप्यीमामाय-काम्य" है। अपने न दो कोई उनके मान स्वाधिक करना या न कोई वया सम्माय चंचारा था। वास्तवमें बात भी वसी है कि उन्होंने बाता राम्योका समुख्य-प्रावममें मानम्बय करिया है की बीमानाजीनोंने कर्म, क्या और भ्रतिका प्रमुख्य सम्माय कर रास्तव्य विद्योगको हो। या विद्या गया है, क्यी जक्कर गोस्वामीजी भी जागा दिवार गया है, क्यी जक्कर गोस्वामीजी भी जागा दिवार स्वाधिक क्या क्या क्या स्वाध्य प्रमुख्य प्राविक स्वाधिक क्या कर प्रस्ता में स्वाधिक स

श्रीसद्भावद्वीताका धनुकरणकर गोस्वामीजीने मकः बेजीका वर्णन किया है।

चतुर्विधा मञ्जेत यां जनाः सुकृतिनाऽर्धुन । आसीं जिज्ञासर्थार्थी ज्ञानी च मरतर्थम ।।

श्चर्यात् सार्च, विज्ञासु, श्रयोधी धीर शानी—से बार प्रकारके क्षेत्र ममानान्को धत्रते हैं। गोस्तामीमीने प्रम बदलकर इन्हीं चार अकारके मर्लोका बर्चन किया है। गीतामें वो स्वरूपसे कहा गया है, उसीको विस्तारते सामायक्षेत्र वर्षन किया गया है।

नाम बीह वरि बागहिं जोगी। विरति विरंख प्रपंच विदेशी।। बह्म सुरुद्धि अनुसर्वहें अनुषा। जक्ष्य अन्तस्य नाम न रूपा।।

यह ज्ञानीमण्या खण्य वहा है। उसके द्विये गोस्थामीजी थप्टाइ योगका साधन नहीं बढाते, जिससे कि केवल शानकी ही प्राप्ति होती है। माधन बताने हैं उधस्वस्ते भगवानुका माम अवसा ।

जो नहिं करइ राम-गुन-माना । जीह सो दारुर जोड समाना ॥

शानी-भगन्को बहा-मुखकी प्राप्ति होती है, परन्तु गोस्वामीजी 'बेबल शान' के पचपाती गहीं हैं। अक्टबासक ज्ञानका ही महत्व विरोध है।

ज अस भगत-श्यान परिहरहीं । केवल श्यान हेतु राम करहा !! सो जड कामचेनु शृह त्यामा । खोजत आक फिराहें पव लगा !!

इस भिरंत्रय ज्ञानके सामने वे कैवण्य-यदको भी हेव सममते हैं। ज्ञान भक्तिके लिये साधन है उसका फल नहीं है। यही गोस्वामीशीका सिद्धान्त है। चौद जैसे गीतामें भगवादने कहा है:—

> तेवां हानी निरमयुक्त एकमकिविद्यायये । प्रियोडि हानिनाऽत्ययमहास च मम प्रियः ।।

चौर चागे ऐसे ही जानी अफको अगवान्ने चपना ही चारमा बताया है। वही गोस्नामीजीका भी सिद्धान्त है। प्रधा---

व्यानी प्रमुद्धि विसव पियारा ।

कूतरा भक्त है जिज्ञास वा सुसुचु---जाना चहाँहें गृद गति जेक । नाम जोह जपि जानहिं तेक ॥

इसके विषये भी वही उपाय और बड़ी सायन है। माम-तपड़ी शक्ति धारिल्य हैं। महामुखकी माहि दससे होती है तो चाला, जीव, महति माया ह्यानि सावन वितनी बातें हैं उनका रहस्य भी उच्चारवासहित जगसे बात हो जाता है। चारपत्र किहासुके वित्ये जो कदिन सायन बताये गये हैं उनसे गोस्वामीजीका उद्ध वास्ता गति। तप महामुखकी माहि गाम-तप्ते हो सकती है लो किहासकी गरिस धीन बची बात है।

यह तो हुई शरपात्मविषयको बात। श्रवांथी क्या करी दे तसको मो शिद्धारी जाहिन। संस्तामाँ विजयी होनेके विदे वा प्रयानी इस्तामाँको पुनिके बितने कर विदेशी दी वह जाहता है। योगकी दिवाले वे माछ होती हैं भीर वह भी स्वत्यन करिन सीर ध्यनिक परिसमके जाए। स्वापीकि दिने गोलसामीजिस सामन मनिये—

सायक माम जपत रूप राय । होति सिद्ध अनिमादिक पाए ।।

सुल-संयुद्धि तो क्या सिद्धियाँ तक नाम-अपके

श्वनित्तम् भक्तः है आर्थः। आरत-इरवृत्ते वर्तने

नपहिं नाम जनु भारत मारो । मिटाई कुमस्ट होडे हुन इसमन्द्रार चारों मक्तोंके लिये केवब नाग चाचार है चीर चित्र---

कति विसेख नहि जान उपाठ।

शीताकी भक्त-श्रेणीका श्रातुकरण करते हुए गोन शीने भी वे ही चार प्रकारके मक्त कहे, परन् काश शिषे एक ही बताया है। गोरशमीशीने शामका वर्णनमें कोई करार नहीं की। प्रहांतक कि-

कहतुँ नामु बङ् रामते, निज विचार अनुसर।

चीर चन्तिम उपदेश हैं — / रामनाम मांचे दीप चठ जीह देहरी दूस । तुकसी मीतर बाहिरो जो चाहिस व्यक्तिम

रामनासको मधि कहा है, तेल, वर्ष करी दीपक नहीं । क्योंकि जपका साधन सरसे साव है। ! बलेदा नहीं । साधन-प्रष्ट होनेका भी क्या नहीं। शे से लंकेत ज्वारयका है । और 'भीता' 'नहिंगे निपृ'का खीर समुख दोनोंका प्रमुक्त हुत बलते हैं। साधक बताय है।

भीता धीर रामायण्डी मानकेषीकी मान धीर दनका भेव इसम्बार संजेपने कहा ता है। रामायण्ये इसका विस्तार व्यक्ति है धीर दार्का कीर्म वीसीके भी मिक्पण किया गया है। परना सामस्ते हैं व्यक्ति वसकर है।

सकल कामना-हीन जे राम-मनति-रसर्रत। नाम सुप्रेम-पिनूष-इट तिनहुँ किये मन मीत।।

ये हैं—सक्क कामनावीन। जानी में कर्ज़ कावणी होना है, कान्युव स्वकारी है। वे पूर्ण निक्सा-मार्की हुए रहते हैं। किसी वर्डीक्ष्म क्विक्सा-मार्की हुए रहते हैं। किसी वर्डीक्ष क्विक्स क्या कहाँ। यक्ति हैं। तिनके दिवे सार्व हैं मित हैं। साधनका प्रस्तक हैं। राम-मार्क स्वार्व क्या और बस्से भी बड़कर जो सामनार है जाने क्या नाम्बीची जाई रहते हैं। रामसे सानुका मार्च कि है, से सामनकी मोहास-मारच क्यिक सामना हिंग हैं। ऐसे सन्त पुरस एक चक्र भी नाम विवा वीतिन नहीं रह सकते, चतपुर महत्तीके स्थान हैं। ये मक्क सबसे कैंबी श्रेयोंके हैं वीर उनकी संदा श्रेमीकी है। मोवार्में इस इर्केके माकक बच्चेन महीं, चीर न नामका ही ऐसा महत्त्व कहीं वर्षित है।

गोस्तामीशीने मान भेषीके वक पन्ने वपमा, वदाहरण स्तीर संचिर करितासे को सादित्यक रूप दिना है यह वक्षा गमेंद्र स्त्रीर क्रिजन है, सर प्राचेक भेषोंके मानका वदाहरण सीर उपमा सुनियं सीर गोरकामोक्षीको उन्तियों-पर विचार क्रीजिंदी।

क्षचमणजी श्रीरामजीसे बढते हैं-

कमक कोड प्रयुक्त याग माना । इरले सक्क निशा भवताना ।। प्रेसिट्टि प्रयुक्त समाज तुम्हारे । इतिहार्टि टूटे चनुब सुस्तारे ।।

'कमज, कोक, मधुका चीर बगम्से चारों प्रकारके प्रकारको चोर हगारा है। ज्ञानी मचको व्यवको सरग कहा है। जनक चीर सन्त-समाज समाववर्गे ज्ञानी सक बराये गये हैं। जनकारका वर्णन है—

, के विरंख निरहेप उपाय । <u>यश-पत्र</u> जिमि जग कर जाय ॥

वैसे जनमें कमन विभा भोगे रहता है वैसे हो जनकरी। सिरामें रहते हुए भी उसके प्रपक्षते चन्नग रहते हैं। दुर्गोद्दर पर कमन खिन्नते हैं। जीरामके दुर्गनि साध समान भी वैसे ही चामन्हते सिन्न उठता है—

> विदेन वदय गिरि-मंचपर रधुकर बाल-पतम । विकासस्त-सरोज सब हरवे स्रोचन भूँग।।

बड़ी सुन्दर उक्ति है।

भात' मकबी तुजना कोक्से की है। शबयुक्ते घरमाचारसे वेषता दुखी होकर धररा गये थे। गी-रूपी घरा भी विद्वत हो गयी थी। तब मगवान्त्रे कहा था—

वनि इरपहु मुनि सिद्ध सुरेसा । तुमद्धिं काणि वरिद्धों नरवेसा ।। इरिद्धों सक्क मूलि गरुआई । निर्मण होतु देव-समुद्धाई ।।

वे हो भार्त-मक्त--

मर विसेहक को अभिदेश । बरहाई सुमर बनावाँई संस्था ।।
स्पर्रेष्टि घर घीराम घनुष-भंगडे लिथे उद्यत हो गये
हैं। सीना परिष्य के दिना सफ्ताँका नाख कैसे होता है
हमीबिये पेत्रता मसन्त हुए !

सपुक्त स्वार्थी है। अपने स्वार्थ-साधनकी पुनर्में पुन्तुनाव्या करता है। इस खेनेमें हो यह सीन रहता है। प्रधार्थी प्रका उसीके स्वाना होते हैं। पुश्चित निर्धापक्ष और बनकपुरवासी इसी क्षेत्रीने भक्त हैं। प्रावसियों की खालसा स्वा है कि सीवा और रामका विवाह जपनी धाँसोंसे ऐसे—

बहि ठालसा समन सब सोगू । बर साँबरों जानकी जोगू।।

विभीषयाने तो स्तष्ट कहा है---

वर बलु प्रवम बासना रही । प्रमुपद प्रीति सरित सो वही ।।

कर्यात् बंदाका राज्य प्राप्त करनेकी इच्छा थी। मनका स्राप्त सरमक्कर श्रीरासमीने विना मार्गे ही विशीषणको राज्यपद है दिया। मुलीय को विशीषणको भी स्पष्टिक स्वार्थ-पराचण या १ राम-मुझीव कथा वड़ी रोषक है, विस्तार-मनसे उत्पक्ष वर्षन यहाँ जाती किया जाता।

चौथे यक्त — जिजालु या सुजुचु खाके समाव हैं। जगका वर्षे यहाँ चातकका है। चातक-सम्बन्धी प्रवाद मरिद्र ही है। वह स्वातिको ईंट्रके लिये पृपित प्रदिस्ते मेयको देवला रहता है। चतुके हुटलेपर सीजातीकी दशाका यथाँन गोरवामीजे वे इसाध्यार क्यिय है-

सीव मुकाई बरनिय किहि मौती। बनु चातको पाय जङ स्वाती।। इससे पहले यह दशा थी---

तुम्प्त बारि बिनु जो शतु स्थामा ।

क्षप्रमण्डीने श्रीरामको घनुष श्रोदनेशर किसम्बार देखा स्रो सुनिये---

रामहित्यन विदेश्वत कैसे । ससिहिं चकीर किसार फैसे ॥ समका अर्थ समिति चारको स्रोतित वसी भी हो

सकता है। समास्त्रीके तिये बकोरकी उपमा उपयुक्त है। बारों प्रकारके अकाको हम रोतिसे ग्रीस्त्रामीत्रीने साहित्यक रूप देकर उनकी बचाको रोपक बना दिया है।

साहातक रूप देवर उनका क्याका रायक बना दिया है। क्यन्तिम सक मेनी है। उसको गोस्तामीजीने किस प्रकार निमाया है, यही और देखना रह गया है।

भेतीकी बुक्क सीनसे की नयी है। 'ठिन्हें कि मन मीन' पद करत का जुका है। दोहावकी में भी गोस्तामीतीने कहा है—

मक्त टाम दादुर कमठ वह जीवन जह गेह । तुरुसी पकदि मीनको है सोविको सेनेहा। केपल शामकी ही मानि होती है। साधम कमा है कम्मारे भगरामुका लग बाला !

भी नहिं करत शम-गुन-गला । औड संस्वादुर औड समाला।।

शामी-भगको सक्त-गुणकी माति होती है, परणु गोरवामीत्री 'बेबल शान' के पण्यानी नहीं हैं । अन्यान्सक शामका ही सहत्व विशेष हैं ।

जे आर प्रान्त-स्याम परिष्ठवर्षी । केएक स्थान हेन् सम करहा ११ सी जड कार्मपन् गृह स्थानी । लेकिन आक निर्माह पय सामा १६

इस भविताय जानके नामने वे कैयाय-पड़को भी हेच समस्रते हैं। जान भक्तिके सिपे नायन है उनका फान नहीं है। यही गोरवामीत्रीका मिद्यान है। चौर सैसे गीनार्से भगवान्ते कहा है:---

तेचा ज्ञाना नित्वम्क यक्षमक्तियोगस्यतः। प्रियोगि ज्ञानिनाऽत्ययमस्य स च मम विवः।।

भीर बागे ऐसे ही जानी भक्तको भगवान्ते व्यवना ही बात्मा बताया है। वही गोरनामीत्रीका भी सिद्धान्त है। यथा—

ग्यानी प्रमृद्धि निसेन पिनारा । दूसरा भक्त है जिज्ञासु वा सुसुच्-

बूतरा अक है जिलासु था असुचु— जाना चहाई गुढ़ गति जंक । माम जाह जपि जानाई तेक ॥

ह्मके तिये भी बाँ उपाय और वडी सामन है। मान-पच्ची शांक ध्यीवन्य है। मक्तमुलकी मासि उससे होती है तो सामा, बीद, मक्ति सामा हम्यादि स्वक्सी तितनी वार्ते हैं उमका रहस्य भी उकारस्वसदित अपसे ज्ञात हो जाता है। सन्यम जिकासुके जिये को कटिन सामन स्वतामें गांवे हैं उनसे गोस्थामीजीक्य कम्य बास्ता नहीं। जब मास्तुलकी प्रति नाम-सप्यो हो सक्सी है तो जिज्ञासुकी तृति सीन वसी बात है।

यह तो हुई कप्पाम्मविष्यको बात । क्यांची क्या दे तसको तो तिदियाँ शाहि । संसाममें विजयी होनेके दिये वा प्राप्ती स्वामार्थी पुरिवेट किये क्या प्राप्तियाँ हो वह बाहता है। योगकी क्रियासे वे माग्र होती हैं और बह भी स्वाप्त करिंत की क्यांचे वे माग्र होती हैं और बह भी स्वाप्त करिंत की क्यांचे का स्वाप्ति की योग्यामी की स्वाप्ति की योग्यामी क्यांचे स्वाप्ति की योग्यामी क्यांचाल क्यांचे क्यांची की विश्व गोल्यामी क्यांचाल क्यांची कियों गोल्यामी क्यांचाल क्यांचे

सावक नाम जपतरूप राय । दोहि सिद्ध अनिमादिक पाय ॥

बही उपाय यहाँ भी बताया गया है। सांसारिक सुल-समृद्धि सो क्या सिदियाँ तक नाम-वक्के क्षवीन हैं। मन्त्रिस भाग है धार्त (धारान्सः शक्ति है कि---

नवाई नाम अनु आरत मार्ग । निराई कुमार है इसमाबार भारों आपीड़े जिये हैरा आवार है सीत जिल्ला

कति दिसंस तर्र अत उपाः गीमाकी सम्प्रकेशीका अनुस्य वर्ते। जीने भी ये ही चार प्रकारके सक्त करे, पण्ड स्थित कक्त को बनाया है। गोसमीजीने ग

वर्षनमें कोई करार नहीं की ! वहाँठक कि— कहरूँ नामु बढ़ रामते, नित्र विचार-न्युं चौर चलियम वपरेश है— '

रामनाम मणि दीए वह जीह देशें तुरुसी मोतर बाहिरों जो चाहिसे की रामनामको मणि कहा है, तेज, प्र दीपक नहीं । क्योंकि वाएका साधन सर्वे ' व्यवन गरीं । क्यान-अब होनेका भी मन

बलेबा गहीं। साधन-अष्ट होनेका भी मन से संबेत उचारचका है। भीर 'भीन निगु'या भीर समुख दोनोंका भनुभव ?' सम्भव बताया है।

गीता और शामायवधी मा भीर उनका भेद इसप्रकार संचेपने शामायवमें इसका विस्तार प्रधिक है र्य गैतीसे भी निरुच्च किया गया है ! विकाषधात है वह एक और भन्ना भारति धरका है!

> सक्क कामना-हीन के रः नाम सुवेय-पियुव-हुद् तिन

ये हैं—सकक कामगरी कावची होता है, धतप विरक्षात-आवर्षे हुए रहते हनके हुएको गई। भरि शक्ति ही साधनका परमा धीर बससे भी बहका बहा मक्किकी आई? है सी साब-स्थाकी प्रत्य है दूररायका प्रेस कि ये चार्चन गरीरको पिकारते हैं, चर्मीक दरससे प्राप्त-निराहक प्रत्य प्रवासे ही पारांजनी हो बाता था। राजा दरायका सब सावचारी गरीरने प्रस्तव कर दिया। प्रतिकार पावन कीर कुक्त-चार्चाएकी रामाई कीत जब भीरासको बन्दास है दिना हो कि बृह्मारी प्रतिका जिसी बत दिनु मीना' डा भी हो पावन करना चाहिये। रहरायको भी केंद्री वाजना है।

ा समजीको बन गये समी बहुत दिन मही हुए परन्तु ।राजाको एक-एक पदी सुराके समान हो रही है। हा रहुनन्दन प्रानिपेरीते। हुम बिनु जिनत बहुत दिन कीते।।

हा रघुनन्दम प्रानिपेरीते । तुम बिनु जिवत बहुत दिन बीते ॥ भीर भन्तमें—

राम राम कहि राम कहि राम शान कहि राम । तु परिहारे रहुवर-विरह शान शवन सुरवाम ॥ सज्बीकी तरह वद्य-वद्यकर माख देना इसीको कहते

भौर प्रेमीकी सर्वोच दरा भी बढ़ी है। गोस्वामीकी से हैं— (अन-मरन-१८३) दसरव पाता । अध्य अनेड अमह असु छाता।। (वर राम-विग्र-वरन मिहारा । शामनिवह करि मरन सर्वोग्रा ।)

भीना उसीका सफ्त है जिसके माना प्राता है। जिसके नोनें भी एक प्रकारका चाननह होता है। तमनोधिकायों-विद्वान्यपा उसके चलेक धारू-प्रप्राप्त काला क्रायकों प्रमा नोति किये हैं। 'शुर्पामा' को विध्यते। नारति सक्त प्रमा नोति किये हैं। 'शुर्पामा' को विध्यते। नारति सक्त म दान' मुख्यते एक बाद भी निक्का जाय की मुल्ति हो य बीद क्याय 'एम दान' दरते मह पने चीति किया प्रका क सुर्पामके घरिकारी हुए ! हम जातमें भी अधिकता एक इस्ट्रीपाम चरुपायकों राजन्यां नासाला वाली करी।

प्रन्य है दुसरमका प्रेस कि से सबने गरीरको पिकारते हैं, _ हुई है और वह बुरी होगी। शतका नम हो बानेपर उनको कि उसको राम-निराक्त प्रयप्त 'चकमें ही घरारीभी ही 'इस्टैंग्से सुष्ठि होगी।

योस्तामीजीने इसप्रकार राजा दशरयका चरित्र एक बाह्य प्रेमीका दिलाया है और इसी माननासे उनकी बन्दना को है—

क्रेंद्रों करव-पुष्पात सक्त जेम नेहि राम-पर । विकुरन दीनदवात जिय क्षु तृन झा परिहरेट ।। दूससे तुक्तवा करने योग्य और कोई परिश्व शामाययामें नहीं हैं।

संसार घोडु:जामय सदा रहेगा ! मजुष्पमें कहाँ सामध्ये हैं कि घटना-चाकड़ी महिन्हों बान से या उसकी रोक सरे ! एक ही उपाप है जिससे सनुष्य सुकर्षक संसारमें रह सक्ता है सीर जिपन सामसे पान्यों रखा कर सकता है ! यह समीय उपाय काम प्रमान रखा है !

सुन्ती मीन नहें नीर अगावा । जिनि हरि-सरन स एको शावा ।।

शरबायिके भावने साथ निरस्ता नाम-त्रप मुख्य साधन है। साधारख सांसारिक सनुष्यों के ही किये नहीं,वाँ— श्रीवनमुक महामुनि केक। हरि-गुन सुनहिं निरस्ता तेज।।

धन्य है यह पुर्वात देश, कहाँके निकासियोंको परिज-पावन मरावादकी मरिकार उपरेश मास हो । इसके द्वारा निर्धु य महक्को भी सर्वाच बनकर मण्ड होनेके दिवेद बाप्य होना पहला है। जिनको धर्मका यह कानून्य उपरेश मास हो उनसे बहमागी स्वास्त्र बीर और दो सक्का है?

हिन्तुवातिको गीस्वामी शुक्रसीदासमीने पैसा मार्ग दिसाया है जिसवर चक्रकर देव-दुसेस पर भी सनावास जी शास को सकता है।

राम-नाम

हैनेपे निप्त राभगमके पाय-पुण्य होते हैं छार । अन्य-मृत्युत्ते रहित चीच हो जाता है मनसागर पार ! विसका उठटा नाम सदा चर ज्याचा हुजा महामृति भका ! विसक्ते अपुर रूपका चिन्तन करते सदा जैठनासक !! सर्व-मिरोमाण उसी नामका अमृतरूपी जाता ! रे मन ! जार्य मटकता है क्यों, पीकर बन मतनाजा !!

श्रीशुकदेवजी श्रीर रामायण

(हेसक-श्री पी॰ घन॰ श्रद्भरनारावण बय्यर पी॰ घ॰, वी॰पट)

h-बापकी बाजानुसार, श्रीमद्रागवतमें श्रीग्रकदेव-कथित रामायणके मुख ऐसे प्रसङ्घोंका वर्णन करूँगा की मुसे बहुत प्रिय है सया जिनसे मेरे बाचरण सुधा गये हैं। 'कर्माण्यकर्द्व प्रदणाय पुंसाम्' प्रशुक्ती खीलाएँ मनुष्योंकी शिचा देनेके लिये होती हैं। मगवान्के चरित्रने हमें कैसा सुसंस्कृत तथा जागृत किया है, इस बातको जब इम व्यक्त काने लगते हैं सो हमें चनुभव होने लगता है कि श्रीराम ग्रभी विद्यमान हैं और हमें नित्य करपाखका मार्ग दिखता रहे हैं। वर्तमान दशामें आरतको औरामके नेतृत्वकी सहान् सावस्यकता है।

२-श्रीग्रकदेवजीने श्रीतामके मुख्य संदेशका निचीद इसप्रकार वतवाया है-

रमरतां हरि विन्यस्य विद्वं दण्डककण्डकैः । अप्रमञ्ज्योतिस्माचतः ॥ स्वपादपञ्जवं राम

(शामवत ९।३३।३९) श्रीरामचण्ड्जी द्वडकारववके कवटकाँसे विद्य अपने चरण-इमलोंको भक्तीके हृदवमें स्थापितकर परमधामको पमार गये। सर्वादा-पुरुपोत्तम भगवान् श्रीशामचन्द्रके वे रक्ताक चरण प्रायः मेरी बाँसींके सामने उपस्थित हो वाते हैं चौर मुझे पीदित प्राणियोंमें घूम पूमकर डनकी सेवा करनेके क्षिये प्रेरित काते हैं। जब कभी में अंगे पैर जलती भूवम यूमता हैं तो प्रायः यह सोचकर कि श्रीरामचन्द्र सीर श्रीसीतात्री भी मनुष्योंके प्रेमवरा कॉर्टीम विचरण बरते थे, मेरा इर्व अमित बन्साइ और बज्राससे अर साता है चीर में सारे अमको मुख जाता हैं।

कृत बार शीर्पयात्रामें मुख्ये आधीरातके समय वनके बीच दोवर जाना पना । पहले तो मेरे अनमें कुछ अय-शा हुमा पान्तु तुग्त ही मुखे वह श्लोक वाव का गया-

समाः पृष्टासेव वास्त्रस सहातती। आवर्णपूर्णकानी रफ्रेंगे शमस्यमी॥

श्वारो, पीसे तथा दोनों कोर महाचकी सगवान् राम शीर क्रफाय शर-सन्धान किये मेरी वर्षा करें ।" मेरे मनमें नह रिक्रण हो सबा कि क्रफ भी जुवाकी वाजियोंकी रचाते हिरे ऐमी राज्युकार वक्षण है, मेरे केडीले की अर वाले

जीर मेरा इवय इनेसे पूर्व हो गया। मेरे होटी उनको अपने साथ समका तथा मैं बातर्दर्भे हर हो ह चौर सुन्ने मार्गमं किसी भी श्रमका बनुमा मी [र] श्रीरामके पावन चरवा और उनका पुरस्तानार प्रकार देशके सब अनुष्योंकी प्रेरित करे, विमर्ग है है श्रीरामके समान ही दुःबाकान्त मनुष्याम वूने होर क्ली उनकी सेवा करें।

सुम्हे वेसा प्रवीत होता है कि तपनीत द्वडकारवय पृथ्वीपरसे नष्ट होकर बनसमुन्यहे हरू है गया है, जिससे सारा राष्ट्र भागवत धर्मते विशुव हो दार् कुछ क्षोगोंके इत्य तो व्यर्थ शिषा, स्वर्त हर्ना तया चार्तमनोंके प्रति श्रेषा सीर पविष सार्वानी गये हैं, और इन लोगोंके इदमीं बनान कार्यान वरिज्ञता समा प्रस्पार्थको नष्ट का हेनेबाडे इन्त भरे हुए हैं। चर्मका स्वान सम्बद्धितन हे हर् धीर कर्मके स्वानमें केवल सन्धी-बीदी वार्व वर मेर हैं। इसी कारण भारतमृतिके एवड मतु शी ला मजाको सन्त्रस करनेहे सिये मानो दुःस शीर हर्न खुकी बाजा दे दी है। में सममता हूँ कि बर्गमा है, है। बन्धन राष्ट्रको उस भागवत-धर्मकी स्रोर कार हो। चेतावनीस्यस्य ह को यज्ञकी-स्वार्ध-स्वार्धी-स्वर्ग सबबी प्रेमपूर्व सेवासे परिपूर्व है। इसी वज्रसर है धर्मेको अगवान् श्रीकृत्याने गीताम राष्ट्रके क्षमुत्त मुलका प्रचान साधन बतवाया है।

शीमजागवतमें भी इसी वशमावनाका वर्षेत्र होते भगवान् बीहरूवने वसुनाके तीएर स्थित हुवे हैं विवाबाकर व्यपने मित्रीते कहा है-पद्यनेनानमहामागानपराभैकानाजीविकान् ।

बारकार्रातपहिमानसङ्ग्तो बारयन्ति कः॥ पतास्त्रमन्म सारास्यं देहिनामिह देखि। ब्राजीरवैर्धिया बाचा अव दराबीमारा ।

(मानवत् १०।१ साहत-हो

'हे कियो ! इन सब महामाग दुर्वोद्यो हैवो! जीवन केवल परायकारदेशी जिमे हैं। सर्व गर्फ बाग्र चीर दिगके प्रकोपको सहकर, ये उनसे हमारी रचा करते हैं। उन्होंका जीवन सफल है को चपने माया. धन. वृद्धि और वायीसे सदा परोपकारमें रत हैं। बगले बच्चायमें मगवानने यह दिखलाया है कि जिन्होंने बजको संस्कार-विशेष बतलाया है वे भगवान और सत्वसे दर चले वर्ष हैं धौर वे उनको पा नहीं सकते । इसके बाद बाह्यख-खियोंको बापस खौदाकर अन्दोंने यह दर्शाया है 🌆 खीवनकी बचाति उच सफब्रता भगवानुके प्रत्यच शरीरके समीप रहनेमें ही नहीं है, वर दुखी प्राणियों के चन्दर अगवानके प्रेम भीर महाराको फैलानेम है। प्राचीमात्रकी मेमपुर्वक निःस्वार्य सेवा की शशीय सम्बद्धिकों कुआ है चौर इसीको मागवत-धर्म भी कहते हैं। भगवान् श्रीरामचन्द्रजीने बड़ी ही उत्तमतासे घपने सम्पूर्ण जीवनमें इसीका दिख्यांत कराया है। यदि भारतीय नेता चाज केवज इसी भावको सागुतकर जनतामें काम करें और शहके हदयमें ब्राध्मनिर्मरता, समन्वय तथा दसरोंकी प्रेमपूर्वेष सैवाके भाव भर हैं तो केवल इसीसे देशमें सल-समृद्धि हो जाय । प्रत्येक मण्डय जनतक वधार्य संपम नहीं करता, यज्ञकी आवनासे स्वयमेंमें स्थित नहीं होता और शीरामचे कव्टकविद्ध चरवोंको चपने इत्वमें पय-मदीपकी माँति मतिष्ठित नहीं करता, तवतक वास्तविक स्वराध्यकी प्राप्ति केंद्रे को सकती है है

१-मीगुरुदेवतीके सामाययका एक दूसरा क्षंत्र , प्रायन्त्र हो बावर्षक सीर चरित्र-निर्मायमें सहायक है। क्समें सम्बच्छी सुरमुक्ते प्रतन्तर कहाकी चातुव्यन्तिर्योद्धारा हिए प्रयापका वर्षीन कारत है। वे इस्त्रकारके कहक-पूर्व वस्त्रोदारा क्सके पतनपर सवाय कारती है—

> हा हताः स्न वर्ष नाष् । कोकरावण शवकः । कं यदाण्यरणं कहाः त्यदिहीना परार्थिता ।। पैर्व वेद महान्यणः । मतानः, कामवर्शः गताः । तेनीयनुमातः सीरायां मेन नीतो दशानिमातः। क्ष्तीः पित्रसां रहता वर्षः च कुनन्तन्तेन ।। विद्याः हतां प्रभागामाताः नान्यन्तेनते ।। सांग्यवः । १००। १६-२८)

'हे नाय ! हे संसारको रुआनेवाको राववा ! हमारा सर्वनारा हो गया ! धाइ ! ग्रुमसे विद्वीन हो वृसर्गेके हारा परदक्षित यह ब्रह्म किसको छारा खेगी ! हे महस्तारा ! ग्रुम कामान्य हो सीठाके प्रतिमदके तेल ब्रीट मश्क प्रभावको नहीं बान सके । इसीये बान तुम्हारी यह दश्त हुई। हे जुलको बातनित करनेवाले, हसी कारय हुमारी ब्रह्म गगरी बीर हम तुम्हारी सनियाँ विषया हो गयों, बीर तुम्हार हरीर मुर्गोक्ष मोजन बना तथा तुम्हारी बातम नास्के हो वारी !' ब्हार-मासनाके विरुद्ध हुमारे बनकर फोजस्वी,मपार्य ब्ह्बार्स्ड, सुन्दर सम्मीर साथ सुन्धे बनवम कहीं नहीं मिसे।

8-अंग्रहकर्वनाके रामचीर चित्रवाटा तीसरा भीर फरान्त बार्क्सक माग वह है वहाँ श्रीमामण्यकोके प्रश्लेक वर्णन किया गया है। वहाँ उन्होंने सच्चे मास्य, राजा चौर राज्यसम्बन्धी बार्स्सी की रिस्ट ब्यास्था की है।

> ज्याकारणार्थे शह उपस्कार्थे । कर्केटेबमधे देवमीत आचार्यवान्यसे ।। होनेऽददाहिशं प्राचीं कतिते दक्षिणां प्रम । सन्दर्वते प्रतीची च उदीची सामगाय सः ।। अन्वार्थाय ददी शेषं यावती मुस्तदस्तरा। बन्यमान इदं कुतनं ब्राह्मणोऽईति निःहपहः ॥ तदलकार बासीभ्यामवशेषितः तथा राज्यपि बेंदेडी सीमजन्यायशीपिता ।। ते त ब्रह्मचयदेवस्य बारसस्यं दीस्य संस्ततम् । वैज्ञाः क्रिक्षविवस्तस्मै प्रत्यव्येदे बमापि ॥ अन्नतं नस्त्वमा किन्तु मनवन् मुदनेशर । वहोऽन्तर्हवयं विश्य तमी हिस स्वरेष्ट्रिया ।। **व्यो कराध्यदेशय** रामायाकुष्ठमेधरी । उत्तमभ्रोकप्रमीय स्यस्तद पदार्थितां हथे ।।

(मागरत १ १११)। १-७)

वदननार सर्वदेवस्य परावेष सम्वान् रात्यवाद्राती स्वाचर्यहारा वत्रवाणी हुई विधिन्ने परातासाकी प्रमाने विद्याच्या स्वतुत्वन किया । होवाको एवं-दिखाका रात्य, व्यविद्दको दिख्यका रात्य, वर्ष्यको वीक्ष्यका रात्य वीर वह्याचाचा वत्यका रात्य दिखाने हे विद्याचा वार्य वीर वह्याचाचा वत्यका रात्य दिखाने हे दिखा श्रीवर्ष सची हुई दुव्यो भी स्वाचांको है शातो। स्रोतास्य देखा है क्ष्यक द्यापादिन वाह्यक है शातान्ती स्वाम्य देखा है क्ष्यकरी होने योग्य हैं, क्योंकि स्वाचीद्रीय स्वाम्य व्यवस्था भीत्र भी स्वची द्यापादी य वाह्य स्वाक्ष्य दुव्योको स्वित वत्यको स्वचार्यंत है वर्षका प्रयोग स्वरी । इत्या स्वचाद रात्यक्त्योर्ड स्वचे राव्याप्ति है ब्रह्माधवारोंके व्यक्तिय गती वन्त्रमीय दाव का दिया ! हुनी प्रकार महाराती मीताने भी तक कुछ है बाजा । बनके श्रीरार केरव मंगम-गूच वच गया । श्रीरामचन्द्रजीका देगा बागान्य और बशासाय देगकर आसमान समान प्रमास हुन् । बनना हर्न हरिए हो गगा । बाजुर्न नेत्रीहारा वे शमना पूर्णी भीशामनीको सीमाने हुए कहने आगे, 'हे क्षारीपनि मागवत् । बाद क्षापने इमारे इर्दमें मनेत काके धाने प्रवासमें बमारा कहानान्यकार दर क्रिया है सब देशी कीवारी वन्तु है जिसे भारने इस खोगोंकी नहीं दिवा है ? इमें तर इस मिल तथा है। इसलोग वेथे महाउपने सामने गिर गुकारे हैं को इच्यारदित नि:न्युद माझलको देवता समकता है। है रिकाम्झ ! बाप ग्रमकीतियुक्त पुरुशिमें स्रामारण है। साथ यह महामुख्य हैं जिनके चरमा-कमक बन्दी के क्यों में रहते हैं को बूसरों को तुःल देना छो व शुके हैं।

इसमे बता सगता है कि राजाओं थीर सखे जासवों में कित्रमी वचकेरिकी निःस्वार्थता, निष्कामता तथा प्रेमकी आवार कार्या प्रति हिंदवींकी आँति परस्पर सहयोग करना करपाय । ऐसे राजा और माझर्थोंकी सपनी सम्पत्ति तो चाहर होते, प्रकार भीर भगविष्टित ही है । यदि भारत इसी दशाको पुनः मास हो जाय हो यह कैसा सुखी भारत के जायगा ! में समकता हूँ कि भूमियेव होनेके कारण ब्राह्मणींका यह प्रथम कर्तन्य है कि वे इस वधमें अप्रसर श्राक्षधान्य । हो । यदि वे क्राप्ते हृद्यमें श्रीरामचन्त्रजीके चरच तथा व्यत्वे वधार्य आक्रय प्रेमको धारच कर मार्गमें चप्रसर होंने हो भ्रव भी धर्मराभ्य-रामराज्यको पुनः स्थापित कर सकेंते। भद्दारात्र पृष्ठुने श्रीमज्ञागवतपुरायाके चीचे श्वन्यके राक्षा व अध्यापमें स्पष्ट समक्ता दिया है कि शज्यशक्तिका इकार और विनास प्रजाकी धर्मेनिष्ठापर अवस्थित है। हम स्वयं चपने भाग्यके विभाता है।

g-ब्रह्म ! देशकी उस समय कैसी स्थिति होगी जब श्रीरामचन्त्रजी धर्म या सत्याचरचहारा इस देशपर राज्य इत्ते होंगे हैं इस विषयका पृक्त सुन्दर चित्र श्रीशुकरेवशीने लीवा है-

राजनि वर्षके सर्वमृतस्थानहे ॥ रामे नयो गिरयो वर्णाण द्वीपरिज्यवः। कामद्रवा भासन् अवानी मरतवेष ॥ सर्वित्रम्पिकास्मानिर्वे स्रोप्टमाहराः । मृत्यान विकासनारिते सम्बद्धाः॥ (आगरत दारशानकार)

अप मानीमाज्यो शुन प्रदान करेती हैं श्रीतामच्यात्री राज्य करने थे, इम समय दन, वर्र, वर् देश, हीर और गमुत्र गमी प्रेमपूर्व प्रशासे मन्दर्भ हेते थे । शाबि, व्यावि, मा, मण, खारि, होट, ई श्रीर शोक शिकृत नहीं थे, यहाँतक 🖪 शतु मेडर्र पाम करकी इस्तांके रिश्त नहीं बारी मी। का करी रामचन्त्रजी शामन करते थे तब देशकी हेमी इत्सर्थ बद बान मुझ्मिनिके समसमें नहीं या सकती।

बर मन्देर मनुष्य सामान्यन्तुह हो हुसाँहे हना इस रहता है, तब देशमार्से यशकी आवताल करत हो जाना है, तथा सभी बगह समजय भी तेहाँ सहर्षे सहकारिता तथा प्रेमका प्रमार हो बाता है। हैं वाज्ञभावना ही देशको आदर्श बनानेका मार्तिक हरी श्रीशक्षेत्रत्री, शहर, रामानुत्र, गौराह, क्यी की कर सहापुरुष वेद्यस्तिहीन नहीं से, सम्बद्धि वनकी विवर्त है भीतिक बटि' कहतानेवाकी कोई बलु नहीं है। है है वर्शी बरीर सक्षे देशमक ये बीर अक्षीन वर्षी बार प्राचीमात्रकी मेमपूर्वक सेवा-का फ्रोक प्रकारी कराहित. चौर यही एक मार्ग है जिसके द्वारा मारत की हैंडर सची जन्मति हो सकती है।

यह इमारे दायकी बात है कि हम बादे बत्तरी माल वन्नति करें या विश्रीत पथ अवस्थानक प्रति जीवन वितार्षे । किसी प्रकारके सहस्रायतके हो हम स्वार्थपरता कपट चौर पारसरिक हो। में हम ही श्रीर वह मार्ग भारतीय नहीं होता। हुतहे [त अगवान्की कृपा नहीं होगी । किन्तु पदि इस बहुवी है भावनामें स्थित होकर निःखार्थ सेवाडे हात सबस हरी करनेकी चेटा करेंगे तो यह और धर्मके प्राप्ता प्राप्त इस देशमें राज्य हो जायगा और बिंद अपने मार्ट रहार के साथ व्यंत्र हो जायगा ३ विद्रव और शराजि है 'किकि'को महाराज परीचितने को कहा था, हरे मुहिरे

न वर्तितस्य तदसमेवन्यो धर्मेण सर्वन व वर्तिन्ते। अञ्चानते यत्र यजन्ति यहैः यहेरतरं सहतितानिकः। वहिमन्बरिर्मग्वानिज्यमानः ईज्यामूर्तिईज्ञां शन्तिहै। कामानमोधान् स्यरज्ञमानां अन्तर्वहिर्वपृतिवेर अल्ला (भा॰ १। रण। ११-१४)

हे सपानंत बन्धु ! यू इत महान्वतीं मही रह सकता, नवींकि यहींकी मात्रा भी तराव (ओहरूब आजवादने 11 में स्कार्य मिले सवदारी कहा है) रह सफाइक्टर्स साव्य है। गुताबाकी निस्सार्य सेवार्स कपानेको शुका देने-वाले बेवारह होगा इसम्बाद्धी सेवार्सी स एक्ट्रेस इस्ताकी हुए वार्स हैं है इस महात्राक्ते क्यां कर स्वाव हिन्म रहक्ताल कार्य सीशीले क्यांको इस्ता करता है भीर को सम्मयतालुक सेवार्स मात्र है, स्वने वय क्यांकिया-हारा आगात्रियहा होकर अर्थ करवाले हैं कल्याच करते हैं भीर समस्त चराचरकी कामनामोंको पूर्व करते हैं, क्योंकि वे बायुके सरक सबके प्राण हैं भीर सबके बाहर-भीतर समानरूपसे प्याप्त हैं।

चतः सम्वान् रासन्द्रनीकी बीवनी सबके प्रति वाक्क्षी मृतकेवाकी सची सावनाको इसार द्वरमें माप्तत करे वित्तरो इस पवित्र मृतियर दुनः मुख्य तामान्य हो। त्वा सारतवर्ष चन्नार्राभ्योत शानित सीर समृदिको कुम्बी संसारको प्रदान कर सपने मिराको दूस करेगा।

श्रीरामजीका शूर्पणस्त्राके साथ व्यवहार

(केट्रक:-पंक्रण्यस्यत्री आहात शास्त्री, मानार्थ, बीवदक)

हानचीतके रहस्ते चनित्र स्वित्य प्राच्यातिके रहस्ते चनित्र स्वित्य प्राच्यातिके शास्त्र स्वित्य प्राच्यातिक स्वाच्यातिक स्वित्यातिक स्वित्यातिक स्वति हैं। साम्रोग वित्यानोके स्वयित्य होनेसे हो देने साम्य पुरुषोको दूर्यस्थाके साम्य भगवान् स्वयासम्ब मानीस्था विवासी देश हैं। वे बहते हैं कि सीरासको -

दिनापी हैगा है 1 के करते हैं कि जीरामको गूर्यपालको मार्गना रहेकार पर होगी गिरिश पर परिवार के मार्गना रहेकार पर होगी गिरिश पर परिवार के मार्गना रहेकार पर होगी गिरिश पर परिवार के मार्ग हरकार के साथ हरकार के साथ हरकार के साथ हरकार के साथ हरकार के स्वार ने से से से हों है जो है जो है जो है जो है जो है जह के साथ हरकार मार्ग के साथ है जा है जा है जा के साथ है जो के साथ है जो है

पेती-ऐसी बर्नेस शंकाएँ हैं जो तमीगुणमभान वासान्य सन्यताके समर्थेसाँकी जिह्नापर विशासमान रहती हैं। भारतीय भारतों क्या हैं हैं, इस बातको नहीं साननेके सारव 🛍 वे ऐसी शंकाएँ उठाते हैं। सरहा

रामजीने श्पैयकाके साथ जो व्यवहार किया यह बुक्त या, इस बातको सिद्ध करनेके जिये जीचे कृत परिवर्ग किसी बाती हैं। रासमीके शिवे मुक्तिला परकी थी। परपितपींके साथ बचीव करनेके विषयमें श्राक्षसम्मति है 'माइनापरारेद्र' अर्थान् दणनी धर्मपरनीके चितिक्त जितनी भी चित्रों हैं सबको मार्वाके समाव समजो। इसी मकारकी प्रक दूसरी महिल

> मातुबत् स्वसुवर्षेत तथा दुहितृबष्ट ये। यस्दारेषु वर्तन्ते ते नसः स्वर्गगामिनः।।

क्षवाँत 'सकत पुरुष करनेले बड़ी वयवाली परिक्रियोंको शाताके समान, समान वयवाली क्रियोंको बहिनके समान और कम बचकी क्रियोंको पुत्रीके समान समकते हैं।' क्रतयब समावान वर-पत्रीके साथ विवाह कैले कर सकते थे ?

ग्र्यंवचा माह्यच्चंण्डी थी श्रीर बसपर भी विवाहिता स्त्री। माह्यचोरू सारच प्रियवस विवाह करता सर्वण घर्युस्तर है। धारुष रामवीने उसकी धार्य भार्येनाफे स्त्रीका स्त्री किया। वर्षित वह धार्यवाहिता तथा सरवों भी होती तथापि श्रीरामण्यस्त्री उससे विवाह न करते, स्वाहि से तो संसारमें एक-पत्नीमत्रकी मर्चाहाको स्वापित करता प्राहते थे।

बीताको शक्यके हात रेण-मतिके समान किसी बातको करना उपहासायाद है पर्योक्ति सम्माके दिवे पेसी कोई बदा नहीं को उन्हें माम न दो बादा सिक्ते साह करनेको पहारायका हो । वे तो एक कात हैं। बीतासच्याती संसादमें पानिक बाहुने करतीक हुँ थे। शो सोने करतीक हुँ थे। · चेश करनी चाहिये, जनकी चामानगर शाचायहरी अञ्चल श्रीमा विचन ही है। मानागहकी मामान समीक अर्थाक वरवान् कर हम बाने मुक्त विगम बारे हैं।(उर सचाग्रह बड़े आने बोग्य प्रयंग निम्नविधित है।

गरपाप्रह							शामायपामि परिपाम		
ममाइ	कियने कि	ıt	क्षिमके निग्न	दिगा	किंग बहेरण	किंगा	শাসমীতি গা	• सन्दर्भ•र	(रुक्ते ।
9 [विधामित्रजी	***	राजा व्यस्थ	***	। सग-१चा	***	HEA	स्यम	, हरह
٩	सीगाजी	***	भीरामनी	***	चन-सद्गमन	***	धारमम् विपशस	भारतमें नियमा	हात्म विद्या
	धापमयाजी		भीरामधी		वित्र शहरामन	***	.,	111	
9	बेवर	***	भीरामनी	***	विष प्रधान		सफर्व	सक्त	813
*	भरतजी	•••	भीरामधी	***	शीरामतीको व कीटाना	ग ये	বিশ্বস্থ	বিভন্ত	ह्यान्त्रे विष्टा
- 4	रामचन्द्रजी	1	विक ममुद		सागरोह्मंबन	***	सक्रम	सपत्र	सुद्ध
- 16	राज्यक	}	पैरिक धर्म	[देवन्य प्राप्ति		विकल	বিষয়	

चव इनका इस शुक्रासा सुनिये-इसमें संचित इतिहासके साथ रात्यामहाँकी विशेषताएँ और अनके भाषिताम विसाये जायेंगे।

>-श्रीपिभ्यामित्रका सत्पाग्रह---

शाला डोमेके कारण औदशस्यजीका यह कर्नध्य था कि वे ऐसी व्यवस्था करें जिससे शुनियोंको बपनी तपस्याने किसी प्रकारका विश्व न वर्षात्यत हो। परन्त बद होनेके कारण भीवग्रस्पत्रीमें इतनी शक्ति न थी कि ये साहका. सुवाह चादि वतशाती राचलोंकी मारकर विवासियजीके पञ्ची रचा कर सकें। इस बातको योगवससे विश्वामित्रजी कानते थे. इसीतिये उन्होंने शता दशरवकी व्येचा करके राम-अध्यस्यको उस कार्यके जिये के जानेका संकाय किया । राजा इस मर्मको नहीं जानते थे. इसकिये शानाकानी काने श्वरी । इसपर चशिएजीने बीधमें पहकर दशस्त्रजीके शत्यों कर्तस्य-भावनाको जागत किया. तब कर्ता एकास्प्रजी राम-खचमयाको विश्वामित्रके किये देनेको तैयार हुए। इस सत्याग्रहका बहेरप राजनीतिक कर्तव्यका जागत करना था. सतः इसका चथिष्टान राजनीति या।

२-श्रीसीताजी तथा श्रीलक्ष्मणजीका सत्याग्रह-

इनके सत्याग्रहकी कथाएँ ग्रसिज ही हैं। इनके सत्याग्रहका ध्यसर रामचन्द्रजीका वनवासके खिये उथत डोबेका समय है। ये सन्याग्रह मेमपर कविष्ठित हुए बान वहते हैं, किना क्लुतः ऐसी दी बात नहीं है । विचारनेसे मालूम होता है 🚱 इस प्रेमका मृत्र सेव्य-सेक्क-भावमें है । चराः सेव्य-सेवध-भाव ही इसका कविद्यान है।

३-शेयदका सत्यामह-

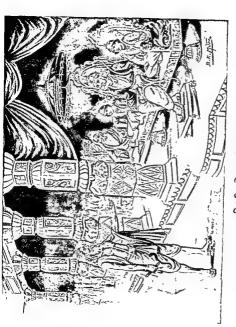
यायः समी रामायग्रहे प्रमामि इम सनामग्र समान ही समित्रवादोंसे सुसमित दिया गया है। उन्हों उसमें-'मोर्ड राम राजर बानि दसर हरर' ह्याने र चाँरा देकर इस वर्यनको दिम्यावरूप प्रदान हिरा इससे गुलसीयामजीकी पात्र-निरीप्तवात क्या प्रविदार की मबीयाता स्पष्ट दीख पडती है। इस प्रसान कार्या दी भरा गया है तथा उससे संयाप्रदेश सहस् ग्र विखक्त हो गया है । देवरके सत्याप्रहका अधिप्र की क्या युसाईबीका उपयुक्त पुरक म होदेश हुई हैं श्रमिक्रय न मिळता ?

इस वुविधान महाकवि मवसूतिश्रीके विश शहेरी पूरी सहायता मिळ सकती है-

व्यतिवत्रति पदार्यानस्तरः कोपि हेतुः न सञ्ज बहिरूपाचीन प्रीतवा संप्रवन्ते ।

क्याँत् 'श्रेम साझ उपाधियोंकी सहापताकी क्षीत रसता । पुक्रमान्तरिक शक्ति वसुक्रोंको संबदनके वर वा रही है 1° सतः भानतः दश्सि विवार कार्नर इस सायागहका अभिजान हम अन्यतम मेम ही सार्थ

यरवजीके सावाग्रहका कच्यापा, बारमीकीय हवा है। परवजीके सावाग्रहका कच्यापा, बारमीकीय हवा है। रामायकार्म सत्याभहका कच्यापा, वारमीवाय वर्षा रामायकार्मि वैसा सहरत मही है जैसा उन्हीं रामचरितमानसमें है। इसी कारण उनमें ही भाषा-प्रकृष्य देसा किन्छ, स्रवित सीर मनाहर



विश्वामितको राम-भिष्या। यदि ने घरंत्रामे हु यत्रज्ञ पत्मे मुनि। स्यर्पान्यसि यजेन्द्र प्तमे मे दतुनक्षि।



•

ि दिता हो समात्र इंग्यन इसी नहीं वाणी बाती । इस क्यानके समाता हसीले हो जाती है कि इम्य स्वाधि समायवार्षिक स्वाधित गिर्दामियालें के समात्र हो स्वाधित । सामायवितमानक समानी स्थलके प्रेमन्यत्र गिर्दामियालें । वह गर्ष है स्वीर ऐसा होनेयर भी ऑक्टिबर्ग, विल्क सड़कर । इस्क्रियित सी प्राह्माधिक इस्ट होक्सियालें स्वाधित्र क्षार्टक स्वाधित स्वाध

भरतमीके सल्यामक्का चापिदान क्या है । इत्त्य निर्माण करना बहुत ही करित है, क्यांकि प्रामाहंगीले प्रमान । भारते हराति-केव, रिता-देश, पुरुव-पुन्क कृष्णाहै करिक । भारतेंका बहुत ही सुन्दर संगम बरपर लांवा है। इस्तम्प्रपटके । भारतेंके निमयका व्यवस्य ही श्रीकृष्टिकामीके अमिताग्रस्तरी निर्मात है। वहाँ पाकके प्रस्ताद्वावरेका । साम श्रीकृष्टेकाले 'भूष्य-भार' रक्का है, और बह दें भी । सामय गार्मिका । सद्वारा हम भी हम साम्पाक्का प्रसिद्धान प्रमान । स्वत्यार हम भी हम साम्पाक्का

१-श्रीरामचन्द्रजीका सत्याग्रह—

धीरामण्डानीने रिविष्य स्मुत्र के विरोधमें यह सल्यायह किया या और वहाँ इस सल्यायक हो या व्यंत परस्तः रितेपाचस्यों के मा ये थे, राज्यम्त्रानीके सल्यायके ।विरोधमें समुद्रमें भी सल्यायक विचा या, चता वस सल्यायका इंदिय भाग भगवान् राज्यम्बद्धा या मीर साम भाग समुद्रमा । चल्यों सीद्यायम्बद्धा या मीर साम भाग समुद्रमा । चल्यों सीद्यायम्बद्धा या मीर स्वाप्त साम्याय पर्व हो स्वाद्धा स्वाप्ताय सम्बद्धा स्वाप्ताय ।व्यव्याय साम्याय पर्व हो स्वाद्धा स्वाप्ताय सम्बद्धा स्वाप्ताय ।व्यव्याय स्वाप्ताय वर्ष हो स्वाप्ताय स्वाप्ताय स्वाप्ताय स्वाप्ताय ।व्यव्याय स्वाप्ताय स्

शमायया या शमाययीय क्या-प्रकृत्य श्रीसमधी सीर शास्त्रमें जिस प्रकार भेद निर्देश करते हैं जसका सार समोकरणके रूपने इमप्रकार विस्तवाया वा सकता है—

- ः स्वरेग + स्वातम्य + स्वतात्र ≈ सर्वय ।
- ः स्वरेग | स्वातत्त्र्य | स्वराज | बोबदित = श्रीरामधी वस्तिये निष्कर्ण —
- (1) सरप + कोबदित = कीतावती (यही सभी धन्यों के समन्त्री हैं)

- (२) श्रीतमधी-कोकहित = रावस (यही सब प्रन्योंका रावस है)
- (३) धीरामडी—शवख⇒खोकहित (वही शमजीका सान्य है)

समीकरब (३) और (३) से स्तप्ट है कि दो विभिन्न भूवोंके समान रामजी और राजधाकी मनोरचना परस्पर बिरोधिनी थीं। इससे यह निश्चित होता है कि वदि दोनों एक ही समय प्रत्यीपर रहें तो लोकडितका नारा हो जापना—

शमजी-सावय == (शवय-कोकहित) + (शमजी-चोकहित)

इस समीकरवाडे घतुसार खोक-दिएका सर्वेपा जमाव हो बाता है। धतपुर समीकरवा १ में निश्चित किया गया कि रावयका नाश डेक्ट कोकदितके दिले परिवारों या १ इसमकार सिंद हो गया कि औरामकप्रमीके सलाधका प्रविद्या केवल 'बीक्टरेवा' थी।

यदि योदा-मा विचार विचानित्रजो और धोरामशीके समामहक मेर सम्मन्नेके दिये दिया जाग दो धामानिक स्वामानिक के द्वारा मेर विचानिक के मांगिलेंच परि प्राप्त पुराप परि प्राप्त पुराप के स्वामानिक के सामानिक स्वामानिक स्वामानिक

हस सम्मामको बेकर एक सहरामा मध्य भीर कराया वा सकता है, कि बीरामकर रोवर स्पुत्र के को देश (पहचानक मा) हाय कावनेको तैयार हो बाना क्याबार नहीं नहीं करका सकता है सामान्य बुकियो है हो स्पानस्था कर कर्नेकर क्याबार ही कर्ना उपयुक्त सामा बागा, मान्य विकेश विभावक है स्तरोगे हम सामान्यी क्यावता करक हो साती है—"हानियों चायार करे ही साने हैं के बोक-संसाहक हो" हती विचाको सामुन स्वत्य प्रोक्ता है है वे व वह दिवालों के सामुन स्वत्य के स्वावत्य स्वावतिकरणकों इस्पत्र स्वत्य का सामान्य कर के सामान्य सामान्य कर का सामान्य कर सामान्य कर सामान्य सामान्य कर सामान्य कर सामान्य कर सामान्य कर सामान्य कर सामान्य है। इस धायाराच्या सामान्य सामान्य हो का है। इस धायाराच्या सामान्य कर हो सामान्य है। रनाउचित थाकिन्तु उसने उत्तरे उनकी उपेदाकी. **१-केवल राजनीतिमें ही नडीं प्रत्युत प्रन्य परि**र्दित नेससे उसका कार्य धाचारको चतिकमख किया हुआ

त्याचार ही सिद्ध होता है। ऐसी श्रवस्थामें यह शङ्का ही हीं रहजाती कि रामचन्द्रजीका कार्यं धाचारका या या

त्याचारका । शास्त्र भी स्पष्ट बहते हैं— क्षमा शत्रुषु ार्मित्रेषु यतीनां सैव मुगणाम् ।

क्षमा शत्रपु मित्रपु राक्षां सैव दुवणम् ॥ -शम्बुकका सस्याग्रह.

इस सत्याद्रहका वर्णन देवल वाल्योविजीने किया है। हाफवि भवभृतिने उसे इसप्रकार कहा है---

र इस्त दक्षिण मतस्य शिशोदिंजस्य। जीवातवे विसन शद्रमनौ कृपाणम् ॥ तात्पर्य यह कि ब्राह्मण-प्रश्नके जीवनके निमित्त, शह

कर मनियोंका प्राचार करनेवासे प्रत्याचारीकी हत्या रना उचित है। इस प्रसङ्गमें रामचन्द्रजीका श्रमीष्ट केवल र्मकायद्वीय संस्थायोंकी स्ठा करना था। बातः 'शम्बक्के

पामहका चथिएान चथमं था', ऐसा स्पष्ट हो जाता है। @ सारांश तथा निष्कर्प

उपर्युक्त सःयाप्रहोंके घथिष्टान चौर इनका निष्कर्य तप्रकार समकता चाहिये-—

सत्याग्रही अधिप्रान १-विश्वासित्र राजनीति ।

सेम्य-सेवद-भाव। २-माता सीना ३ - सप्तरवर्ती

रेय्य-सेवड-भाव। ¥-केवट धनन्य प्रेस ।

≱-भरतश्री मृत्यभाव । ६ - श्रीशमधी सोक मेवा। ৩-হাস্থার क्षांत्रमें ।

¥41 Ê--

इस विशयका निष्कर्ष इमग्रकार निकासा सा

 रान्ध देशनदी क्रमिटे विदेशर करण वा, वहाँ तमका समावद वा, प्रश्नु वा वर्षाराहित—पर्वशित, एटे. पेन्द्राणम्य पाको करन कार्य प्रदान हिना । वसने यह सिंह कुमा कि शासूह अपने प्राप्त देश भी क्यारी सिंह पोन्द्राणम्य पाको करन कार्य प्रदान हिना । वसने यह सिंह कुमा कि शासूह अपने प्राप्त देश भी क्यारी

े निरमाया सामना (० डाइड) से नात वर्षन है । महात हो महिन साम हमी मा है हो। असे तो के असे महिना करने हैं । महात से महिना स्थानी महान होंगी। महान होंगी। महान होंगी। महान हमी है असे स्थानी राजरी ने के बोलारेन राज्यकार वालाराची करणा ने श्रीका शावा में श्रीका स्थापना का स्थापना का स्थापना का स्थापना राजरी ने के बोलारेन राज्यकों वालास्थाचे करणा भीत्रका शावा में श्रीका स्थापना का स्थापना का स्थापना का स्थापना 11 -FR48

भी सत्यागड किये वा सकते हैं। २— सत्याग्रह वैयक्तिक तथा सामहिक होनों स्ते सकता है।

३-सत्याग्रह् न्याय तथा सदाचारमूलहहोगाचरि

थ-सत्याग्रह चस्या (Revenge) बारी ऐरे दिशित भी जिल न होना चाहिये। ≹-सत्याग्रहका सच्य ग्रन्थाचा(ीका सुवार होरा व्ही

६-प्रेमसे प्रेम चौर देत्से विरोध मी स्वाप सरदरधर्मे प्रधान नियन्ध हैं। च-सत्याधहकी परमावधि 'वार्व वा शारेत हो।

पातथेद' है । इतना आग्रह ती सत्याप्रहीमें होना है ही शहाएँ:--(१) सत्याग्रहके पूर्व, खयाचारीके प्रवासीके

उपेदाकी चन्तिम मर्यादा कौनन्सी हैं! (२) सत्याग्रह झारम्भ ब्रानेके वार, प्रचारी चल्वाचारोंकी उपेचाकी चल्तिम सीमा बीर-सीरे

(१) 'श्रठं प्रति शास्मम्', 'कण्टकेने कण्डार'(र् वानवाँके श्रवश्चम्बन समा प्रचार करनेका प्रधिकार स्वाती है यानदीं है तो कर्यं यदि नहीं हो सीती

सामह चतुरोध है 🎏 विशेषज्ञ समन हर्पन हार्ने के समाधानद्वारा खेलक्को उपकृत करें ! जाँचना हो तो रामको ही जाँबी।

जन जाँचिय को उन, जाँचिय जो निय जाँचिय जानहीं हरी जेहि जॉबड जॉबडता वरि आह, जो आही बेंग प्राप्ति गति देशु रिचारि विभीषनदी, शत शतु हिंदे हुन तुरसी मनु दारिद-दोष-दशनस, संइट-इंग्रि इस्पी

श्रीमद्रामायणका महत्त्वं

(केलक-श्रीतः कराम विनायक्यी, दनकवनन, वयोध्या)

धन्म धन्म बद मृति वहीं बन्धे रखराई। बाजमगी मुरित मुपारि अवुश्वि छन् छाई ।। हरती-सन सन्दिनाते हरास प्रदेश सुखरासी । विश्व शास भगवान सदा निजर्नत्र विरामी ११ शिव मन मानस इंस मारुशिवानहूँ वियतम । याजबक्तिक मनि जेन ध्येय बायस परमोत्तम ।। धन्य सी नुरुसी-बट विपाल धनि माध्रम सन्दर । 'नरदरा'त' सी चन्य घडी तिथे नवन सुवासर ॥

- स्वापी नन्दराहरी

रपत्रे प्राथ प्रत्येह भाषाकी शोभा दशते हैं भीर महाकाण भी सभी समुचन मानामीनें मीजूर हैं, परम्तु बाज्यात्मिक कान्य हुर्लंभ वस्त है, क्योंकि काव्य-कता और सप्तापन-नायका रतमाविक समिश्रय की यहर भारतारिक काम्यकी विक्रमयता है। सो काय्य वास्तवमें काष्यात्मिक दंगके वहीं हैं. दनके धन्दर काम्य और धन्दाव्यवादका जो

असम्बद्ध होता है, वह निस दिखाऊ बीर कृतिम होता है। श्तामाविक सम्मिक्षय वहीं द्वीता है वहाँ कन्याम-हैं। सररात्री विचारींवा भीतरी उमक्ष्ये शादुर्मात्र होता है। विचिक्त सम्तमान्नवे साथकी स्रोत निकालनेके क्षिये कविचका हैं जोरा ज़रूरी है।

শবত হবৰ সানন্দ বলাচু। তস্মীত স্থল স্থাতি স্বাচু।। वरी गुमन दविशा सीरतानी । राम विमञ्जल वङ महिदामी ॥ En P कियी चारपारिमक सिदाम्लके जिले बाह्य बाजपारके

हों स्पर्ने बरिवाके बेरबी घरेका नहीं है। भीवरी बेरखाने ूरिं शिवसे बारपके रूपमें अस्तुदित होना णहिये । यह तभी ुर्ही हो सकता है जब भाष्याभिक दिवार उन्नटी चाबले बस्टटर इस सीमानक पहुँक जाते हैं, जहाँ दिस्तेयकामक पुतिके इस सीमानक पहुँक जाते हैं, जहाँ दिस्तेयकामक पुतिके इसा मण्डेक पार्टक कारच हैं। तेनक काम बन्द हो जाता है सी की कार्टक कारक कारच हैं। तेनक काम बन्द हो जाता है भीर बड़ी सन्य, शहर धानमांचेहनके बचनम शिकरने . सहय शानके रूपमें रहने प्रचारित को काता है। इस चाहरी-हेता है भाषानिक काल विश्वनाहित्यमें देवत हो है-

थीसद्भवदीता थीर भोरामचरितमानस । एक संस्कृत बाङमक्त्र समुख्यस रत है और दूसरा हिन्दी साहित्यका सुक्टमिय । एक स्वयं भगवान्का श्रीसुरा-यचनामूत है और दूसरा भगवान् शंबर हे इदयमें चवतरित धीराम-व्यक्तिमात है। एक भगवत्त्वरूप घेडायासजीहारा सङ्गीतर श्रीर सम्मादित होकर अगत्में प्रसिद्ध हुआ और दूसरा महर्पि बारबीकिडे साचात् धवतार श्रीमद्रोरवामी तुलसीदालजी-हारा निर्मित होकर खोकमें प्रदयात हथा । एक्की जन्मस्पक्षी धर्मचेत्र इरचेत्रकी स्थम्मि है और दूसरेकी चपराजिता श्रवोध्यापरीमें धरस्पित श्रीतृहसी-शौरा। एकश्री जन्म-विधि मार्गशीर्थको मुक्तिश एकादशी है और इसरेकी शीराम-नवमी ।शीनों साचाद मगरत-स्वरूप हैं । दोनों सप्ततः भी एक ही हैं ! पर्योकि बैदिक भक्ति मार्गके जिस गहन भिदान्त-(बर्यात ज्ञान-वर्ष तथा ध्रम्यत-व्यक्तके समस्य एवं इरबरमय विश्वको समस्ति इथ, विसागपूर्व धर्म घरते हुए निर्वेद को शांकि) की क्यारवा गीताने की है, यही आवसमें भी श्रीरामबन्द्रजी, श्रीभरतजी एवं श्रीविदेशाय बनक बादिके चरियोंहारा प्रकट किया गया है। स्वर्फ बौर बन्दक प्रकेरपको 'नाम-माहा रव' में भर्तामाति दिससादा थया है और साध-समाजहारा ज्ञान-कर्म-भक्तिका समझय भी प्रबद्ध किया गया है । सहिप वशिष्टादिके कर्मी-हारा शान-धर्मका पृक्षक भी दर्शाया शका है तथा बंधारवान कर्म-समर्थबंदा भाव भी तिताया शक्त है । इसके चतिरिक्त भागसमें प्रिविष चच्चा वर्णन भी बिया गया दे जैमा कि गांताने विया है और जो प्रिविध आनव श्रेशियाँ यीतार्वे रश्यी गर्दा हैं वे 🗓 (त्रि देव मानव-श्रीका) विश्वी, साथक और सिद्ध क्षीरामधरिनमादम में भी रक्सी गर्पा है। इन ब्रिटिय देव मेदियों हे सनिरित्त कामुर-श्रेपीका - कर्बन भी जिमप्रकार क्यनियह और शीतामें है उसी प्रचार जीशमचरितमानगर्ने भी है। जिल प्रकार द्वितिय साया चीर उसमे परे धाप्माका वर्षेत्र गांताने किया है उसी प्रकार आजगते भी विश्व है। सन्धर-क्यूमें ईश्वर-पृष्टाका प्रचार अध्ययक्ष्यमें मीताने ही किया है। बहरि देशोंने भी हमको इरजब पापी कारी है, परान कानसमें एक विधेषता यह कहर की रादी है कि पुत्र, सारा,

भाई, रावु, पिता बादि किसी भी भावमं मानुष्यरूपधारी भाग्यानुकी पूना की जा सकती है चौर उससे चालानिक मुखकी माति भी हो सकती है। मानसमें एक वियोचना चौर है। गीवाने निवनं चादर्य रुक्ते हैं वे सभी चैचकिक हैं परन्तु मानसमें भोरासम्बद्धनीका चाद्यं पारिवारिक हैं जिसके कारण यह प्रन्य लोगोंको चौर भी निव हो गया है।

भगशर् वेद्य्यासजीके बनाये हुए सर्वोत्तम मेवे थीमदागवतके साथ मानसकी मुखनाकरते हुए राय बहादुर कुमार श्रोकोशलेग्द्र प्रताप साहि कहते हैं-- भकोंके लिये विरोप लाभदायक प्रन्य श्रीमञ्जागवत और तससीकृत रामायण हैं। जिल्लासके किये इन्हों दो प्रसकोंमें सब अब भरा है। सप्टिका परा भेड़, ज्ञान, विज्ञान और मक्तिके सभी सह. परवडा परमारमाकी चपूर्व सावियाँ इत्यादि सभी क्रव सारमय बारप और स्टब्स्ययक श्रेरवरीय खीळाएँ, ओ मनप्य वासीहारा प्रकट कर सकता है, इन प्रस्तकों में हैं. परम श्रीमदात्रहत उच श्रेतीके मननशील प्रस्पोंके क्रियेडी सामदायक है। श्रीरामचरितसानल शिवित, चरिरवित, चपड़, मुरह दोनोंका हाम मान्दे हुए है, वह दोनोंको सन्मार्गपर धे चलकर सनव्यत्रीवनके सन्वतन पहुँचानेका दावा रसता है। विद्युद्ध मेमरस, सभी दीनवा भीर कान्यके पमन्कारसे यह 'मधीय मधीमख मंत्र' ही रहा है । आक-दिन्दकोंके बीवनमें शमचरितमानस स्पर्ने चीनीकी तरह सम्बद्धन्यास होगया है। रामचरितमानगढे रूपमें दिग्द वातिकी सरस्त्रतीका ब्रागरण हुवा है। वापने-वापने मुद्दि-वाबके कतुमार सब केली है प्रण असहै प्रनोदर क्योंका गर्म समस्ते और उससे कारत दिवस होते हैं। बननाधारवाको धारते बीचनकी क्रम करार शिका गरकतामें देशेमें भाजस शहितीय है। बह दिन्दी-प्रतासम्बद्धाः सीट्य कीर दिन्तके करहादा सोमार है । सह बर्च-नरामें चमनची वर्ग नरना है और मानग-सरानमें क्लेक्ट्रबर-रिकाम करना है। यह प्रतिके जिये मारा चीर हरूपड़े जिये परम शोपच है। स्त्री-पुरुष कैसी भी बतास इस निष्ट क्या मक्तिररावच महाकावने बाध दश हो है। भरूर केंद्रव्यानकोची हुताने मायम सहान महिला-बा स्थित हो हवा है है

मुप्तिय मानु को ही ब्यूब ब्याम्य तीही करते हैं "वाक्य-बक्षा के कीनुकर्मन्त्रमार्थ के क्यांत्रित कर नहीं हैं और इन अक्षय अक्षये क्यांत्रे को हास-कृत्याहि सार्वोध है, बार्य क्यांत्रे क्यांत्र कर हो है, इस विवेधसाई से उनसे बहै-पहे हैं। ये जनता है जीवन हे एक घंटों। हैं। कविकी सजीवता है प्रमाणमें यह एक वह हैं। एवा-मेंट कही जायगी, रोजनपिय परित्रवनों हों। परिक्रमी, दुःखरीदित, धर्मिजपूर्ण रूप्तीमा नहीं। धपरे निजी जीवन-स्वदासी वा क्रांत्रिक हैं। विश्वतिहानी करेंगे वह प्रवानवतानी नहीं हैं। तुवतीहाननी करेंगे कही स्वत्र में वह स्वत्र वह सुत्र वह सुत्र करेंगे करेंगे का स्वत्र सुत्र वह सुत्र वह सुत्र करेंगे का सुत्र सुत्र करेंगे का सुत्र सुत्र करेंगे करा सुत्र सुत्र सुत्र करेंगे का सुत्र सुत्र

जिस समय मानसका धारिमां हुना मा, सम्मा स्वत्येषाओं और भागवताजेंने मानस प्रे मानस् प्रति को विचार प्रकर किये ये उसका पोतासी एतरों करा देवा जिस्ता समायता हैं, व्यावि सामायों में स्वारका कारण की है। सर्वत्यम मामायता कर्म स्वानाचकी समायत की जिले ? जिस समय कर्मी भीविरकत्यमात्री के सन्दिर्म, सामिक सम्मायता कर्म मानसकी माने क्वी गामी मी, मानस्वा मानस्व मानस्वा मानस्व मान

विभा पाठ सलाह के बरे, हिम्पीर क्रिक हो है मुस्स पण्डित सिद्ध तापत पुरे तन कर हुने हती देशिल तिस्पित करिटे सब करे, कीसी हो। हिम्मी दिश्यासर सो दिसों पढे गुले वर्ते गर्म क्रिके हुन्या

इस सामीतिक प्रशास प्रमान कराते हुन किराना प्रशा होता, सुनान प्रमान की हुन की त राजने । हुनमें सामेह मही कि बती समयो की माने बेर्फे समान स्वाप्तमायपून समयो की, हैया के विशेष वहायब समारि गयी और देशासी कर की

बाइ-सी धा गयी । गोल्यामीत्रीके विधा-गुप-बन्दु श्रीवर्गा^{सी} बानी है:---

शीतमुकारीशास स्वतृक्षकारा वर्ष करें। वीच स्वतान विशुस शांत वित्र यह कार्ने ध रामाणीत किन बीन्ड सारवा-बीकारणी वर्षि गोनीश स्वी शांतिक वर्षा गुर्गो के राष्ट्री किन्सी देव स्वत्र केश्य वर्षा है। सार्वाहिक स्वतान बहुत बिंद करा प्रकार वर्षा है। नन्ददासके इदय-नयनका कारेक सीर्वे । कारक रस टपकाय दिया जानत सब कीर्वे ॥

प्याचार्य बोस्तासी दिवहित्येग्रजीव्य घुण्या है— चलार मात अन्त्य एक रीत गति परिचानी । इस्टि देवपुनि बारि देक स्ताती के कली ॥ मात्र क्ष कानस्थान सहि सब केच पुत्ताने । मतुष्ता साहस नितर केमपन नितिह सिक्तादित । हिनाम स्ताति करिनोहि हेत तुरुशित्सात च्याक करिया।

गोरवासीओडे हेमी बीधस्तुर्वहीम सानसाना (रहीम वि) कहते हैं---

रामचरितमानसः विमन्न सन्तमः श्रीवनः श्रामः । दिन्दुकानचेते बेदः सम अमनदि प्रत्यः बुदानः । सद्दावनि सद्दारमा स्ट्रायस्त्री जिल्लते हैं —

क्य कार कार एक्य-विरोतिनी कारत्य महाविक कार्य । बारत कारत कार कार मी हावि पुरे के कार्य । कर्म कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य । कार्योद्धार कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कुकामान कार्य का

बागारकसाथ-पूरिण भीकराक्ष्य स्वाधी बद्धी हैं— बार्डुण तिनु निक्य हार्डी दिने सामय वक्त करि । बेता क्ष्योंचे पेन हार्डी कींट मार्टीर वेदावि ।। हार्या रियम काम कर्यीर रोजारी, स्वास हार्य । क्षाम मार्टिड मेर्पिण हार्ड कींट कार करता ।

कीर के पूत्र कारत कहा विकाद कही विदिष्ट कारत । भौजारिया के निक्षा की स्वाप्त का अव कारत । बाह्य शिक्ष शास्त्राकों (दिवसो कारती अवद्वाराओं बीहियों के बाहुमारका तीर बर्केट बीहरूक्टिटवासकों का हरूकों से) कार्र है — सुर वह रतान न्यारे एक है निरंत हिची न्यापेनु पारा सम नेह उपज्ञानते। हिची चिन्ताननिननी माठ व्य सोभित विसाद नंदनें यह हैं क्योति सरकापनी।।

विसात बंदमें घरे हैं न्योति हारकारनी ।। प्रमुखी बहानी वे गोसाईडी अपुर दानी मुक-सुखरानी 'रसखानि' मनमावनी ।

मुक-मुखरानी "रससानि" मनमावनी । सार्वे विकासनीत्सी चंद्रदी बुद्रास्तीत्सी

िजारी स्टारमीन्सी कुषा समुक्तारती।। जब गोल्सामीमीके वीवेडे महानुक्तारीकी सम्मतिकाँ भीचे बॉचिये। स्तामी श्रीलपुर्वन सरस्त्री और मक्तमाककार गोरदानी जानामीकी उटियाँ यति प्रतिव हैं, हसकिये उत्तवा बहुक कहाँ दिया गया।

धयोष्याजी वर्षे स्थानके व्याचार्यं श्रीस्वामी रामप्रसादजी ब्रॉनकरपु बहुते हैं---

चलक्ष्मित से सारिष्ट कर यसे नम निमंत कारिष्ट्रीडो । चलक्षमुख सिराहि सिरेष्ट्रत दीनदसपु सिर्मेस वर्षेस ॥ कुर्मने अंग इसंग सो कार सो

व्यान को रापुनन्दन-सीको। क्यु जो कर को हरि क्य

बराउ सरुप रोहत्त्र(सीकी ।। बैरफी रियम स्थि पूरन पुरान मड मानद बसान सांप-नंद्र सब साढि ।

त्रेन रस गीने वह परन नदीने वहि वीने हैं अजेह करि मेर सहँ शाहि ।।

दसा दरलारे शास्त्री क्षेत्र पुरे बत दिया दुरलारे बीत चएनके नर्त्रके ।

स्टारीको परित्र कीत बापुरे बस्ती कीत वृति बद बेंटे परि तुन्ती रेजापिटे हा

वार्टाबंडे सुर्यास्य प्रवास्य विद्वाद श्रीरेक्तीर्च (बारुजिंड) स्थापीती विक्यो हैं-

बारीये, न्यर, ये देशकी मकारेर वहीं बहु मेर ये समुद्र से अर्दि । स्वीदर वाले वर्षे देश दिन से बहुत

भिद्र बाहित्रो निवह कार्या है।।

दास आस पूरे करे संसय शब दूरे की प्रमुख पूरे करें सुप्रत सोदाई है। चारि यह दस नम उद्दर्श अवाच सवि

ार पर देन वर्गु उद्दश्चित्रवान मनि गुगारे निकाने मूळ तुन्सी कैसाई है ॥

आरान-साम एक तुमारि चरन है। राम-मिक दावक ओ ज्ञान-मान-हरन है। भाषामें रामचिति कियो त्रीप्त वरन है। आम कर्ये तुमारिको पड़त बरन-बरन है। ज्ञान कर्ये तुमारिको पड़त बरन-बरन है। नामें रात तहीं कहीं जुनन परान-परा है। देव आपि कि आरिकोदी कियेरक परान है।

जारे बत सीव-राम-टरान तरम-दान है। धर्माचारोंकी सम्मतियाँ जनर संचेषशः दे दी गयीं। बार इ.प. हिन्दीके प्रताने कवियोंकी बक्तिमाँ सुनिवे। सुकवि 'मधान' भी बदते हैं---

जेती कृपा करी महावीरज् गोसाईज् वै तेती न दुकारो शमजूह सम माईके। सबै निजतन्व राम-जानकीको तत्त्व सार

पके बार साँपि दोन्हीं सबै सो कमाईको। केते कवि अमे केते अहैं केते होनेवाठे केर्द न 'प्रवान' पेसी पाई जनताईको।

काइ न प्रधान पता पाइ वेद औ पुरानको मान राह्में तीलों छोग

जीलों न प्रमान भार्क तुरुसी श्रीपाईको १। तुरुसी गोसाईशीकी कीरति न गार्ड जात

तुकसा गासाइजाका कारात व गार जात नदी खण्ड जम्मूदीप तम्मूसीतनाई है। मापत 'प्रधान' सत पुरुषकी सूरुसकी

सबै सुखराई जाकी ऐसी कविताई है। महुर विकासी काल फाँसी तमरासी हरे

मुद्दर विकासी काळ फॉसी तमहासी हर कामना प्रदान्सी मासी साचु तन पाई है। ऊस-सी, ममूब-सी पीमूब-सी पूमन-सी

देवनकी स्छान-सी मूचन-सी माई है।। सोक मरिता है इदरोक दक्षिता है

ाइ माछता है १६८३३ चाकता व परलोक रशिता है सिदिता है सब ठाईकी। प्रीतिकी किया है जनहीं तिकी विना है बरनीति सीनता है बर्निना है कार वारी साफा 'प्रवान' दिन-दीन दरिता है

समस्य भरिता है सारता है प्राप्त स्वीत मुक्ति गाँदिता है साममिक मिसा है

विधादेतु सनिताई कविताई बानेटाईंश कविवर "किकर-गोविन्द" जुकी बर्कि देनिवे:--सरि काल साधित असमित विसरि जत

करि जान भीग मर-बरान कारि गर। तरि जान काम सारि बरि गरा क्रेप करि कमें करिकाल तीनि कपक मनी गर।

कर्म करिकात तीने कपड मना की मरि जात माग्य मात 'किंकर-गोनिन्द' लोहीं क्वोंही शुरुसोडी कविताई पै नजी करी

वरि जात दम्म, देश-दूषण दरीर मत दुरि बाद दारिव दुषावर्ष्ट्र निसरिवता।

मिककी श्रस्तिका है मुक्तिहूकी द्वित है है मनकी निमूतिका है सुद्र उन्हिंब है है। सभी रम्मा मनका है हिमबन्त-कन्मका है

कामधेनुका है केबों सहु रेणुका है दूं। अमी-मूरिका है मोह-तम-दूरिका है हरियर-धूरिका है कैबों काम यूरिका है दें।

हारपर-मारिका है के विशुद्ध चरिता है केमों 'किंकर-मोक्टिय'जुरुसीकी करिता है है।

इसी तरह कविवर 'तोव' सम्य भावता^{ने ह} होकर खिलते हैं— यह सावि चतुष्परुको सुखदानि

बह सानि बतुष्करुको सुबराम अनुषम आति हिषे हुरही। पुनि सन्तनके मन-मूंगनको अति मंजुरु मारु हसी हुरही।

अति मंजुरु मारु हैता उ अरु मानुबके तरिबे कहैं 'तांप' मईं मनसागरके पुरुकी ।

सब कामन-दायक काम-दुहा सम रामकथा धरनी तुरही ।

देखिये, कविवर 'महाराज'के क्य^{त्रमें} वास्त्रविकता है—



मरित्य शागायकी थं । श्रीरामगुत्राम हिनेशीती जिला गये हैं---

नय नय धीनसभीको बानी । रिसद विचित्र चित्र पद मेडिन मुन्डि मुन्डि बरदानी ॥ सीन्ही वेद-पुरान-शाय-मन मुनिजन रुप्ति बहानी ६ शान, दिराग, अद्य-गुम-जननी करम गरम सब सानी ॥ करित गई जा दिनी जगमें सबी मुखन बखानी। भसित अपनिषंडक परि परित की अस में नहिं जानी : प्रगटी राग-चरन-रनि अर्दे तदे मुरि रिनुसाता मानी । राम-गुलाम सुनत गारत दिय भारत सारंगपानी ॥ राम-मीक रमाको प्रगट वय पारावार सदगुन आगारको नगनाधिरात है। महामृनि इसनिकी मानस महेश मन बोध विश्व विप्रमत मोह सम बाज है।।

वैद अवतार भी सिगार भारतीको मन्य भाग्यको भंडार जग-जरुधि बहात्र है। बदत गुलाम राम धर्मको धवल धाम रामायन नाम सब अन्य सिरताज है ॥

साहित्याचार्यं एं० श्रीचन्दिकादत्त व्यासजीने क्या ही चच्छा वहा है-

अंग्रेजी, फारसी, फरंसी, जरमनीहुमें राम-कळिमनकी कहानी दरसात है। सब पाठसाकनमें साठनके बाह्नको पोपीके अटालनमें रामही दिखात है।। राज-दरवारन दुकान अलगारनमें बागकी बहारनमें होत सोई बात है।

मूरख 'भपाटहूते रामको किनायो नाम तुरुसी मुसाई यह तेरी करामात है।। रह रे करेकी करि कपटी कुचारी मुद

मागु-मागु नातो गहि पटि पटारोंगे।। तुरसी गेसाईजुके कान्यके किरा सोंकाड़ि

दोहरा दुनाठी-सी बन्दुकनसी मारीगेश

कृषि अभ्यास्त औरस्त्रे सैच सक् बी क्षेत्रमध्ये द्वारीनी नरम गाँउ गाँउरी चार भारताहर है भी में मेरे चार से भाग तोहि दू छ- दूछ बारि-बारि बारी

इबि शवे पानीमें मान्द मानिन्द संग पृथिने अनार दाख देह हिनुस्ते है। सम्ब धन उत्त गरि गमे नवनीत नीत बीती ह हरेली गाँउमाँ स्टब्से है।

तुम राह्नी निसरी बतासे मने इलडेरे अम्बादत कवि मुस्ताई सो सर्व है। रुसिक गुसाईजुके कान्यकी मनुरागई

मुबार् नजार्र सरहात्रको हिर्दा है। के के इसरासिनको सत्त तेग्हें बोरि-बोरि जुनुति सपनियाँ सो मविनावि हरी।

काद्विक मधुरताकी मासनकी गोटी तासी मन्जुरता निसरी है सुनम हँविरिध कहें कवि अम्बादत्त गुन अंतंकारनके मेवा बारि ताको पुनि अधिक सुवारी

तुरुसी गुसाईजूके मानस रामायनक पक-एक आसरपै सोठ बारि हारि मोह-ममताकी मद-मासरकी मन्द्रताकी

मूढ़ताकी मीचहुकी मारनी-सी दार्ट पूतना पिसाची प्रेत पंगतकी पानिनकी मूत यच्छ राष्ट्रसकी जुटुम बहुरमी।

कवि अम्बादत्त कहै तुलसी गुसार्म्यूकी कविता अपूरव अमीकी बार बरही परम उचारनी पहंदिनके मंदलकी मुक्ति जुनतीको अहै मन्त्र बसीका है।

नगर-नगरमाहि कहानि पसारी शमन्तरित अविन्धी। कहै कवि अम्बादच रामहीकी हरीहन सी मरि दीनी भीर सबै चहरिस्पहरिसी। सूद्रनते बाद्यण तो मुरस्ते परित हो रसना दुलाई सबै जैन्जे बार्त अपि ही।

जमको मगाय पाप-पुलको नसाय आउ तुरुसी वोसाई नाक कप्ट रोनी करियों है

षयोष्यात्रीके प्रसिद्ध सिद्ध सन्त बाद्य बनादासजी बिसते हैं--

बन्दों पद तलसी गोसाई महासब उदी

कतिरात्र उद्धि जहात अवतार है। जीवनपै दाया रघुनाथ निर्मान किमे

जाकी मति चढे मनसमारते पार है।।

रावि हीनी सकत पुरान श्रुवि शासगीज

ना तो नृदि जात मरजाद माँसभार है।

पेसी शिति रहस महान तीन काल नाहीं

बनारास बदत प्रकारि बार-बार है।

सराठी भाषाके प्रचयात कवि, 'केवादासि' के कर्तां श्रीमोरोपम्स 'मयूर कति' ने एक 'श्रीतुलसीदासलव' किला

है, उसकी मीचे उद्गत की गयी कुछ आयांबाँसे आध होगा कि मयुर्जाके चन्तः करवाने गोश्यामीबीके विषयमें श्रीकेतना स्नादर था-

şs

j

iř

1

100

es fil

थीराम पदान्त्र-अति तुरुसीदास हा सदा गाना ॥ ९ ॥ स्रीबाटमीकि व्य झाला श्रीतुकसीदास,रामयश गाया :

तरित्र प्रेम रसान्य काणी वाणी तशीन दशमा या १६ २ १। माँचें मुद्रम-भवन कवन निववितें सदा बना सरसें ।

हैं जो जो सेवार्व, तो तो सेव्यक्ति गर्ने, सुवा सरसे ११ ६ ११

ř भर्मात् तकसीदासजी मानो श्रीरामचन्द्रजीके चरच-ूर्य नमस्त्रका रस श्वानेवाचे असर है। इमें उनकी निरन्तर ह स्तित करनी चाहिये । राम-यश-गान कानेम श्रीतसमीटास-क्षं भी मानो मूर्षिमान् शीवाश्मीकि ही हो गये हैं। इसीविये ूर्विनकी बाखी, जी प्रेमरसकी सानि थी, महाकवि बादमीकि-ा भी वार्याके ही सहस्र उनके वसमें थी। उनका कान्य मानो अध्याम प्रेम-मन्दिर है, जो ज्ञानियों और परिवर्तोंको निरन्तर ्रे घपनी सरसवासे शोभा और सुन्दरमासे वृह करता है। ्रांच्योंकि व्यां-व्यां इस मन्दिका मोध क्या जाय -व्यां-अर्थो इसके प्रेम-भक्ति-पूर्व काथ-स्वयः मोग किया जाय-प्रमानिया वह सम्रतकी तरण केया काथ-स्वयः मोग किया जाय-्रियोत्स्यो यह प्रश्नुतकी तरह सेव्य झात होवा है कर्यात् रीयुप्तमानकान्य क्लान्य कि पीयूप-पानका-सा भानन्द मिन्नता है। pşi,

इसी कारण श्रीनामाजीके शब्दोंमें कहना परता है-1 4/04 'कति मुश्चि जीव निसार दित वाल्मीकि <u>श</u>च्छी मयो 1º

'गीवाके बाद मदि किसी प्रत्यने देशोदास्था समस्ति भागे दिखवाना है तो इस मोस्पामीबीको रामावणही ने।

इसमें मगबद्रकि और सांसारिक सदाचारकी इतनी उत्तम शिका ही रायो है कि वह और किसी बन्धोंने नहीं पायी जाती।"

भन्तमें विदेशी विद्वान् काच्यर विवस्तनकी सम्मति सन खीजिये--

'बारतवर्षके इतिहासमें तुझसीदासबीका श्रमूल्य है। उनके मन्यके पाविद्ययको सलग रहने दीजिये, उनकी सर्वेसाधारचा झाडकतापर ही दृष्टि कीजिये, जिसका पंजाबसे भागजपुर चीर हिमाळबसे गमेदा पर्यन्त बारों वर्षवाक्षे चाहर करते हैं, सो दारुविक प्यान देने योग्य है। सारे हिन्द-समाजर्मे राजा, रहा, उस, मीघ, बास, चवा. घट सबके में इसे यह शामायण सनायी देती है और सबमें समभावसे पड़ी, सुनी धौर पादरखीय समभी जानी है। तीन सी वरंसे अधिक हुए यह रामायय शार्व भारतवासियोंके जीवन, स्थवशार और मोलचालमें सर्वथा मिलताब गवी है। ऐसा न सोधना चाहिये कि क्षोग इसे केवल कारव-१सके प्रेससे धयवा धाश्चर्यताके कारण ही देखते प्रथवा पहते हैं । इसे तो धर्मगासके सध्य पवित्र चौर मामाथिक मानते हैं। जैने बृरपके पादरी 'बाइबिल' को भादरबीय सममते हैं बैसे ही झार्य खोग इसकी मर्थादा मानते हैं। यह करोड़ों मनुष्योंका शास हो रहा है। परिवत चाहे वेद और उपनिपर्योका सन्यास करें सौर धी हे बहुत बन्द व्यक्ति पुराव्येष्ट घपना दिरवास जमारें, पान्त मन्यदेशके पठित यथा अपठित दोनों श्रेशियोंके समुख्योंका बसंस्य समकान इसी शबसोकत रामायणको चपना मुक्य जीवनसर्वस्य समकता है। विस्तन्देह मध्यदेशके लिये इसे सौभाग्यका वहा कारख सममना चाहिये 🖪 जिसने शैव-सम्बद्धायके सान्त्रिक स्यवहारसे इस देशका रक्तय किया। इस देशके मुख रचक स्तामी रामागन्दती हर। जिस पतित व्यवहारसे यक देश अष्ट गिना गया उससे उन्होंने इस देशको बना खिया। किन्तु तुलसीदासजी ऐसे उस धर्मके रक्क हुए कि पूर्वसे पश्चिम (धीर उत्तरसे द्विया) तक स्वामी रामानस्ट्रजोके उस सदर्गको धैवाकर उसपर शोगोंका पूर्व रूपसे विश्वास करा दिया ।

"वाल्मीकिवीने मरतजीको धर्मपरापणता, जन्मण्यीका आत-स्नेह और सीवाजीके पावित्रव पर्मकी प्रशंसा की है. परन्तु मुसाई तुलसीदासजीने उन्हें उदाहरक बनाकर दिसाया है। काजिदासजीने धपनी मनोहारियी कविताके देवज चाधारके जिये श्रीरामचन्द्रश्रीको निरूपण किया है



भवानी माठा ही थी। बीरामदास स्वामीने घवने स्कृट मकरणोंमें इसका स्पष्ट उरुक्षेत्र किया है।

भीरामदासमीने स्वरंपित बाँदिवामीने यह दिवसाया स्वास्थ्यार रावच्छा पृष्टं कावाचार वृद्धं या वर्ता कार 'बीरांगा वार्ता' वा है, बाँदे के कीराममीने कुन्न रावरांची संचयक्तिये सहायदा माहक्त उत्पक्त सम्बद्ध हैराक्टर प्यरंप्तर की थी, वेरी हो कुमतिने भी क्याने तृद्धांची पास्तक्त पर्यंचीने की कृपींची पास्तक पर्यंची रहा विशे क्याने उन्यंचि क्याने हा प्रसंत वर्षा है वर्षामानी क्याने की कुमती हिम्माने हे प्रसंत कुमती कामानीले माम मेला गा वा का कुमता भारत्य-वर-मुक्त' गासक काव्य 'देर-मेश'के वर्षंची ह्यनिहत 'वर्षे माहस्ता' वे किसी मक्सा भी कमा की है,

राज्योतिक वायानमें रासाययमें वो शिका आस हो सकती है, महामा गाँचीमों कव्यवाद्यार यह यह है है कि किसो मी हाबतमें सत्यकों हरएसे नहीं हटान वाहिये। बेरासम्बद्ध हर स्थाव है है। विताके वायान प्रतिक वित्य करों के प्राप्त हैं। विताके व्यवकार पावत करिके वित्य करों के प्रत्य कराया है। विताके व्यवकार पावत करिके वित्य करों के प्रत्य कराया कर किया । वनकी साल-वित्यक्ति मामवे हैं। वहाँ मंगांची वाया-वादिकी प्रमुच-।एवं पापाना मान हुई। वहाँ मंगांची वाया-वादिकी प्रमुच-।एवं पापाना मान हुई। वहाँ मंगांची वाया का व्यवकार प्राप्त हैं। उपयो पा। वन्होंने पुरुविधित में मान कर्मका क्षा वाया भीर सीता हैं। विवाक सालकों हों हो वन्नकार कराया मीर सीता वाया मान सीता वाया मान सीता वाया कराया हों होंगी महानुविधित में में अस्त महाकों की हो है। वन्नकार वन्नकार कराया होंगी महानुविधित में में अस्त महानकों की हो है। वन्नकार कराया होंगी महानुविधित में में अस्त महाने की हो है। वन्नकार कराया होंगी महानुविधित में मान महान महान होंगी है।

निभाषा तथा किसी भी वरिस्तितिमें दरस्य स्थाप नहीं दिखा। संस्थितिकों वाहाय, वास्तिति जो मेंत्र थे वार्षात् सम्बद्ध, सुनीव चीर वाहित्य स्थापित को पारस्य स्थापे, ये, उन्हें वहीं हो दिलामीसे निपालक उन सक्कों एक सुनमें बीच दिवा चीर क्वाटः उनकी सहायदासे महान् वय-समय पूर्वर शवक्या निगाल कर दिया। सहकार्य हिलात वहचं कार हो सक्या है या साम समुद्रार हो तेने स्ववाकर साथने स्वताको समय दिखा थी। वरिका प्रमाव केसा पहचा है यह तो स्थापमण्डमीके परियत्ते महासावित हिलाचेवर होता हैं है। समावे सन्तोपके वित्रे सहासावक्याचीने सीतावेदीकर सर्वक्षत्र परिवास हिला साराय-प्रमीत सावेदीकर सर्वक्षत्र परिवास हिला सीराय-प्रमीते सावेदीकर सर्वक्षत्र परिवास करके

शासावचाँ वॉबंव चरियाँचा समन करतेते ताय, संवक्षांक, चरियंवव, सावना-आगृति, प्येय गावन चारि गुवाँचा देवन्य राजनीतिक व्यापासी कितपा सावत दे बोर हमचो चीन-मा स्थान आह है—यह यह सावीस्पिति वाली बा सकती दें। विस्तवकार १६ वी या १०वीं कताव्योति उपर्युक्त वार्कीचो प्याप्तमें पत्यवर सावीस्पकी पत्रमा की गायी थी, साव भी देवनेद्वारिक वियो वेदी हो साविष्यके निर्माण करतेकी आपास्त्यकता है। साव हो उपर्युक्त प्रिटित रामावच्छे चप्यवस्त्र करतेकी भी चहुत वहीं प्राप्तद्यकता है. इससी भी वहन बाथ हो स्वस्ता है।

रामायणसे उच्च भावोंका श्राहुर्भाव

जगत्में मंगेक काय्य-प्राय हैं परम्तु आखार और काश्यको कोई भी किय इस्तकारको हुन्ता, मगोहरता और रिविहतासे गईं। कींच सका । पैसे प्रमावकारी इंपसे पर्यक्त संजीव उपदेश देगा एक रामायणका ही काम है । यही एक काव्य है जो हमार्ट इर्त्यों में सार्यक प्रमान केंची उपदेश देगा एक रामायणका ही काम है । यही एक काव्य है जो हमार्ट इर्त्यों में सार्यक प्रमान केंची आग उरायक उत्पन्न कर देशा है, कि हम रामायणको पढ़कर कुछ-ते-कुछ वन जाते हैं। हमारे तमाने आकर सहर हो जाते हैं, जीर के स्व गूण जो मञ्चपकी उत्करकार आग्नुण हैं, हमारे तमाने आकर सहर हो जाते हैं। सत्यावरण, पितृमकि, पातिकात-वर्ष, पिता-वर्ष, विश्व-पातिका स्वेह, विनय, पैयं, द्यासुता आदि पात्रकारणोक्त ऐसा कीन सा विज्ञ है जिसके यथार्थ स्वक्रपको कविने हस प्रम्यमें अपनी जादू-भरी उत्वर्णनीति विज्ञित नहीं किया हो। रामायणके देशनेसे प्रतीत होता है कि हसकी उत्पत्ति मारातके मार्योतकार प्रतीक मार्गोति हुई है। अतः इस्ते अध्ययित अवस्थार्थ पढ़े हुए सभी तोगोंको पुनर्जीवन मार्गोति हुई है। अतः इस्ते अध्ययित अवस्थार्थ पढ़े हुए सभी तोगोंको पुनर्जीवन मार्गोति हुई है। अतः इस्ते अध्ययित अवस्थार्थ पढ़ हुए सभी तोगोंको पुनर्जीवन

मानसमें ज्ञान श्रीर भक्ति

(छेराय-पं शीक्समीयात्री पाटक)



कि और ज्ञानमें कीन श्रेष्ठ है यह बताना सरस महीं है। माथामें ब्रिप्त, परमार्थ-बिन्तनसे विमल. इम चलपण मनप्योंकी सो बात ही कौन-सी है है कृत-माया-दासी, संसार-स्यानी, परम सेपानी ऋषि-मनि-धाचार्यतक भी इस विषयके सिद्धान्तोंमें एकमत भडी हैं। कोई कहते हैं जान क्षेत्र है तो कोई कहते हैं अक्ति श्रेष्ठ है। शास्त्र, पुराया पूर्व बड़े-बड़े प्रन्थों में इस विषयके प्रजुर विवेचन मिलते हैं पर उनसे एक निश्चित सिखान्तपर पहुँचना कठिन है। हाँ, इतना तो अवस्य ही समीको स्त्रीकार करना परेगा कि अक्ति और ज्ञान दोनों डी पर्योसे परम प्रस्पार्थकी प्राप्ति हो सकती है-श्रेय-स्वरूप परमारमा-की मासि हो सकती है।

यद्यपि उपर्यक्त 'शक्ति और शान'का विवेचन कठिन है संयापि इस विषयमें गोस्वामी तुलसीदासजीके मतको चेलकने जैसा समना है, उसे कुछ युक्तियों सहित रुपस्थित करनेका प्रधास किया जाता है । बाहा है सहत्व पादकराया धष्टता चमा करेंगे ।

भक्त-शिरोमिय गोस्वामी तलसीवासजीने चपने प्रधान अन्य श्रीराम-धरित-मानसमें इसका एक चल्यन्त सन्दर विवेचन किया है। इस विवेचनमें उन्होंने रूपक कीर उपमार्के चाध्यसे इन दोनों-- 'भक्ति और ज्ञान'-- में धानार विस्ताया है। यह प्रकास उक्त शस्त्रके वशकास्त्रक्री 'लाम-रीपक'के मामसे मसिद है । परा शकरण पाउकोंको **उक्त श्यासपर देनना चाहिये । यहाँपर . उसके ऋक्ष क्रांश** दरपन किये वाते हैं-

ब्यानीई मगनिदि नहिं काटु मेदा। उमय हरहिं सब संसब खेदा।। न्यान विराम बोग विग्याना। ये सब पुरुष सुनद् हरिजाना।।

पुदु रवानि सक मारि कहें जे बिरक मंति धीर । म तु कानी के विश्व बम विमुखके वद रघुवार ।। सी मुनि स्पात-निचान,मुन्तवना विचु मुख निरम्बि । विषक होर्दि इरियान, नारि विष्यु माना प्रयट ।।

मेल न मरि मरिके मण । पत्रगरि वह मंदि अनुण ॥ मत्ता मात्री स्तर् प्रमु बीज । नारि वर्ग अर्ति सब बीज ।। पुनि रघुनीरहिं मनति पियारी । माया सत् नंती दिर्देश मगतिर्दि सानुसूल रहाराया । तस्ते तेहि इरवि क्री दर।

ज्ञान धीर भक्तिमें (इनके फलमें) बन्तर वहीं है हैं दोनों ही संसारसे मुक्त करते हैं; किन्तु उनके सहने चन्तर है। ज्ञान-विताग चादि पुरुष हैं, हवा हता है मकि की हैं। पुरुष प्रवस होते और की बाहा-गा होती हैं, इतना होनेपर भी बियोंमें एक ऐमी शिर्व थे बड़े-बड़े बली एवं ज्ञानी पुरशाको मी विकास है हैं । परन्तु खियोंपर उनका कोई बोर नहीं बजा, हैं विराग धादि रूपी पुरुष-जातिको तो सायास्पी स्रे^{चे ह} है किन्तु (की होनेके कारण) सकिको उससे ही। नहीं । अकि अगवान्की प्यारी है, पर आया हो है नतंकीमात्र है, वह तो सगवान्की इच्छातुता गर्का है। इसके सिवा पुक वात यह भी है कि प्रवित कर सदा अनुकुल रहते हैं, इसलिये भी भाषा मनिसे हार्

सव्यन्तर कानको 'दीप' की उपमा ही गरी है उपमा है भी बयायं। क्योंकि दीपकी कारोतिन सव बलुव्योंको देखनेमें ही हैं। वर्षात् की हर्न विज्ञीन यथास्यानस्थित सब पदार्थीको इम हीते ह ही देख सकते हैं, उसी प्रकार मायाके क्रायकार्य कि पदार्थी (सत्, लं बादि) की इम जानके हता है। कर सकते हैं, उनका बोध कर सकते हैं। हिन्दु की प्रस्तुत करनेमें पृत,कार्यास, श्रानि इत्यादि सनेहतं व्यायरयकता है उसी प्रकार शानके साधनमें में दैवी सम्पत्तिके गुर्योकी धीर चन्य घनेत्र सानित हर्य बावरयकता है, जिनको यहाँ रूपकडे हात दिवन है । सन्तन्तर जैसे दीपके प्रस्तृत होनेपर भी प्रनेड हो हैं, उसी प्रकार (शासीय) ज्ञान प्राप्त होनेश हैं हैं लिये कई प्रकारके अब हैं । गोरवामीत्री इस हरती संबंधा दरव दिलवाचर चलामें चरने मिरालाना इसप्रकार करते हैं-

व्यानके पत्य कृपाणके बारा । परत सगेश न हरू^{हि ह}ैं को निर्वित पन्य निरमर्दी । हो केसन पान धारी मानके सम्बन्धर्मे येगा बिलकर हिर अपि है धार बहते हैं--

बहेर्ड म्यान स्टिइन्ड बुबाई । सुन्दु मरी बीटर हिं





लक्ष्मणजीका मन्दिर—लक्ष्मणधाट (बाहरसे)



(-141-4/3/1)

लक्ष्मणजीके मन्दिरकी फांकी (भीत्रमे)



सदमन किया सामनेका हुउन



सहसण किसा (पिछला दृश्य)

मस्ति उपमा 'मणि' से दी गयी है । मशिको प्रकार रतेके लिये दीवकी माँति पूत इत्यादि उपअव्योंकी प्रावरयकता नहीं होती और न इसमें दीएकी मौति पापत्तियोंका ही कोई भव है।

परना यह माँख प्राप्त हैसे होगी है वहा सलम उपाय -मिंग होनेपर भी इसकी प्राप्ति दीपकी सपेपा

पुलम है—

सगम द्रपाय पारंब केरे । नर इतमान्य देत मूट मेरे ॥ 'वेत भट भेरे' चर्चात व्ययं डी सर कोवते हैं। क्या ग्गाय है ! समिये---

वन पर्वत बेद प्रराना । राम-कथा रुविशासर नाना ॥ मीं सम्बन सुमति कुदारी । स्थान विराणनयन करणारी ॥ उपहित क्षेत्र का प्रानी । पाव मगति माण सब समसानी ।।

हानरूपी नेत्रोंकी धावश्यकता है, धर्यात जानकी वरपकता थी है परन्त नेत्ररूपसे-हीपरूपसे नहीं। बस. तेये, दीपके उपर्यंक सब साधनों-अंकटोंसे छट जाते हैं। ा कड़नेका यह भाव नहीं है कि अक्तिमें देवी पत्तिके गुर्वो और सम्यान्य सास्त्रिक साधनोंको तान्त धनावरपक सममकर उनकी शवदेखना की साथ।

इस मसंगसे यह निष्कर्ष निषयना है कि जानकी पोगिता भक्तिके लिये ही है.सन्वया केवल जाब-साधसे तेकनेत्वता नहीं हो जाती। इसको वों भी समक हते हैं कि बागमें जाकर कल-फ़लोंके बुधोंकी थेखी, ति, भावन्तरभेद, संवया इत्यादिका केवल वर्ण ज्ञान ाना और इसरी और इन सर्वोपर दिना ध्यान दिये ही र फार-फार्वेडा गरपास्थापन भोग बन्ना । बन्नेट प्रदेश । दूसरा प्रकार ही क्रमीप्र हो सकता है, और पहले प्रकार-। इपयोगितामें दूसरे प्रकारका द्वीना भी वापेखित है। स्वामीजी इसीको श्रष्ट करते हैं--

वे अस मगति जानि परिहरही । देवल ग्यान हेत् सम करही ॥ ते जड़ कामधेनु गृह त्यागी। स्रोजन काक रिरोर्ड पय तागी।। मुनु संगम इरिमगति निहाई । ने सुस बाहर्दि भान उपाइ ।। ते सठ महासिन्धु बिन् तरनी । चेरि पार चाहत कड़ करनी ॥

क्या ही सुन्दर सिद्धान्त-वास्य हैं है बेवल बोश्वामीओ ो नहीं, भ्रपितु बेड्डे स्वाञ्याता, भटादरा-पुराख-मयोता, रवा विभूति, स्वयं महर्षि व्यासतीने भी यही अहा है---

मेर गति मकिमदस्य है विभा

प्रित्यन्ति ये केन्द्रजीवरमध्ये ।

वेशमही क्रेशठ वर शिप्यते नान्मधया स्थलतपानधातिनाम् ॥

(भागवत १०। १४ १४) यहाँपर 'केवलबोधकरूपे' बहुत 🖒 महरशके शब्द हैं-अर्थांत् केवल ज्ञान साभ करनेके लिये ही जो कह तहाते हैं क्याना थों कह सकते हैं कि जो बेवल जात-साम कर सेनेमें डी अपनी इतिकर्तस्यता समभते हैं उनके पत्र सभी करनेवासोंकी भारति केवल क्रेश की शेप

रह काता है। वर्षांत-प्रश्रोचम भगवान श्रीरामचन्द्रजी भी इसी सिद्धान्त-बाडवपर चपनी स्वीकृतिकी सहर क्या देते हैं-व्यान अगम प्रत्युह अनेका । साधन कठिन न मनमह टेका ।। करत कट वह पावर कोऊ । अगति-हीन प्रिय माहि न सीळ ।।

सगति स्वतन्त्र सक्त गनवानी ।

सारांश यह कि 'क्रान-प्राप्ति' करमेका फख 'मिर्फि' है-'जान' यवि साधन है सो 'मिकि' फस है।

क्यर बडा है-

जो निर्वित पत्य निरबहर्ष । सो ईवत्य परम-पद लहर्र ।। वहाँ विज्ञ कौत-से हैं है

सविवे र

वह सब माबाइन परिवास । यहा सुमर को बस्त पास ।। सिन चतुरानन देखि दराहरें। अपर और केहि हेसे माहीं ।। 'क्रवर क्षीव'ग्रॅं(शास)जानी भी चा नाते हैं । इसीलिये

ट्हें कहें काम कोच रिप आही।

शीर इनसे क्यनेका उत्ताव असिद्वारा 'अगवरवरकागति' R É I

ज्ञानकी चवस्पायक शत्रधोंका परम भय है, मिलकी बरुयामें कोई भय नहीं, क्योंकि शानियोंको तो धपने बल-का भरोसा रहता है परना यक चपने सर्वराकियात प्रमुखे बरोसेपर निर्मय और निधिन्त रहते हैं, मगशब् औरामक्त्रजी इन दोनोंकी स्वरूप-परिस्थितिका उत्तम विश्व रिसवाने हैं---

मोरे श्रीड तनम सम म्यानी १ बन्तक स्त सम दास अमानी ॥

इसीबिये मानानने बहा है--

तेचं निवामिषुकानां बीमछेनं ब्राम्पहन् ॥ (पेशार 1 ११)

मुसल्मान रामभक्त

ि सिद्ध फ़कीर शाह जलाल-उद्दीन वसाली]

(लेखक - बीजमुनापसादची शीवासाव)



(1) व्यक्ति बीते-जी परमात्मामें मिख जाता है उसे 'बसाबी' कहते हैं। यह राज्य फारसी मापाधा है । इसकी व्याव्या

कवि वलीरामजीने चत्वन्त सरल धौर सरस मापामें इसप्रकार की है-

जिल राहमें पीवको पावये जु। 'हम-तम' से न्यारे हो रहिये

निस हँसिय, सिरुय, गाइये जू ॥ मुप मुक्त मीतकी चाह कसी

जो वै जीनते पीत न पात्रेये जू। बही अन्त समय जहें जावना है

तहँ जीवते क्यों नहीं जाहने जू।।

ख्न_{्रासानके} गाह जलाल-बहीन चसाबी 'सुकी हुरन-परस्त' क्रयाँच् 'ग्र'गार-निष्ठा'के भक्त थे । श्रीरामचन्द्रजीके दपासक होनेके चातिरिक्त वे उनकी शलौकिक मधुर छनिपर मोहित भी थे। उनका विश्वास था कि श्रीरामचन्त्रजी बत्यन्त सुन्दर, स्वरूपवान और सुकुमार हैं। दनकी भक्ति करने तथा उनका नाम अपनेसे निशय ही मुक्ति भिवती है। बैसा 🖩 कवि 'सुरवर' में वद् -रामाययामें कहा है---

को बादे जबाँ का कोई वह 'नाम' .

मुहस्ताने कहामें पाय आराम ॥ मजाते हर बदार इस 'नाम'से है .

कि आज़िर काम 'सीताराम'से है ।। হবাবেকা নহী है আঙ্কত কাম ,

पुक्त काही है 'सीतासम्बद्धा नाम II

महायमा 'बसाखी' अमवा करते हुए पंजाबमान्तके मुद्रतान-मगरमें था निक्ष्ये ये । दसी नगरमें पविद्रत टेक्चन्द्रश्री कथा-शाचक रहते थे। वे वहे विद्वान और सुयोध्य वक्ता थे । प्रतिदिन सन्त्या समय समई मा चन्तरेपर रामायणकी कया बाँचते थे । उनका सर कर कोमज चौर मधुर था । योतामोंको वह सूत्र रिकारे व पद-पदार्थोंकी स्माल्या सुन्दर सरख चीर सरस राष्ट्र करते थे, जिससे खियाँ और होटे छोटे बच्चे भी भागान समक सेते थे। जिस रसका वे वर्णन करते उसका चित्र ही सींच देते थे। इन सब सामप्रियोंसे बनकी व ल्य जमती थी। दूर-पूरते क्षोग बाते कीर कई स

(8)

राजा बनककी फुखवारीका प्रसंग था। मिविहारा श्रीरामचन्द्रजीकी ऋद्भुत इविपर मुख्य में। परिस्तर्य कनकी चलौकिक चुविका वर्षांन इतनी सुन्दर और स आचामें किया कि श्रोतागय सुनकर गहर हो गरे हैं वेड्डव्ययार उनकी खदानसे निकल गया-

जोता इकट्टे होकर क्या सुना करते थे।

किसीकी आँखमें जादू तेरी ज़बाँमें है।

कुछ राजि बीते कथा समाप्त <u>ह</u>ई। श्रीतान चारती खेकर जपने संपने घर जाने लगे । वदिस्तरी चपनी पुसक वर्षधना बारम्म किया। इसी वीचमें गर् शाहेशने प्राप्तर कहा-

"व्विडतजी ! भापकी पव-पदार्थकी स्वाल्या सुन्ध में बात्यन्त प्रसम्र हो गया हैं। हुता करके वह बतनाएं कि यह कौन-सी चहुवार्थ-गौरवान्वित पुलक है और [पर्म किस यूसफुके समान सुन्दर व्यक्तिके सीन्दर्य और बाहरू का वर्षां म है।

"शाहसाहेव ! हिमाखपसे कुछ दूरीपर एक दिराई मगर बसा है । उसका माम संयोध्या है । वह सुरे क्रांस् राजधानी है। बहाँ महाराजा व्यत्य शाय करते थे। वहे प्रवापी और धर्माता थे। महाप्रश्न रामकर्त्रश्नी हर्ने सुपुत्र थे। वे सत्यन्त सुन्दर, सूरवीर और इदिमार् है गुणसागर नागर बरबीरा। सुन्दर स्थामक ग्रीर सरीया॥

बह रामायण है। इसमें वर्ग्होंकी मंगलमय होडाई वर्षांन है। कहिये! बाएको उनकी कथा सम्बंधि हो। "परिवर्तता ! मैं कहें दिनोंसे यहाँ होज् सावर कया इन्ता हैं, बड़ा सानन्द साता है। में तो शाहजादे सन्त्रस सारिक हो गया हैं। बीन बबुनियासे ग्रॅंड सोर बनोंडे दुवेंसे सुकीस हैं।"

"टाइसाहेष ! चाप कपाके बढ़े प्रेमी हैं । कृपा करके फीर्दिन बापा कांत्रिये । मैं चपने पास 🙌 बैठा जिया कहेंगा।"

"ही हो भि तो रोज सबसे पहचे चाता हूँ चौर सबसे पीड़े बाता हूँ। चेंडिन मुख्ये यहाँ खोहें बैटने कहीं रेग। बर्ने-बरे सुन बेता हूँ। चरचा, सब जाता हूँ। यह कि कार्टमा

(1)

कारमारेको इस प्रेमसाराकी क्वा श्रास्त्रमानाके सम्में दुर्भी। वे स्वत्य क्रोपित हुए। सबने सवाह कर्व भीडती कर्युक्त प्रधानतर माजिस कोषी। मार्च श्राप्तमानेको इत्याप कीर श्रास्त्राहेको थी स्वत्य जैनारा। श्रीक्ती साहको जात ही, इत्याप राची माञ्चा तथा श्रीर श्रीपत्रको सबसीन की माञ्चा तथा श्रीर श्रीपत्रको सबसीन की साम्या तथा श्रीर श्रीपत्रको सबसीन की साम्या तथा श्रीर श्रीपत्रको सबसीन किनो हैरे हो। स्वारो स्वत्य स्वत्य

वर्षेत्रे दश्यम मुस्यमानी

मरा दश्कान नेहन ।

कर्णन् में हेम-पथका पविक हैं। गुक्ते शुनकमानीकी

थी। प्रमापे का काका---

राप्त केश वह है, मेरा बरसान है नहीं,

मक्त मुमाम से दुसे देखता हुई ।

रे केंद्र कराते वस काचे ।

 खोग अनके अपर विगड़ पड़े । शीववी साहेबने धमधा-कर कहा---

"पविदत्तवी । जो तुष हुचा सो हुचा । कबसे कया मत बाँची । चपना पोधी-पत्रा यहाँसे बठा से बामी, बरना------

परिष्याणी वेचारे सीधे-सादे ये और मौत्रणी साहेच-को वस्की सह जानते थे, बोझे--

"सप्दाः कसने में क्या नहीं दर्गिंगा । साप इतमीनान रक्तें।"

(. .

बूसरे दिन क्या बन्द हो गयी । बाधकारह समाप्त हो जुडा था। पविषतसीने आतःकास हवन करके हुसरे शहरका आगे पडवा । शासीमें शाहसमादेव मिखे, उन्होंने

विद्यातीने सम्बद्धं नेत्रोंने क्या---

"शाहरताहेव ! इस समय तो बान केवर भागा का रहा हूँ । करानेसे पचरे सानेवा वर है वरना में चारची ज्यारे प्रभव्य चरित्र कारतात !"

गाह साहेब सिन्द चडीर वे, बन्होंने बहा-

"परिस्ताती ! बरो आ ! मैं तुन्हें वह बगा (वृद्दों) हेगा हूँ ! इच्चीरत बहर हैनेने वह ब्यट्ट्सा है। बारान बाँड सब बोग बहरत बागा वरिंग ! कुमते हाल हैने हो वह अपनी कारती गुरुमों या बारता, तमे हाल्यें किने किया, हुए मों में रिक्काएयी दिवारत शुमते हो दुन्हें वा किन बात्य है ?!"

मरोर दुनिया वर्षियाने दुरश्चार .

रीत दानवा कापूरान कुरत्यन्तः । रीत रावरीशा एक सरी शास्त्र संबन्द ।

करोर्--

बर्गाण्य कंशन सबकृत कर है सेंग की है। सर्व्याद केमण्य कर कर करते केंग करेरे हैं।

"करहा ! जरा दिए की नवस्य हो कि आहम है करक बैसे इसीब हैं ("

देखारे परिवरणी क्या करते। योगी मोक्का देव करे। स्कूमकर्ताची कवार मोजाका कर्यन करते क्षते। क्रक्तुन-

मुसल्मान रामभक्त

[सिद्ध फ़कीर शाह जलाल-उद्दीन वसाली]

(रुखक -श्रीननुनाप्रसादनी श्रीनास्त्व)



च्यक्ति बीतेन्त्री परमात्मामें मिल बाता है उसे 'यसाली' कहते हैं। यह शब्द फारती मात्राच्य है। हसकी व्याच्या कवि वड़ीरामजीने कायन्त्र सरस्र कीर सरस मात्रामें हुतमकार की है—

देश बार दांबे वित गार सीवे

त्रिस राहमें पीतको पाइय जु

'हम-नूम' में न्यारे ही रहिंवे

निस हमिये, केलिये, गाइवे जू॥

, मुख मुक मीनकी चाह कैसी को के आँको की न पड़के ज़ क

बरी अन्त समय कर्रे जावना है तर्रे औरने बनो नहीं आहेबे जुन्न

प्रशासनके गार जवाज-प्रशेन करावी 'सूची हुएन-वाला' वर्षात् 'क'गार-निहाकि स्तव थे। सीरासन्त्रप्रकीते वरात्त्व होवेते धानिति वे उनकी सर्वाधिक सदुर बुरियर मीरित भी । उनका विधास मा कि बीरासन्त्रपुरी स्वयन्त्र सुन्दर, स्वयन्त्रमा कीर शुक्रमार

है।इन्द्री प्रक्षि करने तथा उनका नाम अपनेने निधन ही

सुचि सिक्को है । बैमा कि करि 'सुरगर' में कर "नामाचलमें

क्या है---क्ये क्षेट्र क्यें की केर्नु वह 'नाम' ।

> हुरानुधे वहँत्रे पात अग्रजा । बन्ते हर स्टार हम 'नम'ते हैं ,

वि बर्नुत बाग जीनाम है है।।

र्यप्रका नहीं है। महस्यत्र कर्त ; कृत्य बन्हें हैं। भहेल्याम का नाम हा

बर्गमा 'कारवी' समय करे हुए पंचायराज्यके मुख्यान नगरके का निकार के १ वर्गा कराने कीवार देशकाहरी कार साथक वर्ग में १ वे करें की सुयोग्य कम थे। प्रतिदिन सञ्च्यासम्य सम् मा पत्रविष्य समायणकी कमा वाँचते थे। इतका सर प्रा कोमल कीर माइर था। कोतामाँको मह स्व पिमते वस्त्यसायों की प्रास्था सुन्दर सात्र कीर साम प्रां करते थे। तिस्त तिवारी कीर सोटे कोटे-बच्चे की कार्या समस्य सेते थे। जिस स्तका वे वर्धन कार्त उतका विज्ञ की सीप देने थे। कुन सस सामियोंने इतको व कुल वसानी थी। बुर-बुर्स कोम सात्र को व को सात्र कोता इन्हें बीच्य कथा साम करते थे।

(8)

रामा बनकमी कुछवारिका मर्गम या। मिकिशाम भीरामकरमणिकी कर्मुत स्वित्तर ग्राम्य थे। विश्वमानै जनकी व्यवस्थिक वृत्तिका मर्बाभ हरती ग्राम्य स्वतर सर्ग सामार्गे विचा कि भोरामाय शुक्का ग्राप्त् हो गये की वैद्यक्रवार करकी क्रान्म निकल गया—

हिसीकी आँसमें बाद तेरी ज़बीने हैं।

अप राजि जीते क्या समास हुई ! होनान्य अप राजि जीते क्या समास हुई ! होनान्य भारतो क्षेत्रर कार्य-स्थाने सर जाने हुए ! वरिवर्णार्थ-स्थानी जुल्क जीवना स्थारना दिया । हुशी वीवर्धे नाह स्थानियो स्थारन क्या —

"श्रीरक्तमा ! व्यारकी वन्-वहार्यकी श्राम्मा मुक्ते वि व्यायम्म अगव हो गया हैं । हमा बाके वह वर्गाएँ कि वह वीवन्ती बहुवर्य-गीरमान्त्रिया हुस्तव है बीद हार्ने क्षित्र मुश्कुके शता सुम्बर व्यक्ति सीम्पर्व बीट बार्च्य वा नक्षा व हैं।"

"साइवादेव ? दिसाक्षणो जुन दूरीमा हुन सिरावं बाग्य बागा है । बमका बाग्र क्योत्मा है । क्या हुने क्याने राज्यापी है । क्यों साइज्या दुगरव राज्य को है । वे बहु जानी और कार्यामा वे । बाग्य दुगर्या को को वे सुद्धा वे । वे कार्यामा वे । बाग्य दुगर्या को कर्यों सुद्धा वे । वे कार्यामा सुरार, दुगरीर और इंडियार वे-

कुलकार नाम वा बेगा । कुन्त्य स्थापत है। क्रीम अ

नव राज्यका है। वृज्यों क्रांदीची बंगक्षमा क्रीकार्य ्रिकारको क्षमा क्रांत्र क्रांत्र क्रांत्री क्रांत्री हैं!' सुनता हूँ बहा धानन्द्र बाता है। में को बाहज़ादें धरक्या धारिक हो गया हूँ। दीन व दुनियासे मुँद मोद उन्हों दूपेंगे मुद्दोग हूँ।" "वाहसादेंग दियार कराके बहे मेगी हैं। इसा करके मेरिदिन बापा कंत्रिये। में धरने पास ही बैठा किया कर्रमा।"

"पविद्वतनी ! मैं कई दिनोंसे यहाँ दोज़ आवर कथा

"हाँ दिं मि तो रोज सबसे पहले काता हूँ और सबसे पीये बाता हूँ। खेकित मुख्ये वहाँ कोई बैठने वहाँ देता। को-तने पुत्र खेता हूँ। अवका, सब बाता हूँ। कब फिर साहता।"

(१) गाहनाहेबकी इस मेमवार्ताकी चर्चा मुसहमानोंके कारोंने बहुँची। वे शायन्त कोधिन हुए। सबने सजाह कार्दे मोबरी अब्दुबाके सकानपर सजीवाग कोफी।

मार्वं हुगवानांको पुबारा और शाहसाहेको भी रूपम मेंतारा। मीडवी नाइको बाद ही, हरवार बर्वेटी काल्या बराया तरीका और साम्बद्धी उन्हरीत थी। तर बोग नात देखा हुनने रहे। शाहसाहेक एक निर्मा देशे हो अग्रीने स्थानगढ नहीं दिया। सेमके बसहरी वेश सामे के

कान्ति दश्यम नुसारमानी सरा दश्यार जेस्त्र १

वर्षात् में प्रेम-पथवा पविच हैं। शुक्ते सुमक्तानीकी

कृत्य बही है। भीर प्राम्मी वह बहबर----

देशात्र केश बद है, वेश करतान है बहें. कारत तु नज़ तो तुसे देकश वहुँ व उपनेने कहार्थ कहे कहते व

रान् हो बारेशर बाहमाहेबची मोत हुई, शस्त्र वे वे ही नहें, जिसे हो की जिलें र कोग वर्षे हुए हुए करने बादे र बार्ट वे परिकारिक बास वेटे बहें जैसरे करने बादे र परिकारिक बास वेटे बहें जैसरे

क्या हुए हो से ! केपोमें बाजुरात हो वहां था : शब-सकती हुँकि नहीं थो ! उनकी वह हुए। हेनकर हुप्तकारोंकी करेर हुवा कि हो व हो, वटिश्यकीने ही बाहकारेकी हुनार करते हुमस्तानने कार्यकर क्या किया है ! जब स्रोग उनके उत्तर विगद परे । मौतवी साहेबने धमदा-वर कहा---

परिवतनी वेचारे सीचे-साई वे और मीडवी साहेब-को अच्छी तरह जानते थे, बांडे---

"सम्प्राः कलमे से क्या नहीं वर्षिया । सार इयमीनान रचने ।" (४)

नूसरे दिन कपा बन्तु हो गयी। बाजकारण सामाप्त हो चुका था। परिवतमंत्रीने मान-काल हरन करके दूसरे गहरका मार्ग बक्का। सामोमें शाह साहेद मिन्ने, उन्होंने वहचानकर कहा—

"कर्ष वसे का रहे हो ि श्रीरक्ताते। हिना सम दिवसस्या पता जो देने बाको ।" वरिक्तातिये समुद्धं नेत्रोंने करा---"शाहमाहेव! इस समय सो बाब केवर सामा सा

रहा हूँ । धरनेसे चक्ते कानेश हर है वरना मैं खारको ज्यारे प्रमुख चरित्र कारक सुनाता ।" याद सादेव सिद्ध कडीर वे, उन्होंने बहा---

"विवासको र वर्रा मन र में सुनों वर बारा (व्हर्ग) हेना है। इच्चीरत वर्ष्य देनेने वर बाहरूरा के साराय की सब बोग करता मन करेंने। इसमें बाहरूरों में में वर्ष बाहरों कामडी गुरामों का बाहरता, तमे दावरें दिने दिन्ता, तुम को में दिवारणकी विवासन सुनारे को दुनों कर किस बाहरता है?"

मारे दुनिया बर्डशाने बुरम्बार । तीम स्परिया वह मुरीदावर बहुन्द ।

स्वर्षात् । व्हाराम केयन संबद्ध का वे तेन पिते । व्हाराम केयन संबद्ध का वर्ष केन की ॥

"प्रमा" (का कि में नहार हो कि सम्माने करन की हुएंग हैं।" देनों पीरामी का करें। मोडी ओक्स हैं। करें। सम्मार्थी करा सेवाल करें। को सम्मार्थी करें। की कियाँ किसमकार सोहित होकर विद्यावर हुईं थीं और धतुषपञ्जे समय देश देशके राजा और अहाराजा किस-प्रकार उनकी धतुबित द्वियर बेदाम विक सबे थे। इन्हीं सब बातोंका सविकार वर्णन करते रहे और खानन्दमें सम होकर यह गाने करो-

घरणीका भार हरने, यही राम अब बने हैं। पापीका धन उड़ाने धनदवाम अब बने हैं।। - बिणु ! यही निहतनमर ! यही नीतकण्डवारी। यही पारमद्ध ईसर! यही राम हैं सुरारी।।

याह साहेब मल हो नथे, उन्होंने अपनी सिदिवाँसे व्यारेकी कथा सुनानेवालेकी कुछ सेवा करना चाहा। सीर बोले----'बाह!परियहतती! बाह वाह, खुब सुनावा।

'श्रप्द्या ! माँगो स्था माँगते हो !'

पविष्ठतजीने ख्य सोच विधारका सीन चीज़ें आँगों--

(२) मेरी खुषु क्रमायास हो। श्रीर (३) श्रीरामजीके श्ररकोंमें मीति हो।

"बरदा को, दो बरदान समी देता हूँ। तीसरा अब फर मिकोने सौर दिखदारकी कार्ते सुनामोने तब हूँ या।"

यही तो धमली थीज़ थी। पश्चित्तजी धपनी भूतपर ।धनाते हुन कि मैंने पहले यही वर्षों न माँगा, उनसे बहा, 'फिर मैं धापको कहाँ पाउँगा ।'''

"बारके कूचेमें। मेरा थार तुन्हें व्याचकर मेरे पास हुँचा देगा। चप्या, चय कामो।"

षयिकत रेक्चग्र विदा हुए। शाह साहेक मूमगे-कामते नेप्रक्रितिस मध्याना गीत गाते हुए यारके कृषेकी तरक क्षि—

> दिरुदार बार प्यार करियोंने मेरी वा जा । काँसे वास गरी हैं सूतत मुझे दिखा जा ।।

्र)

प्रिक्तं महीने याह साहक माक्कसामाँ पहुँचे की।

इसकी मसीन्हों नगरे (इसने दिसकी महक जन्मवाके

११ इस्तामाँ पहुँचनेपा उन्हें बीत क्षामी माजन्य मान

बा सरसा वर्षन और कह सकता है वि नगी स्थास

क्षामार होना हुएंडे कार्य बीतामार्थी स्थासना

खग गये । इतनेमें एक समन वहाँसे निकले । उन्होंने शा सादेयको सकेला देखकर कहा---

"शाह साहेव ! चहेले कैसे बैठे हो !"

सहस्मा बसाबीका च्यान भंग हो गया। उन्होंने किसे मकार चयनी विरह-वैदनाको रोक और कोपको ग्रान्त कर कहा----

"अभीतक तो अकेसा नहीं था, घरने दिवदारे ता मज़े जबा रहा था ! हाँ, तुम्हारे था जानेसे ब्रह्मका धार टूट चवा और मैं खकेखा हो गया !"

यह उपरेश-भरे यचन सुनकर वह अत्यन्त स्रीत हुच्या । हाथ जोड़कर चमा सांगने सना ग्रीर प्रयामकर वश गयर ।

(1)

धनन्तर सहासा बसाबीने हृष्ट्याम्की पेरिक्रमा बरोते विचार किया । भागवन्-भक्तोंची यह कार्य कितना सुकरा होता है, सो तो कोई अक दी जानता है । बारवर्ष वीकीनोंकी हरका क्या पता है सीबाना स्म सारित्रे स्थाना है—

न मन बहुता सिर्दे कून, या बाहार में गहना। मनाहे आराडी दोरम' परे दौदार में गहना। व्याप्त में वर्षे हो सस्तरपंची भौति गतियाँ मोर बाजानि वर्षों पूपता, असे मेमका चलका व्या गया है, में दिनाम

एक दूसरे सन्तका कवन है---ओं अमैले कि निशाने केफ पाये त् कुभद !

भी अमेनि कि निशान कुछ पान तू अन्य । सारहा सिज़दए साहेन नज़रा मुनाहिर बूद ।।

चर्यंत्—

बरम मुहारन तद बद अंदित मृति। सदा रहेगे समन ब्रेमी चृति।। (हास्त्री)

(तर्ग) व्यवीत् प्रमुवद्-व्यक्तित्र भूमिश्री सहिमाश्री क्या वर्ग है ! वह शो अगवद्-अव्यक्ति सहा कव्यतीया है !

वही सब मोचने चीर यह बहने हुए--वह-सिरोतरमें बैंजिंड बहिनो हंगि केत नहीं है।

नेई-सिरेश्समें बैंगिडे बड़िशे होत कर महा व -बायन्युर्वेड सबोध्यानीची गतिवाँगे विचाने स्रोत हव से स्वापना सुर्वेड

दिनों समोध्यातीये अन्दिर चोडे ही में बान्तु बन्दे और्त

बदा दुःख हुया, परन्तु नियम है जो जिसकी याद करता है वह भी उसकी वाद करता है। कहा भी है-तुरसी कमरान जरु बसे, रनि शाशि बसे जकारा । नी जाके मनमें वसे, सो ताहीके पास 11 चौर भी-जिसको इन चाई न चाहे बया गज़ाल । दितसे लेकिन उसकी चाहा चाहिये।। भौर भी-भसर है ज़जब-उत्सवमें वो खिलकर आही जावेंगे । हमें परवाह नहीं, इसकी, अगर बह तनके बेठे हैं। यन्तर्मे सद उनकी वेचैनी बहुत बढ़ गयी सब बह बाकासवाची हुई~ 'ऐ बसाबी, करद का ! में तुमले निवानेके विशे वदप रहा हूँ।' इस भाकारावायीके भुनते ही सहात्मा वसाजीका यरीर पुषकित हो गया । सामन्दके सारे उनके नेत्रींसे पाँचु वृजक परे । उनकी क्षानसे बरवस निकल पदा--पे कि दर देख जानदारी जा मुक अजन मादनम कि दरनाई।। सर्व राहित सब उर पुर वासी। (4) धनन्तर महातमा बसाबी धीसरयूत्रीके किनारे गये। निमल कर कारिको देखकर प्रेमसे परिपूर्ण हो गये। अला भीर पत्रकी उन्हें सुधि नहीं रही । गुददी पहने 📭 ही बीच भारामें कृत पढ़े। बाटपर खोग स्नान-क्यान कर रहे थे, ९६ देख उन्हें भावर्ष हुन्ना। सर्वोने बाना कि ज्ञाह साहेब हर गरे । वह मनुष्य महत्रद कृत पड़े । स्वर्गहास्थाट बद्मनदश्च शादि सब बान बाबे परन्तु उनका बता न बना। भाषादका महीना या। सरयूजी वह वेगसे बह रही थीं। सब स्रोग निरास होकर येठ रहे। सन्तर्ने एक पहरके पद्मात् वे गुसारबाटपर निकते । उनका सम्पूर्ण शरीर भीवा था, परन्तु गुरुको स्वी भी-गर बदारिया स्वदंव बज़दंध इष्टकृ ।

रिश्तप दलक्शां न गरदद नम ॥

इनका प्रवेश होना एक असरभव बात थी। इधर प्रियतमके

दीदारकी बाजसा, उधर पुजारियोंकी दुवकार । इन दोनों

प्रविद्वन्द्री स्वितियों के संघर्षण्ये विरद्दी सद्दारमाजीके हृदवसें

दर्गन-सामकी ज्वाचा और भी खोरले धपक उठी। उन्हें

धर्यात् प्रेम पमा जो नुहुई सरिता माँहि। पकडु वाम मुद्रहिको भीते नीहिं।। -विमादक बाह साहेब किनारे खड़े होकर इधर-उधर देखने क्षते। करहींवे उस समयके दरवका वर्षान इसप्रकार किया है:---दोश रक्तम बसुय हम्मामे। दीवम आँवा इके दिलारामे ॥ भावके दिस्तरे व वेबाके। नातुके महरुले गुरु अन्दाने ॥ सरो कद या समन नुप। सरकेश सुँ सुरे वसुद कामे ॥ तुन्द ख़ाने व मरदुम आज़ारे। मस्त चरमे व सागिरे आशामे ।। गाह दर बहस हीता परदाने । गाह दर इस्म इरवा भरतामे ॥ क बन्नो जुरफ दुक्तो इस्लाम ॥ तानवर्जंद ज़रुय

आशिकॉरा हमी नमूद वर्षों। कुँ बरा दीद रूप सुद बहवीद । भुत्तहैयर चुना शुदम किन माँद । वमन अब होश दरगहे नामे ।। मी नदानम कि अन्दर्शे हरत । व 'बसाही' क दाद मैगामे ।। कि बचदमाने दिक मुनी जुड़ दोस्त। इर वे बीनी नदीं कि मतहर ओस्ता। অয়বি गयउँ काल्ड में सारिता दीर । देशेउँ सुसद एक मीत चीर ।। चनुर मनोहर बीर निशंक । दाशि-मुख कोमत सारंग अंक ॥ सवर दर्जाने सनासित गाता । नय विद्योर गति गत्र एखदाता ।। चितवत चोख मुक्टिबर बाँडे । नयन मरित मद मधुरस छाहे ।। कबहुँ छवियुत मान जनाने। कबहुँ कराथ करा दरसाने।। प्रेमिन केंद्र जस परै तसाई । मुख ध्वि वैदिक धर्म मुहाई ।। शेलक कथ केवित वपुरारे । जन इसटान धर्म चरि चारे ॥

मम दिशि रुसि मू पंच सँमोरंग। छवि मसाद जनु देन हैं कोरंग।
"फिज परिज फिज मन के के पता। गुण नुण किसी पर्यक्र-देशा।
पढ़िं जानोतिहि छिन मोहि जोही। हो संदेश ज्यापय मोही।।
विद्यातम प्रमुख तिके कान, जनि देशिय सिमकी 'पक्की'।
जो देशिय महीमान, तास प्रकाशि जानिये।।

महात्मा पसाजी कुष दिन स्वग्रहार और मणि-पर्वत पर रहे । फिर वे प्रमोद-चनको चले चाये औरवर्डी रहने लगे।

(स)
परिवत देवचन्द्रजी जाह सादेवको खोजते हुए
स्रायोग्याजीर्से आगे, पत्त्व थे गहीं सिखे । एव उन्होंने हुए
स्रायोग्याजीर्से आगे, पत्त्व थे गहीं सिखे । एव उन्होंने हुए
स्रायोग्याजी के पत्ति होते ही वहीं होंगे, आ जायेंगे,
सामायाजी कथा वाँचना सारम्भ कर दिया। कथा खुव असती
थी। सहस्तें मतुष्य बूच्छे होते थे। एक दिन सव कथा
समाधि हो जुकी और हवन होनेके उपसम्ब पूजा थह जुकी,
सव परिवतनीने उदास होकड कहा—

'रंग पीठे पड़ गये जिनके किये ।

ने शाहजी आये न दम भर के लिये ॥"

ह्सी भीचमें ग्राहसाहेब भी था पहुँचे। व्यासासन छू जानेके मपसे जन्होंने दुरवेही पाँच दाने पबके पुराक-पर संक दिये। दाने चनकदार थे। पारवेर्वरियोजी बीनकट परिवत्ततीकों दिये। प्रधारमें में सेनोके थे। यह देखकर खोग दंग रह गये। परिवत्तनीने व्यासासनसे उत्पक्तर स्रीभादन किया और सपने खानेका कारण कह सुनाया। ग्राहसाहेबने कहारी

"बरका ! यहाँसे निपटकर जमोद-वनमें वेरके कुछके | नीचे बाफो !"

यह बहुबर छाह साहेय चखे गये। विराहतकीने दोधी-पत्रा बाँध, क्षेतामांसि दिद्या हो ममोह-यककी शह जी। इन्ह क्षेतामांने पीवा दिया पान्य उन्होंने यह बहुबर हि, इन्ह क्षेत्रा रहनेसे आहसाहेयके दूर्यंग नहीं मिलेंगे, उन्हें जीवा दिया, इत्यर भी एक पानि चुचने-पुचने पीचे चला हो गया। परिदारतांने ममें मिले तम ने वहने कुछ नीचे शोज की, परिदारतांने ममें मिले तम ने वहने वहने चला वस्तु हसार व्यक्ति को पीने-पीने माणा मा, निराह केट खीटगाया। उत्तक काते ही शाहरताहेय केट कुछ भीचे सम्बद हुए। मुहत्तराहों हास कोइफ दिवानी की बीट कहा- "शाहसाहेव ! भागकी कृतासे पुत्र-रन से निव गया, सब मेरा इन्दिन सीसरा वरतान दीनिये।"

"सम्बा ! जो कुल कल क्यामें पाया है, उसे इन करके रातको इसी स्थानपर या लामो परना मार्डि सरह किसी भीरको चपने साथमें मत बाना।"

(1)

पविष्ठतानीने उसी दिन सय तुल दान कर दिना। साँक होते ही मिखारी बनकर शाहसाहेबके धाम्रममें पहुँचे धीर विमारी की----

"से जावका सेवक हाजित हूँ।" सहात्मा वसाबी उस समय नेत्र मूँदे हुए भगवार स्रोतामचन्द्रनीकी चन्त्र क्रप्तरिका ग्रसीम कावन्त्र पूर परे थे। उनकी उस समयकी चवस्थाका वर्षा करते हुव किसी

कविने कहा है— तुसमें फ़ना हूँ और तुसीमें फ़ना रहूँ। आजाय तें नजर ती तसे देखता रहूँ॥

सहात्माजीने चाँचे मूँदे ही मूँदे कहा-

"हाँ! बागवें शिष्या, कहीं!" मामुक्षीमाने कृष दिल दरिम।

वस व दुनिया बदी नमी आरेम।।

बुळ बुहानेम कड़ कड़ा व कदर। ओक्तादा जुदा ज गुरुज़ोरेम।।

मुर्ग शाके दरस्त टाहू तेम।

शोहरे दुंरें गंज इसरोरेम ॥ काइसाहेब कहते जाते थे और परिवतनी दुवारे

आते थे। धान्समें शाह साहेबने कहा — "कबता! धार सती चल्लाह हो जा।"

"शबदा ! यथ वसी शक्ताह हो जा !" पश्चितजीने कहा—

"मैं बाएका सेवक टेक्चन्द हैं।"

"ही ! दी ! चरचा, चर्चाराम हो जा।" चयपविदल टेक्पन्ट्यो भी व्यक्ति तह मन हो गरे। जनवर मान "व्यक्तिराम"पम। मानुकीमा 'बी तीन हैं राझ्य वे चरारी जी रूपविके यह विद्यार हो गरे। वनवा बगा हुण 'दीवाने-व्यक्तिमा" यद भी चार्रकी रिटो देवा जा। है।

सहात्मा बसाखी प्रमोदवनमें दहते ये और परितर बजीरामत्री मणिष्टपर विचरते थे। रात्रिको सब स्मी दोनों मिज आते थे सब 'खुन बन आता जो यिछ बैठत दीवाने दी' वाजी वहावत चरितार्थं होती थी।

इष दिन पत्रात् भहारमा बसालीने जीवनवात्रा समाप्त कर साकेतवास किया, उनकी समाधि उसी वेरके नीचे घरतक सीज्द है।

(10)

'मामुकीमा' नामकी प्रसिद्ध चुलिका महात्मा वसाजी-दीकी निर्माण की दुई है। आधीरात्रिके समय वह कविता सनावास ही उनके मुँहसे निकल गयी थी। बूतरे ही दिन खखनऊके कीलकालकी समृतिसमें पीरवादा 🔎

नबीगाइने इसे गाकर सुनाया । खोगोंने बहुत पसन्द किया । सब बगह प्रबार हो गया, यहाँतक 🏇 वह अकतवाँमें आरी हो गयी और पाठशाका झोंमें स्वयं भी पडायी जाती है। एक दिन मौद्धाना नजीर. छाइ साहेबसे मिसने

मापे। उन्होंने बड़े मेमले अह कविता सुनायी। शाह-साहेवने कहा, मैंने को किसीको इसे क्रिलाया तक नहीं ! भारको कैये मास हुई ? भीकाना साहेबने खलनऊ कीववाबकी मजविसान सुनकर बाद कर खेनेका सम्पूर्व वृत्तन्त कर सुनाया, शाह साहेबको बढ़ा बारचर्य हुवा ।

धरने दियतमका रहस्य समस्कर वे चुप हो रहे। एक दिन जनकपुरमें स्वामी जानकीवरशरयाजीके मुखसे षनादास ही यह पद निकल गये थे-

बित है गयी जुराय जुरुक़ोंने रुटा ॥

हम जानी दे हपासित्व है. तब दनसे मई प्रीति मटा ॥

वित्ही अनको इस उपमावत करत नवे नवे अजब करा ॥

प्रीतीरता । प्रीतम बेदरदी

साँड़ि समें कित नयो भारत ॥ रन्होंने यह पह कियोंको क्षिताया भी नहीं या। परम्यु बर दे बरोध्यात्रीमें बाये तो वहाँ भी बही पद क्षीगोंकी गाने सुना। दन्हें बदा बाझर्य हुव्या।

बीमाधदेण्यप्रतिमी बगहायजीने खीटने समय मार्गमें कोरीबादबीडे सन्दिरमें दहर राये र प्रयादमें कीर भी मिसी यो। उसे पाकर वे अपन्य प्रयक्ष हुए। की चाहा कि जुन भीर मित्रती सी पाने परन्तु संबोधके कारण सींग नहीं

सके। रात्रिको श्रीगोपीनायजी।स्वयं भएडारेसे सीर खेकर दनके पास लाये । वे शत्यन्त समित हए । श्रपनी जिहाको धिकार देने सगे । सनन्तर हाथ लोइकर प्रार्थना की---

''बीवनधन ! इतना कष्ट क्यों उठाया ?'' सववानने कहा, "क्या तुसने नहीं सुना है सवदान वीक्रप्यजीने चर्जुनसे क्या बहा था -

हम महनके ! मह हमारे ! सन अर्जन 1 पारिता मोरी बह इतं दस्त न दौर ।

हम मकनके । मक हमते । इतना कह वे चन्तर्थांन हो गये।

माघवेन्द्रप्रशीजी प्रतिष्टाके भवसे शत्रिहीको बहाँसे आग सब हुए । और होते 🚮 वे इस कोसपर निकक्त भाये । वहाँ गाँववालोंको यह कहते सना कि गोपीनायत्रीने रातको सीर पुराकर माधवेग्द्रपुरीजीको पवाई । इन्हें बडा आधर्प हमा । बंगासियोंमें बहावत है---

प्रतिष्ठार अये प्रधी मान पाटगर्मा १ पुरी प्रतिष्ठा आने जाय गाँदाइया ।। चर्यात जिस प्रतिहाके भवसे साधवेग्द्रपरीजी भागे यह प्रतिहा उनके बागे बागे दौड़ी।

पातःकाळ सन्दिर शुका । सगवान्**के वर्धोपर सीर** देखकर सबको ब्याधर्व हवा । भगवानने श्रीरकी चोरी चौर दम चोरीका कारण प्रकट कर दिया । दमी समयमे दनका 'सीरचोर' गाम पदा ।

महाप्राधों के शरिवर्ते थेसी ही विश्वविदार्वे होती है। भियतम अभके इन रहस्योंको वडी समस्य सकता है को इन रहस्योंकी बातें जानता है।

धन्य है महामा बनाची, चारको चीर चारके सजीविक प्रेमको विस्त वयनकासमें भी सापने सगवान श्रीरामचन्द्रजीकी विशव अधिका भारताहर करके हिन्दुसींकी चाँतें कोस से । बाद हरिसन्द्रवाने ग्रंड दी करा है-

इन मुसडनान इतिकान पर क्षेटिन दिन्द्रन करिर ॥

बोबो यक धौर डबढ़े प्वारे भगरान विदास रामचन्द्रमीको कर ।

श्रीरामचरितमानस-महिमा

(कैएइ--शिकोचनप्रसादओ पाण्डेय)

जय 'रामचरितमानस' पवित्र , जय शान्ति-सत्या,जय धर्म-मित्र । जय कलिमें शतुरम मुक्ति-पन्य , नव कोडि जनोंका एक मन्य॥ जय प्रजा प्रेम सुरा शान्ति नीति , जय राज-मिक्त शुन्ति दान्ति नीति । जय प्रक्षचर्य यट-कान्ति नीति , जय हरण मूर्खतान्त्रान्ति नीति॥ जय रामराज्य महिमा महान । जातीय उच्चताका विधान। जय आर्य मूमिका दिव्य गान । जय आर्य-विजय-हर्गमिमान ॥

जय नीति-निलय, जय पुर्वपदा , जय सत्य-सिन्धु जय शील सदा । जय मध्य भक्ति-साधन-विवेक , नव कोटि जनोंका ध्रम्थ एक॥ जय पत्नीयत सत्कार्य-नीति , जय जप पातियत भार्य-नीति । जय शुभ शिक्षा आचार्य नीति , गो-द्विज्ञ-सेवा अनियार्य नीति॥

जय जय रामायण गुण तलाम, जय भ्रान्त हृद्य विधाम धाम। जय भाषा-भूषण सुधा-माण्ड। जय राम कथामृत सह काण्ड।

जय जय अति उच्च समाजनीति , जय जय जग-वन्दित राजनीति । जय विश्वप्रेम-रत धर्मनीति , जय दुष्ट-चलन-वत कर्मनीति ॥ जय दुराचार संहाटशकि, जय सदाचार उद्धार शकि। जय पर-पीड़न-उच्छेद शकि, जय हिंसफ-रिपु-रण-मेद-शकि॥ जय पूज्य गुसाई यरोहेंद्रः जय रामचरण-रत दिष्य वेद्र। जय महाधीर पूजा प्रमाव, जय जाति देश गीरव महान।

जय स्वाभिमान स्वाधीन नीति , जय पूर्व ज्याति प्राचीन नीति ।-जय जयति स्वतन्त्र स्वराज नीति , जय प्रजान्तन्त्र विधि राजनीति॥ खय जयं स्वदेशः छङ्मी ममत्यः, नात्माभिमानं रक्षाः समत्यः। जयं बलः प्रचण्डः बलःनारा तत्वः, जयं स्वाधीनताः (सुराजः) सत्व॥ रचते जिसका पूजा-विघान नर नारि वृद बालक सुजान। पाते नैतिक शिक्षा पविदे उञ्चत करते हैं निज चरित्र।

जय जय स्थरेश अनुराग-नीति, जय सत्य हेतु तन-त्याग-नीति। जय विषय-विकार-विरागनीति। जय खारों धर्ण विभागं नीति॥ कविश्कुलशुद तुलसीदास धन्य , नव-रसमय वाक्य विलास धन्य । घर घर धर पुण्य प्रकाश धन्य , भय रोग शोक अधनाश धन्य ॥ श्रति शुप्तफर है जिसका प्रभाव। मिटते जिससे सब मेदभाव। गाते जिसमें एकतार्थ। बाईस कोटि हिन्दू सहर्थ।

जय पितु-भक्ति आदर्श नीति , जय स्थाग-शक्ति-उत्कर्ष नीति । जय भ्रातु-प्रेम यर हुएं नीति , जय पावन भारतवर्ष नीति ॥

हिन्दी कवि-कविता-कीर्ति-केतु , जय सत्य-ग्रोळ-सद्धर्म-सेतु ! जय भारत प्रतिमा मृतिभान , जय आर्थ धर्म-प्रतिमा प्रधान ॥

पायन होता जिससे स्वमाय । रहता म सीस्यका फिर बमाय । कहते जय जय श्रीरामराव । बाईस कीटि हिन्दू समाव ।

जयसरलसुवोधसुपाठ्यकाव्य , जयहिन्दू धर्म सकाट्य काव्य । जय प्रेमसुण्यशुचिन्पेश्य यस , नय कोटि अनोद्या प्रत्यनसा॥ जय देश देश विख्यात काध्य , जय द्वीपान्तर प्रध्यात काध्य । जय विश्वप्रेम-प्रियता-प्रथत , नय कोटि जर्नोका प्रन्य-रहा ।

<u>त्र</u>लसीदाससे

(रेखक--बीमेहनराज्या महता 'वियोगी')

हुआ अवतरित समेह तुम्हारा मूने छुआ बना अनन्तका मानस-रूप-किनारा ।

अव्यापक-सा व्यापक यन है जिसके निकट वेचारा ।

जिसकी नेक मुस्कराहटपर थिरकें रवि, शाश, तारा ॥

जिसने कई तुच्छ डेगोंसे नाप दिया जग सारा।

'स्वयंप्रकाशः स्वयंवद्यः' कह श्रातिने जिसे पुकारा ॥

जिसे सोजमे जाकर इस मनने अपनापन हारा ।

उस निर्मुनपर तूने जाकर अपना तन-मन बारा ॥

है तलसी, तेरे मानसका शासक तरा प्यारा ।

सवरी. गीघ लोजता चलता वन-वन राम हमारा ॥ हुआ अवतरित सनेह तुम्हारा ॥

ं रामावतारका महत्त्व

(हेसक-स्वाधीया धीनिवेद्यनन्त्रमा)

घटन-घटना पटीयसी अतक्वे-नाटक-नटी महाशक्ति महामायाके विज्ञासस्यरूप भनन्तकोटि महापडीमेंसे युक महायडके

है. लगदम्बाके भाषय विना साकार-मूर्तिमें भगवदाविम मर्लंबोक्में कर्म करनेकी स्वाधीनता-धासम्बद है । सृष्टि-स्थिति-प्रवाद करने का स्त्रमात्र बगदम्या माप्त मनुष्य अब उस प्रकृति-भावाके ही है। चेतनके बाबय विना माया हुए कार्य न कर्पंगतिशीस प्रवाहके प्रतिकृत सर्पांच कर सकती । इसीकारच मायाके कार्यका चारोप चेतन धर्मके प्रतिकृत कर्म करने जगते हैं, तब धर्मकी ग्लानि हो करके शाधोंमें भगवानुका माहायय वर्ष न किया गया बाती है और क्रथमंका सम्युत्यान हो उठता है। ऐसी

· धवस्थामें सञ्जरतांकी रचा, पापियोंके विनाश और धर्मकी स्पान्त करनेडे जिपे भगवद्यतारकी अथवा अन्य शब्दोंसे बगमननी मगवतीके मनतारकी मानश्यकता होती है।

मगवान् भीर भगवतीमें सभेद है। मायोपहित चैतन्य-मगरान् और महामयी क्षाद्रम्या भगवती हैं । बापने बनाये हुए बन्त्में कर करने है डिये स्वाबीनता-प्राप्त बीवोंके

eldig ma

सगवदवतारोंके साथ काबी-तास भादि रुचियोंका सम्बन बतलाते हैं उसका सामरस्य भी इसी सिदान्तसे हो आ है। हमारे शास्त्रोंमें कहीं मतभेद नहीं है, सो मनमे श्रवीत होता है, वह दार्गनिक-शानके धमापदा क्रम्ब है।

करनेके जिमे किसी केन्द्रविशेषमें जगदम्याका मारुमाँव

मगवद्वनार-नामसे शमिदित होता है। चेतन निराम

सो बुक्तियुक्त ही है। जगद्भ्याके महामयी नामर्ने ।

दोनों सार्वोद्धा समावेश हो बाना है। शकि-उपासकः

सकत सवतारोंकी अपेदा सनेक विशेष महत्त्र श्याता है। इस मेरामें सीरामके गुणालुवाद रूपसे इम उन महत्त्रोंका किमिण मित्रपुदन करनेकी चेल करेंगे।

धादर्थं सामने होनेसे मनुष्योंकी विषयों वायन्य सुभीता होता है। श्रीरामको सदावरोंका राजाना कहा बाव वो भी धायुक्ति नहीं होगी। बनके चरित्रते मनुष्य सब तरहकी सद-रिषण मात कर सकता है। मनुष्योंकी सद रिष्पाके नियं नितना गुरू-पदका कर्य भीरामचरित्र कर सकता है, उतना सन्य किसीका चरित्र नहीं कर सकता। श्रीरामका मर्याव-युरुरोक्तम गान हुसी कारवा व कहा है।

श्रीरामकी यासखीखा और विद्याग्यास चतुवनीय भौ (यासकों के सिये अनुकरणीय है । उनकी गुरुमिक बादराँ गर-अकि थी, जिसके प्रतापसे वे सब विधाओं में नियुक्त हो सके थे । विश्वामित्रजीके साथ जाकर उनकी सेवारूप गुरु-शक्ष्यासे ही वे पता भीर चतिमता विधाको माम करके धनुर्विद्या थीर यस शबकी विधामें पारङ्गत हो सके थे। विश्वामित्रजीसे दन्डोंने गर-भक्तिके कारणही पर्मशासकी शिचा पौराणिक-कथाके रूपमें माछ की थी भीर धर्म-सद्दर्क समय कर्तन्य-कार्योकी शिका सी-वधरूप तारका-वधके रूपसे माप्त कर चार्मिकमात्रके लिये एक चाटर्स स्थापन कर दिया है। चटिय बालकोंके लिये बालकपत्रसे ही निर्भीकता. बीरता चौर पापियोंको सम्बन्ति दवड देनेकी प्रकृति होना चावरपक है। इसकी श्रीरामने विभामित्रजीके साथ जाकर, बीरतापूर्वक सुबाहको मारकर भौर मारीचको वयह देकर कार्यतः बतला दिया है।

योगवासिष्टकी कथाके बाधारपर कहा वा सकता है कि बाइमें पुरमक और मार्च्य वैराज्यसम्ब कीरामी वस बारिमन रूप सारिमन रूप हो वा सारिमन रूप हो सारिमन रूप हो सारिमन रूप सारिमन

चावरयक्ता ही नहीं होती । इस धवरमाने प्रधान उदाह विदेह सनक हैं ।

पिवा द्यारमकी मिठिशाको सन्य करनेके विषे क्षंताले केवल दारम-शोका ही त्यान नहीं किया, करिश वनवारक करिन मत पासन करके सामको पिश्रमिको पासमा मताबा दी थी। विष्टे देसा नहीं करते हो। तिराके करके प्याँ रक्षा नहीं हो सकती। श्रीरामने माता श्रीकराने कहा था, कि पिता-माताको पासन शिद्रक किसे दिर्ग वासन करते समय शिताको सामा श्री इनके विसे शिरोवर्ग हुआ करती है। येसे पाने-सहड़ समय करने क्षंत्रक निजयकर नसको कार्यमें परियत करते हुए बीतारी वैत्रकी क्षेत्रस्था सीमान्य सिद्ध कर दिना है। वैत्रकी क्षेत्रस्थानस्थाने सीमान्य सिद्ध कर दिना है।

श्रीरामने बादरों आतु जेम बरने तीनों भाइनों है सार सारी रामायवामें बहाँ-बहाँ बतबाया है, यह बहुत बार्ग है। सब बनसरोंमें यह बादरों आतु जेम बहुत्तर राहि।

धीतमने सोताका 'कवोश्यामं 'परित्याग कर दिया। धपिक क्या कहा काय, श्रीराम एक जादर्श मानव रूपसे धरोव 'हुए थे।

ष्टिनहर्से भरतके ब्रानेपर दशरफ मेनियाँकी समार्गेके एक मर्गोको धनकारी हुए भीरामने नेसा राजधर्मका कार्य मिताइन किना और उसके अनुसार कार्य किया, कर एक गाएँ राय था। ऐसे चर्मसङ्करके समय इस मकार नियं कमा एक चार्यों नर्सिका ही कार्य था, निसको भीरामने बहत रीतिने निमाया।

पन्नतीय सीताको शायपी सुनायेको येहा करते हुए पर रागरके निव वहासुका शार-संस्कार कीतावने स्वर्ग किया चा कार्य हैरसारकार कीतावके अहस्यको क्षरिक उरस्यक बनानेशावा है। अयोक अनुस्यको अन्तर्ग्य सार होनेस भी देती हो एकाशुराको हुत्ति श्वानी भारि, हात्ते उसका सारण की बहता है।

कान्युरूपार ए मुर्गावते सत्य करहे शीतागरे कपूरे हारको क्षेत्रम सामदक केमा निमामा सो तो पुरू दिव्य रहा है। शीतम सामदक केमा निमामा सो तो पुरू दिव्य रहा है। शीतम मुर्गावते हेममें बन्यान साम तो है देखाँ भी वैरी वर्षण सामद करते ने कींद्र सुर्गावते भी मिर्गावती साहब कारोजें पुरि माई करते थे। सीमामदी सामद सामदेक सामदक करते का इस्तियने दुस्य विकास किया, तक कान्युको बस्ते पाल नेतकर सामदेक स्टाटावा था—

सनंव तिष्ठ रामेन्द्र १ मा वार्तिवयमस्वताः १

न स सर्वितः राज्या देन नारी हती गयः ॥ हे राजेन्द्र सुमीव ! करनी अधिजावर दर हहो, बाबिके मार्गेष करवस्त्र न को, वह मार्गे तुम्बले खिले सञ्जीवत भी है जिल मार्गेशे बाबि मारा खाकर गया है।

न्युर-तरार विभीपकर भानेगर राजवारी श्री हुन्द-पर्व हुन्तारण होकर क्रिसीट भी उसकी भावत देनेकी सम्बंधित हुन्दि भी उसकी भावत होनेगर मान्त्री बरी ही, परन्तु भीरास्त्री अनुका आता होनेगर भी भाग पर परत महिद्द कर नवाजाते हुन् उसके बाकर देवर राज्याज-वणजनाकी सामान्या नवाजा होने हिन्दार कामान्य केरे कराव होना है और पी सामार्थ हैं। एक बता है उसकी में सक्त मानीसामार्थ रिर्म करा है नहीं महान है असकी में सक्त मानीसामार्थ रिर्म करा है नहीं महान है हम सेना सन्त्र है। धनेक धर्मीक सब्हट उपस्थित होनेपर ठीक ठीक निर्यंप बरना ही बार्ज मानवका स्वरूप है। श्रीरामके बरिवर्में बहीं भी तस स्वरूपने उनकी प्युति नहीं हुई है। रामायपके क्वेंसे पर्-पर्पर यह दरव प्रायेक विचारवान् व्यक्ति ऐस सक्ता है।

संस्थात है।

मानव-विश्वको बतताने के क्या करते थी तामके विश्वमें
कई बलद कपीरता चापी बाती है, जैसे सीताके निर्दर्भ रोना वार्षि, परन्तु बावतमें वह कपीरता नहीं है क्योंकि उस वाधीरतासे क्योंने कोई वर्षेयंका कार्य गई किया था। इससे मनुष्योंको ठिका बेनी चाहिये कि कैसे भी कड़का समय बादे, बानवंशिकों कभी न दोहें। वह कम्पर्यंति

ही प्रचंदा निर्वाद का सेगी। बावमीकीय-रामापयके उत्तरकायहमें क्या है कि एक तिन श्रीराम किसीसे पकान्तमें वातचीत कर रहे थे। कोई कावे नहीं, इसके खिये खबनवाकी पहरेदारके रूपमें खबा कर दिया या धीर कहा था कि जबतक मेरी बाजा न हो कोई न चाबे, यदि चाया सो दश्ड विया आयगा। इसी बीचमें दर्वासाने चाकर सच्मणसे बहा कि, 'चन्दर माकर श्रीरामको मेरे कानेकी सचना दे हो ।' सच्मणने चपने दपदकी परवा व करके दर्वासाके शायसे शायको बचानेके लिये बीरामको इतिला कर ही। उसने सोचा कि दुर्शसाड़ी प्रमस्प्रताकी श्चेचा श्रीरामको चत्रसद्भतः विशेष मयानक नहीं होती । श्रीरामने बाजा बजहन करनेके बपरापर्ने स्वयालको श्रवीच्यासे चले आनेको करा । रामधर्मके शतुसार चाहे राजपुत्र ही क्यों न हो, धपराध करनेपर वह दबहरीय होता है। राजधर्मके सामने प्राचयतिम साई सक्ताबदी जीरामने इस भी पावा नहीं की। इस कपानकरे थीरामका चावराँ शाउधर्म-प्रतिपाचन करना सिद्ध होता है ।

इस देसमें बीरामदे साथात्व परारात्रिश्च सावाद्येचा को गार्थ है। उनके घरनारिवरक प्रकाशकों नहीं दिसा गया : इस घरर दिनमा भी विचार किया वापमा, विचारत्वर व्यक्ति समस्य सर्थेगे कि सीरामास्वास्थी महाच क्याद्यनीय के भी उनमें सनुष्यकर्थ। विचार इस्ट मान्यूमें मिल सर्थात्रि है।

बोस्रो मर्योदा-पुरुषोचम सीरानकी धप !

रामचरितमानसके निदींप शुक्रारकी (वेतक-सेठ थोक्टहेगालका पोहार) .

साईबीको काम्यः प्रतिमाका चमकार भक्ति, शान और वैराग्यविषयक वर्ष नमें महत्त्व. द्व होनेवर भी बादश महत्त्वहा बारख नहीं बहा का सबता,क्वोंकि वह उनका सर्वाहीय घनुमून और बर्व'तीय मधान विषय या। किन्तु उनकी सर्वतीवाही सरस्वतीका वर्णनातीत महत्त्व तो यह है कि उनका महार-स-प्रधान वर्षन भी पड़ा ही मर्यादार्थ और विचाकरंड है। गोसाई बीका चैता सेव्य-सेवक-भाव धएने डपास्य मगवान् रसुवायजीमें या दसींडे धनुरूप उगडे द्वारा घरने उपास्य हैगडा ग्रहारात्मक क्रांन मर्गाप्तीचित किया वानेपर भी बह अव्यन्त मनोमोहक भीर हरवाही है। इनके ग्रहारामक बल नही हवनाके बियं वित संस्कृत-साहित्यके किसी उत्तर कविकी गरेपका की बार तो उनकी खेखोंडे महाकृति काबिदास ही उपलब्ध हो विषय है। महाकवि काजिदासने सं

सकते हैं। जिमनकार कांद्रिशास संस्कृतके प्रसिद्ध करियोंमें द्यमादव है, बर्सी महार हिम्बोडे मसिव दिवसेंमें हमारे एरवाइ गोसाईबी महाराज सर्वप्रथान हैं। गोसाईबी कोरामाणसङ् कीर धनन्य राम-मङ कीर रामचरित्र-निष्यात्र है। महाकृषि काजिहामनाहरू शबीशसक और घनम्य अन्त व होनेतः वी रामकत्ति-निष्णात स्वतस है। बाबिहासडे बाम्बोंडी मनन बानैवार्क विहानोंसे यह बाव बजान वहीं है कि महर्चि बारमीकिमंदी सुकि-गुवाका दिरम्बर बास्वाद्व बरवेशां बदिनीयर बाबिनामके प्रकारि वर्श राज्य और वरी धर्मका साराव लग्न रशिया दोवा

है, बाबह सामा बिगव है, इनकी साहमावर्ग बनागविव E I ENT! क्षा बिहान हे जहार कर्च क्यों स्थान करी ही हर्क्सा की बीर बोबोमरा है। बन्ति न्यारनसरे बाबीटक विवास-दिक्ष सामा महाराने कारते हैं कुन थी मुध्यिति सम्बा है। दा है उठाति करेंदे थे, ब्यातनम ही दनके बच नम ध्वतिक सा उन्हें कामानि हुने वस नाने कामानी शास्त्रा व हेना ही बादर्गेश करन वा। वह वह कार कार्य से कार है कि कार्रिय केंग्स स्थानक क्ष तर ही जिसाल है, वे बहुमाली का मार्च क्या नह के एक वार देवहरू कार्य कर बाद र कार्य करणा की कार्य

संस्कृत-साहित्यके बार बात चरितार्थ है। महा हीमें प्रधानता प्राप्तः वया नमें महाकवि भार यह है कि बिस की उसीहे वया नमें उसकी है। हिन्दु महारमा हुः भनन्य राममक गुन्नसीरास-जिनके वय नका एकमात्र या, दनके हारा शुक्रार-रसक वह भी चपने इट बीरपुनाथा सफ्बता मास करना निस्मान्ह क

'डुमारसम्भव' में चरित्र-वित्रय वि विद्वानीने साहित्याकाराको अपनी श करनेवाला सुश्रांश्च-वीवूरस्यविद्यी माना है, वहाँ उन विद्वानोंसे भी वहीं वस 'सुषांगु' है बाबाग्रस्थित गुवा कब्रह बारोपय भी किया है। बात बर चाने क्यारव बीडमामहेचरका गुजाराम कर हाला है, हुगीने 'काम्ब प्रकारा'प्रयोग व मन्मदर्वे असे वृतित सुकारके वर्णन दिया है। हमारे गोसाईबीने कपने प श्रीरामचन्त्र कीर सगजनभीका सुद्रारामा । वह भी सामास्य वहीं, पुत्रवर्गाति गृष्टाम इर्गनुरागमें बोबोचा विभागतिको क अच्छ अनुभव करा दिवा है। इस असंसकी बुद व व्यवद्विषक में को व्यानन्त करतान होता है, बह

है। जिल सकार सकाशानी सर्वाको समान

कमाधिरास्य हैं, इत्त्रिच, सन, बामीचे बगोबर

मधार कर मानम् भी देवच वर्ताव मण कर दे ही व

मान है हे हरना बोनार भी समयितमानहरू व

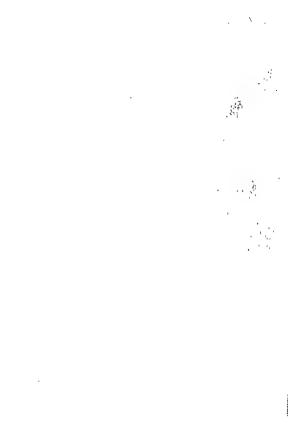
कुमार में बरी विशेषमा है कि का प्रचंश निर्मा है। करों सीजोरकहरकी राज्यक करी जिस ककी।

SALAS AN SALAS





चरण-पादुका-पूजन ।



मारम्भमें ही देखिये. गोसाहँजी श्रीरयुनाधजीकी सभावतीके साथ चौर बीजनकरनिवनीको सक्षियोंके साथ महाराजा जनकर्षी पुरुरवाटिकार्ने भेजते हैं ३ वह श्वतन्त्रवासे---स्वेष्ट्राचारितासे सर बरने हे क्षिये नहीं, किन्तु-"समव नानि गुरु भावत गाई'-रशुनायजीको कापने गुरुवर्य महर्षि विश्वामित्रकी बाहा हारा उनके क्यासना कर्मके क्रिये पुण खानेकी. बौर बामकीजीको-'गीरिजा पुत्रन अननि पठाई'-खपनी मातुबीकी बाह्यानुमार श्रीगिरिजाकी पुजाके खिये। देशिये हो हैता मर्योदापूर्वे इ हो में के एकत्र गमनका सुझवसर उपस्थित किया गया है। यहाँपर कविको शुहार-रसका उदीपन विभाव-बच्च न करना धर्माष्ट है क्योंकि जनकपुर समृदिशाली नगर है, वहाँ सनेक पुष्पवादिकाएँ हैं, पर श्युमायजी महाराज-इमार है, किर महाराज जनकरें सम्मान्य कातिथि हैं, **वे करपत्र क्यों जाने खरी,** उनके बोध्य तो राजकीय प्रयोधान ही है। धतः गोस्वामीजी उस प्रयोधानका उद्दीपनात्मक बया न इस प्रकार करते हैं-

पूर क्यु बर देकेत आई। कई बहंत रितु रही होताई।। श्रीमुक्तावनी बाबर पुण्योचानको देखते हैं कैसे पुण्योचान-को! कहाँ कविज विश्वको महत्त्व कारोगाली वसरण क्यु सर्व ब्रोमित हो रही है। कातिवासमी 'कुमसस्ममय' में प्रण्यमा काममेंचको श्रीयहरको शुमानेके लिये मेजले हैं। क्यु

ठीन्द्रस्थे संपनिनां गुनीनां तथा सामोः प्रतिकृतनां। व्यद्भानेतीनाम प्रवादात्तात्तात्त्व मुनितृत्व । व्यद्भानेतीनाम प्रवादात्तात्तात्त्व मुनितृत्व । व्यद्भानेतीनाम प्रवादात्तात्त्व मुनितृत्व । व्यद्भानेति स्वाद्भानेति स्वाद्भानेति स्वाद्भानेति स्वाद्भानेत्र प्रवादात्त्व कर्ति सात्त्व कर्ति है, परत्य प्रवादी क्षावित्यात्त्व स्वाद्भानेति स्वाद्भानेति सात्त्व स्वाद्भानेति नाणी गार्थी है। यद वहाँ स्वाद्भानेति नाणी गार्थी है। यद वहाँ स्वाद्भानेति नाणी गार्थी है। यद्भानेति स्वाद्भानेति नाणी गार्थी है। अवी वालत्य स्वाद्भानेति स्वाद्भानेति

इसका चनुभव बिज चाटक स्वयं कर सकते हैं। ब्हाबिदासगोके वर्षेनमें वरपुँक चक्के सामे ससन्तारी प्रभावित प्रमु-पश्ची सादि तककी श्राहर-पेटामॉक्टा वर्षेन किया जानेसे स्वामास माना गया है पर रामपरिहमानसमें वरपुँक चौचाहैंके सामे यह मैं चन है—

रामें विदय समेहर नाम। बरन नरन मर बेहि बिताना। नव पहल पर सुमन सुराय शिम संपत्ति हुए-स्व हजाय। माजक केविक बीर बंधीर। कूमत बिर्टान नंदर कर मोरा। मध्य बाम यह सहे हुएसा। बरियोजा निष्युत बनाता। बिमत सन्ति सरीहम बहुरंगा। जल-बाय कुमत गुँगत कुमा।

जिस पुणोधानमें नवीन पहान, यह और फुलॉसे पुणोधित धनेक मकार के मनोर इन पुण काते हैं, बनरर विदानस्थाने किया दूर दूष काते हैं, बनरर विदानस्थाने किया दूर दूष हो है, वनरर विदानस्थाने किया प्राची कथने चेतोहारी मनोर्थे वसे मुखारत कर रहे हैं। मयुराय मनहरण मुख्यें निमम हैं। बागके सम्यागांने सचिवां के सोर्याय सेन्द्र स्थान सेन्य सिमा हैं। बागके सम्यागांने सचिवां के सोर्याय सम्यागांने सचिवां के सेर्याय सम्यागांने सचिवां के सेर्याय सम्यागांने सचिवां के स्थान सम्यागांने स्थान स्याप स्थान स

बाग-तहागक्ष बिलोकि प्रमु हरेषे बन्धुसमेत । परम रम्ब आसाम वहें को सब्दि सुख देत ।।

—बही बहते हैं। पर इसमें सभी कुढ़ कह दिवाहै। जिस बागको देखनेसे खोकाभिराम श्रीरामको—प्रसिद्ध विश्वके स्वयं सुखनिधान श्रीरामको सुख श्राप्त हो, बसकी पराम रम्यताका यही पर्योग्त वर्यन है।

धन्त्रा, सब देखिये, श्राबण्यन-विभाव-वर्धनमें फिस चातुर्वेसे श्रीराम-सीताका काकताळीय एकत्र होना भीर परस्पर पूर्वानुराग महर्शित कराया गया है। श्रीरसुनाधजी

वंपाननाम के सम्बन्धे रामक्ये साहित अनेवकसारी राववसाइर लगा सीतारामी मध्ये वह नेवार्थे किसी है — 'धाराल पारक्षण रावका करें वह करते हैं कि वह सामवाद एक साम और ताक साम रावका कर साम नावका नावका

पुरोगानमें -- मर्था प्रव बनामच है -- पूच बीन रहे हैं। क्रेन समयमें भौगीतारी त्रणी प्रयोगानमें प्रव पूर्ण केन तामचार -- जिसके निषद की भौतिरिजाका सन्दिर है -- प्रवासी है। भौर---

रियाणीसब्युज्यस्वाती । गार्थे गीत सरीहर बाती ॥

बनके मान शुन्दर चीर चन्नर माने हैं, वे स्तुर सीन सा रही हैं-वे मेर्गन हैं 'मनोदर नाची'-बाची मरण्यतिकों सो सन हरण करने राखें। उनामेरे बो-जरभार गृबस कुकारी देनने के विचे गयो हुई एक माने वहाँ जीता-बाम्यकों देखक, बनकी सर-मानुरीरर मनोगुगर होत्य मेस-दिका मीनामिक विच्य मानी है। बनकी सारण मेस-दिका बन्ने पंचक मानियों हारा कारण चुन्ना मानेशर कह बन्नी हैं—

देलन बात कुमर बोड आर ६ वश दिलोर शह मोती मुदार ॥ स्वाम शीरकिनि कहीं बलानी १ शिश मनवन नवन विजु बनी ॥

धारा ! सार्याने दुव धरिक न करकर भी को इस् करने थोग था, राजेदोंसे सामी दुव कर दिशा । कारिक करने के किये सामय करों, राज्या तो यह थी कि राज्याना वर्राते पढ़ें न कार्ये, ऐसा न हो कि अनकार्नियों उनके वर्षेन-पुरासे पश्चित रह कार्ये । सार्याने यह सामय कर सीताके दूरपर असुष्यका उद्यावित देगी तो उनके पुरासे दुस करें कार्ये ए पूर्व भागा सामा स्वयं ही यहाँ पवलोके किये प्रार्थना करती है—

अवसि देसिये देसन जोगू ।

यह सुनकर उसी ससीको बागे करके उन्हरिक्त सीताबी बपूर्व सुन्दरताको देखनेके बिये चर्ची, चीर-

वितेत विशेषत सकत दिसि जनु सिसु-मृगी सनीत ।

सब दिशाओंकी घोर चकित होकर-सभीत शुख्या प्रमाहनाकी तरह देखने क्षमीं। चौर उचर सम्मुख बाती हुईँ मौनानीके बंकरर, क्रिकिनी कीर नुर्रोगी सां सुरुष्य अरुपी चीर, नीकानकपाद प्रांत्रणी समार पढोर नेपनत हैं, जारी सबार बीरास्टर मी विभी नेपने को १ वैने सामगत हैं

चिद् निवजव बेंद्री हरी। डेस्ट्रेसम सम्बन्धी

निर्माने काने दिश निर्मादनामें को स्पर्ध सभी वर-गाविदेश हाच का रिता था, वा तमारे वीताप्रीके करीकित सहा सारवार मेरित होगा वितारिक करीकित सहा सारवार मेरित होगा विवारिक करीके समे। इस सचात होते वह वीताप्रीकी

बनर्दे संबुधि निनि क्षेत्र सोबन्।

इय बच्चेकार्ते कही हो सम्मोतिक कारण के है। एवं श्रीवनकमरियों का सद्भाग का क्यार हत्या हो सम्मादि सम्भागि श्रीव स्थापित ह्यारि वरेक का स्थापित है। किर बीतार्थित कर समित्र स्थापित का स्थापित है। किर बीतार्थित कर समित्र स्थापित कार्य हैं, हैं लेंगे सहस्थावार कैया विभिन्न किर सहित कार्य हैं, हैं लेंगे सद्दु विशोध सर नियमिनुनार्थ । विशिध स्थिवार्थ सर्थ हैं

इस बारीबीमें कीर बाबिशायती है— सर्वोक्ता इत्यसमुल्येन बमादेश विनिर्देशेन। समर्थित निरन्तृया बमानारे संस्तीत्वर्धीरकीर (कमार्देश सिरन्तृया बमानारे संस्तीत्वर्धीरकीर व

इस वचडे आवर्ते व्यवित श्रीतर्वतीके हेन्त्री बहुत इस समानता है। वस्ते बने वर्ष वर्नेतर्व शीन्त्रचेश वर्षेत करता है, किनु चैताईने अपवर्गाण्य को स्वयं सीन्त्रपेनियान ये, बैन

देशि सीय-सोमा मुख पाता । हरम सरहत वचन र प्रहा सीतात्रीके अक्यनीय सीम्प्रवेदावर्षन करते हन्तर

बैरेह्रोणननस्मान्वरियनीयान्ये अनोहरम् । विशासं सरसीरे योगीनन्दरानुवनन्।। बैदेही वादिका तत्र नाना पुण्यनुगुनिनता । रिग्न्या मारिकन्याविस्सर्गेनुं सुन्दरा गुणा ॥ प्रमाते अत्यर्द तत्र गत्वा स्तात्वाऽऽदिविस्सह् । बौरीनपूत्रयस्तीता मात्राव्रहा सुनवितः ।।

मार्गे रामचरित्रमानसके-

पड़ सबी सिय सेम निहाई। गई रही देसन फुटनाई।। इस क्यनचे भी इसका समन्त्र हो सकता है।

ईराता कहें दुंदर करहें। छतिगृह दोपिसला जगु बरहें।। हक्ष्में सीतातीको हुग्दरतारूपी धरफी दीप-रिक्ता— पीरकां क्योदिकी उपमा दी गयी है काजिब्हास्त्रीने की एउंधनें हुन्तुमतिके स्वयंतर-प्रसक्षमें दीप-रिक्लाकी उपमा बर्ज को है...

संचारिणी दीपशिखेद रात्री यं व्यतीसाय परिवरा सा । नेरेन्द्रमार्गेट्ट इद प्रेपेदे विदर्णमावं श स सूमिपाळः ।।

इसका भाव यह है कि स्वयंवरा इन्द्रमति जिल त्रित राजाके सम्मुख दोकर फिर उसे छोड़कर आगे बढ़ती थी, दस दस राजाकी ठीक वह अवस्था होती जाती थी, बिस प्रकार चलती हुई दीप-शिखा-हाथमें ली हुई लासदेनकी रोशनी, द्यागे बदनेसे राजमार्ग--वाजारकी पीछे खोवी हुई द्वाने प्रकाश-रहित-गतप्रमा होती बाती हैं। इस दीप-शिकाकी उपमाके वर्षोनद्वारा संस्कृत-साहित्यमें काबिदासका इतना गौरव है कि काखिदास-नामके सन्य क्षियोंसे विभक्त करने के ब्रिये रघुवंशादि प्रखेताको 'दीपशिका कांडिशास'के नामसे प्रसिद्धि प्राप्त है। वस्तुतः उपमाकी कराना वड़ी ही विश्वित्र और मनोहारी है, सवापि अब इम इसके साथ गोसाईजीहारा दी गबी 'दीप-शिखा' की डरमाको दुखना करते हैं तो विवससवा कहनेको बाध्य होना पहता है कि काबिदासकी 'दीप शिला' सुवर्ण है सी गोसाई बोडी'दीए रिसा' सवस्य ही दुन्दन है। कालिदासत्रीने र्युमितिको दीप-शिलाको समका केवल उसकेहारा लक-राजाधाँके रात-प्रम होनेमात्रके किये दी है। किन्तु मोसाईचीने सीताजीको विषकी सुन्दरतास्य बस्तुका राष्ट्र प्रदर्शनं करानेवाली दींप-रिश्वाको उपमा दी है। पर्मातं रखाममें वाहाँ कर्षों में सुन्दरता कही बाती देव हम उपनकारहत होनेके काराय केनक कथनमाना है-वस्तुतः नहीं, यहि स्वश्वकार्य कोई वस्तु उपनक्ष हो सकती हो तो सुन्दरता भी स्वन्यत्र उपनक्ष हो सकती है। देशियमाना दिख्ल सुन्दरताका सामाय दर्गनं तो सीतीताजीमें ही वपताय हो सकता है। शीरहामाक्षी स्वग्वती सीताल क्ष्यकारीय सीत स्वत्य हो साहमा स्वत्य मानाकि विषय सोत स्वत्य हो, पर वह बहुत कोज करनेवर भी बनके साहस्य बीव्य उपना कही गहीं विक्र सकी हो वर्षे सहारस्य बीव्य उपना कही गहीं विक्र सकी हो वर्षे

केंद्रि चळारी विदेहकुमारी। सब जपना कीज रहे हुआरी।।
जपना देने-योग्य जितानी हुम्बर बस्तुर्व हैं, जनको
स्विपंत्रे साधाराय बी-वर्गेको देकर, गूँटी कर दिया
है। किर वे निकारण उपनाएँ विदेकुन्तागीके योग्य किर प्रकार हो सकती हैं? इससे समिक करनेके जिसे मही समय ही कहाँ या, पर भागे जससर निकारण कम राम्हानिमें सातानी वार्ग्य कस्ती हैं, तो गोशाईनीने सपनी जिसमें इससी—

गिरा मुखर वनुअरव मवानी ।रिन अति दुखिद अवनु पति जानी ।। विद्यवास्त्री बंधु प्रिय जेदी । कहिश रमासम किमि बैदेही ।।

-इस सर्ववसे श्रीर भी स्परता कर ये हैं । मुन्दरानों सर्वोपरि विवर्धक्यात सरवर्ता, पार्टी, तिर भीर श्रीर श्रीत्रकी हैं, किस भी सीतानीके साम इनकी तुवना नहीं हैं वा हैं, किस भी सीतानीके साम इनकी तुवना नहीं हैं वा परिस्तानाचित्र हैं, जो उच्चात्रनाकों के निये केस श्रोम-प्रदा ही बहीं, प्रसादयक भी हैं। परवेदीनीने क्दिये मुन्दराता है, आया यह अपसद, राहराचा ग्रीर घाना पिरियाल है। कामाना रिते तो वेपारी घरने परिके साम- कार्याहत होनेक स्तानको दुन्तिनों है भी स्वरमीत भी चरने विव कन्यु विश्व और बास्त्रीची सहोरारी, सारव ही । बारी मी-सारव है। चारी मही-

सोमा रुतु मेंदर सिग्यरः । मबद्द पानि-पंडन नित्र मारु ॥ पीट्ट निधि वर्षने टरिस्ट बन सुंदरता-मुस-मूटः । तदपि सहोषसम्बद्ध कवि बहुद्दि सीव सन तरु ॥

परि पेगी गामग्रीमे उपन सध्मीती हों, तो भी मीतार्जाके माथ प्रमधी प्राप्ता देनेमें कविको संबोध है. वर्षोंकि दशमा हो। राष्ट्रह बागुको ही आती है, किना वहाँ मी भार पर है कि अन्ते शीलातीकी भी विशाह समगा मरी दी था राष्ट्री, किर भी शक्त वह आपी है कि वे शीगात्रीची शमनाडे थोल है या वहीं : देखिये तो बैगी सर्वाय और चारून कराना है । गोगाईंगी वहि इस मधीन बप्तादी क्षणमा म काने तो सवाव कनकी--विक्षे पर-गरी शिश-मुख्यी । शर कामा बॉन रहे अकरी ॥" यह जिल कविन्त्रभाव-सिख क्रम्प्लिमें ही ग्रहण हो जाती।

काबिकासने भी कुण्यमाहास शहुन्तका है सीन्त्र्यंका बर्धन कराया है--

वितो निवेदय परिकट्रियनसम्बद्धाना क्ष्येच्चेन मनसा विधिना इता नु । सीरक गृहिरक्ता प्रतिमाति सा मे श्तृर्विभुत्वमनुचिन्त्य बपुष्य तस्याः।। . (अभिदान शासन्तत दिनीवाद)

भीर राजा पुरुरवाके द्वारा उर्वशीका सीन्वर्ण बखाँन इसप्रकार है--

अस्याः सर्गविषी अनापतिर मृत् चन्द्रो नु कान्तिप्रदः शृहार करसः स्वयं न मदनो मासो न पन्याहरः । विद्यान्यासम्बद्धः कथं न विषयन्याव सकीत हत्ये निर्मातं प्रमवेनमनोहरामिदं रूपं पराणाः शनिः ॥

(विक्रमीर्वशीय)

दोनों ही बर्णन ऋपूर्व हैं। विसस्ते वर्णनकी और गोसाई-जीके वर्णमंकी तो पुक ही बीली है तथापि गोसाई जीहारा बाँगत सौन्दर्य-सामग्रीकी समता विश्मोर्वशीयमें बाँगत शासपी नहीं कर सकती, यही नहीं अब कि कालिवासने धपनी बर्षित सामग्रियोंद्वारा उर्वशीकी रचनाकी उत्कष्टता संचित की है,तव गोसाईजीने इनसे कहीं चत्रकर सामग्रियों-हारा की हुई रचनाको भी निशक्त श्रीसीसाजीकी सुखना देने बोल्य नहीं सामा है।

धण्या, आगे देलिये---

सियसे।माहिय करनि प्रमुआपनि दसा विचारि । े सुधि-मन बनुजसन बचन समय-अनुहारि ॥ सीवातीकी शोभाका हुक्यमें अनुभव करनेके

बचाय प्रमु क्यूनायबीने सपनी वैसी प्रेम विदय साम क्यार किया-क्या क्यिए क्यि ! वरी कि मेरे गर सच्याच है, वे मेरे धनत है, पचरि वे श्रुविमर है-इर-विश हैं, ('मुक्तिमन'बर विशेष्ण बर्दी रचुनावडी हे मानगरी बैगा उपमुख वहीं हो गदना, बैमा समापति मञ्चनवर्ते । श्वनाणकी के किये तो वर्त गोमाई मीने 'मी सर्चनामडे अयोगही में सभी दुख सूचित का रिया है) तयारि समयके अनुकृत-सोकरित्वाके आर्टिक विषे रपष्टमा करना प्रयोजनीय समनकर शीरप्रमायती करने हैं-तात जनकानका यह साई। बनुष्काय जेहिकारन हैर्दे। पुत्रन नीरि ससी के आई। करत प्रकाम निरह पुरुवर्त। जानु बिरेंडि मर्टाडिक सोमा । सहय पुनीत मोरमन छोनी। सो सबु बारन जान विवास । परवर्डि सुमा मंग् मुनु प्रता। रपुर्वतिन्हकर सहज सुमाऊ। मन कुपंच प्यु की न बाडा। मोहि अतिसय प्रतीत वनकरी। केहि सपनेह परनारि नहेरी।

सहर है कैसे पवित्र, श्वष्ट और मर्याहासूचक बारप हैं। काबिदासमी बुज्यन्तद्वारा शकुलाका है विषयमें बहवाते हैं-

असंशयं श्रवपीरप्रद्रधमा यदार्वमस्यामनिकानि मे मनः ।

सतां हि सन्देहपेट वस्तु प्रमाणमन्तःकरणप्रमुखयः।।

यहाँतक तो समानता है, पर इसके भाग-चत्यपादां दृष्टि स्पृशसि बहुशी वेषमुमती रहस्यास्यायीव स्वनित मृद् कर्णान्तिककाः । करी स्यापुन्यत्याः पिवति इतिसर्वस्यमपंर , वयं तत्वान्येशम्बपुद्धः इतास्त्रं सुरु इती।। (अ० गाइन्तक प्रि॰ वह)

इसमें और इसके बागे काश्चिदासने इस गानाक बर्खनको श्रमिक विस्तृत और स्पष्ट किया है। इसमें प्रपार परवा नहीं की गयी है। परम्तु गोसाईबीडे-करत बतकही अनुवसन मन सियहप ठुवान। मुख-सरोज-महाद-छवि करे मधुष 🖪 वान ॥ जितवित चकित चहुँ दिशि सीता। कहुँ गए नुपरिशोर मन पी वह विशेष मुग-सावक-नेनी। बनु तह बीरम कमरसित हेनी। रुता मोट तब सक्षित रुखावे। स्वामल गौर विसार मुहावे।

रीते रूप दोषन रहत्यान । हृष्ये जुतु निज निषि पहिचाने ।। यह नमर रपुपति-छति देसे । परकानिहृह परिहारी निमेशे ।। मीचेड स्मेद देह यह मेरी। सरद-सारीहि जुनु चितान प्यकारी।।। क्षेत्रनामर रामहिं दर आसी। दोन्हें परकान्तवार सामानी।। यह वित्र सामेत्र हुमेसरा जाती। कोह म सकाहि बजु मन सुसुकानी।।

तिय सक्षित्ह प्रेमवस जानी।कहि न सकहि कछु मन मुसुकानी। स्तामवनते प्रगट मये तेहि अवसर दोड माह । निकसे ज<u>र जुम</u> विसल विज्ञ जलद-पटल विलगाइ ।।

हत नद्भा वयं वसे विशेष, कैशा समोदीचित स्वास वयं विधा गया है। इसके प्राप्त स्वास्त वहें ही सायुकं न्यां मार्ग गीत है। वसी वर्गों, इसके बातो औरयुकाशजीकी कर-मादुरीस्ट सीताशीकी प्रतिवृद्ध स्वयस्ताका भी वहां बहुत भी प्रसाकतिक सर्वत है। बोद है कि विकास-अवसे वर उसकी एकटा अपनेसे अस्ताओं है। सीताशीकी वर उसकी एकटा अपनेसे अस्ताओं है। सीताशीकी

वादर दशा देखकर-

प्रवस्तातिक हकी अब सीता। मय गहरु सन कहाई समीता। संवित्ती परस्य कहने सार्गी, वही देर हो गयी। समीता एकिये कि मातावी विकासका कारण पूर्वेगी तो हम बचा करेंगी। पर हेमपर भी जब सीताबीकी मेम-समाधि नहीं हर सकी तो---

5ने अरुव पहि सिरियाँ काठी। अस कहि मन बिहेंसी एक आदी।। गृह गिरा हिने सिर सहुचार्गा। मयेन निर्देश मातुम्म मानी।। परि बढ़ि भीर राम दर आने। किरी अपनयी पितृसस आने।। पर सरवी वच यह कहकर कि 'कल हुसी समय किर

श्वनित सीतानी सशीको हुस मृतोक्तिनो सुनकर काम्या जौटों कारय, पर केवल वेहमात्रसे, मनसे नहीं। हुसी भावको कवि वर्षांन करते हैं —

देखन गिस मुग विहम तठ हिन्स नहीरी नहीरि । निरस्ति निरस्ति रचुनीरहनि नहि नीवि म गिरि।। चहा ! कैसी मजुर कोमज चीर कान्द्र-पदावलीग्रास यह भाव रचक किया गया है। कासिदास भी राजुन्तजाकी

ठीक हुसी प्रवस्थाका वर्षीय करते हैं— व मीह्युंग्वा प्रदान, छठ हज्रकाच्ये कन्मी स्थित क्रीलेच्द्रव पदानि गत्वा । आसीह्रद्वेतुक्तस्था च विमोच्यत्वी शास्त्रस्थ चल्रकमसकामि द्वागामा ।।

(শুও হ্যাক্রনার বিভাগ

यह सब'न भी यहा रसायह है। पर श्रङ्कारी कवि काविदास राहुन्तवाकी इस चेहाका वया न उसपर घरपुरक राजा हुप्यन्तदास कराते हैं। किन्तु गोसाईंगी सीठाजी के विषयमं कर्ववंक स्वत्य अशित्वास्थार्थित स्वत्य हो कराता उचित नहीं सत्यनकर कविकी हैसियतर स्वयं ही करते हैं, बड़ी उनके श्रद्धार-वर्ष नकी विशेषता है।

निय पाठक ! राजवरिकालसके प्रशास्त्रण नकी रिकेरवाकायद दिवस्त्रण है। इस्तकार के विधेरवासीय कि स्थार कोर की राज के स्थार के स्थार के विधेरवासीय का सीर कोर के स्थार के स्था के स्थार के स्

रामायणमें रस

होमरके काध्यमें जो रस है, रामायणमें उससे कहीं विशेष हैं। —वेबर

रामंचरितमानसकी कतिपय विशेषताएँ

(लेखक—पं वर्धात्रमधायप्रमादवी चतुर्वेदी 'मान्त' और श्रीमुरलोबरवी दीक्षित्र 'भ्रन्त')

द्यस्मिन त्रुसीज्ञमस्तरः। कविता-मजरी राम-भ्रमर-मीका ॥



स्वामी मुजसीदासजीका रामचरितमानस यपने दिःय और सलौकिक गुर्वों के कारण मानव-समाजके मानस-मन्दिरों में मन-मोहनी मन्तु-मूर्तिकी मांति पता का रहा है चौर चनन्त काखतक इसी प्रकार मक्ति-प्रप्याक्षालि पाता रहेगा। इस भर्जीकिक प्रन्य महासागरमें अनेक प्रकाशमान गुख-१ ब भरे पड़े हैं जिन्हें

मेमी पाठक चपनी चपनी शक्तिके बमुसार हुवकी खगाकर निकाल लेते हैं । ईंधरकी कृपा और विद्वानोंके सत्सङ्गते इसे भी कतिएय गुय्य-रत प्राप्त हुए हैं । उनमें कुछ इस 'करवाया' के प्रेमी पाठकोंके सनीविनोदार्थ भेंट करते हैं।

सोपान आरम्म-गोरवासीजीने सब सोपानोंका आरम्भ दोहे वा सोर्यंसे किया है; पर मुन्दर-कावडका मारम्भ वीपाईसे ही कर दिया है। यथा---

बाल-काएडः--

देहि मुनिरत सिथि है।इ गननायक करि-बर-बदन १ क्री अनुब्रह सोह नुद्धिरासि सुम-गुन-सदन ॥(सो०) नयोध्या-कावडः —

, श्रांग्य-करन-सरोब-रज निज-मन-मुख्य मुद्यारि । बानी रचुबर-दिमत-अस वो दायह कर चारि ॥(वो०) **अरएय-काएड:**---

क्या रामगुन गृह पंडित मुनि पायहि निरति । चर्राहें मंद्र विमुद्ध के हरि-विमुख व चरमधि ॥(सी०) किष्किया-काएड:---

्र कार कटि जनि स्वानसनि अवस्तिका <u>।</u> , सैन्-मदनि सें बारी सेंहब बस व ॥(गो०)

सन्दर-कार्ग्ड:---कामवंत के बचन सहाए। सनि हन्मंत हृदय अति माए। (वी)

लङ्ग-काएड:---

स्त्र निमेष परमान जुग बरव करप सर चंडा। मजिस न मन वेटि राम कहें कार जास कोदंड ।!(रो•) उत्तर-कारुडः—

रहा एक दिन अवधि कर अति आरत पुरतीय। जह तह सोचहि नारि नर इस्तन रामवियोग ॥(रे॰)

ें पाठक, सुन्दर-कायडका चौराईसे ही प्रारम्भ स्पों दिया गया ? विचार करनेसे ज्ञात होता है कि मारम-गर सोपानोंके बारम्भ और सन्य सभी श्वलोंमें लिसे इपरेंगे सोरठे विश्रासके लिये हैं । सुन्दर-कायक प्रारम करने पहले विश्राम खेना उचित प्रतीत नहीं होता स्पादि बोस्वामी जैसे परम अक्त अपने इष्ट-वेच भीरामच्यानीचे धर्म-शीला, पति-प्राका सीतादेवीके विरहमें मान को इकर विभाग नहीं से सकते । इस बातकी पुरिमें देशर कहते हैं। 'रामकान कीनों निना मोहि वही निमान!' (इनुमानुबीका कथन)

कोई कोई विनोदी पाठक चौराईसे चाराम कानेच वह कारण बतलाते हैं कि मुन्दर-कारकों बीरामक्ष्योंचे सारा कार्य चौतायों (रीख बानरों)ने ही दिया है। बनार चौपावों के कारच यह कावड चौपाईसे 🗗 प्राराग बार दक्तित है।

(1)

धन्त्रमाप्त्रे—

'बंदी शुर-पद-बंब इपतिषु बाहप ही ।' 'बेदी मुनि पद-कंत्र रानायन जोई निरमंदर ।' 'युनि मन समन समें रचुनावक । चरन-सम्म देही तर राज्या।' 'जनकपुना जगजननि जानकी। बहिराय विष कवननिकनकी।।

तांडे जुन-बद-बम्य मनावीं। जानु इपा निरमन मी। संवी।। 'बेरी ब्रेटियन-बर-बरम्याः सीत्र मुनग् मला-बुक् बला।' 'वितु-मूदन-मद-समत समामी। मूद मुगीर मात स्वामी॥'

'रंपुणि-चरन-उपासक जेते। सम् पुन सुर वस असुर होगेत।। वैरों परसारेत सब हेरे। जे बितु काम रागके थेरे।।' 'वनती रापन मातके चरना। जानु नेम वत वाह न बरना।।' 'वेरों विशे-पर-रेतु। मयसामर जेहि कीन्ह जहूँ।।'

वपर्युक्त पंक्तियोंमें बम्बना करते समय गोस्वामीजी सपडे चरवांको कमजकी रुपमा देते हैं। परन्तु अस्तकी बन्दमामें 'प्रनवी प्रथम भरतके चरना' ध्वीर विभाताकी पन्दरामें 'देरी विधिन्यद-रेता जिलाकर ही रह जाते हैं। भातृ-भक्त वेचारे भरत और वयोदृद् मकाने गोश्वामीजीका क्या अपराध किया था जो उन्होंने उनके चरकोंको कमखकी उपमासे विश्वित रक्षाः 🕻 पाठको ! इसमें एक रहस्य है। बात यह है कि 'प्रनवीं प्रथम भरतके परना। जासु नेम-मत नाइ न वरना ॥' इसके काने गोस्वामीकीने किस्सा है 'राम-चरन-पंकन सन जासः । हेरुव मधुप इव तजह न पाद्या' क्यांत् जिसका सन सोधी सधुपके समान रामके चरण-कमबोंका पास नहीं छोड़ता । "बोभी मधुषके सदद्य शामके चरखारविन्होंमें भरतकी षद् प्रतुरक्ति ही बन्हें कमककी उपमासे विवित रलनेका कारण है। यदि भरतके चरखोंको कमलकी रपमा दे हो बाती तो उनका मनरूपी भौरा कदावित् दनके ही चरण-कमलोंमें लुक्य ही बाता, क्योंकि अमरको वो कमत चाहिये। जब उसे अपने पास ही कमश्र मिल बाता तव वह दूरस्य रामके चरख-कमलोंमें भटकने क्यों वाता । इस तरह कविताम वृपक् उत्पन्न हो जाता।

श्विताके चरपाँको कमजकी वपमासे वजित श्वानेका बाद्ध यह है कि कमानी कमजसे उत्पन्न है वर्षाय कमज उत्पन्न सन्त है। वर्षाय उत्पन्न संद्यांको कमज (उनके विद्या) से कमा देना किदना सर्मान जात होता है चन है, गोलामीजी सारकी इस सुम्म-वृद्धिताकों ।

(1)

महात्मात्रीकी उपमाप् भी वड़ी महोदार हैं। चापने भीरामचन्त्रत्रीको चकोर बनाया है ! अस इहि गिरि विजयतेहि औरा श्रीय-मुख-सासि मय नमनक्केसात

वद रामनी चकोर हुए तब उनका विवाह भी चकोरीसे रोना देपित है, मतपुर गोस्वामीओ सीताओं विवसी विचते हैं— अधिक सनेह देह मह भोरी, सस्य-सिसिर्ड जनु चितन चकोरी।

पकोर-चकोरी के विवाहमें समाधी भी चकीर होना
चाहिते। जीजिये वे भी चकोर बने नैठे हैं—

दगरपत्री:---

आनिसि मोर स्वमाय बरोक्ट । मन तब आनन-कन्द्र <u>अकीक्ष्य ।।</u> सामक्रवी— सहज विराग रूप मन शेरर। बक्ति हेस्त त्रिमि चन्द्र-कहीरा ।।

कुष्य विधान वर्ष ना सारा बाकत हार तमा चन्द्र चहारा ।। हुलहा चुलाहिन चकार-चकारी, समधी भी चकार, तब क्या हुलहालीके चिर-चनुगामी क्षच्यवकी चकार नहीं होंगे ! क्यों नहीं, वे भी चकार हैं—

रामहिं रूपण विकोशों है कैसे ! सिसिहें <u>चकोर-</u>किसोरक जैसे ।। सथ तो चकोर हो गये फिर बराटी ही क्यों रहें ! क्षीकों

शम-चन्द्र-मुख-चन्द्र-छवि कोचन चाठ चकीर। करत याव सादर सक्क प्रेम-प्रमोद न घीर।।

विवाहका योग सिखानेवाडे रार्जापं विश्वामिप्रज्ञी भी क्कोर-पर्शे विका नहीं रहे । देखिये—

नक सिख निरक्ष धार्मके सोमा। जनु <u>चकोर</u> प्रनसित होना ।। बलिहारी है, इस चकोर-विवाहकी ! निःसन्वेह इस चकोर-विवाहमें बानन्व-सिन्ध दसक पढ़ा होगा ! सच्चे मक

प्रेमी पारक तो इस प्रसंगों चव भी चकोर बन बाते हैं। बनमें जाते हुए चकोर-चकोरी—राम-सीता—संग चकोर बन्धु अवमवजीको पेतकर दरीड भी तत्कास चकोर बन गये। धारस्यावसमें मुनि-सवदशी भी चकोर पन गयी!

मुनि-समूह गर्दै वैठे, सनमुख समक्षे ओर । सार-बन्दु तनु विवस्त, मानहु निकर <u>चकोर</u> ॥

आर्थर्से नर-नारि शया श्री चकोर हो राये— मुदित नारिनर देखिँ सोमा । रूप अनूप नवन मन स्थेमा ॥ परुटक सन सोहिंह चहुँ औरा । रामचंद्र मस-चंद्र-चड़ेता ॥

(1)

गोस्तामीजीने सभी उपमार्थोचा मयोग बहे विचारते किया है। कहीं पुरू उपमा, कहीं हो, कहीं होत कीर कहीं चार-चार उपमार्थोचा बमयद है। हमत्रकार स्पृताधिक उपमार्थे देनेका नया कारव है। यहा ! दपमार्थोको म्यूमाधिकगापर विधार करते ही इत्य शुग्व हो जाता है— कविकी केरानी चूम खेनेको चित्त चन्नत हो उठना है। वदाहरण स्वरूप, वदमाओं के दो-चार मनूने देखिये।

[%]

सुनि मुद्रमचन भूपदिम होत् । सिक्ति सुम्बद विकल निर्मि कोत् ।। गयेड सहिन निर्दे करु कि आवा । जनु सचान बन सप्टेड राजा ।। विवस्त सपेड निपट नरपाल । दामिनि हनेड मन्द्री तह तालु ॥

उपर्युक्त पंक्तियों में, एक्स्पर्याकी एकाका वित्रया तीन उपलाकांद्वारा किया नारा है। नवा एक उपलासे काम गर्ही पक सकता था? यहाँ तीन उपलापे देनेका, नवा कारया है?-गोल्वामीनी तीन मकास्था ग्रोक दिक्काना चाहते हैं, इसीविये तीन उपमार्थ हो गयी हैं। यहती—

सुनि मृद्यचन सुपदिय सोक् (संसिक्ट छुनत विकल जिनि को हू।। इसमें मानसिक योक वर्णाया है। दूसरी---

गपेर सहीम नहिं <u>भुषु कहि आवा</u>। जनु सुचान बन सपेटर ठावा।।

इससे बाचनिक शोक मकट होता है। तीसरी— बिबरन भयेट नियर नरपालू। दामिनि हनेट मनहुँ तस्तातू॥ इससे ग्रारीरिक बेदना व्यक्त होती है।

शोककी संस्थाने बचुसार उपमायोंकी संस्था तो हैं ही, सिरोपता यह है सि जहाराज द्वारमजीको शोक उरुव हुआ है कैकेपीकी बायोगहारा (दिन सुद्रवन) चीर बायोका तस्त्र है बाकार, इसकिये उपमाएँ भी बाकासस्य ही है। बया—मान पीलमें स्थितन, द्वितीय पंकिसं सम्बान (बाल) चीर तरीय पंकिसं सामिन।

ग्रोककी न्यापकता अब, यब भीर व्यक्तश्रमं बतजानेके -िबर्च गोरवामी मेरी दूरार्पणीके उपमान वज्य-वर प्रजन्म श्रीर नम-न्यद ही दिन हैं। यमा—(१) कोक्-ज्ञज्य (२) जांचा—नम्बद (३) तरु-जाल्—प्रजयर—प्रयां (३) तरु-जाल्—प्रजयर—प्रयां (३) तरु-जाल्—प्रजयर—प्रयां (३) तरु-जाल्—श्रां वर्ष श्रीर आकार सभी औष्-प्रयां विभाग मा कमाज है।

. [स]

े चित्रकूराध्यममें भारतको ससीन्य बाते हुए देख सम्मायप्रीका हदय धीर-रससे उक्कतने समता है कीर वह समयन्त्रजीसे कहते दें— निमिकरिनिकर देने मुम्सान् । टेर संपटि तया जिने गर्॥ तैसाहि मस्तहि सेनमनेता । सानुत्र निदारि निपार्श केता ॥

कप्यु क वर्णनमें दो अपमाएँ दी हैं। (१) सर्रिनय दके मुगरान् (२) कम जिसि सान्।

दोनों उपमाणांने बहनी उपमा भारत वर्गा दूसरी हजूने बिये हैं। करि (दापी) से जून-राज (मिर) प्रोत होता है, इसी मकार भारतसे बकाया भी पोटे थे। हममे जवन रक्तणे सार्यक्ता सिखा होती है। दूसरी उपमाम वह दिवजाय गया है कि जिममकार बजाने बात वृत्ता होता है उसी प्रका राजुमने कस्माय भी बड़े थे। बता दूसरी उपमाजा भी वरिक प्रयोग किया गया है। स्वृत्ती यह कि पहली वपमार्ग किस्तिका (हाथियों के समूह) के समान भारत भी 'वित्तनती हैं। दूसरी उपसामें जबेदा कात है, क्योंकि ग्रहाके तम भी किसी सहायक राज्वका वहसेन नहीं है।

भरतको करि (हापी) की वरमा देना सर्वेगा वरणु है, क्योंकि इस असंतर्भ अन्मयती भरतको सन्ध्यक्ष स्थानक हो है। उनुने समस्य हो हैं और हापी मतवाजा होता ही है। उनुने उनकी क्ष्युताक कारया जनाकी वरमा देवा भी सर्वेग व्यक्ति है।

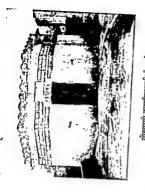
[ग

गिरा अस्य कत बीचि सम कहिश्रत मिला न मिला। बंदी सीतारामपद जिन्हाँ परम प्रिय हिला।

इस दोदेस बोदीला-रामतीकी मिलका हो दरागांवें इसा अव्यंतन की गयी है । मिलका तो एवं बपसाकी भी अब्द हो सकती थी । किर दो उन्में वेरेका क्या कारवा है । किरा करने पर हमें तो निम्न विशेष करवा कारवा है ।

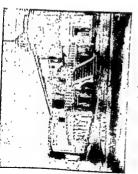
पहळी वेपना 'तिरा-घरव' में गोलामीजी हो से शीतादेवीका धीर उनके धरवाद बीरामणप्रतीका का व्यवसायके रूपमें किया है। साराप उपनायों हुए कार्य अपनायों हुए कार्य अपनायों हुए कार्य अपनायों हुए कार्य अपनायों के प्रतीय अपनायों के प्रतीय अपनायों के प्रतीय उपनायों गोलामीजीने वपनायों का महा रही हों सुर्वा वपनायों वपनायों का मान पर हिए अपनायों का प्रतीय प्रतायों का स्वीय प्रतीय प्रतीय सीतारीकी कार्य वपनायों का प्रतीय सीतारीकी कार्य वपनायों कर्मी वपनायों कार्य कार्य की सीतारीकी कार्य वपनायों कर्मी वपनायों कर योगायों में क्षेत्र हुए होंगों है। पर प्रतायों कर्मी वपनायों कर योगायों मी क्षेत्र हुए होंगों है।

(अयोध्यापुर्ग)



गर्यामा तुल्ल्मावृष्तिमामा कुदी





तुल्सा जारा



नहीं बंध गये प्रखुत उन्होंने चपने खुर्गल बाराप्योंकी पकरपता और भी प्रदर्शित कर दी । धन्य अक्टबर !

' इसके घविरिक्त इन उपमार्थोंमें एक विशेषता और भी है। यह यह कि होनीं उपमार्कोंनें सीतादेवीके . उपमान सीर्जिय तथा श्रीरामजीके पुल्लिय हैं। उपमानोंसे पारपर बैसा धर्मिष्ट प्रेम है उससे वे श्रीसीवा-रामजीके रपमान बननेके सर्वधा योग्य हैं।

(4)

मानसके कतिएय प्रेमी पाठकोंने कदाचित् इस बातपर प्यान म दिया होगा कि वन-बासके बारम्भ, सध्य बौर भन्तमें मिलनेवाडे महर्षियोंसे श्रीरामचन्द्रजीने कीन-कीनसे मरन किये और उनसे उन्हों विशेष प्रश्नोंके करनेका क्या भारता है ! यथा---

बत-वासके बारक्ममें महर्षि भरद्वाजसे मिखनेपर मंगवान कहते हैं-

राम सत्रेम कहेउ मुनि-पार्टी । नाम कहिय इम केहि मग आहीं ।। पादक ! उक्त ऋषि-वरसे मार्ग ही पूल्तेका क्या कारण है ?

इनसे अन्य प्रश्न क्यों नहीं किया है

इसके दो कारण हैं:---

(१) भरहाज-ऋषिके भाश्रमसे ही श्रीरामनी बनमें मवेश करते हैं। सतप्य मवेश करनेके पहले ही मार्ग सान बेना जावरयक है।

(१) जो जिस विरायका ज्ञाता होता है, उससे वही बात रही वाती है। भरहाजजीके विचयमें गोस्वामीजी बाजकायहर्ने विस भावे है---

माद्वात्र मुनि बसाहि प्रयागा । जिनहि राम-पद व्यति अनुरामा ॥ तापक्ष सत्र दम-दमा-निधाना । पश्मारय-पय-परम-सुवाना ।। पर्श चौचे चरखपर च्यान दीखिये। इससे स्वड है विमाहात्रजी परमार्थ-पपडे चन्त्रे ज्ञाता वे और परमार्थके

दिये ही भगवान्त्रे भवतार भारत्य किया या । यथा---वर वर होर भरम के हानी। बादहिं असुर अधम अभिमानी।। त्व तव भीर प्रमु मनुष्य सरीरा । इस्टि इपानिधि सञ्चन पीरा १३

सारोग पर कि भीरामत्री राचसोंका क्य करने क्षपीत् परमार्थके प्रयपर चलनेडीके लिये कावतील डर

थे । 'श्रतपुर परमारय-पथ परम सुजाना' होनेके कारण ही उन्होंने भरहाजबीसे उपयु फ परन किया ।

वनवासके सध्यमें प्राटिकवि वाल्मीकिजीसे भेट हुई है चौर हनसे श्रीरामजीने निम्निखिलित प्रश्न किया है--अस जिब जान कटिय सोड ठाँऊ। सिय सीमित्र-सहित नहें जाऊँ।। वहँ राचि कविर परन-तुन-साला। बास करों कलु काल कृपाला।।

वाठक इन सहवि जीसे निवास-स्थान पृक्षनेका कारण भी बड़ा गुढ़ और अनोमुखकारी है। बात यह है कि महर्षि वाश्मीकि भोरामचन्द्रतीके निवास-स्थानके निर्माण करमेमें सबसे घधिक हराबा शिल्पी समझे गये हैं। गोरवामीशीने

वन्दनामें बहा है---वंदौं सीन-पद-कंत्र 'रामायण' तिन निरमयेत ।'

शमाययका चर्य (राम + घरण) रामजीका विवास-धान है। बारमीकिशीसे भीरामजीका निवास-

सम्बन्धी इस प्रश्नके करनेका व्यभिमाय कितना गड रहस्यमय चौर यकि-यक है। बनवासके चन्त्रमें चरास्य च्छिते भे'ट हुई। उनसे

धीरामजी कहते हैं---अब सो मंत्र देह प्रमु मोही । बेहि प्रकार मारी 'मुनि द्रोही' ॥

चगरुपश्चीसे राचसोंके सारनेकी मुक्ति क्यों पूची है इक बार दवडकारवर्गमें दो राचस-यन्धुओंने वदा

उपत्रव सचाया था, उनमेंसे एक माझण-वेप पारण कर ऋषिवोंको निमन्त्रवादे धाता और अपने छोटे भाईका मांस पकाकर निमन्त्रित ऋषियोंको खिबा देश या। भोजनोपराग्त क्यों ही वह श्रपने भाईको पुकारता त्यों ही वह ऋपियोंका पेट फाइकर निकल धाता। इसप्रकार एक ही दिनमें धनेक ऋषि मारे बाते। निदान एक दिन बगल्य बिपको भी निमन्त्रय दिया गया। भोजनोपरान्त सदाकी माँवि उस राजमने बपने भाईको प्रकार। । सहर्षि कसस्य उसका इस समग्र गये धीर इकार खेकर पेटपर हाथ फेरते हुए बोबे-'तुम्हारा भाई हमारे पेटसे सटेड नहीं निकल सकता, इजम शोदर ही निकलेगा ।" इसप्रकार उस "मुनि-दोही" मायाची शाहरूका

नारा कर बागस्यजीने बानेक श्रापियोंको सुखुसे बचा क्षिया ! (वाज्मीकीय रामायदा कारवरक,यह) उपवृक्त क्यांके समान 👖 थीरामत्रीके सामने भी स्थिति उपस्थित है । उन्हें भी 'ग्रुजि-होटियोंका' कर का मा



ं बनकपुरमें दोनों भाईभ्रमश कर रहे हैं। चारों कोर भानन्द हा रहा है। यहाँ जिला है—

सुमन धरण सरसीरुह त्येचन।

देशक कमल है, रंग मही।

धनकपुरकी खियाँ परस्पर अगवानके रूपका वर्षां न का रही हैं---'वपान गात, कर कंत्र-विट्येचन ॥?

रंग-भूमिमें दोनों माई हा तथे, जानन्द-ही-हानन्द

विवाह हो रहा है—

सार विमत विश्व-यदन सुदावन । नयन नवत राजीव कजावन ।। षदस्या नयी है, स्रतपुत्र राजीव भी नये ही स्रतित

हो रहे हैं। एसुराबमें वहीं चानन्दका समुद्र ही दिलोरें मार रहा

े गोस्तामीजी दिखते हैं— नयर कारत, कल कुंडल नाना। बदन सकल सौन्दर्व-निवाना।।

पविक्रवेश-थारी सीता, राम, सचम्य मार्गेन वा रहे रे भागेम स्थित प्रर-नर-मारी दन्हें देखकर ब्यानन्द्रमें कार रो रहे हैं---

स्यामक गौर किसोर बर, छुँदर सुखमा देन । सरद सर्वरी-नाम मुख, सरद सरोक्ट-नेन ॥

चौहर वर्षकी घराधि समासकर धगवान् वायोज्या-दीचो कीर चार्षे । घरा ! इस चानन्द्रको तो कोई सीमा दी नरी है। दिशास सद्वरते भी इसकी शुस्तवा नहीं की वा सकती । घर्षाया चानन्दरे चरित्रातित है। साधु भतन्त्रे भगवादसे मिल रहे हैं। चहर !

परे मूनि नार्दे वजत उठाय । बळ कर क्षमान्सियु वर लाय ।। सामळ नात राम भये ठाँदे । नव राजीव नवन बळ बाढ़े ११

(०) गोरमानीजोंने क्यों कोई करन जिला दिया है तो रेसस पा पा निर्देश भी किया है। उनके कपन सामास्य परिशोदों भीने बारग, प्रकान मामान्युरिके जिये परिशोदों सेने सारगा हमाना क्यानान्युरिके जिये परिशेदों सेनेया सार्यक हैं। वसा—

(६) भावजी करते हैं—

व्यापीन दारुण दीनता, सन्नर्हि कर्तौ समुद्राय । विन देखे रघुवीर-षद, <u>जियकी जरनि न जाय</u> ।।

पाठक, 'जियको क्षानि' पर घ्यान दीतिये। भरतभी कहते हैं---'श्रीरपुतीर-पद' विना देखे 'जियको ज्ञानि' न जावती।

चित्रकृटाश्रममें श्रीरामगीको दूरते भरतने देखा। देखकर तो 'नियको अरनि' जानी ही चाहिये। सीजिये गोस्वामीजी वहाँ सिखते हैं—

कर कमलन बन-सायक केरता जियकी जरनि हरत हाँसे हेरत।।

'जियको करिन च नाय' यह पद पहले जिलकर गोल्लामीजीने इसका कितवा प्यान रक्ता है। मानसकी समक्त पत्रमा इसी प्रकार है। प्यान-पूर्वक देखनेसे स्तृतियाँ मन्द चातो हैं चीर सब मुख्य हो जाता है!

(ख) रावर्षि विकासित्र क्षीराम-सहमयको द्रगरपतीसै साँगकर करने साथ खेकर चढाने खगे । पहाँ गोश्तामीजीने निम्मजित्वत सोराज कहा है—

> षु रुष-सिंह दोउ बीट, हरिष चके मुनि-भय-हरण । इया-सिंबु मति-बीट अधिक बिस्व-कारण-करण ॥

पाडक, साधारण दक्षिते इस सोरटेंमें बहुत से दाव केवड बाक्य-पूर्विक वर्ष किल हुए-से बात पहते हैं। पर वहीं, एक-एक उक्पूर जात देशेत साम्री एक्स पांचे बात होंगे। विलार-अपने सम केवल 'पुर-नित्र', 'रारिच क्ले' 'मुनि-अव-इटब्ल', 'क्षासिंख', चीर 'महि-धीर', दृग्हीं कर्माकी सार्वका सिद्ध करते हैं।

(1) पुरुष-सिंह- काले पक्का सीमानगरूनी ताला पुरास प्राप्त प्राप्तिक पर करेंगे, हारी धारपारे वार्ट हर उपलब्ध अपीत दिया गया है । हम 'पुरुप-सिंह' का निर्देश मी गोलामानीजि किजनी पुरुदलाके त्या किया है ! ध्यान दीकिंद, सोरोलें | सीरोलेंद कोला है कि मीमानक्याल पुरुप-सिंह कक्का वाले किया है ! हमके धारपार प्राप्त अपने के ते हुए होंके पुलाने हुन 'पुरुप-सिंह' के क्यांन किवानीया सीरोल सामाना सुनिर्देश

दशस्य शिक्षे यह पूर्वनेवर कि— भैया कहतु कुसऊ दोठ बारे । तुम नीके नित्र नयन निहारे ॥

्रवा बचर देवे हैं— बदल बेम बहुत्व हास्से १ क्ट्यूटिन निर्दे का जीनने ।।



इतिशत 🛤 इतिह पराता । भेरे सहुत सुंदर सुम नाता ॥

पुरमें राववको सक्छता नहीं मित्री; चतपुर उसके भगारमें गोरवामीजीने केवल 'बले' ही शब्दका अपीग किया है:---

'चंड बेर सब अनुदित बना।'

'वनी निसावर-सैन अवस्ता।।" 'वने मत गत-मूत्र धेनेर ॥' धादि।

(=)

मोरामांमीने बरबो रचनांवे बर्दा नहीं रहिष्ट' कार्या विकेश के कार्ये मरोग दिया है। इस्ता वचन बराय है दिशा करने ते कार दोना है कि इस करन्य मरोग मेरामांकीने बंदासकर्या के ब्रोगों, बालवायों और करने ही कारक राज्ये सार्वा है। विकेशन कारके हैं कि किसा है, माई बर्दा मरी, हमते निन्दु होता है कि मोरामांकी दिखारों आंसारोंकी प्रीवर होता है कि मोरामांकी कर्या हरिष्यों प्रिकार हो, करे उसका परस करू करी व करने कर होता है।

कारण,'दकिर' का प्रयोग देखिये । किलना सुन्दर और देखारों है।

वराष्ट्रिश्वटन मृदु वाना । वरत प्रविद्यानन राति पुछि दुश्या । रेक क्षेत्र केंद्र कठ प्रीया । यद्ग विमुद्य गुरुवाची शिया ।।

के पर देश करा काम क्षार कंकी ।

दर भागा भागा सिंवन बाग विश्वमा चीर ११ वेटर वंचा बादु विमाध १ दर भरि शीचर मध्य सरि साधा १ वेटर बहुद समेदर सामा १ मध्य शीचर मध्य स्वाप्य १ ।

क्षणीत्वत रहाकानाव । युग वर बात प्रतिप्त वर राग्यत ।। वीवा कीतरी गुज्य निष्ट संबद्ध वृत्तिय वेशा । सब निष्ठ कुरर बेंद्र दोट रहेजा सदस वृत्ति ।।

वी देशक देवा बनताय ह कीवहार पुत्र की उत्तर श

रिकार्वयी आचाएवी राज्या की श्रीका ही होती वर्षित के स्टेड

pe s, at s, a sie s ga wiel aj w al. je in

केंत्र साथ को वर्षित हो है— में तरे होंका कार मुझ काम १ कम वरों बहु बस्त वृत्तार १ 'दिवर'से पेना श्रेम रसनेवाजे भगवान् रामचन्द्रश्रीकी जन्मभूमि व्ययोज्याद्वरी क्या श्रीवर म होगी (द्रवरण होगी ।

देखिये--

अनवपुरी अनि रिवर बनाई । देवन मुझन-बृद्दिशार शाही ॥ धन्य है!

बाल्यकान्नद्दीने 'दिवर' प्रेमी किंगु-स्प शामका

'प्ले-बाउवक' भी केंगा रचित है हैं

बर्गन म जाव क्षित करनाई । अई संगतिनित बागे सई ॥ धनुष मोदनेवाने रविर ग्रंमी ई, सनएर धनुव नेरिया

भी पहलेमें ही 'रचिर' रच दी गयी अदि विस्तार चार रच हारी। विसन वेरिया शीवर सैंस्सी।।

मति विनार चादराच हारी। विमय बेरिका शीवर हैं सरी।। च्या च्याने हैं हैं

इसके कतिरिक बारानमें बानेके क्रिके सत्तारी थी रचित ही हो को ठीक है। बीकिये बारानकी नैवारोमें---

दों। स्व शीपर मूपपर करे।

भीर---

देवि रच सीचर बर्गाड वर्ड हरीर चड़ाव संरत ।।

महर्षि परिष्ठको "प्रविश" प्रवर्ते वैद्याना प्रवित 🗗 है क्वोंदि वह दुरोहित दहरें ।

'राजिश्मी कुलदका दुगना देख देख केर्रेगा है सक्य समक्रतीने भी कैंगी चनुगई बी---

क रहा मीचा हर मार करूर है पार प्रचान अपूर्ण में है -बर्गामा दिये ।

क्यों व से हैं

विषया 'परिवा' में हुनका बहुत प्रकृत है, किसी पोर्ट पोर प्रकारकार भी प्रकार परिवास है, के परिव पर्योग्ध हो उन्होंने बाता कीर बाता प्रदान है, पर प्रकार प्रकृत कर परिवास कीर कार प्रकार है, पर्य प्रकार कीरक समझ प्रवास कीर हो, परिवास की क्रिक

ह । दाकर---बहरूब प्रेंचा कॅटर के अफा १४४ छा पुरस् के क्यारें सार ॥

and amounted April but hile from

रामावतारमें रधुवंशके गुणींका पूर्ण विकाश। रघुवंगमें बडा गया है—

सानाय संप्रतायांनां सत्याय मितभारिणाम् । यरासे विजगी हूणां प्रजाये मुहमेधिनाम् । वैरावेडप्रयस्तितवानां योवने विवसीर्यणाम् । बार्द्रवये मुनिवृत्तीनां योगेनास्ते तनुत्यकाम् ॥

क्यांत 'पहुंची। लाग या गरीवकारके विसे क्षी देत्वर्यं गात थे। सामकी रागां दिले कम बोतते थे। कमानीय क्षीतिके विषये में दिलयों क्षेणा करते थे। स्टब्सिके विधे में गात्माकार्यों प्रदेश करते थे। वात्माकार्यों विशायकार्यों में गात्माकार्यों प्रदेश करते थे। वात्माकार्यों विशायकार्यों कर्म करें थे। देवस वीवनावस्थां में चनते क्षित्रक विषयों का केरत करते थे। इस में मेंगांस पात्मिक क्षात्म की प्रधायकार्यों मोगते हारा करते करते करते करते करते की 'आववार्य कीरायों का की कारा करते हैं। यह मेंगांस कर देते थे। 'आववार्य कीरायों का की कारा करते हैं।

-

महाराज दशस्यके हारा श्रीरामराज्याभिषेकका निश्रय किये बानेपर सम्पूर्ण बायोध्यामें परमोस्सव हो रहा है। बानग्दसागरकी उचाच तरहोंकी तुमुख व्वनि पूर्णिमाके सागा-सरह-गर्थनके तुल्य है। चर-घर सहस्र-कथाह्यां बँट रही है। सभी क्षोग कमियेडका उत्सव देखनेके जिये रुमाहित है। ऐसी स्थितिमें वहीं एक ही भवन ऐसा है वहाँ शान्तिका साम्राज्य वाया है, किमी प्रकारका ध्यर्थ कोबाहब नहीं है, बपरासमत-सहित खुलियाउ और अप बारी है। यह वह सालय है जहाँ राजहमार श्रीरामधन्त्रजी राबद्रमारीजी श्रीजनकनन्दिनीजीके साथ दैन्य-भावसे कडिन रात्य-शासनके गुरुरर भारको महत्त्व करनेकी शक्ति मास करतेडे किये प्रार्थनामें प्रदृश हैं। इसी धावसरमें माता हैदेवींदे मासादमें बुवाहट भावी है और सीराम सत्काव वारी उपस्थित होबर बारने पूजनीय धर्मामा विताको गोक-विकास स्थितिमें भूमिपर पढ़े देखते हैं चौर विनग्रताके साथ माता बैहेवीमे निवाडे शोकका कारण बृद्धते हैं। बैडेवी राष्ट्र कर देती है 🌬 'महाराजने पूर्वचालमें मुखे दो बरदान रेनेडे विचे प्रतिशा की बी, बाब मैंने उसकी पूर्तिके विचे रेंड बामे तुम्हारे शारवाभिनेडडे जिये संगृहीत सामधियोंडे होता भारतका रवाबहार-विभूषित होकर राज्यसिंहाननारूड रेत की कुरते तुमारा बीर-क्लब-बटा-वारवर्षक

मुनियतसे चौद्द वर्षके बिथे बनमें वास करना माँगा है। मैंने महाराजसे ये दोनों चरदान स्वीकृत करवा बिथे हैं भौर कनकी यही भाजा है।

एक राज्यपुकानिकारणे विविध धाराधाँसे पुक्त धांकारमास पुरक्के विवेध यह साजा माहान अयानक इयट-सराव हैं परक्ष विवेध यह साजा माहान अयानक इयट-सराव हैं परक्ष नामा हिता बहुन-कमावार निसको राज्यानिकेचके माणी पुक्की धारा इपेंद्रसुत उर्दों हर रहते थी, इस स्वाहाने पुनक्क स्वी किस्ति भी चीन, योन चीन बहुंगको पुनक्क स्वी विविद्ध भी चीन, योन चीन बहुंगको पुनक्क स्वी विविद्ध भी चीन, योन चीन बहुंगको पुनक्क स्वाह्म स्वी विविद्ध भी स्वी विवाध बहुंगको पुनक्क स्वाह्म स्वी विवाध स्वाह्म स्वाहम क्वाइ कि माला, सहर्च भागामा स्वावह किया सामा हार्य किया मां

वास्थवाकों मक्रपर्यमंत पावनके समय शीमगावान्ते पुरु बरिग्रके इसा वामक्यायक माहरिक संसारकी स्थायकों हो। वार्मिक कर्मायकों हो। सर्विदारण्य-क्ष्मावा पूर्व कर्मायकों हो। सर्विदारण्य-क्ष्माव क्षम् वार्मिक स्थायकों कर्मायकों स्थायकों विश्ववित्त कर्मायकों कर्मायकों कर्मायकों स्थायकों विश्ववित्त कर्मायकों कर्मायकों कर्मायकों स्थायकों कर्मायकों करायकों कर्मायकों कर्मायकों

प्रपटतो से न स्ताऽनिरेहतः

तया न मस्टी बनवासदुःसनः । मुखान्त्रतं श्रीरपुनन्दनस्य

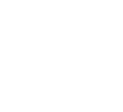
श्रीरपुनन्दनस्य सदार् वे मन्द्ररम्बरुगदास्य

सस्य

श्रीभगवान् बाएगं मानु-रिनृ-पनः तो थे ही, साथ ही बाप बाइगं सप्यनाही थे, बानने हैंगी-मनुगहमें भी कभी बारण बाएंग्र सहीं किया। "एवे ट्रिमोनियनाडे" थी दक्ति बारण बाएंग्र सहीं किया। "एवे ट्रिमोनियनाडे" बार्स बोक्पनिय है। बारण्य तो हुए रहा, सगरान्त्रे बभी बद्भाग्य भी महीं किया—

न बेति शनः परणति सरिश्ताः

सत्यके सम्बाध्यमें माधान्ते नवर्ष बदा है कि 'हे गोता! मैं शुनियोंके समीव को मनिजा कर चुका है कमें कीनेजी कभी भीन नहीं कर सकता, क्योंकि सहाने सन्त की मेंग इस है। मैं गुम्हारा, क्यम्बदा और मार्चोंका मोक्टियान



धरने इष्टरेवडी अधिके कारण जो धन्य ष्ट्रप्रेवके धरुगायीके साथ विवाद करते हैं और उनेकी निष्टेक राजाते हैं ऐसे खोगोंकी जो पाय जनता है वही पाय सुमनो हो, यदि में खार्च औरतानके वनवासका कारण होताँ।

राम-राज्य

वास्मीकि रामायबके शतकायक और रामचिति-मानके बराकरकों राम-राजके मुख्यका विस्तृत वर्षा ज है। दाँ बरा गया है कि सब ब्रोग परम सुसी थे। रोग, कोव, बाजक, ककावयुत्त, विनति मादि वाचाएँ किसीको वर्ष होती भी शतकरने बानने बानने वर्गने राम के, 'यथा रामा हम हमा ।'

यही इस राम-राज्यकी बाह्यताना कारच या। सिद्धान्य यह है कि क्षिपति कारचा नायक के सावर्य बंदी सार्वों का उपल समन हुए प्रमान कारितांद्र स्वर्य वहता है। स्वत्प्य देशके स्वसी, प्राप्त किपनित, यह सार्वक, मुकांके मन्तु, स्वतानके नेता, प्राप्त काराव, वातकांके शिचक, प्राप्तके द्वेतीह्व और न्यापात्वक कार्यक बाहिक उत्तम चानरच भीर न्यापात्वक भीर व्यवसारवे निकृष्ट हाँगे। समाजके द्वानिन्नामके विषे द्वरूपर बहुत बहा सारिक है। समाजके द्वानिन्नामके विषे द्वरूपर वहुत बहा सारिक है। समाजके द्वानिन्नामके की स्वर्याद समाजकुतके करण कार्याई है। अस्वरुप इस समको औराम-राज्यका आहर्ष चयने सातने स्वन्न बाहिये।

सबसे बड़ा राम-नाम

प्रत पराचींमें भूमपडल सबसे बड़ी कहा है, परन्तु दिन्दुभौगाकडे बतुमार ग्रेपनाग इससे भी वहें हैं क्योंकि क्लोने इसको ग्रस्ते फर्नोपर बड़ा रहला है।

धैरमात्रशीले बहे शंकर है क्योंकि वह रोपजीको ज्याने हाए या गडेनें कहत्व या दाररूपले धारवा किये रहते हैं। ग्रंकरजीले भी बचा कैसाल पहाच है क्योंकि शिवजी हत्तर जिल्ला करते हैं।

कैशासने वहा राज्य है, ज्योंकि बसने दिन्तिववके समय महान् कैशासको अपने बाहुबखसे छुटका दियाथा। राज्यसे बडे बाखि हैं क्योंकि उसके छुन कांगहने रिद्ध करत्याने ही राज्यको खिळीनेको मांति वजनेनें बाँच ा वर्ष भया । रचना था, बीर स्वयं वाली वले पूँचमें सटकाये पूमा करते ये। दूसरी कपामें यह भी कहा है कि शवयको वाजिने अभिनों पापनों कॉलमें शक्ता था।

वाजिसे अधिक प्रवारी शामका वह वास है, जिमने वाजिका संहार किया।

शायसे बड़े महाराजा राम हैं, को उस वायको बास्य कारते हैं।

रामले श्री व्यक्ति शक्तिमान् प्रवारी और महान् भोराम-नाम है क्योंकि इसके क्यमें राम हैं को रूक विस्ता और निश्चार्षक भीराम-नामका कर करते हैं, बक्के हुन्दर्गे अपवान् भीराम सदा सेवक्की गिनिशास करते हैं, इसीसे शीराम-नामका महत्त्व समक्ष भीतिये।

रामायण

चार पाट भव-ताप-हरण , निर्मल-बल सर है ! लिये अमृत-मण्डार , कही क्या अवर अमर है !

मरा बिन्दुमें सिन्धु , मकि क्या हरिकी प्यारी !

विविध झानका स्रोत , इःव्यकी गीता प्यारी ?

चग-अव-मात्र-कल्याण-रतः , पत्र सुरुचि 'कल्याण' इतः । निर्दे मकि-ममर-गीता प्रमृति , रामायण तुष्टसी-राचितः ॥

शायकारिम् "यपुर" यन- २०, १म०आर० व० शाय • रावित्र सीमदानीयंकरमीकी माद्या कीर करहेच्यालमार निर्मात ॥



पर्हौंपर महर्पिने सीताके विष्पाप होनेकी बात कहकर 'मेरे शब्दोंको मानकर' प्रयांत में कहता हूँ इसलिये इसले रनेहमाव रमतो-ऐसा कहा है। सीताके विषयमें वहाँ यदि किसीको कुछ शंका भी तो महर्षिने उसको अपनी जिस्मेशरी-पर विश्वास दिखाया । साध्यमवासी स्ती-पुरुपोंका सहर्षिके वचरोंपर विस्तास होना स्वाभाविक ही है, इसीखिये बन्होंने मान विवा। परन्तु अयोध्या या राम-राज्यकी समत प्रजाडे दिरवास सम्पादन करनेका क्या उपाय था र सीताडे सम्बन्धमें शंका उपस्थित करना धन्याय या, अपराध था और ऐसा करनेवालेको शीराम इयह हे सकते थे परम् बन्होंने पुरदर्शितासे अपने अधिकारका उपयोग नहीं किया । सहर्षित्रे हाथमें तो यह चथिकार होना सन्भव नहीं या । सुतरां सीताकी सच्चित्रताका खोगोंकी विरवास दिलाने के लिये अनके चरित्र-प्रसार बरनेका विचार 🗓 महर्षिके सनमें भाषा। महर्षिका उद्देश्य सीताकी सबोरियता बतलाना या परमा सीताका चरित्र शामपर भववन्तित था भौर रामने सीताका स्थाग कर दिया था । महर्पिके सममें रामके मति धरवन्त जादर था। अतः डेन्ड्रें कुछ काञ्चलक शामचरित्रका ही भ्यान लगा रहा। देशोंकी एन्दोरचना उनकी दृष्टिमें थी अतपून उन्होंने वैसी री रचना करके श्रीरामचरित्र-वर्यंगका विचार किया । महर्षिकी ये बार्ते रामायकामें या सम्य किसी अन्यमें स्वट-रुपने नहीं सिली हैं परन्तु से इतनी सहज हैं कि कोई भी चतुमानसे इनकी सम्बताको मान क्षेत्रा । इसप्रकार अव महार्ष रामबरित्र-वया नके विचारमें रत थे, तब एक दिन नारद्युनि बनडे बाससमें बा पहें वे। सहचिने उनसे प्ला--

केंप्रवरिवन् साम्प्रतं होके गुणवान् कब बीर्मवान् है

(गा॰ रा॰ १११।१)

महर्षि-वर्षित गुवाँका संग्रहतो बहुत बढ़ा है, इस समय हमें उससे बोई प्रयोजन नहीं है। सहर्षिके पूर्वनेका सारार्थ पर है कि समुक्त भागुक गुजोंसे युक्त पुरुष इस समय पृथ्वी-गर कीन है। प्रस चलाह है। उन्होंने इस प्रकार न लो हीं रामका नाम क्षिया है और न उनका कुछ अस्पष्टरूपसे ही दरश्चेत्र किया है। इस प्रश्नके कत्तरमें नारदने संचीपमें रामक्तित्र सुनाया । नारहके काले कालेपर महर्षि स्नान कानेडे जिये तमसा-तीरपर गये । 'उसी समय क्रीज-क्षकी बरता हुई और महर्षिके गुसले शापके निमित्त शोकमधी वाबी निकडी। कहना नहीं होगा कि रामचरित्रमें मन खगा

रहनेडे कारण ही महर्षिने नारदजीसे उपर्युक्त प्रश्न किया था । महर्षिके मनमें रामचरित्रके छन्दोवद करनेकी कल्पना थी. हमने यह अनुमान कीय-वधके लिये व्याधको दिये गये छन्दोबद शापसे किया है। सीताकी दयनीय दशा देखकर सहर्षिका चन्तःकरवा जैसे हवित हो रहा था. उनकी वैसी ही दशा कौब-वधपर शोक करती हुई कौछीको देखकर हुई । इसने उपर्यंक स्रोक्से ही उनके सनमें चन्दरचनाके बिये संकल्प होना चनमान किया है। यथपि शामायसर्मे वही कहा गया है कि यह शोक उनके मुखसे सहज ही निकल गया था और ऐसा दोना वस्त-स्थितिके अनुसार सम्भव ही है। परनी यह मजना नहीं चाहिये कि एन्द-रचनाकी कोर उनकी जो प्रवृत्ति बढ़ रही थी. यह उसीका परिवास या, यह बात भी उतनी 🜓 सम्भव है ।

इसके बाद महर्षिने बालकायरके पाँचवें सर्गसे यद-कारप्रतक रामायसकी रचनाकर यह काग्य सब-रशको धराधा । बालकारपुढे प्रसादगारुपमें प्रारामके की चार बर्ज हैं वे अहर्षिने ग्रन्य-पूर्विके समय लिखे थे, यह स्पष्ट है। बीचमें बहत-से स्थानोंपर पीछेसे मिलाया हुआ महिस भाग है. उसका विवेधन इस 'रामायय-समालोचना' नामक मराठी प्रत्यके एक स्वतन्त्र प्रकरकामें कर शुके हैं। कहनेका जनसङ्ख्या कर कि को सब काव्य था बड़ी सहर्पिने सब-कराको पदाया । इसके बाद यह प्रश्न सामने घाया कि इस कान्यका प्रचार कैसे हो ? खबवासुरको मारनेके बाद जब बारह वर्षके उपरान्त, शश्रमती बीटकर प्रयोध्या जाते समय पुतः सहर्षिके साधानमें दहरे, तब बन्होंने सव-पुत्रके हारा क्रवने सैनिकों सहित रामायवाचा गान सना, जिससे उन सबको बना ही प्रातन्त हुआ। इसरे शस्त्रोंमें हम वी कर सकते हैं कि इसमकार यहाँ महर्पिके काम्पकी मधमावृत्ति क्या की साथ बिकासदी और उन्हें रसरी आहति निवासने दे विये चरिक रासाह मिया।

शीलके जिलाव शासरयादी दया शोगों में उसके सरिय-प्रचार बारा विस्तत करनेके वहेरवसे ही महर्विते शमायणकी रचना की थी. हमारे इस चनुमानकी सन्पना रामायककी रचनापर सुच्य दक्षिते विचार करनेवाझाँके च्यानमें सरस्य का आवर्ती । रामचरित्रार विशेष मदारा द्वांखनेवाला आग है श्रदोध्याद्यदर । रामके पराष्ट्रमहा वर्षन यह दादरमें है । श्रीताचे बधार्ष परिश्रमः सीता दरएथे ही प्राप्तय होता है कीर यह क्या चरवपदायहमें है। यह क्या महर्चित्रे की



वरी महान्य है। किनाजी महाराजके समय समये रामवास-सामीने महाराष्ट्रमें जो लागृति वरण की थी, उसका चरिक धेर स्वारोजिंड व सिन्ध-सावादाकों है की 'कमक कोड' माते हुए मार्थोंका क्रमार करते थे। इतिहासका इस राजके बानने हैं। वन्हींने प्रधानत उनके पहले चीर शीवेड़े सारागृति बारकों सम्प्राचार दे हरावाद पुरस-पुरस्थ प्रकान सारागृति बारकों स्वाचारायित हरावाद पुरस-पुरस्थ प्रकान माते हुए कोरोजिं चर्मजागृतिका कार्य वाही उच्छानाति दिना इस समय भी इस प्रवाच देवाते की कोरपा-न्यासकार वालातीं, प्रस्तु प्रमुक्त कार्य कार्य हुए आहिका चार्च कार्य है। महर्षिको योजना भी इसी मकारकी थी। यर समय देवे कोरा भी थे, जिन्होंने कीरासका चरित्र वीतों देवा या सीई रासके कित करतीनों अगोरी अंत के चया भारत्वा भारत भी दूर्यंकरके था। सबोध्याकारकका गान सुरसे ही इस मेन और कारहरका बुगा वह बाना कीन चर्च ताह है। इस मेन और कारहरका बुगा वह बाना कीन

यपोध्याकायका वह कथाभाग क्रमके हिलावसे प्राराधमें बादा है और जब-कुराके मुक्ति स्रोताकांकी सकते पाये वही सुननेको सिखता था । आँखों वेखी बात वैसी की वैमी सुनमेडे कारण जोगोंके हदपोंमें यह विश्वास समना स्वामाविक है कि काध्यकी कथामें कहीं भी सत्वका व्यवलाय नहीं किया शवा है। यह विश्वास जागेके कथाशागणर सचना और विश्वसंगीयताकी छाप खगानेमें विरोप क्ययोगी होता है, इसका बतुमव उस समय हो जुका है अब 🌬 महरतीने बौटते समय शहुत्र भागीमें महर्पिके धाश्रममें क्रों थे। रामुझने क्रपने साथी सैनिकों सहित क्रव-हुराके सुतमे रामायका गान सुना, राजुझ केवस एक ही रात बहाँ दरहे, इतने थोड़े समयमें सन-कुशने उन्हें कुछ ही सर्व शुनाये होंगे। परम्तु गान शुनते ही शतुमके नेत्रोंसे भीत् वहने को और शरीरकी सुधिवाली रही। (वा० ७। PI (10) इससे सहय श्रीपता समता है कि सव-कुछके हात शाबा बानेवाळा कथामारा सर्वोच्याकायहका ही था। इस गानके सुननेपर सैनिकोंकी को बस्म हुई थी, कसका रचेन पदनेने धपोच्याकाषड-सम्बन्धी हमारा कनुमान धीर भी रहतर हो बाता है। यह वर्णन इसमकार है—

परानुसाम वे राइस्तो कुला सीतेसस्परम् ॥ मरानुसाम दीनाम झामवीमित पानुवन् ॥ परपरं च वे ठत सैनिकाः संबम्मीपे ॥ किमिदं क च बर्तामः किमेतस्वप्रदर्शनम्। अर्थो यो नः पुरा बष्टस्तमाक्षमपदे पुनः॥ श्रुणमः किमिदं स्वप्नो गीतबन्यमनुसमम्।

(बा॰ एक काउराहर-२१)

'शत्रहाके साथी खोग गान सनते ही सिर मुकाकर दीनसे बन गये और 'बाअर्थ'बाह्यर्थ' प्रकारते ४ए पास्पर कहने लगे कि 'चरे यह क्या है ? इसलोग कहाँ हैं, स्वम सो नहीं देख रहे हैं ? को बात हमने पहले धाँखों देखी थी पही सुन रहे हैं। स्था यह स्त्रप्रमें तो महीं सन रहे हैं। रामावखगान सुननेपर इस समय साधारण चनताकी कैसी रखा होती थी. इसकी कल्पना करानेके लिये पडाँ परे छोच उचत किये राये हैं। कान्तिस श्लोकमें सीनिकोंका यह उद्गार कि 'इसने जो बातें बदनी खाँकों देखी थी ठीक वही आज सुननेको मिस रही हैं' वर ही महत्त्वका है। रामायणी-कवाका वह आग जिसमें रामवन-गमनसे खेकर चयोच्या और सानेतरका वर्णन है प्रधांत सारवरकायहमे युद्धायह-तक्का वर्षत, अयोज्याके नागरिकोंमें किसीकी बाँखों देखी घटना प्रायः नहीं है । उनका देखा हुन्ना कथामाग तो बास भीर समोज्याकायकमें ही है। इससे भी यह स्पष्ट है कि लव-दुराने को यांच किया था उसका स्रयोज्याकायड होना ही प्रधिक सम्भव है।

इसी प्रदार चयोध्यामें भी सब-तुत्राने चयोध्याकायहका नान किया द्रोगा और उसे सुनकर खोगोंकी देली ही दरा हुई होगी । राम-वर-वासके वावकी कथाएँ जीगोंकी बीच-बीचर्ने इचर-उपरसे सवायी पहली थीं। चयोध्याकायहकी कथा जीगोंकी जानी हुई थी। सब क्षोगोंने दने टीक सिखसिखेवार सुना तब उनका, जागेकी क्याके किये भी इसी प्रकार देसा अनुमान होना 🎏 वह भी देवी ही सन्य चौर सम्बर होगी, बीर शसके बाननेके किये जिल्लास बहुना स्थामाधिकथा । शासप्य किसीने कथा समने के खिये. किसीने सन्यान्वेपखंडे क्रिये और किसीने शीताका कपवार सिद करनेके जिये ही बागजा कपाधान गानेके निमित्त खब-समाकी बहत ही संग किया होगा । किसीने कहा होगा कि 'कब रावल सीताके पास काया तब वह चया करती थी ?' 'बड उसे कैरे के गया है हमें यह कथा मुनायो ।' दूमरेने कहा होगा-'शवयने सीठाको कहाँ उस्ता था रे' 'बसमें चौर बीतामें क्या वातें हुई हैं यह श्वाधी ।' मनखब यह कि. जा समय हेरी कितने प्रस पत्रे शर्थ होंगे हो। साम के किए



रामायण-पञ्चदशी

(सं•—मीरपुनन्दनप्रमादिशहबी)

स्मे-प्रधान---

कर्मन्यधान पिस्य करि राखा। जो जल कर मी तस फाट चाधा॥

र्जारमा--

पत्य धरम स्नुतिबिदित शहिसा। पर-निन्दा-सम अस म तिरिना । पुरय---

परम न दूसर सत्य समाना। भागम निगम पुरान बलाना॥ अलेय-जडाचर्य---

जननी-सम जानदि पर-नारी। धन पराय विश्वते विश्व आर्थाः मन्त्रोष---

नरात सुमाय न मन कुटिलाई। जपालामं संतीय रक्तां ॥ वनः सन्य-सदाय परोपकार---

राममान पर्राटनियस पर्युक्त दुनी इयाम। मगत सिरोपनि मस्तने जनि दृश्यद् सुरगाल ह पारित बार जिल्हके सनमाही । निन्दर्द जग दुर्मम बचु नाहीं ह

बीहान्स-न्बरूप--

रेक्टा-धेर जीव अविनासी। वैत्रव मतार शरक गुकरासी ह

नाम-माहारम्य---

सोद भव-तर बहु संसय नाही। नाम-प्रनाप प्रगट शक्तिमारी ह

सर्वार्षण और निष्काम मजन-

बचन करम मन मारि गति भजन करति निःकाम । तिन्दमे इदयन्त्रमस्मदं करउँ गशा विद्यापः

शरणागत मक्तकी धेप्रता---

सुनु मुनि नोहि बदऊ" शहरीसा। मजिंद जे माहि लिज राष्ट्रम भरीता। बरड सरा निन्हरी स्वयारी। क्रिमि बारकहिं राग सहनारी ह

सतत-स्थरण---

कद दनुमंत्र विपति छन्न भौरी। जय सब प्रिंगित सजन न होते ।

संमात-मग्रदन्यय्--

शीवराधसप सब ज्ञा जानी। बर्गे बनाम और सुग पार्ना इ सी अनस्य जाने असि ग्रांत स दर्ग हरूग्राम्य। री शेषक अवशाबर का शांत अगरून ह निशंच-भ्याग--

भरच म धरम म बाम वस्थितर्गत म बहर्ष (ररकार जनम जनम पनि पामपर यह बरहानु स क्षाद ह

मन्त्रेक रुप्रम

मिर काम मिन्द्रमध्य । बादक दुक मुख मुख देवे वा म an migglie fent fruit ! g. einere bae me mig et के तर्र कर टीवनका द्वारा । सन बन्त कर कर कर्णा अवस्था हा कर्री राज्यम् सर्व समाते । साथ प्रात्मा राज हे बाते श विकास का कार्यान्त्र । कार्य किरोह केंग्री के राज्य पत

aften menn mit a fant all mendet m के शब रूप्य कर्ती संभूता है सत्यू रूप कर केला पर क an enforce d'e d'es de l'amanage de bed

Large was the green where a section b had be bolle gorit guret.



'मनता-स्त'से कही जायगी, सो उत्सरमें बीज बोनेकी माँति व्यर्ग होगी, यथा-

> 'ममतारत सन स्थान कहानी !' 'कहर कीज वय फट स्था !'

समुद्धा नी न-समयते नहीं धनता । आव यह कि निमुं सम्ब धीर मुख्यपी मागाने देखीम-विद्योगका हथार्से बनेंद है। निमुंच ब्रस्ट श्रेय नहीं है, जाया थीता जा सकता है जो तेय हो, क्यां प्रस्ता हैते जाया जाय है और प्रश्ना ही इस है, क्यार बहा नहीं सामा जा सकता, ज्या-

क्षेप्सन तुम देसनहारे । विधि-हरि संसु नवायनहारे ।। वैट न जानहि समैं तुम्हारा। शीर तुमहि को जाननिहारा।।

मापा भी नहीं जानी जा सकती । यह तो ज्ञयटन-पटनापटीयती है, जो हो न सके उसीको कर दिखाना मायाका काम है। देखान

बो नावा सब जगहि न चाना । लासु चरित ठाली काहु न पाना ।।

भीर संयोग-वियोग महामें बनता नहीं, प्रधा-"सपनेड़ रोग-वियोग न बाहे। भारपन बदि समकते बने सभी भारत है।

न महा महानी--- यखानते भी नहीं वनता । भाव वह कि दलको कहने के जिये उपयुक्त शब्द ही गहीं मिखते, थया--

केरत करिन जान का कहिये। रेका तर रचना निरित्त और समुद्धि मनदिन मन सिने। एन मौजार किया ना नीहि नितुक्त दिखा पिनेटी। चेर निद्धान नारह मीज दुक्त चाहम यह तन हिरो कोड कह साम सुरू कह केटल गुम्कत प्रमुक्त कहि माने। इसकेरास पीर्टर शीने अन तम मामन पीटियाने।।

पान्तु वेदान्तवे बारवोंकी गुरु-मुखद्वारा सुनते-सुनते घरुमत हो सकता है. यथा-

'बिनु गुद्ध होद् कि न्यान १॰ 'बनुमदगम्य भगहिं जेहि सत्ता १॰

इस चौराईसे 'नित्यानित्य-नालु विवेक' रूपी जयम सादन बत्रवाया गया ! २-ईश्वर अंस जीव अविनासी । चेतन अगल सहज सुखरासी ॥

अर्थ-चेतन अमल सहज सुखराशि जीव रेश्वरका अंश है।

र्देशर—हैंबर भीर महासे भवरधानेदमात्र है, वस्तुनेद वहाँ है । महाकी कोई स्वरुधा न होनेके कारण, जामन, बत्रा भीर मुद्राप्तिकी कपेवा उसे सुरीप (भीषा) कहते हैं, भीर उस भवेषाकों भी छोड़कर उसे सुरीमातीत या केवल सुरीप कहते हैं। यथा—'ग्रापेश्वर केनजर' वही महा वह बारावे काशकरूप अर्थोद सावायिक कमसे देसे बाते हैं, देशर काशकरूप अर्थोद सावायिक कमसे देसे बाते हैं,

जनत प्रकारय प्रकासक रामु । मायाचीस न्यानगुनधाम् ॥

कंश्रः—कस सायपति देशाका चंद्रा क्यूनेक प्राप्त का कि सक और सायाको खेवर हा सब पराव दें। पूर्व महक्क स्वयद्ध कार्य सार्व दें। पूर्व महक्क स्वयद्ध कार्य सार्व दें। पूर्व महक्क स्वयद्ध कार्य हा तक्क वंद्राकों कर मी सकित-सक्त-सक्त सार्व कार्य हा तक्क वंद्राकों कर में महक्त सक्त कार्य सार्व कार्य कर के देश का कार्य महिंदी हैं, जिसे क्ट्रक्र वार सार्वी करते हैं। सार्वी क्ट्रक्र के साह्यकार कीर प्रवाकारमें करिरत में रहे हैं दें वार्वों की करिरत में रहे हैं। सार्वी क्ट्रक्र के साह्यकार कीर प्रवाकारमें करिरत में रहे हैं दे वार्वों की करिरत में रहे हैं। वार्वा-दिवाक सामय सार्वी क्ट्रक्र के तीर मुक्त-दिवा कि दिन हैं, कीर मुक्त-दिवा कि दिन है, कीर मुक्त-दिवा कि दिन हैं, कीर मुक्त-दिवा कि दिन हैं, कीर मुक्त-दिवा कि दिन हैं, कीर मुक्त-दिवा कि सार्व कि महित्स है। क्ट्रक्त कर के सार्वा-दिवा पुरू है है। हो की कीर मोलामी-तीने 'सार्व' के सक, है पर कीर कुटत की मोलामी-तीने 'सार्व' के सक, है पर कीर कुटत कीर कोरों का प्रवाक होता है। है, क्यों कि एक ही सीन चारितर होता है।

काल-महिल्लस्यान सावार्षे वह ब्रद्धशा धिरियन वह है, वो समझे सावित्यसे कारण प्रतिविध्य हो बाते है, चौर वन प्रतिविध्योधी वह मिल-सावानाया हो देह हो बाती हैं। वही देस कारवारीर ब्रह्माते हैं चौर वनके धीमानी बीत पात्र ब्रह्माते हैं। मिल-सावाना प्राथा, सुबा-दिया, ध्यान, धर्मधर, कारवार्थार धौर नामस्मातिकार वे सब वर्गवार्थी धरु हैं। गोलागी प्रति वे बोक्की बीत गोली क्यार्थी, है। परा-

मूमि परत भावावर पानी। विमि जीवर्दि माना रूपटानी।। परवस जीवस्वतस मणवन्ता। श्रीव अनेक एक धीकन्ता।।



गिता है, दौ हमेरे दौहता है निहान बबसे केंग्र काता है। उसी मकर शीव भी मागारे केंग्र-सा गगा। परन्तु जहका उदाराय देनेते किसीकों जोनके मिल जहका सन्देह न हो ज्यादराय होने कि सजार जो कोई हस्सी नहीं है जिससे कोई चोंगा का सर्दे इसकिये कड़ा है कि—

'बँध्यों कीर मर्कटकी नाईं।

कीली गाँ- सुमोकी अंति वेंच गया । जाव यह कि परिवार हो तिर्वियों गाइका उनके सिरोबर एक जीतरी विद्यों गीय देवा है, गाँव उस तीसरी तिक्रीमें कीतकी गाँवी गाँव गाँव है, गाँव दान तीसरी तिक्रीमें कीतकी गाँवी गाँव गाँव है, गाँव दान है। प्रतापन कर वह नवरीवर केंका नाम कैंग्रेस किरो कुकार है, मानी पून व्यति है, कुमा बक्ता कराने काता है। प्रतापन कर वह नवरीवर केंका नाम कैंग्रेस किरो कुमार है। प्रतापन भावका को गोगा गाँव, मानती वहेतिया जाकर उसे पकड़ खेता है। विचार बारोसे वहेतिया जाकर उसे पकड़ खेता कार करने सार्वे हैं।

विश्वी महाजाये हुम्योंको वह हुईएंग देवकर एक विश्वी महाजाये हुन्ये करे दाने-'देवो ! हुम्या ! वार्योका कोम कार्य करीरत व देवना, चौर' वार्ष्ट वेक्कर को उसके देवलेश निवद होकर करे कोच देना !' कक हुम्या प्रकर देवलेश निवद होकर करे कोच देवा !' कक हुम्योका वाक्य दिवस हुन्ये हुम्ये भी वैसे ही बोधने को! कार्याला करे मानवंक कोई कियान मार्गि रहा, कब कि उन्होंने एक हुम्योके समीजवार कार्याकर हुन्य पाने प्रकार कि कार्य (पान हुम्योका कोच महत्य हुन्योद सम्बादक कार्य (पान हुम्योका कोच महत्य हुन्योद सम्बादक कार्य (पान हुम्योका कोच महत्य हुन्योद सम्बादक वार्यो (भावत्व कार्यो)परिकर्वोको भी स्थित मूर्जी सी देवी वार्यो (भावत्व वार्यो)परिकर्वोको भी स्थित मूर्जी सी देवी

महंदरी मां—बातर भी देते ही बंबता है, उसके हाथ बावेडारक बेहरावी इविहास दानोंसे मरकर कारीनमें मार में बाते हैं। बातर वजीर स्वर मांकड़ मुठीमें दाने पकड़ बेता है। बात सुरी उत्तरीते गरी निकबती तात के बाता जात है। बोत सुरे उत्तरीते गरी निकबती तात के बाता जात है। बोत सुरे, स्वरातने मूठी नहीं बोहेता 'खान वह भी स्वरातने ही बेंदा है। यह मूठे होनेते 'मुमाग परिवर्तकों मेरित मेरनाम्ब्रा पाठ करते हुए बदा गर्दी है। यूलेंडर म्मद दिवातने के विचे 'मक्टेजी मार्ट्स' बहा। इसी तरह बीव बज्ञान-यन्धनसे वँधा हुधा है, हज़ार प्रयक्ष करनेपर भी नहीं छटता ।

> ४-जड़ चेतनहिं ग्रन्थि परिगई। जदिष मृपा छटत कठिनई॥

अर्थ-जड़ चेतनमें गाँठ पड गयी, वह यद्यपि झूठी है पर छटना फठिन है।

नड़ श्वेतर्गीह्—जह-शेवन दोनों बिट्द ह्वमाहराहें पहार्य हैं। एक व्याप्तकार है, तो तुरता प्रकार है। एक विश्वय है, जो तुरता शिवरों है। एक सिप्या है, तो तुर स्वय है, जो तुरता विवरों है। एक सिप्या है, तो तुर स्वया एकडे धर्मका दूसरेंमें प्रभास (अस) होना, स्वया एकडे धर्मका दूसरेंमें प्रभास होना रिप्या है। धर्मा—

किति कड पायक गयन समीता। पंचरिकत यह अथम सरीरा ॥ अगद सो बनु तब आंगे सोआ। जीव नित्य तें केहि कवि रोजा ॥

, जीन परि गई-नारि एवं पारी सम्मीत कांद्राण्य हो गया। कांद्री चेतनका काणाव होने बारा और वेतनके शहका। इस गरिकार किरानिक क्षेत्री केंद्री कांद्री कांद्रिया हों। है प्राणिक क्षेत्री केंद्री कांद्री कांद्री कांद्री कांद्री केंद्री हों। है है है। प्रिण्यकों समकारीमें सुभी केंद्रे किये 'पड़ गयी' कहा। आरखारी हों। वेदान करा। आरखारी हों। वेदान करा। आरखारी हों। वेदान करा। और गरिकार है, वेद्री गरिकार है। वेदान करा। वेदी गरिकार है। वेदान करा। वेदान करा

रनत सीप महेँ भास निमि, जया भलुकर बारि । बद्षि मुचा तिहुँ कारुमहें, अम न सकर कीउ टारि ।।

पहि निवि जग हरि आग्रित रहर्र ।।

. जदिए भूगः—यचिष गाँठ सूठी है, जनमात्र है। माथाके साथ चर्तरा क्रस्यका सरदण्य कैसा है घटाकाणका सबसे सरदण्य केवल धानसे सिद्ध है। वया—

जदपि असत्य देव दुस कहई।

्रित कठिगई—हृदना कठिन है। विसीका इटावा यह अप्यास नहीं हटता। क्या खोकका क्या बेदका, सब क्यवहार हसी अप्यासपर टिका है। यथा—

> 'कर्ष कि होद सरुपदि चीन्हे ।' ५-तवेल जीय मयुत्र संसारी ।

ब्रन्यि न छूट न होइ मुपारी ॥ अर्थ-अवसे जीव संसारी हो गया, तरमे न सो गाँठ छूटती है <u>और</u> न यह सुधी ही होता है।



मोहान्यकारको मिटा देवा है। परन्तु क्रमी वित्-तद-अन्यि बनों 📢 है। विज्ञानरूपियी बुद्धि इस प्रकार प्रन्थि-मेदन अप सब्ती है। यदि प्रन्थि-भेदन हो गया तो अध्यास सराडे विये मिट गया, और सहजस्वरूप कैयल्यकी प्राप्ति हुई। यही परमपद है। इसी बातको दीएकके रूपकर्मे मुक्मताके विये विश्ववरूपमें चया न किया व्यावसा ।

तरहुँ स्ट्रानित्-माव यह कि ईग्रके पेसा संयोग कर देनेपर भी कार्य-सिदिमें बहुत सन्देह है। क्योंकि साधन " बहुत कठिन है धौर संसारी जीव रोगी हैं। रोगीकी क्या सामर्थं जो कठिन साधनका सामना कर सके। यथा---

मीह सबक स्माधिनकर भूका। तेहिते पुनि उपने बहु सूका।। रहि निदि सहल जीव जग रोगी। सोक हर्षभय श्रीति वियोगी।। पष्ठ व्याधिदतः नर मरङ् , प असाध्यः बहु व्याधि । सन्तव पीढिंद जीव करूँ , सो किमि रुहद्द समाचि ।।

भीर दूसरी बात यह है कि 'सकृतीपास्ति-लान' विसर्वे प्रतिकी सहायता नहीं है, सिद्ध नहीं होता,यथा-वे न्यानवाल विमन्त तब समहरानि सगति न आहरी ।

है पार पुर दुर्तम परादिष परत इस देखत हरी ।। से--वह वित् (चलिः, भातिः, श्रियः) धीर अव

(बामहर) की गाँउ।

निस्भाई-चर्यात् वह गाँउ सुखमे । चस्ति (सत्) माति (चित्) और प्रिय (धानन्द) ये तीन धंरा मक्कडे थौर नाम थौर रूपं, दो थंश मायाके, इन्हीं पाँचोंने उत्तम-कर प्रपद्मकी गाँउ बना रक्सी है, और इन्होंके उजस्तरा वसम्बद्धाः संसार बना हुआ है, सो सुबक्त जाय। चर्यात तीन यंश नहाके पृथक् और (नाम-रूप) दी यंश मायाके एक्क हो जायँ । गाँठके धाँधेरेमें होनेके कारख प्रकाशके किये दीपका संकल्प हुआ। दीपके साधनमें, ठहरनेमें, पेसा विश्व बाहुक्य है 🎼 संयोग धानुकूल क्षोतेरर भी बहना पदा कि कश्चित् ही वह सुक्षम सटे। यथा---

माधव मोह-पास वर्षो रहै । बाहिर कोटि उपाय करिय अभिअन्तर ग्रन्थि न एटै ॥ युत-पूरण कराह अन्तरगत ससि प्रतिबिम्ब दिखाँदै । इंबन अगिन समाह करपस्त और नास न पाँ**रे।**। तरकोदरमेंड बसि बिरंग तर कारे भरे से जैते। साधन करि अविचार करहिं मन सुद्ध होई कहु कैसे है बन्दर मंदिन विषय मन अदि तनु पारम करी इमारे । सरह न उरम अने ह जरन बढ़मी ह विविधि विशि मारे ।। शृहसिदास हरि-गुद-कदना विनु विमह विदेश म होई। बिन बिबेड संसार-चेत्र-निधि पार कि पाने काई 11

रघवर भजो

मजहु मन रघुवर दीनदयाल ॥टेक॥

बाँटी परण-सरोब न भविही ,

फिरिडी असत बिहाल । कुषिरत **ही** सुम नाम सरगाधिव

मिरिहै भव-दुस-ध्याल ॥१॥

वक्तितिन्ह मुसदायक धनवत्

स्यामल गात रसाल ॥ र्पंत बसन बर विम्बु-विनिन्दित

पन्दन माल बिशाल ॥२॥

शीसमक्ट शोभित भति कण्डल

धनुषरं दसमुरा काल ॥

बर बामांग अनक-तनया-छवि

नवनन्ह करत निहाल ॥३॥

बेर करत निशिषर गन तारको

को जस निवरन पाठ ॥

"धीयन" जाहि भने यय याजन

जग-बाह्य ॥२॥ -वीरायस्थानार्वे साठी वेसाराहरूव







संचिष्ठ रामचरित माला

वालकाण्डम्

१-श्रीमद्रवि-कुल-दीपक। राम २-धितजन-कल्पक-सीता-राम ३-राक्षस-कुल-बल-शिक्षक राम ४-भकावन-सुविचक्षण ५-मायातीत-गुणाञ्चित राम ६-सरवैकगुणाधिष्ठित राम ७-यक्षेश्वरदित-पजित राम ८-कर-धृतधर्मविराजिल राम १-मरसुरवर-दत्ताभय राम १०-याचातीत-गुणोज्ज्यल राम ११-घृत-मानवरूपाञ्चित राम १२-नत-विधि-शङ्कर-माधवशाम ११-कीसल्यावर-नन्दन राम १४-दशरधतीयण-कारण राम १५-कौशिकलब्धाखिलशर राम **१६-**घोरासुरयोपान्तक राम १७-विश्वामित्र-सहायक राम १८-मारीबस्मयवारक राम १६-चैतन्यद-पटु-पद-नक्ष राम २०-गौतम-हदयानन्दन राम २१-जनक-तपःफल-कपक राम २२-खण्डित-मर्ग-शरासन राम २३-क्षीणी-तनया-संगत राम २४-निर्जित-भार्गय-कुळमणिराम २५-साकेतपुरी-भूपण राम २६-सीता-इत्पन्नर-शुक ग्रम

अयोध्याकाण्डम<u>्</u> २३-केकय-सनया-चञ्चित राम १८-पित्राक्षा-परिपासक राम १६-सीता-सङ्गण-सेवित খাম ३॰-पृत-तापस-चेपाञ्चित राम **३१-**परम-सुहदु-गुह-पूजित राम ३२-भारद्वात-मुदाबह राम ३३-चित्रकृटतट-निवसित राम ३४-केकेयीतनयार्थित राम १५-अवलसमीहत-पादुक राम

अर्ण्यकाण्डम् ३७-भीपण-कानन-विहरण शाम ३८-कर-विराध-विदारफ ३६-मुनि-जनगण-दत्तामय राम ४०-राकाचन्द्र-निमानन ४१-दिव्य ग्रहामुनि सं**तु**त राम ४२-कुमाज-दत्त-महायुध ४३-पुण्य-सुतीक्ष्णाम्यर्चित राम ४४ परिचित-गृधकुळाधिप राम ४५-पञ्चवटीतट-संस्थित राम ४६-इत-शूर्पणका-नासिक राम राम **४७-हत्त-खरदूपण-दानय** ४८-माया-हरिणोइश्चित राम **४६-दारित-मारीचासुर** राम ५०-देत्येश्वर-इत-भूसुत राम ५१-दारान्येपण-सत्पर राम ५२-गृधाधिप-संवीधित राम ५३-नाम्चक-बन्धोन्मन्थक राम ५४-शबरी-इत्त-फलाशन राम

५६-यवनात्मज-संपृजित किष्किन्धाकाण्डम् ५७-रविज-निवेदित-निज-कचराम ५८-प्राप्तावनिज्ञा-भूपण राम ५६-लीलोव्हिप्ता-सुरतनु राम ६०-खण्डित-सप्त-महीयह राम ६१-एकाशुगनि-हतेन्द्रज राम ६२-अभिषिकार्कतनुभव राम ६३-गिरिधर्यन्तर-संस्थित राम ६४-धानर-सेना-परिवृत राम ६५-सीतालोकन-तत्पर राम

६६-प्रेपित-यानर-नायक

राम

राम

राम

५५-थंपालोकन-दुःखित

६७-गृप्र-सुबोधित-वानर शाम **सुन्दरकाण्डम्** ६८-जलनिधि-लङ्गनपटु-मटराम ६६-लङ्कान्तक समुपासित राम ७०-सीतानन्दकरार्चित राम **०१-**मास्तसुत-द्चोर्मिक राम

७२-विश्रावित-निजनामक राम ७३-दूषित-रावण-विक्रम राम **७४-मस्मी**कत-लङ्कापुर राम ७५-ब्राप्त सती-चूडामणि राम ७६-जलनिधि-घेला-वासक राम

युद्धकाण्डम् ७९-ग्ररणाकान्त-विभीपण राम ७८-शयनीरुत-दर्भोत्कर ७६-जलनिधि-गर्य-निवारकराम ८०-वारिधि-यन्धन-कौशल राम ८१-विकोटक-परितोपक ८२-विपुल-सुवैलाचलगत राम **८३**-अहिपाशीत्कर-पीडित राम ८४खण्डित-फणि-शर-चन्धनराम ८५-घटकर्णासुर-चिदलन ८६-नाशित-मूल-वलोत्कर राम ८७-रावण-कण्ड-विलुण्डक राम ८८-अभिविकाहित सोदर राम ८६-सीतालोकन-कौतुक ६०-शुचि-परिशोधित-सीताराम ६१-ब्रह्मे न्द्रादि-समीडित राम ६२-दशरय-दर्शन-मोदित राम ६३-मृत-यानर-संजीयक राम ६४-वुष्पक-पानाधिष्ठित राम १५-प्रकटित-पाप-विमोचक राम ६६-विरचित-पशुपति-पूजनराम ६७-भारद्वाजाचितपद रास ६८-भरतोत्कएटा-पूरक राम १६-जनयित्री-हर्पपद राम १००-नरवानर-दितिज्ञावृत राम १०१-अमिपेकोत्सय द्वित राम १०२-करणामुद्रितचीशण राम

उत्तरकाण्डम १०३-संजीवित विवासक राम १०४-स्मरणैक-सु-तुषात्मक राम १०५-अपवाद-मयैकादित ₹(H १०६-बाजड-मोशमद-पटु राम १०३-एक-शिलानगरालय .राम १०८-योगीन्त्र पसुपृतित राः

राज्य

(तेमक-बीवैवितीससम्बद्ध ग्रम)

करा चैदेहीने—'दे नाय, सभी तक चारों माई साय मोगते थे ग्रुम सम-ग्रुय-मोग, स्वयस्था मेट स्त्री यह योग।

मिन्न-सा करके, तुमको यात, राज्य दैने हैं कोसलरात। तुम्दें रुपना है यह अधिकार। "मिये, पर राज्य सोग या मार

बहेके टिप बड़ा ही दण्ड, मताकी धार्ती सदा अध्यक्ष। तद्पि निह्चित रही तुम निरंप,

नहाँ राहित्य नहीं, साहित्य।

रदेगा साधु भरतका मन्त्र, यरास्यी छक्ष्मणका बल-सन्त्र। तुन्दारे छघु देगरका घाम, मातु दायित्य-हेतु है राम,।

"नाय , यह राज-विचान पुनीत , किन्तु लघु दैयरको ही जीत! हुमा जिनके अधीन नृपनीह-सचिय-सेनापति युत सस्तेह!!"

विवाहके समय सीताकी अवस्था

(केसक-पण्डित शीरावेन्द्रनाथ विदानुस्य)

3-वन आरेडे समय बर्षाच्यामें रहकर सास-समुरकी सेवा करने चीर राजा भरतकी ब्याञ्चामें सहनेडे क्रिये क्षेत्रासक्त्रज्ञी तब सीवाको सम्माबरेडे वेत्रत सीवानी राजकी इन बातांपर कुत्र भी च्यान न हे उनसे स्वक्त कहा था कि स्वातीके प्रति सेरा क्या कर्षक्य है इस बातको पहलेशे ही मैं तुस कारती हैं। व्यापडे, साव ग्रुक किस प्रकारका व्यवदार करना वाहिये, कीस वर्जना वाहिये-इस बातकी रिणा ग्रुके सपने माता-विवासे व्याप्त सिक्त कुत्री हैं। २-भीराम शव किसी प्रकार भी सीवाको साथ खेखानेके

किये राजी नहीं हुए सब की तानीक साथ खानक किये राजी नहीं हुए सब की ताने और मी ओरसे कहा कि मैं बापने नैहरमें माझवॉके हारा इस बातको पहलेसे हीं सुन चुकी हूँ कि मेरे भाग्यमें बनवास खिला है। जिस दिन मैंने बन सब विद्वानोंसे यह बात सुनी थी बसी दिनसे

'अनुशिधिस्ति मात्रा प पित्रा च विविधानयम् ।
 मास्ति संप्रति वक्तम्यो वर्तितम्यं वया मया ॥'
 (वा० २ । १००१०)

सेरा भी सन बनगलके जिपे जलाहित हो ता है।

जरपुंक दोनों कातराजाँमेंते पुकले पहरात कात है

विवादले पूर्व हो सीताके माता-रिशाने करको वांत्री।
कर्मन्य सनीमंत्रित सिल्ला दिला वा और दूसनेंत्र निवादि

पूर्व ही क्योतिरिपाँके हारा सीता कारने मानमंत्र नवार
होना सुन पुक्री थी। बनवास कारण होगा हाले जिर्मे

सीताने कारने सन्त्रों मात्रीमांति तैया कर रक्ता था।

विवादके वाद न तो सीता कमी मेहर गयी औरन सीताने

पाननेवाली माता ही कपोच्या मात्री। प्रवट्य वर

स्वीकार करना पहेगा कि सीताको माता-रिशाह हारा

पानीके कर्णक्यकी रिया नीर्दमों हो निज पुढ़ी थी।

† 'जयापि च महाप्राच नाक्षणानां मदा जुठनः। इस पित्रपूरे स्वतं बस्तव्यं किल मे बने। क्षणेनको दिनातिक्याः कुलाई बचनं गूरे। बनवासकुरोस्साचे निक्यवेद महादक॥'

(410 x 1 x 1 (-1)

श्रोतिविवोंके द्वारा वनवास-सम्बन्धी अविध्यहाची भी विवाहके पहले ही हुई थी। 'पुरा वित्मृहे' की उक्ति ही सप्ट प्रमाण है। सब रामायखबी कुछ चौर अकियाँ देखिये-

१-राम जपमवाको स्रेक्टर विश्वामित्रजी जनकपुरीमें पहुँचे, इस समय दोनों भाइयोंके अनुपम रूप-लावयय और पौराते उन्नसित, सुसंगठित शरीरको देखकर अनकने बाधर्वके साम मुनिसे पूषा-- हे मुनिवर ! वे दोनों नवसुवक कुमार-जिनकी चाल हाथी ग्रीर सिंहके समान, जिनका बल देवनार्घों के समान और जिनका रूप ऋरिवनीकुमारके सरग्र है--क्सिके सपत्र हैं है

पद्दौराजा जनक श्रीराम-ल दमवाको 'समुपस्थित श्रीवनः म्बौत् मबसुबक कहते हैं, सुतरा विवाहके समय इन दोनों शहपोंके वय और शारीरिक चलका भी वयेष्ट पता लग शता है। जनकवी यह उक्ति धनुष-अङ्गके पूर्वकी ही है।

४-यज्ञमें विम् करनेवाले शक्यके अनुचर मारीच भीर सुराहु नामक कठोर राष्ट्रसींका वध करनेके लिये जब विश्वामित्र श्रीराम-सचमणको सेने दरानयके वहाँ चाते हैं, तो रावयके नामसे ही भयभीत होकर दशरम कहते हैं-'मेरे इस कमजनयन रामकी चात्रस्था सभी केत्रस पन्दरह वर्षेकी दी है, इस बन्नमें यह शणसोंके साथ कैसे बुद करेंगें ?' इस प्रमद्रसे यह पता क्रगता है कि इस समय रामकी सवाया पन्दरह वर्षकी थी। सनेक लगह घूमने सीर राचसोंसे युद्ध करनेके बाद कीराम बनकपुरमें जाते हैं चौर रिव धनुषको तोइका जब जानकीका पाणिमहत्व काते हैं, त्तव राम-लदमय अवस्य ही थीवन-सम्पन्न हैं ।

६-विरवामित्र जनकरो करते हैं कि 'ये दोनों शायकुमार बापके वहाँ सुवसिद धनुपका देखना बाहते हैं। इसके बसामें अनक्त्री बहुत-शी बातें कहनेके बाद धनुषकी प्राप्ति,

सीताकी उत्पत्ति, सीताके व्याहके लिये धनुप-संगका प्रय वसृति अनेक प्रकारकी चर्चा करते हुए कहते हैं 'इसप्रकार जब मेरी अयोनिजा कत्या सीता 'वर्जमाना' प्राप्तयीवना हुई सब बहुत-से राजा इसका पाणिग्रहण करनेकी झाशासे आये, पर सबको असफल होना पड़ा । कारण, शिव-धनुपको कोई भी उठा वहीं सका।

मूल स्रोकर्ने 'वर्दमाना' शन्त है, टीकाकारोंमेंसे किसीने इसका कार्यं यौजनसम्प्रशा किया है तो किसीने प्राप्तयौक्ता । इससे यह पता सगता है कि विवाहसे पूर्व सीताके शरीरमें चीवनका सूचपात हो गया था। प्रतएव 'समुपस्थित पौरन' रामके साथ अब सीताका विवाह हुआ तब वह भी 'वर्दमाना' श्चर्यात 'आसयीवना' थी।

६-राम, सदमया, भरत भीर शतुप्रके साथ अमसे सीता, उमिला, मायडवी चौर झुतिकीर्तिका विवाह हो गया। बहाराज दरारथ पुत्र श्रीर पुत्र-वपुत्रोंके साथ श्रवीच्या जीट चाये । राजमहर्लोमें महोत्सव हो रहा है । धनेक प्रकारके को-माचार, मांगबिक कार्यों ने बाद सीता झादि वारों बहिनें अपने अपने पतियोंके साथ निर्जनमें मुद्दित सबसे आमीव-प्रसोद करवी हैं।

मूल रलोकमें 'रेमिरे' शब्द है, इसका क्रार्थ रमण करना होता है। इससे सीता चादि चारों दहिनोंकी चवरपाका सहज ही अनुमान किया का सकता है। राम-तक्मण तो 'गाम्वीयन' थे ही, यह बात जनकती कह ही जुने हैं।

७--वनवासके समय प्रशिके प्राथममें धनस्याती हे साथ सीताकी पारियत-धर्मेंकी बार्ते हो रही थीं, तब सीतामी वहती है कि-'विवाहके समय मेरी भावाने करिनके सन्मुल सुम्बकी को उपनेश दिया था, उसे में किश्वित भूकी नहीं हैं । उन

१ 'पुनस्तं परिपत्रक्ट प्राजिक: प्रयतो नृषः । इमी क्रमारी भद्र ते देवतुस्यपराक्रमी॥ गजसिंदगती बीरी शार्द्स-मृतजोपमी। वश्चिताविष रूपेण समुपश्चित-यौधनी॥कस्य पुत्री महामुने ! ॥ (वा० १ । ५०। ३७-१९)

इ 'कन-रोडग्रव्यों मे समी समीदलीयनः ।

न युद्ध बोम्पनामस्य परवामि सह राखसैः ॥

(सार १।२०१२)

३ "भूतकादुत्वितां तो सु वर्डमानो समारमनाम् । बर्यामाद्वरागत्व राजाना हुनिपृत्रव ! तेवां जिवासमानानां शैवं वनुस्पाहतम्। न रोकुमंदने तल पतुरस्तोतनेप्रवि या ॥ प्रत्यास्याता मृषत्यः × × × *

(बा॰ १ १६६ । १५, १८, १६, १०) ४ ^क्षभिवाद्यभिवाद्यंश्च सर्वे राजपुतास्तरा । देशिरे मुद्दिताः सर्वा मन्त्रिः सदिता रदः॥

(41-312-11)

उपदेशोंको मैंने अपने इदयमें रख छोवा है, माताने कहा या कि स्त्रीडे सिये एति-सेवासे वहकर और कोई भी सप

पतिके प्रति पद्मोका क्या कर्तत्व है, इसके सरवन्यमें सीताकी माताने उसे विवाहके समय ग्रानिक सामने उपदेश दिया था । सतपुत्र यह श्रस्तीकार नहीं किया का सकता कि उस समय सीतानीकी उन्न इसमकारका उपदेश महत्व करने-योग्य चवरय हो गयी थी।

८--वार्तो हो वार्तोमें सीताने भनस्यासे कहा कि 'पिताने सब मेरी 'पवि-संयोग-सुखम' धवस्या देशी तो उनको वर्षा विन्ता हुई। बेसे दरिहको धन-नारा होनेपर

विपाद होता है मेरे पिताको भी बैसा ही हुआ। इम प्रमद्रमें 'पति-संयोग सुखम' शब्द चाता है, किमी-कियी दीकाकारने इस पदकी स्वाक्यामें 'विवाद-योग्य-बयत्य' शिराकर भारता विवट बुदावा है किन्तु सीताने इसके बार को इस बड़ा है जसमें यह बता क्रगता है कि सीताके जिये कन्या-दाव-पीड़ित जनकती घरनेको बहुत 🗗 इसी चीर घरमानित समक्ते वे। सीना मानी बस

नमय सायमा भरचयीना सी हो गयी थी। बहरिर 'पनि-नांचीरा-गुक्रम' बहुका बवार्व कर्य बरनेके दिवे रामारपाका ही कालव केना होगा । 'हेमिरे।' रहा-'वे पनिपाँके साथ निर्धनमें कामोइ-ममोइ करने जाती' बह मार्गा विराहके टीक बाहका है और विशहके पूर्वकी धवामा 'पनि-संबोग-गुक्तम' थी, जिमको बेलकर निगक्ते

बिन्ताको सीमा बड़ी हरी । फाउरूब इसका वर्ण सहस्र 📆 बर होता है हि, 'बर्दमाना' क्लीहे माथ 'मानवीकन' effer freie Ent : इस वाह "प्राप्तरीहर"राम कर 'वह माना'शीनाके ताच विचार करते हैं, क्षम शतक वर्का कवनता ताक: रोक्ष करेंडी है। परन्यु कीलाकीची क्या करूवा है।

S equitates a at his separately बार्राहेच बनावर के बाक्द करने के कान्यू _{वि} परिश्वकामध्यति अव्यक्तिक ।

(r. + 11416-4)

tentus for an . SAMPLESON & fer + 225 2 G

उपयु के बाठों स्वज़ॉक साल सीवा क्यें करेने हो वा मतीत होता है कि विवाहके समय सीताबी करूप रामसे सम्मवतः दो एक वर्ष छोटी होगी। ऐना की मने हैं तो रामायखंके उपयुक्त स्थलोंकी म्यास्या करत कीर

हो जाता है। यह तो हुई विवाहके समय सीजाके रक्ते बात, किन्तु समायशमें ही दूसरे स्थळपर सीत हरते। मुँ इसे चपनी उम्र कुछ चौर 🜓 बतजाती है, उमे बारतेत यह स्वीकार करना पड़ता है कि विशाहके समर मा ह

वर्षेत्री दुधमुँदी बरबी थी। परिमाजकडे रूपमें अब रावण सीताम हाए करे भाता है तब सीता सँसार-त्यागी माझय श्रविधि, वा व करनेसे शायत् कुद होकर शाम हे देगा, इन बास्ट्रणे व्यवना परिवय देवी हुई कहती है कि में मिरिकारिकी

जनकाडी कामा, जीरामचन्त्रजीकी धर्मपत्री सीपाई।हैने बारह वर्षतक इषकाकु बंसी बीरासके घरमें निवासकर मनुष्यके उपमुक्त सभी मुल भोग लिये हैं, बर मेरे बोई भीशमन शोष महीं है। मेरे महातेतायी स्वामी शमकी प्रयुगा हम समय पचीस वर्रेडी और मेरी प्रतासकी भी। नारह वर्षतक सञ्चरासमें रहनेने बाए तेरहरें बाँडे बाने बी रामके राज्याभिगेकका अस्तान हुना और तर सम शुमको भीर सक्तवको साथ क्षेत्रर वर्गो भा गर्ने।

(410 81 8 01 4 -0), इस बर्धनमें वही पता खगता है कि कर सीता बनमें साथी भी बग समय बसकी बन्न सहारह की थी, तिराहके बाद बारह वर्ष वह समुराक्षमें सी, तक क्ष रहते हैं का करें। पर क्या गीताका विवाद का वर्षकी उन्नमें हुन्या या है क्या वः वर्षकी भवीच वातिवाकी िताहके समय भी बापने क्यों के कर्मन्यका कारेग दिश था और कम करहेरामाचाची शीताने चाने हन्दर्न र्वेष रक्ता वा ? क्या हमहः वर्षकी तिस् मानिपाकी ही

१-म्यामार्शिवसेश्वम्यारि श्रंपन मान्। वीत कारणा सुबूर्ण हा शील क्षत्रमनतीत् प्र द्वित बनदानाह देशियान वर्गमन । भीता नामगरी। सत्र में शामन्य वर्षिगी(त्या II कवित्वा बारसासमा बाबाग्रमी निरंतने ।

मचाना मानवान बोवान करवाबनवृदिती।। वय करते वहात्रम बदल प्रचीतव ह

क्यारमंत्र वर्णान् क्या क्यांत्र मन्त्र ॥ (" + 1 1 10 | 1, 1, 1, 1, 10) विवाहके समय साताकाका जनरवा "

पर्यमान' या 'मास्तीरना' मानकर हार्जाचे जनक विशासकी फिलाते व्याहुक हो अपने चारों और खँचरा देखने खत्रे थे ! क्या पः गर्पको जरकी के निमोरी जसका 'प्लिटसंगीन-पुडमां साम सामकदा रिता सीराध्यत उसके विशाह किये गाहुक रहे देशे ! सीर किर क्या चारी खाने का सिकार्य माराज पहुँचकर अपने चारों के तीराजिक साम निजीयों सामोर-माराज पहुँचकर अपने चारों के ताम निजीयों सामोर-माराज करते जागी थीं। इस समझ बचा कथा है !

हम वर्षनसे पाठक हुन ध्वयान कर सकेंने कि विवाहके समय सीताकी अपवार किरानी भी दे ज्युंक एकोंके मतिरिक सामायकों नोटी-मोटी देशों कई बार्ने भीर मिक्की हैं तिनसे वह भकीमांति अमाचित होता है कि काफी तरह हान-बीडन-सम्बन्ध होनेयर हो सीताका विवाह हुआ मा। अन्य रासायकोंने देखिये—

क्षणामरामायबंधे कारिकायको घटे काणावर्षे का है कि तिर्मावको राजसमानी धीरामण्यन हैं देती हुए प्रिय-पहुषको तोइ दाना । राजा जनक कीर सारा राजाद धानन्त्वे विद्वन दो गया । शीला सोनेकी माना राजमें विश्व शुरुरती हुई चीरे-पीरे राजसे सामीण सारी चीर राजसे गानों जाजा परनाकर मानो ता पुकरम मेनागारमें दूव गयी । गुळ ब्योजका खानकार रेविके-

सीता स्वर्णमधी माठा गृहीस्त दक्षिण करे । सितानस्त्राः स्वर्णमधी सर्वोत्तरण्यास्त्रीरता ॥ मुकाहरीः स्वर्णमधीः सर्वोत्तरण्यास्त्रीरता ॥ इन्ह्यपरिसंवीता सहान्तरस्याक्षेत्रसर्वा ॥ समस्योगारि निविष्य समयमाना मुद्दं नगीः ।

यहाँ 'स्मितनश्या' और 'स्मयमाना ग्रुरं वयी' इन दोनों विरोपकोंसे सीताकी विवाद-काबीन बावस्थाका प्रवीध बामास मिखवा है। का वर्षकी बाविकाके विवे देसी

बिक्त कमी गई कही जा सकती। फिर सिंद हुनको भी छोड़ दिवा आय कपना कार्न्छ सार्वेचसे हनका दूसरा घर्म करनेड़ी व्यार्थ चेटा की जान तो 'पकालर्प्यक्रित्सती' रिरोचणके द्वारा तो समीको यह मानना होगा कि दिवाहके समस सीता 'पाडणीनवा'ची चौर दसकी कराया वासमीकि रामायवके सनुसार स्वत्यन ही 'पति संतीग सुनम' हो चुकी ची, हस मसंतको चरुकर कोई मो संस्कृतका बिहान यह गरी कह सकता कि दस समय सीताकी स्वस्था वचेची गी

कीर देखिये. बीराम प्रमृति चारों भाई धपनी घपनी वृद्धियों के साथ अवीध्या और श्रावे । राजमहलमें बड़ी भूमधाम है। सबके साथ मिलने-जुलनेके बाद 'देवप्रतिम हाम-सब्सव्य-भरत-राजुझ थपने-यपने महलोंमें घपनी-बापनी विवर्षों के साथ शामी इन्प्रमीय करने लगे। जैसे वैकुवडमें क्षक्मीके साथ विष्णुका समय सुलसे बीतता है वैसे ही माता-पिवाके चादरसे शीरामसीताका समय भी वर्षे बानन्दसे बीसने बना ।' अध्यानसामय्यमें स्थासनीकी वह उक्ति वारमीकिनोकी उक्तिसे विष्डुच मिसती गुजती है हाँ, क्राध्यात्मसमायवार्मे सीताको विवाहसे पूर्व ही 'बलान्तरम्यक्षितस्त्रमी' बतकाया गया है सतपुत यहाँ 'रेमिरे' ज्ञान्दका प्रयं खेल-कृद करके सीताको जनरदस्ती छ। बर्गके वना देनेकी कोई गुझाइस ही नहीं रही। वाश्मीकिरामायण-में शवरवड़ी ऐसा कोई विशेषण नहीं दिया गया है, तथापि 'रोबिरे मुदिता रकः' यूर्व 'वित संगीग-मुचमं वया' इस सद वृक्तियोंसे सीवाका वय यीवनोह्नसित ही सिद्ध होता है। करिक-पुराख तृतीयांशके तीसरे बाप्यायमें विला है कि

करिक-पुराख नृतीयांशक तीसर खण्णायम । खला है । कि मिथिबाके स्वरंदर-समारोहमें जब मगवान् श्रीरामचन्द्र धतुत्र होइनेको लड़े हुए, तब जनको उनके मति धाइर हिलाखाया और जानकीनेमी बालाँसे दनकी पूता की----

स मूच चरिवृत्रितो जनकर्नेहितैर्श्चिता। करातकरिनं बनुः करसरोद्देशे सहितम्।।

यही यह देशा साता है कि शामका बताह कानेके बियो सीताने कटाश-वात किया, हससे सीताकी उग्रक पूरा बता न कननेवर भी यह शो समन्दा ही जा सकता है

१ रामण्डमणणजुनमारा देवसीन्यताः। स्वास्तां सावीनुपादाय रेकिर स्वत्य-सन्दिरे॥ सानुपितृत्यां सङ्ग्रे राजः सीजासम्बन्धाः। रेके वेजुञ्चकाने विचा सह यथा दरिः॥ (वा रामायपः १।७।५२-५४)

के पर कवर करते का हा गांधी बाति गाँ थी। वा माने दिए हैं। बादे बाते तिसम्बर्ध की बाता बदे, वा केश्रों के नेमारे बातो तिसमार्थ की बाता बदे,

on the said of the fire to be described to the said from the said to the said

Solve (1994) regists for any manages and solve (1994) regists of the solve manages and solve (1994) gate and and any solve (1994) gate any so

> क्ष हे क्षत्र है । क्षत्र है स्वत्र है । क्षत्र है स्वत्र है ।

उन दोनोंको पकत्वा जिया और वह उत्मे र-स्तराज्यों बहुत-शी वार्ते पूर्व बगी। संताके रा सनस्याज्यों प्रमोंको हुतका परिपॉने स्टोर्ने प्र सोनीजे रण-

त्वं दावा विशुनामात्रतव सुन्दरीवतुमन्। दर्देदुव्यन्ति वेदस्यवाद् रामकीर्तनमदास्।।

के जुल्हों ! हम कीन हो, तुमारा क्या शव है! हे जुल करें ही काइर कीर वाजुर्यके साथ बारता होन्से ज्ज्जकों दूर गरी हो ! इस बारकी तो नहीं हो ! होने क्या

य तम करते होत्र स्वाई बत्त्रपृति॥ करमे कर्त्य सम्बद्ध हम्महेत्॥ स्वाई केषसम्बद्ध करूते वस्त्रप्ति॥ स्वाई केषसम्बद्ध करूते बहुताही॥

क्ष किर कारणे के बार काई है, वह अन्तर्गार्थ कारणे हैं हैं हैं का उन्हेंदर कुछ हात प्रशास हुई कारण को? 'तर हैं कुछ कोरोंके हैं कुछ होती, हव होती कीर कार्य कुछ कारणे के प्रशास होते हैं। कोर कार्य कुछ हात हुई कारणे कार्य-तेती।'

यहि गोगावा विषय व वर्षा प्रश्नी दूस वा में स्पूष्ट प्रस्त को उत्तर्ण बहुत पहुंचे को बारी तौर का स्पंकी उत्तर्थ होगे स्पूष्टि । वाल्य क्या हम कालावे हों अपको पेंडिय कोर 'काराया' (शाविष्ण बीर कालाहे अपको पेंडिय कालावाी कुत्र कुत्र काली है। इयाब्य केल्या साहित्य मार्ग्यस काहाराम काहि करित्र राज्यस्य, द्वाराय, वरद्वाराय कीर हरितामीं करित्र राज्यस्य, द्वाराय, वरद्वाराय कीर हरितामीं कीरायी विस्तासक्षाति कालाबी हिन्दी सुप्पो ताला विजये हैं। इस काद स्थापीयी वर्षानीका कार्यम हिगा साह भी यह बार्ग स्थाप स्थाप कि विस्तान स्थाप पर सीमारी काला का करिता है।

हारी लोगानी कम क्षेत्रकी बन्द, को इसने हाराई मोर क्ष्मों है कि क्षित्रकों कम कम्म बर्गाक मि समुगार्ने मोर क्ष्मों कम्म क्ष्मां के क्षा क्ष्मान क्ष्मी की। इस कमिक कम्माम क्ष्मिमके कम्म बर्गान्यी इस व्यक्ती सम्बद्धी कम्म है, क्षमाम क्ष्मिमके क्ष्मों क्षम क्ष्मा क्ष्मा

श्रीरामचरितमानस-पात्र-परिचय

(रेसक---भीन्यानाप्रसादनी वानोविया)

कारत— महरि विद्यालक्य के युव में, हनका पहका नाम मान मा। विकल्पलेन के पहारको पूर्ण करने के कारण हरका नाम कारल्य पहा। महरि करण वारित्यके वारण हरका नाम कारल्य पहा। महरि करण वारित्यके वारण रूपा तिनित्वन होकर तरे में, वहाँ करेगीको देखकर वस्त्रा देखताह हो गया मा, क्य रेतका को माग इम्मर्से मा, उतमे हरकी वस्ति हुई, स्तिबिदे क्ट्रेजना भी करते हैं। हम्मुल्लि मारे देखता के उपचान कारकेशाहि राचन समुद्रमें वा दिएं और वहाँसे निकक्षकर मुस्त्रिकों मान देन को। हर्गने देखताबों कामकाल समुद्रम मानक का रावसींका मान कमा दिवा मा। मानदे ही राज्य बहुको गान देखा हम्म्रालये स्मृत कारके सर्व-मोनिम नेन दिया मा। हरकी पतिकार प्रयोक्त माम कोणसुद्रम या।

नगर—धानसात वालिके प्रत्न थे। श्रीसमन्त्रज्ञानीन वालिको सामस् सुरीवको सम्मानेशर वैद्याना श्रीर व्यावको प्रसान बनाया था। धाइन्द्री मालाका नाम तास था। धार सामक्ष्मीको कृत बनकर सामका वर्ष थे वे चौर वार्र धरना पर रोपा था, त्रिले कोई नहीं हम सक्त था। धुमीको सेमके साम कहात बाबर, इन्होंने व्यावी विद्या था। यह दिया था। एक दिन युवमें व्यावने रिन्दोतिको सीर्यन दिया था। एक दिन युवमें व्यावने रिन्दोतिको सीर्यन हमा था।

अत-एगोपाठे सूर्वर्वती शका गुके पुत्र वे । विदर्ध राज्दोक्ष्मा हन्दुमतीने करांक अवनके स्वतास स्वकते घरवा राज्दोक्ष्मा वा । विद्यादेशमान्त वक हन्दुमतीको लेकर वे या दिये वे राज्दों स्टब्सिक्ट स्टिक्टनानेका लेकर वे या दिये वे राज्दों स्टब्सिक्ट स्टब्सिक्ट राज्याची वर्षाचे हन्दुमतीको द्योतना चाहा । युद्ध होने सम्बाधीन स्वतास स्वतासमाहर-सन्त्रते स्वचेतकर साथ हन्दुमतीको वेकर स्वीतास गते ।

अध्यन्त्रमार-सन्त्रोदरीके गर्में सावयाका दुव था। यह सेवनाइसे घोदा था। श्रीसीतानों के सोवने दे दिये शव सन्त्रमान्त्री खड़ा गये थे और रावचके प्रमान्त्रमा कहा गारे किया था, उसी घवसरार रावचने खरवा प्रारम किया था, उसी घवसरार रावचने खयवडुमारको इन्द्रमान्द्रों क्षत्रने दिये मेला था। वहीं यह इन्द्रमान्त्रीके हास मारा गया था।

शज़ती—हेसरी वातरताजही एजी थी। इसीके गर्मसे ओइन्सान्जीका जन्म हुमा था। एवं जन्ममें यह पश्चिकरण्डा नाज़ी सम्सरा थी। शापवश बानरी होकर समेद पर्वतपर रहनी थी।

अर्थन — महार के सानव पुत्र हैं, सन्तर्रवॉम इनकी भी गावना होती है, वर्षन प्रमाशिकों कन्या सन्दाय इनकी भी भी। और स्वाप्त महार्थि हवांता सीर चन्द्रमा इनके पुत्र हैं। बेद सा अप्रापतिस्थित प्रकारावित भी माने नाते हैं। वे पार्थ साध-प्रचर्णक हुए हैं, इनका बनाया पर्यस्थाक अप्रिवेदिताके सामस्य सम्बद्धित है। भगवान् रासकन्त्रवी इनके आध्यार्थ येथे

अज्ञूता—कईस जजाएतिकी कन्या पीर महर्षि प्रतिकी सती साप्पी पत्री पाँ। इनकी साताका नाम प्रयुत्ति था। प्रति-व्यक्ति जाअसमें वह बनवारके प्रवस्पर श्रीरामक्पन्ती वे शे धरस्याने श्रीसीतात्रीको पाठिनत-वर्मकी प्रताचार उपदेश दिया था।

अरुवती—कर्दम प्रवापतिकी कन्या थी और वरिष्ठ जुनिको व्याही गयी यी ।

उर्मिला-सीरध्यत्र सनकडी कन्या थी, इनका वियाह स्वच्यावाजीके साथ हुचा था। कपिरः—कर्यम-कपिके पुत्र थे । इनकी माता देवहुती थीं । ये सांस्य-राम्बके प्रचलेक हैं । इन्होंके रागसे सगर राजाके साठ इजार पुत्र भव्य हो गर्व थे ।

कबन्य-करपप और उनकी स्त्री द्नुसे इसकी उत्पत्ति हुई थी, यह पूर्वजन्ममें गन्धर्व था । एक बार स्वलशिश ऋषि इसके गानपर चप्रसद्ध हुए, शब इसने हँस दिया था। इसीसे ऋषिने इसे राचल होनेका शाप दे दिया । मक्काकी सपस्या कर इसने दीर्घायु होनेका वर प्राप्त किया था । वरके गर्वसे यह सदा इन्द्रका अपनाम किया करता था, इन्द्रने कुछ होकर इसके अपर बद्धमहार किया और इसके उठ, मुख चौर मलकको तोइ दिया, पुनः इसके विनय करनेपर इसकी अजाओंको योजनपरिभित्त दीवें कर विया और इसके पेटके अन्तर तीषण दात्रवृक्त गुँह बना विधर था. तबसे यह दयहकारययमें रहने खगा और सिंह स्थाधादिको पकद-पकदकर खाने लगा । जब श्रीरामचन्द्रजी चयडकारवयमें आये तो इसकी शुजाओंको काटकर इसे अक्तकर विया । विनय करनेपर स्थलशिशाने ही यह बरवान भी दे दिया था कि भीरामचन्द्रजीके द्वारा बाहें काटी जानेपर तुम सुक्त हो बाचोगे।

करपप-नकाके मानस-पुत्र हैं। यह एक प्रसिद्ध व्यक्ति हो गये हैं। इचमजापतिकी तेरह कन्याएँ हन्हें व्याही गयी थीं, जिनसे सब जगद्की उत्पत्ति मानी जाती है

काक मुनुषेद — राम-भक्त बायस से । इनके पिता सकायुसारियों के बादन बन्द नाम काक और माता इसिगी सी । काक मुत्तिपत्री इनकीस भाई से, तिनमें सभी मर गये, देनस पदी विरासीयी हुए । पूर्व कमामें कर वर्षो क्षान पदी विरासीयी हुए । पूर्व कमामें क्षान क्षाने प्राथम स्वति हुए । एवं कमामें क्षान क्षान क्षान क्षान क्षार ग्रह्मकी पूना करते समस्य इनके गुरू का गये और इन्होंने उनका सन्धार वहीं क्षिण क्षान से विश्व कमामें के उपारक बाह्मक हुए, व्यवस्थार को सरा क्षान कर नामके उपारक बाह्मक हुए, व्यवस्थार को सरा क्षान कर विरास कर का क्षान क

कारेनि--वह राज्यका क्या एक राज्यका । शेवनाहुकै राज्यावर्षे क्रम्यावर्षके सूर्वित होनेतर श्रीहनूमार्त्री वह सर्वात्व-मूक काने के विदे गये थे, वर्ता समस्य राज्यने भी काकरिम्बा रिमाम्बर मेवा या कि वह बत्यान्त्रीको भागोरिम एमोर्ट्स के स्वतंत्री कर कर सुनिक के वह

जवारण और बारिकासे बुध सामाका जाजस बना राजा । इत्सादकी जब गीने बजारकोरे सब्दे और वहाँ सकरी-अप्सराके द्वारा सब भेद जानकर कार्यस्थ पूँकुमें खपेटकर पृथ्वीपर पटक दिवा। इसम्कार कार्यस्थ सन्तु हुई।

कुमकर्ण — महाभोजी, महाकाय, राष्ट्रत तरक्य कृष माई या। इसके पिठा विजय सुनि भीत मात्र केली थी। इसकी क्ष्मी (बजिकी तीरियी) कुमनावा थी। इले धारि जम वच करके मात्राजीको सरक किया कर्य भन्तमें सरक्ताकी मेरणारे वर मार्गित वसन ॥ क्ले सोनी था। यह महा पराकर्मी या, पुत्रमें सीतनकार्यों सर्गामा। यह महा पराकर्मी या, पुत्रमें सीतनकार्यों

ुनेर. -- नीये कोकरास हैं। धनके देशाहै। क्रक्यां इनको राजधानी हैं। यह राजधुके तीदेशे आहे हैं, वर्षे संकार्म रहते थे। इनके एक चाँक, तीन वर्ष चौर का पूर्वत होनेके कारण जुनेर नाम पहा। इनके दिशा विका प्रति कोनेके कारण जुनेर नाम पहा। इनके दिशा विका प्रति चौर नामा महाहाकों कम्या देशविंनी थी। वे का जानिके कारण हैं।

नुसा—असिरासचान्यतीके उपेह पुत्र थे। इसकी का वानकीशीने इन्हें क्षीवारसीकि-प्रतिके काकसमें सम्बर्क या, वर्षों इनका पाका-भोचण कीर रिवान-पिण हुई में श्रीरासमीके चरवसेय-चड़के कासराय इन्छे की इसके की साई कवने वास्तीकीय रामायवाना गानकर सारी कालके सान्य उपया कर दिया था। इसके कुमावनी नागीक गान-दिया गावा था। श्रीरासच्यामीके कैड़कर कानेवर कोचार्को क्षयिष्टामी पेदी कुमके स्वयानगारामें उपलिस्स हुई सो की चर्योश्याकी पुर्देशा कहकर इनसे कुमावनी वोगक व्ययोग्या कानेका निवेदन किया था, करन वह बसोमा की व्ययोग्या कानेका निवेदन किया था, करन वह बसोमा की

· वेसरी---वानश्रात्र थे, इसकी श्री अञ्चलके ग^{र्की} इन्**मान्**त्रीका जन्म द्वारा था ।

केहरि-- एक बानर था।

के करी—राज्या, इस्सावर्ध और विभावयाधी साता की इसके रिया सुसाबी और साता बेनुसाबी शताबड़े सर्व थे, कुमेशो कीकारी देखका हैनावर हमारे का कर्या केवामीयो विकास-कृतिक द्वारित इस को वर्ष वर्ष या कि कामो कुमेशो और सरिव प्रकारी नुष कर्या हो।



केन्द्री-केक्ट्र-पेराके राजाकी करना क्रान्यतः सुन्दरी भीर बुदिसती थी। राजा दशरकको क्यादी गयी थी। मतनी इसीके पुत्र यो। इसने एक बार राजाकी दुरने राज्य सो बर यात किये थे उन्हें करीले इसने बसनी सामी जन्मराको खदुमति खीरामण्डाचीको करना सौर भरतको राज्याभिषेक राज्यसे मींगा था।

केम्स्स- चरिया कोसवताकको कया थाँ। राजा रामाच्ये सस्ते बाँग राजी हैं । इन्हों के मारी विश्वकावाद रामाच्ये करने प्रवासित हुए थे। वह राज्यको मान्य हुचा कि बीतत्त्राकं गर्मेट उपच्छ होने वाली साम्य है मारा बाउँगा तब उसने बादिका कीसत्याको हरण कर्म एक सन्दर्भने सबस्य कर सम्बन्ध रामाच नामक नामांको है हो। मित्राव्यको एको की कामाचे साम्याव्य एक साराव्यन सम्प्रकारी सम्बन्ध मानाव्य सम्प्रकार कर एक साराव्यन सम्प्रकारी सम्बन्ध मानाव्य सम्प्रकार ।

हर—रास्प्रका सीतेवा माई या । सुमाकी राक्सकी क्या सावा इसकी माता थी, दिसा विश्वना सुनि थे। पाक्ष्ये हमें अन्यतास्त्रा मात्ताक्षीण कतावा था। इसके साव चौड़ हसा देना थी। करमयाजीन वाब शुर्थक्याके शक कार कार किये थे तक हराये बीताम-बच्चाबसे युवर किया था भीर रामजी हसा मारा शका था।

गेनन्—(गणपतिजी) श्रीमहारेषके पुत्र हैं, इनकी शाका वर्षनी हैं। विष्युके बरसे इनकी श्रमपूत्रा होती हैं। वे श्रेमाननामकी महिसाको भजीमीति जाननेवाले कीर स्वामारको भिरियद करनेवाले हैं।

रहा—पिता करवप कीर माता विनताने वापका क्य हुया। काव पविराव है। विन्द्र भगवान्के बाहन हैं। मीतस्थानने वह मेपनाहके हारा नागपानसे बांधे गये थे, वो तरहने ही बन्हें बस पाठते गुक्त किया था।

टाप्र-पिस्तासिकडे पिन शिष्य ये। स्तर्व एक सिंद्र्य बीरे दुर है। इस्टोंने बारने गुरुको एषिया खेबेडे जिये ना बाद्य क्या गा। विचामित्रजीने रह हो २०० स्वास-के हे इसे मोरी, किन्हें मात्र करनेमें इनको सारव के हार बार पिन्नु बनकों ये एकिया जुका गुरुकायों विद्रुप्त। गुरुक- निषादराज, ग्रज्जनेखास्त्रा सनार्य राजा था। राजा दराराको इसकी विज्ञता थी, यह रामका उनक था। इसने वनसार्यमें श्रीरामको बहुत सेवा की थी। पूर्व जनममं यद स्थाप था। शङ्करकी कुणसे इसे रामनेवाका शवसर ग्राप्त इस्था था।

मैन्द-सीरामचन्द्रजीका सेवक एक यहा बागर था।

गीतम—एक चारि थे, इन्होंकी पत्री भाइल्या थी। इनका न्यायदर्णन असिद्ध है, ये चानिविच्छी नियाके प्रथम प्रवर्गक माने जाते हैं। इन्होंने चपने न्यायदर्शनमें प्रमाय-प्रवेष चादि सीत्रह प्रयामिक सराज्ञानसे मुण्डिकी माहि बत्तवायी है। इन्होंने केवल दण ही दिनोंमें इस दर्शनका प्रयापन किया था।

ब्यानु—स्पेष्टे सारधी सारव श्रीर माता रयेगीडे गार्मी ब्यानु कराय हुमा या । यह गृप वश्री मा राजां ग्रंपराचा पत्म तित्र या । विताहरण करने के जाते सारव राज्यको हुनने रोका या बौर कृद होनेशर भी उससे युद्ध किया था, सन्तर्भ राज्यके सामायतार्थ राज्य हो तित्र पद्म या, जब वितासण्यानी तीताको जोत्रों के सम्मायको साथ वित्र हुए स्रोप बौर ब्यानुको हुस क्यामें देशा हो बहुत ग्यानुक हुए। स्रीरामायीकी गोदने तिर तक्को हुद ब्यानु परमधामको साम हुमा।

पुत्री रेज्याके साथ इवका विवाह हुओ था, इनके पांच पुत्र हुत, सबसे बोटे सरहारात थे। यरत—देशाब हुन्यहा पुत्र था। इसने काक्टर धारककर करनी चौंचने शीकारही मेंकी पाय कर रिया या और क्षव शीरासच्युजीने इसके करर बाथ चयाया या तब यह हीतों कोचाँत साथ चयाने किये थाना रियोटे हिस्मीन होने साथन करी दिया। यसने हिससे थाना रियोटे

जमद्ति-महर्षि ऋचीकने पुत्र थे । शता प्रमेनजिन्ही

शरवार्वे गया, रामचन्द्रभीने इपके मात्य को नहीं विवे यर एक कवित्र कोड़ दी। जगरपन-स्थानाज थे, महाचे दुव थे। यह सहावती इपके से सामित्र के समावित्र होकर हमारे थे, रासच्याक्ष सहावता की थी। शय-अपनी समावित्र की

शाका-मुक्तु नामक यककी पूर्वा थी। (मन्द्र कीर करव-देशके राजा) मुल्दको व्याहो गरी थी। साहित कीर मुकाह इसके पुत्र थे। जब कारवन्सुनिके साहमें मुन्दु साह



. सेवा काती थी, बाल्यका उसे ही इन्हें ऋषि-उपदेश और प्रसाद मार होता रहा । जब इनकी माता सर्थ-दंशसे मर गयी सी ्र स्टोंने ऋषियोंको झाजा के तपस्या की और शरीर स्थान करनेके बाद महाके मानस पुत्र और महान् अयनदक्त हुए। प्तस-(1)रामद्लका एक बानर । (२) विभीयखंके चार मन्त्रियों मेंसे पुछ ।

्रिक पूर्वप्रकार यह दालीपुत्र थे, इनकी माता चारियोंकी

परशुराम---विवा जमदित चौर माता रेखकासे इनकी जलति हुई यो। बिन्छके वृश अवतारों में एक बह भी हैं। ता कार्रवीय सहसार्जन एक बार जनवृक्षिके बाधानमें नाये थे, वहाँ कामधेनुको देख प्रलुक्य हो उसे हरखकर से नवै। तब परहारामजी कामधेनुको खाने गये और कार्तवीर्य-को पुरमें मार उसे छीन जाये। इसके प्रतिकारमें कार्तवीर्य-. के दुवोंने समक्तिको मार काळा तब परशुरामजीने २१कार ्रियोको वि:पत्रिय कर दिया। घतुष-पञ्चके सवसरपर जनक-इत्में इन्होंने श्रीरामचन्त्रजीको विष्युका धनुष चढानेके

ं बिषे दिवा और इसके चढ़ाते ही चाप चल्यन्त विस्मित हो मीरामकी स्तुतिकर वनमें तप करने बखे गये। पर्वती--पिता हिमाखब और माला मैनासे पार्वतीका वन्म हुमा, इनका विवाह शिवजीले हुमा । इनकी शिवजीके मति घनम्यता आदर्श है। गयोश और स्वामि कार्तिकेन

इनके दी प्रश्न थे। इह्त-रावयका सेनापति या । वह रावयके सामने घपनी बीरताकी दोंग हाँका करता था । युद्धमें मारा गया ।

पुरुसय-प्रकाडे मानस-पुत्र थे। रावखंडे वितासह थे। इनकी गवना सप्तवियोंमें होती है।

वाति चह देवराम इन्द्र, और मझाडे सशुने उत्पन्न एव वानरीले कापन हुआ था। यह किप्सिन्धाका राजा या इतको महाका करदान या 🖺 युद्धमें प्रतिहन्हीका स्थाधा करा हर थेगा। सुप्रीय इसका सहीदर माई था, असके साथ वरीति कानेके कारण रामजीहारा मारा गया !

भादाय-अरदाज-ऋषिके पिता बृहस्पति, माता समता थी। प्रयागमें इनका बाधम था, दुष्यन्त-पुत्र शक्ता सरतने स्टिं पाता या।

मरत--दररपके पुत्र थे, इनकी माता कैकेयी चौर मामा इषाबित थे, इनकी पत्नी मायहची थी। इनकी सम-अकि भक्तेंद्रे क्षिये परम बादरी है।

मानुप्रताप-कारमीरके निस्टकेक्य-देशका राजा था। इसका पिता सत्य हेता. आई चरिमदेन चौर मन्त्री धर्मरुचि था। इसने राजा कालकेतका राज्य हरण किया था। प्रतिहिंसाके विचारसे काळकेतु धुल करके राजाके यहाँ रहा चौर छुजसे बाडवाँको नरमांस भोजन कराया, तब बाह्यकोंने प्रतापभातको काप दिया कि सू राइस-योनिर्मे जन्म स्ते । इसी कारण वह रावण द्वीकर उत्पन्न हुन्ना ।

मृतु---इनकी उत्पत्ति बहारसे हुई थी। यह महादेवके इसकपुत्र थे । इन्होंने परीक्षार्थं विष्णु भगवान्के इदयमें कात मारी थी। मदह-अद्यास्क पर्वतपर रहनेवाते एक ऋषि थे. शवरीको अक्तिका उपदेश इन्होंसे शह हथा था ।

ननु-नक्षाके पुत्र चौर मनुष्य-जातिके चादि पुरुष हैं, इनकी क्षी शतरूपा है, वही दशरथ हुए थे। मन्यरा-महाराची कैकेवीकी दाली थी. इसीकी

सम्मतिसे कैडेबीने शमके विये चनवासका वादान माँगा था । सन्धरा कैडेवीके साथ केडव-रेशसे खाची भी । मन्दोदरी-पिता सवदानव और माठा हैमा अप्सरासे

मन्दोदरीका बन्द हुका था। यह रावयुकी धर्मेशीखा पत्नी थी। मेवनाद और बाह्यकुमार इसके दो पुत्र थे। यह मसिद्ध परिवता है।

नाप्यवी--राजा अनक्षके माई पुरुकेतुकी कम्या-भरतको ज्याही थी, इसके तच और पुष्कर दो पुत्र थे।

मारीच--वादका राचसीका प्रश्न या । श्वतका पिता सुन्ध यच था । विधामित्रकी यहरचाके समय रामशीके बायसे बह समुद्रके किनारे जा गिरा था, पुनः शवयुक्ती श्रेरवासे कादकाका रूप भारतकर सीवाशयका कारय बना और ओरामजोहारा सारा गया ।

वेषनाद-(इन्ब्रजीत)--रावणका पुत्र था, इसकी माता सन्दोदरी थी। साध्ये सुकोषना इसकी की थी। एक समय इन्द्रने युद्धमें शवखको बाँध क्रिया था, किर मेपनाइने इन्द्रले युद्धकर पिताको श्रुहाया और इन्द्रको वीधकर साथा था । इसको वर या कि यह बारद वर्गतक निहा, मारीको स्वागकर केवज फल चरान करनेवाजे के द्वावसे मारा ठावता ।

सतः इसको युद्धमें सच्मएजीने मार दाहा ।

मैनानडी-हिमवानको पक्षो और पार्वदीको साहा धी ।

रस्य-रामद्वाचा पृष्ठ वानर था ।

रपु-धयोग्याके प्रसिद्ध सर्ववंशी राजा थे । इन्हींके मामते रहार्वरा चळा । ये वड्डे प्रतापी और ग्रासीर थे, इन्होंने इन्द्रको इराया था, इनके पिता विक्षीप और गुत्र समये।

राम-चारित्व महायदके श्त्रामी कौसल्याके गर्मसे भवधमें भवतीर्थं हुए थे। भारके वितादशस्य, पुत्र सब भीर कुरा, माई भरत, खदमवा चीर राष्ट्रम तथा पानी बनक-मन्दिनी श्रीसीताजी थीं।

रावण-विश्ववा गुनिका पुत्र था । इसकी माता कैकसी, भी मन्दोदरी थी । इसने उत्कट सपस्थाके बखसे महा। भीर शिवसे धनेक धरदान प्राप्त किये थे । एक दरदानके हारा इसकी मृत्यु नर और वानरके श्रतिरिक्त किसीसे भी नहीं हो सकती थी । रामजीने इसकी मारा । पूर्व जन्ममें यह जय मामक विष्युका हारपाल था, दूसरे अन्यमें मानुवताय राजा भी यही था । कुवेरके पुष्पक-विमानपर बैठकर शवब जय चाकारामार्गसे जाता हुआ कैलाराके निकट आया तथ मन्दीश्वरने इसे कैसारा पार करनेसे मना किया। मन्दीश्वरकी धानर जैसी खुलाकृति देलकर यह ईस दिया । इसपर उसने शाप दिया कि जायो. वानरोंके हारा ही तुम्हारा नाश होगा !

रेणका-पद राजा मसेनजितकी कन्या थी । जसदनिकी पली थी । परद्धरामावतार इन्होंके गर्भसे हुआ ।

ठद--भीरामके छोडे प्रत्र थे । इनकी मांता सीता थीं । बारमीकिके बाबसमें इनका अन्त हुआ था, ये उत्तर कोसलके अन्तर्गत आवसीपुरीके राजा थे !

रावणापुर-मपुराचल और रावणकी सीसी हुँभीनसीके गर्भेते इसकी क्लिसिहुई थी । पिनुपदत्त शुलके प्रभावसे, वह दानव, देव और मतुष्य सबसे अञ्चय था । इसने राजा मान्याताको मारा था। यह ऋषियोंपर शहा सत्वाचार करता था। श्रीरामचन्द्रजीने राष्ट्रप्रको भेजकर इसका विनास कराया ।

करमण---धीरामके भाई क्षत्रमण शेपके धवतार से । इनके रिना दरास्य, माता सुमित्रा, पानी कर्मिका, प्रत भारत भौर वित्रकेत थे । भीरामकी सेवामें इन्होंने उनके साथ किया या । ये धानन्य राम-सेवच ये ।

रोगश--एक मस्त्रात समर ऋषि है। साथ काय-ार्थ । विकास

र्रेडिनी-अलोडवासिनी सबसी संदाने सर्वे इनुमान्त्री सीताको सोजने बद बंकार्ने पुने येतर राषसीने बन्हें रोका था और इनुमानुतीने हमे एकी मारा था ।

वशिष्ठ-अञ्चाके भाससे तलस हुए थे, बर्दनकार कन्या अरुभतीसे इनका विवाह हुमा था। ये सर्वत एक हैं, रघुवंछके कुलगुरु हैं । मसिद पारागर करि हर अनवध् भारत्य-पानीके गर्मसे बसान हुए ये।

बात्मीकि-मादिकवि थे। इन्होंने रामावतारहे वृर्ध दिन्य दृष्टिसे रामायक्की रचना की थी। वर कीतर्न सीताको निर्वासित किया या हो इसे इन्होंके शास्त्र बालय मिखा या। यह परते बुखु थे, अगानकों ने हि स्या राम-भाम अपने प्रसारते दरममक हो गरे।

विमीत्रण—रावणका साई या, इसके पिता विकर, भाता कैकसी, पत्नी (शैतुष-गण्यवंकी कन्या)सरमा दे व कीरामका शरथागथ भक्त या । रावणके मानेके वाद कार्य रामा हुमा ।

े विशय-युक विद्याचर था, बो दुर्वासाने शामी हार योगिको प्राप्त होकर चित्रकृटके दक्षिय वनमें रहत श्रीरामके हाथ मारा गया था।

विभवा-रावकादि चीनों आई, सर, दुर्ववता कुवेरका पिता मा, यह पुस्तस्यका पुत्र या, इसकी ह द्वकन्या पूर्वी, की देववर्णिनी, केक्सी, राजा मांबिमी थीं र

विधामित --- (कौशिक-गाधितनय)-कान्यकुवने इसं के गाधि राजाके पुत्र थे । इन्होंने चत्रिपवंशमें उत्तब होका कापने तपोबक्षसे झाझणलको माप्त दिया था। [म अल्पत्तिके विचयमें ऐसा वर्षन है 🕞 गाविराज्यों 🧖 सपवती ऋषीक-ऋषिको न्याही थी, गाशिरात्र ऋचीकडे कोई सन्तानन यो इसबिये ऋवीको बद चरके दो भाग किये। एकके साथ बाहरा-मनान धीर वूसरेके साथ चत्रिय-सन्तानका चार्गावीद था। रे चह ऋचीकने अवनी पनीको देवर माझ्यवाता वर है कानेके क्रिये तथा दूसरा यह गाथिराजकी क्रीको क्रा^{क्री} क्षिये कहा। गाथिराजयी कीने सीचा दि कर^{ील} सन्वनतीका चठ कविक क्षेत्र होगा क्योंकि उसके सार्थ

तैपार किया है, इसजिये घुजरो बसने उसके चरको अपने विषे से जिया और अपना उसे है दिया। फडारकर मान्यक्रमान्त्रिक (जो चानो चलकर माहाच हुई) और सम्बद्धीले अनदिन हुए, जो माहाच होते हुए भी चारमुचये सुक से।

रावरमः—जहाके बार्षे हायसे वरणव हुई थी। स्वाबनशुव भवको पत्नी थी। श्रीनारायणको अञ्चरपते प्राप्त करनेके विषे इतने बदी रायस्या की थी चीर बही कौसल्याक्पर्से बरवरित हुई थी।

स्तुम-श्रीक्षमसमीके छोटे आई थे, इनके निवा इराय, माता धुमित्रा, की धुतिकोर्सि, पुत्र सुचाडु और भूरवेतु थे। यह सीमरतश्रीके यसन्य शक्त थे। अपु नामक पन्नको सारकर मञ्जापुरीको इन्होंने ही बसावा था।

शरम--राम-सेनाका एक यूथपति वानर था।

रतमा-एक व्यपि ये । पृष्ठिकारवयमें रहते थे, औरामके सम मक थे । इन्होंने भीरामका दुर्शनकर जपना शरीर स्था क्रिया था ।

हरती-युद्ध भीत-करणा (या एक हापरिवर्ता) भी। अवज्ञ-क्षरिते हरते जातोपरेग्र माछ किया था। यह त्यस्थिती भणान ताफदे वर्णनार्थ कर्मी त्यस्था करती थी, दूसने भौतमदे भानेरर बनकी पर्योचित सेवा की और बन्हें सन्तक मोजद कराया था।

कान्या--राजा दशरपाकी कन्या थी। इसको शाजाने अपने । नित्र कन्नाविराज कोमपाइको पोध्यपुनिकाके कपने दिवार वा। पोडे यह महर्षि कप्यन्यज्ञके साथ व्याही गयी थी।

शुक्र-शावयाका एक तून था।

ग्री--क्रप्यसम् प्रतितः तरश्ती थे। श्रमीक सथसा विवादक कपिके पुत्र में, इनकी की श्रमता थी। ताम रणपने पुत्रेष्टि-यज्ञका सम्पादन करनेके जिये इनको सपोप्या इवापा था। इनके आसीर्वादते सामाको चार पुत्र हुए।

श्रुविश्वास्त्रि सावज्यके राजा कुशस्त्रको कन्या यी। गुरुको स्याही गयी थी, इसके सुवाहु स्रीर अपूर्वेत दो उद्दर्भन

स्तर-स्वंबरीशमा भाडुकके पुत्र में। इनके दो सनिवाँ । भा-भुनति और केंग्रिनी। केंग्रिनीसे भसमञ्जल, और] सुमितिसे साठ हजार पुत्र जराज हुए। सार बड़े मजारी राजा हुए हैं, हन्तेनि करेक पात्र किये। युक्त माह हुन्य हैंगांकर। इनके पात्राकको जुसारक किवेक्स्मीतिक सामामी चीच बावे। सगरके साठ हजार पुत्र कस बावको जीजते हुए करिकके बाजमाँ पहुँचे और चौर सामकार उनके सात सात्री। गुलिका च्यान आह हुआ चीर उनरिते गए सा सक्को असम कर दिया। पीते हुमी बंकामें मागीरण वरणा हुए को सचस्या करके गंगाबीको लावे भीर उनका उद्धार किया।

सन्परि—व्यायुक्त वहा आहं या। हुनके रिता स्थ्य वं । दोनों आहं एक बार स्वांको बीतनेकी इच्छाते वही । स्वंके ठेवले क्यायुके रेख बजने बटे । उस समय सम्प्राति वही । व्यायुके रेखाते अस्त्रीरका की । इसावार करने दोने काईकी सहावता करने वह स्वयं निन्य-पर्यंतर था गिरा और नियालस प्रिचिन हसकी शुक्रम की । वह सीताको सोननेके विये बासर दिखिन-समुद्धी और वा रहे से तम बनकी हससे सेट हुई सी और इसने क्यारी शुरुदिसे सीताका पता बचवाया वा ।

सहस्वधु — (सहस्राहुंब, हैररराज या बार्ववीये) इसके रिता कुर्बावी, मारा प्रकारकी थी। इसकी श्री स्थाने हते ३००० पुत्र हुए, जिनमें तथर को राख्यामनीने कार बाजा। यह नर्मीयुव्यक्ति भीत हैर्स देशक राज था। आहेक्यों इसकी राज्यानी थी, एक बार अप्रेयर राजवंधी इसकर इसकी बच्चों कर जिया था। जिमे पुत्रस्य प्रतिने पुत्रस्य। बसहानि अस्तिको सारवेके अपराधर्मे यह राष्ट्रसाममीहारा सारा गया।

सारण—रावराचा एक सन्त्री या, को शामचन्द्रजीकी सेवामें एक बार मेंद्र खेने गया था। रानेत्रमा—दित्य गणवंकी कृष्या तथा हैमाकी सशी भी। विषयु भगान्द्रके वर्शनार्थ गुकामें रहकर तथस्या काशी भी। इन्यान्द्रमोकी रोताकी सोजमें आते समय ज्यास कागी, वस जल पीनेके लिये के इसकी गुकामें गये में और इससे उनकी भेट हुई थी।

सीता—(जानकी, वर्षिया, जनकन्तिनी, मृतिया) इनके दिता जनक मे । मिशिलामें एक बार चकाल पढ़ा था तब सामने पृष्टिके क्षिये स्वयं इत चलाया था, वस समय मृतिसे जानकी उत्पन्न दुई। इनके स्थानी औरामयण्यनी मृतिस दी हैं। ये सावात जानमनी आया थीं, इन्होंने खरने जायरखाँसे पातिमका महान् खादर्ग दिशकाया है।

पुकेतु—ताइका राचसीका पिता था।

तिहिका—राहुकी माता थी,यह पातालवासिनी राजसी समुद्रमें रहती थी। उड़ते जीवोंकी परवाईसे ही उन्हें पकड़ बोनेकी राकि रखती थी। सक्का जाते समय हन्मान्जीने हसे मारा था।

सुरीक्षण-कागस्य-सुनिके शिष्य थे । यह मसिद्ध रामी-पासक थे । इनकी प्रेमामकि बाहरों थी ।

धुमीव-इनके पिता सूर्य थे कौर माता ज्ञाहाके चाँस्ते उत्पन्न एक बानरी थी। श्रीरामक्जूजीके मित्र थे। बाखिके भारे जानेपर किष्किण्याके राजा बनाये सुवे थे।

सुबाहु — चाक्जाके साथ रहनेवाला एक राजसथा,कोई इसे सावकाका पुत्र बसलाते हैं। विधानियके बशको रका करते समय श्रीरामजीने इसे सारा था।

सुमन्त-सहाराजा दशस्यके मन्त्री थे ।

पुरसा-—रवर्गकोकवासिनी वक राजसीथी । इन्सान्जी-को बङ्का जाते समय परीचाके जिये इसने उनको रोकाथा । बन्दमें प्रसब हो इन्सान्चीको चारीबाँद दिया था ।

सुरेशयनः—वासुकी पुत्री और मेधनादकी पत्नी थी, यह वृद्दी पतिवता यी।

मुनेण-एक वैद्य वानर या । इसने अध्यक्षत्रीकी सूत्री दूर करनेमें सहायता की थी ।

्र्रेणसा—रावयकी मोटी बहुन थी। इसके पिया विकास से बाश्मीकिके अञ्चलार यह शत्रक कुश्करत्वले कोटी और विमीचयने वड़ी यो, कैंद्रयोकी जुली थी, कोई कहते हैं कि ... रासा है और सहोदर आई सर। विमुल्डिये बबादी गयी थी, हसके पतिको रावबने मूजने आरक्ष था,विचरा दोनेश्र इसने प्रवत्त्रीमें ब्रीराम बस्तवर्तेमार्थ समाज विका था 1 फलस्वरूप इसके नाह और हा काट विको गरे हो ।

काट (बब गय स ।

हन्मान्—इनके पिठा केशी और माठा कता थै।

बह पक्त के द्वार मारिक हैं। मारिक राममक है। होते

मित्र कीर सम्त्री थे। यह महावीर थे। बीराके गाँ बार्ला

पर हुन्दीने उनकी सेवा की थी। इनके दुष्टक नान करना

था। यह खंडक के महाजार साने लाठे हैं। ये वह बीर, मालसके
पविद्य कीर वेडक हैं।

भावकत भार वज्ज ह ।

हरिखान्द्र—दुर्पर्वरो राजा सत्याजके दुव वे । रिग शैन्या कीर युव रोहिताच या । विचानित्र रे रिग रिया कीर युव रोहिताच या । विचानित्र रे रिग रिवा कीर स्वर्थ राजी रिवित्र स्वा कर्म के दिवा या कीर स्वर्थ राजी रिवित्र स्वा कर्मक कह सहे, एशन्त्र सत्यका पांकत किया। र्म्य सत्यावा जिल्ला हो सिकारा है।

हैना-विश्वकर्मांकी क्रमा थी। दिवयके दिल हैं रहती थी। यह मन्दोदरीकी माता थी।

रामायणकी ओर अधिक आकर्षण

श्रादि कवि वाल्मीकि

(केशक—पं• श्रीरागचरितजी उपाध्वाय)

(1) सत्काव्य-संस्तिके चतुर , अन्तुषंदन विधि आप हैं।

रस-इएमें नवरज़के, वसुधा-सुधानिधि बाप हैं॥ (1)

ŕ

ř

¥

^{हा} सरकाच्य-कल्पद्रुम-गहनके , भार अनुपम मूल है। त सत्काव्य-रस-मकरन्त्रकेशी,

भाप विकसित फुल हैं॥ (1) व्यत्यस यपुचारी प्रणय हैं,

भाप कान्यासायके। ं भाप काज्याका है भार गीतमरूप ही,

सत्काब्यक्षी न्यायके॥ (8) ध्यासादि बेले आपके हैं,

भागके सुद आप ही। जगहा जनक जगदीश है, रंभर-जनक इंध्यर यही।

. देशीन-सी ऐसी प्रमा, जिसमें न रविका चीत है। दैकीन इति जिलमें न प्रभुकी,

उक्ति भोत-प्रोत है॥ (1) रिकार जो इतका गरल , उससे हुए विकास सभी।

बा माद युद्धे मापके, पर आपने कैमा बनाया, उनसे हुए कवियर सभी ह

> (25) सत्पात्र गुणको कवि लिसे . यह भाषका आहेश है। विली वहाँ जाता नहीं,

जो बनवरीका देश 🛍

(0) जो बापसे प्रतिमा-प्रमावित, भाव हो पाया नहीं। वह दूसरे कविके हृदयमें,

आज तक आया नहीं॥ (×)

नुपके चरितका चित्र चित्रित. आपने औसा किया। बैलोक्यमें किस दूसरेने-आज तक वैसा किया है

(1) अब आपने पुस्तक लिखी, तय राम प्रकटित थे नहीं। ऐसा चरित छेखक अपर,

भूपर हुआ है पया कहीं? (10) अमरावतीसे भी प्रयत्त , साकेतको किसने किया ! यह भापहीका काम था,

राक्षस बना द्विष्ठको दिया॥

(11) धीराम-चरितायित मुने! यदि भाप लिख देने नहीं। सादेह है, तो रामके यों,

नाम हम छेते नहीं ॥ (12) मतिपल बदलता जो सदा .

विधिने रचा उस सोक्को।

धारय अध्यय सुरोकको ॥

उसको त्रिदियमें भी सुधा-मिल जायगी जायर बसी। जिसने सुधा पाई , नुम्हारे-

काध्यको पात्रर कमी इ

(11) पयके प्रदर्शक आप यदि, संसारमें आते नहीं। तो काव्य-काननके पश्चिक .

इम बन कभी पाते नहीं॥ (11) है रेशां भी कवि किन्तु उससे ,

अत्यधिक तुम षड़ गये। यह आदिकयिके मञ्जलक-पहुँ चा महीं, तुम चढ़ गये॥ (11)

कवि आप ही हैं, अन्य भी अप-काध्यको करते नर्तक गिरिश हैं, नाथ करके-मृत भी मरते रहें॥ (11)

काञ्याश्चिपर हुड़ सेतु बाँधा, भापने ही पद्मय। अव पार करते हैं उसे. बलहीन भी होकर अभव ध

(10) कवियुग्द चरिदन माज भी है. भापके दी इत्यसे। समता न कर सक्ता यहिए धहु, आएके लपुभृत्यते ॥

(14) है रामने ही भारका परा,

राम-यरा मी आपने। तिमुंक दोनेनि शिया. संसारको अयुनायस ॥

भगवान् श्रीरामकी रावणपर दया

(हेसक-मेहता पं• भीडानारामधी शर्मा)



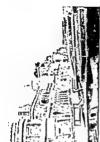
सःभारकीय गोस्तानी सुबसीदासर्जाका सगद्भग्दर 'रामाययमानस' परम अष्ट्रस् प्रमय दोनेपर भी यह इतिहासकी गयानार्ने स्वाने पोम्य महीं है। यह सारान्यस्य स्वा सहाकास्य है। इसमें बहिना संगठे प्रपादीय्य समय कीर स्थानीय्य सभी

रसोंका समावेश किया जानेपर भी वह मकिरसम्पान है। मर्यादा-पुरुषोत्तम भगवान् श्रीरामचन्द्रको जवतार-भवतारी हीं नहीं, परब्रह्म, परमारमा, सर्वेश्वर मानवर उसकी श्रयसे इतितक रचना की गयी है । कहावत प्रसिद्ध दै कि एक वार महात्मा सुरदासजीने गोस्त्रामीश्रीले कहा कि-'श्राप जिन भगवान् श्रीरामचन्द्रकी उपासना करते हैं वेतो भगवानके श्रीशावतार हैं किन्त मेरे भाराध्य देव मगवान् श्रीकृष्णचन्द्र ष्टानन्दकन्द्र शवतारी हैं।' वास्तवमें गीतगोबिन्दमें कवि-छ-त-फमज-दिवाकर जयदेवकी और श्रीमद्भागवतमें वेदग्याक्याता भगवान चेदच्यासकी राषाडी भी उनके इस कथनका प्रतिपादन करती है। जो कुछ भी हो, गोस्वामीजी बाबवंचिकत होकर **क**हने सरो—'हैं, मेरे इष्टदेव भगवान् श्रीरामचन्द्र विष्णुके श्वतार हैं ? मैं तो श्रवतक राजा दशस्थके क्येष्ट प्रत समम्बद्ध ही उनकी झाराधना करता था। अब-जब कि चाप उन्हें चवतार मानते हैं तो उससे द्विगुण चतुर्गुण रूपसे उनकी उपासना करूँगा ।' यह गोस्वामीजीकी चनन्य अक्तिका हार्दिक बहार मात्र है किन्त 'शमायख-सामस' के शम हैं सो बैसे ही जैसे खपर कड़े गये हैं।

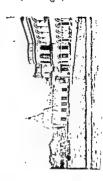
निकला। तर बाइताइ बोने—'हिर हुवर्गहर्ग-क्यों गर्ही मागे ?' क्यामें महामानीने नहा-च मर्ग्य-मयांदायुरवेशमा सामयन्त्रके उत्पास्त हैं। यह स्त्र-'सामत्यः में मेशवाद-कपकी टचना कर हैं में आपेंटे तो कैसे आगते ?' होनोंका माम होगाँके हरूवा वा है। दोनों कहावर्ज और महत्त्वा सुरावति म संदेश दोनों कहावर्ज और महत्त्वा सुरावति म

इन उदाहरणोंसे सिद्ध होता है कि गोलानीकी रचना इतिहास नहीं। इस दरामें को सबन 'मार्च' है इतिहास मानकर निविध तर्क दरते हैं वे भूवते हैं। गोल्यामीबीने 'रामायख-मानस' की रचना बाझीडी रामायण्, इतुमन्नाटकः, समन्यं-रायव ममृति सनेक र्^{तिए} पुरावा और कान्य-प्रत्योंके साधारंपर की है। उसमें की भाग विशेषकर वाल्मीकीय रामायणसे बिया 📢 श्रम्य भाग प्रायः सामवतके हैं। 'मानस' में कि^{किए} कायडका ऋतुवर्णन भागवतके दशमस्त्रपके अनुवर्ण काया है और उत्तरकायहका कविवर्त भागवतने क्रिके क्यों-का-त्यों भाषान्तर है। रावसराज विभीष**व ले**न् रावणसे तिरस्कृत होकर वाल्मीकिके बनुसार समा भगवान्से सङ्गका राज्य पानेकी सामसासे गवा था। मकिके नामसे उसके मुखसे एक भी राज नहीं 🖷 गया । गोस्वामीजीने सक्रके प्रजगमनके प्रसङ्गको सार् खेकर विभीपवाके हृदयमें प्रवेश करा दिवा और दूव में गोस्वामीजीकी कृपासे राज्यकोतुर विमीरण विभीषया बना दिवा गया। इतना 🗗 स्वीं, मा कंसवधकी रचनाके चाधारपर रामाके सतार्में में दिखाया गया था, वही थोड़े बहुत हैर-फेरडे साब मान जनकसमार्मे धनुषमहके समय मा विराजा है। मा जितना र्यश भागवतसे क्रिया है, वही ल्^{दी है} सिया है और वहीं कहीं तो 'मानस' में का वेद्रश्यासत्रीसे भी बाजी भार स्ने गये हैं । वही कंपके स अगवान् जीकृष्यके वर्णन कराते समय वेर्ण्या 'बीणां मरी मूर्विशन्' इस परका अभेस कर समार्थे कपश्चित बीहरूककी माता, नागी, दारी,

(अयोध्यापुरी)



स्यग्दार धाट



?



निवृद्द राज्ञज्ञार

देदुवा राजमहत्र--पीरो मन्टिर शीटम् नेयार ज्या



इत्यादिको मानो पश्चशायकका शिकार बना विद्या था। गोस्तामीजीको इतना संचेप-इतना चनर्यं पसन्य न 'धाथा, उन्होंने इसीक्षिये जनक-समामें बैठी हुई महिलाओं के विषयमें-'बाकी रहा मादना जैसा । ग्रमु मूरत देखी तिन नैसी।" 🕊 चौपाईके हारा उन रमयीररनोंका डार्विक साव दिखळा-इर देवज उनके साथ न्याय ही नहीं किया वरिक उनको बोकारवादसे भी बचा दिया । भागवतमें ही क्यों, संस्कृतके बावर पुराजों में -बाम्पों में किसी महिला है नल-सिखका वर्षंन कते हुए उसके सभी शंगोंका - उन्ने स किया गया है। परन्तु योस्तामीजीको अगजननी जानकीके विषयमें या किसी भी सम्बोके विषयमें ऐसा विस्ताना सजास्पइ मर्वादाविरुद मासूब हुआ। उन्होंने कहाँ-अहाँ अगवतीके बख-सिखका वर्धन कावेची बावरमकता समसी, वहाँ-वहाँ वये-नये बंगसे और पेते हंगसे काम खिया जिसका उनके पूर्ववर्ती किसी कविने क्मी स्वलमें भी खयाझ न किया दोगाः वहाँ तक कि 'सीता चरन चाँच इति भागा' का उन्ने स करते 🌠 उस चक्को १७४ वचा दिया, जिसका प्रयोग काल्मीकिसीने सुखे यप्टॉमें किया था।

माक विषया स्वास्त्रक मेवनावकी शक्ति शृष्टित संकेष केवा मार्वीका विषये होती के विषये मार्वीदा पुरणीयम सम्बद्ध मान्त्र श्रद्धाच्या तरह प्रवास्त्र प्रवास दोवे की पहाले थे । धरार ही उन्होंने हरवकी पुर्वेतना विषयों में स्वास कर दिया था किन्द्र अब बढी स्वास्त्र

रावयके बाखोंसे वेहोश 📺 तब भगवान् मर्यादा-पुरुशोत्तमने पुक्त सर्वं बाह् तक न भरी । इसका पुक्त कारण था। उस समय रोने. वबदाने और पछतानेका सवकाश था, इसलिये रोये-थीये. किना इस समयकी दशा विरुव्ध निराक्षी थी । प्रस समय परम पराकर्मा. विश्वविजयी राष्ट्रसराज राष्ट्रण जीसों श्वायोंसे एक साथ सैकड़ोंकी संख्यामें वाय चला-चलाकर वानरी सेनाका संदार कर रहा था। इतना ही महीं, इस धम-धामसे बाकमया करते हुए भगवान् रामचन्त्रकी मोर यह वहा चला मा रहा या । अपने भाशित वानरोंकी---अन वानरोंकी जिन्होंने भगरानुकी सेवामें बारमधीं करनेका दर संकल्प किया या-वीर विपत्तिके समय रचा करनेसे सब इटाकर वटि वह एक सिसटके क्रिये भी उहरते, माईकी सेवा-ग्रम्भा प्रथम चिकित्साका प्रकथ करनेमें क्षम बाते तो उनके विमक चरित्रमें कर्तन्यश्रम्यताका काबा टीका खगावर उन्हें स्वार्थीपनका शिकार बनातेंग्रे इतिहास-शेलक क्यापि भागा-कानी-रियायत न करते । इचर राजवाकी शक्तिसे सामाध्य मूर्चित हुए थे भीर वयर वीरकेशरी हनमानकी खातसे राजसात राजणा शवको सरेत और यदने विये सम्बद्ध रेखका इनमामग्री-के बरामर्थंसे उन्होंके करचेवर सवार हो रामचन्त्रजी राहधका शकावता करनेके जिये चारे बढ़े । इस तरह आयुक्त हकी वरेचा असे ही बहसावे परन्त सगवान ने प्रपने कर न्यका पालन करनेके लिये आखात्रिय आईकी--'विप्लार्भागममी-मांस्वमात्मानं प्रत्यनुस्मरत् भे बाधारपर होड दिया । उनको पृक्ष बार कर्त व्यक्त धनुरोधले सल्यम सपस्ती शासकका क्य करना पता था, दसरी बार प्राथमिया---बच्चेवरी जानकीका त्याग करना पदा था और शीमरी बार धपने धासित आईको मुर्जित सबन्धामें सूध-राज्याके निषद क्षोद्यमा पदा ।

हता ताह कावाय ही यह क्षेत्रेण रण्या रकका पाल स्वाती क्ष्मी खुटलें मुहलेक करनेको समय हुए, परण्य हरासकारका कर्ण यादाक करने साथ परि वा पाईको मूल बाते तो पढ़ कोशो १८६६ कर्ण पर-पूपता तथार सुत्ती बोशो था पर्याती १८६६ कर्णाने द्वारा पर्याती स्व बन्दुको करने कावार सेनेकी याद दिस्ती १४ कर्णी स्व कन्दुको करने कावार सेनेकी याद दिस्ती १४ कर्णी साईकी संस्व प्रमुपाता, क्ष्मी १ कर्णा रास्ताता साह बहात बाग्यात, बातरात गुर्मी १ क्षीर रास्ताता विशोचकार बोहा । इत्यावसाई सहस्त निरा होन्स भगवान्ने चपने शतुको ससकाता । यह कहने समे---'तने मेरा श्राप्रिय करनेमें कमी नहीं की है। यदि आम त् इन्त्र, भारकर, ग्रह्मा, वैधानर या शहरकी शरवार्ने भी चला जाय, यदि चात दशों दिशायोंने भागका बचना चाहे तो भी मेरे हायसे वयकर नहीं निकल सकता। बाज मेराक भापनी शक्तिसे नृते स्वत्माणको तादित किया है किना में इस दु:लकी शान्तिके किये तुन्ने पुत्रों चौर धीत्रोसहित मारे पिना न छो र गा। जिन वाखोंसे मैंने क्षतस्थानमें चीदह सहस्र राचलोंका संहार किया था उन्होंसे तुम्ने मारू मा ।' इसके चनन्तर राम चौर रावणका घोर संप्राम हुमा । वही पुद, जिसके खिये कहा बाठा है-श्तामतावणयोर्धे समरावणयोरिव । ताल्यर्थे यह कि इनकी भिवन्त एक निराते इंगकी थी। वह ऐसा संग्राम या मैसा संसारके इतिहासमें वृसरा-'न भूतो न मविष्यति'। इस भीषया संप्राप्तमें रावण घयका वटा । वही रावण विचलित हो उठा को सचमुच विश्वविजयी कहलानेकी चमता रखता था। रामके वार्योकी मारले ध्याकुळ रावयका धनुव हायसे गिर पना । उसका सूर्यप्रतिभ किरीट शयद-सबढ हो गया ।

द्याजकसकी कूटनीतिकें अनुसार ऐसे वयराये हुए शतुको यदि भगवाद् रामचन्त्र उसी समय द्वोच बेते वो कोई भी उन्हें हरा कहनेवाला त्रथा। सन्भव है कि श्चकारे हुए शतुपर दया दिखानेवाले श्रीशमपर सामके युद्धपट् बीर कामरता या पुदिशीनताका कवक सवामें किन्त जनके बदार हदयमें यदि इसप्रकारकी बूटमीतिको स्वान होता तो वह कदापि मर्पादा-पुरुशेशन कहलानेके श्रविकारी व होते । वे वास्तवमें भगवान्के भवतार थे । उन्हें भवतार सेक्ट संसारके इतिहासमें सर्वोत्तम आदर्श, भर-एक्टा वृक उत्कृष्ट आक्रों सदा करना समीट था। वे चाइते थे कि इनकी उपमाने वही उपमेय हों । बार, उन्होंने वही कार्य किया को उनके सदश महापुरुपको करना चाहिये था। हम्होंने धवदाये हुए कर्तव्यम् व्यीत व्यवनी प्राव्यविवाको उनको अनुपह्मितिमें बसपूर्वक पुरा से कानेवाले जीव रानुको समावासन देते हुए सम्बोधन किया-विद्यपि तुरे बाज वदा भीम कमें करके सुखे आगृहीत कर दिया है, मू मेरी अमुपस्यितिमें मेरी गृहियीको वसपूर्वक पहर बावा था, इसबिये सैने बाज ही प्रतिका की थी कि प्रै बाज तेरा वय करके तुम्बे सन्तके विवे बरागाणी कर राज्या । किन्तु न् मेरे वार्योकी मारसे व्याङ्क है, नू

बबरे-बबरेते यह गया है इसकिये वर दुम्परा बार कर मैं विचित बढ़ों समस्त्रा । बा, शहामें पत्रा बा। प्रि.म च.विचार होकर सुम्परे सुद्ध करनेडे जिले सान्ते बांद सुद्ध देवोंगा कि तुम्परें कितना शीर्व है।'

श्रवज्ञ शत्रुक्षे इस तरह बराताक- द्राक्ष वराताक राज्य सागा हुमा क्षत्रासे पहुँजा भीर तर हरा स्टर् रास्पण्युको शिषवण्य क्षत्रायकी पिकिया कारे-र्य सारोग्यता प्रदान करनेका सवसर सिना। रासवायाँके सपसे पीवित और स्वपित तावदे सी

स्ट्रार्मे बाहर गरण की, तथापि उसकी दशा उस सार है। 🛍 थी जैसी पराक्रमी शार्श्वका तमाचा साक्र मन होली चयवा गरवके पश्रोंसे छूटे हुद सर्पकी होती है। वह बाला महारासके सदश समीच राम-गरींकी सारको सारवस नाम हो बठवा था। वह राजसींकी समामें सुवर्ष-निहारन चासीन दोकर सोचने खगा। समास्यत वदी, स्मानन में किन्तु विश्वविजयी राषय बाज पार्जित, ब्याहुई हैं। भवमीत था । उसे भाव वह राजसमा, हा है, वह वैभव-सब खानेको चौबते में । इस समय रहे वी इसके बदले कूसकी फॉर्पड़ी मिलती तो गरीमंत है। सचमुच ही उसे माता पृथ्वी मार्ग हे देती हो उने समा बानेमें श्री सन्तीय था। वह जिन रामक, वृद्ध हुन अञ्चल समाजकर निशवर करता या, किएँ एक हत तुष्यातितुष्य सामकर उनकी प्रिय पत्नीकी हर झाना है। द्वार पर दार धीर राजसींका विनागपर विनाग गेर्नेत जिनके खिबे उसने— धृतम प्रम वक्त में वेर वहाया। बतर को रिवु विदे आवा ॥ का प्रयोग किया वनी तर्ग जारो जान उसे द्वार लानी परी । दनकी हपाने आ बरुईकी द्वारी प्राथ व्याप्त समा-मृतिहेरी शाप हा पवड । राषण-सहस्र अभिमानीके विषे इससे बार्कर बन्न कीन-सी बात हो सकती है है आवात् रामधी इस हर्ष यदि नह बन्यवादपूर्वक वापस बरनेकी बमठा ह को सवस्य दो उसे सन्तोष होता । उसने धरनी हार वस्ताते हुए कहा- 'मेंने माताका, गृहियीका, सी कपदेशः न आनकर बहुतः, हुरा किया । और आहर्ता वसीठीको पाकर रामके प्रकारको दुकराया । मैंदे हर करके वहेते बदा वादान पापा ! उस बादानके महिन सुरेन्द्रतक्को तुम्म समस्ता या। इति । हरि स्रोतने समय अनुष्य-बातिको तुम्ह समस्कर वर्ष ह भूव थी। बना कपा। होता को उस समय हैं महुव्यकारिय मी घरनी घरमता मौन खेता। धात राज्ञ
घनतरका घरम तह हुया। शायकों नत्विकी बेकती,
गर्यती, गर्यती, गर्यती, गर्यती, गर्यती, गर्यती,
गर्यती, गर्यती, गर्यती, गर्यती, गर्यती,
गर्यती, गर्यती, गर्यती, गर्यती,
गर्यती, गर्यती, गर्यती,
गर्यती, गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,
गर्यती,

इसमकार विजाप करते हुएशवराने भगवान् रामचन्त्र हे बमीय वार्योका शिकार यननेके जिये आई कुनमकर्याकी कगाया । इसके बाद को कुछ घटनाएँ हुई उनका उच्लेख गोरवामीबीके 'रामायय-मानस' में है, किन्तु सहसा समकर्मे नहीं भाठा 🖹 बहु ऐसे भावरयक प्रसक्तको—जिसका उद्येख करवेमें शतुपर वया दिलानेमें बनके इष्टरेकको कीर्ति होती पी- क्यों हो इ गये । अवस्य ही अन्होंने की बीस इजार बारमीबीय रामावयको मानस-जैसी छोडी दुस्तिकामें रखकर पागरमें सागर भरनेका सराहतीय कपक्रम किया है और इसविये प्रतेष स्थलोंकी धन्यान्य कथाएँ सन्यत्र भी कहीं यत देनी और कहीं निपछल जीव देनी पड़ी हैं, किन्त मस यह बढता है 🗣 सगवान रामचन्द्रके बरित्रकी उत्कृष्टता वर्दन कानेवाली यह कया क्यों छोड दी गयी है 'आधुरी' की पूर्व संक्या २१में 'रावणका पश्चात्ताप' बीविक मोट देते सन्द भी इसका कारण मेरे ध्यानमें नहीं भाषा था। किन्तु घत निश्चय हो गया कि जो कारवा सन्धमेश-वज्ञका प्रसाह दोड़ देनेमें था, जो कारण शास्त्रकरे वधकी कथाका उरखेल व करनेका था, वही कारण इस समय या उपस्थित हुआ। भारत ही भाषमेच-पञ्चा उच्छेल म करनेमें इतिहासका इंड बाबरपढ बंश छूट गया किन्तु में पहले ही कह शुका है कि 'मानस' काव्य है इतिहास महीं और काप्यके क्षिये धानस्यक होता है कि उसके प्रधान पात्र समस्य दोषोंसे रचापे जार्वे । अध्यमेश-धशका वर्धेन करनेसे पूर्व जगमनवी धीताका त्याग दिसलाना पहता या, सद-कुछके हायसे राम-सेनाका पराजित होना दिलळाना पदता या कौर ऐसा काना बन्हें क्रमिय या। जन्हें पसन्त् न था। इसी तरह राम्बन्य मुण्यमंके धनुसार वर्षात्रसमर्गकी रकाके जिये

वनवाके मनोरञ्जनार्थं-उसकी इच्छाको देखकर किया गया था किन्तु 'मानस' बिस समयकी रचना है उस समय पह बास पसन्द की जाने योग्य न थी। ऐसा ही कारण इस समय का उपस्थित हजा, क्षवरय ही इस प्रसङ्गका उरलेख य करनेसे भगवान् रामधन्द्रजीकी विमल भीर बादरी कीर्विका आवरवक क्षेत्र छट गया किन्त इसे 'मानस' में ब रखकर गोस्तामीओने उस बाधेपसे घपने इष्टरेवको बचा बिया जो मुण्यितायस्थामें माय-प्रिय भाईको, धपने चाबित बाईको, ब्वेह बन्धके जिये द्वपना सर्वस्व स्पात-कर साय चर्चे धानेवाले आईको सिसकते 🗤 छोडकर बुद्धमें प्रकृत होनेपर किया खाता । उन्हें भगवान श्रीरामकी नीति-नित्रणता दिखलानेकी घरेचा घचण्य आतस्नेह विखलाना इप्ट था। किन्त इतिहासकी इप्टिसे, चरित्रकी चाररांताका दिम्दरांन करते हुए ये तीनों ही घटनाएँ भगवानके बलाप्ट प्रवारक्षन, भीति-परायतवाता चौर कर्तय्य-पालनके ज्वलन्त उदाहरका हैं । ये ऐसे चादर्श हैं बैसे संसारके इतिहासमें दूसरे नहीं मिल सकते।

रामायण नैसर्गिक काव्य है

रामायण केवल एक साधारण कहानी नहीं है। यह इचय-तलसे विनिर्मत हुआ एक नैसर्गिक काल्य है. जिसकी प्रत्येक घटनाकी अधिकांश भारतीय सत्य मानते हैं तथा उसमें उनका पर्ण विश्यास है। यद्यपि इसकी रचना हुए यहत काल बीत गया संघापि आर्पायतंके सन्तानमें यह उसी रूपसे वर्तमान है, जैसा कि पचास पीडी पर्ष उसके पर्वजीके इदयमें उसे स्थान प्राप्त था। थीरामचन्द्रजीने अपने जन्मस्थानसे लेकर छङ्डा-तक विजयपर्ण प्रस्थानके समय जिन-जिन अलॉसे होक्ट समण किया था उनका अब भी धार्मिक यात्री पदशः अनुसरण करते हैं। करोडों मनर्थोंका यह इंड विभ्वास है कि केवल थीरामचन्द्रजीका नाम सेनेसे ही भारम-रक्षा तया मकिकी बासि हो सकती है। बतः जिन्हें मारतीय जनताके विषयमें पूर्ण जानकारी मात करनेकी अभिलापा है, उनके लिये सह सक्त बत्यन्त उपयोगी है।

—मोमन ('इज्लियन दावनत' दे एकाईता)

गोस्वामीजी श्रीर महिला-समाज

(लेमह---पं-भी,श्रमशावतमादमी भनुनेरी)



भा दुश दिशोंने क्षेम गोरतानी प्रकारीसमजीतर यह कार्येच करते स्वमें हैं कि बहु महिसान्समाजके निन्दुक ये कौत उसके किये दिश दराजा करते थे । गोरसानीजीको जीवनभर्से कभी खीका सुख आस

गरीं हुमा इसीसे वह विचीने विशोधी वन नगईं बड़ी-बड़ी शुनाने छा। मासिक्यप्रीमें इस विश्वके बड़ी-बड़ी-बड़ी शुनाने छा। मासिक्यप्रीमें इस विश्वके बड़ाने-बोहे बेल भी निकल शुके हैं। उनमें बीरामचरितमानसकी कुड़ पंक्तियाँ उद्शत कर वह दिख कालेका मध्यक किया गया है जिंगोस्तामीमी क्रियोंके शतु थे। यह मेरी समकते ऐसी झान नहीं है।

यों तो जियमे भक्त भीर लागी हुए हैं जायः सबने ही कार्तिमी-काश्वनको स्था हु। बांका मूख यदाया और उनके स्थापका उपरेस किया है। फिर केवल गोश्यामीजीपर दी यह आपेद वर्षों हैं हुतके सिवा 'राज्यपितमानयर' की जिंग पंक्तिमंत्रे सदारे उनस्य भावेप किया बाता है यह भी पुक्तिसंगत नहीं है। क्योंकि वे संगित्यों गोरवामीजीकी बनायी होनेपर भी दूसरों के मुँदिस कहवायों गयी हैं। इस्तियेय यह उनको इक्ति नहीं हो सकती। कविकी टिक्यों-रिद्यान्य नहीं हो सकता है की बहस्वयं करता है। कैते-

रामनाम मनि दीष वक, औह देहरी दार । मुक्ती मीतर बाहिते, को चाहित व्यक्तियर ।। कामिहि नारि दिशारि त्रिमि,कोमिहि दिस त्रिमि दाम । तिमि रमुनाम दिनस्यर, त्रिम रमुखु नोहि राम ।। रामनाम मन-भेरन, हरन चोर त्रम सूच्छ । सो दमानु मोहि तोदिष्ट, रहें सदा व्यक्तु।

भो पह क्सरों के ग्रुँदरी कहवाता है वह उसकी ठीक भी सकती। से पात्र विसा होता है उसके ग्रुँदरी नेती हों उकि कारी बाती है। क्याच्या होनेते क्षिकी निन्दा होती है, पर आपेप कानेत्राओं यह बातें कों रे उन्हें दो गोस्तामीऔपर आपेपकर पार्टकर "सानमरामायण" की जिन पंडियोंके कार गोरगामीत्रीयर कार्यय दोता है यह एक्यूक कर स्तर है। दिचार करता हूँ । बाठा है कि पाठक गोरवर्जनी क्यों हो निर्वाय करेंगे । ज्ञानिये——

> करने अवसर का भयड, गयेर्ड महिन्दिसास । बाँग सिद्ध एक समय विभि, जहीहि बनिया गरा।

"गरेड मारि दिग्तास बस यही हामें आवेष्य बाद है पर इससे गोस्तामीमीपर बावेप नहीं हो सका स्टॉ यह महारामा ब्रायस्था उक्ति है बोर इस सम्पर्ध है हा कैनेपीने कहा था---

सुनहु प्रानपति मावन श्रीका। देहु एक बर महाहि देश। श्रीनर्जे दूसर बर कर बोरे। पुरबहु नाय मनीरम बेरे॥ बापस बेर विदेश टदासी। चौरह वर्ग राम दनवरी।

ंगेरह कं छम बनरातो' बाक्य तम इसरे वायान्स बन्मा, इसरर यह प्रशासन का कार्न हैं भी मारे विलागे' बमाँच इस तानी कैकेपीक हिसाई में किस यथा। इसका संकेत कैकेपीक भीर है, तो दी समाक्ष्मी और नहीं, क्योंकि वह कैकेपीको हो निस्ता की केसे में और किसीका नहीं। इसकिये गोल्यामीतीर क्यों क्यों हैं।

श्रव बूसरा बोहा सीजिये— काह व पावक जरि सके, का न समुद्र समाप । का न करे अकरत जवत, केहिजा कातन साप ।

यहाँ भी बहा हाज है। श्रीरामण्डमी हर री सानेको तैयार हो गये तम स्रोमामासी बारामी हैं हो बारामीत स्तर्त हैं हु कोई केईसोक तम करते मूल बताकर मारिवरी हैता है, कोई भारको होर हो। मताबब यह कि सब ही बारती-मत्तरी हामके बड़ा ज्ञान-ज्ञान करते हैं। जारी हुती स्रयोग्यामित्री ही है हि—का मते जी नाता मार्ग मार्गित हिंदी हुता कर सकती है, मताबाद सप डच कर सकती है हुस्सीहासमीन तो स्परीपाकी बताता मार्ग मार्गित •

इसीनकार— सत दहिंद की नारिश्तमाज १ सन निषि क्रमम जनाण दुशक ।। निवक्रीतिम्ब बरक गहि जाई । जानि न जाइ नारि-गहि भाई ।।

भी जनताकी तकि है, गोस्वामीजीको नहीं ।
 शिष्ट्र न नारि-हृद्य गति जानी। सकत कपट अध अवनुन खानी।।

वह मातत्रशीकी तकि है। ननिहालसे व्यानेपर सव

वस सरवाहा उत्तर है। नावहालय आगार भर गरिने निताब सरवा चीर राम, अवस्थान, सीवाहब वास-गरिने निताब सरवाही जा स्वानी कैदेवों ही है, जब यो प्राप्त है के प्रत्यों के जह सभी कैदेवों ही है, जब यो परवाही को साताहों परवाहने कों। आजाबी प्रस्मात-नरवाहने साताहों परवाहन का जाताही सेवर देता होता ही है। साजबाह की विसीसे काही

होती है तो पुरुष्ठे भारताभारत असके सारे सामदान भीर

दिवसको गावियाँ सुननी पक्ती हैं । दो विभिन्न

बारिके बोर्गोर्ने मगदा होनेपर दोनों एक दूसरेकी जातिकी

भी तिकृष्ट बचा देते हैं। इसी साह मातजीय मातापर पुस्सा होनेके कारण सारी क्रियोंको कारिन, पारिव कौर सवयुर्जोंकी व्यक्तिक कह दिया । इस स्वामायिक वर्षानके हेतु गोरवामीजीयर सावेप न बर बनकी गरांसा

ढोळ गर्वोर सूद्र पसु नारी । सब्क ताड़नाडे अधिकारी ।।

यह उक्ति मी समुद्रकी है। श्रीरामधन्द्रजीने वह धनुन चहाया तब समुद्र 'शिव रूप आयो तिव माना' बसी समयकी यह उक्ति है। गोस्तामोत्री वहाँ भी वत्त गये।

विकार-मयसे और सचिव न जिल वह केत यहाँ समाज काता हूँ। यह इतना चौर भी निवेश करता हूँ कि वहि पुत्रसीश्वामती जिलांके निल्क होते से भीनया, सुमिता, सीता, अनव्यत, तारा, मानोदरी आदिने सच्ची कच्छी उपहेतमय वार्त म कहाती शिरी समस्यते गोल्यामीभी महिजा-समाजवा जिलमा आदर करते थे, वतना छापद साचेक करोगांत्र भी में करते होंगे।

कैसे आऊँ द्वार यताओं केले आऊँ द्वार 1

वता वर्ग कर १ गिक-दीर दिम दिम उद्दोत है , यन वैद्य असाम-दोत है , महरी-सा न प्रेम स्रोत है , 'शंकाक व्यापार ; हरव-देशमें मचा वासनाओंका हाहाकार ! बनाओं वैसे आऊँ द्वार है लिपटा बिषम मंहिमें यह तन ; कहता हूँ चुछ करता चुछ मन ; तुम्ही बताओ रपुडुल-गन्दन ! हैते हाय पतार गहुँ चरण, मार्गे दिस सुरासे धमा-मीत कर्णार ! बनाओं हैते आऊँ हार !

न हनुमन-सी स्थापि-मफि है , म सहसम-सी त्याप-माफि है , सातिक तुससी-सम न मफि है , कह दो कीन प्रकार ; गिकें, बरम-देवमें कर बाहें चन्म समूछ मर्पार ! 'बताओं कैसे बार कार्र !

बताओं केसे जांऊ द्वारे ! —क्षेत्र क्याचे?

अन्दरामायणके अनुसार रामायणका तिथिपत्र

(हेसन-श्रीयुत्त बी०पच० वाहेर बी०, प०, पछ पछ०वी०)

श्रीगिरियर-इन एक घोटी-सी 'कन्द्रामायया' है। इसमें समयान् रामचन्द्रजोड़े क्षोत्रनश्रे प्रमेत रोण्ड परार्ग वर्षोन है। पता नहीं गिरियरने इन घटनाओंका कहोंसे संक्वान किया है ! तिरियपन्न के क्षेत्रे निम्नतिसित सूची रीजें-

वर्षं	ं दिन	े घटना	वर्ष	दिन	घरना
	चैत्र शुक्त ३,	2]	(बनवास	- फाल्युनसे	श्रीरामचन्द्रजीका एमा व
	धानन्त् नाम	श्रीरामचन्द्रंजीका सक्तारकपसे	BT 12		सदपर पहुँचकर तीन मास
	संवरसर	प्रकट होना।	क्षां वर्ष)		तपस्या करना ।
	मध्याह कालमें		(धनवास	ज्येष्ठ ग्रह १	श्रीहन् मान् श्रीका ^{इस}
४ था	******	विद्यारम्भ ।	का १४	1	(इन्पा)के सदपर श्रीतामका
११ वाँ		अतवस्थ	वां वर्ष)	1	से मिजाप।
१२ वाँ		श्रीरामचन्द्रजीका, विरवासित्रके			श्रीराम-सुद्रीव-भेंद्र ।
	1	साय उनके भाश्रमको जाना।	"	, =	श्रीरामद्वारा वाति-१६।
११ वाँ		स्वयंबरमें श्रीरामचन्द्रजीद्वारा		, 1 3	सुग्रीवका विकास
		शिव-पनुप-भंग भौर			शाज्याभियेक ।
		श्रीसीसा-पाचिन्मस्य ।	, u	,, 1è	
११ वेंसे)l	भयोध्याःनिवास ।			पर्वतपर वाकर वर्गबनुधा र
२७ वें	ł				गुकामें निवास काना। जिलाचेंग।
सक ।	Ч		"		- D
२७ वाँ		थीरामचन्द्रजीका बनगमन । १४ वर्षका वनवास ।	" .	धाशिन कृष्यो	श्राहासकाम् नामा पिताके सम्मानार्थं नाम
२० वॅसे ४१ वॅ		३४ वयका मनमास ।	1 1		amon person I
धाव तक		.		enformets.	श्रीरामचन्द्रश्रीका गुन्ना सार्
यक । (चनदासः	वैद्यास ग्राप्ट १	वनदासका प्रथम दिवस ।	"		Province (679)
च्या स्वस		भीरामचन्द्रजीका चित्रकृत	,,	94	
44)		वर्षेचना ।		स्तर्गतीर्थे हथ्या ।	मीक्षन्सार् योका शा मः।।
,	वैद्याच छ॰ ६	श्रीभरतश्रीका श्रीरामचन्द्रशीसे	"		And water I
	i :	मिश्रापः। तद्वन्तरः सगराज्का		मार्गशीर्ष ग्रञ्ज 🌁	रीइन्मान्त्रीका समुत्रवर
	1	धनुमात १२ वर्ग ६ सहीने		10	ئي سد
		वर्षम्य पञ्चवर्शमें निवास।	,, I		रिक्म्सन्त्रीका रिकार्ने सीनात्रीये विक्री
(बनदास		शूर्पेयकाचे नाष-कान कारना।		. 1.4	
द्य वेतर-	1.		* 5	विश्व सुरुष्य ७ । अर्थ	दित औरामचन्द्रकी व
र्यांश्री)	साव दाई १४	श्रीशीनार्शका धन्त्रदान होता।			
**	-14 CB 18	White is a second of the secon	4		Des Britishing
	बास्त्रीय हेन्द्र+	राक्यप्रसा(माचा) श्रीतादस्य ।	"	सर्	त्र नटत कात क्या
-					





भगवान श्रीराम श्रीर काकमुसुंडि । 'बल्जं मागि तब पूप देशवहिं'।



ŧ.	दिन	धटना	वर्ष	दिन	घटना
रासका ११वी पदा			बनवासका १४ वाँ वर्ष	काल्युवा कृदवा ४	बिबे समकाना । श्रीरामका शवगुके मुक्टोंको नीचे गिरा देना ।
बार्डी गुड़ा 11वीं को	भीप शुरू ४	श्रीविमीपवजीका श्रीशम्बीसे मिवाप।		फाल्गुन कृष्य १ से १४ तक	कुम्बक्यंका युद्धके लिये धाना चौर चसका भीरामपन्यची- द्वारा वर्ष ।
9 7	पीन्यक्रम से १२ तक पीन्यक्ष १५	सेतु-निर्माखः। सेनासदितः श्रीशमचन्द्रजीका समुद्र पार करनाः।	"	फाल्पुच राष्ट्रश् सक	महोदर, त्रिशिश तथा धन्य शासके सेनापतियोंका शुद्धमें सारा जाना ।
11	साय कृष्या १ से १० तथ	सहापुरीका घेरा जाना।	71	फा॰ ग्रहर से ७ तक	चतिकाय वध ।
	माथ कृष्यः ११	रावणके शुरू पूर्व सारण नामक दूरोंका श्रीतामचन्द्रजीके	"	का॰ शु॰ धमे ३२	पुरुम, निष्टुरम, जह सथा धन्य राषसोंका वथ ।
)1 III	माथ कृत्य १२ माथ कृत्य १०	पास बाना । ब्रह्मके सुक्य-हारका श्रवरोधकर सेनाका स्थापित कर देना । श्रीरामका साथा-असक एककर रावयहारा मध्यकरी सीकाको	19 98 31	का॰ गु॰ १३ से चैत्र कृत्या १सक चैत्र कृत्या १	सका, अव तथा चन्य यो दायों का यप। सेपनाएका शुद्धके सिपे चाना। श्रीहन्मान्तीया द्रोपगिरि साना चीर मायस वानरोंका
	साव शृष्ट १	घोला देनेका प्रयक्त । सन्धि (शिष्टाई)के क्रिये श्रष्टदका रावणके पास काना ।	"	चै॰ कु॰ मसे १३ चैत्र ग्रुक्त ११	धाराम होगा। ६ दिनोंतक पनपोर पुद । मातकिका पुद-१प सेवर भी- शमपन्द्रजीकी सेनाम उपस्पित
11 11 11 11	ता वन्यः ता ११ ता ११ ता ११	धनधोर सुद्ध । सक्तपनका वध । स्रीयद्वारा वज्रवंट्रका वध । भीवद्वारा प्रदेशका वध । सन्दोदरीका शरकको , औ	91	चै॰ शु॰ १२से वैशासक् १३४	होता । १८ दिनींसक श्रीराम रावणका

तुलसी

तुल्तीस्त राम-क्या वनमें, मर-नारिन तारमकूं पुल-सी । पुलती मयसागर पारन कूं, पदि कैमन गाँउ गई सुल-सी ।। पुल-सी गढरी गई पापनकी, पुल-सी गई औ वनता हुटसी । हुलसी बनता,हुटसी बसुषा,हुलसी हुससी,बनिके तुलसी ॥

वनगमन श्रीर रावणवधकी तिथियाँ •

(केनद-रं कोरासामुख्या दिन)

- (1) भीरामकाद्रशीकी नतताम-नात्रा किए दिन भाराम दोगी है ?
 - (१) राज्यका क्य किम मागडी किम निविको हुका है
- (१) भीरामचन्द्रश्री किंग सामकी किंग निविको चनवाराचे क्योज्यामें कीर्र हैं
- (प) समडे बनवायडे चौरह बाँको पूर्त किस माति हो है

कप्पु क विवर्षोंने परस्या बहुन सन्तमेष् हैं, इस सन्तम्याने इस अपने विवार अमराः प्रका बारो हैं ।

(1) भगवान् श्रीरामचन्त्रजीकी वनवास-वात्रा किन दिन चारम्भ हुई है

यह सब बानते हैं कि तिस दिन वामकार्योका वाग्यानियंक बरास था, बसी दिन बनको भौरह वर्षके किये वनसास-पात्रा करनी परी। इसविये बानियंक-तिथिके निर्माय-के साथ दी जनकी पत्र-वाग्या-तिथिका थी निर्माय की साथ विवाद करनी परी-वाग्या-तिथिका थी निर्माय की साइन वाग्या-तिथक कि साइन या है वाश्यानियंक कि साइन वाश्यानियंक कि साइन वाश्यानियंक कि सामकार्यानियं प्राप्ति कि सामकार्यानियं प्राप्ति कि सामकार्यानियं प्राप्ति कि सामकार्यानियं वाश्यानियं प्राप्ति कि सामकार्यानियं वाश्यानियं प्राप्ति कि सामकार्यानियं वाश्यानियं प्राप्ति कि सामकार्यानियं वाश्यानियं वाश्या

'इस समय धैपका गुन्दर कीर पुण्य शास है, जिसमें सव बन कंगल कुल गये हैं। जाज पुण्यसे पहले जवक उपनंतुसर प्यानमा काम है। क्लोतियों कोग कहते हैं कि कल निक्षय पुण्य (जवकरें साथ प्यानमाक्य) थोग है, तुम प्रध्यक्षपर्य कल शपना प्रसिचेक करा लो। मेरा प्रस्तकरण मानी गुन्तरे सीमता करा रहा है।' (ग० प० २। १। ४ घरे १। ४। १३-१२)

महाराज दशरयके कपनसे रुप्ट हो गया 🌃 वैत्रं-मासके पुष्प-नषत्रमें समिपेड होनेवासा था, इससे पष्ट और विधिका भी निवार कारने कार होजाता है, स्वीति स्तीत्ति । गयनाके कतुमार गुम्म-कार वैरामानके द्वारामंतिक है, सो भी केरण नामी इससी दिया होने सम्पर्धन है। स्ति वोर्चे के सीतर हो। नामीति होने सम्पर्धन विषे वेर्मे केरण नामीति सम्पर्धन होने सम्पर्धन विषे वृत्र विरोत्ता मति सम्पर्ध होन्य मति इस्ती वेर्मे सम्पर्धन वह भिन्न हो नासा है कि वैरामानके हान्य मति हो सी व्यक्ति हम्मारी सामानिकेर का गया की स्ती विराम हम्मारी स्त्री हम्मारी सामानिकेर का गया की हो नामी विषे समान हमें सामानिक स्त्र गया की हो नामी

> 'नामिरेड: शुनो बाच्चो नुवे चैकेक्तितहे। स सूमुदे असुते च निच्ची रिकानु सन्दि॥ (चलेक्ट)

बत्तराथय मैथेन्द्र-चातृ-चन्द्र-चरेतु । सपुरस्थीनय-वीच्छेषु कुर्यद्राज्यामिषेचनन् ॥ (इत्तर)

शीएमके वन नाने और लड्डाविवपके पत्राल पुनः, नवोध्या औरनेकी तिविवादे सम्बन्धि करायने गाने वर्षे
 शिवपक सम्बन्धि के स्वापित को जुला है। तिथिक सम्बन्धि दो कल केख रहा कंदने को है अगरर गाउँ
 अवशेष्टनार्थ वर देखका कावरणक अंग वहां कदशुव किया नाता है।

भेगेकहे सुहुर्तके लिये साहरा विवेचनकी भावस्यकता नहीं ती, परन्तु महाराज दरारयने सुदूर्तके विशेष आखीचनकी दा कर इउनी त्वरा क्यों की ? इसका उत्तर रामायखर्मे वे ही श्रीरामचन्द्रजीके सामने इसप्रकार दे रहे हैं-है पुत्ररायत ! चौर भी एक बात है कि बाज मैंने भग्रम स्वम देले हैं। (बाकाशमें) निर्धात शब्द हो हैं भीर बहाँसे महानाद करती हुई उलकाएँ पड़ रही हैं इ वता रहे हैं कि मेरे नचत्रपर हे राम ! ग्रुक, सङ्गल । तहु दास्य भइ चाये हुए हैं। ऐसे विभिन्तों (उत्पातों) मारुमांत होनेपर प्रायः राजाकी सृत्यु होती है और है) योर विषद् भाती है। भवः जवतक किसी तरह विच मोदित नहीं होता है, उससे पहले ही (तुम ना) मनिवेद करा को क्योंकि मनुष्योंकी खुदि स्थिर रहती। इस तरहके कार्यों में बहुत विश्न का पद्ते व्यत्तक भारत राजधानीसे बाहर है, तबतक ही सेरी ^{मितिमें} पुग्हारे व्यभिषेकके लिये (धण्हा) व्यवसर है। डीक है कि तुन्हारे भाई भरत (धवतक) सत्-पुरुपोंके गरवामें स्पिर हैं। किन्तु मेरी सन्मतिमें मनुष्योंके विक । पुकरस नहीं रहते । (बा०रा०४०)

यवि राजको सृत्यु सादि राजनैतिक संकटके समय

यह हो सकता है कि रामायण-पुगके किसी शुद्धर्थ-हमें राज्याभियेकके किये शायव चैत्र-मास वर्जित न हो र यह भी ठीव है कि श्रीराम-राज्याभियेकका शुद्धनें दुवैप वैदगतिके सामने पराजित हो गया, भी करतके धवतरणसे यह तो महनना 🕅 बढ़ेगा कोराबेवरने राज्याभियेकके सब कड़ोंपर सन्तोप-सनक में दिवार नहीं किया और न करना चाड़ा। श्री-चन्द्रजीके समय सर्गक हर्य वृद्ध नृपतिने की हर्यका र मध्य किया और जो चार्चेग दिलाया, उससे को यही त होता है कि उन्हें बढ़िया सहनंकी कावस्यकता नहीं धिमरेकके जिये बहुत भारी सैयारीकी स्नाखसा भी थी। बाबसा भी तो एकमात्र यही वि किसी सरहसे अल्दी-से-जल्दी हे एक बार शोकनयनाभिसाम श्रीसमको रंगके प्रधान और चिरप्रतिष्ठित शक्रमिस्हासनपर रिक देलका नेत्रोंको सफल कर सें। ये इतने र क्यों हुए ? साब्म होता है 🖬 अयोज्याके साम्राज्य वो विपत्ति मानेवाजी थी, उसके विवादकी झावाने इत्रको बेर बिया या । उससे समुद्रगान्त्रीर वे

राजिं इतने विद्वल भीर चम्रख हो गये कि भाकाशकी सरह निष्कर्जक खोकपावन महात्वामी राजकुमार भरतजी पर भी अध्यय सन्देह कर बैठे। रोक्सपीयरद्वारा कश्यित कलिनायक हैमजेटका ज्ञान-गर्भ उन्माद शीर किंग लीयरका परिवामानुकूल पागलपन भी पदा है, पर श्रेतावुगके ऋषि-प्रशंसित देव-सन्दित उस प्रयय-छोक श्रमर नरपतिके मनकी प्रकृत धनवस्थाका चित्र बढ़ा ही समेश्परी है। क्षी हो, ऐसी दशामें को कुछ होना था वह हो गया । भगवत-संकेतसे घटनाचक धूम गया। स्रभिपेक-दिन निर्वासन दिनमें परिवात हो गया । अयोध्यावासियोंके आनन्दका सूर्वं उदय होते ही ऋता हो गया । वह दिन श्रीरामसरितके आमोफोनमें ऐसा बबल रेकर है जिसके एक सरफ रामा-भिषेकके ज्ञानम्दकी भैरवीका ज्ञालाप पूर्व होनेसे पहले ही दूसरी चोर शमवन-थात्राकी सोहनीका स्रोक-संगीत द्वार हो नाता है : वो हो, वार्यजाविके इतिहास-प्रांत्यमें भाज मी यह दिन एक ऐसे उच गोपुरकी तरह व्यवायमान है, जिसको एक दिशापर 'सत्पसंध दशरथ और शमाभिपेक' और दसरीपर 'पितृभक्त जीराम और उनकी बन-यात्रा' बद्दित है पुत्रम् मस्तकपर विका है-

'चैत्र ग्रुक्ता १० पुष्यनक्षत्र'

श्रीरामचन्द्रजीके वन-गमनकी विधिका निर्यूप हो गया । इसके बाद यह निश्च करना दें कि—

(२)रावथका क्य किस मासकी किस तियिको हुआ है शवयवयतक मगवान्की शीकाओं के समय या तिथिका क्या हुसमकार हैं—

भित्रपृट

१— बाजा-दिनले छुडे दिन, धर्यात् चैत्र-शक्ताः ११ को शामचन्त्रजी चित्रपूर पहुँचे।

अत्रि, शरमंग, सुतीयण आदि ऋषियों डे आग्रम

् २—दवडकारचयमें, विभिन्न सुनियोंके आधर्मोमें रामचन्द्रजी दरा वर्षतक रहे और यह सारा समय उनका मुक्ते मुंबीत गया, विरायका वस्त्र से मनवानके

चारम्भमें ही कर चुके वे ।

तत्र संवसतस्तस्य मुनीनामाश्रमेषु वै। रमतमानुक्षेत्र यथुः संवतसरा दशः।

(श रार रास्र)

पुर्वाश्या-आध्रममें श्रीरामचन्द्रची सुर्वाश्य सुनिके बाह्यमर्मे भीरामचन्द्रची सुर्वाश्य सुनिके बाह्यमर्मे दूसरी बार बावे बीर वहाँगर अनुमान

ंदश मासतक द्यर्थात् वर्षाकालकी समावि तक रहे। सुतीश्णस्माधमपदं पुनरेवानगाम ह।

तत्रापि न्यबसद्रामः किञ्चित्कालगरिन्दमः ॥ (स॰ २।११।२८-२९)

पश्चिन्मो विविधास्तत्र प्रसन्नसक्तितासयाः। इसकारण्डवाकीर्णाश्चकवाकीपशीमिताः 👖

(श० २।१९।४०) चारहवें वर्षके श्रीयमकालसक वहींपर रहे।

> 'मगुरनादिता रम्याः' 'दश्यन्ते गिरयः सीम्याः' । (रा०६। १५।१६।१४)

यह वर्ष उनका वहींगर समाप्त हो गया। तेरहवें वर्षके मार्गरीर्थ माह्मतकका समय भी वहींगर विविह्नताले वर्षति हो गया।

> वसतसंस्य तु सुखे दावनस्य महारमनः । शाद्वपापे हेमन्तऋतुरिष्टः अन्ततः ॥ (१००१ । १९११)

रार्पयकाके कर्य-नासिका-ग्रेदनके धनम्बर अन-स्पानके चौदर सहस्य राचसीका वच हो क्षेत्रपर तेरहवें वर्षके तीसरे महीने कर्यात् शिश्रिर च्यतुके कन्तिस सास फारगुनके धायपचर्मे सदयने सीताशीका चपहरच्च किया।

कुर्गमापवयमयश्रा वादधानसर्वते । कर्णिकारामदीकांस चूतांस मदिदेशणा ॥ (४००१४२०१३०१३४)

शासमें भगवान् कम्याः वन्तागाः। भूजान्य पर्वत्वर वर्द्देव शायरपुत्र सुर्यावने मिन्ने । गन्धनान् सुरमिर्मासो जातपुष्पन्ददुनः। (रा०४१९११०)

७—तोहर्वे वर्षके साववें (घवा नाटिक्य और मासमें बाधिका वय हुमा। वर प्रस्तवण पर्नत आवयाते क्षेत्र पौर कृष्या र प्र चीवडर्वे वर्षके चारम्भतक भीतान्त्रन

प्रस्तवता या माल्यवान् पर्वतपर रहे ।

् पूर्वोऽयं वार्षिको मासः श्रावणः सर्वेकाणणः। प्रवृत्ताः सीम्य चलारा मासः वार्षिकरिकाः॥ कार्तिके समनुवांत्रं त्वं रावणको यहः। (राज्या स्थानिकरिकाः

स—चीद्रवं वर्षके प्रथम मार्ग मार्ग केकात्रवेश और की द्वाहा ११को महाचीर हन्मार्ग धीतासंवाद धुसे । बराले दिन द्वार्गीको ग कीजानकोशीले संवाद हुमा ।

हिमन्यपामेन च शीतरविमरन्युरियती नैक्सहसारिकः। (राज्यामनः

सेना-प्रयाण वचन्नम् सम्बद्धके समय।

अस्मिन, मुहूतें सुप्रीव प्रयाणमितीयवे। युक्ते सुहूतें विजये प्राप्ती मध्ये दिवकाः॥ उत्तराणस्मानी हम

्राविक शिक्सपर को सेनाके जामभागको निहर

, आरोहण पहुँचा स्वयं सुवेत वर्षेत्रप को। ततोऽस्तवस्यत् सूर्वः सन्वया प्रतिरिक्षः। पूर्णचन्द्रप्रदेशाः च निशाः सम्बन्धः।

् (१०६ । १८ । १८) श्रीरामचन्द्रजीकी शमशा सेना एक मानमें रव सेन्द्रण

शीरामचरहत्रीकी समन्त सना एक सामन संदानक पहुँच सकी !

(स० माण्डा १८२।५०) १९—इस दोनों कार्यों साम हर्जु

रेंग-निरेश और वे अभावन्यातकरे ३१ दिन लोग वृत-सम्प्रेयक

वनत-राष्ट्रकोर १२ — ध्युद्देश वर्षके खार्यमास (माय) सम पुद धी शाला प्रतिपद्देश भाद्रपद्धकी समावस्तातक, संकास बाहर वानर धीर मेगाभावित्रोर साग्रस राजसीकी साग्रस्थ सेनाके लवा हृद रोते दें। हर दुद्दोंने कुः महोने निकळ गये। अपने सुमहाद कार कृतासस्य महानक। इुप्रस्तेन जातीके मान राम-कुलं प्रवाह ।	(२१) नदान्तक-चथ शाविन हु० थ (२६) महोदर-चय , १ (२७) महापारवेचय , १ (२०) महापारवेचय , १ (२६) मेशनाइहल महाक-मयोग , १ (३६) संववनी धानवन , १ (३०) हुन्म-निकुम्म-चथ , १ (३१) मक्साप } (हाति
(रा०६ ।६२ । १३) वक पुर्वोमें ममुल थोदा और सेनापतियोंने आग वर्ष विचा । थारो इन खोरों के जो युद्ध हुए उनके विवरवा भीचे विरो जारे हैं ।	(३१) शेवचाद यथ , 13 (३४) सूज सेना-चथ , 14 (३४) स्वर्ण-निर्पाल्—कारियन फुट्या ग्रमाचला । अन्यत्यानं स्वस्तीय कृष्यपुर-चनरंदगीत ।
हेताहा होहुतः । १२ — माद्र युक्ता अविच्छाको स्वयं इदश्या रह्वा संग्वहारा अधिक अथान सोसाका पानरोके साथ संक्रम युद्ध हुमा, हसी दिन हमा हमी सोसके अञ्चल वीरोका सबसे देश हम्बद्ध हुमा।	' इत्या निर्मेखानगतस्यो शिजवाय बहैर्नुतः ॥ (राज्य । ९२ । ९४) (१६६) शावय-यथ
(संवर । ४२ । ३२) रक्षां बानरामां च इन्द्रयुद्धस्पर्वतः । (संवर । ४३ । ४३) मेमताहाः १७ — मात्रपत् छुद्धाः प्रतिकराकी सनगाउ साविक सम्ब	(३०) विजयोक्तय — व्यारिकन सुझा एउमी । वतन्तु प्रयोगाच्य दशस्त्री विध्वकी ग्रुमान । वितृत्य चोड लान्त्रार्थ कर-मीतान्ते हिर ।। (धांतरापुराग) श्रीतामचरिक्के साचार्य चीर कसाचार्य सैंगीस
जारतो विशेवतर समाद पुरोक्षावितवित्तवर । । । । । । । । । । । । । । । । । । ।	अंगोंकी सूची भीर उनका यगावच्य समय प्रापः कीवालमीयीय शामायको वार्गाएत कर दिया गया है। कहाँ केवळ ब्याद्य, करी ब्याद्य हो। सारा देगों मंत्र केवळ ब्याद्य, करी ब्याद्य हो। सारा देगोंच्य और कारार करा है। कार्य केवळ ब्याद्य, करी ब्याद वार्गा मारा मारा करा हिम्म भी निवच हो शास है। किन्तु शामायकार्य व्याद मारा शास नपके सामायक पर होगी किना गया। बाता उनके निर्मेचके दिवे महाभारत भी दुरावांकी हो था वार्म करा हमायक कर केवळ प्रमानस्था करी हो हो हो हमाय कर हमा है के सामायकार कर हेगा है कि सामित हात्र । को अगमाय सामायकार कर हंगा है कि सामित हात्र । को अगमाय सामायकार हमा
	`

विमानिके सरागर प्रेरमामीने विजयोगार मनाया । वहीं कारण है कि गरमी निषि तुमी-द्वामी प्रमान निषि सानी गर्मी भीर तुममीका नाम 'निनमा' हो गरमा । वस्ति सरायका कर भाषित हाजा व को हुआ, परानु निरमोनार तुममीके देन मनाये आनेने सन्तानायास्य त्रास-पर्यक्त परित्र मान जिया और साम भीरसारे हिन्दुन्तावर्धा ग्योराश समझीयास्थी त्रास्टरेके दिशम ही सावनाय्य होना है। राश्य-वसके हिन समस्त्रमाई कननायके बारह विमान के राश्य-वसके हिन समस्त्रमाई कननायके बारह

चव देशना चाडिये-

(४) धीरामचन्द्रजी किन मानकी किन निविको बनवाराने संयोध्यामें स्त्रीटे !

शामाययमें बिरत है कि-

पूर्वे चार्दशे वर्ष पश्चमा स्वमनाप्रकः । भरद्वात्राध्रमं प्राप्य बनन्दे निवतो शुनिन् ॥

(१०६। १९४। १)
ध्रयांत् 'नियमपरायप्रशासम्प्रतीने चीहहवाँ वर्गं प्रा
होते ही प्रमाति दिन भरहाल-बाधममें गूर्वेचहर ज्ञानं (भाहात) को प्रणास किया पर्याप्त देशका हिनिका ही निर्देश है, सास और एपका नहीं। पर क्षम वह सिन्द हो गया कि जायिन ग्रहा १०को शवधका नियन हो चुका या, तक साथ ही यह भी निवध हो गया कि शासप्तन्त्री जिल पद्मीको भाहास ग्रीतिक कालमें गुर्वेच यह कार्तिक कुण्य ही थे। कार्तिक कुण्य १ को चनवासके चीहह वर्ष पूरे हो थे। कार्तिक कुण्य १ को चनवासके चीहह वर्ष पूरे हो से थे, हसविषे बस दिन आन्-भक्त भरतजीके पास सामच्यन्त्रीका पहुँच वाना बसीक कावश्यक था।

ठनके निश्चित समयपर वहाँ दर्गन नहीं देनेले महान् सन्यंकी धार्यका थी क्योंकि दृढ़मत भरतत्री चित्रक्टने रामचन्द्रजीले कह शुके थे कि—

्र चतुर्दशे हि सम्पूर्ण वर्षेऽहिन रघूत्तम ॥ न प्रथमानि मदि त्वान्त प्रवेषमानि हताशनम ॥

न द्रश्यामि गदि त्वान्तु प्रवेश्यामि हुताशनम् । (स॰ २। ११२। २५-२६)

सपीत् 'हे रहुके ! किस दिन चौदह वर्ष पूरे होंगे उस दिन गरि प्राप्ता गहीं देश पार्डमा की स्नीप्रमें अवेश कर्ता ।' हसी सीम प्रतिग्राके ममानसे कार्तिक कृष्य रुको महाचीरतीने राम-नेयदे चातक सहाया अरतके शास वर्षित होकर कहा कि— 'मरिप्नं गुप्पयोगेन क्षेत्र शतं हुपुर्माते ।'

'कड पुरा नववडे समय जिला समार्थ मा रामचन्त्रजीको देज सहेंगे' इस सन्देशके बतुपार करि कृष्य ६ की पाच मण्डल वे योगमें भगवान समान्दर्ग म मरतजीये मिजाय हुआ और उमी दिन सब महाने समारोहडे साथ अयोजामें प्रोग दिया। सर्विष्ट्य मसमीको मण्याद्वकात्रञ्ज प्राप्त नवत्रमें ही चौतः वार्वे सुरीर्वं काश्रके पत्रात् त्यगित श्रीराम-गणानिक 🕫 सुराग्यम हुआ। बह रिश्व ध्यान देनेका है कि गामकड़ीस काशियेक बहुको भी प्रच्य मचत्रमें ही होनेवाबा मा की सद दूसरी बार भी उभी अचलमें हुया। सात्म हैत दै कि कार्तिक कृत्व ६ को समाहोत्त और वर्ति कृत्व 🕶 को पूर्वाह्ममें पुत्रव नक्त्र था। तमी वह हो तम कि भरत-मिजान और चमिरेक वैसे महत्त्वपूर्व दोनों बा युक्त ही नचत्रमें हो सके। जीरामामिरेक्के उत्तर्भ सिखसिका बहुत दिनोतक रहा, जिसमें बाल घोड़े, इन्हें दी घेतु,सी बुर चौर तील करोड़ सुवर्णमुदार् हवा किरे बहुमूरुप बच्च-बामरच बाह्यबाँको दानमें दिये गरे। ब शा द । १३० । ७३ -७५) चारों झोरके वरोधन झ चीर प्रयित रामा चारीवाँद, बघाई वर्ष मेंट देनेहै हैं उसमें सम्मिबित 🛐। सुप्रीय,विभीर्यय बादि हुइर्गव श्रेम-परवश हो फारगुन मासतक राम-राजधानी घर्वाण क्रामियेक-कातिच्यका रसास्तादुन करते रहे। क्रीमेरे उपलक्तमें रोशनी भी घदरव हुई, पर कितनी हुई औ कितने दिन रही,इस विपयका सारीकरण महर्पि वाल्मीकिती श्ययोष्यादायदके शन्तिम सर्गमें नहीं दिया । कांव संचेपके लिये वहाँपर मध्ये शोकोंमें ही भरत मिलार हो। श्राभिपेकोत्सवका वर्णन समाप्त कर दिया गया है। अयोध्याकायस्य रामामिगेकके बायोजनका बर्दन करे समय चादिकवि जिसते हैं कि-

> श्रकातीकरणायं च निशासनतीकवा। दीषवृक्षांस्त्रया चकुरनुरच्यासु सर्वता। (तः १।६।१८)

'राजिके कानेसे पहले रोरानीके जिये क्योचार्व ह गळी-कृचोंमें दीप-कृष (कार) बनाये गये। पराजे

^{*} ततः प्रमाते विमले सुकूर्चेडमिनिति प्रमुः। विश्वतः पुष्ययोगेन मादाणीः परिवारितः॥

इपेटनासे उस दिनकी सैवारी क्यों की स्वों रह गयी ! रोगनीके अह-दीपकोंको कौन पूछे, खब अयोध्यानासियोंके याय-मन्दिरके दीपक ही धनमें चले गये । जो ही, बीरामाभिषेकके प्रथम गुहुर्तेपर भरपेट रोशांची करनेका चान भयोध्यावासियोंके समर्मे ही रद्द गया । धामिचेकके बूसरे मुहुर्तपर उन लोगोंने रोशानी करनेमें पहली बारकी कसर मी निकाल दाखी होगी, इसमें सन्देह नहीं। उपवासके पारवपर वर्ती पुरुष कितने खोरसे ओजन करता है। बावस्त् वत बाँध टूटनेपर होते बेगसे बहता है ! जब देवलाकी मतीक-प्याके उपचारमें भी कितने ही दीपक सम्बक्तित हिरे बाते हैं, तब प्रकृति-पुश्नके परमाराज्य साचान् देव **धौर** प्रवारविजयी रावणके विजेता मस शमयन्त्रके विजय-णेमित धमिपेकने मधम सप्ताहमें प्रकाश-रोशनीका को म्बारह बायोजन हुवा होता, उसका बनुमान सनाना करित है और यह प्रत्येष है कि वर्तमान दीवावजिमें उसीका विवित्य है।

कार्षव हान्य पहीडे दिन बीरानवण्यलीका क्योप्या-तीय ता बेनेरर हम सन्देद व्यक्तित होना है कि कब कैत हर एमीको करवानका साराम हुया तो कार्तिक हान्या होने व क्याने कार्यान हुया तो कार्तिक हान्या होने दिन स्वत्य कार्यान क्याने स्वत्य कार्यान कार्यान ती है निस्तारेद, कक सन्देद क्यीकियते कोई धावित भी दो कक्यो। पायलंकी व क्याना कीर व्यक्तावक्योंके रेपने भी यही समस्या सानने आयी थी। विशास्त्र कार्यान नेक्यान्य दुसरे हहक्या केशारी सम्यान यान्नेकको स्वत्य कीराम स्वीद्यान ह्यांप्यन हो नेक्या सम्यान यान्नेकको स्वत्य कीराम स्वीद्यान ह्यांप्यन हो नेक्या सम्यान स्वत्य रंपनी शुर है, स्वतिये मित्रास समयते वृद्धी प्राप्त कीर्यान विश्वेद सार्या हुई तिर बन्यवर्ण सीर प्रधानकासकी मित्रि कर्या हुई तिर बन्यवर्ण सीर प्रधानकासकी

पत्रमे वर्षे दी मासानुपत्रीयतः । पत्रमप्तिका मासाः पत्र च द्वारहायुगः ।। वरोदरानां वर्गाणामिति मे गीयते मतिः । सर्वे यथावचरितं यदारोभिः प्रतिश्रुतम् । सर्वे चैव महात्मानः सर्वे धर्मार्घकोविदाः । वेषां युधिष्ठिरो राजा कर्ये धर्मेऽपराप्तुयः ॥ (यहासारत ४ १ १२ । ३-६)

'धर्माच हर पाँचवें वर्धमें दो महीने वहते हैं। (इस दिसावये) इन पायवनीं हैं (तेरह वर्धोमें जो धातमक) पांच मास वारह दिन चापिक हो चुके। मेरी पह सम्मति हैं कि इन्होंने को को मित्रामुँ की भी, वे साथ पायाता, पूरी कर दी। समी (चायवन) महाम्मा हैं और हाभी धर्म तथा प्रार्थमांक वेचा हैं। विजवक सुधिकिर (भीना सत्यादारें) रामा है, वे वर्षों (विषय) में कैसे प्रपापी हो सकते हैं ?

भीष्मजीकी दक्त ज्योतिप-शास्त्रातुष्ट्रज व्यवस्थासे यह सिख है कि प्ताहर विषयों में ३४४ दिनके विधिवद चान्छ बर्योका ही उपयोग होता है और ३६६ विनवाक्षे सीर क्योंके चिथक मास मिलाकर उनकी पूर्ति की जाती है। चतः चान्द्र वर्षकी पूर्तिके जिये सौर वर्षके श्रधिक मासकी गयाना न्यायसंगत है और उससे धर्मकी कोई हानि भी नहीं होसी। वेसी दशार्में मर्यादा-प्रक्वोत्तम भगवान श्रीरामचन्द्रजी श्रविक मासगयानाकी उपेवा कैसे कर सकते थे ? और न्यायनिष्ठ रामदर्शनोत्सक रामगत-प्राय भरतजी भी श्रापिक बासोंको विने बिना क्योंकर रह सकते थे ? प्रवस्य शी दोनों द्योगसे समय-संगतिपर पूर्व विवेचना की गयी है। चीटर बर्पेमें पाँच मास चीर उद्योस दिन चथिच मासोंकी गवानासे वट जाते हैं-यही सोचकर श्रीरामधन्त्रली कार्तिक कृष्ण पडीको ही दर्शनीस्तक और प्रतीचमाण भरतसे का मिले । कार्तिक कप्या पारीमें पाँच मास और उच्चीस दिन बोड़ देनेसे बनवासके चौदह वर्षोंकी बयावत पूर्ति हो वाती है। गरिव-शासका को भपरिहार्य सिद्धान्त प्रकास द्वींधन बैसे हठी राज्य-कामकने विना धापतिके स्वीकार कर जिया, उसे स्वाव और स्वागके प्रथम शिचक कौसज-राजकमार महोदार महावान रामचन्द्र और सात किय भाँति त्याय सकते थे 🎚

उक्त सिद्धान्तसे चनुर्देश वर्गंबी पूर्विका समाधान हो गया। साव ही यह भी निर्मात हो गया कि इटहार स्रोताम-विजयका स्कृति-दिवस है भीर कार्विक माससे भूरी विजय-वैजयन्ती-मविक्ट पुणक-विमानास्क सीराम प्रयोग्धा-में क्षेट्रिये। इसीचिये देशियानिका उसस्य मनापाजाना है।

राम-नाम

(रेखक-पं॰ श्रीवरुदेवप्रसादजी मिश्र पम॰ प॰,पल-पल•वी॰, पम॰ आर॰ प॰ एम॰)

कत्याणानां निपानं करिमरुस्यनं पावनं पावनानां, पायेयं यन्तुमुद्धाः सपदि परिपदंश्राप्तये प्रत्यितस्य । विश्रामस्यानमेकं कविदास्यसां औवनं सावनानां भीत्रं धर्मदुमस्य प्रमनतु सवतां सूत्रवेशामनायः ॥ (इनुमन्नाटक)

राम नाम भीण दीप घर, जीह देहरी द्वार । तुरुसी मीतर बाहिरो, जो चाहसि उजियार ॥

राम राम कहते रही जब लग घटमें प्रान ।

पार्थ कि पह बार एक सजन सायू प्रवन कि प्रवास करने मेरामा कि जिस्ते सामव दे दे रो गरी, जिस्ते के प्रवास करने मेरामा कि ज़लसिद्दारजी के प्रास्त जाने के प्रवास करने के प्रवास के प्यास के प्रवास के प्रवस्त के प्रवास के प

क्या वन समयके ताम और ये और गोरवामीतीके योत हैं कारण, बात ऐसी ही हैं। इन्येक अनुवाके ताम स्वता प्रवत्त हैं। क्योंच्याट पेठिसानिक ताम तामकपृत्ती समयब दे एक हो क्योंक दे हों तरानु वनका वर्षन सकते एकता मही किया है। वात्मीकीय तामायबामें के मर्योदा-इत्योंच्या करें। तो हैं यो क्यान्यामायबामें तिल्लाके करवार। सम्पन्तिने वाहें बोबोन्य पुरस्त सामा है तो सम्बद्धारामीके आवादा करवाल क्यान्याह है वी

मही पार करनेवासे सजन रामका सो वर्ष समसे उससे कई वर्षे बड़कर कर्षे गुक्रसीवासमीड ग्रामी की गरि वह सजन रामसे देवल समोवासमी गरि वह सजन रामसे देवल समोवासमी । ज्यादा सांकोराकोकसारी रामका ही वर्षे के हैं हों। गुक्रसीवासमीके रामका कर्षे था—रोमशीमी की राजा गरामाइसे राम हुआ सजवार पैतान, से विकास हो भी दिवक निकरता है। एवं ही राम सांक्रमीवासी की हारा चार करव वा हमने भी स्विक्त हानेवासमा का वा सकता है। डीक यहीहात हमामानामा की है है हससे सांवोरावासी रामका कर्षे से को है होई हिन करवारका कर्षे के सकते हैं और कोई हमें क्या सांक्रमी वारामाका ही बास सांत सकते हैं। हमें क्या सांक्रमी

वैश्ववकोग 'शार्यका चार्य ग्रांसि क्रवण कराती' व सम्बन्धे हैं। कवीर सानक सरीचे मान समझ कर्ष करी वस्तान्याई। कारते हैं। वह जारी कारती समक है वर्षी नाम यो जुक ही है। जिन सञ्जनके समझ दरसकी होन वैसी-वैसी विस्ताक और परिकट होगी कारती, वह हों रामके प्रयंकी विशासता भी चैसे-ही-चैचे चानुश्रद करता पदा जायगा। नामी (भामके प्रार्थ) बदलते सबे कान्त नाम भ्यों-काश्यों रहा । इसीलिये नामकी महिमा बहुत बड़ी-चड़ी है।

सामान्य बगर्जे (म रूपकी (वस्तुकी) प्रधानसा पाते है, नाम ही महीं। प्यास सुम्हानेके जिये हमें तो वह तरज प्यार्थ अब ही चाहिये। उसका नाम स्टते रहनेसे प्यास नहीं हुय सकती। सहस्त्र सी नासधारी व्यक्तिका देख पहला है भ कि उसके मामका । परन्त श्राध्यात्म-अगत्से इव बबदा ही लेल है। बात यह है 🌬 सम्याया-सराल्के प्रायों का (ब्रह्म, धाल्मा, शक्ति चारिका) इस दर्शन सी कर महीं पाते, वे प्रत्यच विषय तो है ही नहीं, इसकिये दण्डें प्रदेश करतेमें हमें मामका सहारा खेना पहला है और इमी कारण इस चेत्रमें जामकी प्रधानता हो जाती है। ध्रणाम-त्रवद्धी बल्दुओं के किये नामका सहारा बढ़ा प्रवस होता है। शब्द और धर्यका बदा ही धनिष्ठ सरवस्य हैं। यदि एक मिखा हो वृत्तरा भी मिखा ही समस्त्रिये। बह नाम देता है थो कपकी म रोक रक्ते और वह रूप कैता है जो किनी नामसे स्वक्त म किया जा सके !

जिन नाममें रूपका (क्यंका) जिलना कथिक लमावेरा होगा, वह बतना ही सहस्वपूर्ण होना । सामान्य मामीसे सगरान्हे नाम प्रविक सहस्व-पूर्व हैं और अगवान्हे सहस्र (श प्रसंख्य) नामोंमें भी वह राम-नाम इसी कारक मविक महत्त्रपूर्व है । सङ्क्ष्याका 'सङ्क्ष्यास तत्तुरुपं' कावा बाक्य प्रायः प्रत्येक नाम-प्रेमीको विदित होगा । इसी रहिये दिचार करनेपर यह भी विदित ही जायगा कि नवी चार कारेबाचे उस सजनके रामनाममें और तुवसीदासजीके रामनाममें स्वा चन्तर या ! '

इस राम नाममें देशी कीन-सी विशेषता है जिसके कारक वर इसरे नामोंसे अधिक महत्त्र-पूर्ण और अधिक अर्थ धार्मीर्वेशका साना जाता है है इसका उत्तर कई प्रकारसे दिया बा सकता है। पहली बात को यह है कि वह 🥍 से भिवता-तुबता नाम है चौर कहाँ 'कें' केंद्रज निर्गुय ध्यदा वधिकनो अधिक निराकार अक्रका स्रोतक माना गरा है कही राम शब्द निर्मुख कीर समुद्य तथा निराकार भीर साधार दोनोंचा प्रकाशक है। दूसरी बात यह दें कि हैत बासमें स्मादीयता (सम् चानुवासी) स्रोतसीन सरी हैं है इपहिदे अफॉको यह नाम विशेष मिन है। रमा

धौर रामा-दोनों हो दोर्घ स्वरान्त शब्द हैं, क्योंकि दोनोंकी रमवीयता विकारशीला है। केवल शम शब्द ही ऐसा है जिसमें प्रथमके विकार जन्तमें बाकर सप हो जाते हैं। शीसरी और सबसे महत्त्वपूर्यं बात वह है कि जो भन्नर भएने शरीरके पट्चकमें विधमान है और को बाहानमें बासर बौर बासिट शक्तिशाबी बने हुए हैं उनमें 'रं' बाप्ति-बीज माना गया है। जो जागको तासीर है क्टी इस बीज-सन्त्रको है। अग्नि केश्व भस्म करनेवाली हो नहीं है. उच्छ-शक्ति प्रकट करनेवासी भी है। इसी प्रकार यह भीजसन्त्र म केवज पापोंको भरम करता है वर निर्वक्षांमें प्रकल धारमबसका सञ्चार भी करता है । बीजमन्त्रका सम्बद्ध कर करनेसे सबिदिय शक्तिका चाविभाव हो बाला चररपरमाची है। इसी सरह रामनामका ठीक-ठीक कर करते रहनेसे यह हो नहीं सकता कि यह नाम धानना पान स दिवाने ।

मुँहसे रामनाम कह देना ही उस मन्त्रहा सम्बद्ध क्षप नहीं है। यह तो बैज़री वायीका अप हवा। सपकी बाजी जितनी गहराईसे बठेगी, उसका फल भी बतना ही बत्तम होगा । वैस्तरीसे मण्यमा बाबी श्रेष्ठ है, उससे भी परवन्ती काणी शेंह है और परयन्तीसे भी बहबर परावाणी है-को मजाधारमें गैंबा करती है। उस बायीसे वहि इम बामका जप हो तो फिर न्या कहना है ! यह सी हुई पहती बात ! श्रव दसरी बात यह है कि वदि नाम-अपने समय धर्मकी कोर कुछ अपन ही न रक्ता गया तो किर शेते प्रयश आमोकोनकी सरह वाम-रटने वासनिक सामकी कामा कैसे की जा सकतो है ! माका चेंगुलियोंगर यूमे. कीम अलमें वने और नव दशों दिशाओं में पूर्व। इसे धनकी वय गरी बद्ध सब्दो ।

भक्र-भावना

[राम-नामकी महत्ता] भवीं है जनस्वका जमार स्वा परेगा, बन शनमें समाई प्रमृता है मूल-पापड़ी. 'रसिकेन्द्र' दाम, दंह, मेद, बी बिगान स्वाहै, शास है असंद सिद्धि जब साब 'सामानी ! बीव का देख प्रतिशीय यस विशेष,-अव

विव है यादा पूर्ण-केन-परिणामकी : क्षता चलकोडी वको न बटा-सी टढेरी, बद च्यालमें इसते हैं महता रामनामधी।

-17-10-020

रामलीलामें सुघार

(लेखक-मीयुनशाजवदादुरजी कमगीला, वम०५०, एक-व्य० वी०)



न महारायोंने स्वार्गन खाजाश्रीहन 'तुनी भारत' (Unhappy India) नामी पुलक बा कायवन विवा है, उन्हें जात होना कि 'मदर-दिक्या' (Mother India) की स्वराम स्वपित्री भितः सेपी (Miss Mayo)का हमारे मति एक बावेच वह सीहै

भारतीय शनताका साहित्यक रचिसे कोई सम्बन्ध गर्टी 🕯 । इस धनगंड धाचेपका उत्तर देते हुए बावार्य टामसन (Thomson) ने जो इंग्सैयटके किसी विश्वविकालवर्ते र्वगमापाके चम्यापक हैं, यह कहा है कि न आने जिल महोदयाका भारतके किस भागते परिचय है।" बाजार्थ महोदयने यह भी कहा है कि प्रश्चेक शीत-कालके बाररमार्थे उत्तरीय भारतमें दो सष्टाहों तक 'रामलीका' का बलाद येसे समारोहके साथ मनाया जाता है.कि ग्राम-ग्राममें सशीकी कडर-सी दौंड वाती है। अर्नेप्ट-उड (Earnest Wood) साहेबने भी 'मदर-इविडया' का उत्तर देते हुए तुलसीकृत रामायणका उल्लेख कर यह कहा है कि सीटन (Latin) भौर मीक (Greek) महाकाव्योंके साथ तुलनामें भी रामायक (Compares more than favourably) का पत्ता भारी रहता है । सर कार्ज विवसंग (Sir George Grierson) में सत्य ही कहा है 'यदि उस प्रभावपर विचार किया जाने जो महाकवि तुलसीदासने स्वरचित शमायण-हारा उत्पन्न किया है, सो जि:सम्बेह वह पशिया महाडीपके वन कः जुने हुए प्रसिद्ध स्वयिताचोंगेंसे वक सिव्ध होते है जिनका प्रभाव कॉपबॉसे खेकर शाही सहखोंतक पष-सा है।'

पूनान (Greece)में भी नाटकीय खेळ जनताके शिष्टक-का एक थिए साधन सम्मा काता था। समाती हैंगलेक-के सबसे बचे दार्गनिक वर्नार्ड-गा (Bernard Shaw) का भी करने कि कहानी और रिशेचन नाटक मार्चनिक शिचयके दो बहुत बड़े साधन हैं, प्रत्यवा को खोग सूच्य दार्गनिक वार्ते सम्मानेकी योगवा नाही बळते, जनके खिये मूर्ति-पूना खोर कहानियाँके धारितिक कोई मुस्सा साधन सेत-पून परिता।

धव देखना यह है कि काजकत सुशिक्ति भारतीयोंकी

क्या क्या है है बमारा वाधिमान हिंगोना सुर्पिशि दिवाँ से हैं। उनका वृद्ध कह तो काली मित्रकाल इस्तिकलं काधिमानमें सामतीका और तम्मतन्त्री स्टार्थिकलं काधिमें केला है। हूं पूरा कह इतिक तहात् पूलि के केला उचित नहीं सामता। उसका दिवार है कि स काधी काला के तिये क्यांत है। तह के सक्त काही है कि वह करनी का महित्रक केला है काला काधी कामता कार्योकी क्यांत संकार के कार्याक्ष कार्याक हित्रकार्य नार्योक वे कार्याक्ष हिल्लू कोल कार्याक्ष कार्याक्ष के कार्य की सामते मित्रकार कार्योकी कार्याक्ष के कार्य कार्याक्ष कार्

इमारी उपेचाका प्रमान बहुत हुरा पर हा है। व शुणिकितोंका यह कर्ताव है कि नाटकको उसके वी आदर्शपर शुलियर स्तानेका प्रयक्ष करें बहाँ हमने वह का^{ई हा} कर्मशिकित कोगोंके हाथों में ही वे रस्ता है।

परियाम क्या हुआ है 🛭

मचेह गाँव पूर्व सहेज्ये खाग सवा वैतान्य हुवजकार अकट रोते हैं कि हम सभी अमादित होकर सत्वपुर खरना उनमा-ता दिवान्य कार्यके विवे अस्तुत हो आईं। किर पुरस्थक उतार एवं राय तो ऐसे होने चाहिये कि बीर-व पूर्वतान्य होन्हा हर्गकों के सात्वपुर नाच्ये वार्य और माने अनावहारा उनके सत्व-सार्व कोर्सककार सत्वार कर हैं।

(१) इब्सीयासकी पवित्र पदाविजयों व्ययवा राजा पुराजीतः या सक्तित जैसे कवियोंकी सुन्दर स्वनाओंमें गैरिकी या वन्य बाजारू परोंकी मिलावट होती था रही है।

प्रक सा सेने पूछ देशा नाम शुना, जिसमें यह बात में कि मारानी वर्षामा रिकार विकास प्राप्त है। हार्गोंकी दिवार के क्षान्योंकी मीराने साथ बन जानेने माना कर रही थीं। या, पर किनने दियोर राज्यों का स्तान जाने सामा कर रही थीं। या, पर किनने दियोर राज्यों सार के पर सामानी है। मारोक की माराने हैं है। माराने की माराने कि माराने की सामाने कि सामाने की सामान की सामाने की सामान की सामाने की सामाने की सामान की सामान की सामाने की सामान की सामान

तात वर्षनी घटना है कि जब मेरे घरके कर नार्वाश्व कर पार्च गार्वाश के बहुद दिनों बाद धरणी मार्वाशिक कि ने कुर कर के कि के मेरे को पार्च और बार के मार्वे के म

(1) गति, इकिन तथा बातीसाथ वर भी जुन ध्वान वरी दिया बाता। बहुवा तो बाजकोंको कपना पार्ट (Past) भी वरी बाद होता को एक सुत्री हुई कारीसे वहा बाता है, वो बहुन महा मनीत होता है। खाः सुरिष्टिव देश-वेदियांसे सेरी दिनीत प्रापेना है कि वे ततिक इस चोर भी प्यान देनेकी हमा करें। चाहे बह रामको 'करतार' मार्ने कथा 'मार्यारापुर्योग्तम', पर सल सिक्कर वह कोशिय अद्यय करें कि वह पुत्रेत पाड़, असने इसे शतान्त्रियोंसे डीक-डीक मार्गेरर कायम कर रस्ता है, विस्कृत न हो जाय, जन्ममा सुख दिनों चाद किसी बूसरी सिस मेवोके आप्तेपोंके उचाके जिसे भी हमारे पास छहा वाकी न रहेगा।

> तुरहारी बात ज़शानेके स्वस रह जाय। जो ग़ैर हैं बन्हें हैंसनेकी आरजू रह जाय॥

(चक्रवस्त)

हैतिये, ब्रामी २० आर्य बार, २० के 'लीहर' में, १० में 'हुएवर 'राष्ट्रीय सारक' शोर्गक एक लेल हाया है। बार तिरुक्त लावादिककों कोई साम हुई मी। बलमें तिदेन (Britain) के बात्त-विकास मारक्कार बनांड-जा महोदयन बारकके मति सामके कर्माच्यर कोई देवे हुए में कहा था—

On the continent the theatre is recognised as an instrument of culture which the Government must provide, yet in this country official recognition should not be obtained without strict regard For commercial considerations, it is to do the best work in the best way-it must not go in for the horrible policy of giving to the public what the public likes that national theatre should have a very liberal endowment People would go to the national theatre as they go the church, well-'यरोवीय सहाद्वीपमें बाटक एक शिपाका साबन माना गया है जिलका अवन्य राज्यकी चोरले होना चाहिये। परन्तु हुन देशमें उसे सरफारी स्प्रीष्टति नहीं निज सकी।****** व्यापारजन्य साधका कुछ भी राषास म काने इए इस सर्वोत्तर बार्यको सर्वोत्तम शिनिमे ही बरना चाहिसे. सस अवकर मीतिको कहारि व क्षपनाना चाहिये कि मार्वक्रिक रुक्टि चनुष्य ही बन्तु-प्रदानदी बोजना हो, बस राष्ट्रीय नारकों बहुत बड़ी धरित निधि होनी चाहिये।कोत इस नारकों अभी (परित्र) भावनाये बार्देंगे बैसे वे निर्दर्श काले हैं।

पहीं मिन शीना-देशमेज (Miss Lena Ashwell)
ने भी कहा है कि—The function of the
national theatre should be to satisfy the
hunger of our people for the poetry and
beauty of our language, ध्यान 'राष्ट्रीय
मादरका कांन्य, हमारे देशवादिगंडी आपको कांच्य वृद्ध सीन्यूरीने सारमण रसनेवाडी आपको निष्ठण करना है। 'र हम यहाँ धरनी फोरले देशक हमना ही वृद्धि कि हमारे
पूर्वजीने समझीनाको प्रचक्रित करनेमें हुर्ग्दी स्व चार्तीयर

भ्यान दिया था । उसी विषयप हमारा भी जान भन होना चाडिये । चम्ल !

सेरी विरोप सार्थना है कि वो समन हम एंग्से यह समनीकाम हमें ऐसे क्षोगॉतक करता पहुँचा हैं रासकीकाके कार्यकर्ती हों। 'चाचारः प्रको करें।' विकास विचार करते हुए यह सम हमारे बीचन की समन सम है, खनाः वर्षणा बीट वहातीनता होरस हैं। समझे हस करना ही होगा!

रामायणमें सगुण ईश्वर

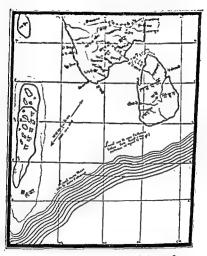
"रामचरित-मानल (रामचरितका सरोघर) मुख्सीहत रामायचके नामसे अधिक प्रविद्ध कियकी सर्वप्रीष्ट छाति यही प्रस्य है और समयके अनुसार यही पहला प्रत्य है जो सन् १५४४ हंगें अ कियकी अपसा ४६ वर्षकी थी, आरम्म हुन्म था। इसीपर कियकी क्यांति निर्मर है। हो मौ की मनुष्योंका वाह्यिक कहते हैं और वस्तुतः उत्तरीमारतके प्रत्येक हिन्नूको हरका जितना वान है व्यक्त प्रध्य कक्षाके अंगरिज किसानको वाह्यिकका भी नहीं है। मारतका एक भी हिन्दू, राजा या इसी विवर्ण ऐसा न होगा जो हसके प्रवक्ति राज्य कियांति हमका राज्य है। भारतीय सुसक्ति वातचीतमें इसका राज्य है। भारतीय सुसक्ति वातचीतमें इसका राज्य है। भारतीय सुसक्तमांकी आपामें भी इसकी उपमार्थ सुसा गयी हैं और उनके बहुतसे मामूबी मुह्यू प्रवास विवर्ण यहिं यह नहीं जानते, एहळे पहल इसी अन्योग प्रयोग हमा है।

परमेश्वरके अवतार क्यमें रामचम्बका चरित इस मन्यमें वर्णित है। इसका विषय वर्षे हैं जो यात्मीकिक मसिद्ध रामायणका है। पर तुळलीदासका मन्य उसका किसी मकार खुवाद वर्षे हैं उसी घटनापर नयी कथा रची गयी है पर घटनाओं के वर्णन तथा महस्यके विवरणों मिकता है। मन्यकता स्वयं ळिलते हैं कि उन्होंने यह चरित अनेक मन्योंसे छिया है। उनमेंसे वात्मीकिकी ही छोड़कर मुख्य सुख्य मन्य 'अध्यारम रामायण' (अध्यारक पुराणका एक खरड़) 'मुसुरिड रामार्य' 'परिश्व संहिता' और 'जयदेवकृत' महस्वराध्य' हैं।''

---वा॰ सर मार्ज गिवर्तव



रामागणकालीन संका



मानचित्रकार श्री वी॰एच॰वडेर।

रावणकी लङ्का कहाँ थी?

(लिसक-मी बी : एव : बाटेर, बी : एव : एल : एल : वी : , एस : आर : एव : एस :)

म् ११२१ ई० में श्वलिल भारतीय भोरियरटल कान्में सके महासमें होनेवाखे वृतीय चिधवेशनके चवसदपर सहदार माधवराथ किये महाज्ञायने एक निवन्ध पडा या, जिसमें उन्होंने यह दिखलावा था कि वारमीकीय शामायकार्मे वर्शित रावणकी बडा धमरकपटक पंडाबबर स्थित थी जो विष्यादतकी एक शाला है और कहाँसे भारत महादेशको इत्तर और दक्षिण दो भागोंमें विभक्त करनेवाली मर्भदा वरी प्रशहित होती है। बान-मगरके प्रोफेसर जैकीवीने स्पेटार किया है कि रामाययीय कथाका जैन रूपान्तर 'परमचरिश' का सम्पादन करते समय को धन्होंने खडाकी स्थिति कहीं भासाममें बतायी थी उससे किये महारायका सिदान्त कही श्रेष्ठ है। यह जन्य बहुत आचीन नहीं है, भीर वैसे ही बौद-रूपान्तर 'व्शस्यजातक' भी बहुत प्राचीन मन्य नहीं, जिसको प्रमाय कोटिमें रक्सा जा सके। सन् 1818 में प्रथम धोरिययटल कान्फॉल पूनामें भी सरदार साहेबने इसी विषयपर एक जेख पड़ा था, परन्तु शीसरे पविषेशनके निवाधके उपसंदारमें उन्होंने बलकाया कि 'दपसन्द स्थानीय शानके चतुसार ऋव कुल सम्देह नहीं

त कात कि राक्षणकी जहार सम्पानाराजी थी।'

वाता कीर सम्पानार-सम्बन्धी जप्युंक शोगों
विदानों के सिटिंग सीता एक मिरिंग सिद्धान्त और है,

क्रिके स्पूराम (सामित्र) के सीते में है। जदा कीर कहा कीर है,

क्रिके स्पूराम (सामित्र) के सीते में है। जदा कीर कहा की

क्रिके स्पूराम (सामित्र) के सीते में है। जदा कीर कहा की

क्षण सामते हैं। समाधि हम गाजकों सामने जहाकी सित्तिके

क्षिपती एक मीत्री सिद्धान्त अपनित्र कर पहे हैं, जिसका

क्रामी एक मीत्री सिद्धान्त अपनित्र कर पहे हैं, जिसका

क्षणी हमारे सामीत संक्षण-साहित्य कीर जिस्केणका

क्षणी हमारे सामीत संक्षण-साहित्य का सक्का हमारे सामक्षण्य नाम क्षिपती हमारे सामित्र हमारे हमारे सामक्षण्य नाम क्षिपतील सामक्षणी हमारे हमारे सामक्षण्य नाम

'छङ्का दक्षिण-महासागरमें स्थित राक्षस-द्वीप नामक एक विद्याल द्वीपकी राजधानी थी। यह रुड्डा सुमध्यरेखा (Equator)मर या प्रध्वीके मध्यमागर्मे स्थित थी। भारतवर्षके दक्षिणतटसे राक्षसद्वीप अथवा रुड्डाकी दूरी १०० योजन अर्थात् रुगभग ७०० सीरु थी।'

सीकोन और छङ्का एक नहीं है।

पहले हम कास-प्रमाणोंद्वारा यह विखळाना चाहते हैं कि सोखोन धीर खड़ा दोनों भिद्य भिन्न स्थान ये धीर कड़ावगरीका सन्तिय सीबोन (सिंहकड़ीप) में नहीं या।

- (२) सहाभारतः—वनवर्षे हे १२वें कष्णायमें वर्ण'न है कि पावदन्यनवासके समय भगवान् भीकृत्य बनते निक्रने वाते हैं चौर उनकी दपनीय दया देश कीरवेंके मित्र कृद होकर धर्मताकके सामने चपने हृदयोज्ञार हमम्बार प्रकट करते हैं—

'शावस्य-वाके समय नुस्तारी हरनी मारति निवृति थी कि प्रयोके सभी नेरोंने राजा धरनी स्थिति धीर सम्बादको युक्क स्था नेरोंने आर्थीरात नुस्तारी नेयाने स्थो रहते थे, वे तुक्तारे राक्ष धीर तेयाने परता है हुए, कंग, धंग, चीराह, उन्ह, कोक, मिन्न, ध्य-प्रस्तुद-सीराय बकाय देरा, स्वातुक स्थापिका रोग, 'शिराह", 'बार, कोचा,' 'खाना' चारि देखेंने राजा तुमारी चहीं निवानिका व्यक्तियोंको

हीपं ताज्ञहर्यांच पर्वतं शमकं तथा |
 तिमित्रक्षञ्च ण नृषं वरी कृत्वा यहायतिः श (म०समा ०१९०६)

भोजनके समय परोसनेका कार्यं कर रहे थे, बाज तुम्बारी यह दशा है...... 128

महाभारतकार महर्षि स्वातके हुन व्यवस्थांसे 'सिंहल' भोर 'सङ्ग' यो मिन्न-मिश्र शस्य सिंह होते हैं।

३-मारकएडेय पुराण-कूर्मविभागमें वृष्टिय-मारतके वैयोंकी स्ची इसम्रकार मिखती है:--

> 'कहा' कालाजिनाश्चेव देशिका निकटास्तया । दक्षिणाः कारुग श्रे का काविकास्तापसाप्रमाः ॥ क्षवमाः 'सिंहता'श्चेव तथा कार्यानिवासिनः ।

> > (44 1 20)

इन देशोंके सन्वरूपमें कहा जाता है कि वे कुमंसे दिषय दिशामें भवस्थित हैं। इस स्वीते भी स्वट ज्ञात होता है कि 'बडा' और 'सिंहक' दो भिष्न भिष्न देश हैं।

४-श्रीमद्भागधत-पाँचवें स्कन्धमें जम्बूद्दीपके बाडों उपद्वीपोंके नाम इसमकार दिये गये हैं।

कन्यूदीपस्य च राजन् उपदीपानदी उपदिशक्ति। तश्रया-स्वर्णप्रस्यद्रचन्द्रशुक्क आवर्षकी अगणको संदरहरिणः वाध्यकस्यः 'सिंहको' 'कर्द्रस्ति'॥ (११९११९-१०)

(१) महान् क्योतियो बराहमिहिराचार्यकृत बृहत्संहिताके हर्मविभागमें वृक्षिण-भारतके देशोंके नामोका इसप्रकार वर्षन पापा बाता है—

रद्धाकाराजिनः सीरिकार्णः काशीमवन्त्रीपद्य-नेपार्यक सिंदरम ऋषमाः (४० १४ । ११)

अध्ययामाध राहेन्द्र पैकल्याच कारावते । विभाग्यय प्रमाता मीर्निया रिट्टाः (विश्वाव १ ११०४) व्यापने यू मधीपाल्य दालकोत्रां वालितालः । स्वाप्य यू परिपोर् एत्रकोत्र शाहराज्यस्य ॥ स्वाप्य प्रमादे वे व्यापनियानियः । व्यापन्त्रवाधियः वे व्यापनियानियः । (विष्य व्यापने यु व्यापने व्यापने । इस मर्सनमें बह बतजाया गया है कि इन धरें गयाना बायसे दादिने कोर होनी चादिया। कर नि भीर खड़ा दो द्वीप एक दूसरेते तुर प्रवर्-पृथ्व हे हैं व्यापन-देश इनके माध्यों था।

(६) उपयुक्त उद्रायोंके प्रतिरिक्त संस्थाना भीर काव्योंमें भी ऐने बहुत खड मिजते हैं, वा निर्म (सीखोन) धीर 'लड्डा'को सर्वथा भिष्ठ-भिष्न देर ^{इत्हास} है। कम-से-कम इतना को निश्चितरूपसे का म स्वा है कि अवतक संस्कृत-प्रश्योंमेंसे ऐसा एक भी प्रमान ले नहीं किया गया है जिससे यह सिद्ध होता हो वि वर्ष सीखोन ही धाचीन खडा है । और यह भी खु^द स^{मर} कि कायद ऐसा प्रमाय संस्कृत-प्रन्योंमें मित्र ही ही ^{ही स} इस चपने सिदान्तके समर्थनमें यहाँ की राउटेका वालरामायवा भामक संस्कृत-नाटकका एक शत हरू^{3 ह} हैं । राजशेलर कवि ईसाकी नवीं रातान्दीमें हुए हैं। ह भावा है कि उन्होंने समस्र भारतका भ्रमण क्या ग, ^ह मीगोलिक वर्णनमें को कुछ उन्होंने दिला है इसर रिव करना सर्वया निरापद है। उनके बाबरामायक 🗗 बाहर्में साहेश्वर शावण्यके विनोदार्थ 'सीठा-स्वर्धस' वर्ष व्यभिनयका विवरण मास होता है। सीताके पाकिमा इच्छासे पृक्षत्रित बन्यान्य शताबाँके साथ विद्वारित राजरोखर भी डस चभिनयमें एक पात्र है। तार है असंगार्थं शब्दोंमें बह रहा है-

दायण-'सिंहतचेत, किमिदं संदिखते ! म च हरेगी बीर-जत-निर्वाह: ।"

इस जाक्यानसे रुख हो जाता है कि निर्देश राज्योजर और सहाधियति राज्य वो व्यक्ति वे त्या की और 'सिंहक' निवाद ही दो निक्त देश में !

स्तीला-"मसीम्यालावतः वेद्रसम्बर्गः ।

बुनोप डौरकः 🕻

विभीपण---

परसम्प्रो जलिपीरेसं मध्यलं 'सिंहलानाम्' । षित्रोत्सं मीगमयसुवः रोहणेनाचलेन ॥ द्वीडाय्ट्यनिषु खतुरं मध्यनं यद्वणुनाम् । नावशानमा अवति गरितं रसतां शुक्तिमर्भम् ॥

ि पर पान देने पोल बात है कि वहाँ विजीवयाने |- पिंदल के निवस्त्रे वर्षने काते हुए यहाका कहीं नाम भी |पींदिया | बाकार्स यहाको हो वे सब पीछे छोड़ आये |वैंपी ततात परिवय भी भीतीताजीको पहले दिया वा |इंका है|

्र वर्गुंक क्षोबोंसे यह भी रण्ड होता है कि 'सिंहक' मिरीए 'बड़ा' से घोटा या चौर बविने वापना चालिमाय शंक्रद किया है कि बड़ा सिंहकसे एडिया-पश्चिम (बैन्हस्त्र) 'है रियम भी।

लङ्का कहाँ थी ?

वर्षां का वो यह वतकावा गया कि 'सीकोल' कीर 'कापि एक होनेकी धारणा निराजार है। यात यह निक्रम कार्य है कि ब्राइमी नायकि हमियि कहाँ भी प्रेस पहले कार्य है कि ब्राइमी नायकि हमियि कहाँ भी प्रेस पहले कार्य उप है कि सारकत्वे प्रिचियों सीमार्थ कहा 10-2 किंद्र की प्रेसकों हमिया हम होक्सी खन्माई जी किंद्र की की क्षेत्र कार्य कार्य का यह स्वर्थमान्य 'स्वर्य है क्ष्मियों कार्य कार्य हम हम्मार्थ कार्य 'प्रमुख' है क्ष्मियों के स्वर्थ भी क्ष्मिय स्वर्थक्य 'स्वर्य है कि 'सीचींन कि बड़ा है 'रे परन्तु शामयव-च्या हमें स्वर्थ हमें कार्य है की हम तक की ही सीचिय 'स्वर्थ है कि 'सीचींन कि बड़ा है 'रे परन्तु शामयव-चित्र की पंत्रकार्य होगा अस स्वरुख कार्य है सीचींन 'स्वर्थ की पंत्रकार्य होगा अस स्वरुख कार्य है सीचिय 'स्वर्थ की पंत्रकार है कार्य है की हस तक तह जनका

धीरदूरम्द्रों सीजाई। लोडमें बडा बाते समय जिस सार्थि में से दसर विचार करमेरी पूर्व यह देखना है कि पैंचोर भीर बडावी दूरीको सिद्ध करनेवाला सम्य कोई समस्र बडवरर दोजा है या नहीं ।

र**ङ्का भू**मध्यरेखा पर अवस्थित थी ।

. वापुरायके प्रावित्यासम्बद्धके व्यवतावीसंवें विचारते व्यक्तिके पार्टी चीर चेन्ने हुए, चन्न, वस, सन्नय, नेव, इन भीर बाह इन हींगोंका वर्धन चाना है। वृत्ती व्यक्तिके हैं। से १० सोच्ये सन्नयने वर्धने कहा गया है कि 'इस होपमें घुषयंकी प्रानेक साते हैं शीर पहाँके साती विविक्ष मकारके करेया है। यहां मजय नामका एक विशाज पर्वत है जिसमें चौदीकी भी लामें हैं। इस पर्वत-पर अम्मेन प्राने के स्वान सात होने स्वान है। इस पर्वत-पर अम्मेन प्राने के स्वान सात होने हुन हो है। यह पर्वत पहुत है बची होग्में मक्याज जिल्हर पर्वत भी है। यह पर्वत प्रतुत है बची होग्में मक्याज जिल्हर पर्वत भी है। यह पर्वत प्रतुत है स्वान होग्में का प्राने प्राने हैं। यह पर्वत प्रतुत है पर्वत प्रतुत है स्वान होग्में का प्रति होंगा है। यह प्रति है स्वान होग्में का प्रति होंगा है से एक प्रति होंगा सात है है । इस प्रति है इस होग्में हम्में हम

इस कुमानते यह सिन्ध होना है । बनहूरीय हुन क्यरीयोंमेंने तीनरे अर्थाद सक्यरीयमें निकृत-परेत्यर बहा नगरी बसी थी। यह सक्यरीय भारतीय मासागार्से दिश्य क्यानिक: 'मानदिय'दिश्युल'(Maldivo Islanda) के सर्तित्व क्योनिक: 'मानदिय'दिश्युल'(Maldivo Islanda) के सर्तित्व क्यों हे स्वय सही है। यह 'मानदिय' दिश्य सुन्तम्परेतायर व्यवस्थित है। यह सारवा रशना चाहिये कि गोक्या गामक पर्यवद्या वो यहरे यहनेक स्वारा है वह स्वारत्व वर्षके व्यवस्थावरण क्याना है वह स्वारत्व वर्षके व्यवस्थावरण क्याना है से

> तवैव सल्बद्धीरमेवसेव ' मुनंदुनन्। समिरत्नाकरं वदीनसावरं सनकश्य च । आकरं चन्द्रनानाश्च ममुद्राणां तबाहरन्। मानाञ्चेन्द्रगणाञ्चवैषं सदीवर्षप्रधिदतम्।

× × × × нवा विकृतिकवे नातावाञ्चित्रपूर्वते ।
× × ×

ताव स्टार्ट १थे देवसावारांसा ।
निर्देशकार्यिया स्टार्सामारासामिती ॥
निर्देशकार्यिया स्टित्सासारासामिती ॥
निर्देशकार्येया स्टित्सासारासामिती ॥
निर्देशकार्येया स्टित्सासारासाम् ।
निर्देशकार्येया स्टार्सामा सामायासा ।
नामायासारामा सम्मायासा सम्मायासा ।
नामायासारामा सम्मायासा ।

वीदपंत्रवंदस्य ग्रंबरस्यकं

(4.23(14.85160~£0)

२. गोलाप्याय-कर्णाटक-प्रदेशके प्रजेबिड-स्थानके निवासी प्रसिद्ध 'ज्योतिर्विद तया गयितज्ञ भारकराचार्यके वर्णनसे जो लक्काकी स्थितिके विषयमें ज्ञान भास होता है उससे उक्त सिद्धान्तका पूर्वारूपसे समर्थन होता है। श्रीमास्कराचार्यका जन्म १०३७ शकाब्द्यासन् ११११ई० में हचा या । उन्होंने बोलाप्यायके भुवनकोषमें किखा है-

कमध्ये यमकोटिरस्या प्राक् पश्चिमे रोमकपट्टनं च । सिद्धपुर समेर: अधस्ततः मीरपेड्य यास्य बहवानलक्ष ॥

इस फ़ोक्से यह रुप्ट हो जाता है 🍱 सङ्का भूमण्यरैसापर (कुमध्ये) खित थी । भूमध्यरेखाको ज्योतिष-राखर्मे निरच द्यार्थंत् र्रह्म्य क्रवांश कहते हैं इसी क्रम्यायके ४३-४१ वें श्रीकर्मे पुनः वर्णन भाता है कि खद्वा भूमध्यरेखापर है भीर जका तथा चवन्तीके (उउनैनी) देशान्तरमें (Longitude) बहुत कम भन्तर दिखवाया गया है। इस मतमें तो बीभास्कराचार्यका यह दह विश्वास था । जवन्तीका

देशान्तर ७०, ७२ पूर्व वतसाया गया है :

३, चव इमें यह देलना है कि ब्रहाके सम्बन्धमें रामायकमें जो बर्चन चाये हैं उनसे भास्कराचार्यके उपयुक्त मतकी प्रष्टि होती है या नहीं । समल भारतका समय करनेवाले शीमुपीवत्री कावेरी मदीके दक्षिया देखोंका विस्तृत वयान करते हुए करते हैं कि 'जैसे कोई नवयुवती श्मयी पतिके पास वानी है, इसीप्रकार समुद्रकी भोर वाती हुई महामदी ताधपर्वीको पार करनेके बाद तुग्हें पायवय-देशका मुवर्णमय प्रवेशहार (दवारं पाण्ड्यानाम्) मिखेगा । इसके बाद समूद्र बाँधना परेगा ।+ तर्मन्तर करते हैं कि नहीं एक साई यी जिसके कारण समुत्रमें आनेपाओंकी वदी समुदिया होती सी । सलपुष सगस्य मुनिने विचित्र शिक्षर सहेन्द्र वर्षेत्रका स्थापन कर कम काहिको भर दिया । इस पर्वतका बहुत सा साग कथी समुद्रमें है, वह महेन्द्र वर्वन सर्वेषा सोनेका है।

> इल्लाबी प्राइल्लं हरिष्यं महानदीम्। कार्त्तेच सुक्षीकान्तं समुद्रमनगावते ॥ ebr (tung ani mari' हरः हमुद्रशमाच स्त्रवार्वार्वनिश्चनवः (dielle Alica)

अगरत्येनान्तरे तत्र सागरे निनिवेशितः॥ चित्रसानुनमाः श्रीमान्महेन्द्रः पर्वतोत्तमः। वातरूपमयः श्रीमानवगादो महार्पतः॥

(410 floxix \$150-51) इन छोकोंसे यह जात होता है कि महेन्द्र-पंत देशस्य सहेन्द्र-पर्वतसे भित्र है। और इमका एक दक्षियकी कोर बड़कर समुद्रमें हुवा हुत्ती है।[समन्तर २४वें शोकमें बद्वाके विषयमें दश है-

द्वीपस्तस्थापरे परि शतमीजनविस्तृतः॥ स हि देशस्तु बध्यस्य शवणस्य दुराजनः॥ सहसाय समुद्धिः॥ राक्षसाविपतेवांसः (41-414414419)

^{ब्}ड्स पर्वतके पश्चिमकी स्रोर एक हीर है विन्त विखार सी योजन है जहाँ इन्त्रके समान वान्तिमा, करने योग्य, दुष्टात्मा राष्ट्रसश्च रावय निवाम झर्गी इससे अधिक स्पष्ट प्रमाण शवक विशास हरू धीर क्या हो- सकता है ! बय यह मनुमार सार है किया वा सकता है कि शहसदीय जानव तसह चेश या और खड़ा उसकी राजधानी थी। वर साल वृच्चियातम् सद पायस्य-वैशके प्रवेशहार (शहरर हरा) है पश्चिम दिशाम था। सिहस अपना सीडोरहे हिर्दे हैं वर्षन करापि खागू नहीं हो सकता। और 'दपिब क्राते इविहासका प्रारम्भकाल' (Beginnings of Sell Indian History) नामक सन्यमें सन्यक्ती म प्रसिद्ध प्राप्यविष् वा॰ एस॰ के॰ वार्षमा वार्षन बुद्धिमत्ताके साथ यह सिख किया है कि ^{(वालहात हा} तासिक-मान्तका प्रसिद्ध क्याटपुरम् 🔳 क्याटपुर्द चावारवके सर्वशासमें भी तामनवीं नहीं और वारदा है वर्षां व जाता है । धर्मशासके टीबाका क्रीतान हार्ने थाप्टय कवाटको पायडय-देशरियन सञ्जकोरि वर्दन वर्ष है, वरन्तु वह सर्ववा सन्देशस्य है काँकि स मोती चारि सामुद्रिक बरगुर्जोंकी बरहरिय गरी है क चार्यमः महारायने इसपा म्यान्या काने हुर पायस्थानाम्'को शायस्परेशका प्रवेशकार बनवन्त वह स्थिक चुन्दिनहरू मरीत होता है। दिव जिल्लो अवपदीरि नग्धाना है वर वरी वर्णा कहीं परिन्ती बाद मसुद्रमें विकास हो स्वाहि। नायकपरेशके अवेशहारमानाची वार्षु स लिपवर्ते हर्व

मता है कि भारतका दक्षियी। कन्याकुमारी चन्तरीय ही बर स्थान है. क्योंकि इसीके समीप महेन्द्र-वर्वत समुद्रमें धन्तरित हुआ है चौर सुमीवने को दक्षिण-मारतके मृगोषका निर्शेत कराया है उससे भी यह पता खबता है कि राजक्या निवासस्यान राष्ट्रसङीप इस पर्वत अंबीसे पश्चिम था।

र्रकाका स्थान ।

१म ६पनके समर्थनमें कृष यूसे प्रमाख पेग किये जा सकते हैं जिनसे यह स्पष्ट हो बाता है कि वह खंका समदमें विजीन हो नवी थी। जिस रपारपर इस समय माजडिय द्वीप-समूह है। प्राचीन कारमें वही राचसद्वीप था । इसका विस्तार भूमण्यरेखाले बक्त भवार्य तथा में दिवया भवारा के तथा 🧀 हो 👶 है रूप' देगान्तर बीच विस्तृत या । यह सनमब है कि जिस समय यह द्वीप कमराः जलमान ही रहा होगा, बस समय क्इंडि निवासी भागकर प्राचीन तास्त्रहीय (तासपर्वि) में

चाकर बस गये होंगे. इसी प्रदेशका ग्राम पीछेसे सिहस्रहीप ष्ययवा सीजीन यद गया होगा ।

भगभंतिद पविदतोंकी यह चारचा है कि ईसाके चार हआर वर्ष पर्व भारतीय महासागर में क्षेत्रोरिया (Lemuria) नासक एक सहादीप था। यह सारतक्ष्येकी एतिस निरम्पे श्रक्तिकाके दक्षिण भागसे खेका पाँकी कोर दक्षिण क्रमेरिका सक विरास या । काळगतिसे यह महारीप बलमान हो गया थीर वर्तमान समयके प्राजदित (Maldives), सामचेबिस् (Sychellis), शेहिम (Rodrigues), शैनीस (Shagos), मारिसस. (Mauritius) मैदानास्टर (Madagaster), बास्त, सुमात्रा, कोर्तियो (Borneo), एमेन्ट्रन (Ascension), फारजीवर (Falkland), भारम (Graham), और पश्चिमी सक्तरिका (West Antartica) प्रमृति इसी प्राचीन विशास महाद्वीपके पर्वत-शिक्तर तथा उद्यमुमि भाग मात्र है। असपहीय संयंश आसरिय ही भाग देश स्थानपर क्षा मान है कहाँ माचीनकावमें रावयका शवसदीय था. जिलकी राजवानी संका थी। छ

तुलसी-चन्दना

वयति वयति तलसिदास हिन्दी हितकारी । भगटे मुवि मार इरन , विमल राम चरित रचन ।

पनि पनि संसार सरन . असरन दुःस टारी।।

कविता ममके दिनेस , मापा-करप कवि-सुरगनमें गनेश . छालित कटापारी ॥

रामायण अति प्रचान , नरल कमल दल समान , पर्म अर्थ मिल ज्ञान , मोध देनहारी ।।

विद्या पीयुष रतन , कोबिद-बन करत पान , पाप पुरुषको शसान , त्रिरिप पनि पनि बीतुलसिदास , येटो भव पन्द श्राम ।

मपुर शरण भाइत आस , मक्तन मुसकारी ॥ ---वे रेप्टनाच हार्यः

o due on expet on seet & "The Mythic Society's Journal" & de The Indian Unterfent Courterly' mus vell mis feme net und fi

को विकार कर्माने प्रकादिन क्रमा व्यक्तिका 'बरावार' थी बाह्य हरेहर और क्षेत्र १११० थी क्रमा करे १० र देशक है रिक्यूमर है हो। केब महादिए हर है। बनरें भी अबा हरी बाधा सम्बंध किया गया है। सम्बादक

रामायणके रचयिता

मद बहाता कीन काध्यानस्त्रका है

लपु-सहोदर पूर्ण-प्रहानन्दका॥१॥

षाचारता-

—पीतको जो वे मला बोते नहीं ॥ २॥

भारि-कथि यालगिकि जी होते गहीं।

मद्भत मदत्ता-सत्यता-

मानता जिसकी सभी संसार है-

एष्टि भारी इष्टिमें कुछ और ही-

मारुतिक-सीन्द्रयंमं

लेपिये

मानना संसार यह सारा खे-

चार-चिन्तामणि यही कटिकालमें,

थेष्ठ धर्मशास्त्र है पहला वहीं-सब पुराणींका वही मुर्धन्य है।

प्रेमसे जो नित्य इसका पाड कर**ः**

श्रेष्ठतम-उपरेश-शिक्षाका

सत्यता-शुचिना-महत्तागार 🚺

और यह कहता महाभग्डार है

करनियासी कलात्व यह अन्य है।

(से-

मानता उपदेश मी है सर्वपा-सन्तजन-उपदेश-बलकी, भक्तिकी। भीर महिमा दैशिये फिर रामके-मापही मिट जायगी उसकी महा-दुःखदा-आयागमन-जाता व्यथा मै ठीक उलटे मामकी भी शक्तिकी॥३॥ ध्याधसे घाल्मीकिने ब्रह्मर्खं बन— मक कुल रूपी कुमुर विधुकी पही-चाँदनीकी है अनीकी सम्पर् रम्य-रामायण-सुधाकी वृष्टि की-मानवींके चित्तमें जिसने महा-जो खिलाकर मञ्जू मानस-कमलको-. जानती घटना न, पर बढ़ना स्त्राहर · शान्तिकी, भानन्दकी है सृष्टिकी ॥ ४ 🛭 महा-कलिकालमें-पापियोंका और कुटिलोंका कमी-काछ-यैरीको - जालमें यह डालनेका दाव है। रोग आवागमनका मिटता नहीं। और यह संसारकपी सिन्धुके-कर कृपा , कलिकालमें भाते न तो-पार पानेको अनश्वर-नाव है। भक्त 'तुलसी' रूपमें वे जी कहीं ॥ ५॥ द्वार है यह परिवर्तीके कण्ठका, दैववाणी-सम यनाता कीन जन-सर्थ-लीकिक-धर्मका यह सार है। मातुभाषा-नागरीको , यहसे 🖁 कष्ट-पातक नष्ट करने हेतु यह-जो न होते प्रगट 'हुलसी'लानसे-एक, मानवमात्रका, हथियार हैं दिष्य , 'तुलसीदास' जैसे, रत्नसे ॥ ६ ॥ जो पुरावनपुरुष ही साझात् हैं-कान्त-कविता-कामिनीके कान्त हैं. श्रेष्ठ मर्यादापुरुपके रूपरे-जी सभी साहित्यके मर्मज हैं। विद्य हैं परिपूर्ण जो नृपनीतिके-है उन्होंका चार-जीवनचरित यह-सुरामतम-सोपान-सम भवकूर्मे और जो घेदस हैं, धर्मत हैं॥ ७॥ देहचारी मुक्ति है जड़म वही-श्रेष्ठ-रामायण-सदृश संसारमें---जानकीपति-मक्तिकी यह मर्चि है। राजपथकी है न कोई दर्शिनी। शक्ति है मनमोहिनी यह काव्यकी-श्रानकी, हरि-मक्तिकी, शुप्र-कर्मकी-और 'तुलसी'की बलीकिक स्कृति। दूसरी पेसी न कोई वर्षिणी॥८॥ घन्य है कविराज! तुमको धन्य है, नीतिका यह दिव्य-आदि निधान है, अरि कविता भी तुम्हारी घन्य । गेह है यह देश-गुज-गज-गीतिका। 'द्रोण' हो तुम, शिष्य में 🕤 'एकलस्य'— स्रोत त्रेता-रीतिका भी है यही--काव्यगुरु मेरान कोई अन्य है। मीर है यह काल भवकी मीतिका ॥ E ॥ — कु • मवापनारायम् ^५६ देश

ं श्रीराम-नामकी महिमा

(छेशक--आचार्य श्रीमदनगोइमजी गोस्तामी वैव दर्शनदीर्व भागनतरल)

्र देरी शमनाम रघुनरके। देतु कृसानु मानु हिमकरके।। 1 धीराम-नामकी महिमाके सम्बन्धमें गोस्वामी

🚝 ब्रीगुडसीशासत्रीके उपयुक्त थचन हैं । चौपाईका बाचनार्थं है हा के इत्यान (बाबि) मानु (सूर्य) हिमकर (चनदमा) इन ह है निर्मेश हेनुसर को 'राम' नाम है-उसकी में बन्दवा करता हीं। मानुकांके सत्तांगते इसका को कुछ अर्थ मुखे जात

हा है उसे मैं प्रेमी पाठकोंकी सेवामें उपस्थित काता हूँ।

मयम कर्यं तो यह है कि, 'शम' इस पदमें तीन मध्य भव था ४६ ६ १०० वर्षोंडा समावेश देलनेमें चाता है। जैसे १-च-म, ये तीनों

वनः क्रमसे चौराईमें कथित-कृतानु-मानु-हिमकर-हैं हीनों देशताओं है बीज हैं। सुत्तरां शम' नाम तीनों देवताओं का वात प्रशासक वात है। खुदरा पान वात है बाद का तीनों शब्दोंका वर्ध म करके केवल कुसालु हों बादि शब्दोंका हो व्यवहार किया बाय तथापि तक शब्दोंसे ्वार प्रशास ही व्यवहार किया व्यवस्थापि उक्त शब्दांसे व्यवस्था र-य-न प्रवर्शेका प्रावस्थ दीलता है। वहाँ भीर रेपा सन्देह कर सकते हैं कि, ह-—में व्यवस्था है रे वहाँ पाता है, इसके उत्तरमें व्यवस्थाका विद्यान्त

म देवा ही पर्यात होता । व्याक्तकर्मे-अ-ए-का एक ही विष माना है चता इ-के स्थानमें-र-कह देनेसे कोई

शिवाति वहीं होती । सुवरां यह निश्चय होता है कि, ह-(व-म-वीवों वचींके एकत्रित होनेपर 'शम' शम्द हो बाता है थीर इसी बाबके कारण सीजों शन्त्रोंकी प्रधानता भी हो बारी है। शन्त्रपा कृतानु-मानु-दिसका तीनों निर्धक (ही बाईते । सुनारं 'राम' नाम ही इत्सानु बादि राग्दोंकी व विवक्तिका हेन्द्र समस्य गया ।

है दूसरा अर्थ यह भी दोता है कि, 'ब्राजि' वाचकरूपसे विवरोंको वरिषक करता हुआ मासियोंके शरीरका योचया -र्द जार है। शूर्व हे प्रकार कीर तारचे सुख और कारोजनाका कार होता है। 'कार्यमा' कल्पनियोंका कोक्स काता ्रीया प्रतिकासी सहाकता पहुँचाता है,

derrete à the dear et And bearing

'राम' नाम है, रामरूप मझके प्रकाशसे 🜓 ये शीनों प्रकाशित हैं। शृति कहती है-

'वमेनमान्वमनु माडि सर्वे वस्य भाषा सर्विमदं निमाति' इसी प्रकार गीतामें भगवानके वचन है।---यदादित्यगतं तेजी जनदासयतेऽक्षितम । बचन्द्रमसि यवाग्री ततेत्री विद्वि मामकृम । (बीवा १५ । ११)

चर्यात् सूर्यं, चन्द्र, चन्निमं स्थित को तेत्र सम्पूर्यं जगदको मकाशित कर रहा है, शीभगवान करते हैं कि कर सब मेता ही तेज है।

वीसरा वर्ष यह है कि, व्यप्ति, सूर्य, चन्द्रमा इन तीनोंका मचान कारणरूप जो 'शम' नाम है यह तीन दुखोंको उल्कर्ष करनेवाला है । देखिये, चड़ितंदर्जे भीपरद्वराम प्रकट इय । सर्ववंत्रमें दरारयहमार श्रीकोरामचण्डाती प्रचट हरा । चन्द्रबंधमें श्रीवसरामत्री प्रकट हुए । सुत्रशं सीनीं क्वोंकी बीरामनामले ही प्रसिद्धि हुई।

चीया चर्च यह है कि, ज्यवदारमें भी शरीरमें देखा बाता है कि, भ्रमि, सूर्व, चन्त्रमासे दी स्वास्थ्य भ्रमदा रहता है। सनुष्य-शरीरमें हवा, विगता, नुपुत्त सर्वापु चन्द्र, सुर्व, चाछि, वे शीन नाडियाँ हैं, इन तीनों नाडियोंसे अप बद आचवायका समार होता रहता है सभी सब सनव बीता है और तभी तक बसका स्वास्प्य दीक रहता है। जिस समय इनकी शक्तिका व्यक्षात्र हो। जावगा, श्रास्थ्यमें सराबी अपन्न हो बायगी । स्वास्थकी शराबीने गरीर पूर्वक ही जाता है, उस समय स्रोध बदने हैं कि, इसके टर्गित्वर ्र तं सिद्धान्य यह है कि, शम 'राम'

ै हो . ्रवहि राम नामको ः .. चनः शम-नाम 🗊 सर े बाद भी 'राम-नाम ही सन्द' : ferme

श्रीपत है।

'र' श्रीर 'म' की रमणीयता।

(नेमड र्वं श्रीग्रमुरामणी चीते 'ग्रमाका')

पकछत्र, इक मुक्टमति, शव बरननी कीम । 'तुरुती' राषुवर नामके बरन विराज्य दोन ॥

रगरमें वे होतीं बर्च बर्चमासामें उन्ह्रष्ट हैं। क्षित्र पदी बारय है कि वे वर्ष जिन शालोंके मस्तकार रेक या अनुस्ताररूपमें विराजमान हो बाते हैं, वे शब्द धारने सर्थका विरोप सूच्य क्तने खगते हैं और एक धनोधी बटा बिरका येते हैं। अपने इस कवनकी विशेष रपष्ट करनेके किये इस यहाँ कविषय उदाहरक चेकर पाठकोंका मनोरशन करनेका मयस करते ई । यथा सागर. धागर, नागर,कर्मी, गर्मी, धर्माधर्म धादिसे यदि 'र' वर्ध निकास दिया थाय तो शेप साग, चाग, माग, चमी, गमी, चौर धमाधम राज्य यनकर दुर्गितिमें यह बाते हैं। इसी प्रकार यदि कामना, महबी, मसाका, शुक्रून, शुक्लू बादि शब्दोंसे रामजीका 'म' निकल वाप सो काना, चुली, साला, कुन्द भीर अरल मादि हो-ग्रम्दार्य माय हास्यास्पद्की गतिको मास हो जाते हैं । और यदि 'र' चौर 'स' दोनों किसी यञ्चमेंसे निकल जाय तो फिर कहना ही क्या ? सैसे 'विश्राम' मेंसे 'राम' जब 'प्रथक हो जाते हैं हो बो शस्त यच रहता है वह 'विप' ही रह जाता है। रसोईमें बदि 'रामरस' न हो तो 'रसोई' का स्वाद बेस्वाद ही है; 'वेसे ही इस नर-तनमें 'रामरस' न रहे हो यह नर-तन निवान्त निरंधेक है । 'रसना' शमरस न रहमेसे रस-हीन ही है: नयन मय-दीन है यदि वे चन्तर्मुखं होकर अपने 'शम' की छवि मही निरखते। श्रोत-श्रोत नहीं जो श्रुति-क्या सुनकर 'राम' सथ नहीं हो जाते- वे कान 'कान' नहीं कड़े जा सकते को 'कान्ह'-कमाके इच्छ-मिल्लक नहीं हैं। एक 'धजात' कविने भी 'र' 'म' की महानता प्रदर्शित करते हर कहा है---

. कोज बनानत जेंच करा, धनचोर घटा छोर तानु कमते । तामसी कोठ तमान रचें, जब मुक्त मीन समाकी जमते ।। बन्द नुभा मक्को यह स्थारु, महानेक्सरू घनी उत्पाते । पर 'ए कर' मा का निना सु विकार सबै संसादकी बातें ।। हम यहाँ 'र' 'म' वर्षोका केशज कारियक चालकार

🗓 नहीं मकर कर रहे हैं। विशिष्ट वसीडे स्वास्पर्द बामेरिका, यूरोप, बादिके बैजानिकॉने हरीरहे बनरों ब बूर करनेका भी बाजिकार किया है। इन वैवर्ति कर्ना है कि प्रम वर्ष ना राष्ट्र ऐसे हैं जिनके Vilintin (कराम) से शरीरके विशिष्ट मीतरी मार्गोर पक्ष र्पेट **दै और परिवासतः इस मागडी बालस्पता कराः** हार् बाती है। एक बामेरिकन पत्रमें एक रोगीने प्रामा सून मकाशित कराया है। उसका करना है विशेष्टी मन्दाप्ति (Dyspepsia) बादि बदा-समन्त्री रेजी पीड़ित या । अनेक औपबोरचार किये, पर किराहर महीं हुमा । एक दिन मैंने एक बच्चेडी पडनेरा ^{'डा'}रें शन्द बार-बार चित्राते सुना । बसी दय हैने बाले हैं तो जिस समय बासक इन बर्योका व्हार**व** क्रांड बस समय बसके पैटके बगरका पही संहरित हैं। भीर फैसता था, बस, में समय गया वि हा सी वचारवासे अवस्य पेटके मीतरी अक्ववार व्याव राष वदनुसार केने नित्य उपयुक्त वयाको अपनेकी हिना है जिसका परियाम यह हुमा कि होरे लाल्पी की परिवर्तन : स्पष्ट दिखायी पहने खगा । बाँधने गर्म साहेबने 'सूर्वनमस्कार' पर एक क्वम इतक हिंदी उसमें भी उन्होंने बेर्-मन्त्रोंके वैज्ञानिक प्रमारोंकी ^{हिरी} व्यास्था की है। अजैनके जीशिवदत्तवी शर्मांते हुँ की जप-विधि' मामक पुराकर्में मी 'सोश्म' रुम्बे बा हरे वार्ती के चतुमवींका दरबेल करते हुए करा है कि के नियमित आप करनेसे कई मनुष्योंका शारीरिक और हैं वत्यान हुआ । अतः यदि मारतीय वैश्वानिक 'राम हर्ष Vibrations 'क्रमन' का वैज्ञानिक विरवेशन हो। निस्सन्देह उनपर इसार प्राचीन ऋषि-मुनियाँ हर्गार ह रहस्य प्रकट हो धायगा ।

अब हम त्वर्ष 'राम'-आरहे अपने दुर्गेने बतवाते हैं। एक चमित्र वो ककी थेमारी ही बतवाते हैं। एक चमित्र वो ककी थेमारी ही ब, 'वब वहुं जीरवोच्यारते नेरीत वर्षे इर्ग होने उनके कानमें अद्युक्ति, दिस्तान और अपने दिन्दे ह राम, ककाव और महावीरमोने पुत्रका वर्षन त, बतारे प्रत्योच विसका परिवास वर हुवा है रहे बतारे प्रताब विसका परिवास वर हुवा है रहे

मा कर हम बरवार विश्वास्थांन विद्योग आपने है। एवं पिर सामन्य कारोजी इसनी युग सामाई कि है बें बाजियाद्वीर है। साथी। उस दिन सामा की कारी की राज्य नाम-आर्थ को स्वायाय व्यनित्य की कार्योग्धान्य कीरी राज्य नाम-आर्थ के स्वायाय व्यनित्य कार्या दिलानी पदा कि संसावनी मार्थान कार्य दिवा बण्युक्ती और शुरू-वाव किंदि दतारे हाराव दी कहे हैं। इसनीर अरोप्तांन दोकर किंदि तारों हाराव दी कहे हैं। इसनीर अरोप्तांन दोकर किंदि समार्थ की कीरी कार्य की साथा साथी। अर्थ अल्लाह एसेंट की कीरी कार्य की साथ साथी। अर्थ अल्लाह एसेंट कर हिन्द हुई, क्यांविव्य दी वह कीव्यनों कर हम्मत हो। यथार्थ बात यह थी कि हमारे गृहके प्रमुक्त राम-बीजाड़े पात्रीको साहर प्राप्तनित किया था, तिसका हमें स्मार्थ भी भाग यहीं था। दो भी हमारे विधे वन पात्रीके ट्रॉन्से ही बचने 'साम' की प्रतिपृत्ति स्वक्र करी, विसे हमने केवल चपने राम-बाएका ही प्रतिकल समस्य।

विकारिक तीमतम उपलिस हो। मान्यत होंग हो स्थानन ग्रान्ति-अह होगा है। इसकी कहूँ मजसरिम एरीण कर बी गांधी है। मायाव निकार 'राम' मामकी महत्ता अकर है। बादी है देने अनवानपत्री करने बातारप्रकारों है। 'रामुख' बाता हाकते हैं। बहुने स्थानपत्री (राम' मामकी स्वादाय कर्ता हाकते हैं। बहुने स्थानपत्री (राम' मान्यते प्रवादाय समस्यत ब्यादाकी तीनते सम्म पानप्र' राम हो 'कहूकर निनती जगाते हैं। बहुने हिमाने निव्यं पत्र-रिमान्ति स्वादा है। उपलुक्त विकारने तथ्ये हैं कि 'राम' अनुक् बादते की, उपलुक्त विकारने तथ्ये हैं कि 'राम' अनुक् बादते की, उपलुक्त विकारने तथ्ये हैं कि 'राम' अनुक् बादते की, व्यक्त मान्यति होता मानि सरकार हो। हो बाती है। गोलसारी तुक्तांग्रास्ती स्वादा है।

तुलसी-स्मृति

कितनी उज्यन विमग्न विमा है, गोस्तामीयक्ति अस्तान-मुक्तपदेने पान गणमा , सतत देखिती वह सुतिमान । परम ज्योतिसे निम्नुद पढ़े में संगी , यहाँ पढ़ वे मातिमान , भूत जगतके तुमुक तिमित्तमें भटक हहें थे उनके मान ।

भूण जगतक तुमुल तिम्परम सदक रह य उनक प्रान भाषाकी , अज्ञान-निहामि जब स्वरूपका रहा न प्यान-

प्रकट हुई तब कालनागिनी-मायासे गणि-ज्योति महान । बही सुल गये यहाँ अचानक , हियके दिष्य नयन , दो कान—

निसित स्थिमें उन्हें हो गया , तियारामकी छाविका ज्ञान । उसी अतुष्ठ छाविके कीर्तनमें विश्वप्रेमके गाकर गान⊸

अपना पिजंडा छोड हुए वे तियारायमें अन्तर्शन।

पिनहेंमें वह सुम्मा भी तो स्टता है नित सीतास्प्र-किर भी तो हा हसे न मितती-सान्ति, मुक्ति वी पानन पाम । सोटो, सोटो, बन्तर्यापिन् ! मेरे भी वे रूद क्याट-

सुक्रपद्यकी उञ्चलतामें में भी देखें रूप विराट —भीगानिजिय दिवेशे

रहार क्षीत एकक वाक्तावार्त एं० विश्वतिकारकी मुख्यति प्रकार प्रकार का कि जोर-मेरछ रूप दारते एक मा
 राव शते के का प्रश्न नाम है । इनका रेसा कप्रमण्ड है । —क्षावारक

राज्यसम्बद्धाः उनकी शासाएँ

केरण भीक क्षेत्र नेमारीएड बाम इसक इन, बीक इसक, हास्यतीर्थ)



रें के कार काम है करें का करने عدد و درسمر عدد ومساع ع तान १० में एक क्या कार है से बहु के के क्षता क्षण है। ज्यूरेज्य आसीय बीगीने

क्यान केस है आहेर से करने ताल कारने कर क्यानीकर प्रभावकारि वर्षेत्र उत्तको करत हो होने तरे हैं। युक्त पुरुष व्यापारिक छेत्रीमी भागानिक सामिक सामिक समारिके सह तथा विभागने एवं बहुधा तुक्रपीकृत रामान्यके परोक्षे गान्याकर यह किया करने हैं जिसके दिस्का कोधा (अपूर्व पानुसम्बद्ध जन्मलानिक वृत्त्व स्थित हो वाता है। भारतीय पूर्वीये हुनी बच्चे बच्ची वही सन्दर्शि सममने हैं और जिस समय नातार बचवा हारिया बोजब बनाने, सूत कातने करना कन्द्र पूरुकारोंके करारे रहता है उस समय के उक्षे कहर उन्हें सुनाओं है। रेक्षण कियें हैं हारा वह देसनेने बाता है के एथिक धारतके विवासी सहाउँ है समाय कराने हो उचने (करणाल) को बवाले हुए उपनिही मायाने श्रीराज्यकशास्त्र राज करते हैं। कन्य तीर्वारावाँकी श्रांकी प्रशेषे करवायकोचे बान्यको श्री किय सन्वयाचे समय रामान्यकः एक निप्रशिवस्ति होता है। रामश्रीशाने इस्त भी रम्यानस्के राजाँकः वर्ती एक बार तासामार हो आत्त् है । रहस्त्के पुरुषेचे हाह, तवा मीतामके सहायकाँकी श्रेषाक्षर संकालक उत्ती मांचीक रावक चीर विश्ववी भीरामध्ये सक्ते स्वातिको स्वयुक्त कर देते हैं । भारतमित्राय---कर् है एक बन्तादिक रामा एक हार्राको राज्यका मार सीरिया है-स्या स्मान रसकेरोल बांग्यवास्त्र हर बहुर राव अपनिश्त करता है, और इसरका वह मात्रमिकाप मित-वर शहित विवा बहुता है।

इस्सावयके बाति संबोध देशका स्पष्ट परिचय इस देशके अन्य श्रमारेने सार्वक्रिक क्यांके रूपमें मिखता े सहस्रापेके जिने इस क्यांको नाटकीय . है, अहरित क्यांगायक सभी पार्वीका है। स्थित इतवी कुल्सताने साथ किया (१व एक्टररी वरीके रक्तीयें) अस्ताहर्व

क्वजींडर क्यार भी विश्वज्ञ जाते हैं। इस्प्रका से रिवेकी बादनार्व बागुत रश्ती बाती है। महीं व विकारीकी हो गये हैं और तबनक म मरेंगे, बराव है कार कीर दिन्द-प्रतंका प्रतिन्द इस बसुकार होगा।

रामारक के कतिरिक देशी मापाई बाग हतीं है करचे ने काविक विचार बाशमीकीय रामायवमे विवेशी इपने बायुजि वहीं कि को मतुष्य रामावयमे गीवित दै क्ये मारतको विभिन्न मापामाँहे बहुत से प्रायसन बहीं कारेंगे । सक्तव, मन्यत, विमीपव हवा कर्म कारि देसे राष्ट्र हैं जिनके समयनेके जिये किनी हैंग रुद्वायता नहीं की जा सकती। भारतके गूल^{नीत} रामायको काइराँका वहा बहुट प्रमाद है।धार्य बारतीय बारियोंको महारावी शीताकी मीति होगी कीरामके द्वरच पति, श्रीइरायके समान वहुर श्री हो। कौसल्याके समाव सास पावेडे विषे बागीवाँ दिवान है। बहुत-से मान्तोंमें विवाहके क्रवसरार मात्र मी लि करवान् राज पूर्व बहारानी सीवाके बार्य विशासनार्थ चीत चावी हैं।

रामायखंडे खतेक खनुवाद गाये जाते हैं और और अन्यमें सम्पादक क्षपता क्ष्मुवाहकने इद्द-न-इव वर्ग कोरसे बोइवेका अयव किया है। पाठी प्राणीम ही (क्याका कसंस्कृत रूप 'दरास बाहक'के नामने गर्बा ही है । कविकुसरिरोमयि कासिशाससे सेवर कविराह सीरा अस्ति-संस्कृत कवियाँने रामाययके बाबाला कि वि बन्योंकी रचना की है उनमें घरनाकी हरिये बहुत हैं अन्तर पाया बाता है। काजियासकृत 'रपुर्वरा', भरमीत्रा 'बचारामचरित' एवं 'महादीरचरित', महीहर्व महोहर्व राजरोसरकृत 'बाबरामायय' तथा प्रतिम दिन् इन्स विद्वान् कविराज परिवत्तृत 'राध्य पायवधीवम्' वर्ति संस्कृतके अन्य शमायपके बाबायर रहे गरेहैं। हा 'शायवणायवयीयम्' एक अपूर्व अन्य है। इसके अवेद होड साथ-साथ शमायव और महामारत दोनों प्राचीं है ब्यार ब बर्धन करते हैं। इस अतुत प्रत्यके धरकोकारे संव काराको प्रथत प्रतियाचा परिषय विवटा है। राज्यान

बायुनिक प्रत्योमें बारमीकीय रामायवाले बहुत बुख् धन्तर पाता जात है। महामा मुखसीश्तराजी तथा बीकोर्तिवासकीये रामायवाले परनार्योक्षा बरलेक श्राफि कीर व्यानसे मेरिक रोक्स किर है। श्रिसका प्रताबक्त सम्पर्धाव्यक्त मुज्योंवर में पहता है। बुसका परिवास यह हुम्सा है कि इक् मुख्यमा-करियो भी रामायवाल्य रक्षण हो है।

घरः मिग्र-मिग्र कवियोंद्वारा रामायकमें बहुत स्तान्तर हो गया है । सर्वप्रयम हमें इस कथाका उच्छेक 'बीदमातक'में भिकता है। इस सम्यक्षे बमुसार, राजा दरास्य कारीडे (क्योरवाडे नहीं) राजा हैं । उनके रामपविडय भौर बच्मयङ्गार दो खबुके तथा सीता नामकी वृक्त कन्या है। इन क्वोंकी माताके मरनेपर राजा दुश्रय एक स्थिरिकत्त मुन्दरीका पाणिप्रहत्व करते हैं, जिसके गर्भसे अरसङ्गार बन्न बेते हैं। प्रसहत्वरा एक दिन वह रानी करने पुत्रको पुन्तात बनानेके क्षिये राजासे कहती है. शाजा सुनते ही को दिल हो उठते हैं भीर कहते हैं—'दे तुहा की ! तुले देश करनेका साहस कैसे हुआ। जब और कम्प दो खड़के मिरुक्टवडी माँवि बीज्यमान हो उहे हैं।" चन्तमें राजा भागत हुवी दोकर दोनों वह सबकोंको क्टागारमें इंगते हैं भीर दनसे कहते हैं 🍱 'हे पुत्री ! तुमस्रीय इस रामको बोद यो, नहीं तो ग्रन्हारी ईंच्यील माता गुन्हारा क्य कर बाबेगी।' परवाद बोनों राजवुमार और राज-इमारी उत्तर दिशामें हिमाजयकी और दस वर्षकी धावधि व्यतीत काने बड़े जाते हैं न्योंकि न्योतिवियोंके कथनानुसार राजांकी सुद्धके केवल दस वर्ष की बच रहे हैं। किन्तु इक्विमोगडे कारय राजा दो 👖 वर्षमें सर बाते हैं धीर नगरके सब निवासी भरतकुमारके साथ, अनकी बर्दिन वरा भाइयों है औराने हैं बिये आते हैं। राजाकी कृत्युका समाचार जैसे ही उनसे कहा खाता है, रामपविदय सो बीतपुरम होनेके कारण नहीं रोते हैं, किन्तु जनमधाकुमार भीर सीता अपन्त अधीर हो डठते हैं। अब रामप्रविदत दिनी प्रकार भी राजधानीमें जाना नहीं चाहते और वीनिश्वितस्य धरनी क्य निर्मित चरखपादुकाको मेंद्र देते हैं। सब क्षीम निताश क्षीकर खीट बाते हैं और गरीयर रामपविष्यकी चरवापातुकाको रख देते हैं। वे

1

षरवाराषुका चेवन हैं चौर बबतक कार्य न्यायर्थक सम्पादित होता है—गुष वैठी रहती हैं, किन्तु चन्याय होते ही वे एक वृद्धरेषर वाधाव करने कारी हैं। बनवारक समय बीठने-पर सामपिटत राजा बनाये कार्त हैं की जनक्दुरिया (सीता) के साथ विवाह कर बीठे हैं। छ

उर्जुष्क कयाके शीथियगर शरमी सम्मति बद्दान करकेका भार में पाठकके उत्तर हो होत देश हूँ किन्य शीयुक्तपृतिके श्रदुसार इस कहानीको लार्च द्रव प्रमानपुर्क कहा पा और कहानी वह भी कहा पा कि पूर्वजनमंत्र शिवपूर्व भी प्रशासकी करानी है से से सा

कवि कासिदासकृत रहार्वरामें भी रामापवाके सदरा भादिसे भन्तवक रघुकुक्के भाषार भीर धर्मीके विकासका वर्खन मिखता है भीर उनकी पराकाद्या भीरामके श्रीवनमें हो बावी है। रामचन्त्रके उपारवानसे पूर्व रमुदंशमें पुक सहात् राज्यतिर्माद्यका तम रिकामी देता है भीर पत्रात् सानेवासे राजाधों के वर्षानमें बसी राज्यकी असल्यस दरास्त्र दिख्यान हो जाता है। कविने सबसे स्टिक स्थान अर्थात् २६ राजाओं के कुत्तान्तसे पूर्व रहवंगका खगभग एक विदार्ट भाग भीरामके चरित-वित्रवामें ही समाश कर बासा है। वहाँ तक 🍱 महाराजा रध जिनके नामले काञ्चका नामकाया हुमा है. उन्हें भी उतना स्थान वहीं दिया है । महारानी सीताके चरित्र-चित्रयामें कविकी कता पराकाशको पहुँच जाती है। श्रीक्षकमयजीले वस बळात स्थानमें बनवासकी वात सन सीवाजी मृद्धित हो जाती हैं और चेतना जाभ करमेपर कहती हैं कि 'बद पवि स्वयं राजगहीयर विराजमान हो उस समय उसके सन्तानकी माताके क्षिपे क्या भिष्टकीका जीवन विद्याना कवित है ? मेरी अग्नि-परीचाके पत्राव भी मेरा त्यान करना क्या टीक है 🛙 ब्रथम कदाचिए यह मेरा दुर्माग्य है 🖁 फिर भी. शिद्धपालन वादि मानुष्वते व्यवसर पार्व 🜓 मैं प्रवासि महस्वकर श्चति बढिन तपस्या कर गी जिससे बन्मान्तरमें दण्डें पविश्वे क्यमें बात कहाँ और मेरा तथा उनका फिर कमी वियोग न हो।"

राण्याः साहं तपः सूर्यनिविष्टर्शाः कर्षः प्रस्तेद्रवरितं यतिष्ये ।

मा रमाने मांत्र होता है कि या तो एउडा केवक भीतात्वीक्रियावरणते मार्गापित या, व्यवसार्थ मार्गाप्त मार्गे रामस्तर्भ व्यवसार्थ मार्गे प्रमान केवल कार्या की है। याज्योंको एवले यह मार्ग्य हो नायमा कि हमार मौरवनव सीवसायको विवास में मेंत्र विवास की मार्ग्य कि मार्ग्य कि हमार मौरवनव सीवसायको विवास में मेंत्र विवास की मार्ग्य कि मार्ग्य की मार्ग्य कि मार्ग्य की मार्

्रम्याः यदेवं जननान्तरेषु त्वमेन मर्तानं व निश्रयोगः ॥

महाकवि भवशृति जिन्होंने पूर्यं हमेय काजिदासको वायामहो सिंजा दिया है, व्यप्ते पूर्व बेलकोंते आगे बहना पाहते हैं, जो महाराभी सीताके विश्वकों और भी कुन्दर कानोके जिसे भावान रामको और कुन्द उर्यक्षकों दिखे देखते हैं और उन्हें कम सम्मान प्रदान करते हैं, क्योंकि उन्होंने सीरामण्यक्रीके शुक्त सीताजीके विषयम 'वारि करदीहा' ह्यादि वचन कहताने हैं। विन्तु अवसृति उन्हें उन्कार महान करते हैं कि अनुसार करते हैं कि उनके अनुसार

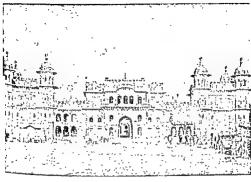
'वजादित कठोराणि मृद्धि कुपुमादित' -कहता देते हैं। पदि बास्तवमें देखा जाय वो अवमृति कृत 'वजार रामचरित' केवल एकाङ क्रिनिय है। इसके प्रयमाङ-

, अमर-काव्य

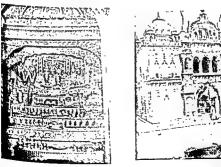
त्त तथा यागयाका परमावस्थातक पहुचनका रहस्य मार्थान्। सम्मान्। यह उपनेरा शीरामचन्द्रजीके साचरण सीर उपनेशका प्रतिष्ठकप है । 🗴 🗡

हम बद मकते हैं कि जैसी आयमकाराजधी सरक और व्यास्त्र ग्रीती, उच विवास तर्वे हैं । स्वास्त्र ग्रीती, उच्च विवास तर्वे हैं । स्वास्त्र ग्रीती हो है । स्वास्त्र ग्रीती हो है । स्वास्त्र ग्रीती हो । पर्दे बारण है कि यह काव्य वृद्धभूषा, साझनदुर्जन, सालिक-नानिक सब्दे मण्डे हैं । स्वास्त्र ग्रीती है । स्वास्त्र प्रसाद क्षार प्रसाद स्वास्त्र ग्रीती स्वास्त्र ग्रीती है । स्वास्त्र प्रसाद क्षार व्यास्त्र ग्रीती है । स्वास्त्र प्रसाद स्वास्त्र प्रसाद स्वास्त्र प्रसाद स्वास्त्र व्यास्त्र प्रसाद स्वास्त्र व्यास्त्र प्रसाद क्षार व्यास्त्र स्वास्त्र प्रसाद स्वास्त्र व्यास्त्र प्रसाद स्वास्त्र प्रसाद स्वास्त्र व्यास्त्र स्वास्त्र प्रसाद स्वास्त्र व्यास्त्र स्वास्त्र स्वास





श्रीजानकीजीका नीतना मस्टिर



धीडानकोणीके सन्दिरमें जानकोजीका सिहासन

आजानका सन्दिरक धानर जगमाहरूजा व मन्दिरका पूर्व दरव



राम-नाम-माहातम्य

(केखक-स्वामीकी श्रीस्थोतिर्मयानन्दकी पुरी)



गवतावि सचि-प्रत्योगि नवघा भक्तिके विषयमें विशेषरूपसे वर्षांन किया गया है। उनमें समस्या-मक्ति एक सम्यतम है । इस स्मरबा-मक्तिका विषय प्रभुका नाम-स्मरण है। प्रमु

धनम्त चपार हैं। इसकिये दनके नास मी समन्त प्रपार है। उन धनम्त खपार मामोंडे प्रत्येक भाग ी प्रमुख बायद और धारकों के खिये चानीए सिविदायक । इसमें कुष् भी सन्देश नहीं है। परम्मु उनमें राम-नामकी [इ और ही महिमा है। भगवान् रामचन्द्र और उनके नामकी त्याचे महिमा सामान्य मनुष्योंकी सो बात ही क्या , देवतागवा भी अपन्नी तरह नहीं जानते । स्वयं श्रुति त्वा मतवान् रामचन्त्रजीके सीर उनके पावन नामके देपवर्में कहती है:---

> राम पद परं ज्ञाहा राम यद परं तपः । राम पन परं तनने औरामी महातारकम् ॥

(रामरहस्योपनिषद्) भगवान् रामचन्त्रजी परमञक्तनस्य हैं, रामचन्द्रजी रम तर्रहरू है, रामचन्त्रजी औष्ठ तस्त्र हैं और रामचन्त्रजी वित् वारक मस है।

रमन्ते बोनिने।ऽनन्ते निरमानन्ते चिदारमनि । इति रामपदेनासी परं महाामिचीयते ॥

(शमताविन्युपनिवद्)

बिस धरम्य नित्यानस्य चित्रत्म परमझमें योगी खोग षा रमञ्ज करते हैं वही परमक रामायवादि अन्योंने मनामसे कपन किये गये हैं।

महारामायण और धगस्थसंहितामें सगवान् शिवजीने मनामकी विरोपतः बतलाते हुए कहा है--हे देवी पार्वति ! मत बेर, शास्त्र, मुनि और श्रेष्ठ देवता श्री ऋति सहान् मिका प्रमाय नहीं बानते हैं, चतुत्व राम-नामका कार्य नवान् बोरामचन्त्र ही सम्पक् रूपसे बानते हैं बौर उन्होंकी गते में भी किश्चित ज्ञानता हूँ । हे पार्वति ! समस्त द्वार और समस्त्र मन्त्रींका बाप करनेसे को पुरुष खाम

होता है उससे कोटिगुवा अधिक पुराय-लाभ केवलमान्त्र रामनामसे होवा है।

चन प्रस्त यह है-कि नेवों में 'ॐ' मन्त्रकी बहुत ही भगंसा की गयी है, वहाँ कहा गया है कि 'ॐ' साजात पर-महास्वरूप है चौर वडी मन्त्रोंका राजा है।'

भगवान् जीकृष्यवन्द्रजी भी गीतामें 'ॐ' के विषयमें कहते हैं ---

🕶 इलेकासरं बद्ध स्थाहरन्मामनुस्मरम् ।

वः त्रवाति त्यजन्देहं स याति परमां गतिन ।।

(4112) इसीमकार भगवान् पतज्ञतिने भी योगसूत्रमें 'तस्य

वाचकः प्रथवः" कष्टकर इसकी सहिमा गाथी है।

उपर्युक्त श्रुति, स्युति तथा धम्य धनेकानेक प्रमाणींसे वह सिद्ध होता है कि 'ॐ' से चथिक महत्त्वपूर्य मन्त्र समक्ष अन्त्रणखोंमें दूसरा वहीं है, किर राम-नाम सब सन्त्रोंसे बिरोपत: 'ॐ' से भी बदकर किस प्रकार हचा ?

इसका उत्तर यह है कि बस्तुतः 'ॐ' और 'शमनाम'में फलकी दक्षिते कुछ भी भेद नहीं है। दोनों ही परमात्माके नाम हैं और दोवोंका ही फल समान है। परन्तु एक प्रकारसे रामनामकी ही अवारसे श्रधिक विशेषता बतलाबी जा सकती है, वह यह है कि-

ॐकारके उचारवाका सभिकार सापामर सर्वसामारखको भडीं है किन्मु शामनासका उचारण उच-नीच,विद्वान्-प्रविद्वान्, साध-असाध. कोटे-बड़े. खी-पुरुष. पापी-पुरुषात्मा सभी मस्या. सब समय समान-भाषसे कर सकते हैं। इस वातको हम एक दशन्तके शारा समस्यते हैं---

किसी देशके एक स्वामी हैं, उनका माम मटवरसिंहजी है । वे उस देशके राजा है बतः उनके नामके साथ महाराजा भी जोटा जाता है। उनके प्रवेतोंकी वर्पाध महाराहत थी इसबिये उनको भी महाराया करते हैं । वे वहे शूरवीर हैं, इस्रतिथे उन्हें बहादुर भी कहा बाता है। सरकारस दनको कें-सी॰प्स॰बाई॰कीपदवी मासहुई है चतः उनके मामके शाय वह भी जोड़ देनी चाहिये। सब उनका पूरा माम ऐसा

हमा 'मदाराजा मदाराजा श्रीजावर्गीयहरी सादेव बदाहर बैश्मीवस्थवधाई। इस लाग्नी अनवा तासूनी देवार् भीर महत्त्व भार बहुनेने भी जो निहान है, जी उनकीरिये मनुष्य है ने ही हमका जनावस का सकते हैं। सामु औ धरिहार है, साधान्य मामीख अनवह है, वा भून-जेतीचे थोग है में दग नामका स सो कर्त जानने हैं की। स दकारण ही का सको है। ने स्रोग तो केश्व 'सहाराजा शाहेब' इतने सहप्रयाच्य-न्यरक्षत्रीच्य शब्दमी 🗗 सान्ता बाय भवाने हैं और महाराज मारेब भी बनकी महत्रपाह प्रगळ बहने हैं।

प्रणी मकार 💕 कामामाका महान् मान्वरूपे वर्ष येथपैर्यं नाम होनेरर भी नाधारय क्षेत्रीहे अनुत्र उसका म तो महत्त समय्यो हैं और न होय-हीय बचारय ही बर सकी है। इमीबिये शासकारोंने बन 💝 केही नातमन र्थाय 'बाम' इन हो अपरोंसे परमान्याको नव्योधित किया है. जिसमें सर्वताचारक बमको उपयोगमें के गर्ने 'राम' राज्यका कार्य 'रमनेत बोरिनोत बामन्' खोरीखोस जिसमें रमण करते, पेमा परमामा परमझ है।

(1) पक हिसाबसे 'शम' 👺 से भी सम्मान्य है क्योंकि 'राम' इन दोनों अचरोंकी न्यार सता अपने मलक पर भारण क्ये रसता है। अकारके संख्यानी को भर्पपन्त्राकार विश्व है सी 'रकार' का ही विश्व है । बह उत्पर कैसे शया र 'जरुद्धानिकान्यायेन रेफसोक्कंगमनम्' इसी संस्कृत कहाबतके अनुसार । और को न्यारके दपर जिल्ह है सी 'सकार' का चित्र है । 'गोऽतुस्थारः' इस गायिनीय सुत्रके चनुसार 'मकार' का रूप चनुस्थार हुआ है । अब बदि शाप पर्छे कि 'राम' शब्दमें की बाकार था वह कहाँ गया है इसका दत्तर यह है 🖹 'बाकार' अकार का ही एक गेद है 'नकारत्याष्ट्ररा भेदाः ।' राममें को धाकार है यह केवल वधारणके निये ही है, इसके मतिरिक्त उससे कोई निरोप अयोजन नहीं है. पायिनि महाराजने कहा ही है कि 'अवार वचारणार्वः' इति ।

(२) 'राम' इस मन्त्रमें ॐकारका सार आनेसे जिस वर्णके साथ राम यह भहामन्त्र वर्णात् व नाद बिन्दु खरा जाता है वही वर्ण एक बहुत मन्त्र-शक्तिवाला वन जाता है। इस विषयमें गुससीवासनी कहते हैं—'

पक छत्र इक मुक्टमनि सब वर्णनपर और । तुरुसी रष्ट्रबर नामके वर्ण विराजत दीय ॥ .

इपी रीजिंगे में (युप्तीरीय), रें (पर्यार) में (रामारिक), में (सापुरीक), में (प्रकारी) इत्पादि किए-जिस बर्गांके जार गान वे हैं में निरातमान हुए हैं, बरी वर्ष महार, समिगती ^{हैका} बन गया है और उन बीज सम्बंधिका करेंपेस माँ हेरफ शील सरफ हो बारे हैं।

जानीमाश्रहे नामने 'राम' यह हो गर मालामें सुक्ती तरह मीत है।

'सम' रास्य माचीमागडे नामका मी दि है हरी कीत्रमात्रके मामीमें वे दी सपर 'राम' गर्व हो है। किमी भी स्वक्तिका, किनना भी का बन काँकी चन्नमें बममें को ही सकर बाडी रह जाते हैं, हैं। हा हो बड़ बाने हैं। इस निवयंत्रों गबितकी सायाने ल किया बाना है। अने ब युरुगको संमारमें धर्म, धर्म, बन ही मोच वे चार प्रकारके प्रशार्थ-माधन करने पाने हैं, होते अन्येश नामके अवरोंको परचे चार प्रवा कारा हैता, है पुरुवार्थं प्रममुनाँची सहायतामे होते हैं हमीते ह गुयानस्त्रके साथ पाँच भीर बोह देना वाहिने। सार्ले पुरुषको पुरुषार्थ-साधन करते हुए शीतीव्य, पुनिः चुत्रियासा चादि इन्ह भी सहन करने परते हैं इन्हिंग थोगक्तको किर दोसे गुवा करना चारिये। इर रस गुवन्स को अगवन वास्थानुसार बहुवा-प्रकृति भूपैरानेनी बाबुः सं मनोदुबिरेव च । महंबार हरीयं में निव बार्निर हारा विमाग करनेने भवरय ही चेतनत्वरून पून ही अवशासक पुरुष ही अवशेष रहेगा । बदाहरवार हि प्रकार नाम 'देवदत्त' है, इस नाममें र बचा है, हुई क से गुया करनेसे 14 होते हैं, बसके साव र जोर हैं २१ होते हैं, २१ को दुगुणा करतेते ४२ होते हैं जिल्ह भर को य से विमान करनेसे वाकी र सते हैं और है अधर ही 'शम' राज्य हैं। इसप्रकार सन्त्र्ण नामीं हारी 'राम' को ही समयना चाहिये---

जीव सर्वदा 'राम' ये दो असर जपता रहता है जीव को श्वास-प्रधास खेता है वह श्रवहिंग है "राम" नामका ही खए करता है, ऐसा समम्बा बारि

राकारेण बहियाति सकारण विशेत् पृतः। राम रामेति सच्छन्दो जीवो जपति सर्वदा ॥

राकार बचारख करता हुआ बीव माण्-वाहुको हेर्ह

' भीर मकार उभारण करता हुन्या आवाको कन्दर प्रवेश माता है । इसप्रकार जीव चहनिश 'रास'इन दोनों भरोंको ही बगता रहता है।

रामसे राम-नामका महस्य अधिक हैं। एक बनिने बहा है---

राज ताजोऽधिकं नाम इति मन्यागहे वयम् ।

त्रवैदा तरीदोऽयोष्या नाम्नातु सुवनवयम् ॥ वै तम ! सापने सापके नामकी महिमा स्विक मालूम (मी है, क्योंकि सापने तो केवल एक सर्योज्याका हो।

बार किया है और धापका नाम को स्वर्ग, अन्ते और जिल्ला हुन वीर्नों अवर्गेका उद्यार कर रहा है।

राम नाम सर्य पापनाशक है। नारामं परमंत्रेस महतो हे राम नासाखिती, रासारं सरतो जनाय सस्के निर्माति वापं द्वर १६ मुस्स्टिकडीति रोसनियासाले महास्त्वती,

विक्रों द्वर राम नाम रस्तु जीतामणुरास्य मे।।

रे तामक्यूमी ! इप्लीमें बादके सद्दान् नामका
गा मारी म्हाच्य है। रा दस्ते हैं। म्हाच्य है इप्रतिक्ष स्वाच्य है। रा दस्ते हैं। महाच्य है इप्रतिक्षत्र स्वाच्य पर निकड बाते हैं। पित के बादा स्वाच्य नहीं नहीं साने, स्वीव "मं करता हुमा हरू बाद हो बाता । रेचा परिच साम हुम्क औरामक्यूमीके द्वासकी स्वार क्या निवास करें।

देशन्तिकत् दुवितं यद्यमासनुबर्धकत् । सर्वे ददक्षि निजीरं तृदयचरुनियानसः ॥

कर्षे पारको भी जैसे भ्राप्त विश्वत कृष्ट देती है, में ही रामनाथ भी दिन, पक, भाग, ऋतु कीर वर्षे कर्षित वसत शरोंको निःचेश्यमा भाग कर देता है।

कृति रामनाम ही एकमात्र आध्यय है राजी बर्गद्रवसरोत हदा सारमुक्तिपुरित कन्तुः।

राज्ये बर्गेष्ठमारोण सदा स्मरन्युविमुदेशे कन्तुः । इ.गे.पुरे बन्मप्रमानसामानस्वयमे कपु नाविकारः ॥ सम्बद्धम् केलो कन्युको स्मान्य

तान हेन होनों बसीको काहरते कारण करता हुका मंत्री हुविको माह होना है। कवितुमने हुव हामनामके करहे कीरीन और किसी थी सावनमें वारामा इन्होंच कवितार ही नहीं है। करी नास्तेव नास्तेव नास्तेव गरिएन्या। किसे रामनामस्य केतिस्य परि नहीं है। शामनाम सर्वे भय तथा सन्ताधहारी है मकास्य महार् रिवा दिरयवस्तिपुढे भति कहते हैं— सम्ताप मध्ये मुत्ते गर्व संतेतासामीक्रीमम्। पद्म ठाव मन गराविक्षी पारकंडिय शीन्तमंडिम्मा शामन स्वानाम मध्येताकेवी प्रकंडिय शीन्तमंडिमा शामन स्वानाम मध्येताकेवी प्रकंडिय शीन्तमंडिमा शामन सर्वेवाम प्रमान मीतिय साम नाम है। है निवा! हैगी, सेरे करिन्हे स्वारीय प्रति सो प्रव स्वानी ग्रीत्य हो। गरी हैं

राम-नाम उल्हा जपनेसे भी मुक्ति ब्हरा नाम बप्त जग जाना। बालीकि वर्षे बदसमाना।।

योर पानी द्रप्तु रनाव्य महर्षियाँ वी इर्गा मान कर भी बाद उनके दिवे हुए मानगाल्या बचारण करनेमें बादसार्थ हो नवा, तब महर्षियों गुरू वुन बुनकी चोर हुगारा करके उसमे बाद कि देल रनाकर देवा—'मार' है, तब बारियोंने बदर, 'कप्पा हे तुल बराबर दरा—'मार' है, तब बारियोंने बदर, 'कप्पा हे तुल बराबर हमी राष्ट्रका बराय हिवा करे। 'हवाबर उसने बदरे 'मार राष्ट्रका बायाय बाह्यस्त्र वह बराय हमी करा मानगाली महास्त्र हमार वाह्यस्त्र कर करते करते वाल्यस्त्र कर करते करते वाल्यस्त्र

राम-नामका प्रमाप

एक सारव कहाती तर देशनाओं में में है कि नायें किससी पूर्व होनी सारित । यह गुल्या नव देशना कारानें करने करें। तर करानित वहां कि मान होतियें की सारवें पानें सारित प्रचारी कर पूर्व मान देशना करने करने वहातीय का पूर्वी-पुरिकारों के कि नाये, पूर्व सार्वें वहाती कर पूर्वी पुरिकारों के कि नाये, पूर्व सार्वें कहाती का पूर्व मान प्रचार का मान मीत्र कराने कहाता के पुरा व प्रचार का मान मीत्र कराने कहाता हो मोत्र हमें मानदी मान्यें मीत्र कराने कहा हमा देशका हमें मानदी मान्यें मीत्र कराने कहा हमा देशका हमाने हमा है। करा पूर्वाय मान्य मान्य हमान करान कराना है। करा पूर्वाय मान्य नाम विकास कराने कहातीय का स्वीत कराने मान्य कराने कहातीय का स्वीत कराने ही सर्व-प्रयस प्रय टहराया । इसीसे गौ॰ तुलसीवासजी कहते हैं---

महिमा जासु जान मनराज । प्रयम पूजियत नाम-प्रमाक ॥

- (२) समुद्र-सन्ध्यनके समय काष्ट्रकृट नामक जहर निकला निसरी सम्बदेव-दानव जानने समे, तथ स्व सिवक्ट समावान् प्रंकरकी तार्य गाये और योजे— हे समावन् हिस सब भस्म द्वप् जा रहे हैं, कुण करके हुल अधानक विषये हमें बचाहये। 'वपाल गंभरजी राम-नामक प्रभावक उस अपका कालकृद विषयों पी गाये और राम-नामक प्रभावक वह विष अग्रत हो गया, जिससे रिवजी स्वाहे जिये समर हो गये। हुसीलिये सुसरीहासजीने कहा है— नाम प्रमाव जान दिस नीके। कालकृट कुट बोन्ह समीके।।
- (३) एक समय ग्रांबर मगवान्त्रे पार्वतीजीको मोजनका समय हो नामेले भोजनके लिये युवाना, पार्वतीजी कहते नामि कि मैंने सभी शक विष्युसहजानका पाठ नहीं किया है, जाप पोजन की जिले, में पाठ करके मोजन करतूँगी। तब शिवजीने कहा—

रामं रामिति रामिति रामे समीरमे । सहस्रनाम तजुल्यं रामंनाम बरानने।।

राम-नामके माहालयको शुनकर पार्वतीने रामका नाम क्षेत्रर मोश्रम कर विधा ।

(४) सेतु-वन्यत्रके समय बानर नीवने शम-नामकी शक्ति पायरोंको लोषकर लेतु-वन्यन किया था और समुद-पर पत्यर सैराये थे और इसी नामकी महिमाको कथारें सुनकर गाविनी ध्युना-पार हो गयी थी। शम-नामकी महिमा बायी जाय हो करपान्तमें भी पूरी नहीं हैते. संचेपसे थोड़ेन्से सन्दर्भीर जिलकर अन्वय समाह स्वार्

शुबसीदासजी कहते हैं--

माव कुमाव अनस भारतसङ् । माम बच्च मंग्ठ दिते हर्

इसीलिये पुरुष चापसमें मित्रनेप कारी हैं क सम्म'। विवासी जापसमें मित्रनेप कारी हैं कि सम्म'। किसीका कोई कह सुना बाव हो मुंदे लिक्ट हैं 'सम्म समा।' जीम बिना कहने प्रकारी हैं कि समा।' मुझे होते हैं दें हैं 'समा समा।' सम्म हक्तमें एक सोक है—

तिने शने न समारी मनत् त्रेतस्य क्ष्मितः। अतस्य क्षाह्यपैन्तं रामनाम जपे। नरत्।। सुर्देमं कोई मेस श्वस न जाय, इसाँडवे स्मा

अप करना चाहिये । मैठसायन-सन्त्रमें भी आ -

रावसायन करने समय रामनाम नहीं दिन का है। वर्षोरिक इस नामको सुनकर मेर, पुर, स्मिन करें साकिनी, शकरायन कादि भग कार्य हैं। दिन रेने श्रीक मय जारे हैं, इसी कार्य को कार्य हैं। कार्या याद करते समय 'राम नाम कर्दा है देना रेने हैं। इसी संस्तान्योगरी जिनाह कानि हुए कार्य कार्य साम साथ हैं। व्याना नाम कर्दा कर्दा करें साम नाम स्वयु स्वयं पूर्व प्रविष्ठ है, इसने की नी नार्यों के । स्यावान्क वार्मों को कोई दिये वा कार्य केंग वसको कार्यप्रयोग कारकी मारि होंगे।

रामकथा सुरलोक नसेनी

दिन दुर्तान अनायनको कलपट्टम है कलिमें मुत देवी। पापन-पुष्च पतारनको वर-पारि प्रवाह अयाह त्रिवेनी।। काम मदादिक काननको बनु चारि उजारत पावक पेनी। 'भोत्रिय' सोच बृंधा सब है, जब रामकथा मुरहोक नसेनी।।

कहमीचन्द्र सीर्थिष

वालिवघका श्रोचित्य

(वेषक-श्रीवनकसुताशरण शीतकासहायवी सावन्त वी०४०, एत-५७०वी०, सम्पादक 'मानसपियूष') धर्महेत् अवतरेष्ट् गोसाई । मारेह मोहि ज्याधकी नाई ॥

हिंदिक हिं तिवयके विश्वमें ट्यांक चौपाईको लेकर छुड़ वा समाजोचकोंने हरे झालोचनाका विश्व चना हुन्हुः कि विषा है चौर परवड़ परमाम्मा मर्वादापुरुपोचम मरवान् बोरामचन्द्रमीके चरित्रमें हरूको एक घन्या समाज है।

इस विरादये तीन प्रकारते दिश्या विद्या सारा है।

इस विरादये तीन प्रकारते दिश्या विद्या त्रामा काराय है। (1) गरावात् सामण्यक्रीयो निर्मुख निराद्या काराय है। (1) गरावात् सामण्यक्रीयो निर्मुख निराद्या सामण्यक्रीयो निर्मुख निराद्या सामण्यक्रीयो सामण्यक्रीयो सामण्यक्रीय कारी चर्चा व्यवस्था निर्मुख निर्मुख विद्या विद्या विद्या विद्या है। (१) गरावानिक्यी स्थिति विद्या विद्या विद्या सामण्यक्रीयो विद्या विद

दिनु दर बात मुनद्द निनु काना । निनु कर कमें काद लिथि नाना कसराद में नि करोकिक कानी । महिमा आयु आयु नहिं बरती । महिमा तसको समाधनेमें चाप चपनेकी समार्थ वाते हैं हैं

क्या बारने प्रतिक प्रभावि क्यार कामी सीचे कीर इस

स्ति कुमात् व्यावका माह्य ।।
निवय किया है प्राप्त के प्राप्त के Theory निकलती है प्रमु
वर्ष याद वह पढ़द जाती है, जिसे लोग धान एक गातका
क्रीक कपरसमस्त्री है उसीलो उन्ह दिन वाद वे है लोग गृतन मानवे हैं । क्या वह पान ठीक न तुर्व हैं। है पी हो तक में इसकी पुत-बुक्तिमें तो यही धाता है कि भागवापृक्त कार्यमें सम्बद्ध करना अधित यहीं। उनके कार्य सम्पायुक्त कार्यमें सम्प्रेत करना अधित यहीं। उनके कार्य सम्पायुक्त और बहुत दे कित होते हैं, वे क्या प्रपादा ही करते हैं। उनके सब कार्य यदि हमारी समममें था आर्थ तो उनका सर्वटाधिमात्रामुख ही कार्ड रह गया। क्या मताब्वनिक्योंने की बारी मता अस्त्र किया है—

> हरकि आमद इमारंत नी सास्त। रपतो मंजिल बढीगरे परदास्त।।

सर्वात को साया, उससे पुरू नवी हमारत सदी हैं।, पर चला गया और संजिल दूसरों के लिये खाली कर शया। तालवें कि जो साता है सपनी सत्रख सदाता है स्त्रीर चला जाता है, कोई पर न पा सका।

बड़ी इंसामसीहका श्लीपर चड़ना, जिसकी हंसाई इन्ह्रं बचें पूर्व कमज़ोरी चीर कपने सत्तपर एक घडवा समकते थे, बात वावने खिये एक वड़े भारी गीरव चीर वक पानी लुक्ति (Salvation) का कारण समकते हैं।

श्रव अगवान् श्रीतासचन्द्रश्री साचान् पामेषा धौ। सर्वादा पुरपोत्तम श्रवतार हैं, तब वनके चरितपा सन्देह हैसा ? उनका कोई भी चरित ऐसा नहीं हो। सकता की अर्थादा-पुरुपोश्समचरा घटना बाल सके।

सन यहाँ कुछ महानुभारोंके विचल उद्दान किये जाते हैं जिल्होंने इस चितको घरवा मानकर उसकी सवार्यना सतावी है, सवका जोगोंकी इस शंकाका समावान किया है—

पं क्षासम्बद्ध राज (बेक्सार दिन्द् विश्वीकास्त्र) कराते हैं—गास विश्वी इस साम्बदार होगे पह स्वास्त्र कर स्वास्त्र के स्वास्त्र के स्वास्त्र के स्वास्त्र के स्वित्र हैं। यह है स्वित्र के स्वित्र के स्वास्त्र के स्वास्त्र के स्वास्त्र के स्वास्त्र के साम के स्वास्त्र के स्वास्त

सनुरुष एक कारनामात्र समस्ते जानेने कचाना है। यदि एक यह परवा म होता तो समझी कोई बान मनुष्योंने म मानुष्योंने के मानुष्योंने के साथ कहारा के कर मी मनुष्योंने कोच कवारा के कर मी मनुष्योंने काम के महोगे। जनका जाति मी उपहेरक महामार्मोंडी केवल मानुष्योंक जाति मी उपहेरक महामार्मोंडी केवल मानुष्योंक जुनित्य कांध संबद होता, पर मानुष्योंने कांध है होता, पर मानुष्योंने कांध है होता, पर मानुष्योंने किए मानुष्योंने कांध है है काम्यार्थ विश्व कांध है काम हमार्थ कोच हमारे मानुष्या काम प्रारं विश्व काम्यार्थ केवल मानुष्या काम काम्यार्थ केवल पर परिचार काम हमार्थ कोच हमारे मानुष्या काम काम हमार्थ केवल पर परिचार काम हमार्थ काम काम हमार्थ काम काम हमार्थ काम हो है हमार्थ काम हमार्य काम हमार्य काम हमार्थ काम हमार्थ काम हमार्थ काम हमार्य काम हमार्थ काम हमार्थ काम हमार्थ काम हमार्य काम हमार्थ काम हमार्य काम हमार्थ काम हमार्थ काम हमार्थ काम हमार्थ काम हमार्थ काम हमार्थ काम हमार्थ

धीयाद्वयक्कर जामहारती वहरे हैं—'वाक्षिक्य इस कायस्की एक बीर विदेशता है। विदेशता करनेका कारय यह है कि वाक्षिक्यके सम्बन्धमं औरसम्मीपत करन्का दोष बमापा लाता है। जाजकत नो विचारकी यह एक परिवादीशी हो गयी है। उसके मुखमें 'विदय खोट' और 'ब्यायकी माई' ये पद बायादमूह दिख्लाये सादे हैं। आपेप ठीव है या नहीं, हसका खब धोवा विचार करें!

'करदका दीप सबसे प्रथम बाखिने ही खगाया या चौर वह उस समय खगाया था जब यह पूरा परास्त और मरयोग्निज होने कारय विरुद्धत ही कोममें मरा या । यहीं मुख्य देखना यह है कि बाधि मरात जाता था तो में उसका प्रमुंकार ज्यों-कारयों जीता ही जाता या। इसका प्रमाय हम बालि-निवनन्वर्णनके पहले जुन्होंके 'मीर्त जानि जिंत कामगानको हम बालिके ही स्वस्तेत खेते हैं। इस जीमगानके बस होकर ही 'प्येरेत जनकेय गीर्था । मोर्ड भीर्व व्यावको जारे ॥' वालिने यह मम दिया।

धासमानी प्रकृतिकी 'ग्रुणाः वर्ष च कुर्वनित वतो निन्दा प्रवचेते ।' यह स्वभावसिद्ध प्रकृति वहती है । क्या हमारे ब्रिये भी पासिकी दृष्टिने देखना ठीक होगा है

'धारोपाई दो पर्दोमेंसे एक 'तहसोट' है। सभी सींहिताएँ एक मतसे मही प्रतिपादन ब्याती हैं। इसजिये इसके सम्बन्धमें दिसीको की करक करनेका इक नहीं, पर केवस पुक्त कृती बातपर विरुद्धन निर्मार रहस्र कारकरें धारोजिन करना सुविवारका सचय नहीं कहा सा स्वता

नृत्यस पर्—'क्याचडी नार्' है। प्यारेंने स स निर्मुबताका वर्शक है। न्योंकि व्यापक्री बस्त है निर्मुबताका होता है। पर यह नहीं क्या का क्या है वह सहस काटमे ही बसा हहता है। इमबिदे ब्याद हम्ले बहासहत्यास बेना होगा।

कायेय कानेवाले पण्डे कोन स्वाप ग्रन्थे करूने वित्या करते हैं। इसारे अनते त्रिया करते हैं। वित्यका प्रकार में करना कायाप्रयक रहता है, इत व्यवहारके सारन्यमें उस विश्वका आप्ताहर का किले कान सुन्कर किया जाता है, तमी वह किया कर कहाती।

'इस व्याक्यातुसार, शपनेको जानक्षका हिएक. वदि रामत्रीने वाजिपर बाय चढाया होता, तो डास कपटका कपराच धवरय ही प्रमायित हो स्वता । वर्ष मूख प्रन्य ही स्पष्ट कहता है कि बचिप वार्ति मैहनमें हा हुया अन्यच सामने खड़ा या तो भी रामग्रीने पार तुन्द आता दोक । देवि अमर्ते नहिं मोर्ड होत्र हैं बदकर शुरन्त ही कर परला हुमीन लगेग। ही भेती कंड समनहै माला। यहना अनि वह देश विग्रहा है है प्रकारसे सुप्रीवको फिर भेडा । इस वर्षनसे वह होत्सी खिद होता है कि अपनेको विचाना तो दूर ही गा। वर्ग और वालिकी ही दृष्टि अपनी और खेँबनेश निर्देष प्रयत्न शमजीने जान-मुमका किया। सार्थ हि है 'पहचान नहीं सका' यह केवल सीरचारिक विमिन हत्त्र हुए प्रत्यच पचपात बतलानेहे विषे और बाहिही ही इस तरफ शॉचनेडे लिये झीरामझीने सुभीवडी पुराहरी पहनायी थीं।

'शारिप करनेवाडाँका भव पेता सी हरानेवा में होगा कि वाबिने रामनीके किसी भी कार्यको कर, मुर्जरे मार्यको सावाबको. चौर भी—पश्चित न किसी । त एक सो यह कहना ही स्पृत्तिक नर्मी है, व्यंति हरें कुछ भीलें मूँ दफर मींद भएवा समाधिन हो हो हो ते रहा या और दूसरे बाद वाबिने देशा हो नार्मित परचा न की, शो यह दिसका होते है। तार्म्स

सब बार्वोका इसप्रकार विचार करनेपर समजीके दरर स्वाया सानेवाचा कपटका आचेप इमारे मतसे षद्रशनिक सिद्ध होता है।

राजनीतिकी दृष्टिसे विचार

किसी बातकी ठीक समाखोचना चौर जाँच तभी हो एक्ती है वह समाक्षोचक बापनेको उस समयमें पहुँचा दे तिम समयको बद् घटना है, जो समाखोचनाका विषय है। वी समात्र-मुचार-सम्बन्धी बातें को एक शताब्दिके पूर्व इवासे देखी बाती यों, चाज दिवत समसी जाती हैं। रही सनुर्योद्धा बेचना, गुवाम बनाना, वाजनियाह स्मादि वो पर्धे करदे समन्दे जाते से चात्र दुरे समन्दे वाते हैं। ऐने ही बाज संसारमें बाप हे सामने कनेक उदाहरच हैं, सम्ब बीजिये। को बाद पहले के समयमें नीतियुक्त समकी मती थी, बसीको साज सनीति कहा जाता है। इस सिटिमें स्वा इस अपनेकी सखें समाखोत्तक कह सकते हैं रहि इस इस समयकी घटनाकी बचार्यता बताँमानकासकी रीतिसे बाँचे हैं मेरी समकमें तो कदावि वहीं।

इनको बाबिवयपर बाबोचना करनेके जिये श्रेतायुगकी मीरीका चरवस्थन करना पहेगा । उस समयकी भीति केनाम, बारमीकि भादिमें भी इस प्रसंगपर दी हुई है थीर मनुष्यतिका ममाया भी दिया गया है। यया वास्मीकीये कि॰ स॰ १८---

बेरेउत्कारणं परव सर्वं सं मवा हतः । भार्विति मार्वायां स्वरत्या पर्वे सनातनम् ११ बस्य त्वं बरमाणस्य सुप्रीनस्य सहहत्मनः । दमाबा वर्तते कामारल्यामां वायवर्महत्।। न च ते साँवे चापं सवियोऽहं पुरोहतः। भीतती मनिमी बापि मार्थी बाध्यनु बस्य वः ११ प्रचीत नरा कामातरम दम्ही वकः हमुतः । मरवस्य महीकारी वर्ष स्वादेशवर्तिनः ॥

(\$6-85 | 28-28)

दूसरे बर्मका त्याम किया, द्वीटे मार्डके बीतेजी उसकी वेंची करनी की बना बिया। इसके किये आवहनक ही िभेर है वही बाद गोस्तामीबीवे शी बड़ी हैं-बनुष्टर् मोली दुरनारी । शुन सड कन्या सब व चारी ।। क्षारी कृतिके किल्दि केई । बादि बचे बच्च पान म होई ।।

याजिको श्रीरामचन्द्रजीका ईश्वरावतार होना ध्रवगुत है। वह जानता है कि सुधीयसे उनकी मित्रता हो गयी है भौर वे उसकी रचामें तत्पर हैं । साराने वाश्विको समस्राया दै और मार्थना की कि सुमीवसे मेज कर छो, वैर छोरकर उसे मुनराज बना दो, सन्यथा तुम्हारी रचाका दूसरा उपाध नहीं है- - 'वान्या गतिरिवास्ति ते' (वा०ग०४।१६/२८)। पर उसने व्यक्तिमानवश उसका करा न माना और यही कहा कि वे चर्मक हैं, पार क्यों करेंगे, वा (मानसके कपरानसार) वे समदर्शी हैं एवं 'नो कशांच मेर्डि मरिक्डि ही पति होउँ सनाव । प्रभुने वाश्विकी पहची बार नहीं सारा । इसकी बहत मौका दिया कि वह सँभल काय, सुभीवसे शहमात्र को व दे. इससे मेख कर से, पर वह नहीं मानता। दूसरी बार बाना चित्र देकर फिर भी अगवानूने बसे होशियार किया 🐧 सुमीव मेरे आधित हो जा शुका है यह बानकर भी-- मम मून वन मामिन देहि गानी-उसने श्रीहासचन्द्रश्रीके पुरुपार्यकी अवदेखना की, अनका क्रन्यन्त क्रपमान किया. उनके मित्रके माख खेनेपर शुख गया, तथ दश्होंने मित्रको कुचुपारासे बचानेके क्षिये उसे मारा । इसमें 'बिटप धोड'से भारतेमें स्वा दोप हुचा है

थदि इसमें अन्याय दोना को रामबी बदावि यह न का सकते कि विपक्त गारवेडे दिवसी व गर्के प्रशासन है न किसी प्रकारका दःश-

> न वे तत्र मनस्टाचे व वस्तुर्देशियंगद । (WOUGHERIES)

को जीशमधीले इसका ककर माँग रहा है कि 'वर्ब हे<u>त</u> जरतरेड गोगाई । यरेड में हि स्थापडी गाई से बड डसर पाकर रुपये कहता है कि मैं निरुत्तर हो गया, घरपने सपर्य नहीं किया, पया-

> न दोषं रापदे दक्ती चर्नेप्रविकातिश्वकः ॥ त्रत्यसम् तत्री सर्व त्राष्ट्रत्यिनरेयसः । अन्वप्रदेश अर्थेक अन्देश व लेटक ।। (mottomteres sa)

धार्योत् बचर शुनकर बसने वर्मेको निवय कारकर राववको दोन नहीं दिना और दान के दबर बोक्स कि चारने को बदा वह बीच है इपमें सम्रेट मही।

सब स्वयं काति ही थों कर रहा है तक, प्रश्नवी साम ब्रीतामके परिवार दोपारीच्या पानेवा क्या रूप है !

धरवा धर धातकत्रकी नीति मी बीजिये। स्वा को राजा दिनी राजासे मिजता है वह बमडी सहायता कोर देना है ! क्या भाग छात्र (Trenches) भादिमें जान-बुमकर दिएकर राज्यस वृत्ते राज-विशान जिएकर बकायक घोसा देहर, एखडण्टडे व्यवहार सहाईमें बायत नहीं माने सा रहे हैं। राष्ट्रको जिस करह हो सके मारना यही बाजधनको मीति है। इस नीति है सामने को समजी वत्तावायित्रमे सबंधा मुक्त है। बाजबज को सवाईमें चर्म और संपर्मेचा कही विचार हो नहीं है।

यद्यपि मेरी समस्में तो बद बाबि स्वयं प्रपनेकी निरुत्तर मानता है सप इसको उसके उत्तरके बनुसन्धानकी कोई बायरवकता नहीं रह जाती है तथापि स्रोगोंकी शहाओं है समाधान चौर तरह भी हो सकते हैं--

१—श्रीरामचन्त्रश्री सत्वत्रतिल हैं । यह त्रैलोस्प वानता है कि 'राम' दो बचन कभी नहीं कहते, जो बचन उनके मुखसे पुस्तवार निकला, वह कदापि ससत्य नहीं किया सा सकता। वे मित्र सुपीवका दुःख सुनकर प्रतिज्ञा कर सुने है कि 'सन समाद मारिडों कालिडि एकडि वान 1º स्टीर यह मी कि 'मवा बचन मम मृता न होई। व्याध सबसे नहीं दिएता! भुरुप कारण यह होता है कि कहीं शिकार उसे देसकर हायसे बाता न रहे। यहाँ 'विटप-मोट' से इसबिये भारा कि-पदि बड़ी वाक्षि हमको देखकर भाग गया चयवा छिप गया. (अपवा. रारखमें आ वडा-यह बात आगे तिसी गयी है) तो प्रतिज्ञा भंग हो जायगी। सुग्रीवको की घौर राज्य कैसे मित्रेगा र पुतः, यदि सामने चाका खड़े होते तो वहत सन्भव था कि वह सेना भादिको सहायताके खिये खाता। सो यह बापिस बादी कि मारना तो एक शक्तिको ही था. पर. बसके साथ मारी वादी सारी सेवा भी। बारण रहे कि यहाँ छिपनेमें कपटका क्षेत्र नहीं स्पोंकि यदि ऐसा होता तो प्रतिज्ञा पूर्व होनेके बाद वाबिके शरखायत होने-पर बीराम यह दैसे स्टातेकि 'अवस स्तो तन रायह प्राना ।'

र-वाबि बीसे चाइता था कि मेरा वच मगवानके हायसे हो, यया-'लचोऽहं बधमासाहनार्वमाधोऽपि तारवा" मानसमें के 'जी कदानि मोहि मारिहाई सी पुनि

से भी सचित होती है। सामने बानेपर भवा द्यमिषाचा कैसे पूर्व होती है अगवान े उन्होंने उसकी श्रमिखाचा इसम्बार वृर्व की ।

६-बद्धति भगवान् सद कुद् करनेमें समर्व है, रस्ट इच्छानें कोई बर मा शाप बायक नहीं हो सकता। तही यह बनका सर्वातात्रकोत्तमं बादतार है। 'सारपनका म पूर्व और भी उत्त समनोंका मत है कि वानिके किय बरदान या डि बो टेरे सम्मन सहनेही प्राक्षेत्र रूप व्याचा बळ शुक्को मिख बापगा । प्रमु संदर्भ मर्दाहा हैं, इसीसे वो राज्यज्यके निये मर-कार पार वि नहीं तो जो बादका भी कार है ब्या वह बिना बरता ही रावक्को भार महीं सकता या 🖁 प्रदरदमार सक्ता पर देवताओं की मर्यादा, बनकी प्रतिश बाती रहती। ह वर भीर शाप कोई चीज मरह बाउँ। इमीडिरे कीरामपुठने भी महाका मान रस्ता और बरनेको राजार बॅचवा विया-

को न बद्धसर मानिही महिमा निरै अपा। चतपुर चोटसे मारकर वरकी मर्याहा रस्ती।

प्र-पं∙ शिवरब ग्रुङ बिसते हैं कि 'इनकी का मारनेका कारण वासिको धडेवा पाता था। क्याँद्रिय खबड़े उस अंग्रमें वाजि सुमीवते दुद काड़े बौदा है किर वेगके साथ सुमीवका भोर दौरता या। भारत हो स्यानका खक्य इपकी बोटले किया गया था कि कि मूबसे भी सुप्रीवके दाय व संगे; क्योंकि इस स्पत वाजि प्रकेश था । यही कारच पुषकी बोटमें को हैंस है। स्रोग करते हैं कि वासि सम्मुख पुद कारेवा री योदाका बाधा वज इर बेटा था। पर शमक्त्र हो हो बह ऐसा वहीं कर सकता या। स्वीकि समुद्रश्च कार में जैसे एक घड़ेमें भरा नहीं जा सकता; बिते 🖒 बाविकी हैं रूपी पात्रमें अपनेरवरका बर्देशन भी नहीं तथा हुन बस्तु' यह शङ्का निर्मुख है।

श्वरणागत-बत्सलता एवं सत्वसम्बत

श्रीरामचन्द्रजीके चरित्रमें उनका एवं देवा है। परमहत्त्व सबसे अधिक उनके शर्यागठ बसहता हुन पक्ट होता है। इसी गुवाने मर्फोंको रिमा रश्ता है। हा सर्वत्र समाजान् सीरामचन्त्रसीने सपने ऐवर्वही विगता पर विभीषद्यीकी शरकागतिके समय बन एक ही रूपी को चोड सुमीन, आस्थान, सहय मानि समीने हर गरवर्षे न रतनेका संत दिया, तब सुनीरको प्रत मकारसे समयाया और अञ्जतीक्या उन्हें वा कार्य

मादि दिन केरे समावको नहीं चानते, में केंगुकीके प्रकार हारों से प्रेडोपरका नाम कर सकता है, बोहेंने विष्य में क्या क्षेत्र हैं। का मैं शास्त्राणतको करी क्षेत्र कन, कई देश महेन्द्र वाग्र करों न हो बाद है बाहमीकि र्गिंद रामावरों में प्रत्यामानिक्त प्रमुख्ते बहुत कुछ अवन । हतुने बर्रातक बरा 🌃 'बर क्या, यदि वर शबस औ रे की क्षेत्र की राज्य (बारवंत्रये) बाबाड़ी भी भी में में क्षे रेम हेल हैं दब को विवा बाबी हिस्तिहें, बीवदमदारीकी र्में कर्म, वर देते दारान शोबके समय की बन्दें िर्मा वा की दिगोरी विमा वहीं है। बाध्ययकीय है होते हैं जो हमी बाग्य कि विशोधन हमारी साम्ब कि हुन है, यह इस बतना सनोहन हैये पूरा करेंगे ह سرة ولك تدنية ودياء

ppi bet Atente einig ?

वित्री केल्पन केंद्र करू दिनु करी महेंग्से बल्दी हर इत् कृति क्षेत्र केवल केवल सन्देश बदन विकास । देते मान् क्या संबद ही कारी क्रवन की बाल हा की बारत हैहें बामापुत ही दुनि सदूस केटानी ह Hate ferant oft the gas mit min it

aliet fallingele gal nam egt bil mad-- وعل فال عام و في و عدد الله إلى الماسة 나 눈이 모든 문에는 무슨 이 아니는 무슨 무슨 무슨 것이 나는 모든 모든 모든 모든 ليست وه يود كارة عمل كالما يول منه منسيع عمليا وا करेन कर देखाई दशीहरू की ह करती कहे हा

tale assist being in ming ! and aplicate adapates mait frence town a mor every An and were even be face fell to

\$ در هم همده به و در المرابع و در المرابع و در المرابع المرابع المرابع المرابع المرابع المرابع المرابع المرابع elayingting on order over one of me of bigging the province on the to at grainds are executed t

think & water towards, a . If to its ير مند فنه مندله إلى هوه هلكي هني ا a facility that the high of the same thank the

عم إمر مم وأمد عاد وصرا حد خدي مح

त्रों सबकार सब्दरन की के काले ही तहें की बजने हो। है र

सूर्यात बाकिये बहुत बहायोत है। वह नवर्ष बहुता है कि टांडे मद रहुदैर कुए १ शहर मुख्य में कि है दिएएर ११

यो बाय है कि बोर्डन्जोडी क्षेत्री कर करने बामार्थि मेळा तब बागें दिगायोंको स्टीनक सोनानक है नाम बगरे वानोंने बगावे । बाहिने शंतमासार्थे करना केंद्रे रहत र हुन्।

बारि प्राप्त स्थापुण दिवास्ति । सरावतु अत्र कि १४ अप अप अग्री ()

देगा गुर्वेष कर बजुडी बाब्द हुका, बचने बन्ते विक्रमाओं की राजवा हुन्य मुख्या हुई वह बालका है। वाकिते बारवा गर्नेत्व वर्ष क्षेत्रो दर किया, प्रकृते क हरू गरा, वर्षिये क्यांची वे संबद्ध करें । वर्षी क्रिके बमका कोई कारणांच नहीं दिया का की की अंतर के के mirtin it feiter mit mert ift mit fie an ebene बन्दीने प्रसम्ब बन्दिस की कि 'इन्ट इर्तन करती करूत BRIS 418 AT

कार्या बाजा है अर्थार्थकरण, ब्रीयक्टापु, क्यान्ताव र علام بالمارة هيرة هرية هرية في المرابع فرابعة فريعة बच्दे कवि प्रदेश बच्दे दी ।

were design to the section of ange on fact, got on your & are in glow ही करें, या है करें किसे बोन्न्स कर है। सर बोक्सरी की ब्रह्मकार भे गुरू है, वह वह है ...

er's eron & to request tot and annual feet & work at we suck ago fe ...

कुनुवर्ग किन्द्रविक्ति कर्मानी केंद्र वकुन्देर कर नीती व Contract affent eine a og dir en f down .

on web art art fa ...

errett gegere de merlad dar' Ed ga & Sann er allo and and as are any anches and are say are

and so in the set out to tafte and is the Book of the areast and in

and one of the secondary for a sunge armer I .

are are small and or throw such and to se gift and if home another the east a pass परा निकन मंदि शरके ठागे । पुनि ठठि बैठ देखि 📺 आगे 🛚

🗴 । मुक्त बनम माना प्रमु चीन्द्रा ॥

त्तव भीराम व्यक्तिको कैसे आरते हैं चीर न आरते तो मिप्रका काम कैसे दोना है यूर्व सन्यसम्बदा कहाँ रह बाती है गारवर्ने चारे इए सुधीयको दोह देवे को महाबदमस्म धात उनकी शरकों कीन विधास करता है सीव उनकी शरकमात्र क्षेत्रेसे चक्ते कत्याक्या विश्वास और निश्रय कब कर सकता ? सामने चानेपर वे शीख कैसे छोडते ? इसीक्षिये उसे 'बिटए-छोट'से बागा ।

इसपर यह कहा का सकता है कि वाज़ि शक्त या ती पहले ही शरक में क्यों न सावा, जब हाराने बसको समन्त्रवा था ? इसका कारच थह जात होता है कि सुबीयने आकर वसे जलकारा था । अक्षा ऐसा कीन बजवान पराकरी योदा होगा जो शतुकी ललकारपर उसटे उसके सामने हाथ जो दे ?-'बाली रियुबल सहै न पास ।"

छिएकर भी सिन्नके रातुको सारनैमें कोई दोप नहीं। मान भी जिया जाय, तो भी वह कानून ही और है और शरकागत-वस्तवताका कानून उन सारे सांसारिक कानुनोंसे निराला है। यह सो नियमका अपवाद (Exception to the Rule) है यह तो भगवानका निजका कानून है। चपने भक्तोंकी रचाके लिये प्रभु बहादयदेवल चादि गुर्खोको भी ताकृपर रख देते हैं, उनको यह भी परवा नहीं कि हमको कोई बुरा कहेगा । इसीपर गोस्वामीजीने विनयमें कहा है-

. पेसे राम दीन हितकारी ।

तियनिरही सप्रीय सका कवि हत्या बाकि सहि वारी 19 धौरे दोहावलीमें भी कहते हैं---

. कहा विभीवन के मिलेड कहा विगारी बार्डि । तकसी प्रम सरनागतीह सब दिन आये पारि ।। बारि वरी बरसारि दक्षि सम्रा बीन्ह विराज । तरुसी समक्रपाठको बिश्द गरीबनिवाज।। बंध-बधरत कहि कियो बचन निरुत्तर बार्ल । तुरुसी प्रमु सुप्रीवकी चित्र न करू कुचारि ॥

इसी विषयमें बा॰ बा॰ स॰ १० भी प्रमासमें दि का सकता है। वहाँ जब महारानीजीने भागने प्रार्थन है कि आपने रायसींके बघकी प्रतिज्ञा की है, या मेरी प्रदेश है 🗑 बाप विना बपराघड़े उनका वध न झें, उनका प्रमुने यह उत्तर दिया--

रधकरत्वं सह साता लत्राया हि वर्ष की। सया चैतद्भः गुला कार्ल्येन परिपलनम्।। ऋषीमां दण्डकारण्ये संग्रल जनकामवे। संयुत्व 🔻 न दाश्यामि जीवमानः प्रतिप्रवन् ॥ मुनीनामन्ययाकर्तुं सत्वमिष्टं हि मे हदा। अध्यहं अीवितं अझां रवां वा सीते सत्त्रमणाम् ॥ य तु प्रतिकां संगुल ब्राह्मणेम्बी विशेषाः। कदवदयं सया कार्यमुदीणां परिपालनम्।। (38-35)

श्चर्यात् 'ब्यडकारययके ऋषि मेरी हाद ह सुक्से बोसे कि चाप ही हमारे नाय हैं, चाप ही हैं पुरुमात्र रचक हैं। यह सुनकर मैंने राइत-११में ही की । चद उस प्रतिज्ञाको में नहीं होड़ सकता, सर् सदा त्रिय है। मैं माय होइ सहता हैं, वृत्ती क्षच्मवको को इ सकता हूँ पर प्रतिशा गर्ही बोर लग पुसा ही प्रमुवे सुन्दरकायडमें सुप्रीवसे कार सरनागत थय हारी।

वालपर्यं कि सल्यसम्बता, प्रतिकारका, साउपी वया दुष्टसंदारके तरव और मगवान्की शरकातमहर्गा वो नहीं वानते ने ही प्रमुपर शन्यापत्र धा स्याप्ति । कविके शब्दोंमें ईश्वरावतार-विति देने वि जिन्हें देश-गुनकर-

अड़ मोहर्दि ड्रव होर्दि सुसारी।

आयुनिक समाखोचकाँको चाहिये कि वे सहरात है सद्भावनासे ही हैयरावतार-परिवॉगर विवार हारेड उठाथा करें, तथी उसके रहस्य उनकी समझमें मा सकी।

अगर 'मानसरीपुर' मामक श्रीरायचरितवानसकी एक इस्त् योद्य निधालनेका बड़ा ही सराहनीर और हरेता हुन कर रहे हैं। भवतक 'मानस' कर बितनी शंकार्य निकली के प्राप्त अने सकता और अपनिवास का है। सामार की करावारिक का स्थाप हो हो हम सम्प्रके रा दे, रसके सिना और न्या पाटका, महाराज बीरामण्यात्वाती प्रसिद्ध रामानची सां पंत्रामकृत्यत्था^{त राम}्या रा दे, रसके सिना और न्या पाटका, महाराज बीरामण्यात्वाती, वाच्येव रामस्साती, संवीस्तरी वाली रंगा^त, रा

पतितोद्धारक तुलसी

असर अमोप अस अतुत अनोरो चोरो , एन्हे प्रवन्ध आछे अछत विवारे हैं। इंवि कान मेस राव-रंकनके अंकनी , हेसाबद करिके गुसाईंबू उचारे हैं।।

जन्त्र हैं मन्त्रहू हैं आगम निगमहू हैं , कितकी कराल चाल नासिवे दुधारे हैं ।

> गाय 'प्रेम' मानसकों अधम उधारे जेते , नरुसनि तारे तेते नममें न तारे हैं ॥१॥

पापी ध्यभिचारी भारी कपटी कुषाली मूद् , जैगुनकी साम , पढि साँची गति घारे हैं ।

> पुगुल पत्राह चोर चपल चलाक वित्त , चाव चीगुनेसों राम-नामाह उचारे हैं॥

चेते गये चले बादि मानस-सोपानपर , पोप मल मानस की मुखिहि सुघारे हैं।

धन्य तेरी कृति 'ग्रेम' तुलसी गुसाई इत , तेते जीव तारे जेते नममें न तिरे हैं ॥२॥

--- प्रेमनारायण विचाठी 'प्रेम'।

मानी, यार शिररसारनी, रं- डिग्डाजनी पाडड़, रं- गण्यति जगणावनी, रायसाइरसिंद्रमी, केलासनी, राय रिकारी, मारा दुनावराहनी भारिसी टीकामीते तथा गा- जनारियों समाकी जग्यावयोठे, रिनावकी टीका, तीर कार्यनी मिर्ग्यादेश, नार्वप्राम्प्यररराहनीकी टीका, रं-इमाकराति हिरेये, रं- वर्षयवार मिन, पुजवारी 'साहरे' मारिते जहाँ दिस्तार किला है, उनका संग्रार रहाते हैं। इसके मिना यून रं- औरावनतमाश्रारमाँ महाराज, रामायणी नाता और नेपालकामानी, नाम औमानदीवारती प्राम्यणी स्तादिको कार्यों द्वान्वर टेन्डकों को हंपतित को येत लिय किसे हैं के भी नेपालकामानी, वाम औमानदीवारती प्राम्यणी स्तादिको कार्यों द्वान्वर टेन्डकों को हंपतित को येत लिय किसे हैं को स्वाद मानित कार्यादानी गीन कीर जनावी म्यूनवीच देकर किर सरक भावती की कार्या कार्या है। अपायसावी कार्या की स्वादी के मीन की स्तादी की की सीन की की प्राम्य की किसे हैं, दिस्त की है। वार्या देव हैं। कार्यित सामायों की मोनी है। भावती की सामी के की सी पीपारी की किसे हैं, दिस्त की है। वार्या वर्षा सामायावार पीपारी का सुनावार की सामी की

ब्यत्रह चार खण्ड समाप्त हो चुके हैं। शाकालके कमस्य २२०५ बीर बयोग्या काण्येत १५२५ हम है। समारण-नैचेंद्रों सारानाति समारह 'मानस-पीयुग बयोज्यांक पंगेत पत्र-प्यवसार कर प्रकारित प्रस्तं वर्गस्यी चाहिये और मेरित रोजेसके मांगोंके किये प्राइक बन बाजा चाहिये।

मर्द पीतश्रतप्रवरी कपने सब कार्योको छोड़कर केंद्रक हती पश्चित सामेस्पार्म कप रहे हैं। वेरी सबसरी एरें इस कार्यय हैं कह कहना पहला है, और बारा हो रहा है, जो पुस्तक विकासे ही कम ही सकता है, सम्मावन-विभियोको यह परम उपयोगी में स्वरंद्रद राम-नेसार्म हाहोगा देना चाहिये। —सम्मादक

तुलसीकृत रामायणकी समीचा (केनक-रेनरेळ एडरिन प्रीस्त, वेनकरे, इंगरीज)

म्बी-भाषाके महाकतियोंकी रचनाओं पर समाक्षीचनायक दृष्टिये कुन विस्तायक विदेशीके विषे दुस्साहस-

विधान एक विद्या है से दुस्ताहरा-मात्र दोला । किन्तु मेरे-बैसे व्यक्तिका विसने हिन्दी-भागके सर्वोन्द्रप्ट महा-कवि गुरसाई सुबसीदासत्रीकी

रामाययका सीमान्यवरा वर्षी क्रम्यवन किया है, उनके चरवाँमी श्रदाशकी उपस्थित करना कराधित चन्म हो सकता है।

गुजसीदाराजीने पहुत्तसे प्रत्य जिल्ले हैं और वनमें कोई ऐसा नहीं है जो सामान्य परिले देखा जा सके । किन्तु दिन्दीके विद्वार पुताई जीके मामसे प्रसिद्ध सभी प्रत्योंको वनकी इति नहीं नातरी । सम्बद्ध है कि कुछ निननमेदीकी प्रवार्ग निनमें पुताई जीका नाम है, वस्तुतः वनकी इति न हो, प्रतप्द महाकविके प्रोप हिस्सानेके विचारसे वनको प्रमाद्धकपति व्यक्तियत नहीं विद्याल सक्तार।

अनके समस्त प्रग्वोंमें रामाध्य था रामचरितमानसका स्थान समसे जंना है। मुन्ने कारण है कि हिन्दीके एक दिवात इस निया पको स्थान सम्रोम स्थानमानमान करने विचारत करने में स्थानकार्यों करने विचारते वह स्थान निजयपितकार्यों कुन ऐसी विग्रेचणाएँ हैं जो रामचरितमानसमें उत्तरी नहीं पायों जार्ती, किन्तु विनयपितकार केवल मोदे संस्कृत पुरस्कि विग्रेचणाएँ हैं जो रामचरितमानसमें उत्तरी नहीं पायों जार्ती, किन्तु विनयपितकार केवल मोदे संस्कृत पुरस्कि विग्रेचणाएँ संस्कृत पुरस्कि विग्रेचणाएँ संस्कृत पुरस्कि विग्रेचणाएँ सामचर्यकार से रामायवार्यक पुर्वों को सम्मानेतकार ऐसे बहुतरे सत्त्रज्ञ मित्रीं सामचरितकार सामचर्यकार स्थानित विग्रेचणा स्थानित स्थान स्थानित स

श्रीतामवरिवमानसकी एक सबसे बड़ी विशेषता बह है

■ यह सब अधियांके कोगांको-बहाँतक कि को कोग पड़ना नहीं जानते, केवल द्वान सकते हैं, उनको भी समान रूपते शिय है। इससे एक मोलामाला भागीया जितना भागिन्त होता है, विहाद भी उतना हो जानन्य शाता है। — व्या बड़ी ही गुण्यताके साम कही नगी है. विससे पाठकका सन कारिये सनावक की गी अर पानकारकी अधिकता, करवातकी स्पृत्ता, गर्क समीवना, अपुर ध्वनि समा भाव महाजनकी सुन्ता में समीवना, अपुर ध्वनि समा भाव महाजनकी सुन्ता में व्यादेशनाके कारत्य पद स्वक्को अन्यमुख करेती है। स्व वेद्यक्को देस कही विरयाननामं आजे नार्मी करें गिर्मे कुछ वास्तविक सुक्कि फॉक्से काक्ष कर बैठा है। हार्क पद अन्य सर्वाञ्चनुन्दरूषमें द्वारी सानने वर्गित्वी पद अन्य सर्वाञ्चनुन्दरूषमें द्वारी सानने वर्गित्वी पद सम्बद्धा पद अन्य करना है कि इंक्किन्न सामायवामें कीननो होने पुन करना है कि इंक्किन्न सामायवामें कीननो होने पुन करना है कि इंकिन्न

. श्रेलक सञ्चीचके साथ इस प्रश्नश संदित इस है।

(१) सदाकविका सन प्रतिपाद विश्वते दवा उसने अपने काएको शुका दिवा है। वह स्वास्त्रकर का प्रवीखता प्रवृत्तित करना नहीं है, वह सीतकररें महानवा और साधुकाको ओर ही पाइक्का आप कर्षा करता है। औरताके प्रति उसको प्रति (क्वा रू रामस्राक्त) उसके समस्त्र पर्योग्त समायते हैं प्रिणीती उसकी रचानाएँ अपने प्रश्न और प्रत्यान्त्रहै अपने प्रति परिपूर्वो हैं। वह कीर्ति कमानेके जिये रचना गर्म क्वा स्वास्त्रक समाय क्वाय औरतीयानाको दिवा कीर्ति स्थापना करना है।

(२) इस लक्यको सम्युक्त रक्का करि मार्गाने इस बातपर प्रवि रस्ता है, जिसमें उसकी मार्गाने स्वक समयने योगव हो। वह प्रपत्नी विद्या, हो की और रचना-कीत्रकारी प्रपत्न है किये नामांने कि करनेकी इक्या वहीं करा, वह तो राक्षांने कार्यों के समयकान पाहरूप है। निमाजितित पर वार्ग से हैं है सिसमें करिये हस विषयकी विशेषा की है हैं जिसमें साधारण 'आपा' कर्यका प्रपीत कर इस अभिवाना स्वक्त की है—

न्याया मनित मोर मति भोरी । इतिब मान ६० त्रमु चद त्रीति न सामुक्ति भोडी। तिन्हिंद कमा मुनि रही होती इति-इर-चद-रति मति न कुतरको। तिन्ह व ह ममुद का एकरी िसम्पर्धे सम्पर्धितमानसमें बहुतारे ऐसे श्यक्ष है जिनके राजकोंमें विदेशी पाउकको करिनाह्योंका सामाज करना रहना है, यह सामाज्या उनमें कुछ राख्य ऐसे भी हैं जो मण्डेक मारतीय राजकके किये भी सुगम मार्थी हैं, किया एक डिटाका कारण बेसल नियमकी सम्मीरता है। कविने रूप मारती रचना चारना पारिदाय और सामाग्री रिजानेके किये मार्थी की है। इस बारपकी एक बांधी निरंपता पापाली सराता है। कियमनी रचना सामाया जनताक स्वाकी सेवाय कराना चाहता है। उक्का उद्देश पुजली-एकको नियसता कराना सही है, यह शो चयने सामाज क्रोकीय कराना चाहता है।

(1) एक विरोत्ता वर है कि इसमें विना वाधा तिया इतारपोंका समानेश हैं। एक्यू-योजना भी बहुत री हुत्तर हैं। वसने कही कही चीरानेशन केर देहों के करने हुए मेर है एक्यू प्रधिकाणमें चार चौराहचाँके बाद कर होरेका कम रचना राजा है, औक्य-गोवा हैं। तिर्धक चेना कहे करने परिवंद के किया नाचा है, जिसके चना चीर भी रिचक हो गानी है। वाहकाँक मेरीहरू को कोच प्रचारक पुरावेंका भी सानोवेश किया गानी है, जिनते काराव्यक सीन्युर्व किया वह जाता है। मही कही जो विषय चीर मानाकी वक्तुकालक कारण ने बहुत है मानाकेशास्त्र हो गाने हैं। वसारपार्था इस कृष्यकों रिके, जिसका भारत्म हत्यकार है-

वय-अय सुरनायक जन-मुख-दायक प्रनतपाल मगर्नता ।

धर नावकायसमें हैं। सम्यान्य रचकोंधर वे वृत्य शुद्धकी भीरववा और सवानक योदासोंके खुव्योम्युल संसामके भैरिनीनाइसे परिपूर्व हो रहे हैं। सङ्काकावरमें इसके बराहरव श्रीक निकते हैं।

्रिणां हैनी रामारण के पर्दों को पूर्व के किये कावश्यकता-द्विमार कार्य के सरकार के दरकार, मुद्दान के कावमान कार्यों को कानार एकता में वह कार्य तमीताना का में हैं। कहां को रावुक कारावर सकते, करको कार्य कार्य कार्य केरोबी मोसामीतामें ऐसी विधित्र वार्य कार्य कार्य होत्री मोसामीतामें ऐसी विधित्र वार्य कार्य कार्य ऐसा करोब में मुख्य कर सरकारों कार्य कार्य कार्य हैं। मैं में पूर्व कार्य कार्य कार्य कार्य केर्ड हैं। में मार्य कार्य सरकार कार्य कार्य केर्ड हैं। इसी मार्या विशिव्या सर्वाम, अध्य बीर कलाव पर्यों भी गायी कार्यों हैं। एका स्थान चतुमासोंकी द्या दील पहती है। कदावित् उपयुक्त दल्दमें यह एक पंक्ति चतुमासका सर्वोत्तम उदादरण है—

को मत-मग-मंत्रन जन-मन-रंजन गंजन विपति बरूचा।

कवि वर्ध्य भीर पाँकि मयोगमें, विषय-मिराइनके विवे मृत्युंकि गिर्दे में पाणी विशेष स्विका प्रस्तैन करता क्षेत्र मान्य क्षित्र मान्य क्षेत्र मान्य वाच स्वांके द्वारा म्यायिक विकासको एटा विशास है। सामान्यमं ब्रिडिश विरायों सामा वनके मान्य क्ष्य क्ष्यों के स्वांके स्वांके स्वांके प्रयोग किये गये स्वांके क्ष्यों के प्रावंक प्रयोग किये गये हिंदी मान्य क्ष्यों के प्रावंकि किये मान्य क्ष्यों के प्रयोग किये क्षय क्ष्यों के प्रयोग किये प्रयाग क्ष्यों के प्रयाग क्ष्य का व्याग क्ष्यों के प्रयाग क्ष्य क्ष्यों के प्रयाग क्ष्य का व्याग क्ष्यों के प्रयाग क्ष्यों क्ष्यों के प्रयाग क्ष्यों क्य

शुसाई तुबसीदासजीने सरक शान्त वर्णनमें, गार्डस्थ मुख-दः खों के चित्रवामें (हा ! दीना कैकेवी), युद्धके मामात-प्रतिपातके वर्णनमें, सन्तान और माता-पिताके, आई-आई भीर पति-पत्नीके पारत्परिक खुद्रज सम्बन्धके संकित करनेसे एक-सी कुराखता दिलायी है। सुदीर्थ बनवासकी यात्रासे पूर्व राम-सीताका जो वार्ताबार है वह तो बदाविय सम्पूर्य रामायवामें ऋत्वन्त बकार प्रसंग है। जिस सरसासे राम-चन्द्रजी वनके कष्टमय जीवनका वित्र शीचकर सीताको द्वःशोंसे बचने और धरपर सबकी देखभावमें सुख-पूर्वं ह रहने-का उपदेश करते हैं. इसी वीरताके साथ सीतामी भी मध्येक दशामें पतिके साथ रहकर उसके बढ़े-से-बढ़े कप्टोंमें समान रूपसे भागीदार बनना चाइती है। वह यह नहीं दिललाना चाहती कि कठिव कार्यों का विनय-पूर्वक करना केवल कर्तन्य या मकिवस है, वह तो घपना दावा इससे कहीं भावपनी जन्होंमें पेश करती है, यह कहती है कि असके साम बनकी कठिनाइयाँ मोगना मेरे किये स्वर्ग-सदश है चीर उनके चलरा रहनेमें यह राजभासाद भी नरब-तत्त्व है ।

(४) हाजधीतासतीके दारम चिनोहरर हो एक स्वयन्त्र खेल विद्या का सकता है। शादिण तथा पीयन दोनोंसे विनोहकी वही चायरमकता है। श्रीयन के किसी विद्यान्त्र विनोहको समाय एक बहा दोन समया जाता है। प्राय: हास्योखाहक एस तथाब समर्थे खागठठे हैं, बराहरपार्ध,

समस्य कहें नहिं दोन गोलाई ।

षधपि कुछ सजन इसमें भ्यान न मानकर इसका राज्यसः भनुवाद करना ही उचित समसते हैं।

कस्य विषयोंको भारित काम्यमें भी लोगोंको व्यभित्येष भिक्ष-भिक्ष हुमा करती है। इस पाठकोंको कवि विदारीलावकों रचना विरोप मिस माजुम होती है। सम्दर्शकनामें के कादरस हो नदे मधीय हैं, किन्तु उनकी सतसहोमें इसके भित्रिक कीन-सेम्राय रह बाते हैं ? इस दूसरो लोगोंका प्रदासको कविता बड़ी मनोहर मजीत होती है। निजय ही न तो कोई भी मजुन्य उनको साहित्य-सुन्दरता तथा मनोरमताको लगुता महान कर सकता है और न उनके पर्वोक्ष माजुने ही सन्देश कर सकता है। इस विषयपर हमें भीकाश्वी ही सन्देश कर सकता है। इस विषयपर हमें भीकाश्वी की निर्दोष समेजीके करर कार्जोहजूके वे बहार हमस्य हो सार्व हैं- है सालिकारी सार्व है। बारी को (Flow on thou shining river)) महारु दिव पूर्वों और कवांचे समझ एक देवे प्राप्त हिन्दे बचा नीपेकी समत्व मूमि उनकी सनितान यो सक्ती विचारिक का हमान कुन देवा है स्वाप्ता की स्वामें भी मनोहरता होती है। सहाना की की है कम रुक्तोंमें इतने देवे मान नहीं स्व एकता वी कम रुक्तोंमें इतने देवे मान नहीं स्व एकता वी कम रुक्तों हमने देवे साम नहीं स्व एकता वी कम रुक्तों हम कहा । उनके पाँच वां कोई समाना नहीं कर सकता। उनके पाँच वां बाव हमें।

हिन्दी-साहित्यको घरेक इविशाँन समुद्देशारी वर्ष है, किन्तु तुक्रसीदासका रथान निजय है। वस्त कर्त कें है। वस्त्य कवित्रांसे तुक्रसीदासकाशिक्ष घरेगा भें किं एव मके ही हो परन्तु तुक्रसीदासकारों से केंद्र पर्व मक्त हो हो। परन्तु तुक्रसीदासकारों के केंद्र पर्व और विश्वपूर्ण मार्गोका स्थान है। वार्ण केंद्र पर्व करित विश्वपूर्ण मार्गोका स्थान साह हो साह केंद्र पर्व करत्व अर्थसाके हो पान महीं, अनेक भी है बीच है करत्व अर्थसाके हो हासका शक्त कराहत्व साह कर्त आह भी हुआ है, हासका शक्त कराहत्व साह कि समस्य दिन्दी-साहित्यमें ऐसी कोई भी उठक में सिसका राज्यसाहत केंद्र एक विर्वको इस्तर्ग

राम

रामही चराचरोंमें व्याप्त है अलप्ड नहा ,

रामका गुणानुवाद, पुण्यका आगार है। रामसे सभी महान है सुसी जहान चीच , रामके लिये सदा प्रणाम बार बार है। रामसे जुदा कमी हुआ नहीं किसीका चित , रामकी कया सुधा-त्रियेणिकाकी धार है।

राममें रमें मुनी, मुनीरवरोंके मानसोंमें , राम 'विष्ण' सर्वमा त्रिष्टोकका आधार हैं ॥

र्गवाविष्णु वाण्टेय, विद्यामुख्य 'रिपु'

रामायण संसारका सर्वोत्कृष्ट महाकान्य है

(देखक--दास्त् औ एच० डब्स्यू० नी : मोरेनो, एम० ए०, यो-एच० ठी०, प्रेसिटेण्ट 'पॅसलो श्रण्डियन शीम')

सं गतको सभी मानते हैं कि शामायव संसारमें सबसे जुशाना महाकाप्य है; किन्तु पर सर्वोष्ट्रक थोर मारिकाय्य दे-दूरी गहुठ कम बोग बानते हैं। पेरिवासिक हाजके सक्वोदयमें रवे बानेस्स भी यह प्रध्य सर्वेसा महितीय

इम है। पथि पूनान, रोम, इस्ती, इस्तीयह, फारस बन कम हेरोमिं भी महावापोंके जिलनेवाले समय नम्मप्त सापिग्रंद होते पे हैं किन्तु सांस्कृतिक सीन्यर्थे ज्यानीक पूर्व होतेके दारत्य रामाप्यको वह गौरन-युक्त महत्त्व सदा मार रहेगा जिलका शतिकम्या कथा मिन्स्यो क्षेत्रकम्या कथा मिनस्यो क्षेत्रकम्या कथा मिनस्यो को स्वी का साम्रा

तामपन्नमें महाकामके लिये बातरणक सभी नियमोंका गतक किया गया है। यदारि दूसरे महाकवियोंने भी उन रिवमोंकी करहेबना नहीं को है क्यापि हिसाकायल उथ रिवस्की मंति यह उन सबसे कामे वहा इसा है। को गायरणकी मंति यह उन सबसे कामे वहा इसा है। को गायरणकी महत्त्वाकी हुएसम्क बरना चारते हैं वन पुरुलोंते हैंवे महाकामके गियमोंका रिरवेण्य क्रियक क्यापेक होगा।

बारकके समान महाकाम्यमें भी तीन महान् नियमीं (मिदान्तों) का समावेश होना कावरवक है-(1) विषयही महानदा-प्रयांत् इतिहास तथा पुरावाँके सहान् चीत्र वित्रण, (१) सर्वाष्ट्रीय चमत्कारपूर्ण कियापु (१) भाराची बल्हरता। ब्रद देखना है कि रामायया की तक इन नियमोंको पूरा करता है। भगवान राम स्वयं रह महान् समार् है, उनका जन्म एक ऐसे महान् राजनंस्में शेवा है जिसकी सीमा देवताओं तक पहुँची हुई है। मनुष अन्हें ईश्वरका भारतार मानते हैं। अनकी पतियता को महाराजी सीताजी उसी प्रचारके दूसरे महान् राजवंग्रमें क्रम हेर्ना है धीर बपनी उच रिपतिके बनुरूप, बनुकरबीय उपात हिम्बित इस महाकाम्यकी नायिका है। अगवान् बीतमंद्रे बाता बच्मवर्में भी वे सारे सुन्दर गुख वर्तमान है वो एक राज्युमारके किये कावरमक है। इंटियके कादि निरायी बानराडे बाबारवाचे प्रस्त, बीहन्मान्त्री रेकाडोंडे करवार है जो एक बार बाहुब शक्ति कथीयर

आरुतिके नामसे असिद्ध ये चौर (रामायवर्म) द्रिष्यप्रेराके शासक हैं। महाराजी सीवाका चरहरण करनेवाजा रायच बहुतक क्रिकाली राजा है। यचि वसकी सारी कामनाएँ पार्याविक हैं वचापि राज्य-वैनवर्म वह किसी भी मारतीय परेशसे कम नहीं है।

कारपुरे कात्य-विदानके जनुनार कियी प्रत्यको प्रशासनको केदीये कारेडे किये बीन कौर निवर्मोका शासन कारपुर है। वे हैं—बाब, प्यान क्या किपाई। पुन्डा, प्रशासनकी विद्याकीय सम्मान पुर हो बाजने होना चारिये। वृत्रियामकी मीति हमका मिन्नार पुर कारणे

द्वावनगरका चनन सवा दाइ. इनिवाम (Aecea)। पश्चिमेन (Anchises) को सहायता रेगावना रसे वेदना मोकी श्वादि - बटनाएँ यूनानी इन्टम्पानी

गपी हैं। सँगारके महाकार्योंके साथ तुत्रना करेमें धन वदी सुन्दरमाढे साथ उपन्यित दिया वा सदता है। माना विचारमे 'इजियह' को शमायग्रके सामने स्व स्की परम्यु बहुत-से स्पन्नीयर वह प्रतिमादीन हो बडा है है रचनारीकी सवा विचारोंकी मनोहरताके काख राजस निजय होती है। इन दोनों महाकामीन उर्दुत हैं पुक्ताओंका अनुमत्य किया गया है और दोतों हम स्मि भारता विशेष समत्कार स्तावे हैं. किन्तु रामारव विधा है तथा सुन्दर दरवोंडे वित्रयाडे कारण एक प्रदुत्त हर मास करता है। स्वयं महाकवि वर्जित स्वीकार करा ि थुनिस केवल इजियहकी प्रतिश्हाया है। किन हर्ने इक्षियकके समान भाषा और भाव विकतित नहीं हो ले हैं, क्योंकि इसमें ऐसी कोई बात नहीं, जिमे होलके ह उपमाओं के सामने रख सकें को संसारमें बलन हमारी हो जुकी हैं। महाकविशायरे (Dante) हे कामानि कि तया वर्षानकी रमस्थियताका समाव नहीं है। इसके कारे ह इनकर्नो (Inferno) परनेटोरियो (Purgatorio) । पैरेडाइज (Paradise) नामक प्रत्योंने ऐमा सुन्हा कि है कि जिसकी प्रतिविधि बाद्यनिक क्याविर् वर्गला कर सकता । किन्तु कभी-कभी बायटेके विवारोंगा रागान परदा पड़ बाता है, यही कारण है कि वह बार्ज़ नि धर्माध्यचासे पृथा करता है उन्हें नरकमें पहुँचा हैता है इनकर्नामें रिमिनीको (Rimini)केन्सिस्काई (Francest एक सुन्दर उपास्थानके निमित्त वह कितने ही बिहोग आवोंको सृष्टि करता है। बमकारिक वर्षनके हिरे हुई बपादान मिल्टनके 'पैरेटाहज बाट में हैं, किन रेजाब वर्णन करते समय यह उसीको सगमग बास्रविक मार्च रूपमें बा देता है। इस काव्यके निर्दिष्ट नायक, स्तुन पुत्रका व्यक्तित चात्यन्त पीया चौर निष्यम हो बाडा है है हम ईसाई-घमें-प्रन्यकी कयाके कार्य झदाबी हिसे कि है, मिस्टनकी रचना के कारण नहीं। मनुष्यकी प्रथम बरहा गीत गानेवाले नेत्रहीन प्योरिटन (Puritan) मार्क मिस्टनके आय-प्रकारानकी पेरालता, वृत्द-प्रवाह तथा अवर की अञ्चरतामें कोई कमी नहीं काती। किरदौसीहे शहराज कारसके शामार्थोका इतिहास है-जिसमें क्रकिशी रत्तमका विशेष वर्णन है, किन्तु यह कार्य केंद्र हवा है।

बुगरे बाजनक नदी वा शक्ता । उदादरवार्थ रीमका धागग्रन सभा इह नैयह का निग्रोतियन काम है। समायण्ये, भीरामतीके सनवाम संया केवज जमी आविती किये गये परावमके धीरे-ते शमयको खुनकर कालकी वृक्ताका सरहा निर्वाद ष्ट्रमा है। योश्परियश्के भागियो (Othelo)नामक मारकोर भी बामकी एकगाकी रका हुई है, ठीक बेनेरिएन खोगों के साहबय ही रपर धाकमच करने के पूर - बाँचे जो (Othelo) धारती सेनाडे साथ प्रस्थान करनेडे लिये विचार करते समय ही महिलहच्च बाहगीकी (Iago) भूतवाका शिकार कर जाता है। त्रीक नाटकॉर्ने भी कासकी पुक्रमाना बहुत कथिक व्यान दिया गया है। चार्यात् जित्तने रामधमें वाशविक शोकार्यवसाधी कार्यों की (Tragedy) समारि होती है बसने ही समयमें नाटक्य भगिनय भी समास दोता है। सागद देनरी प्रथम (King Honry V.) नामक नाटकर्ने कास पूर्व स्थानकी पकारका चतिकमण हो साता है और यही कारण है कि शैरसरियर काज तथा स्थानको एकताकी क्रमीको पूरा करनेके बिये सामृहिक-गान (Chorus) उपस्थित करता है। रामायवामें स्थानकी एकनाका श्रव्ही सरह निवाह किया गया है। इस महाकाग्यकी सारी सीखाएँ भारतवर्ष तथा खद्वाके मैदानोंमें होती हैं । संबाद हेनरी प्रधम नाटकमें स्थान, इंगक्षेयदसे फ्राम्स तथा फ्राम्ससे इंगक्षेयद परिवर्तित होता रहता है। किन्तु जैसा ऊपर कहा गया है-- सामृहिक गानसे वह सीरव वन जाता है। रामायखर्मे कियाकी एकताका सी पालन होता है, समस्त कियाओंका सम्बन्ध केवळ भीरामचन्त्रजीके बनवास तथा उनके बौटनेके सिवा भीर किसी पातसे नहीं है। सीटनेके बाद धीरामचन्द्रश्री और महारानी सीताकी क्या दशा हुई ? बनमें किसप्रकार महर्षि बाल्मीकिने खव और बुरा-इन दोनों बुमारोंका पालन-पोषण किया ! किसप्रकार वे अपने राज्यमें धुना सीटकर साथे ? इन सब विपर्योका वर्धन रामायकों है। महाकवि होसर रचित महाकाच्य इवियड (Ilisd) की समाप्ति, पाट्रोक्बस (Patroclus) के इत्यार हेक्टरके (Hector) मारनेके कारण एचलिजके क्रोध-समनमें, हो जाती है। इसप्रकार यह दु:खान्त दरय पूर्व हो आता है, क्योंकि प्चविजके कोघरो निकलकर दुःखके धनन्त स्रोत प्रट पहते हैं और वह उन्होंके गीत गाता है और कुछ नहीं कहता. समा सुतक सम्मानार्थं स्तक-किया-सम्बन्धी शेख .¹ games) की समाप्तिमें महाकाध्यका श्रवसान

. खकड़ी के घोटेकी कहानी,

प्रदेश तथा युद्ध और सन्धिके विवरकोंसे भरा हुआ है. बेनके पदनेसे मन ऊब जाता है। फिर भी इनके मध्यमें तोहरावडी एक भामर्थमधी कहानी हैं। स्स्तमका भज्यवेजान Azerbaijan) देशनियासिनी अपनी वली ताहमीना Tabeminah) के साथ केवल एक राजिके लिये शयन मना, सदनन्तर उसकी प्रजानतामें सोदशबका जन्म घेना ण बनी सोइरावका संयोगवश चपने पिताकेहारा मारा बना बादि रोमाञ्चकारी घटनाव्योंसे भरी 📊 इस करूव मानीको परकर ऐसा कोई म होगा जिसकी धाँखें सजब न हो हैं। बालवर्ने, जैसा कि स्वयं कवि फिरदौसी कहता है के पदि शाहनामा सैसे महाकाम्यकी रचना न हुई होती र इतम एक मामीया भीर ही रह वाला ब्यौर उसके राक्सकी राज्या केवल प्रामीख भारोंकी जिल्लापर रह गि । फिरदौसीने केवल इस प्वींय देशके महान् वीरके रिवको ही बाहित नहीं किया वितक दिलको दिसा देने-थि सीश्रावकी कहानीको हमारे सिमे रख छोदा, सो त्रव मी चारसके मासाद एवं चन्तःपुरमें रहनेवालेके रवको प्रशास्त्रित करती है।

मर्गार-दश्मोका श्रीरामण्याकी, महराती शीमा, क्रिम्बदी, महासेद हन्मानजी तथा राज्यका चरित्र की ए मिल्की समयके स्माप्त मराहर्म सर्वता शामीकरूपते क्रिम्स देखा इसमें सम्बेद मार्ग हि हिन्दूनमृतिमें क्रिम्स एक्टब्स स्माप्त सम्बोद स्माप्त समि समि क्यार्ग हिन्सु पर्तमाया स्माप्त करिया किया क्यार्ग हिन्सु पर्तमाया स्माप्त करिय किया क्यार्ग हिन्सु पर्तमाया स्माप्त करिय क्यार्ग समि क्यार्ग हिन्सु पर्तमाया स्माप्त करिय क्यार्ग समि क्यार्ग करिय मार्ग सम्बाप्त स्माप्त स्माप्त समि क्यार्ग करिय मीय भी मार हो वे हिन्दु र्याग्यक्य हाने क्या क्यार्ग करिय भी मार हो वे हिन्दु र्याग्यक्य हाने क्या क्यार्ग करिय भी मार हो वे हिन्दु र्याग्यक्य हाने क्यार्ग क्यार्ग स्माप्त स्माप्त

 हेनल ग्राफिर्ज भीमके समान है, इसके सिना उसमें और कोई ग्रम नहीं है। इसके विपरीत बोदामनदानी इस मुख रिस्तानको सिम्बाती हैं जो चरावरका कामार है क्योंकि परमामाका ग्रम्म विधान 'बहुगासन' है। वहि चान सीनाजी होतों तो बनके सामने हमारी बहुनें—चाहे वे मान्य देशकी हों या पात्राव्य देशकी हों, बजासे नतिरार हो मानी क्षेत्रकरणाजी पर्यं चीर मानित हो होगोत है, बनके बाद बस मकारके बहुत हो कम माहे हमारे देशनोरें वाले हैं। कुकासका घरिसे केवल सरक और सर्वित्य कानेवन (Jonathan) और वेदिव (David) की काम कहानी बुक प्रथिक जेंकती है।

डु ऐसे कोग भी हैं जिन्हें राजायवाँ भीर मी महक्त पूर्व विषय प्राप्त होते हैं। उन्न आपकारीका विचार है कि सीवा-अपन्यक कर्य दनके हारा बनायों गयी गरारी को है। इसी वावास्तर वे करते हैं कि राजायवाँ वाधावास्तर वे करते हैं कि राजायवाँ वाधावास्तर वे करते हैं कि राजायवाँ वाधावास्तर के करते हैं कि राजायवाँ वाधावास्त्र के निक्त करता वाचाने पूगने-फिरनेवाड़ी बंगकी वाधियों के लेती करना सिलकावा क्या यावानुकृत वीवनके काम करवायों, जिन्हा उन्ते विचार वाधावास्त्र वीवन करता वाधावास्त्र क्या प्राप्त कर्य है हो भी अपने वाधावास्त्र क्या करता है। अपने वाधावास्त्र क्या के वाधावास्त्र क्या है हो भी अपने उनसे अपने प्राप्त क्या की है। इसकी वास्तरिक क्या है वाधावास्त्र क्या करता है। विचार करता है।

वालमीक मन्ने ही सकु रहे हों क्यिन वह तुर्गोठक समन्ववाहे वह रक्षण मारि हैं, दिसके समीव पहुँचना समन्व है क्या दिस ता तथा परिक्रमण्य करना समन्व है क्या दिस ता तथा परिक्रमण करना समन्व है। रामाप्यकी कथा उन इत्तान्योंने मंदी है तिसके अध्यक्ति का तह रामाप्यकी केवा नीवीं कीं। है तिसका बाहू रामायकों केवा नीवीं वीत संगानी केवा किया करना कींग हमार्थ है। यहारी मारामार्थ में मिरि हमार्थ कहानियोंने मारित केवा कल्यूपी म्यूपी मोदी हमार्थ कहानियों की तिसकेवा कल्यूपी माराम्यकी मीदि कार्यों के तथानि माराम्यकी मीदि कार्यों केवा कार्यों की स्वानियों की समार्थ करना कींग मार्थि कीं स्वानियों केवा कींग करना कींग स्वानियों कींग सम्बन्ध कींग स्वानियों कींग कार्यों कींग समर्थ करनी कींग स्वान्य वार्यों कींग स्वान्य कार्यों की स्वान्य कार्यों कींग क्यां क्यां क्यां क्यां क्यां क्यां क्यां क्यां होंग रहेंगे।

'रामचरितमानस कवि तुलसी।'

थत्रप-मनुरिषु-नाभिसरमें के सिट्य कादिन्द । मकिंग्सका है मरा विसमें मधुर सकरन्द ॥ मात-सीरम पुत्र त्रिसका वह रहा सब करेर । है। रहा अठिवृन्द रशिकांका वहाँ हुन्छेन ॥१॥ कृति-तमीमय कारको जिल्ले विचा लुक्यत । बद्दः मुनामनस्त्रिनम्हः 🕻 बन्द्रीस्त्रतः॥ कामीपुर्व दिव्य-अनुसम्बद्धि करुका रूप। साधु तुल्लोकस्का है तक्त्रका जनुष।।२॥ दिव्य-१६ व्याप करेंचे वस मरपूर। मुन्द्रा-सुनिरम्का स्ट स्ट्व रचना कर।। सम्ब स्थानस्य बोल्ड-बान्त-संगुक। व्याहरू स्टब्स् मिक-ससे मुक ॥३॥ ३१.६१२वः श्रेन्स और पवित्रतर उद्गार। अपुरीकरणः तथा मी बीव और विकार।। हुस्पते 😂 हूरन मानस-वृत्तिकी भी बात । इन्द्र और विरुद्ध मार्थोका परस्पर पात ।।४।। रे उनकी र्राटनदी-बारीश-बन्द्रालीक इश्र कमत-विकास सामम् को इ-दम्पति शोक ॥ इन्दर्भ इति-सेत हैं त्यों कही नगर-गुहार । क्षी बरकतकी छटा है कही राज-सुबाट ॥५॥ <u>१प्र सुनुतवादिताका है अपूर्व विकास।</u> क्यारा और समासका भी देखिए सुत्रमास ।। वर्षे उत्तर कथाकी सुचनाका दहा। अनुवृत्ती मान राजतिमुक्त विनित्र प्रसार ।।६।। श्रिव-दापति-त्रेमका शुद्धत्व और महत्त्व। 🛊 बही आदुरव त्यों ही है कही मृत्यत्य ।। राममीक अनग्यता अद्वेतकारेर देशोदी भाराधना-संयुक्त ११७१। सम्ब ब्रद्रशी महैत्रा की जग-माबाबाद । किर विशिष्टादेश भाग देशका संबाद ।। हम मिरोबी मात्र हो। समर्गात होतह साला । हर्ज्यित सर देव चले हैं समें निकास गटा। ्रिटिंग ऋषियों हे स्थित सनुसद द्वया सङ्ख्य ।- दर्शन और मी सद्वेष ११ तर्वति सीच त्वता तच्या

क्ष्म असा ग्रीमा स्थला।।।।।

रामतस्य व्यवसर्वे और अविन्त्य दिन्न उदार। क्यों अनुन्ताकाश और अपार परावार॥ मनो-मति-बाचा परे है वह विनित्र अनुर। मार्वक सत्पात्रमें दस्ता है उसका स्वारा निज सुदाचि-विद्यासके अनुकृत है वह ध्येग। बस्तुतः वह तस्य क्या है यह नहीं सा हैव।। तज दुराग्रह-देव अपने भावके भनुसा। इरापदको पूजिये सत कीजिये तकार ॥ ११९ यह जगत् सद रामही है, रामहीश देउ। प्रत्येक अणु प्रतिरेणुमें त्यों है उसीकी वेठ॥ है समस्त सु-नाम-क्रपोमें उसीकी हरति। है वहीं वो कुछ कि है सब अस्ति पवन् मारि॥११९ यह विमल मत हो गया त्रिनसे प्रचारित निर्ध स्वामि तुलसीदास है वे लोड पुष्य-पति। शुद्ध बादबत-धर्मका जिनने क्रिया क्या। सकीवनी सवर ॥ आर्थ-शरीरमें शान-रनिकी ज्योतिमें कर द्रेम-अमृत-पुरेत। दिन्य चन्द्र उमा दिया है, मन्य करिनदीन ! निर्विकत्त्व सुकत्त्वनामुतः करित कान्य हुकना। क्षानगरिमामय निशद है उपनिषद् बेहत्ता। हो रहा है, फिर, कहींपर मिनि मिरेव मिरेव। है कही त्यों नीतियोंका दिवातर स्वस्त्रन। यह पु-रामचरित्रमानस है मुमलन हव। हो रहे जिसके अनित है कारानी हुन । ए तर गरे सालों है दिनका पाउ करंद हद। स्वतःसिद्धः सुमन्त्रः है जिस प्रत्यका प्रतिस्य स हो यन कितने निरधर पड़ किंग निर्मा मुनुषसे बनि और बनिसे स्टान्यम सार्धाः रक्षते ही शर किसे ही की की क्षेत्र च जुरे हैं रोहने पुर की के समयत रिविष संबंधी करमाँ, बाजर्ग हो। कुर्व करनेके क्षित्र है करवान करण है मर्वितिकम्पितिक्वि मोर्च हे हे हो। वे प्रस्थितिकों हेरे हैं हुए गाँ च्यांन बलल्डे बलल्पे स्तर्भ हो। पूर्व देश अंदिके रोण हरपर मंत्रिकार

पृथियों मुरसी हुई करती है सुन्दर हास। नने हेता है दिवार सर्वीय-नार-दिवारा। । नित्त पुरास्ती के देश का नार्व्य गुण-नार। न्य महाकोव्य को किस मीति हेत कस्मान । ॥१-०॥ गुरू सम्पन्नातम् ये सुर्वे वे निर्वार। दिन्य कम्बन्दरामी या श्रेय-नीर व्यवर। । दिन्य कमान्दरामी या श्रेय-नीर व्यवर। । दैन या सम्बन्ध होन्य कर या साकार। । दैन या सम्बन्ध होन्य कर सहस्वा पर। ॥१-०॥ बहाकि मुनित्रत्र ये, ये मकरात नहार् । सदम परक्षकारत यहामा वे निद्वार् ॥ किन्द्र-दाभि निक्क मारत-वेता के आधार । वरि-अनुमद-विज्ञाती परमार्थक अन्तार ॥२१॥ राम रामचरित्रमानस रिवत कर अभिराम । नवामि नुदर्शिरासानी कर दिया वह काम ॥ सक्त निभी के हामार होगमा विन्तेतु । साक्ष्यका सोमान त्यों संसार-संग्रा-सेनु ॥२२॥

शास्त्रके पर समिद निर्ते करिकां कर 'बिन्दु' उसाहि चहैं। राज्य चमत्कत असे अलंकर त्यों रस-बीति निवाहि रहें। मूल प्रमुख मने होड़ों कहतूँ सरि चानकार्य कहै। चैते कनो करिताहि कहैं तुससीसों हुँठैं करित हों।। —'कंशिल्य' महाचारी

रामायणके कुछ राजनीतिक सिद्धान्त श्रीर शासन-संस्थाएँ

(केखक-श्रीयुक्त बीoबारo शमचन्द्र शीक्षिणार पमoपo)

चीन हिन्दुगासनके मार्थों स्वीर सासन-संस्थायों स्वीर मार्थासतके स्वियं महाचार महाभारतके समाय रामायच भी सामन्य विश्वाची क् बाव है। वस्ती इस हिसे रामायचहा स्वायन स्वारमकृतके किया बाता सारायक सा समावि संबयक इस विश्वाची, हुसा-क्षा बुद्ध मार्थोंके

रामायसका काल बांबिड-से-श्रविक ईमाने पूर्व पाँचशें शताब्दी और कम-से-कम इंसामे पूर्व इसरी धतान्दी नियांतित किया है। भी॰ ए॰ ए॰ सैकडीनेसकी सामतिसे रामायवाचा मुक्य भाग ईगासे पूर्व पाँचवीं बातान्दीके पूर्व प्रशीत हो लग्न था । 'दशस्यज्ञातक' नामक बीटमन्यने वह राष्ट्र हो बाता है 🎏 रामापर्याप क्यांडे डक मागरे आतकका खेराक परिचित था । वेबरकी यह चारपा कि, इस क्यामें चुनानी संस्कृतका प्रभाव है, विस्तृत्व निर्मुक है। ऐसी दशमें यह कराना युक्तिमंगत है 🖪 मानबींबी रचनाके पूर्व भी भारतीय जनना हम महाबाम्बके श्रविकांश आयोंने वरिषित थी । यह तो सर्थममात है कि शमायशका सञ्चल भी ईमामे हुगेरी राजाप्दी है श्चग्रथम् वा उसके पूर्व ही हो चुका या। यदि हम हम धारचाको भी स्तीबार कर खें शो रामायदा ईमी मन्दे बहुन ही पहलेकी रचना लिख होनी है। भनः इसमें बर्चिन विधान मानीन हैं इनसिने ने मान्य विधा विराहरों है किने बाचल उपयोगी हैं। रामायच पर्म, प्रमें भीर बाम प्रम विकारी प्राप्तिका कारोस हेनो है। (बा॰स॰६ = १।६१-१४) इसमें सामाजिक पहित बर्यांबमपर्यं हे प्रदुषार स्थेपन ही सबी है । इस प्रतिका सार क्यार्थ पर नियर रहना है और

यही सभी प्राचीन प्रत्योंका प्रधान विशय रहा है। स्वधर्मका भारतमार है कि प्रत्येक पुरुष-भी भएने कर्नम्यका पातन करें। यद्यपि महाभारतने राजवर्मको सब धर्मीमें श्रेष्ठ बतज्ञाया है, किन्तु समायब इसपर बतना और नहीं देती। यह धर्म और अधर्मका भेद निश्चित करती है---

रवर्षं श्रीरामचन्त्रजी बढते हैं---

राजवर्म अहं बचने अवने वर्मसंहितन (410 tto \$ 1 to \$ 1 to)

इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि रामायखंके अयोगा राजधमें के भौजिक सिखाम्तको मानने हे सिये सैयार है, पर में इसीको प्रधान धर्मके रूपमें नहीं मानते । रामायवार्मे राजधर्म वही बतकाया गया है जिसका राजधि सोग पासन करते हैं । इस धरिसे रामायवामें एक महान् नैविक और सदाचार-सम्बन्धी सिद्धान्त निहित है।

रामायक्रमें वर्षित राजनीतिक परिस्पितियाँसे यह स्पष्ट भान पहला है कि उस समय बस्तुतः सम्पूर्ण भारत भयोध्या-सन्नार्के माथिएत्यमें था । श्रीरामचन्त्रजीकी गठि द्वियमें कन्याङ्गारीतक निर्वाध थी। बुसरे शाखोंके शासक भीर सामन्तगण या वो इच्चाकुर्वशीय राजाके सहकारी थे या उनके अधीनस्य थे । दवहकारवयमें वहाँ कहीं रामचन्त्रजी गये, वहीं उनका स्वागत किया गया । . वनका चातिच्य करते हुए चगस्य ऋषि कहते हैं--

> रात्रा सर्वस्य कोकस्य वर्मवारी महारथः । पुजनीयस मान्यस मदान्त्राप्तः त्रिवातिथिः १६

पुनः चव भीरामचन्त्रजीने सुधीवसे मैत्री करके उसके भाई वाबिका वप किया, और वन वालिने उनके कर्मकी चन्यायपुक्त बत्तवाया, तव रामचन्त्रवी सङ्से बोक्ष बढे--

इस्वाङ्नां इयं भूमिः सरीलवनकावना ।

(#1 5 E 1 X 6 IF)

'बिल्किन्याप्रदेश, इचराकु साम्राज्यका युक माग है और उस साम्राज्यके एक प्रतिनिधिकी हैसियतसे सुन्ने दुराचारियों धीर धर्यामयोंके नास करनेके अधिकार आसहै । इससे पह स्पष्ट हो जाता है कि दक्षिय आस्तका सारा प्रदेश भयोष्या-सन्नार्के समीन था।

शासनप्रयाबीका स्वरूप एक राजवन्त्र(Monarchy) । . शासबतम्त्रके प्रति प्रकार्मे पैतृक-भावनाका प्रसार था ।

व्यर्थेष् राजा जजाकी बारनी सन्तान मानक स्वर करता और खोकप्रिय होता या. एवं इपने स्ट्रॉन मना भी पूर्व राजमक होती थी । इतन होरेन दे राज्यमधान्त्री निरङ्गा नहीं थी, यह निपन्तित राज्यक भवाजी थी । नियन्त्रक 'मन्त्रिपरिपर'के हता है उ जिसका प्रधान सदस्य प्रसेदित होता या । सब है से चौर 'बानवर्' मादि मन्यान्य समितियाँ मी होती हैं। इन सबसे बद्धर कुछ ऐसे खीडिक नियन है, जिल सन्दार बरना राजादा प्रमें समन्त्र वाटा था।

तरकाबीन राजनीतिक सिद्धान्तके क<u>न</u>्यार विजय किये बानेपर राजाको बराजकता (Anarchy) होएंसि (Revolution) का सामना करना पहरा वा । वि भौर 'नैगम' सदय हुन बढ्रावनीविक संसार हो दे जिनके प्रतिनिधि देशके शासनमें मुक्य भाग क्षेत्रे वे (व र २ । १२७ । १६) श्रीरामचन्द्रजीके बुस्तहरूकी केल समय ये सब प्रतिनिधि उपस्पित थे। राज राज देहावसायके उपरान्त वह अस्त्यी रामकार्यने राहे अविकापर पुनर्विचार करानेके बिये सर्याद बन्हें होता है विये प्रार्थमा करने चित्रकृद रापे ये, इस सन्द है। बपस्थित ये (वा॰ रा॰ २। मा १२, मर ११०)।हर्ल बीकी सुलुके कानन्तर पुरोहित महर्षि वरिहारी भरतको राजधानीमें शीध हवारेडे विषे दूर होते हैं रामाययमें बादिसे अन्ततक पुरोहितका स्वाद को अन्त है और वह कौदिल्यके इस क्यनको सह प्रमादित है कि को राज्य एक योग्य प्ररोहितके ब्रह्मखाता मि होता है वह सदा उबत होता है, इसकी क्रमी हारी नहीं होती । युवराअ-निर्वाचनके प्रमार विचार कि। वाले कोगोंसे 'चौर' और 'बानपर' के मतिविधि भी सिर्जी वे । (बा॰ श॰ १।२ । १६-२०) इसाबा हुव संस्कृते महत्त्वके कथिकार मास ये और वे राजनीतिक कर्र कि करती थीं ।

एक राजतन्त्र-शासने माथः पैनुकाविकारहे स्पर्वे हैं। बहुषा पुत्र हो विवाका उत्तराधिकारी होता वा। क्रमिनेहे औ में राजकुमारको युवराजकी पर्वी दी बाती थी। (बार र २१६ । ६) राजकुमारोंको प्रान्तीय शासक (Previse) Governers) वंशबर भेजनेकी प्रया की । कार्य दो पुत्र वणविका और पुष्पकावती है शासक बनारे हो है राष्ट्रमके हो पुत्र मसुरा कीर विदिशाने शासन हरे हें है

बम्बन्ने होर्गों दुर्जों के उत्तर और वृद्धिया कोसल पर्र शासनका परिवार प्राप्त मा (बार राज आठ १९१३) १ अध्यक्ष-१३; १२२१ १,१००१ १७) । यह बहुँ मान्तीय शासनक्षालीका वा मितवा है, मान्तीय शासनम्ब्रालीका हेतु बहुँ वा कि मेरापरपद्रबोका साम्राप्त बहुत दूसका कैला हुया था।

पिन्दानामोद्दारा किये धारेनाले राज्यस्य धौर रग्मेंब मार्थ दश्येक हुमान्त भी सामायस्य है। राजा राज्ये पुरानाले केंद्र भीर रामाच्य्य है। राजा राज्ये पुरानाले केंद्र भीर रामाच्य्य हो। विश्व विजयके देने मध्येका प्रपुत्तन किया था (बात राज्य का प्राप्त का स्वाप्त राज्येक स्थानेक राज्येका किया का स्वाप्त का स्वाप्त स्थानेक स्थानेक राज्येका किया का स्थाप की स्थाप की स्थाप राज्येका स्थाप की स्थाप की स्थाप की स्थाप की स्थाप स्थाप का स्थाप की स्थाप की स्थाप की स्थाप की स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप का स्थाप की स्थाप की स्थाप की स्थाप स्था

रामाण्यमें सैतिक संगठन और कासल-सम्वन्धी म्युर गर्बमी यह होती है। जस समय पृक्ष विशेष श्यामन्त्री Wer Minister) पोता या जिसका काम कपने और पुढ़े श्वापका वात रखना तथा तहसुका शामाके मित्र वहाल कात रखना तथा तहसुका शामाके मित्र वहाल करना होता या (१९११ मा स्वरूप) । स्वा-परिष्ठ प्र War Councils) भी होती भी जो ग्रुज शिक्षके पूर्व

ब्रुवायी जाती थीं, जिनमें कार्यक्रम बनाये जाते थे । राषणने वंब सना कि रामचन्द्रजी समुद्रपार कर छड्डा भा गये हैं तब उसने अपने 'रख-परिषद'की सभा बुखायी थी। राजदतोंका संघ (Institution of Ambassadors)सैनिक नीतिका एक प्रधान चङ्ग था । धर्मशासका विधान हुन सबमें प्रधान दोखता है। रावण्से कहा जाता है कि दतका वध नहीं किया जा सकता, इस बातसे पता बगता है कि सदाचार ही सब कार्योंका थाधार या (बा॰ श० १। १२। १३-११)। रथ,हाथी, घोड़े और पैदर्जोकी चतुर्रियों सेना होती थी । सैन्य-सञ्चावन समा किविरस्थापन वैज्ञानिक इंगसे होते थे । यहाँ राख, शब्तोंके प्रयोग तथा रख-जीतिके विषयमें विचार नहीं करना है। एक उच्च जनीय चात यह होती थी कि राष्ट्रपर विजय प्राप्त करनेके बाद उसीको वर्डां के सिंहासवपर करद राजा के रूपमें अतिष्ठित कर देते थे। और वदि राजु-शाजा पुरुमें मारा जाता तो बजी प्रकार बज़के बचार्थ उत्तराधिकारीको सिंहासनास्य किया वाता था। बदाइरवार्थं लक्काविजयके पद्माद विभीपकुको राजविश्वक विवा ववा था। रामाययाँन राजनीतिक संस्थाओंका जो वर्शन मिलता है, उसका यह संवित सार है। बादार है कि कोई विज्ञान समन शमाययका विशेष और विस्तृत कावयवकर सहत वपयोगी साममियोंको प्रकाशमें आवेदर प्रयत्न कोंग्रे ।क

· सुबेल पहाड़पर श्रीरामजीकी काँकी

तेल हंग एक सुन्दर देखी।

अति उतंग सम सुत्र विसेखी।।

गाँ सर-विस्तर-सुमन सुहाये।

वाध्मिन रचि निक हाम दसाये॥

गार रुपिर युद्धल मृग्छाला।

तेहि जासन आसीन क्रमाला।

मु हत सीत कारीत उछंगा।

पान दहिन दिसि चाम-निषेगा॥

[•] स तिरुवरें को सदरण ,दिवे यथे हैं वे रामायणके कुमकीचन संस्करणने किये गये हैं। —केसक

यूरोपके सामान्य पाठकाँके लिये रामायणका स्वरूप।

(केसक-शीयुर यन। भी। दां। दर्नपुर, यम। यन, निमन, इहतेण्ड)



ह बहा का सकता है कि हम अध्यक्त प्यवहार-अभन युगमें, बही उच विचाने किये धीकना प्राण्यन भी प्रश्तिक पूर्वी राममा काता, बही कामायकों —सो भी प्यानाएके रुपमें —पाने के किये कहीं प्रतस्त है शिला बात बहुत थोहे-ते भीक साल मेरिसोका प्राप्यन करते हैं वहां संस्कृतके

हा जहां भाज बहुत याहर माक पात्र इतियह और सोडिसेका घण्यान करते हैं वहाँ संस्कृतके पविदर्शे समा पीताशिक पाटकों के अतिहित्त रामायण पढ़नेका सचा शीक किसे होगा है

बप्यंक्त धापत्ति उठायी जा सकतो है परन्त बस्त-स्थितिपर विचार करनेसे प्रकट होता है कि आरतके प्राचीन महाकान्यकी कपाचोंके अध्ययनके जिमे युरोपमें कुछ सार्थ-जनिक रुचि वर्तमान है। यद्यपि इङ्ग्लीयडमें श्रीफिय और दत्त महाशयके यारमीकि-रामायकके सवा औवस बहाशयकत तलसीकृत शमाययके चनुवादको बहुत कम खोग देखते हैं, किन्तु बहुत सी वृसरी ऐसी पुसकें हैं को अध-म-कुछ सार्वजिनक रुचिके चलुकूल हैं और जिनके द्वारा श्रीराम-सीताके बाक्यानसे बधिकांश पाठक परिचित हो गये हैं और कुछ जोगोंने कथागर्भित भावों और बादशोंका भी कुछ क्रान माछ किया है। यह अन्थोंमेंसे उदाहरखके लिये हम भगिनी निवेदिता और ए॰ के॰ इसार स्वासीकृत 'श्रीध्स भाफ दी हिन्दूज ऐयड ब्रुबिप्ट्स' (Myths of the Hindus and Buddhists) का उरलेख करेंगे जिसको भवनीन्द्रनाथ ठाउरने बहुत हैं। मनोहर चित्रोंसे सुशोभित कर विया है।

यधिए एक यूरोवियनसे उस नैसर्गिक और सरव ब्यायुक्त प्रिंत सामायुक्को रेखनेकी आग्ना नहीं की वा सकती, तिससे वसे एक हिन्दू देखता है। बूगरे राज्योंने दूरीको में प्रदासकों हैं—जैसे हिन्दू वाह्यवक्षी व्यातिनोंको पास्त्रमें उस प्रदिसे भी नहीं देश सकता, तिस पिटेत उन्हें पुरू परवटन विचारका यूरोवियन देखता है, वेसे ही यूरोवियन कोगोंके भाग सामायबके मित्र हो सकते हैं। त्याविं समस्यार यूरोवियन सामायबीय व्यावके प्रायय ध्यावे देखेंगे, क्योंकि महाभारतकी मीति वह भी वो बायों के उसी शीर्यश्वन मुगक बानव है। युगमें यूरोवमें इविषय बीर कोश्मित्री परि हिंदी शानवन्त्रीलन्क कब भी बर्वल्य बीर किल्य श्रीवा अस्पार्वका श्राप्त कर सकता है, परन्तु कार्युक्त है व्यवस्थारि एकार्यों की स्थापना इस्ते नहीं है। इस्ते बातपृत्र को अनुस्त्र विकल्पहरित या संस्त्रकी कार्युक्त सावनामों बीर क्रियामों के सम्बद्ध स्वाप्त बाता वार्य है, उसे रामायवासे परिचय करत्य ग्राप्त बाता वार्य

रामाययका प्रस्मयन कमी तिष्ण्य नहीं होता। क्षे पहनेवाले उत्तमें बातजब के दैनिक कार्य-स्वाती दर्श पुरुगेंक सिम्मक्ते कहीं स्विक स्वतन्त्र की सिम्मक् रूपमा भावति चापपुगकी कुरनावाले होने से साम की जन महान, पूर्व निरहक डोपेंग्ल करें रेखेंगे को केवल कार्य-मार-मूच्य कार्य में हाला है। कार्यों निरस्त्र है, औराम कीर सीताका चीर हुएकी है चीर केवल उनके जानने किये ही रामाययका कार्य वालोंग हो जाता है।

किन्तु इसारे सामान्य पाठक इसने क्षमान सिंव राविकट बच्च भी मास कर रावते हैं। इहजानक करिये विद्यापी, जो इोमारों, स्थानक हैं, रामाव्य नार्टे कर बसकी तुक्तवा होमारों इसिकट हैं प्राथम करिये हों में सिकटा विषय तथा कामारकारकी समीचा मेंटे। तर्थे तो वे इस भारतीय माहाचारके बाजार क्यांते हैं संभावतः चिकट के जाविंग, क्यांकि देवी करित हार् कुक्त हरत प्राथम यूरोपकी स्थेच आराम सिंव आते हैं। किर वे रामात्यके वम स्वार, वस्त्र क्यांव्यी-न्यसम्प्री क्षांत्र मरोहा मर्योग वर्ष हैं मितकी तुक्तवा नक्स सार सामाव्योग को एकरें। 'Homeric Problem' के नामते मरिवर हैं।

इसके सारितिक बातीय मनीक्षानके विश्वान भीक भीर भारतके इन महाकामाँने चितित कार्या विभिन्न स्वरूपोंकी मुख्यामें बहा रहं निष्ठेगा रहे का होगा कि इन दोनोंमें बहि एक सक्करियक्की कार्य ममाबित है यो वृत्तरा मानिसम्बद्धीयण कार्य महीं प्रकृति समृद् चौर चपज है। अवस्य ही इस दर्जन-गचुर्रेश इद माग उसे चतिरायोक्ति वा चल्युक्तिके रूपमें ममासित होगा क्योंकि उसकी रुचि प्राचीन ग्रीक मर्यादा-विभिन्न यूरोपीय धनश्रुतिके द्वारा निर्मित हुई है। किन्तु ामारणमें कराना-समृद्धि और सरसता पाउकोंको चकित कर ती स्वांहि यूरोपके रचतम साहित्यमें इसकी उपमा उसे गह नहीं हो सबती । यह अपने आधुनिक और अतिविनके भेरतसे होमरको कया मृमिको जिनना दूर पाता है उससे मी प्रथित 🗗 वह चेत्र, उन्हें दीला पदेगा, जिसमें

रामाययकी कथा प्रवाहित होती है। किन्तु इस दरामें भी उसे विशिष्ट चित्रय प्राप्त होगा ।

धव इम सहज ही इस निष्कर्षेपर पहुँच सकते हैं कि सहात्रमृति तथा भान्तर्देष्टिसे भ्रष्ययन करनेवाजे समग्रदार ब्रोपियन पाठकके लिये, चाहे यह हिन्दी या संस्कृत म भी जानता हो, शमाययमें नैतिक धौर बौदिक दोनों प्रकारकी सरस और बहुमूल्य सामगी है। हजारों वर्ष पूर्व रचित किसी विशिष्ट साहित्यके विषयमें धीर क्या कहा हा सकता है ?

महाकाव्योंमें राचस

(लेखक-शीयुत एस० धन० ताहपत्रीकर एम०६०, प्राप्यविद्यालश्चार)

स्यकाससे ही हमारे हृदयमें राचलका एक भयानक किन्न लिंका हुका है-विगाल शरीर, प्रशिके सदश वदी-वदी चौंसें, अयानक दाहें, तथा ऐसे ही दूसरे भय-उत्पन्न करनेवाले उपादानसे पुक्त एक मायी मानो मनुष्यको लाने-के जिये ही खपक रहा है। शामायया

था महाशारत होती महाकाम्पोमें राजसोंके उदाहरच नेदने हैं। भेद बदी है कि रामाययाने राचलोंके धावाद धीर ^{मिन}न मरेस मिखते हैं किन्तु महाभारतमें कहीं कहीं ^{तिष्टरत} राष्ट्रसींचा उस्त्रेल का जाता है।

या

रामारवर्ते सबसे पहले हमें ताहकाका बर्धन मिसता बो एड बहडी करवा थी और मुन्दमें ब्याही नवी थी, भेतित इसका पुत्र था । तादका, मारीच, सुकाहु चीर हुमी करहे क्रम्य राषसींको मगवान् रामचन्द्रकी चयने वार्वास नार पाइने हैं। यहीं इमें राचसोंकी मायाका वर्णन वेष्ट्रता है। इसारे विस्तृत साहित्यमें राष्ट्रसोंकी उस माना-विश दस्त्रेत्र है जिसके हारा वे सुन्दर-से-सुन्दर तथा नेहरूने विहन मानवरूप, एवं कान्य प्राधियों के रूप भी राष का सकते थे, और जनमें स्वेश्यानुमार बहरव होनेकी र्रिंड थी थी। एक प्रश्लेखनीय बात यह है कि वे कदानके वह विरोधी थे कीर बज्जम्मिकी बद्धाद एक नीर करिया बरसाकर कप्रक्रित कीर आह कर देते थे।

व्यागे चलकर चारववडावडमें भी इन सक्ष-क्रनींडा उरवेल है। राजधारी विराध राचल, जिसने दोनों भाइयोंकी, राम-सबमयको सेका भाग आनेकी बेश की थी. जारा नाठा है। उसके दोनों दाय तकवारसे काट बिये जाते हैं भीर वह एक गर्लमें गाड़ दिया बाता है। उसके दिश्यमें यह वर्षन मिसता है कि यह मनुष्य-भर्षी या और सिंह. बाध, भेरिया तथा हरियोंका शिकारकर उन्हें खपने शक्ती र्थीय खेसर थर ।

इसके बाद पक्षातीके बाबममें शूर्यक्रमाबा बपाक्यान विवता है बड़ी बीरामचन्द्रवी राच्स धर, बसके सेवारित दच्या तथा राजामोंकी जीवर सरसकी राजि साबिकी सेवाक गाराकर विषय पाछ करने हैं। यह सेवा सब प्रकारके चक्षांते शुराणित थी । खरवा रथ सूर्वके पुश्य कान्तिमध वा और उसमें नामा प्रचारके चतुन, बाब, तबबार तथा शक्तियाँ बर्नेमान थीं । बार्रा यन्त्र हो स्वक्रपर बारून-ये किसिक्ष शक्षाक्षांका वर्षण है। प्रमाप्तिये वचनेके क्रिये निम्न रक्षोकीका उरस्त कावा विकास गाँव होता है।

> मुक्ते परिके पूक्ते मुक्तिया परस्के । सरिवार्थ रचरपैय भारमतिः सरेप्रीः ।। प्रतिक्रित प्रतिपेतिकारिक प्रारंदेश बद्दिमनुगीर्थिकपृर्विकेमाबद्दवीने

> > (400 Co Rittingont)

मर्थार, गुहर, पहिश, तीक्या शून, वरही, तसवार, कह, पानकीचे सोमर क्यार क्यां में । शक्ति, अपानक परिष, भनेक भनुर, गदा, मूनक और वहाँकों को देखनेमें भगानक थे. राजस जिये हक थे ।

दरको प्रारमधीमें चरशकुत होने छने किन्तु बसने बनकी बरेवा थी चीर रच्यात्वमें पहुँचकर चरनी समस्त सेनाके साम जीसमयम्प्रीके करर चाक्रमय कर दिया। चयपि भगवान् चरेसे हो सब रहे स्वाधी अन्तर्में बन्होंने बरबी सारी नहती सेनाको सास्क्र विनय प्राप्त की।

वयर क वर्णनसे कोई येसी यात नहीं जात होती जिसके द्वारा यह चतुमान किया जा सके कि राजसबीग धवकवामें किसी प्रकार पिछड़े हुए थे और सम्पर्ध रामायक पदनेपर भी हम हसी परिकामपर पहेँ बसे हैं। बानरोंके दस प्रदेशको छोडकर जिनमें हमें क्रमशः (बापनिक धारणाके भनसार) किसी प्रकारकी सम्पताका विकास नहीं सिखता. हमें चारी चलकर किर राचसोंके महान मरेश और उनके नित्य-के कर्मोंका परिचय मिलता है। राजधानी जंबाकी स्विति सया उसके चारों झोरकी किलेबर्म्डाको देख इमें चारचर्यसे चकित हो जाना पहला है। पहचात अब श्रीहनुमानजी सनोहर धन्त्र-ज्योत्वासे पूर्वं बाहामें प्रवेश करते हैं और प्रमुख लड़ा-नगरीको देखते हैं, उस समयका जैसा धर्यंत है वैसा उस समयके किसी भी चत्यना सन्य जारके बिये सकत हो सकता है। भीर फिर हमें वहाँ सभी भोग-विकासकी सामधियोंसे पूर्व सुप्त सम्तःप्रस्का वर्वान निकता है । युद्धकायहरू काव्ययन करनेसे राचसाँकी बुद्धिकी मलरताका परिचय मिजता है। वे 'युद-परिषद'में वाद-विवादके पत्रात् युद्ध-विषयक प्रश्लोंका निर्मायकर व्यवस्थाना करके युद्ध करते थे। अन्ततः हमें यह सोचकर बना ही . बाव्यर्य होता है कि ऐसी सर्वतोमानेम उसत जाति वामरोंके शिका और प्रचोंके आक्रमकते कैसे परावित हुई है

महाभारवधी भीर देशनेसे हमें जात होता है कि रापदकोग उस समय आदितक जासनासे पश्चित हो गये मे भीर संज्ञत होकर पत्र-वज्ञ बीतन स्वतीत करते थे। दिस्त सचा दिलसिर बाक्सोंसे दर्शते थे। केवब क्षासुरके भागित हो गुरू समस्य नगर था। प्रायः इन सभी राष्ट्रसीं-को भीतने बपने पराक्रमले भार बाजा था। हरसकार पर्यु विदेश होता है कि शहारात्रकावके सावसीं रामाययाजातीन राष्ट्रसींकी सम्यताका हान से III यम्मुतः बनकी कालि.सटमाय हो चुकी मी, दृष्ट व कवे थे, वे साथ प्रकारकी विरावियोंसे प्राव गरी सचन बनमें किये रहते थे र

श्रव इस इसी बातको सामने (सब्द वेद वर्ग साहित्यकी भोर देखते हैं तो हमें राक्नोंकी दवार नहीं मिस्रती, बर्डी उन्हें पौराधिक प्राची माना है। वहाँ शत्र समाधा गया है सीर मापाहारा विनित्र घारचा करनेकी उनकी शक्ति भी खीबार की वर्त अनुष्य जन राषसींसे युद्ध करनेकी प्रमता गाँ¹ क्योंकि वे पार्थिव शरीशमें साते ही नहीं है। समेर न में राषसोंके उपवब तथा उनके ग्रमनके विषे देखा भाषाहनका उरखेख मिलता है। क्रमता वर्षे क भाग भी मिलने लगा, और इसीके शतुनार है संदितामें (१-१४, ११, ११) निक्र ति और राष सम्मानार्थं कुळ वज्ञोंके विभाग मिवते हैं। तर्वना स्वोमें भी भाषीन वैदिक प्रमाणका बनुसरस किरा है और गृहस्योंको इन प्रतिकृत शक्तियों (Host influences) (शक्सों) दे शमनदे विवे संदि-सर्वि शिचा दी गयी है।

कीसज्ञयवहीताने, जो सहामातक एक का राज्यसंको जगसनाका राज्यस्य साता है हामायवर्षे (३१२०१२) भी शमक्यती होते हैं श्रीवर्षोंने भी यह राज्यसे व्यक्त तसहे समागा है

उपपुष्क विषेषका सारांग यह है हि सारावर्गन राष्ट्रसद्धीय पूर्व सद्भवत ये और वार्ग सामानपुष्ठ की शास करने है बिये उन्होंने द्वारितिकों नीवा दिवार के कानन्य प्रचारित इस जारिक उठ काले के तार नागा की कानन्य प्रचारित इस जारिक उठ काले के तार नागा की कानमें इन दुष्टीका यह ना उठनेन किया है। वार्म साहित्य शास्त्रों विषय प्रचार साहित्य शास्त्रों के वार्ग साहित्य सामा की उन्हों के क्षा प्रीराधिक मान्यों सानगा है।

किन्तु वदि यह सिवाना श्रीहत किया का ते वेदों और महाकाव्योंके सारोप्य कावायवारे प्रवारी पुता विचार करना पर्यगा । यहाँपर वेशव प्राप्तीया विचारहोंकी समेपकाके नियम यह विचय प्रयुत्त का तथा

FRANCE POPP

श्रादर्श पुरुष श्रीराम

(हेसक-श्री आई० बी॰ एस० ताराप्रवाला बी०ए०, पी-एव० बी०, बार-एट-ला)

मायक्में अभे सबसे कथिक प्रमावीत्पादक धौरामजीका सत्त्वपूर्णं मनुष्यस्य माल्म होता है । बचापि तन्हें करोड़ों सन्त्य मामवरूपमें खबतरित साचाच् भगवान् मानते हैं संयापि मनुष्यरूपमें वे जैसे मितमासित हुए हैं वैसे ईश्वररूपमें नहीं।

त्युतम, बीकृष्य, मुद् प्रसृति चन्यान्य सामव सवतारोंको किये। पहले दोमें ईंथरीय तत्त्वकी मतिहा है। इद निवान्त मनुष्य है पर उनके अनुपाविधोंने बन्हें हैकर वरवा दनसे भी कुछ बदकर बना विया है।

िन्तु वास्मीकिके राम पूर्व मानव हैं । सम्पूर्व विशासमें इस दन्हें कहीं भी सनुष्येतर रूपमें नहीं देखते । मी रहत्व है कि वे हिन्दु-ग्रहिन्द् समीके इदयोंको गबरित करते हैं। इस शिद्धरूपमें, बालकरूपमें, प्रेमी-पर्ने, वीररूपर्ने, और मजाका शासन करते हुए भरपति- प्रिक्त व्यामें उनकी दल्लाल काव्यों मानवताकी गमगाती क्योति देख पाते हैं। वे अत्येक चेत्रमें बादरी हैं म्यु हैं सभी बगह इसी कोगों में से एक। इस जितने कैंचे गर्गं महुष्यको करपना कर सकते हैं उन्हें वैसा ही पाते । साबूर्य कथामें इसे वे कहीं भी देवता या ईश्वरके रूपमें हों दोलते और कहों भी वे अपने साथी जीवोंसे प्रथक् री होते। हे मनुष्यों में एक मनुष्य हैं कीर मनुष्यकी तह ही बाम करते हैं, बोसते हैं और धानुभव करते हैं। स्तव ही उनका कर्मलीत हमलोगोंके कर्मलोतसे सर्वया पर है, पर होनोंके कमें हैं एक ही प्रकारके । उनके आव रे हैं, उनके शब्द प्रमपूर्ण हैं, उनके कर्म किसी भी उपसे अधिक त्यागमय हैं। पर जीवनमर वे बूसी मरहन्नसे समन्य रसते हैं, जिससे इमें धनुभव होता कि दे इसारे ही निज-जन ये। श्रीर इस भी चाई सी वैद्धि समान अनुमन कर सकते हैं, बोख सकते हैं और में कर सकते हैं।

वर पढ मेमी मनुष्यकी भाँति मेस करते हैं और ति श्रेष प्रमा मनुष्यकः साध्य कर्मान भावोंको विद्यादे सामने धपने इद्यके अस्यन्त सम्मीर आवोंको वि का रख देते हैं। यह पुगल-मोड़ी इमारे जिये भादरी

है। इसमन्द्रार निवान्त मनुष्य होते हुन वे यथार्थ आर्थ भौर हिन्दू हैं। यद्यपि भवभूतिने उत्तररामचरितमें 🖪 दोनोंके चादर्श मनुष्यलका गुल-गान बड़ी सहद्दवताके साथ किया है परन्त वह कया निःसन्देह बाहमीहिसे ही ली गयी है। बारमीकि या तबसीदासकी शमायकों हमें जैसी मनोहर प्रेम-क्या पहनेको मिलती है वैसी संसारमें वहीं नहीं मिखती । इनमें भावोंका पमलारिक उद्गम, कर्कराता तथा नाटकीय वाहा अमक-इमक नहीं है। यहाँ इस प्रेमके प्रवाहको बहुत ही विस्तृत स्त्रीर सम्मीर देखते हैं। वह इसना गम्भीर है कि धरातसपर कहीं उसका एक वरंग-विचेष भी दृष्टिगोचर महीं दौता । प्रवादकी हुमारी वह माचीन विधि हमें सिसाती है कि वेदापि प्रेम प्रथम दर्शनसे ही अलब होता है तयानि विवाह हो बानेके बाद भी अनुरक्षनका अवसान नहीं हो जाता । वस्तत: धड वहींसे भारम्य होता है। श्रीसीता-रामकी कथामें हमें दाम्पल्य-मेमका बढ़ा ही उत्तत प्रकारा दील प्रवता है । सीर क्यों-क्यों समय बीसता है स्थों-त्यों यह श्रावीकिक प्रेममाय गम्भीरतर दोवा जाता है। इस इन दोगोंमें सर्वन ही पारस्परिक समावरका भाव पाते हैं और वह केवस बाह्य प्रदर्शन नहीं ! उनका प्रेम इतना ग्रमीर और पवित्र है कि सार्वजनिक प्रदर्शनमें वह कभी भा है। नहीं सकता, इसीलिये बह समान 'नारी-कातिका सर्वस्व' हो रहा है और इसमें उनके जीवनका स्रथिकांश भाग स्रोत-प्रोत है।

इस वर्तमान जमके जीव भासपांनियत हो कर करने हैं कि इसमकारके महान् मेमका धन्त ऐसा शोकरपंत्रसायी नहीं होना चाहिये था। बीसवीं शवाध्यीकी सङ्घित दृष्टिके कारण ही हम शीरामधी सीताके बनवाम या प्रक्रि-परीचाके क्षिये दोवी दहराते हैं । यदि बीराम राजा न होते भीर चपनी प्रजाको सन्तानवन् न सममते हो उनकी ग्रेस-क्या बसरे ही प्रकारने किसी वाली । सीताका चीवन तो केवल प्रेमके लिये ही था. उनके जीवन चारकर्ते प्रान्थ कोई हेन ही नहीं था, परन्तु शीरामको दूसरे भी कर्म करने थे, उन्हें केवस सीताकी हो नहीं सारी प्रवादी किन्ता थी । शासक और राजा होनेके कारण वह गुण्य-से-मध्य अपवादसे भी बचना चाहते थे । बचनि हनका हरक-



ज्यान भीर पो दापवाडे रावयका वर्षांत्र प्रायः सर्वेत है।
दिलानुमें वर रावयके रावयका वर्षांत्र प्रायः स्थित है
दें तर वन्नीने वर्स स्रोण हुम्मा थाया। उसके दोनों
,ग्योंने सोनेके सामुष्य भे । दोनों कृष्योग्यर हुन्यके
,व्यातके पिक थे। पाँच क्यांके सीरोंकी तरह उसके
,व्यातक दिवा, तथा पाँच के हुए राववार सुमीयने वाल ,व्यात दिवा, तथा पाँच के हुए राववार सुमीयने वाल ,व्यात दिवा, तथा पाँच के सारा। किर सुमीयने भी ,व्यात व्यवका राववार दे सारा। किर सुमीयने भी ,व्यात व्यवका राववार से रोगोंक हायांके वराव्यात्र से स्थाति ,व्यात स्थात का वर्षांत्र करता है—पहुँची प्रावि ,व्यात सुक कुमारी दोनों स्थात दिवा स्थातर तिकेष वर्षेत्र के सिंग देशी सार्वे पुक्ति स्थात दोनों सार्वे पा स्थितर तिकेष वर्षेत्र के सिंग सर्वे दी सुक स्थात हो।

्राणित्वा वर द्वोगेरर राजयके क्रोधका ह्वासकार पंत किया गया है-ज्याद्वारके द्वारासे निसमकार कांत्रि की भी दार्च गयार निकडाता या, उसी अकार केंद्राई देते हैं रास्ट्रेड हुकते (स्वत्याद) कार्ड और दुर्जा निकडा वार या रतको दोगों वाज कांत्रिं (मेत्रे) कारिक बाज हो गयी होते कांत्रीते (नेत्रास्थार) प्रेरकके बाजते हुए शेळको हैं की नार साह करते कांगे, (१। १२। १८-१२)।

दे बनाएं राष्ट्र ! हाने देकते हुए तेरे दे क्ष्र घीर कि वर्गां तेर (पाये) वर्गो वर्गो प्रचीपर गिर पपते ? कि वर्गां (पाये) वर्गो वर्गो प्रचीपर गिर पपते ? कि वर्गां (पाये) वर्गो वर्गो वर्गो प्रविक्रा (एक दे क्ष्र) वर्गो तेर्गो गळ वार्गी ? (शरशा-८-१३) ! श्रीताफी क्ष्र) वर्गो तेर्गो गळ वार्गी ? (शरशा-८-१३) ! श्रीताफी क्ष्री वर्गो तेर्गो वर्गो वर्गो वर्गो वर्गो वर्गो क्ष्री वर्गो वर्गो वर्गो वर्गो वर्गो वर्गो वर्गो वर्गा हिन्ताची तर द्रीवा पर्ये शे व्यवस्था वर्गो वर्गो वर्गा हिन्ताची तर द्रीवा पर्ये शे व्यवस्था वर्गो वर्गो वर्गा हुन्ताचा पर्यं वर्गा वर्गो वर्गो वर्गो वर्गो वर्गो वर्गो वर्गा हुन्ताचा पर्यं वर्गा वर्गो (इन्पडक) सुकोभित हो रहे के (१।२२।१२ -२८)।' ताबए-को क्षपहुत बान पड़ने बड़े, उस समयके वर्षनमें जिला है—'उसकी बाई क्षाँव (एक हो) खोर बाई मुता (एक हो) पड़को बढ़ा। उसका पहुता (एक हो) उतर गया और स्वर पीवा हो गया (धरशपर)।'

रायण वय गुद्रके जिये उपस्थित होता है तब राम डससे बढते हैं—'तेजस्वी कुषडलोंसे युक्त तेरा सिर (शिरः) मेरे बायोंसे उद बाव और उस धनि-धसरित सिरको राचसमय वसीटकर से कार्ये (६।१०३।२०) ।' रावयको च्छम चित्र वीस पहने सगे, उसका वर्णन इसप्रकार है-'राव्यका मुख देखकर मुखले थाग बगवते और धराम राष्ट्र करते हुए सियार भाग रहे थे (६११०६१२८)। राजयाके इत होनेपर उसकी खियाँ विखाप करने वार्मी। 'एकको तो बसका राव देखते ही मुर्खा था गयी। इसरीने इसका सिर गोरमें बड़ा किया। शीसरी कहती है, राजनू ! धापका <u> शुलकमत्त्र (एक ही) सुकुमार था, औँ हें सुन्दर थीं, नासिका</u> उत्तम थी. मलकी कान्ति चन्द्रमाके समान थी। तेत्र सर्वके समान था । दोनों होठ बाख थे और दोनों नेत्र चम्रज थे। नाना प्रकारकी भावाधोंसे चापका मुख (वन्त्रं) सबंहत हो रहा था और उसीसे हैंस-हेंसकर बाप बातें करते थे। बढ अल इस समय रामके बायोंसे बिय-मिय हो गया है। उसकी वह शोभा नहीं रही। थब उदनेसे तो मुख पहत रच हो गया है और उससे मेद-मन्ता बह रही है। (६।११०।६-१०:६।१११।६४-६८) इन व्यवतरवासि स्पष्ट हो बाता है कि, सोते, जागते, कुद होते, पुद करते और कृत व्यवस्थामें भी रावयके युक्त ही मुत्त, दो घाँसें, को कान शीर को ही हाथ थे। " इसमें सन्देह नहीं कि. वह बदा बक्षवान्, हट-पुर और अत्यन्त काला था। हरमानजीने तसकी सुसायस्थाके वर्णनमें कदाहै कि.-'गोराजामें उसम गौद्योंके बीच वैसे मोदा-जाता साँड सोबा हो, बैसे ही धनेक सुन्दरी खिपोंके बीच, वह पश हबा या' (शश्रश्रश)।

[•] एनस्वे जमसमस्ये वर्णनाँ कहा है कि ब्हासीनः प्रक्रीप्तं दक्षांनी भवित्राति असीत् रहा मस्टब्साला होनेले एक या दक्षांत रखा गया। वद युर्णमा अपने आहे एक्लांड पात सभी है उस सम्बन्ध करेती यह बस कहा गया है— पितृदं निर्मादं देशनेतारिक्यार । वर्णात् सम्बन्धे सीस जुना और नदा मस्त्रा है। इसीयबार वास्मीदीन रामाकांड स्थान कारी भी परनांदे एक मध्य और नीस हाम होनेका सुके स्थानि वर्णन आता है। व्यवस्थितने कुछ और हाव

रायणकी तरह कुम्भकर्यंका भी शमाययामें युकाध स्थानमें विचित्र विकशस्त्र वर्यंन किया गया है। बिस्स है—

> पनुःशतपरीणाहः ॥ षद्शतसमुन्द्रितः। रीद्रः शस्टणकाक्षी महापर्वतानिमः॥ (वारदेशक)

समांत 'हम्मक्यं सी मनुष थीड़ा और हा सी धनुष कार्या या। उत्तरकी पाँतिं गाड़ीके पदियेके समान मीं 1 पह महायपैतके सारत और जम था।' क्षितिका पामक दाखसका भी इसी सरवह क्य बताया गया है। उसे देखक 'सब बन्दर कर गये और यह जानकर कि, यही कुमक्यां' है, सापसमें विश्वने समें (११००१०)।' इसी तरह एक बार 'माले पहार्के समान विभोज्याको देखकर और असे इन्द्रवित् जानकर बन्दर इर गये और आगमे समें ये (११४११२)।'

इस विवेचनसे पता चल सकता है कि, राफ्सोंके स्वक्तमं वोगोंकी यही धारणायी कि, वे वहे विकरात कीर का होते थे। क्या भी वही धारणा है और कविश्वमा विवेचार कनके स्वव्यक्त होती आवताके क्यून्यर विवेचा करते हैं। राज्य भी अनुवार विवेचा करते हैं। राज्य प्रेसी नहीं है। राज्य भी अनुवार कि वार हुआ करते थे। हवां और सामक्यानीने जुदके समय पारारोंको धात्रा ही भी कि,—'कोई वावर मनुष्यके रूपमें पुत्र करते। धारणी ही भी कि,—'कोई वावर मनुष्यके रूपमें पुत्र कराते प्राप्त की भावन वार सन्त्रीन नो साक्षी नामक चार सन्त्रीन नामक चार सन्त्रीन नो साक्षी नामक चार सन्त्रीन नामक चार सन्त्री चार सन्त्री नामक चार सन्त्री चार सन्त्री चार सन्त्री चार सन्त्र

षोदी हुई मन्दोदरीका इन्मान्त वर्धन किया है कि, 'क्सका वर्ध मेरिया और उसने बहुतन्ते अब्बह्मर पारण कर रण्ये । (५१३ ०१२) उसे देखकर इन्मान्को सन्देद हुआ कि, ये ही यो सीता माठा नहीं हैं (१९३० ११२) ! क्याना मन्दोदरी राचसी होनेयर भी उसका स्वस्य आनुषी-जैसा ही था। अयोक-वनसे सीताको हाते वो राचसियाँ वार्यो यो, कनदा बदा भी तथ्य वर्धन ही । (बीउ मुखारेत दिश्च मन केट)'। ऐसा वर्धन को है हैं, किया यह भी बताया वनसेंसे किसी-किसीके ग्रुष्ट वाप, सेंस, कदरी,

ा, द्वापी, बॅट, घोड़ा चादि व्यवक्तों सदय थे , १ । १६)। प्राटिका (१।२१/११) द्वावोसुक्ती (श्रवश २-१३) धीर शूर्प यहा (श्रावश -11) है ही तथा सथीरवादक वर्णन तो सूच प्रत्योग ही देवने शेव परन्तु ये वर्णन श्रादिकविकी रस-नियन्तिकी प्रतिवास

राषसाँके रूपकी दम कराना कोपाने दनके ए स्मीत कृतिवर्षांसे ही कर श्री है। सबस (मजना करेका, कुम्मरूवर्ष, (मितरके कान पड़ेके समान हाँ), विभीन्स (नर्षे विविद्या (सीन मस्तक्रमाखा), सर (गद्म), राष्ट्र (ग्रं सार्वे का स्थापनक हैं। पत्मु नामांसे हैं। इस स्टेक

> विद्यावरी यथा मूक्तें जन्मान्त्रम दिवङ्गः। कथमीवरो दरिदम त्रयत्ते नाम वारकः॥

यह सुमापित मिल ही है। सर्व ता सीतासे प्रयमे मामकी स्तुरपत्ति कही है कि में हा क्या है कि मो हा स्वार्थित कही है कि मो हा क्या है कि मो हा स्वर्थित है कि मो हा स्वर्थित है कि मो हा स्वर्थित है कि साम हि से हा है कि हो है कि साम हि से हि से हा से हि से हि से हा है कि हो है कि से हि से है है है है से हि से है है है से है है है से है है से है से है है है से है है है है है से है है है है है है है से है है है है है है है

रायस मर-मंत-भवक और हिल ये गरी, कि जी चातुर्वेचं क्वकला थी। 'रावेचकी सामकिती गायक रायसको क्रम्य भी। 'रावेचकी सामकिती गायक रायसको क्रम्य भी। उत्तका विश्व दुव्यन्त्री स्वरिते हुम्य था। इसी जोगीरी रावणीर तीप प्रश् स्वरिते हुम्य था। इसी जोगीरी रावणीर तीप प्रश् स्वरिते हुम्य था। इसी क्रमीरी रावणीर तीप क्रिये प्रश्नामक्रम ये (१६१२)। 'रुप्ताने क्रमीरी क्रमीरी प्रश्नामक्रम थी, परन्तु वे चासुरी गायकी की रायक विश्व के लाहे तिस्त वादि वा वर्षी की कि रायक विश्व के साह तिस्त वादि वा वर्षी की देखों, वे साम्रार्थ, माद्रप्त, माद्रप्त, माद्रप्त, क्रम्य बीर तार्थ स्वराप्त वाद्रप्त, माद्रप्त, स्वर्ण, स्वर्ण बीर तार्थ



रामायणके वानर-ऋच

पि) हीं याश्मीकि रिवत रामायग्रका अध्ययन करने-पर यह राष्ट्र शिख हो जाता है कि रामायग्र-पर्वात अध्य-सानर आजकवके से प्रमु बन्दर-शिक् करायि महीं थे। ये धर्य, चर्म, काम धीर मोध् पारों के अधिकारी थे। विधा, मुद्धि, भान, कवा,

े पेयर, सम्पत्ति, सञ्ज, भोग, बल, चातुर्व, राजनीति चादि गुर्वोमें किसी भी मानव-जातिसे कम नहीं थे। धीरामके मित भक्तवर छीहमूयान्त्रीके ये वाक्य विज्यात ही हैं—

, देहरच्यातु दासोऽहं जीवरच्या त्वदंशकम् । बस्तुतस्तु तदेवाहं इति मे निश्चिता मतिः ॥

. 'शरीर-दिसे में धापका दास हूँ, शीव-दिसे धापका कंश हूँ और वास्तवमें मेरे एवं धापके स्वक्यमें कोई धन्तर नहीं है, यह मेरा निक्षित सत है।' क्या पदा क्यर-बातिका कोई माची इसम्बारक विचार कर सकता है या वाची बोल सकता है! संचिद्यस्यने बागर-बाद-बातिके छुद्र गुयोंका रिक्रांन कराया जाता है—

विद्या

अब श्रीहन्मान्त्री महाराज ऋध्यमूक-पर्वतसे उतरकर तापस-वेपमें भगवान श्रीरासके ससीय शाकर रावने कर्थ-गम्भीर मधुर मनोहर शब्दोंसे रामको प्रसद्ध कर खेते हैं तब थीराम---सर्वविद्यानिष्यात् राम---साचात् सचिदानन्दयन मन्त्री इनुमान्से स्नेहपुक्त सम्मापव करो, वह इनुमान बास्यके रहस्यको जाननेवाला चतुर और शहावली है। यह रात्रघोंका दमन करनेमें समये हैं। इसके मापकरी मालूम दोता है इसने वेदोंका पूर्व चम्बास किया है क्वोंकि ऋक. यत चौर सामवेदको न जाननेकाका कोई भी ऐसा उत्तम धौर राष्ट्र भाषक नहीं कर सकता । इसके श्रातिरिक्त वह व्याकरणका भी पूरा पविवत प्रतीत होता है, क्योंकि इतने सम्बे भाषणमें इसके मुँहसे व तो एक भी शशुद्ध शब्द निकमा और न शम्यों है उचारखर्में कहीं इसके शक्नोंमें 🜓 कोई विचार मापा ।''''(वा॰ रा॰ ४। ४) इनुमानुत्रीका धीर राज्यसे मा वार्वाचाप हुचा, उसमें भी उनके

. ै. वेरश्च डोनेका पता सगता है। कहा

आता है श्रीहन्मान्त्री संगीत-कवाम मी वह निष्य है। पुरुषांकी तो बात ही कथा, मानर-कियों भी पूर्व दिशों ही। बातिके अरमेपर विकास करती हुई तास मिताम हु^क स्टुटिके प्रमाख देकरा क्षीता पतिस स्मेर्स सिंद करते हैं। (बाठ हाठ है। २४ १३७-१८)

धर्म ज्ञान ,

धार्मिक-संस्कार।

वानर-जाविमें सभी संस्कार बैदिक विधिके कर्ना होते में । जनहरणार्च वाजिको स्पुके क्षतम्तर कर्म जीर्णदेशिक संस्कारका विवरण परिमे-

सुभीव कीर कंगर एक सुन्दर वावकोरर वार्ति है हार्गे रखकर स्वरावनों के जाते हैं, श्रवपर स्वांधी वर्ग की स्वी है, नदीके तीरपर शिवका बतारी जाती है, परे कार्य विवाकी व्यावकर उत्परस्य प्रवर्शका बता है, दिर पोचाई केंद्र विवाकी विवाक करास्त्र प्रवर्शका करता है, हर पोचाई केंद्र श्रवकारिक करास्त्र प्रवर्शका करता है, हर पोचाक कार्य श्रवकारिक क्षत्रसम्प्र प्रवर्शका करता है, हर पोचाक क्षत्रस्य कार्य प्रविव्य कार्य करते हैं की गुर्में करात सम्प्र कंग्य वाविको क्षत्राविक स्वत्य करते हैं। क्या चन्ना करते हैं।

मगवान् श्रीरामकी भागासे सुमीव रामाधिरके हिर्द किन्द्रिम्मानगरीसे प्रवेश करता है, वस सम्बद्ध वर्द।



रामायणके वानर-ऋच

(1) हाँच याशमीकि श्वित रामायबाद्या स्वस्ययन करते-पर यह राष्ट्र सिद्ध हो जाता है कि रामायब-पर्याय स्वस्यायर साजकबकेने पद्म सन्दर्शनाइ करापि नहीं थे। वे साथ, समे, काम सीर मोण

पारीं के प्रिकारी थे। विचा, तुद्धि, ज्ञान, कवा, ऐथरे,सम्प्रित्ताज्य,भोग, बळ, चातुर्व, राजनीति प्रादि गुर्वोमें किसी भी सानव-वातिसे कम नहीं थे। स्थारमक्ष्रे मेल सफरर श्रीहचुमान्त्रीके ये वाक्य विक्यात

> . देहरच्यातु दासोऽहं जीवरच्या त्वदंशस्म् । बस्तुतस्तु तदेवाहं इति मे निश्चिता मतिः ॥

ंदारीर-दिश्ते में चापका दास हूँ, जीव-दिश्ते चापका कंदा हूँ और वास्तवमें मेरे एवं चापके स्वक्पमें कोई कावर गहीं है, यह मेरा विक्रित सत है। व्या पछ बन्दर-वातिका कोई मायी इसमकार विकार कर बात-जा है या वाबी वील सकता है। देशियरच्ये वात-जा के कुछ गुर्योका विकर्षन कराया जाता है—

विद्या

जब श्रीहनुमान्त्री महाराज ऋष्यमुख-पर्वतसे उतरकर सापस-वेपमें भगवान श्रीरामके समीव धाकर कवने कर्य. गम्भीर मधुर मनोहर हाव्योंसे रामको मसछ कर खेते हैं तब श्रीराम—सर्वविद्यानिष्यात् राम—साद्यात् सिबदानन्त्यन राम---भपने भाई लच्मणसे कहते हैं--'सौमित्रि! तुम सुग्रीवके मन्त्री इन्मान्से श्लेहयुक्त सम्भाषया करो, यह इन्मान् बास्यके रहस्पकी जाननेवाला चतुर और महावश्री है। यह शतुर्घोका दमन करनेमें समर्थ है । इसके भाषणसे मालूम होता है इसने वेदोंका पूर्व चन्यास किया है क्योंकि ऋक्, यत चौर सामवेदको न जाननेवाला कोई भी ऐसा उत्तम धौर रपष्ट भाषया नहीं कर सकता । इसके धतिरिक्त यह ध्याकरणका भी पूरा परिहत प्रतीत होता है, क्योंकि इतने सन्ये भाषणमें इसके मुँहसे म तो एक भी शशुद्ध शब्द निकला और न शन्दोंके उचारखर्मे कहीं इसके शहाँमें 🚺 कोई विकार व्यापा ।'***(था॰ रा॰ ४ । ४) हनुसान्जीका सीता थौर रावणसे जो वार्ताजाप हुचा, उसमें भी उनके पर्यं शिवित और वेदश होनेका पता खगता है। वहा

भाता है श्रीहनूमानूजी संगीत-क्जामें भी रहे निष्य प्रकरोंकी को बात ही स्था, जातर-क्षियों भी पूर्व दियी। बाबिके सरनेपर विजाप करती हुई तास कीरावे डें स्पृतिके प्रसाद्य देकर कीका प्रतिसे क्षेत्रक विज करी। (बा० रा० है। २४ । ३०-१०-१

घर्म ज्ञान .

भावचातक राम-वायो सर्पासक मानि वर केरले कवाइना देवा है, तब श्रीतम वर्म-वागरे बात वर मीरिक्य दिवंद करते हुए करते हैं—है वाहे 1इ वर्ग निनिद्य वरिक्रके साथ विश्वचित्रमा है। तहां है। निनिद्य वरिक्रके साथ विश्वचित्रमा है। तहां है। साथ कोट आईकी स्त्रोठ के प्रत्य करता है और तारा कर्म करता है वह चय करते चीन्स है है। कि बाताव कर्म पर्माणाकवाडी मीरिक्ठ समुकार तमें सावत कर्मा है है, सन्याय तुस्ते करने पारों है तिये पर्माणके हर्ने है, सन्याय तुस्ते करने पारों है तिये पर्माणके हर्ने स्रोठकेंका असाय देवें हैं। इससे बाद बीत्रमा हम्में स्रोठकेंका असाय देवें हैं। इससे बाद बी हिस्सा क्रिकेट होता पर्माणके परिचित्र में और पर्म-वायक्षेत्र हैन्द्र है

धार्मिक-संस्कार ।

वानर-जातिमं सभी संस्कार वीहर विभिन्ने वहनी होते थे । उदाहरणार्थं वादिको चणुने क्रम्ला वर्ने ग्रीफोन्नेहिक संस्कारका विवस्य पहिचे-

स्थान का राज्यस्थ पात्रस्य पात्रस्य स्थान स्थानिक तर्थ स्थान कर्य स्थान या स्थान राज्यस्य ता है तर्थ स्थान स्थान

मगवान् बीरामकी बाजाने सुर्माक रामानिको हो किण्डिन्या नगरीमें प्रवेश करता है, उस समस्या हो



र--मुप्रीवके राज्याभिषेकके विवे वानरोंने जीवातासे वे बस्तर् मेंगवायों भी, सुवर्णाक इत रचेत कृत्र, सोनेके डाँडीवाजे हो चर्वर, सब प्रकारके रख, सकल प्रकारके बीज चीर भौरवियाँ, सचीर वृद्धों के प्रशेह, सुगन्धित पुष्य, सफोद कपड़े, रवेत चन्दन, सुगन्धयुक्त कमल, भनेक प्रकारके सुगन्धित-द्रव्य वरत, पुरर्थ, गेहूँ, मधु, एत, दही, न्याध्रधमें, बहुमूल्य युनेकी जोड़ी। इसके बाद राजाके शरीरमें खेयन करनेके बिये गोरोचनादि सुगन्धित पदार्थीको खेकर सोखह रूपसी इमारिकार्दे भावीं। उत्तम ब्राह्माखींको भोजन कराया गया और इन्हें रक्ष सथा **दख** देकर प्रसन्न किया गया। फिर सम्बद्धांतर वालिजोंने हुरुडमें बाग्निकी विधिवत स्थापना कर हथन ष्टिया, तदनन्तर सुन्दर सुवर्ध-सिंहासनपर वैठाकर चारों रिगाचाँडे सीयाँडे तथा विविध समुद्राँडे निर्मल जलसे सुत्रवंशत्रोद्दारा सुद्रीवका समिरेक किया गया। यहीं रिविपूर्वक संगदको भी सुवराज-पद दिया गया। (बा॰ रा॰ शह) क्या ऐसी विधि पगु-बन्दरोंने कभी सम्भव है ?

ऐश्वर्य-विलास

िकिन्धा-नार्गाकी धरस्याका किञ्चित वर्धन परनेवर बातांके ऐवर्षका इन्द्र बद्धनान खा बाता है। जिस समय दुर्गाको चेतावरी देनेके जिये श्रीजयमयानी सुमीवकी बातोंमें गये, उस समय करहोंने देखा---

धनेक रखोंसे द्वाची हुई अस दिन्य नगरीमें खगह-बगह प्रशिव इव का रहे थे। सँबी-सँबी खुतींवाबे रबर्जाहत विशास भवनोंसे नगरी लचायन भरी थी, म्त्येड घरडे साथ बगीचा था, जिसमें फल-पुष्प-समन्त्रित 👣 बने थे। विण्याचल चौर सुमेठ-जैसे ऊँचे ऊँचे महलांसे नगरी गोनित हो रही थी। चारी चलकर श्रीलक्सश्वीने वुकात पहर, सैन्द, दिविद, शबय, शबाफ, शत, विष्मावी, स्पांच, इन्मान, सुवाहु, नख, नीख, बानवान् वादि अंड बुद्धिमान् बानरोंके रमणीय और धन्तर महस्र देखे । ये सब महत्व सकेद बादल जैसे, पुगन्धित पदार्थी और पुष्पमालाधींसे सजाये हुए, धन षान्यादि देवर्थं कौर रमयी-रबॉसे सुरोभित थे । वानरराज पुष्पेवका राजमहत्व तो रवेत रफटिक-मध्यकी वदी-वदी विश्वाचीका बना हुमा था, सामने दिव्य पुष्य कल चीर थीनक वायावाचा बतीचा बा, दिन्य पुण धीर सोनेके दौरकोंसे महस्र संजावा हुआ था । अन्यन्त बस्रवासे बानर टक बारव किये दरवालेपर पहरा दे वहे ये ! आंखकावजीने महक्के धन्तर आकर एक्के बाद एक सात दगोरियों पत की, वहीं उन्होंने मारित मंत्रिके राव भीरिमात भारि स्वारियों और विवाने योग्य बहुमूल्य सातनोंका हेर देखा। धन्त-पुरमें सीने और जाँदिके बहुन-से वहें नहें पताँगांस धन्त-प विज्ञीने विके थे। धन्तर सुन्दर स्वार्टी गाना-बनान हो रहा था, धन्त-पुरमें सुन्दर भाहितियांनी उत्तम बज्जों जपक पत्रेक दिलों थीं जो उत्तम बच्चा-पूर्योंने सभी हुई सुन्धिनत कूजोंके हार गूँग रही थी। इसके वाद जन्दोंने सुन्नीक प्रकार कार्यों करों हो सने दूर भागित बजी हुई सुन्धिनत कूजोंके हार गूँग रही थी। इसके वाद जन्दोंने सुन्नीक क्रमारेक स्वार्टी करों हुए। भागित कार्योंने

कला-कौशल

वानर .जाति कक्काकीशलमें खूव वडी-चडी थी। विशेष प्रमाण न देकर दो पुक प्रमाण दी दिये जाते हैं। वेलिये---

वाशिका शव रससान से शानेके समय जिस पाककी-वर रक्ला गवा था, उसका वर्षंत इसप्रकार है-'रिज्य हव-जैसी पाककी कालन्त शो भावमान थी, बसके मध्यभागमें कत्तम भद्रासन बंबाया हवा या । चारों घोर चनेक प्रकारके पूर्वी बीर प्रचाँके प्राकृतिक चित्र चित्रित थे । पासकीके धन्दर जानेके दरबाने बहुत ही मुकलर थे, हवाडे जाने-जानेके किये सुन्दर शाबियाँ रखी हुई थीं । . निषय शिव्यवारों हारा निर्मित वह सन्दर शिविका बहत ही बढी और सजबून थी, देखनेमें देवताओं के विमान बैमी थी । उसके चन्दर मानाप्रकारके काठके पहाब बनाये हुए थे । इसके श्रतिरिक्त सन्य बहत-सी कारीगरी की गयी थी । बह पालकी उत्तम सोनेके दारों, रंगविरंगे प्रश्रों और बाध चन्द्रवसे समायो हुई थी । शिविधापर भौति-भौतिके सुशन्तित कुछ विकासचे हुए थे और प्रभावचार्शन सूर्व-सरण काजिस्ताकी कमञ्जूषी महत्त्वाचीने यह शोधिन हो रही थी। (स॰स॰ १। १५)

यह शो मुर्देको उठानेकी पासकीका वर्ष न है । अन्य वस्तुव्योंकी कारीगरीका भी हमीले बनुसान कर खोजिये।

हमके व्यविशिक नवकी कन्यचनामें बानरोहारा समुद्रवर सौबोजनमें विशाव दुव बनाना हो मिनद हो है । बाक्सीकीय शमायवाने पनाकराता है कि दुव बाँचनेमें बानरोंने यनमें (मगीबों) हारा भी काम विना था, जिला है कि हापी-जैसी वड़ी-यड़ी शिलाओं सीर पर्यत-रिस्तरोंको बानरतीय उपावका <u>यन्त्रहारा</u> समुद्रतक खाते येश सेतृ कहीं बांका देशा न हो जाय हुस्तियों वातरस्य स्तुसे नाप-नापकर स्थार रखते थे। हुस्तियों कहूँ सानर हुपोंने शोरी जिथे खड़े रहते थे । इससे रामावखर्में 'फला-कीरवा' का भी पना खनताड़ी।

इसके घरितरिक, सुप्रीयका विशास सीराधिक ज्ञान तस समय मण्ड होता है वस यह सीराध्ये लोजमें जानेवाले यानरोंके सामने मूर्गानका विल्द्रत वर्षांन करता है। त्यामें पानरोंकी ग्रासा कीर युव-नियुव्यता से प्रीरव से है। सुप्रीयकी राजनीति जीर त्यामीत-पुराका वही एक प्रमाख है कि श्रीरामने उसे व्यामा मन्त्री और सेवापति वनाया था। मारवाकि चीर परमार्थज्ञानके विवयमें सीहम्साम् परम प्रसिद्ध हैं ही। व्यवस्था वासकान्त्यी राजनीति, हृदिकुणवता, जिसने हुन्मान्त्रीको वसका करता कराया था, समीपर विवित है।

इन थोडेसे दवाहरखोंसे पता क्षमता है कि रामायक के ऋच-धानर साधारया पदा रीज-बन्दर नहीं थे। यह कोई विवेक-वृद्धि-सम्पन्न कानार्थं सानव-जाति थी । को बाज वष्ट या बड़ीं रूपान्तरित हो गयी है। सन्भव है इनके पंछ रही हो. स्पोंकि शमापवामें पूँचका वर्वन प्रायः मिखता है। च क हारा श्रीहतमानुश्रीका लडा-वहन प्रसिद्ध है। यह भी हो सकता है कि ये उस समयको भावनी जातिकी सम्यताचे चतुसार कार्देकी पूँछ-सी बनाये रखते हों । कव असळभान-बावियों में चीर राजपतानेमें बाळथी. और बर्धी-करी बाब भी है, कि कियाँ भएनी चोटांको समझी भारीसे गुँचचर इतनी सन्ती बना सेती थीं को पीटमें पैशेंतक **ब्राटक्ती रहती थी। ब्रयपुरके मागे व स-सी बनाये रखते हैं ।** इस सम्बन्धमें इस विरोध कहा नहीं का सकता, परन्त इत्तरा सवरव बडा का सकता है कि बेडाध्ययन, यक्त-यान. बाक-परव, ज्ञान-विज्ञान, ईरवर-शकि, राज्य-सञ्जाबन, गायम-वार्य, कका-बीशस कादि कार्योको करनेवासी बाति प्रशःबाति नहीं हो सकती। सन्भव है इस मानव-

खातिका नाम 'वानर' रहा हो। बारर पग्न भी शेरे हैं, ह बिये जीय इन्हें पश सानने बारे हों। या यह मी सकता है कि इनके रूप-रक्तमें बन्दर-जातिसे इव समान पायी बाती हो, इनमेंसे कुछ क्षोगोंकी शब्दें स्त्रें सी मयावनी और बरूप हों. यदापि इनके देवील इन होनेका भी उल्लेख मिलता है। श्रीरामको सेवामें रा बाजे बाबर देवताओंकी सन्तान ये। इनकी रपी प्रकरवामें जिला है कि जिस देवताका जैसा हर, के ही थल या उसके बंधसे ही बैसे ही रूप, देश और हता पुत्र उत्पन्त हुए, तथावि कुछ खोग बरस्त होंगे, मा कत भी सो मनुष्योंमें ऐसे बहुत से मवावती शक्त है नी वृत्ते जाते हैं जिनके चेहरेकी और देखते ही हर हतता है। वानरी सियोंके तो सुन्दरी होनेका सप्ट उस्तेन निर्म है। सम्भव है यह जाति कृदने कौंदने भीर बरवें हरेता दोनेके कारण शब-मूख लानेमें चन्पल होनेने बानी शहरों के लोग मज़क्ते इन्हें बन्दर करने 🛍 ै कुछ दिनों पहले कूद-काँदमें निप्रय पीतन्य नार्शन के क्सी खोग 'पीत-बन्दर' (Yellow Monkeys) ब कर प्रकाश करते थे । कली-माजू (Russian Best) भीर- बिटिश-सिंह (British Lion) नाम नार व प्रचित्र हैं । भारतकी करिक्ति अनता कर्राके जब भी बन्दर कहती है। यर इन शीनॉमेंसे कोई ही हरी पद्ध नहीं है । राजपुतानेके भगावाजीमें एक बार्कि 'भूत' कहते हैं। इसीपकार इनके बिये भी सावा पेते हो 'ऋषवान' " पर्वतपर निवास झानेने बार पुक्र जाति चएच कहाने खती, जिसमें लाखवाद थे।

इस विश्वस्थले पारक शतुमान कर साने हि हातार्थं व्यक्ति व्यवस्थल परास्त्री हैं। वन वाण की साने निर्माण मानवस्थल परास्त्री हैं। वन वाण की साने निर्माण मानवस्थलिक हैं। बोग से, निर्माण का वाण की साने का वाण की सानकस्थल कर का वाण की सानकस्थल कर का वाण की सानक स्थलकार से वाण की सान के सानकस्थल से वाण की सान की सान की सान है। विश्व की सान की सान की सान है। विश्व के आजवार का सान हो। तर है। तर है।

ाकर व आत्यवान् व्यवस्थातः ता सर प्रान्ति वंश्य वे जो राविद्यानन्त्रन अगागन् बीगासी प्रेमी सम्मितित होनेडे दिये वारगीय हुए थे। हर्नी नर्नस संपित विवस्य जिसाबर क्षेत्र समाग्र बरगा है।

(E-0- 1121141)

इन्तिमात्रान्मद्वास्थाः त्रात्राणीसः सद्दावस्थाः ।

परंशंब मधुणस्य <u>कत</u>्रैः परिवर्तन्त्र च॥

च्यापन्ते प्रमुखील (बान्सन्ह । ११ ।६१)

कार्य ऋष्यमः अध्यानुप्रान्तः सर्भवः। (ता०००।(वार्))

मझाजीके बहनेसे देवताओं ने खप्सराओं, सन्धर्वियों, रहरूपाघों, नागकन्याचों, ऋदकन्याचों, विधाधरियों, **क्वि**त्वों और वानरियोंके द्वारा सब प्रकारकी आया जानने-बाडे, शुरवीर, बायु सदश गतिवाखे, नीतिक, बुद्धिमान्, पाक्मी, शत्रुविजयी, साम-दानादि, मीतिनिपुका, इदशरीरी, ग्रमास प्रयोगमें पद्र, साधात् देव सदरा पुत्र उत्पन्न किये। म्हात्रीसे 'बारनवान्', इन्द्रसे 'वाजि', सूर्यसे 'सुग्रीव', रहराविसे 'तार , क्वेरसे 'गन्धमादन', विस्वकर्मासे 'नवा',

अभिसे 'नीख', अरिवनीकुमारोंसे 'मैन्द' भौर 'हिविद'. बरुवासे 'सुरेब', पर्जन्यसे 'शरम' और बायुसे 'हनुमान' हुए. वया अन्यान्य देवताओं, महर्षियों, गहकों, यूप्रों, किन्पुरुषों, सिद्धों, विद्यापरों और नागोंने भी हजारों प्रश उत्पन्न किये । देवोंके माट-चारबोंने भी सैकहों पुत्र उत्पन्न किये । इन सबकी उत्पत्ति मुख्यतः अप्सता, विधापरी चौर नागकन्याचाँसे हुई क्ष! (वा॰ रा॰ १।१७)

——रामावण-वेकी

रामायण श्रीर महाभारत

एक तलना

(केलक-डाव श्रीमङ्करेवनी शासी, पन० ए०, डी० फिल०)

रतीय संस्कृतिके इतिहासमें सादित्यक पहिसे 'इतिहास' स्रीर 'ग्राय' का भा भारत्व किसी दूसरे प्रत्यक्षे कम नहीं है। इयर इव दिनोंसे क्षेत्रक पात्रात्व विदानों की देखा-देखी सवा क्रम्य कारवाँ-से 'इविदास' और 'प्रशय'कुळ वयेचा-की रष्टिसे देखे आने जाने की । रालु यह मतप्रताकी बात है कि साव न केवला आरतीय क्षेत्र पामाच विद्वानींके भी इन विचारींमें परिवर्तन ही हा है। घर वैदिक साहित्यकी तरह इनकी कोर भी विद्रानीका यात भाने काग है। इसारे भारतवर्णमें तो स्रति गरीन बाहते ही इनका गीरव सममा जाता था। यहाँ व कि इतिहासको 'पश्चम बेद' माना जाला था-'इतिहासः हते देशमां देश।' कीटिश्यने अपने 'अर्थशाख' में कहा — पायकत्व दुवैदासयस्य । अपविदेदितिहासदेदी व ता। मर्पाद सामवेद, बस्वेद, यहर्वेद यह अधी और वर्षदेतु तथा इतिहासदेतु ये बेद हैं। माहालप्रन्योंमें स्रनेक म्पद् इतिहास चौर पुरायका नयौन है। पातअस-महाभाष्यमें

कहा है- 'बल्बारी नेदा:... रविशास: पुराणम्... !' चतुर्दरा विचार्योमें भी 'दुराब' को विनावा शया है। इसप्रकार भारतवर्षमें अध्ययनाध्यापनकी प्रत्येक प्रखाश्रीमें इतिहास भीर प्ररायका समावेश या ।

इविहास और दुरायके साहित्यमें रामायय और महाभारतका-जिक्का समावेग प्रायः इतिहासमें ही किया जाता है-स्थाय बहुत कैंचा है। इन दोनों प्रत्योंके जारेचिक निर्माणकावके विचयमें धनेक मत हैं। यहाँ हम उस मगदेमें न पहकर इन दोनोंकी संदेपमें एक-शो र्धाटवाँसे तुलना करना चाहते हैं। साधारवतवा वही समना वाता है कि दोनों मन्य बिएएख एक ही प्रकार तथा कोटिके हैं । परम्तु यहाँ इस इब दोनोंकी तुलनामें उत्प उन्हों बार्तोंको दिसखाना चाहते हैं जिनमें इन होनोंका ਮੇਰ 🕏 ।

(३) रामायय और महाभारतमें एक मौक्रिक भेर, जिसकी चीर प्रायः बहुत कम च्यान वाता है, यह है कि भहामारतको 'वैदासिकी संहिता' बहर वाला है। बहाहर छा थें, इसके पर्वों के चन्तमें समासिम्बद्ध वास्पर्मे वह विद्या

वर केश तर्देशी इटिसे लिखा गया है । बास्तवर्ते क्या बात थी, को लगवान् ही जाने । जब साहान् आंक्नूबान्दी पात्रको शिला और हरावानी किया प्रमाशिकानको सौराम्हे सार्वा सानर-क्ष्मोंका कन्दर-मान वताना है हर द्वार स्टिए ा बन्दा हुए में दिवना पटना ही है, वास्त्वने अववन्त्रों हाकि अनन्त्र और अववर्ष है। बन्दर-मानु हो चेडन्व मानी है, करें दो का देव-पाणायोको महाने कारिक विधान, कालने भी अधिक वक्साली, इन्द्रेने मी अधिक देववंतमपत्र, दृहरपानिने भी हिंद इतियान् भीर विषदमंशि मी अधिक कठाकुराण बना सकते हैं।-- जेखक

जिला है कि हाथी-जैसी बड़ी-बड़ी शिलाओं झीर क्वेंत-शिलारोंको बानरकोग उपाइकर चन्त्रहारा समुद्रतक जाते येह। सेतु कहीं बाँका टेडा न हो जाय इस्तित्ये बानराव्य स्त्रसे नाप-नापकर पत्थर रखते थे। इस्तिज्ये कई बानर हाथोंमें दोशे जिये खड़े रहते थे है। इससे रामायवर्षे 'क्या-कौराव'का भी पता जयता है।

इसके चार्तिरक, सुगीवका विशास भौगासिक शाव सस सत्तव मण्ड होता है सब वह सीसाफी कोनमें जानेनाते धानमें से सामने मुगोधका विस्तृत वर्षीय करता है स् प्याने बार्त्राची गुरता कीर सुन-नियुण्या तो असित ही है। सुगीवकी राजनीति और रचनीति-चुलाका यही एक प्रमाय है कि शीरामने करे कपना अन्त्री और सेनापति बनाया या। अगवजिक और परमार्थजनके विषयों सीहसूनान् परम असित हैं हो। अक्षरात कानवान्त्री रणनीति, सुसिङ्गकता, जिसने हन्नान्त्रीको बक्का सराय कराया या, समीपर विद्वित है।

इन थोदेसे उदाहरखोंसे पता खगता है कि रामायखके ऋच-बानर साधारय पद्य रीच-बन्दर नहीं थे। यह कोई विवेद-वृद्धि-सम्पन्न चनार्थं मानव-जाति थी । सो चाज सह था कहीं रूपान्तरित हो गयी है। सन्मव है इनके पंत रही हो, क्योंकि रामायवार्ने प्रकृत वर्वन प्रायः मिस्ता है। च हके हारा श्रीहनमानुत्रीका खड़ा-चंद्रम प्रसिद्ध है। यह भी हो सकता है कि ये उस समयकी चपनी व्यक्तिकी सम्बताचे चनुसार करवेची प्राय-शी बनाये रखते हों । का मुसद्धमान-बातियोंमें और राजपुतानेमें चाखथी, और कहीं-बड़ी सब भी है, कि दिल्दी भारती चोटीको धनकी बाटीसे गुँचकर इतनी सम्बी बना शैती थीं को पीरमें पैशेतक बरकरी रहती थी। बयपुरके नागे पूँ छ-सी बनाये रखते हैं। क्षर सम्बन्धने क्ष विशेष क्षरा नहीं था सकता. परना इतना धाराय कहा था सकता है कि वेताव्ययन, वज्ञ-याग, दान-पुचर, ज्ञान-विज्ञान, ईरवर-धक्ति, राज्य-सञ्जाखन, गायन-वारम, कका-कीग्रस खादि कार्योकी करनेवासी बाति परा शांति नहीं हो सकती। सम्मव है इस मानव-🕳 इस्टिमात्रान्मद्राव्ययाः पात्रार्णास्य सद्यवन्याः ।

धीरांब एगुनाटव वनीः धीरवरांन पा। (राज्याक वा १६। ५६)

🛉 इतम्बने बहान्त्र (गान्य-६) ११ (६)

ब्बातिका नाम 'बानर' रहा हो। बानर पग्न भी होवेदैनि बिये कीय इन्हें पद्ध मानने बये हों। या सा वी सकता है कि इनके रूप-रहमें बन्दर-वातिसे इव स्टब्स पायी जाती हो, इनमेंसे क्य बोगोंकी शक्वें क्लांचे सी अवावनी और करूप हों. वचरि इसके देतेल इन होनेका भी उल्लेख मिलता है। श्रीतमधी हेर्डे तो वाले वानर देवतायाँकी सन्तान थे। तकी रा प्रकरवामें जिस्ता है कि जिस देवताका वैहा हा, ^{हेउ हैं} बल या उसके अंग्रमे ही बिसे ही रूप, बेग और रार्त पुत्र उत्पन्न हुए, तथारि इह खोग बरस्त हों, \Upsilon कल भी सो मनुष्योंमें पूर्व बहुत से भवारती हुआ है वेसी जाते हैं जिनके चेहरेकी बीर रेसते ही हा बाग बानरी क्रियोंके तो मुन्दरी होनेबास्तर उन्नेप ि है । सम्मव है यह जाति कुरने प्रौरने धीर बनमें कि होनेके कारण फक्क-मूख लानेमें बन्दल होनेरे ह शहरोंके खोग समाकते इन्हें बादर करने बी हैं कुछ दिनों पहले कुर-फॉदमें निप्रच पीतवर्ष म रूसी खोग 'पीत-बन्दर' (Yellow Monk'. कर प्रकास करते थे । रूसी-भाष (Russ's भीर विदिश-सिंह (British Lion) म मचित्र हैं । भारवची श्रविदित श्र^{ात} कव भी बन्दर कहती है। पर इन तीर्वोति पद्य नहीं है । राजपुतानेके क्रमरवाणी 'मृत' कहते हैं । इसीयकार इसके 🕼 वेसे 🗊 'ऋचवान' * वर्षतपर निए वृक्त आति ऋष कहाने क्षमी, जिम्मी

इस विश्रयमे सहस्र अनुमान । बर्चित यावर-कार्य प्रामान । । व सम्बद्ध सामब-जारिके हो क्षेम में आवार-विवारों कार्यकारिने के त्रिवके व्यक्तितर की आर्यका । चीतो जीर कारावियों का इ : दिर वे साम्बाग । चीतो जो साम्बाग । सामबिका होने हैं त्रिः संस्थित होने हैं त्रिः

. The spectaring

a सन्दे शाः

ये खोड स्पष्टतया उपनिषदादिके झुन्दोंसे मिळते-इयने हैं। परन्तु नीचे जिस्से रक्षोक महाभारतके श्री होकर समायकडे कैसे हां है—

भादिनवै १८२ । २---

क्षेत्र दीवेंग कुरोन चैव

दरित्म दिश्तेन च बीदनेन । समिद्रदर्भा सददेशामिन्स

मत्ता बया है भवता मंत्रनंद्राः १६

काहित्रवे १८१ । १२ — देवेद दार्थाः पृथुबाह्यस्ते

र्वारी यमी केव महानुमानी ।

वो डीवरी देश्य तदा रम सर्वे कन्दर्भवाणाभिहता समृबुः ॥

कारणात्त्रे वा बात नहीं है। बातमें क्या वेशी रिक्ती केंगे जाने कियों बातेशकों सामने स्वक्रम में तो 11 स्वर्ड और बीर बारवर दोगों क्यों हो स्वर्ड और बीर बीर बारवर दोगों क्यों हो स्वर्ड के जानका कार्यों कार्यों कार्यों कार्यों कारणाय का बात कार्यों कार्यों कार्यों कार्यों कर्म, क्योंचे बीरा बाताती बर्चीं कार्यों क्योंक हों, क्योंचे बीरा बाताती बर्चीं कार्यों कार्यों हों, क्योंचे बीरा बाताती बर्चीं कार्यों कार्यों कार्यों कार्यों कार्यों क्योंकों कार्यों कार्यों कार्यों कार्यों कार्यों कार्यों कार्यों कार्यों कार्यों वार्वे इसारी विश्वी दृष्टि करती हैं। होपर्रीके चीरहरक्की ही बात कीविये। मीच्य, होव्य-वीसे वीर कीर चर्माणा एक कीके मेरि क्यरिक्सार्में विकेष येथार क्षणमानको सुरचार वह केते हैं। जायद खात्रकब्बा एक सानारचा सच्चामही भी ऐसा नहीं कर सकता। वह कपने बीवन-दानने भी एक कीवी रचा करेगा।

इस भेदके यूवमें भी बारूपमें उपयुंक पहचा थेरू हैं। है। रामायण बारूपमें राम+ध्यन है। यह एक रयक्ति हैं। द्वापान करनेके विजे विलयी सभी है। रामाचे हो। इस इस बोर पार्टीमें बनाने सार्पारत तथा प्रांतिक रामाचे हैं। रामाचे हो। इस स्वस्थानीक रिकेट पाणके विजयमें ही क्षिण सार्पारी कराया है। उस सार्पारी होंगे हैं। उस सार्पारी होंगे सार्पारी होंगे। उसके विजयमें ही क्षिण सार्पारी मार्गार विजय सार्पार होंगे प्रारंपित होंगे। उसके विजयमें ही क्षिण सार्पार होंगे प्रांति होंगे। उसके विजयमें ही क्षिण सार्पार होंगे प्रांतिक सार्पार होंगे। विज्ञान होंगे। व्याप्त होंगे। विज्ञान होंगे। विज्ञान होंगे। विज्ञान होंगे। विज्ञान होंगे। व्याप्त होंगे। विज्ञान होंगे। विज्ञान

इसके विश्व महामारत दिगी एक व्यक्ति हो गुपापा गर्दी है। वसमें वह बहना भी मुश्कित हो बाता है कि बसका सर्वत्राय पात्र कीन है। वसके प्रतेकारेक पात्र, श्रीमा, इन्हों, तात्रमारे, व्याप्त, हुप्पत्र, पुर्विद्दा, पुर्वेचित्र, क्यां आदि विश्वक समीच मान्य होने हैं। हम बसके शीवनदी धटनाव्यक्ति साचनाय बसके मनके सार्वोची थी। स्थान स्थानस्य स्थाप देखने हैं। यहाँगक कि बन सम्बन्ध प्रवह पुष्पक्त शीवनक्ति किसा बा सकता है।

(१)शासायच कीर सहासारामें एक भेर यह मी है। संस्कृतके प्राचीन क्रमांची हिमा उस्तेम किला है उत्तम तासाराके पाणेश नहीं। हैरिक-मेरितामों तथा आप्योगस्थी शिक्सोनेंडे पूर प्रताह या पाणिता क्रमांचा क्रमांचा वर्ग क्रिया है। सामायक सिटिए पाणेश क्रमों से देन प्रतास क्रमांने कहीं वहीं सिला। अधिनिक्ती क्रमांचारों हो स्वीतिक। उससे वासुंध, बाईब, पुरिश्ति कारि सहामाराजिक पाणेस को स्वत्म है, पर सामायोव पाल्या कोई वासेन सही सिला।।

यर देशा मर्रात होता है कि समयके गुजानेके बाक साथ महामाराके मुखानकेने रामाचलका मान्य कराना गया । वर्षो-त्यों हम चारो घड़ते हैं समायखना प्रभाव तथा प्रचार घड़ता हुआ दीखता है और महामारतका घटता हुआ।

जहाँ प्राचीन समयमें वैज्यव-धर्ममें कृष्यका प्राधान्य दिखलायी देता है वहाँ पिछले समयमें रामका। पिछले समयमें संस्कृत नाटक कादि वितने मामादीन करने को लेकर बिल्ले गये उससे कहाँ सभिक रामारके घर-एर । बावकल भी वितना प्रचार तुरसीनान्यर है उत्तवा सुरसामरका नहीं। शायर वहाँ भी रूर वेर कारण यहाँ है कि रामायण बार्रजवारको डेकरिकेटी

रामायणकी प्राचीनता

सकत कुछ स्रोग ऐसा मानते हैं कि रामायणको रचना महामारतके बादकी है. यद्यपि निरपेचतापुर्वेक अन्योंका सम्ययन कानेपर इस मान्यतामें इठके व्यतिरिक्त जन्य कोई भी आधार नहीं ठहरता। जिसमकार भगवान् रामका काल कौरव-कालसे लालों वर्ष पहलेका है उसी प्रकार रामायलकी रचना भी है । रामायलमें जिस मर्यादापूर्यं सरहमधी सम्वताका वर्यंन है. महाभारतमें वैसा नहीं है, इसीसे पता सगता है कि शमायख-काससे महाभारत-कालकी सम्यवाका चादरों बहुत नीचा या। गुरुकुत्र कांगड़ीके प्रसिद्ध करवयनशीख कीवृत रामदेवजीने जिला है-- 'धर्ममय एवं चामिक तथा प्राकृतिक सव महारकी उन्नतियोंसे परिपूर्ण रामायक के संचित्र इतिहासको वर्णनकर तथा बसके पीवेके एक दीर्घवालके इतिहासको द्योदकर शोबमय हरपडे साथ महाभारतके समयका यन्तियन इतिहास सिखना परता है। श्रीरामचन्त्रजीके प्रतित बाचायके प्रतिकृत यथिष्टिरके ज्ञा खेलने बादि कर्मीका. बचमच मरवादिके प्रानु-त्नेहके प्रतिकृत नुधिहिरके प्रति भीमडे चप्रात्मचड शस्त्रोंडा, सहारात्र दशरवंडी प्रजाडे सम्मुख सीठाको कैडेबीहारा ठपरिवर्गके वस देवेपर प्रशास एक साथ विका बहना 'विक् त्यां दश्यम्' सवा धनराष्ट्रवी राष्ट्रसभामें औरहीकी दुईछा होनेश्र भी मीन्स, बोचाडि बीरोंका दुव भी व वर सकता, कुटिवा दानी मन्यराका भी बपमार भावने जिने धनक और महारानी शीररीकी दुरेटाचे दुर्वोदन-दर्वाहिको असम्बन्धः सनी साली सीनाका चरित्रम और सीरामधन्त्रजीया वर्धातम, उसके अतिकृत

के कि हैं। विश्व विश्वविद्यालयाति

के बहुविवाह, श्रीरामवन्द्रजीके बनकी हो। वर्गम व्ययोध्यावासियोंका उनके साथ वनगमनके हिरे हार हो युविधिरके दो बार इस्तिनापुरसे निवाडे बारेस निर थोड़ेसे नगर-निवासियों हे पायडवाँ है इतहे ता हुए सुद्धा दुःस प्रकट करनेमें प्रन्योंक कीरा है मीनावसम्बन, श्रीराम श्रीर भरतका महार त्राम यदार्थको धर्मपासनके सम्मुल तुत्र्व समस्या होते पुकका दूसरेके हायमें फेंकना और दुर्गेधरका स वर कि 'स्व्यमं नैव दास्तामि दिना हुरेन देए' पुराने रावयके बायस हो सानेपर श्रीरामक्त्रणेश वा सर कि यायक्षका क्य काना धर्मविष्ट है और हुई है हुए मीध्य और होक्का वर्ष, त्यसे इतरे हुर वर्षेट हैं. सोते हुए प्रत्युम, शिलंडी भीर शौगीडे वांची राष माझवाडुखोरपस बीरतामिमानी भवामाहारा वर्ष। तक विनावें । यह सब धटनाएँ है हो लाइस्पे । ए चौर महामारतके समयकी बदलाघाँको हका कर्न वचपि महामारतके समयशामापपढे सम्बंधी अथवा दससे भी श्रीच आर्थावांने सर्गात औ जीर रामायखडे समयडे बीरॉडी श्रीति बेंड हैं बर्जनारि विवय योदा वायमास, र हार है, हर्ल धानावाँनाधः, महाचादि वाप्रेपाधाँशे श्रिवा वे हती स्रचनहीं नाम प्रति नाम स्रचनर करती हैं। हर्ण बुबद्दवा सारी पृथ्वीतर अया हुला वा। वाणु गर समयक्षी अपेका हम समय वर्तना वहुन हमा वर्

समयका अपना हम समय कमा की व हम जनगरको नह मिन्दू हो जागा है कि हो नहीं रामायका बाल बहुन ही मार्चन हिन्दू की है।

मानसकी महत्ता

(के - विधार्थी श्रीमहेश्वप्रसादनी मिन 'रसिकेरा')

पर चीरता खीरकी कायरताकी कलोलिनी माँहि वहा चुके थे।

करिके करतव्य-पिताकर दाह अर्घोकी नदीमें नहा चुके थे॥

न रच्यो हुतो 'मानस' जी 'तुलसी' ती ही पापते धर्म गहा खुके थे।

कुलको मरजाद मिटा चुके थे वह कूर कपूत कहा चुके थे॥१॥ हरि-मिक पयोनिधि मकनमण्डली कैसेके बाजुलों ह्याँ बहती।

रहतो उफनानी सुमायपको सरि कैसेके छोकनमें महती।

पति-प्रेमकी माधवी-मञ्जू-लता केहिए कही बाखवकी लहती।

न भयो हुतो जी 'तुलसी' ती कहा 'हुलसी' हुलसी हुलसी रहती ॥२॥

तुम स्कियेते सुवचाय लियो स्नृति-सास्त्र-सरोवहके वनकी। तुम कालके गालते वारि लियो सुव-वर्मके कार्यके मीननकी॥

रवते उतते चुनि 'मानस'में सुम राम चरित्र-कन्कन की। 'तुल्सी' तम माँमरी नैयामें आर्यो दीनी नहीं जलकी-सनकी ॥३॥

तुरुसा सुन काकरा चयात पाइपा पाना ग्या जप आर्यताको तरनी को चछी जु सनार्यता-सम्बुधि छील्यिको ।

हरिकी हरिता की रहीम-रहीमता खाइयो पतालमें कीलियेकी॥

कलमाकी भुजीगिति कोऽम-जरा पर बाह्यो गरङ्ग उगीलियेकी। रच्यो ता छनमै 'तुल्खी' तुमने यह 'बक्क' मिचिलिये बीलियेकी ॥शा

षदकाय दियो 'तुलसी' तुमने चिरी-आतमाकी-तपनारतकी।

उफनाय दियो 'तुलसी' तुमने रसकी नदी घोर-तृपारतकी॥

यिकसाय दियो 'तुलसी' तुमनै उरकी कलिका इस-मारतकी। पनपाय दियो 'तुलसी' तुमने सुचिन्सम्यतान्यहरी भारतकी॥५॥

इंड्रकाय दियो रमनीयताकी पिकी मानस'की सुरमीमँह प्यारी। प्रगटायके 'मानस'की नमसी उमहाय दियो रस निर्मारी-प्यारी॥

निज 'मानस' की रवि-रहिमन ते विगसाय दियो अलीआव कियारी।

करि 'मानस' की सुधा-बृष्टिःग्रनी छहराय दियो कविता-कुलगायी हशा सिंह 'सुर'की भोप-अनोकी कियो स्वयिकास-प्रकासकी 'चन्द' में न्यारे। जनने निज्ञ जीतिकी जालिनते बगायणे हजारन खाँपे 'सितारे' ह

'पटपीजन'श्रीगर्नोकी न रही गनना तिनते जी अघी अधिकारे। पर धन्यही 'मानस' के 'नुङसी' नुम 'सूर' की ऑसिकी लोसनिहारे 💵

कियो घोर अरस्यक्रमें 'तुलसी' तुम चन्द्रन-कानन केर विकास। कियो घोर मलेकी विमावरीमें 'तुलसी' तुम पुनोक्ती चन्द्र-मकास।

कियो विध्यक्षी छातीये त्'तुरुसी' निज मानसकेर अनोधी मिटास। कियो सागर यायरमें 'तुरुसी' कियो राममें रावनकेर उजास द्वा

परमीकि' मैं बीज बयो जेहिकी तेहिमें क्यो अंकुर 'कार्रियदास'। 'मयमूति' विमृति-सर्द करिकेकिय' सूर' की सींपि चर्यो हरि-यास व उनने तेहि सींचि कियो वस्त्रभित पपित पुष्पतते अनयास।

कविताकी स्ताकी प्रकृत कियो 'तुस्सी' तुमने 🗓 हा परी विकास हरह

वाल्मीकीय रामायणसे श्रवतारवादकी सिद्धि

(वर बदाय भीर २४० सोस)

(भेगक-माहिन्यावार्ष ६० मीरपुरर मिट्डूबाननी शामी, काम्य-वेदामा-पीर्व,शामी,पम०९०, एम०भे०एन०)

नमें।ऽशु शामाय सहस्यमाय देशी च तसी जनकामत्रानी । नमें।ऽशु रहेन्द्रसमानकेन्द्रो मनोऽशु चन्द्राकेमरुद्देनस्यः।। (सुरहस्याक सर्व १२ कोड १०)

तिन सोगांने सार्विक्षे भीवारमीकिएन रामायवको मही पा है जनमें सपिकांग ऐने हैं तिनकी मुद्दिमें यह बात देश हो तार्व है कि वारमीकिमी म तो शीरामकान्द्रभी को विराह्म सरतार मानते हैं और क सकार-वाहके स्वाचारों में हैं। ऐसे मुखे-मदके बोगोंके हितार्थ गण भीता प्राच्यारों हैं। ऐसे मुखे-मदके बोगोंके हितार्थ गण भीता प्राच्यारोंके सहामाजारके मत्योंकी अद्योंके संस्थार्थ, एवं तर्ह्हता राज्येव संस्थार्थ, यह संस्थार्थ स्वयंता स्थार्थ स्यार्थ स्थार्थ स्यार्थ स्थार्थ स्थार्थ स्थार्थ स्थार्थ स्थार्थ स्थार्थ स्थार्थ स्यार्थ स्थार्थ स्थार्थ स्थार्थ स्थार्थ स्थार्थ स्थार्थ स्थार्थ स्यार्थ स्थार्थ स्थार्थ स्थार्थ स्थार्थ स्थार्थ स्थार्थ स्थार्थ स्य

धवतारवादका सिद्धान्त श्रीकृष्यभगवान्के निक्षोद्दश्त । गीतोक्ष वचर्नोपर निर्भर है—

> यदा यदा हि धर्मस्य स्तानिमेनति मारतः । अन्तुरधानपर्धमस्य तदाऽऽस्मानं सुनामदहम्।। परिताणाय साधुनां निनाशाय च दुष्ट्रवास् । धर्मसंस्थापनार्धाय संमन्नामि दुने दुवे ॥ (मीनर्भगवदगीता, भयाव क्षेत्रे० ७-८)

— कि 'वब-नव मारिवर्गें के सम्युद्ध और निःश्वेवर्के साध्यन क्यांसमादिक्य धर्मको हानि और खध्यंबा तथान होता है वस-वस में माणाहारा अपने धाएको वसक करता हैं और सम्मामार्गें एक वसने परिचय तथा पाएकारिगेंके वस्त्रिक पंतर्के परिचय तथा पाएकारिगेंके वस्त्रिक पंतर्के परिचय तथा पाएकारिगेंके वस्त्रिक एक स्थापन में पर्यो होते हैं में प्रवेष गुगमें मक्ट होता हैं ।" .

इस सिदान्यके घतुसार प्रार्थकाति प्रधीनकावसे यह मानती चडी था रही है कि समत्का परिपादन करनेवाबे सरवाुयामक विष्य भगवान् प्रासुरी सम्पत्तिका उत्सेद और देनी सम्पत्तिका प्रसार करनेके विषे ववुत्रक्ष समय वयस्थित होनेस स्वयं ठ्युप्पुण्क शरीरहारा भवता थेते हैं। हैं भागतास्थ्री संस्था दश वा, चीरीम या ममंत्र सर्मा सर्वेत हैं। मस्तु म केलसे बासन, कप्पुण (कस्तु), बात, कीव हण्यादि मानतास्थ्री हराद करवेश या। सामायक सेल्के हारा का के बोरामाण्यास्थ्री हराद वर्षन करवेश सेलेक संस्थ्र विद्या सारोगा

विविध सवतारोंका प्रासिट्गक वर्णन (१) वामनायतार--

[चाटकावय और मिधिवागमत्त्री क्यामेंह सर्वे सिद्धाधमद्द्यंव की क्या है जिसमें रिवामित्री स्तर्मेंड करते हैं कि] यब (क्यांचे देवकार्यों निष्युक होनेड स्तर्में) महादेवलां विष्यु कादितिमें जायब हुए की समात्त्रर वाद करते विरोधनत्त्र प्राचित्र हे जात कारि मा शास तरकार्यों पद (प्रियेवो) माँगकर कीर [चमत्त्र] प्रीयोक्ती मोजा पद (प्रियेवो) माँगकर कीर [चमत्त्र] प्रीयोक्ती मोजा प्रकारत करते, यब लोकोंड दितमें सब्ब करते। बोड्यामा महातेवलां [चामतत्त्रपारी दित्याभवार] [चमने] बक्तो बिक्का निवसन (क्यां) करते, मार्ग्य पुतः दे खावा, (एये) त्रैजोबकों प्रतां हरते हरे कर दिया मठ--२ शास्त्री (मानस्त्रमायार) में[चा]कर्म वृद्ध करनेवाबा सामस्य पहले प्राक्रान्त (विर्योद्या) करते वृद्ध करनेवाबा सामस्य पहले प्राक्रान्त (विर्योदा) करते

भन्ताहर (०) मत्त्रम् मिन्स्



वामनावतारका वर्णन सा० रामायखके क्राने स्वर्जीमें भी मिलता है। यया—

१--बालकाएड सग २१---

रह राम महाबाहे। विष्णुदेवनमस्कतः। वर्षाण सुबहूनीह तथा युगरातानि वा।२।। **दपश्चरण**योगार्थमुबास समहातपाः । पत्र पूर्वाधने। राम बाननस्य महात्मनः ॥३॥ सिदात्रम इति ल्यातः सिद्धो झत्र महातपाः । पतीरमजेव काले त राजा वैराचनिर्वालः ॥४॥ निर्जित्य दैवतगणान् सेन्द्रान् सहसदद्गणान् । कारबामास तद्राज्यं त्रिषु कोकेषु विश्वतः ॥५॥ यतं चढार सुमहानसुरेन्द्रो महाबतः। बतेस्तु यजमानस्य देवाः सानिनपुरोगमाः । . समायम्य स्वयं चैव विष्णुमृतुरिहासमे ॥६॥ बर्टिनीचिनिर्विणो यभवे वरुमुत्तमम्। मसमारकेत तरिमन् स्वकार्यमनिपद्यताम् ॥७॥ ये चैनमामवर्तन्ते वाचितार इतस्ततः । यब यत्र समावक सर्व ,तेल्यः प्रयच्छति ॥८॥

ह तं दुरहिताची सावायेगमुपानितः। ह तं दुरहिताची सावायेगमुपानितः। वामनतं गते। विणी क्रव कत्यायमुप्तमम् ॥९॥ वे क्षोड दुर्वोद्दय कोकाँडे करर बसी सर्गम वामना-

नगार्थ वारायस्य को को प्रवास्त्रक करा दहा समय वांभवा-इन्हें वारों (बादा १०-१ में) दिल्यु माध्यक् हिन्स प्रकासि कारा चौर व्यक्तिके प्रवस्ति इन्हें को हैं माई वनका गानके करमें कराब हुए इसका वर्णन है। छर्मनार स्त्रीक १-१-१ को बमा है को क्रांसमेस उत्तर हो वा शुक्री है।

१-मान्यसे सं महामाह वैसिक्षी जनकाम भाग् । बचा विग्रमीहासाहु में जिन्द्राता सहीमिनाम् ११(१०६ ११२४) १-मानसे बारणाहित्रकार् विचारितिकमानवि । देवानुसीमदीस समुदरस जिमनयनम् ११(४१५८१) १)

४-महा देशियने यह प्रमितिष्युः समाजनः । वर्षाप्रशास्तः पूर्वे वनमाणाक्षित्रियमः ॥(४१६७॥१७) देनीराज्य हाराः सर्वे

र-विराज्य हरतः तर्वे हृदुमन् किञ्चेष्यते । विकास महावेत विष्णुकीत् विकासीन्व ॥(आहराहण) र-प्राप्त विश्वतासावि वे बौचन्ते सामन्वतः । विकास वर्तान्तार्वे व बौचन्ते सामन्वतः ।

[जाका] कपिश्व [रूपवारी] सनातन वामुरेव (प्रयांत् विष्यु सगवात्)को देखा धरश्य

्र हे कपुरस्तवंशोद्धश्चनस्य (राम), तथ इन [सार-पुत्री]का वह वयन भुवकर करिकने वहें स्रोपडे धारेटमें

भविष्यति हि मे रूपे प्रवमानस्य सागरम् ।
 विष्णोः प्रकममाणस्य तदा त्रांन् विक्रमानिव ॥(४।६७।२५)

८-तदुरूपमितसंक्षिप हर्नुमन् प्रवती स्थितः। वीत् कमानिव निकम्य बिलीवेहरो हिनः॥ (४।१।२१०) ९-व्यनेन्यति मां मतां त्वतः वीक्रमिन्दमः।

असुरेभ्यः प्रियं दीसां विष्णुस्तिभिरिव कॅमेः ॥ (५।११।२८) १०-विकमेणोपणसञ्च यया विष्णुर्भहायशाः ।

-विक्रमेणोपपलस्य यथा विष्णुर्महायशाः ।
 सस्यवादी मधुरवाण्देचो वाचस्पतिर्यदा ॥(१।३४।१९)

११-तं रूप्ता राष्ट्रसमेष्ठं पर्वताकारदरीनम्। क्रमबाणनिवाकाशं पुरा नारावणं यया।।(६१६१:२)

१२-स्ववा तोकास्तवः कान्ताः पुरा देविन क्षेत्रीसिनः। सहेन्द्रस् इतो राजा बर्ति वद्ष्या सुदारुणम् ॥(१।११७)

(२)—कविडावतार [बास्काव्ड सर्ग ४•]

बस्ववं बहुषा चल्का वासुरेवस्य चीमतः। महित्री माधवस्येषा स पव मगवान् प्रजुः।।२।१ कापिकं रूपमास्याय चारयत्वनिशं चराम्। तस्यकोपानिमना राचा गविष्यन्ति नृपप्रमाः।।३।।

> ते तु सर्वे महात्मानो मीमवेगा महावलाः। दहशुः कषितं तत्र बासुदेवं सनातनम्।।२५।।

श्चरता तदयर्व वेषां कपितो रचुनन्दन । रोषण महताविद्यो हुंकारमकरोत्तदा ॥२०॥ सतस्तनाऽप्रमेषण कपितेन महत्त्रमा ॥ अस्मराशीङ्गताः सर्वे काकुतस्य सगरसम्प्राः ॥३०॥

िरात्म देशकारींथे भरिषण्य वाण कारी है कि कि मार्थावात् कार्या है कि कि मार्थावात् कार्या कर्या कर्यात्रात्त्र कार्यात्र कर्यात्रात्त्र कर्यात्र कर्यात्य कर्यात्र कर्यात्य कर्यात्र कर्यात्र कर्यात्र कर्यात्र कर्यात्र कर्यात्र कर्यात्र कर्यात्र करात्र कर्य

शरीहवारी, अवानक वेगवाचे, महावर्धी, राज्यकोंने वहाँ

साका 'है' कार (शब्द) किया । सन वन सामेन (सर्गार मन, नाकी हप्पादि हम्बिमेंने यहे गुर्व प्रणवादि समायों के संवयर) करिन्न महाच्या (सर्वाद पत्तामा) के हारा सभी समस्युत वामके वेट (सर्पाद प्रथम) कर विशे गये स १६-१० ॥

३—कमर (कप्छणा)यतार[बालकाग्ड सर्गं ४:]

[विभावित्र सुनि शमधीसे महानगरण और सामान्यास-की क्या कहकर गड़ा पार करके जनातीरित्यत विशासा-भगतीके शमधेरके सम्बन्धने पूर्व-हमान्य वर्षन करते हैं]—

> वृदं बतवुने शाम दिवेः पुताः महाबताः। शरितेश्च महामामा शैर्वपन्तः मुवार्मिकः ॥१५॥ ततकोगं महम्बाम वृद्धिरासीम्महम्मनाम्। अमरा दिनशीवन कर्षः स्थामो निशममाः ॥१६॥

पहचे कत (सप) युगमें महाबची वैत्यों और परम पार्निक देवतामाँने सोचा कि हम किस प्रकारसे जरा-नरप-रहित हो ॥३६-३६॥

> तेषां चिन्तपतां तत्र शुद्धिरासीद्वैषधिताम्। शीरोदमपनं करना रखं प्रास्थान तत्र नै ॥१७॥ तते।निश्चिस्य मधनं पोनतं कृत्या च नासुकिम्। मन्तानं मन्दरं कृत्या ममनुप्रमितीसतः॥१८॥

कन्द्रोंने विचारते हुए यह मत क्या कि हम सञ्जल मयकर उसमें [से] रसको मात्र करेंगे ॥ १०॥ तब [सञ्जलको नपनेका निक्षण करके, और बाजुकि (बाय) की मन्यनरुद्ध (जिले भाषामें देंदियों का गोरली कहते हैं) पूर्व मन्दर (पर्वत) की मणानी बनाकर उन वापरिमित्त -बब्दावांने (सन्जलको मणा ॥॥ १॥

[म्ब वासुकि सर्पके शिर महाविषको वस्तवने बये, सितं सब बताद दाय होने बता। तव वो देवलोग ग्रंतर महादेवलोजे जास गरावको सुवादो बाकर 'तादि-ग्राहि' पुकारे चौर खुदि करने बते। देवतामाँकी खुदिको खुनकर देवरेदेवर मा (महादेवली) अब्द हो गये वच ग्रञ्ज-प्रकार हरि (विच्यु आगवान्)ने गुल्यारी व्यवध सुरक्ताकर कहा कि देवतामाँके सम्वेषण को बख्य बहबे साख दुर्द यह हे सुरक्षेत्र, आपका [आता] है, बजा चाप इस विपको साम्हास्त्रचने महत्व कहें। बक्त स्क्रम्स समावान् स्वार्यिय हो गये भीर रिकामीने देवतामाँका सब्व देवसांका कीर साम्र्वेबर भगवानुका बाव धुनका को ता विकास कामृत्वेब समाव स्ट्रां हिमा । देशासकी हैं। दिक्ती भी चयाने बने । देशासुनिंते हिम समय म विकास ताब सो भागतीका मनदात्त्व पतानी हैं हो गया चार बुंबीने सम्बार्ग समेन व्हेंतके बरावों महामृद्य (मगवान् निन्यू) की स्ट्रांन की । (१८-१)

इति कुन्ता इतिहाः कावर्ठ क्यतस्थिः॥१९ वर्षते पृष्ठाः इत्या शिव्ये तत्रीद्वी इति । वर्षते पृष्ठाः इत्या शिव्ये तत्रीद्वी इति । वर्षताम् तु श्रीकारमा इन्तेनाकम्य केवत्यीर्था देवार्गा क्षम्यतः शिव्या मगस्य पुर्वाततः॥१॥

यह [लाति] सुनवर हरांचेग्र हरं (विश्व कार) वे करमुपका रूप धारण विचा और गर्वको कार। व यहाँ समुद्रमें अपन किया । पिर वर्षके कारमें बोकान्या पुरशोक्ता केलावे हाससे धानका रेहाँ का विश्व होकर स्थवा प्राराम विचा १११-११। छात रहें पत्राच [हस समुद्रमन्यनरों] धनकारि (वंश)। को कासाराई और उनकी सार्वक परिवारिकार्र, हरवांका (सुरा), उपनेशकारा नामक हर, कीसून रह और नर

(४)—यिष्णुका 'मोहिनी' (मायातत) की घार्य

[बाबकायक सर्ग ४१—(सोक४०-४१) इत कड़ते क्रिये देश्योंने देश्याचाँसे त्रिकोकोको वैदानेयात्रा सारी युद्ध किया । ससी क्षसुर राषसींसे मित्रकर एक (बीर) हो सर्थ ।

बदा ह्यं गर्व सर्व हदा विष्कृत्रीयकः। अनुतं सोऽहरत् वृणं माचानास्यान मोदिनीत् ॥४२॥ ये गतामिनुसं विष्णुनाद्यं पुरुगेतनम्। शेषिहासते तदा सुदे विष्णुना प्रमविष्णुना ॥४३॥

सब सब बुझ पवको प्राप्त हो गया वहने महात्वा निष्णु (भागाया) मोहिनी (धार्या क्षा भीर होति त्वाच करनेवाली) आया कि शरीरोंको पाय करे देर ही वस प्रमुक्त के वर्ष शरश जो कोई (हा व कड़ी प्रविचायी पुरुषोत्त्वा निष्णुके सामने [प्रमुक्त कुण्यासे] यापे वे सम महासाम्त्रचंत्र निष्णुके हाता दुर्र प्रीत काले गये 1928

. दिवताघोंने देखोंको तुरी मार मारा । इसप्रकारसे एव, वैलोंका नाश करके, राज्य पाकर मुदित हो, ऋषि-चरवों समेत खोकोंका शासन करने खगे (४४-४१)]

५—परशुरामावतार [बालकाण्ड सर्ग ७६ म्होक ^{११.—२४}]—रामावतारके प्रसङ्गमें वैक्षिये।

६—धराहावतार [अयोध्याकारङ सर्गशृश्•]-

स बराहरततो मृत्वा प्रोजहार बसुन्धराम् ॥ ३ ॥ तब इस [त्रिमृति विराद्के विभवतसम्बद्धांग्र] ने वराह रोक्त बसुन्यरा (प्रथिवी) का बदार किया ॥ ३॥ [बारए॰ ११।२४ मीरामावतारके प्रसङ्गमें पूर्व बुद्धकायक !!»। १६ मार्पेसवर्मे देखिये :]

 कणायतार [बाल० ४० । २, अरत्य० १(११३] - कपिल और रामके अवतारोंके प्रसङ्कर्मे तथा युवकाण्ड ११७। १५] आर्यसावमें देखिये।

८--विष्णुका हयप्रीय-इनन--

 पत्रजनं इत्या इयप्रीवं च दानवम् । बानहार ततसकं शक्तं च पुरुषेत्रमः ॥(४।४१)११) वहीं [अर्थात् उस चक्रवान् मासक वर्वतमें] पक्षजन भीर इपन्नीव दानवको मारकर प्रदर्शत्तम (विरद्ध भगवान) वे वहाँसे [विश्वकर्मा-निर्मित सहस्रारोंबाला] करू और

९--श्रीरामावतारका विश्वद वर्णन--घर हम भौरामावतारके सूचक और विविध स्थलोंसे क्ष्मित शयः समस्त रामायण-वास्योंका समावेछ यहाँ

रुपेपरके कारते करते हैं। १—(बालकाण्ड सर्ग १५)—

रह से विया ॥२६॥

हतो देशः सन्त्यकोः सिद्धाव्य परमर्वेगः । मानविष्रहार्थ वै समनेता समानिधि ॥ ४ ॥ का सनेत्व बयान्यामं तस्मिन्द्सदासः देवताः । वनुस्तोदक्षीरं प्रदाणं वचनं महत्।। ५॥

मनबंसकः प्रसादेन रावणी नाम राष्ट्रसः । सर्वत् ने बाबते बीर्याच्छासितुं तं न शक्तुमः ११ ६ ११

ऋरीन् यञ्चान् सगन्धरीन् ब्राह्मणानमुर्शस्तदाः। मतिकामति दुर्वती बरदानेन मोहितः॥ या

तन्महत्रो भयं तस्माद् राखसाद् धोरदर्शनात । वधार्यं तस्य मगबन्तुषायं कर्तुमहीस ॥ ११॥ पनमुकः सुरैः सर्वेश्विन्तयित्वा वतोऽप्रवीत । इन्तायं विदितस्तस्य वधीपायो द्वरात्मनः ॥१२॥ वेन मन्पर्ववधाणां देवतानां च रक्षसाम् । **जनस्योऽस्मीति नामुका तथेत्युकं च तन्मया।।१३।।** नाऽकीर्तेयदवज्ञानात् तद्रक्षे मानुगांस्तदा । तस्मात्स मानुवाद्वध्यो मृरयुर्गाऽस्य विद्यते ॥१४॥ पतच्छाना त्रियं नातमं बद्धाणा समुदाहतम् । देवा महर्षयः सर्वे प्रहटास्वेडमवंस्तदा।।१५॥ यतस्मिचन्तरे निष्णुक्यवातो महाप्रतिः। राज्यकानदापाणिः पीतवासा कारपतिः ॥ १६ ॥ बैनतेवं समारुष्टा मास्करस्तीयदं यमा। वसहाटककेष्रो बन्धमानः सरोत्तमैः॥ १७॥ महाणा च समागत्व तत्र तस्यी समाहितः । समहतन् सुराः सर्वे समिष्ट्य संनताः ॥ १८॥ र्व्हा नियोषयामहे विष्णे। क्रोकाना हितकास्यया । दशरमस्य त्वमयोध्याविषतेर्विमो ॥१९॥ महर्तिसमतेत्रसः । वदान्यस्य अस्य मार्यासु तिस्तु **दीशीडीरर्युपमासु च ।।२०।।** विच्छो पुत्रत्वमागच्छ इत्वाइऽत्मानं चतुर्विधम् । क्षत्र व्यं मानुषी मृत्या प्रदुक्षं कोषकण्टकम् ॥२१॥ अवस्यं दैवतंबिंगोः समरे बहि शबणम् । स हि देवान सपन्ववीन सिद्धांख जाविसत्तमान ।।२१।। राक्षसी रावणी मुखों बीवोंद्रेकेण बापते । वतस्तेन गन्पर्शपरसस्त्रम् ॥३३॥ कीहरती नन्दनबने रौद्रेण बिनिशतिताः । नवार्यं वयमायातास्त्रस्य वै मुनिमिः सप्द ॥२४॥ खं गतिः परमा देव सर्वेषं कः परंतप ॥२५॥ बबाय देवरायूणां नृष्यं स्टेबे धनः दुव। एवं श्तुवस्त देवेशो निगुन्धिदशपुंत्रः ॥२६॥ <u>चितामह परेएउंस्तान</u>् सर्वेज्ञोडनमस्युतः । अजरीत विदशान सर्वान् समेतान् धर्ममंदिनान् ।।१ का

सर्व लाजत मार्ज को दिवाप पुनि शवगन्।

सपुत्रपति सामार्थं समन्त्रिशःदियन्त्रपत् ॥३८॥

हता कृ द्वाच देवीलं मसाहत्। वस्तान्त्रेत्रे होते सम्बद्धाः वस्तान्त्रेत्रे वस्तान्त्रे वस्तान्त्रे वस्तान्त्रे वस्तान्त्रेत्रे होते सम्बद्धाः वस्तान्त्रे स्वतान्त्रे स्वतान्

केर्य के अध्यक्त विकास माहिता है। । अस्त्री स्थापन के स्वतास्त्री। हैरे ।।

विश्वम सम्मनुषयीसम् । स्योदशक्त कामस्थितं

होरहारं नारोकस्वाप ।। १४ ॥
च्यान्यस्य स्वत्यको उपित्र मारम्म हो गाये। ।]
इद्धां स्वत्यको द्वित्र मारम्म हो गाये। ।]
इद्धां स्वत्यको स्वत्यको उपित्र मारम्म हो गाये। ।]
स्वत्यके रित्रेण स्वित्यक्षेत्र स्वतित्र हुए साम्र वस्य स्वत्यक्षेत्र स्वत्यक्षेत्र हो निक्षा वस्य स्वत्यक्षेत्र हो स्वत्यक्षेत्र हो स्वत्यक्षेत्र स्वत्यक्यवित्यक्षेत्र स्वत्यक्षेत्र स्वत्यक्षेत्र स्वत्यक्षेत्र स्वत्यक्यक्षेत्र स्वत्यक्षेत्र स्वत्यक्षेत्

ााााााशतः उस पोरबर्गन बाससी हमें बहा भव है। है
१९९५६ १ ३९९ बच्छे क्षिये चापको उपाय करना चाहिए ता १॥
तब सब देवतामों से इस्तम्बर निवेदित [मकामी]
रिचार करने बोर्स कि वह को उस दुरामार्ट वचका उपाय
रिकार में से सम्बर्ध करने वह सात करी वी (वर्षात

से दिश हुआ [दर] सहावधी, ऋषियों, शम्बवीं समेत

वश्री मानुष्यों [करीर] अनुरोंको अतिकास्य कर रहा है ॥ १॥

बुर सीता था) कि मैं गानवर्षों, यथों, देवताकों धीर (धार्माय हमसे थ मारा बार्के)। मैंने दिया था कि ऐसा ही हो ॥ १३॥ समक शुष्य आवकर शतुर्ध्योक्त माम नहीं विचा था। इसविये वह मनुत्रये माराज लगाई धन्य उसका श्रुपुतनक नहीं है 8192 महामेंडे में हैं इस जिल बाल्यको सुनकर उस समय वे सर देंग्डिंगे महर्षि बदे असम्र हुए 8148

इपी चदसरमें क्रयन्त प्रभागतुक सर्गात लि [भगरान्] राष्ट्र, चत्र, गदा हायमें विषे, पीतामा के तरे हुए सुरबंके बेयूर (बाज्बन्द) बाख कि हुर ब बेड देश्यामाँसे नमसूख होते 🛛 गलस सम. बा बैसे सूर्य (भगवान्) नेघार ॥१६-१०॥ श्रीरवा झिर्या निश्चकर (भ्रमवा महाजीते भी मनकृत होते हैं। वहाँ भाकर) प्रशास विच [हो] का तये। प्रशास सर्व हुए सब देवताओंने सम्यङ् लुति बरडे उनसे भाग है विच्यो ! खोबॉकी हितकामनासे [बनता बेर्स े बिये] इम तुन्हें नियुक्त करेंगे। हे व्यापक रिष्यो कि धर्में , सहादानी, महर्पियों के समान है उसी बयोप्याके सथिपति द्यायडी ही (बना) ही (ग [बीर]कीर्ति (क्वाति) के सारा तीर आर्थ चपनेको चार भदारका करके, पुत्रकपते बस्ता । हे निम्हो ! वहाँ तुम मतुत्व होका देवतावाँते व विशाल खोककरटकरूप रावणको सुदर्गे मारो। ली वह मूखें राचस राच्य बहकी बधिकतारे कवर्त हैं देवा, सिन्ते चौर श्रेष्ट कवियाँको पीरित हर सा (बखाधिस्यके) कारयसे उस रीड (प्रयोद महेरी विचारसे रहित रावख) ने ऋषिपाँको तथा [साम वस्त्ववनमें कीहा करते 🕎 गम्बरी और बसारी विनिपातित किया है। निश्चय उसके वह कि दि आर्थना करने] के जिने [ही] हमजोग अर्थिन क ब्याये हैं ॥ ११-२१ श और इसीते सिंद गण्यरे [ता] वक तुम्हारे शरकको मास हुए है। हे शहुके हमार्ग देव ! तुम इस सबकी परमन्यति हो (प्रवीर हिंही श्चन्तिम दीव शुग्हीं तक है) ॥२१ ॥ [बक] हेशा शतुकांके वचके विये सतुन्योंके बोकर्मे [इवजा होता मन (अर्थात् संकल्प) करो । देशायात्र में र् सर्वजीकाँसे नमस्कार किये गये देवेछ शिख् गाउन स्तुति किये जानेपर सहायमुल एकप्रित हैए बर्गरी सब देवताओंसे बोचे ॥ २६-२०॥ तुम बोग त्याय दो, तुम्हारा महत्त्व हो, तुम्हारी विने हेर्र भीर श्रापियोंके अवदायक महावत्री द्रा गावको हैं।

त्तेत्रों, प्रमार्खों, प्रश्विवां घौर भाई-बन्धुकांके समेत दुदमें मारका त्यारह सहस्र वर्षोतक इस पृथिवीको पाचन कता हुषा मनुष्यजोकमें निवास करेंगा ॥ २८-३० ॥

रणवार पालवान् विण्डवेनने हेगेंडो वर वेकर न्युक्तीक परनी पिराय] जनस्मृतिका विचारिकार । निर्मा वन] कम्मद्रप्र-वेते स्वयोगांक [विण्डु स्थायान्] वे पाने पाएको पार स्वरात्का काले त्रावा न्यास्था वे स्वर क्या [पाना] निरा [बनाता] चारा । तब व्हा और क्यारांकी गयों समेत देशें, व्यथियों और सन्मांकने निमा श्वीवगेंदी सञ्चवदा (सम्यान् विण्डु) को समस्य निमा ११-19

वत दवन, वम देववाये, नहारिमाणी, हृपह्यन्, [विशेषों) दिवानेवाये, वमरिवारों विशेषाये हैं व्यवदायक, नामी सी देवारों के स्ववदायक, नामी सी देवारों के स्ववदायक करवायों हैं विशेषाये हैं के सी देवारों के स्ववदायक करवायों हैं विशेषाये (करेंग्र) के सी देवारों के स

हती नामको विश्वविद्युक्त हुएसकोः । बनावि हुएने करणं वचनमनतीत् ॥ १ ॥ । बनावि हुएने करणं वचनमनतीत् ॥ १ ॥ । बन्दं के समस्यास्त विद्यान्तिककत्व ॥ १ ॥ बन्दं के समस्यास्त विद्यान्तिककत्व ॥ १ ॥ बन्दं के समस्यास्त विद्यान्तिकत्व ॥ बन्दं के समस्यास्त विद्यान्तिकत्व ॥ बन्दं के समस्यास्त वेश्वविद्यान्तिक ॥ १ ॥ बन्दं के सम्यास्त वेश्वविद्यान्तिक ॥ १ ॥ बन्दं के सम्यास्त वेश्वविद्यान्तिक ॥ १ ॥ बन्दं के सम्यास वेश्वविद्यान्तिक ॥ १ ॥ बन्दं के सम्यास वेश्वविद्यान्तिक ॥ १ ॥ बन्दं स्त्रविद्यान्तिक स्त्रविद्यान्तिक ॥ १ ॥ बन्दं स्त्रविद्यान्तिक स्त्रविद्यान्तिक । ॥ १ ॥ बन्दं सित्यस्त स्त्रविद्यान्तिक स्त्रविद्यान्तिक ॥ बन्दं सित्यस्ति हुन्दं स्त्रविद्यान्तिक । ।

स्वेतद्दयनं झुता सुराणां विष्णुरात्मवान् । वितरं रोषयामास वदा दसार्यः नृषम् ॥ ८ ॥ स चान्यपुत्री नृषतिस्तरिमन् काडे महातुर्तिः । अवजत् पुत्रिवामिष्टि पुत्रेन्पुररिस्टनः ।। २ ।। स कला निरूचर्य विष्णुरामरूम च पितामहम् । जन्तवर्षानं वतो देवैः वृज्यमानो महर्षिमिः ।।१ ।।।

ततो दै यजगानस्य पावकादतुरुप्रमम् । प्रातुर्भृतं महद्वृतं महावीर्यं महत्वरुम् ॥ ११ ॥

दिन्यपायसंतपूर्णं पार्त्तं वातीनित विचान्। प्रपृक्ष विपुक्तं दोग्यां स्वयं माणामयीनिव।१९।। सत्तवेदवामवीद्वाययिदं दशस्यं नृपम्। प्रामाप्त्यं वरं विदि मानिद्वाग्यानयं नृप।१९॥ वदं हु नृषदाद्वित पायसं देवनिर्मितम्।

प्रजाहरं गृहाण रवं चन्यमारोग्यवर्षनम् ॥ १०॥ मार्याणामनुक्त्याणामवनीतीति प्रयप्तः वै। सासु रवं सम्बसे पुतान् यदर्षं यजसे नृष ॥ १०॥

सोऽकाःपुरं प्रीरावेष बीस्त्यानियमस्ति । पावार्ष प्रविज्ञासूनीय पुनीयं विद्यासम्ब ।। २२ ॥ क्षेत्रस्यावे नाताने व्यवत् तरा । अर्थाद्वे दशी चाचि सुनिवाये नातानेका ।। २०॥ बैकेटेस चाहतीयार्थं दशी पुरावेदारमान् । स्वत्ये चाडतियार्थं पायकसमानुगोरम्यु। २८॥ अनुनिवास द्वीत्रवार्थं प्रवेद सहामितः।

यहे तालं वरी राज मार्याणां वावसं पूचक् ॥ २०॥ ततलु ताः प्राह्य तमुत्तमस्याः महीयतेरहमपावसं पूचक्। हतालातित्रसमन्त्रेनसे-

शनउत्रसाः - अधिरणगर्मान् प्रतिपेरिरे बदा॥६५॥

तव बेड देवाँसे नितुष्क (मार्थित वा चायत) हुए वात्तव दिन्तु (मारवार) [रावचने वचने व्यापके] बातवे दुन सी देवतामारी [उनके प्रतिनेशन कीर सना सुनाके चारियामारी, समझी गार्ड] हत्त्वसार मार्ड पर्का बोरी काथ है देवतामा, उस राचनोंके प्रतिनित्ने क्यारी बीरीता जगाव है निम्मा सामग्र बेचर में उस क्यिपोंडे

देले कहे गये सब देवता कोगोंने व्यविनायी (परिवारी) दिन्दु (अगवान) को डका दिया कि तुम मानवस्त्रको चारण करके शुद्धों रावणको जारो ह १.॥ क्योंकि वस शपु-इमनकारी [शायण] ने वीर्यकासक कठिन तप विचा या जिससे बोकॉर्क पूर्वज [तथा] बोकतहा मकाकी प्रसख हुए ॥॥॥ सत्तुष्ट [दीकर] मुसु (मकाजी) में वस राजराको मनुष्यसे मित्र क्यन नाम प्रकारक प्राणियोंसे अय न दोनेका वर दिया ॥१३ वर्गीक वस्तुनमें उसने पहले दी मनुष्योंको शुप्क कहा था। इसम्बन्ध उन विजासक् (महायां) से [पाये हुए] अस्तुनसे मर्चित [हुम्म वह] तीन कोकॉब्से पीतिक कर रहा है और क्विलंकों भी उच्चा होता है। इस बारणसे हे गुनुको तथानेकाल (भावन), उसका वस मनुष्योंसे [दोना] निक्षित है ॥१-॥

कामनान् विराजने देवाँ के इस वक्तको पुनकर सवा इतरायको उस समय पिता [बनाना] चाहा ॥ ॥ ॥ सम समय (जब भगवान्को ज्ञवतार कोकी इच्छा हुई तथ) जन महामकारायुक्त भीर अनुमांका मारा कर्मकालो चपुत्र राजा (दरारा) ने भी पुन-मासिको इच्छा करते हुपपुत्रेष्टिका पत्रत किसा ॥॥ यह विष्य (भगवान्) [धनवारविरयक] निवाय करके भीर पितामह (महामी) को मामन्तितकर (पर्मार्ग् में बन्दाता हूँ ऐसा कहकर) देवों [बीर] महर्षियोंसे पृत्रित होते हुए सम्मानंत हो गये ॥ । ॥ ॥

तद (प्रयाद विग्लुके घन्तवांनके चनन्तर ही) यजमान (व्रश्य) के [यज्ञसम्बन्धी] श्रानिसे श्रवुख प्रशा-बाजा (धर्यांत् वित्रजी इत्यादिके समान जिसके तेत्रके सामने बाँख न टहर सके ऐसा बाज्यस्यमान) महावज-बीर्यवासा विशास भाषी अच्छ हुआ विष्ट विशास आसी 'रहो रिश्तर्महदम्दन्' के बतुसार स्वयं विश्त ही वे को चन्तर्वित होकर प्रपने वेजने सम्पन्न पापमको लिये वप होमाधिसे प्रकट हुए, क्योंकि मगवान्का तेत्र वारण करनेकी शक्ति सन्दर्भे नहीं है-रीकाकार भीरामकन तिजकावाक्या है #11#""'(रिम्ब पायस (सीर) से पूर्व विशास मापासवी धार्ताको, मानो दिया धणीको, दोनों बाहुस्रोंसे स्वर्च धरूप करके बारव राजा इसरवची देखकर वह बारव बोजा कि है शहर, तुम सुबे वहाँ बापा हुवा बजारिका स्थित ह्या—प्रवास्ति (प्रवासक्क) क्लिये क्लक दुका-कर्पत् विम्बुक्त] तुल्व बानी # १६ # है राजनिश, इस १म अन्य (बटना) [और]बारीन-बर्रेड [तथा] देव (प्रवार्थन) हागा निर्वित [वृषं] इस (सलार) के रेवेशके राज्यको अवस्था को अपन [क्रेंच करतें] बजुक्त (बॉल्ब) आनोबोंको है ते कि बे

खा कों। उनमें तुम पुत्रोंको मात्र करोगे विमक्षे तिथे। सामन् ! यहा कर रहे हो ॥२०॥

वह (राजा) सन्तःपुरमें बाहर बीगलाते है प बोखे कि यह चएनेको पुत्र देनेशश गरम हो गरा सदनन्तर राजाने साथा पायस कौसल्याको दे रिवा। कै सुमित्राको भी राजाने [शेष] बाधेरेंने बाद्य (वर्ष व्या पायसका चतुर्था हा) दे दिया और हैवेरीको हस्ती (बतुर्यो छ) का द्यापा (बर्यात् सरहा प्रस्ति) [अयोजनके कारवासे दिया और दुनः महामति (सम्) सुमित्राको [कैवेबीकी बरोचा बड़ी होने (१) और कैल चपेचा छोटी होनेका] विचार करके गायसका करू -अवशिष्टार्थं (अन्य चतुर्यां शका हैदेशीसे बचा 📢 अर्थात् समस्तका अष्टमांश जो वच रहा वा) है हा इसमकार राजाने उन मार्याझोंको प्रवस्प्रमह विशाप वायस वे दिया। [काजिदास (रमुवंश सर्ग १० स्रोवश्तन इत्यादि अन्य स्रोगोंके मतानुसार चरविमाग (कार्या) कि कौसस्याको को जावा भाग दिया, उसीहे बारेश " तुमित्राको दिवादा कर्यात् समस बस्वे बार वर्ते श्यम चार भागोंका चतुर्था रा वा समनका बरमेर हु^{र्यं} को दिखानेपर कौशस्यां है पास मारेमा श्रीव हैर्गी। समस्तका 💆 रहा । इसी प्रकार देवेचीची र्या 🕫 रिया बिसमेंसे (आधेका) साथा उनः वृत्तिन दिवानेपर कैंद्रेपीके पास भी समन बरवा 🤰 सं प्रकार शुमित्राके दोनों पुत्र प्रचेव बार्यात है है राम तथा भारत प्रचेक हैं]॥ २०-६१ ॥ वर निर्म [कान्ति चौर कारित्वके समान तेत्रवाकी] वर्ष ^{[स} सिपॉने बचम पायसको प्रमन् प्रथम सान्त होत्र है है धीर कांत्रित्वके समान तेशवाचे गार्मीको चारच किर्न हो^त

३-(बारहाण्ड सर्ग (३)--

पुत्रचं तु को नियो जानस्य बहात । कराय देवता सरी हार्वदूर्ववर्षात् । साम्यक्ताव्य द्वीराव सर्वेद्वर्ववर्षात् । नियो, कायावाद्वरिक हुम्यदेवस्थान ३६ साम्यक्ति हुम्यदेवस्थान १६ साम्यक्ति पुत्रच्याव्यक्ति ६६ सम्बद्धात् पुत्रिवस्थान् विद्युत्वयाव्यक्ति ६६ वस्तरमु च मुस्तामु गत्यवीयां तत्तुषु च । वद्यवनकत्त्वामु ऋष्टविद्यावरीषु च ॥ ५ ॥ विद्योगां च गादेषु वातरीयां तत्तुषु च ॥ मुत्रमं शरिक्यण पुत्रास्तुत्यवराक्रमात् ॥ ६॥

वे वयोषता मणवता तत्यविष्ठत्य शासनम् । जनवामापुरेषं ते पुत्रान् बानरकविष्णः ॥ ८॥ श्रदसञ्च महस्यानः सिद्धविद्याधरोरणः । बारणाञ्च सुतान् बीरान् समुजुर्वनव्यारिणः ॥ ९॥

हे हुए बहुसाइस दशपीवदबायतः॥ १००॥ व्यतेष्वतः गीरा विकानाः जामक्षिकः । वे गत्रावत्यासा बहुप्पत्तो महावतः॥ १८८॥ व्यत्यात्योहुष्याः विकान्यगीमतिहे । वार्षः देससः वर्षुष्यं केरो वश्चः परावतः॥ १००॥ कारतः समे तेन तस्य स्वस्य पुणक्॥

विन्तुके दस महात्मा राजाका पुत्रत्व मास करनेपर सदाम् मातान् (ब्रह्माबी) सब वैद्याओंसे यह वीखे ॥ १ ॥ [हे देवो ! तुम खोग] सत्य प्रतिकावाले, वीर चौर इस सदका दिश चाहनेवाचे विष्यु (भगवान्) के-वसी, रचातुनार रूप धारण करनेवाले, मायां हे जाननेवाले, खर, वैगमें बायुके समान देगवाझे, नीति आनवेवाले, बुद्धियाली बौर विष्णुसदरा पराकमी-सहायकोंको उत्पन्न करो ॥ २-३ ॥ " मुख्य बन्तराझोंमें, गन्धर्व क्रियोंके श्रीरोंमें, वर्ची भीर नागोंकी क्रमाकोंमें, कचों और विधाधरोंकी कियोंमें, भीर विवरियोंके शरीरोंमें तथा वानरियोंके शरीरोंमें [सुम बोग घरने घरने] समान पराक्रमवासे पुत्रोंको बानररूपसे "" बलव करो ॥ १~६ ॥ भगवान् (त्रकात्री) से देता कई गये उन [देर] जीगोंने दस शासन (बाशा) की महोबार करने इस (धारी कहे हुए) प्रकारसे वागरकपी दुर्शेको दलक किया ॥ ८ ॥ ऋषियों, महत्त्वाओं, सिन्हों, विधावरों, नागों और बारखोंने बनमें विचरनेवाले बीर इत्रोंको उत्पन्न किया ॥ ३ ॥ ' ऐसे धनेकों सहस्र [बारर] हुने गरे [को] सवयके कथमें उद्यत [होंगे] व १७ ॥ वे समित बळवाले, धीर, विकामगाली, इच्द्रानुसार रुष पारब करनेवाले, इसी समा पर्यतके सदछ [बाकार-गढे], सुन्दर, महाबबी, ऋच, सानर कीर बोडुच्छ (गोबाइ व जातिके बन्दर) शीध ही उत्पन्न हुए। जिस [जिस] देवका जो रूप, बेच और को पराकम है बसीके इत्त प्रमङ् प्रवक् उस उस [के पुत्र] का [श्री रूपादि]

४—(बालकाएड सर्ग १८) —
वेवी यह समावे हु कहां नह रह समस्यः।
वेवी यह समावे हु कहां नह रह समस्यः।
वाबा दारहे मारं के वे नामिके विभी ।।८।।
मध्येऽदिविदेशके स्तीवकंत्रमु ववह ।
प्रोत्यु कर्षेट तये वात्रमाति-दुना यह ।।९।।
प्रोत्यमाने कावार्या सर्वदेशन्तरस्य ।
वेत्रीवार्य महामानं पुत्रवेशस्यकृतन्तरम् ।
वेत्रीवार्य महामानं पुत्रवेशस्यकृतन्तरम् ।
वेत्रीवार्य महामानं पुत्रवेशस्यकृतन्तरम् ।
वेत्रीवार्य महामानं पुत्रवेशस्यकृतन्तरम् ।
वेत्रीवार्य महामानं पुत्रवेशस्यमानं ।।१९।।
कीत्रस्य सुत्रवेश वेत्र वृत्रमानं प्रतिवेशस्य ।।१९।।
स्ति मार्ग केवस्यां यहे सत्यस्यकः।
स्ति मार्ग केवस्यं यहे सत्यस्यकः।
स्ति सर्वाद्वान्योत्यां सर्वेः समुद्रितोष्ठीः ।।१९।।
स्वाद स्वम्यक्युत्रीतं सर्वेः समुद्रितोष्ठीः ।।१९।।
स्वाद स्वम्यक्युत्रीतं सर्वेः समुद्रितोष्ठीः ।।१९।।

पुष्पे वातस्तु भरतो मीनलग्ने प्रसन्नभीः। सार्षे वाती त सीमित्री क्कीरेडम्युदिते रवी ।।१५।। सब यज्ञके समाध होनेपर छः ऋतु न्यतीत हो गये । क्स समय बारहवें सासमें, वैत्र [शुक्त] भवनी विधिको, बादिति देवतावाले (पुनर्वसु) नचन्नमें, पाँच महीं (सूर्य, मंगल, शकि, बृहस्पति धीर गुक्र) के ऊँची शशियों (अमशः मेप, सकर, तुला, कर्ड और सीन) में स्थित होनेपर, तथा चन्द्रमासहित बृहस्पतिके काँट समीद्यमें धर्तमान होते हए-कीसल्याने दिश्य खचयोंसे संयुक्त, जगत्के नाथ, सब बोडोंसे नमस्ट्रत (बयवा-सर्वेडोकस्प धर्माद विराटकप और नमस्बार किये गये-इससे यह श्वित होता है 🌆 शसके प्रकट होनेके समय माताने उनके विराट रूपका दर्शन किया और उससे विकास होकर नमस्कार किया था जिससे सत्कास ही सगवानने बासकता रूप घारध कर बिया-तिबकन्यारमा । इसी भागको गोरगमी तुबसीदासबीने---

"भ्रय प्रवट कवारत बीनदमस्य कीएस्वाहितवारी , हर्कित महतारी मुनियनहारी अदमुक्कप निहारी ॥" "कह दुर्कुकर बोरी सासुविदेशी केहि सिथे करी कनन्ता ।" "शुनि वचन गुनामा रोस्ट कमा हुए बहत कुमूरा ।" —ह्याबि हन्दाँसे दर्शाण है ।), विन्तुके कार्यों ग, महासारा, रफ्योंनीकों, कार्यों गुजाबीनों के बार कार्यें वाने, तुर्दिनिके समान शरुरवाने, ह्वाह-बंगको वानिकृत कर्तियाने द्वार सामके क्या ॥ = -9 ॥ तम क्यित तेन-याने प्रत्ये केतिरवा पेगी सोमिन हुँ बैंगे देवनामांने प्रेड स्पृत्ये करित ॥ १२ ॥ साम वातम्याना बीर सानाय विष्णुके सब गुर्थोरी गुरू कर्यांग स्वत्य नाम [युव] कैनेतीमें सवस हुया ॥ १६ ॥ सत्यन्यतः सुमित्राने विष्णुके वर्षांगते संपुर्तः श्रीर क्षीर सक अक्षांग कृत्य क्षम्यव वर्षार सामुल्तासक हो। द्वारोको क्या ॥१०॥ निर्मां कुत्याने भरत दुष्प (चप्य) चीर सीन कार्यो वरण हुए ॥ स्वा सुमित्राके दोनों (यसन) द्वार सामें (क्यांच् बारकोग स्वत्य प्रत्ये मान्य

[इसप्रकार वाश्मीकि-रामाययोर्ने जन्म-पत्रका विराद वर्षन दोना इस यातका सुचक है कि उस आधीनकासमें भी फलित अ्योतिएका माहात्म्य ऐसा ही सत्य माना जाता था जैसा वर्तमान कालमें है। तिलकप्याक्वाकार श्रीराम मर्गने 'विष्णोरर्थम्'का अर्थ यह किया है कि विष्णु भगवान् तो गञ्ज, चक भीर अनन्तसे विशिष्ट है परन्तु राममें शङ्क-चकाविका समाव होनेसे विन्युके हुछ कम साथे शम थे, (पहले भी चन्योंके मतसे तिखककार कीसल्याके भागमें वाचे हुए पायसको 者 यता चुके हैं)। इसीप्रकार भरतके सम्बन्धमें 'वतुर्भागः' का धर्म शाये पायसके चतुर्भा'श न्यून सर्थात् समस्त चरके है के बनुसार 'चतुर्ग्यो भागश्रह मांगः' किया है। तथा सुमित्राके पुत्रोंके सम्बन्धमें 'विन्धोरर्शसमन्त्रती' का वर्ष 'रामके एक भागसे वुक्त' करते हुए होनोंमेंसे मत्येक के 'पायसका चारमांश' हो नेका समर्थन किया है। परन्तु यदि सीचा-तानीके द्वारा ही सम और भरत विष्युके . है , है समा अपनय और शहुश है , है संशायतार सिद किये वा सकते हैं-को इसकी श्रमेश श्रमिक सरस्तासे पूर्व कथनानुसार राम तो है चौर जनमळ है तथा मस्त, राष्ट्रम मत्येक रे अंशावतार यहाँ भी सिद्ध होते हैं। यथा 'विष्णार्थम्' का चर्च रामके सम्बन्धमें स्पष्ट 🖥 खंश है। भरतके सम्बन्धमें 'सामादिष्णोशत्यांगः' का सर्वे होगा सापादित्यु (बर्यात् रामः) का चतुर्थात (बर्यात् है)। पूर्व सचमण चौर शतुमके सम्बन्धमें 'विष्णोरर्वसमन्विती' के सर्पर्में 'ग्रर्प' राज्यकी चावृत्ति करके विच्यु (राम) के भाषे (धर्यात् सममाहे है) अक्रमण चौर 'तद्र्यं' (उसके

माचे मर्थान् समनहे हैं) शतुम्र । सर्वया बालीं रामाययामे सिद्ध कि बारों माई विश्वुडे (मूर्या बार रूपोंमें) भवतार थे ।]

५-(बालकाएइ सर्ग २६)-

[इस खेसमें सर्वत्रयम बामगाश्वाह समय्ये (सर्वार्ड को स्तोड (२-६ और ११-२१) वृद्ध किं पुड़े हैं वजह बन्तमें विश्वमित्रती प्रामने वह हो हैं। इस सिद्धाझमाँ पहले बामगाश्वात्यों किंपु का करडे सिद्ध हो जुड़े से उसीमें बावकत में रागई वर्षां कह सिद्धाध्य प्रथम विश्व प्रणाद (बाव) व व्योद कानवाद वनकी मान्यि मेरा है। उसीडे को मां

> णनमाध्रममानान्ति राष्ट्रसा विष्रकृतिका। अव वे पुरुष्याध्र इत्त्वमा पुरुषातिकः॥२॥ अव यप्पाध्यदे रात विद्याध्रमम् चन्त्रम् । तराध्रमम् ते तात्र तात्रमान्यसम् । । । । ।।

इस वाध्यम [वक्त] विकाशी शहर करें हैं। हे पुरुषेश्यम ! यहाँ वन दुराचारियों के मारा चारिशाशः [कारवंश्यक है कि] हे राम! ब्राव हम वस सर्वहुग्त का को चल रहे हैं, वह चायम जैसे मेरा है केने हो है हैं तरवारा भी हैं ॥ १९॥

[स्तर विवक्तार में विषय । विषय । विषय है कि नेंड वेदवाममध्दे नया यन स्मूर्य हवा वसार निम्पासकी मृद्याद्रमितनितः । ' वसाय हे तात ! इस साम्य स्मार्त में असता सेरी है बैदे ही हासरी भी है, स्वाहि इस में विष्युक्त स्वतरा हो जिन्होंने वासनकरसे हत साम्य स्वत्यादा सा-वह मुदार्थ है।]

विषि यह कहा आप कि क्योआहे हालहे बागी होनेसे ही सिद्यामपर्ये सामको भी मानता विधानको है भी निवासे क्ले क्यारीय करनेशादे रावार्गेका किया हालके क्लिये सावरण्य था। तो उत्तर यह है दि क्ला होनेसे इक्यार मंदे हैं इस प्रहाशनी दिशामको के हालागी हो सकते हैं जातु साम के बर्गामक उत्तर हैं नहीं हुए ये बीर बो बरवातको करायाँ मानिवर दिगा सामता क्लालारीय सहा बारी क्या करने में कि साम के प्रशिवी मानवारीय सहा बारी क्या करने में कि साम के प्रशिवी मानवारी है स्त्रीर में देवब बनने कारोगों क्यारी

रोक दुरोंका शासन और शिष्टोंका रचया करता हूँ, वे किसी पुनितते प्रमीतक सिद्धाममके 'स्वामी' नहीं ठहर सकते। धातः विष्यवतारके 📅 सम्बन्धसे विश्वामित्रके बाजमकी सङ्गति दम सकती है, बल्यया नहीं।]

[यह क्या बसइत वा प्रशिप्त भी नहीं हो सकती, क्रोंडि वह विवासे सर्ग २८ के निम्बलिसित परनका इत्ताव है....

सर्व मे शस मगरम् करपाधमपदे लियम्। सन्त्रासा यत्र ते पापा अद्याप्ता दुष्टचारिणः ॥२०॥

है मगरन् ! मुक्ते सब कही कि यह चास्रमस्यान किसका है (कीर बह कीन स्पन्न है) जहाँ से बेदनिनाशक हरावारी पापी बाते हैं ॥२०॥]

६—(बाटकाण्ड सर्ग ७६)—

वेशोमिर्वतरीर्वत्वाज्जामद्यन्यो वहीकृतः । रापं कमरूपत्राक्षं मन्दमन्दमुकाच ह ॥१२॥

मस्रमं मनुहत्तारं जानामि त्वां मुरेदनरम् । स्तुनंदस्य परामशीत् स्वीतः तेदस्तु परन्तव ॥१०॥

रते मुरगणाः सर्वे निरीकृते समागताः। त्वामप्रतिमक्रमाणसप्रतिहरुद्ध माहवे

न केरं तन काकुतस्य मौडा भनिनुमर्दति । लया प्रतीस्थनायन यदहं विमुखीकृतः ॥१९०॥

रार्व बाहारथि रामी जामदरूबः प्रपृतिकः । रतः प्ररक्षिणीहरम जगामात्मगति प्रमुः ॥२४॥

[काने बैच्याव] सेजों [के राममें बाकर प्रविष्ट होने] के काल बीवाहित हो जानेसे जड़समान हुद जानदिन-पुत्र (राह्याम),क्मवरत्र-सदश नेत्रींवाले समसे चीरे-धीरे बोले धारामा है गयु ब्रॉको वपानेवाले (विष्णु रूप साम), हत बनुषढ़े बरामर्थ (महत्य, प्राक्तेय, हत्यादि) के बालसे गर्ने, पर न हो सकनेवाले, (आदि और अन्तसे रित), देवा सबु (नामक राष्ट्रा) को सारनेवाले, धूर्व राहे पाम सामी (अयोद सावाद विष्णु मनवाद ही) बात गया है। गुरुँ स्वति (सज्जकी प्राप्ति) हो ॥१७॥ भारत कर्म कानेवाले, युवं सुद्धमें प्रतियोद्धारित प्रको ने सब भारे 📭 वैद्याचा देख नहें हैं !! !!! हे कुल्लांगोहर (राम), श्रीर को त्रिकोकीके नाथ होते हुए तुमने मुद्धे करास्त कर किया, यह तुम्हारे लिये

कोई खमाकी यात नहीं होनी चाहिये [तिलककारकी स्पास्याके थनुसार—इससे परशुरामने चपनेको सगवान्का श्रंश होना भीर रामजीका पूर्व भगवद्वतार होना स्चित किया | माव यह है कि अपनेसे भिन्न द्वारा धशक्त किये नानेमें लज्जा होती है व 🎏 अपने भाष मायाके हारा वैसा हो जानेमें। इस व्यवहारका प्रयोजन यह प्रवीत होता है 🕼 द्या करके दगरयादिके प्रति स्टब्स्यका बोधन हो तथा राममें पूर्ण तेत्र चा वावे। क्योंकि यदि विष्णुका तेत्र किसी अंशमें भी चन्यत्र (विकार) रहता तो रावयका वच दुष्कर होता। इसीबिथे (मुखर्में) पूर्व ही कहा वा शुका है कि रावणका बच चाहनेवासे देव-गम्धवादि लोग देखने चाये थे] ॥१३॥ तत्र बसदन्ति-सुत [परग्र-] राम प्रमु [स्वयं मी] प्रपृतित होते हुए दशस्य-पुत्र रामकी प्रदृष्टिग्य करके सपने रवानको चस्रे गये ॥२४॥

विद्या रलोक १६ में विद्यु समके कियु होने और वरशुरामके भगवर्श होने, और इसी कारणसे परशुराम (रूप भगवान्हे भंग) का पराजय पूर्व भगवान्छी समाका हेत होनेमें राभावणकारका सभिमाय न माना जावेगा तो यह बारव ही वसंगत हो शावेगा क्योंकि इसरेके कारवा दूसरेको लजा होना बिरकुल बल्डी बात है। चतः रखोक ११ के चभित्रायसे चौर रखोक २४ में बारे <u>इए 'बधुं' परसे परगुरामका चंशायतार होना सृधित</u> होता है। और परसुराम जाहत्य होकर भी चत्रिय रामकी प्रदक्षिया करते हैं हससे भी भीरामजी विष्णुके धवतार सिंद होते हैं।]

७-(अयोध्याकाण्ड सर्ग १)-

सर्वे यत तु तस्येष्टाश्चत्वारः पुरुष्याः। स्वशरीराद्विनिर्वृत्ताश्रत्वार इद बाह्यः ॥५॥ तेपामपि महातेजा रामा रविकाः पितः। स्वयम्मृति मृतानां बमुव गुणवत्तरः ॥६॥ स हि देवैरुदीर्णस्य शत्रणस्य बधार्थिभः । अर्थितो मानुषे ठोके बड़े विष्णुः सनातनः ॥ ७॥

श्रीरामके यौतराज्याभिषेककी मुमिकासे सयोज्याका दह-का प्रारम्भ करते हुए, और तत्त्वस्वरूपमें भरत और राजधनके ब्बर्च मातुल (मामा) भरवपतिके यहां आकर पृद्ध पिताका स्मरथ करने, चौर पिताके पुत्रोंका स्मरश करनेकी सूचना देकर, बीरामायसकार जिलते हैं कि-1

चन (रामा द्राराय) को पुरुषोंमें श्रेष्ठ सब चारों ही [प्रण] ऐसे मिय में जैसे [बिच्युको] आपने शरीरते निकड़ी हुई बारों गुआएँ ॥१॥ वन (चारों) में भी महावेशवरी आरे चिराको [विरोण] भानन्यवायक (बण्यन्त समिस्त) और [सब] प्राणियों के मध्यमें स्वयम्म (महाजी) के समान प्रणिक गुण्यान, ये ॥६॥ वर्गोंकि वे वृत्तेपूर्ण रावयका स्वय चाहनेवाले देवांसे प्राणित हुए सनातन दिन्यु [ये वो] महुम्बज्दोक्सें बनमे में ॥७॥

- =-(अयोध्याकाण्ड सर्ग ५४)

भिरत्य लतु कारुत्स्य पदमान्यहमुपानतम् । १ शतं तद मदा चैव विवासनमकारणम् ॥२९॥

[प्रयागम भरहाल मुनि समसे कहते हैं कि-] है फाकुरस्य! मैं निजयही सुरहें यहुठ कालके पत्राव [मेरे] समीप भाषा हुमा देख रहा हूँ भौर में दुस्हारें चकारण विवासन (चरसे निकाल दिये जानेकी वार्ता) को सुन चुका हूँ ॥२३॥

[तिळककारते 'बहुत कावके प्रधाद कावा हुमा देखले' के दो अर्थ निकास हैं (१) क्याचित्र ताम पहले जो समाम स्वाध्यान स्वाध्यान स्वध्यान स्वध्यान

(अयोध्याकाण्ड सर्ग ११०)—
 इमां ठोक्समुत्पति ठोकनाय निवोध मे ॥ २ ॥

[बाराधिक वचनींसे रामको कुछ हुआ बारकर विशिक्ष्यी रामको सामारी हैं - | है कोडोर्क गांव ! इस बारकुर्वाध-को मुक्से सामारी हैं - | है कोडोर्क गांव ! इस बारकुर्वाध-को मुक्से सामार्थे | यार्थ 'कोडाका' का बार्थ 'प्रतास्त्रातीक स्वामी' वा 'रामां 'कोई हो सम्प्रता क्वोंकि (३) कुरावकी मार बानेपर पिता-माराई आदेगानुसार शांवा हो। अस्त होते, न कि राम, (३) 'बोक-समुत्रविद्य' पहर्में 'बोक्ष' का मार्थ 'मुर्गुदेशस्तादि' हैं वर्षा 'बोक्साव' में बी इस बिये होना चाहिये कि जो 'बोकॉक ताय है वह के की उत्पत्ति बाननी चाहिये' (३) विडक्शाक्त भी बिद्धा है-'दोकतावेस्तेन रोकत्त्रपात्रास्त पर कि 'बोक-नाय' पर्ते सगचित (विष्य) का क्रांत है स्पित करते हैं] ॥ २ ॥

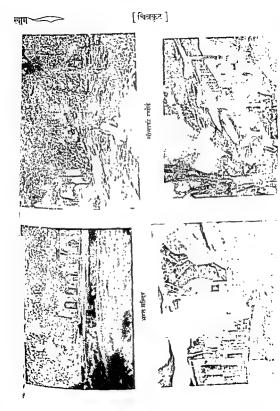
१०—(अरण्यकाण्ड सर्ग २७)— स्रुक्तिक्षितस्य तेन मृत्युलेमात् प्रस्तितः॥६॥

शिर तासने बनने का दहा था। वस्तु मिटारी-वित्तीययाहे समान है राचरों हे समान है वित्ती माने या चाकर करते कहा कि तुम न बामो किन कुछ ने यहि मुमसे रास मारे गये हो इर्प्यूड बनसान (सब्दी के बीट बाना, यरन्तु यहि में मारा गया हो वह रामसे सबने वाला। इस मका —

डस त्रिकियते [अन्त्रहावों सारवालको संपत्त वन्द्रिकें दायते] स्तुत्र पानेके बोमसे बताने स्तान दिया [चीर करले प्राचा पाकर वोगोंगों हुन त्रिकेंस युक्तें अरिशमणीक समिनुत गया] व - न [ही सम्बंके सोक 19 में शामके दिये 'व्यगोपामा' हिरेल भी दिया गया है ।]

११-(अरण्यकाण्ड सर्ग ३१)-

श्विकायन नामक राष्ट्रमने वाहर त्यां व्यवस्थानत्येत्व तरात्रि राष्ट्रमां हामारा मार्ग मार्ग के व्यवस्थानत्येत्व तरात्रि राष्ट्रमां मार्ग मार्ग के व्यवस्थान तरामके कृत्युक्त एकसाथ क्या व्यवस्थान व्







Majignah (fengga)

न तं बच्यमहं सन्ये सैवेदेंबासुरैरपि । अयं तस्य बद्यापायस्तन्ययेकमनाः ऋषु ॥२८॥

महायशकाचे राम कुषित होनेपर [बमके समान संशार्जे प्रवृत्त होते 📭 किसीके भी] विकमसे [महमावि-इता भी] रोडे महाँ वा सकते । किन्तु वे बाख-वर्षा करके पूर्व नदीबा बेग रोक सकते हैं [इससे कृष्य-वसभावके भवतारको स्थित किया]॥२३॥ यह श्री-संयुक्त शाम त्ताचीं, प्रद्वीं और नचत्रीं समेत आकाराकी भी व्यवसन्न (यून्य) का सकते हैं [जैसा त्रिविकम (बामन) कवतारमें क्या था, तथा असमें ह्वनेसे] कटावस्थाको मास होती हुई प्रतीका भी बद्धरण कर सकते हैं [जैसा वश्चवराहा-बतारमें किया था] ॥ २४ ॥ विसु (क्यापक अगवान् राम) समुद्रको वेखा (मर्बाहा) को तोद-फोदकर [सव] कोकों-को हवो सकते हैं [जैसा प्रसमकातमें करते हैं] अथवा अपने क्वांने समुद्रके वेगको [इससे समुद्रपर सेतु वाँवनेका समयं दिसाया है] वा बासु [इत्यादि यक्षभूतों] को रता सकते हैं॥ २१ ॥ अयवा सहायशकाओं वह अंद्र पुरुष वाने विकास लोकोंका संदार करके फिरसे प्रजाधींका एवन करनेको भी समग्रे हैं [वहाँ-'पुनः' क्योर 'कवि'== 'किर भी'-इन राज्योंते सर्वगृष्टि और संदारके व्यापार रुवींचे वर्षान बतलाये हैं। इससे यह व्यक्त्य होता है कि वे सत्त्वी स्थिति और संशारके कर्ता हैं। सकायन शायसकी : मी ऐंडा द्यान सरवान्हीकी कुवासे या]॥ १६॥ हे रेगमीद ! दुम वा राजसींका समृह भी रामको रयामें नहीं बीड सकते जैसे पापी छोग स्वर्गको नहीं [था सकते] l to ll सब देवासुर [मिलकर] भी उनका वध नहीं कर सकते [ऐला] में मानता हूँ [अर्थात् शुम्हारे शुन्नहारा बीते हुए एक भी पदि ग्रन्हारा साहास्य करें तो भी राम-को नहीं बीत सकते] उनके वधका [केवला] वह (बागे मा इमा) बराय है इसिंबने मेरे [मुख] से [तुम] प्रधामन द्वीकर सुनी ॥ २= ॥

१२--(अरप्यकाएड सर्ग ६४)---[वैता घाराय भकावन राष्ट्रसके बावव (संगै ३१ कोड २१-२१) चा है वैसे स्वयं जीरामजी बावने विषयमें घरते हैं--]

यमा जरा बमा मृरगुर्यमा कालो मचा विषिः । नित्यं न प्रतिहत्त्यन्ते सर्वभूतेषु लवमण ।। ववादं कोवसंपुको न निवागेंद्रसम्बसंशामम् ॥ ७५ ॥ ४८ पुरेव में चारुदतीमनिन्दतां दिशन्ति सीतां गदि नाव मेपिशीम् । सन्देव-गन्धर्व-गनुष्य-प्रतां

जनत् सर्शेलं परिवर्तवाम्बद्दम् ॥७६॥

हे बप्सम्ब ! जैसे बता (इतपा), कृपु, बाज, विश्व (बापा), स्तरी प्रापिपोंसे क्यो रोडे नहीं जा सकते देते हों में बी कोध्यंत्यक हुआ दिस्तरों के पा नहीं जा सकता ॥ ०१॥ नदि शिवडी सीताको पहुंचे जीती सुन्दर नहीं कीदाने हें तो से देखें, गरम्बंग, सुत्यमं, नामों बीत पर्वेतों-स्वा नित्या के स्वा करनेकों जैया। हैं [यह मातुष्देह यहके कीवासात्र कोष्यक अकारत है सही, विन्तु सम्मा दिस्तरों प्रसानक कोष्यक अकारत है सही, विन्तु सम्मा विश्वमं प्रसानक बात कोवनेकी प्रसात सामने नहीं की बात सकती। यहत अस्तरा नाम करने सामन्देश ने

१३-(अरवयकाव्ड सर्ग ६६)-

सिंताहरचपर शोधाइण हुए रामको प्रवासिक समान कोचों के निवासके दिन क्यान, चौर नेते कभी नहते नहीं देशे तारे में बैसे संकृत होकर, पुरागनकावार्की रिवासीक हामान, तार्च वायरको स्थान स्टारेके निवेद सकत् देशका वायरचार तो जोविक्तराओं स्थान सुरू क्यान कार्य वायरचार तो जोविक्तराओं स्थान सुरू स्थान करने और बहुत जुल सम्मानके प्रवास पर निवेदन क्यान कि पहांचे हमाजीन सर्व बोचोंको तवतक हुँ ये बारक तीताश्यासिक एता कर्त तो सम्मानुक्य पार्च कर्त स्थान स्थानकावी कर्तियों की सम्मानुक्य क्यान विचेद सरस्यामा क्यानिकावी कर्तियों की सम्मानुक्य क्यान विचेत सरस्यामा क्यानिकावी कर्तियों की सम्मानुक्य क्यान

सावेस है पूरा वीर स्वेश न नुहोतिकार।
अञ्चालाप्रिक में मुस्ताविक साम्य दुस्ताविक ।।
विद्यालारिक में मुस्ताविक साम्य दुस्ताविक ।।
विद्यालारिक में मुस्ताविक साम्य दुस्ताविक ।।
विद्याला में स्वाम्य साम्य (स्वाम्य प्राप्ताविक ।)
विद्याला में स्वाम्य स्वाम्य (स्वाम्य प्राप्ताविक ।)
विद्याला मुस्ताविक स्वाम्य (स्वाम्य प्राप्ताविक ।)
विद्याला में स्वामितिक स्वामितिक स्वामितिक ।।
विद्याला मुस्ताविक स्वामितिक स्वामितिक स्वामितिक स्वामितिक ।।
विद्याला मुस्ताविक स्वामितिक स्वामितिक

हे बीर ! सुमन्त्रो ही तुमने पहले बहुत इस समधाया है। तुम्हें भवा कीन शिक्ष्य देगा, सापाद हहराति भी

[गईं। सिसा सकता, तब अन्यकी कीन गिनती है]॥ १०॥ है महापाछ, भीर सुम्हारी बुद्धिको को देवता भी नहीं पहुँच सकते [इससे ईरक्तता स्थित की। तब मैं तो केवज] शोकके कारण सोये हुए शुम्हारे [ही] ज्ञानको [मानो] बगा रहा है ॥ १८॥ दे इस्लाकुइसक्षेत्र, और अपने विष्य

सथा मामधी (योनों ही प्रधारके) पराक्रमको देखते हप ि मर्यात् विषय पराक्रमके क्षिये यह उपयुक्त समय नहीं है इसका विचार करते हुए केवज मानवी-पराक्रमका उपयोग करके] राष्ट्रवधर्मे प्रयक्ष करो ११९ ६।। हे प्ररुपोत्तम ! तुम्हें सर्व [कोकों] का विनास करनेसे क्या [साम होता] ! किन्द्र

हुँदकर केवल उसी पारीका उत्मूखन करना चाहिए।।२०॥ िसर्वे खोडोंडे दिनाशका सामर्थ्य कौर दिव्य पराक्रम मनुष्यमात्रमें दोना धसम्मव है। इससे समग्री भवरय विष्यववतार ही थे।

१४--(किप्किन्धाकाण्ड सर्ग १८)---

[सर्ग १६ में शमके द्वारा बावाविद होनेपर सर्ग १७ में भावीने रामपर धनेक कड़ आचेप किये थे और उत्तर भौगकर श्रप हो गया था । सर्व १८ में बब भीरामजीने सब आचेपोंका सम्रचित बत्तर दे दिया सब (ऋोक २४) वासिको श्रीरामजीपर मिथ्या श्रभियोग लगानेके कारण बना पश्चाचाप उत्पन्न हुआ और धर्मविषयमें निजय हो आनेसे जब बसके मनमें रामका एक भी दोचन रहा तब वह हाय जोड़-कर रामसे बोबा---ो

खरेडहं नयमाकार्धन् वार्यमाणोऽपि तार्या ११५७।१ सुप्रीवेण सङ् भात्रा द्वन्द्रयुद्धमुपागतः ११५८११

हाराधितप्तेन विश्वेतमा स्था

प्रभाषितरतं यदजानता विमो।

प्रसादिवस्त्वं क्षम मे हरीश्वर ।।६६॥

महेन्द्रीपमभीमविक्रम

द्भमसे [अपना] वघ भाहता हुआ मैं ताराके द्वारा रोका जाता हुआ भी [अपने] झाता सुधीवसे इन्द्रश्रद करने विधाया ॥५८॥ "" "॥ हे सहेन्द्रके समान अयानक विक्रमवासे, हे सर्वेश्यापक, हे इरोरवर (देवसात्र इन्द्रके भी स्तामी भगवन् विष्णो), बाखसे पीदित और विविध-चित्त होते हुए अज्ञानवरा (अर्थात् आप सगवान् हें इस -बावको मुखबर) मैंने बापको को कुछ कह दावा, असब होकर चाप मेरा वह [दुवंचन] चमा करें ॥ इह ॥

१५—(किञ्किन्धाकाण्ड सर्ग २४)—

तिरा बाजियममे प्रत्यन्त धार्त होका, हवन भौर बुरासद पूर्व विद्युद्धात्त्वाचे महानुमार भौरान समीप बाइर बोबी-1

> त्वमप्रमेषश दरासदम विवेन्द्रमञ्जीतमधर्मकम् ।

मदीणडीर्निश्र निषयणस . चितिक्मवान् इटबोरमाझः ॥११।

द्वम अप्रमेय (अर्थात् देश और कावडे परिकेर रहित तथा गुकाँकी इयला करके दुर्जेय) और उत्तर (अर्थात् योगियांको भी मात होनेके जिये प्रशंग) ही जिवेन्द्रिय (व्यर्थात् इपीकेश वा इन्द्रियातीत)[वहीं हर्ष रामका निर्मुख मझ होना प्रतिपादन करके बागे वर्ग सगुच रूपको सुवि करती है] चौर उत्तम (वर्षाद इस्तेल विच्यु भगवान्) के धर्मी [को धारण करने] वाले हो। हुनारी कीर्ति [सदा] अजीय [बनी रहती है अर्थाद किमी हैं कमसे भी, जो वापके समान धामासमान हो, क्मी रेन महीं होती] है और [तुम] विषयस (विशेष हात्रार्)

मारुति (हन्मान्जी) ने रामको क्या माना -१६-(सुन्दरकाएड सर्ग १३)-[सीताम्बेरवके किये छडामें पहुँचे हुए हन्मार् हरी वनिकामें मनसे भी पहुँचनेके पूर्व इष्टरेवतारिको ध्वार करवे हैं---

पुचिवीके सदय चमावान् तथा रक्तनेत्रींबाढे हो ॥ ११॥

वमोऽस्तु रामाय सतस्मणाय

देव्ये च तस्य जनकारमहादै। नमोऽस्त रहेन्द्रयमानहेम्यो

बमोऽस्तु चन्द्रार्कमहद्ग्णेम्बः॥५ स तम्यस्तु नगरक्त्वा सुप्रीवाय च मारुतिः।।१८॥ [यहाँ इन्मान्त्री रदादि देवताग्रोंसे भी पूर्व।

खबमख और सीताको ममस्कार करते हैं, जिममे ल कि वे इनको खदादि देवों के भी खरर (ब्रयांद सावार् व चौर खब्मीके चवतार) दोनेसे चपना इष्टरेव मानने शौर कम भी इसी बातका स्वड है क्योंडि सर्मे !! [राम-अध्ययस्य] अववान् और उनकी माराही, 3 वोरे ध्यान्य देवताओं को, फिर उनसे भी छोटे कपने । (सामी) हुमीनको नमस्कार किया । यदि वे साममें न्यान्यदि एवंदी होते हो देवताओं के प्रशान ने न्यान्यदि एवंदी होते हो देवताओं के प्रशान ने ने के प्रशान के प्रशान ने के प्रशान के प्रशास के प्रशान के प्रशास के प

१३-(सुन्दरकाएड सर्ग ३०)-

यया तस्माऽप्रमेगस्य सर्वसस्त्रदयावतः ।।६।।

[यर्ती भी इत्माद्वी शामके लिये 'श्रप्रमेथ' शब्दका गाँद जिनका स्वरूप भीश ग्रुव्य देश-काल या इपकासे हैय नहीं हैं) प्रयोग करके शामका साधाद नहा होत्रा इक्षाते हैं।

१८-(सुन्दरकाण्ड सर्ग ५१)--विवापि विदे सन्देशको सो हन्मान्त्रीके रामन्विपयक

ते वो दग्होंने रावधके समञ्ज किया वा रामश्री स्वयं गण्डके स्विति-क्लिस-संहार-कर्जा और सर्वक्षीकॉके सिद्ध होते हैं—]

सर्व राष्ट्रमराजेन्द्र मृत्युष्ट वयनं प्रमा । मन्दासस्य दृतस्य वानस्य विशेषकः ।१६८॥ सर्वेत्वेद्धान् प्रवेदस्य समूतान् सम्बरायसम् । प्रवेदक्या सर्पु शवता सामे महामनाः ।१६९॥

स्वेटोडेइबरस्वेह करना विश्विमनीहज्ञाम् । रामाय राजसिंहस्य हुर्तमं तन जैवितम् ।।४२॥ देशक्ष विज्ञासीहरू

गन्धवैनिधाषरनागयकाः । रामस्य रोकत्रयनायकस्य रपानुं न हाकाः समरेषु सर्वे ॥४३॥

मद्धाः स्वराम्बनुराननो ना स्ट्रस्थिनेत्रस्थिपरान्तको ना ।

स्त्री महेन्द्रः मुरनायको का

स्यानं न दावा बुधिशास्त्रस्य ॥४४॥ है राष्ट्रमात्रावें राजा (रावच रू.) गुरू रामग्रीके दास रिव स्टिक्ट इस कारवारे दिवा है कि समीच रहनेके

कारण दासको अपने स्वामीकी महिमाका टीक-टीक जान होता है बतपुर उसकी बात विश्वासके योग्य है] विशेषतः दत । इस विशेषक्से यह सचित किया 🍱 दतका प्रधिकार हितके उपदेशमें होता है और वह विपन्नोकी बातको क्यों-का-त्यों दुइरावा है जिससे उसके कहे हुए समाचारमें शहा करनेका व्यवहारा नहीं] (और एक) बानरके [इस विशेषक्से यह सचित किया कि मैं न तो रामकी (मनध्य) जाविका चौर न तुम्हारी (राज्स) धारिका हैं किन्तु एक सीसरी व्यक्तिका होनेसे प्रचुपातरहित होकर न्यापकी बात करूँना । शीनों विशेषवोंसे चपना सत्यवका होना प्रमाणित किया है । सत्य वचनको सन् ॥३८॥ महायद्यको राम [समस्त] चराचर भूतों (धर्यात सब बातियोंके प्राधियों) सहित सब खोकोंको सम्बन्ध संहार करके फिरसे वसी प्रकार स्वजेको समर्थ हैं [इससे बगवकी स्थिति, उत्पत्ति धौर संहारका कर्ता होना बतलाया | ॥६६॥ 'सभी बोकोंके हैंबर' एवं राजश्रेष्ठ रामका इस बोकमें पैसा धारकार करके देश जीवन [बचना] बासम्भव है ॥४२॥ है निशाचरोंके राजा (शबक), देश, देख, गम्भर्य, विचाधर, भाग, थय सधी स्रोग 'तीवों स्रोकोंके नियन्ता' सीरामत्री-के समय युद्धमें नहीं उद्दर सकते हैं ॥४३॥ महाभी [जो] स्वयं बत्यस होनेवासे (सर्वाति हिरदयगर्म) [तथा] चार असोंवाचे (बर्बात् सर्वेश) [हैं], बयवा रत्र (शिवत्री) [को] तीन नेत्रोंबाजे (बर्यांच वीसरे ज्ञानरूपी नेत्रमे क्रजानजनित कामादिको भरम करनेवासे) [तथा] त्रिपुरका बान्त करनेवाचे [हैं], धाववा इन्द्र [को] महापेश्वर्यवासे [सथा] देवतायाँके वायक [हैं] (बर्यात् बगन्दी उन्ति तथा संहार करनेमें समर्थ और महावत्नी देवता भी कोई) रामबीके [भागे] युव्में नहीं दहर सकते ॥४४६

इन्तार्त्ताने बेते यहाँ तारण के सामने करने वो 'तीनों को को के इंदर आगावर ताम' का 'ताम' का दि तैये ती (तीतातांके सामने मुगद्दास्यर का रेट को कर रे, प्रचारि) अपन दावांनें को अपने के दर्मीता ताम का दि । राष्ट्र बोक्कि टिमो तो बन्तार्त्ता घरने के तामिता कह सकते वे। तामने दाम को बनते सातारादि रकते हैं हो बारण कार्ये दास के व्यक्त दोनें वे नारण के। हाम बन्दरानें में कहा, पर कोर हरमा तो नाम है राष्ट्र हिल्लुस बाम के इक हमोबिन को है कि ताम नार्य है।

युद्धकाण्डके प्रमाण

१६-(युद्धकाण्ड सर्ग १७)--

[रावयाचा पण पोड़कर चापा हुचा विभोषण चपने चानेका समाचार रामके पास पहुँचानेके क्षिये कहता है—] सोऽर्ड पदिनिस्तेन दासनकातमानितः ।

स्वस्ता पुत्रांध दारांध राववं दारणं गतः ॥१६॥ निवेदयत मां क्षित्रं राववाय महास्मने । सर्वेतोक्तरारण्याय विमीत्रणमुपरिमतम् ॥१७॥

िमेरी चाज न माननेवां हो उस (रावच्य) से क्योर वचन कहा हुआ और शासके समान धरमानित हुआ में वह (सिमीच्या धवा, पुर्जों और की [सब] को छोड़कर श्रीराममंत्रिक राया धाया हैं [इससे विभीपचने एक सप्तं केयावके समान 'शासानिवेदन' को दर्गाया है] गा वश सब कोकोंके सरस्य [तथा नागवते] महान धामा रामसे गीम सुम्म विभीपयाको वरस्थित हुआ निवेदिक करो ['सहामने' और 'पर्वेडोक्टरास्थाप' पर तिकाक्याक्याकारों किया है कि विभावके हारा कैक्सीको दिये गये—'मन गंगान्यन्य (११ हो) भागान व मविच्यति (व न संग्रह')'—ह्यादि (उत्तरकायद सर्गे र स्त्रोक प्रमुक्त प्रमुक्ता र सारिक्य' होनेके काराय स्मीरच्या शामके विषयों स्वानताया सि स्वीवेदकाय और सर्वोक्याक्यांभी सगावादक सकतार है पूर्व सब क्षेकोंके साराय और महान, वास्त्रा है ।

यहाँ 'सहारमने' का बर्यं---

२०—किमारमार्नमहात्मानमात्मार्नमार्नमावहुदयसे॥ (श० द्व० वा० १८१ । ४१)

क्यांद [मापामपी सीताको वास्त्रविक सीता बातकर इंग्र्डमियर्स माहत हुई देशकर ह्न्नमृत्ये वथ यह संवाह रामसे निवेदित क्या तब ये ओक्से अव्यक्त विद्वाह हो गये। उन्हें सामाति हुए वक्त्यप्रतिने कहा हिंदू होमें आकार्यकाले और राचस चपका मत-पारवा-करनेवाले वरकोड (राम) वहाँ] क्या तुम क्यांत्रेले सहाय क्यांत्र (व्यांत्र 'परामामा'—विवक-प्यांच्या) नहीं बातने [बी ऐसा ठोक करते हों]—इस स्वक्रे समान 'परामामा' ही बेना होगा। त्यांची पहि कोई हरूप न माने, तो 'सर्वेशक्टास्थार' का क्यां स्वक्रेस मान सक्ता क्यांकि हमारे गहरित्व स्वक्त्य स्वक्रोंने 'बार का सक्ता क्यांकि हमारे गहरित्व स्वक्त्य न 🏂 'प्रजाजन ।' धतः इन विशेष्योंने ऐसे र समायखड़ारको रामजी भगदर्गतार बन्हे ही हा है

२१--(युद्धकाण्ड सर्ग १७)--

[विभीपण्डे धावकी परीवाडे सम्मन्धने दास रामसे कहते हैं—

अज्ञातं नास्ति ते विविद् त्रिषु त्रेकेषु राज्य । अज्ञमानं पूज्यन् राम पृष्डस्यस्यन् सुर्वया ॥१५

हे राम, तुमको तीनों बोकॉमें उन भी करात है (बर्याद तुम 'सर्वज्ञ' मगवाद हो) त्रपादि है (प्र-! अपने काएको ही बचा बचाते हुए (क्याद करने ही स के कारवास) हमें सुकताबने पूत्र हो प्र-१४

२२—(युद्धकाण्ड सर्ग १८)—

्विमोत्पवके विषयमें वह प्रमीतने का दिशाई राषस राश्यका आता है और हरविषे कारा है कि या कम्मय या में वह हमको भोरते विषय हो माँ वह हमपर शहर को, यह रामने हमरा क्लिस में द्यानवर कबर दिया—] स तुदो वाप्युदो हा किनेर रामीया।

स्वाचनपादितं कर्ते मन शकः क्षेत्रन।स्य स्वाचनपादितं कर्ते मन शकः क्षेत्रन।स्य रिशाचनपादम्बानपुर्वानिक्षणस्य क्ष्मुन्यमेषात् स्नामित्व्यन्त्रीतिकस्यास्य सक्देव प्रपत्ताप स्वाचनपादित्यन्त्रीतिकस्यास्य अस्ये सर्वमृतस्यो दशस्यवद्गां तन।स्था

कानव संस्कृतिकाय विश्वनिक्षा के कानविक्षा स्थाप सुद्ध, [स्तर] ला वा सासस विद्धार प्रकार सिंद स्वाप्त के सिंद स्व स्व क्षित्र स्व क्षित्र के स्व स्व क्षित्र स्व क्षत्र स्व क्षत्य स्व क्षत्र स्व क्ष

प्रवे मात्र रोगा है स्वया (स्रोताधिक शेतृका स्वत्तवस्य-प्रमें सेक्कसाती, शिव्यनुत, रक्तन्यक हृत्वाहि आनती-स्थानत क्ष्ता हुमा) हैं त्वारता हूँ हत्वक्डर साध्या-क्या है को सर प्राधियोंकी स्थोते स्वया महान करता-हैं [दिवार भी व्यावसारी स्वयुक्तम स्वित्तव व्यावसात किया है तिससे रामके स्थावस्वत्यार होनेसे कोई सान्देह नरीं स आत हैं] ॥१३॥

२३-(युद्धकाएड सर्ग १६)-

[विनीचय चार राचसाँ समेत साकर रामके चरणोंमें प्रदेश करके स्वरं काल्मनिवेदन करता है—]

मनुत्रो रावणस्यादं तेन चासस्यवमानितः ११४१ मवन्तं सर्वमृतानां वारणं शरणं शतः । पीरयका मबारुद्धा मित्राणि च वनानि च ११५१ मदद्रतं हि मे राज्यं थोवितं चसुन्तानि च ११६१।

में रायवहा मोता माई भीर उससे प्रयमानिक हुआ मारे प्राय भाग हूँ स्वॉक्ति भाग सब मूलांके प्रायक्ति करना है। यो 'बोल' अपके स्थानी 'ब्यूलां' प्रयाद करना है। यो 'बोल' अपके स्थानी 'ब्यूलां' प्रयाद करेंसे भाषिकतर स्वायक्ति राजक माराइतार होना सुचित किया है। किने बहा चीर तिमों की इस होना है। अप नहां किया है। किने बहा चीर तिमों की स्वायक्ति के स्वयक्ति के स्वायक्ति का स्वायक्ति के स्वायक्त

१४-(युदकाएड सर्ग ३४)--

[ापवाडी तननी चीर बुद मन्त्रीकी राजवारी कही हुई बाढ़ों दनों उन्होंने सरमा सीतारी कहती है कि (रखों) रो) मैपिडी (सीतानी) को सकारपूर्व हामडे समर्पव को कोंकि सनस्वानमें उत्तका को चहुत (धार्वाविक) को देशा गा। है वहीं उत्तक प्राक्रमका प्रयोग निदर्शन (रमुता) है।

> तेवृतं च समुद्रस्य दर्शनं च बन्धतः । सर्वं च रक्षमां मुद्राकः कुर्यान्मानुवे। मुचि ।२२॥

[किट रामदा एक भन्नभा सन्तान हिंगान ही सब गममोद्रो बीत सकता है बया] इन्यान्स स्माहको कविता. [भीताको] देवता, भीत [समका स्वाहको कविता. इसमें सामा, यह सब युक्तों कीत मनुष्य कर सकता है है [इसक्रिये न तो इन्मान् वानर हैं और न राम मनुष्य हैं, किन्तु सब देवावतार हैं—(तिजकल्याच्या)] ॥२२॥

२५--(युद्धकार्ड सर्ग ४०)--

नि केंद्रत इत्यान् श्री किन्तु सुमीव भी रामको 'खोकनाथ' और प्यप्तेको रामकी घोरके भागानुसार 'मित्र' होता हुष्य भी प्रपती थोरके भागानुसार 'रामका रास्त' मानता या जैसा उससे शत्यको सजनगरी हुए का है—।

होकनाथस्य रामस्य सला दातोऽरिम राक्षसः । स सबा सोक्समेऽदान्तं पार्विवेन्द्रस्य तेजसा ॥१०॥

हे राच्या ! मिं 'कोकोंके नाय' रामका सका कौर दास हैं। मैं राजाओंके राजा (राम) के तेजसे (चलुगृहीत हुमा) काल तुकेन होन्ँ या ४९०॥

२६—(यदकाएड सर्ग ५०)—

[राम क्षीर जनमञ्जो शानिकत तथा मीहापत देव-कर जब विभीषण निराम होकर विज्ञाप करने जगा तब सुम्रोवने कहा कि दे पर्यम दिभीषण! सद्दान राज्यका समोरत पुरा होनेका नहीं है बहिन मुद्दी सद्वाना रामा होगा क्षीर—]

> गरबाधिष्ठितानेतानुमी रावनतस्मणी। स्वन्ता मोहं विचित्रते समणं रावणं रहे।।१२।।

गरुवसे कांचिटित हुए वे होनों, राम और जन्मण, मोह कोवकर रखमें अनुवाधियों समेत राहणको मारेंगे [बिशीयको सारवता देनेवाले हुए वाक्यसे सुभीवने कांचना, रामणी के सम्बन्धमें भगवद्वतार होनेका, ज्ञान स्वित विज्ञा | ॥२२॥

[(रखी॰ ११) जब एक सुदूर्तके पक्षार वाचरीने विजयके दुव सहस्वती तराको प्रावकरण स्थितके सरदा वेद्या और (रखी॰ १०) गरहको सावा देखकर ने माग निक्तीन जा वचकर समन्वस्थायाओं बीग रखा था साता सहे हुए। (रखी॰ १०-११) तव गरहके हक्तपराठी बनके सम पाव (स्वा) सर सर्व और रखी० ४०) वनका रूप, बजादि पहले में तुन निक्तर सावा। (रखी॰ ४४०-४४) सनके पुस्त्रेवर सरवने सम्बन्ध स्थितन इसनकार दिशा-]

अहं सस्तते काकृत्स्य प्रियः प्राणो बहिश्वरः । गरुत्मानिह संप्राती युवनेः साह्यकारणात् ॥४६॥

में पुग्हारा बाहिर समस्य करनेवाला माखा कुने जिल मित्र गरह दुम दोनोंकी सहायताके हेन यहाँ जावा हैं [बहिःगमारी 'मारा' कहमेंने गरुकने किरक्तरात राम-बरमपडे साथ दिप्युगाइमडे क्रांगे बराना वनिष्ठः सम्बन्ध प्रदर्शित किया है। सम्प्रधा रजोक्डे पूर्वाईका क्षर्य चर्सगत होगा] ॥४६॥

२७-(युत्रकाण्ड सर्ग ५६)-

शिवसमे स्वमसके शक्तिवास सगनेपर, इस असमे कि पूर्वसदरा कहीं फिर भी न भी उठे, रामको धनहाय कर देनेके समिप्रायसे, सम्मयको समुत्रमें केंड देनेके क्रिये वहाना चाहा । परन्तु--]

हिमवान् मन्दरी मेरुनेतोश्यं वा सहामरैः । शरमं मुनाम्यामुद्धुं न शरमो मरतानुतः ॥१०९॥ शास्या ब्राह्म्या तु सीपित्रिस्वाहितोऽपि स्तनान्तरे । विष्णोरमीमास्यमागमप्रमानं प्रत्यनुस्मरत् ॥१९०॥ तते। दानवदर्पनं सौमित्रिं देवकण्टकः। तं पीडियत्वा बाहुम्यां न प्रमुर्केड्घनेऽमयत् ॥१११॥

इनुमानय तेजस्वी त्यमणं रावणार्दितम् ॥११६॥ आनयद्रापनाभ्याशं बाहुम्यां परिगृह्य तम् । बायुसूनोः सुहत्वेन महत्या परमया च सः । राष्ट्रणामप्रकाप्योऽपि रुपुरवमगमत् कपेः ॥११७॥

भावनसाम्र विशास्यम् स्वमणः शामुसूदनः । विच्णार्मागममीमांस्यमात्मानं प्रत्यनुस्मरन् ॥१२०॥

गिरा गम्मीरवा रामो राध्तेस्ट्रमुबाच इ ॥१२६॥ विष विष मम त्वं हि इत्वा वित्रियमीहत्तम् ।

क नु राधसशार्द्रक गत्वा मोधमनास्वसि ॥१२०॥ यदीन्द्रवैवस्वतमास्करान् वा

स्वयम्मु-वैश्वानर-शङ्करान् वा । गमिष्यपि त्वं दशभा दिशो वा

तमापि मे नाद्य गतो निमाययसे ११ १ २८।१

राधनस्य नचः श्रुत्वा राक्षसेन्द्रो महान्तः । बामुपुत्रं महावेगं बहन्तं राधवं रणे ॥१११॥ रोवेण महताऽऽविद्यः पूर्ववैरमनुसमरन् । भाजपान शरैदींधैः कार्यन्तरीरखोषमैः ॥१३२॥

[जिस रावयाके जिये] हिमाजय, मन्दर, मेर (वे पर्वत) चयवा देवताओं सहित शीनों खीकका (दो)

मुनाओंसे बडा खेना सदत्र था [वह] माउडे होटे (बच्नव) को न बड़ा मद्दा 💵 • १३ [रगेंकि]हुनि पुत्र (सब्यक्) ने बचःश्वन्न हे मन्यमें मान्नी रुप्ति बाइन होने हुए थी, बाने बारडो, निःमंध्य निःहरे होनेका (अथवा जिल्लान महिया था सक्तेशका विश माग चपने प्रति) धनुमारण दिया [तित्रहनामा भारती ही बस्तु भारते भार (भगीद शानी) भे मारती है इस बाग्रयने सदमयने वक्रग्रिन्दर वर्ष घराना रचया करनेके लिये 'में भगवानके देउचा धर हैं थैमा ज्यान किया । माया-मातुप गरीर-वारिक ऐ न्यान करना औरोंकी दर प्रतीतिके विवे है, पानु सर्र नहीं होता। इसमधार खब्मपने 'में वह हैं' के आवनाडे द्वारा अपने शरीरको मारी कर दिया वा, क रपष्ट है] 233 ०३ तब (अर्थात् खचनवर्डे अपनी महिनाह अनुमन्धान करनेपर) देवींका कपटक (रावय) शानहीं दर्गंडा इनन करनेवाजे सुमित्रापुत्र (बक्तव) वो (रो) बाहुधोंसे दबाकर हिलाने दुखानेमें भी समर्थ वही स्म [सब उठा खेनेमें दो स्था समर्थ होता] 11111 *** व तद्वन्तर राजबसे पीदित इव ब्रास्टवीचे वेजस्वी इन्मान् अपनी मुजाओंसे परिग्रस्य अरहे राजे समीप से बाये। वह (खबमयजी) शतुकों (धर्गर रावण तथा उसके सहायमूत बनुवरों) हे दिये प्राप्त (हिवाने-दुवानेको बरान्य) होते हुए भी वसुप्र शर (इन्यान्) के जिये मित्रमाव और परममण्डि हार खपु (इसके) हो गये [भगवान् वा भगवन्दताराँका ता केवल मकाँके सहज वस होना स्वामादिक ही है। हार्थ ३ ३ ७ ॥ · · · · । शतु विनाशक वास्मण प्रपरे विषर्वे विष्युके निःसंशय या अचित्य ग्रंश [होते] का श्रुक्तव करते हुए आरवन्त (शान्तियुक्त) और विशस्य (शार् रहित अर्थात् सब वाल्लीमें नीरोग) [ग्री धरे] सार्थ ॥ [कुद हुप] राम गम्मीर बायीसे राष्म्री राजा (रावस) से बोस्रे ॥:२६॥ हे राजसांसह, ग्रह ग्रा त् मेरा ही ऐसा अपकार करके मखा कहाँ ब्राव्ट पुर^{हार्} बावेगा । ॥ १२७॥ यदि त् इन्द्र, यम और सूर्वने इवा स्वयम्म (मझाजी), स्रप्ति स्रीर शहर (शिवती)

शस्य या दश प्रकारकी दिशाओं [के बन्तों] में भी बारेग

सो भी [वहाँ] शवा हुमा [मी] बात्र मुख्से गाँही

सकता (बर्याद बात्र में तुन्ते न बोर्गा) [बर्गा

हा, रहरादि देवोंके साथ विष्णुका जाम नहीं है क्योंकि म सर्व ही विष्णु में] ॥१२८॥ रामका वचन सुनकर शब्बवान् राष्ट्रसराज (शब्या) ने महारोध (बातिकोध) माविष्ट होते हुए भीर 'पूर्व वैरका अनुसारण करते हुए,' रावेगवाले वायुसुस (इन्सान्) को [को] स्थामें मको [भएने उत्तर] चताचे हुए [थे], प्रजयकाककी प्रिमाबाची सरीके दीस शरोंसे मारा [यहाँ राजवाका वित' या तो इन्मान्से या रामसे होना चाहिये। वर्तमान ोर्तिमें होनोंसे उसका वैर नवीन हो था को "पूर्व" नहीं ा वा सकता। इन्मान्त्रीके वर्तमान शरीरसे पूर्व एका हैर उनसे तो कुछ नहीं या किन्तु उनके पिता इते इतकिये था कि वे भी उसके रामु देवों मेंसे एक ये। यु वह वै। भी कृष विशेष तील नहीं हो सकता । सतः वडे भारते हिरएएकछितु आदि पूर्व जन्मोंमें जो धैर ज्ञाबरवारचारी विष्युसे या उसीले यहाँ रामायण्कारका मेगाय प्रतीत होता है] ॥१६१-१६२॥

१८--(युद्धकाण्ड सर्ग १०८)--

रियहे भेडे हुए रथके सारिय (मार्वाखे) वे राम र सदबड़े पुरको रात-दिन सुदूर्त-चया कमी न रुकते-प देखा, और रामके जयको क्यतक न देखा—]

क्य छंस्तात्वालास सातती रायवं ठवा। कतालीस कि बीर त्यमेनसमुक्रिती शाशा विकृतकारी कामर त्यमसं वेतामर्थ समे। निमाणकारक करिया साडीर सोडाब करिती शाशा वडा संस्तातिते रामस्तेन वाययेन सातते । कामर सार्वं दीर्घ निम्पसस्तामिकीसम्म शाशा

विष में मार्गिको कसी समय रामको स्वस्थ दिलाया है है सी दिल क्यों देशा प्यवहार कर रहे हो, जानो व्यान्ती हो व हो का। [करों गान्तिके शिर्ष 'है प्रामी' हुम रिमास्क (मार्क) क्षम हज्जी भोर क्लामो। देशावानी दिलासका को समय कहा था बह बाल है से वह सार्गिक के बाद साथ बह बाल (किल्सारा) प्रामी शिरासा के तो हुए सर्पके समान के साथ (मार्गिक) को महाय दिला होदा

्यां देवेदका सारिय देवजोकनिवर्गत बालांका कार' समक्षे विश्ववदार होनेके कारवादी दिखा सकता है। बनुष्यात्र होकर राम मातिकके कहनेवर बॉवकनी देखते रह धाते धौर मातबिका सरय दिवाना भी विरुद्धव संसक्षत होता।]

२६--(युद्धकाएड सर्ग १११)---

[राज्यको व्येष्ठ पानी मन्दोर्दी पतिको सामके हायसे मता हुव्या देकतर विवाद करने बती (रवीक १-२)। वसे विश्यास न हुव्या कि देवादि सर्व वाद्यके सहस्वने वार्षे राज्यको मालुम्बान राजने वर्षोक्षर माता (रजीक ६-८)! प्रवचा स्वयं यमताव सामस्यते मायाका प्रयोग करके व्याये हींगे (रजीक ६)। कपना हरने (रामस्य प्राप्त करके) तुत्यें मात होगा, परन्तु गुम-बैसे महाच्छीके सामने बुद्धमें जब्दे होनेकी भी श्रक्ति सो येचारे हम्पर्म नहीं है (रखीक १०-११)। चला-)

व्यक्रमेष महायोगी परमात्मा सनातनः ॥११॥ भनादिमध्यनिचना महतः परमी महान । तमसः परमो बाता शक्तचकगदावरः ॥१२॥ श्रीवत्सवधा नित्यश्रीरअस्यः शास्त्रतो श्रुवः । मलुवं कपमास्थाय विष्णुः सत्यपराक्रमः ॥१६॥ सर्वेः परिवृता देवैवानरत्वमुपागतैः । सर्वरोकेश्वरः श्रीमास्तोकानां दितकाम्यया ॥१४॥ सराधसपरीवारं देवशत्रं भगावहम् । इन्द्रियाणि पुरा जिला जिते त्रिमुक्तं स्वया ॥१५॥ स्मरदिशिव तदैश्मिनिद्रयेशेव निर्वितः । गदैब हि जनस्थाने राष्ट्रसैर्वहुनिर्देश ॥१६॥ खरस्त निहती भाता तदा रामो न मानकः। बहैन नगरी रखा दुन्त्रनेशां सररिप श्रधका व्रविद्यो हनुमान् बीर्योत्तदैव स्वधिता वयम् । किनतामनिरोधम शायनेणेति सन्स्या ॥१८॥ बन्दमानं व गृहासि तस्पेयं स्पृष्टिरापता **॥१**५॥ पतिजतायास्तपसा नर्न दग्केडसि मे प्रमो ४१६॥

वह (राम) अव्वरस्थि (सच्छुच ही) सारोगी (वर्षाद सामानिक सर्वशिकुक सम्मन् कोनेक्द) सत्तावत (स्वा इत्येक्को प्रसाना (वर्षाद वे प्राच्योते हे भी सन्वर्गमी सामस्य हैंचर) 8112 स्नादि (क्या) अव्य (इदि) चीर निचन (व्या) से रिल, सार्यो ची स्वा सार्व [मारोग सारीचार कृतिक स्वुतार], तता (स्वाच) से वह [मारोग सारान्य कृतिक स्वुतार], तता (स्वाच) से वह [मारोग स्वान्य कृतिक स्वुतार], सारा

जायन्ते' श्रुतिके चनुसार], [चन वनके विग्रह्युयोंको कहती है-] शहु, चक्र और गवाके धारण करनेवाले ॥१२॥ हत्यमें श्रीवत्स [का चिद्व भारण करने] वाले, जिनसे वापमी कभी पूर्वक नहीं होती, बो बीते नहीं जा सकते. शास्त्रत (अपद्रय नामक भावविकारसे रहित), प्रव (परिवामरदित)[यहांतक भगवानको छुत्रों भावविकारों-से रहित बत्रजाया], मनुष्यका रूप घारण किये इए चौर सस्य पराक्रमवाले विष्छ ही हैं ॥१३॥ [जो] वानररूपको मास हुए सब देवोंसे थिरे हैं (कथांद ऐसे देवोंको कपना सदाय बनाये हुए हैं। स्रोकोंकी हितकासनासे [ऐसे] श्रीमान् सर्वेद्धोकेश्वरने देवोंके भवानक रातु [क्य तुमकी] राचसपरिवारसमेत भारा है। तुमने पहले इन्द्रियोंको [कठिन तपस्याद्वारा] स्त्रीतकर [तथ] त्रिसोडाको साम्रा था। मानो उसी वैरका स्मरण करते हुए इन्द्रियोंने तुन्हें जीत रक्ता था जिससे तुम सीता अहरवामें प्रकृत हुए भौर मन्त्रमें मारे गये । डोक वसी समय अब जनस्थान (प्रज्ञवदी) में बहुत-से राजसोंसे संयुक्त भाता खर सारा गया था यह सिद्ध हो चुका था कि] शम अनुष्य नहीं (किन्तु साचाद ईश्वर) हैं । ठीक उसी समय वय देवताओं-को भी धराग्य क्षद्वानगरीमें इन्सान् युस चाप थे [उनके] बबसे इमजीग ध्वयित हो खुके थे। मेरी कही हुई इस बातको कि रामसे सन्धि कर को वो धनने शहरा नहीं किया उसीका यह फल मास हुआ है ॥१४---१६॥*****॥ है ! मेरे स्वामी तुम निश्रय पवित्रवा (सीवा) के कापसे दग्ध हुए हो ॥२३॥

३०-(युद्धकाण्ड सर्ग ११७)-

[(स्रोक १—१) सीताके प्रतिप्रवेशके समय वक्ष हाम तिकवित हुए तब इतेंद्र, यम, पिनृगय, १००० नेत्रों-वाचे द्वार, करेंद्र करना, निनेत कुण्याम महादेशी, सर्वेद्रोकरार्ज महामी, हुन सब व्यंगे विमानींहरार कहाने रामके समीव सावद कहा—]

कर्ता सर्वस्य श्रोदस्य श्रेष्टी ज्ञाननियां विमुः ।

क्यं देशकारेहमात्मानं नावनुष्टेस्यते ॥६॥ व्याचना वृत्तः यूर्वं व्यानां व्यावमानिः । वराज्यानिः स्टेबनायादिकते सर्वत्रमुः ॥७॥ वराज्यानिः द्वाः साम्यानावति च्यानः । वराज्यान्तर्यते द्वाः साम्यानावति च्यानः । वर्षन्ते चर्त्तवर्षो देश्योचन्त्रमते दतिः ॥८॥ अन्ते जादी च मध्ये च दश्यसे च परंत्य। अपेक्षसे च वैदेहीं मानुबः प्राकृतो यमा ॥शा

इत्मुको लोकपालेसी: स्वामी लोकस्य गर्यः । अग्रमीत् विद्याश्रहात् ग्रमी धर्मस्या साः ॥ आरमानं मानुषं मान्य रामं द्रामधानम् । सीठदं यद्य यत्रावाद्यं मान्यांस्य स्वती हे ॥ इति सुवाणं काष्ट्रस्य महा महानिद्यं माः । अम्बरीपञ्चमा साम्या

(आर्थ-स्तव)

मवाकारायणी देवा श्रीमांश्रकामुधः प्रमुः। एकम्बरी बराहस्त्वं मृतमन्यसप्तांत् ।११ मक्षरं बहुत सत्यं च मध्ये चान्तं च राधर। लोकानां त्वं परी धर्मो विध्वततेत्रस्तुर्धः ॥१४ वाहियन्ता इपीडेशः पुरुषः पुरुषेतमः। सजितः सहयुग्दिग्णुः कृष्णश्रेद बृहद्रतः।।११ सेनानी श्रीमणीः सर्व स्वं मुद्धिस्त्वं भ्रमा इमा प्रमनबाडण्यम् त्नामुपेन्द्रो म्युन्दरा ॥१॥ इन्द्रकर्मा अहेन्द्रस्त्वं पद्मनामा रणान्तहर्। शरवर्षे शर्षं च स्वामादुर्दिग्या महर्षदः॥१०० सहसम्बद्धी वेदारमा शतशीनी प्रहर्गकः। त्वं त्रवाणां हि होजानामादिकती स्वयंत्रकु ॥१८० सिद्धानामीप साप्यानामाश्रमश्रासि पूर्वतः। त्वं यहस्त्वं वयद्कारस्त्वमोद्वारः वाहत्ता॥१६॥ असर्व निधनं चापि मा निदा को भवानिति। द्दवसी सर्वभूतेषु गोषु च प्राव्यमेषु च ॥१०॥ रिधु सर्वामु गणने वर्ततेतु नरीत् वा सहस्रकरणः श्रीमान् शतशीर्वः सरसर्व॥१९॥ रवं चारमसि मृतानि पृथिवी सर्वेपकीतः। जन्ते पृथित्याः सक्ति इत्रवते सं वद्याना ! ? ? देशक्षीतमान्। त्रील्येन्डान्बारयन्साय अर्ड ते हदमें राम किहा देरी साम्यति।।३1 देना रोमाणि गार्देषु बद्धना विद्धाः इते। निवयन स्मृता राजिकानेते दिख्यका। संस्कारमञ्जासकनेदा नैतरीन तथा मेत। सम्मद्द स्थित है होते हे समुख्या है।

वप्रिः कोपः प्रसादस्ते सोमः श्रीनतसरस्यणः । लगा हो बास यः बान्ताः पुरा स्वैर्तिक मेहितिः ॥ २६ ॥ महेन्द्रय क्तो राजा बर्लि बद्ध्या सुदारुणम् । सीता रक्ष्मी वैदान्त्रिणुदेवः कृष्णः श्रवापतिः ।। १७ ।। वनार्थं रातणस्पेह प्रतिप्टे। मानुकी तनुम् । विदिदं नस्त्वया कार्य क्रुतं पर्भमुतां बर ॥ २८ ॥ मिहती रावणी राम प्रहारी दिवसाकम । शमीयं देव बीर्यं ते व ते मीयाः वराक्रमाः ॥ २०.॥ भनेति दरीने राम अमीयस्तव संस्तुवः १ नमोपास्ते मरिप्यन्ति मिक्रमन्तो नशा भृति ।। ६० ।। दे त्यां देवं पुर्व मकाः पुराणं पुरुवात्तमम् । प्राप्तुवन्ति तथा कामानिह होके परण च ।। ६१ ॥ रममार्थस्तवं दिव्यभितिकासं पुरातमम् । वे नराः कौर्वविष्यन्ति नास्ति तेशं परामवः ११ ६२ ।।

[यहीं सर्वेत्रथम यह समक क्षेत्रा चाहिये कि उक्त रसों साथ विष्युके कानेका कोई प्रसन्न इसीविये नहीं है कि राग त्वर्य ही विष्यु हैं।] (तुम) सब सोकके कर्ता शिमके मनुष्य गरीरके विषयमें सर्वेडीककर्ता इत्यावि स्रोपस बनडे मूख (विच्यु) स्वरूपके समिमायसे ही पि ग्रे है--विस्तकायाच्या ।] कानियोंने सेंह, और विसु (सर्वव्यापक) [होते हुए भी]क्योंका कफने सायकी [स्वादि] देवगयोंमें भेष्ठ नहीं समझते [क्योंकि 'विष्यु-सुका है देवा।' यह शुनि भी दिन्युको (कार्यात् गुन्हें) ही वर देवीमें मसुल बताती है] ॥६॥ [कतकम्यास्त्रामें 'बतथाना' इरगादि तीन स्टोक (७—३) स्वीपार नहीं किये गये हैं। तीर्थव्याज्यामें इनका श्याक्यान काधीकिश्वित क्षाति क्या गवा है—] पूर्व (अमौत् पूर्वकरपम अथवा विदेने पूर्व १५) वसुधाँ [के शस्त्र] में श्रातधामा नामक रष्ट भीर धनापति [इए ये तथा] तीनों ही सोकॉर्क मादिक्तां (प्रयोत् चयद और सदनाधिवतिरूप चादि-वृद्धि कर्ता, एवं) सर्वप्रमु (बर्यात् सबके नियन्ता होते इर सर्ग किसीसे नियमित न होनेवाजे) हो ॥७॥ रुद्धोंमें षास्त्रं स्त्र (प्रयांत् महादेवजी) और साध्योंने पाँचवें (मर्यात् वीर्ववान् नामक) भी [तुर्ग्या हो]। [विराद्-क्षत्र वर्षनं करते हैं-- | दोनों स्विमीतुमार गुरहार (रोतों) बात है सूर्य और चन्त्रमा [तुम्हारी दोनों] कांत्र है ॥=॥ हे शत्रुमोंको तपानेवाखे (अगवन् विच्वो)

[तुन्दी तुम] अन्त, बादि और मध्यमें दिखायी पहते हो । [इससेयह स्थित किया 🖹 सर्वमृततात गुम्हीं हो]। धीर चित्रप्रवेशके समय | सीताकी वर्पेश साधारण मनुष्यकी मौति कर रहे हो ॥३॥

[इन्द्रसे खेकर महतापर्यन्त] उन (पूर्वोक्त) स्रोकपालीं-हारा ऐसा कड़े गये स्रोकस्वामी रधुउलोत्पन्न धर्मधारियों में खेड राम श्रेष्ठ देवोंसे बोखे-- ॥ १० ॥ में सदने सापको मञ्जन्य (युवं) दशरथका पुत्र राम मानता है । ऐसा (मनुष्यसरीरमें चहंबुदियाडा) मैं हो (परमार्थस्वरूप) भीर बहाँसे (जिस कारक्से) हूँ उसे भाव (भगवान महाजी) अवको बतावें [यही, शिष्यकी जिल्लासा होनेपर गुरुद्वारा मक्कविचाका उपदेश विवा आनेका, मार्ग सर्वन्न शृति-स्वृतियोंमें प्रसिद्ध है। इसी कारवासे शमने अपने भक्तोंको धरना स्वरूप बोधन करानेके क्रिये शहा शिष्यकी माँति जिज्ञास बनकर सर्वज्ञ ग्रुड महा।शीसे मध्य किया-विवकम्याच्या । ॥ ११ ॥ महाभावियों से स्मानाने ने पैसा पूलते हुए काइन्स्य (राम) से कहा, डेसस्य पराक्रमवाडे (विष्यो) मेरे सत्य बास्यको सुनो ॥ १२ ॥

[महाजीने रामके प्रश्ने उत्तरमें श्लोक १६ से ६२ सकता 'कार्यस्त र' नामक दिश्य प्ररातन इतिहास सनाया । इसमें रामको-नारायणदेव, धकायुच, एकग्रह्मशाह, प्रचरमझ, विध्व स्सेन, चतुर्शुंज, शाहंधन्या, हपीकेश, प्रश्वीतम प्रक्य. विष्यु, कृष्ण, सृष्टि-प्रक्षय [-कारण], उपैन्द्र, मधुसूदन, पद्मनाभ, तीनों जोकोंका कादिकतां, स्वयंत्रस्, यक्त, वपटकार, चोळार, दिनान्तमें पृथ्वीके शलपर महोश्म (धनन्त वा खेषनाय) के कपर सोनेशाला, (२१-२६) विशद्खरुप, श्रीवत्सवचय, वामनामतारमें तीन क्योंसे टीनों बोक नापबर और यजिको बाँधकर महेन्त्रको शाम बनानेवाळा-बतसाकर (श्लोक २७-२४में) स्पष्ट कहा गया है कि--

सीता [साचात्] अपनी हैं भीर भाव विस्तुहेत एवं कृप्य (श्रयवा स्थामवर्ष) प्रतापति है ॥२०॥ रावणके वयके शिवे इसलोकमें बनुष्यश्रीरमें बाये हैं। हे धर्मधारियों से अष्ट! तम हमारा वही कार्ये कर चुके हो ॥ २८ ॥ सावका मारा गया, [बाव] तुम [तुष्ठ कासतक मदाराजावसे] प्रसन्न होते हुए बहाबोकको [सीट] चनो॥ २६ ॥

िरासके महालका प्रतिपादन करनेवाडे इस महा क वास्त्रको सनकर खोकसाची प्रशिदेव सीक्षाजीको सोहस

क्षिपे चितासे निकन्न चाये और सुरूपश्ती सीताकी रामके भर्षय का के बोसे 🌃 यह तुम्हारी सीता है जिसमें कोई पाप नहीं है (सर्ग ११ म छो ०१-५)। इसे ब्रह्म करो (१०) । रामने पेगा ही किया । इसके अनन्तर सर्ग 114 में महेचरने शामते कहा है कि हर्ग है कि तुम यह कर्म कर शुढे (सो॰ २) अब अपनी माताओं, भाइयों तथा सुहमनोंको चातन्त्रित करके, बयोध्याका शस्य पाकर पूर्व वेश स्रापन काके सथा अध्योध-वज्ञ काके ब्रह्मकोकको गामा चाहिये (४-६) । देखो तुम्हारे ह्वारा सारित हुए यह राजा दरास्य जिन्हें इन्द्रक्षोक प्राप्त हुआ है विमानपर विराजमान है, तुम और सच्मण इन्हें प्रयाम करी (७-८) मसने यैसा ही किया और पिताको देला (६-३०)। विमानस्य राजा दशरधने बायन्त इपित होते हुए रामको गोदमें विठाकर चौर गवेले लगा कर कहा (११-१२)। तुम्हारे बनगमनके विरद्दसे स्वर्गे भी मुम्दे भएका व सागा, किन्त कैकेपीकी बासें मेरे इदयमें शहतीं रहीं (१३-१४)। भाज तुन्हें भीर लक्ष्मणको सङ्ज्ञल देख भीर द्वावीसे सगाकर में दु:श्वसे ऐसा छूट गया हूँ जैसे कुइरेसे सूर्य (१४) हे प्रत्न ! तुम-जैसे महाला खुपुत्रने मुन्दे शार दिया जैसे घश्यकने धर्मातम कहोस माद्ययको (१६)]

३१-(युद्धकाण्ड सर्ग ११६)-

'श्वानीं च विजानामि यथा सीम्य सुवेश्वरैः । वभार्यं शवणस्पेह पिहितं पुरवोत्तमम् ॥१७॥

पते सेन्द्रास्त्रयो लोकाः सिद्धाध परमर्थयः। अभिवाद्य महास्मानमर्थनित पुरुगोत्तमम्।। २०॥ पतत् तदुक्तमन्यकमस्रां ब्रह्मसंगितम्।

देनानां हृदयं सीम्य गुढ्यं शामः परंतपः ॥ ३० ॥ भीर हे सीम्य ! इन्ह मैंने व्याना है कि जिसम्बार

रावषा के वण्डे जिये झुरें आहें (वेंबाँ) से [मार्थिय] सुरुगोस्त (भागवाद विष्युक्त तुम) वहाँ [में युक्त कारीर में] [में ये ॥ १० ॥ " हिंदी व्यक्त कारीर में] [में ये ॥ १० ॥ " हिंदी व्यक्त राजा में] [में ये ॥ १० ॥ हिंदी व्यक्त कार्याच्ये नामकी हुम्यूगोर्थे ही एतन-कार्याव्यकी-भारिका कप्त्राच्ये कार्यो हुप्त सम्भावा और कहा —] वे हुप्तावित योगों क्षेत्र कराते हुप्त समम्भावा और कहा —] वे हुप्तावित योगों क्षेत्र कराते हुप्तावित योगों क्षेत्र करात्र हुप्तावित विष्युक्त रात्र) को म्याम कर्ये प्रपत्र करा दे हैं है ॥ १३ ॥ हे सीम्य (क्षास क्ष्मव) " त्यानेवाओं राम्म क्ष्मव कार्य है] यह (मस्तिद)

(वेदश्विपश्चित) सन्यक्त अत्तर है को देवींका

इत्य धीर गुद्धा [श्वेनामां इत्यं महाप्रमनिन्दरं ह महोपनिषद्दं देनामां ग्रह्मम्* इत्यादि भृतिनासीम स्याद्वी ॥ ३० ॥

३२—(युद्धकाण्ड अन्तिम सर्ग १३८) [अन्तर्मे समस्त रामायणके अत्रण वापार कर सदा को कल मित्रा करता है उसके प्रशा गया है कि-]

त्रीमते सतवं रामः स दि विणुः सनदतः । आदिदेवो महाबादुर्दरिगीरामणः बद्धाः। यवमेतरपुरानु समास्यानं मद्रमस्य कः। प्रस्याहरत विसन्धं सतं विणोः प्रपर्धारम्।

स्काविकासे तथा व्यावसाकारों के ब्राह्मण्य विकाविकित रामाप्य-वाक्यों तथा ऐते हैं। अपनुष्टत व्यावों में बादता-वादवा तहे हैं जिनका कविक विचार यहाँ बेलबुबिक सरहे की हैं बा सकता—

वा सकता— ३२ -कटरोटारपुकी च नका बावस्पतिस्था। सुरुरावस्ताताहाः साझादिगुरित स्वन्।।(१११। ३४ -स्ताऽई पुरुरानाम शक्रपुरावनेत दे। भवा तु पृथे स्वं मोहात हातः पुरुर्गन।।

कीसम्बा सुप्रवास्तात रामस्य विदेशे मण । वेदेही क महामाता रुवमण्ड महारशः ॥(शर्माण वृष-जहमेवाहरिष्यामि सर्वास्टीकाम्महमने । कावासं त्यहमिष्णामि प्रदिदमिह काने॥ (शर्मा

३६ - स्विमेश्वाकुकुरुस्यास्य पृथित्याद्य महत्त्रः। । प्रधानद्वापि नायद्य देवानां मध्यानिव ॥ (१)।

२७-जहमेबाहरिप्पामि स्वयं होकार महानुने । जातासं त्यहमिष्णानि प्रदेशमेड कानेरा। (संगार २८-सर्वे तु विदितं तुम्यं बैहोबयमा वायतः॥ (सारार)

३१-नानहं समतिकान्ता राम लाडपूर्वदर्शनार्। समुचेतारिम आनेन मगीरं पुरुषेत्रमम्॥(शृक्तरे पालमीक्ट्रित इस सोकमें जो ध्वनि है कदाचित उसीसे प्रेरित होक काजिदासको धी ऐसी रचनाकी सुकी थी—

राममन्मयरारेण तादितः दुःसहेन हृदये निशाचरी । मन्यवदुधिरचन्दनोदिता जीनितेशवसर्ति नमाम सा ॥ (रमुवेश १९। २०)

पत्ता काबिदासके पयमें 'क्षमत-परार्थवा' मामक गाय-रोप है जिसकी खपेणा चादिकविका खोक विवान्त निर्देष है।

४०-रति राज्येवः सिद्धाः सगणाधः द्विजर्वशाः । बताचेत्वस्तास्त्युदिमानस्याधः देवताः ।। मारिष्टं तेजसा रामं संत्रामदिरसि स्थितम् । ष्टर्दा सर्वाणि मुतानि भवादिव्यविदे तदा ।।

(११६७१४-८५)

११-न्ये सा महत्यर्ग रामस्य विदिशास्ताः ।

गर्धा सैन्यते राज्यं विभागितः हि स्वयते ।।

प्रत्यं महत्या महन्त्रः वाकशास्त्रः ।।

स्यामान्यं प्राप्तान्त्राम पुरस्तरः ।।

स्यामान्यं पुरस्तान्त्राम पुरस्तरः ।।

सर्पा वर्षायं राष्ट्र्यां स्वाप्तान्त्रमः महर्गितः ।

सर्पा वर्षायं राष्ट्र्यां स्वाप्तान्त्रमः ।।

सर्पे वर्षायं स्याप्तान्त्रमः ।।

सर्पे वैद्यान्त्रमं स्याप्तान्त्रस्ताः ।।

सर्पे वैद्यान्त्रमं स्याप्तान्त्रस्ताः ।।

सर्पे वैद्यान्त्रमं स्याप्तान्त्रस्ताः ।

सर्पे वैद्यान्त्रमं स्याप्तान्त्रस्ताः ।

४२-१इ सं मन संनदो बन्तिते दक्ष नैधिकीम् । लस्यामायचनस्माकं यत्कसं रघुनन्दनः।।

४३-स्ताक्षित्रेनतं भाषमादाबाऽऽरमिवेमूगणम् १ (१४४ । २) ४४-स्तकत् संपुगे येन निहता दैलदानवाः ।। न विराधीरवातास्तां रामो जुनि विषेचारिः ।। (११० । २४)

४९-मणींकार्ग देशियां बनुव समाधाना सूत्र । सम्बर्धमनवर्षित समुद्र समाधानमेन संनुत्रम् ।। न वार्वित मास्त्रस्यत्र मिन्नपोक्षम्त्रियस्य । रूपता वर्षित समाहार्ग देशियस्य ने स्वाधाना इतं कार्यस्थितं वर्षामान् स्वाधानस्य विश्वास्य । महामान्यस्य समाधानस्य स्वीत्रास्य । सहामान्यस्य समाधानस्य स्वाधानस्य ।। रूपता वर्षित्रास्यास्य स्वति ते परार्थस्य ।। प्रमाणन्यस्य विभागते समाधानस्य स्वाधानस्य ।।

(१।१२।५-११)

धद्द-इति शर्म महोत्सानं विरुपत्तमनापवत् । उताच रुक्मणो आता वचनं युक्तमव्ययम् ॥ (४।१।११४,१९३)

स्वज्यतां काम वृत्तत्वं शीकं संन्यस्य पृष्टतः । महात्मानं कृतात्मानमात्मानं नावनुद्भ्यसे ।।

४७-जगतिपतः प्रमदामवेद्यमाणः । (५।१० १४४) कृद्ध व्याख्याकारोंकी दृष्टिसे सत्रक्य भी बाजि. ग्रिशिसादि

४८-प्रसद्ध तस्या हरणे दढं मनो

समर्पेयामास वचाव रावणः ॥ (१ ! ४६ ! ३७) ध्रष्ट-केम्सन्तीं रामरामेति रामेण रहितां वने । अमिवान्ताय केग्रेपु जम्राहान्तकानिमः ॥ (३।४१८)

थ्व-तां जहार सुसंबद्दो रावणी मृरयुमारमनः ॥ (१।५।४६)

६१-तरेच सुस्थित बुद्धिनुँत्वरोमादुपरियतः। भवात्र शकस्तां भेषतुमनिरस्तः संस्पुने ॥(६।१४/१५) ५२-वयाम सीता सानीता दशानिण रक्षतः॥(६।१४/१९)

पुश्चायकों सर्वे ३१ के बलिया कोकसे पूर्व— हार्य अन्याने दिण्युं मानुषं रूपमारियतम्। न हि मानुषायोऽष्टे राष्ट्री कदिनमः।। नेन बद्धः सपुते प्रतुः स पदमानुतः। कठ्यं नराजेनं सन्ति रोमेण रायणः।।

वे मूं। क्लेक भी किन्हीं सामाया-गोवियों में में, निवर्में प्रथममें स्थातमा राम विष्णुके प्रथमा बनाने गते हैं। परन्तु सामयांके तिकस्ते पता चनता है कि 'कन्दे-वाल्ह्याकी दिस्में वे तेनों क्लेक मित्र हैं, हुनी कापसे प्राचीन व्याख्याकारोंने हमका व्याख्यान नहीं किया। इसी विचारते हमने भी हात थेलके ममावोंने हमनकार्क प्रथमांकाल स्थानक नहीं किया है।

वचि उत्तरकाबदकी प्रामायिकना भी युद्धावह सर्गे ६० स्रोक र—१२ सवा सर्व ११० सोक १२-१३,ह्यारिमे ही सिद्ध है कि वहाँ सुन्नस्पर्ये उब-उन क्यार्मोका संबेन विधमान है जो उत्तरकायडके सर्ग १०, १६, १७, १६, २१.२४.२६ इत्यादिमें विस्तारसे मिलती हैं धौर जिनके विना यदकायद्रपर्यन्त रामायगकी श्रयंवता भी श्रपूर्य ही रहती है क्योंकि उत्तरकायदके श्रतिरिक्त श्रन्थत्र रामाधकमरमें फड़ीं इनका विशव वर्षोंन नहीं किया गया है । (चौर इसप्रकारसे उत्तरकायड एक प्रकारका परिक्रिष्ट है जो स्वयं प्रादिकवि या उनके कुछ ही कालके पश्चात होनेवाले विसी ऐसे सहापरपदा रका प्रतीत होता है जिसने

अबकायडपर्यन्त रामाययकी अपूर्व दार्तोको ही करनेका सफल प्रयक्त किया है) तथारि भार पुरातश्ववेत्तार्थोकी दृष्टिमें उत्तरकावड वाओडिश्व चतप्य प्रामाणिक नहीं समसा जाता है। इमीने व कायडस्य प्रमायोंको मैंने इस खेलमें स्थान नहीं हिंग यद्यपि उनकी एक वडी संख्या है । इसप्रका वा यहीं समाप्त करके भगवर्षण करता है। 👺 शान्तिः ! शान्तिः !! शान्तिः 🗓

उदासी सांध भगवान श्रीराम

(केखक-स्वामी मोहरिनामदासमी उदासीन महत्त, भीसाधरेका)



त्वन्त प्राचीन काज़से भारतवर्ष ही संसारकी सम्पताका कारियोव रहा है। वहाँसे संसारके समस विभागोंमें धर्म, सम्बता, संस्कृति, विद्या, कला, कौराल धारिके प्रचारक -महात्मा, साथ तथा धर्मगढ जाया करते थे । सायका स्थरूप ही धर्म-

उपदेश शिति-रचा और देश-सेवाकी निशानी है। यही कारण है कि सहिते चाहिकालसे चात्रतक धर्म-वा. वैश-सेवाकी बागडीर साध-महत्त्वाकींके हाथींमें रही है धीर धारो भी रहेती ।

भगवानके रावतार भारतका जवा भी साथ-रचा ही रै...... 'वरियानाय गापुनां ।' यहां वहां सर्वाता-पुरुशेत्तस भगरान रामचन्द्रजीने घरतार धारचहर धनेक नास-खीखाएँ करने हब जब बनकपुरमें बाकर धनुत्र लोगा तब परशासमीने इसारी साबडे बीर-वानेमें ही भावर बावचीत की थी-

रीर सरीर मृति मत आजा । मात्र विसाद विश्वेष विराजा ।। सीस बटा सन्धि बदन महाना ।

बर्ट मुनि बस्त तूण दुइ के है । चनु सर बर बुटार बट की है।। शंत मेर बरनी वटिन बस्ति न जान नृत्य । धीर मृति ततु बतु बीरास कारे वह सब मुच।।

भी परस्तामधीकी वेजकर सब शामामीने नारे होकर ल्मिन्द्रेत अपना-अपना नाम खेते हुए उनकी ग्राम क्रिया । यह सार् स्वरूपका ही प्रशास का ।

सद्गन्तर श्रीरामने श्रपनी चौरह वर्गंडी वनगा उदासी साधके रूपमें रहका देश-दित, मीति-क्रोए, हो मर्यादा, अक्रवर्यंत्रतहारा वेदमतिपादित साधु हारा चरितार्यं करके दिला दिया। मातात् विवासर्गं केंबा-नीचा सब जानते थे, बन्हें यह पूर्वतवा विकि कि यदि इस साधुरूप धारण किये विना ही इपीछ वा उतारेंगे की बागे महाथा साधु बोतोंने तार्म हर होकर देश और धर्म-रचाडे प्रयय कामीम उनको हैने ग करेगा है जब देश और धर्मरवाका कार्य इनके हाले निकेख जायगा तो साधुर्घोषी महत्ता दुप्त हो बादगी क्री थेसा दोनेपर इन्हें क्रनेफ कट बडाने पहेंगे। सर सार्वां से स दीता है तक अन्ये अवनार क्षेत्रा पहता है। हमनिषे अगतारो पहलेसे ही सायु-रूप धारखंडर संबंध दश्वाच दिया।

इस गृह शहस्त्रका पूर्व ज्ञान भीमनी महाराती है। के चीको सी था, तभी उन्होंने कपने पति हहातम हरायने बरवान साँगने समय श्रीरामनी के बिषे बीवा वर्गने स्वरणके साय-साय बनके क्षिपे बहागी-गाडु भेग की। वाली वृचिते रहना भी माँगा---

तारम मेर विसेष उदासा । चैदह बाम एम कारते ।

सदारामा क्रारकारियो वह बात बन्नावार्थ की _{विश्} करोर प्रमीत हुई, पर इसके भीतर भी गुरु शर्म ह कमको ने नहीं साथ सन्दे । यह मगरान् राम्यो हण्य है क्ष्मणे आता सहावण हो शर्या । जिल्ला क्ष्मणे



रामाथच द्वर्म नीमि रामस्सा नर्गोङ्ग्म् । यायवो बीज बम्नाय सूर्वं मोस महस्त्रम् ॥

Lalita, Lies Press Lat. Cal.



सपुरेर पाकरदन जानेकी बात सुनी उस समय उनका मुख-इस इतित गया, उनकी सनमानी हो गयी। ये बोखे---

मुनि गन मिलन निरोष बन सर्वाहे भाँति भल मोर । तेहि महें पितु आयस् बहुरि सम्मति बननी तीर ।।

बीरामपरन्त्रज्ञीकी मसञ्चताका कारण माता-विवाकी धालमें इनकी सनीकांदाकी पूर्ति होना था । अगवान् इन्त ही राजीचित वैसर, चलक्कार और निवास-स्थान नागक्त बनको चले, बार्क रमग्रीय पदार्थीका एक बार पुरुष भी सरखोकन न किया।

'हुनि पर मूचन मात्रन बानी । आंग घरि बोली मृदु बानी ।।" 'राम नुरत मुनि सेर बनाई । चले जनक जननी सिर नाई ॥"

माता है हेवी है दिये सुनि-(साधु)-पट धारव्यकर क्षीराम-है बन्दा सीश मार्ग किया । उनकः उदासी साधुमेवमें वर बाना मुत्त धर्मपत्री महारानी सीसा कव एक लकनी थीं है व्याने धरने सनमें निश्चय कर किया-

भी रतु प्राप्त कि केवल प्राप्ता । विश्वि करतव कछु जात न जाना ।।

थीरामने बनके धनेक दुःश्व सुनाकर उनकी परीचा सी, स बर विकासा बीर-पत्नी घमेंसे कव पीछे पैर रखनेवाली

वी, साफ कह दिया-राखिए करव मो अववि सांगि बहत न जानिय प्रान १

सीतारे रामबीके साथ समस्य बनवात्रामें सपरिवरीरूपमें एक बनका साथ दिया। यह है इमारे भारतवर्षका रीतार्षं सवा पतिवतः धर्म । इन दोनोंको साधुरूपमें रर कारे देन बच्चाय-रामश्रीसे एक चया भी प्रवह् व रिनेगाडे बच्चया-कर दहर सकते थे ! उनके तो बीवन-महेन मण वन बीरामणी ही थे । यह है आगुरनेहके पूर्व ब्दराबा देव बरावस क्रिय ।

बाँताम, सीवा और बस्मयने चीएड क्येंतब क्वजें वैशार्षेत्र वहायी सामुभेत्र चारयाकर सद्युष्ट्रक व्यवदार और रामक्राम साबु शब्दको वरिनार्थं कर दिलाया । बन्होंने केंद्र कारक की, (शतुबनदिश मिह कटा बनावे) काल नहीं करा, देश्व कन् मृत कतका मोत्रव किया---

विक्तूमंत्र भागः साहित कंद-मूल-कल साम ।

वय श्रीरामचन्द्रजी यनमें ऋषि-मनियाँके साधमीं में मिलने गये तब अने क जगह ऋषि और मुनियाने उनको उदासी साधरूपमें देखकर ही प्रथम प्रवास किया। श्रीरामणी बड महान्माओंको प्रथम प्रवास किया काते थे । सापुको सापु धापसमें प्रवास किया करते हैं। धमर बीशमचन्द्रश्री चत्रियरूपमें गये होते तो उनकी माहाचसाथ प्रणाम नहीं कर सकते । यदि कडा बाय कि राजा या पश्चिम्र क्षानकर किया होया तो यह नीतिके विरुद्ध होगा । श्रद्ध शमत्रीके पिता महाराजा द्रशरमजीको कोई माझल-राखु प्रकाम नहीं

करता या,वरिक वे ही मुनियों और साधुओं का जागमन सुनकर चाने साकर प्रवास कर जनको साउर साथ क्षाने थे--.मनि भागमन सुना वद राजा । मिलन गय**ः है वित्र समाजा ॥** करि दंडवत मुनिहि सबमानी । नित्र भागन वैठारे मानी ।। चरन पतार कीन्ह अति पूजा । मी सम चन्य आयु नहिं दूजा ।।

तय संखा शमजी चत्रियक्त्रमें होते तो बनको कीन साथ प्रथम प्रवास कर रतकता था और भीरासतीको ही वह कर ररीकार होता ! भगवानु वेद तथा खोक-मर्पादा-शंगका कर्जक बादने शितपर वर्षों सेते ! बार तो न्यां वर्षाता-प्रश्रोत्तम थे। अब वे उत्तरमीन सुनि सुनीक्यके बाबममें सबे तर सुनीक्यने उनको उदानी साई पा तपस्तीके बेपमें देखकर ही प्रथम प्रणाम किया था--'पंच शक्द इव चरमन्द्रि कागी ॥

श्रीइन्यान्त्रीने विप्ररूपों होते हुए भी भगगन्त्री अथम प्रणाम किया, इसका कारण भी रामश्रीका मापुरूपमें होता था, क्योंकि साच सर्व क्योंका गुर होता है। हमीसे इन्मान्त्रीने कोई द्वानि नहीं समकी । वटि रामनी विवय-रूपों द्वीते तो इनुमान्-तैमे परिवन कर ऐसा कर सकते हे १

बाद जीशपूरणीये रामको धनमें देलकर मन ही-मन प्रशास किया था, तथ भी शमती उरामी मारचे ही क्यमें चे-

चित्र सम्बद्धि शास त्रहानी । देशक सम विचारत स्थितनी १। बारवर्जीने भगवान् रामको चन्दानरपर वशुनी गाडु-रुव्ये 🛍 रेखका ही दवन प्रधान किया का---

बार् देवस वि व्हर्च । तम बहै बर वर मार्च ॥

रेत-पुनि नाम राष्ट्रमा और कार्य साम दिशाय राक्त्यी माणका शोग है। पुनि कीर वार्यके प्रयुक्ति क्रायार

---भगवान् भयवा राजा शासकर महीं किया था। ऐसाकरना तो धर्म-मर्गानाकेविकत होता। तब भाजकबचा-सा मनमानी चरजानीबाखा समय वहीं था; गोसाई गुजसीबासजी उस समयको मर्थाना विकाले हुए जिलते हैं-

> बरलाध्रम निज निज घरम निरत बेद धय रोग । चहाँ सदा पानहिं सुस नहिं सय सोक न रोग ॥

यदि कोई कहे कि मारदगीने भगवान था राजा जानकर मधाम किया था तो असका कका यह है कि जब वे क्योग्पान शासक्त्रजोके पास महाजोके नेजे गये ये उस सामव रामजी प्रतिय राज्यसारके वेपमें थे, हस्तियो व्यक्ति गारदगीको देखते हैं। सहसा ठकका मधाम किया—

देखि राम सहसा उठि भाष । करत दंडवत सुनि उर काप ।। सादर निज जासन बैठारे । जनकस्ता तब चरन पखारे ॥

इससे साफ मकर है कि वयोध्यामें रामधीये सायुक्ष गर्मी भारा या इसलिये गारवृत्तीको मणाम किया या चौर पन्यासरिक्पर गारवृत्तीने सायुक्ष्म जानकर ही म्यम मणाम किया या । बाजिने चन्त्र समय औरासत्रीके जदाधारी सायुक्ष्मका ही च्यान किया या—'स्वाग गात छर जय वर्ती।

इसी मकार महारानी भागवती सीहाने भी अपने पतिके स्वरूपकां समल वनदावानों अद्भुक्तय किया है। वब इत्यूनाज्ञीने सङ्काकी करोक-वादिकार्में सीहाजीव इर्वन किया, तब सती-रिरोमिक सीहाका उग्हीर ज्ञायन इन्छ या और उन्होंने कदानूट धारख कर रक्का था—

क्स तनु सीस बटा १६ वेनी । जपति इदय रघुपति शुन-क्षेनी ॥

राषया श्रीरामभीको बवासी साधु ही वानता या इसीले कहुँ बाहु सपने वचनोंमें रामभीके खिये वपली राज्यका भ्योग किया है---'मम पुर यह वर्षासन सन ग्रीवंग' 'कहु वपसिन कर बात बहोरी !' हत्यादि

यदि किसीको संदाय हो कि उदावी भेग तो पहले या ही नहीं फिर भगवान् रामचन्त्रजीका सपस्वी, उदासी, साथु भेगमें रहना बिसकर कहीं गोसाई सुबसीदासत्रीने गबदी दो नहीं की हैं जिए पाटको ! गोसाईं तीने कोई गसती नहीं की है। उन्होंने उपर्युक्त प्रसार बीवत रामायखंके बाधारपर अक्टराः सच दिला है। रेवि

> नव पत्र च वर्षाणि दण्डकारण्यमध्यिः। चीराजिनघरे। चीरोः रामोः मब्तु वापतः॥ (२११९१३

यतास्यास्य सुद्धदामुदासीनाः शुनाः क्याः। बाह्यसम्बद्धनतीः शुन्तन्ययौ हानो महास्वर्ग। (२।१०।११)

बेदमतिशादित समातनधर्मी बराती भेर बमीशा चका चा रहा है। १०८ उपनिवहींने १२ वी निर्म उपनिवद् तथा सम्मद्धाराच चाचार-वर्ष १२। ११ व कृर्मदुराय २।०२-२०-२३ देवनेते यह नात सा

कान्य बहुँ पुरायों तथा महामाताहि होशानें बहासी सापुजांकी कपाएँ बहुत महासे बाते हैं। हो बह बादेके अपसे बहुत नहीं की गया। गोताई इंडरीमपीरें अपनी रासायवार औरासमीको होश्वर अन्य को का बहासी सापुजांका वर्षन किया है। अने मातारें होता सरहाज मुनिने कपनेको बहासीन उपनी बताग

सुनहु भरत इन मुखन कहहीं। उदासीन तापस बन सारी ॥

भागे चत्रकर भीर भी जिसते हैं--

"सायक तिव्य तिमुक्त कराती । क्विर केविर विराह करती।" "अमुदित तीरपराक निकाती । वैकानत बटु रही वाली। "पितार्दि किरात केविर बनावाती । वैकानत बटु करी वाली।" "कर्तुं कर्तुं चारितातीर कराती। वाली इनाय मुक्त करती ॥"

क्या ज्याव भी साजु बोग धनाना बोगायण्डी हैं जावरों बीवन जीर उपदेशका चनुनाय जीर बाद को त्याग पूर्व कपस्पाका परिचय हैंगे, तिगरी साल कर्ण करपाय दरेकर पूज साजु समाज किर दूर्पर धार्मक देकर साराको विस्तय जीविकी साल-कृती शार्म हार्ण इसा संसारों में सम्यान् सामाज्यों प्रतिका करत के इसा संसारों सम्यान् सामाज्यों प्रतिका करत के स्वयं कृतार्थ दोकर चौराँको भी हुगार्थ ब्रोगा।

सगवान् सीरामचन्त्रत्रीहे चारीवित्ये रेगका क्वार्व

फ़ारसीमें रामायण

(लेखक--भीमहेशप्रसादबी मीक्ष्वी, बाटिय-प्राविक)

सबमागें राज्यकावर्ते वारतमें हिल्ली सम्बद्ध राज्येवारे वानेक प्रत्योंका व्यवका क्रास्त्री हुव्या था व्यवका वह कहना व्यवित्व किनक कारती क्रम्म संस्कृत-रासकों के पायारण विश्ले को वे हिल्लू-समावर्ते समायवाकों को स्वान आह

र्भ समाजर्भ रामाययाको लो स्थान जास है वह समी जानते हैं। यही कारया है कि फारसीमें भी कानेक रामाययें पार्थी कारी हैं।

ामात्वको द्वारानी बामा पहनानेका बता सबसे पहले क्षाने तथाने तथाता है। एक इतिहाससे पता बजा क्षाना है कि हा १९२१ है की महासानत का ज़तानी चार्चुवार कि हा १९२१ है की महासानत का ज़तानी चार्चुवार का प्रतान का प्रतान का प्रतान का प्रतान का प्रतान का प्रतान का हो है के बाद सार १९२२ है की मुझा का प्रतान हो है। वह की पता हु है। वह सार हु है। वह है। वह सार हु है। वह है। वह है। वह सार हु है। वह सार हु है। वह सार हु है। वह सार हु ह

(1) विकास १२ वर्ष गुज़े, सेने 'नद्बतुक बज्सा' नामी विकासने देखानी संस्थादे उत्तरसवर्षमें एक इत्तरिक्तिय इतने सामाने वर्षा दी थी, जसप बिका हुआ है-'रामायव वैद्या' एक सद् १३१४ हुँ०की विकास हुई है। यह विकास इतारी गामों है और इसमें शक्का कांग्र बहुत मैं सामाहें।

एशर् शक्यत्वे को खतुवाद कराया था, उससे वह क्य विकृत प्रमक् प्रतीत होता है, क्योंकि सम्राट्की धामस्य सर्वेषा वधमें थी। उक्त शमायवामेंसे बुद्ध कांग सम्बद्ध है—

कंग बरकरे रावन बाक्ति जुक्तरे मीति श्रीरामस्वयत् र रिक्तम पुरत्त व कुरतः ग्रद्धतः कृति रावन बद् करदार । धरा गार्स कि शाक्ष्मातः कृत्यर विवाध कृत्यर दर वात सर्वादिक सर कृतमूचन, कृतर रहतन बदुमान व चाहुररच न्याह संजीवन व सहीप्रवादन व तन्तुस्त ग्रवन वाहुराने श्रीव मोतान्यन्य ग्रास्त्रव म गुर्गहें व्यावन चाहित ग्रव दिवार ग्रामीन गर्हियः इसते बाज ग्रायत श्रिक नज्ञ्य शीवार हैरत मान्य, वाद खत्र साधते युवेराने श्रीव सुद्दा जामादा वैकार नम्द्रा वर्षी हिस्स तस्त्रील वर्षा है।

दूसरी रामायया कारसी पथमें मुख्या मसीद-कृत है। भुरुवा साहबको बहुतेरे कीन यह सममन्त्रे हैं कि वह पानीपद (करनाक) के निवासी थे पर रहसस्ख वह कराना (जिला सहारनपुर) के विवासी थे। वन्होंने वहाँगीर बारदाहरु कमानेमें थरपा सम्य स्था मा

क्क अन्य 'रामायया-सरीही' के नामते भूंगी नवक किमोर साइवके बन्नाक्षय क्षत्तकने सन् 1=११ ई॰ में अकांतित हो जुका है। वह सम्बन्ध चाकारके ११० पृष्ठीमें है। बताइरकार्य कुल श्रंश इसमकार है—

शकरे गुज़्बार ै शीरी कुसाना ।

बदी शहर बसकद र तराना ।। कि शये बूद बन्दर किशवरे हिन्द ।

बेज़ेरे स्वायस्य बहार 🎟 सिन्द ।। बशहरे अवय नामश राजा जसरत । के तस्तरा जासमां मीडुर्व हसरत ।।

यन्त् वादव कुम्मकरव रायवरा व प्राम् छुद्व रायव सन्मा-

ज़मी बोसीद व मुफ्त वे शाह दीवां । दिके मन् मान्दा कस्त इम्रोड़ हैगां ॥ कि अब सावम् चरा नेदार करदी ।

ेबिलाके आदवन् मानार बरदी ।। भगर कारे दर वज़तादः बदुधमन । कि शोरांदी चुना मुश मान बरमन ॥

बमुच्या राम रुद्धारा कृतत करें । सरासर शहर देवारा अटल करें ।।

(1)

तीसराग्रन्थ श्रीमान् चन्द्रभाव 'बेरिब' इन्त प्रयमे है । बहु बन्ध श्रीरङ्गानेबहे राज्यकालमें किमी समय रथा ग्या या १ यह भी मुंबी मनविकाीर शाहबडे बन्तावय समनदमें सन् १८०५ है। में प्रशासित हो खुबा है। केवल ११४ प्रशीमें है।

इस प्रतिसे देशा भी प्रतीत होता है कि बीयुन 'बेरिख' श्रीने शमायक्ये वहत्रे काशी वक्षी क्रियाका। परम्यु धापडी गय-शमायग्रहा कुल् पना नहीं सगना। महिक बराका राजेचा क्षमात प्रतीत होता है । कातः कारसी पच-रामायद्यका 🗗 प्रथ भीरा अद्रश्य किया का रहा है:---

मरबद्दन पर पंगेपातन रायन बामहोत्तर बर्धार चात्रम राद ब करार दादन बर जंग ।

बरीते दिगर शाहे लेका बनन्त .

बर भागद बसद मान बता वे जे बदन ॥

बारमायाने दरगाह क. द्वाः सतादाद वर अपि गृद कवक ॥

वे शहजादहा भन्दशं मज्दिसे.

नीशस्तः बनाहाय सद इर कते ।।

खाखा चमरसिंह भागक सञ्जन जातिके कायस्य थे. इन्होंने संयत् १०=३ वि॰ (१७०२ हें॰) में एक रामापण फ्रारसी गचर्ने विस्ती थी। यह शमायबार्षं माधवप्रसादबी-के उद्योगले सन् १८७७ ई॰ में मुंबी नवबक्तियोर साहबके यन्त्राखय सम्बन्धते प्रकाशित हो लुकी है। इसका माम 'रामायण धामर-प्रकाश' है। वह बाकारके १४४ प्रहों में है।

नमृतेके रूपमें हुछ शंश नीचे है-

बानायान पेशीन जुनी गुक्रतः चन्द्र कि दर शहर आय (मयाग) अज् मुलहिक द्वदन गञ्जा व जमुना व सरस्वती त्रिवेनी नाम शीर्थे अस हर कस दर उसर सुद् यक मरतवः ्षुसुख नुमायद् श्रजायद्दाय संस्थ सन्म शाँरा वरसद् व भाकि बनाम माह मका गुसुल नुमायद असतिब क विः वर्वा गुफ्त रिश्रज्ञ अर्थेष कास व सोच व धर्म इसः हासिख शवद ।

(+)

पांचर्वे प्रत्यके बोसक ला॰ चमानतरायजी है । यह बातिके चित्रय व लालपुर नामक ग्रामके निवासी ये । दस प्राममें भविकारा चत्रिय ही ये जो बस्तुतः रखसेवी थे। पर यह विद्या-चेत्रके पुका शहर थे।

वैवयोगमे बार बाधी । बाबपुरबी दश विपरी। धमानगरायत्री देहची पहुँचे । इनके विद्वाची पर्वा भीर फीबी। नराव समजर सत्री माहबने हन्हें पाने शीकर दशका और सब मदाव साहब स्तांबीड जि त्तव कवकी वहित रहीमुक्तिमा बेगन सामाजेकी केल्फ महाविष्य वर्गी । साम्राजीने पहसे 'सीनर्मातक' कारमी क्यमें किया या । देशमें बद उमका करता स हुमा तो चापने शमाययको सन् १०२० ई॰में इस वयका सामा वश्याचा ।

बह बार्व झन्य भी सुंग्री नवज्र कियोर सार बन्तासवने सन् १८७२ ई॰में मध्यतित हो तुस है। १६ प्रश्नोंमें है। नमूने के रूपमें चारम्मका दुव भंग नीने हिं का रहा है केवज इसीमें मानूम हो सकता है किए रामायणके पथ किरदौर्माके शाहनामाके समार बोरहर है पसाहत बयानाने हिन्दी जुनी,

बुनस्द ई चुनी दारहे ई दान्ती॥ कि दर नस्ते राजा मन् कामगार,

वसे राजा शुद्र वृतिते रोज़ना ॥ इमः साइवे जुमला क्ये जनी, कशीदः वहां देर इते नदी।

ज़बरदस्त व कृताज़ व मार्लाहिमम्, चू बहर व चू अबे सहावत अहन॥

अजी हा यहे क सगर नाम बूद : चू हुर बूद क दर बहां जान नूद ॥

(1)

युक्त जन्म खाहीरके युक्त पविष्ठत झीवेजीराम निवर्षे तुत्र परिटत रामदासत्री कृत है। इसके रचे बारेब हत्र सन् १८६४ हैं। हैं। में इसे बमी तक लगे बारि सका, इस कारण इसकी बारत और प्रश्वित वाँ बिस सब्ता।

सरमव है कि उक्त रामापयों हे सिवा इत्र भीर भी रामायवा फारसीमें हाँ, किन्तु उरहे तिर्दे न तो मुखे सभी कृत पता ही चन्ना है न वनने हैं है की मौबत ही आयी है। यदि किसी सम्बद्धी हुई हैं। पता हो चीर वह कृत्या मुझे स्वित करनेश कर दी है मैं वनका भागरी हैंगा।

मराठीमें रामायण

(केसक-पं क कमण राम कह पाडारकर बी क ए ... सम्पादक 'मुगुदा')

चर-भारतमें गुसाई तुजसीदासजीकी रामायण जैसी स्रोक्ष्मिय है, दक्षिण धर्मात्

महाराष्ट्रमें जानेश्वर महाराजको जानेश्वरी-भी बैसी ही है। जानेश्वरी श्रीमञ्ज्यवद्गीता-पर एक चडिकीय टीका प्रत्य है, वह जान-में कि प्रान है। इसमें बहुँत∙जानका भक्तिके साथ उल्लेख सम्भोजन है तथा ज्ञात-प्रक्तिकी एकरूपता है। सराठी साहित्यके समी हत्कृद अन्य ज्ञानेरवरीके ढंगपर डॉ किस्ते वसे हैं । ज्ञानेरवरी, रुनावश्रीकी मागरत और रामदासजीका दासबोध इन सीन क्योंको महाराष्ट्र देद-सदश मानता है। नामदेव और इनातमने समाग भी इसी प्रयाखी के हैं । शिषोपासकों के किये 'गिरबीबास्त' धीर दत्तात्रेयके भक्तींके खिये 'गुरुवरित्र' है होनों सम्प्रदाय-प्रत्य भी महाराष्ट्रमें खोकप्रिय हैं। मातप्रीय धन्तःकरणकी स्थिति ज्ञानमधान है परना इत कार के लाग सक्तिकी एकरूपता है। निरं वेदान्त-ग्रेंग और कोरी दपासनाका महाराष्ट्रमें विशेष जादर र्गो। शार और बपासना, ज्ञान और मक्ति, सगुष्य और ^{तिर्तुष}, एवं मूर्च भौर भमूर्त इन सबमें सहाराष्ट्रीय सन (बेचनेर मानवा है और महाराष्ट्**के समस्र सन्तकवियों**का क्षित भी पड़ी है।

बताडी साहित्यका यह रहस्य समझ सेनेके बाद मराठीमें विकास दिसने देसे गामा है, यह जानना विशेष मानन्त-मरहोता है। यदापि महाराष्ट्रमें राम ग्रीर कृष्यको सब एकरूप ही बाबदे हैं तथापि स्वामी रामदासने राम चौर इन्मान्की ^{इनाप्र}नाका निरोध प्रचार किया । अन्य अनेक सन्पुरुष और की बीकृष्य कर्यात् विद्वलके उपासक हैं। 'ब्रीराम खब राम बर क्य राम' यह रामदासका सन्त्र है कीर 'रामकृष्य र्शि हम्बोगसकका मन्त्र है। सारांश यह है कि राम-परिष भीर राम-मामका महत्त्व सर्वत्र मान्य है 1 कीकृत्त्व-चीर भीर श्रीराम-चरित्र हिन्तुमात्रके क्षिये सर्वधा पूच्य बोर विव है, बोर किसीकी किसी भी कपासनासे सविरुद है। राम चौर रामनाम सकत सोकप्रिय हैं।

म्तारी भारामें धनेक सम्लॉ और कवियोंने रामचरितका दन दिशा है और रामचरितसम्बन्धी पुणक् उपाच्यान

तो असंदय हैं। राम-नामका गौरव-गान अपनी अपनी वृद्धिके बनसार सभीने किया है।

मराठी भाषामें रामचरित्रका सर्वेशमें सन्दर दर्धन चार-पाँच कवियोंने किया है । इन सबमें सबसे बड़ा घरपन्त श्वरस. विद्वता, अतिभा चौर प्रसादगुकपुक्त, चाध्यात्मिक तन्तर्थोंसे निर्मित धोनेपर भी धीरामस्याके माध्येको धारवस्त बदानेशाला अस्य एकतापञीका भावार्थ-एमायक है। यह चालीस हजार शोबियों (मराठीका एक हल्द)का प्रकारक ग्रन्थ आयुक्तोंको शरवन्त प्रिय है। वास्मीकि. काव्यास्त्र, कानन्य चीर योगवाशिक रामायश क्ष्यादि क्रमेक संस्कृत-प्रत्योंमें बर्बिश क्याधाँको चपनी हरवानसार चनकर कविने स्वतन्त्रताके साथ बनका समिला वर्णन किया है। श्रीएकनाथजी सहाभागवत साने बाते हैं चौर शीसद्वागवतके प्रकारम स्कम्पपर विसी हुई दमकी बराडी टीका सी जानेरवरीके समान ही बोकप्रिय और क्रवेकान्य है । मेरे निर्धायके चनसार एकनापत्रीका कास वि॰ सं॰ ११४१ से १६११ है। भावार्थ-रामायक बनका धालिया प्रत्य होनेके कारण वसका रचनाकाल वि॰ सं॰ १ ६५४ से १ ६२४ तब ठहरता है चर्यात यह प्रम्य भी गसाई तकसीटासजीके रामाययके समकाकीन ही है। भीएकनायत्री काशी सबे थे ३ वनका भागवतम्ब्य काशीमें डी वि० सं० १६३० में पूरा हुआ था। इसके सिवा कनके 'रुविमयी-स्वर्वतर' बामक प्रत्यकी पूर्वि भी काशीमें विश्तं • १६२८ की रामनीसीके दिन हुई थी। इससे उनका करीय शीन वर्ष काशीमें रहना सिद्ध दोशा है। इस बीचमें एवनायत्री और शवसीवासजीका कारगेर्ने परश्रर प्रेम-परिचय प्रवरय द्वा होता क्योंकि दोनों ही महाभागवत थे । घररप ही टोनोंग्रेसे किसोके प्रन्थमें इस बातका उस्केल नहीं निखना।

एकतावजीकी रामायवामें रामकथा और महन्तानका क्ताप्ट एकीकरका है। चतपुर दसके चम्पपनने मगवादेश चीर क्रमायकान दोनोंकी साथ ही माहि हो जानी है। 'श्रीराम सकते बरवस चरना चरित्र गान करवाने हैं.' इस कामका जस्तोंने वहीं ही समोदर हीतिये वर्त्य दिया है।

'आपूर्ति मानी नर्नतां। पुढे प्रकारीशामकणा । दुधितरमे देने जातां शमनस्ता। शमानम दारी ॥१

भीराम भागी मनाने बजान्तर क्या कहजा रहे हैं। मागते राम, सोती राम, मनमें राम, मीनमें राम, मान्य-भर्मीय राम हमप्रकार—

नाम प्राप्ति कर्या विभिन्ते रही ध्रमाक्यो ।
— सम मेरे पेसे पोन्ने पहि भीत हि भीतमावधार करह
सर्यो । धीतमके हारा हरमक्या बजान्या दिन गुमान
साम मेरे पेसे पोन्ने पहि हमेरि हो हम्मावसारित ग्राप्त
साम करवानेका दुर्दर स्राप्त हिरके ही हम्पावसारिक ग्राप्त
होता है। धीताम सर्वेदा कर-प्रत्यक्ता हैं। कान्ये दरिद्वव
हरारकरुते सवस्तित हुए, जनकी चार सामित्रों हैं।
कीसक्या-सहित्रा, ग्रमिया-ग्रवेचेया, कैवेची चविवा
सीर असकी हासी मम्पार-कुविया। क्याय चाम्यकोच
हैं, मत्त सामार्थे हैं, कीसम पूर्व चान्य-दिवाह है। हुलप्रकार प्रकारमंत्रित रामायका चहुत भी ग्रम्बर स्राप्त
होता है। चार्यामस्तावकी चोर ऐसी निर्मेक सहि स्वतेहुए भी जन्होंने समस्त क्या-सामका च्यायन रस्त्ये चीर
सुर आपनों सविवार वर्षण किया है। हुन्सद्वीकी

रामभक्ति इतनी श्रसीम थी, यशनायमी कहते हैं— रामा बांजुनि महाज्ञान।आहाती न टमे न टमे आण ।

आपुचे ब्रद्ध रापुनन्दम । बोहे गर्जून इनुमत ।। स्पाँच बीहर्मान्त्रीने शत्कर कहा कि शाम ही मेरे ब्रह्म हैं, बनके सितिस्त सुके कोई दूसरा बक्जान नहीं बाहिये। इस एक ही घोषीसे क्यांक वर्णनेकी सरसानका पता साता सी, विकार-स्पत्ते स्पीक नहीं जिला जाता।

प्कनाधनीके नाती मुक्तेवाने भी एक क्षोकबद्ध रामाप्याकी रचना की है, उतकी क्षोक-संख्या १०२२ है। महाराष्ट्रके गोटेमीट गोर्गिम भानक्ष और कोटिको क्षोगोंको—सभी की पुरुरांको सीराम-कथा और कोकमिय क्यामा कामृत पिखानेवाका मध्यन्य रसिक और कोकमिय कवि या कीचर । उसने विवसंत १०२६ में हरिनिकय और १०६० में रामिताय पूर्व १०६६ में पायदकाराष हम तीन सुन्दर मर्ग्योंका निर्माण कर कीराम-हत्व्यके चरितका महाराष्ट्रके कोटे-सोनेमें प्रचार कर दिया।

महाराष्ट्रमें रामोपासनाका प्रचार बडानेवाळे महाराष्ट्रस्य थे श्रीशिवाची महाराजके मोचगुरु समर्वे श्रीरामदास । इनका समय वि०सं• १६६५ से १७३८ है। इन्होंने रामायणके वो कारत जिमे हैं, जिसमें कीइन्सन्तरीते विकास वर्षे वर्षेन है, वहना कुन्दरकारत कीइन्सर पुरस्त पुरस्तर सम्बद्ध कीने हुन्दी बुंगमें कारतीर रचना की, कार्या उसमें रामायचाडी करोगा महाराष्ट्रमें उनके जिले हुए सम्बद्ध कमंग, चर्ड, करवारक, लोग, मदेश व्यक्ति हुन्दर विकास वर्षिक मगर है और उन्होंने बोगॉमें राममित कि है बीरामदाना रामके करना मक्त ने प्रसूति बीरात के बीरामदाना रामके करना मक्त ने प्रसूति बीरात के बीरामदान की सामक करना मक्त हिंदा बीर रामकर्म उन्हारको बोक्टिय बनाया।

मराठीमें रामक्यानर विसनेगान्ने एक विस्पत की हैं सयूर-पविद्रत सपना मोरोपन्तर्जा । इनका कांड विश्ते १०८६ से १८११ है। हुनकी बीवनी काव्यविवेदनामी? भवसे २४ वर्ष पूर्व सैने अकाशित की थी। उसमें हा कविकी रामायग्रके सम्बन्धमें हो-तीन प्रकरवामें कीर = प्रडोंमें मैंने सर्विस्तर विवेचन किया था। इस इति ९०८ रामापर्ये किसी हैं, जिनमें हुद तो बहुत होटी ^{हर} बील सोकॉकी हैं और उठ दो-बार हमर होबॉउड पहुँची हैं। इनके वे प्रन्य वहें बहुत हैं, हुए सरकी सेंप संक्या बोदनेपर १६ इजारले प्रधित होती है। इन्होंदेशा अकारके कृत्योंमें रचना की है। जार्यानामायण, वर्द्धाः रामायक,विच त्माबा-रामायच,दिवही-रामायक,प्रस्थि रामायक, सवाया-रामायक, लिंबकी रामायब र्वारी इत रामायवाँके नाम छन्दाँके अनुसार ही रक्ते गरे हैं। कवि मोरोपन्त बरे विद्यान, साहित्यज्ञ, बन्द-शासन निञ्चात् और बत्यन्त रामभक्त ये। इनकी रामायवामें वर् असङ्ग तो बहुत ही समृदार है। मोरोक्ती सम

राम

रामके ही चिन्तवमें मनको लगाता है। रामके गुणोंका ही स्टुल गान गाउँ में। रामको निहारा कर्क जनिमेप चसुजारी रामको पुकारा कर्क रामको होध्याउँ में।

मानो विश्वदर्भाकी एक बहुत वृष्टि है।

रामके ही प्र-पहुनोंका पटपद बर्ग, रामके ही प्रेमका प्रसाद तित्व पाठ में। आद्या अभिलगपा और यही राह्या हैमेंगे, राम-नामसे ही राममें ही मिल जार्ज में। —भगववीससार विचारी विचार दव र रहर हर,

बंगलामें रामायण

मानकी अन्तार्ति सत्त्वे चिक्क दीन हो क्योंच्या प्रवार है, जिनकी कमार्याकी मिलाएवँ
दें दें दूरत्ते सेव्यंत्री नत्त्रनारी एकत्र दोकर मुक्ता है
नामारत चौर हर्ण्यास्कृत सामायक, काशोसाय्यास्कृत
व्यासारत चौर हर्ण्यास्कृत सामायक, काशोसाय्यास्कृत
व्यासारत चौर हर्ण्यास्कृत सामीवत्त्रन्
व्यासारत चौर हर्ण्यास्कृत सामायकोतिक
स्पर्ध म्यापित सामि हे ह्रिक्तिस्ति सामायको
क्वार्ति के संस्कृति मिलाइ के हैं। हर्कत स्विधारको
कार्यक निरामित्रकार्ति स्वासार मारक चौर्कत वैद्या
चैत्र हो या गीव वर्षमान सामायकोत सामायको स्वास्त्री
चैत्र हो हा सामायकोति सामायको सामायको स्वास्त्री

मान वस्ताबी और माताबा मावित्ती था। वे माह्यस्य थे।

गी-नरिएके फारेएसे कृतिवासने हुस प्रत्यक्षे रचना में

गी-वरिएके फारेएसे कृतिवासने हुस प्रत्यक्षे रचना में

गी-वरिएके हुन हुन है ।

गी-वर्ग क्रान्स्य हुन है ।

गी-वर्ग क्रिके स्था भारत्यके ब्याई। इस प्रत्यक्षे क्षेताकक्षे

गानक्षे अंगानक्षित्रके रोरिस्ता क्या स्थानमान और

गानक्षित्र आर्गों क्षेत्र क्यां उठा दिवा है।

कसतले ताहार देखिया दिनको । जिज्ञासा करेन शाम परनहमारे ॥ 🖩 अद्भुत देखि, 'बापू पवननन्दन । वोगार शरीरे केन रविर किरन ॥ हनुमान बोले 'प्रमुक्द अवस्ति । आनिवारे औषच वेटाम रातासति ।। औरवि सँजिया आमि शिसरे बेडाइ । पूर्वदिके दिनपति देखिया बराइ ॥ पर्वत हुईते गेनु मास्करेर ठाँई। जोड हाथ करि स्तव करिनू गोसाँई ।। तेमार सन्तान अति कातर शीराम ६ क्षणेक करयप-पुत्र करह विग्राम ।। यादत रुदमण बीर भाषान औनन । तावद उदय माहि इहुओं तपन ॥ वानार ए बाबय ना शुनेन दिनपति । चरिया यने जि तार ना पोहाय शारि ॥ राम बरेन, 'बापू पश्चि समरकार १ ना पोहान रजनी ना गुचे अंत्रकार ॥ सर्वेर उदय-बन्य संसार-प्रकारी ! छाद्रह भारकर इनि उठून आकारे। ।। शमेर बचने बीर तीते पूर्व दान । बाहिर इडल तवे बगतेर नाय ।! सर्वेश प्रणाम करे परन-नन्दन । वतेश्व कानर करे चाण बन्दन ॥ आदिकर्ता आपन वंशेर दिनाकर । शत हार प्रणान करेन रचनर ॥ बदय-पर्वते मानु करेन गमन । पोहाहर दिमारी प्रकारी मुक्त 11

ह्साध्या बहुत रोषक वर्षण है । इसके स्तितिक अपन्या वा महाएकते भी सामांतिके स्वादार वंजन पर्यो सामाय-द्रम्म के हैं । महादेक मापूर्य प्रमा भेवताइन्य काण बना ही रोषक सी सोमानी है। इसके दिवा बंजनातें सामांतिक, स्वयान भी युगार्य के एक स्त्री सामायोंके सुव्याद से पूर्व है जा सामाय की सामायकते सामांतिक स्वरूप्य पूजने विका सामायों है।

उत्कल-रामायण

(लेखक—पं• बीकोचनप्रसादची पाण्डेव)



बन्धावकी' के बेसक पं॰ रथामसुन्दर स्वयुक्त बी॰ प्॰ लिखते हैं—हिन्दी-भाषी प्रान्तोंमें जिस माँति गुसाईंजी-कृत रामचरितमानसका प्रचार और स्वादर है, बहाबमें जिस माँति कृत्तिबास परिचत विरक्ति पंतायय'

का मान है, दिचिया-देशमें 'भास्कर-कवि' कृत रामचरित्र जैसा घारत है, उसी भाँति उत्हल-प्रान्तमें बबरागदास कविद्वारा रचित 'रामायण' का प्रचार है। इन्हें यदि 'बल्कल-पानमीकि' कहा साथ सो चल्यक्ति न होगी। ये वक्षीसाके राजा मतापरहके समयमें व्यवाद इंसा की सोलह्बीं सदीमें विद्यमान थे। ये वातिके करण (उत्कलीय कायस्य) थे। घर इनका श्रीप्रकृषोत्तमचेत्र (पुरी) में था। इनके पिताका शास सहापात्र सोसनाथ था। इनकी जननीका नाम था मनोमाया। रामायख-रचनाके समय इनकी चवस्था केवल ६२ वर्षेकी थी । बालंगीकि-रामायणके चाधारपर इन्होंने चपनी रामायवाकी रचना की । पर स्थान-स्थानपर बहत-सी बाहरी और नवी वार्ते भी छोडी गयी हैं। इस इनकी रामायणको मूख संस्कृत-प्रत्यका चनुवाद नहीं कड सकते। ३२ वर्षके युवकके लिये इतने बढे अन्यका प्रवादन वहें सोहसका कार्य कहा आवता (उन्होंके शक्तोंने छनिये---

(दिवया भाषा)

सामेवें सामृत प सात काव कहि , इक्टाइप अनत्त अपूर्व ततु नहि । ताहा प्रकार मेंत सारदा दवा कता , प्रमावण प्रत्य मार मुखे अवारिता। पीतिस सरस व्हीक प मीत रस , बात्मीक मुनि बाहा बरेक प्रकार। । दिव्य मुक्कें वे मुनिग्हें ताहा , बना करे मोते वे बनाव देवी नाहा। तेतु परि मारदायमु में बनाव बहि , दंध पर दिक बहि की वताहि । कत्मद मुद्दक्ष भीर अटर बगत, प्रत्यकटा कार्ड मोते बरस बहित। दारा सुद्र चन जन सुस्रामेग हिरी, अरुपे आपने देइ अटन्दि ता हरि॥

इन्होंने यपनी रामायणका नाम 'काम्मोइन-साम् कहा है। उसमें एक बाल पर हैं।

'जगन्मोहन' बिंते ए रामायण गान। तत्य करि मजिले पाइन विणु स्थान॥ × × × × ग्रीजगनायद्व चरित मुहि कहि।

रामायण सात काण्ड ठेडे पर होई।। बाह्यचोतर बातिके एक व्यक्तिहारा रवित हम्ब स्रोत

न देला बाब, इस भयते कविने संकाकावरमें विकार -मुर्दि होन वादी ये विशेष शूत्र वोति।

सुत जे की प न कीव हो हुने।।
इनकी नारा अञ्चल सरस और सरब है। साइने
किये इन्होंने मारा करने की साहित्यान वर्षने कालाने
किये इन्होंने मारा करने की साहित्यान वर्षने कालाने
की है। अपने समयकी की कियानिक माराज दर्ग इनके अञ्चलसे देवा जाता है। वर्षणामें जाता-वर्षणा
है। अन्यों भी स्वयन्त्राह है। किसी पहुँ बारा।।
किसीके २३ वा ३३ और कार्य-कार्य ३५ और ३६ वन
सी किसी है।

असिव् विद्वान् और समाधीषक है। विकर्ण मञ्जनशर महोत्प विकर्ते हैं—

Bairam Das is not ashamed of silvil those words freely which soon after this came to be regarded as vultar, for poet reckons himself as one of the comer people of the country. Bairam Das in national poet has sung for the people of by making Orissa a ministure script itself has taught his countrymen is ber the land of their birth.

महायदार सहीद्यके देगा विकरेश आर्थ है। वक्तामदासमीने वेवानाच राज्यानार्गन सीमान सीने मंप्रिद कैवास पर्वत माना है। उन्तिसाके कई स्थानोंमें शीराम-बन्भायको विचरया कराया है । एवं "वामचटा" स्रीर 'रवाई' राज्योंका भी उद्वेख किया है।

रजरामदास अपने समयके प्रसिद्ध सक्तोंमेंसे थे। बनप्रति है कि एक बार रथयात्राके अवसरपर पगडे और इसरिगेंने भारसे भागवताका स्ववहार किया था । आप इस प्रप्रावको न सहकर महोव्धिके निकट 'वाँकी मुद्दान' में सा बातर होकर भगवद्यामीचारचपूर्वक रोणे खरी। इधर बीउरवाद महामसुका रथ जाये न वड़ा-खोग खींच खींच हर वह गये । पीछे स्वप्नमें तत्काखीन गत्रपति अहाराजकी प् बाहेर हुवा 🍱 मेरे अक्तका व्यवमान किया गया है। हससे दमा माँगी बाय और बसे चादरपूर्वक चामन्त्रित किया बाब, तब स्य चन्नेगा । वैसा ही किया गया । तबसे इतवी गवना पुरीके प्रचान हरिसंकों में होने कगी । इसी रताको सम्यक्त किसी धङ्कीय कविने खिला था-

. बन्दे क्षीडिया बरुरामदास महाशय । वगमाय वलराम वश वार इव ॥

रिकी यह कथा बहिया-भाषाके मक्त-माध कवि रामरासहत 'बाडय'ता-भक्ति-बसास्त में दी गयी है ।

इन्हें हरे 📰 प्रम्यान्य प्रन्थोंके नाम हैं-

(१) बान्त को हुवी (२) चर्तुनगीला (३) वेडा वरिकमा (१) समुबीलुवि (१) मझायहभूगोख (६) गुलगीता (०) इगांखवि ।

🗪 बाता है कि सापने प्रीतावस्थामें प्रसिद्ध चैतन्यदेव महाराजमे बैच्यवधर्मकी दीचा से की थी । क्षीम इन्हें 'मच बारामदास' भी कहा करते थे, क्योंकि वे सदैव इतिनासायुत्र शावकर मत्त रहा करते थे।

वदाहरकार्यं २०-२१ पंक्तियाँ हम 'झान्निनावस' से वहाँ बढ़त करते हैं---

ममा मारावण प्रमु कमरप्रवादि । मीटनिरि-शिसर वे अपूर्व सुरति II

इन्दर मौतुक्षे नीरुनिरि पाप द्यामा । कि बर्जन कि बटान्तर सरत् ससी प्रमा ।। ववन-मुग्तः दिवा शतदक वध ।

बगर् कीश्य नाम वरम-मानन्द ॥

सर्वे अन निस्तारण सरगण साहा । सर्वदा ये शंख धक गदा प्रम बाहा ।।

× × × ग्रीजगनायद्भ भाजा शिररे में बरि । ग्रन्य बसाणिना इच्छा आदि अन्त कीर ॥

कविने सीनीजाचल या नीलगिरिकी वर्णना सथा भीदास्त्रह्म बगवाय महाप्रमुक्ते क्षीपुरुपोत्तमधाम(प्रती नगर्) के सुन्दर शब्द-चित्र श्राद्वित कारी जिला है कि बीजगबाय महाप्रमुको चाञ्चासे मैं इस रामायच-रचना-कार्यमें प्रवृत्त

हचा हैं। कविने प्ररीचामहीमें अन्यकी रचना की थी । इस समय पुरीका नाम पुरुरोचमपुरी या । पुरुरोचमका उदिया अपूर्वश नाम 'प्रस्तम' होता है। पारना नगर वियेपतः राजधानीको कहा जाता है। इसका समर्थन इन दो पंक्तिकाँसे होता है---

पारना-नगर नाम पुरस्तम पुरी । मका सुनि अधि बाहा मीते वह करि।।

श्रीरामनामकी महिमाका वर्णंग करते हुए कवि बब्ररामदास क्रिलते हैं कि पार्वतीजी श्रीमदारियजीसे को-को प्रश्न करती हैं बन्होंको खेकर शमापककी प्रमृतकरी कथा बनी है। एक बार किविकास कन्दर' में बब विचनाय शिवजी विराजमान ये तब बनने थी-भाव (चतुर्मुन) श्रद्धाओं सिवे । कुछव-श्रिक्षासाके प्रश्नात् शिवनीने सद्धार्मी-से कहा कि मेरा गरीर इन दिनों 'वस्त्रीन दुर्वस' दी रहा है, इसका कारण क्या है और यह दुवंबता क्योंकर हुर हो । ब्रह्मातीने दत्तर दिया कि बापने एक-महायशके क्रिकंश करनेमें जो 'तामन माव' चारच किया हमी वारगे वह अत्यत्यता वत्तव हुई है। इसके हुए बरनेका एकमात्र बचाय 'तारक बढ़ा' का बर करना है, मी कार बड़ी करें ! कविके सक्तोंने महात्री बहने हैं---

परित्य होते से बहायापर में मीन ह शारि कनुष्य सर्वि व परिवु क्षेत्र ॥ वेश सद्वीतात मु बीहर बीतकर । दलक ब्रद्ध नाव तु करि पात हर ॥

रामनामधीरोत के सादि जिस पार ।

रिकारित होने की कर बरुपुर ॥



हाड़ोती भाषामें रामायण

(रुखक--शीनन्दकिशोरजी सबसेना)



ए, इस भाषामें भी बड़ा ही सुन्दर चनुवाद हुआ है। भनुवादकी इस पंक्तियाँ -पाठकोंके सम्मुख रक्ती वी है। पाठकाया इनको परकर इँसें वहीं, क्योंकि देव प्रान्तको भाषा निराजी होती है।

श्रीपार्वतीजी श्रीशिवजीसे मगवान् रामके कावतार-त्य करनेका कारया प्रवती हैं---

सदादिव पूँछूँ, हाम अवतार ,

प्राचीको बाँने कैसे उतारका मार तान (सदा शिव पूँई जी) निर्तुण बद्ध सतुण क्यों होया, अनुष्य देहको धार मूप दशरमके कस्मी किया अनतार कों दमस्या करी छी भूपने, जी सूँ जनको आर

(सदा शिव पुँठूँजी)

भौतिवजी कहते हैं--

देरी दमा मतत पुँछका समेकार

रामका चरित कहूँ अनतार ॥ वद वद दु:स पड़यी री मकनपर

होयो धर्मको नाश : मपुर वन जनमाँ पृथ्वीपर आर

इसी हो गया यऊ ब्राह्मण देवता

वन ठीनो अवतार ॥

जिस समय रामलीबा होती है उस समय इसे जाम-वसी ऐसी तज़ से गाते हैं कि दर्शकाया भुग्य हो आते हैं, रत्यु समयते हैं केवल हानोतीवासी ही।

मगरान् भीरामचन्त्रजी महाराज ताराको विसाप

जीव अविनाशी पड़ी या देह पेरी तारा किसपर काती क्षेत्र.

पुच्यी अग्नि गगन जरु नायु, यो कर रच्यी शरीर

बीच मल मूत्र मरीरी या देह।

जीव अमर छै सुन ने री तारा, किसपर चारवी नेह ।।

वरमत्रिय पाठकमचा ! इस भाषाकी रामखीखासँ वह भानन्द बाता है जो भवर्णनीय है। रामबीला हो जानेके बाद भी खोग बारहों महीने रामचरितको बहे भेमके साथ गाते हैं। वास्तवमें भगवानकी खीलामें जो भानन्द है वह किसी बस्तुमें भी वहीं है-

अच्युर्त केशर्व रामनारायणं

कृष्ण-दामोदरं बासुदेवं हरिम . अधिरं माधवं गोपिकावछ मं

वानकीनायकं रामचन्त्रं भन्ने ।।

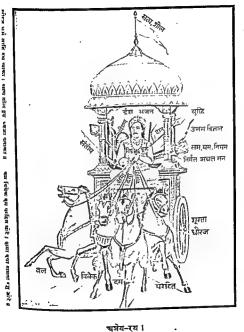
द्रविड़ रामायण

👯 🍮 🏯 विदी भाषामें एक रामायण है। इसमें बहुत 🏽 नयी-नयी घटनाधाँका समावेश है। पाठकोंके 🖱 सनोरअनार्यं उसकी कुछ बातें संचेपनें धहाँ हैं कि बाती हैं—

हतिबदेशके राजाका नाम जीमृतवाहन था । एक बार इसने राजुकोंसे मबबीत होकर खड़ा और पाताबखड़ाके महाबजी और मतापी रायसराज भीमकी शरब महत्व की । शक्सराजके कोई पुत्र वहाँ था, और वह बुहा हो अक्षा था । उसने बीमृतवाइनको सर्वे सुखचन-सम्प्रत समस्रकर गोड (वत्तक) खे किया। बीमुलवाइनका वहीं एक मन्दरी शासस-कन्यासे विवाह हो सवा ! महाराज भीमने सन्ना चीर वाताबळकाके राजसिंहासनपर चीमृतवाहनको बैटा हिया। इसी बीमृतवाइनके बंगमें मासी, मुमासी धीर मारववान भागक तीन बसवान राजा हुए थे। परन्तु विचायरदेशके राजा इन्द्रने उनसे खड्डाका राज्य बीन क्षिपा







संयम नियम क्रिटेमुण नाना । अमार अगर मन बोच समाना ह स्यन अमेर विमान पूजा । यदि सम विषय उपाय ॥ हुमा ह



रामायण और राजनीति

(डेस**र— रा**म्यतीर्थ प्रोक्ष कीर्ट्सिइयी गीतम एसक एक, यसक टीक, यसक कारक एक एसक)



न्दू धर्म-प्रन्योंमें शामावयाका स्थान गट्टत केंचा है। सच्छान वह रवोंका मवदार है। इस निराजे महाप्रन्यका नाम 'पक्षम बेद' रखना सब तरहसे डीक है। यह धर्म-भीति, राज-नीति धौर समाध-भीतिकें उपदेशोंसे पूर्व

भीर समाजनीतिके उपदेशोंसे पूर्व है। हत्ते वे सुबम साधन बतवाये गये हैं जिनसे मामय-पैतनका पूर्व दिकास और शेपमें कन्तिय वाचयकी प्राप्ति से तक्ती है।

मानाद् स्वासहत घरणामरामायय और धादि-करि-रिष्ट साम्मीहि-रामायय दोनों हो प्रस्य संस्कृतमें हैं। देनी होगेंड बायारप भारतको विभिन्न माणकामि कानेक गानवाँको एचन हुई है। वनमें गोलमारी पुनसीदासहत गानवाँको एचन हुई है। वनमें गोलमारी पुनसीदासहत गानवाँनामानक स्वास्त्र सम्बास माना नाता है।

पानवक् सुम्पन्नीवनकी सामस्याधांको वह बच्चे गाँव दव किया है। युरक्तमें रहते हुए भी हम वक्के प्रीया मेचको माठ कर सकते हैं है । इसी विक्का प्राथम मेचको माठ कर सकते हैं है । इसी विक्का प्राथम सेक्से माठ कर सकते हैं है । इसी प्राथम मानेकारे देवारों, श्रीद और केंग्र कर माठ स्वायम्य माठ स्वयम्प कर केंग्र केंग्र केंग्र माठ स्वयम्प हैं माय, प्रायम् मीत प्रायमादियांको सम्बाद कर दिया गया है। माठ स्वयम्प मीत माठ स्वयम्प कर स्वयम्प क्षा स्वयम्प क्षित्र माठ स्वयम्प है। बीकरों कियो एक रियेष प्रकाशकी प्रदिश्च माठ स्वयम्प भारतका है। प्याप्त माठ स्वयम्प कर स्वयम्प क्षा स्वयम्प स्वया है। स्वयम्प माठ स्वयम्प कर स्वयम्प कर स्वयम्प स्वया है। स्वयम्प सामस्य स्वयम्प कर स्वयम्प कर स्वयम्प स्वया है। स्वयम सामक स्वयम्प कर स्वयम्प कर स्वयम्प स्वया है। स्वयम सामक स्वयम्प अपना स्वयम्प कर स्वयम्प कर्म स्वयम्प कर स्वयम्य स्वयम्प कर स्वयम स

कार का बा जुका है कि रामारायमें वर्ग, राज्य और कारको नीतिका स्परेश मार है। महान केसमें रामारावाकी सर्वातिस से दो-पार राज्य जिलते हैं। खुक जोगांकी पार्वा है कि 'दिन्यु-सम्पतामें राजनीतिक और सामाजिक चेतारें कभी क्लिसेत गरीं हुएँ। यहाँ वो जनमने ज्वासान

तक और जागनेसे सोनेतक केवस धर्मका ही सलयह साम्राज्य दाया रहता है। इसके चतिरिक्त हिन्द मोंके पास चौर रक्खा ही क्या है ! बही एकतन्त्रवाद (Autocracy) धौर वही राजाको ईरवर बतजानेवाली भेड-धरश प्रजा! इसना ही नहीं हिन्द-राजायोंकी बाजा करके बाद्याचारी जारके समान ही निरद्धश होती है। इनमें पात्राप उदार राजनीतिकी करपना वो आकाश-हुसुमवद् है। हस निराधार वक्तिका पूर्व वक्तर स्वतन्त्र क्षेत्रमें दिया था सकता है। इसके लिवा इनके सुप्रसिद्ध विद्वान इसकी सारहीनता सिद्ध कर ही लुके हैं। यहाँपर इतना ही बह देना बाह्यन होना कि रामायकों उस मनुष्यवहीन करोर राजनीतिका या शासनकलाका वर्षांन सदस्य ही नहीं है जिसके कारण साज सम्य चीर चसम्य संसारमें डाडाकार सथ रहा है। रामाययकी राजनीति मनुष्यके मेम, चारमधारा धौर सर्व-भव-दिवकी भावनापर धवक्रम्थित है। इस राजनीविका उदेश्य कोक्संब्रह है।दूसरे शब्दोंमें यों कहा का सकता है कि डिन्टकोंको राजनीतिका चाधार धर्म है । रामापदार्म शवधाकी राजनीति भी है, पर वह जयन्य होनेके कारण स्थाप्य है। श्रीरामको राजनीति ही धर्मातुमोदित और माध है। नाहिन राम राजके मुखे । वरमपुरीन विषय-रास करे ।।

कीरावसे वह माचना ही वाफुल राजगीत के । कीरावसे वह माचना ही वाफुल राजगीत है। पाजाब देगोंसे राजगीतिको ही धर्म सममा बाता है। काम होजा हो जो भी वे वहे धर्म ही मानते हैं। पर भीरात-की राजगीतिके वह बात करारि गरी। किर राजगीतिका वेहसा स्मोक्ये विश्वचे धर तमारिकी हैं पर भीरात-वह राजगीतिका उद्देश्य राजगीति ही है। है। हर सम्बन्ध प्रत्येक्ष किर्म होने की है हो नहीं, माचन-समामका बात कराज है। पाजाम राजगीति हिगोरिका या गामका पूरोपके जिले को ही हमा स्मारित हो महण्या। समा, वस्य बीर संस्थी गोर से ध्योन्यति है। राजगयको देशो-वस्य बीर संस्थी गोर से ध्योन्यति है। राजगवको देशो-वारावे बासीविकों के स्मिन्यति है। राजगवकों देशो-वारावे बासीविकों के स्मिन्यति हो। स्मायकों स्माय वारावे बासीविकों के स्मिन्यति हो। विचारसे हो श्रीराम जिस प्रम्थके नायक हैं वह रामायवा मारतीय राजनीतिका एक चन्छा प्रन्य है। 'वायन्त प्रवां रहेत् प्रमाद धुरेकर प्रवाकी रचा करना ही राजका कर्तय है। इस कर्तयकी रचा रामायवामें सादिस कन्त-तक की गर्नी है। महर्षि धारमीकिन कादुर्श राजा, चाद्ये राजकमार स्थीर कादरी राजनीतिका वर्षन किया है।

महाराज दशरमंकी उन्न दख रही हैं। कार्यकी शांक चीया होती जा रही हैं। उन्हें मालूम होता है कि चमता न रहनेदर राजयमेंमें विश्व खबता चा वाययी। उनके रवेत केश श्रीरामको युवराज यनायेका परामर्य है रहे हैं। इसी विषयको गोस्वामी क्षुलसीदासजीने याँ कहा है—

राठ सुमाठ मुकुर कर कीन्हा। बदन बिलोकि मुकुर सम कीन्हा।। स्वन समीप मंगे सित केसा। मनहु जरठपन अस उपदेसा।। मृष मुबराज रामकर्षे देहु। जीवन जनम छाइ किन ठेहु।।

महाराज दरायने रूसके ज़ार, हटजीके सुसोजियी ध्रयवा ध्रमारे भारक सूर गासक धीरायकेवधी मंति मन-भावा फरमान नहीं निकाजा । उन्होंने राज्य-रियर्की देकसे सबके सामने कहा—'बाच खोग जानते हैं कि हमारा राज्य केवा उपन है हि इसने पूर्वजीने प्रवक्त समाग प्रमावा पाजन किया है, मैंने भी व्यागारिक स्वाव वातकर सेवा की है, घव में वृद्ध हो गया हैं, प्रय-पाजनक पर्म वहें ही द्विपणका है। पराः में भीरामको शुक्रात बनावर मनापालनका मार वीपना वाहता हैं। बाव खोग निसंबोच पपनी सम्मति दीजिय । उपरिवंत माहत्य, सामन्द्र, राज्य, नागरिक पूर्व शाज्य काले मिनिक्यों निक्य पामर्थ हिया और सम्मत् प्रकार स्वाव स्वाव पुरान बनावेश सम्मति दी। महाराज दशरको इसप्य सा सन्ते। नहीं हुमा । प्रजा कही निद्य विश्व स्वाव स्वाव है हा । प्रजा कही ने दशका मेरी सम्मति मेरी सम्मति

क्यं नु मवि धर्मेण पृथिवीमनुशासिते । मक्तो द्रप्रिम्डिन्त सुवसमं महावस्म् ॥

'मै बर्मर्रांड राजका शासन कर रहा हूँ, किर बार-बोग सरावकार, पुत्रसात्र को चाहरे हैं ?' वन बोगोंने पुण्यक्टमें का, 'मारागड रिकारे गुर्वोंको देखकर ही इस देगा चाहते हैं, करण्य बार शीम ही उनका बीनोंक करणाई !' इटायबी सार्वाजिका बनुसान पाटक हारीने बर सकते हैं. श्रीरामके राजनैतिक सीवनका श्रीगरोग रोनेगा राज्यानियेककी तैयारियाँ हो रही हैं। सर श्रीग परे हैं, पर श्रीरामको जब यह शुभ समाधार मिन्ना है ये सहसा कह उठते हैं—

ननमे एक सँग सब माई । मोजन समय बेहि हरिष् विमळ बैस यह अनुचित एकू । सबहि विहाद बडेडि मीनोई

, स्वीरासकी व्यागम्बक राजनीविधा यह एवं स है। बाज माहबाँमें झरास्ती मूमि बीर तरिवसे का विवयं व्यानकारी हो बाती है। इतिहासक बारों के प्रीरंगकेवने कृपने बहे माई द्वाराकों कर कार्य-वेचारे सुराहको सुजा-सुजाकर मार वाला, सुजाने कर्य-कर्या प्रारं संगे वारकों के हिमा तथा सुगुजनात्र के विनायका बीज बोबा। यह सब ब्लॉ हुजा है का स्वारंग स्वारंग कर है। वह तो संतारक तिमान्य रामकी राजनीवि वहाँ है। यह तो संतारक तिमान्य स्वारंग स्वारंग है। रामने मामुख्य राजनीविसे प्रारंगिय स्वारंग स्वारंग है। रामने मामुख्य राजनीविसे प्रारंगिय स्वारंगिय वहाँ में स्वारंगिय सुगा वेसिये

किय करा मूठ मेर मिर मारा। मिरून करेंड हिन हरा असा ह करि दंडवत मेंट वरि मारा। प्रमुहि विजेष्ठ मिर्ड धरावी

बहाँ कोई इसम्बार सतुरागनित होस्य मिना है वहाँ क्या राजनीतिक सिद्धान्तक प्रतुमार कार्यक्ष किसी अकारकी बेशकी घरेगा है है

राम-बरामनके प्रमान आहे मात्रों को रिना सारी हुई थी कि कहीं राज्यों को मार्चन कहा है है सार चीर बड़े आई रामके दारों डम्मे होटा है? शुक्रको राम-जारत देना देश की रामानके दि रिना किस न से । सारकी गहार राज्यों होता है

कहीं साँचसवमुनि परिवाह । बाहिव बरमांत शर् । मोदि राज हिंठ देशहरू बन्धी । सा रहाउ वर्ष शर्

भरतने बादी सारकारिका रिपाण हैंग्ल सिकवेदी रूपा थी और सेगाई सार करोलने का दिखा । युद रिपाणो भरतर समेर हुया था है। स्रो दिखा । युद रिपाणो भरतर समेर हुया था है। स्रो दिखा गोगाडी बारामें स्वापन का रिपाणो विश्वक गोगाडी बारामें स्वापन का रिपाणों है। स्रो कीरामने कर मरतको सारीण कारे ला गुरा है। स्रो गर्बगीतिक पद्वा क्रोपके सामने विलुस नहीं हो गयी। फैर्ग्मीत राम प्रपने मनमें किसी भी शाजनीतिक चाजकी वर्णकारे विवक्ति न हुए। औरामकी यह शजनीतिक फीफा थी और वे इसमें उसीखें हो गये।

सत्त सुमा अस्मृति मनमाही। प्रसुन्तित दित-सिति पानत नाहीं ग्रा समाग्रन तन सा यह बाने। सत्त कहे महेँ साधु समाने।। वश्यको वृद्या हो। प्रसुक्त । के सुनक्ते विकासी

वन्यवको वना कोध चाया । ये पुत्रके विचारीं में निया हो बनेब हनो वार्ते कहने लगे । चीर मरत, जानुझके नवने प्रतिहातककी सौधत चार गयी। किन्यु राजनीति-कुशस्त्र मेरासकन्त्रचीने वन्तें समस्ताया—

हुन्दु करन मठ मतः सतीवा । विधि-प्रथमार्वे सुना न दीखा ।। मतादि होद न राज-मद विधि-हरि-हर-यद पाद । कर्मुक काँजी-सीकरन्दि छोरसिंसु निनसाद ।। यद वो यो रामकी राजनीतिक अध्योहसा, स्वीर-

ष्ट्रत मरत-गुन-सील-मुमाऊ । प्रेमचयोचि मगन रचुराऊ ।।

वह पी भीरामधी सबी भावना । अस्त व्यावे घीर स्वाहुच बेटर बच्चे गये । भीरामधे समस्य प्रवपट स्वाहुच वहा महोमन था । किन्तु जन्हींने व्यवनी दिवास रिवा रहते हुए भारतका मेम निवाहा । शीराम गर्ने बाबर क्षिनेपाँत मिल्ले । जनके साथ-साथ क्षुनि-बृन्द केवल पता। एक व्यानसर—

मन्य-समृद्द देखि रचुरामा । चूळा मुनिन रामि अति दामा । । सनिगयने कत्तर किया-

श्वनिगयने कत्तर दिया — निविचर निकर सकत श्वनि साथे। सुनि रघुनीर नवन जरु छाये।।

षह वा बीरामका मात्र चीर यह थी उनकी सहद्रपता! गात्र या शास्त्रमारके विषे कपनी प्रवादा हु:ख देखकर इसके निवारको के बेटा न कनमा राजनीतिर्मे कहीं वा है। यहि नहीं, तो भाता क्या राम हस काव्यतिर्मे है रेर रसनेवाजे थे। उन्होंने उसी समय प्रतिवाज की—

नितिषा होन करों महि भुन वठाइ पन कीन्छ । सकत पुनिन्देक आप्रमदि जाइ नाह सुख दौन्ह ।। षर्दे दे तस शाननीतिकडी श्राक्ति, जिसके महोसेपर ज्य किया सामा है ।

भीताम गोदावराके तरपर पञ्चवटीमें रहते थे। उस

सूपनक्षा सवनकै नहिनी । दुष्टद्दय दास्त असि अहिनी।। पंचनटीसो गइ एक नारा। देखि विकतः भइजुगतः कुमारा।।

यूर्णवानो योराससे विचाइका प्रस्ताव किया । स्रोरासमें कपायावने और वस्त्रपारी सेरासको संदेव किया। स्राप्ती इस्त्रपा इस्ते नहे देख, यूर्णवालों कोण सामा शौर उसने विकासक भेष भारत्य किया । स्राप्तायने उसके मारक भीर कानकाट वियो । वस्त्रपार सर, यूप्य, विधिता-संदेव पौरह इस्ता नियारपाँकों सेरासमें भारत्यां किया । यूर्णवासके वस्त्रपातका बहुता सेनेके विचे राष्ट्रपते अगाइका शोकानकीजीको इन्केश निकास किया और सारिकके पाल स्वाप्ता सार्ती। अधीरामक्यानेसे देश स्वाप्तायक सार्तायक सार्ताय सार्तायकों स्वीत्रपत्रपत्रों देशे देश स्वाप्तायक सारीक स्वाप्ता सार्तायकों स्वाप्तायकार्यकारी देश स्वाप्तायकार सारीक स्वाप्ता । स्वाप्तायकार सारामणात्रपत्र

राभमेन हि पदयाभि रहिते राशसेसर । इण्ट्रा स्वप्रप्तं रामभुद्धभागीय चेतन ॥ रकारादीनि नामानि रामश्रसस्य रावण । रखानि च रयादचैव वित्रासं जनयन्ति मे ॥ न तेरासक्या कावी यदि मां प्रणुतिच्छित ।

(स॰ रा॰ १।१९।१७-१४-९०)

'हे तावज ! जिस स्थानपर रामचन्द्रयो नहीं हैं नहीं भी में उन्होंको देखता हैं। स्थानें सामपन्द्रणे हेक्कर सेता मन जवना जाता हैं। है रामच ! रामचन्द्रसे हटे हुए गुजको रण, रण कादि कारते मारम होनेवाले रहाणें भी अध्योत बर हेने हैं। साह ग्रह केदिना महादे हो तो तास-वन्द्रभी बात मेरे सामने न कही। !

वारमीकिशामाययके छ० का० ११, ४०, ४३, ४१ सर्वोमें रायय और मारीचका वाद-विवाद सब शामगीनिर्मोके क्षिये विशेषतया बादुनिक ग्रासकोंके देखने मोग्य है। मारीच रावणको समस्माता है—

बच्चाः सनु स बच्चन्ते सचित्रस्य साण । वे त्वामुत्ययमारुदं नतुगृत्यन्ति सर्वसः।। (वा॰ स॰ १।४१ ।६)

े राज्य ! जो सन्तर कुमार्गर्व धानेने प्राप्ते ना रोकने के कप्प हैं । तुम जनको नगों मार साहने !' परन्तु राज्यने तो एके धानका सन्त में तहा था। व जा आजकको भागों Thorough Administrator सर्वानु 'पूर्वेशसक।' राज्यने वहें करिसारने बहा था-

विचारसे सो श्रीराम जिस ग्रन्थके नायक हैं वह रामायक भारतीय राजनीतिका एक घन्ठा अन्य है। 'अपनत प्रजी रक्षेत्र प्रभाद छोषकर प्रजाकी रचा करना ही राजाका कर्तन्य है। इस कर्तन्यकी रचा रामाययामें धादिसे धन्त-तक की गयी है । महर्षि वाल्मीकिने बादर्श राजा, बादर्श राजकुमार और धादर्श राजनीतिका वर्णन किया है।

महाराज दरारथकी उन्न बल रही है। कार्यंकी शक्ति चीय होती जा रही है। उन्हें मालूम होता है कि चमता न रहमेपर राजधर्ममें विश्व'खबता था बायती। उनके श्वेत केश श्रीरामको युवराज बनानेका परामग्रं दे रहे हैं। इसी विषयको गोस्वामी मुलसीदासजीने थाँ कहा है---

' राठ सुमाउ मुकुर कर कन्छि। बदन बिलोकि मुकुट सम कीन्छ।। झवन समीप मये हित केशा। मन्हु अरठपन अस उपदेशा।। मृप मुबराज रामकहँ देहु । जीवन जनम काह किन केहु ॥

महाराज दशस्यने इसके जार, इटलीके मुसोबिनी ब्रथवा ब्रभागे भारतके क्र्र शासक बीरंगजेवकी भौति मन-साता फरमान नहीं भिकाता । उन्होंने राज्य-परिपरकी बैठकमें सबके सामने कड़ा-'बाप बोग जानते हैं कि हमारा राज्य कैसा उत्तम है हिमारे पूर्वजीने पुत्रके समान प्रजाका पालन किया है. मैंने भी थथाशक्ति चालस्य स्थानकर सेवा की है. चन मैं युद्ध हो गया हैं. प्रजा-पालनका धर्में बढे ही वायित्यका है। चतः में श्रीरामको यवराज बनावर प्रजापालनका भार सींपना चाहता 🗗। बाए स्रोग निस्तंकोच चपनी सम्मवि दीत्रिये। वपस्थित नाह्या सामन्त, राजा, नागरिक वर्ष राज्य तथा प्रजाके प्रतिनिधियोंने दिलाकर परामर्श किया शीर सबने प्रकातसे शानको युषराज्ञ बनानेकी सम्मति दी । महाराजा दशस्यकी इसपर भी सन्तोप नहीं हुआ । श्रमा कहीं मेरे दवावसे मेरी रायमें राय न मिखा दे. अतपन महाराज दशरथने उनसे फिर पूछा-

> कमं 🏿 मनि धर्मेण पुविवीमनुशासित । मवन्तो द्रष्टुमिच्छन्ति युवरातं महावरम्।।

'में धर्मपूर्वं साज्यका सासन कर रहा है, फिर माप-स्रोग महावस्त्रान् पुवरात्र क्यों चाहते हैं ?" उन स्रोगोंने मुलक्याने कहा, 'महाराज! रामडे गुर्थोको देखकर शी इस ऐसा चाहते हैं, चलएव बाप शीप्र ही उनका क्रमिकेड ⊯रवाहरे P दरस्यकी राजनीतिका संस्थान बर सकते हैं।

श्रीरामके राजनैतिक श्रीवनका श्रीगरोग होने राज्यानियेककी तैयारियाँ हो रही हैं। सर क्षेत्र व हैं, पर श्रीरामको जब यह ग्रुम समाचार निजा वे सहसा कह उठते हैं---

अनमे एक संग सब माई। भीजन समय देति हरी विमळ बेस यह अनुवित पक् । सबहि विदार बडेरी बीने

श्रीरामकी त्यागमूलक शञ्जरीतिका वर 💶 है। बाब माइयोंने बरा-सी मूनि बौर तरिक्रमे जिमे खून-खराबी हो साती है। इतिहास**त**ा कि शीरंगजेवने अपने वहें माई दाराबोधात र वेचारे मुरादको पुका-पुलाकर मार शता, ग्रहारी ?" भटकाया और संगे वाएको केंद्र किया तथा हु^{न्द्र स} के विनाशका बीज बोया। यह सब क्यों हुआ अतुस राज्यक्रिप्सा और वज्र-सार्थके कारय। रह रामकी राजनीति नहीं है i वह तो संसारहे ह बादर्श बल्ह है। रामने प्रममुबंद राजनीतिये अपने वरामें कर लिया। बसकी ए नागराजकी-सी हो गयी। बुरा देखिये-. किय करू मूळ भेट मरि मारा। मिलन च^{हेर}ि ' करि दंडवत मेंट यरि आगे। प्रमुदि विरे

सहर कोई इसमकार अनुरागनी है वहाँ क्या राजनीतिके सिद्धानारे ' किसी प्रकारकी चेशकी बरेदा है 🤅 राम-बनगमनके प्रमाद भा

सभी हुई थी कि करी राज्यकी वाय भीर वहे भाई रामके र शुसको शाय-शासन देना है सिब भ हो । भरतशे असता भावर्ग है। वह ^द कहीं साँच सब मुनि प मोडि राज इठि देर

अक्सने भा सिवानेकी बण्डा किया। ग्रद

वक्के बोटा

न्दिप ससा तन इष्टा नाही । मोर दरस अवीध जगमाही ।। मस नहि राम विजन तेहि सारा । सुमन बृधि नम महैं क्यारा ।।

4

ri

ė

أنج

łſ

d

ò

हन चौना एमें में कैसी राजनीति जीर कियाना जातन-विवाद है। जानतीतें कोई ची ऐसा च चा जिससे जीतानने उच्छन्तन न एहा हो। यह चाहनते हैं नेज़्वकड़ा ! बेताका कंग्य है कि वह सरको सम्मति के चौत सबके कहनाव-गांकी तिवाहर वार्पनेत्र में जरते। श्रीसामको विश्ववहारा पहुंचे तो जानेका कोई मार्ग करी दिस्सकाची देता, चता चौ तकके राजनीतिका रहस्य बनवाना पहा।

विनय न मानत जरुषि अङ्ग्ये सत्तवाना चड्डा । विनय न मानत जरुषि अङ्ग्ये तीनि दिन बीति ।

बोले राम रहोप तब बिनु सम होद न श्रीते ।। गरिक्से घर कौर समसे प्रीति,यह राजगीतिका उचतम वर्षेण है। औरासने इसीके अनुसार कार्य कर समुदको धनने वर्गमें किया।

एंडालंड वेजिहासमें राजगीतिका वर्षोन किसने न पार् ग्रेमा । यह भी राजगीतिका पायक होता है। पर गोमाओ राजगीतिका पायक होता है। पर गोमाओ राजगीतिक हा त्यसने दिनाई है। क्यांते पुरस्क ग्राम राजके ताथ यह पहरद राजनीतिका पायक किया है। वर्षोंने विभागयका विकाय चर्माग किया है। राजने गायका मार्च्य हुए स्वापनी कहा विभागयकों हो और गायका मार्च्य हुए स्वापनी कहा विभागयकों हो और गायक प्राप्त हुए स्वापनी कहा विभागकों है। यहने गायक स्वापनी क्यांत्र स्वापनी कहा विभागकों है। यहने गायक स्वापनी क्यांत्र स्वापनी क्यांत्र स्वापनी स्वापनी स्वापनी स्वापनी स्वापनी स्वापनी स्वापनी स्वापनी स्वपनी स्वापनी स्वपनी स्वापनी स्वपनी स्वप

इति रचुपति सब सला बोलाय । मुलिपर कागह सकक सिलाये ।। इब बीतह दुरु पूज्य हमारे । इनकी क्रपा दलुक रन मारे ।।

भौर गुरु बशिष्ठसे बानरॉके विषयमें कहा— वे सव सक्षा जुनहु भुनि मेरे । मोध समर-सामर कहें वेरे ।। वन दिव सारी जनव रन हारे । मरसकुँ ते मोहि अधिक पियारे ।। जुनै गुनु बबन सगन सब मने निमित्र निमित्र व्यक्त सुक्ष नवे।।

एक बार करनी विजयका क्षेत्र गुरुको और नुस्तरी थार करने सारक बानरीको देवर याप तरकर वह करे विजय-बारके दी स्वकाको सुरोजित कर नहीं थी, बन्दा भारते दासका सारा क्षेत्र वृत्तरीको हो दिया। कहा है सारतीक पट्टा, सकरता, गिरुसा, इन्त्रकात, पक्रमा कीर निवित्तरवास के क्षा व्यक्तिक अनुसरस है। इस पानीकि पट्टा की सार्वतिक पट्टा स्वाप्तर है। इस पानीकि प्राव्यक्तिको सार्वतिको नुसंस्त्रा की पद्मा कार्यो देशकी सारकरको सम्मानिको नुसंस्त्रा की पद्मा कार्य देशकी सारकरको सार्वतिको नुसंस्त्रा कीर करमान्यता पार्वी है। इस्त तो सुसंबेट दिया वाला है कि बहू- दण्डः शास्ति प्रजाः सर्वो दण्ड पराभिरद्धति । दण्डः सुसेषु कागर्ति दण्डं धर्मं निदुर्नुचाः ॥ (मनु०७।१८)

भगवान् रामने जोक-करवावार्ग राज्यके माय ध्यस्य खे दिवे। परान्तु उन्होंने उसकी बारमाको अपनेमें मिलाकर उसकी द्वार गति परि । उसीरी कहा है-फैमेशिट देशन गरेग उन्हार ? मासकर भी भीच देना, ध्यारागोकों मो मीतिक ध्यार्थारी सुकार मुक्ति देना, ध्यावान्धी विकारपुराने एक धंगका सुन्दर परिचय है। रामायग्रधी-रामकी हती भागवारण ध्यस्तित रामनीति निजय बोक-करवाया-धारियों है।

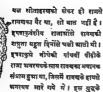
यह रांका हो सकती है कि जिस आयुक्तिक राजनीतिकों स्वस्ताककर उसकी जिन्दा की गयी है वह भी सो राजायकों गयी बाती है। रायवादी प्रकारती 'गव्य-भक्त' (eat or bo eaton) ही थी। जिसका पालक साजकत पालाक साजकती किया जाता है। कीसाओं भी बाजियक को जिस्सा था।

इसका उच्छ पह है कि शहयको मीति शामायको प्रति लाग्य होने कारण वह सामायको राजगीति गई करी वा सकती । जीतामका वाहित्य संसादि क्ष्याको हेतु प्रयान धार्म-संकृतिको करतिक विशे भी धावस्यक वा घटा वस्स स्तर्यका संप देवना बात्मिमान है। इस विकल्पर स्वत्यन केल विका का तकता है, स्थानामानी वहाँ स्विथ्य वर्षन वहाँ क्या वा तकता है, स्थानामानी वाह गुरुवीति बोक्सीय वर्षन वहाँ क्या वाता। शिस्तनहं सीतामकी

ष्याव बीरालकी राजनीतित संसारका पुत्र । बदार-बता वृद्धे संस्था के शासन प्रमातना । राजनीति संसाकी बता वृद्धे संस्था कर बायगी । इससे स्टे कुट घोटे छोटे हेलांके सार काया होनके कारण प्रनेक मारी दिश्योंका स्थान के वाथना। एकके व्यवस्थाने स्थान-देगादिव सार्व के वाथना। एकके व्यवस्थाने स्थान-देगादिव सार्वाद सङ्ख्यानिक मार्वादी राष्ट्र होगी। इससे सायक-स्थानके विकारणे पूर्व स्वरंग मित्री। सम्यावन स्थानके विकारणे पूर्व स्वरंग मित्री। सम्यावन स्थानके विकारणे पूर्व स्वरंग होगी। स्थान स्थान स्थानके विकारणे स्थान कार्य क्षार क्षार स्थानका स्थानका

वालि-वधका राजनीतिक कारण

(लेखक--पं• मीराजेन्द्रनायमा विधामूरण)



बहुत दिनों बाद इच्वाकुले इसवें राजा मान्धाताके साथ भी रावणका युद्ध हुमा था (उत्तरकावड सर्ग १६।२६)। राजा दरास्य भी रावण्डे पराक्रमसे भली भाँति परिचित हो। इतमा ही नहीं, वह शवयके नामसे दरते भी थे। शवय कभी छोटे मोटे उपदव नहीं करता था। इन सब कामोंके लिये तो वह प्रपने सेवकोंको ही नियुक्त रखता था। बिस कामको दूसरे महीं कर सकते, वैसे वहें काममें वह स्वयं करता था। दिवामित्रने जद यज्ञ मारम्भ किया, तब रावयः में उसमें वित्र डाखनेके किये मारीच और सुवाहु मामक दो महायजी राजसोंको नियुक्त कर दिया । यश-रजाका शन्य कोई बनाय न देखकर विधामित्र दशस्यके दस्वास्में रामको माँगने गये । विश्वामित्रने तपोषससे यह जान विदा था कि रामके मतिरिक दूसरेसे मारीच-सुवाह नहीं मर सकते। रावय दिवय समुद्रके उस पार सञ्चाम था भीर विभामित्र पण करते ये उत्तर हिमाबयके चन्तःपाती सिद्धाधममें ! वहाँ राजय-प्रेरित सवाह और मारीच यज्ञमें बिध करते थे धीर अनको मारनेके विये विधामित्र चाये ये अयोध्याके . राजा दरारपढे पास रामको माँगने ! मानो सारी चुन्दीमें किसी एक इसचलका सुत्रपात हो रहा था । विद्यासित्रके मुखपे 'रावण प्रेरित' शब्द सुनते ही दशरथ सहस वर्षे भौर बन्होंने काट शोदकर बहा-----

नींद्र वाक्रीसे क्षेत्रीम स्वानुं तस्य दुवस्यनः ।
'देवरानवरूकेंदाः सङ्गः चत्रप्रवाणाः ॥
न सडा रामचे सेटुं जि चुनर्गेनवा मुणि ।
स तु वीपेवरां सीर्वेमारते पुणि रासणः ॥
तेन चार्चन सक्नीरित्म सीर्वेम्युवंतस्य स्वान्यः ॥
(या॰ रा॰ १९०)

ंशवयाकी तो बात ही हुए हैं में तो उसकी सेगाई क भी सुद्ध नहीं कर सकता । किर मेरे पुत्र तो हैं में कि गिनतीं हैं 'को कुत्र भी हो बरिष्ठकी अर्थावे करन समकी विभामित्रके हाथ सींद दिया। सहस्य भी हो भी साथ खब दिये।

मारीच सुनाहुका वच हो चुका। गास्त्ये समेतव ह संवाद प्रकरण ही पहुँचा था और इस संवाद मारीक्षण सामके प्रति रावचके मंत्रमें कैसे भाव वैरा हुए, प्रति कविकी भावमें इस सम्बन्धमें स्टब्स्परे के करता है होनेपर भी रामायवाकी घटनार्घोर विचार करते गा मनोभावका रूप बहुत कुछ समन्या वा सकता है। क्षरा इस विवापर विचार की मिंगे।

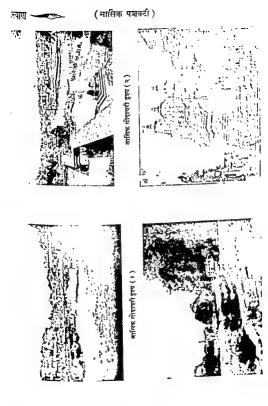
इस व्ययपद (व वार कामप)

हासके वनतासके बाद कर महतने सैनारने हैं

कर सारी बातें सुनी और सब होगों हो सार हेर राजें
सेवामें उपस्तित हो वारस बौरों हे किये उसने करने
जामह किया। वन फोल महारे समझार हनतें राजें
रएए ही कह रिवा कि 'माहै, मैं नहीं बौहुँ ता। रिजर्मे
सेवा महारसे विमाग कर दिवा है मैं वही बहारि राज
क्षेत्र महारसे विमाग कर दिवा है मैं वही बहारि राज
क्षेत्र करुँगा-

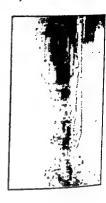
स्वमा राज्यसमीच्यामां प्राप्तस्य रोडक्तकान् । बस्तन्यं दण्डकारच्ये समा बरकरनारसा ॥ बयमुक्तना महाराजो तिमानं रोजहानियो । ब्यादित्य च महाराजो दिवं दशरयो गाः ॥ (स॰ रा॰ शहरां)

तुम वायोच्या वारो चीर से इराकारण कार्य [120]
सहबर शतुम है तो मेरे सावी ककार्य है। (वारी)
१०१) चनेक प्रकारते समयमेरर भी बर मार्गाली का
वहीं माने तब समने चीर भी रानारी काः 'नार्गाली का
वहीं माने तब समने चीर भी रानारी काः 'नार्गाल'
तुम प्रसाव इरावे चारको चीर वारों, 'तार्गाल'
तुम प्रसाव इरावे चारको चीर वारों, 'तार्गाल'
वहर प्रसाव मेरे कर्क मां चारे किसी मार्गाल है।
वाका पुत्र तुमार सकदर बीराव हात्र होता होते है।
वाका पुत्र तुमार सकदर बीराव हात्र होता होता है।
इरावा पुत्र तुमार सकदर बीराव हात्र होता होते है।
इरावा पुत्र तुमार सकदर बीराव हात्र होता होते हैं।
इरावा पुत्र तुमार सकदर बीराव हात्र होता होते हैं।
इरावा पुत्र तुमार होता होते हैं।





धोष्टरप्रकेशक सन्दिरभाष राज्यो हुन्छ







मार् महाताबके चार सुदान हैं कातपुत्र काको,हम सब सिख-म महारावको सायपुर स्थिर करें। सुम्र इसमें किसी महारही न तो कापत्ति करो को न विचाद हों। करो।' (च॰ रा॰ र, 1०था १० से १६)

ामकी इस विकास यह मतील होता है कि दूसरथ गरी सकर सामने राजवा बेटवारा कर गये थे। एकहें विदे स्पोप्त और दूसरेहे विदे पूर्वक नम। औरताचन्य नित्त कि दूसरेहे कि प्रेम एकाइक सामा व्यवक नित्त कि दूसरेही मिट प्रवास सामा व्यवक सर्वे वर्षात राजवी स्पापनाक विद्यो खड़े।

राष्ट्र कितना बढ़ा पराकसी कीर अवहर अपराजेय ीर था, इस बातको द्रशस्य भव्तीमाँति जानते थे । द्रश्क-मारवर्ते वाक्यका एकाविपत्वथा, यह बात इसीले सिद ारी है कि बहिन शूर्यवालके रहने के जिये राववाने दयहक-को ही चुना था। जब विश्वामित्र रावयाच्छीय और ात तक्यहे हारा ही नियुक्त यज्ञ-विश्वकारी शुवाहु स्तीर गोंक्को मार्गके बिथे भीरामकरतको माँगने गये थे, तक त्ववह बामसे ही राजा दशरथ किसने अधिक डर शये थे, वा वार करी वा जुड़ी है। राजपरिवारकी प्रवान हो। प्रवय सन्तात्र रामको सन्तमयसहित विवासित्र से वेद है। इस समय बासक राम-सक्त्रमणके प्रति की गुरुवा, इनेश और केंद्रेयों वीनों हो रानियोंका समान बाक्येंच था। क्रोंड पुनामाभिषेक्की बातसे पूर्वतक कैकेमी शमको रा पादा थी, और बढ़े स्नेहको दक्षिते देखती थी, इस राष्ट्री सभी बावते हैं। देशी धावस्थामें ताववाके वृक्क की ताबक हो। जाना का प्रभा अध्यान वान्य की ताबक है। जिलुक दोनों राजसोंके बचके किये निर्देश साथ शाम सन्मादके कारेकी और साथ 🜓 मह राष्ट्रमी राष्ट्रके वह-विकासी वर्षा राम-मातामीमी

धनरप ही हुई होगी, यह सहजहीमें समका का सकता है। अवजात: दरकहारवारी सावचनीद्वार पूर्यवाराण सेना-सहित निनात करना, बहाँ राज्यका प्राधिपय होना, राज्यसम्बन्धी धन्य घनेक दिवरोंकों सालोधना होन्ह, औ-स्थान-सुबन धनेक दिवरोंकों सालोधना होन्ह, औ-समान-सुबन धनेक दिवरकोंने तरहा एक रूप धन बाता भी समूर्ण साथानिक है। बह देताना यह है कि इस धनुमानकी सार्वकात कहीं तक होती है।

सन्बराने व्यपने उपरामर्शमें कैंडेगीको केवल हो 🜓 बर माँगनेकी बात सिसामी थी-एक्से शमको चीतह वर्णका बनवास और दूसरेमें भरतका राज्याभिषेक। इसके सिवा उसने भीर क्रम भी नहीं सिराजाया था। पर अब संदेशीका मिजाज जिसका तब वह सन्यराके हारा तत्रविरूप बहरकी व दि पिकाये जानेसे पूर्व जैसे सावहों चाने घरही थी, वैसे ही. यश्कि उससे भी चौर चथिक बरी हो गयी। इसीलिये दसने सम्पताके 'वनवास सन्दके साथ' 'वयहकारयय' शन्द और कोड दिया । देशमें भयानक बंगल तो भीर बहुतसे थे, बस दचडक ही वर्गे बाद भागा है निरश्य ही द्वारशारण्यके सम्बन्धमें पहजेसे ही वसके सनमें हुछ संस्थार बद्धमृक्ष थे। यह नहीं कि यह स्थान सुलोपभोगके बिये सुन्दर है किन्तु इसके विपरीत उसकी धारणा वड थी कि इएकड अवकर राचसोंसे पूर्व रावचगासिन होनेके कारण विपत्तिपूर्व और सत्परुपें हे रहनेके बिये सर्वमा प्रयोग्य है। असने मलसे रहनेके जिये रामको यहाँ नहीं भेजा था । रिता द्वरायके विभागके चतुसार राम दवहफ से भीर भरत चर्चाच्यामें राज्य करें, यह बात अरतको सममानेके समध रहते श्रीरामके मुखसे इस सुन ही चुके हैं।

द्रवकारवर्षे यूर्वज्ञायों भंजह तास्य विदेशन जा। क्यांकि द्रवक्ष त्युद्ध पत स्वाहों हाने-पत भी उत्तरका व्यक्तिनदृष्ट्य क्षित मेहिन होने हाने-पत भी उत्तरका व्यक्तिनदृष्ट्य क्ष्य मेशिक महिन स्वाह्मी की त्यव्यक्ष मान्यक्षी का मार्गिक मार्गिक प्रत्यक्ष मान्यक्षी का मार्गिक मार्गि हारकर राजपाने दसाने कहा 'हे बाजर-सेड मिंते धारका बख प्रथमी प्रशिष्ट दिवा, सब में क्रांतिको सामने राजकर सापके साम पिरवरपुष्ट स्थापन करना बहारा हूँ हि होता सोग, सामसे हमारे और सापके की, युज, धर, राज्य, सोग, साप्यादन, माजन सब क्रांतिमक हो यथे बाली एक हो गये।' यह करकर उसने क्रांति अजा ही और होजोंने परसर हर्दपसे खायकर प्लेडपूर्व आगुष्टकी स्थापना की। हमके बाद दोगों निज परसरा हाथ पकड़कर महज्ञमें गये।' (बाठ राठ ७ 1,29 1 ७ सोग है

श्रवपृष गूर्पयलाके विहारकेत्र द्वकक-नगर ही नहीं, राजयतायके किसी भी संग्रपर किसी मकारसे भी यदि कोई मारवपरीते श्राक्रमय करने जाता तो उसको सक्ते पहले प्रतिश्रेष्ठ गास्तिसे सहना श्रनिवार्ष मा।

श्रीराम परने रिताको थाञ्चासे द्वटक-वनमें आवे ! बनतासमें दस वर्षका सम्बद्ध समय प्रतेक खालमोमें वृत्तर्य श्रीर तीम वर्षका समय प्रवस्तीमें ब्हक्त प्रापने विजाय ! प्रव केवल एक वर्ष वाकी है, ह्म्मी समय शाववाने सीताको हर जिया !

राययके सच्छ दुवैर्ष राजस बूतरा नहीं। ब्रह्ममें उसका विवास है। ऐमें शत्रुको दमन करनेके विषे वो - दुक् बावरयक है सुमीय सबसे पहले वही कर रहे हैं—है ब्रक्मत्य! बाप शान्त हों, सुभीव राजसायम शवयक सपकर रोहियोंके साथ चन्द्रमाकी माँति सीतासहित रामको वावें। रायचके साथ युद्ध करनेके विषे ही सुभीव करोकों बानरॉकी सेना एकत्र करनेने विषे हैं।'(हिन् सर्ग ११)

ताराणी इस बण्डिसे मतीय होता है कि रावचण्डे साम पुद बनने किये ही धुर्मन भीषण और हुद्द धायोजनमें बगे हुए हैं। रावचने सीताओं हर किया, इस बातजो सभी धान गये हैं भीर उसके समुचित मतिकारणी जेटा भी हो सी है, यह भी ताराणी बातांसे त्यह है। यरना यहाँ पूक विस्त्र मस उपरियत होता है कि सारी बातों वाननेत्य पूजी सुमीवने भनेक स्तानोंके नाम बतवा-बतवाबर तन देखोंमें बाज सीताके पपहरच करनेतां नावचा प्रात्न के साथ या, पह बात तो तातां के समस्या पहले ही बहु दो थी, चिर इतिहास-मुगोबके हनने बारे मास्वानकी क्या बातव्यकता भी है सीरे अपनींसे बहुत करनेतां हो साथ कह सकता भी भाग तो इमें यह देखना है कि रामने हेन्द्र मुझैक स मित्रता करनेडे विषे हो बाबिको मारा सा एन कोई और भी कारवाथा।

कीरामने बाद सरतको क्रयोध्या और प्रानेडे विदे हैं। देकर कहा या ! तब यह भी श्रष्ट कह दिया या 🖟 दिर किये हुए विभागके सनुसार तुन भयोष्यामें बाहर स्तुवारे राजा बनी धीर में दश्हकारवपने बाबर बरवरॉक्स 'राज राज' बनवा हैं । राजा और 'राज-राज' प्रवीद राजने राजने बहुत सन्तर है। इयहक-बनमें शूर्पयताके ताककार करी भौर सर-दूपकरे मारनेसे रावहरे साथ घेररादुताही है यवी यी। इस बातसे शम-बच्मव कार्तिक शी है। र्एयकानेही रामके पुत्रनेतर यह साम कर दिवा या वि रावक, इम्मकरक, विमीषक और दूपक मारि मेरे मी हैं। ऐसी अवस्थाने महाबडी शत्रवकी बहिनहे शहरा बाटनेच्य कितना अयङ्कर परियाम हो सकता है, रावर्टी विशास्त्र श्रीरामके क्षिपे इस बातको समस्ता बार्ध गाँ या। राज्यके साथ किष्कित्वा-तरेग महार्थार बाविकी हैते और सन्त्रिकी बात पर्खे करी वा तुकी है। इर शर्ब माल्म होता है कि सीताहरवके बाद सहारता है वि कीराम सुग्रीवके साथ सैन्नी करनेके बिये तैयार व मी हैं भीर वाजिको मारकर सुमीवको फिरसे राजगरीना कि प्रविद्या व भी करते तो भी दल्हें वाविको तो सार्व है पदवा । समुद्रके उस पार बद्वापति शाववार द्वान करनेके किये सारा उद्योग इस पार बाविके शामने हैं। अर्थ या । रावण-वन्तु सहावीर बाबि मित्रके विस्त् रदम्बाचे कमी सहय वहीं कर सकता ! सन्दि-सूत्रके बनुमार गर्न राषु बाविका भी राषु या। बतर्द राववके सार दुर व पूर्व ही रामको बाबिके साथ *बुद बरना रह*ता। इस शान्यस्थापन भीर खद्रापति राषयके साथ रिशार वर र ही बार्ते बाबिके जीवित रहते सहत्र वहीं भी । क् रामका सर्वप्रथम कर्चन्य हो गया या-बाहिको राजि करना । अन्यवा सीता-उदार एक प्रकारमे समाम ब इमीविषे श्रीरामचन्द्रने एक इच राजवीतिवर्ष हैं चार्य-रीहेची सारी वार्तोची सोच-समहचर मु^{र्मारी ह} मैत्री और वासि-वयको प्रतिशा करके बरोगों हाना है न सहायतामे क्रांच्य-सत्यादनका निवय किया है। हर्ण ही वालिका प्रतिहत्त्री सुपीव इतना गरा। ना हा हर ्राज्यस्य ग्रुभाव इत्यत्ता गर्धाः नार्यः राज्यस्य ग्रुपीर वो केरब वास्त्रिसः वर्षे श्रीर स्ट्रान्ट

हार ही चाहता था । अपने ये दोनों ही उद्देश्य श्रीरामहारा ह होते देखकर उसमे सेनासहित शबने भापको रामकी र्ष्यत्वामें समा दिया । रामचन्द्र धर्मोपार्जनके बिथे वनमें िंग्वे थे। श्रीवनके प्रारम्भमें राजपुत्र राम अपनी प्यारी मपूर्विको छोडकर जानेको बाष्य हुए थे। प्रकृतिके वानिकेत्रव निविध दयहकारवयमें नवीन और विशास जान स्वारतके जिये ही कृतसङ्कण होकर जीरामने वडमें प्रवेश किया था। वे बीर थे। उनके लिये कोई भी र्षं हुष्का वहीं या । वे प्रसन्नविक्ते ब्रानन्द्रके साथ ब्रदने र दिता रहे थे। इसी बीचमें सीताका अपहरण होनेसे

रावशके साथ युद्धका उद्योग करना पड़ा चौर उसीके श्रंगीमृत जवस्य करेंन्योंमें बालिवध भी एक इसंन्य था। जनपन रामपर किसी प्रकार भी दोपारोपण नहीं किया जा सकता। सीताके उदारके विवे बाबिके राज्यमें रहकर बाबिके बीते समुद्रपर पुत्र बाँघना और शक्यके सर्वनाराके विषे विप्रज उद्योग करना शसम्भव था । सीताके बदारके क्षिपे सबसे पडले वाजिका वध ग्रत्यन्त ग्रावश्यक मा । ग्रमक्वमा इस वालि-वघडे उपसदयमें सुधीवडे साथ सैती हो गयी। जिससे समुद्र-बन्धन बादि कठिन कार्य बहुत हुछ सहक सान्य हो गये । यह भी शासि-श्रवका एक रहत्त्व है।

रामायण और श्राद्ध-तर्पण

(केलक-पं » श्रीमाशारामजी शासी,साहित्वभूषण, व्याकरवाचार्य, वेदान्तपीयक }

पौरा-पुरुषोत्तम मगवान् श्रीरामचन्द्रकी दिन्य बीबा और बनके।हारा स्थापित दिल्य चार्योका सथा उनके सनुकरकीय भाषरकों-षा वर्षन जिसमकार श्रीमहातमीकिजीने भएनी शामापण्में किया है, वैसा वर्णन करनेका सीमान्य किसी दूसरे मन्यकारको शह नहीं हो सका । यही कारवा है कि इस भन्यमें सब सम्प्रदायोंकी समान शका है। मारा सभी बालिक पुरुष बतुकरण करनेके विचारसे ल्का प्रमावन करते हैं । इसी प्रत्यसे प्रसङ्ख्या माद-। बैसे बटिस विषयपर द्वाव दिग्दर्शन कराना चानुचित न्ता। भावपञ्च माद तर्पवार इच कोगोंकी सधदा री है। इस बावको भी दृष्टिमें इसकर यह प्रसन्न द्यादेग नीत होता ।

रामायको सर्व प्रथम, अयोध्याकायङके ७६ वें और है सरोते, आद-तर्पवादिका वर्यन आया है, वहाँ केरी महाराज दरारपका चौजाँदेशिक संस्कार कर ना बाहि शनिवाके सहित अवकड़ान दिवा है-

हरो हदसबी निवसा निरुष च तुनः तुनः । सरमृतीरमब्देशनुंबाहनाः ॥ इनेरहे दे मानेव सार्व नुष्यामा बन्तिपुरीहिनास । इतिहासुरानिवेश मुती दशाई व्यवसन्त दुःसन् ॥ (बाक शाक शाकदारश-रह)

48 -

व्यर्थेत् 'रोवी-रोवी वे कियाँ ग्रुरमा गर्वी । बन क्षोगोंने बार-बार विकाप किया, फिर वे राजद्वियाँ सरपुढे छीरपर सवारियोंसे उतरों । उन शानियोंने तथा मन्त्री और प्रशेषित कारिने भरतके साथ राजाको सजाशक्ति हो । करन्तर बड़ से शेते हुए वे नगरमें चारे चौर वस दिनोंको भवि-शक्त चादिके हारा द:शार्यंड विवादा । वदा---

वती दशाहेऽतिगते इतशीची नुपात्मकः। हादरोप्टरनि संवाले शावकर्णण्यवास्त्र ।। ब्राह्मणेस्यो वर्न रखं ददावतं च पुष्परस् । बास्तिकं बढ़शृहं अ गाइकावि बहुश्लादा ।।

(40 Es 2100|1-4)

बार्यात 'बस दिव बीतवेपर राजकुमार भरतमे स्वारह हैं तिनके चानाराजि कानेवाके कर्म किये। बारा वें दिन बन्धोंने राजाके सथ शाजकर्म किये और जाहालों को चनरत, बहुन-गा क्रम क्रमेश्र प्रकारके ताजी श्राप्त, बचरी और क्रमेश्र ही? श्रदान की ।

इस प्रकारमें नवंत, हारराहारि, महिरा कार्य बालों बाज बीर निनांडे बरेश्यमे हिने गरे माहचीडे शासका भी त्यार मनियास्य निवास है। को कांग करू करने हैं कि 'हान कन्यको हिया बाना है और मान होता है क्ष्मको', बहुबान बमहून-सी है। रुग्यो दशर न दहाय क्ष क्षातिक मानने विकार करना करिने । मारी क्षारामक हती हता दिने हर रिए-तर्गदारिया गाँच पाया झाला है --

ते गुनीयाँ ततः बण्ट्रानुष्यस्य यश्चासिनः । नदीं मन्दारिनी रस्यों सदा पुण्यितकाननाम् ॥ दीम्मातेतसमासाय तीर्षे नित्तमकर्दमम् । सिषेचुत्तकः राजे तैतते मन्दिति । स्पादा तु गादीषायो मन्द्रपृतितमन्त्रति ॥ दिशानासमासिम्युको स्टब्नक्यादीय ॥ पत्तेते राजशाईन निमकं तोसमञ्जनम् । पितृत्येकारसस्याम् मन्द्रमुपविक्रतु ॥

(ग॰ रा॰ २१२० २१२० २१२० २० अस्वांत 'वे प्रशास धुन्दर वाटबाको सम्बोध मन्दाकिनी महीके तीरपर वह कहते रावे । मन्दाकिनी नहीके पाल्य होन्य होन्य स्वांत स्व

इसम्बार बद्धाशिकिके पत्रात् इहुदी और वेरसे पियददानादिका भी विधान है—

विह्यादं नदीर्मित्रं पिष्माकं दर्मसंतरे । न्यस्य रामः सुद्वेशातौ व्यत्यचनमनवीत् ॥ दर्प कुंक महाराज मीतो यददाना वनम् । यदमः पुरशे मनति तदनास्तरम दैवताः॥ (४०० रा० १९१० ११९० २०) व्यर्थात् उसपर इनुदी और वेरके पन रहक, हामचन्द्र बोस्ने-'महाराज ! प्रसक्तापूर्वक यह मोजन वर्षोकि इसलोगोंका यही मोजन है। मनुष्य सो का है उसके देवता भी वही वह साते हैं।

इस असङ्गढे पद्माव, रामजीके हारा व्ययुके व

वर्षोन काया है— शास्त्रदोन विविना जर्क गृप्ताय गर्यते। स्नारवा ठी गृप्तराजाय वदकं बक्रनुस्तरा॥ (बार गर शारावर्ष

इसका समिनाय राव ही है। बालु देरंग, वि बळगाओं पिषराज या तथा राज इसरका निव । इसकिये वसके तिर्यंग्योतिमें वसक होनेवर यो कर राजक्ष्मत्रोने वसका दर्यंगांवि किया। इसी का किंग्य कायरके २४ में सामि प्रतिवासा समादित पाँव आवादिका तथा अवकायकों निर्मायका राज्य वर्यंग्यादिका वर्यंग आया है। इन करवरयाँको देवम रा जात होता है कि आव्य-सर्यंग्यादिका विभाव समाद है से सार्यंग्रस्थों के साधारिक विभाव समाद है से सार्यंग्रस्थों के साधारिक विभाव समाद है से सार्यंग्रस्थों के साधारिक विभाव समाद है से

वीवित पुरुषके कायते हुन करवायांचा हुन कर्न ही बारों है और न साठिक पुरुष हुनमें क्यार्ग मानकों में करूरना करते हैं। स्वत्य "मार देशे मन, निर्देश क सामार्थ देशे भव" हुत सुविके सनुनार हुन दिनकी अवाप्येक मार्थ केवर सरना कर्मम पावनक मन्न सर्वोद्दाकी रणकरना मन्नेक सर्ममार हिन्दुस राजकों

राम अटल रहे

रामचन्द्रकी माता बेंबेयोंने रामचन्द्रके धनवास जानेका यरदान साँगा। इसरको वर् दा करना पड़ा। सामूटी तीरपर तो यही कह सकते हैं कि दसरप पागत तो नहीं हो गये थे। रामचन्द्र धर्मी डिगने टमे हैं उनसे कहा गया, तुम्हारे वियोगमें पिता से सोकर सर आर्थने, सर्म पिपया हो जायगी। पर उन्होंने सब चातोंको तुच्छ समका—

रयुट्ठ शीरी सदा चित जारें। त्राण बाद वद वचन न बारें श अयोध्या निस्तेत हुई, दशरधकी मृत्यु हुई, पर राम सटल रहें।''' '''

रामायणमें सत्य झौर प्रेम

(रेसक-श्रीसदानन्दत्री सम्पादक 'मेसेत्र'#)

मापबरा महार श्रीरामणमूत्रीहे वनवातमें निहित्त है। श्रीरामणमूत्रीके विदाराजा एरायने प्रपनी होटी रानी वैदेशीको स्तर्धी हण्यानुसार हो बरहान देनेको सरीजा को थी। जब रामणमूत्रीको राज्यामिकेटकी सैचारियों हो रही थी, राज्यामिकेटकी सैचारियों हो रही थी,

कं तिरासिकेट विशे पुने वालेवर देवां कर दाराने करनी प्रतिशा पूरी करनेको करा। एक को दार आगेन करनी प्रतिशा पूरी करनेको करा। एक को दाने भीत्रास्त्रकार विशे प्रयोगकार शाग्य सीगा। प्रिये करने द्वारके विशे प्रयोगकार शाग्य सीगा। इतने दे शासके प्रियः साले करणत दो गया। इत द वस्तार कालकिक पेगा नराम अमिनेस वे प्रवास हो। पर्या अप्युक्त सामयक भी वनने प्रवास हो। पर्या अप्युक्त समयक भी वनने प्रवास हो। पर्या अप्युक्त समयक भी वनने प्रवास हो। पर्या अप्युक्त कर्म समय साला था। भीत्रकी स्वास्त्रकार प्रवास क्रमा था। बीद द्वारकोने भीवित्रकारका स्वास क्रमा था। बीद द्वारकोने भीवित्रकारका स्वास

मीतानप्रश्नीने सपनी विसामारे लग वपने विराधे । ज्या सारत हुन हो ने सामाची ग्रीवागुरू करनेते जिये के जाए हुन हो ने सामाची ग्रीवागुरू करनेते जिये के जाए हुन हो ने सामाची ग्रीवागुरू करावाना सामाची हैं जा है देन प्राचान हैं जो है पर प्राचान हैं जा है पर प्राचान हैं जा है के उन्होंने में प्राचान हैं जा करने के प्राचान हैं कर हैं के प्राचान करावान करावान करावान हैं जा कर के प्राचान करावान करावान करावान करावान करावान हैं जा करावान हैं जा है जा है जो है जा के जा करावान करावान करावान हैं जा करावान करावान करावान करावान हैं जा करावान करावा

सममते थे। जब भरतने राज्यगासन ग्रहण करने है विये मध्य पुष्टियों पेय की, जब सारे नगर निवासी प्रार्थना करने बारे वे नगर निवासी प्रार्थना करने बारे वे वो से की सार्थना करने बारे कर की सार्थना करने बारे कर की सार्थना करने कर के सार्थना करने कर की सार्थना करने करने करने की सार्थना करने करने की सार्थना करने करने की सार्थना करने करने की सार्थना करने करने की सार्थना सार्थना करने करने की सार्थना करने करने की सार्थना सार्थना करने करने की सार्थना सार्थना सार्थना करने करने की सार्थना सार्थना सार्थना करने करने की सार्थना सार्या सार्थना सार्थना सार्थना सार्थना सार्या सार्या

वे इस चारम-स्यागकी कठिनाहयोंसे पूर्व परिचित थे. वे अपने सिरपर भानेताक्षी बाएव्-विवदको देखते थे, किन्तु सन्पड़े विश्वित उन्होंने उनकी इस भी परवा न की। प्राथनिक कुटनीतिज्ञ उनके इस कार्यको विवेकग्रम्य समस्येंगे, किला धाजकबकी गाँधि करतीति जो बर्ज सत्य या बसत्यके बाधार-पर टहरी हुई है, बस खुगमें किसीको मालम ही नहीं थी। धातकी भौति श्रीरासचन्द्र सत्यको, घरनी भारमाको लुट चीर परस्वापारकांके बाजारमें बेचनेके लिये तैयार स थे। सांधारिक सामके सिये चासकि, बोभ धीर स्वार्धपरताके हारा जल्धे होनेके कारवा,बाधुविक प्रगमें,हममेंसे व्यथिकांश यनच्य इसकी शहताका चन्ध्रय नहीं कर सकते । सत्पकी महिला बाज बहवादके चकाचाँधर्मे, स्रोभ सीर लट-क्षसीटके कडे-करकटमें, भड़कार और दरमकी धूलमें लक्ष-शाय हो गयी है। प्राचीनकालके बहुदियाँने सत्यके जिये इसाको ससीपर चढ़ा दिया, पर बाधुनिक बालके यह दियोंने सत्यको ही स्कापर चड़ा दिया है। श्रीरामचन्द्रजीका कुरा एक इसरा ही युरा था। आधुनिक कालके हीन मतवार द्यस द्याके सरज वित्त और ईरवरसे दरनेश वे स्रोगोंके हत्वको स्पर्शतक नहीं कर सके थे । किन्तु बस समय भी सत्यके निमित्त जीरामकी महत्ती निष्ठाने धा'मापागी जावियोंको भी चकित कर दिवा या । सत्यकी रचाके क्रिये उनके प्रिय आई जनमलका—को उन्हें मायसे भी प्रिय

^{िं}दी मेरिन (The Message) भीजनेश सर्वपर्यसम्बद्ध सारक भीर प्रेमका प्रचारक नहुत वच्छा भारितवाद है, रहने हैं कि प्रोत्तीके और करानन्द्रजीके हुन ही महत्त्वपूर्ण केस रहते हैं। स्टारनन्द्रजी नहुत पवित्र मागले यह कार्य कर रहे हैं। स्टारी नेत्राजीहें वर वन बादद पड़ना चारिते। सनका वार्षिक मून शिक्ष एक दश्या है। यह गोरखपुर म्ह्रानन्द्रजालम से प्रकारित को न्यापादक।

मे — वन साना सामाधारका एक वृथता बदाहरथ है। वर् माप-प्रेम ही बनके सर्वतिय होनेका जीवन-मृत्र है, तिपके कारम वे सवारर साने गये हैं।

इगके अतिरिक्त इम रामध्यमधीमें बन द्विती. मनायाँ भीर पराची नया सम्बी जानियाँ है प्रति चतान मेगका परिचय पाते हैं, जिन्हें खोग दोटी नजुरमे देखते, पूचा काने भीरपशुवद्ग्यवदार काते वे तथा ब्रिन्ट बन्दर, भारा, निशिषर भीर राचम प्रमृति नामीने प्रधारते थे। पनवर्थं इनप्रशासा साइतिक कार्यं कानेडे विवे वक रामग्रमारमें बहुत बहे जानाहकी बाउरवकता थी। 'समयम रामा गुरको गित्रवन् धाविज्ञन कामा, शवरीहे मेंदे बेर साना, बानरराज सुधीबढ़े साथ मैत्री, राचसराज विभीपण्के प्रति प्रेममाण, अशयुका दाइ-संस्कार करना, राष्ट्र राष्ट्रां मत्योपरान्त उसकी धनपेटि प्रवृति कराता. श्रीतमके ये कार्य क्षीगोंको इतने मिय बगे कि वे उनके क्षिये प्रत्येक प्रकारका त्याग करनेके सिये सैधार हो। गये । बलतः वे खडाडे यदमें इन्हों विवत, बार्ते तथा दरेचित कोगोंके प्रति चन्यतम प्रेम रखनेके कारण ही विजय आस फर सके थे। वे उस समय राजा नहीं ये और उनके वास सेनाको देनेके शिये-पर्वातक कि मोजन प्रदान करनेके बिये भी-कृत मथा । किन्तु प्रेमके कारण ही उन्होंने एक विशास सेनाका सङ्गठन कर क्रिया, छोग उनके प्रेम और सद्व्यवद्वारसे इतने मध्य हो शये कि उनमेंसे अव्येकने शीरामके विषे चपना श्रीवन उत्सर्गं करना चपना पवित्र धर्मे समना । इमारे नवयुवकोंको इससे शिचा प्रदृष्ण करनी चाडिये।

श्रीसीतामीके राज्यहारा हरे वानेपर श्रीरामने उनके विये शोकाङ्ज होकर को विकाप किया है उसीसे उनके पत्री-प्रेमका पता खगता है। बारमीक्षित्रे रचना यहाँ बड़ी सन्दर हो गयी है।

श्रीरामका प्रमाके प्रति प्रेम खोक-प्रतिब्द है है। 'राम-राज्य' सुन्दर ग्रासनके जिये कुक वर्षांव्याची परकरावत नाम पद गया है। श्रापुनिक सरकार इस ग्रासनकक्षासे कब शिद्धा प्रदेश करेंगी ?

चपनी प्रजाकी सम्मतिके प्रति श्रीराममें इतना बादर

था कि कुछ तुष्प घोषीं है विवासी उन्होंने घरती म निया सीचाडी सनकामके किये सेन्द्र निया।

श्रीवक्रमचनी विश्वमें आदार्गित तथा अर्थ-परित्र आप पूर्वस्थये (किसन्त हैं। वे तस्त्री निर्ध-स्टेप्डार्ड्ड आग खेने हैं और रामायपढे गाल का तरह बातने हैं कि रामचेस के ब्राय कर्नों वें केंद्र कर समझाराईक सहें थे।

क्षण सम्मानुस्य सर्थ मा स्वाप्त स्थानुम्बास्य संभागन्त स्थानुस्य स्थान्त स्थान स्थान स्थान स्थान्त स्थान्त स्थान्त स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान्त स्थान्त स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थानित स्थानित स्थानित स्थानित स्थानित स्थान स्थानित स्थान स्थान स्थान स्थानित स्थान स्थान स्थान स्थानित स्थान स्थानित स्थान स्थान स्थान स्थान स्थानित स्थान स्था

सीहन्यान्का प्रेम चौर प्रमुमकि, निसने दरहे पर-को चमर बना दिया चौर जिसके कारव वे देसको हर हुए, मानव-सीवनके इतिहासमें एक दिवस्य बाद है।

सारता यह दें कि रामायय आदिने कताव कर और मेमकी विजयका जाव्यानमाम है। कर्त्यन, की मेम, पतिन्येम, आप्नेम, निजयेम, ग्रदुर्थन, व्यक्ते देन और दिखतोंके मित्र मेम, ग्रदुर्थन, व्यक्ते बीवार्के मित्र मेम, बार्स की मेमने हैं। की मेम की प्रकाश मुख्या मार्ग है। को बीवाय का आदुस्य मार्ग करते, के सामायको सर्व है। को सामायक प्रयोग, समर काली क्रिय वार्मिके कर्म करान्यक अर्थना, समर काली क्रिय वार्मिके कर्म करान्यक

इवं पतियं पापमं पुत्रमं बेदीश्र संनिता।
यः शर्रेद्रामचीरतं सर्वपारैः प्रतुच्यते।
यत्रदास्थानमानुष्यं परन्तामायमं नारा।
समुत्रपीतः सगणः प्रेल सर्वे महीरते।

को अनुष्य इस पवित्र, उपयम्ब, वेहार्जरीत बालु-अहाता (जीवन प्रश्ता करवेशाव) गामपब्य करता है, प्राप्यय बरता है, वह सब गारोंने स्टब्स पुत्र-पीतादि सम्बन्धियसाहित स्वर्गको प्राप्त होता है।

रामायणी-प्रजा

(वेसक—श्रीदत्तात्रेय गावकृष्ण दातेसकर)



्रे किया। श्रीरामक्त्रश्रीको बह भी संब्र् रिका पहा। क्षणास्मासायण, अद्भुतरामावया, श्राकण्-गायल्य, भाषांस्तामाव्य ह्लादि अलेक प्रास्तादिक प्रत्यों है जीत्मक्त्रश्रीको गरेन्स क्ष्मस्य अपनी बीव्या दिलाची गरी है। प्रकारस्थाय प्रसुच कार्तकी हुच्या पूर्ण करनेके विसे सभी हुण सदक कार्त हुँ।

राजपाने बताया है कि राज परत्या और अजाफी पढ़ के दुजार राजदे ज्याधिकारीका निर्धांत कर कहा या । राज सराजदे अजाधिकारीका निर्धांत कर कहा या । राज सराजदे अजाधिक पहुंच कि राज करें राजदे हैं। कोरिय का राजदे कर का, 'काकर गाजपा से हमें परत्य हैं।' परत्य कैनेपीने कोर्यांत की कार्या की स्ताना कर, कोरा पुराचाय केट तथे। केरों त्या कर सकते में हैं राजपानुस्तिने और कर्यंत कार्या की सकते में हैं राजपानुस्तिने और कर्यंत राजदे आपना की राजदे की राजपानुस्तिने राजदे आपना की राजदे आपना की राजदे आपना राजदीय रिराम कार्य की स्तान कर किया। फिर भरतजी बाये । उन्होंने राष्ट्रधानी बदल ही । यह सी प्रजाको संज्त ही बरना पदा ।

भीरासण्ड्रका परित्र में एवं विकास स्वाहुणा है इस बावकी वो सवाने कभी हुए सोज-सबस नहीं थी। सीवाका हरण हुणा, व्याहुका वण हुणा, साम्यश्रमीने बानर और रोग्नेंदी गहर थी, सनुसर सेत हुणा, संकार हमावा किया, दुनियाका चलापात्व युद्ध हुणा, होकेत साम्ययी-प्रवाहों वसका हुण्य भी पता नहीं था। हस्यास्त्री कपति होषाणिति का तने, बेरिका साम्ययी-प्रवाह कर्मा हुणा में साम्ययीन साम्

करणा कोकियेप राज राजक्य निर्म क्षेत्र के प्रतुष्क करणा कोकियेप राज राजक्य प्रति हुन सक्यों मही का साम मिल्ली का साम कि स

वेसी प्रवादी खेकर रामचन्द्रपति राज्य किया । सीतादा त्याय करके सीतादी स्वर्णभयो प्रतिमा पान रणकर व्यवस्थ-वन्न किया । किय तो व्यवस्थित रूप सीतादो होतीं पुत्रीके साव बारम के बावे । वो भी प्या हुवा— पुन्तावस्था शिक्षोत्येव !

क्या ऐसी प्रजाको पृष्टीपर भारभूत समस्वत ही श्रीसमयन्त्रजो चाने साथ निक्रपाम चे गवे हैं

श्रमायस्थासमे यह सावरययणा मानूम होगी है 🎉 इस देशमें तेजस्वी धर्मनाय प्रजास सम्बन्ध हो ।

रामायणी शाक्रि

(लेखक-मीनलिनीकान्त ग्रप्त, अर्बिन्दशामम-पाण्डिचेरी)

💢 🤭 🌠 विश्वकी दृष्टिसे ऋतुःजनीय होनेपर भी रामायण 🖟 क 🏃 केवल एक कान्यमात्र ही नहीं है; रामायख

अंदिक है एक शक्ति।

यह रामाययी शक्ति, भारत-शक्तिका एक प्रधान कंग-एक शुक्य स्वरूप है । जिन मन्त्रं-शक्तियोंने भारतकी शिका-दीचाको , भारतके धर्म-कर्मको एक महान् वैशिष्टय मदानकर निर्मित किया है, उन सबमें वाल्मीकिकी यह गाथा एक विरोप श्रवदान है।

प्रथम चेद धीर उपनियद्, इनके वाद रामायण और महामारत, शीसरे पुराय एवं चौथे धर्म या स्पृति-राख हैं। मारतको समस शिका-दीका इन्हीं चार मस्यानोंके हारा हुई है। इन्हीं चारोंने भारतीय जीवन-प्रतिभाको बाकति धौर प्रकृति—स्वरूप और स्वभाव प्रदान किया है।

भारतकी चादिम्ल सातृ-शक्ति है वेद । भारतकी चन्तरात्मा यहीं है । दूसरे छोरपर, भारतके दैहिक चायतनका विधान है स्तृति । यह बाहरी स्थूख कर्मचेत्रकी, स्यवहारिक जीवन-पात्राकी स्वयस्था है । इन दोनों छोरोंके--इस चन्तराया चौर देहके बीचमें को चन्तःकरणकी पृथक् पृथक् भृतियाँ हैं, उनका निर्माण किया है रामायण महाभारत चौर पुरावानि ।

बेद-ठपनिषद् भारत-प्रतिमाकी मुनिवाद हैं , पर वह बुनियाद बहुत चरदर, बहुत गइरी भौर खोक-दृष्टिसे परे है। वसके सत्य, शारवत, भ्रम्यय, स्थायुने गुसंस्पते पीछेसे समस्त भारतभीवनको चारण कर दश्ला है शीर वह सबमें शकिका सम्रार कर रहा है। दूसरी भीर स्वृति केंदब दसकी प्रशासा-पत्रमात्र है। वह चसके केवल वहिरंगका विकास है। स्युतिका साथ,देश,काल और पात्रके निषमाधीन है. यह निष्य परिवर्तनग्रीस है। रामायश्च-महाभारत सारतीय र्मावनके प्रधान कावड हैं, और पुराण हैं इनकी कविषव मुक्य शासाय ।

मन्तराभाके सन्वको, वैदिक चौरानिवरिक सिविको रामाचय चौर महामारतहीने बीवनमें-शायोंके स्वन्दन-रूपमें सचक्र मूर्च बरडे चारय करने ही चेटा की है बीर प्रताचीने बसी शाणबीबाकी निगर निमाबहारा स्वास्ता धरके किरोपकारमें स्तर और विशेषकामें निषानीनिकिक

व्यवहार बनाना चाहा है। ब्रारवयक्रमें साधकारतर्न मध्यमें बेद-शक्ति विपी हुई है। परन्तु धनसाधरवर्मे,समा बीवनमें को शक्ति प्रकट है वह प्रकारमी रिक्जी रामाययः, महामारत तथा प्रराणींसे। भारतके विकर म्बप्रायको-सो कार्यकारियी प्रकृतिकी प्रतिशा है-निर्मा किया है रामायख और महामारतने ! पुराणीने इस वि धर्मको और भी गोचर और अवंत्रत करने प्रश्च दिया

चौर तर्तुसार स्थ्यतर मन बुद्धिको उसी साँदेमें शतक

सैयार करनेकी कोशिया की है।

रामायखने भारतकी वित्तद्वति, मार्वोकी बाराको सर्व किया है, उसका निर्माण किया है हर्यके बदरानमे, सा सरख सुकृमार अयथ समर्थं भावरीक्षनके बलावने। परन्तु महाभारतने उन प्राचोंको बाँध विषा है स्पि:इर्दे-स्थित इच्छाराकिने-सुरद मानसिक राकिने दशकते। भा वा सकता है कि रामाययका मूखनन्त्र है 'सच' औ महामारवका है 'धर्म' । सत्ताकी सहज्ञ रहति ही सर् । व्क सहज बोध, सरख चतुमव बसे स्वक्त बरना है। रान् धर्मकी उत्पत्ति हैं सम्यक् बुद्तिते, कर्तव्यक्तानसे भीर बार्ड-परायकतासे । धर्मकी रियति है न्यायसंगत भीर वृत्ति। विचारके बाधारपर, परन्तु सत्य हो स्ततःसित्र 🗗 स 🤫 नैसर्गिक शौचित्यके ब्राधारपर स्वयं प्रकारित है।

रामायलके दसस्य, राम, सीता, बन्मव, भा हन्मान् सुधीव, विभीषय मादि समी गर्र कर्तन्त्रके निर्धारण और सागारनमें विचा-विभेगा विशेष निर्मार नहीं किया है। यदि वहीं महिल्ल व्हुं क वील-माप करना चाइता तो कई पात्रोंकी एकरिक कि सम्भवतः वृसरे ही प्रचारची होती । परम्यु वे तो स्पृति हुए हैं सहजान स्वभावतिक विवेदमें। इन्हें की धन्तरकी कुछ सहचाडे, बद्दाताडे, विशायनाडे औ बम्पूसताके परिवर ! यहाँतक कि 🖽 रो, प्रम्या रा शानवानारीचे बात्र भी बाने रिडमेंडे बबार निर्म कनाइके साथ चन्ने हैं दनने बुदि, मुद्धि प्रवर्ग लि करेरवका चालव करके नहीं । इगढे रियोण करामानी वीश्यय वृथिटिर, चर्नुन, भीष्म, होय, रराष्ट्र, रि चाहिमें बर्मका प्रवाह सीचे प्राचीने इसील है स

भण, ना मार्नो पून-फिरकर मस्तिनक्के कन्द्रस्ते होता पून पार तिकडा है। महाभारतके महापुरुष श्रीकृत्यार्थे पुरियोग विशेषस्त्रसं विकस्तित है। उनको शीताका प्रधान-म- हो हैं 'दुविशोग'। परना शीरामं सरख विमेख महोंको सहय गतिके विभाद हैं। शासाबीके प्रवर्षक महोंको एक परिवाद, भाष्ममतिष्ठ, मनक्य रिवार क्या, एपा-गतिकी करन्या परिपृत्वित है। परना नेवार कर्मी साथ है पह सरख आवगर्भ मार्था । उसमें हर, इंदे करना पुरिक्ती साह नहीं है।

मात्माराको शक्ति मानो तारावर्षाका, इत्युवाका गर्गा, द्वाक और कोर तार निकक रहा है। रामायवर्षी की भी गिहाना है जब दक करार, मदान समस्यान्त्र में से गिहाना है जब दक करार, मदान समस्यान्त्र में से गिहाना है जब दक करार, मदान समस्यान्त्र मात्र प्रदेश मात्र प्राच्या करार के ग्राच्या करार के ग्राच्या करार के ग्राच्या करार है। ग्राच्या दक्ष करार है। ग्राच्या करार के ग्राच्या करार है। जाना व्यव्हे करार के ग्राच्या करार के ग्राच्या के ग्राच्या के ग्राच्या करार के ग्राच्या कर के ग्राच्या करार के ग्राच्या करार के ग्राच्या करार के ग्राच्या के ग्राच्या करार के ग्राच्या कर के ग

हायोंसे जिस स्टिकी रचना हुई है उसका सारगुय रजोगुयको स्रविक्रस बह गया है। व्यासकी स्टिमें सावकी प्रपेषा रणोगुयकी ही स्टिक प्रधानता है। महाभारत हिन-दुगहरोका महार महारा है तो रामायय है पूर्णिमाकी रिनम्य ज्योरना।

भारतक अयों में रातायथी शकिने तारवण, शुक्रमारता, यहन महानुभारता, नैसामिक गरिया, खनाया वीहर, प्रयवसाय परिपाट सरकता धरेर ध्रावसाय वीहर, प्रयवसाय परिपाट सरकता धरेर ध्रावसाय परिपाट सरकता धरेर ध्रावसाय परिपाट सरकता धरेर ध्रावसाय परिपाट करने हमारा मिमांन करना या कवितुस्के विवो साममतः इसी होत्तमें रुगांति इसकी प्रावस्था परिपाट करने हमारा प्रावसाय करना या कवितुस्के विवे सम्मत्याः इसी होत्तमें रुगांति इसकी प्रावस्था प्रावस्था परिपाट करने ध्रावसाय प्रावस्था प्रयावसाय करने हमारा प्रावसाय करने स्वावसाय करने हमारा प्रावसाय करने हमारा हमा

महामारतका मयास है सत्ताका (गीताकी भागामें) "ऊर्जित' करके निर्माय करना; रामायय चाहती है सत्ताकी "शीमानु" करके मकाशिक्ष करना !

श्रीलच्मण श्रीर देवी उर्मिलाका महत्व

(लेखक-'वर्षिका-पद-रव-कण') सामग्रमें शामसेवा-एसी धीळच्याळातीका क्रीट सो सो सो बोर्क्स

का-सर-कार") से तो बोक्सिया, सरी पतिनदार्थ परम धारराँकी स्थापना श्रीर व्हांके अति पतिके कर्नव्यकी सरिव्यक्ति क्षिय था। बारावार्थ सेवीवाको सीरायती वनमें से बाना ही चाहने में स्थाबित उनके गये विना राजवा धरमार्थ गर्मी होता और ऐसा हुए दिना बरावार्थ अपनु धरमार्थ थी सो धरमार चारवार्थ एक प्रयत्न कार्य था। सोसीवार्थी सावाद बारवार्थ कार्य कार्

मुभीता था, जितमें सेवक बनका रहना उनके पविका एकमान पर्म था और जितके जिये वर्मिना पूर्व राहमान भीर सहायक थी। इन्ह्रजिन् मेधनान्को परदान या कि बो महापुरन कमानार बारह वर्गतक क्ष्ममुख स्रोयता, निहाका त्याग करेगा और क्षमचक क्षममुख पालन करेगा, वरीके हारोसे मेधनान्का मत्य होगा। इसजिये जैसे रावध-वर्मो कारय वननेके जिये सीताबीका भीरामधीजामें सहयोगिनी वनकर वन काना कायरयक था, वैसे ही करमवामीका भी सामधीजामें स्राप्तिक होनेके दिये तीन महामत-नाकन्यूर्वक केसवाजी-का भी सामधीजाको सुपारक्रमां कारान क्षमिन केसिय ही, बो सामधीजाको सुपारक्रमां सामधीजाक सी सामधीजाकों का भी सामधीजाको सुपारक्रमां सामधीजान क्षमां क्षमानिक वार्मिक विश्व ही, बो हिम्सानी सामधीजान जाते, तब भी सक्ष्मधानीका महामान पाळन होना कठिन था और वे प्राप्त रहने का वो कठिन था हो।

यह वात श्रीवस्माय्वीने वर्मवातीको करूप समस्य दी होगी वा महान् विद्युति होनेके कारण वह इस बातको समस्यति ही होंगी। इसीसे जन्होंने पतिक साय वानेके विदे एक राज्य भी न कहकर प्राकृष पातिकार-वर्मका वैसा हो पावन किया, जैसा श्रीतीतावीने साथ वानेके विदे मेमाप्रह करके किया था। धर रहनेमें ही पति वक्तम्याधीका सेवायमं सम्पद्ध होता है, जिन रामको सेवाके तिये समस्यती करवीयों हुए ये वह सेवाकार्य इसीमें सफल होता है। यह बात जाननेके बाद कारती पतिकारा हेनी संग्रित कीसे कुछ कह सकती थीं। यह बातकककी भौति मोगकी भूकी दो भी होता होती विकास सहायक होता ही पत्रीका धर्म है, इस बातको वह वह समस्त्रती भी बीर पढ़ी वर्मिवातीने किया।

भी वसी महार समान और समय मी, सेने स्वत्य सेने वीर-मसविनी हैरी सुमित्रामी मगत भी। वर्नना बीरांग्यार्थ पनने पति-पुनों हो हैरने हैरने रखाइने मेर करती हैं, बेंगे ही वहाँ सुमिता और मिलाने भी शिवारण ही विम्ला हुन्य होती नहीं, पत्र नहीं नहीं सेने स्वत्यार ही या और न प्रमेंने नित्य हार्डिक सम्बद्धि हों आरख कोवनेची भावरणकर्ता ही भी, और न मर्गे हों ऐसी ब्याज देता थी। होन्य मर्गेन स्वत्य क्ष्यार क्षित्य सेनको द्वारत्य करने योग्य प्रवत्य मन्यात्रा सेनायर्थ क्ष्य पत्र हों हों से स्वत्य स्वत्य स्वत्या भी हम्मे हैं करता है, ब्यॉलि वह सान्ते पत्रिकी शिविते मर्गोंनी करता है। बोर्स न स्वत्य सान्त्य प्रविक्ती शिविते मर्गोंनी

एक बात और है, सेवड परतन्त्र होता है। शानी श्रीराम तो स्वतन्त्र थे, वे घरने साथ बानकीतीको हे गरे। परन्तु परतन्त्र सेवापरायच बच्मण मो बहि वर्मिताचे साय खेळाना चाहते तो यह बतुचित होता, बन्हें रामशेनी सम्मति खेनी पहती, वहाँ बनमें श्रीरामनी शीतानी साथ से बार्नेमें ही आपत्ति करते ये वहाँ वर्मिताको सार क्षे कानेमें तो जुरूर आपति करते। ओ कार्य सामीकी प्रविधे श्विक्य हो, उसकी करपना भी सच्चे सेवक्के विक्री अलब नहीं हो सकती । इसीप्रकार पवित्रो एविके प्रविद् करपना सती पतिवता पत्नीके हृदयमें नहीं हर सम्बी। र्विमका परम पविवता थीं। स्थमण उतको सार्वे में। धर्मपालनमें उनकी चिरसम्मति बन्हें प्राप्त थी। एवं बार यह भी है कि सदमवाती सेवाड़े जिये वन बाता वार्ड है, सैरके लिये यहीं। पत्नीको साथ से बानेसे इसकी हेन मार्ने मी इनका समय बाता तया दो बियोंडे सदाउरेप मार श्रीरामपर पहला। सेयक अपने स्वामीको संबोदमें हवी नहीं दाव सकता, वंकाणती चौर टर्मित्रांत्री होतीं हो हैं वातको सस्य समस्ते थे। सतप्र इन्होंने होई निहातम बर्ताव नहीं किया, प्रखुत इसीमें बन्मवजी चीर क्रीकारी दोनोंकी सची महिमा है।

भागा ज्या साहणा ह । वनवासमें श्रीक्षमायांग्रे मतरावनका मारत हैं हैं वे दिनरात श्रीसीता-रामके पास रहते हैं। कर-एक में बा देगा, प्रमुकी सामग्री हुता देगा, बाग्यमी साह-वुहारना, विद्वापर चीचा क्या देना, बीमीतानामनी क्री







त्री मीनात्रीके गइने । करं क्रांत्रिक रेपूर्व करं क्रांत्रीव कुण्डाय्य । कुणुर्व येव क्रांत्रीति क्रांत्रीतरस्त्राम् ।

पुरात उनकी हर प्रकारकी सेवा करता और दिवसत का एक बंगतवनों हैहें साममें मन खनाये समनाम को हर बार देना ही जबर कार्य है। ये अपने कार्यों में ही कर हैं। महण्येतवाका तो पठा हसीसे खन खाता कि बात सीताकों सेवामें सदा महात रहनेवर भी उन्होंने रावे बारोंकों को पड़ स्थान किसी अंगका कभी एरेंग को किया। यह बात हसीसे सिद्ध है कि खम्मवार्थी प्रेरांग के बारोंकों परचान करते सके। यह साववार्यों प्रेरांग के बारोंकों परचान करते सके। यह वादावार वेतांत्रीकों बारांगों के बात रहा था, सब नव्होंने साववार दें हुए पारसेंड एकमें कह पार ने बारांगियों की वेतांत्रीकों सावार्यों के स्वार्थ हुए सब क्षांत्रिय थे। वैतांत्रीका साववार्यों के स्वार्थ हुए सब क्षांत्रिय थे। वैतांत्रीका स्वार्थ के साववार्यों के स्वार्थ करता स्वार्थ के स्वार्थ के वितार्थ सेवार्यों के साववार्यों के स्वार्थ करता की स्वार्थ के स्वार्थ के साववार्यों की स्वार्थ के साववार्यों के साववार्यों के साववार्यों की सीतवार्यों की साववार्यों के साववार्यों का स्वार्थ के साववार्यों क

नाहं जानामि केयूरे नाहं जानामि कुण्डले । नूपुरे त्वीमजानामि निर्थं पादामियन्दनात् ।।

ंतात्वा में इन बेयुर और कुरवर्डों को मार्टी वस्त्राना । हैरे हो मेरीएन वरदानहरून के सामय आतात्वीके नुसुप्र देखे है. हो मेरीएन वरदानहरून के सामय आतात्वीके नुसुप्र देखे है.का कर वर्षान तकदा हूँ। ब्यावकतक देखों को हससे हैना कर करनी वाहिये। श्री वरमायात्रीके हुन सहाहत काव्य मेराक्य करा मारी दिरसास या, इस बातका पता इसीहे खराता है कि ये सर्वारायुक्तोच्या होनेवर भी श्वध्यस्थाने चास सीतालीको सकते नेवदक छोड़ देते ये। जब बर-पूरण सम्बान्दे साय सुद्धे किये मारे थे तब भीताले बारकीलोको खरमस्थाकी संस्करतामें गिरिग्रदामें मेन दिया था—

'राम बोलाई अनुजसन कहाः— 'लेहि जानकिहि बाहु गिरिकंदर।'

नायामृगको भारनेके समय भी सीवाके पास धाप जनमञ्जीको जोड़ गये थे। चौर निर्वासमके समय भी जनमञ्जीको दी सीवाके साथ भेजा था।

जनपाजीका तैवाजत उपरूपी था। जन्दिने बारहः जाजवक ब्रागावर श्रीमानेवाजे रहकः करिन तपरवा को, मूर्गी कारव विजानको मारकः मान्याज्ञाती स्वाप्तक के, कर्षा के यो । तपरवाजी जनका वरेरण मी यही था, क्योंकि के जीरामको क्षेत्रकर दूसरी यहां व तो बानवे थे और न जाजना चाहते ही थे। उन्होंने स्वयं कहा है—

मानना पादते ही थं । वण्हान स्तव कहा ह— गुड स्तु मातु न जानठें काहुं, कहतुं मुनाड नाथ प्रतिमाहु।। वहं तमे बगत सनेह सगाई। मेरिन त्रतीति नताम नित्र माई।। मेरि स्तिह स्टुनाइ स्थामी। हीनवंडु वर-अंदर-आमी।। चरम नीदि वर्षदेस्थिय ताही। बीदिन-मूनि-मुतनि प्रवस्ताही।।

रामजन्मकी प्रतीचा

(१)
इहे गए ये पर काते हो न टाइले क्यों,
इत व्यतीत होती जा रही विकोहरें;
गह इती हूँ, यरती हूँ आह दिशन्तत,
ताल इतती है सहा आंसा कर टोड्से।
वन सहे प्यान है लगाएं व्याम वाणी और,
वोते एक देशी अंत सकरीकी खोहरें;
हरें की कहन-पंग-अंग हो रहे हैं दूत,
वने हहाँ पूत्री हो रहे ही किस गोहरें।

(1)

हणक विदेह देह तोड़ बोतते हैं भूमि , तो भी सार्य-रामाना म सीता कर पाती है । स्वके घड़े और ! गड़े ही गड़े जाते सड़े , होंगे पड़े सोपते—यही तो मति आती है । आतुर निगाद भुव-गर भेटनेको पहाँ , उसकी न, तात, तुम्हें सुप ही सताती है ; आता-अभिटाण उपमाती छेड़ ताती पार , आती रामगीभी पछनाती रह बाती है । गटांचे हुड़ नार्यकर्ण, ध्यार्यक्ष स्वार्य है ।

पशु-पिचयोंका रामप्रेम

(टेसक-मीरामधर बाजारिवा)

पाहन। प्रमु निरुष निर्देग अपने करि टीन्टे। महाराज दशरथके रक राव कीन्टे।



सचरित समाध करवाय-रलोंकी जानि है। उत्तर्से बीवनको ऐसे सुन्दर सीचे सर्व-साम्य प्यपर सानेकी प्राकृष्टि कि किस् स्वरूप हैं। सुन्द आपिक भीर मिल-पुलित मास की या सकती है। हुतीसे यह सदस्त्री सपका धादरोंकन क्षीर मिन रहा है, भीर है। जिलमें धादरोंकन क्षीर मिन रहा है, भीर है। जिलमें

अपना परम हित सुन्नता है बसी कार्यको सब किया करते है। यह परमहित भगवधेमका अवच चनुसव होता है। बग-महत्तकर्ता जनसुखदायक भगवान् श्रीराम साचात् ईश्वर थे. परम-पिता थे, इसमें कुछ भी सन्देह नहीं । वे प्रत्येक चराचर प्राचीके दःख-ससका, हिलाहितका सर्वता ध्यान रखते थे । इसी जोक-हित, इसी जन-कल्यायके लिये ही वो वे अपनी प्रतिज्ञानुसार अवतरित हुए थे, फिर भवा उनके बराचर-भिय होनेमें बाधर्य ही क्या है वे केवल उनको साचार भगवानुरूपसे जाननेदाखे वशिष्ठादिके ही त्रिय न वे वरन् " मैम-मन्द्र भारता-पिताके भी कारवन्त भिय थे। यहाँ ऐसा भी कहा जा सकता है कि जब जाता-विवाको अपना हुपूत पूत भी शपक्षा खगता है, तब फिर राम तो शाक्षाकारी मात-वित-मक्त थे. इससे उनका प्रिय होना स्वामाविक की है। यह दीक है, परन्त्र श्रीरामधन्त्रश्री सो प्रर-धन-परिवार समीके अतिप्रिय थे। सारी प्रशा सदा उनको देखती रहना चाहती थी, सदा उनके पास रहना चाहती थी। डसको डनसे विद्वदनेका नाम भी सुनवे ही प्राचान्त कप्टका चलुमव होने क्षगा या । इसका वर्षांन वन-गमनके प्रसंगमें सभी रामकथाधाँमें धाला है। उसे पड़कर कीन सहदय पाठक उनके कप्टकी सहातुमृतिसे हो नहीं उठता । भगवानुकी सृष्टिमें मनुष्य सर्वोश्च, सर्वश्रेष्ठशायी समसा गया है, बापने हितेपीके प्रति कृतश्चता और श्रद्धा प्रकट करना उसका स्वामाधिक कर्तन्य है, धर्म है । परन्तु श्रशिक्ष भुवन-निय रामको पद्म-पदी भीर खता-तम भी कितना नेम करते थे. यह कुछ प्यानसे सनन करनेका विषय है। यहाँ इसी विषयका बुद्ध वर्णन करना है।

सांसारिक वीवोंके मुत्तके क्षिये भगवान् व्यवनी खीका-द्वारा माता कैंक्पीसे प्रेरित महाराज व्यवस्थ व्याज्ञा पाकर बरुकत बाब बार बार सोताओं और बन्धवसीत । जा रहे हैं। सुमतातीको उन्हें रामें वैठा कर दिन बारदी बाएस बोटा बानेकी बाहा हुई है। द्रान्य-वा दु:खका तो बाज करना हो क्या है, पर बार पटनवी पेन-पीचोंका भी हाल देखिए।

वतस्वयोग्यारहिता महास्मना पुरन्दरेशैन मही सर्वेश अचाल धोरं सबसोकदीिश्वा सनागयोगायाणा ननार प

नागयोद्याश्वरणा नमाद च (बाक्सक्शहराहर

सारी अयोध्या आज भगवान् है वियोगी बाँव र कोड़े और हारी कियाह मारने को, वर्षत्र ग्रोड-साझान वया । सभी मक्तिमान जड़म और स्थावर गयी अपता बनमें कष्ट होनेको आर्याकारे हुःशिव हैं और साबर्य अ ग्रूक भाषा. निज्ञें ह बेहामें बीट यहनेकी सार्य सर्वे

स्विकमन्द्रीहः स्वानि कारमञ्ज्ञानि व ।
वाचमानेषु वेतु त्वं सक्ति मनेषु दर्वतः ।
अनुगननुमराकास्त्वां मुदेददाविनाः ।
विकास स्वान्तिकाः ।
विकास स्वान्तिकाः ।
विकास स्वान्तिकाः ।
विकास व सम्बानिकाः ।
विकास व सम्बान्तिकाः ।
विकास व सम्बान्तिकाः ।

भगवानकी बीकार्स उसीक दिवे समे का तिवास के स्वास कर हुवादि जब नहीं सकते, बोज नहीं सकते वहाँ के हो है को का उर्वे हैं है स्वीते जो के हो का उर्वे हैं है स्वीते जो के हो का उर्वे हैं है स्वयं माजह है न अब बीवों की दे हो है स्वयं माजह है ज अब बीवों की एका कर्य हो हुए का सम्बाहत करते हैं हैं—

पद्म दून्नान्यरक्यानि स्टानीन सम्टाः। यया निजयमायद्विनिजीनीन मृगद्धिः॥ (सन् रा॰ १ । १९। १)

(बार राज्या वर्षा वरम वर्षा व

ह्यात करवासय श्रीरामने सुमन्तको आजा दी-व्यवनत्त्वसभेषु मद सीस्वरयुवाच ह॥ (वाकराक २।४६।११)

े है तील ! तुम सातथानीसे घोड़ों की देख-माज भी !' जातुक सकारवॉका जम पद्ध-पिक्योंको, इन सनित्योंको बीट खता-पूर्वोंको कृतपुषथ-चन्य अन्य भन तेव ही हैं। जिनके जिये स्वयं भवजाल्—

क्दाहं पुत्ररागम्य सरस्या पुण्यिते बले। तृगयो पर्येटिम्यामि मात्रा पित्रा च संगतः॥

रूप्याप्यामं सात्रा (येत्राच्य सँगतः ।। (या = रा = १।४२।१४)

- बरका उनसे दुर्नामसनकी उत्कथरा दिसलीते हैं। निगर्गत पुरका गुण-गानका कौन चएनेको पवित्र करना वृह्मी बाहेगा । नगर-निवासी शिचित, सन्द अवसञ्जदायसे रु विष्ट घोर अंगळमें रहकर हिंसायुक्तिसे सीयन निर्वाह अनेबाडे इयामाधा-हीन मनुष्य भी परम नक्ष और सेवा-वासावे बनकर रामके दासोंमें उच गिने जानेवाले धन वते हैं, यह सारी बीखा चपने भरावत्-चरकोंमें प्रेम बैर इनकी (चार्योकी) दीन दवालुताकी ही है। एक नगरपत्र मोर हानिकर यूर्व निन्दनीय पर कड़िगत भारत बादको भी लहाँ इस छोदनेमें असमर्थ होते हैं में दन मीजोंका-जिनको इस संगती कहते हैं--र्वत बर्बकर अपने अविधिकी सेवामें हाथ लोदकर में हुए बसकी भाषाकी प्रतीका करना कितने चाश्रपंकी ात है ! जिनपर 'उसकी' कृपा हो उनका देवता-नहीं ि-लयं महा, वन जाना भी कोई अमीखी बात । महत्त्रहे करद विराधि सम ।' वह 'तो अर्थु अकर्यु निया कर्तुं समर्थं है।

षर बात्वार गुरावके साथ गंगाको पास्कर आये गि गारते हैं, सुमत्यको यहाँसे और कानेके जिये यस रहे हैं। सन्त्र सुमत्यको राजा और राजमाताफॉके तन्त्राय वर पदाओं और घोड़ॉका भी हु:स स्मरण हो गा है भीर षह करता है—

मम वानतिनोगस्यासन्बद्धन्धुजननाहिनः । इयं रयं रवया द्वीनं प्रनाक्षन्ति हनोग्रसाः ।।

(बा॰ रा॰ ३ | ५२ | ४७) (बा॰ रा॰ ३ | ५२ | ४७)

है तान ! ये घोड़े जिनकी देख-माल मेरे कवीन है, त बारवरों हो हो छे चलते हैं। जब बाप कोग कोई इस रयपर नहीं रहेंगे तब वे घोड़े रयको कैसे ले जायेंगे ?' सचमुच रामके जानेके बाद उनके विधोगर्मे घोड़ोंकी बड़ी इसी दया हुई.---

देखि दक्षिन दिसि हम हिहिनाहीं। जनु बिनु पंस बिहँग अफुराही।) महिं तृन मरहिं न पेमार्ड जरु मोचार्ड हो चनबारि। स्याकुरु संघेठ निषाद सब रघुबर-बाजि निहारि।)

× × >

चर फराहि मन चेर न चोरे। बनमुन मन्हूँ आनि रम और।। अडुकि पर्राहे फिरी हेरहि पैछे। रामिन्नेगानिकत हुक तीछे।। जो कह रामु राजन बैरेही। हिंकीर हिंकीर हिंत हैरहि रही।। बाजि-बिरहमति कहि किमि जाती। बिनु मीन पनिक विकट केहिमानी

> मधेठ निषाद विचादवस देखत सिषद तुरंग। बोर्कि सुसेवक श्वारि तब दिए सारधी संग।।

वे वेचारे जियर राम गये ये उचा हैरा-हैल एंस-करें पर्याची ताह विकट हो बार-बार दिनदिनाने करें। हु-जड़े मारे उनका खाता-पीताडक हुट गया। मिलाँचे प्रमार प्रमुख्याता बढ़ते जाते। राम-दिवाइंड पोड़ाँची रचन ऐसका उपस्थित खोग भी विचार-मान हो गये। ये बन पष्टाखाँके हुकहुण सममये करो, वो धौरामान्ते हुनना मेन करते हैं कि उनके विचोचमें चाने गरीर-मायकी भी राचा नहीं।

योदे यह देलके किये बारलार करीती वनकर हथार-कार देलते हैं कि करी कियो भोरते राजकर नहीं हैं कि यो से से राजकर नो मा तो वहीं रहे हैं वा पात दो करी बोच को जाती की हैं । वे उनके दर्जन वाले और उनके बचनायल पुरनेको स्वाइत हो रहे हैं। शांतिष्ठित लंगकी जानकरों के बार क्यों के हो के दे वार्तिष्ठित लंगकी जो दरते हैं है वह उनके दे कि लंग हो ती है वहीं दर करा पोहों की हो ती ता तंत्र पुमकर पोहों भोर पर है (हर) कार्ट हैं, और गर्नन पुमकर पोहों भोर दे तरे हैं हि एक बार किर सामजीके स्पूर्ण हो आहे हैं । सामचा विशोधमानित उनका पुरत्य कार्य है वह है हि एमी हैं पूर्ण राजकर कार्य कार्य की सामचा बाता पुन पाने हैं में हैं पर राजकर कार्य के सामचे की स्वाइत कार्य के सामचे की सामचे कार्य की सामचे की सामचे की सामचे की सामचे हैं । बार पोहों की दिक्कर स्थापन क्या वर्ष के से हो सामगा है है के मिद्रान क्या कार्य कार्य कराई है । बार कार्य कराई कार्य होता है है अप होता कार्य कराई कराई है । कार्य कार्य कराई है । कार्य कार्य कराई है के मिद्रान कराई है। कार्य कार्य कराई है । कार्य कार्य हमारी हरा है राजकर कार्य कराई हो के से पीरान कराई हो हमार कराई हमारे हराई कार्य कराई हो के से पीरान कराई हो कार्य कराई हमारे हमारे हमारे हमें से पीरान कराई हो हमारे कराई हमारे हमारे हमारे हमें से पीरान कराई हो हमार हमारे हमारे

रपमें पैठे सुमनाके साथ कुछ धातमियोंका होना कण्यन्त भावरयक है, म मालूम शस्तोमें हन पोहोंको क्या हो खाय, उन्होंने रथके साथ धपने चार बातमी मेज हिये !

पारको देशी घपने इम पदाओं के विमल प्रेमकी दुर्खेम फ्राँकी । इस मनुष्य क्या इन यह कहलानेवाले पोड़ोंकी बराबरी कर सकते हैं है थे परम घन्य हैं जो समके वियोगमें इसमकार धपनी सुधि-सुधि को होते हैं ।

कस्तु, किसी प्रकार शिरते-पहुचे घोडाँने रचको क्योपायतीयक पहुँचा दिया । मुक्तन ग्रहबॉर्ने चले गर्थे । तित, थेचारे योहे राजचियोगको और जिपक न सह सके । जनकी इस करवाएची दराका व्यानकर ब्यानेकी यातका शिलपा-पहना कठिन हो जाता है, हवीसे बाएका इन्द्र पटा वहीं भिसता। ननाने उन बोहोंने भी परस्थानिकी तरह वियोगमें व्यन्ते प्राय सो पुनर्दर्यनकी भागासे भरत और कौसत्यकी तर्ह मकार कीवित रहे।

व्यय-वानोंके प्रेमकी बात हो प्रतान्ते सर्व बीमुलते कही है, उसके दिग्यमें इम स्या कों। वि वीचराजकी कथा हो प्रसिद्ध ही है, उनका । बरवन्त प्रेस था।

यदि वे सबके परमध्य प्राचाराम न होते 'बीव परापर बावत केही' क्यों कहा जाता ! वे हो व ही सबके फाल्मा होनेके कारण सर्वप्रिय हैं ! जय ! सर्वाप्रिय श्रीराम कीर उनके प्रेमियोंकी!

्रामायणके कुछ रत्न

(क्षेत्रक-त्रीयुत्र रामायणशरणयी रामायणी)

मंगळ मनन अमगंत-हारी । इन्हु सो दसरय अनिर-निहारी ।। | अनिर्वेचनीय है । इसकी अन्नेकी घपेणा गर्ही, वैसे ।

हिंदि हिंदि रामायवका महत्त्व कार्तवेवनीय है। इसकी कार्नेकी भी मिर्चमा जितकी गापी जाय ठउनी ही योची वार्तेको हिंदि हिंदि है। में इस रामचरिट-रवाक्टमेंसे उक् रव रामाययाहके पाठकोंकी मेंट करता हैं। इपया स्वीकार करें। जाम की

१—'श्रीरामचित्तमानस किस मन्त्रार्थपर है, जैसे श्रीमझागवत हादशाक्षर मन्त्रपर है और श्रीयाज्मीकीय रामायण गायत्रीके बीपीस अक्षरों-पर है ('

'श्रीमानसरामाथच 'श्रीतामाच ममा' हुल वहाचर तारक मन्त्रराज पर है। परम्तु गुरु है। 'चर्चाना' इस मन्त्र स्रोक्सें 'र'कार 'ब'बार चिन्दुलहित रामनीच है चीर गाँच चरप गाँच कापडोंसे हैं, चीर चन्नका विसमें उचरकावको चन्नों है।'

२-- प्रन्यकारने इस ग्रन्थको 'घ' कारसे क्यों भारम्म किया!'

'अत्यके काहि चौर करवर्ते भी बकार ही है। वकार समृत यीत्र है, इससे कीरामचरितमानसको 'कमियमव' मृचित किया। जैसे कमृत पान करनेवालेको कुसरे स्स-मान करनेकी व्यपेणा नहीं, वैसे ही श्रीरामचरितायुत शान अर्थे वालेको दूसरे साधनकी व्यावस्थकता नहीं है।

२—'तुल्लाकृत रामायणका श्रीरामवरितमान नाम कैसे पड़ा ?' 'इसको श्रीशिवतीने स्वकर बहुत समब्बड करे

इसका आशावजान एकर बहुत समान भानसमें रक्ता, किर सुध्यसर पाकर मीरिवासे करा।(मैं) से 'रामचरितमानस' नाम पदा।'

ध—'श्रीरामचरितमानसमें गीतोपहेराका वर्षे कहाँ है ?'

'अग्रिसम्बदितमान्तस्ते गीताका आचारावा शासावार्यः व्यापन बहुत बमाद सिखता है। विकारमाने में वा बाँ वा वा बाँ वा बाँ

धे वर्तनवरषका रूपकों वर्धन किया है नह 'की व्यानकृताता' है। उत्तरपरमें पर होहेते वह होहेतक की क्षयोज्या-क्षित्रकें प्रति सीरपुनाधर्माका वरदेश 'पुरस्तवन्तीता' है। III राजकारके करतमें 334 वोहेते 354 होहेतक 'समोताकीर 32वोहेते 32व होहेतक' क्षायोजाकीरता है।'

५—'मनद्रपी द्रपंजमें मल क्या है ?'

'काई दिशय मुदुर सन कागी ."

१— मनरूपी द्यंणके साफ करनेका उपाय स्वाहेश

'बोगुरुरेडके चरचकमखर्की रख ।' थया---

'प्रत मन मञ्जु मुकर-मल दरनी।'

७—'परमेश्यरका कप हवयमें कैसे आ सकता है।' 'हुनिर नाम कर बिनु देसे। आरत हदय सनेह बिसेसे 11'

<ेर्पारामजीको घरा करनेका उपाय क्या है है बौर किसने उन्हें यहा किया है'

चुनिरि स्वतपुत पावन नामू । अपने बस करि राखेडु रामू ॥ । ६—'श्रीरामजी कैसे रीमते हैं'

'रीसत राम सनेह निसोवे।'

दुम रोहाहु सनेह सुठि चोहे ।" 'रोहाँड देखि बोदि आतराहूं ।"

१०—'पापाँसे मुक होनेके विषयमें श्रीरामचरित∙ ^{तिनसमें} क्या कहा है ?ं

भिषक् वापुना म रहाई। अनम अनेक सीश्वत कथ दहाई।।।। दौर कांग्रेत केंद्रिकट पत्तन। आम अविक्र कथ नुरूज महाकन।।। पत्त कि रहे नीति मिनु कांग्रे। अय कि रहे हिस्-लित ककांग्रे ।।। 'कर्युक क्षेत्र मेर्ग्य कवाई। जनम कोट कथ मार्की तकहीं।।' 'कराका भिक्त क्षीत्र कवाई। जनम-दरस मिनि पत्तक टर्स्ड।।' 'रा-प्रोत भित्त क्षीत्र कवाई। जनम-दरस मिनि पत्तक टर्स्ड।' 'रा-प्रोत भागापामी साहज स्थकप किसको

'स्पूब, 'स्पा चीर कारवा ग्रामित सीनोंसे वरे वा कोणादि तथा सीनों सुपोंसे परे निष्क, कायबा जाअन् तु सुपीत कारवामांसे कतीत चीर तुरीय कारवामें व मेनक सानवरकी साधि ग्राम्य साविद्यानन्त्रधनस्थरूप वहस्त स्वस्त है। क्या---- 'ईंबर अंस जीव अविनासी। चेतन व्यम्त सहज्ञ सुखरासी।।' 'मम दरसन कऊ परम अनुषा। जीव पत्र निज्ञ सहज सरूपा।' 'सकर सहज सरूप सँभारा। ठामि समाधि असण्ड अपारा।।'

१२—'घेदमें परमधम किसको कहा है ।' 'शुर्ति कह पान परम उपकास '

भाग परम कृति विदित अर्दिसाः

'सिर घरि आवशु करिय तुम्हारा। परम घरम यह नाम हमारा १३—'स्वन्त किसकी प्रशंसा करते हैं !'

'पगहित काणि तर्जे के देही। संतत संत प्रसंसीह तेही ।।'

१४—'ईश्वरका प्रण क्या है ?' 'तन हमार सेवन दितकारी र'ममत्रन सरनाग्त मयहारी ॥'

'त्रन हमार सक्त हतकाराः ' 'ममत्रन सत्नास्त भयहाता ।। १५—'कीन मञुष्य मवसागरमें नहीं पड़ता !'

'मव कि परहि परमातम विन्दक ।' १६---'भावस्तागरमें कीम क्षोच पडते हैं !'

'मबीसन्यु अगाव परे नर वे। पद-पंत्रअन्त्रेम न ने बरते।।' १९—'संस्तारमें यश कैसे मिलता है और अपयश

केसे ?' 'पानन वस कि पुन्य निनु होई। विनु अब अग्रस कि वारी कोई।।।' १८—'संसारमें किसकी मकि विना सक महीं

मिलता ?' 'मुति पुरान सदग्रन्थ कहाहीं। रचुपति-भगति विना सुस नाहीं।।'

भुद्धत पुरान सदमन्य वहाहा। रचुपान-मनात लगा पुना नाहा। । १६—'जीव किसके विमुख होनेसे सुख नहीं पाता ।'

'राम-निमृस सुख बीत न पानै।' 'जीव न कह सुख हरि-जितिकूका।' 'जिमि सुख रुद्दै न संकर-प्राही।।'

२०—'ज्ञगस्में किसको कोई पदार्थ दुर्लम नहीं हैं!' 'परहित बस निनके मनमाहीं। तिनकहें बग दुरतम बहु नाही।।'

'हरि-त्रसद हुररूम कछ नाहीं।।' २१—'जगतुर्में सबसे दुर्रुम क्या है !'

२२—'मनुष्यको संसारमें सबसे बड़ी हानि क्या है!' 'क्षति कि वस ग्रह सम क्छु ग्रहे।

न बाहसम्बद्धानारः स्रोतेय न सम्बद्धि वर दनु पार्रे॥। २३—'परायी निन्दा करनेका क्या फल है है'

'पर-निदा-सम अघ न गरिसा ।" 'रावकी निन्दा जे नर करहीं। ते चमगादुर होड् अवतरहीं ॥'

२४—'शोक करने योग्य कीन मनुष्य है है'

'सो घनीय रावही विधि सोई। जो न छाँडि एक इरिजन होई॥' २५—'श्रीरामजी कय कृपा करते हैं ?'

'मन कम दचन साँदि चतुराई। मजत क्रमा करिहें रमुसाई। "

२६—'श्रीरामजीको स्वप्नमें भी कीन अच्छा नहीं लगता !

'सिव पद-कमक त्रिमहिं रति माहीं ।रामहिं ते सपनेहु न सोहाहीं ॥' २७—'श्रीरामभक्तके लक्षण क्या हैं रैं'

'बिनु छक्त विश्वनाथ-पद-मेडू। राम मन्तकर रुखण यहू ॥ । २८---'किस उपायसे जीय शोक-रहित हो सकता है!' 'चहुँ मुग तीन काल तिहुँ लोका । मये नाम अपि जीव असोका ॥'

२६—'संसारमें अभागी कीन हें !'

'सुनहु बमा ते लोग अमामी । हरि तजि होहिं विषय-अनुरामी ॥ ॰

३०—'बङ्भागी कीन हैं हैं

'सोइ गुनग्य सोई बड़मागी।जो रघुबीर चरन अनुरागी ॥' 'रमा बिलास राम अनुरामी १ तजत बमन इब नर बड़मामी ११°

३१—'श्रीरामजीका स्वमाव कैसा है ।'

'अति कोमंत रघुवीर सुमाऊ। अद्यपि असित टोककर राऊ॥' 'सुनहु रामकर सहज सुमाऊ। जन अभिमान न रासै काऊ॥° 'दमा सुमाद राम जिन जाना । ताहि मजन तत्रि भाव न जाना ११० 'अस सुभाव कर्तुं सुनी न देखाँ। केहि खगेस रघुपति सम लेखीं 🎹 ^५मैं जानी निज नाथ सुमाऊ। अषतथिहुपर कोह न काऊ॥ दाम सुमाव सुमिरि बैदेही। सगन प्रेम-तन-सुधि नहिं तेही ॥°

'आसु सुमान अरिहु अनुकूछ ॥। ३२—'होक और परलोकों सुसका क्या उपाय है ।'

'ओ परहोक इहाँ सुख चहहू। मुनि मम बचन इदय इद गहहू ॥ 'मुलम मुसद मारग यह माई।

मगति मोरि पुरान श्रुति गाई ॥

केवटका द्यतुल प्रेम

(वेसक-रं• औरामनारायणमी ग्रुक साहित्य-रत) 📝 न, ब्याधी 🖁 परम सनोहर मगदती मार्ग

र तटपर देखो कैसी रमणीयता है। ह खबीकी द्वाद्य द्विटक रही **है**। हमागर, बदार बोहामूडी बीमिधिबेश दिशोरी और बपयाबालबी सहित प्रवारे हैं। पत्री,

पावन चरण-रत्न ,मसकार पारवंक र वन्मान्तरोंके धनन्त क्लुप-पुत्रको घो हार्छे। सम कि बाब इस सापस वेपमें ' हिनु सेवा वो हवे हाँगर चरित कोड नाहीं ।° से भी विशेष उदारता हो ।

वह देखी, वही हैं हमारे प्यारे शम! वही हैं र इदय-धन !! शीमें भा रहा है कि चरण पश्चका मे रो वें और दन कोमब धरुण परवाँको मेमानुपाँने भो दार्जे ! पर नहीं, ठइरो । इनका ठवित प्रश्विती ह उत्करठासे बाट चोह रहा है, उसका हतीया मनमन करमेको चातुर बैठा है ! चर्के उसकी सीधी-साही बन्दर वायी सुनें और उसीके कर-कमबोंद्वारा प्रेमसे धोर्व हैं चरकास्तका पान करें ! बाब प्रेम-पारवार मह हुए मक्तके दश हो प्रेमका पाठ पहार्वेगे चौर चरवे वन माब प्रकटकर सवसागरसे भी पार बगायेंगे।

बाह रे सनवले बदमागी देवट ! धन्य तेरा प्रस्त्य हेर! धन्य वेरी निष्कपट भक्ति ! घन्य तेरा चन्त्रा हर है-खेक देद सब भौतिहिं नीचा । जासुर्छोंह हुइ टेर्ग्हिसी**या**।

-इस चौपाईको चरिताये करता हुमा मी सरवार^{ने हुँदे} बालकाओं में सीवाज़ोरी कर रहा है। जिन्होंने सुर बमुर सर्व 'प्रवस कर्मकी दोरीमें' वाँच रकता है, वन्होंको बाव है वार्तों ही वार्तोमें बाँच किया, और बाँचा भी ऐमा हि हार्र विता-पितासह शक्का बन्धन मुक्त करवा विवा । धन्द

माँगी नाव न केवट आना । कहेरी तुगहार मामु में रून। माव माँगवेषर सुचे राप्योंमें साद रूकारी है फिर एक तुर्रो तानाअनीका भी 'तुम्हार मानु वे अव क्या अब है कैसा सीम्य और सरक्ष भाव है । जिन मह मृदुटि-विजाससे ही सृष्टिका जय विकाश होता है। हो हरि अक्षायदका नायक है,राजराजेरवर है, बमपर वह बार्डर्ड में सुरुदारी मीयतः सुब व्यानमा हूँ । सहज्ञमें मुख्यी बाउ है प था सकता। फिर इतने पर भी चुर नहीं रहा। कार्ने हरी

पहि घटते योतिक दूर अहै कटिकों जल बाह दिखाइहीं जू। परसे पगड़ीर तरै तस्नी

घरनी घर क्यों समझाइहीं बू ११ युटसी अन्तंत्र न और इन्छ

टारिका केहि भाँति जियाइही जू । वह मारिए मोडि बिना पर धोप

हीं नाथ न नाव अद्राहहीं जू ।।

महाराज ! गंगाओं में जलको गहराई कमरतक ही है। बारे, में निकटका मार्ग दिकता हूँ। बार उसी मार्गले विक्रम बाहरे, नावको जलरत ही क्या है ? में तो सरकार क्यम होन हूँ, नाव ही मेरा रोजगार है—

ंधीं प्रीतपती सन परिवाद । महि वानी कहु और कवाद ।।
पी सेरी बीसे प्यारी जीविका है ! म बाने प्याप-क्षीते किसे रावा-बाद इससे उत्तर गये हैं। इसे किसीसे पीत्रक को बरान नहीं है, स्वतर तमे हैं। इसे किसीसे पीत्रक को बरान नहीं है, स्वतर कही को का कार 'बारका क्या काम होगा, सोवा बहुत हनार-बारास है पेंगे। क्यार को हसीसे काम है. सहाराझ !

विनित्र तुनि-वर्ती होए जाई। नाट वर्र मोरि नाट वर्डमें 11 वर्तित तुनि-वर्ती होए जाई। नाट वर्र मोरि नाट वर्डमें 11 ऐसा काम में नहीं करना चाहता। चित्रवे वहरू, पारको नह नागे बतवा हूँ, सुन्ते तो वर्षना काम करना है भीर कामको भी विजय होता होगा। पर सरकार, में

भाषको थों ही नावपर नहीं बैठा सकता । पत मरी सहरी, सकत शुत बारे बारे, केवरको जाति कछू नेद ना पढ़ाहरीं ।

सब मरिबार मेरो याही कामि शताबू, हो दीन विज्ञहीन केसे दूसरा गढ़मही ध भैननकी घरनी ग्यों तरनी तरील मेरी.

ीतमधी घरनी अयों तरनी तरेशी सेशी, अभूसों निवाद है के बाद स सद्वादहीं ।

हुं गती है इंस राम रारोसों सींबा कहीं दिया पर बोर गांव गांव मां कहारही।। भार बानते ही हैं, भारके बारवी मुक्ति हुते हों मेरी यह की बन बायगी। फिर बाब-मणोंको हो रोसे कहींने नेत्रेगी हैं हैं, एक रणांव है-मुझे करवा को क्षेत्रे हीसेव ।

प को बन कारागी। किर बाज-स्पांकि हो रोडी कडींसे रेतेगाँ हो, एक रुपाय है-मुमे करण को केवे ड्रीडिश रुप्तुन केश कहार तार स नाम उउराई वहीं, नेदि राम राही का रहार कार सम्बद्धीं कहीं। बढ हैंद साहु रुप्तु के उडराने न चार्च वकरीही, बढ हैंद साहु रुप्तु के उडराने न चार्च वकरीही, बढ होने न हुर होदान नाम चच्छे कर बडानेहीं। ग्रीर क्या कहूँ । वह सरकारकी सीगन्य काले कहता हूँ—नाव, वैर घोषे विचा तो पार नहीं उतारनेका । सूरेट सरकार ठेरे-टेडे ताक रहे हैं, मखे ही वे बाद्य भारकर मेरे माद्य खें हैं। में माराजार्कमा, पर बाद्य बच्चों के तिये नाव तो बच्च वादगी।

वच वायमा । वीं जुनु पर अम्बिता चहुत् । मोहि पर-पहुम समान कहत्।। वह र 'पह पहुम'के सम्बे ग्रमारी ! क्यों म हो, मान वेसा प्यारा नाम अपेक राम-भक्त हो त्रान्तीमर्मे सम्बाप है। अप्य तेसा अमायह ! जिन करवे प्रमान क्रिक्स क्यानी काइकी कुमारी सीताओं सम्बन्ध करवे स्थानिक

किंवताले आग्र कर सकते हैं। बाज तूने चपने सरक प्रेमसे बनको आग्र कर जिया। ज्ञानम्बकन्द भीकीसलकियोर बीराम घपने वनकी प्रेम-बचेटी जरपरी 'बाबी शुनकर अन्त-सन्द शुसकराते हुए बोखे-

चरवोंकी पृष्टि जन्मजन्मान्तर तपरचर्या करके महर्पिगदा

वेगि मानु वह पाय पसाकः। होत दिहंब उठारहि पाकः।। वस, यब क्या था। मकने मनमाना पदार्थं पाया।

वस, अब करा या। सकत सनसाना परार्थ पाया। बह प्रेममें विद्वल हो करवाँपर तिर पहा और सगा प्रेमानुकांसे ही पावन करवाँको पकारने। इसके सानन्द्रका धार महाँ रहा-- 'कन्य रह बहु शरस पाया।'

श्रीताममीने कहा—'वाई, हमें देर हो रही है। वह क्या कर दे हो। वहने वार तकार हो।' माई कार-बार करनेयर केट दरिक्ष बरीजा के बावा और बोक्का कि 'वाय! करते की की की कार्या मार्ग को कि बायाओं पढ़े हो करवा दिश बा। करा ग्रास्त कर दें, मार्ग भी जो कुमारे तो गया ही नहीं कार को कर दें, मार्ग भी जो कुमारे तो गया ही नहीं का संबंध मार्ग कर होता, तक-कुमारे कार्यों वाद तो स्वत्य होता मार्ग होता, तक-कुमारे कार्यों चुमा क्रिया, तक बाद निकेती।' मार्ग अस्तार वेंद्र में प्रमुख्य के बाद निकेती।' मार्ग अस्तार वेंद्र में प्रमुख्य के बाद निकेती।' मार्ग

वर्ति वानन्द उमनि बनुशाय। चान-धोष करात स्टाः।।

केवर कामानगुरी साथ हो जीरे जीरे जारें के लाग को हात्र है। कानव सेतायावन केवर, बात मेंगे सीतानगुरी हेनाया भी कवाजा रहे हैं। जिन काव्यों के मान मामने ही जीवानकात्रकारिने कारीसामये पर्देश्वरी कावत्र 10 वर्षेची भावित्र पत्र को थी। जो क्या कार्यक्र मामानुके हहत्व-आनमी लोह तिल्ला करते हैं, काव त्ने उनको इतना यशमें कर शिया कि बार-बार कहनेपर भी गृही छोदता।

देवगय भानन्द्रसमा पुष्प वर्षा काते हुए सुक्तकारते

'यहि सम् पुष्पपुक्त कोड नाही ।'
केवरने स्व राष-राषकर पाय कार्ये और किर—
पर पसारि जरुतान करि आपु सहित परिवार ।
पितर पाठ करि प्रपु पुनि मुदित तमन्त्रेत् पार ॥
पार से जाकर केवरने गुनः प्रयास किया । असु सङ्घार्य ।
कुल चेना चाहिने, फिर क्या में हैं व्यान्साता औत्रानकीशीने
प्रमुक्त समका सङ्कोष कानकर—'यनि-मुदर्ग सन मुदित

वजारी ।" सरकार केवरको उतराई हैने व केवर बढ़ा चालाक या, उसने कहा— नाथ आजु में काह न पाता । निटे दोप-दुस दारिदन

नाय आजु मैं काह न पाता । निटे दोस्तुस दारित बहुत कारू में कीन्डि म जूरी । आतु दीन्डि विशेषनि मर्टे अब कर्छु नाम न चाहिय मोटे । दीनदयार अनुमद किरती बाद भोड़ि बोद देवा । सो प्रसाद मैं सिर परि

रसने !

[मक्ति-गान] भजन कर छे, अरी रसना!सरस हो, मजन कर छे।अरी रसना।

एमकी जुनके कया, उससे कुछ सबक पा ले, पू भी भूतलमें गुर्जीसे महा सुयग्र छा ले। चन जुकी जुब तो विषयोंके विपेळे भीजन, है सुधा जिसमें भरी वन यही भीजन जा ले॥

मक्ति-मार्योसे प्रमुका हृदय हर है। अरी रसना! सरस हो, मजनकर है। मरीगा।

पुत्रप कृतियोंका पूर्ण मान करनेके छिये ; बान गुरू-गीरका गान कर रसने । 'रिसिक्तम् पूर्वजीकी भान, बान, शानवरः, मकिमरो माननाकादान कर रसने । मुक्ति मिल जायगी, तृपायगी समर-वदः सस्य, धर्म-धारणाका ध्यान कर रसने । सरस सुधाकी धार बरस रही है, बस्-रामकी कथाका रस पान कररसने !

व्याप रही संसारमें रामायणकी शकि, पाता सिद्धि अमीध वह, करता जो घर-मंकि।

> राम रटके त् सागर अगम तर है। अरी, रसना. सरस हो मजन कर है। अरी: ॥॥

जध-जब मूमि-भार भारी मरपूर होता , भूतलमें पापों भरे घड़े मरजाते हैं , तबत्तव हरि जवतार छे पसार प्रमा , हानवींको मार मार मूमिका हटाते हैं । वेतायुगका पवित्र रामका बांदित्र , मित्र, अवतक सुत-सुन मकसुत पाते हैं , राजनीति-मर्म, न्याय, धर्म, युरयकर्म भरे, धोर, रणधीर राम-राज्यमें दिवाते हैं ॥

रामचन्द्र बल-धामके बल-विक्रमका गान, बरस चीर-रस. हाल वै-बिज्ञानोंमें जान।

> मन्य भारत भी पहिलो प्रभा भर है। भरी रसना, सरस हो , भजन कर ले। भरी • ॥३ — 🙌

रामचरितमानस

(छेखक---महातमा गांधीजी)

मित्र मिल्ल सिन्न प्रवृत्ते हैं---

'रामायखंको चाप सर्वोत्तम अन्य सानते हैं, परन्तु समध्में नहीं चाता, वर्षों ? देखिये, तुस्तसीदासभी-ने स्ती-बतिको कितवी निन्दा की है। वाखि-त्रथका कैसा समर्थन हिना है। विमीचयके देश-द्रोहकी किस कदर प्रशंसा की है। बीठाडीवर कोर चन्याय करनेवाले रामको अववार वताया है। ऐसे प्रस्थमें धाप कीन सीन्दर्य देख पाते हैं है इत्तीकृतके काम्य-चातुर्यके खिये तो, शायद, चाप राम्यक्को सर्वोत्तम प्रम्य नहीं समझते होंगे हैं वर्षि ऐसा ही है हो, कहना पहेगा कि जापको कान्य-परीचाका कोई मविकार ही महीं ।

बरर्वुत सब सवाल एक ही मिलके नहीं हैं, परम्तु मित्र-भित्र नित्रोंने निज-निज समयपर को हुछ बड़ा है भौर विला है, उसका सार है । यदि ऐसी एक एक टीकाको वेदर देखें को सारी-की-सारी रामायण दोपमव सिद्ध की हा सकती है। सन्तीय यही है कि इस तरह अवेक अन्य भीर मनेक मनुष्य दोषसय सिद्ध किया का सकता है। ९६ वितकारने अपने टीकाकारोंको वर्त्तर देनेके ब्रिये घरने चित्रको मदर्शिनीमें रक्ता सीरनीचे इस तरह जिला-इसी विक्रमें जिसकी जिस अग्रह दीप मतीत ही, मह इस बगह अपनी कजमसे बिद्ध कर दे।' परिवास रा हुया कि वित्रके संग-प्रत्यंग दोष-पूर्व बताये गये। मार बसुस्थिति यह थी कि बह चित्र प्रस्थन्त कलायुक्त था। विश्वकारोंने तो बेद , बाहबल और हरानमें भी बहुतेरे रि बतावे हैं, परम्यु दन श्रम्योंके सक्त बनमें दीपोंका नुमर नहीं करते। प्रत्येक प्रत्यकी परीचा पूरे प्रत्यके रलको देलकर ही की जानी चाहिये। यह बाझ परीचा । पविश्वांश पारकार्षर प्रत्यविशेषका क्या बसर घा है यह देलकर 🜓 अन्यकी धान्तरिक वरीचा की जानी । किनी भी साधनसे क्यों न देखा काथ रामावश्वकी रिपा ही सिद् होता है। प्रम्यको सर्वोच्य बहनेका है कई करावि नहीं जि उसमें एक भी दीच नहीं है। ^{ल्यु} रामचरित-मानसके किये यह राशा सवस्य है कि प्तमे वालों सतुष्योंको शान्ति मिकी है :को कोन त्वानिमुख में वे ईरवरके सम्मुख गर्ने हैं कीर बाज जी

बा रहे हैं। मानसका प्रत्येक प्रम्न मिस्पूर है। मानस भनुभवजन्य ज्ञानका भवदार है।

यह बात ठीक है 🎏 पापी चपने पापका समर्थन करनेके बिये रामचरितमानसका सहारा धेते हैं, इससे यह सिद्ध नहीं हो सकता कि वे खोग रामधरितमानसमेंसे सडेजे पायका ही पाढ सीयते हैं। मैं स्वीकार करता हैं कि तबसीदासजीने बियोंपर श्रतिच्यासे श्रन्थाय किया है। इसमें और ऐसी ही अन्य बातोंने दुवसीदासकी अपने पुगबी प्रचित्र सान्यतामाँसे परे नहीं का सके ये धर्मात तुबसीदासभी सुधारक नहीं, बरिक भक्त-छिरोमिय थे। इसमें इस गुजसीदासमीके दोपाँका नहीं परला बनके

लगड़े दोपोंडा दर्शन धवरव करते हैं। देशी दरामें नुधारक क्या करें है क्या इसकी तुकसी दासती-से क्य सहायता नहीं मिख सकती ! धवरथ मिळ सकती है। रामवरिवनानसमें की-जातिकी काफी निम्दा मिकती है, परन्त बसी अन्यहारा सीनाबीडे प्रशीत चरित्रका भी दमें परिचय मिखता है। विना सीताके राम कैले हैं शमका बरा लीताजीपर निभंद है। सीनाबी-कारामधीपर नहीं। कीरास्या , मुनिता चादि भी मानसके प्रमतीय पात्र हैं। शबरी और चहत्त्वाकी मक्ति बाज भी सराहतीय है। रावध शक्स या, मगर मन्दोद्दी राठी थी। पुरे अनेक दशम्य इस पवित्र भवशासँगे मिख सकते हैं। मेरे विचारमें इन सब दशनोंसे वही निद्ध दोना है कि त्रवसीशसंत्री ज्ञानपूर्वंद दी-जातिके निष्दंद मही थे ! ज्ञानपूर्वक तो वह खी-जातिके पुश्रासी ही थे। बह ती क्षियोंकी बात हुई । परम्य बाकि बचारिके बारे में भी हो मनोंको गंजाहरा है। विभीवयुग्ने सो मैं कोई होर वहीं वाना हैं। विभीवयने अपने माईडे साथ शनायह दिना जा। विश्रीषयका रहान्त हमें यह विस्ताना है कि बार वे देश वा वापने शासकडे दोचोंके प्रति सहानुपनि रक्तना वा बन्हें विशामा देशमधिके बामको सवामा है . इसके विश्रात देशके दोवींका विरोध करना सर्था देलक्षि है। विश्रीच्छने रामगीची नहाच्छा करचे देखदा सदा है किस वा । सीतामीचे प्रति रामचन्त्रचे वर्णांची विर्देशना वर्ता थी. बसमें शब्दर्भ और पति-देवका इश्वयूद्ध था।

मिगके दियमें इस मानन्यकी शंकाएँ शहर बादमे बर्डे, बन्हें मेरी सलाइ है कि ने मेरे वा किसी औरके भर्षको मान्त्रतम् स्रीकात् न करें। जिस्स विरापसे हरपर्शका दो, उसे दोष हैं। सन्ब, कहिमाहिकी विशेषिनी कियी मन्तुको स्वीकार म करें।शमयन्त्रने खन्न किया बाद्धवनिये इम भी यस वरें, बढ़ शोचना शींचा पाड पदना है। बार विरशास सम्बर कि शमनी कभी युक्त कर ही नहीं राको, इस पूर्व पुरुषका 🗗 व्याप 😅 और पूर्व क्रम्पका

ही पडन-पाडन करें। परम्यु 'शर्पर्रमा हि देरेर बिरिशहण' स्थापानुमार सत्र अन्य द्रोपाूर्य समस्त्रहर ईंसरप् शेपस्पी नीरको निवाब प गुरा-स्पी चीर ही प्रदेख करें। इस तार सम्पूर्णकी अतिहा करता , गुणदीपका प्रवस्ता इमेश व्यक्तियों और बुगोंकी परिस्पितिस निर्मा रानन्त्र सम्पूर्वता केरत ईरशमें हैं से चाक्यमीय है । (मनगीनमंत)

केवटका सर्वांगपूर्ण प्रेम

(केमह-40 शीरावेदरामधी विवेती)



रम प्रनीत भीरामापवातीमें देवरका प्रेम-प्रसंग एक श्रासीकिक धाना है। बद्ध असंग्र ज्ञान वर्ष भक्ति-रस-स्वासे पूर्व है। अकिमे बार्क्यत होकर ही भर्पादा-प्रश्नोत्तम भगवान् भीरामचन्त्रने यह चरित्र मर्दारीत किया, सम्यया सीमगवान्को वी मौकापर चढ़नेकी बायरयकता भी नहीं थी, परम भगवज्रक भीगोस्वामी तुलसीदासत्रीने कवितावलीमें तो केवडके सबसे ही यह बात सर बरा वी है 🎉 वदि आपको पार जाना चभीष्ट है और चरण प्रसाना समीष्ट नहीं है हो 'पहि पाट ते भीरिक दूर नहें कटिली जरु बाह देखाइही व् मर्थात 'तौकाके पीछे छाप नयों पह रहे हैं, इस बाटके समीप ही भगवती भागीरथी केवल कटिएवँमत ही है, वह केवल कहनेकी ही बात नहीं है, मैं स्वयं धापके छागे धारो चलकर यता दूँगा' इत्यादि । किन्तु श्रीभगवानुकी तो भक्तको विग्रल मक्तिके रससे गृप्त करवा था, श्रतएव वह प्रसंग बसके धनोखे भागोंको प्रदर्शित कराका प्रकट किया है।

कह सम्बनीकी यह धारणा है कि निपादराज धौर श्रीचरशासूत पान करनेवाला देवट दोनों एक ही व्यक्ति है। यह घारका चर्सगत-सी बतीत होती है।

केवर यसंग को जीभगवान् जीरामचन्द्रजीने पुनना होनेडे वधाय--< बरवस राम शुमन्त पठाये। सुरसरि तीर बापु चित्र वरे माँगी भार न केवट वाना ।"""

इत्यादि स्थानसे भाराम होता है भौर--बहुत बीन्ह प्रमु स्खन तिय, नहिं बलु हेवर है। । विदा कीन्ड करुनायतन, मगीत विमल वा देइ॥ -पर समास होता है। 'बिदा' शब्द मी इस वाव श्यक्षन्त बदाहरण है। और निपादराजका प्रसंग---

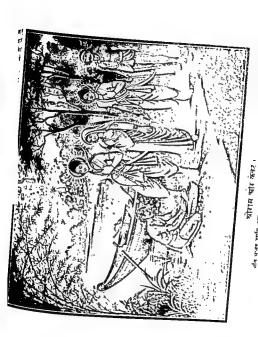
'बहि सुवि गुह निवाद जब पाई'-से मारबस होका तन रघुकीर अनेक निवि ससहि सिसावन दिन्ह । शाम रजायस सीस धरि गदन भदन तिन्द्र हीन्ह् ॥ -पर समाप्त होता है। पुनः वृत्तरे स्थानश भी-उत्तरि ठाढ़ भये सुरसरि हेता। सीय राम गुह रूसन समेगा।

केवट उत्तरि दण्डवत कीन्हा। इत्यादिसे भी यही प्रमाणित होता है दि हेवर और

गुद्द दो व्यक्ति हैं। कारण कि पाँच ध्यक्ति नौकासे, उत्तर हैं सीता, राम, गुह, खबमक भीर हेक्ट। हेक्ट हो हैं (निपादराज) की प्रजामात्र है। @

* कथ्यात्यसमायकर्मे यह प्रशंत शत्काण्यमें बहलीहारेंक ग्राट ही वनकपुरके राखेने ग्राप्तार रोनेके स्वर आत । अहस्ताका पाषायतं लाविषको हो जानेके कार्य जासपास बका हो बढा मन करा वा, वाँबोर्क रहोकते साम होते ही हत विद्या प्राप्त के लाविषको हो जानेके कार्य जासपास बका हो बढा मन करा वा, वाँबोर्क रहनेकते सत्त हरोते ही हत किया था कि रामके चरणा-रजसे पत्थर ही स्त्री बन जाता है, बतयन नहीं केवट कहता है-

क्षालवामि तव पारपंकनं नाव ! दास्तृक्तोः किमन्तरम् । सानुशीकरणनुवैनस्ति ते पारपौरिति क्षा प्रशैवती व पादामु ने ते विमल हि ऋत्वा प्रशास्तरं तीरमहं नवामि । नोचेचरी छ्युवती मलेन स्वाचेदिया। विदि कुटुन्यहातिः ॥



क्षीत्र पानक प्राप्ती अनुस्ता। वात्र सराज्ञ प्रतासत्त्र । वार्षित्र सुमत्र तुरु सक्षत्र सिहाहा। विस् सम्म पुन्य त करात्र ।



वरोंडे प्रेमवरा होकर ही करते हैं । वेद-राज्य-पुराय सभी लगुव मकड़े प्रेमकी गाया गाते हैं । डीक हो कहा है— बाड़ी प्रवासस विरोधि सिव नाचत चार न पानी ।

कातक ताल मजाइ स्वाल-जुवतिम तेहि नाच नचाये। ।। मगवानु नारवजीने भी प्रेमके विषयमें यही कहा है

डि-'शर्तिरचरीर्द प्रेमस्वस्यम्' (मा०४०६० ७३) रैबा बाय को समय मारसमक्तिसूत्र 'ग्रेस' राज्यस्य हो रैड ह्या निवस्थ हैं। देसे सन्तिर्धमनीय राज्यस्य को प्रत्यक्ष ^{स्या} भी स्वर्गात हैं, जस ग्रेमकी महिमा कहकर कीन पार

य तका है। मेमका स्वरूप, मेमकी शक्ति, मेमकी मधानता, बेनका साथन, मेमकी दया हुत्यादि अध्येक दिख्य ही शहर की दिखते की खाँ हैं | किन्तु हुन संखयर यहाँ थोड़ा थोड़ा वेकता भी बदिन हैं तथापि केंग्रस्ट मेमको वर्ष्युक देवरों से एक धायरर बराना बसंगठ नहीं होया।

'हेबरका मेम' जानमत है, केबर कीर जानके साहरपका हैका कानेसे इसमकार तुखना होती है कि जानका क, मदतागरसे पार तथा मद्यानीशकी एककपता होना । हेबरका यह कथन कहा बाता है—

हुम केन्द्र मनसागर केरे। नदी नामके हम बहुनेरे।। टुम्हरी हमरी कस उउराई।गापित नापितकी बनवाई।। सरा है, केवट शब्द हो जानका योधक है-केवटके प्रेममें बारोकता, निर्मयता, बदासीनता, बोठता, निष्टुपता आदि गुण अलुस्म सारस्यता चोठक हो क्यां केवटका प्रेस ज्ञानसम् है को अधिका प्रधान कावड है। केवटका-सा सुदापना संग्वसम्य सुध्यनमा श्री संसादि

इन शब्दोंमें सरण-सारण और साहरयताका भाव

केयरका सेम झानसम् है जो अधिका मधान कार है ।
केयरका-सा झुहारना संगत्नम झुम्मान भी संसार के
हितासमें हुने निने मधीकाँ जो हो मही हुन्या है। एवं हिन सहारत विकित्त निक्र मधीकाँ जो हो मही हुन्या है। एवं हिन सहारत विकित्त निक्र सा, जह सोनेकी मधीने कह मधी उन्होंने जीसनवार्ड पद-पद्ध चलारे थे। कि सगवार् कमक्वोति विकाल है हुनी प्रयोज महाबन करने बोक-हितार्य उस पारन पराशहरूको तित कमयदान मर बिया या, जदकरूर योगिरात विदेशको भी वह दिन दिलायी दिवा या, जब कर्सोंने—

बहुरि राम पद पंकन कोने । वे हर-हरय-कमतमर्दै गोवे ॥

इन सब आव्यविधि महापुरुगेंने मधु-पर-मरसीरद घोचे सारत्य थे परन्तु हस कैस्टरी तो घोषाने हुए घो है है है। सतदक बत्या पीतेशते ही चर्य दुक्तनेवाडेंने क्या घोनेडा निहोग करते घावे हैं। किन्तु यहाँ तो घरण दुक्तने-वाले -हैं धोनेवाडेका विश्वन-निहोग कर रहे हैं। तम्ब है निक सा अकि निहास करते हों। स्वापना करता है।

भ्रेमको क्यार् सण्यात्रम् भाषात्रहरूत, प्रमिन करका प्रधानतः बारह बतवायी हैं । अन्तिग्रांमध्य महत्त्रमा गोलवाधी श्रीतृक्तीरात्यमी केयर-असंगर्म मेमकी बारहीं ह्यार्ड वर्षन की हैं । सक्से पहची मेमकी 'कस' करा करी गयी है—

सोह हपानु देवरहि निहास। बेहि दिव जन रिट्ट पाने पीस।। वहाँ देवरदे प्रेमकी 'वस' दरावर वर्षन है। 'दस'

क्लार्स सायक कर 'गुल-साम-करण' रूप बीज बीजा है जब वह सायाप करकारीयर दोसक नायकते प्रमुख्य बाजा है। पाने वह सायाप करकारीयर दोसक नायकते प्रमुख्य बाजा है। पाने वह संस्थारिक करकार केरते वहाँ सम्पादार कर्या पानिकार किया है। पाने वहाँ पानिकार केरते हो जाने पहाचा जिला, जिला वाला पोने हैं सिमारी उसके बीजापार हो में बिरार मारा किया। में साथ क्षा किया। में साथ क्षा किया है ना है ना

मानीकीरायामस्पर्धे 'बरान-मारत' मांगा मही है, बरानु विकासक ग्रास्थे माराने मार्गब (बंदा) में मार्गिश में है ते हो स्थितको सार मार्गिक है। विभारताय करी दह बणा है। हमार्थे भी वही जिस होणा है कि हर मेर केश से मार्गिक है। मिरों सुमार्थे हिटेंग आजना भी में होणीतीर मीचियारों बार्क कहा में सुमार कराव से देश-सम्मारक का धर्म है जो झर्मात् जो वस्तु बान्द्वित है उसीकी चर्चा करना, उसीकी प्रासिका उद्योग करना 'यत' दश है। जो प्रमु अवसि पार गा चहहू। तो पद-पद्म पड़ारन कहहू॥

इसमें 'पत्' माचक 'जो' ग्रान्द है, उसका निजाह यहाँ फैसा सुन्दर किया गया है क्यांत को शब्दमें प्रेमको 'पत्' देशा समायो हुई है। गोससी 'कांकित' दशा-मानको मसत्त करनेवाकी दशा है, जिससे गुरू-मानादिसे कवा मय सारि दूर होका ग्रीतममें दशायता होता है। होनेपर कामा और मक माम होता है।

जासु नाम सुनिरत इकनारा। उतरहि नर मव-सिन्यु अपारा ॥

पद-पप्त मेह जड़ाइ नाहन नाय उदाई चड़ी, मोहिरान राटर आनि दसस्य सच्य सब सोंची कहीं। यद तीर मारहिं ठवन पे जबलमिन पाँच चढ़ािरहीं। तबलिन तुलसीदास नाथ कपालु पार उजारिहीं।

इन ग्राप्तें में मेनकी कितनी मजोइर रहा बाँखत की गयी है,यहाँ केवर करने व्यवसायकी परावरीका दावा रखता हुआ बरावरका प्रवहार निभाना चाहता है। मीखरमण्डी-का भय भी मानता है, और अपनेकी इर पूर्व सरायतिक भी सिंद करता है। चीपी रहा 'दक्षित' है—यह रगा विकतास्थक है। याना—

'अमित काल मैं कीन्ह मजूरी १॰

'मिटे दोव हसदारिद वावा ११

पहाँ केवर शपनी विकक्षित दशको प्रभुके सांमुख वर्षोन करता है।वाँचर्या 'निक्षित' दशह है, श्रवांत प्रीप्तमके संयोगका परममुख 'निक्षित' दशह है।

अदि आनन्द उमारी अनुरागा । चरन-सरोत्र पसारन टागा ।।

चाय-समझेंडे पताराने स्वतुसाममें केरटको गोत्यामीजीने फितना धानन्दित विज्ञव्य किया है। यह वदाहरूथ पूरी 'गिंवत' दशामें भी बरित होता है जिसमें कि भक्त धानने को मूब-सा बाता है। सातवी 'क्यित' दशा है जिसको सात्रका भक्त में ममें सम्र हो धायनशा विस्ताकर सन्मय हो बाता है।

करेब क्यानु हेठ उटाई । केवट बान गहेठ अपुराई ॥ बर्दों यो बरावरीका दाय वा कि हम दोकों कारिक हैं, व्यवहार शुद्ध रहना चाहिये, कहाँ उतराई बेते ही अञ्चलाकर चरण गह लेता है। यह मेमकी किंवत ही चित्र हैं। बाटवीं 'ब्रिजित' दशा है जिसमें

रगहसे कमी-कमी मतका हदय दिस बाता है। प 'कहेठ तुमार मर्ग में बाता।' तथा---

ं सुनि केवटके बैन प्रेम लंपरे अटपरे ।' संया---

िन्दी बार को कुछु मोहि देवा। सो प्रसाद में सिर सी है धार्षि वाश्य सेवटके प्रेमकी द्विकिटनरा। करते हैं। सब कुछ पा किया किन्तु रात नहीं हुण! कीट्यो बार साकर तक होंगे तब सिरएर धारक प्रश् वाध्या। हिन्दी की हरें हुई हैं, प्रमाण कि बोह दिया गया है। प्रमाणनका पूड़ना केवट में कुछ किया गया है। प्रमाणनका पूड़ना केवट में कुछ को स्वास्त्र में सिर्म का किया किया केवट केवट

नवीं 'बबिबन' दरा है, यहीं चलना वासीविड वा सन्दर्भ रखता है। यह पखारि जरुपन करि आनु सहित परिवर। चितर परकर समुद्दि पुनि मुद्दित गदर है पर।।

श्वित पारक राष्ट्रीद द्विन गुरुत नवक कर है। श्वित संस्था माता ओइकर वसने दारों के अपनी परकोक्याता निष्कादक कर की है। इसने आणे इसा है जिससे तुस होकर देनी नियकर्से करना बरेंगे पूर्व समस्ता है और अपने मानकी सराहन करना है। अब कुछ नाथ म चाहित सोरी। दौनरनात अनुस्रा है। ॥

भाव रुपष्ट है। स्वाह्बवी 'विद्वत' दशा है किमों क्वार को जात करके भी भाग न त्यागनेरर बगके स्थिति हैं विशेष हरख हो आवेश पत्रतावा होता है। बया-पद नक्त निरक्षिदेव सारे हरी। सुनि ब्रमु क्वार से हरी हरी।

अवस्थान्को बेयरके प्रेमीन प्रत देशका क्षेत्रामी है। पद्मताश हुया । बारहवीं 'संतत' दण है दिवते पुरा होकर प्रेमी प्रेमसाम सम्बद्ध प्रा होका का दहता है। स्वा—ंवाद आव दन वाद स सार। है

केवरके कमिल आत्म और हरामुडी कहा हो बोमोंकी कहिमा ही अक्योंग है। बन्ध हैरा मि जवार आवाका पार निभिन्नि हाने भी म पान, वर्ने करना सुरहारे ही जिससे वासा है

मानस और व्याकरण

/ केखक-पं० श्रीजगन्नायपसादनी च<u>त</u>वेंदी)



ष जोगोंको प्रायः यह कहते सुना है कि कविताकाश-कवाघर कविवर गोस्थामी तलसीदासजीके रामचरित-मानस'में स्वाकरण-विरुद्ध प्रयोगोंकी

मजुरता है । उसमें जिल्ल-क्वनके म्पश्चित्रारके स्रतिरिक्त 'ने' विशक्तिका

रहिष्कार पद-पदरर दृष्टिगोचर होता है। गोस्वामीजीने बुंबबर भी कहीं 'ने' विभक्तिका प्रयोग नहीं किया है।' पर वपार्थमें ऐसी बात नहीं है। जिन्हें हिन्दी व्याख्तवाका हिन्द भी ज्ञान है, या जो उसकी बारीकियाँ समस्ते हैं दे ऐसा कारी नहीं कह सकते । हाँ, केवला पाव्यिनिका पट बानेबाजे को चाहें सो कह सकते हैं। सुन्दे तो 'रामचरित-मानस' में व्याकतयानुकृत प्रयोग ही चाधिकतासे विश्वे हैं। रनमें न तो तिक्र-वचनका स्थमिचार ही हुआ है और भ 'ने' विमक्तिका बहिष्कार ही। कहीं-कहीं एकाथ स्थानमें शिथित श्योग धवरय है, पर उसे गोस्वामीजीके मत्ये महना कवापि वेचित नहीं, क्योंकि रामचरितमानसकी बढ़ी क्षीवालेदर हिंहै। बेलकों सीर प्रकाशकोंकी कुरासे ही गोस्वामीजी-

तर ऐसा बाचेय होता है। जिन कोगोंको गोस्वामीओ पर व्यास्त्य म बाननेका सम्देह है बनका सन्देह दूर अस्तेके विदे में चयारुक्ति मयस करता हूँ।

सबसे पहले में यही दिलानेका प्रयान करूँगा कि योखामीजीने 'ने' विमर्शिका प्रयोग किया है और अच्छा ष्या है। जिनका यह अनुमान है कि गोस्वामीजीके समयमें िनी माधाम 'मे' का स्पवहार नहीं था, वह नीचे लिली चैराहर्व बरा व्यानसे पर बी॥ विचार । बस, यही बेरी गर्वता है। अच्छा देखिये--

'बतुराई तुरहारि में बानी'

इसमें 'ते' का प्रयोग है या नहीं है यदि कोई कहे नीं नो में उसे दवाका पात्र समक्ता, क्वोंकि इसमें कि म मन्ति है, पर कहा है। कवियाँको ऐसा कानेका पूर्व मेरिकार है। यदि गोरवामीजी जिल्ली-

न्युराई तुम्हारि में बाना ।

--वो धराय 🛍 'ते' का समाव रहता, वर वहाँ वह

बात नहीं है। यहाँ 'ने' साफ मालुम होता है। इसका चन्दय होगा---

में (ने) तुम्हारि चतुराई बानी। इसी तरह---

'कही जनक जल अनुवित बानी'

-को समयना थाहिये। कोई कहे कि ऐसा प्रशासर-न्यायसे हो नया है तो भीर भी उदाहरण बीडिये। यथा:-

> सरसंगत महिमा नहिं गीई । निज निज मसन कही निज होनी। मले पोच सब विधि उपजारे ।

राय सुमाय मुकुर कर कीन्द्रा । बदन विलेकि मुकुर सम कीन्द्रा ।।

कपट छुरी वर पाइन देहें। कारन करन कृष्टितपन ठाना। सहे चरम-वित कारि करेरा । मरन बाल विधि श्रति हर ठीन्ही । परमुराम पिनु आहा रासी । मारी मानु टोक सब सामी।। क्रम करि क्या बाँदरा दोन्डों । साइर मरत सीस करि सीन्डी ॥ क्छिननह यह महम न जाना । जो का बरित एका मगदाना ।।

इत्वादि इसके अचर प्रमाण हैं । विशार-भवने केंद्रस बाबोच्या कीर बाबकायदसे ही बुद चुने 📢 उशाहरण दिवे है। शेव पाँच कावड थानी सुए भी नहीं हैं। जिन्हें रिरवान न हो बह वह बार सामगरामाच्य व्यावमे दर बार्षे हो धार 🜓 विस्ताम हो बावगा ।

से वोसाँद विश्व गति को छेडी। सहै के टारि टेड जो टेडी।।

क्रम शिक्त-बचनका प्रयोग देशिये। यह भी बादन शी से पाद रसी टीफ ही मिलेगा ।

धारि अति गील उँचि दक्षि भागी ।

केंची चरवी रुवि, क्या कक्षा प्रयोग है। और गुविवे-यस्ति बार आसासन पृत्री ३ मन बातु बहन मीन परि दृत्री ११

> समय देशि बहि चुक इमारी । चंत्र वर्षि हिते ब्रह्म व रेपे । बडी बंद बनु केंच किएक ह

सीय मातु कह निवि-चुनि बाँधी । बरसा विगत सरद रितृ आई ।

नरसा बिग्त सरद रितु आई । भूमि परत माबाबर पानी । त्रिमि जीतर्हि माया रुपटानी ॥

इनमें बास पूर्ता, बीध करि दूती, चुक इंगारी, चीर गारि रोहें, चरी चंग, विधि-तुधि बाँकी, सरव रित्र बाई, मा बाबर पानी चीर मावा बच्चानी, वे प्रचोग जिल्ली द्वन्ति एंडेडी चोट बता रहे हैं। चय वचनकी द्वन्ति रहिस्टे-

ते पितु मातु कहतु सांस कैसे । त्रिन पठये बन बातक पेसे ।।

माता-रिताके खिये कैसे और वासक (सम-)-खच्मय) के जिये ऐसे, कैसे व्याकरखसम्मत प्रयोग हैं। बच्छा और भी सुनिये—

सल मूरु सब सुश्रत सुहावे। भौर

जानि सरद रितु संजन आये ॥

'सब सुकृत सुहाये' और 'खंत्रन आये' देलकर भी क्या कोई गोस्तामीक्षीयर ब्याकरण न आननेका दोष खगा सकता है है

इन्द्र जोगोंका कहना है कि गोरवामीधीने 'का, की, के' का प्यवहार न कर देवल 'कर' से ही काम चवापा है। पर यह बाठ भी असले खाली नहीं है। हामायबामें दोनों प्रकारके प्रयोग मिखते हैं, गया—

मोह-मगन मति नहिं निदेहकी। महिमासिय रघुवर सनेहकी।।

सुर नर मुनि समकी यह रीती ।

मूतल परे ककुटकी नाई ।

इसपर दीका-टिप्पची क्यां है। ही, एक विश्वतीय प्रवोश भी सिखा है, पर में उसे गोस्त्रामोजीके सखे नहीं सेंदन बाहता, क्योंकि यह निश्चय 🖟 खेलकोंकी मूख है। यथा-बाहतु, क्योंकि यह निश्चय 🖟 खेलकोंकी मूख है। यथा-बाह दुवनेपह गर विरुख्ता। थिक विकृतन पीटन वर्ज भाजा।

यहाँ 'गई विश्वलाता' न होकर निजवाती होना चाहिये था। इसी तरह एक स्थानपर और सन्देह हुचा था, पर धव दूर हो गया। क्या कोई समन 'विश्वलाता' का भी सन्देह दूर कर हेंगे ?

मित्रवर पंच्यागिकात्रसाद्वी वाज्येवी 'स्वतन्त्र' सम्बाद्ध से प्रार्थना है कि वह प्रापने सूत्रोंके हारा इसका निवाय इपाकर कर हैं। हाँ वह सन्देहवाली चौपाई वह है—

मर्म बचन सीता जब बीता। इतिप्रेरित टलिमन मन बीहा ॥

पर पृक्त वृसरी हामायणमें नीचे क्रिया पार सम्बेह दह हो गया ।

ममें बचन साता जब बोटी । द्वरि प्रेरिट रुटिनन महिः क्षेत्रकरित 'मित' का मन हो बाना चम्मम मितका सन होनेसे 'दीली' का दोला' चौर 'मे

'बोला' हो बाना भी स्वामाविक ही है। भारत है, गोस्वामीजीके स्वाकरवासायक करनेवाले समय हतनेहोसे सम्बुर हो बार्वेंगे बी सम्बेह व करेंगे।

रामायण-सम्बन्धी यत् किशित

(लेखड़-पं• मीहानरमहत्री एर्ग)

(१) प्राक्तयन



न्तु-वादिके परमाराम्य मर्वे प्रवर्गसम्म सगवात् बीरामण्ये प्रवर्गसम्म सगवात् बीरामण्ये क्यमें महर्षि वास्त्रीति कर्म क्यमें महर्षि वास्त्रीति कर्म क्षेत्र वास्त्र वास्त्र विश्व क्षेत्र वास्त्रमण्युवकी बार्स्य क्षेत्रक वास्त्रमण्युवकी बार्स्य वा द्यान्य वृत्विवास नर्मो है, मुर्गे

बात्मीकिविरिसम्बता शाम-सावास्त्रिती। पुनातु भुवनं पुण्या शामायणमहानदी।

×

वेदः प्राचेतसादासीत्साक्षाद्रामायणात्मना ।।

× × × × पर्वेकमञ्चरं पुंतां महापातकनाशानम्।।

× × × वो महापुरुष रामायवाकी रचनाकर धम्य हो नवे हैं,

निलारेद वह सुनिश्रेष्ठ वाहसीकि हमारे प्रवास्य वर्ष वहासनीवत मक्तिके पात्र हैं।

(२) महर्पि वाल्मीकि

पासीक्ष बाँव प्राचीन सहिष्ट हैं। अवेदार सनय होनेसे एका नामान्य समेवेद भी हैं। बहु वारोनिक किकावज बी-भेर माइकर थे। अद्धार-मेरी मक्वावत काचि उनके केद बहुवार-श्रुक थे। जाय-पास्त्र मानवान् दानवण्यात काच परिव प्रदात कर्य-सामीवत विभिन्न पहाँचे ज्यादीन बंद किया है। आधारमार्गे उन्होंगे प्रावतवार्तमांक का प्राचीक्ष कर्या का सामान्य कर्या कावक माहिष्टिन पीवे लाताः

विश्व सत्तव हो बापवाद-ध्यासे भगवान् श्रीरामने स्वामां
जिका स्था क्रिया उस समय रामावानुसार क्रम्यवानीवे
स्मितियोगीय सीताको प्राप्तको पर-पारवर्ती उससा-सितीयोगीय सीताको प्राप्तको पर-पारवर्ती उससा-पितास्य इरफ्को मार्चच सार्विक स्वान्तित्व साक्ष्य-रेषे होता था। यह वर्षी महर्षिकी रक्षामें रही। उसी स्वान्ति क्षामदण्युक्तं क्षास्तिय-पालित होकर सुख्य-ज्यास सेक्ष्यों इटा और स्वन्ने सहर्षी सार्वामिक ना पालस्य-पारवर्षी रिष्या साम की थी। सार्वामिकी सार्वे हो प्रमुक्ते रामचरित क्रवण करनेका सीमान्य क दुग्य था।

षापुरिक धान्तेरवाकारियोंका मत है कि Tons मार एक नहीं जो बुन्देवस्टरको होकर प्रयानसे बोडी एप पहार्मे मिबती है, बढ़ी तमसा नहीं है चीर इसी मनवाबदे पास बारमीकिमीका सरोवन था।

महीर वारमीकिके सम्बन्धमें यह प्रवाद भी प्रचलित कि रनका पूर्व नाम रवाकर और वृत्यु-कृष्टि थी। राम- का उलाया मूलसे 'मसा' 'मसा' क्यानेके प्रभावसे उन्होंने महर्षि-पद पाया । किन्तु यह बहुत पीऐकी करवता मासूम होती है। हसका कोई प्राचीन प्रामाणिक प्राचार भी नहीं है।

(३) रामायणकी शिक्षा

रामायवके साथ संसारके किसी अन्यकी प्रजना नहीं हो सकती । इसका कारण यह है 🌬 महर्षि धालमीकिने चपने हृदयके सत्यको समायक्षके प्रत्येक स्रोकते साथ विजवित कर दिया है। इस विशेषतासे शमायश्का महत्त्व बडत वढ़ गया है। बारमीकि-रामायखपर मनीनिधेरापर्वक विचार कीजिये । वह विविध रस समन्वित कान्य है, सत्य-घटनावजन्यित इतिहास है और है क्रतंन्यविधायक सोशहरया स्कृति । रामायव्यके द्वारा ही हमारे सम्रच मर्यादा-पुरुषोत्तम भगवान् सीरामका चाद्रां उपस्थित होता है, राषसराज रावयको दुर्दान्त प्रवृत्ति और कार्यप्रधालीका परिचय जिल्हा है । राम चौर शवणकी कार्य-पद्धतियोंका प्रश्यर मिळान कर हम भिन्न-भिन्न परियामोंकी शिषा शमाययसे पा सकते हैं । पिताके प्रति पुत्रका क्या कर्त क्य है, आई आईका परस्पर क्या सम्बन्ध है, क्या व्यवहार है, प्रतिज्ञाका बाह्य कैसे करना चाहिये, प्रजाके प्रति राजाका क्या धर्म है. एक-पत्नीवतकी क्या महिला है, खोकापवादसे किसप्रकार करता चाहिये, धर्म-विरोधियोंका रामन किस तत्परतासे किया जाय इत्यादि बातें हमें भगवान रामके बाइएंसे मालूम होती हैं। इसके प्रतिरिक्त रामायय-पर्यित वृत्यस्य और श्रीसस्या प्रश्नतिका अपन्य-श्लेड, कवडप्रिय सन्धराकी परीक्षर-ब्रसहिष्ट्रना, सीवाका पाविषव, सप्तककी विस्तार्थ सेशा. भरतका भारत-भक्ति-प्रधान स्वार्थ-त्याग, मुग्रीवकी देशी. हनुसानको प्रकारत समुध्यक्त और विभीषयको शरकागतिके बदाहरक मानव-समाजके किये शिवाके बन्न ए सामन है। शमायक्से जिन भादराँची शिक्षा मिसवी 🕻 दन भादराँमि-से बड़ि कोई एक भी बादशँका पासन कर सके तो बनके जीवनके प्रत्य होनेमें बस भी शन्देह नहीं । वह धारने विचे. क्यानी जातिके जिये-सभीके जिये क्यांगी हो सकता है। वह स्वयं बादर्शं बनकर कपने समाजको कादर्शं बना सकता है। अननी चीर जनसमृतिको स्वर्गेमे भी चाहिक वर्शयमी बताने बाडा-"जनमी अन्वभूनिय सर्गरति वरायनी'--वड महासन्त्र महर्षि कारमीकि हे हरवदी ही सपुर व्यक्ति है ।

(४) रामायणमें वर्णाश्रम-धर्म

भगवान् श्रीतमचन्द्रके समयमें वर्षाक्षम-धर्मपूर्वास्पते प्रतिष्ठित था । माहाय, चत्रिय, बैरय और ग्रह्म—चार्तिवर्षे धयने-धयने धर्मके हह अनुवायी थे । धवा—

> धर्म बद्धमुक्तं चालीदैश्याः ध्यमनुब्रताः । शूद्राः स्वक्रमैनिस्तासीस्वर्णानुबन्धारिणः ॥ (बारुरारशास्त्रस्थ

सपने पानंते विश्वीत ग्रह शान्त वराया करने बाग था, वसका श्रीरामचन्द्रजीको वध करना पढ़ा । यही नहीं, माक्षया खोग ग्रह्मको मन्त्र दान करनेपर परित हो काते थे । सुन्द्रस्थादके ८ में सार्वेके १ में स्टोकमें हराका उक्खेल हैं। माक्षयांके तिये पान चौर आसनादिकी स्वतन्त्र प्रवस्ता थी।

(५) रामायणकी विवाह-विधि

रामाययार्ने स्वयंवरका उक्लेख डोनेपर भी कन्याकी पति स्वयं वरण करनेका स्विकार नहीं था। वे स्वेच्छा-चारियो नहीं थीं। बीर्यग्रह्म सीताजीके स्वयंवरका भागोजन भी सीताजीने स्वयं नहीं, किनी राजा जनकने भागनी प्रतिज्ञाकी पर्तिके क्षिये किया था। जब भीरामचन्त्रका मवल पौरूप उन्होंने देख जिया-उनको और उनके भाइयोंको उपयुक्त पात्र समझ खिया-तद राजा दशरभको दतहारा सन्देश भेजकर बुखाया । शबा दशस्य भरत-राष्ट्रभको जैकर वसिष्ठादि सहित जनकपुर आये। वहाँ बर-वचकी घोरसे इचनाङ्ग-कुख-पुरोहित भगवान् विशिष्टमे वंशावकी सुनायी और वधू-पचका वंश कीर्तव स्वयं राजा शनकने किया । इसके पश्चात् जनक दशस्यको गोदान एवं पितृकार्य (नान्दीमुख आद) करनेके जिये कहते हैं । यह इत्य दिवाइसे पहले हिन सम्पन्न हुए । दूसरे दिन समस कर्तन्यकर्म समाधानपूर्वक राजा दशस्य ऋषियों को समयी बनाकर राम, खचमया, भरत, शत्रुझसहित राजा जनकके द्वारस्य दुए । उसी समय वसिष्ठजीने चाये बढ़कर जनकको विवाहकी तैथारी करनेके साय-साय वशरथादिको पञागारमें चानेकी जनमति देनेके विये कहा । जनक पहचेसे थी कन्याओं सहित तैयार बैठे थे। ऋषियों भौर पुत्रों सहित राजा दशरथके बश्च-सबहपर्ने पहेँचनेपर राजा धनकने परिष्ठजीसे कडा-- 'बाप ऋषियों सहित

कोकानिशम रामका विवाह-कार्य कार्य। हस विचामित्र कौर शतानन्त्र ने सरदरमें विध्यूर्वक वे की कौर---

कारकरुषकार तां नेरि मन्त्रपुणेः समनतः।
मुन्निपारिकामिय चित्रपुणेम संदुरे।
मृन्द्रप्रीः सारीय प्रपारीः सुन्दर्भः।
साम्रपतिः सारीय प्रपारीः सुन्दर्भः।
साम्रपतिः सुनैः स्राम्यः पात्रपार्माद्रपृश्णिः।
स्रम्मुणेख पात्रीमाध्रीरारि संसतीः।
दर्भः समः समारतीयं विचित्रमञ्जूपत्रप्राः।
करियावाव ते नेर्या विचित्रमञ्जूपत्रपाः।
सुन्द्रस्योः महरोत्राः सीहशः पुनिपुत्रसः।
सतः सीहां समाराय दर्गसाम्मुलीतः।
सम्बन्नायः संस्थाप्य राष्याम्मुलीतः।
सम्बन्नायः संस्थाप्य राष्याम्मुलीतः।

इसके बाद राजा जनक कोछल्यानम्दर्धनं श्री कहते हैं---

इयं सीता मम ह्या सहयमित्री वर । प्रतीपक वैनां महे ते पाणि गृहोप पानिता । पतित्रता महामागा छानेनतुम्या सरा । पह कहकर सामाने मन्त्रपृत वल बोन रिपा । तरह कक्सल, सरत कीर गृहास्क हायमें क्रमानुकार मेंग तरह कक्सल, सरत कीर गृहास्क हायमें क्रमानुकार मेंग

तरह सम्मय् भरत भार गुनुन हार्यान सहित्रपूर्व है आयरबी यूर्व श्रुतिकीर्तिके उद्देश्यसे सहित्रपूर्व है सनकते सबको सारीबाँव दिया—

सर्वे अवन्तः सीम्याश्च सर्वे सुवारितज्ञाः। विनानिः सन्तु बाकुतस्या मामूत्कालस्य पर्वेदः।

वहनन्तर क्यागुरीताचीने तीनवार ब्रीतिक तर्गेष करके राजा तथा क्यियों वे पित्रमा की चीर में दिवा विधि समाग्र हुई। वह भी रामायको सिद है कि तर्ग अनको नहार रहेन दिया था। इस दिवारिकार के क्यायों का स्थेयासमान स्थेय तथी को जाती है कि वार्क सम्मायकों वह भी देना बाता है कि विश्व के सामग्र करना सम्मायकों वह भी देना बाता है कि विश्व के सामग्र करना स्थान नहीं स्थाप करने कि कि सम्मायकों वह भी है स्थाप स्थापना स्थापन

इन्यार इसको बदी कदी फटकार बताती हैं और व्यती है---

> मा मृत्स कालो दुर्मेचः पितरं सत्यवादिनम् । अवगन्य स्वधर्मेण स्वयंवरम्पारमहे ॥ पिता 🖟 प्रभुरस्माकं दैवतं परमे च सः । यस्य नो दारमति पिता स नो मती मविष्यति ॥

> > (शहरादश-रर)

हे दुईदि वायु ! धपने सत्यवादी पिताका अपमान भड़े इम अपनी इच्छासे स्वयंबर करें, ऐसा समय कभी < वावे । हमारे पिता कुरानाभ ही हमारे प्रशु कीर परम रित है वे जिस प्ररुपके साथ हमारा विवाह करेंगे वही हमारा पति होगा ।

(६) रामायणकी कुछ फुटकर बातें।

मापः चीवीस सङ्ख्य क्षोकात्मक ससकावड शामायवाके र्वेद विषयों ही चर्चा किसी एक क्षेत्रमें नहीं हो सकती। रनदा हान मनोयोगसे पढ़ने या सुननेपर ही हो सकता है। रामादवामें राजा दशस्यकी जिल राज्य-व्यवस्थाका वर्धन है, ^{इसके} साथ समुक्तासे समुक्षत राज्यकी व्यवस्थाकी गुजना की धासको है। विपुत्र वैभवशाबिनी भयोध्याकी सनोहरताका षित्र भी शामायक्षमें कतुपम है। इसके क्रतिरिक्त शामायक्षमें निवर्तिके तर्पय और आदका अवीमांति अतिवादन है। गदोप्रदेशन (घरमा) का भी उत्त्वेख मिलता है। भरतजी पनचन्त्रजीको वापस खानेके खिये धरना देकर बैठ गये थे ष्टितु रामचन्त्रजीने घरनेको चत्रियोंके क्रिये अनुवित बताकर रुष्ट्रें मनाकर दिया था। सीलाकी खोजमें बाकर अब महादि बानर इच पता नहीं चढा सके तब बन्होंने भी महोरदेशन करनेका विचार किया था। राजायब-कासमें वंक्ष बोड बाड की भाषाके रूपमें प्रचलित थी। इल्डस माइवका रूप धारणकर संस्कृत बोखकर ही शाहणोंको विमन्त्रित करता था। इनुमान्त्रीने भी सर्वप्रथम क्रागोकवनमें वृष्टिस सीवात्रीसे किसप्रकार वार्तीकाए किया जाय—इस विषको बदा सोच-विचार किया और चन्तरों संस्कृतमें ही भारत करना निश्चित किया । उस समय वेदशास्त्रीके पटन-पहल्हो सुम्पदस्या थी । वेदशास-सम्पन्न ब्राह्मण विद्वानींका का समादर या, बन्हें दान-दक्षिया भी शुक्र मिलती थी। प्रदेश स्त्रोग समास्रोंने पहुँचकर विजय पानेकी इच्छासे राकार्य भी किया करते थे। इतन वृत्तं बजातुद्वान श्री वर्षी

धम-धामले विधिपवंक सम्पन्न होते थे। ऐवतामोंके उत्तरपते कामना-सिविके जिने कियाँ पूजा, प्रार्थना और रावि-जागरण (रातीजगा) भी किया करती थीं।

तलसी-काव्य

(केसक-श्रीदामोदरसहायसिंहजी, वलव डीव, 'कविकिटर')

(1)

जानि परै मारण न छाये कुस कास उहाँ इहाँहाँ न सुक्ते कछ मारग सुकायनो।

क्षर सरिमानको स्तानको वितान उहाँ हरे हरे सक्ते इहाँ अन्ध-जस साधनी॥

'बामोटर' दीवनको गहते विश्वीननको एक दुखदाई दुजी दुर्जन दुखायमी। नातो लाधसञ्जनके हेत सब भौतिन ही

काय्य शरुसीके कैथीं सायन सहायनी॥

(2)

रामको जनमस्रो संजीविनको आनंद है राम बनबाससी वियोगित दुसायनी।

क्षादरको सोर चहुँ और राम जस सोई रावनको ज़द्ध रैन-क्ष्पसी भयाधगी॥

भावप भरतको अनुप हरियाली भरो केमनमें भाज राय-राज यन मायती। वावनी मनीरथ नसावनी दियेकी सीक कास्य तलसीके कैथीं सायन सहायनी व

(3)

राम रस अगल अमृतकी विमद वें दें अकसालि उत्पर सवाही धरसायनी ।

ब्रह्माबि ब्रास्टवर्षे बार्वे दाहिनेपर सम जीग जिंदगें हैं मकि मायन मृतायनी 🎚 राम स्थामताके छाये घन घनपोर सिपा-

'हामोदर' दामिनी दर्मक दमकायनी। हिय इस्सायनी नमायनी हियेशी पीर

कारव जलमां है हैं भी सावन सहावती ह

44

रामायणमें श्रादर्श आत-प्रेम

(छसक--भीनयदयाङ्जी गीयन्दका)

अनुजन्त्रनानकी सहित प्रमु चाप बान घर राम । मम हिय-गगन इन्द्र इव बसह सदा निष्ठाम ॥

गवान् श्रीरामचन्द्रजीके समान मर्यादा-रचन्द्र बाजतक कोई दूसरा नहीं

हमा, ऐसा कहना धल्पक्ति नहीं होगा । श्रीराम साचाव परमात्मा ये. वे धर्मकी रचा और खोकोंके उद्यारके क्षिये ही अवतीयं हए थे। उनके क्षेत्र सादशं सीसाचरित्रको पहने, सुनने भीर सारण करनेसे हदयमें महान् पवित्र भावोंकी सहरें उठने क्षगती हैं चौर मन सुग्ध हो बाता है 1 उनका प्रत्येक कार्य परम पविश्व, सनोमुखकारी और अनुकरण करने योग्य है। पुरे बनम्त गुणोंके समुद्र भीरामके सम्बन्धमें मुन्द-सरीचे व्यक्तिका कुछ जिल्ला एकप्रकारसे खड्कपन है सथापि चपने मनोदिनोदके जिथे शास्त्रोंके चाधारपर पश्किश्चित क्रिलनेका साइस करता हूँ, विज्ञान चमा करें। श्रीराम सर्वेगुबाधार थे । सत्य, शुद्धदता, गम्भीरता, चमा, द्या, बूरता, शूरता, धीरता, निर्मवता, विनय, शान्ति, तिविचा, उपरामवा, नीविज्ञवा, वेश, प्रेम, मर्पादा-संरचकवा, एक-पद्मीवत, प्रजारअकता, महायपता, मातृपितृ-भक्ति, गुरुभक्ति, भारूपेम, सरस्रता, व्यवहारकुरासता, प्रतिशान्तवाता, राखागत-बलस्त्रता, त्याग, साधु-संख्या, द्रष्ट-विनाय, निर्धेरता, सरवता, बोकबियता बादि सभी सदग्योंका श्रीराममें विश्वषय विकास था। इतने गुर्खोका पुरुष विदास सगरमें कहीं नहीं मिसता। माता-पिता,वन्य-मित्र, भी-पत्र, सेवड-प्रजा चादिडे साथ उनका बैसा चादर्थ क्तांत है, उसकी चीर खवाल करते ही मन मुख हो बाता है। श्रीतम-वैसी खोदियका को बाजक नहीं नहीं रेखरेमें चारी । बैबेर्या चौर मन्यराष्ट्री छोड़बर उस समय ऐमा कोई भी प्राची नहीं या को श्रीरामके व्यवसार और द्रेमचे बतारमें मुख न हो गया हो। वास्त्रकों बैदेवी भी धीरामढे प्रधार भीर प्रेमने सदा मुख्य थी । राम-राज्याधिनेककी बाद सुबकर बहु सम्बताको पुरस्कार देनेके बिवे प्रभूत हुई मी, मीगमके तकारत उनका बना मारी

विश्वास था। वनवास भेडनेके समय शतु वर्न कैंदेवीके मुखसे भी से सच्चे उद्गार निकल पहते हैं--तुम अपराध बोम नहीं ताता । बननी-जनक-बन्धु-मुख-र राम सत्य सब जो कलु कहरू । तुम पितु-मातु-अवन-रत म

कैंडेथीका रामके प्रति चप्रिय और क्रोर वर्ता भगवान्की इच्छा और देवताओंकी मेरणासे बोर्का हुचा या । इससे यह नहीं सिद्ध होताकि कैदेवीको ह त्रिय नहीं थे । देव,मनुष्य,राइस बौर पग्र एडी दिसीय रामसे विरोध नहीं या। यश्रविष्यंसकारी राषसी शूर्पेश्यलाके कान-माक कारमेपर लर, वृपय, त्रिरिता,रा कुरुमकर्षां, सेवनाद चादिके साथ को बेर मार बीर पु श्रसंग भारता है, उसमें भी रहस्य भरा है। बाल रामके सनमें डनमेंसे किसीके साथ वैर था ही ग शचसगय भी चपने सङ्दुग्य-बद्धारके विवे 🏿 शर्मे भावसे भवते थे । रावण भीर भारीवर्षी बकियाँते स्पष्ट है---

सुररंजन मंजन सहि भारा। जो बगदीस होन्ह बसारा॥ तो में बाद बेर इठि करिहीं । प्रमु-सर्ते भवतागर हरिहीं। होड् मजन नहिं तामस देहा । मन कम बचन मन्त्र हर् था।। -07

सम पाठे घर भागत, घी हराहन धन। किरि किरि अमुद्दि विशेषिकी। बन्य व मोसम मान ।। -87

इसमे यह सिद्ध है जि श्रीरामके बमार्वेम बार्म खीर्थोंका शीरामके मति भैसा चार्च मेम था, हैना बाराउ

किगोके सम्बन्धमें भी देसने गुनर्गे वहीं बना। श्रीसमस्री सानु-मन्ति हैगी चार्स है। स्थान हैंग धान्य आतार्थों यो सन ही क्या, दरें। में दरें। शम्मानमे पूर्व ही वर्तात किया।

बिस समय कैदेवीने वन बानेकी भारा रे, इन इन श्रीतम् बसके प्रति सम्मान प्रकट काने हुए बारे, हर्ग इनमें तो सभी तरह मेरा कानाच ै ---

पुणिन पिरुन विशेष वन समाहि मोति हित गोर ।।
वीदार्स हितु आपनु बहुरि, सम्मत्न जननी होर ।।
भीरानने इसित हुन आहे लाभस्याले कहास्थान महित्रकार्टम मानंस परित्याले ।
वाता ना सा बचान स्थातातिहाद्वा तथा कुछ ।।
हस्ता कहानमं हुन्से मुहर्तनिमि नोस्स्ये ।
वाता ना सा बचान स्थाताविश्वाह्वा तथा कुछ ।।
हस्ता कहानमं हुन्से मुहर्तनिमि नोस्स्ये ।
वाति प्रतिसंस्तातं सीतिनेऽहन्नुविश्वित्।।।
वाति प्रतिसंस्तातं सीतिनेऽहन्नुविश्वित्।।
व द्वित्यं है नानुद्धं स्थातानेह क्वायान ।

मानूणां वा पितुर्वादं इसमत्पं व्य विश्रियस् ।।

(¥70₹1₹₹1 €~<)

रे बच्चया ! मेरे राज्यानियेकके संवाहरी कायान र्गाया वर्षा हुरे सान कैकेशेके मनसे विश्तरी सकारके वहते 'गे हार्ये बेला ही करना चाहिये ! में इसके मनसे वर्षके रि पैकाल कुलको एक पहोके तिये भी मार्टी सर कहना है बार्या! नहरीतक सुझे याद है, मेंने क्ष्मेण सीवकार कारों वा कामार्यास मालायांक कीर विशाजीका कभी कोई याना करिय कार्य नहीं किया!

इसके बाद बनसे खौटते हुए सरतक्षीसे श्रीशमने कहा---

कामाद्वा तात! कोमाद्वा मात्रा तुम्ब्यमिदं कतम् । व तन्मनसि कर्त्तन्यं वर्तितस्य च मातृवत् । (वा०रा०२ : ३१२ । १९)

माता कैनेपोने (प्रवारी हित-) काममाले था (राज्यके) भोषते से यह कार्य किया, इसके किये मनमें कुछ भी भिषार कर प्रक्तिभावते ककारी माताओं भीति देखा करना। ' रिपरे पण स्वारात है कि रामकी सपनी माताओं के वि किराने स्वित सो । पुक बार कासकी, नामके कैनेपोकी

इंद निन्ता कर बाक्षी । इसपर आनुसक्त कीर आनुसीधी बीतामने की डाप कहा सी सदा अनन करने जीन्य है---न देउसा मध्यमा ठाउ गार्टिस्या कराचन । वीमीवराकुनायस्य आतस्य कथा कुठ ॥

(बान्सः १:१६:१७) दे साई [बिचयी साता (बैटेसीडी) निन्दा कमी वन किस को। बातें कानी हो तो इच्छाकुमाय भारतके भागनतें कानी वादियां (क्योंकि भारतकी वर्षों सुन्दे वृत्य सांक्रिय है)

इमीप्रकार बनकी पिनुमकि भी कातृत है। पिनाके वेक्सोंको साथ कामें किये भीसामने नया नहीं किया। पिताको हुकी देवकर वन श्रीतामने कैकेपीते दु:सका कारण पूता तब उसने कहा कि 'गानाके मनमें एक बात है पहना है उसकी दान है पहना है पहना है है तुमारे दासे करते नहीं है, द्वाम हुन्दे बहुत वारों हो, द्वाम हुन्दे बहुत वारों हो, द्वाम हुन्दे बहुत वारों हो, द्वाम हुन्दे बहुत कर हो नहीं कि कहा के हैं, द्वाम कार्य कारों कारा पहना की स्वाप कारों कारों के कहा करते हैं, द्वामों वह कार्य कारों कारा है करता वारिये निवह के कि हुन्देने पुससे विज्ञा की है p हुन्दे उसकी सीरामने कहा—

अहो विङ् नाहेंसे देवि वकुं मामीदरां बचा। अहं हि बचनाद्राइः चरेबमपि वाबके॥ महत्येवं विश्वं तीक्णं परेत्यमपि आर्णवे। (बाक्स०२। १८। १८-२९)

'बारो मुखे पिखार है, है पेषि । तुमको ऐसी बात नहीं करनी चाहिये, मैं महाराजा दिनाओं सामानें कुर सकता हूँ, सीचल विच जा सकता हैं, समुद्रमें कुर सकता हूँ, 'ब कमस्याने जब यह कहा कि ऐसे काराताल दिनाओं बाजा मानना सबसे हैं, तब बीराजने समादृष्ट और सहाहासमी जादिका उत्तरात्य के हुए कहा कि ऐता मन्यन देवात हैं, उन्होंने किसी भी कारायाने बचन दिया है, मुखे बतका विचार नहीं बत्ता है, मैं दिशाब कही हूँ में हो निक्रय ही चिनाने बचनों सावान करना।' विकार करती हुँ करानी कीपरामाने सीराजने राष्ट हैं कहा करती हुँ करानी कीपरामाने सीराजने राष्ट हैं कहा दिशा करिया

नास्ति शाकिः विदुर्वास्यं समितिकविद्वं मम । ब्रसादये त्यां शिरसा मन्तुनिष्टमयदं वनम् ॥ (बा॰ श॰ शाव शःहः)

'में बरवोंमें तिर टेक्टर प्रचान बरता हैं, गुन्ने बन बानेके जिये बाजायो, माता ! पिताओंके बचनोंको धाडवे-को प्रसान सकि नहीं है ।'

शीरामध्य एकाशीमन ब्याइगी है, वही मीनाहे कीन रामध्य कितना तेम था, एमध्य दुव हिराईन सीनाहर के प्रमान श्रीमामधी रहा प्रेमनेने होता है। स्वाद की मीर साम विरोधना कोट्स प्रमुप्त में मीने कहान, वह स्रोधादि क्षांत कीर हिराईन सीनावा क्या मूत्र है है वहाँ मामबाद श्रीमामने कामने पे क्या में प्रस्त में मामे प्रशासका की सीनामने कामने पे क्या में प्रमान में मीने प्रशासका की है, मामको सीनि हामराहन ने हो बाने हैं. बूर्पिन हो बहुते हैं,बाँह 'हा सीवे हा सीवे' पुत्रार कारो है।

क्षेत्र व्यक्त सम्बद्धेन की काहती है। सुनीवके साथ फिल्म होनेसर कार क्रिके करूप बतकाते हैं—

किर में सामान्य के पि से स्टूर्ड -क्रिकेट को स्टिक्ट कार्ड । क्रिकेट के प्रतिक कर्ता । कि कि को कि के सार्ड । क्रिकेट के क्रिकेट कर्ता । कि कि को कि के सार्ड । क्रिकेट क्रिकेट क्रिकेट कर्ता । के क्रिकेट के क्रिकेट कर्ता क्रिकेट क्रिकेट क्रिकेट क्रिकेट

MA EA 300 41.91 M ES KARS 9 16.11

पूरी तार राज्य कार्य के अनुवार है।
प्राप्त के की आयोग के निया के की की की की कार्य कार्य की की आयोग के अपने की कार्य कार्य की की कार्य कार्य की की कार्य कार्य की की कार्य कार्य की कार्य कार्य की कार्य कार्य की कार्य कार्य

श्रीतदक्षा आव्येम

भर्वभन्ते ही भौगात काचे तीची आहचीं ताय वहां भूगों देर कारे थे शहरा वतकी रचा कारे चीर करों प्रतक १९९९ जेमा कारे थे। सो बन्दीरों भी कारी उनकी हुनी तो हिने देरे थे। चारी तक कि चारी बीटारों भी इन्हें तमें हिने देरे वे वाद यात को से चीर में मार्ग इन्हें हुन हुने हिने वाद यात को से चीर में मार्ग मुक्त मुक्ता दुवता होंगे हैंने से—

केश मेन अनुवद्याच्य दिन जोतरन अनट असाव । अके दुनरे चुन्दवरि इत्याद देन दिवास्त दाव ।।

ोंको लाब क्षेत्र जोजन करने, नाथ ही दिव्यक्तिज्ञीके लाव उनके नज़रवार्थ न्या सनेव्य विद्या सीतव्यर और - व्या होनों आई सनव्यार्धे वहुँचे । चतुन मंत हुचा । वर्ष्टाताममी चारे चीर चतुन ठोइनेवालेका नामचाम पहने लगे, भीत बहाताले चीर लक्सपमीने देवपुक वन्नाले वर्ग कस्त दिया । क्याचालीके कानना पर्धातामों के च्याचा, के करनार चौत विश्लेत करें। इतना क्रिक्ट क्याच्याचे च्याहेक वर्षका सम्बद्धात

तदनन्तर विवाहकी सैपारी हुएँ, परन्तु स्पंतरने विवय प्राप्त कर करेखे ही सप्ताविका विचा । सप्तमाजी तो साथ ये ही, सत्व-वर्त्तरके सपका विवाह भी साथ से करवाय।

विवाहके मननार स्रयोध्या बीरका वार्ते मार्रे स्वये वये और स्वयंने आवश्योंने सरको मीर्रे बागे । इन्यु समय बाद भारत-गृहुन मिरावा व्य पोड़िसे राजा दरापने हार्ति कणिडकी जांदा की सम्मतिको सीरामके सर्विद्योग राजानिक्का दिवा बार्ते कीर संग्वत-स्वाहपूर्व बेंदने बागों और तार्गी तैयारी की आने लगी । बरिज्ञानि बाजा बीर्राव इन्देश्यद सुनावा । राज्यानिक्की बाज बीर्राव अस्त नहीं बीरा परमु कीराम मतद नहीं हु दे स्वत-ते हुए कहने जो 'बहो ! ब बहेशी बार है, क्षे दाना-पीना, शोगा-शेडना साथ हुना, इपरें १, है दिवाह भी चारों है यह साथ हुन, हिन बहा गर्ग

स्या चतुनित है कि दोरे साइयोंको झोना बचेको ही राजपारी मिजती है— जनवे पर संय सह मार्ग । मेजन सनत केंद्री शीर बनेदेव जनकी निकता। सेता तंत्री तत्त्री स्वत्री विकाद संय पर कार्यीय जिल्ला । सेता संवत्र कर कर सेता स्वत्र संवत्र पर कार्युविक स्था । अनुत्र दिशा हो सीतासको घडेको साथ सीकार स्वार्थेन सा संव

जरेखेको क्यों मिलना चाहिये,हमारे निर्मन हुडाँ र

कीरसमध्ये बडेबे राज शोधार करन गर्भ मारीत हुमा । मनवी मनकारी मारे गर्भू रिस्मी बज्दे सामाध्येषका माराज शोधार बता शा बज्दे सामाध्येषका माराज शोधार बता शा बज्दे सामाध्ये वर्षा मार्थि हैं, सामाध्ये राज सो मार्थित है है। मार्ज में बस सम्बन्धी दाज सी थे, बार भीरसमी है बम्मचै क

सीनिये पुरस्य मेर्राज्यविद्यासम्बद्धियाः जीविये व्यक्ति सामे व सर्गानिकाले। 'गाई सौमित्रे ! हम (स्रोग) वान्त्रित स्रोग चीर राज्य-प्रवास मोड करो, मेरा यह जीवन चीर राज्य तुम्हारे रोबिये हैं !'

गम्छन्तु वैवानयितुं दूताः शीमअवेहंगैः ।

मरतं मातुककुकादद्यैव नृपशासनात् ।। दण्डकारण्यमेषोऽद्वं गच्छान्वेव हि सत्वरः ।

मनिचार्य पितुर्वादयं समा बस्तुं चतुर्देश ॥

(410 ti 0 21 22 120-22)

मातानकी बाजासे बुरागय कारी तेज बोवोंबर सवार गामानोके वहाँ भादे भरतको जानके तिवे वहाँ में विजादीन बन्दास्थ कराने किये विजा कुछ विचार कि पौरह बचेडे किये बुरस्कारस्य जाना हूँ। आवश्रिक जो मानक तानाभिषेक हो, इसके प्राधिक असलता मेरें देव चौर करा होगी। विचाजा बाल सव तरहसे मेरें चुरह है...

मार प्रमुद्धिय पानहिं राजु । बिद्धि सब बिद्धि मोहिं सनमुख आजू।। की न जाउँ बन देसहि काजा। प्रथम गनिय जोहि मृद्र-समाजा।।

यत्व है यह त्यारा, चादिले सन्तरक कहीं भी
गामीडमांका नाल नहीं, मीर मादगों के जिब सर्वेदा धर्मत्व गामीडमांका नाल नहीं, मीर मादगों के जिब सर्वेदा धर्मत्व गाम चर्नेका वैदार ! इस महंतरी हार्में यह रिश्व मादब महंत्री कारित के हिंदी भाइपीको हार्मिक्ट राज्य, पत्र में इस्तर करेडे कमी महत्व नहीं करना चादिने । चौथावा-का को मादब करना ही यहें को जरामें भाइपोंका स्वयनेते पत्रित क्रियों सामान्या गादिने, बेल्कि कहा मादबाने पत्रित हैं तरमी कोगोंके क्रियों में इसे महत्व करना हैं भी की विद्या हो को हैं हम हम कि स्वया करना महत्व हो निक्का हो को हम हम कि स्वया करना महत्व हो तो बहुन ही महत्व होना चाहिने । इसके बाद श्रीराम बाता कौसल्या ग्रीर पन्नी सीतासे विदा माँगने गये। श्रीरामने मरत या कैडेपीके प्रति कोई भी अपराब्द वा विद्रेपमुखक राज्द नहीं कहा। बल्कि सीतासे आपने कहा-

> यन्तितन्याख ते निसं याः शेषा मम माराः । स्नेद्रमणसंसगीः समा दि मम माराः ॥ आतुषुत्र समी चापि द्रष्टकी च विशेषतः । स्वया मरतशुद्धी प्राणः त्रियतरी मम ॥ (ग॰ रा॰ २ । २व । १३ - १३)

'सेरी साठासीको नित्य मधाम करना, सुक्या लोह करनेमें जीर सेरा खाइ-त्यार तथा पाजन-गेभय करनेमें नेरी साथी साठाएँ समान हैं। तथा हो हुम भरत-गुगुमको भी सपने गाई जीर बेटेके समान सममना, नर्यों के वै रोगों मुक्ते मधानि से विशेष प्यार हैं।

बहाँ तिरोध भागद और मेगरे आपता सीतामीको भी साथ बहानेकी सद्मारि शीरामको हेगी पढ़ी, तस सम्मामीने मी साथ कला गांदा । शीराम देगे दे तो दुरुत थे है। मही, जो सपने मारामके जिये सप्मायते करते या करी दमारि कि 'येले मारामके जिये सप्मायते करते या करी दमारि कि 'येले मारामके हाक्य स्वा तिरो हाम भी साथ मारामके दुर्गियां ति स्व प्या की कि किसी तरह सम्माय स्वतेष्ठा ही स्वांति सह पेटा की कि किसी तरह सम्माय स्वतेष्ठा ही स्वांति सह पेटा की कि किसी तरह सम्माय स्वतेष्ठा है हैं सि सह स्व मारामक्षित हैं स्वत्याव हो स्वते सहे भीर सम्मायते हैं सि तरह स्वा स्वांति स्वा स्वाच्य स्वाच्य हो स्वाच्य हैं साथ स्वाच्य हैं सह स्व मोरामके स्वाच्य हैं सह स्वाच्य हैं साथ स्वाच्य हैं सह स्वाच्य हैं सह स्वाच्य हैं साथ स्वाच्य स्वाच्य हैं साथ स्वाच्य हैं साथ स्वाच्य हैं साथ स्वाच्य स्वाच्य स्वाच्य हैं साथ स्वाच्य स्वाच्य हैं साथ स्वाच्य स्वच्य स्वच्य

श्रीतम होटे माई खच्मच और सीवामहित बन्धे चल्ने गये। बनमें खच्मचर्की ओराम-सीवाधी हर ताह भेषा करते हैं और श्रीतम भी वही बहते चाँत परते हैं जियमें श्रीसीवाजी चौर आहें खच्मच शुभी हों।

शोव-राज बीह विधि तुम रुद्रहों।सार पुजाब बार्स सा दहरी। जुरवहि पुत्र होस्ट-मुजाई देवे । पराव विध्यवन नेगड किंग। इससे वह सीम्बन व्यक्ति कि करनी मेरा बारेना के मेटे आई बीर क्लियों बीरे शुन्न पहुँचे बेने ही बार्य करने बाहिने बारा उनकों केंगे ही राज बारी व्यक्ति केंगे दनकें बाहिने बारा उनकों केंगे ही राज बारी व्यक्ति केंगे दनकें

× × × × × × अस्तर्वे ससीन्य वनमें सानेवा समाचार मातवर सब

शरतके सरोग्य जनमं कानका समाचार मातकर कर श्रीशमनीगढे कारबा जनमदाती चुरव द्वीवर सरतके मीत दन

भा ₹Ŧ

\$7

্ঞ

3

and And williams 3 a m or + 52m + 1/2 a major poors

a manufacture and foreign command designs ABMIN ASSER MADES

विव ſ x **. . . ηr . रास:

कार् इतिर प्रेम इवि ₹. q सप

., . ब्राट ŧ. जरा and the same ज्ञान There was not at the second of भ्रा 1 - 4 - 2 to 18 स्रा

all physics is changed to part on the principle resided again, i filters pales and again also also Manager in the Street Control of the Street Market State of the Control of the C make it was a series of the series of the series

when we will sell to the sell and the sell a the said and and the said of t Mary and a series of the series The state of the s the sales of the sales

----76 --have dealer thank

والمستنيد المراج ---and the same THE PERSON NAMED AND PARTY OF 1 - 1 - 1 - 1 Same State of the Party of the A - de - de - de de de s where he was the

Section of the last of the las The second second ---which will be the same of Commence of the same The same of the sa the second second Security and the second sections and the same of th

The many ----Branch and a Street and and The state of the s - January Marie Market Street The state of the s

The state of the s - 12 - 12 - 2m वर्ष वार्ष आयुर्वेडा परस्यर प्रेम देखकर सभी ग्रुक्त । गर्व । मासकी विनय, मासना, साजुला बीर हामप्रेच देखर सो को पन नमनते मुचि मूळ पांचे । शीरासको
सिंग्डे किया कार्य के पाइन्स कुछा। चनावित्र ग्राम्को
सिंग्डे किया कार्य के पाइन्स कुछा। चनावित्र ग्राम्को
सिंग्डे किया कार्य के पाइन्स क्ष्मा अल्डा। भारतने भीति स्वित्र स्वाक्ष के
स्वाक्ष के स्वाक्ष क्ष्मा अल्डा। भारतने भीति सिंग्डिंक
स्वाक्ष के भीति सिंग्डिंक व्यरिपर्वेते, अस्पत्री, दुरवार्था बीर्य
स्वाक्षीय भी भारतका साथ दिया। वाच अगवान् बीरासने
स्वाक्षिय भी भारतका साथ दिया। वाच अगवान् बीरासने
स्वाक्षिय भी भारतका साथ दिया। वाच अगवान् बीरासने
स्वाक्षिय भी भारतका साथ दिया। वाच अगवान् वीरासने
स्वाक्षिय भी भारतका साथ दिया। वाच अगवान् वीरासने
स्वाक्ष विकास भी स्वीक्षण साथ हिस्स को स्वाक्ष स्वाक्

हे भरत, मुन्ने वनवाससे औदाकर शल्याभिषेक करावेके विषे हमको को मुद्धि हुई है सो स्वाभाविक ही है, यह एनेवा हारा मास विजय-विवेकका फल है। इस अंग्र मुद्धि काल हम समस प्रयोक्त पातन कर सकते हो। यरन्य-

रेवनीश्वरद्वादपेयाद्वा हिमवास्था हिमं त्यजेत् । अतीयासागरो वेटां न प्रतिज्ञामहं पितुः ॥

(बा॰ य॰ शाववशावम)

्षण्यमा चाहे चयमी भी त्यारा हे, हिमाजम हिमको होत है, समुद्र मर्यादाका उल्लंघन करदे पर में पिताकी

मेरिहाको सत्य किये बिना घर नहीं खीट शकता ।' मेरिहाकों जीने किसा है कि श्रीशमने चन्चमें मेमनिवश

री कर माराजीते कहा हि—

जा | दिन क्षेत्र कर करें, गोवकी गाँव ईवाराधीय है, दे की गाँव है। वाराधीय है, दे की गाँव है। वाराधीय है जो माराधीय है। वाराधीय है। वाराधीय है। वाराधीय है। वाराधीय है कि समस्त्रीय, वाराधीय है। वाराधी

हो रहा है, परन्तु उससे भी बढ़कर सुन्ने तुम्हारा संकोच है, गुरुजीभी कहते हैं, चता चब सारा भार तुमपर है, तुम जो इस कहो, मैं बडी करनेको तैयार हैं—

> मन प्रसब करि सोच त्रि कहहु करों सो आज । सत्यसिन्य रधुवर बचन सनि मा सबी समात्र ॥

हुएन अपने क्या क्या कर की कुछ बहु होते स्वी करनेकी तैवार हूँ चानी मुख्ये ताय बहुत च्या है बहुत करनेकी तैवार हूँ चानी मुख्ये ताय बहुत च्या है बहुत कर करना हुँ " इससे किया का माहने भी, क्या होगा ! जिस सम्बद्धे विश्व दिन-माताकी पाया महीं की, खोल प्यापांस बहुत सम्बद्ध किया का प्राप्त हुए, आई पारक प्रमाणांस बहुत सम्बद्ध किया का प्रमुद्ध हुए, आई

जवरय ही सरत भी श्रीरासके 🕵 आई थे। उन्होंने वह साई श्रीरामका अपने उत्तर हतना में म देखकर उन्हें संकोचमें बाजना नहीं चाडा चीर बोले कि---

को सेनक साहित संक्षेत्री। निज हित चंहे तासु मति पोणी।।
'जी दास अपने माधिकको संकोचने बासकर प्रपना करनाच चाहता है बसकी हादि वड़ी हो गीच है। मैं तो आपके शत्रविकको खिये सामग्री क्षाया था परता स्वय-

त्र मु त्रसत्त मन सकुष्य तित्र, जो जेहि आपसु देव । सो सिर गरि गरि कर्राहे सब बिटिहिं अनट अदरेव ।।

महा विश्वेष होन्द्र मलकवासे जिसकों को आहा है महा दशीकों सिर क्यांचर करेगा जिसकों कारी क्वाक्त कान हो सुकत कारणों! करते सीरामने किर कहा भीचा! हुम मन कबन कारी विशेष हो, गुमारी क्यांस तुप्ती हो, बहाँके सामने वोटे भाकें पुण्य हुम हुम्मयमें कैरी करात है? माई ! तुम क्यांस सुर्थेशकों राजि, विशामों के मीर्त क्योंत कीर मीरि कारने हो, और भी सारी कार्त गुमार विश्वेष हैं। कारने भीरत क्यंक्र सुर्थेशकों राजि क्यांस विश्वेष

जानि तुमहि मुद्ध बही कठोरा। बुसनय सात न अनुषित मोरा। होहि कुटार्वे सुर्वेषु सहावे। आहि हाथ असनिके यावे॥

हे च्यारे ! मैं मुकारे इर्पणी को मजता जानता हुआ में बहु करोर क्यान करहा है परमूक्या करें दिय सजब हो ऐसा है, हम सम्बद्ध किये क्यों करें कि स्व हार समय जाता है तक अभे चारें ही काम कात्रे हैं तकवारके कारणे क्यानेकें जिये करने ही हाक्यों काड़ करनी पड़ती है।"

भगवान्के इन प्रेमपूर्ण रहस्यके धचनोंको सुनते ही भरत श्रीरामकी रुखको मजीर्माति समक्त गर्वे। उनका विषाद दूर हो गया। परन्त चौदह साज निराधार जीवन रहेगा कैसे १ धनः

सो अवलम्ब देव मोहि देवा । अवधि पार पाँवउ जेटि सेवा ॥ भगवान्ने उसीसमय भरतजीकी इच्छानुसार श्रपनी चरखपातुका परम तेजस्वी महारमा भरतजीको है ही ! भरतजी पादकाचीको प्रकासकर सलकपर धारककर अयोध्या सीट रावे।

श्रीरामने कुछ समय संब चित्रकृटमें निवास किया, फिर ऋषियों के आधमों में घुमते घुमते पंचवधीने भाषे । वहाँ कुछ समय रहे । वनमें रहते समय भगवान प्रति-वित ही खरमयात्रीको भाँति भाँतिसे ज्ञान-भक्ति-वैराग्यका उपदेश किया करते। एक दिन अपदेश देते हए दम्होंने कहा---संत-चरन पंकत अति क्रेमा। मन-क्रम-बचन मजन इद नेमा।।

गुरु पितु मातु बन्धु पतिदेवा । सब मोहि कहेँ जानै दढ सेवा।। मम गुन गावत पुरुषि सरीरा। गद-गद गिरा नवन वह नीरा।। कामादिक मद दंग न जाके। तात निरन्तर बस मैं ताके।।

बचन कर्म मन मोरि गति, मजन करह निष्काम ।

तिनके इदय कमक महें. करवें सदा विसाम !! इसप्रकार सन्दर्भा भीर परम रहत्वके वार्तावायमें की समय बीतवा था। भाईपर इतना प्रेम था कि श्रीराम बन्हें हृदय सोसक्र धरना रहस्य समझाते थे।

×

सीता-इरव हुना, बडापर चढ़ाई की गयी और भवानक सुद्ध भारम्भ हो गया । एक दिन शक्तिशायसे श्रीवरमगढे वाचव हो जानेपर श्रीरामने माहँडे विचे जैसी

विजाप-प्रजापकी खीजा की, उससे पटा बगता भाई खचमखके प्रति श्रीरामका कितना प्रधिक ए

श्रीराम कहने क्षाे---

किंमे राज्येन किंप्राणी मुद्दे कार्यन निर्द्धो यत्रायं निहतः शेते रणमुधीने स्वामणः । बयैव मां वन बान्तमनुषाति महाद्वृतिः। **बहुमप्यनुमास्यामि** तमैवैनं यमध्यम् । (बा॰ रा॰ दाव वा ११२)

'बाब युद्धते, राज्यसे या बीवनसे स्वा प्रवीत कि प्यारा भाई खच्मच स्वभूमिमें सो तुका है। जिसप्रकार महातेजस्ती धुम मेरे साथ बनमें बाबे थे ब में भी तुन्हारे साथ परखोकमें बाउँगा। पुसार्गी वि

श्रीराम प्रवाप करते 📭 करते हैं-

सक्दु न दुखित देखि मोहि काऊ। बंधु सदा तन मुर्ह हैं। मम हित स्त्रीय वजेतु पिनु माता । सहेड विपिन दिव न्याप सो अनुराण कहाँ अव माई। उठहु न सुनि मम दश्रिक को जनते उँ बन बन्धु निछोडू । पिता बचन मनते इसहैं। सुत बित नारि मनन परिवारा। होहि आहि अत बारि व जया पंख बिनु सम अति दीना । मनि बिनु कनि बरिवर बरा अस विश्वारि जिय जागहु ताता। मितद् न अन्त सहैदार म अस मम जिरन बंधु निमु तोही। जी जर देन विशारि की जैहाँ अवब कवन मुँह ताई। मारिडेनु प्रिय कनु की अब अफ्टोंक सोक सुत तोरा। सहिद्दि निदृर करेर वर वेर निज जनगीके यह कुमारा। दल दानु तुन शत-अका सीपेसि मोहि तुम्हर्दि गहि बानो। सबबिवि मुक्द बरन प्रेन बत्द बाह देहऊँ तेहि आहे। बीठे बिन मेहि विकार में बहु निवि संस्थत सोच निरोचन । सरशांतित श्रवित्वण्योच

ार प्रशासिक कर पर हैं, वस हो। काली मात्रा कृषियकि प्रय वाचार हो। इस भीर देश कर यह भी दिया वा सकता है कि भी काली मात्र दे वस ही छाउस है और दृष इसके (वें) बार्स्स है मारे दोग्यों के किल्या की स्थाप देन बार्ना काराबा प्वारा बहनेता देश हैं, देने ही अपनी माता कुमित्रांदे तुम सामागर हो।

सर्वाप समारे बोराजी हो तेल बोराज है।

[•] यह भारताल् भीरामकी प्रणादनीवा मानी जाती है, मणावर्षे हुउद्धा हुए दश भागा ही स्थानिक है। 'मृत्रक हैं सार्ग आगे दे रेटिक दस काशने भी प्रवाद वी निक्ष कोता है। स्थापन कुक्स कुछ क्या भागा हा स्थापन कर स्थापन किया है। स्थापन आगे दे रेटिक दस काशने भी प्रवाद वी निक्ष कोता है। स्थापन दी सके दस वचनीने हि, 'स्था दह बहुत हों 'तर राजि' अवग-हराज देखाई'' हे भी साधारण सनुभवर प्रवाद ही बहास है। हमने बर्चनर दांदी साहर मरी, पान्नु परि पूर्वा मर्थे दिया नाथ तो वर्षकुँ भीताशाँचे भी जानेरहें बन नेतु रिशेष्ट्र । दिशा पदन हरी हैं ही है। हात्र भी परंद्र अर्थ वर करना पान पान पान प्रतास कारण मान करने हैं वर नहीं विश्व है। विश्व के प्रतास पार्ट्स कि वर्दि में मानवा कि वनसे वन्युक्तीने नियेद होता हो है (दिना हर्व कार्य विश्वे पिराचे बचन मानदर बनने शी भाषा, परन्तु ("नहि मेहूर") कामणदा सामद परिवाद वर वने बनने नार बनी क्यां। हती कहर तीन कार्योद कर हुन्यार काहु ') जस्मक्य मामद रहिमा दर प्रणे कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य क हती कहर तीन कार्योद कर हुन्यान कालु राज तुम्य बात स्थातन दन भी गार्द्धा अर्थ में कार्य कार्योद्धे हैं दी साजस्य कारण कार्योक्त के स्थातन कार्योद्धे के स्थातन कार्योद्धे कार्योद्धे कार्योद्धे कार्योद्धे कार्योद्धे





राम-बिलाय | प्रमु-विलाप सुनिकान, विकल भए बानरनिकर । आह गरेउ हनुमान, जिमि करना महें बोर रस ॥



वो भाई धपने जिये घरहार छोड़कर भरनेको सैवार ै, उसके किये विकास किया कामा वचित ही है परन्त र्मतामने तो विद्यापकी पराकाष्टर कर आत्में मकी बड़ी ही इन्त शिका को है।

भोहन्मान्जीके हारा संजीवनी खानेपर खचमख्जी सल हो गये। राम-रावया सुद समास हुआ। सीता-पीलडे धनन्तर भीराम सबको साथ लेकर पुष्पक विमानके एत प्रयोध्या औरनेकी तैयारी में है । इसी समय विभीपच मण्डा करने छरो-

'मगदन् । पवि में चापके चलुमहका पात्र हूँ, वदि चाप इंब्स स्तेह काते हैं तो मेरी मार्थना है-बाप कुछ समव-देश वहाँ रहें, खकाण और सीता सहित कापकी में पूजा भता चाहता हूँ। भाग भवनी सेना तथा नित्रों सहित म पदार कर उसको पवित्र करें और वालिंगित सत्कार लोबार करें । मैं चापके प्रति चाज्ञा महीं कर रहा हूँ, परन्छ हो समाव और मित्रताके कारण एक संवक्की भाँति शासी प्रमन्न करनेकी समिताया रसता हूँ । (वा॰ श॰ १। ११ । ११-१५) विनयका क्या ही सुन्दर सीकने रोज दरिका है ।

भीरामने बत्तरमें बहा-

न करनेतल दुर्गाते बचनं राधिसदनर ! वंतु मे आतरं इदं मरतं त्याते मनः ॥ mi निवर्तियेतं बोडसी वित्रकृटमुवानतः । शिरता बाचडी बस्य उचनं न वृतं सवा ॥ (भार हा ११११ । १८-१९)

है राष्ट्रेबर, मैं इस समय तुम्हारी बात नहीं साव नेक्ता, मेरा सन साई सरवसे मिश्चनेके लिये श्वटपटा रहा

है। विवर्त वित्रकृत्यक भाकर सुद्धे खीटानेके क्षिये विनीत वार्षना की भी और मैंने उसकी स्वीकार नहीं किया था। निवस्त, हुम सेरी इस प्राचनगरर दुक्त न करना ।

होर कोस गृह भीर सब, सत्य बचन गण ताल । इसः मरत्वी सुनिरि मोहि निमित्र कटण सम जात ।। बारम केर सरीर कुस, बच्च निरंतर मोहि। देशी केरी सो अवन कर, सका ! निहासी वोदि ।। में बेही बेर्त अविष, जियत न बार्ड बीर ।

बंधी मारवंशसमुक्ति बमु,पुनि पुनि पुरुष समीर ॥ 48

विभीषण नहीं रोक सके. विमानपर सवार हो हर चने । मगवानने भपने भानेका संवाद हनुमानके हारा भरतभीके पास पहलेसे ही भेजकर उन्हें सख पहेंचाया।

तदनन्तर अनन्तराक्ति भगवान् श्रीराम द्यमोध्या पहुँच-कर चयमें जीवासे ही सबसे सिज जिये।

ब्रेमातर सब लेग निहारी । कीतक कीन्ह क्ष्माल खरारी ॥ अमित रूप प्रस्टे तेहि काला। जथात्रीस्य मिलि सर्वे हे प्रपाला।। कपाराष्ट्रि सब कोम बिकोकी । किये सकत नहनारि विशेकी ।। राज सहँ सबडि मिले भगवाना । उमा मर्ने यह बाह न आना ।।

भरतके साथ मगवान्का मिजन तो अपूर्व झानन्दमय है। फिर राजुससे मिसकर बनका विरह-दुःश नष्ट किया। राज-तिकक्को सैवारी हुई। खान-साउन होने खगा। भीरास भी भाइयोंकी वात्सल्य-भावसे सेवा करने खगे। भरतजी बचाये सथे. श्रीरायने अपने हाथोंसे उनकी नटा राजमाई । तरनम्तर शीओं प्राथमिव भाइयोंको श्रीरामने स्वयं प्रपने हामसे सन शक्कर सहस्राया । भरत क्षण्याय शत्रप्र पितृतुस्य भीशमके इस चाःसस्य-भावसे मृत्य हो गये ।

यनि करनानिधि मरत हैंकारे। नित्रकर राम जटा निरुपरे ।। अन्द्रशाये जास तीनिये आई । भगत-बक्क प्रपाप स्पर्धा ।। सरत आस्य प्रम कोमस्ताई । संद कोटिसन सदटि न गाई ।।

रित्वती कहते हैं कि भरतजी (जादि माहर्षों) के आत्य ब्रीर प्रभुकी कोसबताका वसान सौ करोड शेपत्री भी भरी कर सकते । घन्य भावने म !!

अग्रवान औराम तीनों भाईचोंसे सेविन होकर शाम करने सरी। रामरात्त्वकी महिमा कीव गा सकता है। भगवान समय समय पर चपनी प्रजाको हुदहा कर बन्हें विविध साँतिमे बोक-शबोक्में वसति और करपायके साधरों के सम्बन्धों शिवा देने हैं । ऐसा स्वाप और दवा-वृष्यं शासन, सुम्पर वर्गाव, श्रेममाव, खोष-वरकोष्टी मुख पहुँचानेशाबी तथा मुखिशावियी शिक्षा . सबपदारहे मुख शमरामके धारितिक धवनक धश्व विमी भी राज्यमें कबी देखे, जुने, वा को नहीं गये !

समय समय वर आईवॉको साथ खेवर बीतम वन-बपवरोंमें बाने हैं बॉलि ऑलिके रिचामर वंपरेश बनते हैं एक समय सम अरममाँ गरे । अरममाँ मारा किया बारता हुएछ विद्यादिया, जगरात् उमक्त दिराहे, वहसम्ब



विष्ठं इतार्में द्वांने भी आनी ध्यास्ते हो कहा कि 'बाप तिकों इक पुत्रे हैं वे कुरुसरे हैं ।' आरत्मी वसी दिव इत्ये । धारोणार्में बहुंक्य उसे ओहीन देख वहें किंद्र हुए, उक्त हुद्द परिवादकों धारोण धारोजांद्र से स्व का,न वो निशीसे कुद्द प्युनेकी दिस्सत हुद्दे और न किसी-के प्रकार की स्वीती को तिक्स स्वस्थ अस्तत्वीको साम्यकास से प्रकार से अपूर्वे हो समस्वस्य सहत्वीको हाम्यकास से एक उस्ते कोई एक्पी सरह बोसता ही हैंसे देखते है स्व उस्ते कोई एक्पी सरह बोसता ही हैंसे विद्यों का मनते सात्र कहा है—

निष्या द्रवाजिते। राजः समार्थः सहरूषमणः । मरदे सक्षितद्वाः सम् सौनिके पदाने यथा ॥

(वा॰ रा॰ २।४८।३८)

'हरा बहाना करके फैक्टोने औरसमको सीसर बननवादीत करते शेव किया है। सब इस कोग कसी बना मराके सबीन हैं, मेरी कसाईके सबीन चहा होते हैं क्षेत्र सानने काते हैं और दूरसे ही जहार करके मुँह केम चडे नाते हैं—

पुरबन मिलहिं न कहिंहें कलु गवहिं जोहारहिं गाहि । मात दुस्त पुछि न सकहिं मय बिचाद मनमाहि ।।

बराएं हुए मासाबी चिताकी कोजमें माता कैकेपीके यहने पहुँचे और 'चिता कहाँ हूँ' ऐसा पहुने करो, कैडेपी कार्र विधेयर दूखी नहीं सामादी थी, यह सलक्ष्मदी थी कि बार भी देते हति हानवर राजी होंगे, माता बसने कटोर राज्य महत्ते कहि हानवर राजी होंगे, माता बसने कटोर

षा गतिः सर्वेमूनामां शं गति ते पिना मतः । रामा बहरमा तेमस्थी वायमूकः सर्वा गतिः ।। (बा॰ रा॰ शःखराश्य)

'तर मूत-आधिपोंडी चन्तमें को शति दोती है वही देवरे पिताडी भी हुई, महात्मा तेशकी चौर वश करने वर्षे राजाते सापुरसोंकी गति मास की है ।'

वर मुनते हैं। भरत गोकपीकित ही 'हाय'। मैं भारा थवा' देवाका तहसा पदाक काकर पूर्णीपर तिर वड़े १ अधि-वीतेरे विदाय काते हुए कहने करो,'हाय पिताओं। मुखे देवारासरें बोक्टर कहीं बड़ों गये—

क्सनदैर समाय सहे मां क महोद्रति मो । (मन्द्रान्य स॰ र १ ७ १६७) हे पिता, मुख्ते सामने हाणोंमें सीपे दिना है बार बर्जा चतो गये! ' कैनेपीने विज्ञान सरी हुए भारतको उठावर उत्तके आदि पूर्वि प्रीत हाडि किंद्रिया, प्रीता स्वतं, जैसे तुरुद्दारे तियो सब काम मना रख्या है-प्रमाणीशी मुद्दे ते वत्तं उत्तकों मां (बंद पर २००६८) परस्तु भारतमीका रोजा कर्य नहीं हुक्का, जन्दोंने कहार, जन्दोंने

यो मे आता पिता बन्धुमेंस्य दासोऽदिम संमतः । सस्य मां श्रीधमास्त्यादि रामस्यादिण्डमेंगः ।। पिता दि मवति व्येष्ठा धर्ममार्थस्य बानतः । उस्स पारी गृष्टीण्यानि स इंदिर्गा गतिनमः ।। व्येष्ठिद्वर्शितस्य महामार्थे स्टब्स्यः ।। सार्थे विकाससीत्रास पिता में सरविश्वरः ।। पार्श्वरं सामु सन्देशनिष्ठाने शोतुमारमनः ।

(बा॰ सा॰ २ ७१।६२-६५)

यह तो तीम बना कि मेरे पिना-तुरण बहे माई साव-स्थाम बढ़ शीरतुवारणी बहाँ हैं, जिननो मैं पिन हात हैं। में बनने पार्य-बन्दन करूँमा, बनीचें ध्या वे हों मेरे स्थाबना हैं। सार्य-माने काननेवाले होगा वहें माहिया रिपाने स्थास समयते हैं। माता,यह भी बनावा कि पर्मंत, सावन सरपासमार्थी मेरे पिता साव स्वरायने स्थास समयते व्या करा माने मिनाया प्रदेशन हो सम्बन्ध पार्य-वार्य हैं। करा माने मिनाया प्रदेशन हो सम्बन्ध हो माना पारता हैं।

रामेद्रि राम हिरुक्त हा सीते त्रवामेदि च । स महस्ता पर्द त्रेष्कं को ग्रीममां सर ।। कृतिया पश्चिमां वाचे स्वातहार हिशा तर । सारवर्षे परिश्वाः चारेतिय महाप्तरः ।। सिद्धार्योत् जारा ग्रामाणये सह सीनमा । त्रव्याये सहस्राहे हस्पति पुनाएकम् ।। (वाच्याच्या १ १ वर्षे न

'नेदा | ब्रीहमार्गोरे बंदती रिना बन्नवाहमें 'हाराव' हा सीती! 'पुवारते हुए नाबोर भियारे हैं । हार्गी हिम्मद्रमा साठावें बेक्सर विश्वय हो बाता है वर्गी महार खाड-गाटने बेक्सर हिरे गाउने बेक्स वर्गी ब्या का कि 'पूरों! ' सीतावें बाय ब्रीहम सावें हुए मीतान-बन्मद्रमों को मनुष्य हेसरें, बारे कुनावें हींगे ।' बार गुलने ही आउडीने हुण्यती सीता हार्गी।

তানাত্ৰ মাত্ৰী ইয়াৰ গাল কৰিছিল। ৰ বিস্ । তানাত্ৰ মাত্ৰী বাহি কলা বাহু বি বাহু । তানাত্ৰ বাহু বাহু বি বাহু বি বাহু । (কলাত্ৰ যেও বুই কুই দুই भारतजीने पूछा 'माता ! क्या उस समय श्रीरामजी, सचमया या सीताजीमेंसे कोई भी नहीं था, वे सब कहाँ चले गये थे !' यब यज्ञ-हृद्या केंक्रेपीने सारी कहानी सुनाते हृद कहा कि—

रामस्य योवराज्यायं वित्राते सम्प्रमः इतः । वव राज्यप्रवानाय तदाऽद्वं विज्ञायवरम् ॥ राज्ञं दर्तः दि मे पूर्वं वरदेन बरद्वयम् । याचितं तदिदानीं वे तयोरेकेन तेऽक्षित्यम् ॥ राज्यं रामस्य चेकेन वननासं मुनितव्यम् ॥ ततः सत्यपरी राजा राज्यं दश्वा तदैव दि ॥ रामं सम्प्रेषणामासः वननेव चित्रा तव ॥ सीतान्यनुगता रामं चातिप्रत्युनामिता॥ सीतान्यनुगता रामं चातिप्रत्युनामिता॥ सीतान्यनुत्रता रामं चातिप्रत्युनामिता॥ सीतान्यनुत्रता रामं चातिप्रत्युनामिता॥ स्राप्तः साम्यानिकाम्यानिकामः ।

(कालाल एक २ १० १०२-०३)

'ग्रामारे पिताने रात्मक राज्यात्रिकको वद्यो सैनारों की
धी, परन्तु दुग्दें राज्य दिवानेके धानिमायसे सैने
दसमें विश्व काण दिया, परदानी राज्यों पूर्वमें शुक्ते
दे पर देनेकी कह रक्का था, वनमेंसे एक्टे मैने
प्रमारे विये समर्था राज्य माँगा और दूसरोरे
रामके विये शुनिमत-वायात-पूर्वक चौद्य सात्रक धनवास माँगा। प्रामारे पिता सत्यवसायच्य राज्यने तुम्हें
राज्य दे दिया, कीर रामको वन मेंक दिया। पत्रिकता
राज्य दे दिया, कीर रामको वन मेंक दिया। पत्रिकता
राज्य से पान का स्वा गयी, और त्या
प्रामा मी रामके साय वन चल्ली गयी, और त्या
प्रामा मी रामके साय वन चल्ली गयी, और त्या
प्रामा मी रामके साय वन चल्ली गयी, और त्या
प्रामा मी रामके साय वन चल्ली गयी, और त्या
प्रामा से रामके साय वन चल्ली गयी, और त्या
प्रामा से रामके साय वन चल्ली गयी, और त्या
प्रामा से रामके साय वन चल्ली गयी। चल्लाक करते हुए
धीर द्वा राम, द्वा राम' पुकारते हुए महाराज्य भी परकोक

कैदेवीके इन बचनोंसे मानो भरतजीपर बझपात हो गया। वे रिताकी सृत्युको तो मूख गये और कपने हेनुमें सीरामका बनगमन सुनते ही सहस गये, एके हुए वावपर मानो सागानी सग गयी।

भारति विमरेठ पिनु-मरन सुनन राम बन शीन ।

हेनु भवनपत्र जानि जिस महिन रहे बहि होने ।। मृति टुडि सहसेड राजदुसान । बांड छन अनु रामु केंग्रम ।। भारतबी म्याइक हो उठे चौर बादवा शोकारें सारी - यह मुकबर साताको विकासकर विद्वाते हुए बहुने करो- कन्या गही है, उनके दुलका नारा करने गढ़ी राष्मी हुई है से से न्यानती नहीं कि शीराम के पति मां के स है इसीसे तुने यह धन्याय किया है, में सामक्या प्रोइकर किराके बलयर राज्य करना है, ये सामक्या रिवाका नारा कर दिया भीर मेरे भार्यों के गाँग मीख नाँगने के निये भेजा है, प्रवुषा माता की सामाधी कियो पता हुएल दिवा है, बा मू माकर्म पा हा प्राप्त मह हो जा। असी हुई है मू चर्म दिन है, माता है मर बार्क भीर नु मेरे निये रोचा करें। में इस सा राज्यको माईके प्रति पर्यंच कर हूँ गा, बा दु की असेश कर जा, जंगकों निकल का वा गाँग रोसी सवना कन्न हो जीता भीर सपने को इतहल्य सम्बद्ध गाँग प्रवण कन्न हो जीता भीर प्रपत्न के इतहल्य सम्बद्ध गाँग

'धरीक रें ! स् राज चाइनेवाजी माताके रूपमें मेरी

है, त्पतिचातिनी और इज्ज-घातिनी है, व्यमारमा प्रमा

(बाब्सवश्र) सरवातीचे शाम-प्रेममें भीति मूलकर शतुमने वार्ता कह बाला कि—

इन्यामहिमां पापां कैकेमी हुइचारियाम्।

यदि मां मार्गिको रामो नात्येतमानुवसकत्। (बार रार शास्त्री) है साई ! इस बुट मायरम्याली कैनेबोड़ी में मा

बासता, यदि धर्माता श्रीराम मादृश्याग सम्बन्ध सुन्मते पृष्णं न करते ।' व्यक्तिर मरवजीने माताका मुँद देवना तह वार मन्ध

ब्बीर बोखे कि— बोहिस सोहिस मुहँ मिस शई। और्स मेट वेडि बैउनु वर्ष ॥





क्षेत्राच्या अस्त । प्राप्त अन्त संदर्भ स्टब्स्ट । आंखु वीटि सह बन्ध प्रवर्ण स

हैहेग्या नकतं कर्म सामराज्याभिनेकने । अन्तदा भीर बातामि हा सया नोदिता यदि ।। यारं सेउन्तु तदा मातनेष्राद्वसारातोद्धवम् । हता बीराण्डं सदोन अरुन्यतामामनिताम्।। (अपवास राष्ट्र २०४८८-८९)

'माता! धोरामके राज्यामिथेकके विषयमें कैकेबोने जो इस्में किया है, उसमें पदि मेरी सममति हो या मैं उसे नाता भी होई मो ग्राफे सी मढाहरणका पाप सती, धौर प राच भी करो जो ग्राम परिष्टतीकी सहन्यातीजीसहित ब्हासोस हाण करनेमें खाता है।

ं कीतक्याने गद्रह होकर निर्दोध भरतको गोदमें विठा विशा और उसके काँसू पोंसकर कहने क्यो — 'वेटा ! मेंने गोक्से विकस होकर तुम्पर काएंग्र कर दिया या। में वात्ती हूँ—

एवं अनते आनं पुग्हारे । तुग्ह रमुण्डीविश्वानने त्यारे । चित्रीतेण पुरे की दिस्य सामी । होर बारिष्य वाशिवरामी । सर प्यान कर निर्दे न मोडू । तुष्ट रामहिं अक्षीकृत के होडू । सर्वे प्राप्त यह जो कम कहाई। तो सर्वाह पुष्ठ सुण्यीन न कहाई।। स्व हाई मातु सर्व हिस काराध्यनस्य कर्नाह वनना कर राग्य ।। सरवाही होस्स स्वस्थानस्य कर्नाह वनना कर राग्य ।।

रे हगता है। सरका चरित्रवल और विर आवरित भारतेम ही या विसने इस अवस्थामें भी कौसल्याके द्वारा भरतको आगुमेमका ऐसा कोरदार सर्टिकिकेट हिनाबा दिया।

रिताको शाक्षोक श्रीव्यंदैदिक क्रिया करनेके बाद गत्तसामें ग्रुद, मन्त्री, मना और माताओंने बर्दांतक कि यात्र कीसव्याने भी भरतको शर्मादिहासन व्योक्ता करनेके विदे ब्रुतीय किया परम्यु भरत किसी मकार भी शत्री नदीं है। वन्नोंने सरसक्त स्वत्व के दुरिया—

नाभी दारन दोनता कही तनहीं किरनाह । देवे तितु रानुनातन्त्र सिन्द्र किरनाह । देवे तितु रानुनातन्त्र सिन्द्र के अपने न ज्ञाह । में नाम कार जोति नहिं सुमा । को निकशे प्रमुख्य है जु सुमा । विति के मन्द्र के नाम कोर्डिक मानुवर्ष है मुख्य है। मानुवर्ष के नाम अपना । मानुविक नाम कार्यों । मानुवर्ष के नाम अपने के नाम अपने के नाम कर स्वार्थ के नाम कर स्वार्थ के नाम केरी कारत स्वार्थ के नाम केरी केरा स्वार्थ के नाम केरी केरा स्वार्थ के नाम केरी केरा स्वार्थ केरा स्वार्य केरा स्वार्थ केरा स्वार्थ केरा स्वार्थ केरा स्वार्थ केरा स्वार्थ केरा स्वा

सरक हो से सर्वे थयन झुनकर सभी सुग्ध हो गये। रासदर्गेज विजे बनासनका निव्य हुमा। रासी चवनेको विचार हो गये। रासदर्गेन कोवकर सर्मे कीन रहता? जेरिंट रासदि थर रहु रकस्ती। को जोने गरदन जनु मारी १। कोव कह रहन कदिय नहिं कहू। कोन यह बन-जीवन राहु।।

बरी सुसम्पति सदन-सुख , सुद्धद मातु वितु माइ ।। सनमुख होत जो रामपद , करइ न सहज सहज सहाह ।।

मरवायीने यावान् रामकी सामिकी राव काता कर्मन सामका विभोवार कंप्रपासन्य रहकोंकी निपुक्त कर दिवा और क्यानवारी मन्तरीत कर है। इस सकत् सरके बाय नी ब्लार हांगी, बाद हकार प्रमुचीरी, एक काल बुसकार थे। इसके बिला रही, माजाभी बीर मालियोंकी पाकियों पूर्व सहावारी माक्योंकी तथा कारियों से पाकियों पूर्व सहावारी माक्योंकी तथा कारियों पूर्व

सरसानी बन जाते हुए मनमें लोचा—'धीराम, सीता जीर कम्मच बैरक ही जीन वीव वान जन सुतते हैं जीर में सावारित जावक नाने ति कर्तन पूरते हैं जीर में सावारित जावन करते ति केता हैं हैं हैं जिहार है।'जह विचारका अरत और अनुस पैरक हो विचे। होनों अनुसक सार्याकी पैरक चान केता करते जी हुआ होकर सावारियों से जतकर पैरक चान केता है कि तनेह होता अनुस्ति। उठारि करते हम सब दा सरोग।।

यह देखकर माता कीसल्याने धपनी कोशी भरतके पास के लाकर मधुर क्यानोंमें कहा-

तात चढतु रच बिल महतारी। होहिह प्रिच परिवार दुसारी।। ताहेर चळत चलिहि सब कोग्। सकल सोक कस महि मग-जोगू।।

जाता कीयत्याकी काशा आनक्य भारती स्थार का तो । कार्क-पक्षत मं ग्लेश्यु ए हुँ । वार्च निमाराज्ये की आत्तरक सन्देद किया चटन प्रांचा कार्क-पक्षत मं ग्लेश्यु ए हुँ । वार्च निमाराज्ये की आतत्वर सन्देद किया चटन प्रांचा कार्क स्थाय हुए वह स्थाय प्रांचा कीया कीय कार्का इंत्रुप्तिके वेश्वे कीये वार्द कीया कीया कीया कार्का इंत्रुपतिके वेश्वे कीये वार्द कीया कार्क-पक्षतिक किया कार्क-पक्षतिक हिमारा कार्क-पक्षतिक स्थाय कार्क-प्रांचा कार्क-पक्षतिक स्थाय कार्क-प्रांचा कार्क-पक्षतिक स्थाय कार्क-प्रांचा कार्क-पक्षतिक स्थाय कार्य कार्क-पक्षतिक स्थाय कार्क-पक्षतिक स्थाय कार्क-पक्षतिक स्थाय कार्क-पक्षतिक स्थाय कार्क-पक्षतिक स्थाय कार्क-पक्षतिक स्थाय कार्य कार्क-पक्षतिक स्थाय कार्क-पक्षतिक स्थाय कार्क-पक्षतिक स्थाय कार्य-पक्षतिक स्थाय कार्य-पक्षतिक स्थाय कार्य-पक्षतिक स्थाय कार्य-पक्षतिक स्थाय कार्य-पक्षतिक स्थाय कार्य-पक्षतिक स्थाय कार्य-पक्य-पक्षतिक स्थाय कार्य-पक्षतिक स्थाय कार्य-पक्षतिक स्थाय कार्य-पक्षतिक स्थाय कार्य-पक्षतिक स्थाय कार्य-पक्षतिक स्थाय-पक्षतिक स्थाय कार्य-पक्षतिक स्थाय-पक्षतिक स्थाय

सोनेची दोवारॉवर विचित्र चित्रकारीका काम किया हुया है, यही स्वामी राम क्या हुती हंगुड़ी वेडके जीवे रहे हैं? हा ! इस समर्थका कारच में ही हैं—

हा हतोइसिन नुवासे। प्रियासमार्थः हते मन।
दिशी शायनः शायमधियेते ह्वायमप्रश्नाः
सार्वभीयनुते कतः सर्वटानुसावनः ।
सर्वियमस्यास्ययना सार्व वियमनुतायम् ॥
कपीमन्दीनस्यमा सार्व वियमनुतायम् ॥
सपीमन्दीनस्यमा सर्वास्यम् ।
सुरामानी न दुःसार्दः समितो मुदि सायनः ॥
वियमन्दीनस्य ।

हाय ! मैं कितना क्र्र हूँ, हा ! मैं मारा गया, वर्षोक्षि मेरे ही कारण श्रीरपुनापत्रीको सती सीतात्रीके साथ पेसी कठिन शस्यापर धानापको आँति सोना पहा। बढ़ी ! धानवतीं कुलमें उपल हुए. सबको सुश देनेवाके, सबका प्रिय कारीवाले, कमनीए-कान्ति, वील कमलके समान धानित्याके, राजाच नियदर्गन श्रीरामकप्रको, को सदा ही हुल भोगनेके घोग्य तथा इस हुएल-मोगके क्योग्य हैं, मेरे ही कारण इस कारीवपर सोना पदा। !

सदमन्तर भरतजीने उस कुश-राज्याकी प्रणाम-मद्षिणाकी---

कुस-साथरी निहारि मुहाई। कीन्ह प्रनाम प्रदिन्धन गाई ॥ चरन-रेख-रज ऑलिन्ह साई। बनइ न कहत प्रीति अधिकाई॥ कनकविषु दुइ चारिक देखे। राखे शीस सीब सम केले॥

पहाँसे भरतजी फिर पैदल चलने खगे, अब सेवकोंने घोदेपर सवार होनेके लिये विशेष भाग्रह किया तब आप कहते लगे—

रामु प्रयादेहि पाय सिकाए। हमक्टें स्थ गत्र वाजि बनाए।। सिरमर जाउँ उक्ति अस मोरा। सबतें सेवक धरम कटोरा ॥

भाई! मुभे तो सिरके बध चळना चाहिये। क्योंकि वहाँ रामके चरण टिके हैं वहाँ मेरा सिर ही टिकना योग्य है। सीता राम सीता रामका कोतन करते हुए महतजी मयाग पहुँचे। उनके पैरोंके हाखे कमळके प्लोंपर बोसकी हैं टीके समान चमळते हैं—

हात्का हारकत पागह कैसे । पंडजडोड जोस-कन जैसे ॥ तदनन्तर महाराज भरतभी मुनि भारहाजडे बालमर्थे पहुँचे।परस्परिशाचारडे उपरान्त भरहाजजीने भी भरतके हदस्पर मानो गहरा चाषात काले हुए बनसे चुड़ा- कवित तस्वापास्य यात्रं कर्नुनिहेच्छति। अकव्यकं सेतनुमना राज्यं तस्यानुसम्य च ॥ (वा० रा० राऽवारः)

'क्या तुम जन पापदीन मीतामण्ड कीर सरस्य पपडर निष्करण्ड शास्त्र मोगनेडी हृष्णासे तो वरमें ह बा रहे हो है' मरहाजजीके हृत क्यांसे मरजीका ही दुक्ते नुकते हो गया । वे कागर-क्यूसे रोते हुए बोवे-

इनोऽस्मि बदि मामेर्न मगरानिष मन्तवे । (बा॰ ए॰ २१३०११४

"सगवन् ! यदि त्रिकालन्सी होवर जाए सी ऐस ही सानते हैं तब तो में सारा गया । ऐसा कडोर दचन नरे कडना चानिये ।"

> केंद्रेस्य संख्वं की रामराध्येषस्त्रम् ॥ स्वत्यक्षिष्टं सारि नहि जानानि विस्व । सदस्यस्युपं मेड्स प्रमाणं पुनिस्त्रमः । स्युप्तस्य पदयुगतं सुने। स्यूर्यक्रेमस्तः । शातुम्बद्दी सां देव पुजीतः गुद्धः य साः स्याप्तस्य स्वत्ये कि स्वाप्ति प्राप्ति विद्योगितः । किक्करोडं मेनिकेंद्र रामस्त्रस्य शास्त्रः ।

पुनिश्चष्ठ रामचन्द्रस्य शास्त्रकः ॥ (अध्याल रा = ३ । म : ४१–४९)

दे सुनिकंड | कैदेवीने श्रीसामण्यत्रीहे राजानिकों चित्र बाजनेके जिसे को इस किया वा सान्यवातारी? चित्र बाजनेक जिसे को इस किया वा सान्यवातारी? चानका, इस सान्यकों चारके वरणपुत्तक ही में जिने आगा हैं। देशना कर सुनिके दोनों करबाँको रक्षान भरतात्री कहने करें, 'हे देश | में सुत हैं वा कहते चारकों चार अधीनाति जान सकते हैं। दे सांतर्ग सारा को चार अधीनाति जान सकते हैं। दे सांतर्ग सारा को चार सर्वी होते वा सकते हैं। दे सांतर्ग सारा को चार सर्वी होते जान सकते हैं। दे सांतर्ग सारा को चार सर्वी होते चार कर का स्वीका है, में के

सवा-सर्वेदा औरशासका एक विका हैं।"
इत्याद अवहासकीने मतत्त्व होता का भी द्वार्याते
सव वार्ये आवता वा भी सेन हो हमारे स्वाद हा करे
और तुम्बारी कोर्लि बहानके तिये हैं। हमारे देवा पूर्व विकाय । बात्तकर तुम्बारी समात्र कमार्यी हमार्था के
हैं, जिस्सका बीवन-पान-आप स्वीताम के प्रवक्षक हैं—
के तुम्बार जीवन-पान-आप स्वीताम के प्रवक्षक हैं—
कुन्ह क्षात पुष्ट मनगात्री। पूर्व मत्त्र के तुम्बार करें।
कुन्ह क्षात पुष्ट मनगात्री। पूर्व मत्त्र हमार्थ करें।
कुन्ह क्षात पुष्ट मनगात्री। देव-पान हम सक्त्र मत्त्री।
कार्य पान पीनिह क्षीत्र हीती। निर्माण हमार्थ सार्दा हमारे में बानवा हूँ तुम शाम,सीता, खश्मवाको अव्यन्त प्वारे ोरे वर पहाँ दृदरे थे तो शतभर तुम्दारी ही अर्थासा कर देशे। तुम तो भरत ! मानो जीशम-प्रेमके जरीरचारी नवार हो।

न्वार हो। वृग वो मरत मोर सत पहु । चरे देह कनु रामसनेहु ॥

दे भवा ! पुनो, हम तपस्वी बवासी बववासी है, व्रव्हारी जिले सुत्र वहाँ बोजने, हमारी समस्यते तो हमारी जा सारनामां के बनस्वरूप हमें श्रीराम-सीता और कर्मन मिले थे और यब औराम-सीता और क्यार पूर्वन हमें हैं यहाँ आर्थ मानिवासियों सहित वा बमा सीवाम है—

रत बन्य तुम जन जस रायक । कहि अस बेममगन मुनि सथक ११

हमने जननार भाषाम श्रुनिने सिहिदांचे हारा परम प्रमाण करिय भारतश्रीका भारित्य-सम्बाद किया, सभी नमार्व दिवास-सामग्री जरण हो गयी। शत क्रोस करनी-वर्ती ह्यानुसार सान-या क्री कीन मही हम सामग्री पर्या हुमानुसार सान-या हों कीन नहीं है, वे किसी भी ग्रीमनो नहीं का सकते।

धन्यति चर्का मस्त चक्र मुनि भावसु खेळवार । वैदि निसि भासम पॉजरा राखे मा मिनुसार ॥

मारामहोनी विदियोंद्वारा उत्तय कारणीय मानो चवहें हैं, मारामी चवार है, द्विनित्ती काष्ठा विद्वार है, किसे व्याप्त कर विद्वार है, किसे देव एको मारामी की स्वाप्त के स्व

राणा बनानेक किये निपायको आने करके महाराज मार्था किरहुको कोर बार दे हैं मानो साजपर कानुस्ता में दोने साद करके बार दहा हो। वहाँपर मुमार्थिको मार्स मार्थाद करने किया है। शासनोक्ष्य को वेरोसे पेट्टै बीन निस्तार कुन है। वे निष्करप्रमाणको सेमार्थिक किसमा करते हुए बार दे हैं। मार्थानी दिन सामीर्थिक किसमे हमार्थिक करते हुए बार है है। मार्थानी दिन सामीर्थिक मेंद्र करीने मार्गी सेमार्थ मार्गी व्यवस्था करता है कि सीर्थ का मेंद्र करता है कि सामीर्थ करता है कि सीर्थ का मेंद्र करता मार्थिक सामीर्थना मार्थक स्थान षाकर परमयदको मास हो जाते हैं। जिन रामनीका एक बार भी नाम जैनेवाला मनुष्य कर्य मरता और वृत्तराँको सारनेवाला बन जाता है वे ध्येराम क्यां मिन भरतजीका भनमें सला पिन्तन किया करते हैं, उनके दर्गनसे छोगाँका बन्नमन्त्रक हो जाना जीन बडी बात है।

धरतजीके दर्शनसे आनुरेमके भाव पारों बोर फीत देहें हैं, जब महाराज भरतजी बीराम बहकर सींत सेते हैं तब मानो पार्री बोर मेम जमर पहला है, उनके प्रेमपूर्ण वचन बुलकर जम और पायर भी पिचल लाते हैं, किर मनुष्योंकी तो बात ही बचा है हैं

जबहिं राम बहि लेहिं ठसासा । उमनत प्रेम मनहुँ चहुँपासा ॥ इबहि बचन सुनि कुलिस बसाना । पुरवन प्रेम न आइ बसाना ॥

सार्गके मर-मारी भरताशीको पैदत चारते हैस-हैसका मेत्रोंको सफत करते हैं भीर भीति-भीतिकी चर्चा करते हैं। बनको नारियाँ भरताशिक शीस भीर भीर भाग्यकी सराहणा करती हुई कहती हैं—

> चक्रत प्रयादेहि सात फक्ष पिता दीन्ह तित्र राज । सान मनावन रचुनरहिं मरत-सरिस को आज ।।

आवश मजीते मरत जाण्यत् । कतत सुन्दे हुन्द्र-पूर हर्ष्यु । 'ख्यो ! रिकार्ट दिवे हुण रायको प्रोपकर ध्यान मरत कल-मूल जाते हुए देवल धी स्थानको मनाने का रहे हैं, इनके सतान भागवान बूलार कीन होगा ! मारजीके आईएन, असि कीर सामायांका गुल गाने और सुननेते इन्द्र कीर राज स्थान हो जाते हैं।'

अरतका पेता प्रभाव पहना ही चाहिये था ! अरतजीतहिल सबको ग्राम सङ्ग होने जने, जिससे

अवतीसदिव सबको हम सबुन होने को, जियसे मेरा कीर भी कहा, मेरावी विद्वकराति पर कहर-साँधे वह रहे हैं, हुतके समासाला निष्पादानके प्रीविद्यास्त्र पर मेरे दक्षाणी प्राचाया । कहा ! हसी प्रच्यान परंग-पर मेरे दक्षाणी प्राचाया स्तर है, यह सोचकर मत्त्रजी कहाने करे स्वाची प्राचाया स्तर है, यह सोचकर मत्त्रजी कहाने करें। जब समय मत्त्रको बेला मेरा था, दमका वर्णन केपणी भी गर्दी कर सक्त्रों केपी मेरा था, दमका बर्णन केपणी भी गर्दी कर सक्त्रों केपी केपि हिंदे सो यह बतना हो कठित है निजया कार्यना-मन्त्रास्त्रणे सिक्त स्त्रचलके दिने कहानन !

मरत त्रेमु तेहि समय जस तस वर्ड सदै न सेरु ।। कविहि स्थान जिले सहमुख महन्मस-मिन-मनेरु ।। भरतजीने सारे समुदायसहित मन्दाकिनीमें स्नान किया और सय जोगोंकी यहीं फोड़कर ये केवल श्रमुश और गुरुको साथ जेकर चागे चले। यहाँपर मरतजीके मनकी दशाका चित्रवा औरगोस्नामीजीने यहत ही सुन्दर किया है—

समुद्रि मातुकरतव सकु वाहीं । करत कुतरक कोटि मनमाहीं ॥ राम-रुपन-सिय सुनि मम नाउँ। उठि जीन अनत जाहि तबि ठाउँ॥

मातु मति महैं मानि मोहि वो कुछ कहिंहें सी चोर । अब अवगुन छिने आदर्राहें समुक्षि आपनी ओर ॥ -

जों परिहरिह मिलिन मन जानी । जो सलमानहि सेवक मानी ॥ मीरे सरन रामकी पनहीं। राम सुस्वामि दोव सब जनहीं।।

धन्य मरतती ! जानते हैं कि मैं निर्देश हूँ, परानु जब अयोध्याके दूत, सब नगर-निवासी, जाता कौसल्या, निवाइ और त्रिकालदर्गी मरदा-तीता को एक एक बार सन्देह कियो औरता की मुक्ते मन-मिला सम्बन्ध न त्याग देंगे, इसका अरात की मुक्ते मन-मिला सम्बन्ध न त्याग देंगे, इसका क्या मरोसा है ! यह कौन मान सकता है कि माताके नतके साथ मेरा मत नहीं था । वो कुछ हो, राम चाहे त्याग दें, ररन्तु में तो वर्षोंकी जुलियोंकी शाया पड़ा रहूँगा । माताके नावे में तो होशी हूँ हो । यर बीराम झुलामी हैं, वे कारय हुगा करेंगे ।

फिर बर सावाची करतून याद वा जाती है तो पैर वीवे पत्त बरा जाते हैं, वरनी मिक्डी बोर देखका कुड़ बागे पत्त हैं बीवे तब मीरपुनायत्रीके स्थानकी बोर पृष्टि बाती है तो मार्गिन करई-करई। बीव पत्त हैं है इस सतक मारवांशी दण बेगी हों है बीवे बड़के स्थान में मेंदरको होती है, बा बर्मा पीवे हरना है, बमी चड़र खाता है बीर बमी पिर बार्ग कार्न कराता है। मारवक इस मेंमको देखकर विश्व पार कार्य कराता है। मारवक इस मेंमको देखकर विश्व प्राप्त कार्य कराता है। स्वाप्त वा

केरीहे मरदि मार्कुट सोपी ६ काठ मर्छी वन कांत्र सोपी ॥ बद समुस्त रचुरावपुमाञ्च ठव वच वाट क्टाइट वाञ ॥ मार्ज्डस्टेटियसम्बद्धीय बटन्यसङ्ग बटन्यटिन्स्टि वैसी॥ देनि मरज वस सोच स्वेट् ॥ सान्तिद् टेटिसाबब विदेट् ॥

मराज्यपुत्र मेमने विद्वत हुए बड़े बा रहे हैं— स दर बम्बपुत्र की सीवा व्यवदिवद्यक्ती वर्का स्वरंत है दर्द कामन पुरेक्षिककार वेद बन्ददरस कुटलुकः॥ अहो 1 सुधन्योहकमूनि शामपादारिनदादितमूलर्सः पदयामि यरपादरजोतिमृग्यं ब्रह्मादिदेनैश्रुदीभिश्रं नितन (अध्यान रा॰ शापर

बहाँ श्रीरासके घन, धंडुरा, घना और कमा । चिन्होंसे शंकित शुभ चाय-चिद्ध देवते हैं घाँ रोगों वस चायातमें लोटने छाते हैं धौर कारे हैं कि घाँ। चन्य हैं जो शीरामके वन चायोंसे चिद्धिन मूनिक र कर रहे हैं, जिन चरयोंका रन मझादि देवता धौर दे। खोजने वसते हैं।

भारतकी इस स्वत्याको देशकर पद्म, वर्गी कौर इर सुग्ध हो गये। पद्म-पद्मी जह पारावकी मीति एस-सुग्ध स्वत्यको कोर देवने वरो और इचारि प्रवित्र हो। डिजने-कोश्चर बरो-

होत न मुदर माठ मस्तको। अवर सचा चर अवर हरा हो

भरत-राष्ट्रास्की यह दशा देल निवादात्र मेजने हन्त्र होकर दाला भूख गया। दो पागकों में होता को कर्त-होनेसे केसे क्वारा है तोनों ही मतवाबे हो गरे। देशा^{एं} कुळ बरसाइट नियादको सावधान करते हुए शका वाला किकारी में में की

सीरामने सरमयंत्रीकी नीवनकी नर्रताक वर्षे अरामने सरमयंत्रीकी नीवनकी नर्रताक वर्षे अराका महत्त्वसमयाया, सरमयंत्रीका वित्तरामा हो स्ता

भरतका बीवन वरा दी जामिन है। लोगा मार की निवान होते हुए भी सब्दे सम्देखा क्या दान है। भरतके मदस्य सर्वेदा शास्त्रियमान्यन बर्धमा नर्ग महाप्रकार इस्प्रकारके सम्देखा की नाम बनावे की जिल्ला। इस्त्रेश भी मार तक बारे हैं, हम्ब बर्ग जिल्ला । इस्त्रेश भी मार तक बारे हैं, हम्ब साम्यक्षा स्त्री वर दोने। शास्त्रित में स्त्री वीहरूने सरने निर्देशनाला दंश बहारह साम्यक वर कोई।

नुव ही समय बाद शीवागती वर्षे वा नुरे हैं। बूस्से ही क्योरवागीं के बाया करा हुए श्रीमानों नुर्वे बायवरार हैंदे देखकर होई शीर कुर कुछक हैंने हुई हैं बायवरार बेंदे देखकर होई शीर कुर कुछक हैंने हुई हैं

यः संसदि प्रकृतिभिभेवेद्युक उपासितुम् । बन्यैमूँगैरुपासीनः सोऽयमास्त ममाप्रजः॥ बासोमिर्बहसाहसैयों महात्मा पुराचितः। मुगाजिने सोऽयमिह प्रवस्त धर्ममाचरन् ॥ अभारयद्यो विविधाक्षित्राः समनसः सदा । शोऽयं जटामारमिमं सहते रायवः कथम्।। मस्य यहैर्ववादिरीयुंको धर्मस्य संचयः। शरिरहेशसंमुतं स धर्म परिमामिते ॥ चन्दनेन महाहेंण बस्याहमुचसेवितम्। महेल वस्यांगामिदं कथमार्थस्य संस्थते ।। मनिनित्तमिदं हुःकं त्राप्ता रामः सुखोचितः । भिग्जीवितं नृशंसस्य मम क्लेकविगर्हितम् ॥

(बा॰ रा॰ २ । ६६ । ३१ से ३६)

मेरे बढ़े माई राम, को राजदरबारमें प्रका और मन्त्रियों हत बनासित होने योग्य हैं वे, ब्याज इन जंगकी पशुधोंसे रशसित हो रहे हैं। को महात्मा धयोध्याजीमें उत्तमोत्तम गुरूल वस्तोंको भारण करते थे वे बाज धर्माचरचके जिये रम निर्मन बनमें केवल समञ्जाला भारण किये हुए हैं। जो बीतपुनायबी एक दिन चपने सक्तकपर चनेक प्रकारकी दुर्गोधत पुर्वमाखाएँ धारण करते ये साज ने इस कटाभार-को कैसे सह रहे हैं। जो ऋत्विजों हारा विधिपूर्वक यज भाते ये वे भाज शरीरको प्रत्यन्त क्रेश देते हुए धर्मका वेदर हा रहे हैं। जिनके शरीरपर सदा चन्दन समाया वेताया भाव उनके शरीस्पर मेख समी हुई है। हाय ! नित्तर सुख मोगनेबाजे थे मेरे बड़े आई श्रीरामजीको माब मेरे जिये ही हतना असदा कट सहन करना यद पाहै, सुम करके इस जीकनिन्दित जीवनकी विकार है।' रों दिशाप करते और भौसुक्षोंकी भाजस भारा बहाते हुए मतित्री श्रीरामके समीप जा पहुँचे, परन्तु शत्यन्त दुःसके भारत उनके चरवाँतक नहीं पहुँच पाये। कीच ही 🖩 'हा जायें, भित्कर दीनकी भाँति गिर पड़े । शोकसे गता रुक गवा । इद बात नहीं कह सके 1 इसप्रकार---

विदेश चीरवसनं प्राकृति पतितं मुनि । << रो रामो हुर्दर्श युगान्ते भास्करं यथा ।।

(41 + 41 + 41 + 17) बरा बत्बलवारी भारतको हाथ ओड़े हुए जमीनवर

कातान देखा, भरतजीकी कान्ति उसी प्रकार अजिन रों भी, बेरे प्रवचकालमें सुर्वकी होती है। बीहामने

विवर्खं धीर दुवंब भरतको बहुत ही कठिनतासे पहचाना चौर बढ़े चादरके साथ बमोनसे उठाकर उनका सिर सँघ गोदमें बैठाकर कहा। 'भाई ! तुम्हारा यह वेश क्यों ! तुम अदा-बल्कज धारणकर राज्य स्थागकर बनमें देसे प्राचे !" इसपर भरतजीने पिताकी मृत्युका संवाद सनाया और कहा कि 'मेरी मा कैनेयी विधवा होकर निन्दाके घोर नरकर्में पड़ी है, में भारका दासाजुदास हैं, माई हैं, शिम्य हैं, भार सुम्बपर दया करें।

> वभिक्ष सचिवै: सार्व शिरसा वानितो गया । अतः शिष्यस्य दासस्य प्रसादं कर्नमईसि ॥

> > (शक्ता हा ११११)

विताका मरवासंवाद सुनते ही धीरामकी बाँखोंसे भाँस मर भाये । माताओं भीर गुरु वरिष्टादि आह्मवाँकी प्रचामकर तथा सबसे मिखकर धीरामने मन्दाकिनीपर आकर रनान किया.तर्पेयकर पियडदान दिये। इस दिन सबने उपवास किया । दूसरें दिन सवसीय एकत्र हुए, तब भरतजीने राज्याभिषेकके जिथे श्रीरामसे प्रार्थमा की और कहा कि-

राज्यं पालय पित्यं ते अवेष्ठसम्बं मे पिता तथा। छत्रियाणासकं धर्मी यत्त्रज्ञापरिपाटनम् ॥ इप्ट्या यशैर्वहनिषेः पुतानुत्पास तस्त्रवे । शक्ये पुत्रे समारोप्य गामिष्यसि तदो बनम् ।। इदानीं बनवासस्य काली नैव प्रसीद में । मातमें हुम्बते किभित् स्मतुं नाईसि पाहि मा।। (Mette \$ 19 1 88-84)

बाव सबमें बड़े हैं, मेरे विवाजीके रामान हैं, चतः चार शक्यका पालन की जिये। अजा-पालन ही चत्रिपोंका धर्म है। श्चनेक प्रकार यज्ञ करके एवं उच्च-श्वतिके जिपे पुत्र उत्पन्न करके पुत्रको श्रामसिंहासनपर चैठानेके बाद चार चनमें प्रधारियेगा। वह बनवासका समय नहीं है । मुक्तपर कृपा कीजिये, मेरी भातासे को क्रकमें बन गया है उसे मुखकर मेरी रहा की जिये।

इतना कश्कर भरतजी द्यहर्या तरह श्रीरामके चरकोंमें तिर वहे. श्रीशमने स्नेडसे बढाकर गोडमें वैद्यवा कीर बालींसें बांस सरकर घोरेसे ओसरवडीमें बोसे--'बार्ड ? विताजीने तथ्यें राज्य दिया है, और अबे पर भेजा है-अतः विद्वेषः कार्यमानाम्यामतियदाः।।

पिन्रवेश्वनमुहास्य स्वतन्त्रे। यस्तु वर्तते । स जीरतीय मुत्रको देशानी निर्म अभ्या (#0 Co 2 +4 121-21) भरतजीने सारे समुदायसदित मन्दाकिनीमें स्नान किया और सब कोर्गोंको वहीं छोड़कर वे क्वल ग्रमुन और ग्रहक साथ लेकर खागे चले । यहाँपर भरतजीके मनकी दशाका चित्रया श्रीगोस्वामीजीने बहुत ही सुन्दर किया है—

समुहि मानुकरतन सङ्क्षाहीं । करत क्रवरक केटिमनमाहीं ॥ राम-राम-दिप-सिन सुनि मम नाऊँ। ठठि जीन अनत जाहिँ तमि ठाऊँ॥

मातु मेते महेँ मानि मोहि जो कुछ कहहिं सो थोर । अद्य अवगुन छमि आदरहिं समुद्रि आपनी ओर ॥

जों परिहरदि महिना मन जानी । जो सनमानदि सेवक मानी ।। मोरे सरन शमकी पनही। शम मुस्तिम दोव सब जनहो।।

धन्य भारतजी ! जानते हैं कि में निवृत्ति हूँ, परन्तु जब धरोध्योके दून, सह नार-निवासी, माना कौसरमा, नियाद सीर तिकावदर्गी मरहाजजी तकने पर करार सन्देश किया तो बहाँ भी खन्मपा-सीना सुभ्यर सन्देश कियों पर श्रीसा ही मुक्ते मन-मिंडेन सम्मक्त के खाग पूँगे, हसका क्या भरोसा है! यह कौन मान सकता है कि मानाके मनके साथ मेरा मन नहीं था। को इन हो, राम चाहे खाग थूँ, परन्तु में तो उन्होंकी ज्वियोंकी शरदा पड़ा रहूँगा। मानाके माने में तो होती हूँ हो। पर बीराम मुख्यामी है, वे धरदय हुना करेंगे।

फिर बर आवार्क करवून बाद का बाती है वो पैर पीड़े पहने बरा बाते हैं, परनी अफिडी थीर देशका हुड़ बागे बहते हैं थीर बर भीरपुनायत्रीके स्वताबकी और इफि बाती है थो मार्नि करई-करड़ी थींव पहते हैं। इस समक् मरवजीकी हरा वैती ही है थीने बबके मगाहमें मेंबरकी होती है, बो कमी पीड़े हटता है, कमी बबर खाता है थीर कमी पिट भागे बहते बगता है। मारके इस प्रेमको देशकर विराइताक मी वर-मनकी सुचि मुख्यमा।

केरीत मतदि मातुष्टर कोरी । चरत मत्ती वर बीरव कोरी ॥ बर समुक्तर रहुनाममुनाऽ । इन पद चरत स्वास्त्र पाठ ।। मात्रदक्तिकेदि बरमा कैदी । बरु-प्रकाह बरु-किन्मीते वैगी॥ देखि मात्र बर मोच कमेटू । मानिषद देहि मनव विदेहु ॥

सरत-राष्ट्रम प्रेमने विद्वण हुए वसे या रहे हैं— स दर बर्म पुरागीशीचन समादिवद्वानि वरति सर्थः । इस्ते रामस्य प्रोजिनस्यायोग्ध न चरस्यः कुळतुकः।। वही । सुक्षन्योहममूनि राजगदापिन्दाद्विजन्तरः पदमानि मत्पादरजीविमृग्धं ब्रह्मद्विदेवैग्युविनिम्न निय (ब्रह्मान ए० सर्धः

वहीं थीरामके बज्ञ, संहरा, स्वाब और क्ष्मब चिन्होंसे संकित श्रम चारा-चिन्न देवते हैं को रेने उस चाराव्या सोटने बातने हैं की कार्न हैं कि को चन्य हैं वो थीरामके उन चार्योंसे विक्रिंग मूनिय कर रहे हैं, जिन चार्योंसे एज ब्रह्मादि देशा और वेर खोजने रहते हैं।

अस्तको इस अवस्थाको देलका पर, वर्ग केर हैं। भुगव हो गये। परा-पर्च वह बागायको सीते हैं। बागाकर मत्तको स्रोत देवले बगे और इवार होते हैं। क्रिक्त-कोसले बगे-

होत न मृदल माड मरतको । अवर सचर चर अवर हरा हो

अरत-अनुमधी यह दण देल निपाइन मेमने वर्ष होकर राजा अब गया। हो पान्तोंने शीला हो कर होनेसे कैसे चचता? शीनों ही मठवाबे हो गरे। हेरान इस बरसाकर निपाइको सार्वभाग करने हुए गरा वर्षा चित्रहारी मेमकी!

श्रीरामने अन्मवाशीकी श्रीवतकी करें।" अरतकाशकरूव समक्षाचा, क्षमायशीका वित्रश

स्तवका क्षेत्रम वहा ही सर्वित है। गाँ निवाय होते हुए भी सबके सन्देश्य दिन्ता है। स्तवके मदस सर्वेदा शास्त्रिया। ग सहपुरुत्तर हृत्यकार हे सन्देश्य । नर्दी सिव्या। हृत्यके सामग्रा सामग्रदाया नर्दी कर केने । शामग्रिया

पुत्र ही सत्तव वाद जीता नृश्मे ही अधीवनाजींके वरा साववना के देवना हैं

4



्र_{ीय} केन नकीत्तर्थे कराई संतुर्वे सर्वार्थीः क के देन के हैं कोई अवस्था सार आस्पा of the land by the state feet w of Florid Country Harring Herrit. क स्था नेका इन्द्र है तमें हमा है आवा की क्रमें ने वर्ष करें को अपनी केंगी स्थिति यें। हैं

D bit Jene mill en ein ! BE DE BLACK BEL AND NE MEN IL न्त्रमाने बारकी वर्षि बारपी हुई बाम-वय-परायय कार होता है जार साथ हुनने भावर कार्नीमें करन्त्र

سالم ونامه (منابسة मन मार कोन्यू दिलाली । वस विस्तार गुनगन पाँठी ॥ सन् मार राज्य विकास अर्थे इस्त देव मुनि-बाता।। र पूर्व राग्य है र स्थान श्रीता अनुस्ताहित प्रमु आदता। पर क्ल में भे अन्तर्जी हे सारे हुन्त मिर गये। एर १९६ १ । प्रावदीनमें आख कागवे ।

भारती प्रवृत्ति होतर पृष्टि सारी-क्षेत्र भग । क्षेत्री लाके । मोहि चरमप्रिय बचन मुनान ॥ को प्रम भग । क्षेत्री लाके ।

North MIR-

र्भार पूर्व है की श्रामाना । नाम मोर सुनु क्यानियाना । भूतपृत्ति सहित्। × ४ १९५१ हरूमान्त्रीको इत्यसे ख्या विया— पुत्रत भरेट उठि साद्र ।।

के हरणे तहीं समाता है, नेत्रोंसे प्रेमासुधीकी धारा भारती पुत्रकार हो रहा है। मरवजी करवे हैं-स्व स्वाप्त हैं स्व विदेश स्व के स्व के स्व के स्व कि स १९ मार्था । तेक्ट्र देवें काह सुनु अद्या ॥ १९ वर्ष १९ वर्ष १९ १९ स्ट्रिक्ट स्ट्रिमाही । करि निवार देखेउँ कटु नाहीं ॥ ६६ ^{क्र. १९} भी अरिन में ठोहीं। अब प्रमुचरित सुनाबहु मोहीं II भिक्तानि चरच-बन्दन कर सारी क्या संचेपमें ्राह्म कर सारी हो। हर्गक्त भरतशीने किर पूछा-

्रा भारतर्दे इपाठु गोसाई। मुनिगर्हि मोहि निज दासकि नाई।। वर्ष रधर्वसमूचन कवहुँ मोहि मुनिसन करवो , े . चाननि परवा १

मुन-पन बहुत अग-जग-नाय जो . . पुर्नज, सद्गुन-सिंगु छो।।

श्रीहनूमान्दाने गर्गद् होकर क्या-राम प्रामित नाम हुन्ह स्तव बचन मन देव । पुनि पुनि निरुद्ध सर्वरत्त हरण हरण स्वर स्वर ॥

 भाव भीर इन्तान् वार-वार गई । बदक्र निर्देशे इपेंडा पार नहीं हैं। इनुमान्त्री बारत डीट परे, इन सारे रनिकायमें और अगरमें सबर मेडी गरी। सनी है। इवें हा बहा । सारा बहर सहाया गया !

भगवान्द्य विमान घरोष्टामें पहुँचा। सटटी ग्रहुमंत्री समवानीके सिपे सब मन्त्रियों और इत्सानि सहित सामने रापे । विमान बनीनरर दत्रा, वात्रव विमानमें बाहर झीरामडे चरहोंने होट रहे। हैर कानन्दायुक्तींसे उनके करहोंको घोने समे। स्रोत्हुबारकी बन्हें दशकर झाठीसे बगा विवा । तदबनार माराबी मार् बचमयुद्धीमे मिन्ने और उन्होंने माठा सीटाझे प्रदासदिया। र्व्यसमने भरतको गोइमें बैग्रकर विमानको मरतके बाहत की चौर वानेची काला ही। शहननार नगरने कास सबने मिन्ने । बारामने मरतका क्य वरने हायाँचे मुक्याँ। फिर दीनों बाइवॉको बहबाया। इसके बाद सर्वे बाद सुखम्बद्धर स्नाव दिया।

तदनन्तर अयवान् राजसिंहाधनार के । हीवों बार् सेवामें खरे । समय-समयरर मरतत्री क्रवेक सुन्तर प्रव करके राममे विविध उपदेश मास करने बगे। बीर बन्धी श्रीरामके साथ ही परमधान पथारे ।

श्रीमरतबीका चरित्र विवयस और गत्म बार्ग है। उनका रामप्रेम चनुसनीय है, इसीसे क्या गया है किना भरत सरिस को शन सनेही । वन बनु राम, राम बनु हेरी।।

वास्त्रवर्मे मस्तर्जाका आनुन्येस बगन्हे इनिहासमे एह ही है। इनका राज्य-काग, संबम, बन, विवस कारि वर्ष सराहनीय और अनुकालीय है। इनके वरिक्रो सार्वना विनय, सहित्तुता, सम्मीतता, सरवता, बमा, वित्रम की जवानतः आनुमक्ति वही हो अनुषम शिवा हेर्नी वर्ति ।

श्रीलह्मणका आत्रोम

अहह चन्य रुग्निमन बङ्गारी । राम-परार्गिनर-अनुरणेश

राम-मेपके चातक सच्मलबीकी महिमा स्वार है। क्षक्मवर्जीका अवतार श्रीरामके कार्योमें रहकर उनकी ^{के} करनेडे क्रिये 🛍 हुआ था। इनीसे बाब रास्की सर्व मूर्तिके साथ सम्मण्डी गौर मूर्ति भी न्यारित होती है के रामके साथ क्रमाबका नाम विवा आठा है। राम्प्रण



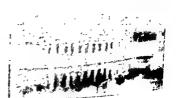




श्रीरामेश्वरजीके मन्द्रिकी प्रदक्षिणा (फेरी)



राम भरोगा



नीर्षं (नामाद)

त्रामन्त्रपुत्रा कोई नहीं बहता, परन्तु द्वाम- वस्मय्य सभी मंद्री धीवसम्पन्नी धीर, भीर, तेजस्वी, ब्रह्मप्रवेतती, रिवरियेतती, रात्वासी, सरवं,सुन्दर, तिरिया-सम्पन्न, विदं, निस्तर, व्यागी, बुद्धिमान, पुरुवार्थी, वस्पन्नी, केमार्थी, सिविडे वाननेवार्थ, स्वयन्त्री कोर रामस्वामय रो उच्छा तससे सुरूप धर्म कीरायके वस्पाणि रटकर रच्छ बहुत्यस्य करामा था । वे कीरायके वस्पाणि रटकर रच्छ बहुत्यस्य करामा था। वे कीरायकेवार्थ कपने वापान्त्री रचकार्थे। भारतनीवा विदयन कीर मञ्जूष्ता शुक्त ग्रामीर से वहे वस्पोन्न है, वेदे वहें धर्मायस्थानांक वोरशासुक्त केमारूक चानकार्यस मंत्री यस व्याप्त हैं

वाकार्यमें साथ लेताने-सरावेड वपान्य पन्दरह वर्षकी राम है। वस्तावाची प्रपत्ने वह आई भीशामतीके साथ मिलीमाने वादास्थानित कर्ताय मिलीमाने वादास्थानित कर्ताय मिलीमाने वादास्थानित कर्ताय मिलीमाने वादास्थानित कर्ताय मिलीमाने साथ मिलीमाने साथ मिलीमाने साथ मिलीमाने कर्ताय महाराजा वात्रक मिलीमाने कर्ताय कर्ताय महाराजा वात्रक मिलीमाने कर्त्याय महाराजा वात्रक मिलीमाने मिलीमा

समय संप्रेम बिनीत अति सङ्गुज-सहित दोड माह ।

पुरुष्टर-पंत्रज नाह सिर्द केंद्र आयशु याह ११ भिने हरेन होने आपनु दौनहा। सनही सन्या नन्दन कीयहा। १ पट क्या है देशास पुरानी। इनिय र जानि जुन जान सिरानी। १ प्रेनेत्र सरम कीट कर कार्या है तमे पार्ट नार्यक र देश अही। किट्टे के पारनारोवेंद्र कार्यी। करत निवित्र अप ओन विशामी। १ दे रोड बंधु केन जुन औते। गुरु-पद-पदुष्ट करोडेट कीटी। १ पद बार मार्ट कीट कार्या एकर स्वाचन कव कीटरी। १ भीत जार करन कर कार्या हमार्थ स्वीतन स्वीतन प्रयास समुख्याया। १ भी पुनि प्रमुष्ट स्वीत्र हारता। पीट्टे बीट उर पद अक्साता।

वडे कदन निर्सि बिगत सुनि अहन-सिसा-पुनि कान । गुष्ते पहिरोहि अगतपति अमे दाम मुजान ।।

यहा, बचा ही सुन्दर आहरों रस्त है! औहाम-बच्चाया गए देवने तमे थे, बहाँ बगारवाली श्रा-वाली और वासवायक गए देवने ये थे, बहाँ बगारवाली श्रा-वाली और वासवायक मा बोटे बाद बहाँ के प्रेमें स्ता गाने, पराणु कर्यन होने वा पूर्व देवा होने कर बचा प्रवाद कर वाली करवाय करवा करवा के सम्बद्ध कर बचा प्रवाद कर बचा कर बचा प्रवाद कर बचा प्रवाद कर बचा कर बचा कर बचा प्रवाद कर बचा कर बचा

पर सम्पायन्त्र किया। यदमनार कमानुगाय होने दोने दोने दो पर पाय नीन गरी। तय ग्रामि विषादित्रमें सोने । या चारे में मिंदि के पर दानों के मिंदि की मिंदि के प्राप्त के में मिंदि के प्राप्त के में मिंदि के प्राप्त के प्राप्त

× × ×

श्रीतमयाणीकी जानुभक्ति सनुकर्ताय है। वे सम श्रुत सह सकते ये परन्तु श्रीतमका सरमान, तिरक्ता स्त्री दुःश्य उनके जिये साराह या 1 सपने क्षिये-सपने गुर्लोके क्षिये उन्होंने कक्ष्मी दिस्तीपर कोच नहीं किया। सपने बीवनको तो सर्वेया प्लायस्य कीर तास्त्री स्त्रिया। सपने बागाये श्रवता दंगा स्त्रीत के सार्व्यक्रिय होता हो। उनको तलकावा दंगा स्त्रीत के क्षायत्वक सावनारामी भौति दुःकाद सार वक्ष्मी १६८ वनके सात्रने कोई भी वर्षों न हो वे किसीको भी परचा नहीं करते।

भी समय नहीं हुणा, तब बनवजीको बदा झेरा हुणा, अन्दोंने बु:कार्स शरहोंने कहा---अब जिलेकोज मासह मट मानी। बीर-विद्दान मही में बानी।।

सब जिने कोज मासह गर मानी। बीर-निश्तेन मही में सानी।। वजह आस निम निम गृह जाए। रिम्सान विश्वे वैदेहि निषणू। जो बनवेठ बिनु मरमहि आई। वीषन करि होरेडेन हैंसरी।

सतकारिये हम साथीको सुरका सीतारी को। हैम-बर सोग पुत्री हो गये। सागु कम्प्यपति समयो हम सुरारी ही पास्तार है। साथ समयो हमें पुरुष स्वारी साथार है। साथ समयो हमें प्रकार के स्वारी सा सीतारा व कों वह उत्तर दिख्ये, तभी वे कपूड़ा तरे, उन्होंने सोचा कि सीतारायी कर्मान्ति क्ष्मक का स्वार कर से हैं, सरगु सामयो कारण सरी मैं, इस का सीवंदन कर समयोगि साहसार पार्याची कैंगियों



हेतार वारोंने समन्ने सामने रखते हैं, वराकी उक्तियोंका रचन होते हैं, कमी विद्वज होजर विजाप नहीं करते ! ज़ाना तो उसमें उरावा पहता है, परन्तु जब भीतामका पिंका निर्येष जान की दें हैं, तब कपना सारा पण स्वयंग होत्स सामका सर्वतीभावां करामाना करने जाते हैं। एएकों भीर कैदेगोंके हम जापस्थारे तुखी हुई माता भिन्नाको विवास करते देना आसम्बर्ध तुखी हुई माता भेरे हो—

ज्युत्तिऽसित मानेन भारतं देशि ताकाः। स्तिन स्तुता भीन दस्तेन्तेत्र ते तथे।। पीकाधिनरस्यं वा मदि शामः अनेवसति। मित्रं तत्र मां देशि स्वं कृषेनरस्यातः। सामि सामित्रुत्यं तत्रामः सूर्वे द्वीरितः। देशी स्वत्यं में सामित्रा

दे देवि 1 में साथ, जुरू, बागडुवय और इच्छी शयथ कि विकार कि में पापा में ही सब मजारते वा इस्ते पापा में ही सब मजारते वा इस्ते मंगान का वार्त करें में भीतावा वा वार्त करें में भीतावा वा वार्त करें की उन्ने सहे के सिंह में सबसे हैं की उन्ने सहे की जाने के इस सबसे हैं है जा तमने है साता है जैसे बूर्च उत्तर हो उन्ने सबसे हैं का तम कि से पापा में भाग में में भाग में भाग

इण्डे काल्ला वे श्रीरामसे इर लाहको बीशोजिला गे बनो बरी—'हे बार्ग श्रीरा पुरल्त राजण्य लिखार रहें। बार्ग किसी तरहम अपन व कर्म है। प्राचु-काला पत्र विदे पाएकी सेवा और रचाके लिये सर्वत्र तैयार श्री कह काल्यर घोष्ट बारकी सहस्या कर्टना तथा पत्र के उद्यापी दिवा कर कर्म विद्या कर क्षेत्र कर्मा कर्म क्षेत्र के उद्यापी दिवा कर कर्म हैं प्रवाद करिया कर्म क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र कर्मा पत्र प्रदेश सी कर्माच्या भी हो काला की में बणाया-पत्र पत्र पत्र सार्ग कर्मचा कर्म हो क्षा क्षित्र कर धार्लुमा। के पत्र पत्र पत्र कर्मचा कर्मचा क्षा कर्मचा कर्मचा कार्म कर्मचा कर्मचा कर्मचा क्षा क्षा कर्मचा क्ष भी वच कर कर्मचा कर्मचा क्षा क्षा कर्मचा क्ष भी वच कर कर्मचा कर्मचा क्षा क्षा क्षा क्ष्मणा। पत्र भी वच कर कर्मचा क्ष्मणा हमा क्ष्मणा क्षा क्ष्मणा। पत्र भाग कर्मचा क्ष्मणा हमा क्ष्मणा हमा क्ष्मणा क्ष्मणा। त्वया चैव सवा चैव इत्ता वैरमनुत्तमम्। काऽस्य शक्तिः श्रियं दातुं मरतायारिशासनः। (वाक राक शरशास्त्र)

'हे शत्रुसुदन ! आपसे और मुक्ससे वैर काळे किसकी शक्ति है जो भरतको राज्य दे सके !'

श्रीरामने वाध्यायको सारावाग देते हुए बहा— वद त्रमण । जानति गवि स्तेहमनुष्यम् । विक्रमे चैव सार्व च तेन्य हुद्राग्राहम् ।। धर्मो हि रामो शोक वर्षे का द्रिक्तम् ।। सोर्डहं न शास्त्रपति वृत्तमनिकामनिवर्षित् ।। वेदां हिस्तमार्वा वृत्तमनिकामनिवर्षितः ।। वेदां विद्यानार्वे वृत्तमनिकामनिवर्षितः ।। वेदां विद्यानार्वे वृत्तमन्वर्षात्रिका । तिम् । धर्मेशास्त्रप सा तैवार्षं सन्दुद्धित् ग्रमश्राह्म। (चान सा वृत्तमं सन्दुद्धित् ग्रमश्राहम् ।।

'जफाय ! मैं आना हैं, हुत्यात सुम्में बदा में में हैं और बद भी आनवा हैं कि तुम्में पराप्तेय राज्य, तेत्र बीर बद भी आनवा हैं कि तुम्में पराप्तेय राज्य, तेत्र है, भ्रमेंसे ही सरय भरा है। पिताके वचन मां भीर सच्यो पुक्त हैं। इसें बनका पायन करना चारिये ! है मेरे ! सव्य भीर भांको भेड़ सम्मोनवाला में कैनेगों के हारा मात्र हुई पिताकी ध्यात्माय वर्षायन कामेंसे सम्पर्ध मही हैं। हुम भी इस पानप्रमंताकी बाद प्रोक्ष सम्पर्ध के भीर हुमर्सी प्यात्माय स्थानस्य हिन्दुद्व भांका साथन के मिं विचारका ख्यात्माय मेरे।

हे आहं ! तुम कोथ शीर दुःलको होक्कर पैर्य भारव वह, बरमाश्रको मुख्यदर्शिय हो नामो । शिशांती स्ववार्शी और स्वयातिक हैं, वे स्वयपुर्तिक भव्यं नामो । शिशांती स्ववार्शी हैं, में हारा स्वयाय पायन दोनेसे में निर्मय हो कार्ये । मेरा व्यव्येक न रोवा गामा में शिशांतीचा मध्य कार्या, हिससे उनको नहा दुःल होगा को प्रदान दुर्गा होंगे में बनस्यकार देश हो प्रधान कार्य है, नहीं जो को केरेशी मारा गुम्बपर हमने प्रचित्य प्रचित्य में में मेरे देशी मारा गुम्बपर हमने प्रचित्य केरिया हो मोर्ग में स्वित्य विवारों है । बातायक कीलकार की देशी मार्ग मा



हेनोसी विस्ताय मूर्ति कीर कहाँ यह माताके सामने सरेहोसी करिवाद! यही तो क्षत्रमण्डीके झारुमेमको विष्ताहै। भीरामदो भाई क्षत्रमण्डे हुस स्ववहारसे इप होगये कीर उन्हें क्षातीसे खगाकर बोखे—

निनवें। धमरतो घीरः सततं सत्यथे स्थितः। प्रिय प्राणसमी यदयो विभेषस्य ससा च ने।। (या॰ गर० साहशाश्च)

वार्ष (तम मेरे स्नेद्र) हो, धर्मपरायण, धीर, सदा सम्पार्थ-हार्य, ग्रुम्धे प्रायोके समान मित्र हो, मेरे करवर्षी हो, मेरे णजाचारी हो चौर मेरे मित्र हो। इसमें उन्ह मी प्रेर गर्ती है, परन्तु तुम्द्रे साथ से चवानेस चर्वा चुकी हा चौर गोक्पीहिता माताचाँचो चौन सान्यना बेगा है

मत-पेता-गुढ-स्वामि सिख सिर षरि करिहे सुमाप । हहेद जाम तिन्ह जनमकर नतक जनम जग आप ।।

का देव जानि जुनह सिक आई। करहु नानु-विनु वद सेनकाई। पदु करहु सन कर परितोडू। मत्तव ताल होवहि बड़ दोधू।। परी होद्यम दिखा है,परम्तु चातक तो अधकी स्वाति-परी होदय रामाओं अस्ति सी नहीं ताकना चाहता, एक-व कमान एक कार कोर सी नहीं ताकना चाहता, एक-

्ष्मे को देवर गंगाकी कोर भी नहीं ताकना चाहता, एक-व हमस्य एक बार दो सहस गये, प्रेप्ट-वश कुछ बोल ज दे, फिर कड़वाकर चरवॉर्स गिर वहे और काँसुबॉसे एक पोते हुए कोले—

केंद्र मेहि तिवा नीक तावाई। कागि आगम ओही करताई।।
पिता दीर पार-पुरायोदी निगम मोहि कहें वे अधिकारी।।
मैं कि पुन-पुने केंद्र अधिकार। मेदर मेद कि केंद्र मासका।
हर दिन मों हु अपने केंद्र महिवारा। मेदर मेद कि केंद्र माहका।
हर दिन मों हु अगमें केंद्र माहू कार्य कुमार माय परिवाद।
मैं की अपत कोर्ड हमाई। अहित क्रतीह निगम निमाणी।।
से कार्ड अपत कोर्ड हमाई। अहित क्रतीह निगम निमाणी।
सम्बद्धिय कर्द्र हमाई। जिस्ति मुझ्कि विभाग माहू मार्जिक कर्द्र हमाई।।
सम्बद्धिय कर्द्र हमाई। क्रिक्ति मुझकि विभाग माहू।
सम्बद्धिय कर्द्र हमाई।।
सम्बद्धिय कर्द्र हमाई।।
सम्बद्धिय कर्द्र हमाई।।
सम्बद्धिय कर्द्र हमाई।।

रेंदु दिरा मातुसन जारे। आवह नेनि चलतु बन माई ।। विभाग करते से माता सुनित्राजीके पास गये कि कहीं हो रोक नहें। परन्तु वह भी जक्षमयकी ही मा थीं, रेने वहें मेमसे करा—

रानं दशारमं विद्धि मां विद्धि जनकारमजाम् । वयोष्पामदर्वी विद्धि गच्छ वाद समासुकस् ॥ ५८ नाको बेटा ! सुलसे वनको बाक्षो, धीरामको दशस्य, सीताको सुन्दे चौर वनको वर्याच्या समफना । वेटा !

अनय तहाँ वह सामिनालू । तहाँ दिनस नह मानुब्रधासू ॥
अस विज जानि संग नन नाहू । ठेलु तात जमा नेतन करहू ।।
दुक्टोदि याम राम नन नाहू । दूसर देनु तात करनु नाही ।।
पुनकोति जुनती नग सांही । सुपत देनु तात करनु नाही ।।
पुनकोती जुनती नग सांही । सुपति नगल नाहु हुत हो है। ।।
भावन नाहस मोने नादि नियानी। सामनिमुख दुतते की हा ना। ।।

खनमणका मनजाहा हो गया, वे दौरकर स्टीरामके पास पहुँच गये और सीताके साथ दोनों भाई खंचीच्या-वासियोंको स्वाकर बनकी और जब दिये।

× × ×

युक्ष दिश्यकी जात है, बनमें यहाते-वहाते सन्तया हो गाँवी । इसमें देशक यहानेका विश्वकी भ्रामास गर्दी गा, सोनों में में कह पूर दे नवर्ष भारते गर्दी कर सोनों में में में हुए दे, बनमें भारते गर्दी में हिम्स के तीय पूना रहे थे। कम्मयार्थ बनाह सामकार पृक्ष देशके शीध क्षेत्रमा पांचे विद्या दिशे । ब्रीसान-सीता कस्तर पर्व गाँवे। क्ष्यमानानीने भोजनका सामाना सुदाया। भीसाम इस कस्ति हैं प्राप्त कर सम्त्रयार्थ कर सामकार कराने कर्मी कि 'भाई! युक्त करोगाया बोट बाबों, बहुँ गांकर मातामांकी सामना हो। मातामांकी सामना हो।

म च सीता त्वबा हीना न चाहमिर राघव । मुहुर्वभिष बीतावो वकान्मस्याविवेद्यूर्ती ॥ निहे ताते न शतुभं न सुवित्री परन्तप । इप्युक्तिच्छेनमसाहं स्वर्ण चापि स्वया विना ॥

(शाक राक शामदेशिक्ष)

.. . . .

'हे रसुनन्त ! सीतातो भीर में चापसे मचन रहकर उसी तरह नहीं वी सकते,जैने वबसे निकामनेपर मन्दियाँ नहीं वी सकतीं। हे राजुनायन ! चारको दोक्कर में माना, पिटा,माई राजुम चीर स्वर्गको भी नहीं देखना चहना।'

धन्य जानु-जे स ! इसीकिये तो भीराय भी सहस्रवाडे साथ प्राप्त देनेको सँवार 🕎 थे !

जिस समय निषादराजगुरके यहाँ कीराम-मीना शतके समय खण्यायांके द्वारा तैयार की हुई घामरणोंकी राप्या-पर सोते हैं जस समय बीकण्याय तुत्र दृष्यर कई परश है रहे हैं, गुरक बाकर कहता है "बायको जागवेबर बाम्याम



इव बोग करते हैं कि श्रीक्षप्तवानी शाससे हैं। मेम मते में, भारत मेरि हो उनका बिहेव बना ही रहा, परन्ता म बार दीक नहीं। रासकी प्रकार कारने शासे के प्रकार में रमा नहीं कर सहते से, परन्तु कब कर मान्युम के मा कि मतर होगी नहीं हैं तक वहरमको कारने क्यान्युम मानी हिन्दर बना ही प्रमानाय हुआ और वे मारतप्रकार ऐन्युम्य तहा नहीं करने को। एक समय व्यान्धी कुने बन्दर होत की भागान्य तहा है देनकर जामान्यी कुने मानी साम साम किया करते हुए कहते हैं—

मसिस्यु प्रश्याप्त कार्ते हुःस्वस्तान्तः । हरवारी वर्गारता स्वहरणा मरतः पुरे । स्वस्ता प्राप्तक सामक मेराग्रेस सिवेश्यर पुरूपः । हरस्य प्राप्तक सामक मेराग्रेस सिवेश्यर पुरुपः । हरः इतिसिर्मितं मुन्तमिन्देशार्थपुरातः । हरः इतिसिर्मितं मार्ग्यते स्वर्णे स्वर्णे नाम्पाः । कर्मे स्वर्णात्वे । स्वर्ण्यान्यादे ।। कर्मे स्वर्णात्वे । स्वर्ण्यान्यादे ।। वर्णेस्कारः समानः श्रीमानिक्तरी महान् । वर्णेस्कारः समानः श्रीमानिक्तरी महान् । वर्णेस्कारः समानः श्रीमानिक्तरी महान् । वर्णेस्कारः वर्णेस्यः श्रीमानिक्तरी महान् । वर्णेस्कारः । विवर्णेस्मानिक्तरी मुद्री श्रीक्ष्मान्त्रित्यान्यः ।। वर्णेस्कारः । विवर्णेस्मानिकारं महान्यानाः । विवर्णेस्ति समानः महान्यानाः । विवर्णेस्ति समानः महान्यानाः ।

(वा॰ रा॰ शेवदारथ-देश)

है उरावेड 1 येते सायान श्रीतकावाँ सार्वाणा सरत बार्व तेवे कारच कर साइत तव कर है होंगे । यही ! निमीत सारात करोवां ते उपकी मतत राज्य तमान की निमीत सारात करोवां ते उपकी मतत राज्य तमान की निम्ना मत्र को निम्ना की निम्ना मत्र को निम्ना की निम्ना कर को निम्ना की निम्ना कर का मौज प्रतिक्ष की निम्ना कर का निम्ना कर का मुख्य पर्दे हुए सुक्ता तरिस्ता का स्वात के स्वयूक्त क्या गोतव वक्से की नात करते होंगे ह का स्वयूक्त क्या कर स्वात की ति की नात करते होंगे ह का स्वयूक्त क्या कर स्वत्य स्वत्य की नात करते होंगे ह का स्वयूक्त क्या कर स्वत्य स्वत्य की नात करते होंगे ह का स्वयूक्त क्या कर स्वत्य स्वत्य की स्वत्य मत्र स्वत्य स्वत्य की की स्वयूक्त स्वत्य की स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्वत्य की स्वयुक्त स्वत्य की स्वत्य स्व

जीत क्रिया क्वोंकि चाप वनमें हैं इसक्रिये वे भी चापकी ही भाँति वपत्वी-धर्मका पाजनकर जापका चतुसस्य कर रहे हैं।,

इन वचनोंको पड़नेवर भी क्या यह बहा वा सकता है व्हिं जक्मण्यका अरतके प्रति प्रेम नहीं था ∥ इनमें सी व्हिजका प्रेम टपका पड़ता है।

करमण्यी धपनी तुरिका भी छुत्र पागर न रहते भीराम-वेशमें क्रियकार घरित-गांच है, हर बातम रता तत्त कराता है कि वह पायरोमें माणान सीमान प्रचाना क्रमान कोजकर चर्चाइटी तैयार करनेके क्रिये करमणको बाता देने हैं। तब सेशा-शावच करमण हाथ बोरका माणा देने हैं। तह सेशा-शावच करमण हाथ बोरका माणान्द्रेकर हैं कि है मागे! में धपनी लवननतासे, इय स्त्री कर सकता।

परवानरिम काकुरस्य त्ववि वर्षशतं रियते । स्वयं तु क्षीचेर देशे कियतामिति मां वद ।।

'हे कादुरस्य ! चाहे सेकड़ों वर्ष बीत बाय पर मैं तो बाएके ही कथीन हूँ। बाप ही यसन्य करके बत्तम स्थान बताय !'

हुसका वह अतकब नहीं है कि बपनयानी विवेक्शन है। वे को बुदिबान कीर विज्ञान के पूर्व समय-समयप्त सम्बो सेलाक विके बुदिबान कारोग भी करते थे निम्तु नहीं सात्र में सेलाक विके बुदिबान कारोग भी करते थे निम्तु नहीं सात्र में बोजने के। वनमें देश स्पत्ते को त्या वहाँ में दुव भी कर्रों बोजने के। वनमें देश कीर को क्षेत्र भाव थे, पार्थ के सक् सात्र किये हो। काराय विज्ञान कराता निह्य होगा, मिलाक बाराय किये करें हैं करते काराय कीर कीर में पोर्थ के करवार किया कर्ती हैं करते बहुत्त कीर में पोर्थ के स्वात्र काराय किया करते हैं करते काराय कारों मिलावी है। इनके मानका पहना देखना को मान्य मिलावी है। इनके मानका पहना देखना को मान्य किया तह होने प्रमाण की कीर मान्य कारों कीर कीर कीर किया कीर कीर कोर लेकर देखा महत्त्र कीर काराय कीर मान्य कोर लेकर देखा महत्त्र कीर कारों मान्य कीर मान्य पार्थ कारों कारों कारों कारों मान्य कीर मान्य कोर लेकर देखा महत्त्र कीर कारों मान्य कारों मान्य पहुंच सार्थों के सार्थ करने कीर-

कानु न को तुम्कद्वराकर दशानित्यस्य करण मेन तर ब्राह्मा। जीता विशेषा मोता पात मेरा । दिन मारीह बाराव मार करा।। जाना बारा गाँदि सी बारावा है सोर्पीतियों करण कर हाए।। बारि काम बन पुर सीराक । बारा नयक महे हमी स्वारत्यक्रा

सपने होड़ मिलारि नृथ रंक माकपति होड़ । जाने हानि न लाम करु तिमि प्रपन्न जिय जाँह ।। अस विचारि नहिं कीजिय रेर वृ । कादुहि बादि म देवस दोषु ११ मोहनिसा सब शोवनिहारा। देखिय सपन अनेक प्रकारा॥ पहि जग-जामिनि जागीई जागी। परमारयी प्रपञ्चनियागी।। जानिय तबहिं जीव जग जागा । जब सब बिषय-बिठास विरागा। होइ विवेक मोहभ्रम माना । तब रघुवाय-चरन अनुरागा ।। राखा परम परमारय पहु । मन-क्रम-बचन राम-पद-नेह ।। राम बद्धा परमारच रूपा। अनिगत, अरुख, जनादि जनूपा।। सकल विकार-रहित गतमदा। कहि नित नेति निक्पहि बेदा।। भगत मुनि मुसर सरनि सरहित काणि क्रपाक । करत चरित घरि मनुजतन सुनत मिटहिं जग-जाल ॥ सला समुक्ति अस परिहरि मेहि । सिय-रघुनीर-चरन रत होह् ।। श्रीवचमयाजीकी सहिसा कीन गा सकता है ै इनके समान परमार्थ और प्रेमका, बुद्धिमधा और सरवातका, परामरों और चालाकारिताका, तेज चौर मैत्रीका विकचन समन्वय इन्होंके चरित्रमें है । सारा संसार भीरामका गुणगान करता है, श्रीराम मरतका गुण गाते हैं और भरत जनमञ्चके भाग्यकी सराहना करते हैं। फिर हम किस गिमती में हैं को सक्त खुजी के गुर्खों का संखेप में बलान कर सकें। श्रीशञ्चमका झात्र-प्रेम रिप्रस्तन पर-समक नमामी । सर ससीक वरत-वनगमी ॥ रामदासाञ्चलस बीराष्ट्रप्रजी भगवान् भीराम भीर भरत-खच्मपके परमप्रिय चौर बाह्यकारी बन्धु थे। शतुसकी भौनकर्मी, प्रेमी, सदाचारी, मितमापी, सत्यवादी, विषय-विरागी, सरवा, तेजपूर्ण, गुरुजनोंके अनुगामी, बीर और रामुतापन थे । श्रीरामाययार्मे इनके सम्बन्धमें विशेष वित्रस्य गहीं मिलता, परम्तु को कुछ मिलता है, उसीसे हनकी

महत्ताका बालमान हो बाला है। क्षेत्रे श्रीक्षकास्त्रजी सगवान भीरामके चिर-संगी थे. इसीप्रकार सचमवानुत्र राष्ट्राजी मीमरतजीकी सेवामें नियुक्त रहते थे । भरतजीके साथ ही याप समके ननिद्वाल गये में भीर पिताकी सृत्युपर साथही

े। चयोच्या पहुँचनेपर सैन्देवीशीके द्वारा पितासस्य राम-गीता-स्थायाके वनवासका समाचार सुनकर । भी बड़ा भारी द्वास हथा । आई सच्छा**र है** शौर्यसे

भाग परिचित थे, सतएत इन्होंने छोकपूर्व हर्वते ॥ बावर्यके साथ भरतजासे कहा-

> गतिर्मः सर्वमृतानां दुःशे कि पुनरात्मनः। स रामः सरवसम्पतः क्षिया प्रतातितो ननम् ॥ बरुवान्वीर्यसम्पन्नो संबम्भी नाम में।ऽप्यसी । किं न मोश्यते रामं कृत्वापि पितनिग्रहम्।।

⁴बीराम, जो दुःलके समय सब मृतमाणियोंके बावर

(बान्सन २ । ७८ । १-६)

हैं, वे इसलोगों के धाधव तो है ही, ऐसे महाबनवान राम एक को (कैकेशी)के प्रेरणासे ही वनमें चबे गवे । बारी ! श्रीखबमच तो बखवान् श्रीर महापराज्ञमी थे, उन्होंने पिताको सममाकर रामको वन आनेसे क्यों नहीं रोख !' इस समय राष्ट्रक्रकी दुःल और कोश्से मरे ये, इतवेमें राम विरहसे दुली एक द्वारपालने बाकर कहा 🗟 'हे राजकार! जिसके पर्यन्त्रसे श्रीरामको वन जाना पहा, और महाराजकी सृत्यु हुईं, वह क्रूरा पापिनी कुम्जा बसामूरवॉसे समी हुई खड़ी है, बाप उचित सममें दो दसे हुए शिषा दें। कुन्या भरतजीसे इनाम खेने था रही यी चीर बसे दरवाजेपर देखते ही द्वारपालने कन्दर भावर शतुम्से ऐसा कह दिया था, राष्ट्रप्तको ददा गुस्सा भाषा, उन्होंदे कुन्बाकी चोटी पकड़कर उसे धसीटा, इसने जोरसे चीव मारी । यह दशा देखकर कुन्जाकी बन्य सलिबी तो दौरूकर श्रीकीसस्याजीके पास चन्नी गर्यों, इन्होंने कहा कि सब मधुरभावियी, द्यामवी कौसरवार्ड शास गये दिना शतुस इसलोगोंको भी नहीं दोहेंगे। देवेबी खुदाने बायों सो उनको भी फटकार दिया । बालिर भातरे बाकर राजुशसे कहा-"भाई ! बी-जाति बावम है, नहीं तो में ही देवेथीको मार शक्ता-

(\$1 0 ti 0 ti 0 ti 0 ti "आई, यह कुम्बा यदि हुन्हारे हाथसे मारी बाबगी ही भीराम निशय द्वीतुमसे भीर गुम्प्ते बोबना दोव रेंगे । भरतजीके बचन सुगवर राजुमजीने बसको कोर दिया । वहाँ वह यता खगता है कि प्रयम सी रामकी धर्मने निर्मे खी-जातिका कितना चाएर या, द्या सदम्य समग्री नारी थीं । बूसरे, शोकाङ्ग्य भारतने इस बनत्वार्वे भी भा

इमामवि वतां कुम्बां यदि जानाति राधवः ।

त्वी च मां चैव वंगीरमा नामिमाविष्यते पुरम्।।

ल्याण 🚤



स[ताजाका आध-पराठा र विद्युद्धभाषां निष्पाषा प्रतिगृहपाच्य मीधनाम न किञ्चिद्दसिधातस्या अहमाद्यापयामि न



हम्मी भारतीमंत्रे कारण रामकी शामतीलि यतजाकर धर्मतेरोस, बीर तीसरे, रोस्से भरे हुद्द श्रुप्याने भी राज माईकी बात भाग की। इससे हमाओगोंको धर्मान किस महत्व कारी चाहिये। जो जोग यह जावेज भिगा मेरी हैं का मांगर कारामें भारतीय पुरूष क्रियोंको बहुत वर्ष श्रीसे देखते थे, उनको इस मसंगारे शिका महत्व स्ती चाहिये।

× × ×

हमडे घरणार राष्ट्राजी भी भरतवोके साथ शिरामको गैठने बनो बाते हैं, भीर वहाँ भरतवोको चालासे तक्षेत्र इटिला हुँछते हैं। बच्च भरतजी बुरसे औरतमको हैंग्स होने हैं, तब भीरामदर्शनोधुक श्रवहा भी पीछे-वि रोने बाते हैं, और——

शतुन्नभाषि रामस्य सवन्दे चरणी ठदन् । वातुनी च समाजित्य रामोप्त्रभूण्यवर्तमत् ॥ (स०रा० २।६६।४०)

-वे भी होते हुए औरामके चरवॉम प्रवास करते हैं. बात बातनसे बढ बपने हायाँसे उन्हें बढावे हैं, फिर दोनों इति विरट जाते हैं। इसी प्रकार समुग्न खपने वहें आई बन्दाबाँसे भी मिलते हैं—भेंटेड क्खन कर्मक कहा आई।

रमधे वाद श्रीराम भरतके संवादमें कष्माय-शृतुप्रका गैममें शोधतेका कोई काम गहीं था। दोनोंके धरने-सपने वादने माई मीत्रद्र थे। स्वयुप्तने तो अस्तको अपना धरन ऑप हो दिवा था। इसीले अस्त कह रहे थे कि—

तानुन पठइय मोहिं वन , कीकिय सर्वाहें सनाय !

ण्डाकोशी समाति न होती या श्राप्तमे आगुमेन्स रंगा म होता तो मारामी देसा वर्गोक्ट कह स्वके हैं पाड़ा बेक्ट जीटने समय भीरामते दोनों आई हैंग मुने बायद मित्रते हैं। रामकी मुरिश्या करते हैं। रामकोशी मीति श्रणाती भी डुच तेल थे, कैंटेगोके केंद्र करते में तो प्रमुखी भी डुच तेल थे, कैंटेगोके केंद्र करते में तो प्रमुखी भी डुच तेल थे, कैंटेगोके केंद्र करते में तो प्रमुखी भी स्वक्ता सम्मात्ते थे, एने दस्ते पत्ते हो समय मीतामने श्रणातीको प्रमुखाई कारण शिचा देते डुच क्या—

मति रह केवेग मा रेपं कुव तां प्रति । मया च सीतयाचैन शासोऽसि रचुनन्दन ॥ (चान्छन्द । १९२ । २७

है भाई, हन्दें मेरी चीर सीताकी शपय है तुम माता क्लोडे मति इस भी क्रोध म करके उनकी रचा करते रहना। हतना कहनेपर बनकी वालि प्रेमाशुष्टीसे मर गर्वी 1 इससे पता लगता है कि भीशम शतुष्टमें परस्पर कितना प्रेम था!

हसके बाद श्रष्टुमधी भारतबीके साथ प्रयोच्या कीटकर वनकी श्राञ्जातुवार तक बीर परिवास्ती सेवार्थे रहते हैं तथा बीरसके बसोच्या बीट सानेचर नेमपूर्वक उनसे तिवते हैं 'चीन स्वा इरिक बुद्धन मेट हर कमार्श तिदननक उनकी सेवार्थ स्वा बाते हैं। बीरसमका राज्याभिषक होता है बीर समस्यार्थ संबद्धां बीचन सुख कीर पर्समय बोतता है।

एक समय ऋषियोंने धाकर श्रीरामसे कहा कि खदणासर नामक राचस बढ़ा उपद्रव कर रहा है. वड प्राचिमात्रको-कास करके तपस्वियोंको पकदकर सा जाता है। इस सब बदे ही दुखी हैं। श्रीरामने उनसे कहा कि 'बाप भय न करें 🗓 बस राजसको मारनेका प्रवस्थ करता हैं ।' तदनन्तर श्रीरामने चपने भाइयोंसे पदा कि 'सववासरको मारने कीन वाता है ?' अरतजीने कहा 'सहाराज ! चापकी ब्राह्म होगी तो मैं चखा कार्जमा ।" इसपर सदमयानुत्र राष्ट्रश्रीने नवतासे कहा---हि रचुनायजी ! आप जब बनमें ये तब महाका भरतजीने बड़े-बड़े दुःल सहकर राज्यका पालन किया था, ये मगरसे बाहर नन्दीगाँवमें रहते थे, कुरापर स्रोते थे, फलमूख लाते थे, और जटावरकल चारण करते थे। घर में दाय जब सेवामें उपस्थित हैं तब इन्हें न भेजकर मुझे ही भेजना चाहिये। अगवान् श्रीरामने कदा-- प्रवही बात है तुम्हारी बुब्हा है सो पेसा ही करो, में तुम्हारा मधुरैत्यके सुम्दर नगरका राज्याभिषेक कराँगा, तुम शुरबीर हो, नगर बसा सकते हो. मधुराचसके पुत्र सववासुरको मारकर धर्म-बुदिसे वहाँका शास करो । सैने जो कुछ चडा है, इसके बरखेरे तुछ भी न कहना, क्योंकि वड़ोंकी बाजा बालकोंको माननी चाहिये। गर वशिष्ठ सुन्द्रारा विभिवन अभिषेक वरेंगे अनुपूर्व मेरी आजासे तुम उसे स्वीकार करो ।' ऑसमने कपने गुरूँसे वहाँकी श्राञ्चाका सहस्य इसीलिये बतलाया कि ये राष्ट्राकी त्याग-बुचिको आनने थे। बोहाम ऐसा न कहते तो वे सहअसे राज्य स्त्रीकार न करते १ इस यात्रका पता उनके अत्तरसे खगता है। राष्ट्रप्रजी बोबे —

ेट्टे नरेकर में बर्ज आईसी उपस्थितियें दोटेक राज्यामिषेक होता में स्थामें स्थामना हूँ। इयर सारको भाशास्त्र पाषन भी सबरव करना चाहिये । सारके हारा हो हैने यह धर्मे सुता है । बांधरतमोदे बोचमें गुष्पको इस भी नहीं बोचमा

चादिवे था--



रहे तिब बचु बों के विसन्न बीर ब्यादरों व्यक्तिसे इसनोगों को ए बाब उठाना चाहिये। साचान्त् सन्निद्दानन्यवन सगवान् रिनेत भी बन्होंने जीवनमें अनुव्योंकी आँति जीकाएँ भे है विनको ब्यादरों सानकर इस कासमें जा सकते हैं।

शि भोग बदा करते हैं कि 'जीवास जब साधात गर थे, तर उन्हें धवतार धारण करनेकी नया गगरका भी , वे घटनी शिक्त यों हो तब कुछ कर करें थे! देशों के सन्देर नहीं कि अगवान सभी उन्हें घटकों हैं, कार्ज हैं, इनके जिये कुछ भी आसम्बन नहीं है, बरुद्ध उन्होंने बनवार भारणकर ये बाहर्ग बीकार्र ह्योजिये की हैं कि हमतीन वनका गुदादुत्तर गाकर बीर अनुस्वय कर हुनार्थ रंग, वर्ष है करवार मारावस्य हमलोगोंकी दिणके जिल्ले में बोर्चार्य न बराते को हमलोगोंकी व्यार्थ्य दिखा बहाते कीर केने मिनवर्ग है यह हम लोगोंका बाह्य किन्न के किन कोर्म की कीनाक्षांका हात्रक, सनन और अनुस्यक कर उनके स्थे अक कर्न है लेल बहुत बहा हो गया है हसजिये बहाँ समाह किसा बाहर है।

श्रीरामचरितमानसका महाकान्यत्व

(हेखक--भीविन्दु महाचारीकी)

भ्यां बिद देवत क्रवनी इतासाँका वर्णन कराता है, मानाविद करण्याओं के द्वारा वह करणे आपनासाँकों मध्य करणे हैं भीर सहाकाण्य वह जिसमें वह स्वस्तुयाँ समान और समस्य देशकी संस्कृति, आवना, रीठि-

की वहा जागर-वाहरिके वानी द्वाराष्ट्रात करवान किया का है। इसके माराज्यमें बाराइके दुर्गन होते हैं। केंग्रीमानि दुर्जाशास्त्री सहारावका सीमाम्यरिकामस्य केंग्रीमानि दुर्जाशास्त्री सहारावका सीमाम्यरिकामस्य किया साइया है। इसते नावकाक वर्तके दुर्जाभाव है। नावके दिय्य पाइये का है। हमीने बस्ती में की विधाय साइयादने कुछा है। हमीने बस्ती में की क्या सामने सहस्य पाइयो का सीने की स्याप्त क्या सामने सहस्य साइयो व्यवहार होता है। अब हतें हो कार्य सामने सहस्य साइयो कर्य करते की है की की कार्य सामने स्वयं वस्ती की सीने की है

माहित्यदर्गयमें सहाबान्यके संख्या हत्वप्रकार दिने हैं--

वर्गनाथे महावास्य तवेशं शायवः सुराः वर्गनाथे महावास्य तवेशं शायवः सुराः वर्गनाथः पूराः पुराः स्वरोति वाः स्वरोत्तरा पूराः पुराः स्वरोति वाः स्वरोतिस्यान्तराभिक्षात्रीयः सूर्योशः वर्गने सदेशि स्वरः सर्वन्यवरूपः स्वरोतन्तरः । विस्तिस्ये पुरान्यकः स्वरोतन्तरः।

चत्वारस्तस्य वर्गाः स्मृत्तेथे ई च क्लं मरेन् । आदी नगरिकवाशीयां बस्तुनिदेश यव वा । वविवित्रता करादीनां सता च गुणकी तैनम् ॥ पक्रवसमयैः वदीरवसानेऽस्वरष्टकैः । मातिस्वत्या नातिरांचाँ. समी सदाविका इद स नानावसमयः वदावि सर्वः सम्रत दहवो । शार्तिते मानिसर्गस्य कवायाः सूचनं मनेत्।। सम्ब्यात्वेन्द्रस्त्रनी प्रदोशमानस्तराः। शी*र*्डेबनसम्बद्धाः ।। द्रातमेश्**यञ्**शुगया **श**त्रमोगविष्यतम्भीःच अनिरदर्गदराध्यगः । इब्द्रमाणीयमसम्बद्धीर बाहमः वर्तनीया बयायेले राजोपात अभी हर । क्वेर्ट्स्य या जाला वापकायेशस्य काश मानसमें इनकी परिवार्धवा-

पीरिम्हास्त्रायकृत्य-व्यतिहास्त्रास्त्र क्रमे करते द्वीतियम् आध्यस्त्रास्त्र स्वत्यः देशः स्वत्यः स्वतिहास्त्र स्वत्यास्त्र स्वत्यः स्वतिहास्त्र स्वत्यः स्वतास्त्र हो स्वतः स्वतिष्यः स्वतिष्यः दिश्यास्त्रस्य हो स्वतः स्वतिष्यः

स्तिकायमः समाप्तानिकारीयाः स्वाप्तायः । स्टेल्डिस्ट्रमाने वेडिस्ट्रेड्टसन् वर्षाः ॥

श्रमाध्यासस्याः— श्रमविदेवे केदाव्य वर्षः करणे हिर्दे दृद्या इस्परियद् वर्षे के धेरपुरेश व गाइते हुनैसं घोर हनताइरिम रुनलं मुखे । तरीय में हरकरम हुगैतिः पुरुर्गमः।। ठर्घरं नदि चक्रमं ज्येष्टेनामिदिते पुनः। अपर्यसहितं स्वेय परलेकनिवर्जिन्।। (ग॰ ए॰ २।इर्११४५५)

'हे पुरुषधर ! 'लवचाशुरको में मार्ट'गा' मैंने ये हुर्वचन करे, इसीसे मेरी यह दारिंग हुई । यह आहयोंके बीचमें कभी नहीं योलना सादिये देखा करना क्यमंगुक करि एखोंक्का नारा करनेवाला है।' चन्च ग्रामुको, काव राज्य-मासिको 'हुर्गोत' समक्ते हैं ! कैसा कावृर्ग त्यार है! ज्याप फिर कहते हैं कि 'है कातुरुख ! एक दयक तो मुक्ते सिक गया, जब सापके बचनोंपर उन्नव भीलूँ तो कहाँ दूसरा दयक न सिक्क जाया, जसराव में इक्क भी नहीं काता, जापकी

इच्छातुसार करनेको सैचार हूँ।'

भगवान् की साझासे शानुमका राज्याभियेख हो गया,
सहनन्दर उन्होंने कवपाहुत्पर वहाई की, कीरामने चार इकार
मोहे, वो हतार रथ, एक जी उत्तम हाथी, कर-विक्रय करनेवाते व्यापारी, वार्चेठ विसे एक बाल स्वर्णग्रह्माई लाव थीं।
सीर भीति-माँतिके सदुपदेश देकर शतुक्रको विदा किया।
इससे पना वामता है कि शतुमकी श्रीरामको कितने

श्रुत्वा पुरुषशार्द्देशे विसंहो बाष्परोचनः ।

स मुहूर्तिभिवासंत्रो विनिःश्वस्य मुहुर्मुहुः॥ (बा॰ रा॰ ७।७१।१७)

'दस गानको सुनकर चुरुगसिंह शतुशकी खाँखोंसे खाँसुबोंकी घारा वह चली, खीर वे बेहोरा हो गये। उस वेडीशीमें एक घड़ी तक उनके बोर-घोरते साँस चड़ा रहा !' घन्य है !

इसके कानतार उन्होंने क्योच्या पहुँचकर बीरासपरिट सब माहपोंके दर्शन किये ! फिर कुछ दिनों बाद मद्दर्श स्वीट शये !

x x

परम भागके प्रवासका समय भागा, इन्द्रिपरिवर्षी राष्ट्राहको पता खगते ही वह भ्रपने प्रश्नोंको राज्य सौरस्य हीड़े हुए जीरामके पास भागे भीर चरवाँमें प्रवासका वहनावकवडसे कडनेकरो—

क्त्वामिषकं शुरुपोईयो राघवनन्तनः। तवानुममने राजन् ! निक्षि मां ब्रुटनिश्चम्दः॥ न चान्यदद्धः बक्तम्यमतो बीर न शासनमः। विकृत्यमानीयच्छायि महियोन विशेषतः॥ (बार रार ७ : १० मा १४०११)

'हे शतुनलन हि राजद् । से करने दोनों दुर्गंश राज्य सीवकर कारके साथ बानेका निश्चय काले काला हैं वे बीर ! आज कार कुराबत न दो दूसरी वाल कों बी न दूसरी काला की दें , यह से ह्मसिके कह तां , के से जासतीरार कारकी जाञाला जब वर की काल बाहता !' सत्तकथ यह कि बार कों ताय कोंगों यहाँ रहतेकी काला न दे हैं जिससे मुद्दे बारकी खाला भेरा करनी पहें, को मैंने काल तक नहीं की! खाला भेरा करनी पहें, को मैंने काल तक नहीं की!

भगवान्ने प्रार्थना स्वीकार की और सबने मिश्रकर श्रीरामके साथ रामधामको प्रवास किया ।

उपसंहार

वह समायवाके चारों पूरा पुरुषों के बाहरों को पूर्वका किवित्य विरूप्तन है। यह घेल विरोधस्त्रों का है केता ही बित्या गया है। स्थाय वर्षोंन को क्षांतरण वा दें हैं, स्वत्यय दूसरे वर्षदेश्य स्वारंग विश्वविद्यों को ति स्वारंग हों है। सक्ष है। इस खेला स्विधांग मात साली, स्वारंग स्वारं

वास्तवमें श्रीरामधीर उनके बाजुमों दे काल विश्वसे थाह कीन पा सकता है। भीने तो अपने विनोहें दिवे ता धोटा की है, युटियों हे क्षिपे विदायन वमा करें। ब्रीतव हैं। संदेत बजुधों है दिसत और साद्यं चितित हमलोगों को हो बार बाता चारिय । साजात सिंदरानन्द्रवस भगवान्, सेंग भी बर्गोंने जीवनमें मनुष्यांकी भौति बींबाएँ दे दिवशे भारतों मानका हम काममें वा सकते हैं। इन जोग कहा करते हैं कि चींबास वस साजात ताद्य थे, तह बन्दें धरतार चारवा करनेकी नया ताद्य थे, तह बन्दें धरतार चारवा करनेकी नया ताद्य थे, वह बन्दें धरतार चारवा करनेकी नया ताद्य थे, दे स्थानी साहित संदेश साज कुछ कर के दे ! इसमें कोई स्थेद सर्वों कि भगवान् सभी उक्त (क्को है, कादे हैं, बनके बिटो कुछ की सहस्थक स्वीं है, परन्तु उन्होंने स्ववतार धारण्डर ये मादर्ग शीमाएँ हृदीकिये की हैं कि हमलोग उनचा गुणानुतार गाडर श्रीर अञ्चल्या कर हुतार्थ हों, यदि वे मातार धारण्डर हमलोगोंकी शिवारे विसे ये बीमाएँ न करते हों हमलोगोंकी धारपुर्ग शिवार कहाँसे और केसे मित्रती हैं एवं हम सीगोंका यदी कर्जन हैं कि उनकी सीजामोंका खब्दा, मनना और धानुक्त्या कर उनके सखे सफ करें हैं खेल बहुत बहा हो गया है इसजिये पर्नी एकार किया बाता है।

श्रीरामचरितमानसका महाकाव्यत्व

(हेल्ड-ऑदिन्दु महाचारीयो)

甲

स्पर्से कवि केवल कापनी व्रतासींका वर्षीन करता है, नानाविश्व करपना मों-के द्वारा वह कापनी भावनासींको मकर करता है और महाकास्य वह है किसमें वह सम्पूर्ण समाज और समस्व देणकी संस्कृति, भावना, शीव-

ने व्या मानव-महिनेहे सभी ग्रामाद्वम क्योंका विजय ग है। वाके महाकायमें व्याइकके दर्शन होते हैं। गोसानित युवसोहासमें महाहायका स्टामायिद्यमान्य गोमानित युवसोहासमें महाहायका स्टामायिद्यमान्य गोमादाकाय है। उदामें मानवक्कर स्टामायिद्यमान्य गोमादाकाय है। उदामें मानवक्कर स्टामायिद्यमान्य गोमादाकाय वाइक्रमपूर्त मुझ्मा है। इसीने असमे मान्येक गोमादाकाय वाइक्रमपूर्तम दुक्क पाति है स्था स्थानी है स्थाने प्रधानमाने सहस्यापदी क्यादार होता है। यस बामें देवा है कि सीहामायिद्यमान्य मानवक्ष्यम्य करेंगे हैं। वाहक साम्योविक्याय स्थान स्थानित स्थान

साहित्यदर्गयाने महाकाव्यके सच्चय इसमकार दिये है-

हर्दनची महाकान्यं तर्वेशी भाषकः सुरः । वर्देशः एतियो महावि वीरोहातगुणानिकः ॥ वर्द्दरासमा मुगाः बुरुका बदनोद्यवि वा ॥ महाविद्यासमान्यानानेकेद्वरासस्य स्प्यो ॥ महाविद्यासम्बद्धरास्य । विद्यानेकृतं पुरुक्तम्यहाः सम्बद्धस्य ॥

चत्वारस्तस्य वर्गाः रमुस्तेष्वेषं च फ्लं मदेत् । आदी नमस्कियाशीयां बस्तुनिदेश पव वा। क्वीचित्रिन्दा सरप्रदीनां सतां च गुणकीर्तनम् ॥ पदीरवसानेऽन्यवत्तरैः । मक वृत्तमयैः नातिन्यत्या नातिदायाः समी अष्टाविका दृह ।। बानावृत्तमयः वदापि सर्गः कम्रन दहवे । अर्गान्ते माविसर्गस्य कथायाः सचनं भवेत् ।। सन्ध्यात्वेन्द्रश्यनी प्रदोक्यान्तवासराः । शैंडर्नुबनसम्पराः ॥ <u>प्रातमेच्याद्व पृगया</u> सम्मोरावित्रहरूभीच सुनिस्दर्भेषुराध्यशः । इक्टब्रवाणीयय**सम्ब**न्द्रेशस्यः बर्णनीया समाये:वे साझोपाहा सभी रह । क्वेर्युत्तस्य वा नाम्ना नायकस्थेतस्य वा ।।

मानसमें इनकी चरिवार्थवा-

द्वीरोत्।श्वनायकत्य-व्यीरोहाण वावस हमे स्वर्णे हैं क्षिप्रमें साम्मद्वावा व हो, समारोब दश्म सम्बन्ध शामीर हो, हम-ग्रोसने को समिनूत व हो, गर्व भी निणवा विज्ञासक हो सीर को दश्म हो, बचा-

स्तिकारनः क्रममस्तिकारीय म्हानम्बः । स्टेबर्डिम्ट्रमस्त्री पीत्रारीयकार वर्षयः ॥ क्रमारमञ्जामान्त

'समक्रिकेट होत सब सारि सामी संग्रा हरव न हरकरियर वह बंटे कीमुर्देश । नाम, सम्मु-धनु मंत्रनिहास। होइहि कीठ पक दासतुग्हास।। आयसु काह कदिम किन मोही।।

तान्य कार्य कार्य वाच्या नाम्य वाह्या स्वाद स्वाद कार्य कार

गाम्भीर्घातशय-वद्या-

राम कहेड रिस तिजय मुनीला । कर चुठार अधि यह सीसा ॥ मृगुपति सकहिं चुठार उठाप । मन मुसुकाहिं राम सिर नाप ॥ क्षमा—पथा—

कोन्द्र मोह यस द्रोह जवापि तोईकर वय अभित । प्रश्नु छाड़े करि छोई की क्ष्मालु रघुनीर सम ॥ इस्यादि । महासक्चरव-—

प्रसन्नतां या न गताभिषेकतः - तथा न मण्डे बनवासदुःखतः ।

मुसाम्मुज शीरपुनन्दनस्य वे सदास्तु सा मन्जुरुमङ्गरुपदम् ॥

वितु आयमु भूवन-बसन तात तने रघुवीर। विसमय-हरव न द्वदय कछु पहिरे बल्कक चीर।। मुख प्रसन्न मन राग न रोषू।

भूग हजेठ अभिषेक समाजू । काहत देन तुमिह जुनराजू ।।
गुरु हित देह राम पर्दै गयक । राम हदम अस भिसमय मनक ।।
जानों पर साह सब आहे । मोनान-सम्मक्ति-वर्धिका ।।
स्वरानेज उपपीत विश्वाहा । संग-संग सब मगठ उपाहा ।।
विमार संग सम्बन्धिक प्रमुश्त पर्दू । क्यु विहास बहेदि अभिष्टू ।।
विमारासि सम्बाद-सम्भ द्वाक्य----

सन प्रसप्त रपुपतिहि सुनाई । बैठि मनहु तनु चरि निदुसई ।। मन मुसकाहि मानुकुरु मानू । राम सहज आनन्द-निधानू ॥ स्पीर्य--

व्रत कहा मुनिसन रघुराई। निमेय क्यम करहु तुम व्यई।। होम करन टागे मुनि सारी। भापु रहे सक्तकी रखवारी।। सुनि मारीच निसाचर कोही। ठैसहाय चावा मुनिन्द्रोही।। बेनु कर-बान राम विहि मारा। स्त जोजन मा सागर पारा।। षात्रक सर सुबाहु पुनि जारा । अनुज निप्ताचर कटक र्वहारा॥ मारि अमुर द्विज नि भेयकारी । अस्तुति काहि देव-मुनि प्तारी ॥

निगृहमानता—

हुबताहि दूर पिनाक पुराना । मैं केहि हेतु करों अनिमाना ॥ बीं हम निदर्शहैं कित्र बिद सत्य सुनहु मृगुनाम ।

ती अस को बन सुमट बोह मयबस नावहि माय॥ दैव-दनुब-मूपति-मट नाना। समबरु अधिक होउ बरनान।॥ औं रन हमहि प्रचारि कोऊ। त्यहिं सुसेन काठ किन होऽ॥

छत्रिय-तनु घरि समर सकाना । कुल-रुट्स देहि पाँवर पाना ।। कहाँ सुमाद म कुतहि प्रसंसी । कालहु बराह न रन रहुस्ती ॥ विष्रवसकै अति प्रमुताई । अवय होइ वो तुनहिं वेतर्र ॥ हुढमतता —यया —

प्रकारका पांच मान महित कार्यो । बहुत क्याय विश्व कर सार्ये ।। स्वार्धी राम-स्व रहत म जाने । बराम-पुरुष्य धीर स्वारे ।। मातु बणन पुति अहि अनुकूण । नमु स्वेह हुनतके कृत ।। पुत्त-सकरन्य मरे ओमुका । निरिश्त राम-प्यन्तिर सृत्या । प्रता-सकरन्य मरे ओमुका । निरिश्त राम-प्यन्तिर सृत्या । वो निहि सिर्दि हिंधी रोज आहे। स्वय-सन्य बढ़ात । पुर्वात ।। बणनासको स्वीकार कर बिचा, तिर क्रवेस मेगाउपि

कीर करुपा-प्रार्थनाकांपर भी विचक्षित नहीं हुए। बनमें मुनियांका करिय-समूद देखकर---

निसिचर हीन करों महि मुज उठाय पन होन्ह। बालियध-प्रतिका---यथर--

सुनु सुग्रीव में मारिहों बालिडि एकहि बान । ब्रह्म-क्रद्र-सरनावतहुँ गए न उनरिहि प्रान ।

विकास विकास क्षेत्र क

रामायणमें आदर्श पितृभक्ति

(वेखर-राजानहादुर राजा श्रीकश्मीनारायण हरिचन्दन चगदेव विधानाचरपति, अरातत्तन-विशास्य टेव्हाको)

पिता हि परमः स्तर्गः पिता हि परमं वपः । पितिर प्रीतिमायन्ते प्रीयन्ते सर्वदेनताः ॥

'सर्वरामी वमेत' इत्यादि वेदमतिपादित वाश्योंसे च मुख-समन्त्रित, त्रितापशून्य, पुरुषकर्मी पुरुषोंकी वसूनि तया पविश्व-चरिश्न-देव-वृत्त्के चावास दिग्य रंडी बामनावाडी मनुष्य यशके हाता वशपुरुपकी विन करते हैं। उसी स्वर्गकी धासिके लिये विम्विचादिव मार्गमें समसर होनेवाके खोगसीर्थ-सेवन, विन्दार करते हैं, तथा उपनिषदोंमें अदाशील-मनुष्य कारका साधन करते हैं। मीमांसाके बलुवायी वेद-गरित यशकाँमें तत्परताको ही उपासना मानते हैं। सर धर्मशासालमोदित मार्गोपर चलनेवाले साधक मेन ग्रास्त्रोक साथनाओं हारा जिस खोकको उत्तम समय-करना चाहते हैं और साहित्यामृतसेशी चरम सक्य वितको स्रोर एकटक देखते हैं-वह स्वर्ग क्या है। है ! कैने पहचाना जाता है ! और उसे मास होनेवाओ प वहाँ क्या सुख भोगते हैं ! इन प्रश्नोंके उपयुक्त कोवते समय महर्षि वेदन्यासरचित महाभारतका क रकोच समस्य हो चाता है, जिसका तापर्य यह है लामात पुरुष जिस सुराका उपमीग करते हैं, उसकी क्षीक पितासे 🛍 होती है। पितृसेवी तीनों वापोंसे वाता है। तपके ममावसे को कुल मात होता है, मण्डहो वह भी कानायाल मिल जाता है। पिलाको हिरसनेवाले पुरुपसे समस्त देवता भी सन्तुष्ट रहते हैं। कड़े बिथे रामापणका नाम लिया का सफता है जिसे विगुद पितृमक्तिका चार्स अम्य समयते हैं। इस रहे नामकरणमें भी पितृभक्तिका भाव व्यन्त्रित है। ×भवख=रामायख चर्यात् परमपितृभक श्रीरामका 👣 वाराये यह है 🚺 वह प्रन्य शिसमें चादर्श पिनृभक मिके चरित्रका निर्देश <u>इ</u>चा हो।

क्या उपयुक्त वार्त प्रसामक विव क्या उपयुक्त वार्त प्रसामक विव क्या हैं- (1) विदास स्वर्ग भिन्न नहीं है क्यांत रही क्या है। (२) वह विदा हमारे समीव रहते हैं। ।सारे इसार वस्तुकी करह वे हमारे क्यांन रहते हैं। (४) उनके सन्तोषसे प्राथीमात्र प्रसन्त हो सुलकी

चादिकविने पितृभक्तिका स्वरूप-निदर्शन करनेके वूर्व पितृत्वको वयेष्टरूपसे दिखलाया है। यथा--- प्रत्रपातिके ब्रिये राजा दूसस्यकी चिन्ता, श्रीवशिष्ठजीके परामर्शसे प्रत्रेष्टिका समारम्म, सम्पन्छको धुवानेके तिये समन्तका कपदेश तथा अधिका भागमन और यज्ञारम्भ प्रमृति विभिन्न सन्दर्भोका सद्धन्यन किया गया है। महाराज दरारयके प्रत प्राप्त होनेके पत्रात् ऋपिवर्षं विश्वामित्रने शयोध्या प्रधार कर प्रवद्ध पराकसी विविध भाषाविद्यारद मारीच, साइका. लुवाह आदि दुर्दान्त राचसोंके विनासार्थ महाराजसे उनके वसदय वर्षीय पुत्र श्रीरामको माँगा। इच्छा व होने-वर भी महाराजने थीरामको विश्वामित्रके मस-रचार्च प्रश्यय-गमनके किये बाजा दे दी चौर श्रीरामने भी राजक्रमारोचित बुख-सन्भोग-श्रदाकी उपेदाकर अदा भीर भक्तिपूर्वक विश्वामित्रका अनुगमन किया। यहाँ विचार करनेपर यह सहस ही जाना आ सकता है कि शीरामको राज्यस्वासे चरचय-शमन ऋधिक सुलकर था । कहाँ सी श्रीरामका मदकतान-भिक्त प्रवद्शवर्षीय सङ्गार वालक कहा जाना और कहाँ वनका ही दुर्शन्त अर्थकर राचसोंसे निविद ग्ररचयमें प्रकेत वृद्धके क्रिये भेजा जाना । कैसा भवद्भर स्पापार है । परन्त बलातः शीराम कतानमित्र न थे न्योंकि वनके स्नीकिक ज्ञान तथा विशेष श्रमिञ्चताका कविवर बारमी कितीने खुर वर्णन किया है। थितृ-बाइयके प्रति पेसी बदाका कारण, उनके लुकोमल धन्मः करणमें पितृभक्तिका को ध्यहरोहम हो रहा था. विःसंशय वही या ।

शीराम निश्वमदेह यह समयते थे कि निवा हमारे परास नेत है उनकी आज नवज करते हमें समय ही स्वा अवारे सुराजनीक्ष मार्च हमाने स्व अवारेसे सुराजनीक्षम नवा सहामुग्निकी मार्चि हमें। उनके ह्वमें ऐसा विरुत्तम होनेतर उनकी मरिकाराम संपर्वेच में सहस हो तीने बाता, क्रियके करवाकरण दुर्गान राजनीक्ष यक, क्षितिक्की सत्य परा, राजाब मार्गि, मर्के दिक्सीने कीन्निवा, प्राव्योवस्था, विषयुर्जेमा, विरुद्धा कीर्तिकस्थियों वानकी देवीया साम क्षारा सामाना नाम, राग्नु-गनु मंत्रनिहास। होतिह कोठ यक दास तुग्हासा।
आयमु काट किय किन मोदी।।
सामात्र रुगु नाम हमारा। पर्यु सहित वह नाम तुग्हास।।
देन एक पुन गनु कामा। भ्यु सहित वह नाम तुग्हास।।
देन एक पुन गनु कामा। भन्न पुन परम पुनीत तुग्हारे।।
स्वत प्रकार हम तुमसन हारे। छमह नित्र भर्याय हमारे।।।
स्वित सर्वन्यर कीन्द्री दाया। कोर्ट मुद्दत वचन रुगुस्या।।
सम्हरे यक में साम मारा। शिक्त निर्मायक कुँ पुनि सास।।

शास्त्रीर्व्यातिशय—षथा— शाम कहेउ रिसतिशय मुनीसा। कर कुठार अंगे यह सीसा।

मुगुपति बक्दि कुटार बटाय । मन मुगुकाहि राम सिर नाप ।। क्षमा — पया — कीन्द्र मोह बस होट जवापि तोईकर वय ठीवत । प्रमु छाड़े करि छोई की कपार स्मुवीर सम ।।

इत्यादि ।

महासरचट्य— प्रसन्ततां या न नतामिनकतः

तथा न मध्के बनवासदुःखतः । मुक्षाम्बन्न धीरधुमन्दनस्य मे

सदास्तु सा मञ्जूतमङ्गतप्रदम् ।। पितु आपसु भूषन-यसन तात तने रघुवीर । विसमय-इरव न दृदय कुछ पहिरे यस्कत चीर ।। मुख प्रसम्न मन राग न रोष्ट्र ।

मुप् स्तेव क्रीमेश्क समाजू । भाहत देन तुमिह जुनशङ्क ॥ गुन्दशिष देह राम पहुँ गयक । राम द्वस्य अस निसमय मणक ।। जनमे एक साह सन भाई । मोमन-समन-केटि-कोरिकाई ।। करनेष व उपबीत विवाह । हंगा-संग तम मणक ककाहा ।। विमक्त संव स्व क्रानुवित न कम्मी कहाम बड़ेहि जीमेश्हू ।।

विमासासे थनवास-प्रसङ्ग शुनकर— सथ प्रसङ्ग रघुपतिहि सुनाई। बैठि मनहु तनु धीरे निटुर्यई।। मन मुसुकाहि मानुष्ठत मानू १ राम सहज्र आनन्द-निधानु।।

स्येर्य--

प्रातं कहा मुनिसन रघुराई। निर्मेय क्यम करबु तुम नाई।। होम करन त्रागे मुनि झारी। आपु रहे सक्तकी रखनारी।। सुनि मारीच निताचर कोही। के सहान चाना मुनिन्द्रोही।। बिन कर-बान राम विदि मारा। सत जोजन गा सामर चारा।। परस्क सर शुबाहु पुनि जारा । अनुज निसाचर स्टब्स मेंहगा। सारि अनुर द्विज निभवकारी । अरु ति करहिं देव-मुनि हरी ॥

निगृद्गानता---

खुबताहि ट्रापिनाक पुराना । मैं केहि हेतु करों अभिनाता ॥ नों हम निदर्शि बिश बिर सत्य सनह मुगुनाम।

ना हम निद्दाह बिन्न बाद स्त्य सुनह मृतुनाम । ती वस को वस सुमट वेहि मयनस नावहि माय।। देव-दनुब-मृपति-मट नाना । समक्त व्यक्ति होज्वस्त्रता।। वो दन हमहि प्रचारै कोळ । हरहि सुसेन कात किन होठ।।

चान नुभाव के सार हिस्स के किए हर दिहं सुक्तेन करत कि ने होते हैं। के दिन कुसी हैं किए देश हर दर्शते सुक्तेन करत किन होते हैं। कहीं सुमाव न मुक्तहे प्रसंसी 1 करते हु बाहि न स्वर्धनी 11 विज्ञेसके असी प्रमुखाई 2 अनय होड़ को तुम्हिंदे होते हैं।

द्ववातता— यया-दाय राम रास्त्र-शित रुगो । बहुत उपाय किर एक त्यारी ॥ उसी राम-दास दात जाने । बारम-बुल्या चीर सार्थे ॥ सातु बचन सुनि अति अनुकूछ । सनु संगद सुरवक्षे कृष ॥ सुस-मकरन्द परे आमुखा । निरक्षि राम-मन-मंदर नृक्ष ॥

नौ नहिं फिरहिं धीर दोठ माई। सत्य-सन्त्र बढ़ान खार्ड। बनवासको स्थीकार कर खिया, फिर क्षत्रेक प्रेमाउगेर कौर करुया-प्रायनाकॉपर भी विचतित नहीं हुए!

र कल्या-प्राथनाचापर मा विश्वाबद गरा ३५० बनमें मुनियोंका चरिय-समूह देखका---

निसिचर द्वीन करीं वहि मुख ठठाव पन कैन्द्र। बालियध-प्रतिका—यधा-

सुनु सुत्रीव में सारिहों बालिडि पकहि बान। ब्रह्म-रुद्र-सरवायतहुँ वप न ठवरिहि प्रान।

उन राष्ट्रकातिकक चीर-मीरिरोसियरे वो है
कहा, वह कर दिलापा, जिसका कहो कर धीर रागि
कर विचार, अरतक सब कहार उसका निर्दार किया अर्थान विचार अरतक सिंद करार निर्दार किया अर्थानों क्योओड राषिक प्रचेरारी, परास्तारी सारी अर्थानों अर्थान पाय किया। रू.ए.गा.इ.ग व्यवस्, गा.स.गोर का.स.गोर हिन्द कर स्वार्थ के हैं। हेनवें द्रायश-पाडुआर औरसम्बद्धी मायकर हैं। सादयें एक्स पुरुष्टिकार का.स.गोर हैं। वैवेदे सादयें एक्स पुरुष्टिकार की.स.गोर स्वार्थ हैं।

रामायणमें चादर्श पितृभक्ति

(डेसर-राबारशहुर राजा शीक्ष्मीनारायण हरिचन्द्रम जगरेव विवाबाचरवति, प्रशासनविशास टेकाली)

पिता हि परमः स्वर्गः पिता हि परमं तपः । पित्रीर प्रीतिगापन्ने प्रीयन्ते सर्वेदेवताः ।।

'लर्गडामे देवेद' इत्यादि वेदमतिपादित वास्पोंसे क्व-पुत्र-समन्वित, त्रितापसूम्य, पुरुषकर्मी पुरुषोंकी निवृति तथा पवित्र-चरित्र-देव-यू-वृके सावास दिग्य मंडी बानवाराक्षे मनुष्य यज्ञके द्वारा यज्ञपुरपकी प्तिया करते हैं। उसी स्वर्णकी आसिके लिये विश्वतिपादित मार्गमें भ्रमसर होनेदाखे खोगतीर्थ-सेवन, ल-एवर काते हैं, तथा कपनियदोंमें अदाशीख-मनुष्य व्यानका साधन करते हैं। भीमांसाके भनुवायी बेद-रेपादित पञ्चमीमें तत्परताको ही उपासना मानते हैं। सर धर्मग्रासानुमोदित भागींपर चलनेवाले साधक भिन गास्त्रोक साधनाचीं हारा जिस को कको बत्तम समय-व करना चाहते हैं और साहित्यामृतसेवी वरम अकर बिसकी बोर एकटक देखते हैं-वह स्वर्ग क्या है? है ! कैये पहचाना जाता है ! और उसे माल होनेवाले भि वहीं क्या सुख भीगते हैं। इन प्रश्नोंके उपयुक्त र बोबते समय महर्षि वेदण्यासः चित महाभारतका र्षेष्ठ रखोष्ट स्मरण हो जाता है, जिसका तावर्ष यह है सर्गमास पुरुष जिस सुलका उपभोग करते हैं, उसकी किंद पिवासे 🖬 दोती है। पिनृसेवी तीनों वापोंसे बाता है। तपके प्रभावसे की कुछ पात होता है, मिकको वह भी धनायास मिख काता है। विलाको हर सनेवाबे पुरुषसे समस्त देवता भी सन्तुष्ट रहते हैं। निके बिये रामाययका नाम विषा का सकता है जिसे विशुद विकृतकिका भावरा प्रत्य समस्ते हैं। इस पढ़े नामकत्यामें भी पितृभक्तिका भाग व्यन्जित है। X चपच=रामायच चर्चात् परमपितृशक श्रीरामका ^न। सारायं यह है 🎉 वह अन्य जिसमें चादर्श पितृभक्त समके चरित्रका निर्देश हुआ हो।

भारत उपर्युक्त सार्वे अस्तर हुस्तवार दिये भारत उपर्युक्त सार्वे अस्तर्वे अस्तर हुस्तवार दिये भारते हैं- (9) पितासे स्तर्वे भिन्न नहीं है सर्वाद गै से स्तर्वे हैं। (3) यह पिता हमारे समीध रहते हैं। स्मारे हुस्तार सत्तुको तरह से हुसारे स्वाधीय रहते हैं।(४) उनके सन्तोपसे प्राचीमात्र प्रसन्न हो सुसकी इटिक्टते हैं।

बादिकविने पितृमक्तिका स्वरूप-निदर्शन करनेके वर्षे पितलको वर्षेष्टरूपसे दिखलाया है। यथा--- प्रयमासिके बिये राजा इसरवकी चिन्ता, शीवशिष्ठजीके परामशैसे प्रश्नेष्टिका समारस्य, मध्यशक्तको पुसानेके जिये पुमन्तका कपदेश क्षया ऋषिका धागमन धीर पशारम्भ ममृति विभिन्न सन्दर्भोका उद्यान्यन किया गया है। महाराज द्रशरपके प्रम प्राप्त होनेके पश्चात् ऋषिवयं विश्वामित्रने स्रयोध्या पश्चार कर अवस पराकमी विविध मापाविशास्य मारीच, साम्का, सवाह सादि दुर्दान्त राचसोंके विनाशार्य महाराजसे उनके प्रश्रदश वर्षीय पुत्र श्रीरामको माँगा। हुच्छा म होने-कर भी सहाराजने श्रीरामको विश्वामित्रके मज-रचार्य ग्रास्य-गमनके किये बाजा दे दी बौर श्रीरामने भी राजकुमारोचित सल-सम्भोग-रपुडाकी उपैदाकर बदा और मिलपूर्वक विश्वामित्रका शतुसमन किया। यहाँ विचार करनेपर वह सहज ही बागा जा सकता है कि शीरामको राज्यसखसे धरण्य-गमन श्रधिक सुलकर या । कहाँ तो श्रीरामका पुदक्तान-शिक्त प्रसद्शवर्षीय सुदुमार बालक बढ़ा जाना और कहाँ वनका ही तुर्दांच्य अवंकर राचसोंसे निविष्ट बरवयमें अकेले बद्धके जिये भेता जाना । कैसा भयक्कर प्यापार है ? परन्यु बसातः श्रीराम क्लानभिज्ञ न थे न्योंकि दनके खीकिक ज्ञान तथा विशेष श्रमिञ्चताका कविवर वाश्मी कितीने लूद वर्णन किया है । पितृ-बारेशके प्रति ऐसी अदाका कारण. बनके सुक्रोसल जन्तःकरणमें रितृमकिका जो धहरोहम हो रहा था, विःसंशय वही था।

श्रीराम निरमप्देर यह समस्त्रों ये वि निता हमारें प्रसा देव हैं उनकी आजा पावन सरते हमें स्वयद ही स्वत कहते हुंच निर्माण क्या सहान्यतिकी मादि होगी उनके हर्वमें पेता विश्वस्त होनेपर उपने मिलताका संवर्धन भी सदा हो हो क्या, जिसके करावक्य हरीना राव्यक्षित यह, विश्वानिकों सत्य क्या, मात्रक करावक्य हरीना राव्यक्षित यह, विश्वानिकों सत्य क्या, मात्रक मात्रि, मोक् दिल्लीन विभावता, मात्रकोंचार, विषयपुर्वेण, निर्माण कीर्ति-स्थियों सावकी देवीक साथ वया पाद्यासम्बं हरू साई सकेक साथवंत्रक क्या में कारण हुए। यहा 4

पदि पिनु-मक्तिकी पराकाष्टासे बनका हृदय परिज्ञाबित न होता तो में विधामियके मसकी समातिपर धपना काय⁸ समात हु या समभ व्यपिकी बाजा मासकर व्ययोध्या सीट सकते थे किन्तु पेसा होनेसे पूर्वोळ थानीष्ट-परम्पराकी प्राप्ति कैसे होती ? इसपर विचार करनेसे जात हो बाता है कि चेद-च्यासकृत उपयु क वितृपशक्तिमें तनिक भी शखुक्ति नहीं है। यदि कहीं फलमें स्विकम दीख एवं वी समस्ता चाहिये कि वहाँ रिनुभक्तिमें शारम विश्ववि नहीं है, श्रन्यमा शाहि-कवि धपने प्रन्यमें पितृमक्तिके खलगढ फलमोगका निर्देश ही नहीं करते।

रामा दशरयने वर्जरित देह तथा बार्टनयके कारण हाज्यभारको भपने कार्यसे वतारकर सर्वगुण-गुक्त श्वेष्ठ पुत्र श्रीरामको जय युवराम बनानेका निवाद किया और धयोध्याके नागरिकों धीर राजनीतिकोंने भी जब इसके निये चामह किया, तथ विशासिनी सन्यराने कैटेवीको राजा प्रारचसे हो कठिम वर माँगनेके जिसे उसकाया। ष्टवतः केंद्रेयीने एक यासे श्रीतामके किये चौरह वर्ष वय-वास माँगा चौर दूसरेसे भरतको धोवराज्य देनेके क्रिये राजासे कहा । सन्यनिष्ठ परम धार्मिक महाराज देशस्य धपनी पूर्व मतिज्ञाका स्मरणकर कैहेवीके इन वसतुरस यचनोंकी तुन स्तरप हो गये। तब भीनं समावित्रस्यवर् के सनुः सार राजीने उनके माया-मतिम रामको धनकास वानेका धारेश किया। सूर्यवंशके इस धीर विष्यवके विषयम रामायवा-स्विताहे समिनायकी विवेचना करनेपर यह स्तर हो बाता है कि रामायश्रम विद्रमितका बादर्श दिवानेडे हेर्रासे ही प्रम्यवसीने इस प्रसप्तका काबील दिया । एक घोर श्रीताम नवपुरक राजकुमार है जिनकी ज्यवासता, विवास-वैभवादि-मुल-संमोगस्ट्रहा तथा बातियोंके श्मेद-सम्माषयादि समीष्ट योग सर्वहा वेसक्यीए हैं चीर ठघर बार्स्डक्यरे सर्वेरित चींत्रस्तापन । इएरयहा क्योर वनगमनादेश-वह भी एक हो है किये नहीं, मुद्दीर्थ चौहड़ बरों है किये करा बरक्क व बनचारी-बेनपारसा कर वरिश्रमसा करना, किनना न्वक है! साधारख पुरुर हो बह मुनकर ही विस्नाव बाग, इसमें इस भी धन्तुन्ति नहीं । बाल्यु आवर्ष है वि धाराम स्वरावयस्य क्षेत्रे हुए भी भीर, या प्रमञ्ज विकाम क्षान के चारत के निर्देश के वार

वर्ग चाउडाँको खोरामकी वरित्र कारताशीकिका

हान करना सुमंगत होगा-

अनाहरोऽपि कुस्ते पितः कार्यं र टकः करोति यः पुत्रः स मध्यम र उकोषि कुरते नैव स पुत्रो मत ;

'बाङ्गाके विना (केवज बाराय समयव कार्यं सम्पादन करनेवाचा प्रत्र वसम है। को विताका कार्य करता है वह सम्बम दुन चाला पानेपर भी बसका पालन नहीं करता स्वस्त्व है।' ऐसा कड़कर उसे चरिवार्य कर देने गम्भीर बन्तः हरणका सुन्दर परिचय मि मांसास्थियुक्त शरीरपारी कीन ऐसा पुरुष है व सके यदि कोई शहा करें कि भीराम और का

सकते थे हैं तो बचार यह है कि सामान्य शाक कौरव-पायहच सङ् गये। हेमनीय रमयी-सम्पर्शते पराकान्त बीरेन्द्र शुक्त-निशुक्तमें झातृविहेच बला हो। वेसे ही कितने विद्यानक प्रज्ञित हुए, निनसे इस संस कितने वैश तथा वजराशि-समन्तित साप्रास्य भागा दो गये । भिष्ठुले खेकर माझणतक मायेक मानी का रवार्थके जिये क्या नहीं करता । मतिदिव बसी प्रवि सन्वापसे क्या मार्चीवर्गं सन्वस नहीं हो रहे हैं हिंद भी नवे-नवे सुख-सम्भोगकी प्राप्तिके विषे क्षम नते हैं, वह तो माचीमात्रका रवभाव है इस विषयमें बाद व्यक्ति नितार अनुष्य है। चार इस सोलाडे प्रकृत विषयको देशा बाब हो का चलता है कि विताडे चारेशको धवनत-मानक हो मा

बर, आयानियतमा वामकी और मायनिष बरमबढ़े स विनु अस्तामधी नवपवरण भीरामने चौद्द बर्गीन आस्त्र वापस वृतिसे बाबाविपात किया। इतना ही गरी, बरागा व्यासके वेहान्तके अपरान्त भरतके बाह्य कारेश भी पितृ-मार्थेश बरसंघम कानेबी कराना बनते सर्वे स्वप्तमें भी वितित नहीं हुई। शवरनाम पूर्व कर धारने राज्यमें बगरें है जिबे भीरामने बनुगंच दिश स तब बर्स भी राज्यादावरके माथ बावचेन करना निर्णा व्यक्तिमायके विश्व समय क्योंने को कर्मका दिना। व्यवस्थात्वम् अत्र सूर्यवका, सानुष्य तथा निर्दर्श राष्ट्रगों है थोर धानाकामी बीदिन हुन्। यब भी 'तिनु वार्ष' का नामन करना करकर हैं' यह वनके सनमें वही बाता। सर्गातिहोसींच मायांज्या मानवीते क्राराच होतेले भी रियु-मार्ग्स वाजनडे निवसों में राज्यात जी की

में हुई। ला रितृ-मक्ति घन्य है। कीन कह सकता है रेमी दिनु-भक्ति सफला नहीं होती है

रिताके बीदित रहनेपर उनकी आञाका पाळन रनेशने बहुत मिलेंगे, पर पिताके मर जानेपर भी वंदी बाजापर इसप्रकार इटे रहनेका उदाहरण कीशमके ता अन्यत्र नहीं मिलता !

वर्मार्गं वीरेन्द्रपदामणि श्रीरामने खद्वाकायडके तमें धरती प्राया-प्रिया सीताके चपहार-जनित दोपके पार विषे यमि परीचा करायी। पर व्यक्तिपरीया के ^{त्रतर} भी बनके सनमें सीताका निर्दोप दोना नहीं ग, तर उनके पिता धीव्यत्यने स्वगंक्षोकले चादेण मा--'जानकी सती-शिरोमिया है इसमें सन्देह नहीं'। गमने विवाकी इस साकाशवायीको सुनते ही अपना गह सीवाके लिये समर्पित कर दिया।

च्यरंग्यपं-धनवासके बाध सयोध्या जीटकर राजमस्य र प्रजापालन प्रसृति कार्य भी श्रीरामके जीवनमें विश्-^{हेरहे} द्वारा ही <u>हुए</u> थे। इसप्रकार अगवान् श्रीरामका पूर्व बीवन पित-प्रावेशसे घोतमोत था !

जगर्मे दरपमान देव-देवीराय जो देवावयोंमें विशाजमान रहे हैं वे सब स्यूलतः झन्तःप्राया है, उनकी प्रतिदिन-प्ता-मर्चना इसकोगोंके सभीन है। धरस्यमान-^{-रत-पामस्थित} देव-देवीगण मानव-चचुके श्रवीचर हैं। राविक शानदृष्टि-गोचर देव-वृत्तियोंके अभीष्टमद होनेसे रन क्षोगोंसे इम क्षोगोंकी क्षभिकापा-सिद्धि कवि दूर प्रान्त पिन्देव इन सबोंमें श्रेष्ठ है, इसमें कुछ शी पुनि नहीं। इससे खपराच होनेपर भी ने हमें शाप विते। भाराधना नहीं करनेपर भी वे ससन्तुष्ट नहीं होते पित वे सदा-सर्वदा प्रश्नकी उत्ततिके क्रिये सचेष्ट रहते हैं। तः ऐसे पिन्देवकी उपासना इस जगदमें सानवसातको गर करनी चाहिये। इसप्रकार हमें पितृ-काराधनार्थे पर इर दसतिवयमें पहुँचानेके जिये ब्रादिकविने रामायया नक वेदोपम अन्यकी रचना करके हमारे अभियन्दनीय निको मास किया है। इस विषयको स्रधिक दहीसूत लेंडे जिये इस प्रयन्थंडे शीर्पंडडे जीचे जिले हुए ाहि परमः स्वर्गः' इत्यादिकी प्रवराष्ट्रतिकर इस खेलको वाष्ट्र करते 🕻 ।

श्रीराम-नाम

(डेसक-महातमा गापीजी)

×

मनामके प्रतापसे पत्पर तैरने क्रगे । रामनामके बलसे वानर-सेनाने रावणके धनके खुदा दिये । रामनामके सहारे हन्मान्ने पर्वत उठा खिया और राष्ट्रसोंके घर भनेक धर्य रहनेपर भी सीवा

साजतक प्राण् चारण कर रक्ती, न्योंकि उनके करहसे सिवा रामनामके दूसरा कोई शब्द नहीं निकलता था। इसीबिये तुलसीवासमीने कहा है कि कलिकालका मल यो बालनेके बिये रामगाम जपो ।

इसमकार प्राकृत और संस्कृत दोमों प्रकारके मनुष्य रामनाम खेकर पवित्र होते हैं । परन्तु पावन होतेके खिये रामनाम हदयसे खेना चाहिये। बीम भीर हदयको एकरस करके रामनाम खेना चाहिये।

रामनामके गीत वानेके लिये यदि कोई मुक्तते कहे तो में सारी रात गाया करूँ। सो यदि बाप बपनेको हुसी सीर पवित मानते हों-शीर इस सब पवित हैं-तो सुबह, शाम और सोवे समय रामनामका रदन करी चौर पवित्र होध्ये ।

× ×

डी अपने दन पाउड़ों दे सामने भी इसे पेश करता हैं जिनकी दृष्टि भू घंशी न हुई दो और जिनकी अदा बहत विद्वा मास करनेसे सन्द न हो गयी हो। विद्वता हमें कीवनकी धनेक सबस्थाओंसे पार से बाती है, पर संबद भीर प्रजोशनके समय यह हमारा साथ विश्वज नहीं देवी । उस हालतमें श्रदेजी अदा ही उचारती है। रामनाम उन क्षोगोंके किये नहीं है जो ईपरको हर शाहते कुमखाना थाइते हैं और हमेरा चपनी रंपाकी बारा। उसने खगावे रहते हैं। वह उन सोगोंडे किये है सो ईशासे दरकर रसने हैं और को संयमपूर्वक कोवन विवास बाहते हैं पर चपनी निर्वेतताडे कारण उसका पासन कर नहीं पाने ।

× इस्तिये पाठक ल्व समझ में कि रामनाम इर्रका बोख है। बहर बाचा धीर सनमें पुत्रता नहीं, बहाँ बाचा



रताब्दिमें हुई थी। धेमेन्द्र दासन्यास, सोममट तया मनान्य कवियों के कथनानुसार यह अन्य पैशाची आपार्में बिसा गया था। भाषाभट्ट, सुबन्धु, ब्वडी अमृति सद्दा-वियों के दक्षेत्र से पता चलता है कि यह अन्य ईसाकी र्शिको या दुर्शे शताब्दितक अचित्र था । इस अन्यके श्वास्त्ररूप तीन प्रन्य संस्कृत-भाषामें चौर एक प्रन्य गिनिजर्मे बाज भी विद्यमान हैं। संस्कृत-प्रन्थोंमें कारमीरका हिल्ह्या-सोक्स्-संग्रह' सबसे पुराना है। प्रसिद्ध विद्वान् L. Lacote ने इसका सम्पादन किया है। दूसरा अन्ध केंद्रवास व्यासकृत 'बृहत्क्यामआरी' है, जिसकी रचना •१• ई•के जगमग हुई। भौर सीसरा अन्य कारमीरी 'नेबेड सोमरेक्प्रहरूत 'कपार्तारेखांबर' नामक बृहध्यन्य वो १०७० ई०के सगमग प्रयोत हुआ माना वाता है। षि चन्तिम दोनों, चेमेन्द्र और सोमदेव समकाबीन ही वयापि उन्होंने अपने-अपने अन्य श्वतन्त्र रीतिले ही है है। 'बुहस्क्यामअरी' यक छोटी मुलक है, परन्तु भारतिसागर' तो एक विशास प्रन्य है । इन सब प्रन्थीं-'क्यासरित्सागर' विरोप उल्लेखनीय है, वर्षोकि स्वयं यक्तांने कहा है---

यया मूर्क तथैनेतत् न मनाराप्यतिकाः । मन्यविस्तरसंधेपमात्रं भाषा च विद्यते ॥ (कथा० स० सा० ११११९०)

हतने सहज ही घतुमान किया था सकता है कि पानिस्तामार' में वर्षित कमाएँ वर्षोन्दी-वर्षे पहले रिकामें से दो होंगी। धीर साथ ही यह भी किंद्र होता कि महाके साथके सक्यूनि, को हैसाकी व वी धीर स्वर्धी महाके साथकार्यों वर्षास्त्र थे, 'इस्क्या'से व्यंत्रवा रिक्ष थें।

यब हम उक्तरामचितिक 'सम्मेबनाइ' के जायारका एकति हैं। कयासीरमागाई 'सब्बहाशशी बक्तकों स्वरतमां नागी विचायरी करनी करना धक्रहास्तरीके प्रेमको सन्तक करने आडी कामागा नावान्त्रकी "परा काडी हुई कोरामच्याका वर्णन करती है। इसी स्वर्ण काडी हुई कोरामच्याका वर्णन करती है। इसी स्वर्ण कराडी हुई कोरामच्याका स्वर्ण करती है। इसी स्वर्ण कराडी हुई को सर्वस्थानस्त्रकों काज नारी स्वर्ण कराडी मुख्य इस सरकों है देशारी करनियत करते हैं। एक दिन अपनी नगरीमें गुप्तवेशमें धूमते हुए मधु श्रीरामने देखा कि, एक पुरय—

इस्ते गृहीत्वा गृहिणीं निरस्यन्तं निज्ञात् गृहात्। परस्थेयं गृहसमात् इति दोशानुकीनात्।।

— 'बपनी कोको हायसे पहरूकर प्राप्ते परसे निकास दश है और यह दोष दे रहा है कि तू दूसरे के घर गयी थी।' इसपर यह की कहती हैं---

> रक्षे गृहोपिता सीता समदेवेन नेगिसना । अवसम्बविको यो मामुज्यति हातिवेदमगान् ।।

नुनै शीक सदीवेषस्यका मर्छन्यमा सम्मर् ।

'कारव ही रह सीमा गरोज है स्वी में इसके पी-दूने व्हों सामने हैं हा चिकि दिनात हैमा विश्व है। बाद व्हिम्ब सीमाओं सामूर्ति सामन है हमा जी है हैने हैं की बाते हैं 'डिटर टिटामनर' व्यक्ति हमादे हमा बाते होंगे दूनवें जाताओं बाते जाते हैं आहे हमादे हमा बहुत दुन्याची बात की तमा है का हमादे हमादे का स्वात हमादे ह

> अन्यत्वी वधा विश्व तथा गोपपटेड मन्द्र १ अनुहासः तिगाउँ विश्वयः विश्वयोगम् ।

"सरदर्" बार सींगेंधे की शिषमें से शर्दर उसकी बॉब वर में, वॉट मैं बहुदा हों में . ..

देवच मिप्पान है, वृत्तम है, शानुनाल है। पेने वधारणसे चाहे संमार मन्ने भोगा ना जाय, पर वह भन्तवीमी राम बरी घोता या सकता है ? शीनाडी ही हुई मालाडे मनडे बन्मानने को ब बाले क्योंकि वे देशना चाहरी से कि सन्दर रामनाम है या नहीं है चरनेको समस्त्रात समयनेकाले ग्रमहोते बनमे पूपा-'सीताबोडी सविमाञ्चाडा पैपा धनावर । इन्यान्ते वदाव विवा-विव बसके धन्वर रामनाम म होता तो सीवामीचा दिवा होनेवर सी बह

बार मेरे बिचे भारमूत होगा।' तब उन वुँद बनाहर पूरा-'ती क्या दुग्दारे मीतः हन्मान्ने हुनिने हुन्स धरना हृदय चीरका बहा-'देशो बन्दर रामनामङ्के विश सगर

वो करूना ;' सुभर खनित हुए, हन्मार हुई चीर बस दिनसे शमक्या हे समय हन्सान बारम्य ह्या । (मनजीवनके पुराने संबोधे संबो

श्रीरामकथामें एक श्रद्धत पाठान्तर (तेसह—मीतुन भी० यन० शेषनहरू दम० १०, दसन्दन० थी०)

यः सभी प्रास्य विद्या विसारदाँका सत है े बिहिन्दुचों हे महाभारत, रामायण इत्याहि

पुरातन प्रत्योंके की पाठ इस समय विधानाम है थे उपाँछे त्याँ मूलप्रत्यके वयार्थ पाठ नहीं हैं, उनमें बहुत कुछ वलटफोर हुमा है। रामकयाकी भी यही घवत्या है। गोरेसियोका बंगविपित्रव पाठ, मार्शमैन, रजीगेज भीर वर्जिन बाहमेरी (जिसके दो संस्काय मास्तम हो शुक्रे हें) के संस्तृतवाठ-सभीमें कुए-न-कुछ पाठमेंद अवस्य पाया

गता है। इसी मकार थावईंसे मकासित बालमीकीय माययाके साधारपर 'मिफिश' का प्रथमय संगरेशी सनुवाद य गोरेलियोडी प्रतिसे 'हिपोबिट् फॉर्ग्' का कोछ ान्तर भी पाठभेदसे गुक्त नहीं हैं। वालाीकि विषा, प्रत्यात्मरामायण और प्रवासीके रामचरित-तम भी कया-भेदतक पाया जाता है। हुछ दिन हुए न साहबने किसी कारमीरी घोसकडे एक अन्यकी ही थी, जिसमें विखा था कि भीसीवाजी मन्दोदरीकी कन्या भी धीर माताके परित्याग करमेपर जनकने का-पोषा या । बंगजाके बहुत समायवार्मे भी वह

ी प्रकार वर्षित है। पर सर्वसाधारकों सीताजीके त्यत होनेकी गाथा ही प्रचित है। इसी प्रकार भिन्न प्रान्तों में धने ब कपा भेद भिन्न भिन्न प्रत्यों में , पहाँ तन सबके विषरवाकी भावस्वकता नहीं। ख रामकपाका एक बसुत पाठान्तर उपस्थित

किसी ग्रोकान्त बाटकका उद्येख नहीं मितता। वर इत पता चला है कि इस बहुमुत, बिहान और करिमेडने जो यह महत्वपूर्ण क्यान्तर उपस्थित किया है बसका आधा मतिद्व अन्य 'इस्त्क्या' है। द्वाo ब्लाई (Bublat) मतानुसार इसकी रचना ईसाकी प्रथम वा द्वितीर

'त्रिवेन्द्रम् सिरीज्' के एक शोकान्त माटकडे स्रतिरित्त सीर

'कोटापराइके अवसे सीताबीका परिलाग क बाद श्रोरामधानुश्चीने डम्हें पुनः स्वीकार नहीं किय वारमीकि सुनिके बाबससे खौटनेपर बीराम-समामें सब

सामने धपने दिन्यायको दिसवादर सीटामीके निकास प्रयाख करनेपर सीरामचन्त्रपीने सीवा-रिराहित विरागः वृधिसे धाररीप कीवन स्वतीत किया ।' वही क्या सर्वत मचितित है। पर महाकृति सबभूतिने बपने 'तकररामकरित' शादकके 'सम्मेबनाह' में श्रीसीवात्री भीर शीरामतीका उनमिलन वर्षन किया है।

यहाँ सहज ही यह प्रस उठता है कि ऐसे बिहाद क्या महाकविने श्रीरासकयामें इतना बढ़ा परिवर्तन क्यों और कि भाषात्पर किया ? क्या इस इसे कविकी विशे निरंकुण कहेंगे धायबा माटकको सुखान्त बनानेके बिपे बनका रेगा करना उपयुक्त था है कुछ विद्वानोंका मत है कि संस्कृत भाटपराखके नियमोंके अनुसार शोक-पर्यवसायी भाटकोंकी हचना एक कान्य-दोष समस्य वाता है। क्याचित् इसी दोपके परिहारके लिये अवमृतिने धपने नाटकर्मे 'सम्पेदन की वायोजना की हो। यह कल्पना सम्पर्य हो सकती क्योंकि संस्कृत साहित्वमें भासकविके नामपर प्रति।

श्वान्त्रिमें 🚮 थी । चेसेन्द्र दासव्यास, सोमग्रह सथा क्यान्य कवियोंके कथनानुसार यह मन्य पैकाची भाषामें विसा गया था। बाणभट्ट, सुवन्ध्र, व्यडी प्रमृति महा-इंदिरोंके उद्येखने पता चलता है कि यह अन्य ईसाकी र्शंच्यों या कुठों शताब्दितक प्रचितत या । इस अन्यके ष्ट्रायास**रूप** सीन प्रत्य संस्कृत-भाषामें और एक प्रत्य गमिवमें चान भी विचमान हैं। संस्कृत-प्रन्थोंमें कारमीरका 'इएक्या-छोक-संबद्द' सबसे प्रताना है। प्रसिद्ध विद्वान् र्ध. Lacote ने इसका सम्पादन किया है । दूसरा प्रत्य हेमेग्रदास व्यासकृत 'बृहत्क्यामआरी' है, जिसकी रचना (०१० ई० के खगमग हुई । भीर सीसरा अन्य कारमीरी इदिश्रेष्ठ सोमदेवभट्टकृत 'कयासरिस्सागर' नामक युह्ध्यन्य है वो 1000 ईं0के लगमग प्रचीत हुआ माना जाता है। न्यपि चन्तिम दोमों, चेमेन्त्र बौर सोमदेव समकासीन ही वे तथापि बन्होंने सपने सपने प्रत्य श्वसन्त्र रीतिले ही ावे हैं। 'बुहत्कथामक्षरी' एक छोटी पुलक है, परन्तु 'ब्यासरित्सारार' तो एक विशास प्रन्य है । इन सब प्रन्थां-में 'क्यासरित्सागर' विशेष उदलेखनीय है, क्योंकि स्वयं ल्पकर्ताने कहा है--

> यमा मूर्कः तथैवैतत् न अनागम्यतिक्रमः । प्रन्यविकारसंक्षिपमात्रं भाषा च विद्यते ।। (कथा० स० सा १ ११११०)

रमने सहन हो बदुमान किया जा सकता है कि
क्वासीत्सातार में वर्षित कथाएँ वर्षो-की-कों वर्षे
क्वासीत्सातार में वर्षित कथाएँ वर्षो-की-कों वर्षे
क्वियानों में रही होंगी। धीर साथ हो यह भी तिज होता
है का का कि मध्यूति, जो हैसाकी व जो धीर व धी
कार्योक्षे सन्विकासमें उरस्तित थे, 'इस्कथा' से र्योतवा
कितित है।

षत्त इस उत्तरासमारितके 'समोक्षमाड' के बाधरका निर्मेत बारे हैं। ब्यासिरिशासके 'सक्डास्तरी क्ष्यकों 'स्वरसमा' नासी विचापशी धपनी बन्या प्रकारसरीके रिसानकरें सन्तर्क प्रपूर्व भागी कामाना नत्ताहम्मी किन्द्रता करती हुई सोरामक्याका वर्णन करती है। इसी करती करती हुई सोरामक्याका वर्णन करती है। इसी कर्मी कर्मन स्वत्तरी स्वत्तर करती करती स्वत्तर करता है। साथ ही क्षा भीर करोसी बार्ज हैं को सर्वस्ताधायको ज्ञान नहीं। क्षा ने क्याका सूच हम पाठकोंकी सेवाजे व्यत्निक्त करती है। हैं। एक दिन वापनी नगरीमें गुप्तवेशमें धूमते हुए प्रभु श्रीरामने देखा कि, एक पुरुष---

इस्ते गृहीत्वा गृहिणीं निरस्यन्तं निजात् गृहात्। परस्येयं गृहमसात् इति दोषानुकीर्तनात्।।

— 'बपनी खीको हायसे पकड़कर अपने घरसे निकाल रहा है और यह दोष दे रहा है कि तू तूसरेके घर गयी थी।' इसपर यह की कड़ती हैं—

> रक्षो गृहोषिता सीता रामदेवेन मेान्झिता। सवमन्यविकोयो मानुन्सित ज्ञातिवेदमगाम्।।

'जयाच छणु और तिसापर भी तमोगुयाके धाततार राणसेस्य पर वहनेवर सी सीना निर्मेण रही थीर हुन्ये करुपके गृह लानेपर थी हराना लानिमृत किया जाता है! हुन्ये देखकर सीरास्त्रण जानिमृत किया जाता है! हुन्ये देखकर सीरास्त्रण जानिमृत किया जाता है! हुन्ये देखकर सीरास्त्रण जाता हुन्य हुन

नृतं शीवा सरोगेयत्यका मर्जान्यया कथन् ।

'कारण हो यह सीता रहोगा है नहीं हो हरके पहि हुते कों खातते !' हा ! चिकि-दिवान केता विकास है ! बात कारियात बीताओं वार्यार्थि कारण हमा दिवास है ! हो है की कोई कार्य ''तार्य कियानाय'' व्ययोग दिवास हमें वार्यार्थि गांती था। हम हमें दुम्ह्याप्री बात की बात ! या ! इसमें करिक दुम्ह्याप्री बात की बात है ! या ! इसमें करिक दुम्ह्याप्री बात की बात हो ! या हमा हमा हमें सुन्ह्याप्री बात की बात हो स्वर्धा है ! वर्षमा हमानिक सुन्ह्याप्री बात की बात हो स्वर्धा है ! वर्षमा हमानिक सुन्ह्याप्री बात की बात हमानिक हमा है ! वर्षमा हमानिक हमानि

भवनन्तो बचा हिय तया शोपवडेह मान् । अञ्चदायाः शिवश्योद निप्रदः हिदशे मन त

'अगवन् ! चाय कोगोंको की विषयम को सन्देश है उसकी बाँच कर कों, वदि मैं बहुदा होई हो इवास्परन 490 श्रीरामचन्द्रं शरणं प्रपद्ये ॥

मेरा सिर कार दाला जाय ।' ऋषियोंने सतीकी सत्य-वरीचा करना निश्चित किया चौर कहा---अस्त्यत्र टिट्टिमसरे नाम तीर्थं महाबने ।

टिहिमी हि पराकापि मर्जान्यासङ्ज्ञीकेना ॥

मिथ्येन द्विता साध्वी चक्रन्दाशरणाभवम । रोकपारांध तैस्तस्या शहयमं ताहिनिर्मितम ।। तत्तीया राधनवष्टः परिशृद्धि करोत् नः।

'इस महावनमें टिट्टिम-सर नामका प्रनीत सरोवर है।

प्राचीन कालमें एक टिटिहरीके पतिने बन्यासङ होनेकी शक्कासे महे ही इस साम्बीको दचित रहराया था । इसपर वह टिटिहरी प्रक्षित भगवदसमें शरका वानेके क्रिये चित्रासी फिरी, चन्तमें लोकपालोंने उसकी शब्दिके खिये इस सरोपरका निर्माण किया । उसी सरके किनारे इस शयव-

पत्नीकी परिद्वादि भी की जाय ।' फिर क्या वा ? जगन्माता धीसीताजी तत्काव्य उस सरोवरके सट पहेँची और इसप्रकार त्रेभवनको धरानेवाला रापयोचार किया-यदार्यपुत्रादन्यत्र न स्वप्नेऽवि मनो सम ।

ददत्तरेयं सासः पारमञ्च बसुन्वरे॥ 'यदि मेरा मन चार्यपुत्र श्रीरामसे चन्यत्र स्वप्नमें भी र गया हो तो हे माता बसुरधरे 🛭 इस सरोवरको मैं पार कर

हार्डे । इतना करना था कि श्रीसीताती दस चगाध

राको भीनासे पार कर गयी 🗁 इस दिग्प दरपका ऋषियोंके कवर बहुत ममाव हा । उनका सन्देह समृत्र नष्ट हो गया । और तत्पन्नाच-

ततस्तां ते महासाधी प्रणेममनबाडविकः । रायवं शप्तमेष्टंश्च तरपरित्यान मन्यना ॥ —'वे चलिक मनि इस महासाधी श्रीसीतार्थाको चाम करने करे और क्रोधित हो सीताको पश्चिम

रानेडे बारण साचाद शीरामकी शाप देनेडे जिये उद्यव ो गये ।' बात उचित थी । खोकापत्राद-मयसे डी क्यों न हो. र्च कियापासती हे साथ स्वर्य दश्र करनेवाडे रामचण्डको

ते क्यह क्यों न दिया काय रैयर यह ठीक नहीं। जिसके रद-प्रभावसे चीर सर्वी वर्षा समीध शक्ति है बबसे बार्व

मृतिकी पताबा बाब सारे संसारमें बहरा रही है ीर भवित्यमें भी चहराता रहेगी वह चार्य-भी वादिवयसे रादि विषवित नहीं हो सकती, वह सन्। 'वर्तिहितेश्वा' र सही पति का बाखबर्जी बनी रहेगी । बसका सर्वीय

। इसके पविद्या सका रुपक है । आर्लावः अदिकामींका

'बाप खोगोंके लिये धार्यपुत्रके धमहत्तका प्यान करन मी उचित नहीं, फिर शाप देना तो धौर भी भनवित है। सतीके प्रतिप्रेमका बद्ध सर्वोच कावर्श चतरव ही बादाबीय

यह विशेष गुण है। तहपूर्व यह कि भीसीताओं

ऋषिवन्दको शापोधत धवस्यासे विस्त करते हुए वहा-

यध्मामिरार्यवत्रस्य न ध्यातव्यममंगतम ।

अस्त, कुछ दिन यीतनेपा सीताजीहे सर गामक

पुत्र उत्पक्ष हुआ । एक दिन सीठाजी उसे सेकर सार

करने चली गयीं । उनकी चलुपस्थितिमें ही बारमी किमी

भाशममें सीटे भीर सबको हिंडोलेमें न पा बड़े बिलिड

है । उन्होंने ऋषियोंसे स्पष्ट कडा-'शपुर्यस्य मामेर' सर्पार् 'शाप देना हो तो भाष सुन्धे शाप दें।' मार्य-मोडे सुल-कमखसे ये शब्द कैसी शोमा हे रहे हैं । दोप सर्वपा रामचन्द्रश्रीका है और प्रायक्षित सती सीता प्रपने मार्च है रही हैं! सच है, बगवको सिखावन देने बाबे अनक और मर्गारा पुरुषोत्तम श्रीरामकी वती ऐसा न करें तो और बीन श्री बरेगी।

हुए । उन्हें भय हुआ कि कोई हिंस पद्म बाहकको दश हो नहीं स्टे गया । सीताके भयसे सत्काल 🗗 ऋदिने तपीरव्रसे कुराहारा एक वालककी रचना की और बस हुश-बाबक्की हिंदोखेमें सुखा दिया । इसमकार सीवामीने अर भी।

इन्ह को प्रत्न हो गये। एक दिन इन सीताउमारोंने--अचारिंग च बालगी हेसकत्। की हनी पहल् ॥

'बारमीकि सुनिके सर्चनीय शिवक्रिक्षेको हीताकी सामग्री बना दाखा ।' उनके इस दोपड़े परिहार है हिरे शुनिने परम दुधँर प्रावधित सुनाया-

थरवा बुवेरसरसः स्वर्णेषद्यान्यानय हता । तद्वयानाच मन्दारपुष्पाच्यानयपु हुतम्।।

तैस्ती भागराचेतनः जिल्लानंदशम्भी। 'कुवेरसर जा कर अव स्वर्ण प्रजीको और बसी बदावर्ग सन्दार प्रशांको साथे बीर दोवों मार्च दिवशिया पूजा करें।' इसे गुनने ही वह बालक क्रोन्ना श्रीत

और बहाँके श्वास वर्षोंको मारबर रश्लीपा तथा हुना

पुण्य खेकर सीता, शानीमें एक प्रपर्व गाँदे शिवात सार्वे समा, इनवेमें-वयानी व राजस्य नामेरे मृत्यमन्।

चित्रन् पुरस्तरमञ्जूदेश प्रापेत समाप ।।

स रुवं समराहूतं मोहनाक्षेण मोहितम् । क्षत्रधर्मेण बच्चा तं अयोध्यामानयत्परीम् ॥

'श्रीरामके नरमेथके हेतु सुन्दर बच्चवॉसे बुक्त पुरुपोंकी हैंते हुँदते जदमण्जी उसी मार्गसे सौटे चौर सबको बुदके विवेशवकारका उसे मोहनाखसे मोहित कर बाँध करके वयोत्यापुरी क्षेगये ।' पाठक विचार कर सकते हैं कि इस समर सीताकी क्या दशा हुई होगी हैं पर सर्वेज वाल्मीकिजीने इरहो दिग्य शखाद्ध देकर चयोध्या बाकर सवको हुता बानेकी साज्ञा दी। कुराने पुरन्त सवीक्वाके लिये म्यान किया और वहरें जाकर---

रीष्यमानामयोष्यायां बङ्गमूर्ति दरीय सः । क्योध्यामें घोर संमान हुआ। वर सीतात्री जैसी रतिमता-रिरोमणिको, लोकापवाद शथा धर्मके नामपर, विवेसित कर देनेवाजे राम और सदमया, साचान् नाराययाके व्यवार भी उस जैसी महासती के पुत्र और ऋषिवर वारमी कि है एरममक प्रिभुवनविजयी बीर हु शके सामने कैसे दहर सकते है। इयमात्रमें हुमने दन त्रिमुदन-कारी बीरवरोंको वशका-😾 दिया। भग्तमें रामचन्द्रतीके पूछनेपर उसने कहा---

पुरास्तवीऽमवीत् बद्धवा सहमणेनामको मम । भानीत इह तस्याहं मोजनार्थमिहागतः ॥ भावां कद-कुशी टामतनयी इति जानकी । माता नी बीक बेरपुन्त्वा तद्वृत्तान्तं शशंस सः १६

षक्षमय मेरे बड़े भाईको बॉधकर यहाँ साथे हैं। मैं रेन्डे बुदानेके जिये यहाँ धाया हूँ । हमारी माता जानकीने ^{दरबादा} है िं इस दोनों लव-दुश श्रीरामके पुत्र हैं।' वि इतालाको सनकर श्रीरामका हृदय भर चाया और व्यनि उन बाल-बीरोंको पकदकर इदयले सना जिया-

अय सीतां प्रशंसत्सु बीरोऽपर्यत्सुती शिशू । पीरेष मिलितेष्वत्र स ती रामोऽप्रहीन् सुती ॥ भानास्य सीतादेवी 🔫 बाहमीकेशध्रमाचतः । वया सह सुखं तस्यी पुत्रत्यस्व मरोऽय सः ।

भीरामचन्द्रवीने सीताकी प्रशंसा करते हुए और उन ोंगें अपने शिशु पुत्रोंको देखते हुन नगरनिवासियोंके साथ विक्तुसे उनको प्रह्म किया और वाल्मीकिजीके काश्रमसे

श्रीसीता देवीको जुलवाकर पुत्रोंके ऊपर राज्यभार द्योदकर वे सुससे धीवन व्यतीत करने क्षमे ।

यही 'क्यासरित्सागर' में कही हुई कथाका संचेपरूप है। थव पाठक सहज ही देख सकते हैं 🏗 इस वर्णनर्मे भौर जोक-विश्रुत रामावयी कथामें कितना भेद है। उपर्यंक्त टिक्रिम-सर और नीर-परीचाना वृत्तान्त शमायणर्मे नहीं पाया जाता । शवख-वधके पश्चात सीतानीके चमि-प्रवेशकी क्या सबको विदित है। पर सीताजीकी यह सरोवरप्रदेशकी बात एकदम चनोसी है। हाँ. सीताबीहा वदी-प्रवाहके मार्गको बदल देने या मृतन गंगधाराको उत्पन्न करनेकी क्याएँ प्रचक्रित हैं परन्तु सत्य-परीकार्य सीताजीका सरोवर-प्रवेश करना एक विरुद्धत नवी वात है।वैसे इस कथामें, भरमेथका उरलेख भी कम बाधर्यजनक नहीं। बीतामके चारवमेधकी बात सी प्रसिद्ध ही है पर भीरामके समय महमेशकी राजसी प्रया प्रचलित थी यह बायन्त ही चसम्भव प्रतीत होता है। क्ष शीसरी बात. इस क्यामें क्रम खब्मयका शयोज्यामें बुद्ध होता है। रामापणीय स्थाके अनुसार यह तुद्ध बारसीकिके भाग्रमके समीप हुमा था। कहीं-कहीं तो इस युद्धके वाश्मीकि-प्राथमके समीप होने चौर पुत्रा-सबके हारा श्रीराम-सचमण्डे पराजित होनेकी बात मित्रती है। पत्रपुरायमें भी इस पुद्धी भूमि बाधार से समीप ही बसलायी गयी है। इस क्यामें इस खपने माता-विताका नाम स्पष्ट कह देते हैं चौर बारमीकि तथा कथ्यात्म-समाययमें दोनों बालक कपनेको मनि-पुनार भीर वास्मीकित्रीके शिष्य कहते हैं और राम-समामें राम-क्याका सस्तर गान करते हैं। कपियोंका प्रभुकी गाप टेनेके क्षिये बचत होनेकी और खबके स्वर्णपम जानेकी क्या भी बक्तेसनीय है। एक भीर कपानेत्र इसमें यह है कि वहीं चन्य स्पतार्थे जीशमचन्त्रको सीठा-सन्दर्भ अपवादकी क्या दुवाँहारा गास होती है वहाँ इस क्यामें इसे बीराम गुसबेपमें चयोच्यामें चूमते हुए स्वयं सुनने है। इस क्यामें सती शीता दे एक ही पत्र होनेवा वर्षन है और रामाययमें सबनुष्ठ दोनोंके जानबीबीके गर्मसे अलब डोनेकी बात पार्या बानी है। प्रथ-में प्रशास जलविका बर्वेड कावास शमायकों भी नहीं पावा जाता। तथापि यह क्या समस भारतमें प्रचित है। इस क्यारे

. 3 - 0

[©] मर्थादापुरवीशम भगवान् शीरामका नरमेव यह करना करादि सम्मद नहीं माना ना सकशा : सम्बद है, नरमेव माण्डेव के भिने जानी सारनासे देसी बातें किछ दी हो। चरन्द्र बन वार्तोचर कभी विश्वान करना सीम्ब नहीं।

भीमा भिर्योगम् हे प्रधाप् भीना रामका पुनः संवीत रिचाया गपा है। यह चया रामायनीय कवाने विश्वस विरुद्ध है। बागमीबीय श्रामायसमें शीता-विशीयवस संस्थेस तो मियता है पर शीनाशम मंत्रीशकी बान नहीं विकर्ता । भीर 'द्रणागरिग्यागर'में श्वश् विका है---

तमा सद मुखं तस्यी पुत्रन्यन्त्रनरोऽच कः । मोगरेयके अधनामुगार यह अनुमान किया शाना है कि यह क्या ऐसी हैं। 'बुरफ्या' में वर्षित होती : यह सरमय नहीं 😼 सोमदेव श्रीमा बहुभूत चौर विहान करि रामायचंत्री क्या (शीता-निशीतन और गुनि बाधमने सीरते ही श्रीसीताबीके नित्र थाम-गमन) से काररिवित हो और साथ ही यह भी सरमत नहीं कि हाहोंने 'सरिलागर' के भाषारभूत । पृहत्कवामें वर्षित राम-कवाके विकास पेसा फेरफार किया हो । हानः सोमहेनके क्ष्यनानुसार ही यहत्कथामें श्रीमीता-राम-संघोग क्रयरय ही पणित रहा होगा । साथ ही यह भी जिस्सन्देह है कि भयभृति इस प्रसिद्ध भडान ग्रन्थसे बावश्य परिचित ये । चयडी, बाचा,सबन्त प्रशृति कविवरीके कथनानुसार ईसाकी छटी शताब्दिमें यह प्रथ्य प्रचित्त था. चतः भवभतिका इससे परिचित होना नितान्त सम्मव है। श्रीफेसर खेबीका भी यह मत है कि माम्मतिने मासतीमाययका क्यानक क्रश्रक्षपाकी उस मूख कवासे जिया था जिसके बाधारण ही भोगनेको क्यामरित्यासमें ग्रहिरावतीकी क्या विकी थी।

M. Lacote द्वारा मकाचित 'बृहत्क्या-क्षोक संग्रह' की विषयसचीमें उपयुक्त शामकवाका वर्णन नहीं है, यर चैमेन्त्रकी 'प्रशक्या-मशारी' में शमक्या चति संचेपमें वर्णित है तथा यह श्रीक भी उसमें पाने जाते हैं-

दिविमोदि शहे मार्या दण्यान्येन समाग्दान् । प्रतिथयार्विना सर्वेतिया निर्मात्र मानसम्।। पुत्री दुशारका निष्ट्यी बन्ही बाह्मी किया स्वयम । तें। **क्राप्य रामोद्धियां निगद्धाना**निगय दान्।।

'स्वर्ष बाउमीकिशीके कहते पर कि ये बुश-सर नामके बीनों भाषके पुत्र हैं, श्रीतमधन्त्रजीने बन्हें प्रदेश बादेशम व्यानी निराबा आवाँ जीमीनात्रीको बजा मेता। इप प्रकार बहरक्यांके काचारार विशे गये तीन संस्कृत-प्रक्षिमें ही प्रक्षीमें भीशीना-रामके पुनः समीवनका वर्षन निप्रता है । इतना ही नहीं, क्यामरिनागरहे प्रनथकार को बहरिक करते हैं कि वहा मूने हरेरेटन मनायामनितमः ।" इत्यसे यह अनुमान सुद्दा होवा है हि **बुरण्डयामें** श्रीसीवा-राम-सम्मेखनकी क्या सदाय द्वित थी और क्योंकि यह अन्य हैसाकी एउँ। शतायीमें प्रचित था ३ सतः बहुसुत विहान् भवभूविने इस क्यासे परिचित होतेके कारण उत्तररामचरितके समीवनाहकी रचना करते समय इस कथाको अपने मनअवुके सामने अरूप शारा था।

'साय ही यह बात भी बाद रखते बोम्य है कि रामक्या-बैसी परम श्रीसद् और परम पुनीत क्यामें, नाव्यस्थाने किये दी क्यों व दो, सहसा ऐसा विपर्वास बरना भी महत्र महीं । और नाटक्की खोकप्रियताके किये भी ऐसा कार्या तस्तक उचित गहीं समया बाता, बदाक श्विको इसके बिये तत्काबीन साहित्यमें इव बाधार न जिब बाय। बारती हम यह भी कर देवा चाहते हैं कि अप्युंक होमईश्बी कथासे मिलती-गुलती कयार कामक भी पार्मी बादी है।

दोनों लोकोंका पन्थ

मैदनकी भेद बेदण्यासने बलान्यी सीई। सरल संबोध भाषायह करि गायी है। रामायन बालमीकि आदि सुद शन्यन के . भाव भरि कीन्हीं सार-संग्रह सहायी है। पान करि पावत सुज्ञान-अनजान, पैसी यानीमय पावन पियुप बरसायी है। दास तलसीने प्र'ध मानसके ब्याज मानी . पंध हुई छोकनको पाधरी बनायी है। ---धर्मनदास केविया । '

तुभे अर्पण करे

छीचम सबे तो सबे तेरा ही अन्प हप घाणी जो करे तो करे तरे गुण गानकी। धषण सुने तो सुने तेरे ही मपुर वैन, तेरे ही तजू की गन्य मुख्य करे प्राणकी। त्वचा भी छुप तो छुप तेरी ही चरण पृति , मन भी सीचे तो सीचे तरे गुण वानको। हृदय तेरा ही छोमी तेरा ही आसक वने अर्पण तुमी ही करे "चंद्र" प्रिय प्राणकी। --- तहराचंद्र पश्चिम मीक मेंक धर्महार





परसंत पद पाधन सोक-नसावन प्रगट महै तपपुंज सही। देखत रघुनायक जन-सुख-नायक सनसुख होर कर जोती रही॥ स. श. श्रदशाव-अधावार

ञ्चहल्याका पद-वन्दन

राम-गद-यद्म-गराग परी ।

ऋषि-तिय तुरत त्यागि पाहन तनु अनिमय टेह धरी ॥ प्रयतः पाप पति-साप-दसह-दव दारुन *नरानि नरा* । इपा-सुघा सिंचि विवुध चेलि ग्यों फिरि स्स-फरनि फरी॥ निगम-अगम मुरति महेस-मति-जुरति वराय वरी । सोइ मुरति मइ जानि नयन-यथ इक टकर्ने न टरी॥ षरनति १६दय सरूप-सील-गन-प्रेम-प्रमोद गरी। तलासिदास अस केंडि चारतकी आरति प्रभू न हरी ॥

----श्रीगोस्त्रामी तुलसीदासजीकी स्वकथित जीवनी

(केराक-साहित्यरक्षन पं अविकवानस्त्रको विपाठी)

तथा--

भिन्ती सुन्नी है।

विश्वल-चृत्रामित् धर्मश्राण, सकल-राख-धीगोस्थामी तरदश, भगवज्रकादगवय तुशसीदासजीका परिचय देनेकी कम-से-कम हिन्दी जाननेवासोंके जिये कोई बावश्यकता नहीं है। स्रापको 'काशी-लाभ हुए केवल तीन सौ वर्ष कीते हैं, फिर भी आपकी

वैतिनीके विषयमें बहुत हुछ खोज होनेपर भी कोई विशेष गनकारी महीं मास हो सकी वरिक अस और भी बढ़ प्या। इसके माता-पिताके नाम, इनकी जन्मभूमि चादिके विषयमें ऐसा घोर मतभेद है 🔚 जिसका सामअस्य होना नितान्त सस्वभवन्सा हो गया है। श्रीवेखीमाधवाचित गोमाई चरित' का नाम बहुत दिनोंसे सुनते बाते हैं, ^{दरन} बह पुलक बहुत स्त्रीत करनेपर भी प्राप्त नहीं हुई।

पैनी अवस्थामें कविने स्वयं धावने विषयमें प्रसंगानुसार भी बड़ी जो कुछ बड़ दिया है उसीके संबद्ध सन्तीय राना है। यह कविजी भी ऐसे विरक्त थे कि अपने विषयमें ^{गीरवही} यात सो बहना ही नहीं चाहते थे, बहुत नासब देव को कह उठे —

भेरी आति पाँति न चहुँ काहू ही अति पाँति , मेरे कोज कामको, न ही काहुके कामको । सपु के असाप महो के पोच से च कहा ,

का काहु हे द्वार परी, जो ही सी ही राम हो ॥

कट्टीर अवधन 9ुत रअपूर कही, जीतहा कही कांछ। काहकी बेटीसो बेटा न स्माहन, विवादन सोफ ।। व्यक्त काहरी

तळकी सरनाम गुरुषम है रामकी आते दर्भ सी कहे कह बीज। मीरिके धेका मधीत से शोहनी .

रेजे हो। बरम्बु इसमें सन्देह नहीं कि शोयाई दीने किमी परित्र बालय-पुलमें बन्म प्रदेश दिया या यहि ऐथा न होता ती वे रजपून कहनेसे न विहते । मृत्यरे, ब्रम्होंने मार्च लिला 🕏 ध्वती सहत जन्म शरीर सुन्दर हेतु को पन चारिशे। इसमे यह बात भी सिद्ध होनी है कि वोश्वामीजीका शरीर भी शुन्दर था । जागरी-प्रचारियो-नथाके प्रबन्धमे धुवे 💵 रामावखरें-तैया वेतहा चित्र दिया हुमा है, दनदा शरीर वैसा नहीं या । 'सुन्दर' षदमे तो लड़ विज्ञान जैस बॉबीपुरमें कुषे हुए शसवरितमानसमें दिस माचीन चित्रची मनिविति ही हुई है बड़ी समीचीन जैंचता है, और बड़ी प्रतिबिधि. गोस्वामीओं के कलाई के पारबंधनी स्वर्मीय किन्छे बर्गाजनार प्रशाबीके यहाँ शोन्वामीजीका को मार्चान किए है, उरापे

रक मलमें जन्म लेनेके कारणसे ही हो-इन्हें खाग दिवा , भीर ये यहत दिनोंतक बहुत ही दुसी अवस्थामें कते फिरे से । समा— जायों कुरु मंगन बधायों ना बजायों सनि , मयो परिताप पाप जननी जनकको।

बोरते रुसात विरुतात द्वार द्वार दीन जानत हीं चारि फरु चार ही चनककी ॥ राधा--

मांत पिता जग जाय विधिष्ठ न किल्यो करू माल मलाई। भीक निरादर भाजन ललाई ११ कुकर ट्रक्षन लाग परन्त बचपनहीमें इन्हें किसी चन्छे महासामा सस्तंत

्र और उन्होंका शिष्यत्व मास होनेसे वे राम-रंगमें रंग व्यथा---में पुनि निज गुवसन सुनी कथा सुस्कर केत।

समित नहीं तसि बालपन तब अति रहेउँ अचेत ।। पि करी गुरु बारहिं बारा। समुशि परी कछु मति अनुसारा।। गोस्यामीजीके हृदयमें जैसी गुरुमकि थी, उससे दनके के चलीकिक सद्वयोंका परिचय मिलता है, और : सन्तंगसे गोस्वामीत्रीमें जैसे सदगुक, श्रदा, विश्वास,

, बैराग्य और भक्तिका उदय हुआ, उसले भी कहा ला त है कि गरदेव बोधमय ग्रहरूप ही थे। शोस्वामीजीका नाम-धाहै उनके गुरुजीने रक्ता हो. ा बनके शासनामकी स्टनको सुनकर कोगोंने ही रख । हो-रामधीला था, जिसका बरलेग गोस्वामीजी

मानके साथ किया करने थे. यथा-'शमनेतन नाम है

। राम साहित्री' फिर जिनवपत्रिकामें करते हैं कि 'रामशे । भाग रामशिश राज्यो राम । गोस्वामीत्रीकी श्रपनी मार्म्मिके प्रति कैमी मण्डिथी. ो क्षाचा श्रीरामसन्द्रजीने चयीच्याचा वर्णन करवानेमें

🛭 है, यथा-(मनि सम् पुरी सुरायनि । यहर दिसि बह सर्वे पार्यने ।। रे सब बैक्क्ट बमाना । बेट प्रस्त विदेश कर करा ॥ र सरिस मोटि विष नहीं सीताबद क्रमेन क्री कीट की है।

हैं और वहाँके कोज-किरात, वेजि-विदय, तसकी भी महिमा कहते हैं. इससे उनके चित्रकट-प्रान्तमें जन्म प्रदृष्ण बरनेकी बात अक्तियुक्त मालुम होती है। चित्रकृट बाते समय-कवि अद्धित गति वेष विरागी । मन क्रम व चन राम अनुरानी।

गोस्वामीजी स्वयं जिल भाँति चित्रक्रका वर्णन हाते

—वटका श्रीरामचन्द्रसे मिलना श्रीर फिर बसका प्रव् न होना, श्रीरामचरितमानसमें एक ऐसी विचित्र परना है, जिससे उक्त स्थलको उनकी जन्म-भूमि माननेहे तिये बाध्य होना प्रदशा है।

गोस्वामीजी हे ग्रन्थों के शहलोकन से यह बात रुए मातूम होती है कि पारमीकिक साधनके उपयक्त राजानुसाई होते हुए भी, जोरशसीजीको गृहस्थाधमका पूर चनुप्र था, उन्होंने सवस्य ही गृहंस्य जीवन निवांद्र किया था, चौर उसके मर्मको उनकी अशाम बुद्धिने चण्डीतरह समय लिया था । विनयमें तो वन्होंने स्वयं स्पष्ट शीमार ही किया है---

करिकाई श्रीती अभेत चित भेचरता चीतुनी चान। बीवन अस्र अवती कुषस्य करि मयो त्रिदेश भरे मदम बाब ॥ इरवादि ।.

चरन्तु थेले सहापुरयोंका बहुत दिगीतक गृहशी जालमें फेंसे पड़ा रहना चसम्भव था। निमित्त बारव चां कुछ भी हुचा हो, पर इसमें सम्देह नहीं कि चयमा पार्ट ही दका हुवा वैराग्यका सोता कृट पड़ा, चौर--

यागुर विशव तोराच मनदु मान मृत मान बन, -को चरितार्थं कर रिलकाया ।

गोस्तामीओके शमानन्त्रीय सामग्रीयो (वैशामी) होते के चतुकूल बातेक प्रमाण बाये जाते हैं। इन साम्राप गृहस्य शिल्यको विशक्त होनेमें किमी विशेष संस्थारही धावरवकता नहीं पहती। घरका त्यात देना ही वर्षी सममा जाता है, गृहन्गीडे समयकों 📶 हुई दीवा है वयेष्ट होती है। मानुम होता है कि मोश्रामीकी ने भी देगा ही किया था, वया-

में दुनि नित्र गुरमन गुनी बचा गुन्स के। समृति नहीं हिन बारयन हव भरी हर्दे सबेरा। बूतरे बैरातीयमात्र व्यवना वन्तुन तोष वनशाना है

चौर लोगाईं जी बी बरने हैं --

भीदी अयाने उपलानेटू न मुझे टोग सादिनके भोत गोत होत है मुटामको ।

स्य पर्त करपुत गोप्र हो स्वीतत होता है। विज्ञान-व्यक्तस्य समर्थ सम्बद्धा वेशव सिर्मायमंत्रा है, और भेजर्मीके सार्व-प्रेत्यव होनेसे कोई सम्देद नहीं है। संपेता गोरसामीओकी समर्थ आंवनी भीचे जिसे निमस्ताहक हो कविनोंसे का वाली है, यथा —

बळपने सूचे मन राम सनमुख मवा,

राम नाम देत माँगि खान ट्रब-राक ही । पर्या रोक्टरीतमें पुनीति प्रीति रामराय ,

मोह-बत बैठवी ते।रि तरक तराह हाँ ॥ बैदे सोटे आचरन आचरत अपनायो

अत्रतीकुमार होश्वी रामपानिषाठ हैं। । दुरसी गासाई भया, भीडे दिन भूकि गवी,

ताको करू पावत निदान परिपाक हो।। असन-बसन-दीन विषय विषाद ठीन

देशि दीन दूबरे करें न हाम हाम की । हुउसी अनायसा सनाय रचुनाय किया

दिया फड साँक सिम्बु आपने सुमायको ।। नीच महि मीच पति पाइ मरुआइमा

विहास प्रभु भजन समान मन कामको । विहास प्रभु भजन समान मन कामको । वेदो तन पेवियत थार बरतेश मिस

पृष्टि पृष्टि निकसत होन राम-रायको ॥

ताडु-वेपवारी होनेवर गोश्वामीओने व्ययनी अस्त-वृष वाचीसे रामस्य सरसाना आस्त्रभ किया वीर इनकी भीसा दिगन्तमं प्रसिद्ध हुई। ऐसे भगवज्ञकक करामानी गिम भी कोई व्यारचर्यकी बाल नहीं है, व्यय-टिनकार सही जो कई होड दिखा स्तरस्ट आस्त्र।

भागभाप सही जो कहे होड शिका सरोवह बाम्या । निराम इनका नाम बढ़ा परन्तु महावुरूव सरख होते हैं,

भागी कही-पड़ी सब कह डालते हैं। यथा-

धर घर माँगे टूक पुनि भूषति पूजे पान । ते तुरुसी तब राम बिनु ते अब राम सद्दान ।।

गोस्वामीजी बहुत दिनों सक चयोष्यामें रहे और वहीं रामवरितमानसकी स्चना संबद् १६३१ की रामनवमीको

मारम्म की । इस समय गोस्तामीकीकी प्रियमायका थी । यथा-

•== मस्ड सुमानम् मुचिर थिसाना । हुन्दद सीत श्रीच चाठ _विसना ।।

क्षात्र प्रचारमात्म, इन्दानन, जनकरा, दिमाजन, जिल्ला कारि पीर्थोंको चात्रा भी पत्ते थे शीर हर प्रदास्त्र पत्ते ने भी हरने इन्यांस्ति पाचा जाता है। रामचरित जात्मके निर्मापुर्वे ४३ वर्ष बादाब्य जीवित रहनेते तो यही प्रदासन दोता है कि गीवसानी तोने प्रीप नहीं, तो जात्मु होनेसे कोई एन्वेह ही नहीं हैं।

'शमके गुरामनकी रीति प्रीति सूची सब, सबसी सनेह सबहीकी सनमानिये।

इस पदको योश्नामीजीने कार्यमें परिवान करके दिल्ला दिला है और जानी स्वनाकी फल-श्रुतिमें को

मोस्वामीजीने कहा है कि— गायत नेद पुरान अहदस , छवी शास सब प्रन्यवही रस ,

मुनि जन धन सन्तन की सर्वस , सार अंस सब बिधि सवहीं ही ।। सो विक्तुल ठीक हैं ।

चपनी रचनामें गोरवामीतीने सन्दूर्प राज्येंचा सामजस्य कर दिलावा है, एक वाममार्गदा सामजरप करनेमें गोरवामीजी चसमर्थ रहे। इतना ही नहीं, गोरवामीती वाम-सार्यको शुनि-सम्मत नहीं मानते थे, यथा-

ति शुति पंच नाम पय चार्डी। वंचक विरोध वेश हा पार्डी।। रावश्यके प्रति श्रंगदकी उक्ति है— गोग्यामीत्रीके माता-तिताने हनके बन्म सेने ही-चाहे सभुक्त मूलमें जन्म सेनेके वास्त्याने ही हो-हम्में त्यान दिवा था, चीर ये बहुत दिनोंतक बहुत ही बुनी सबस्यामें सरको किरे थे। यथा-

अभी कुन मंगन सपानी मा सत्रावी मुनि , सभी धीरताप पाप अननी जनवर्की।

मार्था परिवार पार प्राप्त विकास क्षेत्र मारते स्टात विकास द्वार द्वार दीन जानन ही चारि पार चार ही चनककी ॥

तथा—

गाउ पिता जग जाय तश्मी
विधिष्ट ग दिस्त्ये बहु भारत भन्याँ ।
भीच विरादर भाजन बादर
कबर टबन काम टटाई ।।

परम्तु वचपनहीमें इन्हें किसी चच्चे महान्माका सरसंग हुचा, भीर उन्होंका शिष्यत्व मास होनेसे वे समर्नमें रंग गये, वचा---

में पुनि नित्र गुरुतन सुनी कथा सुस्वर खेत । समुक्ति नहीं तक्षि वारत्वन तब अति रहेर्दे अचेत ॥ तद्रिक को गुरु वारहिं बारा। समुक्ति परी कहु मति अनुसारा॥

गोत्यामीओं हे हदयमें जैसी गुरुमिक थी, उससे उनके गुरुजीके खलीदिक सद्गुंगोंका परिवय मिलठा है, और उनके सरसंगते गोरवामीओंमें जैसे सद्गुण, श्रद्धा, विधास, जान, विसाय और मिकका उदय हथा, उससे भी कहा जा

हान, बार क्या के स्वाहत है हिए स्वाहत है थि। गोस्त्रासिजीका नाम-चाहे उनके गुरुसीने स्टब्स हो, प्रधवा उनके शास्त्रासकी स्टब्कके शुरुसत कोगोंने ही रख विचा हो-समसेका चार, जिसका उन्हेल सोशासिजी चिसा हो-समसेका चार, जिसका उन्हेल सोश्सामीजी चिसानके साथ किया करते थे, चवा 'रानरोका नाम है

शुंजान राम साहियों 'फिर वितयपत्रिकामें कहते हैं कि 'रामशे गुजान नाम रामशेल राय्यो राम !' गोस्यामीत्रीकी चपनी सानुसूमिक मित कैसी सक्ति थी, उसकी घाषा धीरामयन्त्रजीसे व्यवीष्याका वर्षीन करवानेमें

शागर्यो है, यथा— मि मम पुरी सुदानि । उत्तर दिसि नद्द सर्वू पानि ॥ व सैपुट्ट नशाना । बेद पुरान विदित जग जाना ॥ (स मीटि प्रिय नहीं सोजगद्द प्रसंग जाने कोठ कोठ । हैं चौर बर्दांडे को बन्धितान, वेलिनिया, नृषाई। भी महिन करते हैं, इसमे उनके चित्रहर-प्रान्तमें अस्म महब कमेर्ड बान सुनियुक्त आनुस होती है। विप्रहट जाने समय— कवि कस्पित विवेच विराह्ति। मन कव बचन राम मनुस्ति। —चटुका श्रीरासचन्द्रमें मिलना चौर किर उसका दृष्ट

गोरमामीजी राज जिल भौति विवाहत्या वर्णन करने

विसमें वक स्थवको उनकी जग्म-मूर्ति माननेके विशे बारण होना पहना है। गोरवासीतीके मन्योंके ध्रवलोकनमें यह बात रख्यादूत होती है कि पारवीकिक साधनके उपलुक्त गाजानुनाके होती हुए भी, गोरदामीजीको गुहस्यायनमा पूरा प्रमुवस् या, उन्होंने धत्वरण ही गुहंस्य बीचन निर्माह किया पा, बीट उसके ममको उनकी सुर्याम पुरिने काणीताह सनक जिया था। विवयमें तो उन्होंने श्रपं स्था होताह

न होता, श्रीरामचरितमानमम् एक ऐमी विचित्र घरना है,

ही किया है—

करिवाई बीती अचेत जित चंचरता चौतुनी चार।

यौदन परर पुतती हुपस्य करि समी त्रिदेश मरे मदन वाय।

इत्यादि 1.

परन्तु ऐसे महापुरगंका बहुत हिनांवक पृह्मीवे बालमें फेंसे पदा रहना स्रसामन था। निमिन कारण करे इस भी हुवा हो, पर हुसमें सन्देह नहीं कि धनगर करे ही रुका हुआ बैरान्यका सोता पूट पदा, भीर--

हो दका हुआ बरायका सामा हुए मान बस, बागुर विषम तीराय मनतु मान मुग मान बस, -को बरितार्थ कर विश्वकाया ।

गोरवामीबीके समाजनीय सम्प्रदेशी (देशारी) होनेके अनुकृष क्रोक प्रमाय पाये जाते हैं। इस सम्प्रापके होनेके अनुकृष क्रोक प्रमाय पाये जाते हैं। इस सम्प्रापके गृहका शिष्यको विश्वक होनेमें किसी दिन्म संस्थापी खावरयकता नहीं पहली। प्रपड़ा त्यारा हेना हो पाये समया जाता है, गृहस्थीके समयको भी हुँ हैं होता है। समया जाता है, गृहस्थीके समयको भी हुँ हैं होता है। समय अपोट होती है। सम्प्रापक होता है कि गोस्मामीनीने भी देगा। प्रमोद होती है। सम्बन्ध

में पुनि निज मुस्सन मुनी कथा सुन्दर से । समुद्रि नहीं तसि महत्यन तब अति रहेउँ अपेता।

समात नहा तस मरूपन पा प्रमुत गोत्र बतनाना है दूसरे बैरागीसमात्र अपना अप्युत गोत्र बतनाना है और गोसाईओं भी कहते हैं— FIRE KIP र्मितः स्वाने बपरातिह स बुद्दी शीम निहर हरते हैं के स्त्रीयके योग सेन होत है मुन्यमको । ने सहारे ल राने बायुन गोत्र की ध्वनिन कीता है। वैद्यान fri et et व राजा वर्ष

म्हानं सार्व सम्बद्धाय देशक देशनियाँका है, की ेर्नरहं सार्व बंग्यव होनेमें कोई सन्देह नहीं है। तितः गोरमानीश्रीकी सन्दूर्ण जीवनी नीचे निर ितरपूरहे हो दक्तिमें का काती है, बया --

A507 the Street ا افد ج हर्न्द्र मुध् सन शाम सनमुग्त सवेह, शम नाम देत भौति सात दृष-टार ही। CP CO कते हें करियमें पूर्व हि बीहि सामस्य . بتدا التر मोह-बस बैटवी लेती तरफ तराह है। 11 - F वेटे हेटे जानरन आचरत अपनायी fir for t ed ala

भवनीहुमार सोव्देश रामधानियाङ हैं। or of the जिले नेताई मरी, मोंडे दिन मूकि नवी, वाडे। एक बावन निदान परिवाह हो।। 45 मन-बहन-दीन विश्वत विश्वद स्थीन 1917 देखि दीन द्वते करे न दाय दाय की। दुने बनायमा सनाय रमुनाब किया 75 दिया कह सीह सिन्धु भावने सुमायकी ।। e e e र्देश होई बीच पति पाइ मरुआहुने। أالم

विहाय प्रमु सकत बचन सन कायशे। देवे वन पेरियत चार मरतीह मिस पृथि पृथि निकसत होन सम-समग्री ॥ केंद्रवेशवारी बानेवर गोरवामीजीने श्रवनी असूत-

4

विश्वीते समास बरसामा भारमा किया और इनकी हैं विश्व प्रति हुई । जेरे भगवहरूका बरामासी हि भी बोई भारवर्गकी बात नहीं है, बया---िक्त हरी जो बहै कीउ दिला सरीवह जामी। ^{विदान} र^{नका नाम बदा परन्तु महापुरण सरस्र होते हैं,} में क्वीनहीं सब कह बालते हैं। बचा-

सदरभीने हुँ दुनि सूबनी यूजे बाय। वेतुम्बेत्व सम बिनु ते अव सम सहाय ॥ ्रेन्सर्माती बहुत दिनों नक सयोध्यामें रहे और वहीं भवनाता बहुत दिनां तक संवाध्याल एव किनेनारपार्ध रचना संवत् १६३१ की रामनुबसीकी

भारम्भ को । इस समय गोस्वामोत्रीकी परिपन्नावस्था थी मरेड मुगानस सुधिर थिराना। मुसद सीड रुनि चारु विराना।। चाप प्रयागशास, कृत्यावन, जनकपुर, हिमालय,

चित्रहर चादि वीधोंकी यात्रा भी करते थे भीर इन सीधाँका वर्षीन भी इनके बन्योंमें पाया नाता है। रामचरित-मानसके निर्माणके ४६ वर्ष बाइतक भीवित रहनेसे सी यही चतुमान होता है कि गोलामीजीके विशेष नहीं, तो यवाल होनेमें कोई सम्देह ही नहीं है।

वचित्र गोरशमीजीके नामसे बहुत-से प्रम्थ देखे. जाते हैं, परन्तु बारह बन्ध तो बोश्वामीजीहारा रचित होतेस सब युक्सत हैं। (१) रामवरितमानस (२) रामलकाः नहरू (३) बैशम्यसंदीपनी (४) बस्यै रामायय (४) पार्वतीसंगल (६) बानकीसंगल (७) रामाणा प्रश (८) दोहाक्सी (१) कवितावली (१०) गीतावक्षी (11) श्रीहत्वागीतावली श्रीर (12) विनयपत्रिका। इन्ही प्रन्यरूपी स्मारकोंने गोस्यामीजीका माम समर कर दिया है। इन अम्बोंको देखनेसे गोस्वामीजीके प्रशाद पावित्रत्य, छोकोत्तर करिन्य, धनन्य रामोपासना, सरवा स्वभाव,निश्रस विश्वास,उम्म बहारमाव भाविका पता चलता

पाली । बहुँतवादी, विशिष्टाईतवादी और हैतवादी सभी सनन करते हैं और किसीको करन्तुद नहीं बोध होता। 'रामके गुरवमनकी रीति प्रीति सभी सब. सबसो सनेह सबहोध्ये सनमानिये। इस परको गोरशमीजीने कार्यमें परियक्त करके दिखता दिया है चौर बानी रचनाकी पल-शृतिमें को गोस्वामीजीने बहा है कि-

है। वे अन्य ऐसे हैं कि इकको चेंग्युव, श्रीव, शाल सभी

सानन्द पहते हैं, और किसी हे हदयपर देस महीं समने

गानत नेद पुरान अष्टदस , सनो शान सब प्रत्यनको रस , मृति जन धन सन्तन है। सर्वस , सार अंस सब विधि सबदी ही ॥ सो विन्स्त टीक है । चक्ती रचनामें शीरवासीजीने सम्पूर्ण शास्त्रीका सामजस्य कर दिलाया है, वृक्ष्माममार्थंदर गः नाः । स्य करनेमें

मोस्त्रामीजी व्यसमर्थं रहे । इतना ही नहीं, गोस्त्रामीजी दाम-सार्वको श्रुति-सम्मत नहीं मानते थे य अ तकि स्ति पंच नाम पय चरही । नजर िया च बेर का बाही।। रावणके प्रति धंगदकी उति हे---

🛭 श्रीरामचन्द्रं शर्णं प्रपद्ये 🕾

जीठ वान सर हरिन विद्वा । अति दरिद्र अस्ती अति नृद्धा ।

भीरत दान समान थे प्राणी ।

गोरतानी जीने छिलल वेदसूलक वार्दोको, व्यक्तिश्री मेदरे ठीक साना है । खदैतवादको गोरवामीजी परम प्रिकारी कि ते हो के सानते हैं, प्रधा—

मोदि परम अधिकारी जानी ।

हरों करन महत उपरिता । अज अदित स्पूण हरनेसा ।।
अहत अमीद अनाय अस्ता । अनुभवगम अस्त अभिगसी ॥
सीते तिहि तादि मेदा । बारि चीचि इस गावहि देदा ।।

धीर कर अस्ति । अस्ति । बारि चीचि इस गावहि देदा ।।
धीर कर अस्ति । अस्ति निर्दे । बारि चीचि इस गावहि देदा ।।
धीर का अस्ति वादि निर्दे । बारि चीचि इस गावहि देदा ।।
धीर का अस्ति कि भाष्मु वैक , कहवाते हैं कि—

भावि वादि हो सानि । अस्त प्रमुक्त वह अनति ।।
भावि वादि सानि । अस्त प्रमुक्त वह अनति ।।

हाती हैं कि 'भक्तिपक्ष इठ करि रहेर्ड दीन्द महामुनि शाप'

यहाँ भी मुद्रायिहजीका हर यहकर सहैतवादकी

3e8

ाकृष्टता दिवलायी है। जानशीच-मकरवाम तो 'संहश्भीत हि कि मकाग' कहकर रहर छाँदेवादका खावन करते हैं। तरन सामान्य जीवके तिये हो नितान्त दुष्टर समस्ते हैं। हमसीति चाँदेवादकों शोधमानीजीने ज्ञानमार्गके माम के कि किया है।
विशिव्हाँत मण्यम खिकारियों के लिये माना है, पाममायावस परिक्षित जड़ की हि हैत सनान ।
सरकर—
संस्क संय जार दिनु भव न तरिव उरागरि ।
हम बाइको गोधमानीजी धरिमार्थके नामने उक्तर हैं। हो स्वरान वादके हैं। सर्वाम वादकों हो करना की र

हम बादको गोरवार्माओं अधिकार्गके नामये उक्त राते हैं। अधिकारीयके अहरवार्में जानकी दुख्यता चौर पित्के सुद्दाताको बहुत राष्ट्र बरके दिन्तवाया है, चौर (मार्गित जानगर भी अधिको अधानता दिन्तवाया है। साव शिद्धान्तीको चादर देने हुए देनका क्षोगोंने अध साव शिद्धान्तीको चादर देने हुए देनका क्षोगोंने अध राष्ट्र होता है कि नार्य गोजनार्माजीका बौतन्या शिद्धान्त ग! और द्वारा बादर्गकाद उत्तिन को जागा है।

शहर मधा पञ्चदेतीशायन शिवा कर्द्रनवादने और करी

न्यव है ?

•••• सामान्य करन में में है।

कवितावक्षीमें गोसाईंगीने कहा है कि भेर रिधन

प्रामाखिक रीतिसे यह भी पता चलता है कि इस सम्पदायके परमा वार्य भगवान शमानन्दनी ज्योतिमंत्रके

बहाचारी थे । बारह वर्षतक गिरनारपर तप करके उन्होंने

सिद्धि प्राप्त की थी। इनके सम्प्रदायमें भजनका प्राप्तन्य

है। इसीसे लोगोंको इनके विशिशहैतानुपायी होनेग

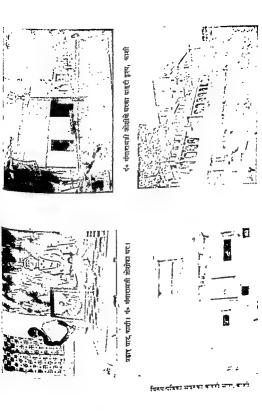
अम हो जाता है । परन्त वस्त-स्थिति ऐसी नहीं है, गहर

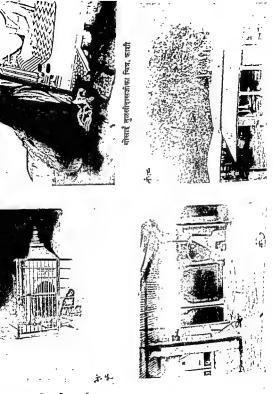
सम्प्रदायवाची भी निरुपान्ति-ज्ञानको (उपासनाहीन)

श्रकिञ्चित्वर मानते हैं। स्वयं नाभाजीने भक्तमालमें भगगर्

गांव मरो मत् ।' इसमें जनका थैशांगी होना तिज्ञ होतां है स्वीर इसिन्य भी कहा है, यथा-'बार इंग्लंग नेव दो साने तन दे वक नावणकी बरनी.' कहाथिय हैशांतरों है वेशो इसिन्येय सीर संन्यासियों के वेशो परामहंस-देशमात हों। गोरवासीभीकी सरस्वता, शाधुना और समनवासंगावे भी येगा स्वार्ट दिया कि सही-कहा दक्का सान-देशम हमा के सर म्यान सीर्थन्य साने तने, सीर वहाँ सीर्ट-स्थाने सर म्यान सीर्थन्य साने तने, सीर वहाँ सीर्ट-स्थाने सर म्यान सीर्थन्य साने तने,

द्वस दिश्यास्यर गाण्यासामा वार्तास्य स्टब्स् वर्षी-स्टाबन सेट्ट्र से समी, असी इंटर्ड ही है स्टाबन स्थाना तीमहा नुगरी की सीमा





६८ ी । मन्दिर,काशो

बाबकलका प्रचलित पाट है कि-

सावन शुक्ता सष्ठभी तुरुक्षी तज्यी सरीर ।

-परन्तु यह पाठ नितान्त चशुद्ध है। अहुरके कई रोहे 'सावन शुद्धा सहसी' परक हैं, यथा—

सावन शहा सप्तमी जो गरजे अधिरात,

सारत हाता सहसी उरव न देखिय मान। इत्यादि प्रता शायन हाता स्त्रमां कोगों के ज्वानपर थी, भी साथन बराना तेल का अर्थ भी जनना सीचा नहीं री। मानव समायते इस पड़के स्थानको भी साथन शहरा पिनीने वलत कर किया।

गोस्तामीश्रीके खजारेका कई दुरतसे सेवक होनेके नाते मैं क्यांची तरह जानता हूँ कि 'सागन रवामा सीन' पाट हो यह दे। गोस्तामीश्रीके ख्यादमें सजा दोश्याकके (विनके पर्याव प्रवासा गोसाईंगीके हाथया विका क्षीमान् क्यांची प्रवास देश सुरित है) वंगव जीवुरी कावजाहुद्

र्मिको यहाँ भी घड़ी तिथि सान्य है। यह दुनकर भी कह होता है कि किमी सहारायने, नामवता दाश्टर सियर्भनके अनुसानका अनुसरण काने इंप्रकरितावतीके पहत्ते कह तिल्ल कानेका अथल किया है कि दस समय काशीमें होग भीता दुआ था। थया-

संबद सहर सर मारि नह बारिक्ट विकल सबल महामारी मान भई है। पर है। कराज करिकानमज मूल तामे, कोडमेंची खाज सी सनी बारि शीनडी।

केंद्रवेधी लाज सी सर्वाची है शैनकी। मतः गोसाईबीको भी द्वेग को गया, फोका हुवा, बहुमें पोक्ष हुई, यथा—

'षायपीर पेरपीर बाहुषीर मुहँपीर जर जर सहरू सरीर पीरमई है।

बहुत-से देवी-देवता सनाये सथे, अब नहीं अध्ये हुए सब यह बहुत कि 'हैं हूं रहें की नहीं बने सी आर्ति गुनिवे' भीर देहान्त हो सवा।

यरीरीका शरीरसे वियोग किसी-च-किमी हेतुमे होता में है, प्रेगका हेतु होना कोई शावर्षकी बाग नहीं है। परन्तु जिस समय काशीमें केन हैन्स या उस समय किताबलीके ही बयुपार मीनकी सनीचरी थी, धीर यदि दोहाबजीकी सहायता ली जाय तो यह भी सिद्ध होता है कि उम समय स्ट्रवीसी भी चल रही थी, यवा--

> अपनी बीसी आपने पुरर्दि रूगापे। हाथ । केहि विधि बिनती विस्वकी करों निस्वके नाथ ॥

भाग भीनकी स्तीवशी भीर रहवीगी दोनों सेवर १६०२ में होससाइ हो जाती है, भीर गोत्याही वा देशयगत संवद १६०० में हुआ, बतः गोत्याही के देशयगतका कारण क्रेंग प्रसादित करने के सिर्वे हुत्त वा गावस करता कि भीनकी स्त्रीवरी तथा नहांसी को भी व यूर्य प्रापे तक सीच की सागा उरवुक नहीं सातृप होता।

वैश-सारटॉर्ड पूजनेत पता चलेगा कि बाहुधीर बाहु-पूजने उटकर देंगांकियों तक जाती है, चौर पनि प्रतास पेरण पैदा करती है, फारच्य बाहुयूक्की और होगांकी घोतक करी के, चौर च ब्रत्तोर का चर्च हुंगांकी गिक्स है, चौर क 'धौंह रही धौंच बने सो आंग नुरंगेर' यह पर ही करिया-कांची साचीन विशिष्ट मिलपा है, चारप्य उनका हैगारे सरवा करी को को करवार साचारी गानेवांची वरोपन-करवार करी को को करवार साचारी गानेवांची वरोपन-

सबसे बदा प्रसाय बहु है कि यदि वस रेगारे गोरवामी मी-का देशवान की गया होता, तो कपुमानगढुरका खनुद्धात रोगकी निवृत्तिके सिथे कपूरि न किया जाना। बहुमानगढुकके खनुदानकी वरितातीने ही वह बात निव् है कि गोरवानी इस रचनाके बसने प्रनी वही वीती विविद्धा हुए।

गोस्यामीओकी लिगावट

गोलासीबीके चयर सुन्दर और युद्ध होते थे। संस्य १६६६ से बनने यक ठेस्टरको बेस्टरोमें संत्रीति विभागते विवे व्यादा हुया शांस्थासीबीने विभागत वर दिया और बने होनों चहीते स्वाद्य साथत अनुन्दार प्रवासा नियागा गया, बसमें हो लोक और बच दोशा गोल्मरीजीने दावधा किया हुवा है। व्यवस्थायों सहाराज देखरियामान्त्रीय बारिसामने बच प्रकारीकी दोरसाव्ये बंगाने वर्षाने

दूसरी लेखरूपमें गोस्वामजीके हायकी लिखी हुई वारुमीकीय रामायण सातों कायड पं॰ राघाकान्त पार्वहेय नवायगंज काशीके यहाँ थी, जिसमेंसे उत्तरकायद इस समय क्रीन्स कालिजकी लाइयेरीयें है, उसमें 'लि॰ तुलसी-दासेन' चन्तमें लिखा हुया है, दो कायड और भी कहीं चले गये, शेप तीन कावड परितजीके यहाँ मीनृद हैं। इस प्रत्यके चलर चौर पञ्चनामेके अचर बिल्कुल एक-से हैं।

इनके चतिरिक गोस्शमीजीके छेसका पता चलता। राजापुरकी प्रति भी बहुत प्राचीन है, पर र श्रवर वैसे मेल नहीं साते जैसे कि प्रानामा और उप वाल्मीकीय रामाययाके ग्रहर मिल जाते हैं

गोखामीजीकी रचना

गोस्तामीजीके उपर्युक्त १२ प्रत्यों हैसे वर्ष ए

गोरुवामीजी लिखित वा॰ रामायण उत्तरकाएडका प्रथम पृष्ठ

जितरम् वनाने नहरियमक्षाक्तमादिरणायने नृतिस्वरूपेण निर्मणेनयणात्ममा १ ट्रानरसम्यासम्यक्तसमानस्य कृतिमानम्यसम्यम्यस्य सम्यम्यस्य सम्यम्यस्य सम्यम् भव्यवान्त्राम् वातिभाष्यार्वायेस्य वित्राहित्यां लायावीयायमग्रायस्य वित्रवस्यायामग्राम् र्मा कार्यात्राम् दियोत्तर्वस्य विश्वारं वार्यात्र्यस्य विश्वारं स्थानिकार्यस्य विश्वारं वार्यात्राम् वार्यात्र क्षांवरित्माव्यवस्थानाविरवाभिवापोगिकातम्वर्धिन्तनभ्यासप्रम्यासप्तिवास्त्राविष्णान्त्रवार्ष्णाने स्थानाराम् स्थापन्य स्थापन्य स्थापना स राघनस्य सिन्दर सार्व स्थापना स स्थरमाय विविद्यानत्मनो।नवावेशस्यवनगाएकवैदसम्भक्ती ग्राप्तिनास्यामायस्यासम्बद्धान्त वरमान वावनगरायुक्तामान्य स्वाचनगर्यास्य चर्चमाना स्थापनायमञ्जलास्यातिहरूमात्रातिहरूमा सम्माचनगर्यायुक्तामान्य स्वाचनगर्यास्य चर्चमाना स्थापनायमञ्जलास्यातिहरूमात्रातिहरूमा हा भावानाम् वर्षाम् वर् नामारम् विभूतिनीरम् नामान्युनीम् वर्षाम् वर्षाम् वर्षाम् वर्षाम् वर्षाम् वर्षाम् वर्षाम् वर्षाम् वर्षाम् वर्षा नामुग अनुव प्रयामीयो प्रवस्ताना क्रिया विश्वस्था विश्वस्था । सन्दर्भ अनुव प्रयामीयो प्रवस्ताना क्रिया विश्वस्था होता हो सम्बद्धि स्वतास्थिता स्वास्था स्वरं स्वतास्थ्रित साविचित्रमास्यक्ष्यस्य स्वाप्तकार्यक्षाः स्वाप्तकार्यकार्यम्यायम् । साविचित्रमास्यक्ष्याः स्वाप्तकार्यक्षयं स्वाप्तकार्यकार्यक्षयः ।

गोस्वामीजी लिपित या॰ रामायण उत्तरकारहका भन्तिम पृष्ठ #

कृतियार् वयथवेताववान्यविभवान्त्रं वसम्बद्धिनतान्य्तीय्याचानान्यस्यायस्यान्त्रेत्ता।। वद्यानन्त्रम्भवाक्ष्यस्य स्थानन्त्रम्भवत्रम्भवत्रम्भवत् स्थानन्त्रम्भवत् स्थानन्त्रम्भवत् स्थानन्त्रम्भवत् स्थ संग्रह्माने तृत्ये प्रतिस्थाने के स्थापने स्थापने स्थापने स्थापने स्थापने स्थापने स्थापने स्थापने स्थापने स्था स्थापने प्रतिस्थापने स्थापने स स्थापने स्थापन

शीमरी मिथिलाडे डिमी पविदन-यशनेमें कोई चीडी है, को गील्यामीबीके हायची किली हुई कही वाली है बालु इस हे दर्शनदा मीभाष्य मुख्डे नहीं बाह हुया ।

थीयो असीहाबादकी समायक भी गोश्वामीश्री है हाय-की जिली हुई कही जानी है, परन्तु विश्वण स्त्रणे बना चत्रा है कि यह बात गलत है

कारम्मरी कल्लनक अमर्बंद रथे हुद है, धीर र विभिन्न समयकी करिनामीके संस्थान है जामींसे भी वरियर्गन हुमा है, मयी भी वरिवर्गन इस रिपवर्धे बद्दिन सुने धना बचा है, सरे आमने बच्चित बडीता, जिनमें इस रिपा कालोंकी बनके प्रदेश महायना मिने। हैं

अप रंगी क्षानिक कर व प्रतिवादी कार्योग व वायणमें विश्ववेष । वव कर व विशेष वन पंगीतन मार्ग

के दर दिवयने आपदा 'मुलनी हुन क्रामीके मुद्द बाददी क्षेत्र' सुर्विह तम दिन मना दे । स्नामानाके वन VICE'S AFT & HIMPISTS

सदा । दिस्स अनीत अपूर्वे स्त्र क्षेत्रक्ष दिवाल है १ ---अलाहर ह

श्रीहनुमान्जीका महत्त्व

(लेखक-श्रीयुन रामचन्द्र श्रीदरबंध टक्को गठारा । २.० ४०)

वनदेव, वयदेव, वय मारतिराया, श्रीमारतीराया।
कारति ओलार्यु तुत्र, सक्तवामृत पाता।।
कारति ओलार्यु तुत्र, सक्तवामृत पाता।।
वद्गानिया।

मीर्राष्ट्रपुत राम, रुक्ते तब पाना ।

य दिन सुम्मे उपर्युक्त मारतीकी श्रम्ति हुई

य दिन सुम्मे उपर्युक्त मारतीकी श्रम्ति हुई

य दिन सीर मिने गीरावाको मुख्याबर हुत जिल्हार

विश्वा मान भी हम्मान्य मिने मिने के स्वाप्त मान सिम्मे कर्मा के स्वाप्त में सामे कर्मा कर्मा मिने प्रमान सिम्मे कर्मा कर्मा मिने स्वाप्त मान सिम्मे स्वाप्त मिने स्वाप्त मिने सिम्मे स्वाप्त मिने सिम्मे सिम्मे

हैगरी तथा चल्लाने बातर-पुरासे बादुरेवनाहे प्रयान्धे रृष हुंचा, वही बाबक हन्सान् नाससे प्रव्यान हुचा। रितान्सी रहांस सेवर चनगरित हुए थे। हनका अन्स चित्र १२ को हुचा।

मिन दिन वर न्यूचे दिशको पहराने बाहाराजें बहै, दिन प्रदेशका था। बह चह माकारामें शांन सी मा उंचे दरागरे, तह सूर्व घटता महे। मह देवना घटते। पर इन्हें सामने दिलीशों पह भी न च्योते। एन्द्रें इत्या कामहार दिवा, जिनसे बहु कंग के काम कीत्यात्की मूर्वित हो वह तित की हम देवें देवता हुने दिन सोवह नित की कामहों के प्रदेश कर किता कामहों के मह देवनामें के

कीश्रमणब्द अस्य वैवन्त्रता परिवाधों होनेश कराव यह देति सजलतागुण भोप-गति नेति मित्रियानी कर दिन नवण भिन्दी साध्यत साराभ बरमा है। वाधे दिन व्यवस्थानिक दानेशे व्यवस्था कि सम्माः मितिन बीतेन, नासभारत, वार्त्यश्रम, वर्षम, वरण, स्थान, स्थान बार्धा वामनिविश्य सादि भिन्दीयों निशास वृद्धि बादे तथा वामनिविश्य सादि भिन्दीयों निशास वृद्धि बादे तथा वन सबसो देवरायेच बरनेतर समेति कारोने नएतृण्यांचे व्यवस्था मिति कारोने नएतृण्यांचे व्यवस्था मिति कारोने नएतृण्यांचे व्यवस्था मिति कारोने नएतृण्यांचे व्यवस्था कारोने वास्त्रा

सीहनुमाह का देगकर हि, मुर्चन्त प्राक्शे गहुर व खाल प्रस्त हार है तथा वह अनकर हि, हान कान होते ही प्रसानिनित्त है। प्रसानां कर उनका क्या वहें। इत साम उक्स शिंग्य वनेते जिले हार्गाहरू सामाहि प्रशिद्धानि कार्यो व्यापन स्थित हरने हनुस्य मुस्तिक्यर सामी, किन्तु वह बेगक न्यांचार हो हर्ग्य

श्रव उपर्युक्त भारतीकी सीमीमा बरते हैं---

ंक्रपट्ट, कर्युड, कर कार्यान राज करने करणे व वायुडे क्राम्य इनका जन्म होतेते वागक कार्य कार्यात कर वायुमुण वहते हैं। इससे कीरतुरादशोधी केस्पर्य कीरत प्रदानकर झानयुक्त भक्तिका बास्त्राद्दन करनेकेलिये 'बास्ती धोवालू'' यह पद दिया गया है।

लंका दहन

'ठहा रूपी बाप केप माजुनियाँ मुद्धि सीता मुद्धि की वि क्षित्रणे 'इस पदसे जड़ादहन तथा सीता-मुद्धि-मधाँव शीहन्ताम्त्रीपी इन ब्रीस्तामाँमें बोबाँके सावस्थी दूर्पका सम्मानस्य लेप नष्ट हो आनेपर विष्णुद्धि-योगासे प्रतिबिक्ष निक्ममें विक्ष जानेपर सन्द्युक्को कुपासे 'तावसावि' बालपका ज्ञान कैसे 'मास होता है, यह यतकाया । इस सीवाका

वर्णन श्रापटे महीदयके यालशामायखर्मे इसप्रकार किया है-

'सीताको चनुकृल करनेके लिये रावसूचे उसे बहुत मनाया, परम्तु सीताने उसकी एक बात भी नहीं सुनी। पश्चात रावणने राजसियोंके पहरेमें रखकर सीतासे छल किया । इसवर भी उसके क्यमें न होनेके कारण उसे एक वर्षकी अवधि दी और उस अवधिके बीतनेपर यदि वह राजी न हुई तो उसे मार डाजनेकी धमकी दी। इस स्वधिमें ग्रंद दो ही मास बाक्षी रह गये थे । सीता वारम्बार श्रीरायका रमरण करती हुई महान् हुसी हो रही थी। उसे श्रम-जन भी भव्या नहीं जगता था। इस दशामें स्वचानक हन्मान्त्रीने चाकर श्रीरामचन्द्रकी दी हुई चंगूठीका स्मृतिचिह्न दे धीराम-जनमण्डे कुरावयुक्त होने चौर शीम ही मान्स उसे छडा ले जानेका समाचार निवेदनकर डाइस दिया। उस समय श्रीजानकीको जो चानन्द शप्त हुचा, उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। उन्होंने हनुमानुको यह बहकर विदा किया 🐧 शीघ्र जाकर भीराम-अपमणको ले शाधो। श्रीहनमानमे बहाँसे जाते समय चशोक-बनको विध्वंस कर दाला । यह समाबार पा राचस दीहे व्यावे, पर उन सबकी भी उन्होंने सार शक्ता। तब रावखने अपने पत्र अवय तथा इन्द्रजीनको भेजा । जिनमें ऋषयको तो इनमानजीने पदाड दिया. पर इन्द्रजीतके चाप स्वयं ही अधीव हो वये ! सब राजय इनके हाय-पर बाँचकर शवनाके समीप क्षे गये। रावधने उन्हें मार दाइनेकी चाजा दी, वरन्तु विमीपखके राजपूर्व सममानेपर उसने उनकी प्रदर्भ विषदे सपेट तेल हासहर थाग लगानेही भाजा हो । रावगुर्की इस भाजाहा पावन होते 🜓 इन्मान्त्री उल्ले और इन्होंने एक घरमें दूमरे घरतर दृदते हुए सारीखद्वाकी जबा दिया। परचान समुद्र पारबर चंगदादि बानशेंसे का निश्चे और

सबके साथ शामचन्द्रजीके समीच गये । श्रीर्त् चिद्धके जिये श्रीसीताजीको बेणोकी दिग्यमणि छ उसे श्रीशामचन्द्रजीको दिश्वजाका सत्र प्रचानत नि काने खेगे। तब श्रीशामको द्याचन हमें हुआ श्री ॥ अध्यन्त मेक्से श्रीकृत्यान्त्रीको हार्तासे ज्ञान

डोगगिरि लाना

श्रीहन्यान्त्रीके द्रोगिति उडा सानेशी क्या शीर्व रामायल्में इसम्बार है---

'सुपेब(रामसैन्यका वानर) श्रोरामको सान्यमा कहता है---

⁴महाराज, खच्मख सरे नहीं हैं, ऐसा है विरवास है। इनका मुख निस्तेज नहीं हुया है। 🕏 करतल पद्म-पद्मके समान शीतल और मुखरपर्र जान प हैं। हरवकी धुकपुकी चल रही है। भासोख्यास र मन्द-मन्द चलता प्रतीत होता है। इस समय परिसंशीरन मिल सके वो मैं इन्हें तरत सबेत कर सकता है तव थीहन्मान्त्री थागे घडकर बोले, 'हे मुरेग सञ्जीवनी कही सिलेगी ? बतायो, में उसे एक प्रवास न्ह्रे चा सकता हूँ।' सुपेशने कहा--'इस हुन्हा कार्यको करनेवाला य ही है, भीर कोई महीं। का, हिमालयपर कैसासके द्विया श्रापर सभीवनी महीपरि है, और वहीं विशवयकत्यी तथा सावर्यकायी नामी कोपधियाँ हैं, उन्हें शीप्रका। यह मुत्रते ही श्रीहन्मान्त्री बद्दे श्रीर घोडे ही समयमें हिमात्रव-वर्तन-पर पहुँच कैसासपर्वतके दक्षिण शहरा प्रोपधि र्राव सगे, पर उन्हें पहचान न सके। फिर पह मोबबर वि लोजनेमें दिशेष बिलम्य 🛍 जायगा, भीरतमार्गी उस सम्दर्ध शहको ही उतार का उसे गेर्बी तार राजी क्षे हिमालयसे उदे चौर शहामें मुपेय हे समीय वनी। मुपेल बोहन्मान्त्रीके इस बहुत प्राव्मको देवका राजी सले डॅगली दबाकर रह गया थीर उनने धनियमने उनकी पीट टॉकी । विधिन् विश्राम काके इन्मान्ने वहा-'[न शक्तपाकी श्रीपधियाँ काप यहचान सीत्रिये, में पहचार मारे सका चौर विसम्ब होनेके मवर्त इन महत्वो ही संने भारा। सुरोएजीने बावस्यक स्रोपधियों बास्य निकास श्रीप्रधान है के शकमें दोवा जिममें वे तत्कात्र सावधान हो दर हैरे।











गरुष्ट-गर्ध-हरण

गरहके मनमें सपने परम पराक्रमी होनेका महाच व या। यह जानकर श्रीविष्यु अगरान्ने चाला री कि हे सुरखे न बदा पुरुपार्थी है, तेरे-बैमा श्मियों तीनों स्रोक्म चौर कौन होगा है सब तू सीध सर्वे बाक्त पुक्क सन्दर पक्क कर स्ता । सू श्राकेला ही पकड़ बरन हा धाने साथ बुद्ध सेना भी लेता जायगा है' यह सुन म गरहवर्षे बावेशमें बाये चौर बन्होंने श्रीहरिसे कहा--में तो गिरते हुए बाकाराको भी कावने बजले धारण कर हिता है, सुने यही बाधर्य मालूम होता है कि बार सुन-वे पात्रमीको बन्दर पकड़ने क्यो भेज रहे हैं ? हे सभासदी ! तो, में सभी धन्दर पकड़ जाता हूँ।' ऐसा कहकर गैहीं बाय-वन्द्रता कर गर्द आकाशमें उद्दे। शीम वित्रमें पहुँचकर उन्होंने देखा कि इन्मान् उनकी चोर हि किरे हुए घेठे हैं और कौतुकसे फल ला रहे हैं; साथ-गिप मुँहसे रामनाम-कीर्तन भी कर रहे हैं। यह देखकर राने बहा-'रे बन्दर | तूने सारा बन नष्टकर दाला ीर सारे वनचरोंको भगा दिया। करे वासर ! तूने तो व इ.स. भी सा दालें। मृथदा धम्यानी है, मैं 8 में दरद मा।' गरुष्की इस बातको सुनकर हन्मान्जीने गुसकरा-र दहा कि -- 'तुम अपना नाम हमें बलाखी। तुन्हें किसने वा है !' गरहने कहा कि 'मेरा प्रख्यार्थ लीनों लोकोंने क्षि है। में करप्यत्मत, श्रीहरिका बूत पविशास गरुड़ । मैंने सब देवताधोंको पशस्त कर धवने पुरुवार्थसे कृत मास किया है। मेरे भयसे बागराज पृथिवीके नीचे विषे हैं।' इसपर हन्मान्ज्ञाने कहा —'जो कपने रहे अपनी प्रशंसा काता है वह सी मूर्खीकी धरेचा विषय भरानी है। यस, बरा, कीर्ति, धर्म, पुरुशर्थ तथा भी पत्म विद्याकी को धपने श्रृहसे प्रशंसा ला है, वह वास्तवमें बैसा गड़ों होता ।' इसपर अरड़ने ^{मुद्}र बहा कि, 'रे बन्दर, मालूम होता है, मरते समय ी तूनी बोजने सर्गा है।' इन्मान्जीने भी वैसा उत्तर दिया, जिसे सुनकर गहदने व्याकाशमें उदकर पैसी प्त गर्जना की कि सकल भाषतन वनचरादि जीव भथभीत वर्षे। तब बदस्मात् गरुड़ इनुमान् अपर कपटा श्रीर चींच स्ति लगा। पर इन्सान्जी जुरा भी न दिखे। पर्वतपर ^{म्द}, बड़े पेडपर मक्ली या हाथीके कन्धेपर चींटीका li भार होता है वैसा ही गरवका आर हन्मान्त्रीको पुम हुमा। एएभर ऐसी लीजा करनेके उपरान्त

हत्यान्त्रीने गरहको शांबाँमें दशा गर्दन पकदकर उठाया, त्रिससे गरुड बदरा गया, उत्पद्धी धांखें निकलने धारी, तद उसको पढदबर इनुसाइटीने समुद्रमे फेंक दिया । श्राहनमानने महदको को हास्कामे केंका तो वह साह महत्त्व योजन दर जाकर समुद्रमें गिरा और छटपटाकर द्विने लगा, फिर सांस रोककर वह पानीसे उत्तर छादा थाँर मनमें कदने लगा कि 'मैंने जो हरिके सामने श्रीधाता किया था. उसका परा फल मिळ शवर। संभारमें कोई विका-सब्से सस्त है तो कोई धनसद्में उन्मत है, पर भगवान जरा भी प्रभिमान बरनेसे उन्हें दरह देते हैं। प्रश गडवजी श्रीहरिका स्मरम करने लगे । उन्होंने कहा-'हे मक्तव-सक्ष ! नाप गुक्रवर क्यों कोप भाते हैं ?' गरुइको विज्ञाभ्रम हो गया, इतनेमैं उसने हारकामा प्रमाश देखा । सब औडरि-क्रम्बाका नाम अपसे हुए वह आकाशमें उदा चौर मनमें सोचने सभा कि 'गरि फिर उसी बनसे जाऊँगा तो वह बन्दर मुक्ते फिर चकड खेगा, धतः वह दूसरे मार्गसे ही जाँदा। किली प्रकार हारकाके महाहारपर चाया क्योर वर्त्त मसित हो तिर पदा । सेवकीने यह समाचार श्रीहरितक पहेंचाया और गरवको भी उठाकर श्रीहरिके चरकोंपर रख दिया। तब श्रीहरिने कुपापूर्वक उसके नेत्रोंमें जल लगाकर उसे सचेत किया ।

भीम गर्ब-गंजन

कथा है कि एक बार छोटे-वहे कपि श्वकी मालियाँ-में देव-दुर्लभ पट्रस भोजन कर रहे थे, इस समय भीमने ब्राह्मचोंसे इसप्रकार स्टोर वचन कहे--'हे ब्राह्मको ! देखो, पात्रमें चाप उठ भी उपित्रष्ट न छोड सकेंगे । यदि ऐसा करेंगे तो में उसे भागकी चोटियोंमें बाँध दूँचा। जितना धापके पेटमें धेंदे उतना मांग ले । थालीय श्राधिक श्रेक्ट छोड़ देना टीक मधी होया। मेरा स्वमाव धाप जोग धप्यो तरह जानते ही है। भीमके भवसे बाह्यच अत्यत्त्र बाहार बरने सने, जिससे वे बेबारे दुवंब हो गये । यह शत श्रीहरि ताह गये और थीमसे बोबे-'तुम शीप्र जाकर गन्धमादनमे ऋषियों हो वजा शासी, उनकी वहीं सावस्थवता है ।' भीमके सबसे श्युने बलका सर्वथा सनः वह तेजीने इन ऋषियोंको लाने चले। सार्गर्मे पूद वानरके बेशमें सहान पर्वनकी सरह अपनी पूँछ मार्गर्वे भड़ाकर हनुमानूजी बैटे से । उनसे भीमने गर्जनर कहा-'रे बानर ! शान्तेमेंने र्वेस इ.स. सुन्ते शीम ऋषित्त्रांत करनेकी सावत्पवना है । इसपर मोहनुमानुनीने नमनापूर्व बदा-'हे





रामायणकालीन भौगोलिक दिगदर्शन

(नेयद क्या के वायव होर वोद एवं, एम गारव वें व, याद सारव ' व गारव)

्य शासको कामाच्या नुवं महाभागाः प्रमानि हेरिहारिक बाराव मीर पुरानी के विदानी में प्रचान कामानि कामानि कामानि हुनिये में विशेषक होने बाता है। गामावम् प्रदामकार्यो हैरिहारिक याच्या सबैक पासाव की सामानि विदानी में के है। हुन्ये भी साम-

रात्रकाको एरिये छीत भीत प्रत्योंके

निना इतरवडी बाजा थिर बदाबर भीशम सीना सरमध्के नाथ वैशाल शका १ की स्थान नवार विश्वा भन्ने । वे सवसे पहले बेह्धति नहीके न भारे। इसमें मैसा प्रनीत होता है कि बस समय न्ता नगरा गरम् अयता प्रापता नदीके दक्षिण तटपर हिंदे थी। सरपूर्व श्रोदण का आर विश्वकी नदी वेद्रभुति ही है जिलका वर्गमान नाम विश्वकी नदी वेद्रभुति ही है जिलका वर्गमान नाम हुई थी। मागुडे द्विल की बीर सबते पहले ना या तमना है। महिंगें नात्रमीकिका आध्रम जिल जाने नदरर था, यह तमना दूसरी थी और गैताके व को धोर बहनी थी। सानना (बेदश्रुति) धीर कींडे मध्यमें दूरशी कोई नदी ही नहीं है। इस समसा विश्वति) चौर मरपुके नटींको महाराज दशरवने मक्टों चौर चैदिक सम्बंसि सुशोशित एवं परित्र किया । काश्चिदामके स्पूर्वस (६।१७) में इसका वर्णन वता है। इससे भी तमगाका 'बेदधृति' होना सिद् वीयुन दोवितने सपने भारतवर्षीय प्राधीन मू-वर्णनर्मे दिनि और तमसाको दी बतलाया है, परम्बहमार मतसे

नह होत - जी । नमनाहे नीम्बर समीर समीरपाने परमुद्द मीत्यम धीमनशीने पदका मुद्दाम क्या या, जीवननीचा नद कपन सनुद्द है। किसी भी मन्यमे हसका कोई क्रांचा नहीं मिलना।

बेहबुरि पार करने हैं याह इंटिकार्स पहले गोमती सिमी, उनाई धानना स्पन्तिक पा बाहिनक पाई नहीं सिमी श्योगती मां चाराक्ष्म सिन्द है है। स्पन्तिक (सई) इन केंद्रसन्तराकी इचिन मीसाहर थी, तो बैधनन मसुने सम्बेद दुव हस्माइन। दिया था। धीरामने सीसामें यही यान करी है।

हुन के कानजर स्तिन्हा के शिवायी थोर थिन होते-योरे भोजनामों को पार करते हुए भीरामका एम गंगा के निक्ट पहुँच, यहाँ मुक्तम महित सभी कोन रायते करते हो । यह प्रदेश सामनामा नियार गुढ़ के पत्ती था। गुढ़की साम्राजनी मंगरेरपुर्धी, जिनसा वर्गमान माम सिमारीर है। यह जीव मामार्थी ३६ मील वायाप्य दिलामें मांसा तकरर बना हुना है। सामार्थ पार्थी क्षारण्य दिलामें मांसा तकरर बना हुना है। सामार्थ पार्थी क्षारण्य दिला संस्ती

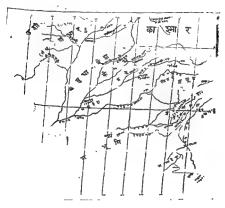
प्रशिक्षपुर्वम साने पूर्वधी स्वीर गंगा बहुनाने संगमरर सार्य । सार्वमें एक बत्त कर निवा (बार १० १० १० १० १० १० १० १० १० शांत-प्रमुक्त है तेत्वले शांत अहारतेश्वा साध्यम का सींद वर्षा स्वाना केव था । वहाँ एक राज हारे सीर वर्षों रवनेकी हृद्या न होनेके कारत अरहार ने उत्तर वहाँ तहीं हृद्या न होनेके कारत अरहार निवास हो तहीं हिन के साथ स्थान के साथ कारते हिन ये पूर्व है। दिन कीरामध्यम्यी स्वाना हो गये । स्वानक सामक साथ बनुनावार कारते कर यह कह बोल सानेस शीक सामन सामक बन मिला । निकट्ट की से दिन हुट वर्ष न स्वाधिनी सामको करी करती हो। हुस विकट्ट वर्षनार हो सीरामने

श्रीसावव्यक्रे वत्रसमन्दे बुदे दिन पुत्रशोक्के कारण ग्रामा द्रमाधका स्वांनाव हो तथा। उस समय भारत-प्रमुक्त वसने निकृति केकर-देशों में। वेकस-प्रेन्ता शास-प्रमुक्त 'श्रीरंजन' भी। देशको विना सन्ताके रणना विपण्डिकक समामकर एत्रपके मन्त्रिमध्यकने ग्राप्य पुरोदित परिण्यों कहा और वशिव्ये भारत-प्रमुक्तों विचा जानेके विवे



कल्याण-

रामायणकालीन भारतवर्ष नं॰ २



मानविषकार-धी धीश्वगश्चीर ।

तूरोंको केवय-देश मेजा (बा॰ रा॰ २१६८।१९)। वस समय केवय-देशमें प्रस्वपति नामक नरपित शासनकरतेथे। प्राचीनकावमें पन्दर्वसमें क्षत्रि गोजोलपन केवय नामक एक राजा हुए ये। वन्हींके नामयर देशका नाम केवय पढ़ गया था। वन राजाका थेंगवुष्ठ कुमकार है—

ययाति मन सभानर कालानस 57 WW पुरं संघ अनमेत्रप महाराष्ट्र महामना (चक्रश्नी) नितिष सूर्य होने वद सुबन गिवि **ब**ग्रह्म कुपर्म सुर्वार महत्व वे बन भुकरा बर्था (मुरेप्या) चाँग बंगे क्षत्रिंग सुद्ध पुषष्ट् चारश वायेव(माम्रम)

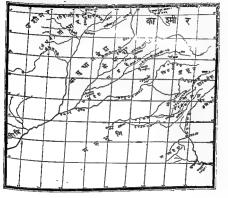
रिनि, इत्तर्म, मुरिन, सह, बेक्च वर्ष थीन, मैंन, बिना, मुझ, पुत्र, कार्य कार्य त्राह्म वर्षी वर्ग, वन रेल्पेंढे कास की क्ली के कार्यमुक्तर वच नवे। (वापू-पराख दशर —12)

राज्यसम्बे सर्वेभाषात्रस्य प्रत्यको सार्वे देविते पूर्व दिस प्राप्ति को स्त्रीत सान्त्र समुग्तिको सेना सेवा

थयोच्यातक किस मार्गसे साथे इसका वर्षन देसने होता है कि वे दत विशासा प्रयांत् चापुनिक स्प शारमजी नदीकी देसते-देसते गरे । पश्चात् विन दमपार वितमा (बेहात या फेलम) मरीडे पार देशकी राजधानी गिरिकत (राजगृह) मित्रती है नाम गिरिवन भी पाया जाता है। समरमानों हे राम गिर्मकरा नाम बदलका सनामदा पदा है। विश पोरमधी सदाई इसी गाँवहे वाग हुई थी। कर्निगर्मने चारने प्राचीन भारतके भगोबमें इम विशेषस्पर्य समीचा-परीचा काके यह निर्णय वि कि गिर्मक गिरिकशका चवधांश है। भीवशिक्षी हुए दूत जारी के कारवा नजरी कहे शारते में ही " मयम बारताल देशके पश्चिमकी बोरमे प्रवर्गरेए हैं बहमेवाली माजिनी नदीने तीरपरमे उत्तरकी भीर गर पश्चिमकी कोर कोटे । प्रलब्ब साजकन्न से महापर वा मंद नाम था। यह गाँव पश्चिम रहेवनशामै रिम बत्तर चाट शीलपर बता हुचा है। मी॰ नग्दर बारकी 'दी उथोद्रापीकल जित्रतकी मात्र १^९र सैडिपुक्य इंडिया' (The Geograph Dictionary of arcient and medieval Ird मामकी युक्तकर्में जिल्ली हैं कि मानिनी नदी परि प्रकाश-पानन सीर नूर्वमें स्वतनात देश है बीवमें वा हुई बलोच्या के जयर १० मी जगर मागू अवन्त वाप मईलें जिल्ली थी । इसके सरार राष्ट्रमानार्थ पात्रक पि क्षत्रचिका चाधम वा । मीतिय साइरवी । व चात्रवत्व जिले लुका नदी कहते हैं, बदी माजिनी नदी है

सरकमार के बून इमिनापुरी संगानदी बार कां पश्चिमकी फोर सुद्दे र इमिनापुर सदावी माराना दुक्तन बीरव पासक्षों हे पूर्वत दूजने रासाने बी की 1 तीन करें हैं गाहि वपूर्व साने हैं कारण हुए साके प्रदेश पश्चिम प्रदर्शन है, वह निज्ञा मारी दिशा सा करना बाल्या प्राप्ताकर्तन वर्णने ने वह पना बना है कि हैं मारा कराय का न कांक्री कर सी नाम नाम करें हैं गोर मारा सा न कांक्री कामक क्या दिश्लेग सार क है ह दिश मासाथ (क्या प्रस्ताक करें हैं हैं हैं मारा करें मारे प्रदर्शन कराय क्या क्या कर सा करें हैं हैं माराना कर से का की है हो है हो माराना करिये हैं हो की हमारान करें हैं हैं हमाराना कर है है हिंदी हमारान कर स्वाप्त करें हैं हमारान कर सा कर है है हमारान कर सा हमारान कर हमारान कर सा हमारान कर सा हमारान कल्याण-

रामायणकालीन भारतवर्ष नं॰ २



मानचित्रकार-श्री थी॰एच॰यदेर ।



पामाज देश उत्तरी चौर दिविशी मानोंमें पीटे विभक्त हुमा होगा, तिनमें उत्तर पामाल वर्षात् रहेलखरडकी राजधानी महिद्दम थी। कुरूबाङ्गळ प्रान्त हम्मिनापुरके राजधानी समित सरहिन्दभागका चरस्य प्रदेश है।

तियानी महिष्य थी। कुरुताहळ प्रान्त हनिनापुरहे गायवर्गी वर्षमान सरहिर्द्धागाच्छा घरच्य प्रदेश है। इत्हेयेम इस कुरुताहळ्या समावेश या पर शीरामण्यके सम्पर्भ इस प्राम्यको इरजञ्जल या उच्छेत नहीं कहते सम्पर्भ इस प्राम्यको इरजञ्जल या उच्छेत नहीं कहते संग्रेग इस्तिन्द दिस्ति वर्षमारे विशास सहास्यपुर निजा है। एवर्द्धा नहीं क्षी-नहीं थी यह मिळ्ल वर्षों विद्याल यास्त्र

तारमाए वे कारिकाल तथा तेजीविक्त गाँव कोर दुवती गरीको शर करते वागे वहे । इसुमती वरीको व्यावक बांधी नहीं करते हैं। यह काजी व (कान्युक्त) के गात गंगांचे तिलारी है। काजी व (कान्युक्त) के गात गंगांचे तिलारी है। काजी वसुबा यह किये विता ही वे बाल्डीक (वशाव) को को अपे अपे इस्त-वर्गक सामस्ति विराशा (ब्लास) गाम कावस्तानी-गरियाँको देखे हुए विशिव्यत गिर्वेश जागार्थ पहुँचे। स्राम-वर्गक बाधुनिक गामका बना नहीं चलता।

भरतके साथ चार्रागियी सेना होने हे बारण उनको क्षेत्र कारण उनको क्षेत्र कारण उनको क्षेत्र कारण उनके कारण उत्तर कारण उनके कारण उत्तर कारण उनके कारण

मात चैत्राय वनमें या वहुँचे और जाये पश्चिमको धोर परिपादों सरकारी नदी मिला। यिवापदा नदीन ठीड-डीच वरता नदीं मिलता। तथारि परावदी (सुरहुदी प्रथम प्रथम) नदीमें उपलब्धे था मिननेताची परुष्या चौर चीरिनधी नदियोंमेले बह एक हो मानको है। सम्मादा निलेडे पूर्व मामका जाम चैत्राय कर रोगा। चामो सुच्छ तथा सीजाननेत्रिको होते हुए पूर्व

वसीत्री गाँवडे पास बा करने सरवती दण्डिको कोर सुदे । कारमीर के उत्तर सारकारमें को सुच्छु और सीवा नामको मदिनों सहती हैं, वे मिन्न हैं । हमारी शब्से दूधी नामको मदिनों कारोत्रीने वाल भी बहती होंगी। हसके वाद भारत वीरामस्य देगाई क्वार्स स्थित प्रदेश में होने हुए आरवाट नामके करनी था पहुँचे इसके सामें काननेपर इसिया करने विरामी नहीं मिला थीर दाहियों नदीओ पार करने भारत यातुगत नदीके पास हा पहुँचे। यहाँ यादुनातींपर कन्होंने केनामहित विद्यान किया। यहान शास करनो उपस्तव संहापन नामक हानके वास गंगाको चार करना स्थासन देश साल मानदार छाये सी बड़ी सामें करने

सबैन्य बंगाको चार किया । इसके प्रमन्तर वे कृटिकोष्टिका

सशीके समीव व्याये (

उस्त्रेस है ।

कृष्टिकोष्टिका कही रासपंतास मिलनेवासी क्योध्या प्रान्तकों कोट नहीं है, यह कोटकृषिका नही दुर्वकी क्योसे रासपंतामें का मिलतों है कीट हुमेश ज दूसरा नाम कीरात्ता हो है, कृष्टिकोष्टिका कही सर्वित्य पार करके पारा पर्यवर्धन गाँवको यथे कीट तोरख प्राप्तके दिल्याकों घोरसे कन्द्रमस्य पार्विको सुचि । इसके बाद बरूप नामक गाँव मिता। इसके वार्व रायवर्धन वेंदान करके भारत पूर्वकों घोर चल्ल कुंधीर अधिकृष्ट करास्त्र गुर्वके। किर साहिकों गर्दास्त्र

ब्रोर श्रमका सथा सर्वतीचे भाराते गांदमें थो हे समय निशास

करके उन्होंने उक्त्या नदोको लाग क्या तद्दानत इतिहाहक वर्गको या चार्केट । यन्त्र इतिहा नदोको लाग करके कि विकास करके कि विकास करके कि विकास कर कि विकास

वहन्तवह सहत श्रीसामन्दरीनार्थं बहुर्गरिप्दी सेका-सहित निकले। उनके साथ कैदेशी, गुनिवा स्वार्थ निगयानी यो। जिल सार्यांचे श्रीसामप्दर्श विकादर पहुँचे थे, वर्मा सार्यांचे साल की विकादर-तिरिक्त सामस्वद्दी पर्पर्देशिया गये। विकादर-तिरिक्त सार्वाज-भाग्या कर्योद् प्रयाप्ये १३ योजन वर्षाम्च २६०२१ सीवयर सा। श्री. प्रार्थ, र्य ४८६ 🐞 श्रीरामचन्द्रं शरणं प्रपद्ये 🕏

हस पहाइमें यद्भानी गोही हुई हमारतें हैं। चारा,
धीरामके दर्गन कर गुक्रनेवर श्रीसमकी चाजासे भरत
सयोच्या सीरकर वन्तियानमें रहने बने। इचर जव
धीरामत्री विश्वहरूपर चास कर रहे थे, तक वर नामक
पायसकी नानपुर कर वापरिवयों को भागने चीर सानोको
रोकायत उनके पास खायी। चाराय उरक्का नाम कर्मके
जेये धीरामचन्द्रजी चारि-चाधमकी चीर चल पहें। इससे
तथ धीरामचन्द्रजी चारि-चाधमकी चीर चल पहें। इससे
तथ है कि चारिमुनिका चाधम वन-मदेरामें चा। वनमें
विश्व कार्यक्र वर्ष साना इसके
सेवाका नाम जब चीर माताका शतद्दा चा। विश्वचित्र
वाहीको कारकर राम-चक्सवाने नसे चरान किया चीर
वाहको कारकर राम-चक्सवाने नसे चरान किया चीर

विराधकी समाधिसे प्रतापी शरमंग मुनिका धाशम

-२० मोद्धपर होगा। श्रोराम सीता चौर खच्मण सहिस

स बाधमकी कोर पधारे । मार्गमें रामने खक्मवको

न्द्र-रथ विलक्षाया। सापश्चात् शरभंग ऋषिले मिलकर

नकी धाजासे राम सुतीषण मुनिके बाधमकी भोर जानेके

त्ये रवामा हुए। इसके पूर्वही शरभंग ऋषिने रामके

मद्र श्रप्ति-प्रवेशके द्वारा देहरवाग करके स्वर्ग प्राप्त किया ।

याजकल इसका माम कामनानाधिगरि हो गया है।

वित्रकृतके उत्तरकी अवन्यकायर जो एक चौकोन शिला है

पर्दी सीतामेत है (या॰ श॰ २। ६६)। यह स्थान

त्री. चाई. पी. के बदौसा स्टेशनके समीप ही दविवारों है।

तीचण मुनिका जाधम मन्दाकिनी नदीके उहामकी
रि था।
उपर्धुंक वर्षण्टेक खनुसार विशायकी समाधि, शरभंग
निका चाधम तथा सुतीचण मुनिके खाशमका वर्षमान
है प्रश्वेतलयक वेषा रियासतमें होना १९४ मक्ट होता है।
सुतीचण मुनिने रामसे कहा,—'हे रास! वावमरलॉके
गट समुदायके नाय चारके होने हुए भी चनावॉकी वरह
पर उसका चारकार पात करते हैं इसकिये खाय उनका
एवण करें।' सीरामने सुतीचण मुनिके खाधमके मार्गमें

पेरके समान एक उँचापर्वत देखा (वा॰ रा॰ ३।७)।

नेका चाधम एक घोर वनमें था। इस वनको दवडकारववका

तर भाग मान खेनेमें कोई चापचि नहीं है।

उसमें पास करनेवाजे ऋषियोंने झाझम-इर्सनाथं दिरा हुए । मार्गोमें उन तीनाने म बर्मामीलका एक महत् सरोवार देखा । जल मरोवाले माण्य भागमे मुश्तर गावन्ते भावाज चाती थीं। धर्ममूल माण्य प्रिनित रामचन्द्रमें क्रा कि "यह सरीवार मायडकची मुनिते दस हजार वर्ष थीर सप्यायां करके निर्माण क्या है चीर हसका नाम पजासर मरोवार है पूर्व यह सार्थकालिक है।"

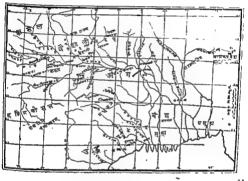
सद्नन्तर श्रीरामचन्द्रजी समग्र द्रण्डकारण्य तथा

भौगोजिक कोच पृष्ठ ६४ में जिसते हैं कि, मौरा नागुरहें
माध्यक्षिक रियासत उद्युद्ध नामक स्थानते वह सरीवर
या । इस सरोवर आपिकार सूल गणा है और वह,
कुर, व्यावचुर सादि गाँव कम में है। इस प्रशासत सीवें
भारत्यक स्पेत मुनिर्योक्षे भारत्य से । श्री गामक्यूमी
सब शासमाँ योक्षे योक्षे सामत्यक रहे। क्षा रामाया सीवें
भारति की कार्य महीं नाम तक रहे। क्षा रामाया
साहीने, चीर कहीं साल दो साजसे भी क्षित्र रहे।
इसमकार भीरामके इस वर्ष मुनिर्योक्ष भारतामें है जुले सीते।
सब रामकार फिर सुनीर्याम मुनिर्य भारताम के क्षार्य कार्य
स्वाव किया। सुरीर्य मुनिर्य सामस्य मिनकों भी
प्रशास किया। सुरीर्य मुनिर्य सामस्य मुनिर भीरामाया
स्थान किया। सुरीर्य मुनिर्य सामस्य सिन्द भीरा
भारयान किया। सुरीर्य मुनिर्य सामस्य सिन्द भीरा
सार योजनपर सामस्य क्षित्र के सामस्य सिन्द भीरा
सार योजनपर सामस्य क्षित्र के सामस्य सिन्द भीरा

वास्त्रवा सित कारस्य क्षिणिक काकानुसार प्रवासी क्षीर रहनेके विषे रवाना हुए। वह प्रदेश कारस्याकरों हो थो अनक क्षान्तरस्य था। हुए प्रदेश रामस्याकरों हो थो। अनक क्षान्तरस्य था। हुए प्रदेश रामस्याकर वारस्य होना था। प्रवासी लाटे कुछ कीताओं एक सहाकाय गीव पणीसे मेंट हुई। वतन्तर वे तीनों प्रवासी पहुँचे। हस प्रदेशका वर्षोन वान राव १।। र में ई। इनके साथ करानु भी था। प्रवासीने पर्वशाना वर्षान वर्णोन विष्या वर्षान वर्षोन वर्षोना वर्षान वर्षोने प्रवासी करानी वर्षोना वर्षोना करानिय क्षानिय क्षा

कल्याण

रामायणकालीन भारतवर्षे नं•३



मानविश्वकार—धी यी•एव•वर्डर ।



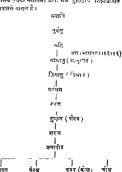
प्रस्तरह

इसपर वह खर-दूपण्डे पास जाकर उन्हें धीरामने युद्ध सनेडे विये प्रोत्साहित कर अपने साथ ले आयी । चौदह श्वार सेना जेकर सर श्वीर शुपण जनस्वानसे च**जे** । म्स-रूपण रावण-राज्यके सीमा-रचक थे (था०रा०३।३१)। म्हा शक्क श्रोरामने उन चौदह इनार राजसोंसहित सर, रुष, विशिता सादिका स्थामें कथ कर दाला । उपयुक्त खरटो, जनस्थान चादि प्रदेशोंका अभी तक सम्तोपजनक निर्धंय नहीं हुझा है। बहुत-से विद्वानोंके मतानुसार वनस्थात धीर यश्चवदी वर्तमान बनवई मान्तके नासिक गहरके समीप गोदावरी नदीके उद्रम स्थानके पास ये : िन्तु कुछ विद्वानों के सतानुसार प्राचीन समयमें गोदावरी रहिंदे मुखके समीप उसके उत्तर-इचिया सटपर स्थित धान्त्र प्रान्तके एक विभागका नाम जनस्थान था । पात्रींटर वरने 'Ancient Indian Historical Tradition' गमद पुसद्दे पृष्ठ २०८ में लिखते हैं:—

Rama travelled south to Prayaga then outhwest to the region of भोषाल, then ⁸⁰ath across the नमेश and then to a district here he dwelt ten years. That was Probably the इसीसगढ़ district, because that sas called the विषय कोसल and in it was a till called रामगिरि. His long stay then nnected it with his home wing, hence robably arose its name. Also later the People of पूर्व कोसल part of old कोसल through ear of and migrated to the south no oubt to this district. | Vide J. R. A. S. 1908 P. 323 & Mahabharat 2-13-591. ficrwards he went south to the middle streit where he came into conflict ith the राजस colony of अनस्थान.

भौरामधन्द्रके कासमें दक्षिण आस्तर्में सभ्य वर्षात् ^{त्रं} सोगोंकी भावारी केवस जनस्थान भीर किप्किन्धार्मे ी । दस समय पायहय स्रोगोंकी चाबादी वहीं थीं । दसी धार कोख (दुल्य), चील, बेरल कादिको भी कावादी रों था। यह पार्जीटर साहबका भन है । इससे दम रमन मही है क्योंकि समाति राजाके चाँच पुनीसे नुवंतु

नानक एथको बंशावली पागः सब प्रसारोपि विक्रविधित प्रशासी वासन है।



तेवी जनपदाः कन्याः पाण्याधे नाः सकेरण । (बन्दुराम ९० । ६)

सर्थात् इत राजपुत्रोंने धति प्राचीन वासमें रिपिय आरमर्जे अपने नामपर पावादी कायम की भी 1 मी। बन्दवाब देके बनुसार चौरहाबाद समया देशिती (दीववाबाद) के समीपश्रमी प्रदेशका शम बनग्यान था। इस अनवी न आनवेडे निप्रतिनित बारण है---

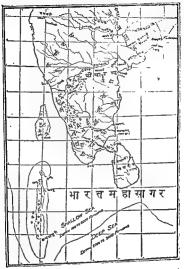
(१) 'बानपं-रायव' के कर्णा गुरारीका काप शाखिबाइनका ७ वाँ शब है । उसने बाने नारकहे चीबे श्रीर वीववें श्रशीमें वाध्यमक वर्षाको जनग्यानके काम ही वनताया है। ऋष्यमुक विश्विष्या द्विगम तुत्र महा महो के द्वित सटपर थे, ऐसा 'प्रमणनादय'-बाटवया सबदेव कविने राष्ट्र बनावाचा है । अपरेत कवि गाविधारमधी तेरहवीं शताब्दिमें की गवे हैं । इसीमधार वाजियारण्य बादवी समान्दिने इत् बाधशकायपति वर्ण रक्ष्मेनर कविका भी वही सम है।

(२) 'हनारामचरिन'कार प्रसिद्ध कवि धरम्निके 'सहाबीतवारितम्' बाह्य व से भी बिमबिनित पारे स्वरूप प्रवट होती है -

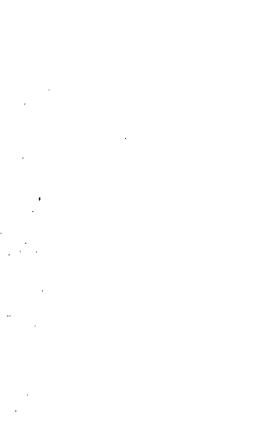


कल्याण 🗢

रामायणकालीन भारतवर्ष नं ४



द्धिण मारत भीर लंका (सक्त (क्वार के के क्षक करेर)



भीर सोवराँकी पार करता हुवा सहिटसे निकल गया। वह तिमि मामक सस्य चौर नकोंके तथा वरणके अवय निवासस्थान-सागरको खाँगता हुवा चला। (बा० रा० ११४॥४-८)

सरवभारतमें रीवी मान्तके प्रचिक्यमें सी शीकके छन्दर हो बहा भी, ऐसा खान्नदर्भक दिन करने काले महानुक्तानों ने स्वाचनिक्य स्थानकारी निव्यक्ति स्थानकारी निव्यक्ति स्थानकारी निव्यक्ति स्थानकार के साम्यक्षाम्तर्भने को, एक वड़ा इच्छक प्रचानकार के साम्यक्षीक स्वत्र मान्यक्षीक साम्यक्षीक स्वत्र हो साम्यक्षीक स्वत्र हो साम्यक्षीक स्वत्र हो साम्यक्षीक स्वत्र हो साम्यक्षीक स्वत्र कार्याकि सीम्यक्षित साम्यक्षित साम्यक्यक्षित साम्यक्षित साम्यक्यक्षित साम्यक्षित साम्यक्षित

भरतु, परासरके समीय ही यश्या गरी बहती थी । वैद्याती मिलेका हमी खेल ही पाण है जीर क्या गरी कर वैद्याती मिलेका हमी खेल ही पाण है जीर क्या गरी कर वेदें हैं। जितानकार का जियानकार कर कियानकार का मिलानकार का मिलानकार में देखा में के स्वानकार "हर" के क्याचीय करतेकी परिसारी है, वर्ती महार कमाड़ी आपामी "व" के स्वानकार हमें आपामी "व" के स्वानकार हमें आपामी स्वानकार हमें हमें सहस्त है।

मोरानने एक बसन्त ऋतु क्रप्यान्त्र वर्षतार विशेषी। स्मित्र क्रिया हुर्समन्त्रीको अस्त्राको उनकी प्रधीको साव देती हुई। बातिके भयसे मुग्नेक सारक्षात वर्षत्रपर राता या, चीर सावि विकित्रण नामानि रहता था। चाति हस्ता बस्त्रान् या क्रिया स्मुद्रमंत्री उठकर क्रियम स्मुद्रसं सूर्ष समुद्रसक्त साव प्रधिय समुद्रसं उठकर समुद्र-वक प्रतिदेश चरदा क्रमा चाराव स्ट्राला था।

सुर्धिका बार्स बरवेड लिये राजकम्प्रतिने जाणग्रवशे विशिष्टमा जानेका निक्षण किया ! सहसन्यमिके प्राथसते विशिष्टमा दिलेष दुरिय हो। सहसन्यमिके प्राथसते विशिष्टमा दिलेष दुरिय हो। सहसन्य मुनिक्ष प्राथम तथा सहसारार होएं एक हो महेरामे ये । बहेरीन प्राथम एवंड करोट हो होना चारिने । छोरसमी क्रम एंडने मुनीक्डो साथ बेटर तथा करना मण्यक अनुव पेटर राजा हुए । उनके साथ हरनान, मज, नोज फोर पार साथक धार-यानर भो थे। मार्गिने निजंब भीरवारिनी पर साथक धार-यानर भो थे। मार्गिने निजंब भीरवारिनी पर साथक धार-यानर भो थे। मार्गिन निजंब मार्गिन स्थानिन पर साथक धार-यानर भो थे। मार्गिन निजंब भीरवारिन पर साथक आध्योजन करने उन्हें निज्ञा । उन्हों करों पर साथक अपने पर्याचन करने थे। हुनके बकार माजिन्युर्वतका पुर ्का सी सीएमाई कुमाने साहित्य कर मुख्य । बांग्यो सामीए सीसावन कुक नदीके सीस्टर जमाजाता अन्यत्र कराया । ति सम्ब बहु नत्त्र बाधुनेक नुरक्षण है। यो । बांग्या दहन जिन किसाव किसावार्य जा, वर मान कावस्त्र भा नेग्रोके मिळला है।

व्यापन स्वीतार स्वापन क्षापन क्षापन

वण्युं क वयां में दिव्यापा-मार्गावा क्रिक्स वां में समित की मार्गिक मार्गिक मार्गिक मार्गिक मार्गिक विकास वर्गिक विकास वर्गिक विकास वर्गिक का मार्गिक कि मार्गिक का वर्गिक कि मार्गिक कि म

'पृत्र विद्वार्गम सन है कि (1) विशिव्यम विकार संबंध कर्मा में से प्रकार में में स्वार्ध में क्षित्र में से क्षार्ध में साम में स्वार्ध में से क्षार्ध में सिंग्य में में से क्षार्ध में क्षार्थ में में क्षार्थ में क्षार्य में क्षार्थ में क्ष

थनागोंदी (किश्विन्छा) है और मार्गमें चक्तीर्थ है। विरूपाच-चेत्रकी सीमाके बन्दर किष्किन्छा, पम्पासर, मारुयवान-पर्व'त, ऋष्यमुक-पर्व'त, इन सबका समावेश हो जाता है। श्रञ्जनी पर्वंत भी करीय ही है। श्रनागों दीसे वालिकी गुहा १ ॥ मी लपर है । प्रश्नवश्च पर्वत माञ्यवान पर्वतसे सटा हथा ही था। जयदेव कविका ऋभिपाय भी ऐसा ही है। 'प्रसन्नराधव' नाटकके वर्णनसे **ऋ**ष्यमूक-पर्वत श्रीर किष्किन्याका मुहभदा नदीके दश्चियामें होना संश्यातीत है। बासरामायख-कार कवि राजरोसर (शक ८००-६००) थे रामननवासका बहुत ही ध्यवस्थित वर्णन किया है। उससे भी किष्किम्बाका निःसन्देह सञ्चमज्ञाके समीप होना ही प्रमाखित होता है। प्रसिद्ध कवि सवभतिका पेसा स्पष्ट श्रामिपाय सिसवा है कि किष्किन्छ। नगरी विन्ध्य-पत्र है और गोटावरी मदीके दक्षिण्में बहत दरथी।

जैन-कवि विमलस्रिका भी यही मत है कि द्वाउकारस्यके धारनेयमें समुद्रके पास तथा कर्णरवा-नदीके दक्षिणमें बहुत दर जनस्थान था चौर कर्यरया-नदी नर्मदा तथा तासी नदियाँके

द्विणमें थी, चीर किष्फम्भा उसके भी द्विणमें थी। बराइमिहिरकी बृहरसंहितामें वर्णित भवर्णनमें आप्नेब देशोंकी सुधीमें किष्किन्धा देशका भाग दिया हुआ है। पर उससे टीक निश्चय नहीं हो सदना ।

महाभारत (सभापवं) में दक्षिण्डे देशोंकी सुचीमें विष्किन्धाका नाम साया है । सतः विष्किन्धा-नगरी तुइभदाके तर बाग्तमें थी, यह बात सिद्ध होती है। मो॰ हायमन भी विष्यन्याको दक्षिण भारतके मैसर

राज्यमें धनलाते हैं। (Classical Dictionary of Hindu Mythology, Geography etc. Page 159) इसी प्रचार सीतान्येपत्रके विषे थीतम वस्मच अर

द्षिणकी कोर चन्ने तब मार्गर्मे उन्हें पविश्रेष्ट, मरकीन्मुख बल्य मिसा। उसने राश्यका काकारमार्गसे सीनाकी हविक्की स्रोत से जानेका समाचार शीरामसे निवेदन किया । बरायको सम्येष्टि विया सीरामने स्वयं सम्पन्न की । जिस धानपर बहु घटना हुई वह स्थान सामकन्त अदास-प्रास्तके गरदर-विश्वेमें विनुश्रींडा-प्राप्तके समीव कुछ पहाडीयर रतकापा व्यक्ता है । विनुकों हाका कर्ष 'समाचार मिळनेका पार' है। (Provincial Geographics of India, ladras Presidency, Page 2:0.) आगे आंगम रीक्षणस्यमें सर्वेषे जिसका बर्चन क्षत्रर दिया जा नुका है।

विस्तार-भयसे यहाँके समस्त भूगोल-वर्णनका वि विचार यहाँ करनेकी हमारी इच्छा नहीं है। ग्रन्य वि बेखमें इसपर विचार किया हा सकता है। श्रला।

सुमीनकी चाजासे गये हुए बानर बीरॉको एक मा अन्दर खोज करके सीट बानेकी विरोप बाहा थी। तय राम-बदमय प्रस्रवय-गिरियर ही वास करते थे । सीता खोजमें गये हुए वानर वीरोंमें हुनुमान्हें सिवा धीर किसी विशेष वर्षंन रामायकमें नहीं मिलता। बहुद तथा तार खेकर इन्यान्त्री चले थे वे दूर जाकर विन्य-पर्वत हूँ रने ह वहाँ करातुनायके ऋषिसे अवकी भेंट हुई। ईंद हुँदवर धन आ पर वे वानर विरुध पर्वतके मैक्स्पमें शाये । उन्हें श ऋचविल नामकी अचग्द गुहा मिली । उस विवा मेरसावर्थिकी स्वयंत्रमा नाती कन्या, को हैमा बप्सा स्थानकी रचा कर रही थी, उन्हें मिली। यह बातररीर प्र उस गुकामें थे, तभी उन्हें मिला हुचा एक मासवा सम्ब समाप्त हो गया, जिससे सब वानर बहुत ही धरहा गरे। सब इस स्वयंत्रमाने अपने योगयवासे सब बानरीको उप विवरके बाहर विरुप्य-पर्वतकी वपन्यकापर पहुँचा दिया। चत्रदने कहा कि चारियन(चरवयुत्र) महीनेकी चर्राध समाप्त हो गयी ((वा॰ रा॰ ४/१३/३)

मागे इनुमान्के मुलसे यह बाग्य निकाते हैं वि ⁴राज्ञा सुमीयको बाह्या के बारण सीताका पता सामने विना जब बहाँसे सौट जानेपर हमारी बान माना निर्मित ही है तो हम यहीं परित्र समुद्र-नीरपर चन्न-मन्न त्यान करके क्यों न माण दे दें ।' (बा॰ श॰ ४।५६।६०)

ब्रमपर सब बानर धनशन बरनेडे निधपसे सर्व हैं। शये, तव जरायुका बखवान् माई सावानि वहाँ चाना और बानररूपी प्राप्ते भव्यको देशकर वहा श्रमछ हुआ। ग बक्रवंडे सुलमे बरायुका किल्मा सुनने ही क्^{मा}नाए सुननेकी उसे मधन इच्छा हुई । भारूरने उससे मरागुर्थि त्या कुछ रामच्दानी शुनायी । इगयर उपने शीताका इनाम तथा राजवादी सञ्जाका बुनारत बावरोंने निवेत्व दिया --

इता हीने समुद्रान सम्पूरी शतकारने। वन्त्रिह्याची समानिर्दिश विद्यस्त्रीण । (40 40 41 45 1 48)

-- चौर बञ्चाये राज्या है चाना पुरमें मीता है रहते हा मान बनलावा । काकुमानी विज्ञाई बोगमें वर भी केन्नाने बुरका दरव भी देल सकता था और प्रती रिवाने वाम

िय रिष्टे कारण यह पता उसने बतलाया या। पञ्चात् समातिके निवेदन करनेपर वानर उसे समुद्रवटपर खे जाये, धौर वह सुवारवें पधौसे उसे जो संवाद प्राप्त हुच्चा या उसे करने सरा —

'मुत्रार्थं महेन्द्र-वर्तका हार अवस्द्र करके सपने मानेपारी जब प्रेस प्रा तव नश्च सीवाको से जा हार या और तब्बच किरिशिताके सामान करने करे जाने रिया ।' तहनन्तर करायुके नामान स्मृत-तरहर तर्येख माने मानाने जब किर परेत्रर का होता, तब उत्तरे कहा— "या हिप्या मानुक तर्या किर-पर्यक है, बार्ड पर एक किरायत क्रांचि मामान तत्रवार्थं काने से, बच्चे रस्ते किरायते क्रेस्थार मात्र इनार वर्य मेंने हार पर्यवस्य निवायो ।'

सरातीको इस शासकार्यके करते ही पद्ध जा जानेका स्वान मिका हुणा था। चतः जानरीते सीता-समाचार कृतेही उसकेपञ्च फिर धा गये तब वे सब दक्षिण समुद्रके कर तीरपर जाकर रुक्षे।

उपर्युक्त वर्णनसे यह स्पष्ट है कि आरतकी दक्षिण मीमापर जो पर्यंत था उसका नाम विन्ध्याहि था । नर्मदा ब्दीके उत्ताका विम्ध्यादि उत्तरविश्यादि है। शहदका वह दल भौर सम्पासी कुमारी-चन्तरीपके प्रदेशमें उहरे थे. देसा वाल्मीकीय रामाचयासे स्पष्ट होता है। महेन्द्र-पर तके शिलरपर चढकर इन्मान्त्रे सौ योजन विस्तीर्यं देय समुद्रको काँघनेकी तैयारी की। वह प्राणवायुकी इत्यमें निरुद्ध करके उन्ने और प्रचयडरूप धारण करके भाकासमार्गते भाने लगे । उस समय समुद्रपर जो उनकी पादा पत्ती, वह दल योजन चौदी सथा शीस योजन लग्दी थी। (वा॰ रा॰ १।१।७४) हनूमान्त्री जन आकाशमार्गसे प्राच कर रहे थे. तब इवशकुतकाधिवति सगर राजाके शास वताये प्रथ समुद्रने उसी इलमें उत्थव रामको सहायता करनेका उत्कृष्ट विचार किया। सब उसने खपने वश्में चारहादित सुवर्णमय पर्वनश्रेष्ठ सैनावको इन्मान्की सहायता करनेके लिये उदकते बाहर धानेको कहा। षत्रातक मेनाक-वर्षतके बाहर निकलनेके कारण हनुमान्को वह एक विश प्रतीत हवा और इनुमानने अपने वचःस्थलके पक्षेपे उसे नीचे गिरा दिया ।

तप्रशार् सुरसा नाशी नागमाकाके मुखर्मे वाकर काुष्ट-शव देहसे बाहर निकजकर तथा उसके गर्वको मिशकर देरसान् सारो बढ़े तब उन्हें सिहिका राषसी मिली जिमने वनकी झामा परुव जी। तण्डमुस्नान्ने गण्या शरीर जनशा चौर किन दोख राज चारक करके वे उसके शुरामें गये चौर शुँद काड्रकर निकल कार्य । प्रशास---

प्रदर्भ ते पतनेन निनेषद्वमन्भितम।

हीषं शाक्षमुनश्रका मरुवंतपालानि च।। (तारु गरु के १११२४) -ब्याचारासार्वमि तकते हुए इन्यानने सी पालनकी

चन्तमें एक वनवंकि देखी धीर शामा प्रकारके बुड़ोंसे सुरोभित हीपधीर उसमें उपवन देते। इसके शह नहियां के अस भी देते। सहनत्तर हनमान हातीर छोटा करके उस हीपके जिल्लासब-पहासके क्षम्य नामी जिल्लापर बतरे धौर बडाँसे सदा-नगरीका निरीक्त क्या । गण्यास सीतादेवीके दर्शनकर इनमानने उनसे शम-उत्काशका सारा बसान्त निवेदन किया चौर उनको चाधायन विषा। बीरामचन्द्रके लिये सीताका सन्देश तथा भिजनका चिद्व (सहदानी) खेकर हनूमान् वहाँसे लीटे। जीटती बार राक्स-धोरोंको चयने बाहबलना यथेच्छ पराक्रम दिगलाकर वीचमें शरिष्ट नामके एक श्रेष्ट पर्वनपर शास्त्र हुए (बा॰ रा॰ शश्रदारश)। वह पर्वत ४० कोस (६० मील) चौरा तथा १२० कोस (२४० भीख) देवा था। यहाँसे उपने हे तिये प्रचरहरूप चारवकर हनुमान् **भाकाशरूपी समुद्रमें** तैरने सते और कुछ समयके बाद महेन्द्र-पर्वतके बस शिमापर क्या पहेंचे जहाँ जाम्बदम्स, छङ्गदादि बानर थे और वहाँ बनको कक्काका सब हाल सुवाया। वहाँसे शम-वराँनार्थ वर्षे क्रीर सदीवके संरवित अध्यम नामक वनमें चा पहेंचे। बहाँसे प्रसवक-विरियर जावर इनुमानने सीताकी स्रोत एवं क्षद्रावहन स्राद्धि सब समाचार रामचन्द्रमे निवेदन किये तथा क्षीता हेबी हा दिया हथा चिद्व देवर उनका बुलाग्त कहा । इसके प्रधात राम-रायण युद्ध हुआ और उसमें रावणका बच करके श्रीरामने सीनाको एका जिया ।

शसायलमें को और भी भौगोजिक कुणान मिटना है, उसे हो सका तो सुनरे क्षेत्रमें देनेका विचार करके क्षम क्षम क्षेत्रको समास करने हैं व

रामायणकालीन स्थान-परिचय

(केराह श्रीयुन बीक पनक बेटर बीक प्रकृष्ट-पनक बीक, प्रस्व आरव प्रवण्यक)

अग्रसाधम-यह चाधम रोहिया-पर्वतपर नियत है। इ प्री-पिश्मी पारोंडे मीचे वृदिया-भागमें कार्यमा-तिते मीचे रियत है। यह पृथितित्वसे ६२०० फीट चा मुख्यकार पर्वतप्रकृष्टि। चालयजी पर्धीपर वास तिये। कार्यमा-पर्वत प्राप्तकोशकी सीमायर व्यक्तियत है।

'rovincial Geography of Madras)

अगरितपुरी-यह मासिकने २४ मील दविया-पूर्वके स्वापर है।

अभितनती-छोटी गयडक अर्थगंगा-कावेरी ।

अपर ताल-इसे मक्शेमें दिखलाया है (देशाम्तर ७६"

चांश २३-३०)

अपर विदेह-रङ्गपुर तथा दीनाजपुर । अभिसरी-उत्तरी पक्षायका हजारा जिला ।

ं अत्रि-आध्रम-द्यडकारययकी सीमापर

अर्बुद-ग्राबू पर्वत अमोध्या-प्रसिद्ध है।

अरुणकुण्डेपुर-चारस्रल ^{*} अञ्चतीर्य-गंगा तथा काली नदीका संगम ।

अहिच्छत्र-डत्तर पाञ्चाल (व्हेललय्ड) की वास्कालिक जपानी ।

र्थत–यद्द मान्त भागलपुरके समीपथा।इसकी राजधानी ज्यापुरी गङ्गाके तीरपर थी । इसकी पश्चिमीय सीमा इस सम्बक्ते संगमतक थी ।

अवस्ति-ऋाधुनिक उग्रमेनसे पूर्वकी चीर एक प्राचीन सर ।

श्रंशुभती-यमुना नदीका एक प्राचीन जाम । श्रंशुभान-गङ्गा नदीके किनारेका एक गाँव। श्रानर्ठ-मालवाका हुछ भाग तथा गुजरात

र्शुमती-रहेजलवडस्य काकलीनदीका प्राचीन नाम । इल्डर-एजोरा Ellora- निजामसाध्यके दाँखताबाद-

े समीप पहाड़ोंको काटकर बनाथी गयी गुकावाँमें यह यस प्रसिद्ध है उद्दरक्षेत्र-देखिये 'मोरीं'।

दञ्जक-वज्द्रेन, यह स्थान कार्रापुर या गोवित्यसे १ मील पूर्वेची छोर या मदावरसे दिख-पूर्वेची छोर ६० मीलपर हैं।

उरबल-उदीसा या उद् ।

उत्तरमा नदी-उत्तानिका नदी-इन नदियोंकी सावका रामर्गमा कहने हैं । यह सबस-प्रदेशमें होकर बहती हैं ।

उश्चानर-द्विकी सक्रमानिसान।

ऋष्यतान् पर्वत-सीडवाना पर्वतस्रेषी । यह पर्वत विरुप्याचलका पूर्वीय साग है। इसका विलाह बहावडी खाड़ीसे सेकर नर्सदा नदीके बद्गसस्यानतक है।

क्रप्यमुक पर्वत-यह पत्र'त मदास-प्रान्तके वेहारी-जिलान्तराँत परणा या हाग्यी (Hampi)के समीप हैं।

ऋष्यगृहाग्रम-भागवपुर विवास्तर्गत माघीपुर तहसीव-कें सिहेरवर स्थानपर या ।

प्रकात-स्याखुमती नदीपर स्थित एक माम । पेळवान-शिखाबहा नदीपर स्थित एक वस्ती । ओजानाण-इसे चाजकळ चामरेश्वर कहते हैं । य

ऑकारनाय-इसे चाजकल ध्रमरेश्वर वहते हैं। यह नर्मदा-नदीपर स्थित ऋदेरा नामक स्थानसे ४ मोत्र पूर्व की चीर संडलेश्वरके समीप है।

कप्य-आध्रम-मालिबी-नदीपर स्थित विजनीर।

कपित्य-देखिये 'संकास्या।" कपीयती नदी-भेगू-नदी यह रामगंगा नदीकी पृष

शास्त्र है। करन-विहारपान्तान्तर्यंत शाहाशर ज़िलेश पूर्विद आग्र इस नामसे शस्त्र्य था। इसके परिचमी मागडी मंडर

कहा जाता या।

कर्णाट-प्रचीनकालमें दिच्छा-भारतका एक प्राप्त।
कर्णाट-प्रचीनकालमें दिच्छा-भारतका एक प्राप्त।
क्षात्रकलके येलगाँच, घारवाद, योजाउर, देहारी हर्ण स्वातकलके येलगाँच, घारवाद, योजाउर, देहारी हर्णा स्वके क्षासपासकी सभी देशी रिचायने इसीमें हैं।

कर्मनाशा-यह नदी विहारमान्तानतर्गत जिला शाहावत. की परिचमी सीमापर के व करतेया नदी-यहरमणुर तथा दिनाजपुर जिलोंसे बहनी है इसका दूसरा नाम 'सदानीस' है।

करित देश-उदीसासे द्विण सथा द्वविड देशसे उत्तर विवादार एक प्रदेश !

कपहारिकी घाट-झुँगेश्से हैं।

कोबी-विद्वसपद जिलेमें। आधुनिक 'काओवरम्।'

कान्यकृत्य-बायुनिक कन्नीज नगर ।

कारियत्य-करियल-यह फर्क्शवायाद जिलेके फनेहमह (प्• पी॰) से २८ मील उत्तर-पृष[®] है।

कानकपरेश-श्वासाम मान्त । इसकी राजधानी प्राय्-रवीतिपद्वर थी, जिसका बत^{*}मान नाम गौहाटी है ।

काराचय-कालाकाग् व्ययमा काशवाग् । यह सिन्धुनही-श है। श्रीरामचन्द्रजीने श्रीलक्ष्मणजीके पुत्र चन्द्रकेतुको वर्षका राजा बमाया था।

कार्तिन्दी नदी- यमुना नदीका एक प्राचीन नाम। कोदी-प्रमिद्ध नदी हैं। कर्षकता भी कहते हैं।

िकिष्कन्या-(धानागोंदी) विजयानगर राज्यानगर प्रमदानदीपर स्थित है। जिला धेलारीमें होस्पेटमे १ मील तथा सामग्री (पन्या) से ७ मीलकी दूरीपर है।

कुटिकानदी-इसे कौसिसा नदी कहते हैं। यह समध राज्यकी रामगंगाकी पूर्वीय शाला है।

पुरुक्त-नार्यं वेस्टर्न रेखवेळे कुरुक्केश स्टेशनके समीप एक माचीन नगर !

कुरनांगत-यह स्थान इसिनापुरसे उत्तर पश्चिमकी भीर सरहिन्दमें है। भीदस्वाजमें इसे श्रीकरट देश कहा बना था। यह कुरचे त्रका एक आग था।

कुर्तिगुरी-विझीसे उसाका सहारनपुर जिला ।

कुशस्यकी-हारका, हारायती । कृष्टिकेटिका नशी-व्यवधकान्तमें शामगंगा नदीकी एक

वित्ति साला। केरम-केलम तथा चेनाव नदीके सम्बका प्रदेश। पिका सामकारित सर।

हेरन-इसमें चाजकतके सीन प्रदेश हैं; कनाडा, मजा-गर तथा टावनकोर ।

कोसल-भवधनान्त ।

कोलिको नदी कुमीनदी। यह गंगासे मितती है। ऋषकंशका वसर पदेशस्मानंत पदीपिए नदी। हष्णोणी-वर्तमान हरणानदी।

पानाग्य-हुस दिस्तृत बंगत्यका बसार सङ्गानवान्तरे समग्न सान्य्र सङ्घर्गे हैं । यह किला बेसारी, गुम्नकल, चान्यवाल तथा पूर्वीय घाटार थियन छांगीले तक फैबा हजा है । समस्यानसे नीनकोध दर है ।

गदा नश्-प्रतिख है

गन्धर्व देश-कुनार सथा सिन्यु-मरीके धीच काउल मदीके-किमारे किमारेका प्रदेश ।

गर्गात्रम-शयपरेची निश्चेमें गंगाके पार व्ययनीकं टीक सामने।

गाविपुर-क्रबीश र

नारतुर-वाकाम नायपुर (Jevpur से तीन मीलकी कृतिपर है। गिरिवज-चेनाव (चन्द्रभाता) नदीपर स्थित केवचदेश-की शालपार्थी। स्थापि सेस्वमने इत्तर-पश्चिमकी चीत ३०

का राजधानका राज्यात कलासम् । सर-पाश्चमका चार श्रीसपर गिरभक या जलालपुर ।

गोकर्ण पर्रन-गोकर्णचेश्वके समीव पश्चिमी बाटपर । गोदावरी नदी-असिख है। इसे रेवा मा सुरक्षा-नदी श्वीर इफिया-ग्रा भी कहते थे र इसीके किनारे जडायुकी श्लीपर-टेडिक क्रिया की गयी थी ।

केप्रतार-पाट-पह पैजाबादमें मरमू मदीपर है। यहाँपर श्रीरामचन्द्रजी धरमधाम पधारे थे।

गोमती नदी-यह नदी श्रामबङ्ग भी हुती नामले प्रसिद्ध है, हसीयर बस्तनक नयर श्रास्थ्य है।

मीतमाश्रम-तिरहुतमें, जनकपुरमें २५ मील इंदिय-एश्चिमकी चोर परशना जरैलके श्रद्धियारी श्रांबर्मे श्रहित्या-स्थान ।

धमार नदी-स्पद्वती नदी ।

चन्द्रिकापुरी-देखिये 'आवमी' ।

न्यया-चारपानगर-चारपापुरी-धाराशपुरके पास चारपा सगर १ वह बांगकी प्राचीन राजधानी भी है ।

च्यवनाध्यय-साहाबाद जिलेके चन्तर्गत चानमा था चयनपुर।

चर्मप्तती नदी-धापुनिक धम्बल नदी।

चित्रहुट पर्वत-यह वित्रष्ट्र स्टेशनके समीर है। साप्रकल इसे कामनानाय-विहि कहते हैं। दिशय वहीं मालागया गा।

चित्रकूरा नदी-देखिये सन्दाकिनी नदी । चेर-एक समय इसके भीतर ट्रावनकोर, मलावारका कुछ हिस्सा, तथा कोयव्यद्वा या ।

चेत्राय वन-चित्राल ।

ह्यांत अथवा द्रविड् देश-कारोमण्डल-किनारेपर, कृत्या सधा कावेरी नदीके मध्यका प्रदेश । इसकी राजधानी कांचीपुर ग्रथवा कांची था --

जनस्यान-महाकवि अवभूतिकी दृष्टिले जनस्यान तथा पञ्चवटी दोनों ही गोदावरी नदीके सुदाने हैं। शाजकत यहाँ लश्वाकी बस्ती है। यह दवहकारवयकी दिवल सीमा पर है। (सायका नक्शा देखिये) यहीं खार, कृषण, त्रिशिला

जन्दु आप्रम-भागजपुरसे पश्चिमकी कोर ई॰ चाई॰ धादि रहते ये। रेखवेपर स्थित सुरुतानगंत्रमें । इसी स्थानपर श्रव गीबीनाथ जमरप्रि-मात्रम-गाजीपुर जिलेमें जमानिया गामक बस्ती। महादेवका सन्दिर है।

जाबाहिन्यहण-अवस्यपुर ।

तथ्शिल-बाजकलका तथिला आम । तमसा नदी-यह नदी समोध्याने विषय सायूनशी चीर गोमनीनदी के बीवमें है। ताप्रपर्भा नदी-व्यामध्य यह तिस्रेयेकी जिलेष ताम-

बरवारिके नामये प्रसिद्ध है। क्राणानदीकी एक शास्त्र है। द्विता डीमण अन्यवासम्बद्ध गोंडवामा जिला ।

द्विण गहा गोदावरी नदी। दिश्रिण मधुरा मनुरा ।

ट्रस्टहरास्य यह धन विज्ञहरू वर्षनसे खेवर खनन्त्रात द्यवता मोदावरी-मदीके सुदानेमक कैया दुवाथा। (दिसल्हात् १०० ए० ही०) दर्गते अध्यक्षानमधी धरमान (Dhassan) नदी ।

हुर्वं,कण्यमः बड आगलपुर-जिल्लाम्बर्गत बड्डमारीय (Colgorg) शहरमें एक श्रीवादी दृरीवर इसी जामके एक परंत्रपर दिवत या। समया-न्या तिसेंडे सपारा

्रहाँ रशीक्षंमें • सांच इश्विन्यूर्वेडी स्रोत इस ब्राह्मस्य स्थान है। इन्दरी वरी-बब्द वर्ष ।

धनुवकेहि (भारत तथा सीलोनके मध्यका प धनुःतीर्थ र नामक जल मार्ग ।

वर्मपटण-देखिये 'श्रावस्ती ।' धर्मारण्य-सन्य प्रथमा कृतसुगर्ने विद्वार, बंगार उल्कलमें आर्थीका श्रधिनिवेश (सगवान् झीरामके सम

ब्दी रापती। बदल नदी बर्जुनी। पुमेला नदी सीताप्रस्था। बाह्दा ।

क्षेत्रावपुर-सुलतानपुरते १८ मील दविषाना गोमती मदीपर स्थित है। मन्दीप्राम-मन्दिगाँय-प्रयोध्यासे एक कोर

नमैदा नदी-प्रसिद्ध ही है। आजकल इसे मीमसार यह ग्रो॰ ग्रार॰ ग्रार॰ व स्टेशनसे १४ मीलकी मूरीपर नीमसार

नदीके वाचे किमारेपा स्थित श्चवा-नेशियारण्य २० मीलकी ब्रीपर है। पश्चरी-माधुनिक नासिक। महाक अनुसार यह गोदावरी मदीका मुद्दाना है। श्रमुमार यह जनस्याम,--नो द्वाहकारवर

है-में था। (३०० ए० डी०) वधारतर शरोगर-छोरा नागपुर राज्यके है। बां॰ २२" है॰ सथ" है वाम है। (बी वर्गारा नरी-बद्याम नरी।

क्राज्य-मु'दायर वा मुख्यार, वीम विजनीत्से द मील बता है। प्रयाग-प्रसिद्ध है। बडीवर शरहात्र-प थापालर-इसे 'हाग्री' सी बहते हैं।

बेलारी विश्वामतीन दोलेटडे बाम है वयरिहती नदी वैभिषे 'सन्दाहिनी क् जीवा है। वाभार-व्हेबलवड ।

व्याच्य प्रत्यार यही शाजकता है जिले हैं। प्रीय दिमारेपर विश्वन मा समय मरूत राजवारी थी। बुन्दर हरी नवान नदी तथा का

क्रिय पुरेशायती गरेव ।

प्रसरण पर्वत-सुक्रभदा नदीके पास है।

श्रास्त्रोतित-कामरूप अथवा कामास्या । कामरूपशी श्राचीन राजधानी ।

प्राप्तरपुर-गक्रा-मदीपर एक नगर ।

प्राचीनशहिनी नरी (बाहबीनुस्य)-किन्किन्छाके पास प्रेतिशत-देखिथे 'कामसका १'

पत्म नदी-मेतरिका सादि पर्वतोंके पाल बहनेवाकी नदी। श्रीरामचन्द्रजीके शापके कारण कोष हो गयी है। इसे मुद्र नदी भी कहते थे।

महानृति पर्वत (महायोगि)-यही गयसिर पर्वत है। महातर-धर्माश्वयमें है।

बाहुदा नदी-धबला नदी — काव इसका नाम उमेला बदा दूरी रापती है। यह सबधमें रापतीकी एक साला है।

बहर्राङ्-ब्राधुनिक बजलु-प्रान्त ।

विन्दुसार-महोत्तरीसे १ सील दविख है।

भारदात्र आध्रम-प्रवासमें है । मारण्ड देश-बीरमन्स्य वेशसे उत्तर ।

भीनरथी-भीमा नदी हुपु-आश्रम-चित्रपा-धह शङ्गासथा सरधूके संगमपर

। बमाश्रम भी इसीका नाम है। मनद्र आग्रम, सत्त्र-सरीवर-मदास मान्सके बेजारी

वृत्रेमं परपा नदीके पास । क्रीबारवयसे ३ कोसके श्रीतर (वा॰ रा॰ ३ । इ.३ । इ.)

. पार राव ३ । ६३ । ८) मनङ्ग-वन-प्रथाके पक्षिमी सीरकर ।

मतिपुर-मदाबर--विजनीरक्षे म मीलकी वृरीपर है। मनु नरी-मेदािका चादि पर्वतींके वास बहनेवाकी है। बीरामकन्द्रजीके सापकेकारण इसका जोप हो

ाहै। मधुद्गी-संपुरा-इसे शतुमतीने मधुके पुत्र सवसको कर बताया या। मधुरासे दविष्य-पश्चिमको कोर

ाष्ट्रः बताया या । मनुतासे दिन्य-पश्चिमको कोर वोदो नामक स्थान है। यही प्राचीनकालमें समुद्रारीके यने प्रसिद्ध या ।

^{म-र्}राच्ड-भागत्रपुर जिलेके बाँकः तहसीकर्मे बौसीसे ^र मोज । भन्द कि ने नटा-चित्रकूत नहीं चयता क्वस्तिनी नद् । यह क्षम्पनाम् पर्वति कि हजनम चित्रकून बहती हुए कुछ क्षमों जनक समुनाने मिल जाता है।

मक्य विद्वासन्तर्भतं शाटाबाद् वितोजा पश्चिमीय भाग । महत्यस-पञ्जास-माम्भका सुचवानः जिला । नदस्यको

दुत्र सङ्घदको श्रीराराचन्द्रशोने इस स्य नहा सङ्गा हजादः था । महानदी-मसिद्ध है ।

महेन्द्रवर्धत-पूर्वीय घाटर गङ्गाम निसंसे है । मार्कण्डेयातम-कार्या निसेस स्थानको स्थानको

मार्कण्डेयात्रम-कमार्यू जिलेमें आगेरपरके पास स्वरण् तथा गोमती-नदीके संगमपर स्थित है।

माल्यक्षम् पन्त- स्थापतेन् हे भाग हे ।

मार्तिनी नदी (संदित्य)-प्रकाशस्या ध्रपर तील नामक प्राचीन जिल्लोंके सप्पर्मे बहनेवारी नुक (ग्रुक्त) नदी, यद नदी झवोच्यासे पश्मील क्यर संस्यू नदीमें गिरती है। ध्रापि करवका ध्राधम इसी बदीपर स्थित था।

माहिप्मती-नर्मदा-वर्दोपर स्थित श्वाञ्जनिक माण्डला । मिपिका-(१) वैज्ञयन्त नयर (२) विदेहमें खनकपुरमे विचिख एक सरार ।

मेस्तः-(क) समरकाटक पर्वत-ओ कि नर्मदा-मदीका उद्रम स्थान है।

मैशक पर्वत-शिवालिक-पर्वतमासा ।

ममुना-प्रसिद्ध समना नदी । यनदीय-जाना होय ।

रबपुर-मध्ययान्यमं स्त्रीसगर प्रदेशमं द्विव बोसञ्ज-की राजधानी ।

रान्तिपुर-चम्बल नदीपर समताम्बर मगर

सामाना, रामसित्य- महायोनि पर्वनके पामधी कान्य पहादियाँ । यहाँपर ब्यासमने जिन्द-भादमें चिवददान दिवा था। (बाहुदुराम)

रामनाद-सामेरवरके शास एक नगर। सामनाइका राज्या रेतुपति बंगकी सन्तान था। बदाने कीरने हुए बीरासण्यापनि सामेरवरण लेकुई रणाके विवे जिन सान व्यक्तिकों नितुक्त किया था, वनमेंसे कृक रामनाइ था। समेदस-सनिद्ध ही है।

रामेश्वर-प्रसिद्ध ही है।

रामेददर-संगन-चन्द्रस्य स्था वकाल बद्दीका संगमन्यात।

रेरेतास-समसमये १०मील दक्किण काहाबाद ज़िलेमें है । इसको राजा इरिश्रन्त्रके पुत्र रोहिनास्वने यमाया था ।

राहण पर्रा सीलोनमें सुमनहूट एउँतको बहने हैं। प्राजबन यह ऐसम पीख (Adam,s Peak) के नामसे प्रमिद है।

राष्ट्रणाप्त-संग्रहीती, यह गीदका दूसरा नाम है, इसका भागावरोप मासदाके पास है।

ठवपुर-सबकोट, सप्यार घरणा खाईर है। इसकी स्थापना भगशन श्रीसमके प्रमुखन को यी ।

।।एना भगवान् श्रीसमके पुत्र लवने की यी । ता इम्ही-राजप्तानेकी सुनी नदी ।

दोनशोधी-यह गया जिलान्तर्गत नवादा सं दिनोजनके रजीली स्थानसे धर्मान जन्म है ।

केमशाध्य-कोमशगिरि पर है। केह-भक्तानिस्तान।

लोहिलग्राम-कपीयती नदीपर स्थित है। लोहिलग्राम-वंगालकी स्वामी।

स्तिहरयसागर**-यगासका स्तादा ।** होहित्या-नदी-**महापुत्र-नदी ।**

काहलानायानसम्बद्धाननायाः बरसभूमिनप्रयागसे पश्चिम एक विताः । इसकी राज्यानी क्षीतारुकी थीः ।

दानीरमाहिनी नदी-धर्मास्थयकी नदी । बाह्मीकि-आध्रम-समसा नदीवर। गंगासे दक्षिया।

प्रयागसे १० कोस । वाहिगुद्दा-धनागोंदो स्थानसे १७ मीज दूर है।

बातनुष्ठा-भगागादा स्थानस गर्भ भाव पूर ब बितस्ता मदी-एंकावकी मेलस गर्दी ।

विदर्भ-बरार ह

विदिशा-मध्यभारतका भिलिता शाम । विदेश-माधनिक तिरहत — इसे मिथिया भी बहते हैं ।

विनवस्थान-गोभवी नदीवर एक थाम । विन्ध्याद्रि-मसिद्ध हैं । यह पर्वत भारतवर्षको उत्तरी तथा दविको दो भागोंमें विश्वक करवा है ।

दिनुहोंडा-नान्ट्रर जिलेमें इस नामका एक नगर तथा एक वर्षत है, इसका भागें 'मुननेका पर्वत' है। परम्पा-से हह बात चली याती है कि हमो खब्बरर झीरामचन्द्रजीने सीवा-दृश्यका समाचार सुना था।

विषास नदी-पञ्जाबमान्तको व्यास नदी । (बेदोंकी बार्जीस्या नदी) विष्कित्या, परमासरीया, तारा, मान्यवान् त पर्वतादि हैं। वेदख्या नदी-तसमा था तानमा नदी।

बद्धुन्त नदा-तमया या तानया नदा । बङ्धेपर्वेत-सनपुरा एवंत । बैन्हर्णा नदी-यह नदी क्रक्तिक प्रान्तमें बहुनी

दिस्पाय धेत-(हार्गामें मन्दिर) । इर

की मादीमें गिरती है। वैशारी-हाजीपुरसे १म मीस बन्द गया

स्थित वेमासमाम । वंग-वंगाज । किसी समय यह पाँच मान्त

वेग-वेगाना । किसी समय यह पाँच मान्त या १९-पुण्डू २-समतट १-कामरूप ४-तान २ कर्णमवर्णी ।

शतदु नदी-पञ्चावकी सनकाम नदी । शतका-आसम्-ब्रह्मधी । भ्रति-साधममे

दिशामें। सरम् नदी-सायृ या घाषरा नदी-गड़ा व शस्ता। इसीके किनारेगर घवण या कोमक्की र

राजधानी धयोध्याप्रती है।

श्चित-सिविन्धव । सिन्ध नदीने किनारे सिन्ध युक्त साथ ।

गुक्छेत्र-देविषे 'सीरों' । गुर्पारक-बश्बई बान्तमें बसईके शास सोपारा प्रसिद्ध है ।

श्रीसद् है। क्षेण-सोन नदी। यह गंगा नदीमें गिरती है। एक नाम हिस्बपवाह भी है।

प्क नाम हर्रययाह का छ । शहरेरपुर-ब्रापुनिक सिंगीर । माधीनशासमें । राजा गृह या १

श्रातण-उद्याजले २० मीज दिविषपूर्वेद्यो स्रोतः । नदीपतः रिपतः है । इसी स्थलपतः राजा द्वारावने । अवस्य प्रथयां सिन्यु व्यक्ति मार दाजा था । श्रातस्ती-सूर्येवेदी राजा बावस्तने दूने वशाण

ध्यत्रका नाती धवना ही। वी नहीं हे दिव व सहरु गहेत के नामने मिल्द है। वह स्वीताने मोल उत्तरको धोर है। प्राधीनकात्रको वह उत्तरकोनी नामकानी थी। इसके मोन नाम है। पर्नाहर धारुवादी १-सहरु मोन

सदानीय नदी-देखिए 'कार्गाया'।

स्यन्दिका नदी-झवध-प्रदेशको आधुनिक सई नदी। गोमती और गंगाके धीचमें कोसल-देशको दणिया सीमा-पर बहती है।

सरस्वती नदी-बाजकस इसे सरस्वती व्यथवा धमार नदी इसे हैं। यह उत्तर राजपूता नेकी रेतमें सुप्त हो गयी है।

सहेत-महेत-देखिये 'आवकी' । विदायम-धोरा सपा गाँगा नदीके संगमके वास शाहाबाद विजेमें बरसरके नामसे प्रसिद्ध है ।

सीता नदी-चारकन्द कायवा जुरप्रशानिकी । इसीपर पारकन्द्र शहर बसा हथा है।

सीतासेत-कार्तिज्ञर पर्वतकी एक पहानी (साधारक वैदा प्रथरीला सारा)

सुतीरण-आध्रम- शरमंसाध्रमसे द्विश ।

सुवर्णद्वीप-सुमात्रा ।

सुवामा नदी-रामगीया मदी । देखिये 'कत्तरणा बदी' । सुखदेश-चाराकामप्रान्त । एक समय इसकी शजधानी

वाञ्चलिसा थी।

सैरिन्ध-सरहिन्छ।

सोमगिरि-हाजा पर्वतका दक्तियी भाग ।

सीरों-गुक्रकेत या उक्काकेत्र—यह स्थान युटाले २७ मीत उक्त-पूर्वकी घोर है। कहते हैं हुसी स्थानपर हिन्दीके फिनीर महाकवि सुकसीबासका बाल्यकाळाँ पाळन-पोच्य हैमा सा

संकारमा-कर्ष कावाद-जिल्लाम्सर्गत कतेहगढ़से पश्चिमकी भोर २६ मोलपर इडमती-नदीपर करियवने नामसे मसिद्ध है। बलाहरण-हरदोईसे २४ मीख दक्षिय-वृद्धी चीर केमायमब्दे जस्त है।

इरदार-शंगापर प्रसिद्ध नगर है।

हितापुर-श्रपुना गङ्गा-नदीके दादिने संटपर स्थित हिपास। यह दिसीतमा मेरहले उत्तर-पूर्व तथा विधनीरले विधायक्षिणको कोर है।

हारितालम-पृकक्तिम । राजपूतानेके वदवपुरसे हमीख हारितालम-पृकक्तिम । राजपूतानेके वदवपुरसे ह मीख

हिरण्यवती-द्योटी सण्डकी । हिरण्यवाह-देखिये 'शोख नदी' । निम्निबंधित स्थानोके नाम रामायवर्गे साते हैं परन्तु इनके सम्बन्धमें टीक-श्रीक पवा नहीं समग्रा ।— सनिकोश्यन, स्विभक्त , यांत्रवती, इसुसार, दिख्रान मार, स्वयम-प्रेल,क्कन्य वन,क्किनमा,स्टालम्ही महो,दुवित्र, इन्ल, चीस्ताया, गिरिक्रा, लस्तुस्य मान, सात्रस्थाति प्रव⁷त, तेजोधिवन, तोरक मान, दुधवाह साक्ष्म, ध्यम्बर्धन, समाल, अववारकती वेदी, मदिसान् पर्वत, महामान, तीयक हीए, वक्क मान, वाहिनी नही, गीरामार्थ, स्वयक हीए, वक्क मान, साहिनी नही, गीरामार्थ, स्वयक्ष, स्वयदि सामा, अववार्णते, हास्त्रजीनती, विज्ञासा नही, सिरिस पर्वा, साहस्यानी, सामान, ससमानतीर्थ, स्वाधानसी नही, सुष्ठ नही, सुर्दण सरोवर, सुसान नही, सोरीन, हिन्द्यक साह, हारिकी सरोवर, सुसान नही,

रामावतार-रहस्य

(एक नवीन इष्टि)

(लेखक---श्रीवीतीलाव स्विशंकर चीशा,बी ० ए०, एल-एक० थी०)

त्रवाची व्यविवासी सम्माधी सांत्री सिंह सांत्री सांत्री सिंह सांत्री सिंह सांत्री सांत

दृष्टिले नहीं किया जाता है। यह श्रेस एक नदीन दृष्टिले विका जाता है, इसकिये यदि कियी वाटकको हुए कार्यका सतीत हो तो इस प्रकोशीये क्षम होंग श्रेते हैं।

धीरामकद्वीको इस वरमाना, श्रीविष्णु सामाद्वस स्वारा सानते हैं, इसारी इस प्रातिक पुष्टिके मानेने प्रो इसे कियो क्यांको कीय नार्षे वरमों है। प्रकाशना इस प्रकृतिक प्रतिने विभार कावा पारते हैं, इन्तिके प्रकृतिक प्रतिने विभार कावा पारते हैं, इन्तिके प्रकृतावाला कीय किया कावा विभा वाजा है। स्वतावाला कीय क्यांकित इसे हमें स्वतावाला कीय किया कावा है। इसे दोनों हो बाद प्रतिकाषक होने दे काव्य विभार के भीच हाता है।

हमारे पुरायोंका बन्यवन करनेते पता खगता है कि हुन प्रन्योंकी रचनामें किसी धहत मुक्तिका उपयोग किया गया है। यह भी प्रतीत होता है कि इनमें वर्षित कथाओं की स्रोकोपकारक बनानेके क्षिये, उनके मृत ग्रुध कांग्रीके बाधारपर उन्हें नये बस्नामृत्यवाँसे सजित किया गया है। इसके प्रतिरिक्त, 'यथा विण्डे तथा महााण्डे' हमारे इस सारिवक सूत्रमें निदित मुक्य भावको सर्वेषा चरितार्थं करनेकी भी चेष्टा प्रराणकारोंने 🖏 है।

पुराव्यों के पाउकको सूचम दक्षिते कवाओंका पर्यवेशव करना होगा । क्योंकि धवताररुपसे माने हुए देव-दानवींके चरित्र चित्रय काके दी पुराखकार चुप नहीं हो गये हैं. उन्होंने उन देव-दानवांका एक चोर ज्योतिश्रककी दृष्टिसे चौर दूसरी चोर चाप्यात्मिक दृष्टिसे भी वर्णन किया है। इस वर्णनके द्वारा उन्होंने चाधिमीतिक, चाधिरैविक चीर चाप्यारितक विथयोंकी प्रकार्यता सिद्ध कर दी है। सतस्य थइ कि हमारी पुराय-कथाएँ ऐसी हैं कि उनको हम निष्न-भिन्न प्रधीमें घटा सकते हैं, और इसी दृष्टिसे यह खेल क्षिका गया है।

वेदमें 'यद्य' 'विष्णु' कौर 'सूर्य' ये तीन शब्द एक ही द्यर्थमें ध्यवहत हैं, इसके चतिहिक उदय होते, डेन्द्रमें स्थित रहते और चन्त होते सूर्यकी जिन तीन सवस्थाओंकी इस बार-बार धावृत्ति देखते हैं, वे तीनों ही विष्णुके एकके बाद एक अवताररूपसे समसी गयी है, ऐसा भी वेदादि प्रत्योंके भाषारपर कहा जा सकता है। चन्य द्मवतारोंके सम्बन्धमें यहाँ कुछ नहीं कहना है । शमायखके द्याधारपर इस श्रीरामजीको सूर्यवंशी मानते हैं। इससे श्रीरामका सूर्यके साथ सम्बन्धित होना सिद् है। रमाने यानी प्रानग्द प्रदान करनेवालेको शम कहते हैं। ऐसे रोजस्यी पुरुष 🜓 'सूर्यवंशन शम' है, यह सीधा अर्थ किया जा सकता है। प्रतर किरखोंवाले सूर्यका प्रशुराम र प्रस्वरूप है, उसके मुकनेपर (पराजित होनेपर) जो नया स्वरूप (सूर्यका) बनता है उसका चल्प उम्र होकर खोकमानको सुख पहुँचानेवाका होना स्वामाविक 📫 है (बस्ने हुए सूर्यका स्वरूप दमतामें कम चौर सुखकारक होता है)। श्रीरामके बन्मकाबसे ही कोकमात्रको चानन्द होता है परन्तु चानन्द तो वही है जो होता दी रहे । शमका वय उथों-उयों बढ़ता है त्यों-दी-श्यों चानन्द भी बहता जाता है, पर कर्री तक चौर क्सि प्रमाणमें र राम चपनी प्रिया श्रीसीतारूपी चुतिका त्याग करके भी खोकमात्रको प्रसद्य करनेसे नहीं चुकते।

श्रीराम अपना पराकम दिखावर जो सीताका दाय करते हैं, यह बात भी उतनी ही रहस्यपूर्ण है। परग्रतम, संक्रान्तिकासके सूर्यका स्वरूप होनेसे वर्धकान्तिवृत्तिस्री धनुषका भंग करनेवासे बामरूपी सूर्यसे पराजित हों, नष्ट हों, इसमें बाधर्य 🐧 क्या है। रामकी पत्रीका नाम सीता है। 'सीता' शब्दका वर्ष 'शुद्र' या 'इतरेखा' होता है, बीर वह चुतिरूप भी है, तथा सीम्प भी है। धतुप-मंग काके रामस्पी सूर्वं सीवास्पी युविका वाण करते हैं। इसका क्यर्य यह करना चाहिये कि रामस्पी सूर्यका तेत्र बोक मात्रको सद्य है। उत्तरायणका सूर्व दिन बीतनेके साथ ही दिविकायनका दोने खगता है। यह बात श्रीरामके बपनी पत्नी सीताके साथ दविज्ञानमनकी कथासे इतनी संदिव मिस्रती है कि राम-कथा और सूर्य-कथाको हम परश्र प्रवर् महीं कह सकते । रामकी शक्तिरूपा सीवाका राववने हरण किया, इस क्याको जो इस स्वंके अन्य अवतारों-नृतिह या वामनकी कथाने साथ तुलना करते हैं तो तथतः इन सबसे एक ही अर्थका बोघ होता है। सूर्यकी अपनी वासिक युतिरूप पत्नीको कैंद्र कर रखनेवाले 'तेजीमवहत्न' स्री हिरययकशिपुका जैसा मृसिहरूपी किया भगवादने अस किया था, उसी प्रकार (वायुपुरायके बनुसार) हिरवयकीगपुरे भवतार शवखका, - जिसने सीताको केंद्र करशताया-रामरूपी सूर्य - विच्लुहारा ध्वंस हुचा चीर परिवासमें रामरूपी स्पेंको सीतारूपी चुतिकी दुनः प्राप्ति हुए।

मतक्वय यह कि ग्रामाययान्तर्गत राम-क्याका हम् उपीतिर्विधाकी दृष्टिसे अन्यरूपसे भी अर्थ कर सकते हैं क्यौर पेसा करनेसे अवस्य हो शमाययी क्याका प्रयोजन भी नष्ट नहीं होता !

वरसाये देत

छाये देतछोर छोर सावनी घटा सी छरा, दुएन जवास मोरिमोरि मरसाये हैंग। विश्व सी परत धाय पातक पहारत दे,

चातक विवुध उर मिक सरसाये हैंग। दास तुलसीके छंद गरजत मेघ जैसे, मक में झ मानस मयूर हरसाये हैंग।

राम यश पायन सुदायन है घारा घर, जगमें वियूष बारि घारा बरागये हैं।

श्रीरामनामकी महत्ता

(लेखक-विविध-विचा-विकारः पं. आन-दमनशसमी वीमगाँवकर)

ति माणीन कावते श्रीरामनाम-मारायकी जो इतनी मिराम वर्जी साथी है, इसका प्रारण क्या है । यह शानामका साराय इसारी क्या के स्वारण क्या की प्रारण के से काम साथा है, यह माणना मारिये । शामनामका यह प्रापत केना शाहिये । शामनामका यह प्रापत केना शाहिये । शामनामका यह प्रापत केना शाहिये । शामनामका यह प्रापत केना सामी बोक पीरते चल्ले सावेका हो एक महाना वे या इसमें कोई सम्मीर विचार भी

ै यह बारने हे जिये दूस मातको महिमा जिन्होंने बताची है बाको धोमता बया चीर कियती थी यह देखकर काल तिक पारिमीटिक पार्कोंची दूसनी उठकी दुई दे वन वार्विकीत पार्कोंची करोदीरार कालक यह देखना दोगा है इस सामसमकी महिमा कियती उठकाव है और उठकी किया बार्ग उठकार हो सकता है। ऐका बारने के पार्विक बांकडे द्वारिक्त प्रमुक्त है हो ऐका बारने के पार्विक बांकडे द्वारिक्त प्रमुक्त के इस विश्वमें कोई करोद मार्ग रहेशा प्रीक्त कर उठकी मारके धारना पार्विक कार्यास्त्रीक बांकर करातीय कारके धारना

उपनिपदोंमें वर्णित महिमा

रमन्ते योगिनोऽनन्ते नित्यानस्विधात्मनि । इति रामपेदनासी परं स्रक्षामिनीयते ।। — समपुर्वतापिन्सपनिषद

ंभोगीकोग जिस धनन्तः नित्थानन्तः चिदारक्षार्मे पनाय दोते हैं उसीका रामपदसे कोध होता है। उसीको पनक कहते हैं।'

मन्त्रोऽयं वाचको रामो बाल्यः स्वात्रोग वत्योः । फल्दश्चैत सर्वेषां सापकार्गः न संशयः ॥ —सम्बर्धतापिन्तुनिषद्

'यह सन्त्र रामका वाषक है और राम वाष्य हैं। तै रोनोंका को योग है वह सब प्रकारके साथकोंको इंदेनेवाला है, इसमें कोई सन्देह नहीं।'

मुर्चेदेशिने कर्णे यस्य कस्यापि वा स्वयम् । उपदेश्यति मन्मनः स मुक्ते मनिता शिव ॥ स्वयं श्रीरामचन्द्र मगशत् रांकरते कहते हैं— हे शिव ! सुमुद्रके दाहिने कानमें जिस किसीको सममन्यका उपदेश हो शीर जो कोई ह्सपकार जप करे वह सक होगा ।

> गाणवत्येषु शैवेषु शाकसारेष्यमीहदः। वैण्यवेष्यपि सर्वेषु शाममन्त्रः कजाविकः॥ —रामोत्तरतापिन्युपनिषद

'गर्येस, शिव, सकि, सूर्य और विष्णु इन सब नार्मोके कपसे होनेवाओं करपायकी अपेवा शामनाम-मन्त्रके अपका कल क्यिक हैं।'

इसम्बार शामनामके जनकी महिमा जपनिपदींने नापी है। यन सन्त्रयाखकी दक्षिते शाम इन व्यक्तेंके बचारवार्ने क्या गाकि है, यह देखना चाहिये।

बर्णोचार-गुण-धर्म-वर्णन

'र' वर्ष दाइकर विकृतिकर है। 'क्ष' स्वर सर्वेग्स और भाकर्षक है। 'म' वर्ष विहेपी मोहनकर है।

थीजाक्षर गुणवर्णन 'र' महिलान है।

'मा' वायुवीश है।

'म' बाकाश्योग है।

प्रभीवीय कामक, धापणीत गारिकह, ते स्वीत दादक, वायुगीत पावक घीर मारावयोग संपेयक है। हन व्ययुगीत सिमोद्यारका परियास विह्नय वस्त सामुम्मे की एत्त दारियर वर्गेय कमानेहन यह माराव्युगीत हो क्षाव्युगीत होता है। व्यावसार प्रेटीकट मानेत वेशे प्रभाव राज्यों मारा है कि दी राज्यों प्रता होत्युगी वार्गेय मारावयों मारा, वार्ग्य की स्वादारमेंने होत्युगीत को पर्योगी प्रयावयां प्रमान, वार्मित होत्युगीत को क्षाविक सामार्थ मी हन्हीं व्यव्यान स्वाव्युगीत स्वाव्योगीत सामार्थ मी हन्हीं व्यव्यान स्वाव्यान स्वाव्यान स्वाव्यान सामार्थ हात्या हुंगा हुंगा हुंगा स्वाव्यान स्वा

वंदौ रामनाम रधुनरके। हेनु इसानु मानु दिमकरके।।

(८) इपरमें होनेवाजे ये स्वस्तकर सेन चीर उप्यता है रूपमें त्वह चीर मेनके हारा ज्ञात होनेकी क्यामें चा बाते हैं तमी उन्हें स्ववहारमें तेन चीर उप्यता कहते हैं।

इनायकार इपापर डोनेबाक्षे ध्वनिके परिवासका देवार हुमा। धव शारीहरू किन-किन मामों चीर हार्थी-पर बवा परिवास होता है. इसका विचार करें।

र्रीरो मात्रोधार करने हे पूर्व उस उधारका अपने सन्ते नरत होना धाररक होता है। सनमें जपन हुए विशेष कर देरित निकल ही नहीं सकता। पर सनके भी वे बहुता सरने मिलाकों कियो पूचा कतुरहत-ती धारपाने होना सल्टी है। सिलाकों होनेते हो यह सनमें जपन होका सल्के हारा साहर निकलता है।

विषडमञ्जावतका शासत कीर स्थापक बस्तुस्वरूप तथा विचारसम्पद्धा बीध करानेवासे श्रीराम-मन्त्रके कर्ण (Vibrations) मलिप्कके चन्तमाँगके सूच्म-सूच्मतर तम्तुभाँको करियत किये 📺 वहाँ सनुद्भृतक्यमें रहते हैं। बरि देता न हो तो उन कर्योंका कहींसे श्रायायन नहीं हो सकता। 📺 चलुरुगृत कर्गोका उत्थापन होनेपर वे करप बहाँसे शानवान् माडी-जाज (Sympathetic Nerve) में, फिर वहाँसे जानेन्द्रिय नाही-जास (Sensory) के बाग्-नादी-बालमें रहनेवाक्षे राज्योत्पादक (Hypoglossal Nerve) गरिवान् (Motor Nerve) ज्ञान-सम्बुओंको प्रेरित करते भीर बीभको करियत करके सन्त्रका रपष्ट उचार कराते है। राममन्त्रके कम्प इसप्रकार बाह्य बातावस्थापर पेरित्र भीर समर्थ परियाम करके फिर जीटकर शरीरके प्रन्तमांगांपर परियाम करते 👣 मूल उत्पत्ति स्थानमें मा पहुँचते हैं। सृष्टि-शाक्षका यह स्रवाधित सिदान्त है कि, जो-जो शक्ति जिस-जिस मूल स्थानसे बठकर कियाने प्रदूत होती है वह शक्ति फिर उसी मूख उत्पत्ति-स्पानमें धादर धपना वर्तुस (Circulation) प्रा करके ही वयको प्राप्त होती है। इस नियमके अनुसार शम-निमहे जो करप श्रपने मूज स्थानसे उठकर सुँहसक बाकर बाहर निकलते हैं और फिर बढ़ेंस पूरा करते हुए खीटते , वे शरीरमें चन्दरकी चौर जाते 📭 जीमके रनायुचींमेंसे रोदर गतिवान् ज्ञानतन्तु घोंने जाते हैं, यहाँसे ज्ञान-तन्तु घोंके रेश्वानरून् (Auditory Nerve) में कल उलाव ष्रते स्तुटकम रीतिसे ज्ञानवान् ज्ञानतन्तु-बाखर्भे कस्पित करते हुए जब मानस प्रस्पमें काते हैं तसी वे अपने और

द्वानां ने प्राप्त विकास होता है।

हस नोनाम्य वेद कालुकिये करणाता नहीं, शानित होती

है (जुवे केटियारिकार्य मन्द्रकेटियार्यमं)। इस कालुकिको
निर्मादिक्षियाँ मन्द्रकेटियार्यमं)। इस कालुकिको
निर्मादिक्ष्याँ मन्द्रकेटियार्यमं)। इस कालुकिको
निर्मादिक्ष्याँ मन्द्रकेटियार्यमं। इस कालुकिको
निर्माद वेजकरी क्षेत क्षाम्य प्राप्तिसक रेजक-करण क्षेत्र किल्पाद विज्ञानिक क्षाम्य क्ष्मिक होता कालुक कस
क्षेत्रकार्य विग्याद क्ष्मिक क्ष्मिक होता किल्पाद क्ष्मिक क्ष्मिक

इलामकार वेद और अपनिषत्के वचनोंसे, अलुभवी सम्वोंकी वांचीसे, सन्यशासके, शरीश्यास्त्र कीर सने-किन्नानसे तथा व्यनिसास्त्रसे श्रीशामनामने करकी करार सिकानसे तथा व्यनिसास्त्रसे श्रीशमनामने करकी करार सिकानस्त्र होती हैं। श्रीमन्त्रपन्त्रीतामें भागगुन्ते कहा है-

ध्यक्रानो जपयक्षोऽस्मिग

ह्रसप्रकार जपन्यज्ञ सब वजों में श्रेष्ट है हो, पर इसमें शमनामके अपकी महिमा सबसे प्रिथिक है, यह उत्परके विवेचनसे पारकोंके प्यानमें या गया होगा। इस प्रक्रिसे शमरणस्त्रोत्रमें जो यह कहा है,यह प्रयाप हो है कि-

राम रामेति रामेति रमे राने मनोरमे । सहस्रनाम वजुट्यं रामनाम बरानने ।।

यहाँतक अब और राममन्त्र अपकी महिमाका दिन्दरांन करनेके प्रधात अब मन्त्र-अपकी स्मपद्रितका दिवरस्य भी यहाँ दे देना कावरयक माधुम होता है ।

वाचिक वय-इस खरकेदी खंग हैं-प्रथम वाचिक और खरन्तर उर्पारा बोरसे स्पष्ट बच्चार करते हाप निसंबे भाषत न होते हैं उसे बाधिक वाप कहते हैं, बीर जिसमें होंड और शीम हिलते हैं पर स्वर कृतना धीमा होता है कि धपने ही बानमें बहु सुनायी है, ज़म्द बाद का माय उसे उपांद्ध मन कहते हैं। हुन वाधिक भीर वस्तों मगोंसे बापी और श्रवणका कार्य कानेवाले स्मायुक्तों और प्रानतन्त्रमामें गति निमाय होता है और जस्से श्रव्यक्तां का मगतपर वेसरी बापीस गतियोल मक्तपन वस्त्र होते हैं। हुनसे बन्तर्वास स्टिमें हुए परिवर्ज महोता है।

मानतिक जर-इस लगमें होठ या बीमके हिवनेका काम स्त्री है। बनासे सनोमय राज्यका मन-हो-मन स्वष्ट ककार करना तिता है। यह कबार राज्येवासप्रेसक जान-मान्योंमें होठा है मीर वसासे कागोंके राज्यान तानु किया होकर मनते होने-ताका एपड कबार मनको ही सुनायी हेता है। इस्प्रकार को ताबा एपड कबार मनको ही सुनायी हेता है। इस्प्रकार को ताब होता है उसे मानतिक वय कहते हैं। यह मानतिक वय प्रथमा बायीसे जामकत्युक्तामें सुच्या गति उत्तयक बस्के पर कारियुक्त परिवास करते हैं।

ध्यान अप-धह क्षप परवन्ती वायीसे आसस तेजाकार हता सानस प्रत्यच करके स्वतन्त्र ज्ञानवान् ज्ञानंवन्तु-जाल Sympathetic Nerve System) वेशैर नाइरेचक Nervous fiexuous)को सुस्म गति देवर इयरसे भी स्म प्रायाद्वयमें प्रकारन उपन्न करता है और दसका स्वतन्त्रहारकेके कारण शरीराय परिवास होता है शे

अनन्य जप-यह षप परावायों से कुपहितानी नाड़ी में तेज रख करते बीवास्तरेज में सूचनदर गतियुक्त प्रकारन उराव रखा है चौर पिरवम्बास्टवके महाकारण देहपर गरियाम रखे बीवास्तरमें बागु केन्द्रको परमाश्रक्षी बृहस्केन्द्र नाया करता है।

षह मन्त्र-जपकी क्रमपद्धित है। प्रथम उक्कास्त्रस्त शान-साका को जप करता है, उसे उसके व्यवसात्त्र हो, वीते-से प्रभ्यास बढ़े, वैसे-वैसे, उसके प्रकृति काप हो इसका 1न करा देती है, कीर यह पाष्टिक वनसे मानहिक कपमें, ।तिरक्ते ज्यानमें कीर प्यास्त्र कानन्य सपसे पहुँच कर व्यवस्थ हो बाता है। शिसको हुस रामनासका प्रकृत्रस्त ।त्याद्य से बाता है। शिसको हुस रामनासका प्रकृत्रस्त

ै. कोई प्रयक्ष किये विना, उसकी शतिके वेगके े चागे बढ़ता जाता है चौर स्वभावतः ही पर्देचकर भीराम-प्रमुखको शास होता है।

श्रीमानसकी चौपाइयोंके विनोदी द्यर्थ

(देखर-दिविसमाट पवार्थनाचरपति पं• बान्समनी गुइछ)

सवकर मत सम नायक एहा। करिय राम पद पहुत नेहा॥ ३० का॰

(१) छव कर मह (सावही के सत=सम्मदाय) ध यून स्वर्धात इस नहीं, सार हीन हैं। गान वक रहा (पह एक स्वर्धात प्रकृतिना गया है कि शीर प्रमण्ड पर नेता (हिस्किक कर्माय है) मान, निमा सहके यून्य कर्प होते हैं, का कह सावमें हो, तब यून्य सार्थक होता है, हों। भागितिक हिस्मितिक थोग विशाग साहि स्वक्ष होते हैं, व या ०० बा ००० = जुड़ नहीं तर १० = व्हा स्वर्धीर १९० १८। रामवासको कह है, तम तानन है यह । यह गो वह शव नहीं, यह रहे दय जून ॥ हुकसी सत्वर्ध

(२) सरकर (सबदी कुछ करनेवाका) है कागनवर्षः मत यहा (है मरुङ् यह सत है) कि-हारिय राम-पर रहत्र नेश (हरिमक्ति करें)

(२) हे सरावायक ! सर कर (सबही पर्म वर्ष कार सोचकी करा) यद पदा (यह सम्प्रदाय हैं) कि वरित्र रागार पहन नेहा (हरिप्रेम करें)

(२) हे सम्मायकः सरह (सक्रव सहित्रे श्रासर) प्रा रमत(यहारमता है)कि करिय रामपर पहुन नेशा (हरियर प्रेम करें) कः=सिर खैसे दशकन्यर-दश् श्रिर धारण करनेवाहा।

गङ्गा—किस रूपको मते । उत्तर (१) स (शरमणुक्ते) व (बायुदेवहै) र (कोगुवने)

क (महार है) व (वसीयुवार) म (शिव है) पर-हरेव पर-पर पहल बेहा ऐसा ही सीमझापवार्वे कहा है-वह रहता हिंदे प्रहितेशास्त्रेश्वेस पर: इस्व एक स्ताय को शिक्यार्थ हिंदे प्रहितेशास्त्रेश्वेस पर: इस्व एक स्ताय को शिक्यार्थ क—म्मा म —शिव । संस्कृत कोष देता

क्षण कोड कोर चौरारके परोद्य वर्ष हाने हैं हो हैं विद्यारण है कावदी दिराजपर उप दोना बना है। हारहरके चौपारवोड़े सम्बन्धे वापने यह बना क्षेत्र में हो । समूदे हें होता वर्षाका यह होरान्स बंदा प्रकार होती होता है दिशा बात है। हा केश व साथ सम्बन्धे कि है सम्यान होता वर्षाण कराई है। समाव सर्वे।

तुलसी-रामायण

(डेसफ---बीवियोनाडी भावे)

रतीय साहित्यके इतिहासमें तुलसी-दासतीके रामाण्यकापुक स्वतन्त्रस्यान दें। दिन्दी राष्ट्रपाणा है और उस माणका यह स्वर्णकम प्रत्य है, सवः राष्ट्रीय रिष्टेसे ती इस प्रत्यक्ष स्थान प्रतिदेशिय है ही एस भारतके साह काठ करीव स्त्रीय इसे वेश-साथ मामाणिक

कारके हैं, यह निव्य परिष्ठ क्या अन्य नहिंदि सामायक सामायक सामायक सामायक हैं। यह निव्य परिष्ठित क्या अन्य महिंदी क्या अन्य हिंदी के स्थान मात्र हुंचा है। गामायक स्थान मात्र हुंचा है। गामायक स्थान मात्र हुंचा है। गामायक सामायक सामायक हुंचा है। गामायक सामायक सामा

सपस तो रामावया सर्पोदायुरगोरका सीरामण्यन्त्रीका परित है और किर तुस्तीरायुरगोरका से को निरंग कर्मावा-एकि बिखा है, इस ब्यारम वह एक होटे बाककों के भी रापमें देने पोष पश्चिम और निरंगुर बन नवा है। इसकें मानके तब सर्मोंका बर्पान मीतक मार्गायों रक्षा करते हुए बेचा नया है। रस्तं मतिकों भी निवर्मात निवन्तित किया गया है। क्या स्त्रास-वीची सक्त मतिका पी। निवन्तित भीर सक्त मत्त्रिम नदी भीदिक गेर है को भीराम-मति भीर संक्रम अस्त्रिम वही भीदिक गेर है को भीराम-मति भीर संक्रम अस्त्रिम वही भीदिक गेर है को भीराम-मति भीर संक्रम अस्त्रिम वही भीदिक गेर है को भीराम-मति

द्वज्ञती-रामाययबा बालमीकीय सामाययकी करेगा क्यालसामाययले श्रीक सामाय है। बहुतेरे वर्षकों में—शिवेस्ता आंकड़े बहारोंमें को सालककी द्वारा दोक को होगे हैं, गोताको द्वारा को है हो। सहस्रायीय स्पायक को होने हैं गोताको द्वारा को है हो। सहस्रायीय स्पायक स्मावकारी स्पायक है। स्पायक स्वीक्षण है का व्यक्ती स्मायकारी स्पायक है। स्मावकार स्मावकार स्वीक्षण है। वही निर्मुख मिंह, वही संपाद । सुद्रामामोडो चरने मामं बीट खांचर भी वैसे मन हमा था कि इस चिर इरस्वामं ही चूँच पवे हैं, वसी मकार प्रकारी नामानय करते समय महाराष्ट्रीय सम्पन्नवादी केदनाने पतिस्त नाम्यक्ष देशे संका इतिहैं, व्यक्ति इस चिरासिया कपन तो नाई वर रहे हैं हो महाराष्ट्रीय सम्पन्नी में भी पहनायक महाराष्ट्रीय प्रकारी-भागवयमें वो स्थापन सामा दिख्यापी दशत है। प्रकारी-भागवयमें वो स्थापन सामा दिख्यापी दशत है। सीव्यक्तायमें भी सामायय क्रियों है पर उनके स्थापाता महिल्कायमें भी सामायय क्रियों है पर उनके स्थापाता इसी साम्यक्षये पायस बसा दिया था। नाम कृष्यास्थ में से इसी साम्यक्षये पायस बसा दिया था। नाम कृष्यास्थ में से बतार, दह अपने दियोगां भी। जानरे, नामरे, स्थाराम,स्वाय बादि सब्दे स्व कृष्यासक स्था तहीं,

मुख्यसंत्रासमीधी प्राच्य करामात करने प्रयोग्याध्यस्में दिलकायी देती हैं। उस सारको एकामें कर्मोने विदेश परिध्यत किया, पेणा पिणकारी देती हैं। व्योग्याध्यस्में सत्तको धूमिक्य कर्मुत हैं। सारको सुक्रमीतात्मीकी धान-शृति थे। इस व्यावस्तिने जुनमेंसे सीविज्य करोत होता है। कवाव्यमी और भारती गोगों ही सीरामने परस कर्म हैं, व्यावकों सेतीयाव सीरामन क्षांत्र क्षांत्र करा कर्म हैं, व्यावकों सीरामने सीरामन क्षांत्र क्षांत्र होता है। इससे भी भारतांत्री संयोग्याध धनुस्व दिया। इस्ते सामने व्यावस्थाने सीरामने साम करना करा है, कवाव्यकों की तत्त संयोगों दहरूर बार्च करनेदा हमा। धारोभाव्य वर्सन्य होता है।

कार्तिक संबोधकी वर्तका वार्तिक संबोधका विधेव सहस्य है। वर्तिके सावित्र रहकर भी मनुष्य सनसे हुए रह सक्का है। दिन्तका कार्रीयों कार्तिक सावित सावित की स कुका क्यार कार्ये कार्ये विवाद किस्तर सकता है। इसके हिस्स रहार्तिक विधोवों भी सम्बन्धित संदेश रह सकता

धर्मात् 'मोग्रेजि फने ।

घोड करके'-धपनी तर

बिया है। इनसीवासमीवे

मृति हैं। मरतजीकी मौग

अरय न घरम न काम र

जनम जनम रति रामप

इसमकार खोकमान्यके

भरतजीमें वियोग-मकिका

इसी कारण वे दावसीदासजीके

सेवाधर्मका बत्तम रीविसे पावन वि

पूर्वं परिपातन किया, ईंग्सरका विस

ईंबरी बाह्य मानकर ही प्रवासक्त

क्षेत्र ईश्वरको धर्मण करके स्वयं सदा

रहकर अरवय-बासका अनुसव किया ।।

वसर विषा है।

है। इसमें संवम कमौटी है। मिकड़ी तीयता नियोगमे पड़ती है। यदि घानन्य ही हैता जाय तो प्रयक्त स्वतान्य-मातिके धानन्त्रकी भवेषा स्तराम्य मातिके प्रवर्षोमें की भागन्य मिलवा है, यह कुए भीर ही है, केवल उसके प्रमुख करने योग्य।रसिकता होनी चाहिये। मक्कोंने यह रसिकता दोती है यतः वे मुक्तिकी इन्या न करके मिक्ति ही सुली रहते हैं। मिकिका बार्य है बाह्य विशेषामें चान्तरिक ऐस्प ! यह कोई मामूजी माम महीं, यह तो परम भाग है। मुक्ति भी बदकर प्रहोसाम्य है। सरतानिक यही सौमाग्य था। खच्मवानीका भी चहीमाग्य था। पर प्रथम को बह हमें नतीय नहीं भीर दूसरे वह वाछविक है भी नहीं। इसका कारण 'संगूर सहें हैं। यह नहीं बविक 'वरवास मीहा है। यही है। मरतग्रीके नाम्पर्मे उपवासकी मपुरता है। 'संन्यासीको भी मोचका जोभ होता ही है।' गीता-रहस्यमें लोकमान्यने ऐसा चार्चच किया है, पर हमारे सापु-सन्ताने इस बाडेपसे बचनेका भी तरीका हुँह निकाबा है। उन्होंने जोमको ही संन्यास है बाबा। स्वयं विवसीदासजी भी अकिकी नोम-बोटीवर राजी हैं। मुक्तिकी निगमानीका बन्होंने विरस्कार किया । गुखसीवासभीने स्पष्ट धी कहा है- गुक्रति निराद्धि अगति छोमाने। 'ज्ञानदेव महाराजने भी 'भीग-मोह्य निवले ण पायातली ।' 'मोह्माची सोटी वाँची करी' 'बहुँ पुरचार्वा शिरी। भाकी वैसी।' श्रादि वसनोस श्रकिको भक्तिकी चेरी यनाया है चीर सामुवर गुकाराम महाराजने सी 'नवी मदावान बात्मारेणीतमान' कह करके युक्तिको इम्मीका ही दे बाबा है। श्रीपुक्तायने मक्तिको युक्तिसे कई स्वामीम शेष्ठ यतकाया है। गुजरातके नस्सी मेहता तो 'बरिना नन तो मुकि न सांगे' की ही स्टन्त समाया करते थे। सारांश, कि सद्य भागवत-घर्मीय वैध्यव-मक्टमण सुक्तिई लोभते पूर्णतया गुक्त रहे हैं। इस वैष्णव-परम्परा-का बद्रम भक्तिरोमिया महादसे हैं। 'नैवान् विशन ऋषणान् विमुश पतः" सर्यात् 'इन गरीयाँको छोडकर में शकेबा ही मुक्त होना नहीं चाहता' यह सूखा खवाब ग्रहावने र्रोतहजीको दिया था। कलियुगर्ने झौत, स्मार्व, संन्यास-

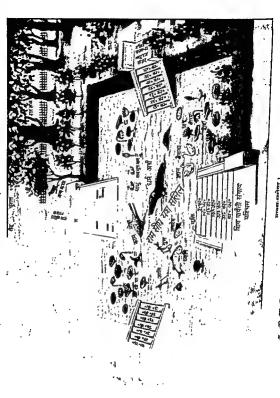
नियमादि विपम वर्तोका पालन करके रलनेवासे देहके परदेको पतवा कर कार कहते हैं कि पदि भरतजी जैसे भक्त पैरा वैसे पवितको शमके सम्मुख कौन करवा सिय-राम-त्रेम-पियुष-पूरन होत जनम शुनि-मन-अगम-जम-नियम-सम-दम विश्म मत दुख-दाह-दारिद-देम-दूबन सुजस-मिस अपह कतिकाल गुलसी-से सटहिं इति राम-सनमुख । रामायकर्मे राम-सत्ता भारत, मारतमें शहुः पराक्रमी भरत चौर भागवतमें बीवन्मुक बड़ ३ वीन भरत माधीन इतिहासमें मसिद हैं। दिन 'मारतवर्ष'संशा शकुन्तवाके वीर भरतसे मिळी हो। वृतिहासिकोंका चलुमान है, श्रीपृक्रनायजीने का यह संज्ञा मास होना बतवाया है और गुबसीय कदाचित् इसको रामभक्त भरतसे मात यतवाते ह इनु भी हो पर चात्र है वियोगी मारतके क्षिपे भारत वियोग-मण्डिका चावर्री सब प्रकार धनुकरणीय है गुजसीवासधीने इस भावरांको पवित्र भनुमारणं गरि।

करके इमारे सम्मुख रहा है। उसके धनमा बाराव

ERE REITS STOR A

मार्गकी स्थापना करनेनाले सीरांकराचार्यने मी--ब्रह्मच्याथाय कर्माणि संगं तकत्वा करोति यः 📭 --इस गीताडे सोकपर भाष्य काते हुए 'संगं लक्ता'





ţ

प्रार्थना !

सविदानन्द सनातन रूपः । अगुण जब अध्यय सहस्र जन्मः ।। अगोचर आदि अनादि अपारः । विश्वच्यापकः विशु विश्वाचारः ॥

न पाता जिनकी कोई याह ।
चुद्धि-चल हो जाते गुनराह ।।
सन्त श्रदालु, तर्क कर त्याग ।
सदा भजते मनके जनुराग ॥

समझकर विषवत् सारे भोग-त्याग, हो जाते स्वस्य निरोगः। एक बस, करते प्रियकी चाहः। विचरते जगमें बे-परवाहः।

धरा धन घाम नाम आराम। समी कुछ राम विखनविशाम॥ देखते सचर्चे, ऐसे भक्त। सतत रहते विन्तन-आसकः॥

प्रेम-सागरकी तीक्ष्ण तरंग। बाँच मर्यादाका कर अंग॥ वहा छै जाती, जब शुति-धार। सन्त तप करते प्रेम-पुकार॥ त्रेय-का विद्युत हो भीराम । मक-मन-रंबन बति अभिराम ॥ दिव्य यानग्र-गारीर-यर चार-बनोला, हरि केते अवतार ॥

यदन-मन-मोहन, मुनि-मन-हरण । सुरातुर सकल विश्व सुल-करण ॥ मपुर मञ्जूल मूरति धुनिमान् । विविध कीद्रा करते भगवान् ॥

द्यावरा करते वग-उदार । भेगसे, तथा किसीको मार ॥ विविध सीला विज्ञाल सुचि वित्र । अलौकिक सक्षकर समी विवित्र ॥ बिन्हें गा-सुनकर सब संमार । सहज होता यत्र-मारिपि पार ॥ तोड् माना-बन्धन जग-जान । देसना 'सीय-राम' हर-हास ॥

बही सुन्दर यूद् युगत-स्वरूप। दिसाते रहो राम रपु-भूप॥ 'सक्तत वय सीय-रामधय' वान। कर्रे सबक्षो क्ष्माम तब मान॥

धरिक्ष

रामायण हमें क्या सिखाती है

१-ग्रद सचिदानम्बयन एक परमाग्मा ही सर्वत्र व्यास है भीर मसिख विरव एवं विश्वको घटनाएँ वसीका स्वरूप चौर खीवा है।

१३-प्रजारक्षनके जिये पाय-प्रिय बस्तुका मी षर देना राजाका प्रचान धर्म है । क्वाहरण-मीरा सीता-स्वाग ।

२-परमात्मा समय-समयपर चवतार घारयकर प्रेम-हारा सापुर्धोका चीर व्यवहारा बुटोंका बदार करनेके निये जोडकरयाणार्थं जादशं कीखा करते हैं।

१४-मजाहितके बिये बजादि कमोंमें सर्वस्त । बासना । बदाहरण-दरास्य भीर भीराम । ३१-वर्मपर भाषाचार और बीजातिपर जुड़म क

१-भगवान्की शरवागित ही उदारका सर्वोत्तम उपाय है। उदाहरण-विभीषण ।

बहे-से-बहे शक्तियाखी सम्राटका विनास ही जाता उदाहरण-रावण। १ द-मित्रके लिये प्रायतक देनेको तैवार रहना अव बसके सभी कार्व करना । बदाहरण--भीराम-सुमीन और थीराम-विभीपण ।

४-सत्य ही परम धर्म है, सत्यक्रे किये धन, माग, देश्वर्य समीका सुलद्वंक त्याम कर देना चाहिये । ववाहरण-श्रीराम ।

१७-निष्काम सेवा-भावसे सदा सर्वता मगरान्हे बासस्बर्धे क्यो रहना । उदाहरयः—धीहन्मान्ती ।

१-स**नु**च्य-त्रीवनका परम ध्येष परमात्माकी मारि करमा है भीर वह मगवत्-ग्रहणागतिपूर्वक संसारके मल कर्म इंथरार्च त्यागञ्जलिते कवासक्ति-सून्य होकर ६-वर्षाध्रम-घर्मका पातन करना परम कर्तव्य है।

१८-सौवके पुत्रॉपर भी भेम करना। उत्ताहरण कौसल्या, सुमित्रा। १६-प्रतिका-पाखनके लिये सगे माईतकका इसके मित हदयमें पूर्व प्रेम रखते हुए भी स्वाम कर देना। बदाहरक-

७-माता-पिताकी सेवा पुत्रका मधान वर्ग है। हरच--श्रीराम, श्रीश्रवचकुमार। **~-स्मियों के** किये पातिमत परम धर्म है। उदाहरण-

बीरामके द्वारा जनमण-त्याग । २०-माहाय-सामुर्घोका सदा दाम-मानसे सन्त्रार करना । उदाहरया-भीराम ।

-पुरुषके क्रिये पुकपती-सतका बासन धाति भावस्यक

२१-व्यवकाराके समय भगवद्यर्थां था समिन्तन दर्र वहाहरया-श्रीराम शादि भाइयोंकी बावबीत।

-भाइषों के जिये सर्वस्य त्यागकर उन्हें शुस्त वर्हुंचाने-करना परम कर्तन्त है। उदाहरण-जीराम, मरत,

२१-गुरु, माता, पिता, बढ़े भाई भादिके चरवॉर्स निष ववाम करमा ।

धर्मामा शजाके निये भाग देवर भी उसकी

२१-पितरोंका अदाप्तंक तर्पय-माद करना ।

मजाका मधान कर्तां वर्ष है। उत्ताहरण-(१) समय सर्वोध्याकी मना।(१) सहाके युवमें

२४-छम्पायका सर्वता और सर्वया मतिनाद करणा उदाहरण-सरम्य । २१-धर्मपासनके विषे बहेन्से-यहा कष्ट सहब करना।

पावी घघमीं राजा**के घ**न्यायका कमी समर्थन

उदाहरण--श्रीराम, खच्मण, सीता, घरत । २६-द्विजमात्रको नित्य टीक समयपर सम्प्रा धारी

देये। सार्गे माई होनेपर भी उसके विदय कहे । उदाहरण-विभीषण ।

२०-सरा निर्मय रहना चाहिने । डसहरथ-औराव-संबंधता ।

२=-षडुविवाह कभी मही करना चाहिये। उदाहरख— भीराम ।

२६-सापु-सन्त-महारमाच्योंके घर्मकार्यकी रचाके लिये सदा तैयार रहना । उदाहरण-श्रीराम-खच्मण

३०-भगना सुरा फरनेवालेके अति भी अच्छा ही वर्ताव करमा । बदाहरख-श्रीरामका वर्ताव कैडेवीके प्रति. श्रीवशिद्वका बर्चाव विश्वामित्रके प्रति ।

११-स्रीके लिये परपुरुषका किसी भी श्रवस्थाने वानवृक्तकर स्पर्शं नहीं करना । उदाहरण--- लडामें सीवाने

इनुसान्की पीठरर चडकर जाना भी ऋरवीकार कर दिया। ६२-पुरुवोंको परस्रीके साम नहीं देखना चाहिये।

जवाहरख-खच्मक्जीने धरसों साथ शहनेपर भी सीताके श्रंग नहीं देले, इससे वे अनके गहने तक नहीं पहचान सके । ३३—साधारण-से-साधारण जीवहे साथ भी प्रेन करता

चाहिये । उदाहरबा-श्रीराम । ३४-भगवान्के चरखोंका साध्य खेकर प्रेमसे उनकी चरवा-राज मस्तकार धारवा कानेसे लड भी चैतन्य हो सकता है। उदाहरण-बहस्या।

३४-वडोंके बीचमें समधिकार महीं बीलना । उदाहरण-राष्ट्रहा (

६६-नास्तिकवाय् किसीका भी महीं मानना । उदाहरण-श्रीरासने जावाजि-सरीखे ऋषि धौर पिताडे जन्तीकी साम नहीं साथी।

चित्र-परिचय

उदारकर्ता भगवान् (रंगीन) बन्दरका सुल-? इड- यह चित्र गीता थ॰ ३२ -शो० ६-७ के धाधारपर वताया गया है। विशाख भवसमुद्रमें धनकी गैँडरी बींपे स्त्रीर भोग-दिजासमें रत स्त्री-प्ररूप गोते ला रहे है। भगवानुका अनन्यसक्त सरावानुकी छोट सन शीट नेत्रोंको खगाये भवस<u>म</u>त्रमें इवते हुए खोगोंको उवारनेके विये निव्कास प्रयक्ष कर रहा है, भगवान् स्वयं सुरदर सुदद गौकापर स्थित हैं और भक्तको बाँह पकड़कर उसे पार से वानेके बिये नौकापर चड़ाना चाहते हैं।

श्रीरामपञ्चायतन ((गीन) पृष्ठ १-भगवान् श्रीराम ीताजी-सदित ·सिंहासनपर विराजमान हैं, भरतजी और वस्मयात्री चॅवर दुखा रहे हैं, रात्रुप्रकी भेंट किये लड़े भीइनुमान्त्री चरण दवा रहे हैं।

श्रीरामगीता—पद्य ४-भी 'राम' शब्दमें सारी सम-विवा बिस्ती है।

सोहै रामसियाकी जोरी--पृष्ठ २०-शुगव बोबीका यान करनेवालोंके जिये बहुत ही सुन्दर चित्र है।

श्रीपरशुराम-राम (रंगीन) प्रह ३६-विवाहके बाद योष्या घौटनेके समय परग्रुरामधी हास्तेमें मिलते हैं, उन्हें खते ही दरारपंत्री अत्यन्त हर बाते हैं, सुनि वशिष्ठ बीह रवामित्र शान्त सारे हैं, श्रीजक्सवात्री तेजसे मर रहे हैं,

भीराम हाथमें भनुष खेते ही चड़ा देते हैं, परश्चरामश्रो कावन्त विक्षित हो जाते हैं। रामायवाश्च पृष्ठ३६ देखिये।

सीता-वनवास प्रह ४१-गंगाके उस पार अवमया-बीने रोते हुए, सीवाको रामका सन्देश सुनाथा, मृतवे ही सीताजी सहम गयीं, सबमय रोने बगे, बना ही करुया-धनक दरम है । चित्र बहुत सुन्दर भाषपूर्व है । रामायखांक प्रज ३२ सीर वा॰ वा॰ था ४८ हेशिये।

थीराम-सीताकी गुप्तमन्त्रणा-४**४ ११ (रंगीन)**— शीताजी पदान्तमें भीरामकी देवताओंका सन्देश सुनाती है। शमायबाद्ध प्रष्ठ २२ देसिये।

शीरामके चरणोंमें भरत (रंगीन) प्रद ६६-शीराम-सीता चित्रकटमें पर्यंदरीके बाहर बेरिकापर कैरे 🏗 लकावधी पास सहे हैं, कुटिवारें दोनों माइबोंडे धनुष-बाया. त्रजवार-बाज बादि टॅंगे हुए हैं। इतनेमें भरतश्री बाबर दरसे ही 'हा वार्य !' कहकर गिर पहते हैं, यहाँ सीराम बीर खबाखडे मात्र देखने ही बोम्प हैं। शताबती पीछे सहे चरकोंमें विरना ही चाहते हैं । निपाइराज हम महिली देसकर बावन्दमें यर रहा है। समापदांक प्रश्न हर था। रा॰ २ । ३३ देशिये ।

कैशेयीकी क्षमा-याचना, (रंगीन) १४ ८१-चित्रकरके स्थानन स्थानमें कैंद्रेपीती श्रीरामाने प्राप्त स्रीत

and the street william and

रामायण हमें नया सिखाती है

१-ग्राय सचिदानन्द्यन पृष्ट परमात्मा ही सर्वत्र ध्वास है भौर प्रसिक्त विरव पृथं विश्वको घटनाएँ उस्रोका स्वरूप भौर जीला है।

२-परमात्मा समय-समयपर कवतार घारवाकर प्रेम-द्वारा साधुर्घोका और व्यवद्वारा दुर्होका उदार करनेके निये लोककरपायार्थ घादशै जीजा करते हैं।

१-भगवान्की शरणागति ही उदारका सर्वोत्तम अपाप है। उदाहरण-विभीषण।

४-सत्य ही परम पर्म है, सत्यके क्रिये धन, माण, ऐवर्ष समीका सुलपूर्वक त्याग कर देना चाहिये । उदाहरण-जीराम । ४-सतुर्य-जीवनका परम च्येष परमात्याकी मासि

४-सनुष्य-जानका एस व्यव परमात्मका मास करना है और वह अगवन्-शस्यागितिष्टंक संसारके समस्य कर्म ईश्वरायं त्यागङ्क्तिसे कजासकि-गूम्य होकर करनेसे सफक्ष हो सकता है।

६-वर्षोश्रम-धर्मका पालन करना परम कर्पन्य है। ७-माता-पिताकी सेवा पुत्रका मधान वर्ष है ।

हबाहरयः—श्रीराम, श्रीधवयङ्गार । म-क्षिपोंके किये पातिवत परम घमे है। बबाहरयः— श्रीसीताजी ।

६-पुरुषके क्षिपे एकपकी-सतका पासन करि आवश्यक है । बहाहरक-भीतम

१०-भाइपोंके दिये सर्पल त्यागकर कर्लेशुल वहुँचाने-ही पोटा करवा परम कर्पल है। उदाहरख-श्रीराम, अरत, अपमय, राष्ट्रम ।

19-धर्मामा शत्राके क्षिये प्राय देवर भी जसकी तेवा करना प्रणाब प्रधान कर्णन्य है। बदाहरय-(1) तनामनके समय धर्माध्याकी प्रजा।(१) कहाके शुद्धी तन्ती प्रणाका काम्मविदान।

१२-धन्यायी धवर्मी राजाने बन्यायना वर्मी समर्थन र करना चारिये ! समे माई होनेपर भी कमने विरद्ध वर्षे रोजा उधित है ! कहाहरथ--विर्मागय ! १२-प्रजारक्षानके लिये प्रायाप्त्रिय वस्तुका भी विसा कर देना राजाका प्रधान धर्म है। बदाहरूय-भीरामधीह सीता-स्वाय।

१७-प्रजाहितके बिये यज्ञादि कर्मोंमें सर्वरर दान बालना । उदाहरण-दशरथ और औराम ।

३१-चर्मेण बलाचार भीर खोजातिपर मुख्य धरो बहे-से-बहे शक्तिशाबी ,सम्राटका विनास हो बाता है ववाहरण-रावण ?

१६-सिन्नके लिये प्रायतक देनेको सैयार रहना ठर्ग उसके सभी कार्य करना । उदाहरय-सीराम-सुप्रीय और श्रीराम-विभीषया ।

३७-निष्काम सेवा-भावसे सदा सर्पदा भगवार्षे चासस्वमें बागे रहना । उवाहरख--मीहनमान्त्री ।

१ स-सीतके पुत्रोंपर भी प्रेम करना। वदाराय-कीसक्या, सुनित्रा।

१६-प्रतिज्ञा-पाधनके लिये सपे माईतक्या इसके प्रति हृत्वसँ पूर्व प्रेम रखते हुए भी त्याम कर देना। दशहरण-

श्रीरासके द्वारा श्रवसण्याम । २०-माहाण-साधुर्मीका सदा दान-माबसे सन्ता करना। वदाहरण-श्रीराम ।

२९-वायवाराके समय भगववार्य वर सविमान वरना । क्रु उदाहरण-श्रीराम चारि भाइपोंकी बातवीत ।

२९-गुर, साता, पिता, वह भाई भारिके बरवीं में निव भवाम करना।

२६-विवरीका अञ्चापृषेत्र तर्पय-बाद करना । २४-वान्यायका सर्वेश और गर्वेण प्रीनगढ करना

वदाहरया---वाचमया । १४--धर्मनायनके विषे धरेनी-वदा कर वदाहरया---कीराम, बच्चम, जीमा, जन्म

२६-दिशमात्रको किन केन

स्य-१६वमात्रका स्कर ज

चोर देख रहे हैं। देवतागक पुष्प-वृष्टि कर रहे हैं। रामायवांक प्रष्ठ ४२३ देखिये।

थीराम-विलाप-पृष्ठ ४४०-लदमग्रके खगनेपर भगवान् विचाप कर रहे हैं, सुपेश वैद्य पास बैठे हैं। हन्मान्त्री द्रोवागिरि उठाये का रहे हैं।

श्रीकीसस्या-मरत-(रंगीन) वृष्ठ ४४१-भरत-शतुम मनिहालसे सीटका साता कैहेवीसे मिखनेके बाद कौसल्यात्रीसे मिळते हैं, भरतजीको सचा प्रेमी और दुखी बानकर माता गोदमें से सेती हैं, दोनों माँ बेटे से रहे हैं राभाववाङ प्रष्ठ ७७ और बा॰रामावक् तथा द्व॰रामावक्से देखिये ।

थीसीताकी अझि-परीक्षा (ईगीन) एड ४६०-सीताको खेकर अधिदेवता कजती हुई लपटोंमेंसे प्रकट होकर मोरामको सीता समर्थित करते हैं। श्रीराम-स्वयमधा भागम् भौर धाश्रयंमें निमप्त हैं, उनके मुख धौर शरीरपर मनिका मकाशा पहरहा है। रामायकाङ प्रवर्ग तथा

बार शार्थ। ११ म देखिये

अहल्याका उद्धार-पृष्ठ ४७१, कथा प्रसिद् है। विसीरामायया-बालकायड देलिये ।

थीसीताका-पाताल-प्रवेश-एड २००-पृष्वी माता वर्ष प्रकट होकर सीताको खेकर पातालमें प्रवेश कर रही हैं। ीराम-अच्मण, शुनिगय और लव-कुरा बाश्चर्य बीर शोक्टरें व रहे हैं। रामायवाङ प्रष्ठ १४ देखिये।

मानल-सरोधर (रंगीन) एड २०१-धीरामचरित-निसक्षे भारममें गोसाई जीने मानस-सरका बना ही सुरदर ^{एक} बाँचा है। उसीके क्राधारपर यह सुन्दर शिकामद चित्र गया गया है। मानस-भाजकायस्में यह प्रसङ्घ देखना हिये।

श्रीहनूमान्जीके चित्र**-**® हा-दाइके बाद सीता चरण वन्दन विगिरि खाना

हर-गव°-हरया र तोदना भीर हृदय चीरकर दिसलाना

तामका शानोपदेश

पे**रवपर भीहन्**मान्जी रनुमान्त्रीपर इन्द्रका बच्च गिराना

हैनका परिचय 'श्रीहनूमान्जीका सङ्ख'शोर्थक खेल युड

इक्ट में देखिये। वित्र भेजनेके लिये भीसहक्तिप्रसार मयदक्षी शंधेरीको सनेक धन्यवाद !

माननीय काशीनरेशकी अभृतपूर्व परमसुन्दर रामायणके चित्र-30

मूल चित्र रंगीन बने ही सुन्दर हैं, सारी शामावश्र वित्रोंसे नहीं है, बन्हीं वित्रोंमेंसे १० वित्रोंके साथा-चित्रोंके बजाक बनवाकर चित्र झावे गये हैं। वे चित्र वाब बीकीसबकिसोरबी बी॰ए॰ एक॰टी॰से हमें मास हुए हैं। इसके लिये इस माननीय महाराज काशीनरेश और बीकौसवकितोरवीके बने ही कृतक हैं। वित्रोंके परिचयके विये अध्येक चित्रके भीचे घटमाकसको बसछानेवासी चौपाई वा दोहा दे दिया गया है, उसीके बासपासका पूरा विश्वय जल्पेक चित्र है, भीरामचरितमानसकी क्या निकासकर मिखान कीजिये । प्रत्येक वित्र कथाके साधारपर ही बना है !

थीमवोध्यापुरीके चित्र--३१

वे चित्र इमें सम्मान्य शयबहातुर अवधवासी आजा सीतारामती ची॰ ए॰ और उनके पुरुष बाबू कौसब-कियोरओ बीठ ए॰ एक॰ टी॰ की हुएसे बास हुए हैं। इसबिये इस उनके परम इतक हैं। चित्रोंका पूरा परिचय बाबुसाइव विसक्त भेड व सके। खाबामी बिसित 'सबोरवाची काँकी' पुलक्षरूपमें सचाशित होवेपर माथः सब वित्रोंका ऐतिहासिक परिचय पारकों की मिस सकेगा। अखक तैयार हो रही है।

थीजनकपुरधाम, चित्र-६ श्रीजानकोजीका श्रीकला सन्दिर-वह वन्दिर महाराजा टीकमगहका बनवाया हजा है। कहा जाता है, महाराजने सबह जान रुपये अपय किये थे, जिसमें केवल हार मन्दिरके निर्माचमें मध साक्ष दपये सर्च E 92

बीजानकीजीका सिंहासन-(श्रीजानकी-मन्दिरके क्रम्पर यह चाँबी-सोनेका सिंहासन है, यह भी राजा टांक्स-गहने खरामग ४०इजार राये समाक्त बनशबा था। इसरार श्रीराम-जानकोकी सुन्दर मृतियाँ निराजमान हैं।)रह ३२८

श्रीशानकी गन्दिरके भीतर श्रीवगमोहनगन्दिरका पूर्वी दस्य-प्रष्ठ ३२८

श्रीराममन्दिरके सामनेका चनुत्रकेत्रमे पूर्वी दरक-

 श्रीरामचन्द्रं शरणं प्रपर्धः । रदी हैं, थीराम उन्हें सालवना हे रहे हैं। रामायबाद्ध प्रष्ट ८१ तथा शस्त्रहम रा० २ वेसिये। कपर छत्र है, भरतजी ध्यानस्य हुए स्वय नीचे धूप बज रही है। मानस उत्तरकारा

थीराम-मतिहा-(रंगीन) युष्ट ११३—ऋपिगोंकी इंडियॉका देर देखकर श्रीराम राजसोंको मारनेकी प्रतिशा युजा उठाहर कर रहे हैं। श्रीलक्सवात्री सुरममावले वह दरव देख रहे हैं, सीवाजी सोच रही हैं, सुनि मलब ही रहे हैं।

भकः प्रवर रामाजी-पृष्ठ १२१-भावका संवित परिचय कनवायामें निकस चुका है। रामाययाङ प्रव

थीसीताराम-(रंगीन) वृष्ठ ११२-वनवासका निव्यवकर भीराम सीतानीके महस्रमें नाकर रान्हें यह संवाद खुनाते हैं, सीताओं साब चलनेको बहें ही प्रेम चीर चार्तमावते मार्चना कर रही हैं। बा॰ स॰ २। ३० देखिये।

थीशिय-परिद्धम-(रंगीम) १४ ३७६-शिवजी बारात तोकर पहुँचे हैं, गिरिकाकी माता दमादका परस्व काने स्वर्य-याल खेकर खियोंके साथ दरवानेवर खाली है, परम तरंगी भूतोंको देलकर कियाँ हर गणी हैं, मैनानीके चेहरेपर हुंग्ल, परिवाप, अब, निरागाडे भाव खुष विजित किये गये हैं, खिबजी गामीर हैंसमुख खरे हैं, बाती देवता चौर मृत-मेत दहाका मारकर हैंस रहे हैं। गोलाईबीके समावशका

बालकायह देलिये। श्रीराम-प्रावरी-(रंगीन) वृष्ठ १६८-परम मेमिका तपस्तिमी शवरीभी भीरामको खुने हुए कल वहें ही भेमसे विवा रही है, वित्र प्रशंतीय है।

थीसीता-अनुस्या-(गंगीन) पृष्ठ १११-वात्रिमुनि-बाधमका धन्तःपुर है, श्रीसीतात्री सुनिषकी अनुस्था-है बरवॉर्मे गिर रही हैं, बनुस्यामी बाजीवॉड देवर मिकिका कपरेश करती है। गुमाईमीकी रामायक धीविभ्यामित्रकी राममिसा-एड ११४-व्यस्थ

इरवारमें बाविष्यसिवनी राम-सच्मयको साँग रहे हैं, विन्तामम है, बीराम-बहमण गुमबता हरे हैं। रिरामजन्म-एड २३६~बह माचीन चित्र सीचीरास-

रामनातुकान्यञ्चन (रंगीक) १४ १४८--

बाचनातुका राजीतहासनता सुपन्नित है।

थीरामायण-गान-शिक्षा-पृष् वास्त्रीकित्री सीतापुत्र बासक सव-पुराकी रामायणका वही गान तिखा रहे हैं जिसक

वाजकोंने रामकी सारी समाको मुख क सदाप्रसम्भगवान् श्रीरामचन्द्र-ष्टि २८० यह ब्यानडे योग्य बड़ा ही सनोहर थीराम भीर काकमुगुरिड-(रंगीन) सगवान्की वालबीखाका चानन्द लुदनेके जिये सं वी वोटेने कीए बने हैं। बोराम माबच्चा दिता

कौथा बढ़ना चाहता है और पीछेकी बोर ताक। बहा सुन्दर चित्र है। दुबसीरामायय उत्तरकावर सग्रविह संवाद देखिये। खुवेल-पहाड्पर थीरामकी फ्राँकी (रंगीव

१४१-परिचय उसी प्रवर्मे सूची रामाययकी चौतार

थीगोसाई तुलसीदासजी १४ ११०। शीरामायण-मू म-१४ १८६-परिचर विस्ती ह वाना वा सकता है, इसके मेपक एं॰ मीमगवरासनी मिन्नो धनेक धन्यवाद ।

भजीय-रथ-पृष्ठ ४००-सर शहस पुरुषे विहे धारा तव श्रीरामको स्य-विश्वीय देसका विभीवयाने काा-प्रे नाय! आप विना स्य रात्रवाही कैसे बीत सहेंगे जीशमने बत्तर दिया—'सले । जिस स्वसे दिश्य ह कोती है वह रच ही कुसरा है।' इसके बाह औराक जिस रंगका वर्णन किया, वसीने भाषास्त्र वह विश्व बनाग गवा है। मानमका सहाकारक देखिये।

थीसीताजीके गहने (रंगीन) वृष्ट ११०-तुर्गीके विचे हुए गहने पहचाननेके जिने भीरामती गार्र कमार दिला रहे हैं, शोकने मरे बदमगत्री बहते हैं-मैं इस

मही बहचानमा । रामाबद्यांच ४४ ४३४, वा॰ रा॰ ४४। देनिये । थीराम भीर क्षेत्रट-१४ ४२१-मंगाने क्षेत्र भाग्यकाम केवट भीरामके चरण वहें चाकों वो सार्वे

वेश्टका चेहरा व्यानम्पूर्ण है, जीराम झारांचि उपनी है

थोर देख रहे हैं। देवतागय पुष्प-बृष्टि कर रहे हैं। रामावयांक प्रव ४२३ देखिये ।

थीराम-विलाप-१४ ४४०-सरमयके क्षगनेपर भगवान् विकाष कर रहे हैं, सुचेवा वैद्य पास बैठे हैं। हन्मान्त्री बोखिगिरि बढावे का रहे हैं।

श्रीकीसस्या-मरस-(रंगीन) वह ४४१-मरत-प्रवृह्म ननिहातसे सीटकर माता कैडेवीसे सिजनेके बाद कौसल्याजीसे मिलते हैं, भरतजीको सचा प्रेमी भीर दुली बावकर माता गोवमें से सेती हैं, दोनों माँ-बेटे से रहे हैं रामावव्याङ पृष्ठ ७७ और घा०रामायव तथा त॰रामायवर्मे देखिये ।

श्रीसीताकी अग्नि-परीक्षा (श्रीव) पृष्ठ ४६०-सीताको खेकर मामिदेवता सकती हुई सपटोंमेंले मकट होक्द श्रीरामको सीता समर्पित करते हैं। श्रीराम-सचमण भागन्द भौर भाश्रयमें निमार हैं, जनके मुख और शरीरपर यमिका प्रकारा एवं रहा है। रामायवाड एड रं॰ तथा बार रार्ड । ११ म देखिये

अद्दल्याका उद्धार-१४ ४०३, कथा असिव है। विसीरामायय-बासकायह देखिये ।

थीसीताका-पाताल-प्रयेश-प्रद १००-पृथ्वी माता वर्ष मकट होकर सीताको खेकर पातालमें प्रवेश कर रही हैं। ीराम-सचमया, श्रुनिराय भीर कव-दुःश साक्षये और शोकर्ने ए हो हैं। रामायबाद प्रष्ठ १४ देखिये।

मानस-सरोबर (रंगीन) इह २०१-श्रीरामचरितः वसके बारम्भमें गोलाई जीने मानस-सरका बदा ही शुन्दर पढ बाँधा है। वसीके आधारपर यह सुन्दर शिचामद चित्र राया गया है। मानस-बाजकायउमें यह प्रसङ्घ देखना विवे ।

धीहन्मान्जीके चित्र-७

हा-प्रहत्ने बादः सीता चरण कन्दन किंगिरि खाना हर-गब करण

रिवोदना भीर हुद्दय चीरकर दिखळाना

तासका जानोपदेश

पैन्यपर भीइन्सान्जी रनुमान्त्रीपर इन्द्रका बज्र विसाना

^{हरका परिचय} 'श्रीहनूमान्जीका महत्त्व' शीर्षंक क्षेत्र पृष्ठ 28 2 2 2

४७६ में देखिये। चित्र भेवनेके खिमे भीसन्नक्तिप्रसारव मवडली शंधेरीको चनेक चन्यवाद !

माननीय काशीनरेशकी अमृतपूर्व परमसुन्दर रामायणके चित्र-३०

मुख वित्र रंगीन बड़े ही सुन्दर हैं, सारी रामायक वित्रोंसे मती है, बन्हीं वित्रोमेंसे १० वित्रोंके बावा-चित्रों के ब्लाक बनवाकर चित्र मार्च गये हैं। में चित्र वाब् भीकौससकियोरकी बी ब्यं व्यवश्री की इसे मास हुए हैं। इसके बिये इस माननीय महाराज काशीनरेश कीर जीकीसविक्योरजीके बदे ही कृतश है। विश्वोंके परिवयके विवे प्रत्येक चित्रके शीचे घटनाक्रमको बतवानेवाकी चौपाई या दोहा दे दिया गया है, उसीके चासपासका पूरा वित्रस व्ययेक चित्र है, भीरामचरितमानसभी क्रया निकासकर मिसान कीजिये । प्राप्तेक वित्र क्याके शाबारपर ही बना है !

श्रीभयोध्यापुरीके चित्र—३१

वे चित्र हमें सम्मान्य शयवहातुर अवधवासी खावा सीतारामत्री बी॰ ए॰ और इनके सुप्रत्र बाबू कौसब-किसोरजी बीठ ए॰ एक॰ टी॰ की इपासे जात हुए हैं। इसविये इस डनके बाम कृत्य हैं। चित्रोंका दूरा परिचय वायुनाइव क्रिलकर भेत्र न सके । बाबाधी क्रिसिन 'सबोम्याची साँबी' पुलबस्पमें भकाशित होनेपर माथा सब बिजोंका ऐतिहासिक परिचय शहकोंकी मिक सकेगा। प्रकड़ सैपार हो रही है।

धीजनकपुरधाम, विच-६ श्रीजानकीजीका श्रीवत्ता मन्दिर-कड मन्दिर महाराजा टीकमगहका बनवाया हुन्या है। कहा बाता है, महाराजने संबद बाल रुपये स्थय किये थे, जिसमें क्षेत्रज्ञ हम मन्दिरके निर्मायमें मध बागा राये सर्थ हर ।

श्रीजानकीजीका सिहासन-(श्रीजानकी-शरिहर हे सन्दर यह चाँडी-सोनेका सिंहासव है, यह भी राजा टीक्स-गहने सरामय ४०६जार राये समादर वश्राचा था। इसपर श्रीराम-बानकोकी सुरुद्दर मूर्तिको किराजमान है ।) इस ३ ९८

सीजानकी मन्त्रिरके सीनर अहिमामोहकमन्त्रिरका पूर्वी दरव-पृष्ठ ३२८

जीरामनन्दिरके सामनेका बनुक्तेक्से पूर्व दरव-

o • श्रारामचन्द्र शरणः

श्रीराममन्द्रिसम् प्राचीन मूर्तियाँ-पृष्ट ६२६ श्रीरामजीके मन्द्रिस्का पश्चिमी दर्थ सेठ समदासजीकी

हिरपेंस()से-पृष्ठ ३२६ श्रीक्षप्रमण्डा मन्दिर जानकी मन्दिरसे उत्तर-पृष्ठ३२६

ये सातों वित्र भीरपुनग्दनमसादसिंहजीकी मेरवासे

प साता । चत्र कारपुनन्दनमसादासहबाका अर्थास क्रिपुरवासी सेट भीरामदासभीकी क्रवासे मास हुए हैं। इतीने फोटो बतारनेतकका रार्ष चवने पाससे दिवा है। स्के ब्रिये हम बनके कृतज्ञ हैं।

M: गयेरपुरके चित्र ध ।

शान्तादेवीका मन्दिर—शान्वात्री भगवाद् श्रीहाम-यदी बहित ऋष्यशहको स्याही गयी थी 1 प्रष्ट ३४३

सीराज्ञीकापिकी समाधि—शान्ताजीके मन्दिर्के भ्रम एक मन्दिर बना हुचा है, इसीको वापिकी समाधि खाते हैं। एक-१५३

श्रीरामके सोनेका स्थान—कहा जाता है कि वन ते समय यहाँ मगवान सोये थे।

भीगौरीग्रहर-पाठगाला—यह पाठगाला श्रीमती इप्राह्म योघाङ्कैयरिजी सामापुर स्टेटने सपने पतिकी

वयस्मृतिमें स्वापित की थी। एष्ट ३४१ , यही स्थान निपाइराजकी राजधानी और श्रद्धप्यग्रहका वासस्थान बतवाया जाता है। धातकत इसका नाम

(बासरपान परावाप भागा है। आजका इतका गान रंगरीर है। कहते हैं पहाँसे औहांम, जफाया, जानकीने ।यस वेप घर गंगा पार किया था। ये चित्र और विवस्य ।युद्ध महेद्यस्ताइनी चाखिमकाजिजने कृत्रापूर्वक भेजा है, सके लिये वर्ष्ट्र झाँदिक घम्यवाद है।

चित्रकृटके विश—२२

ये चित्र भी श्रदेय लाखाजी शीर बाबू बौसबकियोरजी-ी हुगासे ही मिले हैं। इनका परिचय खाखाजी जिख्ति चत्रदृरकी माँकी नामक पुस्तकमें शीम हो मकारितत होगा।

सरद्वाज आश्रम (प्रयाग)—रा॰ ष॰वाबा सीवा-ामबीद्वारा भार । प्रष्ट-३७७

. नासिक पञ्चवरी, चित्र—८

।सिक् गोदावरी ध्रय ३, नासिक्

त्रोदावरी दरय २,साइका-नाक्षा, पञ्चवटीमें रीराममन्दिर (यही प्रधान सन्दिर हैं) भोदाबरीयर नारीकहरका मन्दिर, श्यमकेश्वर मन्दिर (वाहरी दरव) मह मसिद्ध पीठ गोदावरीसे १= मीज बूर हैं। गोदाबरीका दुव सामुख्य और बंगामन्दिर-इसी कुण्डमें स्नान किया जाता है।

इन बाट चित्रोंमें तीन बाबू कीसबिक्योरजीकी कृपासे बीर शेव 'सुसुचु'-सम्पादक-पं॰ सक्सम्य रामक्षत्र पांगारकर थी॰ ए॰ की कृपासे मिसे हैं। एतदर्य सम्बाद!

सेतुबन्ध रामेश्वरम्-चित्र—६

हन यः विश्रोमें ठीन बाद् धर्मचन्द्र सेनका रंपून मशासिसे और शेप बाद् कीसड़कियोरशीसे मिखे हैं। इस कृपाके किये चन्पवाद।

श्रीकाशीके चित्र—८।

प्रहाद्याट, पं॰ गंगारामजी सोग्रीका घर । हे १७६ पं॰ गंगारामजी सोग्रीके घरका बाहरी दरव ।

गोस्वामीओ पहलेपहल कार्योमें महाइपारण सारवादी दुष्करवा माह्य पं॰ गंगारामजी बोर्योडे घर रहते ये, बोर्योजीसे सापकां बहा प्रेम था । बोर्योजीडे पास वहर्तीया वारवाहका बनाया हुआ मोस्वामीजीडा एक चित्र या वो शब्द बनवे क्लाधिकार पं॰रव्योडेडायें बो स्थासके पास है। ज्यासमीने मण्ड करने गोस्वामीजीडी एक सूर्ति कनवाकर स्थापन कर दी है।

दिनवपत्रिका विज्ञतेका स्थाव ।
पुत्रसीयाट ।
श्रीद्वामारवीका सन्दिर ।
श्रीद्वामारवीका सन्दिर ।
श्रीद्वामारवीका सिंग ।
स्कटमोवनका मीतरी दरण ।
संकटमोवनका बाहरी दरण ।

संबदमोचन इन्मान्डीकी स्वापना गुलाई जीने की थी।

ये चित्र हिन्दू रहजके हेदमारत पं॰ शतनात्ववडी मिल्रकी॰पृ॰की मेरवारो उनके निवामी श्रीशेनतात्ववडी कर्न परिकास जनस्वाकर दिवे हैं, प्रवर्ष दोनी सन्दर्भके कर्नक धन्यवाड !

श्चक धन्त्रवाप



रामायणकालीन भारतवर्ष नं ॰ ४



(मानचित्रकार शी थी॰एव॰परेर)

त्तमा-याचना

गणाद शीरामका चरित्र बोक-सखोकों
निज परक कारायवारी है। इससे
प्रमुख्य कारायवारी है। इससे
प्रमुख्य कारायवारी है। इससे
प्रमुख्य कारायवारी है। इससे
प्रमुख्य कारायवार बीच्या सार्व स्वाप्त कार्य है। सम्बर्ध सार्व सिक्स स्वाप्त स्

किन्तुगन्सम् जुग भान मोई को नर कर निस्वास । गाद राम-गुन-पन विमक भवतः विमुद्धि प्रवास ।।

सर्वाता, विश्वस्य परामामाई पूर्व वयायोग्य इदिश्वी विद्याबदाई माते सब्बे पूर्व भीर वय्त्रीय मातवे इर नमतार्थेक यह निवेदन करना चाले हैं कि हम भीराम भीर सीहरूपको सावाद पूर्वम्य परामाया मातवे हैं भीर सदाससिद्ध कर वस्त्री स्वीतिक शुक्र कर्मीय वाने और सुननेमें हो चपना परम शौभाव्य समझते हैं चपनी बौक्षिक और विपय-विभोदित सनिव्याचिक दुष्पं पुद्धिके हारा भगवान् स्रोतास और स्रोहस्त्यके स्रीता परिलोंकी समझोधना काने भीर उनके विचतानुषित्यके सीमांखा करनेका हम चपना स्विकास महितसकी।

किसी भी बडाने भगवानकी क्षीलाधींका स्थान की उपका गक-गान होना इसलोगोंके लिये परम कल्यासम्ब है, इसी निश्रवसे रामावयात्र प्रवाहित करनेका प्रयास किया गया है। इस इस बातको राव सममते हैं कि रामायकांकके सम्पादककी योग्यता हमार्थे मधी है। म सो चाम्यन्तरिक रहस्य समस्रतेके विषे हृदयमें भीरामधी शक्ति हो है कीर न वाहा परीचयके जिये विद्या ही है. इसीसे सनमें कई बार श्करवा होनेपर भी परा बाहम नहीं होता पर। इसके श्रतिरिक्त किम भी श्रतेक भाषे। इस कार्यमें प्रयास सहायत बाबा राधवनासतीको सरकारने श्रेष्टमाब यना जिया, एक दूसरे सहायक भी सन्याधह-संमाममें कने शये, वक निप्रय चित्रकार ठीक समयपर बीमार पर शये. बलाक बतानेवाले. चीर चित्र सापनेवाले बारीगर भी बीमार हो गये, एक बड़ी मशीन हर गयी और सनमें भी धनेक प्रकारकी सर्वेगें वहीं, परन्तु 'धेरे मन बतु और है बाताके बार भीर ।" सीरामको यह कार्य कराना सभीत था. इसीसे हो गया । हम जब भएनी भोर देखते हैं हो हमें निस्संकोच यह सन्य मुक्तकपटने स्वीकार करना परशा है कि हमारी शक्ति हमारी थोम्पता हमारी हुन्या धीर क्रांती ब्रावदे बसपर रामाययांद नहीं निवास है। बीरासरे प्रेरका की, हपास और प्रेमी निर्पति कृपावर वार्शकर बसाइ दिवापा, धेलक महोदयाँने कृपाकृत बेल मेहे. मुद्योग्य विश्वकार मिस्र गये, डोवॉंडे विश्वनांमहर्में सम्मान्य शथवदाहर खाखा सीतारामत्री बी॰ प्॰ तथा धारके सपुत्र खाखा कीसवकिछोरती बो०पु०एस० ही॰, सुगुषु-सम्पादक क्षीक्षण्याच रामचन्त्र चाहारकर ची॰ व॰, चीवरी श्रीरचनम्बन्नमाइसिंहती, श्रीपत महेरायमाहती मी॰ दि॰ वि॰ विद्यासक, में॰ शामनारायक ही किय बी॰ म॰ कैम स दिन्द रकृत काती, मेड शमदापती, बीवर्नकार्जी खेमका पं संबद्धानकी क्योच्या कारिये महायश प्राप्त हुई, स्माद बनवाने और विकारि कारावर भेडरेंमें जीवजर्गावाद की



हे राम !

स्रवन सुत्रस सुनि आयउँ, प्रमु भंवन भव-मीर । त्राहि त्राहि आरतिहरन, सरनसुखद रघुवीर ॥

हे शरणागतवस्तल राम ! हे दीनों और पतितोंके आश्रयदाता लोकामिराम ! हे अपने आचरणोंसे लोकपर्यादाकी स्थापना करनेवाले सर्वाधार राम ! इस तुम्हारी धारण हैं। प्रभो ! रक्षा करो, रक्षा करो ! इम अज्ञान हैं, तुम्हारी 'शिव-विरंचि-मोहिनी' मायामें फॅस रहे हैं, हमें कर्तव्याकर्तव्यका पता नहीं है, इसीसे तुम्हें छोदकर विपयोंके अनुरागी धन रहे हैं। नाथ ! अपनी सहज द्यासे हमारी रक्षा करो । एक वार जो शरण होकर यह कह देता है कि में तुम्हारी शरण हूँ तुम उसको अमय कर देते हो, यह मुम्हारा प्रण है, सचमुच प्रमो ! इम तुम्हारी शरण नहीं हुए ! नहीं तो तुम्हारे प्रणके अनुसार अवतक अभय-पद पा गये होते । परन्तु नाथ ! यह भी तो तुम्हारे ही हाय है । हम दीन, पतित, मार्ग-भ्रष्ट और निर्वेल हैं, और तुन दीनवन्यु, पतित-पावन, पथप्रदर्शक और निर्वेलके पल हो ! अब हम कहाँ जायँ, तुम्हारे सिवा हम-सरीखे पामर गरीय दीनोंकी कीन आश्रय देगा ? अपनी ओर देखकर ही अब तो हमें खींचकर अपने चारु वरणोंमें डाल दी। प्रमो ! हमें मोछ नहीं चाहिये, तुम्हारा कोई घाम नहीं चाहिये, स्वर्ग या गर्त्यलोकमें कोई नाम नहीं चाहिये । हमें तो बस, तुम अपनी चरणरजमें लोट-लोटकर बेमुध होनेवाले पागल बना दो. अपने प्रेममें ऐसे मतवाले कर दो, कि लोक-परलोककी कोई सुधि दी न रहे, ऑखोंपर सदा 'वायद-श्रद' ही छायी रहे और तुम उस अलघारासे सदा अपने चरणक्रमेल परारवाने रहा । श्रमो ! वह दिन कय होगा जय-

> मयनं गलद्भुपारया, वदनं गद्भदरस्या गिरा । बुलकेर्निवितं बबुः रुदा, तत्र मायग्रहणे मार्वध्यति ॥

-तुम्हारा नाम सेते ही नेत्रोंने आनन्दके अधिओंकी पारा होकर वाणी रुक ज्ञायगी और ममस्त छरीर रोगाश्रित े

لنه

इसबोगों के बबाइने सहते हुन भी नहीं सहर भी। इस-प्रकार सारा सामान जुट गया। यथिन वह सारा कार्य कीरामकी मेरणारी ही हुका तथारि इसें तो इन इस्पाद सम्ब्रॉक्स इस्तक होना ही नाविषे। विक-सैवहर्में आखा सीवारामकी भीर बानू कीसबक्तिगोरबीने जिस परिक्रमके साथ सहापता की है बसके बिचे वो इस जनके नहें ही इतक हैं। धनोच्या, निजहर, प्रचाग और कारी सामाय-के सभी विश्व चाराने ही मात्र हुन हैं।

इसके तिका सेसादिक संग्रहमें तथा सन्यान्य प्रकाश्से फनेक सम्मानि सहायता दो है, तिनमें निक्रसिधित माम विरोप दश्वेसयोग्य हैं फलपुष हम दम सभी सम्मानि प्रति हार्षिक कृतज्ञता मक्ट करते हैं—

पं० श्रीवनराइरजी पादिक एम० ए०, भीरहताय रामवन्त्र दिवादर एम० ए० एक-एक थी०, श्री बी० एक० वरेर एम० ए०, एक-एक० थी०, रायसाइव वाव् रामावुन्दरदासश्री थी० ए०, भीश्चरनारायच पेपर बी० ए० थी० एक०, भीतनकशुतारायच शीतकास्त्रायश्री थी० ए० थी० एक०, भीतनकशुतारायच शीतकास्त्रायश्री थी० ए० थी० एक० थी० समादक मानवायीपुर', शाहितवश्रव थी० विजयानन्त्रती स्वित्राते, श्रीमह्मकदेवश्री शास्त्र एम० ए० पी-प्यच बी०, स्वामी सक्यदानन्त्रती, भीधुत रामचन्द्रकृष्ण कामत, स्वत्रक्षमण्यादक मयदकी-मान्येरी, श्री शी० थी० इत्याकामीराम सम्यादक 'मानव्युनिदास', श्रीवनरास्त्रीस्त्रायश्री वार्षेत्री सम्यादक 'प्रकार-भारते, श्रीमरीराइरजी गोयमका, पं० रामनरेशजी त्रिपाठी, पं० कम्याचनारायपञ्जी गई सम्यादक 'शीक्ष्य-मन्दर्भ', सहामा बावकरासजी विनायक कनकम्बन स्वरोच्या सादि सादि ।

सामाययांकडे दिवें हिन्दों के कांतरिक मराओ, गुजरावी, धंगवा और क्षेमेओं में भी बहुत ने देख बारि थें जो कदुवाद करके महारित किये गये हैं। खेलकों से गुक्तमान्त, बंगाव, विदार, वदीसा, गुजरात, महाराष्ट्र, क्यांटक, महारा, पंजाब, गालपुताना चादि विभिन्न मान्तीय विदानों के तिचा संगत्नेयदके भी कुत्र विदार हैं। इससे रिन्दू, गुलकमान, पारती, हंताई मादि सभी हैं। इससे रामाययकी बोक-विद्याना भी पता खाता है।

हम चपने कृपाल खेलकों और कवियोंके प्रति हार्षिक कृतज्ञता प्रकट करते हुए शुदियोंके जिये उनसे हाथ कोक्कर प्रमान्याचना करते हैं। कई खेलोंके स्थानासाय और क्षन्यान्य कारयोंसे काट-गुटिकी गयी है, कई अपूरे वृशे है, दुव्व को केवल परिमान ही व्या है और इन्द्र वेच रेसे आने के कारण तया स्थानामावर्ष हुन्द्र हिन्दर भी सिक्ट्र नहीं पुत्र सके हैं। गत वार 'गीतांक' बहुत बढ़ा के पहारे प्या मिमके कारण पाटा भी रहा भी इन्द्र पिटा सिन्द्रों ने हस वा बाकार कुन्न प्रोटा करने के लिये मत्तरोव भी किया था, इससे सामाव्याक कामाग ४०० प्रष्टम निकान की विचार किया गया पारन्त्र सेन्द्र को पिट का कि विकार हो कर साकार काना पड़ा—विकार भी सिक्ट्र सेक्ट्र साकार काना पड़ा—विकार भी सैक्ट्रों सेक्टर हम ये। क्षेत्र म प्राप्त सकने के प्रसावके विजे सेक्टर हम ये। क्षेत्र म प्राप्त सकने के प्रसावके विजे सेक्टर हम ये। क्षेत्र म प्राप्त सकने के प्रसावके

रामायबांककी सूचना छापकर विमिन्न भागामाँकै

देशों पूर्व विदेशों सहयोगियोंने को हुना की है बसके किये हम बनके कार्यो हैं। इस फंकडे किये जितने विषय सोये गये दे उनमेंसे पहुतनों रह गये हैं। ऐसे ग्रेसे कई फंक में ग्रेस सामायकों का बस दिवयोग्स हम हमु प्रकारण बाजा सकता है। यह फंक तो जीसामकी हमासे बैसा हम बन सकता है सामकोगोंकी सेवाम बनस्यत किया बाता है केता हमा है, इसका निर्योग्य कार ही करें। इस-सासी विच्या और कजाहीन कार-पुलि स्विक्तियां सम्मादक सामकार देश यांच सवासीमें सामित्र होनेहें समान हासारपर हो है और बात्वसमें बहु संक्रीचका विषय है, किन्त बनोंकी माजा और

मित्रोंके प्रेमसे यह निलंजवा स्वीकार करकी पत्री है। गुरुवन,

महत्त्रमा, ज्ञानी, भगवक्रमी, रामायक् मार्मिक विद्वार

भीर बिहान सामादकमण हम एहता है किये कमा करें । हे राम ! अन्तमें तेरे एतितपावन चरवामें महिरतेत मार्थवा है कि इस अंक्रमें अनेक लगह ममादवा दें। स्वत्रशा दुई होगी, यू दवाल है अपनी भीर देखका बना क्या है होगी, यू दवाल है अपनी भीर देखका बना क्या है होगी क्षापते इसी बहाने तेरे कुछ नाम आ गा है है भीर सेरी जीवाएँ एडने-सममनेका क्रिक्टि सोमान निर्मा है । यह सक तेरी हो क्या, स्वाधा और मेरवाल हुन्या है। वह सेरी चील तेरे हो नाफ स्वचामें

चरव क्रियार्गें

हे राम !

स्रवन सुनस सुनि नायउँ, प्रभु भंजन भव-भीर । श्राहि श्राहि नारतिहरन, सरनसुसद रघुवीर ॥

हे भरणागतवत्सल राम ! हे दीनों और पतितोंके आश्रयदाता लोकामिराम ! हे अपने आचरणोंसे लोकमर्यादाकी स्थापना करनेवाले सर्वाचार राम ! हम तुम्हारी ग्ररण हैं ! प्रमो ! रक्षा करो, रक्षा करो ! हम अज्ञान हैं, तुम्हारी 'शिव-विरंचि-मोहिनी' मायामें फॅस रहे हैं, हमें कर्तव्याकर्तव्यका पता नहीं है, इसीसे तुम्हें छोड़कर विषयोंके अनुसागी पन रहे हैं। नाथ ! अपनी सहज दयासे हमारी रक्षा करो। एक बार जो शरण होकर यह कह देता है कि में तुम्हारी शरण हूँ तुम उसको अमय कर देते हो, यह तुम्हारा प्रण है, सचपुच प्रमो ! हम तुम्हारी शरण नहीं हुए ! नहीं तो तुम्हारे प्रणके अनुसार अवतक अभय-पद पा गये होते । परन्तु नाथ ! यह भी तो तुम्हारे ही हाय है । इम दीन, पतित, मार्ग-भ्रष्ट और निर्वेल हैं, और तुन दीनवन्यु, पतित-पावन, पथप्रदर्शक और निर्वेलके बल हो ! अब हम कहाँ जायँ, तुम्हारे सिवा हम सरीखे पामर गरीव दीनोंको फीन आश्रय देगा १ अपनी ओर देखकर ही अब तो हमें खींचकर अपने चारु घरणोंमें डाल दो। प्रमो ! हमें मोछ नहीं चाहिये, तुम्हारा कोई धाम नहीं चाहिये, स्वर्ग या मर्त्यलोकमें कोई नाम नहीं चाहिये ! हमें तो बस, तुम अपनी चरणरजमें लोट-लोटकर वैसुध होनेवाले पागल बना दो, अपने थेममें ऐसे मतवाले कर दो, कि लोक-परलोककी कोई मुधि ही न रहे, आँखोंपर सदा 'पायरः-ऋतु' ही छायी रहे और तुम उस जलघारासे सदा अपने चरणकमल परारवाने रहो । शमो ! वह दिन कव होगा जब-

> नयनं गहद्युपारमा, यदनं गद्रदरुदमा गिरा । पुलकेर्निनितं मपुः कदा, तत नाममहणे मरिष्यति ॥

-तुम्हारा नाम लेते ही नेवॉसे आनन्दके ऑग्नुवॉर्स पारा पहने लगेगी, गङ्गाङ् होकर वाणी रुक जायगी वॉर समस्त ग्रीर रोमाश्चित हो जायगा। Registered No. A. 1724.

श्रीरामायणकी आरती

श्रारति भ्रशिरामायणजीकी । कीरति कलित ललित सियपीकी ॥ टेक ॥ गायतः ब्रह्मादिक सनि नारदः .

वाल्मीिक विज्ञान विसारद

खुक सनकादि सेप घरु सारद , वरनि पवनसुत कीरति नीकी॥श॥

संतत गावत संसु भवानी । श्रीघट संभव सुनि विद्यानी ।

न्यास चादि वन्तेपुरंग वसानी , काकगुद्धंडि गरुड्के हिएकी॥२॥

चारउँ वेद पुराण अष्टदस , बहीं साम्र सब प्रन्यनको रस ।

तन मन धन संतनकी सर्वस

सार शंस समात सबदीकी ॥३॥ कलिमल-इरिन विषय-रसफीकी , सुभग सिंगार मुक्ति सुवतीकी ।

सुभग सिगार माक्र युवताका हरनि रोग भव मृरि यमीकी

तात मात सवविधि

